रूसी मठवाद

इगोर कोरनलियिेवचि स्मोलचि

वषिय-सूची:

सार 3
संपादक से 3
भूमकिा 7
परचिय 7
1. सामान्य टप्पिणयिाँ 7
2. ग्रंथसूची समीक्षा 8
अध्याय I. उत्पत्ति 10
1. पूर्व में ऑर्थोडॉक्स मठवाद के इतहिास की एक संक्षप्ति रूपरेखा 10
२. कीवयिन रस में पहले मठों का उदय 13
अध्याय II. कीवयिन रस में मठवाद का पहला स्वर्ण युग 17
1. पेचेर्स्क मठ और संत थयिोडोसयिस 17
२. १२वीं और १३वीं शताब्दयिों में मठवासी जीवन 21
३. मठ समुदाय की धार्मकि और सांस्कृतकि गतविधियिाँ 25
अध्याय III. राडोनेज़ के संत सेरगयिस और उनका स्कूल 30
1. उत्तर-पूर्वी रूस में ईसाई तपस्या के प्रसार का ऐतहिासकि पृष्ठभूमि 30
२. चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दयिों में तपस्या का स्वरूप 32
3. राडोनेज़ के संत सेरगयिस और उनका मठ 35
४. Сергий का तपस्वी 'वद्यिालय' और १४वीं तथा १५वीं शताब्दयिों के अन्य तपस्वी 39
अध्याय IV. वोल्त्सक के जोसेफ और सोरा के नील। दो तपस्वी आंदोलनों के बीच ववािद 44
1. वोलोट्स्क के संत जोसेफ और उनके चर्च संबंधी तथा राजनीतकि वचिार 44
२. सोरा के रेवरेंड एल्डर नील और उनके तपस्वी वचिार 48
3. 'जोसेफ़ाइट्स' और 'गैर-अधग्रिहणकर्ताओं' के बीच ववािद 53
अध्याय V. 16वीं सदी में मॉस्को में धार्मकि और राजनीतकि वचिारों की दुनयिा 55
1. मस्कोवी शासकों और रूसी चर्च के राजनीतकि अधकिार के तहत रूसी भूमकिा एकीकरण 56
२. पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में मास्को में धार्मकि और राजनीतकि वचिार 57
3. भक्षिु फलिोथयिस और उनके मसीही वचिार 62
४. मेट्रोपॉलटिन मकारयिस और १६वीं सदी की रूसी संत-चरत्रिावली 67
5. रूसी पवत्रि तपस्वयिों का महमिामंडन 71
अध्याय VI. 16वीं-17वीं शताब्दी के ववािदात्मक लेखों और वधिान में मठों की भूमि-स्वामत्वि का प्रश्न ..73
1. 'राजकुमार-भक्षिु' वासयिन और उनकी ववािदात्मक रचनाएँ 73
2. मठों की भूमि स्वामत्वि के खलिाफ अन्य कृतयिाँ 78
3. मठों के जमींदार होने के अधकिार का बचाव करने वाली रचनाएँ 85
४. मठों की भूमि स्वामत्वि को प्रतबिंधति करने के उद्देश्य से सोलहवीं सदी के सरकारी उपाय 87
5. 17वीं सदी में 1648 तक उठाए गए उपाय 90
6. 1648 का संहति 91
7. ग्रैंड पैलेस कार्यालय और मठ कार्यालय 93
अध्याय VII. 16वीं-17वीं शताब्दयिों में मठवासी उपनवेिशवाद के मुख्य रुझान 95
1. उपनवेिशवाद की राज्य और राजनीतकि स्थतियिाँ 95
2. मठ-उपनवेिशवाद के छह मुख्य क्षेत्र 96

3. मॉस्को केंद्र में मठों द्वारा उपनिवेशीकरण 97
४. उत्तर में मठों का उपनिवेशीकरण 98
5. पश्चिम में मठवासी उपनिवेशीकरण 99
6. नचिले वोल्गा क्षेत्र में मठवासी उपनिवेशीकरण 100
7. साइबेरिया का मठवासी उपनिवेशीकरण 104
8. दक्षिण में मठवासी उपनिवेशीकरण 104
9. उपनिवेशीकरण की सामान्य विशेषताएँ 106
अध्याय VIII. 16वीं–17वीं शताब्दियों में मठ संपत्तियाँ और मठ अर्थव्यवस्था 107
1. मठ संपत्तियों के इतिहास के स्रोत के रूप में कानूनी दस्तावेज़ 108
२. ओप्रिच्निना और १६वीं सदी का कृषि संकट 111
3. मठों के आर्थिक प्रबंधन के विशिष्ट उदाहरण 112
4. 16वीं और 17वीं शताब्दी में पोनिज़ोव्ये क्षेत्र में मठों की भूमि-स्वामित्व की वृद्धि, मठों की उपनिवेशीकरण गतिविधियों के एक उदाहरण के रूप में 117
५. मठीय अर्थव्यवस्था का एक अवलोकन 120
6. मठों की भूमि स्वामित्व की राज्य और कानूनी रूपरेखा 122
7. मठ के किसान 124
8. मठ संपत्तियाँ और दासता का उदय 126
9. 'मठ के सेवक' और 'मठ के संरक्षित' 129
10. मठों का व्यापार 131
11. मठों की संपत्तियों का प्रबंधन और राज्य के प्रति मठों की बाध्यताएँ 134
12. मठ संपत्तियों पर अधिकार क्षेत्र 137
अध्याय IX. 16वीं–17वीं शताब्दी में मठवासी जीवन का संगठन 138
1. प्राचीन रूस में मठवासी नियमों के इतिहास से, उनकी उत्पत्ति से 16वीं शताब्दी तक 138
२. १६वीं और १७वीं शताब्दी के मठवासी नियम 143
3. मठवासी जीवन की आंतरिक संरचना 145
४. मुंडन संस्कार और नवोदितों का आध्यात्मिक मार्गदर्शन 149
५. संस्कार संबंधी मठ का नियम और संतों का दैनिक जीवन 151
6. संन्यासी जीवन की अवस्था 156
7. धार्मिक मामलों में मठों पर अधिकार क्षेत्र 158
8. एपिस्कोपेट 160
९. १६वीं और १७वीं शताब्दियों में तपस्या 165
10. संतों का मशिनरी कार्य 168
11. मठों की सामाजिक और धर्मार्थ गतिविधियाँ 170
अध्याय X. 16वीं–17वीं शताब्दियों का मठवाद और चर्च साहित्य। 172
1. रक्षात्मक और विवादपरक लेखन। वोल्त्स्क के हेग्यूमेन जोसेफ 172
2. एल्डर आर्टेमी। उनकी तपस्वी-रहस्यमय और रक्षात्मक रचनाएँ 178
3. ओटेन्स्क के ज़िनोवी और उनकी रचनाएँ 180
४. मेट्रोपॉलिटिन डैनियल 184
5. जीवनी संबंधी और ऐतिहासिक कृतियाँ 186
6. भिक्षु एर्मोला-एरास्मस की रचनाएँ 189
7. सत्रहवीं सदी का साहित्य 191
अध्याय XI. पश्चिमी प्रभाव और पवित्र उपहारों के रूपांतरण पर धर्मशास्त्रीय विवाद 194
1. 17वीं सदी में पश्चिमी प्रभावों का प्रवेश 194
२. मॉस्को रूढ़िवाद के प्रतिनिधि के रूप में भिक्षु यूथिमियस और पैट्रिआर्क जोआचिम 198
3. पश्चिमी प्रभावों के वाहक के रूप में पोलोत्स्क के सिमियन और सिल्वेस्टर मेदवेदेव 200
४. पवित्र उपहारों के अभिषेक के समय को लेकर विवाद 203
अध्याय XII. विभाजन और मठवाद 210
1. विभाजन के धार्मिक और मनोवैज्ञानिक कारण 210
२. पैट्रिआर्क निकोन से पहले पूजा-संबंधी पुस्तकों में संशोधन 211
3. पैट्रिआर्क निकोन 213

४. पैट्रआिर्क नकिॉन के अधीन धर्मग्रंथों का संशोधन 216
५. नकिोन के उपायों के प्रतमिठवासी समुदाय का वरिोध 219
6. सोलोवेत्स्की मठ में वद्रिोह 222
अध्याय XIII. धर्मनरिपेक्षता का युग (1701–1764) 226
1. पीटर महान और मठवाद के प्रतउिनका दृष्टकिोण 227
2. मठों, मठ संपत्तयिों और मठ संघ से संबंधति सरकारी उपाय 231
3. 1764 का धर्मनरिपेक्षीकरण 238
अध्याय XIV. 1764 के धर्मनरिपेक्षीकरण से लेकर 20वीं सदी की शुरुआत तक का मठवाद। 247
1. मठवाद का बाह्य इतहिास 247
2. मठवासी जीवन का आंतरकि संगठन 253
3. 19वीं सदी में मठाधीशों की संख्या में वृद्धि 257
४. १९वीं सदी में महलिा मठ 258
5. एपस्किोपेट और 'वद्विान मठवासी आदेश' 269
अध्याय XV. 18वीं–19वीं शताब्दयिों में एल्डर का पद और तपस्या 285
1. वरषि्ठ प्रणाली की उत्पत्तऔिर उसका सार 285
२. प्राचीन रूस में वृद्धजन 289
3. एल्डर पैसयिस वेलीचकोव्स्की और उनका 'वद्यिालय' 293
4. मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल पेट्रोव का कार्य मठवाद के पुनरुद्धार पर केंद्रति था 300
५. सारोव हर्मटिज और परम पूज्य सेराफमि 302
6. ऑप्टनिा हर्मटिज और इसके एल्डर्स 306
7. एल्डर परंपरा के अन्य केंद्र 312
८. ज़ाडोंस्क के संत तकिोन 315
९. तपस्या के चुनदिा उदाहरण 318
नषि्कर्ष 324

सार

'रूसी मठवाद' प्रतषि्ठति चर्च इतहिासकार आई. के. स्मोलचि द्वारा लखिति, रूसी मठवाद के इतहिास पर एक अनूठी, व्यापक कृतहै, जो इसकी उत्पत्तसि लेकर 19वीं सदी तक और उसमें शामलि है। स्मोलचि ने रूसी चर्च के इतहिास पर सामग्री के साथ काम करते हुए 15 साल बतिाए। अपने कार्य के दौरान, उन्होंने महसूस कयिा कि रूसी मठवाद के इतहिास के वषिय को लगभग उपेक्षति कर दयिा गया था। इसके परणिामस्वरूप उनकी पुस्तक *रूसी मठवाद* का प्रकाशन हुआ। स्मोलचि रूसी मठवाद के इतहिास को रूसी राज्य के इतहिास और रूसी चर्च के सामान्य इतहिास के साथ घनषि्ठ रूप से जुड़ा हुआ प्रस्तुत करते हैं। स्मोलचि नॉन-पॉज़ेसर्स पर जोसेफट्सि की जीत को रूसी मठवाद के इतहिास में एक महत्वपूर्ण क्षण मानते हैं; उनके अनुसार, इसके कारण धर्मनरिपेक्षता आई और बाद में, रूसी मठवाद का पूर्ण पतन हो गया। इसमें उन्नीसवीं सदी में ही पुनरुत्थान होना शुरू हुआ। दूसरे शब्दों में, स्मोलचि रूसी चर्च के इतहिास को एक बहुत ही गैर-रूढ़विादी तरीके से देखते हैं: प्राचीन रूस की अंतमि शताब्दयिाँ ऑर्थोडॉक्सी के पतन का समय थीं, जबकि सनिोडल काल पुनरुत्थान और समृद्धि का समय था।

संपादक से

यह पुस्तक 1994 और 1997 के बीच प्रकाशति, बहु-खंडीय *रूसी चर्च का इतहिास* का एक पूरक है। प्रकाशक: स्पासो-प्रेओब्राज़ेंस्की वालाम स्टाव्रोपेजयिल मठ (नवंबर 1996 से – रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च (मास्को पैट्रआिर्केट) का धार्मकि और अकादमकि केंद्र, 'ऑर्थोडॉक्स एनसाइक्लोपीडयिा')। इसमें प्रतषि्ठति रूसी चर्च-इतहिासकार इगोर कोर्नलियिेवचि स्मोलचि की दो कृतयिाँ शामलि हैं: 'रूसी मठवाद: 988–1917' और 'वरषि्ठों का जीवन और शक्षिाएँ', जो एक ही चर्च-ऐतहिासकि घटना - रूसी मठवासी जीवन - के वभिन्नि पहलुओं को समर्पति हैं। कई दशकों तक रूसी चर्च इतहिास का अध्ययन करने के बाद, आई. के. स्मोलचि ने रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च के इतहिास को इसकी स्थापना से लेकर सनिोडल काल के अंत तक समर्पति एक भव्य संकलन बनाने का प्रयास कयिा। हालांकि, 18वीं-19वीं शताब्दी में चर्च के इतहिास पर कसिी भी गंभीर कार्य की अनुपस्थतिमिें, आई. के. स्मोलचि ने 'पहले के

समय के इतिहास का प्रस्तावना' करने के लिए सिनोडल अवधि के दौरान चर्च के इतिहास को लिखने का निर्णय लिया[1], इस उम्मीद के साथ कि उचित समय पर वे रूस में ईसाई धर्म की स्थापना के युग और मास्को के मेट्रोपॉलिटन्स और पैट्रिआर्क्स के युग पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। रूसी मठवाद के इतिहास पर एक विशेष अध्ययन का उद्देश्य भी यही था – रूस में ऑर्थोडॉक्सी के हजार साल के इतिहास पर एक प्रमुख कृति तैयार करना। हालाँकि, शोधकर्ता की मृत्यु के कारण ये योजनाएँ कभी साकार नहीं हो सकीं[2] ।

जब उन्होंने 1952 में मठवाद के इतिहास पर अपने कार्य का प्रकाशन शुरू किया, आई. के. स्मोलिच ने इसकी 'तैयारी की प्रकृति', विवरणों में एक निश्चित अपूर्णता (जिसे एक चौकस पाठक भी नोटिस करेगा, विशेष रूप से जब अध्ययन विचाराधीन अवधि के अंत के करीब पहुँचता है), और 'रूसी मठवाद के उन मुख्य विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करने' पर जोर दिया जो इसके गठन के दौरान उभरीं। ऐतिहासिक सामग्री के एक विशाल लेकिन पूरी तरह से अव्यवस्थित संग्रह[3] पर पंद्रह वर्षों के काम ने लेखक को इस निष्कर्ष पर पहुँचाया कि, जबकि रूस में मठवासी जीवन के इतिहास को अध्ययन के एक अलग विषय के रूप में माना गया, यह आवश्यक था कि इसके विकास को रूस के सामान्य इतिहास और समग्र रूप से रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च के इतिहास के घनिष्ठ संबंध में ट्रेस किया जाए। 'संन्यासी समुदाय के सदस्य व्यापक दुनिया के साथ जीवंत और लगभग अखंड संपर्क में थे। यद्यपि विभिन्न युगों में संन्यासवाद पर दुनिया का प्रभाव विभिन्न तीव्रताओं के साथ प्रकट हुआ, संन्यासी जीवन में कुछ नकारात्मक घटनाएँ हमेशा रूसी इतिहास की राजनीतिक घटनाओं से जुड़ी हुई थीं। रूस में राज्य और चर्च के बीच संबंध हमेशा से असाधारण महत्व के रहे हैं, और ये संबंध निरंतर, किसी न किसी रूप में, मठवाद और उसके दृष्टिकोण के जीवन में परिलक्षित होते रहे हैं।" फिर भी, रूसी मठवाद के इतिहास को कालखंडों में विभाजित करते समय, लेखक पारंपरिक युगों—जो धर्मनिरपेक्ष और चर्च दोनों के इतिहास में आम हैं: कीवियन रस, मस्कोवाइट रस और सेंट पीटर्सबर्ग काल—के विभाजन का पालन नहीं करते हैं, बल्कि मठवाद के आंतरिक विकास में महत्वपूर्ण मोड़ों की पहचान करते हैं। और इस प्रकार, स्मोलिच की रचना में, मस्कोवाइट रस में मठवाद के आयोजक, 'रूसी भूमि के मठाधीश', रेडोनिज के आदरणीय सर्गियस को कीव-पेचेरस्क लावरा के संस्थापकों, आदरणीय एंथनी और थियोडोसियस के प्रत्यक्ष आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने रस में मठवाद की स्थापना की थी: 'यह मठवाद के आंतरिक और बाहरी इतिहास दोनों में एक सुसंगत युग है, जिसे अवधियों में विभाजित नहीं किया जा सकता; इस युग की शुरुआत और उत्कर्ष एक ही पूरे में मिल जाते हैं, जिसे हमने रूसी मठवाद के इतिहास में पहली अवधि कहा है।'

लेखक रूस में मठवाद के इतिहास में निर्णायक मोड़ को एक ओर आदरणीय जोसेफ ऑफ वोल्त्सक और 'जोसेफाइट्स', तथा दूसरी ओर आदरणीय नील ऑफ सोरा और उनके अनुयायियों, 'वोल्गा क्षेत्र के बुजुर्गों', के बीच विवाद मानते हैं। लेखक के अनुसार, 1503 की परिषद में जोसेफिट संन्यास संगठन की अवधारणा की विजय—जिसमें मठों के पास विशाल जमींदारियाँ होना, सक्रिय आर्थिक गतिविधियों में संलग्न होना, और धर्मनिरपेक्ष दुनिया के साथ एक अटूट संबंध बनाए रखना शामिल था— तीन शताब्दियों तक मठवाद के 'महत्वपूर्ण धर्मनिरपेक्षीकरण' को निर्धारित किया, जिसका 'मठ जीवन पर विशेष रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ा'। हालांकि, यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि वोलोट्स्क के परम आदरणीय जोसेफ के मठ संगठन पर प्रभाव का इतना कठोर मूल्यांकन काफी हद तक मठवासी जीवन के लक्ष्यों और उद्देश्यों पर लेखक के अपने विचारों से निर्धारित होता है: तपस्या के आदर्शों पर उनका विशेष ध्यान मठों की सामाजिक और शैक्षिक गतिविधियों को जानबूझकर कम महत्व देने का कारण बनता है। यहाँ भी, लेखक अक्सर स्वयं का खंडन करते हैं, क्योंकि एक ईमानदार इतिहासकार के रूप में, उन्होंने अपने अध्ययन के कई पृष्ठों को मूर्तिपूजक क्षेत्रों के उपनिवेशीकरण को समर्पित किया है, जिसके दौरान मठों ने मिशनरी गतिविधियों का मुख्य भार उठाया। यह स्पष्ट है कि, व्यापक भूमि-स्वामित्व के बिना, मठ पैगन लोगों को शिक्षित करने, रूस की ऑर्थोडॉक्स संस्कृति को संरक्षित करने, आदि जैसे अपने उद्देश्यों को पूरा करने में असमर्थ रहते।

रूसी चर्च के इतिहास की सिनोडल अवधि के दौरान 'मठवासी जीवन को पुनर्जीवित करने के प्रयास' के बारे में इतिहासकार का दृष्टिकोण—एक ऐसी अवधि जिसे आमतौर पर एक ऐतिहासिक 'इंटररेगम' (शासन-शून्य काल) से कम नहीं बताया जाता है—काफी असामान्य लगता है। आई. के. स्मोलिच इस पुनरुद्धार को बुजुर्गों के आंदोलन से जोड़ते हैं, जिसकी उत्पत्ति का लेखक पता पुरानी रूसी मठवासी प्रणाली तक लगाते हैं।

उसी लेखक का एक अलग कार्य – *द लाइफ़ एंड टीचिंग्स ऑफ़ द एल्डर्स*, जो एक ऐतिहासिक निबंध के रूप में लिखा गया है – रूसी स्तारेत्शिप की विषय-वस्तु को समर्पित है। लेखक इस आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण

---

[1] देखें: रूसी चर्च का इतिहास। मॉस्को, 1997। खंड 8। भाग 1–2।

[2] आई. के. स्मोलिच की संक्षिप्त जीवनी के लिए देखें: रूसी चर्च का इतिहास। मॉस्को, 1997। खंड 8। भाग 1। पृ. 5–16।

[3] रूसी मठवाद के इतिहास पर स्रोतों की स्थिति और प्रकृति की संक्षिप्त रूपरेखा के लिए, इस संस्करण के पृष्ठ 15–18 देखें।

व्यक्तियों के चरित्र-चित्रण के माध्यम से स्तारेत्शपि के आंतरकि सार, इसकी उत्पत्ति और ऐतहिासकि भाग्य का वस्तिृत वश्लिेषण करते हैं, जसिमें न केवल ऐसे प्रसद्धि एल्डर्स जैसे कि परम आदरणीय पैसयिस वेलीचकोव्स्की, सारोव के सेराफमि या ऑप्टनिा के एम्ब्रोज़, बल्कि रूस में एल्डरशपि के आयोजक और संरक्षक: मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल (पेत्रोव) और फलिारेट (अम्फतिीट्रोव) भी शामलि हैं। 1936 में लखिी गई पुस्तक *द लाइफ़ एंड टीचग्सि ऑफ़ द एल्डर्स*, मठवाद के इतहिास पर लेखक के बाद के कार्यों को पूरी तरह से पूरक करती है।

दुर्भाग्य से, ये दोनों अध्ययन हमें केवल जर्मन अनुवाद में ही प्राप्त हुए हैं; इसलिए संपादक पाठक को एक प्रति-अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए बाध्य हैं, जो नश्चिति रूप से पाठ की शैलीगत वशिषताओं को प्रभावति कि बनि नहीं रह सकता। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि यह पुस्तक द्वतिीय वश्वि युद्ध के दौरान और ठीक उसके बाद लखिी गई थी, जब, जैसा कि लेखक ने स्वयं स्वीकार कयिा है, उन्होंने अपने कई प्रारंभकि नोट्स और ग्रंथसूची संबंधी अंश खो दिए थे और अक्सर तथ्यों को अपनी स्मृति से ही पुनर्नर्मिति करना पड़ता था—एक ऐसी स्मृति जिसकी असाधारण प्रकृति आज भी कविदंती बनी हुई है। कृति *रूसी मठवाद* का अनुवाद प्रोट. व्लादस्लिाव सपिनि द्वारा संस्करण: *Russisches Mönchtum: Entstehung, Entwicklung und Wesen. 988–1917* पर आधारति कयिा गया था। वुर्ज़बर्ग, 1953। रूसी स्रोतों से उद्धरणों की जांच अनुवादक द्वारा और आंशकि रूप से संपादकीय टीम द्वारा की गई थी।

कृति *द लाइफ़ एंड टीचग्सि ऑफ़ द एल्डर्स* का अनुवाद महामहमि जॉन (वेन्डलैंड), यारोस्लाव और रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन († 25 मार्च 1989) द्वारा कयिा गया है, जो बर्लनि में अपने बशिप के रूप में कार्यकाल के दौरान आई. के. स्मोलचि के मित्र थे[4] । संपादकों ने केवल पाठ में शैलीगत सुधार कए हैं और, जहाँ संभव हो, उद्धरणों की पुष्टि की है। हालाँकि, प्रदान की गई जानकारी की सटीकता की जम्मिेदारी पूरी तरह से लेखक की है।

आई. के. स्मोलचि[5] द्वारा प्रकाशति कृतियाँ:

• सोर्स्क के महान एल्डर नील // पुत'। 1929. 19. पृ. 57–69.

• 1596 का चर्च संघ // इतहिास के अध्ययन के लिए रूसी समाज का बुलेटनि। 1930. 5.

• इवान वासलीवचि करिव्स्की // पुट. 1932. 33.

• धन्य अगस्टीन // बुलेटनि ऑफ द रशयिन ऑर्थोडॉक्स चर्च अब्रॉड. 1933. *1112.*

• 1906 का प्री-काउंसलि असेंबली // पुत'। 1933. 38. पृ. 65–75.

• ऑर्थोडॉक्सी पर हालयिा जर्मन साहत्यि से // पुत'। 1938. 56.

• कसिानों की मुक्ति की शताब्दी पर // बुलेटनि ऑफ द रशयिन सोशल-क्रश्चियिन डेमोक्रेटकि पार्टी। 1961. 60.

• एथोस का पवत्रि पर्वत (ऑर्थोडॉक्स चर्च के जीवन में इसकी भागीदारी की 1,000वीं वर्षगांठ पर) // ऑर्थोडॉक्स धर्म के संरक्षण के लिए रूसी समाज का बुलेटनि। 1963. *70–71.*

• आर्चमिंड्राइट मकरर्इि ग्लुखारेव – अलताई के प्रबोधक // रूसी ऑर्थोडॉक्सी अध्ययन समाज का बुलेटनि। 1967. 85.

• इवान वासलीवचि करिव्स्की: जीवन और वश्विदृष्टि। 1806–1856। रूसी स्लावोफलिवाद के इतहिास में एक योगदान // स्लावों के संस्कृति और इतहिास के वार्षकि ग्रंथ। नई श्रृंखला। 1933. 9. पृ. 390–427, 463–492 (एक डॉक्टरेट शोधप्रबंध का हस्सिा, पूर्ण रूप में: ब्रेस्लाउ, 1934)।

• हाल के शोध में पश्चमिी और स्लावोफाइल // ZSP. 1933. 10. पृ. 195–209; 1934. 11. पृ. 439–449.

• पूर्वी चर्च प्रार्थना करता है // पुट'। 1935. 49; *1936-1937. 52.*

• बड़ों का जीवन और शक्षिाएँ। वयिना, 1936। दूसरा संस्करण। कोलोन; ओल्टेन, 1952; फ्रेंच में: Moines de la Sainte Russie। टूर्स; पेरसि, 1967; रूसी में: The Life and Teachings of the Elders // BT. 31. मॉस्को, 1992; दूसरा संस्करण। मॉस्को, 1997 (मुद्रण में)।

• रूस में मठवाद पर अध्ययन। 1: रूसी बुजुर्गों की परंपरा का वकिास // क्यूरयिोस। 1937. 2. पृ. 95–112; 2: 15वीं और 16वीं शताब्दी में मठीय संपत्ति की समस्या पर // क्यूरयिोस। *1939–1940. 4. पृ. 29–38.*

• 'एग्लसि कैथोलकि इवैंजेलकि' का रूसी पैट्रआर्कट में रूपांतरण // क्यूरयिोस. 1937. 2. पृ. 158–160.

• कैथरीन द्वतिीय के धार्मकि वचिार और रूसी चर्च // JGO. 1938. 3. पृ. 568–579.

---

[4] अनुवाद का पाठ मास्को पैट्रआर्कट पब्लशिगि हाउस द्वारा सौजन्य से प्रदान कयिा गया है।

[5] इस सूची को संकलति करते समय, *यारबुकर फ्यूर गेशख्ति ओस्टेउरोप्स* (Jahrbücher für Geschichte Osteuropas) में प्रकाशति सामग्री का उपयोग कयिा गया। 1971. खंड 19, संख्या 4, पृष्ठ 629–630।

• पुराना रूसी मठवाद (11वीं–16वीं शताब्दी): संस्थापक और प्रमुख हस्तियाँ। वुर्ज़बर्ग, 1940 (ईस्टर्न क्रश्चियनटिी. 11).

• रूसी चर्च के इतहिास में काल-वभिाजन के प्रश्न पर // क्यूरयिोस. *1940–1941. 5. पृ. 66–81.*

• रूसी भक्तऔर लोक धर्म में ईश्वर की माता का सम्मान // क्यूरयिोस। *1940-1941 / खंड 5. पृ. 194-213.*

• पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दयिों में रूसी पूर्वी नीतके इतहिास पर // JGO. 1941. 6. पृ. 55–84.

• पूर्वी चर्च में धर्मार्थ कार्य के इतहिास पर, वशिष रूप से रूसी चर्च के संदर्भ में // चर्च का डयिाकोनल मंत्रालय। स्टटगार्ट, 1952 (उपनाम इवान पेरेश्वेटोव के तहत)।

• रूसी मठवाद: उत्पत्त, वकिास और सार। 988–1917। वुर्ज़बर्ग, 1953 (पूर्वी ईसाई धर्म। नई श्रृंखला, *संख्या 1011); रूसी में: रूसी मठवाद। मास्को, 1997 (प्रकाशन के लिए)।*

• पूर्वी और दक्षणि-पूर्वी यूरोप के इतहिास पर 1939-1952 के जर्मन-भाषा साहत्यि की सूची // स्टडीज़ इन ईस्टर्न यूरोपयिन हस्टि्री। 1954. 1. पृ. 251-316 (डब्ल्यू. फलिपि और एफ. वाल्यावेक के साथ)।

• 18वीं से 20वीं सदी तक रूस में रूढ़विादी चर्च पर रूसी सम्राट का रुख // पूर्वी यूरोपीय इतहिास में अध्ययन। 1955. 2. पृ. 139–164.

• महारानी अन्ना इओआनोव्ना के नरिंकुश शासन के लिए फयिोफान प्रोकॉपोव की कृतज्ञता की प्रार्थनाएँ // ZSP. 1956. 25. पृ. 212–224.

• रूसी धार्मकि जीवन के लिए फलिोकैलयिा का महत्व। (नकिोडेमस [हागयिोराइट) द लटिलि फलिोकैलयिा: प्रार्थना पर पूर्वी चर्च के मठवासी पताओं की शक्षिाएं] के लिए प्रस्तावना / *मैथयिस डएिट्ज़ द्वारा चयनति और अनुवादति। आइंसीडेलन: ज़्यूरख़ि: कोलोन, 1956।*

• पूर्वी और दक्षणि-पूर्वी यूरोप के इतहिास पर 1939-1952 के सोवयित-रूसी साहत्यि की सूची // स्टडीज़ इन ईस्टर्न यूरोपयिन हस्टि्री। 1956. खंड 3. पृ. 99-281 (एम. बर्नाथ के साथ)।

• रूसी चर्च और ऑर्थोडॉक्स पूर्व के बीच संबंधों के इतहिास पर: यरूशलेम में रूसी धार्मकि मशिन (1847–1914) // ईस्टर्न स्टडीज़। 1956. 5. पृ. 33–51, 89–136.

• रूसी चर्च और ऑर्थोडॉक्स पूर्व के बीच संबंधों के इतहिास पर: कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के साथ अपने संबंधों में पीटर महान के रूस में चर्च और सरकार (1700–1914) // ऑर्थोडॉक्स स्टडीज़। 1958. 7. पृ. 1–47.

• माउंट अथोस और रूस // द मलिेनयिम ऑफ माउंट अथोस, 963–1963. स्टडीज़ एंड मसिलेनी. शेवेटोन्ग, 1963. खंड 1. पृ. 279–318.

• रूसी चर्च का इतहिास 1700–1917। लाइडेन, 1964। खंड 1 (पूर्वी यूरोप के इतहिास में अध्ययन। खंड 9)। वीसबाडेन, 1991। खंड 2 (पूर्वी यूरोपीय इतहिास पर अनुसंधान। खंड 45); रूसी में: रूसी चर्च का इतहिास। 1700–1917। मास्को, 1996–1997. 2 खंड.

• 1906 की परषिद की तैयारी समति: *1917–1918* की मॉस्को प्रांतीय परषिद की पृष्ठभूम पर *// Kirche im Osten. 1964. 7. पृ. 53–93; रूसी में: स्मोलचि, आई. के. रूसी चर्च का इतहिास। 1700–1917. मास्को, 1997. 2. परशिष्टि।*

• रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च में कैनन कानून // सद्धिांत और जीवन में रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च। दूसरा संस्करण। वटिेन-रूर, 1966। पृ. 139–166।

• मार्च से अक्टूबर 1917 तक क्रांतके दौरान रूसी चर्च और 1917 से 1918 तक राज्य चांसलरी (रूस में राज्य और चर्च के बीच संबंधों के इतहिास पर) // ऑर्थोडॉक्स स्टडीज़। 1965. खंड 14. पृ. 3–34; रूसी में: स्मोलचि, आई. के. रूसी चर्च का इतहिास। 1700–1917। मॉस्को, 1997। परशिष्टि 2।

• आई. एस. अक्साकोव और अभव्यक्त तथा अंतरात्मा की स्वतंत्रता का प्रश्न // फेस्टस्क्रप्टि फॉर मार्गरेट वोल्टनर ऑन हर 70वीं बर्थडे। हाइडलबर्ग, 1967। पृ. 262–269।

• आई. के. स्मोलचि *Die Religion in Geschichte und Gegenwart* में व्यक्तगित लेखों के लेखक भी हैं। 3रा संस्करण। ट्यूबगिेन, 1957–1965 (लेख: कीव, लौरा, सोलोव्की मठ, स्टाउरोपेजयिन, ट्रनिटिी-सर्गीस लाव्रा, वालाम मठ, जल का आशीर्वाद); लेक्सकिॉन फ्यूर थयिोलॉजी उंड कर्खि। दूसरा संस्करण। फ्राइबर्ग इम ब्राइसगाउ, 1957–1965 (लेख: अलेक्जेंडर नेवस्की, रूस के अलेक्जेंडर प्रथम, स्टारज़े)।

• आई. के. स्मोलचि ने में भी समीक्षाएँ प्रकाशति कीं: Kyrios, ZSP.

भूमिका

यह कृति, जो समग्र रूप से रूसी चर्च के इतिहास और विशेष रूप से रूसी मठों के इतिहास पर 15 वर्षों के शोध का परिणाम है, रूसी मठवाद के इतिहास को इसकी उत्पत्ति से 1917 तक लिखने के लिए एक प्रारंभिक सामग्री के रूप में अभिप्रेत है। हम इसे केवल इस इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण क्षणों को प्रस्तुत करने और इसके विकास के दौरान उभरी रूसी मठवाद की मुख्य विशेषताओं का चित्रण करने का एक प्रयास मानते हैं। चूँकि हमारा अध्ययन लगभग पूरी तरह से पहले से प्रकाशित स्रोतों पर आधारित है, इसलिए हमने इसे 'रूसी मठवाद का इतिहास' कहने का साहस नहीं किया है, हालाँकि कुछ अध्यायों में—विशेष रूप से 18वीं सदी से पहले की अवधि से संबंधित अध्यायों में—ऐतिहासिक सामग्री का एक बहुत बड़ा संग्रह उपयोग किया गया है। संन्यासवाद के इतिहास की सबसे हालिया अवधि—18वीं और 19वीं सदी—से संबंधित स्रोत, विशेष रूप से व्यक्तिगत मठों के इतिहास से संबंधित, काफी हद तक अप्रकाशित हैं, और कई शायद पहले ही खो चुके हैं । परिणामस्वरूप, यहां सभी पहलुओं को समान विस्तार से शामिल नहीं किया गया है; संन्यासवाद के विकास के विभिन्न चरणों के हमारे विवरण की गहनता, हमारे लिए उपलब्ध सामग्री की मात्रा द्वारा निर्धारित की गई थी। फिर भी, हमें उम्मीद है कि हम इस इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट पहलुओं की पहचान करने और सबसे विशिष्ट ऐतिहासिक हस्तियों को उजागर करने में सफल रहे हैं।

पहले चार अध्याय मेरी पुस्तक *ओल्ड रशियन मोनास्टिसिज़्म* की, कुछ छोटे-मोटे संक्षिप्तिकरणों के साथ, पुनरुत्पादन हैं। अध्याय VI, VII, VIII और XIII में, हम कुछ संक्षिप्तिकरण और परिवर्तनों के साथ, 1941 में ही मठ संपत्तियों पर एक नियोजित पुस्तक के लिए लिखी गई पांडुलिपि को पुनःप्रस्तुत करते हैं, जब हमारे पास अधिक स्रोत और साहित्य उपलब्ध थे। बाकी अध्याय 1947-1948 में पहले से एकत्र की गई सामग्री के आधार पर लिखे गए थे और अब हमारी पहुँच में हैं। दुर्भाग्य से, सभी स्रोत हमें उपलब्ध नहीं थे, और हमें अक्सर कुछ मुद्दों के लिए केवल ऐतिहासिक साहित्य पर निर्भर रहना पड़ा; प्रत्येक मामले में संबंधित फुटनोट में इसका उल्लेख किया गया है।

मैं स्लावकि संस्थान और पूर्वी यूरोप के इतिहास और क्षेत्रीय अध्ययन पर पूर्व सेमिनार (दोनों बर्लिन में) के प्रबंधन का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे अपने विशाल संग्रहों तक पहुँच प्रदान की। मैं उन मित्रों का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत पुस्तकालयों की किताबें मुझे उपलब्ध करवाईं।

इगोर स्मोलिच, दिसंबर 1952

परिचय

1. सामान्य टिप्पणियाँ

रूसी चर्च में मठवाद व्यापक रूप से फैल गया क्योंकि, शुरू से ही, ईसाई धर्म की तपस्या की शिक्षाओं ने नव-धर्मांतरित रूसी लोगों के हृदय में गहरी छाप छोड़ी। रूस में मठवाद ने बहुत जल्दी विशेष महत्व प्राप्त कर लिया, खासकर इसलिए क्योंकि इसने लोगों तक शिक्षा और संस्कृति पहुँचाई, जिसमें मठ सीखने और संस्कृति के केंद्र के रूप में काम करते थे। अपने विशुद्ध धार्मिक मिशन को पूरा करने के अलावा, मठ खुद को देश के राष्ट्रीय, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में शामिल पाते थे। मठ समुदाय के सदस्य व्यापक दुनिया के साथ जीवंत और लगभग निरंतर संपर्क में थे। इसने मठवासी जीवन के आंतरिक विकास को भी प्रभावित किया। यद्यपि विभिन्न युगों में मठवाद पर बाहरी दुनिया का प्रभाव अलग-अलग तीव्रता के साथ प्रकट हुआ, मठवासी जीवन की कुछ नकारात्मक घटनाएँ हमेशा रूसी इतिहास की राजनीतिक घटनाओं से जुड़ी हुई थीं। रूस में राज्य और चर्च के बीच संबंध हमेशा से असाधारण महत्व के रहे हैं, और इन संबंधों ने निरंतर, किसी न किसी तरह से, मठवासी समुदाय के जीवन और उसके दृष्टिकोण को प्रभावित किया है, और अक्सर मठवाद की आध्यात्मिक शक्तियों को ऐसे आंदोलनों में खींच लिया है जो मठवासी आदर्श के अनुरूप नहीं थे।

यदि हम रूसी संन्यासवाद के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत करनी है, इसकी आंतरिक विशेषताओं और बाहरी विकास को वर्णित करना है, या इस इतिहास को विशिष्ट अवधियों में विभाजित करना है, तो इन सभी बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

सन्न्यासी जीवन के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ 15वीं और 16वीं शताब्दी के मोड़ पर आया, जब सन्न्यासी हलकों में ही सन्न्यासी जीवन के एक चर्च और ईसाई-तपस्वी संस्था के रूप में इसके अर्थ, उद्देश्य और भविष्य के विकास से संबंधित प्रश्नों को संबोधित करने और इसके आगे के विकास की नींव रखने की एक तत्काल आवश्यकता उत्पन्न हुई। इस मुद्दे पर दो अलग-अलग दृष्टिकोणों के अस्तित्व ने दशकों तक चलने वाले एक तीव्र विवाद और संघर्ष को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप 'जोसेफाइट्स' की जीत हुई, जिन्हें उनके नेता के नाम पर ऐसा कहा जाता

था, संत जोसेफ ऑफ वोल्त्सक – जिसने रूस में मठवासी जीवन और मठवासी जीवन शैली के आगे के विकास पर निर्णायक प्रभाव डाला। कोई भी इस बदलाव की सटीक तारीख 1503 की परिषद के रूप में बता सकता है, हालांकि विवाद और संघर्ष वास्तव में उस परिषद के बाद ही सामने आया।

1503 तक की अवधि मठवाद के आंतरिक और बाहरी इतिहास दोनों में एक एकल, सुसंगत युग बनाती है, जिसे अलग-अलग चरणों में विभाजित नहीं किया जा सकता; इस युग की शुरुआत और उत्कर्ष एक ही समग्र में मिल जाते हैं, जिसे हमने रूसी मठवाद के इतिहास में पहला काल कहा है।

1503 के बाद, मठवाद अपने दूसरे चरण में प्रवेश कर गया, जिसके दौरान यह धर्मनिरपेक्षता की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया से गुज़रा। यह, एक ओर, जोसेफाइट्स की विजय के कारण हुआ, जिसने मठों को पहले की तुलना में रस के राजनीतिक जीवन में अधिक गहन रूप से शामिल कर दिया; दूसरी ओर - - मठों की संपत्ति के संचय के परिणामस्वरूप, जिसके कारण मठों को राज्य की आर्थिक प्रणाली में शामिल कर लिया गया। चूंकि अधिकारियों ने मठों की संपत्तियों के संबंध में कोई स्पष्ट रुख नहीं अपनाया, इसलिए उनके विस्तार का मठ जीवन पर विशेष रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

तीसरे और अंतिम दौर का निर्णायक मोड़ 18वीं सदी की शुरुआत, यानी पीटर महान के सुधारों का युग था; इन सुधारों का उद्देश्य मठवासी जीवन को बदलना या सुधारना नहीं था, लेकिन सिनोडल युग के दौरान, मठवाद को चर्च के जीवन में पहले की तुलना में एक बिल्कुल अलग स्थान दिया गया, और इसने अंततः अपनी कभी की अत्यधिक प्रमुख स्थिति खो दी। पवित्र सिनिड में मूर्त रूप धारण किए हुए धार्मिक अधिकार ने 18वीं शताब्दी से पहले मौजूदा संन्यासवाद के साथ अपने घनिष्ठ संबंध खो दिए। इसके अलावा, सिनिड ने आम तौर पर संन्यासी जीवन के मामलों में गंभीर रुचि नहीं ली। यदि इस अवधि के दौरान मठवासी जीवन को पुनर्जीवित करने के कोई प्रयास हुए, तो वे स्वयं मठवाद के भीतर की स्वस्थ शक्तियों से उत्पन्न हुए, मुख्य रूप से 18वीं और 19वीं सदी के रूसी संतों से। पिछले दो शताब्दियों में मठवाद के विकास में संतों का प्रभाव सबसे महत्वपूर्ण कारक प्रतीत होता है, जिसने सच्चे मठवाद के पुनरुद्धार में एक निर्णायक भूमिका निभाई।

इस निबंध में, हमने जानबूझकर दक्षिणी रूस में मठवाद के इतिहास को छोड़ दिया है, यानी कीव मेट्रोपोलिस के मठों और उन पश्चिमी क्षेत्रों का इतिहास, जो बाद में, 17वीं और 18वीं शताब्दियों में रूसी राज्य का हिस्सा बन गए। इन मठों और उनके निवासियों का अपना एक अलग इतिहास था, जिसके लिए एक अलग अध्ययन की आवश्यकता है। केवल 18वीं शताब्दी के अंत से, या अधिक सटीक रूप से, 19वीं शताब्दी की शुरुआत से ही, रूस के सभी क्षेत्रों में मठवासी जीवन एकरूप हो गया।

माउंट अथोस पर रूसी मठवाद का इतिहास भी रूसी मठवाद के सामान्य इतिहास में एक विशिष्ट अध्याय बनाता है, क्योंकि इसका आंतरिक और बाहरी विकास रस की परिस्थितियों से भिन्न परिस्थितियों में हुआ था। इस विषय पर स्रोत इतने कठिनता से उपलब्ध हुए कि हमें अथोस का सबसे सामान्य अवलोकन भी छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

हमने यहाँ, स्रोतों का लगातार सहारा लेते हुए, मठवाद के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रस्तुत करने और उनका चरित्र चित्रण करने का प्रयास किया है, यह ध्यान में रखते हुए कि 'इतिहास का पहला नियम है किसी भी बहाने से झूठ को स्वीकार न करना; इसके बाद, किसी भी परिस्थिति में सत्य से न डरना; और न तो पक्षपात की छाया को और न ही दुर्भावना की छाया को स्वीकार करना' (सिसिरो। द ओरैटर। 2. पृ. 15)।

2. ग्रंथसूची समीक्षा

रूसी मठवाद के इतिहास का अध्ययन करते समय, आरंभ से ही दो परिस्थितियाँ स्पष्ट हो जाती हैं: पहली, स्रोतों की कमी, जिसमें सामग्री विभिन्न कालखंडों में बहुत असमान रूप से वितरित है; और दूसरी, दस्तावेजों का विभिन्न संग्रहों और व्यक्तिगत प्रकाशनों में बिखराव। रूसी मठवाद के इतिहास का अध्ययन करने वाला कोई भी व्यक्ति इन दोनों परिस्थितियों को ध्यान में रखना अनिवार्य है। हमारे पास किसी विशेष विषय पर विशेष रूप से संकलित सामग्री का कोई संग्रह लगभग नहीं है। चर्च-ऐतिहासिक साहित्य में, इसकी तुलनात्मक रूप से व्यापक मात्रा के बावजूद, विभिन्न युगों और प्रक्रियाओं को असमान रूप से शामिल किया गया है। 18वीं शताब्दी की शुरुआत तक की अवधि के लिए, हमें मुख्य रूप से विशेष चर्च-ऐतिहासिक साहित्य पर नहीं, बल्कि, उदाहरण के लिए, राज्य, राजनीतिक और आर्थिक इतिहास या पुराने रूसी साहित्य के इतिहास से संबंधित कृतियों पर निर्भर रहना पड़ा।

हम जिन स्रोतों का उपयोग किया है, उनमें से सबसे महत्वपूर्ण की सूची हम यहाँ देंगे। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण है *रूसी वृत्तांतों का संपूर्ण संग्रह* (PSRL), जिसका संकलन काफी हद तक भिक्षुओं का काम था। उच्चतम धार्मिक प्रशासन, धर्मप्रांतीय प्रशासन के मामलों, और मठवासी जीवन से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण

सरकारी अधनियिम और आधकिारकि दस्तावेज़ लगभग वशिेष रूप से रूस के राजनीतकि इतहिास पर दस्तावेज़ों के संग्रह (AAE, AI, DAI, AMG, SGGD, SGKE, आदि[]) में नहिति हैं**। ये वृत्तांत और अधनियिम केवल 17वीं शताब्दी के अंत तक की सामग्री प्रदान करते हैं; वृत्तांत 16वीं शताब्दी के मध्य के हैं, जबकि अधनियिम और दस्तावेज़ 14वीं शताब्दी से शुरू होते हैं। मास्को काल के लिए, वभिन्नि सामग्रयिाँ 'रूसी ऐतहिासकि पुस्तकालय' (RIB) में रखी गई हैं, जहाँ अलग-अलग खंडों में वशिेष रूप से रूसी धार्मकि इतहिास पर दस्तावेज़ और अन्य ऐतहिासकि सामग्री शामलि है; 'एंटकि रशयिन bibliography' (DRV) (1773–1775, दूसरा वस्तिारति संस्करण 1788–1791): यहाँ शामलि सभी दस्तावेज़ों और कृतयिों का सत्यापन और संकलन नहीं कयिा गया है, जैसा कि दस्तावेज़ों के वद्विान संस्करणों में प्रथागत है; फरि भी, यह संग्रह अत्यधकि मूल्यवान है, क्योंकि इसमें ऐसे दस्तावेज़ शामलि हैं जनिकी मूल पांडुलपियिाँ बाद में खो गईं . मठवाद के इतहिास पर कई महत्वपूर्ण दस्तावेज़ और अध्ययन *रूसी इतहिास और प्राचीन वस्तुओं के लिए सोसाइटी के रीडग्सि* (*रीडग्सि*) पत्रकिा में प्रकाशति हुए हैं, जसिमें 'मसिलेनी' खंड भी शामलि है। के. बेस्टुज़ेव-र्यूमनि का पूर्व का कार्य *Sources and Literature on Russian History from Antiquity to 1825*, जो उनके *History of Russia* (मटिावा, 1877) के परचिय के रूप में प्रकाशति हुआ था, एक संदर्भ कार्य के रूप में काम कर सकता है। पूरक सामग्री के रूप में, एस. एफ. प्लाटोनोव के *लेक्चर्स ऑन रशयिन हस्टि्री* का 'परचिय' अनुशंसति है। चर्च इतहिास के क्षेत्र में, एन. एन. ग्लुबोकोव्स्की का कार्य *रशयिन हस्टि्रोरकिल साइंस इन इट्स हस्टि्रोरकिल डेवलपमेंट एंड प्रेजेंट स्टेट* (1928) अत्यधकि मूल्यवान है। साथ ही इमलियिस हर्मन की पुस्तक, *De fontibus juris ecclesiastici Russorum. Commentarius historico-canonicus* (1936) [*रूसी चर्च कानून के स्रोतों पर। एक ऐतहिासकि और कैननकिल टप्पिणी'], जो रूसी चर्च कानून और रूसी चर्च के सामान्य इतहिास दोनों पर एक अपरहिार्य संसाधन है। लेखक स्रोतों और दस्तावेजों के सबसे महत्वपूर्ण संग्रहों, साथ ही प्रासंगकि वद्विवतापूर्ण साहत्यि की एक सूची प्रदान करते हैं; इसके अलावा, वह वभिन्नि दस्तावेजों, संहतिाओं और अन्य कैननकिल सामग्रयिों की उत्पत्ति के इतहिास के बारे में वस्तिृत व्याख्याएं प्रस्तुत करते हैं, और उनका मूल्यांकन भी करते हैं। हरमन का अध्ययन एक अमूल्य संदर्भ कार्य और रूसी चर्च के कैननकिल कानून के इतहिास पर एक संक्षप्ति पाठ्यक्रम, दोनों के रूप में कार्य करता है।**

18वीं सदी से संबंधति स्रोतों में, 'रूसी साम्राज्य के कानूनों का संपूर्ण संग्रह' (PSZ, 2nd PSZ और 3rd PSZ) का स्थान सबसे प्रमुख है, जसिमें रूसी चर्च से संबंधति रूसी सम्राटों के लगभग सभी फरमान शामलि हैं। पहले तीन खंडों में 17वीं सदी से संबंधति सामग्री है; उदाहरण के लिए, खंड 1 में '1649 का संहति' (Code of 1649) पुनरुत्पादति है। पीटर महान के 'आध्यात्मकि वनियिम' (Spiritual Regulations) खंड 6, संख्या 3718 में पाए जा सकते हैं। पीएसजेड (PSZ) 1649 से 1825 की अवधि को कवर करता है। (45 खंड), पीएसजेड की दूसरी श्रृंखला 1825 से 1881 (55 खंड) की अवधि को कवर करती है, और पीएसजेड की तीसरी श्रृंखला मार्च 1881 से 1913 (33 खंड) की अवधि को कवर करती है। 'रूसी साम्राज्य के कानूनों के संहति' के रूप में रूसी कानून के संहतिाबद्ध होने के बाद भी (15 खंड, 1832, 1842 और 1857 में प्रकाशति; चर्च के इतहिास के लिए वशिेष महत्व के हैं खंड 1, भाग 1, §§ 40–43, साथ ही खंड *11–13 और 14) और 1906 के 'कोड' के साथ, शाही फरमानों ने अपनी वधियी शक्ति बनाए रखी। इसके अतरिक्ति, 'ऑर्थोडॉक्स धर्म वभिाग के फरमानों और आदेशों का संपूर्ण संग्रह' (PSPiR) और 'महानतम शासीन संप्रदाय के दस्तावेजों और मामलों का ववरिण' (ODDS) का उल्लेख भी कयिा जाना चाहिए (तुलना करें: हरमन, पृ. 87)। इन दोनों संग्रहों में मठवाद और मठों के इतहिास पर वस्तिृत सामग्री शामलि है। ODDs में अक्सर परम पवत्रि संप्रदाय के फरमानों और आदेशों के वस्तिृत अंश शामलि होते हैं।*

19वीं सदी से, एक और प्रमुख संग्रह का उल्लेख कयिा जा सकता है, जसिमें मुख्य रूप से मठवाद के बाहरी इतहिास (सांख्यकीय डेटा, कुछ मठों की स्थापना की तारीखें, परम पवत्रि सनिेड के आदेश, आदि) पर सामग्री है – 'परम पवत्रि सनिेड के मुख्य अभयिोजक की अत्यंत वनिम्र रपिोर्टें' (रपिोर्टें) 1836–1914 के वर्षों के लिए।

रूसी पदानुक्रम का इतहिास (IRI) (7 पुस्तकों में 6 खंड, मास्को, 1807–1815) , जसिे मुख्य रूप से मेट्रोपॉलटिन यूजीन (बोलखोवटिनिोव, † 1837) द्वारा संकलति कयिा गया था, हालांकि इसे अक्सर बशिप एम्ब्रोज़ (ओर्नात्स्की, † 1827) से जोड़ा जाता है, जन्हिोंने केवल पाठ का एक हस्सिा लखिा था। खंड 2, 3–6 संन्यासवाद के इतहिास के लिए वशिेष महत्व के हैं। हालाँकि, यह कृति त्रुटयिों से रहति नहीं है, जन्हिें इसकी सामग्री का उपयोग करते समय ध्यान में रखना चाहिए।

ये रूसी चर्च के सामान्य इतहिास और मठवाद के इतहिास, दोनों पर स्रोतों के सबसे महत्वपूर्ण संग्रह हैं। अन्य स्रोतों और प्रासंगकि साहत्यि के संदर्भ टप्पिणयिों में दिए गए हैं। दुर्भाग्य से, अभी तक स्रोतों का कोई

वसि्तृत सर्वेक्षण नहीं है; हम भवषि्य में ऐसा सर्वेक्षण संकलति करने की उम्मीद करते हैं, क्योंकि यह शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए बहुत उपयोगी होगा।

और रूसी मठवाद के इतहिास से संबंधति साहति्य पर कुछ और टपि्पणयिाँ। यद्यपि इस साहति्य की मात्रा तुलनात्मक रूप से बड़ी है, फरि भी कुल मलिाकर यह वशिषज्ञ को संतुष्ट करने में वफिल रहता है। यह वभिन्नि कालखंडों में बहुत असमान रूप से वतिरति है और इसकी वद्विवतापूर्ण गुणवत्ता भी भन्नि-भन्नि है। यह वशिष रूप से मठों के तथाकथति 'इतहिासों' और 'वर्णनों' पर लागू होता है - हम इस शैली की लगभग सौ कृतयिों से अवगत हैं। अधकितर, ये ववरिण लोगों के लिए भक्ति-पठन सामग्री के रूप में संकलति कएि गए थे; उनमें दएि गए दनिांकों और अन्य ववरिणों की हमेशा पुष्टि करने की आवश्यकता होती है; यह, उदाहरण के लिए, वोल्गोडा मठों के ववरिणों पर लागू होता है (देखें: IRI. 3)। हम इनमें से सबसे गंभीर कृतयिों को अपनी ग्रंथसूची में सूचीबद्ध करते हैं। एन. नकिोल्स्की, ए. डोब्रोक्लोन्स्की, आर्चमिांड्राइट डोसटियिस (आंशकि रूप से), ए. वी. गॉर्स्की और सेरेब्रायान्स्की के कार्य पूरी तरह से वद्विवतापूर्ण मूल्य के हैं। ज्वेरींस्की के तीन-खंडों वाले कार्य का वशिष उल्लेख कयिा जाना चाहिए, क्योंकि यह मठवासी उपनविेशीकरण के इतहिासकार के लिए पूरी तरह से अपरहिार्य है।

मठों की जमींदारयिों के इतहिास के लिए, कोई व्यक्ति रूस के सामाजकि और आर्थकि इतहिास को समर्पति कृतयिों का संदर्भ ले सकता है, उदाहरण के लिए, रोज़कोव, गौटयिर, ड्याकोनोव और अन्य की कृतयिाँ, साथ ही वी. मल्यिुटनि की कृति, जो 1859 और 1861 में प्रकाशति हुई थी, जो आज भी प्रासंगकि है। मठ संपत्तयिों के इतहिास पर बहुत सारी सामग्री 'पस्कोवे' और 'पेरपि्सन्ये' रजस्टिरों द्वारा प्रदान की जाती है।

जहाँ तक साधु जीवन के इतहिास और कसिी वशिष युग के साधुओं के वशिष्टि दृष्टकिोणों का प्रश्न है, इस वषिय पर चर्च के इतहिासकारों ने नहीं बल्कि साहति्यकि इतहिासकारों ने अधकि लखिा है – हम पुरानी रूसी साहति्य के सामान्य इतहिास को समर्पति पोर्फरीयेव (कीव काल पर), पेटुखोव और स्पेरेन्स्की की कृतयिों का उल्लेख कर रहे हैं। पुस्तक-सूची और टपि्पणयिों के संबंधति अनुभागों में वशिष मोनोग्राफों का हवाला दयिा गया है। मेट्रोपॉलटिन इवगेनी (बोलखोवटिनिोव) और आर्चबशिप फलिारेट (गुमलिोव्स्की) के कार्य, साथ ही एन. ग्लुबोकोव्स्की की उपर्युक्त पुस्तक, अभी भी संदर्भ कार्यों के रूप में उपयोग की जाती हैं, हालांकि बाद वाली को स्रोत आलोचना के कार्य के बजाय एक वद्विवतापूर्ण अध्ययन के रूप में अधकि माना जाता है। मठों के उपनविेशीकरण और धर्मप्रांतीय सीमाओं से संबंधति मानचत्रिण के क्षेत्र में, यूं कह सकते हैं कि अब तक व्यावहारकि रूप से कुछ भी नहीं कयिा गया है, हालांकि ये मुद्दे बहुत महत्व के हैं; हालांकि, कुछ जानकारी पोक्रोव्स्की के कार्य में मलि सकती है।

19वीं सदी, वशिष रूप से इसके दूसरे भाग, से संबंधति इतहिासलेखन बहुत खंडति है।

ऑर्थोडॉक्स एनसाइक्लोपीडयिा (PBE) का अधूरा संस्करण एक संदर्भ कार्य के रूप में कुछ मूल्य रखता है (जसिमें जीवनी संबंधी प्रवषि्टयिाँ और वषियगत लेख शामलि हैं), हालांकि इसमें शामलि लेखों की वद्विवतापूर्ण गुणवत्ता भन्नि-भन्नि है। *रूसी जीवनी शब्दकोश* (RBS) का भी उल्लेख कयिा जाना चाहिए, जो उदाहरण के लिए, 18वीं और 19वीं शताब्दी का अध्ययन करते समय, अपनी वसि्तृत ग्रंथसूची और सामग्री दोनों के लिए अत्यधकि मूल्यवान है; इसे वर्णानुक्रम में प्रकाशति नहीं कयिा गया था, और कुछ अक्षर या तो पूरी तरह से अनुपस्थति हैं ('एम' और अन्य) या केवल आंशकि रूप से शामलि हैं। इस प्रकाशन का हवाला देते समय, खंड में शामलि पहले और अंतमि नामों के साथ-साथ संबंधति पृष्ठ संख्या नरि्दष्टि करनी चाहिए।

यहाँ जो कुछ भी कहा गया है, वह स्रोत आलोचना और ग्रंथसूची का केवल एक संक्षपि्त अवलोकन है; यह एक ओर, पाठक की सहायता के लिए, और दूसरी ओर, यह दर्शाने के लिए प्रदान कयिा गया है कि कुछ वषियों पर सामग्री इकट्ठा करना कतिना कठनि है। स्रोतों और वद्विवतापूर्ण साहति्य की सूची में स्वाभावकि रूप से केवल सबसे महत्वपूर्ण प्रकाशन शामलि हैं; अतरिक्ति जानकारी, वशिषज्ञ साहति्य के संदर्भों के साथ, टपि्पणयिों में प्रदान की गई है।

अध्याय I. उत्पत्ति

1. पूर्व में ऑर्थोडॉक्स मठवाद के इतहिास की एक संक्षपि्त रूपरेखा

पुराना रूसी ईसाई धर्म ग्रीक ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म था। यह बाइजेंटाइयम से रूस में आया; इसे अपनाने से, रूस पूर्वी चर्च की धार्मकि और सांस्कृतकि दुनयिा का हसि्सा बन गया। रूस में चर्च का जीवन पूर्वी चर्च की आध्यात्मकि संस्कृति के वकिास, वशिष रूप से इसके बाइजेंटाइन रूप, के घनष्ठि संबंध में वकिसति हुआ।

पूर्वी स्लावों के बीच राज्यत्व का गठन 6वीं-9वीं शताब्दी में हुआ, जिसका समापन कीवन रस की स्थापना के साथ हुआ। इस अवधि के दौरान, स्लावों ने उत्तरी काला सागर क्षेत्र, क्रीमिया और कॉन्स्टेंटिनोपल के साथ आर्थिक संबंध बनाए रखे। पहली शताब्दी से ही पूरे काला सागर क्षेत्र में ईसाई धर्म का प्रचार केंद्र रहा था। क्रीमिया में यूनानी बिशपों के पहले ऐतिहासिक रिकॉर्ड चौथी शताब्दी के हैं। वहाँ ईसाई मिशनरी गतिविधि बहुत सफलतापूर्वक फैली; समय के साथ, बिशपों की संख्या बढ़कर पाँच हो गई। क्रीमिया के बिशपों ने न केवल क्रीमिया, उत्तरी तौरीदा, और अज़ोव सागर के उत्तरी और दक्षिण-पूर्वी तटों की ग्रीक-ईसाई आबादी की सेवा की, बल्कि विशाल स्टेप क्षेत्रों के खानाबदोश जनजातियों की भी सेवा की[6] ।

बाइज़ेंटाइन चर्च का ईसाई मिशन पूर्वी स्लाव तक भी पहुँचा। अब यह सर्वश्रेष्ठ संदेह से परे साबित हो गया है कि रईस व्लादिमीर के धर्म परिवर्तन (988/89) से बहुत पहले ही ईसाई धर्म कीवीन रस में प्रवेश कर चुका था[7] ।

स्थानीय रूसी चर्च, एक नवगठित धर्मप्रांत के रूप में, ने अपने सिद्धांत, कैनन और विधान कांस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्केट - अपनी मातृ चर्च - से प्राप्त किए। चर्च स्लावोनिक इसकी संस्कारिक भाषा बन गई – जो स्लावों के प्रेरितों, संत सिरिल और मेथोडियस के महान परिश्रम का फल थी – एक ऐसी भाषा जिसका बाइजेंटाइन चर्च स्लावों के बीच अपने उपदेश में पहले से ही एक सदी से उपयोग कर रहा था।

उस समय पूर्वी चर्च के जीवन में मठवाद का एक विशेष स्थान था। रूस में इसके आगमन पर, लोगों द्वारा इसे पूरी तरह से अनुकूल प्रतिक्रिया मिली, यह पूरे देश में तेजी से फैल गया, और इसने धार्मिक मामलों के साथ-साथ पुराने रूसी जीवन के कई अन्य क्षेत्रों, जिसमें राज्य और संस्कृति शामिल हैं, पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। इसके कारण पूर्वी मठवाद के इतिहास में निहित हैं, और विशेष रूप से इस तथ्य में कि, जैसा कि हम अब जानते हैं, मठवाद ने रूसी में ईसाई धर्म को आधिकारिक रूप से अपनाने से पहले ही पैठ बना ली थी और लंबे समय तक सच्ची ईसाई भक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया था।

रूस के ईसाईकरण के समय, 10वीं शताब्दी की पूर्व संध्या पर, पूर्वी चर्च में मठवाद पहले ही अपनी निर्णायक रूप-रेखा ले चुका था। यहाँ इसके विकास की केवल संक्षिप्ततम और सबसे योजनाबद्ध रूपरेखा प्रस्तुत करना पर्याप्त होगा[8] ।

अपने प्रारंभिक दिनों में, मठवाद एक विशिष्ट तपस्या से विशेष रूप से चिह्नित था। प्राचीन मिस्र के एंकराइट्स (एकांतवासी संन्यासियों) के विशाल समूह में, जिनमें से सेंट एंथोनी († 356), सेंट मकारियस († 390) और सेंट पचोमियस († 348) सबसे चमकीले सितारे के रूप में चमकते हैं, उन्हें बाद वाले (पचोमियस) में 'मिस्र के मठवासी क्रम का प्रमुख' मिला। पाकोमियस के चारों ओर इकट्ठा हुई समुदाय ने पहला ईसाई मठ बनाया; इसकी स्थापना 318 या 320 में थेब्स के पास टैबेना में हुई थी। इसका नियम सामुदायिक तपस्या की नींव बन गया। संत बेसिल द ग्रेट († 379) को मठवासी सामुदायिक जीवन की स्थापना और विकास, और उसके सार तथा मौलिक विशेषताओं की सटीक परिभाषा के लिए विशेष श्रेय दिया जाता है। कैपाडोसिया के मठवासी समुदायों के लिए रचित उनके तपस्या संबंधी लेखों में सेनोबिटिज़्म का एक धर्मशास्त्रीय और पास्टोरल औचित्य शामिल है[9] ।

फ़िलिस्तीनी मठ, जहाँ गाज़ा के हिलारियन († 371) और महान चारिटोन († 350) ने सामुदायिक जीवन के मार्ग के अग्रदूत के रूप में कार्य किया, एक प्रकार के सामुदायिक मठ में विकसित हुए, जिसे 'लवरा' के नाम से जाना जाता है। यूथिमियस महान († 473), थियोडोसियस सिनोवियर्क († 529) और, विशेष रूप से, संत सावस महाधर्माध्यक्ष (†

---

[6] सामान्य संदर्भ के लिए: Stählin, K. *Geschichte Russlands*. खंड 1 (1923); Kljutschewskij, V. *Geschichte Russlands*. खंड 1 (1925); Laehr, G. *Die Anfänge des russischen Reiches* (1930); ड्याकोनोव, एम. *प्राचीन रूस की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर रूपरेखा* (1928); फिलारेत, आर्चबिशप. *रूस की चर्च का इतिहास*. 2 खंड (1872); बोनवेट्श, एन. *रूस का चर्च इतिहास* (1923); हार्नाक। *पहली तीन शताब्दियों में ईसाई धर्म का मिशन और प्रसार*। खंड 2 (1924)। पृ. 797; कुलकोव्स्की, यू. *ताउरिडा का अतीत*। कीव, 1914; स्ट्रैटोनोव, आई. 'द क्रीमिया और पूर्वी स्लावों के ईसाईकरण के लिए इसका महत्व', *करियोस* में। खंड 1। पृ. 381–395।

[7] Laehr. उपरोक्त; Heyduk, J. रूसी जनजाति के ईसाईकरण की शुरुआत। वियना, 1888; Leib, Rome. 11वीं शताब्दी के अंत में कीव और बाइज़ेन्टियम। पेरिस, 1924 (पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं); Parkhomenko. रूस में ईसाई धर्म की शुरुआत। पोल्टावा, 1911; टोमाशेव्स्की, सेंट। यूक्रेन में चर्च के इतिहास का परिचय, में: एनालेक्टा ऑर्डिनिस एस. बासिलिई मैग्नी। 4 (लविव, 1932)।

[8] प्राचीन मठवाद पर सबसे हाल के साहित्य में से, मैं केवल सबसे महत्वपूर्ण कृतियों का उल्लेख करूँगा: कोच, ह्यूगो। *Sources on the History of Asceticism and Monasticism in the Early Church* (1933); लॉट-बोरोडिन, एम. *The Doctrine of Deification in the Greek Church up to the 11th Century*, in: *Revue de l'histoire des religions*. 55–56 (1932), 57–58 (1933); Heussi, K. *Der Ursprung des Mönchtums* (1936); तुलना करें: Heiler, Fr. *Urkirche und Ostkirche* (1937), पृ. 365 ff. में उद्धृत ग्रंथसूची। यह भी देखें: *Enchiridion Asceticum*. संपादक एम. रूए डी जर्नल। फ्राइबर्ग, 1936। पृ. 144–147, 360–367, 410–416, 635–637 (पाकोमियस), 645 ff. (सावा)।

[9] हॉल, के. *एन्थुसियास्मस उंड बुर्गेवाल्त*. पृ. 156 आदि; तुलना करें: क्रानिच. *दी एसेटिक इन इहर डॉग्मैटिशिर ग्रुंडलागे बाई बासिलियस डी. ग्र.* (1896).

532), मठवासी नयिम – 'सेंट सावस का टाइपकिॉन' – के संकलक, जसिने बाद में पूर्वी चर्च के अनुष्ठानकि जीवन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई, मठवासी समुदाय के संस्थापक थे, जसिकी फलिस्तिीन में अपनी वशिष्टि स्थानीय वशिेषताएँ थीं। स्कैथोपोलसि के सरिेलि के इन तपस्वयिों के संजीवनी वृत्तांत – प्रारंभकि ईसाई साहत्यि का एक रत्न – हमें सबसे शुरुआती मठवासी समुदायों के दैनकि जीवन से परचिति कराता है। 5वीं शताब्दी तक, सीरयिा और सनिाई प्रायद्वीप में मठवाद पहले से ही फल-फूल रहा था। महान सीरयिाई एफ्रेम और इसाक, जॉन क्लाइमैकस और साइमन द स्टाइलाइट जैसी हस्तयिाँ इस बात की गवाही देती हैं कि वहाँ दुनयिा का मठवासी त्याग कसि असाधारण ऊँचाई तक पहुँच गया था[10] ।

4ठी–6ठी शताब्दी के दौरान, पूर्वी संन्यासवाद ने चर्च के जीवन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई; इसका धार्मकि, सामाजकि और राजनीतकि महत्व हमारे लिए और भी स्पष्ट हो जाएगा यदि हम सम्राट जस्टनियिन († 565) के 'कोडेक्स' (Codex) का अवलोकन करें, जसिमें मठों से संबंधति नवोन्मेषों (novellae) को एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दयिा गया है[11] । 8वीं और 9वीं शताब्दी में, मठवाद का महत्व और भी बढ़ गया। इसने पदानुक्रम और शाही अधकिार के खलिाफ संघर्ष करने, या कम से कम उनका वरिोध करने की ताकत हासलि कर ली, ताकि ऑर्थोडॉक्स जीवन के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्च की शकि्षाओं को बनाए रखा जा सके। यह सर्ववदिति है कि पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा के संघर्ष में—एक ऐसा संघर्ष जो चर्च के लिए नरि्णायक साबति हुआ—यह मठवाद ही था, जो अटूट वशि्वास और दृढ़ता से ओत-प्रोत था, जसिने ऑर्थोडॉक्सी का झंडा ऊँचा रखा और प्रतमिा पूजा की वजिय सुनशि्चति की। इस वजिय ने चर्च के भीतर मठों की स्थतिि को और अधकि ऊँचा कयिा और उसे सुदृढ़ कयिा। इस गौरवशाली संघर्ष में, मठवासी समुदाय को अपना महान नेता मलिा, जो हमेशा के लिए पूर्वी मठवाद के इतहिास के केंद्र में रहा है। यह थयिोडोर द स्टुडाइट († 826) थे। महान स्टुडाइट का महत्व प्रतमिाओं की पूजा के संघर्ष में उनकी भूमकिा तक ही सीमति नहीं है: वह स्वयं मठवासी संगठन के प्रमुख वास्तुकारों में से एक थे। वह 'स्टुडाइट नयिम' के रूप में जाने जाने वाले मठवासी नयिम के रचयतिा थे, जसिका मूल, दुर्भाग्य से, चर्च के इतहिास से खो गया है। संत बेसलि की तरह, प्रसदि्ध स्टुडाइट मठ के मठाध्यक्ष सामुदायकि जीवन शैली के एक उत्साही अनुयायी थे। उनके नयिम में मठवासी जीवन के सदयिों पुराने अनुभव को दर्शाया गया था[12] ।

आइकनोक्लाज्म की हार के बाद (जसिका पहला चरण 726 से 780 तक और दूसरा 802 से 842 तक चला), मठवाद अपने इतहिास के सबसे गौरवशाली दौर में प्रवेश कर गया। मठों की संख्या बढ़ गई; संतों का प्रभाव इतना मजबूत हो गया कि समकालीन लोगों ने बज़िान्टयिम को 'संतों का राज्य' और उस अवधि को 'संतों की महमिा का युग' कहा[13] ।

रूसी मठवाद के लिए, और चर्च के जीवन के भीतर एक वशिष्टि स्थान की स्थापना के लिए, बाइज़ेंटाइन मठवाद के प्रसार के अत्यंत महत्वपूर्ण परणिाम हुए। रूसी के बपतस्मिा के समय, मूर्तभिंजन की गूँज और उस पर काबू पाने में संतों द्वारा नभिाई गई भूमकिा अभी भी एक जीवंत स्मृति थी। और जब हम रूसी भक्ति के इतहिास का अवलोकन करते हैं, तो हमें उस महान श्रद्धा से आश्चर्यचकति नहीं होना चाहिए, जसिसे प्राचीन रूसी लोगों की धार्मकि चेतना में पवत्रि प्रतमिाओं और भकि्षुओं के 'देवदूत समान पद' को सम्मानति कयिा जाता था। पुराने रूसी मठवाद के वकिास के इतहिास में, प्रतमिा-भंजन युग की घटनाओं के साथ एक संबंध देखा जा सकता है - एक ऐसा संबंध जो बाहरी नहीं, बल्कि आंतरकि और आध्यात्मकि है।

आइकन-वरिोधी आंदोलन के पहले प्रकोप के समय ही, रूढ़विाद के कई रक्षक तौरयिा और क्रीमयिा भाग गए थे। आइकन की पूजा के एक उत्साही समर्थक, सेंट स्टीफन द न्यू († 767) ने, ज़चियिा के धर्मप्रांत की ओर, ब्लैक

---

[10] फलिस्तिीन पर: ओल्टार्ज़ेव्स्की, एफ. 'चौथी से छठी शताब्दी तक का फलिस्तिीनी मठवाद', पीपीएस में। 15. भाग 2 (1896)। 51। सेंट सावस के नयिम पर, देखें: करट्ज़, ई., बीजेड में। 2 (1894); वेल्ज़र। *करि्केनलेक्सकिन*। खंड 10, भाग 1, पृष्ठ 434–37। सीरयिा पर: ह्यूगो बॉल। *बाइज़ेंटाइन ईसाई धर्म। संतों के तीन जीवन*। म्यूनखि, 1932; अनातोलीयस, हाइरोमोंक। *छठी शताब्दी के मध्य तक सीरयिाई मठवाद का एक ऐतहिासकि रेखाचत्रि*, *TKDA* (1911) में; स्मरिनोव, आई. द सनिाई पैटरिकिॉन। सेरगेव पोसाद, 1917।

[11] उदाहरण के लिए देखें: ग्रानी बी. 'जस्टनियिन कानून के तहत ग्रीक मठों की कानूनी स्थति और संगठन', BZ. 29 (*1929–30)* में*; नीसेन डब्ल्यू. '9वीं शताब्दी के अंत तक रोमन साम्राज्य में मठवाद का वनियिमन' (1897); तुलना करें: Voigt, K. *State and Church from Constantine the Great to the End of the Carolingian Period* (1936). पृ. 103 ff.; Marin, E. *The Monks of Constantinople from the Foundation of the City to the Death of Photius* (1897).*

[12] ओस्ट्रोगोर्स्की, जी. *बाइज़ेंटाइन आइकनोकलास्टकि ववािद के इतहिास पर अध्ययन* (1929); मैक्स, सैक्सोनी के ड्यूक. *सेंट थयिोडोर, स्टुडयिोन के आर्चमिांड्राइट* (1929); वासलिेव, ए. *बाइज़ेंटाइन साम्राज्य का इतहिास*. खंड 1 (1932). पृ. 333 ff., 373 ff.

[13] मारनि। उद्धृत कृति: सोकोलोव, आई. द स्टेट ऑफ मोनास्टसिज़्म इन द बाइज़ेंटाइन चर्च फ्रॉम द मडि-9th टू द अर्ली 13th सेंचुरी (1894)।

सी के उत्तरी तटों को शरणार्थी भिक्षुओं के लिए एक सुरक्षित आश्रय के रूप में वर्णित किया। उनकी जीवनी में हम पढ़ते हैं: 'बाइज़ेन्टियम सुनसान रह गया, मानो संपूर्ण मठवासी समुदाय को बंदी बना लिया गया हो। कुछ यूक्सिनि सागर को पार कर गए, कुछ साइप्रस द्वीप गए, और कुछ अन्य प्राचीन रोम गए'[14] । क्रीमिया की पहाड़ियों में मौजूद अनगिनत गुफाओं ने इन शरणार्थियों के लिए पहली कोठरियों के रूप में काम किया होगा। सुगदेया (सुरोज़, † लगभग 750) के आर्चबिशप सेंट स्टीफन के जीवन में, जिन्होंने क्रीमिया में मूर्तिपूजकों को ज्ञान देने के लिए बहुत प्रयास किया, हमें और सबूत मिलते हैं कि उस समय यहाँ प्रतिमा पूजा के कई समर्थक थे; यह काफी संभव है कि ठीक वही भिक्षु थे जो बिज़ान्टियम से भागकर आए थे और जिन्होंने दक्षिणी रूस में प्रतिमाओं की गहरी श्रद्धा लाई[15] । प्रायद्वीप पर आने के बाद, मठवासी समुदाय बहुत जल्दी बस गया और संख्या में बढ़ गया। इसका प्रमाण सेंट थियोडोर द स्टुडाइट द्वारा क्रीमिया में बिशप फिलारेट को लिखे एक पत्र से मिलता है, जिसमें उन्होंने प्रायद्वीप पर आए भिक्षुओं के उपदेश देने के प्रयासों की बहुत प्रशंसा की है[16] ।

यह भी हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि लोगों द्वारा बसाई गई और मठों जैसी गुफाएँ न केवल क्रीमिया में पाई गई हैं। डॉन के ऊपरी इलाकों (टिखाया सोस्ना नदी के पास, जो डॉन की एक सहायक नदी है, और कोरोटोयाक तथा ओस्ट्रोगोझस्क शहरों के निकट है) में 8वीं और 9वीं शताब्दी की पुरातात्विक खोजें ईसाई कैटाकॉम्ब - गुफाओं की गवाह हैं, जो विद्वानों के अनुसार, मठों के खंडहर के अलावा और कुछ नहीं हैं[17] । यदि भिक्षुओं ने अपनी बस्तियों का विस्तार उत्तर-पूर्व की ओर किया, तो यह मानना स्वाभाविक है कि उत्तर-पश्चिमी दिशा में भी इसी तरह का विस्तार हुआ होगा, खासकर इसलिए क्योंकि बिज़ेन्टियम से आए भिक्षु ईसाई धर्म के एक सक्रिय, उग्र रूप के समर्थक थे, और इन क्षेत्रों में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए परिस्थितियाँ विशेष रूप से अनुकूल थीं, क्योंकि इसे पूर्वी स्लाव आबादी से कोई बाधा नहीं मिली। उत्तर-पश्चिम की ओर फैलते हुए, ईसाई धर्म का प्रचार कीव तक पहुँच गया। 10वीं सदी के दूसरे छमाही में ही, प्रिंसेस स्वियातोस्लाव († 972) के शासनकाल के दौरान, जब देश और उसके लोगों ने एक राज्य और राजनीतिक संगठन की विशेषताएँ प्राप्त कर ली थीं, तब ईसाई धर्म राजसी दरबार में प्रवेश कर चुका था: कीव के प्रिंस की माँ, राजकुमारी ओल्गा, का कॉन्स्टेंटिनोपल में (लगभग 957) बपतिस्मा हुआ था[18] ।

दुर्भाग्यवश, हमारे पास कीव राज्य में मठवासी प्रवासन की गतिविधियों का वर्णन करने के लिए कोई सामग्री नहीं है। इस भूमि में ईसाई धर्म की शुरुआती शुरुआत के बारे में हमारा ज्ञान कई अंतरालों से भरा है। इतना ही ज्ञात है कि रूज़ की बपतिस्मा से भी पहले क्यीव में ईसाई रहते थे और उनका अपना चर्च था - सेंट इलियाह का चर्च; यह *944-945 की तारीख* वाली क्यीव और बाइज़ेन्टियम के बीच की संधि से स्पष्ट है / *इन ईसाइयों में निस्संदेह ऐसे तपस्वी भी थे जो एक धार्मिक, सख्त तपस्वी जीवन जीते थे। पहले कीव शहीदों, वरांगियनों - गैर-स्लाव मूल के लोग - की याद आती है, जिन्हें 983 में मार दिया गया था। हालाँकि, मठ की इमारतों या इसी तरह की किसी भी चीज़ के अस्तित्व का संकेत देने वाले कोई बाहरी निशान अभी तक खोजे नहीं गए हैं*[19] /.

अब तक जो कुछ भी कहा गया है, वह रूसी मठवाद के पूर्व-इतिहास से संबंधित है, जिसे सख्त अर्थों में इतिहास से स्पष्ट रूप से जोड़ना मुश्किल है।

२. कीवियन रस में पहले मठों का उदय

सबसे शुरुआती रूसी स्रोतों में, रस में भिक्षुओं और मठों का पहला उल्लेख केवल राजकुमार व्लादिमीर के बपतिस्मा के बाद की अवधि से संबंधित है; उनके उद्भव को राजकुमार यारोस्लाव (1019–1054) के शासनकाल में दिनांकित किया गया है। उनके समकालीन, हिलारियन, जो 1051 में कीव के मेट्रोपॉलिटिन बने, ने राजकुमार व्लादिमीर की स्मृति को समर्पित अपनी प्रसिद्ध प्रशस्ति में – 'द वर्ड ऑन लॉ एंड ग्रेस', जो उन्होंने 1037 और 1043 के बीच

---

[14] वासिलिव्स्की। रूसी-बाइज़ेंटाइन अंश। 6: नए स्टीफन का जीवन, में: ZhMNP. 1877. जून। पृ. 299, 307, 308; नए संत स्टीफन का जीवन, में: मिग्ने। PG. 100. पृ. 1117.

[15] सुरोज़ के स्टीफन का जीवन, में: वासिलीव्स्की। कृतियाँ। 3 (1915)। पृ. 238, प्रस्तावना; तुलना करें: स्ट्रैटोनोव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 387, 389।

[16] संत थियोडोरस का जीवन, में: मिग्ने. पीजी. 99. पृ. 253, 1344, 1350; कुलाकोव्स्की. उद्धृत ग्रंथ. पृ. 74; वासिलीव्स्की. कृतियाँ. खंड 3. पृ. 159.

[17] Stratonov. Op. cit., पृ. 392। यह ध्यान देने योग्य है कि बाद में यहाँ स्थापित मठों (स्वेतोगोर्स्क और दिविनोगोर्स्क) ने गुफाओं का उपयोग कोठरियों और चर्चों के रूप में किया। तुलना करें: Zverinsky. ऑर्थोडॉक्स मठों के इतिहास के लिए सामग्री, खंड 1, पृ. 169, 421।

[18] लेहर. उद्धृत ग्रंथ; पार्खोमेन्को. उद्धृत ग्रंथ।

[19] गोल्बुंस्की। रूसी चर्च का इतिहास। खंड 1, भाग 1 (दूसरा संस्करण)। पृ. 63–104।

अदालत में पुरोहति के रूप में सेवा करते हुए दी थी[20] – में कहा गया है कि व्लादमिीर के कीव में समय के दौरान ही 'पहाड़यिों पर मठ खड़े थे, और भकि्षु दखिाई दए[21] । इस वरिोधाभास को दो तरीकों से समझाया जा सकता है: यह काफी संभव है कि हलिारयिन द्वारा बताए गए मठ सख्त अर्थों में मठ नहीं थे, बल्कि चर्च के पास अलग-अलग झोपड़यिों में रहते हुए सख्त तपस्या में जीने वाले ईसाई थे, जो पूजा के लिए एक साथ इकट्ठा होते थे, फरि भी मठ के नयिमों का पालन नहीं करते थे, मठ के संन्यास की शपथ नहीं लेते थे और न ही उचति मुंडन प्राप्त करते थे[22] ; या, वैकल्पकि रूप से, वृत्तांत के संकलनकर्ता—जसिमें '1039 का संकलन' शामलि है, जो एक बहुत ही ग्रीक-समर्थक झुकाव वाला ग्रंथ है—ने मेट्रोपॉलटिन थयिोपेम्प्टस के वहां आने से पहले कीव रस में ईसाई धर्म के प्रसार में मलिी सफलताओं को कम आंकने की प्रवृत्ति दखिाई। (1037), जो संभवतःकीव में ग्रीक दीक्षा और ग्रीक मूल के पहले धर्मगुरु थे[23] ।

उसी वर्ष, 1037 में, पुराने रूसी वंशावलीकार ने गंभीर शब्दों में वर्णन कयिा: 'और इसके साथ ही ईसाई धर्म फलने-फूलने और फैलने लगा, भकि्षुओं की संख्या बढ़ने लगी, और मठों की स्थापना होने लगी।' और यारोस्लाव, चर्च संबंधी वधिानों के शौकीन होने के कारण, पुरोहतिों का बहुत सम्मान करते थे, जबकि भकि्षुओं की भरमार थी'[24] । वर्षाकार आगे बताते हैं कि यारोस्लाव ने दो मठों की स्थापना की: सेंट जॉर्ज (जॉर्जएिव्स्की) और सेंट आइरीन (इरनिसि्की कॉन्वेंट) – ये कीव में पहले वास्तवकि मठ थे। लेकनि ये तथाकथति 'क्टीटर्स' के मठ थे, या यूँ कहें कि राजसी मठ थे, क्योंकि राजकुमार ही उनके क्टीटर थे। बाइज़ेन्टयिम के लिए, इस प्रकार के '' मठ एक आम घटना थे, हालांकि यह प्रमुख घटना नहीं थी[25] । इन मठों के बाद के इतहिास से यह स्पष्ट है कि पुराने रूसी राजकुमारों ने मठों पर संस्थापक के रूप में अपने अधकिारों का प्रयोग कयिा; यह वशिेष रूप से नए मठाध्यक्षों की नयिुक्ति में स्पष्ट था, जसिका अर्थ है कि संस्थापक और उसके द्वारा स्थापति मठ के बीच बाइज़ेन्टयिम के लिए वशिष्टि संबंध की सटीक पुनरावृत्ति की बात की जा सकती है। इस प्रकार के मठों का नाम आमतौर पर संस्थापक के संरक्षक संत के नाम पर रखा जाता था (यरोस्लाव का ईसाई नाम जॉर्ज था, जबकि इरीना उसकी पत्नी के संरक्षक संत का नाम था); ये मठ बाद में पारविारकि मठ बन गए; उन्हें संस्थापकों से धन और अन्य उपहार मलिते थे और वे पारविारकि कब्रगाह के रूप में काम करते थे। लगभग सभी मठ जो मंगोल-पूर्व युग में—यानी, 13वीं शताब्दी के मध्य से पहले—स्थापति कएि गए थे, ठीक वैसी ही राजसी, या संस्थापक-प्रायोजति, मठ थीं।

प्रसदि्ध कीव गुफा मठ – पेचेरस्क लाव्रा – की उत्पत्ति पूरी तरह से अलग थी। यह आम लोगों के व्यक्तयिों की शुद्ध तपस्वी आकांक्षाओं से उत्पन्न हुआ और यह अपने दाताओं की कुलीनता या अपनी संपत्ति के लिए नहीं, बल्कि अपने नविासयिों की तपस्वी उपलब्धयिों के कारण अपने समकालीनों से मलिे प्रेम के लिए प्रसदि्ध हुआ, जनिका पूरा जीवन, जैसा कि इतहिासकार लखिता है, 'संयम, महान वनिम्रता और अश्रुपूर्ण प्रार्थनाओं में' बीता था।

हालांकि पेचेरस्क मठ ने बहुत जल्द ही राष्ट्रीय महत्व प्राप्त कर लयिा और बाद के समय में लोगों के आध्यात्मकि और धार्मकि जीवन पर यह महत्व और इसका प्रभाव बना रहा, लेकनि इसकी स्थापना के इतहिास के बारे में बहुत कुछ अस्पष्ट बना हुआ है। वभिन्नि वदि्वानों के अध्ययनों के आधार पर, इस इतहिास को इस प्रकार प्रस्तुत कयिा जा सकता है:[26] .

वर्ष 1051 के अंतर्गत, वृत्तांतकार गुफा मठ की स्थापना का वर्णन करता है, जो बेरेस्तोवो (कीव के दक्षणि-पश्चमि में एक गाँव, जो यारोस्लाव के नयिंत्रण में था) के चर्च के एक पादरी को मेट्रोपॉलटिन पद पर पदोन्नत कएि जाने के ववरिण के संबंध में है। उनका नाम हलिारयिन था, और, जैसा कि वृत्तांत गवाही देता है, वह 'सद्गुणों से युक्त, वदि्वान और धर्मपरायण' व्यक्ति थे। बरेस्तोवो में जीवन, जहाँ राजकुमार आमतौर पर अपना अधकिांश समय बतिाता था, बेचैन और शोर-शराबे वाला था, क्योंकि राजकुमार के अनुचर भी वहीं तैनात थे; परणिामस्वरूप, आध्यात्मकि उपलब्धयिों के लिए प्रयासरत पादरी को एक एकांत स्थान की तलाश करने के लिए मजबूर होना पड़ा जहाँ वह हलचल से दूर प्रार्थना कर सके। कीव के दक्षणि में, डनीपर नदी के दाहनिे कनिारे पर एक जंगली पहाड़ी पर, उन्होंने खुद के

---

[20] प्रसिल्कोव। नबिंध। पृ. 98.

[21] हलिारयिन। 'कानून और अनुग्रह पर एक प्रवचन', पोनोमारेव में: खंड 1, पृ. 71 आदि।

[22] गोल्बुइंस्की। खंड 1, भाग 1। पृ. 553–557; तुलना करें जैकब द मोंक की कृति 'व्लादमिीर की स्मृति और प्रशंसा में', में: गोल्बुइंस्की। खंड 1, भाग 1 (दूसरा संस्करण)। पृ. 238 आदि।

[23] प्रसिलकोव। नबिंध। पृ. 84–87; तुलना करें: शखमातोफ़। अध्ययन।

[24] लवरेन्टयिन क्रॉनकिल, वर्ष 1037 (3rd ed.), पृ. 148।

[25] गोल्बुस्की। 1. 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 698; ट्रॉइट्स्की, एस. 'बाइज़ेन्टयिम और नेमन सर्बयिा में अनुदान का अधकिार', में: ग्लास सर्बस्के क्राल्जेवे अकादेमयि। संख्या 84 (168) (1935); ज़श्मिन, जे. वी. *Das Stiftrecht in der Morgenländischen Kirche* (1888)।

[26] डी. अब्रामोवचि, एल. के. गेट्ज़, एम. प्रसिलकोव और ए. शखमाटोव के कार्य देखें।

लिए एक छोटी सी गुफा खोदी, जो उनकी तपस्या का स्थल बन गई। यारोस्लाव ने उस समय रिक्त मेट्रोपॉलिटन पद के लिए इस धर्मपरायण पादरी को चुना और बिशपों को उन्हें अभिषिक्त करने का आदेश दिया। वह रूसी मूल के पहले मेट्रोपॉलिटन थे[27] । हिलारियन के नए कर्तव्यों ने उनका सारा समय ले लिया, और अब वह अपनी गुफा में केवल कभी-कभार ही जा पाते थे। लेकिन बहुत जल्द ही, हिलारियन को एक अनुयायी मिल गया।

वह एक संन्यासी थे, जिन्हें एंथनी के नाम से जाना जाता है और जो कीव-पेचेरस्क लावरा के संस्थापक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके जीवन के बारे में बहुत कुछ हमारे लिए अस्पष्ट है; उनके बारे में जानकारी खंडित है। उनकी जीवनी, जो 11वीं शताब्दी के 70 या 80 के दशक में लिखी गई थी (लेकिन 1088 से पहले), जिसे ए. ए. शखमातोव ने स्थापित किया था, 13वीं शताब्दी में ही व्यापक रूप से जाना जाता था, तीन शताब्दियों बाद खो गया[28] । यह एंथनी, जो चेर्निहिव के पास ल्यूबेच शहर का मूल निवासी था, में तपस्या की ओर गहरी प्रवृत्ति थी; वह कीव आया, कुछ समय के लिए हिलारियन की गुफा में रहा, और फिर दक्षिण की ओर चल पड़ा। क्या वह माउंट अथोस पर था, जैसा कि उसकी जीवनी में बताया गया है, या बुल्गारिया में था, जैसा कि एम. प्रिसेलकोव ने दावा किया है (हमारे लिए बाद वाला अधिक संभावित लगता है), यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। लेकिन कीव गुफाओं के मठ के इतिहास के लिए यह प्रश्न केवल गौण महत्व का है, क्योंकि एंथनी नहीं बल्कि मठ के मठाधीश, संत थियोडोसियस, ही मठ के आध्यात्मिक और धार्मिक संस्थापक और भाईचारे के तपस्वी गुरु के रूप में अग्रभूमि में खड़े हैं। एंथनी उन तपस्वियों की श्रेणी से संबंधित हैं जो अपने जीवन के माध्यम से एक चमकदार उदाहरण स्थापित करते हैं, लेकिन जिनमें मार्गदर्शन या शिक्षण की क्षमता नहीं होती। संत थियोडोरियस के जीवन और कीव के गुफाओं के पैट्रिकॉन से यह स्पष्ट है कि एंथनी पृष्ठभूमि में ही रहना पसंद करते थे और उन्होंने नए मठ का प्रबंधन अन्य भाइयों को सौंप दिया था। केवल एंथनी का जीवन, जिसे कीव में अत्यधिक जटिल धार्मिक और राजनीतिक घटनाओं के संबंध में संकलित किया गया था, हमें मठ की स्थापना के लिए पवित्र पर्वत के आशीर्वाद के बारे में बताता है - शायद इस इरादे से कि गुफाओं के मठ, , जिसे रूसी समुदाय की तपस्या की आकांक्षाओं से विकसित किया गया था, को प्रदान किया जाए, उस पर 'बाइज़ेंटाइन' ईसाई धर्म का ठप्पा लगाने के लिए, उसे एथोस के पवित्र पर्वत से जोड़कर और इसकी स्थापना को एक बाइज़ेंटाइन पहल के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी जीवनी के अनुसार, लौटने पर, एंथनी कीव मठ (यह केवल सेंट जॉर्ज मठ ही हो सकता है) में जीवन के तरीके से असंतुष्ट होकर, एक बार फिर से एकांत में चले गए - हिलारियन की गुफा में[29] । एंथनी की धार्मिक निष्ठा ने उन्हें श्रद्धालुओं के बीच इतनी बड़ी श्रद्धा दिलाई कि यारोस्लाव के पुत्र और उत्तराधिकारी, राजकुमार इज़्यास्लाव स्वयं आशीर्वाद लेने के लिए उनके पास आए।

एंथनी लंबे समय तक एकांत में नहीं रहे। 1054 और 1058 के बीच, एक पादरी उनके पास आए, जिन्हें कीव के पाटेरिकॉन की गुफाओं में महान निकोन (या निकोन महान) के नाम से जाना जाता है। यह सवाल कि यह निकोन कौन था, दिलचस्प और महत्वपूर्ण दोनों है। व्यक्तिगत रूप से, मैं एम. प्रिसेलकोव की इस बात से सहमत हूँ कि महान निकोन कोई और नहीं बल्कि मेट्रोपॉलिटन हिलारियन ही थे, जिन्हें 1054 या 1055 में, कॉन्स्टेंटिनोपल के कहने पर, उनके पद से हटा दिया गया था और उनकी जगह ग्रीक एफ्रेम को नियुक्त किया गया था। साथ ही, हिलारियन ने, बेशक, अपना पुरोहित पद बरकरार रखा; वह महान स्कीमा ग्रहण करने वाले एक पुरोहित के रूप में फिर से प्रकट होता है; स्कीमा ग्रहण करने पर, उसने, जैसा कि प्रिथा है, अपना नाम हिलारियन से बदलकर निकोन रख लिया। अब, बढ़ते मठ में, उसकी गतिविधियों ने एक विशेष दायरा ले लिया। एक पुरोहित के रूप में, एंथनी के अनुरोध पर, उन्होंने नवसिखुओं का मुंडन किया; जैसा कि हम बाद में देखेंगे, उन्होंने अपने मठ की संपूर्ण राष्ट्र की सेवा के विचार को मूर्त रूप दिया; फिर वे पेचेरस्क मठ से चले गए और, थोड़ी अनुपस्थिति के बाद, एक बार फिर लौट आए, मठाधीश बने और एक लंबा और घटनापूर्ण जीवन जीने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। निकॉन 11वीं सदी की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक घटनाओं के ठीक केंद्र में खड़े हैं, क्योंकि वे सभी किसी न किसी तरह से कीव गुफाओं के मठ से जुड़ी हुई थीं। उन्होंने

---

[27] लव्हर. 1051 वर्ष के लिए वृत्तांत; प्रिसेलकोव। निबंध। पृ. 88 आदि; गोएट्ज़. Staat und Kirche in Altrußland (1908). पृ. 82; गोलुबिंस्की. खंड 1, संख्या 1 (दूसरा संस्करण)। पृ. 297, 300; मकारिय. खंड 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 5–13.

[28] शखमातोफ़। स्टडीज़। पृ. 434, 271, 257; तुलना करें: प्रिसेलकोव। एसेज़। पृ. 166.

[29] तुलना करें: शखमातोफ़। उद्धृत कृति। अध्याय 12; प्रिसेलकोव। निबंध। पृ. 253, 264–274; गोएट्ज़। दास कीवर होहेलेनक्लोस्टर। 17; गोलुबिंस्की। खंड 1. 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 647.

उस पुराने रूसी, राष्ट्रीय भावना वाले मठवासी समुदाय का प्रतिनिधित्व किया जिसने चर्च के जीवन में न तो ग्रीक पदानुक्रम और न ही कीव के राजकुमारों के हस्तक्षेप का विरोध किया था[30] ।

जहाँ एक ओर निकोन महान का नाम कीव केव्स मठ के राष्ट्रीय और सांस्कृतिक उत्थान से जुड़ा है, वहीं संत थियोडोसियस के व्यक्तित्व में हम एक सच्चे आध्यात्मिक गुरु और रूसी मठवाद के जनक को देखते हैं। थियोडोसियस की भूमिका ऐतिहासिक रूप से एंथनी की भूमिका से अतुलनीय है। उनकी जीवनी, जिसे कीव केव्स मठ के एक भिक्षु नेस्टर ने 11वीं शताब्दी के 80 के दशक में लिखा था, उस समय जब महान निकोन वहाँ सक्रिय थे, थियोडोसियस को एक तपस्वी के रूप में चित्रित करती है जो ईसाई भक्ति के आदर्श का प्रतीक था। नेस्टर पूर्वी चर्च के कई जीवनी संबंधी कार्यों से परिचित थे, और इसने थियोडोसियस के बारे में उनके विवरण पर एक निश्चित प्रभाव डाला होगा; फिर भी, संजीवनी ग्रंथ के पन्नों से थियोडोसियस का व्यक्तित्व इतना संपूर्ण और जीवंत, इतना सरल और स्वाभाविक रूप से उभरता है, कि नेस्टर के वर्णन को अब केवल संजीवनी ग्रंथों के आदर्शों की नकल नहीं माना जा सकता। थेओडोसियस 1058 या उससे कुछ पहले एंथनी के पास आए। अपने आध्यात्मिक तपस्या की कठोरता के कारण, थेओडोसियस मठवासी समुदाय के बीच एक प्रमुख स्थान पर आ गए। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ठीक चार साल बाद, उन्हें मठाधीश चुना गया (1062)। इस दौरान, भिक्षुओं की संख्या इतनी बढ़ गई थी कि एंथनी और बरलाम (मठ के पहले मठाधीश) ने गुफाओं का विस्तार करने का फैसला किया। जैसे-जैसे भिक्षुओं की संख्या बढ़ती गई, एंथनी ने कीव के राजकुमार इज़्यास्लाव से अपील की, और उनसे अनुरोध किया कि वे मठ को चर्च के निर्माण के लिए गुफाओं के ऊपर एक भूखंड प्रदान करें। भिक्षुओं को वह मिल गया जिसकी उन्होंने मांग की थी, उन्होंने एक लकड़ी का चर्च और कोठरियाँ बनाईं, और इमारतों को एक लकड़ी की बाड़ से घेर लिया। थियोडोसियस की संजीवनी में, इन घटनाओं को 1062 का बताया गया है, और संजीवनी के लेखक नेस्टर, मठ की ज़मीनी इमारतों के निर्माण को थियोडोसियस के मठाध्यक्ष के पदभार संभालने की शुरुआत से जोड़ते हैं। यह मानना अधिक सटीक होगा कि इस निर्माण का केवल पूरा होना ही थियोडोसियस के मठाध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान हुआ था[31] । अपने मठाध्यक्ष के कार्यकाल की शुरुआती अवधि के दौरान थियोडोसियस का सबसे महत्वपूर्ण कार्य स्टुडियोन मठ के सामुदायिक नियम को लागू करना था। थियोडोसियस की जीवनी से हमें पता चलता है कि उन्होंने भाईचारे द्वारा मठवासी व्रतों के सबसे सख्त पालन के लिए प्रयास किया। थियोडोसियस के कार्यों ने क्यिव-पेचेरस्क लाव्रा की आध्यात्मिक नींव रखी और इसे दो शताब्दियों तक एक आदर्श पुराने रूसी मठ के रूप में स्थापित किया[32] ।

जिस समय कीव-पेचेरस्क लावरा फल-फूल रहा था, उसी समय कीव और अन्य शहरों में नए मठ दिखाई देने लगे। पेचेरस्क मठ समुदाय के आध्यात्मिक गुरुओं, एंथनी और निकोन, और राजकुमार इज़्यास्लाव (राजकुमार के अनुचर वार्लाम और एफ्रेम के मुंडन को लेकर) के बीच हुए विवाद के बारे में पैट्रिकोन में दिए गए विवरण से हमें पता चलता है कि उस समय सेंट मीना का मठ पहले से ही कीव में मौजूद था। इस बारे में कोई सटीक जानकारी नहीं है कि यह मठ कैसे या कब अस्तित्व में आया। यह संभव है कि कीव में ऐसा कोई मठ मौजूद ही नहीं था, बल्कि सिंत मीना के बाइज़ेंटाइन या बुल्गारियाई मठ का कोई बुल्गारियाई भिक्षु बस वहाँ रहता था, जो निकोन के साथ कीव छोड़कर चला गया था[33] । निकोन राजकुमार के क्रोध से बचने के लिए शहर छोड़कर दक्षिण-पूर्व की ओर चला गया। वह अज़ोव सागर के तट पर पहुँचा और त्मूताराकान शहर में बस गया, जहाँ राजकुमार यारोस्लाव के पोते, राजकुमार ग्लेब रोस्टिस्लाविच का शासन था (1064 तक)। त्मूताराकान, जिसे बाइज़ेंटाइन लोग तमातारहा के नाम से जानते थे, 1061

---

[30] गोल्बुंस्की। खंड 1, संख्या 1 (दूसरा संस्करण)। पृ. 286; हिलारियन-निकोन पर, देखें: प्रिसेलकोव। निबिंध। पृ. 172–189; वही। नेस्टर द क्रॉनिकलर (1924); वही। मेट्रोपॉलिटन हिलारियन, जो स्कीमा में निकोन के नाम से जाने जाते थे, स्वतंत्र रूसी चर्च के एक पैरोकार के रूप में, में: एस. एफ. प्लाटोनोव के सम्मान में संग्रह (1911)। पृ. 188–201.

[31] संत थियोडोसियस का जीवन छह बार प्रकाशित हुआ: 1. बोडियान्स्की द्वारा, में: रीडिंग्स. 1858. 3; 2. याकोवलेव द्वारा, में: 12वीं और 13वीं शताब्दी के रूसी साहित्य के स्मारक (1873); 3. ए. पोपोव द्वारा, में: रीडिंग्स. 1889. 1; 4. शखमाटोव द्वारा, *रीडिंग्स* (Readings) में: 1899. 2; 5. अब्रामोविच द्वारा, *स्लाविक-रूसी साहित्य के स्मारक* (Monuments of Slavic-Russian Literature) में। 2: *द कीव-पेचेरस्क पैट्रिकॉन* (The Kiev-Pechersk Paterikon) (1911); 6. अब्रामोविच द्वारा, *द कीव-पेचेरस्क पैट्रिकॉन* (1930) में। अधिक जानकारी के लिए देखें: गोएट्ज़। *Das Kiever Höhlenkloster*। पृ. 15, टिप्पणी। तुलना करें: लावरा क्रॉनिकल, वर्ष 155; *पेटेरिकॉन*, अध्याय 1।

[32] गोल्बुस्की। 1. 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 607–627, 494–507, 776–790; मिग्ने। पीजी। 99. पृ. 1704; लावरा क्रॉनिकल, 1051 का प्रविष्टि; प्रिसेलकोव। निबिंध। पृ. 202; पैटेरिकॉन। अध्याय 'कीव गुफाओं के मठ की स्थापना पर'।

[33] पेटेरिकॉन। महान निकोन के निधन पर अध्याय; गोलुबिंस्की। 1. 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 588, 746.

और 1067 के बीच, निकोन ने परमेश्वर की माता के सम्मान में एक मठ की स्थापना की और 1068 तक वहीं रहे, जब वे कीव के पेचेरस्क मठ में लौट आए, जहाँ उन्होंने 1077/78 से 1088 तक मठाध्यक्ष के रूप में कार्य कयि[34] ।

दमित्रिीव्स्की मठ की स्थापना 1061/62 में प्रंसि इज्यास्लाव ने कीव में की थी। इसे प्रबंधति करने के लिए, इज्यास्लाव ने पेचेरस्क मठ के मठाध्यक्ष को आमंत्रति कयि। कीव के लिए संघर्ष में इज्यास्लाव के प्रतद्विंद्वी, राजकुमार वसेवोलॉड ने भी बदले में एक मठ की स्थापना की - वड्डिबचिी में सेंट माइकल मठ - और 1070 में वहाँ एक पत्थर का चर्च बनाने का आदेश दयि। दो साल बाद, कीव में दो और मठ स्थापति कए गए। स्पास्की-बरेस्टोव्स्की मठ की स्थापना शायद हरमन द्वारा की गई थी, जो बाद में नोवगोरोड के बशिप (1078–1096) बने; ऐतहिासकि स्रोतों में, इस मठ को अक्सर 'जर्मनकि' कहा जाता है। दूसरा, क्लोव्स्क-व्लाचेर्ना मठ, जसिे 'स्टीफैनकि' के नाम से भी जाना जाता है, की स्थापना पेचेरस्क मठ (1074–1077/78) के मठाध्यक्ष और वोल्हनियिा के बशिप (1090–1094) स्टीफन ने की थी; यह मठ Tatars[35] द्वारा कीव के वनिाश तक बना रहा।

इस प्रकार, ये दशक तीव्र मठ नर्मिाण की अवधि थे। 11वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य तक, कई अन्य मठ स्थापति कए गए। गोलुबनिस्की केवल कीव में ही 17 मठों की गनिती करते हैं[36] ।

11वीं शताब्दी में कीव के बाहर भी मठ बनाए गए थे। हमने पहले ही टमुटराकान के मठ का उल्लेख कर चुके हैं। पेरयिास्लाव (1072–1074), चेर्नगिोव (1074), सुज़्दाल (1096)[37] में भी मठ स्थापति हुए। नोवगोरोड में वशिेष रूप से बड़ी संख्या में मठ बनाए गए, जहाँ 12वीं–13वीं शताब्दी में कुल 17 मठ थे। उनमें सबसे महत्वपूर्ण एंटोनएिव मठ (1117) और खुटनि मठ (1192) थे, जसिकी स्थापना खुटनि के संत वरलाम ने की थी। नयिम के अनुसार, ये राजसी, या संरक्षक-वत्तिपोषति, मठ थे। हर राजकुमार अपने राजधानी शहर में एक मठ बनवाना चाहता था, इसीलिए सभी रयिासतों की राजधानयिों में मठ - पुरुषों और महलिाओं के लिए - बनाए गए थे। कुछ मठों के संस्थापक बशिप थे। कुल मलिाकर, 13वीं शताब्दी के मध्य तक, रूस में 70 तक मठ थे, जो शहरों या उनके आसपास स्थति थे[38] ।

भौगोलकि रूप से, मठ प्राचीन रूस के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारकि और जल मार्गों के साथ-साथ, डनीपर के कनिारे बस्तयिों में, कीव में और उसके आसपास, तथा नोवगोरोड और स्मोलेंस्क में स्थति थे। 12वीं शताब्दी के मध्य से, रोस्तोव-सुज़्दल क्षेत्र में - व्लादमिीर-ऑन-क्ल्याज़्मा और सुज़्दल में - मठ दखिाई देने लगे। ट्रांस-वोलगा क्षेत्र के मठवासी उपनवेिशीकरण के पहले कदम उस शताब्दी के दूसरे भाग में देखे जा सकते हैं, जहाँ मुख्य रूप से छोटे-छोटे स्केट्स और हर्मटिज बनाए गए थे। यह उपनवेिशीकरण रोस्तोव-सुज़्दाल क्षेत्र के बस्तयिों द्वारा कयि गया था, जो धीरे-धीरे वोलोग्दा की ओर बढ़े। वोलोग्दा शहर स्वयं सेंट गेरा1178 †(سيم) द्वारा पवत्रि त्रमिूर्त कि सम्मान में स्थापति मठ के पास एक बस्ती के रूप में उभरा, जो ' ' के नाम से जाना जाता है। इसके बाद मठों की बसाहट उत्तर-पूर्व की ओर, युग नदी और सुकोना के संगम की ओर तक फैल गई[39] ।

वोलगा के उत्तर में, तथाकथति 'ज़ावोल्ज़्ही' में, मठों के उपनवेिशीकरण के पहले कदम, बाद में, 13वीं शताब्दी के दूसरे भाग और 14वीं शताब्दी के दौरान, एक महान आंदोलन में वकिसति हो गए, जसिने वोलगा से लेकर श्वेत सागर (पोमोरीये) और उराल पर्वत तक फैले एक वशिाल क्षेत्र को स्केट्स और आश्रमों से भर दयि।

अध्याय II. कीवयिन रस में मठवाद का पहला स्वर्ण युग

1. पेचेर्सक मठ और संत थयिोडोसयिस

संत थयिोडोसयिस ने अपने समकालीनों का सम्मान और स्नेह अर्जति कयि, क्योंकि वह वास्तव में 'रूस में मठवासी जीवन के संस्थापक' थे। उनकी जीवनी और कीव केव्स मठ का पैटेरकिॉन वे प्रमुख स्रोत हैं जो हमें इस उत्कृष्ट व्यक्ति की गतविधियिों और अपने शष्यिों पर उनके प्रभाव से परचिति कराते हैं। पेटेरकिॉन इसलिए मूल्यवान

---

[34] मठ के वृत्तांत, वर्ष 1064; प्रसिलकोव। नबिंध। पृ. 206, 235; गोलुबस्कि। खंड 1, संख्या 1 (दूसरा संस्करण)। पृ. 682; खंड 1, संख्या 2। पृ. 776; शखमातोव। शोध। पृ. 435।

[35] गोल्बनिस्की। खंड 1, संख्या 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 585–587, 746; गोएट्ज़्। *Das Kiever Höhlenkloster*। पृ. 57; लाव्। *Annals*, वर्ष 1091 और 1094 के अंतर्गत; ज्वेरींस्की। संख्या 1580।

[36] गोल्बनिस्की। 1. 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 746; मकाराई (1. पृ. 200; 2. पृ. 95) 18 मठों की सूची देते हैं।

[37] गोल्बुंस्की। 1. 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 748, 760।

[38] गोल्बनिस्की। खंड 1, भाग 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 746–776; पीएसआरएल। खंड 2। पृ. 78, 111, 114, 192।

[39] कोनोपलेव। वोलोग्दा क्षेत्र के संत (1894)। पृ. 14; ज्वेरींस्की। 2. पृ. 623; गोलुबनिस्की। 1. 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 775; मकारयि। 3. पृ. 78.

है क्योंकि यह 11वीं-12वीं शताब्दी के पुराने रूसी मठवाद की, और विशेष रूप से उस समय के मठों के आंतरिक जीवन की एक व्यापक तस्वीर बनाने में मदद करता है।

अपने विषय-वस्तु के संदर्भ में, कीव गुफाओं का पैट्रिकॉन गुफाओं के मठ और इसके निवासियों के कारनामों का एक संत-चरित्र संबंधी विवरण है, जो मठ की स्थापना से लेकर 12वीं शताब्दी के अंत या 13वीं शताब्दी की शुरुआत तक का है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण संत थियोडोसियस का जीवन-चरित्र है। इसे कीव गुफाओं के मठ के नेस्टर नामक एक धर्मनिरपेक्ष भाई ने संकलित किया था; उन्होंने यह जीवनी 11वीं शताब्दी के 80 के दशक के अंत में लिखी थी, जब मठ के मठाधीश महान निकोन थे – यानी, पवित्र मठाधीश की मृत्यु के लगभग 15 साल बाद, इसलिए कि उनके जीवनकाल में उन्हें जानने वाले कई भाई अभी भी जीवित थे। ठीक इसी कारण से इस जीवनी में कुछ भी पौराणिक नहीं है। हालांकि नेस्टर के काम में बाइज़ेंटाइन संस्मरणों के कुछ उदाहरणों का प्रभाव स्पष्ट है, फिर भी यह अत्यधिक यथार्थवादी शैली में लिखा गया है और इसमें लेखक के व्यक्तित्व की छाप है। उस समय थियोडोसियस की छवि इतनी जीवंत थी—लेखक के लिए लगभग समकालीन—कि नेस्टर द्वारा बाइज़ेंटाइन संस्मरणों के उपयोग के बावजूद, संभवतः सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से संत हेग्यूमेन सावा की जीवनी, इस छवि में बाइज़ेंटाइन संतों के रूढ़िवादी जीवनी संबंधी लक्षणों का अभाव है; बल्कि, यह एक रूसी तपस्वी की विशिष्ट विशेषताओं से युक्त है, जो एक भिक्षु के शुरुआती ईसाई आदर्श से पूरी तरह से मेल नहीं खाती हैं। थेओडोसियस के बारे में जो बात हमें प्रभावित करती है, वह न केवल उसकी अपनी आत्मा को परिपूर्ण करने और सभी सांसारिक चीजों का त्याग कर, सांसारिक जीवन को एक स्वर्गीय निवास में बदलने की उत्सुक इच्छा है, बल्कि दुनिया को प्रभावित करने की उसकी इच्छा भी है। यह विशिष्ट राष्ट्रीय गुण खुटिन के संत बरलाम († 1192) और स्मोलेंस्क के संत अब्राहम († 1220) की जीवनी में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

मठों और बाहरी दुनिया के बीच धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों ने एल. के. को सक्षम बनाया। गोएट्ज़ को पेचेर्स्क मठ को 'मंगोल-पूर्व रूस का सांस्कृतिक केंद्र' बताने के लिए प्रेरित किया और उन्हें मठ के 'संन्यासवाद के मूल आदर्श, जो केवल दुनिया से अलग एक धार्मिक जीवन, केवल तपस्या को जानता है, और जिसकी मुख्य चिंता संन्यासी की अपनी आत्मा की मुक्ति थी' से विचलन के बारे में बात करने का कारण दिया[40] । हालांकि, इस दावे को उस समय के सभी संन्यासवाद पर लागू नहीं किया जा सकता। पेचेर्सक पैट्रिआर्कॉन दो अलग-अलग तपस्या के आदर्शों को एक साथ लाता है: सेंट थियोडोसियस या सेंट निकोलस द होली के साथ-साथ, हमें ऐसे संन्यासियों के उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने खुद को सबसे परिष्कृत तपस्या और सांसारिक चिंताओं के पूर्ण त्याग के लिए समर्पित कर दिया था; वे जॉन मॉस्चस († 620) के 'सेएयग्रिस' और 'लिमोनार' के पात्रों को याद दिलाते हैं।

इन दो प्रकार के तपस्यावाद का अस्तित्व यह दर्शाता है कि उस समय मठवाद अपने प्रारंभिक चरण में था। फिर भी, वे तपस्वी जो परिष्कृत तपस्या के अभ्यास में शामिल नहीं थे—जिन्हें *पेटेरकिॉन* के विवरणों से देखते हुए, अक्सर भक्ति के मार्ग पर ठोकरें खाती थीं और भ्रम में पड़ जाती थीं— अर्थात् संत थियोडोसियस, रूसी तपस्या परंपरा के नेता और मार्गदर्शक बने; और बाद के समय में, उनकी भक्ति के गुणों को पुराने रूसी भिक्षु की आकृति में देखा जा सकता है।

जब थियोडोसियस एंथनी की गुफा में आए, तब वे अभी भी एक युवा व्यक्ति थे, लेकिन उन्हें मठवासी संन्यास की शपथ लेने के लिए अपनी माँ का आशीर्वाद पाने हेतु एक लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी थी, क्योंकि वह उनके मठवासी जीवन की ओर झुकाव को स्वीकार नहीं करती थीं। एंथनी ने दुनिया से भागे आए इस युवक (लगभग 1058) को आश्रय दिया, और इस युवा नवसिखिए ने अपनी नम्रता, धैर्य और आध्यात्मिक स्वभाव के कारण, जल्द ही इस वृद्ध तपस्वी का स्नेह जीत लिया, जिन्होंने महान निकोन को उसका मुंडन करने का निर्देश दिया। इस युवा भिक्षु ने जल्द ही मठ समुदाय का स्नेह भी जीत लिया; ग्रैंड प्रिंस के आदेश पर, अभ्यस्त वर्लाम को सेंट डेमेट्रियस के नव-स्थापित मठ में अभ्यस्त के रूप में स्थानांतरित करने के बाद, थियोडोसियस को मठ में अपने पांचवें वर्ष में अभ्यस्त चुना गया और, एंथनी के आशीर्वाद से, इस कठिन पद को संभाला।

यह स्पष्ट नहीं है कि थियोडोसियस के मठाधीश बनने से पहले पेचेरस्क मठ ने किस नियम का पालन किया था। ऐसे कई प्रमाण हैं कि पेचेर्सक मठ ने, उससे पहले स्थापित कीव के अन्य मठों की तरह, अपने अस्तित्व के शुरुआती वर्षों में अपने जीवन को 'महान चर्च के विधान' के आधार पर, यानी कॉन्स्टेंटिनोपल में सेंट सोफिया चर्च

[40] गोएट्ज़। द कीव केव मॉनेस्ट्री। खंड 3; तुलना करें: निकोल्स्की, एन. 'ऑन ओल्ड रशियन क्रिश्चियनिटी', में: रस्की मिर्, 1913, संख्या 6; फेदोतोव। पृ. 248.

और अन्य चर्चों के पूजा-संबंधी नियमों के आधार पर व्यवस्थित किया था[41] । हालांकि, इस टाइपिकॉन का मठवासी जीवन को व्यवस्थित करने के लिए बहुत कम उपयोग था, क्योंकि इसमें केवल पूजा संबंधी नियम ही थे। यह संभव है कि नए मठाधीश को स्टुडियो के सेंट थियोडोरेट के मठवासी नियम के अस्तित्व की जानकारी थी। थेओडोसियस को इस नियम के बारे में अपनी पहली, संभवतःअधूरी और पूरी तरह से संतोषजनक नहीं, जानकारी कीव के मेट्रोपॉलिटन जॉर्ज के अनुयायियों में से एक, माइकल नामक एक ग्रीक भिक्षु से मिली। संभवतःउसी से थेओडोसियस को पता चला कि इस नियम की एक पूरी प्रति कॉन्स्टेंटिनोपल के एक मठ में रखी गई थी। उनकी जीवनी के अनुसार, संत थियोडोसियस ने एक भिक्षु को कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा ताकि वह भिक्षु एफ्रेम (जिन्हें एक बार पेचेर्स्क मठ में दीक्षा दी गई थी लेकिन अब वे ग्रीक मठों में से एक में शरण ले रहे थे) से स्टुडाइट नियम की एक प्रति प्राप्त कर सकें। हालांकि, थियोडोसियस को स्वयं संत थियोडोरस द्वारा लिखी गई नियम की प्रति नहीं मिली—जिसके अनुसार उनका मठ चलता था—बल्कि कोंस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क (1025–1043) अलेक्सियस द्वारा की गई एक बाद की संशोधित प्रति मिली। यह ज्ञात है कि स्टुडाइट नियम की कोई सटीक और संपूर्ण प्रति सुरक्षित नहीं बची है। हमारे पास केवल इसका एक सारांश है, जो महान स्टुडाइट की मृत्यु के तुरंत बाद स्टुडाइट मठ में संकलित किया गया था। यह नियम पैट्रिआर्क अलेक्सियस के संस्करण का आधार बना, लेकिन उनका संस्करण मठवासी जीवन के हर पहलू को कवर करने वाला एक विस्तृत मठवासी नियम नहीं है; इसमें केवल अलेक्सियस द्वारा स्वयं जारी किए गए कुछ पूजा संबंधी निर्देश और उपवास तथा सामान्य रूप से मठवासी जीवन से संबंधित सबसे सामान्य नियम शामिल हैं[42] .

लेकिन थियोडोसियस के लिए सबसे महत्वपूर्ण नियम की नींव को बनाए रखना था - कठोर सामुदायिक जीवन का सिद्धांत, जिसे उन्होंने मठाधीश के रूप में अपने पूरे कार्यकाल के दौरान व्यवहार में लाया। उन्होंने स्वयं अथक परिश्रम किया - 'in manibus opus, in ore psalmus' (हथियारों में काम, होठों पर प्रार्थना) - और अपने देखरेख में सौंपे गए भाइयों से भी यही अपेक्षा की। नेस्टर का सरल, परन्तु अपनी सरलता में, बहुत प्रभावशाली और जीवंत वृत्तांत हमें थियोडोसियस की बहुआयामी पास्टोरल प्रतिभा और सामुदायिक जीवन के सिद्धांत के सख्त पालन के प्रति उनकी उत्साही प्रतिबद्धता, दोनों का पता बताता है। उन्होंने सीरियाई संतों की विशेषता वाले परिष्कृत या अत्यधिक कठोर तपस्या को प्रोत्साहित नहीं किया, क्योंकि वह समझते थे कि इस तरह की तपस्या मठवासी सामुदायिक जीवन की सामान्य नींव नहीं बन सकती; यह विशेष रूप से उस समय असंभव था जब रूसी में मठवाद ने अपने पहले कदम रखे थे और इसे एक सच्चे ईसाई भक्ति का उदाहरण और दुनिया के लिए एक आदर्श बनने में अभी लंबा और कठिन रास्ता तय करना था। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि संत थियोडोसियस ने तपस्या के उच्चतम स्तरों को अस्वीकार कर दिया था। वे यह अच्छी तरह जानते थे कि केवल यही आध्यात्मिक अनुभव और आध्यात्मिक मार्गदर्शन की क्षमता प्रदान करते हैं, और एक मठाधीश के लिए ये भाइयों को प्रभावित करने के लिए आवश्यक शक्ति का एकमात्र स्रोत हैं। उन्होंने स्वयं भी बड़ी लगन से तपस्या की, लेकिन अपनी विनिम्रता के कारण वे नहीं चाहते थे कि भाइयों—या वास्तव में उनके समकालीनों—को उनकी तपस्या के कारनामों के बारे में पता चले। उन्होंने केवल अपनी युवावस्था में ही बेड़ियाँ पहनी थीं। प्रार्थना, विनिम्रता और उपवास ने उनके जीवन को भर दिया था; उन्होंने एक मठाधीश के रूप में अपना पद परम विनिम्रता से निभाया; उनके सादे वस्त्रों ने भाइयों और इस दुनिया के महान लोगों दोनों को दिखाया कि गिरीबी एक ईसाई को सुशोभित करती है; वे हमेशा उपवास करते थे: सूखी रोटी, शायद ही कभी बिना तेल वाली सब्जी – यही उनके भोजन का सार था, फिर भी उनका चेहरा हमेशा प्रसन्न रहता था; वे अपनी तपस्या रात्रि में करते हैं; वे पूरा दिन काम में लगाते हैं; वे भाइयों की देखभाल करते हैं, लेकिन अत्यधिक कठोरता के बिना उनका मार्गदर्शन करते हैं; वे शब्दों की तुलना में अपने उदाहरण से अधिक शिक्षा देते हैं, और दृष्टान्तों द्वारा उन्हें समझाते हैं; वे गलती करने वालों को प्रेम और कोमल कठोरता के साथ समझाते हैं। संत थियोडोसियस के चमत्कार – उनकी भविष्यवाणी का वरदान – उनकी तपस्या की गुणों के परिणाम के रूप में उनकी जीवनी में प्रस्तुत किए गए हैं। ये चमत्कार ज्यादातर भिक्षुओं के मठ के बाहर की दुनिया के साथ संबंधों से जुड़े थे, क्योंकि एक ओर, उन्होंने मठवासी जीवन के लिए सामान्य लोगों से मिलने वाले दान के महत्व पर जोर दिया, जबकि दूसरी ओर, उन्होंने मठवासी जीवन के ईसाई सद्गुणों के प्रति सामान्य लोगों के सम्मान को मजबूत किया।

---

[41] दमित्रीव्स्की। पूजा-संबंधी पांडुलिपियों का विवरण। खंड 1। कीव, 1895। परिचय। पृ. XCV–XCVI, 1–152; लिसित्सिन। पृ. 13–160; तुलना करें: डिएहल, BZ में। 1. पृ. 521; क्रास्नोसेल्त्सेव। कॉन्स्टेंटिनोपल में सेंट सोफिया चर्च का टाइपिकॉन। ओडेसा, 1892.

[42] संत थियोडोरेट का विधान, में: मिग्ने. 99. पृ. 1704 ff., 1813 ff.; और यह भी में: दमित्रीव्स्की. 1. पृ. 224–238. प्रस्तावना. पृ. CVII ff.; तुलना करें: लिसित्सिन. पृ. 161 आदि। एलेक्सियस का विधान: गोलुबिंस्की. 1. 2 (दूसरा संस्करण). पृ. 494–507। द कीव-पेचेरस्क पैटरिकॉन (1911). पृ. 24–26, 28, 14।

हागयिोग्राफी हमें संत थयिोडोसयिस की अपने पड़ोसयिों की सेवा के कई उदाहरण देती है, इसलिए उन्हें दुनिया के लिए सामाजकि-ईसाई सेवा के अग्रदूत के रूप में देखा जा सकता है। भकि्षु नेस्टर उन्हें वधिवाओं, अनाथों और गरीबों के रक्षक कहते हैं। उनके कार्य हमें फलिस्तिीनी मठवाद की याद दलिाते हैं। जल्द ही, थयिोडोसयिस का प्रभाव कीव के राजसी दरबार तक पहुँच गया, जहाँ उनकी सूक्ष्मदर्शी सलाह के कारण उन्हें बहुत सम्मान दिया जाता था; यह प्रसि स्वयितोस्लाव के साथ उनके ववािद में स्पष्ट रूप से स्पष्ट था, जसिमें वे वजियी रहे: हठी राजकुमार को भवषि्य के संत के आध्यात्मकि अधकिार के आगे झुकने के लिए मजबूर होना पड़ा।

थयिोडोरस ने मठवासी समुदाय के बीच भी उपदेश दिया; उनकी शकि्षाओं में मठवासी जीवन के मौलकि सद्धिांतों को छुआ गया, लेकनि उन्होंने वशिषि्ट तपस्या संबंधी प्रथाओं को करने के तरीके पर नर्दिेश नहीं दिए[43] ।

थेओडोसयिस के दैनकि मठवासी जीवन के वभिन्नि पहलुओं पर वचिार उनके पीछे छोड़े गए पाँच प्रवचनों में व्यक्त कएि गए हैं, जनिकी रचना नस्सिंदेह संत[44] को आवंटति की जाती है। थेओडोसयिस अपनी पादरी शकि्षा प्रणाली को पूर्णता की उत्साही खोज पर आधारति करते हैं। उन्होंने अपने समय में मठवासी जीवन का मुख्य उद्देश्य वनिम्रता और धैर्य, प्रार्थना और अपने भाइयों के प्रतपि्रेम में देखा। फरि भी उन्होंने भकि्षुओं से अत्यधकि कठनि बाहरी तपस्या कार्यों की मांग नहीं की। पवत्रि मठाधीश को यह स्पष्ट था कि भकि्षुओं की पहली पीढ़ी से तुरंत बहुत अधकि की मांग नहीं की जा सकती। ये शकि्षाएं इस बात की गवाह हैं कि ईसाई तपस्वी वश्विदृष्टि कितिनी धीरे-धीरे और क्रमशःजड़ पकड़ती गई, और इस तथ्य की भी कि आवश्यकताओं में कोई भी कड़ाई केवल भकि्षु जीवन को ही नुकसान पहुंचा सकती थी। पुराने रूसी संन्यासवाद के वकिास के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण था कि थयिोडोसयिस के अधीन, तपस्या की माँगें व्यावहारकि पादरीय कर्तव्यों के साथ-साथ चलें, क्योंकि केवल इसी तरह से संन्यासी समुदाय एक नश्चिति मानक बनाए रख सकता था।

थयिोडोसयिस के समय में, कीव केव्स मठ का एक भकि्षु अपना दनि प्रार्थना और शारीरकि श्रम में बताता था। थयिोडोसयिस की जीवनी से हमें पता चलता है कि मठ में प्रतदिनि मैटन्सि, द आवर्स और दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान कयिा जाता था। भकि्षु प्रार्थनाओं के बीच के अंतराल में शारीरकि श्रम करते थे; वे जूट के जूते और टोपी बुनते थे, जन्हिें वे फरि शहर में बेच देते थे, और उससे प्राप्त आय से मठ के लिए अनाज खरीदते थे। भकि्षु इस अनाज को स्वयं पीसते थे और उससे अपनी रोटी खुद बेक करते थे। वसंत और गर्मयिों में, भ्राता मठ के सब्जी उद्यान में काम करते थे। भोजन साधारण और कम था: सप्ताह के दनिों में, आहार में मुख्य रूप से रोटी और पानी शामलि था; केवल शनविार और रवविार को, जब नयिम उपवास से छूट की अनुमति देता था, तब भाइयों के लिए दलयिा या जई का सूप पकाया जाता था। लेकनि अक्सर भाइयों के पास न तो दलयिा होता था और न ही रोटी। वे भोजनशाला में एक साथ खाते थे, और थयिोडोसयिस ने उन्हें सूखी रोटी को छोड़कर, कोई भी भोजन अपनी कोठरी में वापस ले जाने से सख्त मनाही कर रखी थी। वे वशिष रूप से लेंट और पवत्रि सप्ताह के दौरान बहुत कड़ा उपवास करते थे[45] ।

थयिोडोसयिस के मठवासी समुदाय की भावना नकिोला स्वयितोशा की कहानी में सबसे अच्छी तरह से व्यक्त हुई, जसिे कीव की गुफाओं के पैटेरकिॉन में शामलि कयिा गया था। नकिोला स्वयितोशा चेरनगिोव के राजकुमार स्वयितोस्लाव दावदिोवचि थे, जो ग्रैंड प्रसि यारोस्लाव के परपोते थे। 1106 में, वे कीव की गुफाओं के मठ की बंधुत्व में शामलि हो गए। पेटेरकिॉन उनकी तपस्वी जीवन को वशिष रूप से गंभीर शब्दों में वर्णति करता है। वनिम्रता से परपिूर्ण, नकिोला स्वयितोशा ने एक साधारण नवसखिुआ द्वारा कएि जाने वाले मठ के कार्यों से खुद को नहीं हटाया: पहले उन्होंने तीन साल तक रसोई में काम कयिा, और केवल चर्च में दव्यि सेवा में शामलि होने के लिए ही बाहर नकिले; फरि उन्होंने अगले तीन साल तक मठ के द्वारपाल के रूप में सेवा की; और बाद में उन्होंने भोजनशाला में अन्य भकि्षुओं की सेवा की। अनेक वर्षों तक आज्ञापालन में परश्रिम करने के बाद ही, उन्होंने मठाधीश की आज्ञा से अपने लिए एक छोटा सा कोठरा बनाया। समकालीन लोगों ने बताया कि स्वयितोशा ने वहाँ कभी अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाया: उनके पास हमेशा कोई न कोई काम रहता था; वे वशिष रूप से मोटे सूते से अपना मठीय चोगा बुनते थे। यीशु की प्रार्थना ('हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मुझ पापी पर दया करो') कभी भी उनके होठों से नहीं छूटी – रूसी संतों की जीवनी में, नकिोला स्वयितोशा को अवरिाम यीशु की प्रार्थना का अभ्यास करने वाले पहले व्यक्ति के रूप में

---

[43] पेटेरकिॉन (1911)। पृ. 14–56; तुलना करें: चागोवेत्स और फेदोतोव के कार्य।

[44] थयिोडोसयिस की शकि्षाएँ: पोनोमारेव 1 में; शकि्षाओं की पहचान पर, तुलना करें: शखमातोफ, IORAS, 1893 में, पृष्ठ 827–33; नकिोल्स्की। 10वीं और 11वीं शताब्दी के रूसी लेखकों और उनके कार्यों की एक कालानुक्रमकि सूची के लिए सामग्री। सेंट पीटर्सबर्ग, 1906। पृ. 157–166.

[45] पेटेरकि (1911)। पृ. 26, 27, 29, 39, 41, 43। लव्हर क्रॉनकिल, वर्ष 6559, 6582, 6583, 6599, 6604 के अंतर्गत; गोएट्ज़। दास कीवर होहेलेनक्लोस्टर।

दर्ज कयिा गया है। उन्होंने 36 वर्षों तक मठ में तपस्या का जीवन जयिा और *114243 में* उनका नधिन हो गया / *उनके भाई, राजकुमार इज़्यास्लाव दावदोवचि, नकिोला स्वयितोशा की कमीज़ पहनने से एक गंभीर बीमारी से ठीक हो गए थे। पेचेरस्क मठ में प्रवेश करने पर, नकिोला ने अपनी सारी राजसी संपत्त गिरीबों में बाँट दी*[46] /

संत थयिोडोसयिस का जीवन हमें मठ और कीव दोनों में उनके प्रत महिान सम्मान के कई उदाहरण प्रदान करता है। ईसाई आदर्श को साकार करने के अपने संघर्ष में, उन्होंने महान और छोटे, अमीर और गरीब के बीच कोई भेदभाव नहीं कयिा। उन परस्थितियिों में लोगों के बीच सामाजकि न्याय और आंतरकि एकता की भावना ने समाज के ईसाईकरण में योगदान दयिा। मठाधीश की ईसाई दृढ़ता, जो स्वयितोस्लाव के साथ एक कड़वे और लंबे ववािद के दौरान स्पष्ट थी—जन्हिोंने न्याय को कुचलते हुए अपने बड़े भाई, ग्रैंड प्रसि इज़्यास्लाव को कीव से नर्विासति कर दयिा था—का समाज पर वशिेष रूप से प्रभावशाली प्रभाव पड़ा होगा। पेचेर्स्क मठ और उसके भ्राताओं को उस लापरवाह राजकुमार की कृपा से वंचति कर दयिा गया; महान नकिोन दूसरी बार मठ छोड़कर कई वर्षों के लिए त्मूतराकान गए, उस मठ में जहाँ उन्होंने पहले स्थापना की थी। केवल थयिोडोसयिस ने कोई डर नहीं दखिाया और राजकुमार को यह वशि्वास दलिाया कि वह गलत था।

२. १२वीं और १३वीं शताब्दयिों में मठवासी जीवन

1058 में, या उससे कुछ पहले, थयिोडोसयिस पेचेरस्क मठ में आए; 1062 में उन्हें मठाधीश चुना गया, और 12 साल बाद - 3 मई 1074 को उनकी मृत्यु हो गई। इस दौरान, एंथनी की गुफा में शरण लेने वाले संन्यासयिों का छोटा समूह एक बड़ी मठवासी समुदाय में बदल गया; मठ के भीतर कोठरयिाँ और महान चर्च का नर्मिाण कयिा गया। मठ ने अपनी भौतकि और धार्मकि-आध्यात्मकि वृद्ध मुख्य रूप से पवत्रि मठाधीश के परश्रिमों को श्रेय दी। उस समय पेचेरस्क मठ के महान आध्यात्मकि महत्व का सबसे अच्छा अनुमान 12वीं शताब्दी के अंत में बशिप साइमन (जो पहले मठ के एक भक्षिु और पेचेरस्क पैटरिकिॉन के सह-लेखक थे) द्वारा भक्षिु पॉलीकार्प को लखिे गए एक पत्र से लगाया जा सकता है: 'मुझे, पापी बशिप साइमन को, और इस कैथेड्रल चर्च, व्लादमिीर की भव्यता को, और सुडल के अन्य चर्चों को, जन्हिें मैंने स्वयं बनाया है, कौन नहीं जानता? वहाँ कतिने सारे शहर और गाँव हैं! और उस सारी भूम में दशांश एकत्र कएि जाते हैं। और इस सब पर हमारी दुष्टता का शासन है। मैं इस सब को त्याग देता, परन्तु वचिार करो कि अब मेरा पालन-पोषण करना कतिना बड़ा आध्यात्मकि कार्य है, और मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे शासन करने के लिए अनुकूल समय प्रदान करे। और प्रभु इस रहस्य को जानते हैं; मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैं शीघ्र ही इस सारी महमिा और सम्मान को गोबर समझूँगा, यदि मैं पेचेर्सक मठ के द्वार पर एक लकड़ी की तरह खड़ा रहूँ या लोगों के पैरों तले कुचला जाऊँ, या उस लाव्रा के सम्मानति द्वारों के बाहर एक टुकड़े बहरि लकड़ी की तरह पड़े रहना, या पेचेर्सक मठ में कचरे की तरह पैरों तले कुचले जाना - ये सांसारकि सम्मानों की तुलना में मेरे लिए एक बेहतर सम्मान होता। ईश्वर की माता के घर में एक दनि हजार वर्षों से अधकि मूल्य का है, और मैं पापी गांवों में रहने के बजाय वहाँ रहना पसंद करूँगा।" कीव केव्स मठ के पवत्रि मठाधीश न केवल अपने साथी संतों और समकालीनों के लिए, बल्कि पूरे पुराने रूसी मठ समुदाय के लिए भी आस्था का एक आदर्श बने। उनके व्यक्तत्वि में, पुराने रूसी तपस्वी भक्त को अपनी राष्ट्रीय अभव्यिक्त और तपस्या का आदर्श मापदंड मलिा। जब, एक नश्चिति अंतराल के बाद, पुराने रूसी मठवाद ने अपने सबसे बड़े वकिास को देखा, तो इसने तपस्या के अर्थ की अपनी समझ में संत थयिोडोरस के साथ एक आंतरकि संबंध बनाए रखा। कीव गुफा मठ के पहले दशकों की भावना उत्तरी रस के कई तपस्वयिों में जीवति रही।

थेओडोसयिस की मृत्यु के बाद, जन्हिोंने भाईचारे को उनके द्वारा प्राप्त सख्त सामुदायकि अनुशासन के स्तर पर बनाए रखने का प्रयास कयिा था, उनकी मठवासी मार्गदर्शन की प्रणाली में बदलाव आने लगे। कीव केव्स मठ, अन्य शहरी मठों की तरह, सांसारकि दुनयिा के साथ बहुत अधकि गुंथ गया था। एक ओर, इन संबंधों के कारण मठवासी जीवन का क्रमकि धर्मनरिपेक्षीकरण हुआ; दूसरी ओर, मठवासी समुदाय ने इस धर्मनरिपेक्षीकरण के वरिोध में, दनि-ब-दनि कठोर होते तपस्या के कई उदाहरण स्थापति कएि; कुछ मामलों में, तपस्या की इस तीव्रता ने भ्रम में पड़ने का कारण बना। कीव के शासक राजकुमार के साथ संबंध पेचेरस्क मठ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थे; मठ को, अन्य मठवासी समुदायों की तरह, राजकुमार की कृपा और अप्रसन्नता का हसिाब रखना पड़ता था। थयिोडोसयिस स्वयं, अपने महान अधकिार के साथ, राजकुमार के मनमाने रवैये का वरिोध करने में सक्षम थे, लेकनि उनके बाद सभी मठाध्यक्ष इतनी ऊंची मानक बनाए रखने में सफल नहीं हो सके। इन सभी परस्थितियिों ने मठवासी जीवन को प्रभावति कयिा, और बाद के समय में पेचेर्सक मठ के भ्राता थयिोडोसयिस के समय की तुलना में एक अलग

[46] पेटेरकि (1911)। पृ. 83–86; प्रसिलकोव। नबिंध। पृ. 246, 367; गोएट्ज़। पृ. 207।

रूप में दखिाई देते हैं। हमारे मन की आँखों के सामने कई हस्तयिों की एक शृंखला उभरती है: एकांतवासी और कठोर तपस्वी, शहीद और उपदेशक, दूरदर्शी और चमत्कारी। साथ ही, *पेटेरकिॉन* हमें तपस्या की अतकि उदाहरण दखिाता है, ऐसे व्यवहार के उदाहरण जो ईसाई जीवन की मौलकि आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते। वह पूर्व एकता, जो थयिोडोसयिस के मठ समुदाय की आधारशलि थी, अब बखिर रही है।

और इतहिासकार की दृष्टएिक और महत्वपूर्ण परस्थितिपिर ध्यान देती है: जैसे ही मठवासी जीवन की आंतरकि संरचना बदलती है, यह तुरंत पहले की तुलना में एक अलग आध्यात्मकि स्रोत से प्रेरणा लेना शुरू कर देता है। थयिोडोसयिस कनिोवयिा की भावना की तुलना फलिस्तीनी तपस्या से की जा सकती है। यह कोई संयोग नहीं था कि थयिोडोसयिस ने अपने भाइयों को दी गई अपनी शकि्षाओं में यूथमियिस और सावस के नामों का उल्लेख कयिा; सेंट सावस की लावरा या थयिोडोसयिस महान की कनिोनयिा के इन संतों और उनके चक्र के जीवन के तरीके ने सामुदायकि जीवन, वशिेष रूप से सामूहकि भोजन और प्रार्थना को शुरू करने में योगदान दयिा। थेओडोसयिस के लिए, यह मठवासी आदर्श स्टुडाइट नयिम से भी जुड़ा था, जो इसी तरह सामुदायकि जीवन के नयिमों के सख्त पालन की मांग करता था; दोनों नयिम, स्टुडाइट और सेंट सावस का नयिम, महान ईCappadocian[47] की शकि्षाओं में नहिति थे। हालांकि, 11वीं और 12वीं शताब्दी में मठ के संतों की तपस्या की अतशियोक्तिऔर *पेटेरकिॉन* में वर्णति, सीरयिाई तपस्वयिों या कुछ मस्रि के भकि्षुओं, साथ ही माउंट अथोस के 11वीं सदी के भकि्षुओं की याद दलिाता है, जनि्होंने अथोस के सेंट अथानासयिस द्वारा पेश कएि गए सामुदायकि नयिम का वरिोध कयिा और अपनी समझ के अनुसार खुद को बचाने की अपनी इच्छा में, कभी-कभी भ्रम में पड़ गए। पेटेरकिॉन में वर्णति वे तपस्वी जो अत्यधकि कठोर तपस्या में लप्ति थे, वे भी अपनी समझ से ही नर्दिेशति थे। केवल चुने हुए लोगों के लिए ही यह मार्ग मोक्ष का संकीर्ण मार्ग बना; अनुभवहीनों के लिए, वशिेष रूप से उन लोगों के लिए जो सामुदायकि जीवन के प्रशकि्षण से नहीं गुज़रे थे, यह नराशिा, संदेह और प्रलोभन का मार्ग था[48] ।

स्मोलेंस्क के अब्राहम का जीवन, जो पूर्व-मंगोल रूस के सबसे वशिष्टि व्यक्तयिों में से एक थे, उस युग के दौरान मठवाद के भीतर आंतरकि संकट को दर्शाता है। 12वीं शताब्दी में, स्मोलेंस्क में एक संक्षप्ति सांस्कृतकि पुनरुत्थान हुआ और उसने कीव को टक्कर दी। 1146 के तुरंत बाद स्मोलेंस्क में एक अमीर परविार में जन्मे अब्राहम ने उस समय की बहुत अच्छी शकि्षा प्राप्त की; यह संभव है कि वह ग्रीक भी जानता था। उनका स्मोलेंस्क के पास एक मठ में संन्यास ग्रहण कराया गया, जहाँ जॉन क्रसिोस्टोम, बेसलि द ग्रेट, एफ्रेम द सीरयिन की कृतयिों और सेंट थयिोडोसयिस ऑफ द केव्स के जीवन का अध्ययन करके उनकी तपस्वी प्रवृत्तयिाँ और भी मजबूत हुई होंगी, क्योंकि ये सभी वहाँ संरक्षति थे। अब्राहम ने वहाँ 20 या 30 साल बतिाए, कठोर संयम में रहते हुए और अपना समय प्रार्थना और, शायद, गूढ़ चंतिन में लगाया। अब्राहम के शष्यि और उनकी जीवनी के संकलनकर्ता, भकि्षु एफ्रेम, बताते हैं कि हलिारयिन, मठाधीश सव्वा और यूथमियिस जैसे महान फलिस्तीनी तपस्वयिों ने उनके आदर्श के रूप में काम कयिा। यह ववरिण, अब्राहम के जीवन के अन्य ववरिणों के साथ, यह सुझाव देता है कि वह फलिस्तीनी परंपरा का अनुयायी था, इस संबंध में उसकी तुलना संत थयिोडोसयिस से की जा सकती है। इग्नाटयिस, जो उस समय स्मोलेंस्क के बशिप थे, इस तपस्वी पर ध्यान दएि बनिा नहीं रह सके - और उन्होंने उसे एक हाइरोमोंक के रूप में नयिुक्त कयिा। यह 1197 के बाद हुआ। एफ्रेम आगे लखिते हैं कि अब्राहम हर दनि दैवीय पूजा (Divine Liturgy) करते थे, जसिके बाद वे हमेशा उपदेश देते थे। उनके शब्दों की शक्तिऔर वाक्पटुता से बड़ी संख्या में लोग उनके पास आते थे। अव्राम की लोकप्रयिता से मठ के मठाधीश और भकि्षुओं में ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न हो गया, जसिके परणिामस्वरूप अव्राम को उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। तब वह स्मोलेंस्क के होली क्रॉस मठ में चले गए और वहाँ अपना उपदेश और पादरी का कार्य जारी रखा। अपने प्रवचनों में अब्राहम मुख्य रूप से अंतमि न्याय के बारे में बोलते थे, जनिके लिए उन्होंने दो प्रतमिाएँ भी बनाई थीं। शायद उनका 'स्वर्गीय शक्तयिों पर प्रवचन' - जो पुराने रूसी वद्विान साहत्यि का एक दलिचस्प उदाहरण है - इसी अवधि का है। बड़ी प्रभावशीलता और पर्याप्त वाक्पटुता के साथ, वह यहाँ वशि्वासयिों के उद्धार, पश्चाताप और दुनयिा के नकिट आने वाले अंत पर चर्चा करते हैं। ऐसा करते हुए, अव्रामी खुद को पुरानी रूसी प्रलय संबंधी शकि्षाओं के एक उत्साही समर्थक के रूप में प्रकट करते हैं। हालाँकि, जल्द ही अपने नए पद पर भी, अव्रामी को ईर्ष्यालु प्रतद्विंद्वी और दुर्भावनापूर्ण लोग मलि गए जनि्होंने उस पर बशिप के सामने वधिर्म और वधिर्मी कतिाबें ('कबूतर की कतिाब', या 'गहरी कतिाब') पढ़ने का आरोप लगाया। इस मुकदमे में, जसिमें स्मोलेंस्क के राजकुमार का एक प्रतनिधिभी शामलि हुआ, यह पाया गया कि यह आरोप बदनामी थी; फरि भी, बदनामी

---

[47] तुलना करें: टप्पिणी 4; अब्रामोवचि। पृ. 133 आदि; श्नाइडर। थयिोडोर वॉन स्टुडयिोन उंड ज़ीन ज़ेएटाल्टर (1892)। पृ. 40.

[48] संत थयिोडोसयिस की तपस्वी परंपरा का प्रतनिधित्वि तपस्वयिों द्वारा कयिा जाता है: नकिोला स्वयितोशा, प्रोखोरस, ग्रेगरी, स्परिडिोन, और अलीपयिस; तुलना करें: पैटेरकिॉन। अध्याय 20, 27, 28, 31।

करने वालों द्वारा पैदा कए गए हंगामे को शांत करने के लए, बशिप ने अव्रामी को उस मठ में भेज दया जहाँ उन्होंने एक बार अपना संन्यासी जीवन शुरू कया था, और उन्हें दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान करने या आगंतुकों का स्वागत करने और उन्हें उपदेश देने से मना कर दया। जीवनी में कहा गया है क इस अन्याय के परणिामस्वरूप, स्मोलेंस्क पर तीव्र गर्मी और सूखे के रूप में ईश्वर का दंड पड़ा। जब बशिप ने उस नर्दिोष व्यक्त पर लगाई गई पाबंदी को हटा दया, तो अब्राहम की प्रार्थनाओं के उत्तर में बारशि हुई - और स्मोलेंस्क की भूम आपदा से बच गई। उस बशिप ने, जसिने वहाँ परमेश्वर की माता के सम्मान में एक मठ की स्थापना की थी, फर अव्रामी को उसका मठाधीश नयिुक्त कया। यह मठ भी, जल्द ही श्रद्धालुओं के लए एक तीर्थस्थल बन गया – लोग बड़ी संख्या में वहाँ उमड़ पड़े। अव्रामी ने अपने मठ का नेतृत्व कया, जहाँ उन्होंने केवल सत्रह महीने बताए, एक कठोर तपस्या के मार्ग पर। जैसा क भकि्षु एफ्रेम बताते हैं, उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से आत्मा के संचय और अंतम न्याय के चंतन के लए समर्पत कर दया। तपस्या और रहस्यमय प्रथाओं में डूबे हुए, अब्राहम का 1219 या 1220 में नधिन हो गया।[49]

अब्राहम का जीवन, जो उनकी मृत्यु (लगभग 1237) के तुरंत बाद उनके शष्यि, भकि्षु एफ्रेम द्वारा संकलत कया गया था, 12वीं सदी के लए एक मूल्यवान स्रोत है, ठीक उसी तरह जैसे संत थयिोडोसयिस का जीवन 11वीं सदी के लए है। अब्राहम के आसपास का आध्यात्मक परविेश कीव पैट्रकिॉन की गुफाओं से परचति परविेश से कुछ समानताएँ रखता है। बेशक, कोई यह मान सकता है क मिंगोल आक्रमणों से पहले, पुराना रूसी मठवाद उस समय तक पहले ही पतन के दौर में प्रवेश कर चुका था। हालाँक, यह नहीं भूलना चाहए क इसका कारण स्वयं मठवाद में नहीं था—जो उस समय रस में अभी भी एक अपेक्षाकृत नई घटना थी—बल्क उस समय प्रचलत राज्य, राजनीतक और धार्मक जीवन की परस्थितियों में था। संन्यासवाद की आंतरक परपिक्वता और शक्त कई वर्षों की अथक आध्यात्मक मेहनत पर टकी होती है, और पुराने रूसी संन्यासी को अभी तक ऐसी प्रशक्षिण प्राप्त करने का समय नहीं मला था। थयिोडोसयिस का युग बहुत संक्षप्ति था, और उसका प्रभाव संन्यासी भाईचारे की केवल एक या दो पीढ़यिों तक ही रहा; रूसी मठवाद ने अभी तक मठवासी जीवन के पूर्ण तपस्वी अनुभव को आत्मसात नहीं कया था, और न ही उसने सामुदायक जीवन के मूल सद्धिांतों में महारत हासल की थी। पवत्रि पतिाओं के तपस्वी लेख इस बात की गवाही देते हैं क यह प्रक्रयिा कतिनी धीमी गत से होती है, आध्यात्मक अभ्यास में रुकावट से क्या नुकसान हो सकता है, और मठ कतिनी आसानी से सांसारकिता का शकिार हो सकते हैं। प्राप्त ऊँचाइयों को बनाए रखने के लए, मठवाद को न केवल एक सुस्थापत तपस्या परंपरा की, बल्क उस परंपरा के जीवत वाहकों की भी आवश्यकता होती है जो मठाधीशों की नई पीढ़यिों को उस परंपरा की भावना में शकि्षत करें—जैसा क पश्चमि में बहुत कम जाने-माने ऑर्थोडॉक्स बुजुर्ग करते हैं—और जो उनके उत्तराधकिारी बनने के लए नए आध्यात्मक मार्गदर्शकों को संवारें। फर भी यह स्पष्ट रूप से अनुपस्थत था, क्योंक अपनी सभी व्यक्तगित आध्यात्मकिता और धार्मकिता के बावजूद, संत थयिोडोसयिस ने तपस्यावादी वशि्वदृष्टकिोण का कोई 'वद्यिालय' स्थापत नहीं कया - न तो सामान्य रूप से पूरे मंगोल-पूर्व मठवासी समुदाय के लए, और न ही वशिेष रूप से कीव केव्स मठ के लए। परणिामस्वरूप, उस युग के मठवासी जीवन में, हमें 'सुवर्ण मध्यम' नहीं दखिाई देता - सख्त सामुदायक जीवन, सेनोबटिकि जीवन, संन्यासी का पहला और सबसे महत्वपूर्ण वद्यिालय: इसके बजाय, या तो अत्यधकि तपस्या के कारनामे थे या मठवासी जीवन का धर्मनरिपेक्षीकरण था।

संत थयिोडोसयिस ने अपने जीवन के माध्यम से मठवासी व्यवस्था की कुलीनता और ईसाई समाज के लए इसकी आवश्यकता को प्रदर्शत कया, और वह स्वयं नव-धर्मांतरत लोगों के लए तपस्या की सद्गुण का एक उदाहरण थे; साथ ही, वह रूसी मठवाद की तुलना में सामान्य रूप से नए रूसी ईसाई धर्म के अधकि मूर्त रूप थे।

12वीं सदी में मठवाद के भीतर के आंतरक वभिाजन की पुष्ट एक बशिप की कृतयिों से भी होती है, जो शायद पुराने रूसी तपस्यावाद के सबसे बेहतरीन पैरोकारों में से एक थे, लेकन दुर्भाग्य से, इसके संस्थापक नहीं थे। मैं तुरोव के बशिप सरिल, 'रूसी क्रसिोस्टोम' का उल्लेख कर रहा हूँ, जन्हिें उनके उपदेशों के कारण यह नाम मला था, जो एक उच्च काव्यात्मक उत्साह से ओत-प्रोत थे। उनका जन्म 1130 में हुआ था और 1182 के कुछ समय बाद उनकी मृत्यु

---

[49] स्मोलेंस्क के सांस्कृतकि उत्थान पर, देखें नकिोल्स्की। मेट्रोपॉलटिन क्लेमेंट स्मोल्याटचि के साहत्यकि कार्यों पर (1892)। पृ. 138; लाव्रोव्स्की। पुराने रूसी स्कूलों पर (1854)। पृ. 49; क्ल्यूचेव्स्की। पुरानी रूसी जीवनी-साहत्यि (1871)। पृ. 54। अव्रामयि पर: रेडकोव। उद्धृत कृत; फेदोतोव। उद्धृत कृत, में: प्राव. म. 2 (1930); मकारयि। 3. पृ. 64–67, 205–210। 'स्वर्गीय शक्तयिों पर एक ग्रंथ' (A Treatise on the Heavenly Powers), 'प्रोसीडग्सि ऑफ द एकेडमी ऑफ साइंसेज' (Proceedings of the Academy of Sciences) में: 9 (*1860–61) / पृ. 188 ff.; तुलना करें: वलिस्किी, 'सेंट बेसलि द न्यू का जीवन' (The Life of St Basil the New), 1 (1913) / पृ. 311; वेसेलोव्स्की, ए. एन. Studies in the Field of Russian Ecclesiastical Poetry (1889). पृ. 121; इसके अलावा: शेव्रीरेव. History of Russian Literature. 3 (1858). पृ. 15; बुस्लाएव. Historical Essays on Russian Folk Literature and Art. 2. पृ. 119.*

हो गई। अपने संन्यासी जीवन की शुरुआत में, टुरोव के बोरसि और ग्लेब मठ में एक भक्षिु के रूप में, वे अपने जीवन की कठोरता और अपनी तपस्या के लिए प्रसद्धि थे, जसिमें एक स्तंभ में रहना भी शामलि था; अपने समय के लिए, वे एक सुशक्षिति भक्षिु थे। बाद में (1162), सरिील को तुरोव का बशिप चुना गया। उनके अन्य कार्यों में से, तीन पत्र बचे हुए हैं जनिमें उन्होंने मठवासी जीवन पर वचिार कयिा है। हालांकि ये पत्र, जो वशिषि्ट व्यक्तयिों को संबोधति हैं, थयिोडोसयिस की उपर्युक्त शक्षिाओं से अलग वशिेषताओं वाली हैं (धर्मशास्त्रीय रूप से, वे उच्च स्तर की हैं और वषिय पर एक सैद्धांतकि चर्चा का गठन करती हैं), फरि भी वे उस समय के संन्यासवाद की स्थतिि में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। कीव केव्स मठ के मठाधीश बेसलि (1182) को लखिा गया पत्र, मठवासी जीवन के कुछ पहलुओं पर वशिेष प्रकाश डालता है। उदाहरण के लिए, इससे हमें पता चलता है कि उस समय महान स्कीमा के महत्व के बारे में वचिार पूरी तरह से स्पष्ट नहीं थे।

अब्राहम की जीवनी में भी, हमें आध्यात्मकि पतिा के पद के नशिान मलिते हैं, जो संत के सभी कार्यों में स्पष्ट हैं, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से काले चोगा पहने संन्यासी एफ्रेम के साथ उनके संबंधों में, लेकनि उन अन्य श्रद्धालुओं के साथ भी जनि्होंने उनकी आध्यात्मकि मार्गदर्शन मांगी – यह मठ की दीवारों के बाहर आध्यात्मकि पतिा के पद का एक उदाहरण था, जो 18वीं सदी के आध्यात्मकि पतिाओं की याद दलिाता है। सरिील की कृति *द टेल्स ऑफ़ द ब्लैक-रोब्ड ऑर्डर* स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि वह भी वृद्ध (elder) के पद को एक तपस्वी और मठवासी संस्था के रूप में समझते थे[50] ।

दुर्भाग्य से, हमारे पास 11वीं-12वीं शताब्दी में एक मठ में रोजमर्रा की जदिगी का वर्णन करने वाली बहुत कम सामग्री है। थयिोडोसयिस का जीवन उनके समय के मठवासी जीवन की कल्पना करने का कुछ आधार प्रदान करता है, लेकनि मुख्य रूप से, यदि पूरी तरह से नहीं तो, मुख्य रूप से पेचेर्सक मठ के भीतर ही। बाद के काल और अन्य मठों के बारे में हमारी जानकारी काफी खंडति है। इस संबंध में अब्राहम का जीवन भी बहुत जानकारीपूर्ण नहीं है, क्योंकि इसके लेखक ने स्वयं को अब्राहम के अपने जीवन की घटनाओं का वर्णन करने तक ही सीमति रखा है।

जहाँ तक मठ के प्रशासन का सवाल है, हमारे पास इस पर काफी वशि्वसनीय सामग्री है। नयिम के अनुसार, मठाधीश का चुनाव स्वयं मठवासी समुदाय द्वारा कयिा जाता था। बाद में, नव-नरि्वाचति मठाधीश की नयिुक्ति की पुष्टि एक बशिप या मेट्रोपॉलटिन द्वारा की जाती थी। राजकुमारों द्वारा स्थापति मठों - तथाकथति 'क्टीटर' मठों - की स्थतिि अलग थी, जो काफी हद तक राजकुमार पर नरि्भर थे। इनमें, मठाध्यक्ष की नयिुक्ति और बर्खास्तगी पूरी तरह से क्टीटर - यानी राजकुमार - के हाथ में होती थी। यही बात बशिपों द्वारा स्थापति मठों पर भी लागू होती थी। व्यावहारकि रूप से, राजकुमार नयिुक्ति के लिए बशिप को अपना उम्मीदवार प्रस्तावति करता था। बशिप द्वारा ऐसे प्रस्ताव को अस्वीकार करना अत्यंत दुर्लभ था। यद्यपि पेचेर्स्क मठ में, सद्धिांत रूप में, मठाध्यक्ष का चुनाव स्वयं मठीय समुदाय का वशिेषाधकिार बना रहा, पैटेरकिॉन में इस बात के प्रमाण हैं कि ये चुनाव अक्सर बाहरी प्रभाव के बनिा नहीं होते थे। इसके अलावा, *पेटेरकिॉन* इस बात की गवाही देता है कि भक्षिु हमेशा मठाधीश से संतुष्ट नहीं रहते थे और अक्सर उनकी बर्खास्तगी की मांग करते थे। जब थयिोडोसयिस ने अपनी मृत्युशय्या पर मठ समुदाय से भक्षिु जेम्स को नए मठाधीश के रूप में चुनने का सुझाव दयिा, तो भक्षिुओं ने उनकी सलाह मानने से इनकार कर दयिा क्योंकि जेम्स कसिी दूसरे मठ से पेचेरस्क मठ में आए थे। तब थयिोडोसयिस ने अपने उत्तराधकिारी के रूप में एक अन्य उम्मीदवार - स्टीफन को नामति कयिा। भाइयों ने उन्हें मठाध्यक्ष चुनने के लिए सहमतिव्यक्त की। हालाँकि, स्टीफन (जो 1074 से 1078 तक मठाध्यक्ष रहे) को भाइयों की असंतोष के कारण जल्द ही पदच्युत कर दयिा गया और उन्हें मठ छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। उनके उत्तराधकिारी महान नकिोन (1078–1088) थे, जनि्हें मठवासी समुदाय ने चुना था। यह तथ्य कि चुनाव स्वयं कभी-कभी बनिा रगड़ के नहीं होते थे, 1182 में पादरी बेसलि को मठाध्यक्ष चुने जाने की कहानी से स्पष्ट होता है। पैरशि पादरयिों को मठाध्यक्ष के रूप में नयिुक्त कए जाने का एक और उदाहरण 1112 में प्रोकहोर का चुनाव था। स्वाभावकि रूप से, दोनों ही मामलों में, पैरशि पादरयिों ने मठाध्यक्ष नयिुक्त होने से पहले मठीय संन्यास की शपथ ली[51] ।

---

[50] कालायदोवचि। 12वीं सदी के रूसी साहत्यि के स्मारक (1821)। पृ. 102–131 (दो पत्र); तीनों पत्र इस में: हमारे पवत्रि पतिा सरिलि, तुरोव के बशिप, के कार्य (1880)। पृ. 90–127; स्वयं सरिलि पर, देखें: परचिय, में: कृतयिाँ; गोलुबस्कि। खंड 1, भाग 1 (दूसरा संस्करण)। पृ. 797; पोनोमारेव। खंड 1। पृ. 98 और बाद के पृष्ठ; पैटेरकिॉन (1911)। पृ. 28।

[51] Golubinsky. 1. 1 (दूसरा संस्करण). पृ. 743; Shakhmatoff. Studies. पृ. 437–438; Priselkov. Essays. पृ. 215 ff.; Paterik (1911). पृ. 27, 53, 57; Makariy. 3. पृ. 101. ktitor के अधकिार पर: देखें Troitsky, I. 'The Right of Ktitor in Byzantium and in Serbia under Nemanja', in: Glas Srpske Akademije Nauk (1935). 168 (सेरबो-क्रोएशयिाई में).

मठ का प्रशासन मठाधीश के हाथों में केंद्रित था; हालाँकि, यदि मठ किसी संरक्षक द्वारा स्थापित किया गया था, तो मठाधीश को अपने निर्णयों में संरक्षक की इच्छाओं को ध्यान में रखना पड़ता था। यदि मठाधीश एक कठोर तपस्वी और एक सुस्थापित मठवासी अनुशासन का उत्साही समर्थक था, तो उसका कार्य विशेष रूप से कठिन था, क्योंकि उसे मठवासी नियम के सख्त पालन और राजकुमार की इच्छा के बीच संतुलन बनाना पड़ता था। मठ पर राजकुमार के अधिकार ने इसके धर्मनिरपेक्षीकरण में योगदान दिया, जो उस अधिकार पर मठ की भौतिक निर्भरता में भी स्पष्ट था। राजकुमार द्वारा दिए गए दान ही मठों की आजीविका का मुख्य स्रोत थे। इसके अतिरिक्त निजी व्यक्तियों, बिशपों, अमीर व्यापारियों और अन्य परोपकारियों द्वारा चढ़ावे भी आते थे...[52]

इसके बावजूद, मठों की भौतिक संपत्ति ने उन्हें अपने सामाजिक मिशन को पूरा करने में मदद की। 'जीवन संतों थियोडोसियस और कीव की गुफाओं के पाटेरिकॉन' में, हमें कीव की गुफाओं के मठ में फल-फूल रहे परोपकार के कई उदाहरण मिलते हैं, । सबसे अमीर मठ होने के कारण, कीव केव्स मठ 11वीं-12वीं शताब्दी के अन्य मठों की तुलना में बहुत बड़े पैमाने पर परोपकारी कार्य करने में सक्षम था। मठ आंतरिक मिशन के लिए भी बहुत महत्व रखता था। यह विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन मठ की दीवारों के बाहर एक भिक्षु का काम अनिवार्य रूप से मठवासी जीवन से ध्यान भटकाता था। प्राचीन रूस में, केवल भिक्षुओं को ही श्रद्धालुओं के पाप-स्वीकार सुनने का अधिकार था। आध्यात्मिक पिता न केवल आध्यात्मिक जीवन में एक मार्गदर्शक, बल्कि रोजमर्रा के मामलों में एक सलाहकार के रूप में भी कार्य करते थे। इसने यह सुनिश्चित किया कि मठ समुदाय का सामाजिक संबंधों पर काफी प्रभाव रहा, लेकिन साथ ही इसने मठवाद को इन संबंधों में खींच लिया और कभी-कभी इसके अवांछनीय परिणाम होते थे। प्राचीन रूस में, आमतौर पर आध्यात्मिक पिता से परामर्श करने और उनकी उपस्थिति में वसीयत तैयार की जाती थी; कभी-कभी, कोई साक्षर पादरी व्यक्तिगत रूप से अपने आध्यात्मिक पुत्र की अंतिम इच्छाओं को दर्ज करता था और इस प्रकार वसीयतकर्ता की वसीयत को प्रभावित कर सकता था। यह स्पष्ट है कि किसी मठ के लिए यह कितना महत्वपूर्ण था कि उसका मठाधीश या कोई अन्य प्रभावशाली भिक्षु राजकुमारों या अमीर व्यक्तियों का आध्यात्मिक पिता बने और मठ के लाभ के लिए अपने पद का उपयोग कर सके। फिर भी, यह 'अंधा पक्ष' उस समय के समाज पर पादरियों के गहरे और लाभकारी प्रभाव से भी जुड़ा हुआ था। उपरोक्त स्मोलेंस्क के अब्राहम का उदाहरण दर्शाता है कि आध्यात्मिक रूप से प्रतिभाशाली एक कन्फेशनर का श्रद्धालुओं पर कितना बड़ा प्रभाव हो सकता था; कई अन्य स्रोत भी इसकी पुष्टि करते हैं[53] ।

३. मठ समुदाय की धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ

मठ समुदाय के भीतर आंतरिक विभाजन का एक और कारण यह था कि उसने राष्ट्रीय और सांस्कृतिक प्रबोधन का विशाल कार्य अपने ऊपर ले लिया था।

पुराना रूसी साहित्य, जो किसी न किसी हद तक धार्मिक और नैतिक प्रकृति का है, मठवासी परिवेश में उत्पन्न हुआ था। सभी कृतियाँ पूरी तरह से मौलिक नहीं थीं, लेकिन पुराने रूसी मठवासी लेखकों में आम तौर पर कुछ पूरी तरह से नया बनाने की इच्छा कम ही होती थी। इसका कारण आंशिक रूप से धार्मिक हलकों में शिक्षा की कमी, और आंशिक रूप से सामान्य रूप से किताबों और विशेष रूप से धार्मिक ग्रंथों के प्रति गहरे सम्मान में निहित था, क्योंकि उनमें दैवीय सत्य निहित है, और कोई भी मानवीय हाथ उनमें अपनी ओर से कुछ जोड़ने की हिम्मत नहीं करता। और फिर भी, पुराने रूसी संतों ने रचनात्मकता के निशान वाले काफी संख्या में कार्यों का उत्पादन किया।

हम यहाँ पुराने रूसी साहित्य की संपूर्ण समीक्षा नहीं कर सकते। इस साहित्य के सृजन में पुराने रूसी भिक्षुओं की विशेष भूमिका पर केवल जोर देना और इसकी दो विधाओं: पुराने रूसी उपदेश और वृत्तांत पर अधिक विस्तार से चर्चा करना ही पर्याप्त होगा।

पहला मठ व्यवस्था की धार्मिक और नैतिक सेवा का गवाह है, जबकि दूसरा इसकी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक सेवा का।

यह संभव है कि 11वीं-13वीं सदी के प्रवचन, जब उन्हें ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो पूरी तरह से मौलिक नहीं थे। उस काल के लिए इससे भी अधिक महत्वपूर्ण उनकी सामग्री और उसमें व्यक्त ईसाई

---

[52] पेटेरिकॉन (1911)। पृ. 24–26; गोएट्ज़। पृ. 128–134; लावर. वृत्तांत, वर्ष 1051, 1074, 1086, 1096, 1108 और अन्य के अंतर्गत; पेटेरिकॉन (1911)। पृ. 39, 41, आदि; इपाटियेव क्रॉनिकल, वर्षों 1154, 1158, 1187, 1113, आदि के अंतर्गत; गोएट्ज़, पृ. 165. सेंट बार्लाम ऑफ खुटिन (1112) की वसीयत के अंश भी देखें, जो एस. हर्बरस्टीन के प्रसिद्ध ग्रंथ *रेरम मोस्कोविटिकारम कमेंटैरियि* में संकलित हैं। एंटवर्पियाई, 1557। पृ. 29–30।

[53] स्मिरनोव। द ओल्ड रशियन टेस्टामेंट (1914)। अध्याय 1।

वशि्वदृष्टकिोण का लोगों पर पड़ने वाला प्रभाव था। ईसाई दृष्टकिोण से, प्रवचन मानव स्वभाव की कमजोरी के बारे में बताते हैं, अंधवशि्वासों और पापों की नदिा करते हैं, और मोक्ष का मार्ग दखिाते हैं। रूस में ईसाई धर्म के शुरुआती दनिों से ही रूसी लोगों की धार्मकि वशि्वदृष्ट में अंतमि समय का सद्धिांत एक धागे की तरह गुंथा हुआ है। गुफाओं के थयिोडोसयिस और स्मोलेंस्क के अब्राहम को पहले ही उपदेशक के रूप में उल्लेखति कयिा जा चुका है। संत अब्राहम के 'स्वर्गीय शक्तयिों पर प्रबंध' में एक वशिष्टि अंतमितावादी (eschatological) स्वाद है। थयिोडोसयिस की तरह, जन्हिोंने मठवासी समुदाय को मठवाद के मूल सद्धिांतों पर उपदेश दयिा था, नोवगोरोड के बशिप ल्यूक झद्यिाता († 1059) ने भी अपनी मंडली से जीवन के ईसाई मूल सद्धिांतों के प्रत वफिादार रहने की मांग की। तुरोव के बशिप सरिलि, जनिके नौ उपदेश संरक्षति हैं, ने एक अलग तरीके से उपदेश दयिा। वे अपने समकालीनों की तुलना में संस्कृत और शक्षिा के उच्चतर स्तर पर थे। उन्होंने धार्मकि वर्ष के पर्वों पर जो उपदेश दए - जनिमें से सबसे उत्तम उपदेश आरोहण के पर्व पर दयिा गया था - वे धर्मशास्त्रीय रूप से गहरे थे और, यद्यपि शायद उनके अनुयायियों के लए पूरी तरह से समझ में नहीं आते थे, वे पवत्रि धर्मग्रंथ और पवत्रि पताओं के उनके गहन ज्ञान, और वास्तव में उनकी वद्विता, जो उस समय के लए असाधारण थी, की गवाही देते हैं। वे उच्च साहत्यिकि गुणवत्ता के हैं, उनमें रूपक और दृष्टान्त शामलि हैं, और वे सरीेल को बाइज़ेंटाइन धार्मकि संस्कृत के एक पुरुष के रूप में चत्रिति करते हैं[54] ।

इस संस्कृत का एक अन्य प्रतनिधि कीव के मेट्रोपॉलटिन क्लेमेंट (1147–1154, † 1164) थे। उनका जन्म स्मोलेंस्क में उस समय हुआ था जब शहर एक सांस्कृतकि पुनर्जागरण का अनुभव कर रहा था। वह रूसी थे, और उन्हें ग्रैंड प्रंसि द्वारा कीव का मेट्रोपॉलटिन चुना गया था; हालाँकि, वह इस पद पर लंबे समय तक नहीं रहे, क्योंकि कॉन्स्टेंटनिोपल का पैट्रआर्कट हमेशा यह सुनश्चिति करना चाहता था कि मेट्रोपॉलटिन का पद एक ग्रीक के पास रहे। क्लेमेंट एक वद्विान व्यक्त थे, जनिके पास न केवल धर्मशास्त्रीय बल्कि शास्त्रीय दार्शनकि ज्ञान भी था – वे एक इतहिासकार[55] द्वारा 'द फलिॉसफर' उपनाम दए जाने वाले एकमात्र पुराने रूसी बशिप हैं। वे मुख्य रूप से प्रेस्बटिर थॉमस को लखि गए पत्र (Epistle to the Presbyter Thomas) के लेखक के रूप में जाने जाते हैं।

तुरोव के करिलि और क्लेमेंट दोनों 12वीं सदी के मठवासी क्रम से थे, एक ऐसा युग जब बाइज़ेंटाइन वद्विता दो सदयिों से रूसी धार्मकि हलकों को प्रभावति कर रही थी, और यह प्रभाव फलदायी हुए बनिा नहीं रह सकता था। लेकनि उनके एक और पूर्ववर्ती थे: नव-धर्मपरविर्तति लोगों के बीच एक प्रतभिाशाली उपदेशक, जन्हिोंने गहरी आस्था, वाक्पटुता का वरदान और प्रबल रूप से व्यक्त राष्ट्रीय चेतना को संयोजति कयिा था। ये कीव के मेट्रोपॉलटिन हलिारयिन थे।

एक प्राचीन वंशावलीकार, जो हमें बताता है कि हलिारयिन शुरू में बेरेस्तोवो के महल चर्च में एक पुरोहति थे (संभवतःएक हाइरोमोंक के रूप में सेवा करते हुए), उन्हें, जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा जा चुका है, 'एक अच्छे इंसान, वद्विान और उपवास के भक्त' के रूप में वर्णति करता है, लेकनि उनकी उत्पत्त के बारे में कुछ नहीं कहता। सबसे अधकि संभावना है कि गैर-रूसी हलकों - बुल्गारयिाई और ग्रीक - के साथ अपने नरिंतर संपर्क के कारण, हलिारयिन ईसाई धर्मशास्त्र की शक्षिा प्राप्त कर सके। फरि भी, हमारी कल्पना में, हलिारयिन केवल एक वद्विान ईसाई के रूप में नहीं दखिते। वह तपस्या की ओर गहरी प्रवृत्त वाले एक ईसाई थे; वास्तव में, वह पहले रूसी भक्षिु हो सकते हैं। हलिारयिन के जीवन के बारे में जानकारी की कमी, सामान्य रूप से रूसी संन्यासवाद की उत्पत्त से संबंधति अभलिेखों में मौजूद अंतरालों से जुड़ी हुई है। हम नहीं जानते कि उन्होंने तपस्या का मार्ग कहाँ शुरू कयिा। उन्होंने प्रार्थना और आध्यात्मकि चतिन के लए एक शांत स्थान पाने हेतु डनीपर नदी के कनिारे खुद एक छोटी गुफा खोदी; हो सकता है कि उन्हें 1037 और 1039 के बीच पुरोहति बनाया गया हो, और बाद में, 1051 में, ग्रैंड प्रंसि यारोस्लाव की इच्छा और लोगों की सहमत से, उन्हें कीव का मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त कयिा गया। एक प्रेस्बटिर के रूप में सेवा करते हुए, लगभग 1039 में, उन्होंने एक उपदेश दयिा था, जसिके कारण पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। यह उपदेश, जसि 'कानून और अनुग्रह पर उपदेश' के नाम से जाना जाता है, वाक्पटुता की एक सच्ची उत्कृष्ट कृत है, एक तथ्य जसि ई. ई. गोलुबस्कि की द्वारा भी स्वीकार कयिा गया था, जो अपने मूल्यांकन में सतर्क थे और रूसी धार्मकि इतहिास के संबंध में एक बड़े संशयवादी थे।

---

[54] टप्पिणी 50 देखें।

[55] नकिोल्स्की, एन. मेट्रोपॉलटिन क्लेमेंट स्मोल्यातचि, एक 12वीं सदी के लेखक की साहत्यिकि कृतयिों पर (1892)। एक और रूसी उपदेशक - व्लादमिीर के बशिप सेरापयिन († 1275) का भी उल्लेख कयिा जा सकता है, जो कुछ समय के लए कीव-पेचेरस्क लाव्रा के मठाधीश के रूप में कार्यरत थे; उनके प्रवचन (कुल पाँच) गहन और उच्च साहत्यिकि गुणवत्ता के हैं।

यह 'उपदेश' शायद चर्च का उपदेश नहीं था, क्योंकि इसकी सामग्री उस समय के आम श्रद्धालुओं के समझ से बहुत ऊपर की थी। यह संभव है कि हिलारियन ने इसे महा राजकुमार यारोस्लाव, मेट्रोपॉलिटन और दरबार के सामने प्रभु के रूपांतरण ([56]) के चर्च पर्व के अवसर पर दिया था।

'प्रवचन' की शुरुआत में, हिलारियन पुराने नियम ('विधि') की तुलना नए नियम ('अनुग्रह') से करते हैं; पुरानी वाचा केवल नई वाचा की तैयारी है; 'उपदेश' के दूसरे भाग में, वह राजकुमार व्लादिमीर के बारे में बात करते हैं, और उन्हें अपने लोगों को ईसाई धर्म के प्रकाश से प्रबुद्ध करने के लिए प्रशंसा करते हैं; 'उपदेश' का तीसरा भाग ईश्वर से एक प्रार्थना है, जो पूरी नई-नवपरिवर्तित रूसी भूमि की ओर से की गई है। अपने कार्य में, हिलारियन यह ऐतिहासिक-दार्शनिक विचार प्रस्तुत करते हैं कि दैवीय प्रबंध द्वारा निर्देशित विश्व इतिहास में, लोगों का एक उत्तराधिकार होता है जो ऐतिहासिक प्रक्रिया के केंद्र में होते हैं। ईश्वर द्वारा चुना गया इज़राइल, और उसका इतिहास तैयारी की एक अवधि, अर्थात् विधि के युग का प्रतिनिधित्व करते हैं; इसके बाद अनुग्रह का युग, ईसाई धर्म का युग, सत्य और मानव जाति के उद्धार का युग आता है। अतः राजकुमार व्लादिमीर अपनी इस उपलब्धि के माध्यम से रूसी लोगों को 'अनुग्रह के राज्य' में ले जाने के लिए प्रशंसा के पात्र हैं। हिलारियन विशेष रूप से व्लादिमीर के आध्यात्मिक स्वभाव के महत्व पर जोर देते हैं, जिसने उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित किया।

'प्रवचन' का दूसरा भाग हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हिलारियन की राष्ट्रीय और देशभक्ति की चेतना को व्यक्त करता है। व्लादिमीर ने मसीह में विश्वास ग्रीक मिशनरियों के उपदेश के परिणामस्वरूप नहीं किया, जैसा कि प्रो-ग्रीक कर्सुन किंवदंती [57] का दावा करती है, बल्कि आत्मा की एक आंतरिक आवश्यकता और नए विश्वास की सच्चाई में एक दृढ़ विश्वास के कारण किया।

हिलारियन के राष्ट्रीय और देशभक्तिपूर्ण विचार, और व्लादिमीर के धर्म परिवर्तन के संबंध में यूनान-समर्थक किंवदंती के प्रति उनका राष्ट्रीय-चर्च संबंधी विरोध, वही विचार था जो पूरे प्राचीन रूसी मठवासी समुदाय, विशेष रूप से गुफाओं के भाइयों के, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को व्यक्त करता था, और जिसे रूसी मठवासी समुदाय ने उत्साहपूर्वक स्वीकार किया था। ऐसे विचारों ने रूसी चर्च के रूसीकरण के विचार को मजबूत करने में योगदान दिया, जिसके परिणामस्वरूप ऐतिहासिक घटनाओं की एक श्रृंखला हुई जो रूसी चर्च के भीतर कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क की नीतियों के विरोध के अस्तित्व की ओर इशारा करती हैं। हिलारियन की राष्ट्रवादी भावनाएं शायद उन कारणों में से एक प्रमुख कारण थीं कि, 1051 में—जब बाइज़ेन्टियम के साथ उनके संबंध विशेष रूप से तनावपूर्ण हो गए थे—यरोस्लाव ने रूसी बिशपों की परिषद को हिलारियन को अभिषेक करने का आदेश दिया और उन्हें कीव के मेट्रोपॉलिटन के पद पर पदोन्नत किया, जो थियोपेम्प्टस की मृत्यु के बाद से खाली था। इस समय के बाद से, मेट्रोपॉलिटन हिलारियन का कोई रिकॉर्ड नहीं मिलता है; वह लंबे समय तक पद पर नहीं रहे: जब यारोस्लाव ने एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल के साथ सुलह की मांग की, तो हिलारियन को अपना पद छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा *(1054-55)* /

हिलारियन के बाद के जीवन का संबंध कीव केव्स मठ और उस समय के मठवासी समुदाय के इतिहास से जुड़ा है, विशेष रूप से इस मठ की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक गतिविधियों से, जो प्राचीन रस का आध्यात्मिक केंद्र बन गया था। हम हिलारियन की बाद की नियति को कीव केव्स मठ से जोड़ते हैं, क्योंकि हम प्रिसेलकोव की इस परिकल्पना से सहमत हैं कि थियोडोसियस के जीवन से 'महान निकोन' (या निकोन महान) और मेट्रोपॉलिटन हिलारियन एक ही व्यक्ति हैं[58] ।

हिलारियन-निकॉन जैसे असाधारण व्यक्तित्व को पुराने रूसी मठवाद के इतिहास से बाहर नहीं रखा जा सकता; प्राचीन रूस की राष्ट्रीय पहचान के प्रश्न की जांच करते समय उनका ध्यान केंद्र में होना चाहिए। राष्ट्रीय और सांस्कृतिक रचनात्मकता ने मठवासी समुदाय की आध्यात्मिक ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सोख लिया, और एक तरह से इसका शुद्ध तपस्या अभ्यास पर, विशेष रूप से कीव गुफाओं के मठ के भाइयों पर, नकारात्मक परिणाम हुआ। फिर भी यह ज्ञात नहीं है कि उस समय कीव रस के लिए कौन सा अधिक महत्वपूर्ण था: एक राष्ट्रीय रूसी

---

[56] निकोल्स्की। सामग्री (1906)। पृ. 75–76; प्रिसेलकोव। निबंध; पोनोमारेव। 1. पृ. 48–58; गोलुबिन्स्की। 1. 1 (दूसरा संस्करण)। पृ. 844; 'कानून और अनुग्रह पर एक उपदेश' में: पोनोमारेव। 1. पृ. 59–79.

[57] शखमातोफ़। द कुर्सुन लीजेंड ऑफ़ व्लादिमीर'स बैपटिज़्म (1906); वही। रिसर्च; पार्खोमेन्को। द बिगिनिंग्स ऑफ़ क्रिश्चियनिटी इन रस (1911); प्रिसेलकोव। नेस्टर द क्रॉनिकलर (1924)। पृ. 52, 74–77; तुलना करें: बाउमगार्टेन, एन. डी. सेंट व्लादिमीर एंड द कन्वर्जन ऑफ रूस (1932), में: *ओरिएंटालिया क्रिस्टियाना*. 79।

[58] प्रिसेल्कोव। 'मेट्रोपॉलिटन हिलारियन, निकोन के मठवाद में, एक स्वतंत्र रूसी चर्च के पैरोकार के रूप में', में: एस. एफ. प्लाटोनोव के सम्मान में संग्रह (1911)। पृ. 188–201; वही। निबंध; वही. नेस्टर द क्रॉनिकलर (1924); तुलना करें: शखमातोफ़. अध्ययन.

पहचान का नरि्माण या भकि्षुओं की दो या तीन पीढ़ियों का पालन-पोषण, जनिके वकिास को राज्य और सामाजकि परसि्थतियिों के धर्मनरिपेक्ष प्रभाव के कारण क्षतपिहुँची। बाद का इतहिास पहले वाले को अधकि महत्व देता है।

मेट्रोपॉलटिन पद से उनके पदच्युतकि बाद - जो 1051 के बाद और 1055 से ठीक पहले हुआ, जब वंशावलीकार पहले ही ग्रीक एफ्रेम को मेट्रोपॉलटिन कहता है - हलिारयिन एंथनी के पास गए, जो पुराने हलिारयिन की गुफा में रह रहे थे; और उस समय से, हलिारयिन को 'जीवन' (Life of St Theodosius) और 'कीव पेटेरकिॉन की गुफाओं' (Caves of Kiev Paterikon)[59] में नकिॉन महान के नाम से जाना जाता है। नाम परविर्तन का संबंध उनके द्वारा महान स्कीमा ग्रहण करने से है। नकिॉन ने तुरंत ही कीव गुफाओं के मठ के जीवन में एक वशिेष भूमकिा नभिाना शुरू कर दयिा। चूँकि एंथनी के पास पुरोहति का पद नहीं था, इसलएि नकिॉन नए भकि्षुओं को स्वीकार करते और उनका मुंडन करते थे। क्योंकि उन्होंने ग्रैंड प्रसि के दो अनुचरों का मुंडन कयिा था, नकिॉन प्रसि के क्रोध का शकिार हुए और उन्हें कुछ समय के लएि मठ छोड़ने के लएि मजबूर होना पड़ा। वह अज़ोव सागर के तट पर स्थति त्मूताराकान (ग्रीक: तमातरका) शहर के लएि रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने (1061 और 1067 के बीच) परमेश्वर की माता के सम्मान में एक मठ की स्थापना की; वे स्वयं वहाँ अधकि समय तक नहीं रहे, और 1068 तक वे कीव केव्स मठ में लौटने में सक्षम हो गए। 1068 और 1074 के बीच, नकिोन ने मठवासी समुदाय की आध्यात्मकि देखभाल में थयिोडोसयिस के मुख्य सहायक के रूप में कार्य कयिा। थेओडोरस के उत्तराधकिारी स्टीफन के अधीन एक संक्षपि्त अवधकि बाद—जनि्हें भाइयों के बीच असंतोष के कारण मठ छोड़ने के लएि मजबूर होना पड़ा—नकिॉन *को 1077-78 में मठाधीश चुना गया और उन्होंने 1088 में अपनी मृत्यु तक मठ का शासन कयिा। उनका दस-वर्षीय मठाध्यक्ष का कार्यकाल मठ के वकिास के इतहिास की सबसे महत्वपूर्ण अवधयिों में से एक था। उनके नेतृत्व में पत्थर के चर्च का नरि्माण जारी रहा; इसे आमंत्रति ग्रीक कलाकारों[60] द्वारा चत्रिों, नक्काशी और मोज़ाइक से सजाया गया था।*

लेकनि सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि पुरानी रूसी वृत्तांत की रचना थी - एक ऐसा कार्य जो वास्तवकि रूप से ईसाई और राष्ट्रीय रूसी भावना से ओत-प्रोत था। उस समय से, पुरानी रूसी मठ वृत्तांत-लेखन का केंद्र बन गया, और रूसी वृत्तांतकार की छवि भकि्षु की छवि से अवभिाज्य हो गई। परणिामस्वरूप, वृत्तांतों में नहिति वशि्वदृष्टि स्वभाव से ईसाई और तपस्वी है[61] । अपनी त्रासदी *बोरीस गोडुनोव* में, ए. पुश्कनि ने भकि्षु पमिेन के चरत्रि के माध्यम से पुराने रूसी वृत्तांतकार को एक सुंदर कलात्मक और ऐतहिासकि रूप से सटीक तरीके से चत्रिति कयिा है: पमिेन (दीपक की रोशनी में लखिते हुए):

एक और, अंतमि कथा –
और मेरी वृत्तांत समाप्त हो गई है,
ईश्वर द्वारा मुझे सौंपा गया कर्तव्य
मुझ जैसे पापी के लएि। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि कई वर्षों तक
प्रभु ने मुझे एक गवाह बनाया है
और मुझे लेखन की कला सखिाई;
एक दनि एक परश्रिमी भकि्षु
मेरी परश्रिमी, अनाम मेहनत को पाएगा,
वह अपनी मशाल जलाएगा, जैसा मैंने कयिा है –
और, पांडुलपियिों से युगों की धूल झाड़कर,
वह सच्ची कहानयिों की प्रतलिपिि करेगा,
ताकि ऑर्थोडॉक्स की संतानें
अपने मूल देश की वगित नयितिका,
और वे अपने महान ज़ारों का सम्मान करें
उनके श्रम, उनकी महमिा, उनकी भलाई के लएि –

---

[59] नोट 25 देखें।

[60] पेटेरकिॉन (1911). पृ. 21, 24, 33; प्रसिलकोव. नबिंध। पृ. 206, 235; गोलुबस्कि। खंड 1, संख्या 1। पृ. 687; खंड 1, संख्या 2। पृ. 776 (दूसरा संस्करण); शखमातोफ़। अध्ययन। पृ. 435.

[61] जॉर्जीव्स्की। मंगोल-पूर्व काल में रूसी लोगों द्वारा समझी गई ईसाई धर्म (1893); सुमत्सोव। मंगोल-पूर्व रूस में राष्ट्रीय आत्म-चेतना पर (1905); शखमातोव, ए. अध्ययन (1908); शखमातोव, एम. पुराने रूसी राजनीतकि वचिारों के इतहिास पर नबिंध। खंड 1। प्राग, 1927। प्राचीन रूसी वृत्तांतों का एक सामान्य अवलोकन यहाँ दयिा गया है: स्पेरेन्स्की। प्राचीन रूसी साहत्यि का इतहिास। खंड 1 (1914). पृ. 301–318; खंड 1 (1920). पृ. 325 ff.

और उनके पापों और अंधकारमय कर्मों के लिए,
वे विनम्रतापूर्वक उद्धारकर्ता से प्रार्थना करते हैं[62] ।

नकिोन के समय, एक वृत्तांत संकलति करने का काम शुरू हुआ। तथाकथति '1039 का वृत्तांत', जो कीव के मेट्रोपॉलटिन सी के ग्रीक-भाषी हलकों में संकलति कयिा गया था, को संशोधति और वसि्तारति कयिा गया[63] । इससे '1073 का वृत्तांत' का जन्म हुआ, जसिे मुख्य रूप से नकिोन ने लखिा था। इस वृत्तांत का एक अनुक्रम '1095 का वृत्तांत' था, जसिके संकलन में, कथाकार के रूप में प्रसद्धि भकि्षु नेस्टर ने प्रमुख भूमकिा नभिाई; यह '1095 का वृत्तांत' 'मूल रूसी वृत्तांत', या 'मूल कीव वृत्तांत' है, जो 1116 के पुराने रूसी वृत्तांत का आधार है। और 1116 का वृत्तांत ('बीते वर्षों की कथा'। – अनुवादक की टप्पिणी) प्रसद्धि लाव्रेन्टयिन (1377) और इपाटयिेव (15वीं सदी) वृत्तांतों, साथ ही सभी अन्य रूसी वृत्तांतों का आधार है।

नेस्टर का उदाहरण रूसी राष्ट्रीय वश्विदृष्टि को आकार देने में नकिॉन के कार्य के परणिाम को वशिेष रूप से अच्छी तरह से दर्शाता है। वैचारकि रूप से, नेस्टर नकिॉन के एक वफादार शष्यि थे। उन्होंने कीव गुफाओं के मठ में तब प्रवेश कयिा जब अबॉट स्टीफन अभी भी पद पर थे, अर्थात् 1074 और 1077 के बीच, लेकनि उनका साहत्यिकि उत्पादन मुख्य रूप से 11वीं शताब्दी के 80 और 90 के दशक का है। नेस्टर ने दो संतों की जीवन-कथाएँ भी लखिीं: पचेर्स्क पैट्रआर्कन का एक भाग, संत थयिोडोसयिस का जीवन, और पवत्रि राजकुमार बोरसि और ग्लेब का जीवन। बोरसि और ग्लेब का जीवन नेस्टर का पहला संतों की जीवन-कथा था; यह 11वीं शताब्दी के 80 के दशक की शुरुआत में प्रकाशति हुआ, यानी, पहले से ही नकिोन के समय में। लेखक का धार्मकि और राजनीतकि दृष्टकिोण वशिषि्ट राष्ट्रीय वशिेषताएँ रखता है; इसलिए, यहाँ नकिोन का प्रभाव नर्विवाद है। यह जीवनी दो भाइयों, राजकुमार बोरसि और ग्लेब, जो राजकुमार व्लादमिीर के छोटे बेटे थे, की हत्या का वर्णन करती है, जसिे उनके बड़े भाई, स्येतोपोलक, के आदेश पर अंजाम दयिा गया था। स्येतोपोलक द्वारा की गई इस अमानवीय कृत्य ने उनके समकालीनों पर गहरा प्रभाव डाला, और नवजात रूसी चर्च ने मारे गए राजकुमारों को शहीद के रूप में पूजना शुरू कर दयिा। बोरसि और ग्लेब का जीवन लोगों के बीच वशिेष रूप से पसंदीदा पठन सामग्री था। नेस्टर ने इसे मारे गए राजकुमारों के ईसाई सद्गुणों की प्रशंसा करने और साथ ही अपने राष्ट्रीय-रूसी सद्धिांत को प्रस्तुत करने के लिए लखिा था। इसके मूल में रस की एकता और राजकुमारों की वंशावली के भीतर ज्येष्ठता के अधकिार का वचिार नहिति है। यह वचिार नेस्टर ने थयिोडोसयिस के जीवन में (प्रसि स्वयिातोपोलक के साथ संत के ववािद के ववरिण में) स्पष्ट रूप से व्यक्त कयिा है। नेस्टर इस वचिार का एक उत्साही अनुयायी था, जसिने बाद में मॉस्को के मेट्रोपोलटिन्स की गतविधियिों में[64] इतनी वशिषि्ट वशिेषताएँ ले लीं।

यह तथ्य कि इस वचिार को न केवल कीव-पेचेरस्क लावरा के भाइयों के बीच बल्कि सामान्य रूप से मठवासी हलकों में भी मजबूत समर्थन मलिा, 'रूस के राजकुमार वोलोदमिरि की स्मृति और प्रशंसा' के रूप में ज्ञात संता-चरत्रिात्मक कृति से प्रमाणति होता है। 'मेमोरी एंड प्रेज़' की लेखकता पर ववािद है; एकमात्र बात जो नश्चिति रूप से नर्धिारति की जा सकती है वह है इसकी रचना की तारीख, जो 12वीं शताब्दी के पहले छमाही की है। गुमनाम लेखक 'कुर्सुन कविदंती' की ग्रीक-समर्थक अवधारणा को खारजि करता है; उसका धार्मकि और राजनीतकि वश्विदृष्टकिोण स्पष्ट रूप से राष्ट्रीय-रूसी चरत्रि का है[65] ।

कीव केव्स मठ के मठवासी वद्विानों की साहत्यिकि-ऐतहिासकि और संतों के जीवन-चरत्रि पर आधारति कृतयिों ने प्राचीन रूस की राष्ट्रीय पहचान के नर्मिाण में महत्वपूर्ण योगदान दयिा। 12वीं सदी के अन्य साहत्यिकि स्मारक, जैसे 'हेग्यूमेन डेनयिल द्वारा पवत्रि भूमि की तीर्थयात्रा' और 'इगोर की मुहमि की कथा', यह दर्शाते हैं कि राष्ट्रीय पहचान लोगों के दलिों में गहराई से जड़ें जमा चुकी थी। यह कहना कोई अतशियोक्ति नहीं होगी कि उभरते हुए रूसी राज्य की राष्ट्रीय पहचान को आकार देने का कार्य मुख्य रूप से और सर्वप्रथम पुराने रूसी मठवासी समुदाय

---

[62] पुश्कनि, ए. एस. बोरसि गोडुनोव.

[63] पुराने रूसी वृत्तों के उद्भव के इतहिास के लिए, देखें: शखमातोफ, ए. *रसिर्च* (1908), पृ. 420–460; वही, *द टेल्स ऑफ बाइगॉन इयर्स* (1916); स्पेरांस्की. उद्धृत कृति; बोगुस्लाव्स्की. नेस्टर की साहत्यिकि गतविधि की प्रकृति और दायरे पर, IORAS (1914) में: खंड 1, पृ. 131; खंड 3, पृ. 153–191; इस्ट्रनि. रूसी वृत्तांत लेखन की शुरुआत पर टप्पिणयिाँ, IORAS (1921) में। पृ. 45–102; (1922). पृ. 207–251; नकिोल्स्की, एन. द टेल् ऑफ बाइगॉन इयर्स। 1 (1930). क्रॉनकिल पर साहत्यि के लिए देखें: नकिोल्स्की। *Materials* (1906)। जर्मन अनुवाद: *Die Nestor-Chronik*। संपादक के. ट्राउटमैन। लाइपज़िग, 1931, में: *Slav. – Baltische Quellen und Forschungen*। 6.

[64] प्रसिेल्कोव। नेस्टर द क्रॉनकिलर (1924); पेटुखोव। रूसी साहत्यि। प्राचीन काल (1916)। पृ. 16–18; तुलना करें: टप्पिणी 56 में उद्धृत साहत्यि।

[65] गोल्बुस्की। 1. 1 (दूसरा संस्करण)। पृ. 743; 'स्मृति'। वही। पृ. 238–247। शखमातोव। अध्ययन। पृ. 34–40, 437 ff.; नकिोल्स्की। *मैटेरयिल्स* (1906)। पृ. 225, 228, 230–233; सेरेब्रांस्की। *लाइव्स ऑफ ओल्ड रशयिन प्रसिेस* (1915)। पृ. 48–51।

द्वारा पूरा किया गया था। राज्य और राष्ट्रीय-राजनीतिक दृष्टिकोण से, यह निश्चित रूप से संन्यासवाद की एक बड़ी उपलब्धि थी; लेकिन शुद्ध रूप से चर्च-सम्बंधी और ईसाई-तपस्वी दृष्टिकोण से, यह संतों की पहली पीढ़ियों के आध्यात्मिक विकास के लिए हानिकारक था, जिन्हें सख्त अनुशासन वाले सामुदायिक संन्यासी जीवन के ढांचे के भीतर केवल आध्यात्मिक प्रयासों को समर्पित करना चाहिए था।

चर्च और संन्यासवाद ने अपनी गतिविधियों की विविधता से उत्पन्न होने वाले धर्मनिरपेक्षता के खतरे से बचने का प्रयास किया। और जैसा कि हम बाद में देखेंगे, वे इसमें सफल रहे, न कि धार्मिक अधिकारियों द्वारा उठाए गए उपायों के परिणामस्वरूप, बल्कि इसलिए कि मठवाद ने स्वयं, रूसी लोगों की तपस्या की भावना से प्रेरणा लेते हुए, इस चुनौती से निपटने के लिए नए तपस्वी पैदा किए और अपने भीतर नई ताकत पाई।

अध्याय III. राडोनेज़ के संत सेरगियस और उनका स्कूल

1. उत्तर-पूर्वी रूस में ईसाई तपस्या के प्रसार का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पुराने रूसी जीवन के लिए मठवाद के महत्व को समकालीन लोगों द्वारा पहले ही स्वीकार कर लिया गया था। उस युग के रूसी लोगों की विश्वदृष्टि में, मठवासी आदर्श ने प्रमुख स्थानों में से एक पर कब्जा किया था। हालांकि यह कथन 11वीं और 12वीं शताब्दी के लिए पूरी तरह से निर्विवाद नहीं हो सकता है, लेकिन 14वीं या 15वीं शताब्दी के संबंध में इसकी वैधता पर कोई संदेह नहीं हो सकता। इस आदर्श ने रूसी लोगों की विश्वदृष्टि को प्रभावित किया, उसमें एक तपस्वी चरित्र भरा, और मठ के प्रति उनके दृष्टिकोण को आकार दिया। मठ एक 'पवित्र स्थान', 'देवदूतों का घर' है; संन्यासी सांसारिक दुनिया को दैवीय दुनिया से जोड़ते हैं, और जैसे देवदूत संन्यासियों के सामने चमकते हैं, वैसे ही संन्यासी सामान्य लोगों के सामने चमकते हैं। मठ और 'देवदूतों के समान मठवासी व्यवस्था' पापी, कामुक पृथ्वी से स्वर्ग तक ले जाने वाली सीढ़ी पर मध्यवर्ती कदम हैं। आत्मा के उद्धार का विचार, जो ठीक यहीं, अपने नश्वर शरीर पर विजय पाने के कारनामे में शुरू होना चाहिए, उस युग की धार्मिकता के केंद्र में था। श्रद्धालुओं ने मानवीय जीवन को शैतानी प्रलोभनों के लिए एक अखाड़े के रूप में माना और दृढ़ता से विश्वास किया कि उनके खिलाफ एक विजयी संघर्ष केवल मठ की दीवारों के भीतर ही लड़ा जा सकता है।

रूस में ईसाई धर्म की पहली दो शताब्दियों के दौरान, ये विचार और भावनाएँ लोकप्रिय चेतना में धीरे-धीरे और क्रमशः गहरी होती गईं, लेकिन 14वीं शताब्दी तक वे पूरी तरह से जड़ पकड़ चुकी थीं; इस कारण से, इस अवधि को प्राचीन रूस में तपस्या का युग कहा जा सकता है। मठवाद के इतिहास के लिए, 13वीं शताब्दी संक्रमण का समय था। संन्यासी जीवन के रूपों ने रूसी परिस्थितियों के अनुकूल कोई निश्चित चरित्र अभी तक नहीं लिया था। संन्यासवाद ने अभी तक सेनोबिटिज़्म (सामुदायिक जीवन) और इडियोराइथम (एकाकी जीवन) के बीच चयन नहीं किया था; 'मरुभूमि', स्केट में जीवन, और हर्मिटेज - यह तारामंडल अभी तक रूसी थेबाइड के उत्तरी आकाश में नहीं उगा था। कस्बों या उनके आसपास के मठ मोक्ष की तलाश करने वालों के लिए आश्रय के रूप में काम करते रहे; केवल कभी-कभार ही तपस्वी अँधेरे, घने जंगलों में जाते थे। यह तपस्वी चिंतन और, शायद, आंतरिक संदेह का युग था, लेकिन किसी भी तरह से तपस्वी आदर्श का परित्याग नहीं था।

इस समय, रूस के राजनीतिक जीवन में दो घटनाएँ घटीं, जिनका एक निश्चित अर्थ में, मठवाद के इतिहास पर काफी प्रभाव पड़ा और इसने इसे अनिश्चितता की स्थिति से बाहर निकाला।

[66]पहली घटना घरेलू राजनीतिक प्रकृति की थी। यारोस्लाव के महान और एकीकृत कीव राज्य ने 12वीं शताब्दी में उनके उत्तराधिकारियों के बीच संघर्ष के कारण राजनीतिक विघटन का सामना किया। यह अपनज प्रमुखताओं में टूट गया, जो अब पैन-रूसी हितों का पीछा नहीं करते थे, बल्कि केवल अपने स्थानीय, संकीर्ण लाभों से चिंतित थे। यारोस्लाव के पोते, बहादुर और ऊर्जावान प्रिंस एंड्रे बोगोल्यूबस्की († 1174) द्वारा सुज़दल क्षेत्र के अभेद्य उत्तरी जंगलों में एक नए राजनीतिक निकाय की नींव रखने के बाद कीव की राजनीतिक प्रतिष्ठा विशेष रूप से गिर गई। यह क्षेत्र नई राज्य और सामाजिक शक्तियों के संकलन के लिए एक केंद्र बिंदु बन गया, जिसने अंततः मॉस्को के ज़ारशाही के गठन को जन्म दिया। कीव रस के अपनज प्रमुखताओं में विभाजन ने राजसी राजधानी शहरों की संख्या में वृद्धि में योगदान दिया, जिसके परिणामस्वरूप नए धर्मप्रांत स्थापित हुए और नए शहरी मठों की स्थापना हुई,

---

[66] अधिक जानकारी के लिए, निम्नलिखित कृतियों की अनुशंसा की जाती है: स्टोहल, कार्ल. *Geschichte Russlands*. खंड 1 (1923). पृ. 66–134; गोएट्ज़, एल. *Staat und Kirche in AltruЯland, 988–1240* (1908); साथ ही: क्ल्युचेव्स्की. *Geschichte Russlands* (1925). 2. अध्याय 14.

क्योंकि प्रत्येक राजकुमार और प्रत्येक बिशप अपने आवास को सजाना चाहता था। भौगोलिक रूप से, यह प्रक्रिया मुख्य रूप से उत्तर-पूर्वी दिशा में, ओका और ऊपरी वोल्गा के क्षेत्र में सामने आई; साथ ही, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व (रयाज़ान क्षेत्र से) से उत्तर-पूर्व (विशेष रूप से 14वीं शताब्दी में) की ओर रूसी आबादी का एक तीव्र प्रवासन भी हुआ[67] ।

यह प्रक्रिया आंशिक रूप से विदेशी नीति के विकास से प्रेरित थी, जो रूसी मशिनरी गतिविधि के इतिहास में दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारक है। कीवियन रस का राजनीतिक पतन दक्षिण-पूर्व से घुमंतू जनजातियों द्वारा दक्षिणी रूसी मैदानों में बढ़ते आक्रमणों का भी परिणाम था। 10वीं और 11वीं शताब्दी में, ये पेचेनेग थे, जिनकी हार की कीमत कीव के राजकुमारों और देश को जनशक्ति और रक्तपात के मामले में बहुत भारी पड़ी। 11वीं शताब्दी के मध्य में, कुमान्स के नाम से जाने जाने वाले तुर्की खानाबदोश काला सागर के उत्तरी तट पर दिखाई दिए; रूसी उन्हें पोलोवत्सियान कहते थे। 'इगोर की सेना-यात्रा की कथा' काव्यात्मक रूप से इस क्रूर और बर्बर लोगों के खिलाफ सदियों लंबे संघर्ष को दर्शाती है, जिन्होंने शहरों और गांवों को जलाया और लूटा। संयोग से, इस संघर्ष, जो दशकों तक चला, ने पुराने रूसी विश्वदृष्टिकोण के निर्माण को प्रभावित किया, क्योंकि समकालीन लोगों ने, ईसाई विश्वास के अनुसार, इस राजनीतिक और आर्थिक तबाही को 'हमारे पापों के लिए' ईश्वर की सजा के रूप में देखा[68] ।

हालांकि, इन स्टेपी लोगों द्वारा फैलाया गया आतंक, मंगोलों, या जैसा कि तब उन्हें कहा जाता था, तातारों के आसन्न आक्रमण का केवल एक अग्रदूत था। वे रूसी भूमि पर 'ईश्वर की मार' के रूप में आए - उस समय के लोगों ने ऐसा ही माना। 'उसी गर्मी में,' 1224 के वर्ष के अंतर्गत इतिहासकार लिखता है, 'हमारे पापों के कारण, एक ऐसा लोग प्रकट हुआ, जिसके बारे में कोई निश्चित रूप से नहीं जानता कि वे कौन हैं, कहाँ से आए हैं, कौन सी भाषा बोलते हैं, किस जनजाति से संबंधित हैं, या उनका धर्म क्या है'[69] । प्राचीन रूस का भाग्य यूरोप की रक्षा करने वाली एक ढाल बनना था, और वह बनी भी, लेकिन इसके लिए उसे तातारों के जुए की कीमत चुकानी पड़ी, जो 200 से अधिक वर्षों तक चला। शत्रु के प्रति प्रतिरोध और शहीद होने के माध्यम से, पूरे रूस ने, एक साधारण किसान से लेकर राजकुमार तक, राजनीतिक स्वतंत्रता की अपनी आकांक्षा का प्रमाण दिया।

रूस पर बटू की विजय 1237 में शुरू हुई। दो या तीन वर्षों के भीतर, रूस की पूरी भूमि आपदा और आतंक की चपेट में आ गई। 6 दिसंबर 1240 को, कीव बटू की सेनाओं के आक्रमण के आगे ढह गया; वह समृद्ध शहर, जिसकी सुंदरता और विशालता ने पहले ही मर्सेबर्ग के थिटमार को प्रभावित कर दिया था, खंडहरों और राख में तब्दील हो गया। और कई अन्य शहरों को भी यही हश्र झेलना पड़ा।

उनके समकालीनों के लिए, इस घटना का अर्थ केवल एक राजनीतिक और आर्थिक तबाही से कहीं बढ़कर था। यह लोगों के मानसिक संतुलन और उनके विश्व-दृष्टिकोण के लिए एक भयानक आघात था। पृथ्वी पर जीवन ने अपनी निश्चितता और सुरक्षा खो दी थी; सामाजिक परिस्थितियाँ कठोर और दमनकारी हो गई थीं। सुज़दल क्षेत्र और उत्तरी रूस के पहले बसाहनों को अपने खेतों के लिए जंगल से जमीन का एक टुकड़ा छीनने के लिए प्रकृति के खिलाफ एक अथक संघर्ष करना पड़ा था, और अब वे आजीविकाएँ जो उन्होंने इतनी बड़ी मेहनत से स्थापित की थीं, नए झटकों से बिखर रही थीं।

लेकिन एक बार जब तातार शासन के पहले भयानक दशकों की आपदाएँ पीछे छूट गईं, और एक बार जब उत्तर-पूर्वी रूस और उसके राजकुमारों ने गोल्डन हॉर्ड के साथ अपने संबंधों में एक निश्चित स्थिरता स्थापित कर ली, तो देश में राजनीतिक और आर्थिक सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया फिर से शुरू हो गई।

यह आबादी के पुनर्गठन का एक युग था, क्योंकि लोग बसने के लिए एक सुरक्षित स्थान की तलाश कर रहे थे; रूसी राष्ट्र के लिए राजनीतिक एकीकरण का युग था, जिसने वोल्गा और ओका नदियों के ऊपरी इलाकों को अपने राज्य का नया केंद्र चुना और वहां सक्रिय आर्थिक गतिविधि विकसित करना शुरू कर दिया[70] ।

राजनीतिक और आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए, राज्य को सभी लोगों के संसाधनों को जुटाना पड़ा।

---

[67] Lyubavsky, M. द फॉर्मेशन ऑफ द मेन स्टेट टेरिटरी ऑफ द ग्रेट रशियन नेशन. सेटलमेंट एंड यूनिफिकेशन ऑफ द सेंटर (1929); Presnyakov, A. द फॉर्मेशन ऑफ द ग्रेट रशियन स्टेट (1918); Lyubavsky, M. द राइज ऑफ मॉस्को, इन: मॉस्को इन द पास्ट एंड प्रेजेंट. 1 (1912).

[68] डी. राज़ोव्स्की के नए कार्य देखें: 1. द पेचेनेग्स, टर्क्स एंड बेरेन्डी इन रस' एंड हंगरी, *सेमिनारियम कोंडाकोवियम* में। 7 (1935); 2. द पोलोव्त्सियन्स। वही। 7–10 (1935–1938)।

[69] प्रथम नोवगोरोड क्रॉनिकल, वर्ष 6732 (1224) के लिए प्रविष्टि।

[70] उपरोक्त ल्यूबाव्स्की और प्रेस्न्याकोव के कार्य देखें।

14वीं शताब्दी की शुरुआत में, रूस में जीवन दैनकि आजीवकिा की चंताओं से ग्रस्त था; लोग तातार दलों, बड़े और छोटे, के हमलों के नरिंतर भय में रहते थे। उन्हें अपनी संपत्त के लिए सुरक्षति ठकिाने खोजने पड़ते थे; कसिान, सुरक्षा की तलाश में, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे। शहर बहुत अशांत हो गए थे, और शहरी मठ—जनिमें से कई को ततारों ने नष्ट कर दयिा था—अब वशि्वसनीय आश्रय नहीं रहे, क्योंकि अक्सर, यदि हमेशा नहीं, तो वे भी रोजमर्रा की जदिगी की चंताओं और कठनिाइयों में फँसे रहते थे। तपस्या की आकांक्षा रखने वाले व्यक्त को इनमें कोई मानसकि शांत नहीं मलि सकती थी। भक्षिुओं ने अपनी तपस्या के लिए नए, शांत स्थानों की तलाश की, और इस प्रकार 'मठों का उपनवेिशीकरण' (monastic colonisation) नामक प्रक्रयिा शुरू हुई; इस प्रक्रयिा के कारण अनेक 'मरुभूमयिों' (deserts) की स्थापना हुई[71] ।

२. चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दयिों में तपस्या का स्वरूप

14वीं और 15वीं शताब्दी रूसी तपस्या के इतहिास में एक ऐसे कालखंड का प्रतनिधित्वि करती हैं जब मठवाद ने कुछ वशिष्टि, वशिष रूप से रूसी लक्षण प्राप्त कयि। इस काल के तपस्वयिों की अनेक जीवनी-ग्रंथों से पता चलता है कि बहुत अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोगों में समान सुसंगत सामान्य लक्षण थे, जनिके आधार पर उस युग के कसिी पुराने रूसी मठ के संस्थापक का एक वशिष्टि चत्रि तैयार करना संभव है।

वह आमतौर पर एक संपन्न परविार से आता था, अक्सर सेवा वर्ग (बोयार) या व्यापारयिों से, और कम अक्सर कसिान वर्ग से[72] । इससे भवषि्य के तपस्वी को बचपन में ही पढ़ना और लखिना सीखने का अवसर मलिा । अपने युवा वर्षों में, वह बच्चों के खेलों से दूर रहता था, जैसा कि लगभग हर संतों की जीवनी में वर्णति है, और ठीक इसी से ऑर्थोडॉक्स जीवनी साहत्यि की प्रसद्धि परंपरा की शुरुआत होती है। धर्मशास्त्र की कतिाबें और संतों के जीवन पढ़ना, चर्च जाना - यहीं से उसकी आध्यात्मकि शक्षिा शुरू होती है, जो उसमें एकांत और मठवासी जीवन के लिए एक अदम्य लालसा जगाती है। माता-पति हमेशा अपने बेटे की संन्यासी प्रवृत्तयिों को मंजूरी नहीं देते, खासकर यदि वह उनका एकमात्र संतान हो, क्योंकि संपत्त के भावी मालकि के रूप में, उसे परविार के लिए संपत्त को संरक्षति करने के लिए सविलि सेवा में प्रवेश करना होगा, या, यदि वह एक व्यापारी परविार से आता है, तो अपने पति का व्यवसाय संभालना होगा। एक संक्षपि्त या लंबे आंतरकि और बाहरी संघर्ष के बाद, वह फरि भी अपने माता-पति का घर छोड़ देता है और चुपके से कसिी पास के मठ की ओर चल पड़ता है, जसिे वह वहां के कठोर जीवन को दर्शाने वाली कहानयिों से जानता है। मठ में, उसका तपस्वी जीवन शुरू होता है; धैर्य और वनिम्रता के साथ, वह सबसे कठनि और गंदे काम करता है, फरि भी, यह उसे अन्य भक्षिुओं से पहले चर्च पहुँचने और शाम तथा रात की प्रार्थनाओं के अंत तक वहाँ रहने से नहीं रोकता। उनका नवोदति काल कई वर्षों तक चला। फरि, मठाधीश का आशीर्वाद प्राप्त कर, वे अपने तपस्वी प्रयासों को जारी रखने के लिए एक नया एकांत स्थान खोजने मठ से चले गए। उस समय, उत्तर-पूर्वी रूस घने, अछूते जंगलों से ढका हुआ था, एक 'वन का वीराना' जसिने तपस्वी को व्यर्थ और शोरगुल वाली दुनयिा से बचाया और उसे एकांत और आध्यात्मकि शांत में रहने में सर्वोत्तम तरीके से मदद की।

कई प्राचीन रूसी तपस्वयिों ने मठ में नवसखिया के रूप में सेवा कयि बनिा ही अपने एकांत के कठनि जीवन की शुरुआत की (उदाहरण के लिए, राडोनेज़ के सेरगयिस और उनके भाई स्टीफन, और संभवतःवशिर्सकी के साव्हा भी)।

---

[71] वी. क्ल्यूचेव्स्की लखिते हैं, '13वीं शताब्दी के अंत तक दर्ज 100 से अधकि मठों में से, हम दर्जन भर भी ऐसे आश्रम नहीं गनि सकते, और उनमें से भी, अधकिांश ठीक 13वीं शताब्दी के हैं। हालांकि, 14वीं शताब्दी से उत्तरी रूस के मठवासी समुदाय के बीच जंगल के एकांतवासों की ओर आंदोलन तेजी से और मजबूती से वकिसति हुआ: उस शताब्दी में स्थापति एकांतवास मठों की संख्या नई शहरी मठों की संख्या के बराबर थी (42 और 42); 15वीं शताब्दी में, उन्होंने शहरी मठों की संख्या से दोगुने से भी अधकि कर दयिा (57 और 27), और 16वीं शताब्दी में, वे 1.5 गुना अधकि थे (51 और 35)। इस प्रकार, इन तीन शताब्दयिों में, जहाँ तक ज्ञात है, मस्कोवी की सीमाओं के भीतर 150 आश्रम मठ और 104 शहरी तथा उपनगरीय मठ बनाए गए थे' (क्ल्युचेव्स्की। गेशचिटे रुयालैंड्स। खंड 2, पृ. 259)।

[72] बोयार या दास वंशज में से थे: राडोनेज़ के सेरगयिस († 1392); बेलोजेरो के सरिलि († 1427); बेलोजेरो के फेरापोंट († 1426); ओब्नोर्स्क के पॉल († 1429); पेलशेम के ग्रेगरी († 1441); ज़ेलेज़्नोबोर्स्क के याकोव († 1442); प्सकोव के यूफ्रोसनिस († 1481); बोरोव्स्क के पाफ्नुटयिस († 1478) – एक धर्मांतरति टाटार परविार से; कल्याज़नि के मैकेरयिस († 1483); सोर्स्क के नील († 1508); जोसेफ ऑफ वोल्त्सक या वोल्कोलामस्क (मृत्यु 1515); इनोसेंट ऑफ ओखलेबनि (लगभग 1481), जनिहें कोमेलस्की के नाम से भी जाना जाता है; सरिलि ऑफ नोवोएज़ेर्स्क (मृत्यु 1532); कॉर्नेलयिस ऑफ कोमेल (मृत्यु 1537); आर्सेनयिस ऑफ कोमेल (मृत्यु 1550); पेरयिास्लाव के डेनयिल (मृत्यु 1540); कोमेल के स्टीफन (मृत्यु 1542); वशिेरस्की के साव्वा (मृत्यु 1460); मोजाइस्क के फेरापोंट (मृत्यु 1426); एक राजसी परविार से: वोल्ोग्दा के इग्नेशयिस (मृत्यु 1523)। व्यापारी या शहर में रहने वाले परविारों से: दमित्रिी प्रलुत्स्की († 1392); डायोनसियिस ग्लुशट्सि्की († 1437); अलेक्जेंडर स्वरि्स्की († 1533); आर्सेनयिस कोनेव्स्की († 1447); गेरसमि बोल्दसि्की († 1551); एलेज़ार एन्ज़र्सकी (मृत्यु 1656)। अमीर कसिान परविारों से: अलेक्जेंडर ओशेवेंस्की (मृत्यु 1479); एंथनी ससिकी (मृत्यु 1556)। एक पुजारी के परविार से: यूथमियिस ऑफ नोवगोरोड (मृत्यु 1458)।

तपस्वी झोपड़ी में (उदाहरण के लिए, सर्गियस और स्टीफन, बोल्डिनो के गेरसमि, नोवोएज़ेरो के सरिील और अन्य) या पेड़ की खोखली जगह में (उदाहरण के लिए, ओब्नोर्स्क के पॉल) रहते थे, और सूखी पत्तियों या काई पर सोते थे; जंगल के बेर और जड़ें, जन्हिें वह इकट्ठा करता है, या सूखी रोटी, जसिे कभी-कभार गुजरने वाला कोई व्यक्ति उसकी खुद की बुनी हुई टोकरी में रख देता है जसिे उसने कसिी टहनी से लटका रखा होता है (जैसा कि उदाहरण के लिए, बोल्डिनो के गेरसमि, रोस्तोव के थयिोडोर और राडोनेज़ के सेरगयिस के मामले में था), ही उसका संपूर्ण आहार होता है। दनि-रात, वह अपना अधकिांश समय प्रार्थना और भजन-पाठ में लगाता है। उसके फटे-पुराने कपड़े लंबी उत्तरी रूसी सर्दयिों की ठंड से कोई सुरक्षा नहीं देते, और प्रार्थना में लंबे समय तक खड़े रहने पर वह ठंड से कांपता है; गर्मयिों में, वह गर्मी और घुटन भरी हवा से त्रस्त रहता है, जबकि प्रार्थना कर रहे व्यक्ति के हाथों और चेहरे पर अनगनित कीड़े परेशान करते हैं। उपवास और प्रार्थना का जीवन, ठंड और गर्मी को सहने से वह थक जाता है, जसिसे उसका शरीर और चेहरा मुरझा जाता है। इसीलिए बेलोजेरो के सरिलि या स्वर्ि के अलेक्जेंडर जैसे कसिी पुराने रूसी संत की प्रतमिा कोई शैलीबद्ध प्रस्तुति नहीं है, बल्कि उस तपस्वी के वास्तवकि स्वरूप का एक सच्चा चत्रिण है।

लेकनि तपस्वी अपनी एकांत में अधकि समय तक नहीं रहता - पहाड़ पर बसा एक शहर छपिा नहीं रह सकता (मत्ती 5:14)। उदाहरण के लिए, कभी-कभी दो तपस्वी, ओबनॉर्स्क के पॉल और नुरोम के सर्गियस एक साथ आकर एक जोड़ी के रूप में रहने का फैसला करते हैं, ताकि एक-दूसरे को एक तपस्वी के कठनि जीवन में सहारा दे सकें; या एक सख्त तपस्वी की खबर आस-पास के कस्बों और गांवों तक पहुंच जाती है, और एक दनि ईश्वर का एक नया प्रेमी भी उसके पास आता है, जो सांसारकि प्रलोभनों से एकांत और मोक्ष की तलाश में होता है। नवागंतुक भक्षिु अपने लिए एक लकड़ी की झोपड़ी बनाता है, और अब वे दोनों उपवास और प्रार्थना में स्वयं को समर्पति कर देते हैं। समय के साथ, यह तपोवन बढ़ता है और एक मठ बन जाता है। भाई लोग एक लकड़ी का चर्च बनाते हैं, और मठ समुदाय का संस्थापक—जसिे हर कोई नए भाईचारे का मठाधीश मानता है—स्थानीय बशिप के पास जाता है, या कभी-कभी सीधे मॉस्को में मेट्रोपॉलटिन के पास जाता है, और नव-स्थापति मठ के लिए आशीर्वाद तथा चर्च के अभषिेक के लिए प्रार्थना करता है। यदि मठ का संस्थापक पर्याप्त रूप से साक्षर है, तो बशिप उसे एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त करता है और उसका मुंडन करता है (यदि उसका मुंडन पहले नहीं हुआ है); अब वह स्वयं दैवीय धर्मवधि का अनुष्ठान करता है और संस्कारों का प्रशासन करता है; लेकनि अक्सर, वनिम्रता के कारण, तपस्वी अभषिेक से इनकार कर देता है और बनिा पुरोहति पद के, केवल अपने मठ का मठाधीश बना रहता है; ऐसे मामले में बशिप अपनी पसंद का एक हायरोमोंक (पुरोहति-भक्षिु) नए मठ में भेजता है, उसे आवश्यक पूजा-संस्कार संबंधी पुस्तकें और एक एंटीमेंशन प्रदान करता है, और मठ समुदाय को अपने आशीर्वाद के रूप में उद्धारकर्ता और परमेश्वर की माता की प्रतमिाएँ भेंट करता है।

इस प्रकार ये नए मठ अस्तत्वि में आते हैं, अक्सर अनगनित नदयिों और झीलों के खड़ी ढलानों पर, जहाँ से उत्तरी रूस की मनमोहक और कोमल सुंदरता आँखों के सामने खुलती है… पानी का चाँदी जैसा फैलाव घने देवदार और चीड़ के जंगलों के बीच बँटा हुआ है, जनिकी कठोरता को बर्च की तनों की सफेदी से कोमलता मलिती है। कोई घंटों तक यहाँ खड़ा रह सकता है, इन अद्भुत दृश्यों को नहिारते हुए, जब, शुरुआती पतझड़ में, डूबते सूरज की करिणों में नहाए हुए, बर्च के सफेद तने और सुनहरे पत्ते शंकुधारी पेड़ों की लालमिा लिए पृष्ठभूमि के खलिाफ चमकते हैं, जो अपनी गहरी-हरी चादरों में चुपचाप और बनिा हलि-डुले खड़े हैं, मानो वचिारों में खोए हुए… रंग गहरे होते जाते हैं, लेकनि हवा साफ और ताज़गी भरी बनी रहती है। घंटयिों की आवाज़ अचानक गूँजती नहीं है, बल्कि धीरे-धीरे दूर से आती है और फरि दूर कहीं खो जाती है। मठ का समुदाय संध्या की प्रार्थना के लिए इकट्ठा होता है…

ऐसे मठ में लकड़ी के चर्च के चारों ओर व्यवस्थति कई लकड़ी की कोठरयिाँ होती हैं; चर्च के बगल में एक थोड़ी बड़ी इमारत होती है: यह मठ का भोजनशाला है। पूरे परसिर को लकड़ी की बाड़ से घेर रखा होता है। कोठरयिों के बीच सब्जी के बगीचे हैं, जो साधुओं को सबसे आवश्यक भोजन प्रदान करते हैं। नयिम के अनुसार, जसि स्थान पर मठ बनाया जाता है, उसे साधुओं द्वारा स्वयं घने जंगल से साफ कयिा जाता है।

शुरू में, नए मठ व्यक्तगित जीवन के नयिम के अनुसार काम करते हैं; प्रत्येक भक्षिु अपनी खुद की कोठरी बनाता है, अपने सब्जी के खेत की देखभाल करता है, अपने कपड़े और भोजन का प्रबंध स्वयं करता है, टोकरयिाँ बुनता है या अन्य हस्तशलि्पों में संलग्न रहता है, और फरि अपने सामान को कसिानों से रोटी के लिए बदल लेता है। वह अपनी कोठरी में अकेला रहता है, और अपनी मर्जी से वहाँ प्रार्थना करता है और भजन गाता है। भक्षिु केवल धार्मकि अनुष्ठानों के लिए ही एक साथ इकट्ठा होते हैं। उनका मुखयिा आमतौर पर मठ का संस्थापक होता है। एक तरह से, उत्तरी रूसी मठवासी प्रणाली का व्यक्तगित जीवन, सेंट सावस की फलिस्तिीनी लावरा के जीवन-शैली जैसा ही है।

हालांकि, धीरे-धीरे कई मठ सामुदायिक जीवन शैली (सेनोबिटिक) की ओर बढ़ रहे हैं। सामुदायिक नियम के तहत, भाइयों में से कोई भी व्यक्तिगत संपत्ति का मालिक नहीं होता है[73] ; वे मठ के लिए काम करते हैं, और मठ उन्हें भोजन और कपड़े प्रदान करता है। सब्जी के बगीचे या छोटे से खेत में जो कुछ भी पैदा होता है, वह मठ के तहखाने में चला जाता है। भिक्षुओं को अपनी कोठरी में खाने या वहाँ भोजन का भंडारण करने की मनाही है। सभी भ्राता भोजनशाला में इकट्ठा होते हैं, जहाँ सामूहिक प्रार्थना और मठाधीश के आशीर्वाद के बाद, सभी भिक्षु एक ही भोजन ग्रहण करते हैं। मठ के कर्तव्य मठाधीश द्वारा सौंपे जाते हैं; उनकी अनुमति या आशीर्वाद के बिना, कोई भी भिक्षु कुछ भी शुरू या आरंभ नहीं करता है। नवोदित भिक्षुओं को वरिष्ठ भिक्षुओं के मार्गदर्शन में रखा जाता है और वे सभी मामलों में उनकी इच्छाओं का पालन करते हैं। अक्सर, वरिष्ठ और नवोदित भिक्षुओं के बीच का संबंध मार्गदर्शन के रूप में होता है। वरिष्ठ भिक्षु, जो कभी-कभी मठ के भीतर विशिष्ट पदों पर रहते हैं, मठ परिषद, या बुजुर्गों की परिषद, का गठन करते हैं, जो मठाधीश के साथ मिलकर मठ का शासन करती है।

पुराने रूसी मठवाद में मठाध्यक्ष के व्यक्तिगत आध्यात्मिक उपहारों ने एक प्रमुख भूमिका निभाई। यही पुराने रूसी संन्यासवाद और पश्चिम में मध्ययुगीन संन्यासवाद के बीच मौलिक अंतर था। वहाँ, संन्यासवाद का विकास संगठन की ताकत पर निर्भर था, जो शुरू से ही आदेश के भाइयों के तपस्वी जीवन को विस्तार से निर्धारित करता था, और उसे एक विशिष्ट पथ पर मार्गदर्शन करता था। इसके विपरीत, प्राचीन रूस में, मठ के संस्थापक और मठाधीश के व्यक्तित्व द्वारा मठवासी जीवन की संरचना निर्धारित होती थी। विशेष महत्व उन मठों का था जिन्हें पुराने रूसी तपस्यावाद के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधियों द्वारा स्थापित किया गया था, जिनके सिद्धांत संस्थापकों की मृत्यु के बहुत बाद तक माने जाते रहे। शिष्य हमेशा अपने गुरुओं की आध्यात्मिक आचार-संहिता को बनाए रखने का प्रयास करते थे, और यदि वे बाद में स्वयं नए मठों के संस्थापक बनते थे, तो वे उन्हें अपनी धार्मिक गुरुकुल की तपस्या की परंपरा की भावना में संगठित करते थे। यहाँ यह विशेष रूप से जोर देकर कहा जाना चाहिए कि, पुराने रूसी संन्यासी के लिए, सबसे महत्वपूर्ण कारक इस परंपरा का आध्यात्मिक सार, न ही इसके गुण या इसका धार्मिक मान्यता, बल्कि मठ के संस्थापक की व्यक्तित्व और आध्यात्मिक चरित्र था। अक्सर, तपस्या का वस्तुनिष्ठ सार स्वयं तपस्वी के व्यक्तित्व और उसके कारनामों से पीछे रह जाता था। पुराने रूसी धर्मपरायणता की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें प्रणाली स्वयं नहीं, बल्कि उस प्रणाली के वाहकों द्वारा स्थापित आध्यात्मिक उदाहरण प्रमुख भूमिका निभाता है; पुराना रूसी, अपनी ईसाई दुनिया में, हमेशा इन उदाहरणों और छवियों - आइकन और संतों - से घिरा रहता था, जो धार्मिक प्रणाली (डॉगमा और विश्वास) को जीवंत करती थीं और उसे एक सच्चे धार्मिक जीवन की ओर ले जाती थीं; इन छवियों ने उसे बताया कि महिमामंडित पवित्र तपस्वियों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, ऐसा जीवन हर व्यक्ति के लिए खुला था।

जब हम पुराने रूसी संन्यासवाद की ओर मुड़ते हैं तो यह सब ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि इसके इतिहास ने दिखाया है कि संन्यासवाद की तुलना में संन्यासी की छवि कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी। यह विशेष रूप से पुराने रूसी संन्यासी समुदायों के इतिहास में स्पष्ट था। जैसा कि उल्लेख किया गया है, कीव काल में भी, मठ समुदाय का अस्तित्व, मठ जीवन की सबसे पूर्ण तपस्या प्रणाली के रूप में सेनोबिटिक प्रणाली की आधिकारिक मान्यता की तुलना में, सेंट थियोडोसियस के प्रभाव पर अधिक निर्भर था। समय के साथ जब मठ के संस्थापक की स्मृति धुंधली पड़ गई, तो उनके द्वारा स्थापित मठवासी जीवन की व्यवस्था को इसका परिणाम भुगतना पड़ा और उसमें विकृतियाँ आ गईं। इसके परिणामस्वरूप, सामुदायिक जीवन का पुनरुत्थान 14वीं शताब्दी में धार्मिक अधिकारियों के किसी आदेश या सुधार से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत उत्कृष्ट तपस्वियों के प्रभाव से हुआ, जो इस पुनरुत्थान के सूत्रधार थे। यह परिवर्तन धीरे-धीरे हुआ और हर जगह एकसार नहीं था। न ही यह नीचे से कोई सुधार था, जो मठ समुदाय से ही विकसित होकर व्यापक हो जाता और लोगों के बीच तपस्या की भावना को मजबूत करके उन पर अपनी छाप छोड़ देता। न ही सामुदायिक जीवन की पुनरुत्थान अपने पुनरुज्जीवक की पहल की किसी मौलिक मान्यता के परिणामस्वरूप हुई; यह बस उसकी अपनी आध्यात्मिक वृद्धि की प्रक्रिया में एक पड़ाव था। यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि सामुदायिक जीवन के पुनरुज्जीवक को केवल अपने मठ के लिए या सभी मठों के लिए सामुदायिक जीवन शुरू करने की आवश्यकता का एहसास था। एक सुधारक की भूमिका, जो अपने लिए एक बड़ा लक्ष्य निर्धारित करता है और उसे प्राप्त करने के लिए लगन से प्रयास करता है, विनिम्र पुराने रूसी तपस्वी के लिए उपयुक्त नहीं थी। फिर भी, उनकी विनिम्रता इस आशा के विपरीत नहीं थी कि उनके साथी भिक्षु और शिष्य मठवासी जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण को संरक्षित रखेंगे।

---

[73] इस विषय पर मेरा लेख देखें: स्मोलिच। स्टुडिएन ज़ुम क्लोस्टरवेसेन रूसलांड्स। 2, में: क्यूरियोस। 3 (1938)। अंक 4।

इसलिए यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि तपस्या और मठवासी जीवन का पुनरुत्थान एक साधारण पुराने रूसी भिक्षु के कर्मों का परिणाम था। हम प्रसिद्ध रूसी मठ, ट्रिनिटी-सर्गेयस लावरा के संस्थापक, राडोनेज़ के संत सर्गेई का उल्लेख कर रहे हैं।

3. राडोनेज़ के संत सेरगियस और उनका मठ

सामुदायिक जीवन को पुनर्जीवित करते समय, संत सेरजियस ने संत थियोडोसियस की ही तरह बहुत कुछ किया। एकमात्र अंतर यह था कि संत थियोडोसियस एक ऐसे मठ में आए थे जिसे पहले ही किसी और, संत एंथनी ने स्थापित कर दिया था, और उन्होंने वहाँ अपनी आध्यात्मिक छाप छोड़ी। दूसरी ओर, सेंट सेरजियस स्वयं मठ के संस्थापक थे, जो शुरू में व्यक्तिगत कोशिकाओं का एक समुदाय था। सामूहिक जीवन की ओर संक्रमण धीरे-धीरे हुआ: छोटा आश्रम एक बड़े मठ में विकसित हो गया, और साथ ही संस्थापक का भाइयों पर आध्यात्मिक प्रभाव और भी प्रबल हो गया। राडोनेज़ के संत सेरगियस का जीवन उनके समकालीन एपिफानियस द्वारा लिखा गया था, जो उनके मठ के एक भिक्षु के रूप में लगभग 15 वर्षों तक संत के साथ आध्यात्मिक संवाद में रहे[74] । यह जीवन अत्यंत मूल्यवान है, विशेष रूप से इसके संक्षिप्त संस्करण में, जिसे पुराने रूसी वृत्तांत में वर्ष 1392 के अंतर्गत शामिल किया गया है, क्योंकि यह लेखक की कुछ हद तक अलंकृत शैली के बावजूद, घटनाओं के एक वस्तुनिष्ठ और संयमित विवरण द्वारा विशेषता है, और संत-चरित्र लेखक पाचोमियस द्वारा बाद के रूपांतरण में निहित नैतिक उपदेशात्मक वाक्पटुता से यह अधिक बोझिल नहीं है। एपिफेनियस के लिए, सेंट सर्गियस के व्यक्तित्व के शुद्ध तपस्वी गुण सर्वोपरि थे; सर्गियस की उस युग की राजनीतिक घटनाओं से जुड़ी गतिविधियाँ उनके विवरण में पृष्ठभूमि में चली जाती हैं, जबकि इसके विपरीत, पाचोमियस ठीक इन्हीं पर सबसे अधिक जोर देता है। एपिफानियस हमें एक ऐसे व्यक्ति के जीवन के बारे में बताते हैं जो अपनी ईसाई भक्ति के माध्यम से संतत्व तक पहुँचा, जबकि पाचोमियस एक ऐसे संत की मानक छवि बनाते हैं जो सामान्य रूप से पवित्रता का एक आदर्श प्रस्तुत करता है; यही कारण है कि वह संजीवनी-ग्रंथ में मृत्योपरांत चमत्कारों के वृत्तांत जोड़ते हैं और पूरे ग्रंथ में राडोनेज़ के सेरगियस के जीवन को ईसाई तपस्या का आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

यह संत रोस्तोव के प्रिसिपिल्टी की सेवा कुलीन वर्ग के एक अमीर परिवार से आए थे; उनका जन्म 3 मई 1314 को रोस्तोव के पास अपने पिता की संपत्ति पर हुआ था, और बपतिस्मा के समय उन्हें बारथोलोम्यू नाम दिया गया था। चरित्र में बताया गया है कि कैसे उसकी माँ, जब गर्भवती थीं, रविवार को दिव्य प्रार्थना सभा के लिए चर्च गईं। सुसमाचार के पाठ से पहले, शिशु ने अचानक अपनी माँ के गर्भ में चीख मारी; यह चीख चेरूबिक भजन के गायन के दौरान और पुरोहित के 'पवित्रों के लिए पवित्र' उद्घोष से पहले दोहराई गई। उसकी चिंतित माँ ने संकल्प लिया कि जैसे ही बच्चा पैदा होगा, वह उसे ईश्वर को समर्पित कर देगी। और उसके जन्म के बाद, शिशु ने एक असामान्य तरीके से व्यवहार किया: उपवास के दिनों में, और जब भी उसकी माँ मांस खाती थी, वह अपनी माँ का दूध पीने से इनकार कर देता था। जब उनके माता-पिता ने उन्हें चर्च स्कूल भेजा तब बार्थोलोम्यू सात साल के थे। उनके बड़े भाई स्टीफन ने जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख लिया, लेकिन छोटे बार्थोलोम्यू को इन कौशलों में कठिनाई होती थी, इसलिए उनके शिक्षक उन्हें दंड देते थे और दूसरे छात्र उन पर हँसते थे। एक दिन, बार्थोलोम्यू को एक घोड़ा लाने के लिए खेत भेजा गया। वहाँ उसकी मुलाकात एक वृद्ध भिक्षु से हुई, जिसने लड़के के उदास चेहरे को देखकर उससे पूछा कि वह इतना उदास क्यों है। रोते हुए, लड़के ने उसे पढ़ने में अपनी अक्षमता के बारे में बताया और उस संत से मदद करने के लिए कहा। संत बारथोलोम्यू के साथ उसके माता-पिता के घर गए और लड़के को उनके सामने भजन संहिता पढ़ने का निर्देश दिया। सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, बारथोलोम्यू ने धाराप्रवाह और अच्छी तरह से पढ़ा। उस दिन के बाद से, बारथोलोम्यू अपने स्कूल के पढ़ाई में बहुत सक्षम हो गया। भक्ति के भविष्य के अग्रदूत के बाल्यकाल की यह अद्भुत कहानी जीवनीकार को सर्जियस के चरित्र में प्रमुख गुणों को उजागर करने का अवसर

---

[74] संत सर्जियस का जीवन, जो उनके शिष्य एपिफानियस द वाइज़ († 1420) द्वारा लिखा गया था, हमें संतों के जीवनलेखक पाखोमियस († 1484 के बाद) द्वारा संपादित एक संस्करण में प्राप्त हुआ है। जीवन का मूल, यद्यपि संक्षिप्त, संस्करण केवल निकोन क्रॉनिकल (PSRL. 11. पृ. 127–147)। पाचोमियस का रूपांतरण यहाँ दिखाई देता है: 1. OLDP. 58. मॉस्को, 1885; 2. VMCh. सितंबर. भाग 3 (25 सितंबर). सेंट पीटर्सबर्ग, 1883; 3. साइमन अज़ारिन द्वारा संपादित। मास्को, 1646; 4. ट्रिनिटी-सर्गेयस लावरा द्वारा संपादित। 1853। ग्रंथसूची: क्ल्यूचेव्स्की, वी. पुराने रूसी संतों की कथाएँ एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में। मास्को, 1872; गोलुबिन्स्की, ई. द वेनेरेबल सर्जियस ऑफ़ राडोनेज़ और द ट्रिनिटी लावरा फाउंडेड बाय हिम। मास्को, 1892; दूसरी सं. 1909। एपिफानियस पर, देखें: काड्लुबोव्स्की, ए. ओल्ड रूसी जीवनी साहित्य के इतिहास पर निबंध। वारसॉ, 1902। पृ. 171–178। पाचोमियस के हागियोग्राफिक कार्यों की शैली पर, देखें: नेक्रसोव, एन. पाचोमियस द सर्ब, ए 15th-सेंचुरी राइटर। ओडेसा, 1871; याब्लोंस्की, वी. पाचोमियस द सर्ब एंड हिज हागियोग्राफिक राइटिंग्स। सेंट पीटर्सबर्ग, 1908; और यह भी: काडलुबोव्स्की, पृष्ठ 179–188।

देती है: मानवता, धैर्य और विनम्रता – ये वे गुण थे जो संत के जीवन में केंद्रीय बने रहे। उनका बचपन कई अन्य लोगों की तरह ही था, जिसमें बचकाना चिंताएँ, दुख और खुशियाँ थीं। फिर भी, उनके तपस्वी जीवन की नींव इन बचपन की चिंताओं के भीतर ही पहले से ही रख दी गई थी।

एक अतिशयोक्तिपूर्ण भक्ति के बजाय एक साधारण, सामान्य ईसाई जीवन - यही वह मिट्टी है जिसमें रूसी राष्ट्रीय भक्ति का पोषण होता है और वह फलती-फूलती है। आइए हम अपने समय के तपस्वियों को याद करें – सारोव के संत सेराफिम († 1833) या ऑप्टिना के एल्डर लियोनिद († 1841) – और हम तुरंत इस नींव को देखेंगे, जो हमेशा सच होती है, बशर्ते कि हम रूसी संतों की छवियों को उनके नैतिकतावादी और अलंकारिक पौराणिक आभूषणों से मुक्त करें, हालांकि बाद वाले में अक्सर बहुत सा ईसाई सत्य निहित होता है। क्योंकि एक ईसाई तपस्वी के जीवन में, मुख्य बात यह है कि यह एक वास्तव में मानवीय जीवन है; आत्मा को महान पाप नहीं नष्ट करते हैं, बल्कि दैनिक प्रलोभन करते हैं, जो अनजाने में ही सही, हर मोड़ पर तपस्वी की आत्मा को खतरे में डालते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे किसी भी ईसाई की आत्मा को डालते हैं। हम प्राचीन रूसी तपस्यावाद की इस विशेषता को तुरंत पहचान लेते हैं; यह हमें पहले से ही गुफाओं के संत थियोडोसियस के जीवन में मिलती है, हालांकि प्रत्येक तपस्वी में एक बिल्कुल अलग व्यक्तित्व होता है।

जब 1328 के तुरंत बाद रोस्तोव के छोटे से प्रिंसिपिलिटी का मॉस्को के बढ़ते ग्रैंड डची के साथ पुनर्मिलन हुआ, तो बार्थोलोम्यू के पिता राडोनेज़ चले गए - मॉस्को क्षेत्र का एक गाँव, जहाँ उन्हें एक जागीर दी गई थी। यहीं बारथोलोम्यू ने अपनी युवावस्था बिताई। वह अपना समय संपत्ति पर काम करने और भविष्य के बारे में चिंतन करने तथा चिंता करने में बाँटता था। उनके दोनों भाई, बड़े स्टीफन और छोटे पीटर, पहले ही शादीशुदा थे, और तीनों के लिए शासक की सेवा में प्रवेश करने का समय आ गया था, क्योंकि उन दिनों यह संपत्ति सेवा के बदले में मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस द्वारा प्रदान की जाती थी; यानी, इसके मालिक को सेवा करने के लिए बाध्य किया जाता था। लेकिन बार्थोलोम्यू लंबे समय से एक दूसरे विचार में मग्न था: उसने कई बार अपने पिता से एक मठ में जाने की अनुमति देने के लिए कहा था। उसके माता-पिता को कोई आपत्ति नहीं थी; वे केवल इतना चाहते थे कि उनका अविवाहित बेटा उनकी मृत्यु तक उनके साथ रहे। लेकिन कुछ समय बाद, परिवार की परिस्थितियाँ बदल गईं। उनके बड़े भाई की पत्नी का निधन हो गया, और स्टीफन एक पास के मठ में चले गए। उनके माता-पिता पहले ही अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में थे, और प्राचीन रूस की धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप, उन्होंने अपना शेष जीवन मठवास में अकेलेपन में बिताने का फैसला किया। अब बार्थोलोम्यू अपने जीवन के लंबे समय से प्रतीक्षित मार्ग पर चलने के लिए स्वतंत्र थे। उसने अपनी संपत्ति अपने छोटे भाई को सौंप दी (जीवनी के बाद के संस्करण में, जिसे पाचोमियस ने नैतिक शिक्षा के लिए संकलित किया था, यह बताया गया है कि संपत्ति गरीबों में बाँट दी गई थी) और अपने बड़े भाई के पास मठ में चला गया; कुछ ही समय बाद, उसने उसे मठ छोड़ने और घने जंगल में एक तपस्वी का कठिन जीवन शुरू करने के लिए मना लिया।

मठ की दीवार के ठीक बाहर एक घना चीड़ का जंगल था, जो एक काली दीवार की तरह था, और भाइयों को बहुत दूर नहीं जाना पड़ा। जंगल की गहराई में लगभग 10 किलोमीटर चलने के बाद, एक छोटी सी पहाड़ी पर, एक धारा के किनारे, उन्हें एक सुंदर खुला मैदान मिला। शुरुआत में वे एक झोपड़ी में रहते थे; बाद में उन्होंने लकड़ी की एक कोठरी और पवित्र त्रिमूर्ति को समर्पित एक छोटा चर्च बनाया। चर्च के अभिषेक के लिए आशीर्वाद और अनुमति लेने के लिए, वे मेट्रोपॉलिटन से मिलने मास्को गए और वहाँ दिव्य सेवा के लिए आवश्यक सभी चीजें प्राप्त कर लौट आए। चर्च के अभिषेक के बाद, पुरोहित भाइयों को छोड़ गया; फिर भी अब वे अपने नए चर्च में प्रार्थना कर सकते थे, जिसमें राल की महक आती थी, लेकिन, चूँकि वे पुरोहित का पद नहीं संभालते थे, वे धर्मविधि नहीं कर सकते थे। उनका तपस्वी जीवन कोई आसान काम नहीं था, जो उपवास और प्रार्थना में, दुनिया से दूर, जंगल में बीतता था, जहाँ दोपहर के तुरंत बाद ही संध्या हो जाती थी और सर्दियाँ अंतहीन लगती थीं। सबसे बड़े भाई, स्टीफन, इतने कठोर तपस्वी जीवन को लंबे समय तक सहन नहीं कर सके और मास्को के एक मठ में चले गए।

बार्थोलोम्यू अकेले, पूर्ण एकांत में रह गए; यह उनके तपस्वी जीवन का सबसे कठिन दौर था।

कुछ दूरी पर मिट्रोफान नामक एक वृद्ध हयरोमोंक रहते थे, जो अक्सर उस तपस्वी के निमंत्रण पर आकर लिटिर्जी का अनुष्ठान करते और उन्हें पवित्र उपहार प्रदान करते थे। एक दिन, बारथोलोम्यू ने उस हयरोमोंक से अपने शिष्य-दीक्षा की विनती की। शिष्य-दीक्षा के समय उन्हें सर्जियस नाम दिया गया। Митрофан की आज्ञा से, नव-दीक्षित भिक्षु पूर्ण एकांत में रहे, ताकि घने जंगल के एकांत में वे प्राचीन तपस्वियों के अनुकरण में जीवन यापन कर सकें – प्रलोभनों से संघर्ष करते हुए और उन पर विजय प्राप्त करते हुए। संन्यासी के जीवन के ये पहले निर्णायक वर्ष, जब वह तपस्वी या तो प्रलोभनों पर काबू पा लेता था या उनसे पराजित हो जाता था, रूसी मठवाद के भावी प्रकाशमान व्यक्तित्व के लिए सबसे कठिन और, साथ ही, सबसे अधिक आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करने वाला काल

था। केवल तपस्या का अभ्यास ही कठिन नहीं था – बल्कि चुने हुए मार्ग पर संदेह, अपनी ही ताकत पर संदेह, शैतान के प्रलोभन और अपनी मानवीय प्रकृति, प्यास और भूख, आत्मा को एकत्रित करने और निरंतर प्रार्थना की कला में अनुभवहीनता भी कठिन थी। जंगल में एकांत भी कठिन था। गर्मियों में, रहने की स्थिति बेशक आसान थी, लेकिन सर्दियों में – देवदार के जंगल की एक ठोस दीवार और जमीन पर बर्फ की एकरस चादर, दिन में घातक सन्नाटा और लंबी रातों के दौरान बर्फीले तूफानों की चीख, – यह सब भजन संहिता के पाठ में बाधा डालता था, प्रार्थना में उसके विचारों को एकत्रित करने से रोकता था, और भय, परित्याग और अलगाव की भावना, अपनी कमजोरी और भ्रम की अनुभूति को जगाता था। सर्गीयस की जीवनी के लेखक, भिक्षु एपिफानियस लिखते हैं, 'कुछ ही समय बाद, यानी, जब उन्होंने अकेले रेगिस्तान में एक या दो गर्मियाँ, या उससे अधिक, या उससे कम समय बिता लिया था—यह केवल ईश्वर ही जानता है।' और ईश्वर ही जानता है कि एक तपस्वी का श्रम वास्तव में कितना महान होता है; केवल वही अनुभवहीनों की सहायता करता है और उन्हें अनुभवी बनाता है…

फिर भी, जंगल की घनी झाड़ियाँ ईश्वर के एक सच्चे योद्धा को लोगों से छिपा नहीं सकतीं। उसकी ख्याति संसार भर में फैल जाती है, और उसका उदाहरण उन लोगों को आकर्षित करता है और बुलाता है जो सांसारिक जीवन से निराश हो चुके हैं। एक दिन साधक सर्गियस के पास आए और उन्होंने प्रभु की खातिर और अपनी मुक्ति के लिए उनके साथ मिलकर काम करने की विनती की। पहले तो बड़ी अनिच्छा से, लेकिन बाद में ईश्वर की इच्छा के आगे सिर झुकाते हुए, सर्गियस ने उन नवसिखुओं को स्वीकार कर लिया जो आध्यात्मिक जीवन में उनके शिष्य बनना चाहते थे। इस प्रकार, धीरे-धीरे, उसके चारों ओर एक समुदाय इकट्ठा हो गया, जो उसके मठवासी आदर्शों का संरक्षक बना और रूस के सबसे दूर-दराज के कोनों तक उसके कारनामों की ख्याति को पहुँचाया। स्वयं सेरजियस के लिए, समुदाय का आगमन एक नए आध्यात्मिक प्रयास की शुरुआत का प्रतीक था, जबकि उनके एकांत छोटे से तपस्थल के लिए, दुनिया के साथ संबंधों का नवीनीकरण ऐतिहासिक महत्व का था; क्योंकि इसके द्वारा रूसी लोगों के धार्मिक जीवन पर गहरे प्रभाव की नींव रखी गई, जिसने उनकी लकड़ी की झोपड़ी और उनके छोटे से चर्च को रूस का सबसे बड़ा मठ - ट्रिनिटी-सर्गेस लावरा, जिसके सुनहरे गुंबद, जंगल के ऊपर उठे हुए, लोगों को यहाँ, लावरा में बुलाते हैं, जो एक तीर्थस्थल बन गया है।

यदि हम नए मठ के मूल स्वरूप की कल्पना करने का प्रयास करें, तो हमें यह भी समझ में आएगा कि मठ आम तौर पर कैसे शुरू हुए। सेरगियस का छोटा लकड़ी का चर्च एक जंगल की साफ की गई जगह पर स्थित था, जिसे नए आए संतों ने साफ किया था। इसके चारों ओर उनकी कोठरियाँ थीं - छोटी लकड़ी की झोपड़ियाँ। और यह सब एक बाड़ से घिरा हुआ था - न केवल उन्हें जंगली जानवरों से बचाने के लिए, बल्कि भाइयों को यह याद दिलाने के लिए भी कि अँधेरी जंगल की झाड़ी अब एक ऐसी दुनिया थी जिसे उन्हें पीछे छोड़ देना था। झोपड़ियों के बीच की ज़मीन का वह टुकड़ा, जिसे जंगल से बड़ी मुश्किल से जीता गया था, भाइयों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए एक सब्जी के बगीचे के रूप में काम करता था। मठ की स्थापना के शुरुआती साल कठिन और कष्टों से भरे थे। सर्गियस, जो तब भी एक साधारण भिक्षु था, ने इस छोटे से समुदाय का नेतृत्व किया, जिसमें 12 से अधिक तपस्वी नहीं थे। सांघिक कर्तव्यों के पालन और प्रार्थना में, वह एक आदर्श थे; अपने भाइयों के साथ अपने व्यवहार में, वह हमेशा विनम्र, स्नेही और सौम्य थे। साल बीतते गए, और सेर्गीयस को एहसास हुआ कि, सामान्य भलाई के लिए, मठ को एक उचित रूप से नियुक्त मठाधीश की आवश्यकता है। लेकिन विनम्रता के कारण, वह स्वयं यह पद स्वीकार नहीं करना चाहते थे। भाइयों के लगातार आग्रह के बाद ही सर्जियस ने अंततः उनकी इच्छा पूरी करने का संकल्प लिया। एक हायरोमोंक के रूप में उनके अभिषेक और एक मठाधीश के रूप में उनकी नियुक्ति के बाद – यह लगभग 1344 का समय था – सर्जियस ने न केवल अपने साथी संतों की नजर में नैतिक अधिकार प्राप्त किया, बल्कि कैननिकल अधिकार भी प्राप्त किया।

युवा मठाधीश (तब सर्गियस 30 वर्ष के थे) के सामने एक बड़ा और महत्वपूर्ण कार्य था - सख्त सामुदायिक जीवन की शुरुआत - लेकिन उन्होंने इस लक्ष्य को धीरे-धीरे हासिल करने की ओर कदम बढ़ाया। अपने नए, ऊँचे पद पर रहते हुए भी, उन्होंने अपने भाइयों के प्रति अपने रवैये को नहीं बदला; हर काम में और हर समय, वह उनके लिए मठवासी सद्गुणों की मूर्त प्रतिमूर्ति थे। इस बीच, मठ की प्रतिष्ठा बढ़ रही थी। स्मोलेंस्क का एक आर्चिमंड्राइट, जिसका नाम साइमन था, ने युवा मठाधीश की उपलब्धियों के बारे में सुनकर, अपना मठ छोड़ दिया और सर्गियस के पास आश्रय लेने के लिए आया। उसके साथ लाए गए पैसों से पवित्र त्रिमूर्ति को समर्पित एक बड़ी चर्च के निर्माण का काम शुरू हो सका। भिक्षुओं की संख्या बढ़ रही थी, लेकिन नवसिखुओं को कठोर मठाधीश द्वारा भिक्षु के रूप में दीक्षा पाने के योग्य समझा जाने से पहले एक अपेक्षाकृत लंबी परीक्षा अवधि से गुजरना पड़ता था।

मठ अभी भी अलग-अलग रहने के नियम के अनुसार संचालित होता था: भ्रातृगण सामूहिक भोजन साझा नहीं करते थे, और सामुदायिक जीवन का सिद्धांत केवल धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से, अर्थात् सामूहिक प्रार्थना के

द्वारा, व्यक्त होता था। इसके अलावा, सर्गियस मठ के भिक्षुओं के आध्यात्मिक पिता के रूप में सेवा करते थे, जिसने निस्संदेह भाइयों के आध्यात्मिक विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाई। इस संबंध में, सर्गियस की सेवा गुफाओं के संत थियोडोसियस के समान थी। सर्गीयस के जीवन से हम यह सीखते हैं कि भाई-बंधु दिन-रात मठाधीश की निरंतर देखभाल में रहते थे। फिर भी, मठ की गरीबी और अभाव के कारण, सर्गीयस के लिए यह सुनिश्चित करना अत्यंत कठिन कार्य था कि उनकी तपस्या संबंधी आवश्यकताएं पूरी हों; क्योंकि मठाधीश ने एक बार के लिए भिक्षुओं को मठ की दीवारों के बाहर भीख स्वीकार करने से मना कर दिया था। जीवन-चरित के अनुसार, सेंट सेरजियस मठ के इतिहास में पहला चमत्कार अत्यंत आवश्यकता के समय में हुआ: ताज़े बने रोटी और मछली से लदी एक गाड़ी अचानक मठ के द्वार पर आकर रुकी; सारथी के अनुसार, यह एक अज्ञात परोपकारी के कहने पर किया गया था। वोल्कोलामस्क के संत जोसेफ († 1515) ने लिखा कि सेर्गेव मठ में गरीबी के समय, बर्च की छाल पर धार्मिक ग्रंथ लिखे जाते थे – जिनमें से कुछ आज भी सुरक्षित हैं। मठाध्यक्ष के रूप में 10 या 11 साल बाद - यानी, लगभग 1354 में - सर्गियस ने एक सामुदायिक नियम लागू किया, जिसका कुछ भिक्षुओं ने विरोध किया, जो जल्द ही मठ छोड़कर चले गए। यह परिस्थिति इस बात का सबसे अच्छा उदाहरण है कि उस समय के मठवासी समुदाय के लिए सेनोबिटिज़्म - यानी मठवासी जीवन की नींव - की अवधारणा कितनी अपरिचित थी। लेकिन अब कठिनाइयों के सबसे मुश्किल वर्ष उनके पीछे रह गए थे, और सेरगियस सामुदायिक जीवन के लिए आवश्यक इमारतें खड़ी करने में सक्षम थे। भोजनशाला, मठ की रसोई और अन्य सेवा भवन बनाए गए। स्थायी कर्तव्यों को निभाने के लिए भाईचारे में से भिक्षुओं का चयन किया गया। भिक्षुओं की संख्या बढ़ गई, और राजकुमारों और महा-राजकुमारों सहित धर्मनिष्ठ लोगों से संत सेरजियस मठ में भेंटें आने लगीं, जिसने वर्ष-दर-वर्ष रूसी लोगों के धार्मिक जीवन में एक बढ़ती हुई प्रमुखता प्राप्त की।

हालांकि, इस धन ने मठ समुदाय के आध्यात्मिक जीवन के लिए खतरा पैदा कर दिया था। सेर्गेई की गतिविधियों का दायरा लगातार बढ़ रहा था, और उनकी जीवनी हमें उनके पादरीय कौशल और साथ ही उस तपस्वी कठोरता के कई उदाहरण देती है, जिससे उन्होंने अपने मठ का शासन किया। मठ अब घने जंगल से घिरा नहीं था; मठ की दीवारों के पास किसान बस्तियाँ बस चुकी थीं, और मठ खुद को सांसारिक मामलों में उलझा हुआ पाया: उसने चल और अचल संपत्ति अर्जित की, जिसने कई भिक्षुओं को मठ की दीवारों के बाहर विभिन्न प्रकार के कर्तव्य निभाने के लिए मजबूर कर दिया; यह अब न केवल आध्यात्मिक तपस्या का स्थान बन गया था, बल्कि आसपास की भूमि के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक संस्थान भी बन गया था।

ट्रिनिटी-सर्गेयस मठ का इतिहास पुराने रूसी मठवासी उपनिवेशवाद का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। दो या तीन दशकों के भीतर, एक जंगल के तपोवन की जगह पर एक बसा-बसाया और आबाद इलाका आकार ले चुका था। 14वीं और 15वीं शताब्दी के अन्य मठों के साथ भी यही प्रक्रिया हुई: एक मठ का संस्थापक, या एकांत की तलाश में एक भिक्षु, घने जंगल में चला जाता और इस प्रकार बाद के उपनिवेशीकरण का मार्ग प्रशस्त करता। वोल्गोडा और बेलोज़ेर्स्क क्षेत्रों में, और आगे व्हाइट सी तक नए स्थापित किए गए आश्रम, पुराने रूसी उपनिवेशीकरण के मार्ग में मील के पत्थर थे।

वी. क्ल्यूचेव्स्की कहते हैं, 'यह आंदोलन पुराने रूसी उपनिवेशवाद में बहुत महत्व रखता था। सबसे पहले, जंगल का तपस्वी-आश्रम स्वयं, अपने सघन लकड़ी या पत्थर के घेरे के भीतर, एक कृषि बस्ती का गठन करता था, यद्यपि यह धर्मनिरपेक्ष किसान गांवों से काफी अलग था; भिक्षुओं ने जंगल साफ किया, सब्जी के बगीचे लगाए, हल जोता और घास काटी, ठीक वैसे ही जैसे किसान करते थे। लेकिन मठ का प्रभाव इसकी दीवारों के बाहर रहने वाली आबादी तक भी फैला। हम जल्द ही देखेंगे कि कैसे आश्रम के चारों ओर धर्मनिरपेक्ष किसान गाँव बने, जो मठ समुदाय के साथ मिलकर, मठ के चर्च की ओर आकर्षित होने वाली एक एकल पैरिश (parish) का गठन करते थे... बाद में, मठ तो गायब हो गया, लेकिन मठ के चर्च वाला किसान पैरिश बना रहा... इस प्रकार, आश्रमों का विकास भविष्य के ग्रामीण पैरिशों का विकास था, जिनमें से अधिकांश अपने जिले में अपनी तरह के पहले थे। दूसरा, जहाँ भी भिक्षु गए, किसान आबादी उनके पीछे चली आई; दोनों के सामने एक ही रास्ता था - उत्तरी और पूर्वोत्तर के निर्जन जंगलों में, जहाँ किसान स्वतंत्र रूप से अपनी भूमि की खेती कर सकता था, कृषि योग्य खेतों के लिए जंगली वन को साफ कर सकता था, और भिक्षु अपने मौन का अभ्यास कर सकता था[75] ।

एक छोटे, विनिम्र आश्रम का एक बड़े मठ में रूपांतरण, जो एक बार फिर से व्यापक दुनिया के संपर्क में आया, कई रूसी मठ समुदायों का भाग्य था। यह स्पष्ट है कि इस तरह के बदलाव के केवल सकारात्मक परिणाम ही नहीं थे

[75] क्ल्युचेव्स्की। Geschichte Russlands. खंड 2 (1925)। पृ. 263.

(व्यापक सामाजिक और ईसाई सेवा का अवसर) बल्कि नकारात्मक परिणाम भी थे (मठ जीवन का धर्मनिरपेक्षीकरण)। सर्गेई के निधन के बाद, ये परिणाम उनके मठ में भी स्पष्ट हो गए; फिर भी, मठाध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने मठवासी समुदाय को मठ जीवन की नींव के रूप में कड़ाई से संरक्षित रखा। उन्होंने यह सब मठवासियों द्वारा उनके असाधारण आध्यात्मिक उपहारों, उनके विश्वास की ताकत और उनके चरित्र की शक्ति को पहचाने जाने के कारण संभव कर दिखाया। अपने आसपास के लोगों के लिए, वह मठ समुदाय द्वारा चुने गए एक मठाधीश से कहीं अधिक, पवित्रता की दहलीज पर खड़े एक व्यक्ति थे। उनके जीवनचरित के लेखक, भिक्षु एपिफानियस, हमें बताते हैं - और उनका विवरण अपनी संयमपूर्ण और साधारण सादगी के कारण विश्वास जगाता है - – कि मठ के प्रबंधन में अपने द्वारा किए गए असंख्य कार्यों के बावजूद, सर्गियस लगातार अपने आध्यात्मिक जीवन को परिपूर्ण कर रहे थे; कि अपनी आंतरिक यात्रा में वे आत्मा के शुद्धिकरण के चरण से आध्यात्मिक प्रबोधन के चरण तक पहुँच चुके थे; कि तब भी वे एक रहस्यवादी थे और उन्होंने आध्यात्मिकता के उच्चतम चरणों – ईश्वर का चिंतन और उनके साथ एकता – को प्राप्त कर लिया था। इस प्रकार, एपिफेनियस के सरल, कभी-कभी लगभग बाल-सुलभ विवरण में, सेरजियस हमारे सामने पहले रूसी रहस्यवादी के रूप में प्रकट होते हैं, जो हमें पुरानी रूसी संतों की कथाओं में कहीं और नहीं मिलेगा।

एक अवसर पर, दो भाइयों, इसाक और मकरियस ने संत के बगल में खड़े प्रकाशमान स्वर्गदूतों को देखा, जो उनके साथ दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे। जब उनके भयभीत भाइयों ने इस दर्शन के बारे में पूछा, तो सर्गियस ने कुछ हिचकिचाहट के बाद कहा कि उन्हें पहली बार ऐसी अलौकिक कृपा नहीं मिली थी, लेकिन उन्होंने अपनी मृत्यु तक इसके बारे में बात न करने के लिए मना किया। एक अन्य अवसर पर, उनके सेल के परिचारक, भिक्षु माइकल ने, पवित्र प्रेरितों पतरस और यूहन्ना के साथ ईश्वर की माता का एक चमत्कारी साक्षात्कार देखा। सर्गियस ने स्वयं यह दृष्टि अपने भाइयों मकरियस और इसाक को सुनाई। तीसरा चमत्कार साधु साइमन ने देखा। लिटिर्जी के दौरान पवित्र उपहार प्राप्त करने से पहले, पूरा वेदी प्रकाश से भर गया, और ऊपर से एक अग्नि किरिण मसीह के शरीर और रक्त वाले प्याले में गिरी; इसके बाद, संत सेरजियस ने पवित्र उपहार प्राप्त किए। जब चकित साइमन ने पूछा, तो मठाधीश ने उत्तर दिया कि यह पवित्र आत्मा की कृपा थी…

ऐसी आध्यात्मिक ऊँचाइयों को प्राप्त करने वाले एक तपस्वी का अपने आस-पास के लोगों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। उनकी जीवनी हमें चमत्कारों, भविष्यवाणियों, बीमारों के ठीक होने, और संत की दूरदर्शिता के बारे में बताती है। पवित्र मठाधीश ने ग्रैंड प्रिंस दिमित्री को टाटारों के खिलाफ़ (1380) युद्ध के लिए आशीर्वाद दिया और कुलिकोवो की लड़ाई (डॉन नदी के ऊपरी इलाकों में) में उनकी विजय की भविष्यवाणी की। एक अद्भुत वृत्तांत है कि कैसे सर्गियस और परम के बिशप स्टीफन—प्राचीन रूस के सबसे बड़े मिशनरी—कई किलोमीटर दूर होते हुए भी एक-दूसरे को झुककर नमस्कार करते थे। ऐसे उदाहरण अधिकांशतः संत के सांसारिक जीवन के अंतिम वर्षों के दौरान हुए।

25 सितंबर 1392 को, 78 वर्ष की आयु में, मठ में 58 वर्षों के तपस्वी जीवन के बाद उनका निधन हो गया। उनका जीवन विनम्रता और सादगी, परिश्रम और प्रेम से परिपूर्ण था। मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस († 1378), जो परम पूज्य सेरगियस के एक महान मित्र और प्रशंसक थे, ने पवित्र मठाधीश से अपना उत्तराधिकारी बनने का अनुरोध किया, लेकिन सेरगियस एक साधु के फटे-पुराने कपड़ों को एक बिशप के भव्य परिधानों के साथ बदलना नहीं चाहते थे। राडोनेज़ के पूजनीय सर्गियस को उनकी विनम्रता और सादगी के लिए रूसी तपस्वियों और संतों के बीच विशेष सम्मान और प्रेम प्राप्त है। फिर भी इतिहास ने उन्हें पुराने रूसी मठवासी जीवन शैली के मुख्य वास्तुकार और एक ऐसे तपस्वी स्कूल के संस्थापक के रूप में भी मान्यता दी है, जिसने रूसी तपस्या के विकास में योगदान दिया; क्योंकि इस स्कूल के भीतर, या इसके प्रभाव में, कई ईसाई तपस्वियों ने परिपक्वता प्राप्त की।

४. सेरgiй का तपस्वी 'विद्यालय' और १४वीं तथा १५वीं शताब्दियों के अन्य तपस्वी

राडोनेज़ के संत सेरगियस रूसी मठवाद के सच्चे संस्थापक हैं। उनके प्रभाव ने न केवल रूसी मठों में सामुदायिक जीवन की पुनर्स्थापना की, बल्कि यह 14वीं और 15वीं शताब्दी में मठवाद के महान वृक्ष की नींव और जड़ भी बन गया: इस वृक्ष की लगभग सभी शाखाएँ संत सेरगियस के मठ की भावना से अपना पोषण प्राप्त करती हैं।

सामुदायिक नियम वाले और आठ मठों की स्थापना का श्रेय भी उन्हें जाता है[76] । इन मठों के आठ संस्थापक, जो स्वयं 14वीं और 15वीं शताब्दी में मठवाद के महान निर्माता थे, संत सर्गियस के शिष्य थे।

---

[76] ये हैं: 1. करिज़ाच में मठ; 2. मास्को में एंड्रोनिकोव मठ (1360); 3. रोस्तोव के पास बोरिसि और ग्लेब मठ (1363); 4. मास्को में साइमोनोव मठ (1370); 5. कोलोमना के पास गोलुत्विस्की मठ (1381); 6. बोगोरोडस्क के पास डुबेन्स्की मठ (1381); 7. डुबेन्स्की-ओस्त्रोव्स्की मठ

उनमें से तीन – संत पॉल († 1429), संत सर्जियस († 1412) और संत सल्विेस्टर († 1379) – ने ट्रांस-वोलगा क्षेत्र में, वोल्गोडा क्षेत्र के ओब्नोर्स्क वोल्स्ट में काम कयि; उन्होंने वहाँ तीन मठों की स्थापना की। ओबनोरा के संत पॉल अपने वशिष रूप से कठोर जीवन शैली के लिए जाने जाते हैं; मठ की स्थापना से पहले भी, वह तीन साल तक एक पेड़ की खोखल में रहे। उनकी मृत्यु 112 वर्ष की आयु में हुई। इस बात के प्रमाण हैं कि उनके मठ में 'वरष्ठि' की परंपरा फलती-फूलती थी[77] । चौथे शष्यि, गैलचि के संत अब्राहम († 1375 के बाद), ने गैलचि (कोस्ट्रोमा गवर्नरेट) के आसपास चार मठों की स्थापना की[78] । कोस्ट्रोमा क्षेत्र में एक और मठ[79] की स्थापना नकिति ने की थी, जो सर्गयिस के एक और शष्यि थे। याकूब (ज़ेलेज्नोबोर्स्क के, † 1442), जो सर्गयिस के एक अन्य शष्यि थे, एक मठ के संस्थापक थे[80] । मॉस्को क्षेत्र में, सर्गयिस के शष्यिों द्वारा दो मठों की स्थापना की गई: एक मेथोडयिस († 1392) द्वारा, और दूसरा स्टोरोज़हेव्स्क के साव्हा द्वारा[81] ।

एक अन्य समूह में वे तपस्वी शामलि हैं जो ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ की भाईचारे से नहीं थे, लेकनि वे परम आदरणीय सर्गेयस के साथ घनष्ठि आध्यात्मकि संवाद में थे—यानी उनके 'संवाद साथी', वे लोग जो अक्सर उनसे मलिने आते थे और उनकी सलाह का पालन करते थे।

उनमें से, स्तेफन ऑफ मख्रश्चि († 1406) का उल्लेख करना आवश्यक है, जो कीव-पेचेरस्क मठ के एक भक्षिु थे, जो लगभग 1355 में सर्गयिस के पास आए थे। उन्होंने दो मठों की स्थापना की। पेरयिास्लाव के सेंट डेमेट्रयिस († 1392), जन्हिें प्रलिुट्स्की के नाम से जाना जाता है, ने वोल्गा के उत्तर में दो सामुदायकि मठों की स्थापना की। सुज़दल के आर्चबशिप डायोनसियिस († 1385) ने नज़िनी नोवगोरोड में एक मठ की स्थापना की और उस शहर तथा सर्गयिस के स्कूल के बीच एक संबंध स्थापति कयि। पर्म के बशिप सेंट स्टीफन († 1396), जो सबसे प्रसद्धि रूसी मशिनरी थे, जन्हिोंने पगन फनिशि जनजातयिों को शक्षिति करने का महान ईसाई कार्य कयि, उन्होंने नव-धर्मांतरति lands[82] में चार मठों की स्थापना की।

लेकनि मठ संस्थापकों के इस समूह में सबसे चमकदार सतिारा बेलोजेरो के संत सरिलि († 1427) हैं, जो बेलोये झील के तट पर स्थति प्रसद्धि संत सरिलि मठ के संस्थापक थे। संत सरिलि वशिष रूप से कठोर तपस्वयिों के एक समूह के आध्यात्मकि पति बने, जनिमें से, बाद में, 15वीं शताब्दी के अंत और 16वीं शताब्दी के पहले छमाही में, उस युग के मठवाद के भीतर एक वशिष्टि आंदोलन उभरा - ज़ावोल्ज्स्कोए स्टारेट्स आंदोलन, जो सेंट नीलस ऑफ सोरा के माध्यम से, माउंट अथोस और हेसकिैस्ट्स के रहस्यवाद से जुड़ा है।

रूस में मठवाद के इतहिास में, सेंट सरिील का स्थान, सेंट सेरजयिस ऑफ़ राडोनेज़ के बाद, शायद सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि सामुदायकि जीवन की उनकी उत्साही रक्षा के लिए वे व्यापक रूप से प्रसद्धि थे, और 15वीं शताब्दी में उनके मठ के नयिम को उनके समकालीनों द्वारा सबसे कठोर माना जाता था। वे एक बोयार परविार से थे (1337 में जन्मे) और बहुत कम उम्र में ही अपने माता-पति को खो बैठे। लंबे समय तक, वे बोयार वेलेमनिोव की सेवा में रहे, जो ग्रैंड प्रसि के नकिटतम सहयोगयिों में से थे। जीवन में काफी देर से, लगभग 43 वर्ष की आयु में, सरिील ने मख्रश्चि के स्टीफन के प्रभाव में, संन्यास की शपथ लेने और साइमोनोव मठ में बसने का नर्णिय लयि। वह अपने कठोर तप और अथक परश्रिम के लिए जाने गए। जब भी संत सेरगयिस साइमनोव मठ आते, तो वे सबसे पहले सरिील से मलिते। हालाँकि, उनका कठोर जीवन यापन और एकांत प्रेम एक अमीर मेट्रोपॉलटिन मठ के लिए उपयुक्त नहीं था; परणिामस्वरूप, मठ के आर्चमैंड्राइट और मठाधीश बनने के बाद, सरिील इस पद पर अधकि समय तक नहीं रह सके। उन्होंने इसे छोड़ दयिा और शुरू में अपने सेल में सख्त एकांत में रहे; बाद में, उन्होंने मठ छोड़ दयिा और 'उत्तरी वीरान' में, बेलोजेरो के घने और दलदली जंगलों में चले गए। वहाँ, 1393 में, पूज्य ने अपना खुद का मठ स्थापति कयि, जसिमें उन्होंने एक वशिष रूप से सख्त सामुदायकि जीवन शैली शुरू की। उन्होंने इस मठ में 30 साल बतिाए, और उनकी

(1380); 8. सर्पुखोव में वसिोट्स्की मठ, जसिकी स्थापना सर्गयिस के शष्यि अथानासयिस ने उनके आशीर्वाद से की थी (1374)। ज्वेरीस्की। उपरोक्त संदर्भ 2. संख्याएँ 864, 675, 1990, 1212, 1313, 753; 1. संख्या 72. गोलुबनिस्की। उपरोक्त संदर्भ, पृष्ठ 75–79।

[77] देखें मेरी पुस्तक: स्मोलचि। *लेबेन उंड लेरे डेर स्टारज़ेन*। पृष्ठ 65–70।

[78] ज्वेरीस्की। उद्धृत ग्रंथ, खंड 2, संख्या 598, 597; खंड 3, संख्या 1915, 2031। क्ल्यूचेव्स्की। प्राचीन रूसी संतों का जीवन। पृ. 196, 276। मकाराई। खंड 4। पृ. 196, 195। गोलुबस्किी। द वेनेरेबल सर्जयिस। पृ. 81।

[79] ज्वेरनि्स्की। 2. संख्या 754।

[80] ज्वेरस्कि. 2. संख्या 796. गोलुबस्किी. पूर्वोक्त, पृ. 82.

[81] ज्वेरस्कि। खंड 1, संख्या 404; गोलुबस्किी। पृ. 79; ज्वेरस्कि। खंड 2, संख्या 1140; गोलुबस्किी। पृ. 80.

[82] गोल्बुंस्की। पृ. 82–84, 86। ज्वेरीस्की। खंड 2, संख्या 1959; खंड 1, संख्या 524; खंड 2, संख्या 1330। मकारयि। खंड 4। पृ. 142, 147, 211। क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 96। रीडग्सि। 1878। खंड 3। पृ. 43।

देखरेख में कई भिक्षुओं को प्रशिक्षित किया गया। 9 जून 1427 को उनका निधन हो गया[83] सिरिल के जीवित रहते हुए भी, उनके मठ के आसपास कई छोटे आश्रम स्थापित हो गए, जिनके लिए यह मठ एक आध्यात्मिक केंद्र के रूप में कार्य करता था। इन्हीं आश्रमों ने वोल्गा क्षेत्र के प्रसिद्ध मठ क्षेत्र का गठन किया, जो एक विशेष रूप से कठोर तपस्वी आंदोलन का आध्यात्मिक गृहनगर और गढ़ था, जिसने मठों की जमींदारी के खिलाफ संघर्ष शुरू किया। रूसी चर्च के इतिहास में एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व, सोरा के सेंट नील ने भी ट्रांस-वोलगा क्षेत्र में कार्य किया; उन्होंने न केवल अपने समकालीनों पर बल्कि 18वीं और 19वीं शताब्दी में मठवाद पर भी एक शक्तिशाली प्रभाव डाला।[84]

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, कई नए मठों के संस्थापक किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ में आध्यात्मिक रूप से प्रशिक्षित हुए थे।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, संन्यासी साव्वती († 1435) का उल्लेख करना चाहिए, जिन्होंने श्वेत सागर में एक द्वीप पर सोलोवेत्स्की मठ की स्थापना की[85] । उनके अलावा, ओशेव्स्क के अलेक्जेंडर († 1479) और बेलोजेरो के मार्टिनियन († 1483) का भी उल्लेख करना चाहिए, जो सेंट सिरिल के शिष्य और 1447 से 1454 तक ट्रिनिटी-सर्गीय मठ के मठाधीश थे।[86]

अंत में, कोमेल के कॉर्नेलियस († 1537) भी किरिलोव मठ से ही आए थे; उनके शिष्यों ने, 15वीं शताब्दी के अंत और 16वीं शताब्दी की शुरुआत में, उत्तरी रूस में कई मठवासी बस्तियाँ स्थापित कीं – ये मुख्य रूप से एक-दूसरे के करीब स्थित स्केट्स थे, जिन्हें उनके समकालीनों द्वारा 'सेंट कॉर्नेलियस की लावरा' कहा जाता था। संत सिरिल की तरह, संत कॉर्नेलियस भी एक सेवा-भावी बोयार परिवार से आए थे; 20 वर्ष की आयु में, 15वीं शताब्दी के मध्य में, उन्होंने किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ में प्रवेश किया और जेनाडी नामक एक एल्डर के अधीन सेवा करते हुए वहाँ सबसे कठिन श्रम किया। यह जीवन शैली 10–15 वर्षों तक जारी रही। फिर कॉर्नेलियस ने कई वर्षों तक एक मठ से दूसरे मठ तक भटकते हुए बिताए। शहरी मठों के जीवन से असंतुष्ट और पूर्ण एकांत की तलाश में, कॉर्नेलियस वोल्गोडा क्षेत्र में, तथाकथित कोमेल जंगलों में आए—जो घने, अछूते और दलदली थे—जहाँ तक किसी बसाहट करने वाले का पैर भी नहीं पड़ा था। यहाँ, जंगलों की शांति में, उन्होंने कई साल बिताए। लेकिन उनका जीवन, जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णित है, तंगहाओं और प्रलोभनों से भरा था, जो ईश्वर के हर सैनिक पर आते हैं और कठोर तपस्वी को सांसारिक महिमा दिलाते हैं। यही था पूजनीय कोर्नेलियस का जीवन; क्योंकि, देवदार के जंगल की गहराई में कठोर तपस्या में स्वयं को समर्पित करते हुए, वह दुनिया से छिपे नहीं रहे, और धीरे-धीरे मोक्ष की तलाश में नए तपस्वी उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए। जंगल में बीस साल बिताने के बाद, पचास से अधिक आयु के कॉर्नेलियस ने मठवासी समुदाय को एक उचित मठ में संगठित करने का फैसला किया। हालाँकि, उनकी माँगों की कठोरता के कारण, कुछ कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं, जिसके चलते कुछ समय के लिए उन्हें अपना मठ छोड़ने के लिए भी मजबूर होना पड़ा। संत कोर्नेलियस विशेष रूप से भाइयों के समुदाय के लिए व्यक्तिगत रूप से एक नियम लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं। कोर्नेलियस का नियम कोई मौलिक कृति नहीं है। यह एक ओर, सोरा के संत नीलस की 'स्केट जीवन पर निर्देश' और दूसरी ओर, वोल्त्सक के संत जोसेफ की 'आध्यात्मिक मार्गदर्शिका' के प्रभाव को दर्शाता है, जो मठवासी शिक्षा की दो अलग-अलग प्रणालियों का वर्णन करती हैं। इस अपेक्षाकृत असामान्य संयोजन की व्याख्या इस तथ्य से की जा सकती है कि कोर्नेलियस को एक सामुदायिक मठ का प्रबंधन करना था, जबकि वह एक तपस्वी के रूप में अपने जीवन से प्राप्त आध्यात्मिक अनुभव की उपेक्षा नहीं करना चाहता था। इसके अलावा, यह भी खारिज नहीं किया जा सकता कि कोर्नेलियस वृद्ध नीलस को व्यक्तिगत रूप से जानते थे, जो संभवतः किरिलोव मठ में उनके साथ रहते थे। नीलस की *इंस्ट्रक्शन* से, कॉर्नेलियस ने एक व्यक्तिगत भिक्षु की आध्यात्मिक देखभाल ('बुद्धिमानी से प्रार्थना') के लिए

---

[83] गोल्बुंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 84; क्ल्युचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 159; काड्लुबोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 182–187; मुराव्योव। रशियन थेबाइड। पृ. 147 ff.; AI. 1. संख्या 21, 22, 25, 26, 55, 56, 32; सेंट सिरिल का जीवन काडलुबोव्स्की (1912) द्वारा याब्लोंस्की में प्रकाशित हुआ था: पाखोमियस द लोगोथेते (1908); अंश: मकारीय में। ४. परिशिष्ट। पृष्ठ ३५६–३६०; जीवनी का पुनर्कथन: फिलारेट। रूसी संत। जून। पृष्ठ २०६–२२२। यह भी देखें: बर्सुकोव। स्रोत। पृष्ठ 297–306 और ऊपर उल्लेखित याब्लोंस्की का कार्य। सेंट सिरिल पर वोलोट्स्क के सेंट जोसेफ के विचारों के लिए, देखें उनका 'पवित्र पिताओं की कथा' में: LZAK. 2. पृष्ठ 82। ज्वेरींस्की। 2. संख्या 867। सेंट सिरिल के नियम पर, देखें: निकोल्स्की। 'सिरिल-बेलोज़ेर्स्क मठ में सामुदायिक और सेल जीवन', *क्रिश्चियन रीडिंग्स 1907* में। 224. पृष्ठ 163।

[84] संत नीलस पर, अध्याय IV देखें।

[85] ज्वेरिंस्की। 2. संख्या 1151; सावित्। *द सोलोवेत्स्की एस्टेट इन द 15th–17th सेंचुरीज़* (1927); यह कृति सामग्री का एक नया और महत्वपूर्ण मूल्यांकन प्रस्तुत करती है।

[86] ज्वेरिंस्की। 2. संख्या 606। सेंट मार्टिनियन पर, देखें: ब्रिलियनटोव। बेलोजेरो में फेरापोंतोव मठ। पृ. 17। गोर्स्की। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा का एक ऐतिहासिक विवरण (1890)। पृ. 69। मार्टिनियन ने वोझ्स्कोये झील के तट पर एक मठ की स्थापना की और इसे अक्सर वोझेज़ेर्स्की मठ कहा जाता है; तुलना करें: ज्वेरींस्की। 2. संख्या 1188।

आवश्यक बातें ग्रहण कीं। उन्होंने सामुदायकि जीवन की नींव रखने और दैवीय सेवाओं के लिए मार्गदर्शक के रूप में जोसेफ की *स्परिचिुअल* का उपयोग कयिा। कोर्नेलयिस का नयिम मठों की ज़मींदारी के खलिाफ है, जो फरि से नीलस के प्रभाव की ओर इशारा करता है। कोमेल के कोर्नेलयिस की मृत्यु 19 मई 1537 को हुई। उनकी जीवनी - पुरानी रूसी जीवनी का एक रत्न - एक भक्षिु नाथनेल द्वारा लखिी गई थी; 1600 में कोर्नेलयिस, , को उनके मृत्युपरान्त चमत्कारों के प्रमाणीकरण के बाद,[87] को संत घोषति कयिा गया। वोलोग्दा से श्वेत सागर तक फैले एक वशिाल क्षेत्र में बखिरे हुए कोमेल के कोर्नेलयिस के मठ से कई नए मठों के संस्थापक उभरे। इनमें सबसे प्रसद्धि थे नोवोओज़ेरो के सरिीपयिो (या बेली, † 1532), जो नोवोओज़ेरो झील पर क्रास्नी द्वीप पर मठ के संस्थापक थे; कोस्त्रोमा के गेनाडयिस († 1565); और इराप के फलिपि († 1527)[88] ।

अब तक, हमने उन तपस्वयिों के बारे में बात की है जो कसिी न कसिी तरह से संत सेरजयिस के आध्यात्मकि प्रभाव से जुड़े थे। लेकनि उनके अलावा, हम तपस्वयिों के एक और समूह की पहचान कर सकते हैं जन्हिोंने भी लगन से काम कयिा और रूसी मठवाद के इतहिास में एक प्रमुख स्थान प्राप्त कयिा।

यह कुबेन्स्कोये झील पर एक चट्टानी द्वीप पर स्थति स्पासो-कामेन्नी मठ के संतों का एक समूह है। इस मठ की स्थापना 13वीं शताब्दी के मध्य में हुई थी, लेकनि इसे केवल एबॉट डायोनसियिस के अधीन ही वशिेष महत्व प्राप्त हुआ। वह यूनानी या दक्षणि स्लाव मूल के थे, उन्होंने माउंट अथोस की यात्रा की थी, और बाद में मास्को आए थे। 14वीं शताब्दी के अंत के आसपास (लेकनि 1389 से पहले), डायोनसियिस को स्पासो-कामेन्नी मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया, जहाँ उन्होंने सख्त अथोनाइट नयिम लागू कयिा। डायोनसियिस 1418 तक मठ में रहे, जब उन्हें प्राचीन शहर रोस्तोव का आर्चबशिप नयिुक्त कयिा गया, जहाँ उनकी 1425 में मृत्यु हो गई। स्पसो-कामेनी मठ ने कई प्रतष्ठिति तपस्वयिों को संवारा, जन्हिोंने बदले में कुबेन्स्कोये झील के आसपास नए मठों की स्थापना की और वहां ईसाई धर्म का प्रकाश लाकर एक महान मशिनरी कार्य पूरा कयिा[89] ।

उनमें सबसे पहले और सबसे प्रमुख हैं ग्लुशत्सिा के संत डायोनसियिस († 1437)। उनका जीवन-चरत्रि एक ऐसे तपस्वी की तस्वीर पेश करता है जो नम्रता और दया, स्नेह और वनिम्रता से परपूर्ण था – ये वे गुण थे जनिमें वह संत सर्गयिस का प्रतद्विंद्वी था। उन्होंने वोलोग्दा क्षेत्र में ग्लुशत्सिा नदी के कनिारे बने अपने मठ के चर्च को अपनी ही बनाई हुई आइकन से सुशोभति कयिा, क्योंकि उनमें आइकनोग्राफी का वरदान था, जो पुराने रूसी संतों में अपेक्षाकृत दुर्लभ था; उनकी जीवनी यह भी बताती है कि उन्होंने दैवीय अनुष्ठान के लिए पवत्रि पात्र और बर्तन कुशलता से बनाए - डस्कि, प्याले और तारों के आकार के पात्र। अपने मठ में, डायोनसियिस ने कनिोवयिन नयिम पेश कयिा; कुल मलिाकर, उन्होंने एक कन्वेंट सहति एक-दूसरे के पास तीन मठों की स्थापना की। उनके मशिनरी कार्य की एक वशिषि्ट वशिेषता कसिान बस्तयिों में पैरशि चर्चों का नरि्माण था[90] ।

उनके एक शष्यि थे जनिका नाम ग्रेगरी था, जन्हिें पेलशेंस्की († 1442) के नाम से जाना जाता था[91] । उनकी जीवनी में, जो 15वीं शताब्दी के अंत या 16वीं शताब्दी की शुरुआत में लखिी गई थी, हमें ग्लुशत्सिा के डायोनसियिस और ग्रेगरी के बीच एक दलिचस्प बातचीत का वृत्तांत मलिता है—कहा जा सकता है कि यह गुरु और उनके शष्यि के बीच की बातचीत थी; भले ही यह वृत्तांत वास्तव में हुई कसिी बातचीत को न भी दोहराता हो, फरि भी यह वोल्गोडा के जंगलों के मठवासी समुदाय में हेसकिैस्ट वचिारों के प्रवेश का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है। संत डायोनसियिस हृदय और आत्मा के संस्कार की बात करते हैं, जो बुराई और पापी वचिारों से आत्मा के शुद्धकिरण के माध्यम से, ईश्वर

---

[87] सेंट कॉर्नेलयिस पर, देखें: कोनोपलेव। वोलोग्दा क्षेत्र के संत, में: रीडग्सि। 1895. 4. पृ. 86–101। क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 303, 308, 389, 393, 401। मुरावयिोव। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 64; उनके चार्टर के लिए, देखें: IRI. 4. पृ. 673–704; अंश: कोनोपलेव. पृ. 94–100, मुरव्योव द्वारा पुनर्नविदति। मकाराई. 7. पृ. 49, 69; AAE. 1. क्रमांक 222, 380–397। उनके मठ द्वारा धारति जमीनों के प्रश्न पर, तुलना करें: AYU. 1. क्रमांक 76। ज्वेरीस्की। 2. क्रमांक 884।

[88] ज्वेरीस्की। 2. संख्या 868, 1157, 557। तुलना करें: तालकिा I और II।

[89] हमारे पास स्पासो-कामेन्नी मठ के इतहिास का एक वृत्तांत है – वृद्ध पैसयिस यारोस्लावोव द्वारा रचति 'स्पासो-कामेन्नी मठ की कथा', जो 15वीं-16वीं शताब्दी के एक प्रमुख व्यक्ति थे; उनकी मृत्यु 1503 के बाद हुई। 'कथा' देखें: Prav. sob. 1861. पृ. 197–214। ज्वेरीस्की। 1. संख्या 446। तालकिा III देखें।

[90] कोनोपलेव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 43–53, जसिमें संत डायोनसियिस के जीवन का एक अच्छा पुनर्कथन है; क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 493, 415, 462; ज्वेरस्कि। 2. क्रमांक 766, 767; 3. क्रमांक 1150; सावचि। रूसी उत्तर में 14वीं और 15वीं शताब्दयिों में मठवासी उपनविेशीकरण के प्रमुख पहलू, में: परम वशि्ववद्यिालय संग्रह। 3 (1929)। पृ. 25.

[91] सेंट ग्रेगरी ऑफ पेलशेम का जीवन, में: वीएमसीएच. सतिंबर. भाग 3 (30 सतिंबर); साथ ही: कोनोपलेव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 60 आदि.; ज्वेरस्कि. 2. संख्या 909; क्ल्यूचेव्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 196.

के साथ एकता की ओर ले जाता है। यह संभव है कि यह बातचीत उस प्रशिक्षण को दर्शाती हो जो डायोनिसियस ने स्वयं माउंट अथोस के एक मठाधीश के मार्गदर्शन में स्पासो-कामेनी मठ में प्राप्त किया था।

फिलिप ऑफ रबांका भी संत डायोनिसियस के शिष्य थे; उन्होंने *1446-47* में रबांका नदी के तट पर एक वन-वास आश्रम की स्थापना की / *कुछ समय बाद, स्टीफन († 1542) नामक एक सख्त वन-वासी भिक्षु भी वहाँ रहे और उन्होंने*[92] *' का आश्रम स्थापित किया।*

संत डायोनिसियस के समकालीन, कुशच के भिक्षु अलेक्जेंडर († 1439) ने स्पासो-कामेनी मठ से बहुत दूर नहीं, कुशच नदी और कुबेन्स्कोये झील के संगम पर एक तपोवन बनाया था[93] ।

ये संन्यासियों के चार सबसे महत्वपूर्ण समूह हैं, जिनकी गतिविधियाँ 14वीं और 15वीं शताब्दी के मठों के उपनिवेशीकरण से जुड़ी हैं। इनमें से, तीन समूह, बेलोजेरो के संत सिरिल और कोमेल के संत कॉर्नेलियस के माध्यम से, अपनी वंशावली को राडोनेज़ के संत सर्जियस तक ट्रेस करते हैं। स्वाभाविक रूप से, वे उस युग के दौरान मठों के उपनिवेशीकरण के पूरे दायरे को समाप्त नहीं करते हैं। इसमें भाग लेने वाले संन्यासियों और व्यक्तिगत भिक्षुओं के छोटे समूह भी थे।

उनमें, निज़नी नोवगोरोड के तपस्वियों के एक छोटे समूह का उल्लेख करना आवश्यक है जो सुज़दल के आर्चबिशप डायोनिसियस († 1385) से जुड़े थे, जिन्होंने निज़नी नोवगोरोड में पेचेरस्की मठ की स्थापना की; इस मठ के यूथिमियस († 1404) नामक एक भिक्षु ने सुज़दल में स्पस्की मठ की स्थापना की, जिसने बाद में[94] के चर्च जीवन में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, आर्चबिशप डायोनिसियस, सेंट सर्जियस के करीबी सहयोगियों में से एक थे।

यह उल्लेख करना भी उचित है कि संतों के एक छोटे समूह का पालन-पोषण सेंट अलेक्जेंडर ऑफ स्विर († 1533) के प्रभाव में हुआ था, जिन्हें मस्कोवाइट रस में बहुत सम्मान दिया जाता था। दो मठों की स्थापना का नाम उनके नाम से जुड़ा है। उनके शिष्यों ने लेडोगा झील के उत्तर-पूर्व में, एक-दूसरे के पास स्थित, तीन और आश्रमों की स्थापना की। यह समूह 16वीं शताब्दी का है।[95]

पस्कोव के तपस्वी, जिनका नेतृत्व पस्कोव के सेंट यूफ्रोसिनिस († लगभग 1481)[96] कर रहे थे, अलग खड़े हैं, जैसे नोवगोरोड के भिक्षु भी, जिन्होंने नोवगोरोड के आसपास कई छोटे आश्रमों की स्थापना की, जो शहर के मठों के साथ प्रशासनिक और आर्थिक संबंध बनाए रखते थे[97] ।

वालाम मठ, जो बाद के समय में व्यापक रूप से प्रसिद्ध हुआ, ने 14वीं–15वीं शताब्दियों की मठों की उपनिवेशीकरण प्रक्रिया में भी भूमिका निभाई। इस मठ के भिक्षु उत्तर-पूर्व की ओर दूर तक गए, ओनेगा झील तक और उससे भी आगे[98] ।

हमने रूसी में तपस्वियों के सबसे महत्वपूर्ण समूहों और मठवासी उपनिवेशवाद के मुख्य रुझानों की पहचान की है। ऐतिहासिक तथ्य बताते हैं कि मठवासी समुदाय ने उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया में भाग लेकर न केवल ईसाई प्रबोधन की एक महान उपलब्धि हासिल की, बल्कि महत्वपूर्ण राज्य, राजनीतिक और आर्थिक कार्य भी किए, जिसके परिणामस्वरूप वोल्गोदा से श्वेत सागर तक फैला एक विशाल ईसाईकृत क्षेत्र मस्कोवी राज्य में शामिल हो गया। परिणामस्वरूप, विशुद्ध रूप से मठवादी आंदोलनों और प्रवृत्तियों ने प्राचीन रूस के राजनीतिक जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई; भिक्षुवाद ने राज्य के भीतर न केवल धार्मिक बल्कि काफी राजनीतिक प्रभाव भी प्राप्त किया, यह एक तथ्य है जो 16वीं शताब्दी के मध्य में विशेष रूप से स्पष्ट हो गया। भिक्षुवादी गुटों - नॉन-पॉज़ेसर्स और जोसेफाइट्स (जिस पर अगले अध्याय में चर्चा की जाएगी) - के बीच संघर्ष इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

संघ के संस्थापकों और शिक्षकों के नाम – सेंट सर्जियस और सेंट सिरिल, संत पॉल और संत कॉर्नेलियस – क्योंकि इन लोगों ने, एक ओर, अपने आध्यात्मिक अधिकार के माध्यम से मठवासी जीवन की नींव रखी, और दूसरी

---

[92] ज़्वेरीन्स्की। खंड 2, संख्या 1173, 1208; सेमigorodsky मठ की स्थापना भी डायोनिसियस के शिष्यों द्वारा की गई थी। वही। खंड 2, संख्या 1144।

[93] ज़्वेरीन्स्की। खंड 2, संख्या 605, 1189; क्लीचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 300, 372.

[94] ज़्वेरीन्स्की। खंड 2, संख्या 1055, 1158.

[95] ज़्वेरिन्स्की। खंड 2, संख्या 607, 1215; खंड 1, संख्या 344, 193।

[96] सepeब्रांस्की। प्सकोव क्षेत्र में मठवासी जीवन पर निबंध (1908)।

[97] ग्रेकोव। सेंट सोफिया का घर (1914)।

[98] वालाम मठ और इसके तपस्वी (1889).

ओर, स्वयं तपस्वियों के लिए उदाहरण बने, जो रूसी तपस्या के उत्कृष्ट गुणों का प्रतीक थे। जब तक मठों में उनके संस्थापकों की भावना जीवित रही, मठवासी तपस्या का विकास जारी रहा, जिसका रूप और सार भिक्षुओं की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहा। लेकिन जैसे ही मठवासी जीवन की आंतरिक एकता टूट गई, मठ संकट की अवधि में प्रवेश कर गए। कुछ संतों ने 15वीं शताब्दी के अंत में ही आने वाले खतरे को भांप लिया था। उन्होंने देखा कि सख्त सामुदायिक संन्यासवाद की नींव ही खतरे में थी, और अगर हालात ऐसे ही चलते रहे, तो यह नींव पूरी तरह से नष्ट हो जाएगी। यह खतरा संन्यासियों की भूमि-धारिता के विस्तार से उत्पन्न हुआ था, जिसके कारण देश के धार्मिक और आर्थिक जीवन दोनों में निहित थे। संन्यासी जीवन में सुधार, तपस्या के एक नए पुनरुत्थान की आवश्यकता थी। लेकिन इस बार, प्रस्तावित उपाय कठोर सामुदायिक जीवन की बहाली नहीं, बल्कि एकांत जीवन का एक रूप था, जो गरीबी के व्रत के कठोर पालन और संन्यासियों की तपस्या और रहस्यमय शिक्षा के लिए एक विद्यालय के रूप में वृद्ध की भूमिका पर आधारित था।

अध्याय IV. वोल्त्सक के जोसेफ और सोरा के नील। दो तपस्वी आंदोलनों के बीच विवाद

1. वोलोट्स्क के संत जोसेफ और उनके चर्च संबंधी तथा राजनीतिक विचार

15वीं शताब्दी रूसी तपस्या के चरम पर थी। यह उन्नति जिसने सार्वजनिक जीवन में मठवाद के आध्यात्मिक अधिकार को ऊंचा किया, उन तपस्वियों की एक पूरी सेना के फलदायी आध्यात्मिक श्रमों का परिणाम थी जो किसी न किसी तरह से राडोनेज़ के संत सेरजियस के स्कूल से जुड़े हुए थे। सर्गेई के तपस्वी विचार, जिन्होंने सख्त सामुदायिक जीवन के महत्वपूर्ण महत्व पर जोर दिया, मठवासी जीवन की नींव बन गए। हालाँकि, आदरणीय सर्गेई ने तपस्वी प्रशिक्षण की कोई व्यापक प्रणाली प्रस्तावित नहीं की; बल्कि, उन्होंने अपने उत्तराधिकारियों की आध्यात्मिक प्रतिभाओं पर भरोसा किया। और इस प्रकार, उनके कुछ शिष्यों - जैसे कि ओब्नोरा के संत पॉल या बेलोजेरो के संत सिरिल - के बीच उनकी आध्यात्मिक व्यक्तित्व की विशिष्ट विशेषताएँ उभरने लगीं। संयम के प्रति इस व्यक्तिगत, व्यक्तिगत दृष्टिकोण के परिणाम प्रकट होने में देर नहीं लगी: संयमियों की नई पीढ़ियों में, हम नई विशेषताएँ पाते हैं। ये पंद्रहवीं शताब्दी के अंतिम चौथाई भाग में ही काफी ध्यान देने योग्य हो गईं; मठवाद के भीतर, दो धाराएँ उभरीं, जिनमें से प्रत्येक ने ईसाई संयम के सार की व्याख्या अलग तरीके से की; परिणामस्वरूप, रूसी मठवाद दो प्रतिद्वंद्वी गुटों में विभाजित हो गया: एक जिसे 'जोसेफाइट्स' (इसका नाम इसके प्रमुख व्यक्ति, वोल्त्सक के जोसेफ के नाम पर रखा गया) के नाम से जाना जाता था, और दूसरा 'गैर-अधिग्रहणकर्ता' या 'ट्रांस-वोल्गा बुजुर्ग' के नाम से।

मॉस्को के पास, वोलोक लाम्स्की के आसपास स्थित वोल्कोलामस्क मठ के मठाध्यक्ष जोसेफ का वंशावली के अनुसार भी राडोनेज़ के सेर्गेई के स्कूल से संबंध था। संत सेरगियस के शिष्य निकिता, जिन्होंने सेरपुखोव में एक मठ की स्थापना की थी, ने अपने अंतिम वर्ष बोरोव्स्क (कालुगा प्रांत) में स्थित वसिलीत्स्की मठ में बिताए, जहाँ उनके अधीन एक शिष्य उनकी आध्यात्मिक मार्गदर्शन में था। इस शिष्य, जिसका नाम पाफनुटियस था और जो एक बपतिस्मा प्राप्त टाटार परिवार से आया था, ने लगभग 1445 में बोरोव्स्क के पास एक घने जंगल में एक मठ की स्थापना की। पाफनुटियस का आदरणीय सर्गियस के साथ (निकिता के माध्यम से) आध्यात्मिक संबंध ने उन्हें उनके समकालीनों और बाद के समय में मॉस्को समाज की नजर में विशेष अधिकार प्रदान किया[99] । पाफनुटियस ने लगभग 30 वर्षों तक बोरोव्स्क मठ का प्रबंधन किया। वे एक बहुत ही सक्षम प्रशासक और एक सख्त मठाधीश साबित हुए, जो मठवासी जीवन के बाहरी स्वरूप को बहुत महत्व देते थे। पाफनुटियस ग्रैंड ड्यूकल परिवार के साथ अच्छे और घनिष्ठ संबंधों में थे, और उनके निधन के बहुत बाद तक (उनकी मृत्यु 1477 में हुई) शाही परिवार द्वारा उनकी स्मृति को संजोया जाता रहा; उनके दो शिष्य, पेरियास्लाव के संत डैनियल और संन्यासी कैसियन द बेयरफुट, वृद्ध साधु बनकर, नवजात इवान के गॉडफादर बने, जो बाद में ज़ार इवान चतुर्थ द टेरिबल (1533–1584) बने[100] ।

इस मठ के वातावरण में, अपनी सुव्यवस्थित व्यवस्था के साथ – पाफनुटियस को ग्रैंड प्रिंस से उपहार के रूप में बड़ी धनराशि और भूमि मिली थी – जहाँ तपस्या को, एक तरह से, एक बाहरी प्रदर्शन के रूप में समझा जाता था,

---

[99] जोसेफ वोल्त्स्की। द लेजेंड ऑफ द होली फादर्स, में: रीडिंग्स। 1847. 7; तुलना करें: रियाज़ान के बिशप लियोनिद का पत्र, ज़ार थियोडोर इओआनोविच (1584–1598) को, में: टिकोहन्रावॉव। क्रॉनिकल ऑफ रशियन लिटरेचर एंड एंटीक्विटी। 5. भाग 3. पृ. 142; एआई. 1. संख्या 410। वृत्तांत रिकॉर्ड (पीएसआरएल. 8. पृ. 183) के अनुसार, पाफनुटियस ने 1443 में मठ की स्थापना की।

[100] क्लुचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 294, 439–453; काड्लुबोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 209 आदि।

युवा जोसेफ ने अपनी प्रारंभिक मठवासी परवरिश प्राप्त की[101] । उनका जन्म 1439/40 में एक बोयार परिवार में हुआ था। 20 वर्ष की आयु में, उन्होंने एक अन्य मठ में थोड़ी अवधि रहने के बाद, जहाँ वे मठवासी जीवन से असंतुष्ट थे, बोरोव्स्क मठ में प्रवेश किया (लगभग 1460)। अपने तपस्वी जीवन में, जोसेफ ने पाफनुटियस की शिक्षाओं का पालन किया: मठ के विभिन्न आर्थिक उपक्रमों में कठोर परिश्रम और लंबी धार्मिक सेवाएँ, जिन्हें पाफनुटियस का अनुसरण करने वाले भिक्षुओं द्वारा मठ के नियमों का अत्यंत सख्त, 'शाब्दिक' पालन करते हुए आयोजित किया जाता था। यही प्रशिक्षण था जिसने जोसेफ में दैवीय सेवाओं के दौरान एक भिक्षु के बाहरी आचरण के प्रति विशेष रूप से उत्साही दृष्टिकोण पैदा किया, यह एक ऐसा मामला है जो उनके द्वारा संकलित मठवासी नियम ('द स्पिरिचुअल चार्टर') में सर्वोच्च स्थान रखता है।

बुढ़ापे के पाफ़नुटियस ने देखा कि स्वभाव से ही जोसेफ उनके उत्तराधिकारी बनने के लिए दूसरों की तुलना में अधिक उपयुक्त थे, और उन्होंने उन्हें मठ प्रशासन के मामलों में शामिल करना शुरू कर दिया, इस उम्मीद में कि यदि भाईचारे द्वारा उन्हें मठाध्यक्ष चुना जाता है, तो वे मठ की दीवारों के भीतर इसके संस्थापक की भावना को बनाए रखने में सक्षम होंगे। जोसेफ अक्सर मठाध्यक्ष के साथ मास्को की यात्राओं पर साथ जाते थे, जहाँ उन्हें ग्रैंड ड्यूक के दरबार में गर्मजोशी से स्वागत किया जाता था। जोसेफ वास्तव में पाफनुटियस के उत्तराधिकारी बने। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि वह मठाधीश का पद कैसे संभालने आए - चाहे मठीय समुदाय की पसंद से या महा राजकुमार के आदेश से: जोसेफ की मृत्यु के तुरंत बाद संकलित दो संतों के जीवनचरित इस घटना के अपने विवरणों में एक-दूसरे का खंडन करते हैं। किसी भी हाल में, ग्रैंड ड्यूक के साथ जोसेफ के अच्छे संबंध मठ समुदाय की नज़रों से नहीं छिप सकते थे। अपनी मठाधीश के पद संभालने के शुरू से ही, जोसेफ को उन चिंताओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जो पाफनुतियेव्स्की मठ की विशेषता हैं। मठ काफी हद तक औपचारिक कठोरता की भावना से संचालित होता था, जिसमें प्रशासनिक मामलों पर बहुत ध्यान दिया जाता था; जब जोसेफ ने मठ में सामुदायिक जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया—जो (संभवतः प्रशासनिक कार्यों की व्यापक प्रकृति के कारण) तेजी से धर्मनिरपेक्ष होता जा रहा था—तो मठवासी समुदाय में असंतोष और शिकायतें उत्पन्न हुईं। बड़े भिक्षुओं, जो पहले से ही स्थापित जीवन शैली के आदी हो चुके थे, ने इन नवाचारों का ज़िद्दी विरोध किया, हालांकि सैद्धांतिक रूप से वे भी परिस्थितियों में सुधार की आवश्यकता को पहचानते थे। पाफनुतियेव मठ समुदाय का विरोध इतना प्रबल था कि जोसेफ को मठ छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। एक भिक्षु के साथ, वह कुछ समय - लगभग एक साल - तक एक मठ से दूसरे मठ तक भटकते रहे; इन यात्राओं के दौरान, उन्होंने व्हाइट लेक पर स्थित किरिलोव मठ का भी दौरा किया[102] ।

एक साल बाद, जोसेफ बोरोव्स्क मठ लौट आए, लेकिन वे वहाँ ज़्यादा समय नहीं रुके, क्योंकि उन्होंने पहले ही अपना नया मठ स्थापित करने का निर्णय ले लिया था। वह कई भिक्षुओं के साथ बोरोव्स्क मठ से निकलकर वोलोक लाम्स्की (वोल्कोलामस्क) की ओर चल पड़ा, और उसने एक मठ (1479) की स्थापना की, जो तेजी से बढ़ा और आने वाली सदी में धार्मिक मामलों में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वोलोकलामस्क के राजकुमार से जोसेफ के मठ को मिले उदार अनुदान (गाँव और धन) केवल इस बात को साबित करते हैं कि जोसेफ ने बहुत जल्दी ही उसके साथ अच्छे संबंध स्थापित कर लिए थे। मठ की वित्तीय समृद्धि ने इसे 1486 जितनी जल्दी एक बड़ी पत्थर की चर्च बनाने और उसे 15वीं-16वीं सदी के प्रसिद्ध प्रतिमाकार के भित्ति-चित्रों से सजाने में सक्षम बनाया। डियोनिसियस[103] ; बाद में, पत्थर की एक ऊँची घंटी मीनार और कई अन्य मठवासी इमारतें बनाई गईं, जो उस समय उत्तरी रूस के जंगली क्षेत्रों में केवल उदार वित्तीय सहायता से ही संभव थी[104] । उदार उपहार हर तरफ से आने लगे, विशेष रूप से उन लोगों से जिन्होंने मठ में मठवासी संन्यास ग्रहण किया था और अपनी सारी संपत्ति इसे विरासत में दे दी थी। जोसेफ ने इन भेंटों को खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया, और जल्द ही उनकी मठ की संपत्ति के पैमाने के मामले

---

[101] जोसेफ का जीवन: ग्रेट मार्टियर्स (महान शहीद)। 9 सितंबर, पृष्ठ 455–498; उनका मठवासी नियम ('आध्यात्मिक चार्टर'): वही, पृष्ठ 499–615। जोसेफ पर देखें: खरुश्चेव। वोलोट्स्क के पूजनीय हेगुमेन, जोसेफ सानिन की रचनाओं का एक अध्ययन (1868); इसके अतिरिक्त, बुलगाकोव, झमाकिन, काड्लुबोव्स्की और फेदोतोव की कृतियाँ।

[102] जोसेफ की तीर्थयात्रा का वर्णन उनके चार्टर के अध्याय 10 के भाग 2 में निहित है; इसे अलग से भी प्रकाशित किया गया है: LZAK. 2 (1862/63), और संक्षिप्त रूप में: Chteniya. 1847. 7.

[103] डायोनिसियस पर, देखें: जॉर्जीव्स्की, वी. फेरपोंटोव मठ के भित्ति-चित्र (1911); इस खंड में वर्ष 1545 के लिए जोसेफ मठ की एक विस्तृत सूची भी शामिल है। मठ के समृद्धिकरण के इतिहास पर, बी. वी. कुतुज़ोव को जोसेफ के पत्र देखें (में: DRV. 14. पृ. 177) और प्रिसिस मारिया गोलेंना को (में: खरुश्चेव, पृ. 255–260); और साथ ही: खरुश्चेव, पृ. 39 आदि; ज़्वेरींस्की। 2. संख्या 845; गेरोन्टियस (कुरेयानोव्स्की), आर्चिमंड्राइट। वोलोकलामस्क के सेंट जोसेफ का द्वितीय-श्रेणी का मठ (1903)।

[104] सेंट सर्जियस मठ में, उनकी मृत्यु के 30 साल बाद पहला पत्थर का चर्च बनाया गया था। गोर्स्की, ए. होली ट्रिनिटी-सर्जियस लाव्रा का ऐतिहासिक विवरण। खंड 1 (1890)। पृ. 6.

में पाफनुटयिस की मठ जैसी हो गई: चारों ओर खेत फैले थे, मठ के गांवों के कसिान खेतों में काम करते थे, और अनाज के गोदाम, खलहिान और झोपड़यिाँ हर जगह खड़ी थीं; एक नए भकि्षु के लिए, मठ एक वशिाल संपत्ति प्रतीत होता था, और घरेलू कर्तव्यों में नयिुक्त कई भकि्षुओं को दविय सेवाओं के अलावा अपना सारा समय मठ के मामलों के प्रबंधन में लगाना पड़ता था। इसने मठाध्यक्ष को धर्मार्थ कार्यों में संलग्न होने और खराब फसल के वर्षों में, आसपास के गांवों के नविासयिों की सहायता करने की अनुमति दी[105] ।

उत्तरी रूस के मठों की अपनी यात्राओं के दौरान, जोसेफ ने पाया कि सर्वत्र सामुदायकि जीवन का सख्ती से पालन नहीं कयिा जाता था। इसलिए उन्होंने, शुरू से ही, अपने मठ में कनिोवयिा (kinoviya) को शुरू करने और इसे सबसे सख्त तरीके से पालन करने का फैसला कयिा। बाद में, उन्होंने 'आध्यात्मकि पत्र' नामक एक मठवासी नयिम लखिा[106] । यह नयिम हमारे लिए वशिेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह जोसेफ के धार्मकि, नैतकि और तपस्वी वचिारों[107] की बारीकी से जांच करने का एक अच्छा अवसर प्रदान करता है। जोसेफ हमें बाहरी, औपचारकि रूप से समझी गई ईसाई तपस्या के एक प्रवक्ता के रूप में दखिाई देते हैं। जोसेफ संतों के आध्यात्मकि मार्गदर्शन को आत्मा और इच्छा की पूर्णता पर नहीं, बल्कि संतों के बाहरी रूप से नष्किलंक आचरण पर आधारति करते हैं। व्यवहार का बाहरी पहलू, जैसा कि जोसेफ कहते हैं, 'शारीरकि शष्टिाचार', कसिी भी ऐसे व्यक्ति की प्राथमकि चंति होनी चाहिए जो एक अच्छा भकि्षु बनना चाहता है। इस संबंध में, जोसेफ उस पुराने रूसी दृष्टकिोण के एक वशिष्टि प्रवक्ता हैं जसिके अनुसार सख्त नर्दिेश और अनुष्ठानों का शाब्दकि पालन सर्वोपरि था। जोसेफ का तपस्वी कठोरता का उद्देश्य मठवासी जीवन के बाहरी आचरण के हर पहलू को, छोटी से छोटी बारीकी तक, वनियिमति और नर्धिारति करना है। वह इस धारणा से आगे बढ़ते हैं कि, तीन मठवासी शपथों में से, आज्ञाकारति की शपथ को प्राथमकिता प्राप्त है, और यह कि सटीक वनियिमन आज्ञाकारति प्राप्त करने का सबसे नश्चिति साधन है।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि संतों के आध्यात्मकि मार्गदर्शन के बारे में जोसेफ का दृष्टकिोण बुजुर्गों से मौलकि रूप से भन्नि है। वरष्ठि भी एक नवोदति भकि्षु को शकि्षति करने के लिए आज्ञाकारति को एक अच्छे साधन के रूप में देखते हैं, लेकनि वे इसका उपयोग सटीक रूप से एक साधन के रूप में करते हैं और अपनी आध्यात्मकि मार्गदर्शन में हमेशा शष्यि के व्यक्तित्व की वशिष्टिता को ध्यान में रखने का प्रयास करते हैं, जसिसे भकि्षुओं की आध्यात्मकि पूर्णता के लिए एक सूत्रबद्ध दृष्टकिोण से बचा जा सके।

जोसेफ ने समग्र रूप से ईसाई तपस्या की आध्यात्मकि नींव और वशिेष रूप से मठवासी मार्गदर्शन की नींव, दोनों को ही अनदेखा कयिा। यह वशिेष रूप से मठाध्यक्ष और भाईचारे के बीच संबंध पर उनके वचिारों में स्पष्ट था। जोसेफ द्वारा मठाध्यक्ष पर रखी गई मांगें केवल सतही हैं। जब वे अपने 'नयिम' में इस पर चर्चा करते हैं, तो वे अपने तर्कों का समर्थन पूर्वी मठवाद के इतहिास के कई उदाहरणों से करते हैं और मांग करते हैं कि मठाध्यक्ष भाईचारे के साथ अत्यंत कठोरता से पेश आए। वे भकि्षु को उसकी अंतरात्मा से अपील करके या तपस्या के आध्यात्मकि मूल्य को प्रदर्शति करके नहीं, बल्कि अवज्ञा करने वालों को डरा-धमका कर शकि्षति करते हैं। इस संदर्भ में, भकि्षु मठाधीश को एक ऐसे आध्यात्मकि मार्गदर्शक के रूप में नहीं देखता, जसिसे वह अपनी आंतरकि चंताओं को साझा कर सके और जसिसे उसे सलाह और मदद मलि सके, बल्कि एक ऐसे मठवासी प्राधकिारी के रूप में देखता है जो न केवल ऐसा कर सकता है, बल्कि किसी भी अपराध, चाहे वह कतिना भी मामूली क्यों न हो, के लिए उसे दंडति करने के लिए बाध्य है।

नयिम भकि्षुओं के लिए उनकी कोठरयिों में, भोजनशाला में, काम करते समय और चर्च में पूजा के दौरान एक वशिष्टि आचरण संहति नर्धिारति करता है। उदाहरण के लिए, चर्च में प्रत्येक भकि्षु के लिए अपना नर्धिारति स्थान और वही द्वार होना चाहिए जसिसे वह प्रवेश और नकिास करे। जोसेफ यहाँ तक लखिते हैं कि एक भकि्षु को कैसे खड़ा होना चाहिए, और क्रॉस का चहि्न बनाते समय अपना सरि और हाथ कैसे रखना चाहिए। यह नयिम मुख्य रूप से सामूहकि प्रार्थना से संबंधति है; यह आवश्यक है कि सेवा के दौरान, बनिा कसिी छूट के, सब कुछ पूरा पढ़ा और गाया जाए। इसके कारण, प्रार्थना सभा लंबी खचि जाती थी, और भकि्षु के पास नजिी प्रार्थना के लिए कोई समय नहीं

---

[105] हालाँकि, मुझे यह बताना ज़रूरी है कि जोसेफ की सामाजकि गतविधियिों के संबंध में जी. फ्लोरोव्स्की के नष्किर्ष (द पाथ्स ऑफ़ रशयिन थयिोलॉजी. 1937. पृ. 18) पूरी तरह से सही नहीं हैं; तुलना करें: मेरा समीक्षा-लेख: यारबुख फ्यूर न्यूर गेशचिटे ओस्टेउरोप्स. 3 (1938). पृ. 262.

[106] देखें: वीएमसीएच. सतिंबर. पृ. 499–615; तुलना करें: ख्रुश्चेव. पृ. 59–63, 75–80.

[107] इस संबंध में, जोसेफ की प्रमुख कृति – *द एनलाइटनर* – में 7वां शब्द वशिेष रूप से महत्वपूर्ण है, जैसा कि मठवासी नयिम के पालन पर उनका नर्दिेश ('सेंट जोसेफ ऑफ वोल्त्सक का मठवासी नयिम का पालन न करने पर भाइयों में से एक को नर्दिेश') में है: DAI. 1. संख्या 211.

बचता था; यह नहीं भूलना चाहिए कि उसके मठ के भिक्षुओं ने घरेलू कामों में बहुत समय लगाया - शिल्पकार्य में कम, और मठ के उद्यमों (चक्कियाँ, खेत का काम, आदि) के प्रबंधन में अधिक[108] .

इस तरह से मठ जीवन का आयोजन करते हुए, जोसेफ ने कुछ बहुत ही विशिष्ट उद्देश्यों को पूरा किया। उनके दृष्टिकोण में, मठ, एक चर्च संस्थान के रूप में, के अपने विशेष कार्य हैं। फिर भी ये कार्य स्वभाव से पूरी तरह से तपस्या संबंधी नहीं हैं। मठ को एक प्रकार का धार्मिक और पादरी स्कूल बनना चाहिए, जो भविष्य के धर्मगुरुओं को प्रशिक्षित करने के लिए बनाया गया हो। जोसेफ के दृष्टिकोण में, भिक्षुओं के आध्यात्मिक गठन के तरीकों में एकरूपता, और दैवीय सेवाओं के दौरान तथा श्रद्धालुओं की दृष्टि में जीवन की सभी अन्य परिस्थितियों में भिक्षुओं द्वारा लगातार एक जैसा व्यवहार, का उद्देश्य भविष्य के धर्मप्राधान्यों को मंडली की दृष्टि में विशेष अधिकार प्रदान करना था। जोसेफ आम तौर पर बिशपों की नैतिक और शैक्षिक गतिविधियों पर कम ध्यान देते थे। उनका मानना था कि चर्च पदानुक्रम को शिक्षित नहीं करना चाहिए, बल्कि शासन और प्रशासन करना चाहिए।

चार्टर और अपने अन्य लेखों दोनों में, जोसेफ ने धार्मिक और राज्य के कार्यों के बीच घनिष्ठ अंतरसंबंध के विचार को विकसित किया। जोसेफ के लिए, एक बिशप एक साथ चर्च और राज्य दोनों का सेवक है, जबकि एक मठ स्वयं एक प्रकार की धार्मिक-राज्य संस्था है। इस केंद्रीय विचार से स्वाभाविक रूप से मठों द्वारा किसानों द्वारा बसी भूमि पर किए गए दावों का औचित्य निकलता है। भविष्य की धार्मिक पदानुक्रम को प्रशिक्षित करने में सक्षम होने के लिए, एक मठ को आर्थिक और वित्तीय रूप से सुरक्षित ( ) होना चाहिए। जोसेफ एक स्थान पर टिप्पणी करते हैं, 'यदि मठों के पास गाँव नहीं हैं, तो एक सम्मानित और कुलीन व्यक्ति (अर्थात् एक भावी बिशप) मठवासी संन्यास की शपथ कैसे ले सकता है?' मठ के कार्यों के संबंध में इस संक्षिप्त रूप से व्यक्त विचार को उस समय के मठवासी समुदाय और बिशप वर्ग के व्यापक वर्गों द्वारा विशेष रूप से अनुकूल रूप से स्वीकार किया गया। यह 16वीं सदी में रूसी धार्मिक पदानुक्रम के कई सदस्यों द्वारा साझा की गई विश्वदृष्टि का आधार बना। ये बिशप 'जोसेफिट्स' के नाम से जाने जाने वाले एक अत्यंत प्रभावशाली समूह का गठन करते थे, जिन्होंने रूसी चर्च के जीवन पर गहरा प्रभाव डालना शुरू कर दिया और जल्द ही लंबे समय तक धार्मिक शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली।

जोसेफाइट्स के प्रभाव को इस तथ्य से अच्छी तरह से दर्शाया गया है कि 16वीं शताब्दी में बिशप वर्ग न केवल जोसेफ के विचारों को साझा करता था, बल्कि अधिकांशतः जोसेफ-वोल्कोलामस्क मठ के भिक्षुओं से मिलकर बना था। इसमें एक प्रमुख भूमिका मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन डेनियल ने निभाई (1522–1539), जोसेफ के एक वफादार शिष्य और वोल्कोलामस्क मठ (1515–1522) के प्रशासन में उनके उत्तराधिकारी, जोसेफाइट विश्वदृष्टिकोण वाले चर्च के एक आदर्श राजकुमार, जिन्होंने अपने ही मठ के भिक्षुओं को bishoprics[109] तक पदोन्नत किया। 16वीं सदी के एक अन्य उत्कृष्ट मेट्रोपॉलिटन थे मकारियस (1542–1563), जिन्होंने मेट्रोपॉलिटन इओआसाफ (1539–1542) के संक्षिप्त कार्यकाल के बाद, चर्च और राज्य के कार्यों को निकटता से जोड़ने की दृष्टि से डैनियल की धार्मिक नीति को जारी रखा—और जोसेफाइट आंदोलन के समर्थकों में से भी एक थे[110] । 1551 में मास्को में आयोजित स्टोग्लाव परिषद, या स्टोग्लाव के फरमानों में एक विशिष्ट जोसेफाइट चरित्र झलकता है; परिषद की कार्यवाही में भाग लेने वाले नौ बिशपों में से पांच पहले वोल्कोलामस्क में सेंट जोसेफ मठ के भिक्षु रह चुके थे[111] । मेट्रोपॉलिटन डेनियल और मकारियस के समर्थन से, जोसेफिटों ने हमेशा मस्कोवी में राजशाही निरंकुशतावाद की वकालत की। यह आंदोलन 'मॉस्को - तीसरी रोम' के सिद्धांत के रूप में जाने जाने वाले विचारों के एक समूह के साथ मिल गया, जो हालांकि जोसेफ के विचारों के अलावा अन्य स्रोतों से प्रेरित था[112] ।

भिक्षु संघ की राज्य और चर्च-राजनीतिक जिम्मेदारियों पर यह स्पष्ट ध्यान, निश्चित रूप से, इसके आंतरिक विकास के लिए हानिकारक था। जोसेफ के तपस्वी और चर्च-राजनीतिक विचारों को न केवल अनुयायी और अनुयायी मिले, बल्कि कई विरोधी भी मिले जिन्होंने मध्य-15वीं सदी के रूसी मठवाद को धर्मनिरपेक्षता के खतरे और केवल

---

[108] अध्याय IX देखें। वहाँ जोसेफ के मठवासी नियम का विस्तृत विवरण है।

[109] वीएमसीएच. सितंबर. पृ. 491; झमाकिन. मेट्रोपॉलिटन डेनियल. पृ. 110 आदि, 129, 138, 452–456; पावलोव. धर्मनिरपेक्षता पर एक ऐतिहासिक निबंध। पृ. 86; कुर्बस्की। द लेजेंड (दूसरा संस्करण)। पृ. 42। डेनियल को ग्रैंड प्रिंस वासिली तृतीय के निर्देशों पर मॉस्को का मेट्रोपॉलिटन चुना गया था; पीएसआरएल। 6. पृ. 254; 8. पृ. 269.

[110] गोल्बुस्की। 2. 1. पृ. 734; ड्याकोनोव। द पावर ऑफ द मॉस्को सोवरिन्स (1880)। पृ. 108; झमाकिन। द स्ट्रगल ऑफ आइडियाज़ इन रूस इन द फर्स्ट हाफ ऑफ द 16th सेंचुरी, में: झएमएनपी। 1882. अप्रैल। पृ. 160; पावलोव। पूर्वोक्त, पृ. 109; मकाराई पाफ़नुटिवो बोरॉव्स्की मठ में एक नवसिखुआ हो सकते थे। गोलुबिनस्की। 2. 1. पृ. 747; ज़ाउसत्स्की। मकाराई, सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटन, में: ZhMNP. 1881. अक्टूबर।

[111] स्टोग्लाव। सं. कोझान्चिकोव (1863)। पृ. 19–20; तुलना करें: एआई। 1. संख्या 216।

[112] 'मास्को – तीसरी रोम' की अवधारणा के लिए, अध्याय V देखें।

राज्य के उद्देश्यों की पूर्ति से बचाने की कोशिश की, और जिन्होंने मठवासी जीवन को विशेष रूप से आध्यात्मिक तपस्या के मार्ग पर वापस लाने का प्रयास किया। जोसेफाइट आंदोलन के विरोधी स्वयं मठवासी समुदाय की ही कतारों से उभरे, जिन्होंने एक ऐसे उल्लेखनीय तपस्वी को आगे लाया, जिनके हस्तक्षेप ने वोल्त्सक के जोसेफ और जोसेफाइट आंदोलन के साथ एक तीव्र वाद-विवाद की शुरुआत को चिह्नित किया। यह सोरा के वृद्ध नील थे, जो खुद को जोसेफ-विरोधी गुट के केंद्र में पाया।

यह विवाद जोसेफ के जीवित रहते ही भड़क उठा—उनकी मृत्यु 1515 में हुई—और 50 से अधिक वर्षों तक जारी रहा; इस विवाद ने रूस में तपस्या के कई महत्वपूर्ण मुद्दों और चर्च जीवन की समस्याओं को छुआ, और इसमें दोनों गुटों के प्रति विचार व्यक्त हुए।

२. सोरा के रेवरेंड एल्डर नील और उनके तपस्वी विचार

सोर के एल्डर नील, जिनका जन्म 1433 में हुआ था, माइकोव्स के मॉस्को बोयार परिवार से थे[113] । नील ने किरिलो-बेलोज़र्स्की मठ में अपना संन्यासी जीवन शुरू किया। वहाँ के संन्यासी जीवन से असंतुष्ट होकर, नील ने एथोस के पवित्र पर्वत (Holy Mountain of Athos) के लिए प्रस्थान करने का निर्णय लिया ताकि वह एथोनाइट संतों के जीवन-यापन के तरीके से परिचित हो सकें , इस आशा में कि उन्हें वहाँ उन विभिन्न प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे जो उन्हें सता रहे थे। युवा नील की उत्कट धार्मिक भावना, उसकी रहस्यमयी प्रवृत्तियाँ और उसकी धर्मशास्त्रीय खोजों को किरिलोव मठ के कुछ हद तक सूखे आध्यात्मिक वातावरण में कोई पूर्ण संतुष्टि नहीं मिली।[114]

नीलस ने, अन्य रूसी भिक्षुओं की तरह, पवित्र पर्वत और उसके निवासियों के जीवन के बारे में बहुत कुछ सुना था। माउंट अथोस के साथ प्राचीन रूस के पहले संबंध 11वीं सदी के हैं। 12वीं सदी तक, वहाँ पहले से ही ज़ायलौर्गो नामक एक रूसी मठ था; 1169 में, रूसी भिक्षुओं को माउंट अथोस पर एक और मठ - सेंट पैंटेलिमोन का मठ - दिया गया, जिसे रूसी मठ के नाम से जाना जाने लगा[115] । 13वीं शताब्दी में, टाटार आक्रमण और दक्षिणी रस के विनाश के कारण इन मठों के साथ संबंध लंबे समय तक टूट गए थे। घनिष्ठ संबंध केवल 14वीं शताब्दी के अंत और 15वीं शताब्दी के दौरान फिर से स्थापित हुए, जब कई रूसी भिक्षुओं ने माउंट अथोस का दौरा किया। स्पसो-कामेनी मठ में, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, डियोनिसियिस नामक एक ग्रीक ने कुछ समय के लिए मठाध्यक्ष के रूप में कार्य किया, और मठ में एथोनाइट नियम को पेश किया। पवित्र पर्वत पर कई पुस्तकों का अनुवाद किया गया (मुख्य रूप से दक्षिणी स्लावों द्वारा), और ये अनुवाद रूस तक पहुँच गए; इनमें हेसिकैज़्म पर सामान्य जानकारी वाली पुस्तकें शामिल थीं[116] ।

नीलस ने अपने मित्र इन्नोकेन्टी ओखलेबनिन († 1521) के साथ मिलकर हेसिकैस्टों की विजय के बाद माउंट अथोस का दौरा किया[117] । माउंट अथोस के भिक्षुओं के जीवन से उनकी गहरी परिचिति, वरिष्ठों और तपस्वियों से

---

[113] सोर के संत नीलस पर, मेरी पुस्तक देखें: *लेबेन उंड लेरे डेर सटारत्ज़ेन* (1936)। पृ. 71–76; इसमें (पृ. 77–89) उनके प्रमुख ग्रंथ, *द ट्रेडशिन टू हिज डिसाइपल्स* से सबसे महत्वपूर्ण अंश शामिल हैं; अख्यान्गेल्स्की। *नीलस ऑफ सोरा एंड वासियन पत्रीकेव* (1881); Zhmakin, op. cit.; Pravdin, 'The Venerable Nil of Sor and His Rule on the Hermit Life', in: Christian Readings 1877, vol. 1, pp. 114–157; Grechev, 'Nil of Sor and the Elders of the Volga Region', in: BV. 1907. 7–8; 1908. 5, 9, 11; स्मोलिच, आई. 'द ग्रेट एल्डर निल ऑफ सोरा', में: पुट'. 19 (1929); फेदोतोव. सेंट्स ऑफ एन्सिएंट रस' (1931). पृ. 166–175.

[114] 15वीं शताब्दी के तीसरे क्वार्टर में किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ की स्थिति के बारे में, जोसेफ की *स्पिरिचुअल एपिस्टल* के अध्याय 10 के साथ-साथ देखें: निकोल्स्की। 15वीं और 16वीं शताब्दियों और 17वीं शताब्दी की शुरुआत में किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ में सामुदायिक और मठवासी जीवन, *क्रिश्चियन रीडिंग्स*, 1908, पृ. 225 और 227 में; वही लेखक। *द किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ* (1897), खंड 1।

[115] गोर्स्की, ए. 'माउंट अथोस के मठों के साथ रूसी चर्च के संबंधों पर' (1848); सोलोवियोव, ए. 'माउंट अथोस पर रूसी मठवाद का इतिहास', में: बेलग्रेड में रूसी राष्ट्रीय संस्थान के नोट्स। 7 (1932)। पृ. 137–156।

[116] सोबोलेव्स्की। ट्रांसलेटेड लिटरेचर ऑफ मस्कोवी (1903)। पृ. 5–6; इल्यस्की। स्लाव साहित्य के इतिहास में माउंट अथोस का महत्व, में: झएमएनपी. 1908. 11; ऑर्लोव, ए. 16वीं शताब्दी में रस में यीशु की प्रार्थना, में: पीडीपी. 185 (1914).

[117] हेसिकैस्ट विवाद और एथोनाइट्स के जीवन के बारे में, देखें: Engelhardt, G. 'Die Arsenianer und Hesychasten', in: Z. f. hist. Theologie (1838); Stein, F. Studien über die Hesychasten (1879); Porphyry (Uspensky), Bishop. The Christian East. Athos. Vol. 3. भाग 2 (1892); उस्पेंस्की, एफ. बाइज़ेंटाइन विद्वता के इतिहास पर निबंध (1891); मेयर, पीएच. *डिए हाउपटउर्कुंडन फ्यूर डी गेशिख्ते डेर अथोस-क्लोस्टर* (1894) और अथोस मठों के हालिया इतिहास और वर्तमान स्थिति पर उनके लेख, में: *Z. f. किर्चेनगेशिख्ते*. 2 (1907); सोकोलोव, आई. 'बर्लाम और बर्लामी', में: PBE. 3; रादचेन्को, के. 'तुर्की विजय से पहले की अवधि में बुल्गारिया में धार्मिक और साहित्यिक आंदोलन' (1898); हाउसहर, आई. 'ला मेथोद डे ल'ओराइसों हेसिक्कास्ट', में: OCA. 9. 2 (1927); एलेक्सियिस, बिशप। चौदहवीं सदी के बाइज़ेंटाइन चर्च के रहस्यवादी (1906); ओस्त्रोगोर्स्की, जी. अथोनाइट हेसिकैस्ट और उनके विरोधी, में: बेलग्रेड की रॉयल सोसाइटी की कार्यवाही। 5 (1931); मेरी पुस्तक। Op. cit., पृ. 45–58; वुंडरले, जी. *From the Holy World of Athos* (1937), in: *Eastern Christianity*. 2; वही. *On the Psychology of Hesychastic Prayer* (ibid., New Series 2). 2nd संस्करण (1947). एक महत्वपूर्ण हेसिकैस्ट कृति कैलिकिस्टस

उनकी मुलाकातें, और तपस्या तथा रहस्यमय ग्रंथों का उनका अध्ययन—जिन्हें नील पहले ही करिलोव मठ में पढ़ चुके थे—इन सबने उनकी आध्यात्मिक खोज की दिशा को आकार दिया। माउंट अथोस की उनकी तीर्थयात्रा ने नील को हेसिकैज़्म का एक भक्त बना दिया[118] ।

माउंट अथोस पर, जैसा कि उन्होंने बाद में लिखा, नील 'एक अच्छे फूल से दूसरे बेहतर फूल पर मंडराती मधुमक्खी की तरह' रहे, ताकि वे 'ईसाई सत्य के दाख की बारी' और संतों के जीवन का अध्ययन कर सकें, 'अपनी कठोर आत्मा को पुनर्जीवित कर सकें और उसे मोक्ष के लिए तैयार कर सकें'। आत्मिक रूप से पोषित और आंतरिक शांति पाने के बाद, नील अपने देश लौट आए। घर वापस आकर, करिलोव मठ में, अब वे हर चीज़ को अलग नज़रों से देखते थे। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वह एकांत और शांति की तलाश में बड़े मठ से चले गए, ताकि वह माउंट अथोस पर जो सीखा था, उसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर सकें - मानसिक प्रार्थना में गहन डुबकी की सुंदरता, 'हृदय की रक्षा' और 'आत्मा की संयमशीलता', ताकि इस 'स्वर्ग की सीढ़ी' पर चढ़कर, वह ईसाई जीवन और हेसिकिज़्म के लक्ष्य - 'देवत्व' का भागीदार बनने - को प्राप्त कर सके।

अपने मित्र और शिष्य इनोकेन्टी के साथ, नीलस करिलोव मठ से कुछ दूरी पर, सोरा नामक छोटी नदी के किनारे एक घने, दलदली जंगल में चले गए और वहाँ बस गए, तथा अपने जीवन को तपस्या और गूढ़ चिंतन को समर्पित कर दिया। धीरे-धीरे, निलस के चारों ओर तपस्वियों का एक छोटा सा झुंड इकट्ठा हो गया; उनके स्केट में शरण लेकर और उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शन में, उन्होंने रूस में तपस्या के एक नए रूप और मठवासी जीवन के एक नए तरीके को स्थापित करने का प्रयास किया। दुर्भाग्य से, सोर्स्की नीलस का जीवन-चरित्र खो गया है, लेकिन उनके समकालीनों की अन्य रचनाओं से हमें पता चलता है कि वे वृद्ध नीलस को रूस में 'स्केट जीवन के अग्रदूत' के रूप में मानते थे; इसने इस तथ्य पर जोर दिया कि उन्होंने पुराने रूसी मठवाद में कुछ नया और उस समय तक अज्ञात पेश किया था। उनकी रचनाओं और उनके शिष्यों तथा समकालीनों के अभिलेखों के आधार पर, इस अनूठी हस्ती की कल्पना की जा सकती है, जिसका प्रभाव रूस के आध्यात्मिक इतिहास की सदियों पर अपनी छाप छोड़ गया। उनके शुद्ध रूप से ईसाई, वास्तविक तपस्वी विचारों ने जोसेफाइटों से तीव्र विरोध को जन्म दिया। उनकी शत्रुता ही संभवतः सॉर्स्क के नील की जीवनी के खो जाने का कारण रही - उनके विरोधियों ने भक्तों की स्मृति से, और सबसे बढ़कर भिक्षुओं की स्मृति से, इस विनम्र साधु की छवि को मिटा देना चाहा, क्योंकि उनकी जीवनी 16वीं और 17वीं शताब्दी के दूसरे छमाही में जोसेफियानिज़्म और भिक्षु जीवन के खिलाफ एक जीवंत अभियोग के रूप में काम कर सकती थी। फिर भी, नील के ग्रंथ, *द ट्रेडिशन ऑफ द स्केटा लाइफ*, की उन लोगों द्वारा लगन से नकल की गई जो महान वरिष्ठ के विचारों से सहमत थे, यद्यपि यह मुख्य रूप से ट्रांस-वोलगा क्षेत्र के छोटे मठों और आश्रमों में किया गया था।

वरिष्ठ नीलस का 7 मई 1508 को निधन हो गया। सम्मान और सांसारिक महिमा की कामना न करते हुए, उन्होंने अपने शिष्यों को निर्देश दिया कि वे उनके पापी अवशेषों को जंगल में ले जाएँ और उन्हें जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए छोड़ दें, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के सामने बहुत बड़ा पाप किया था और वे दफन के अयोग्य थे।

चर्च के अभिलेखों में इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि एल्डर नील को कब संत का दर्जा दिया गया था। यह माना जा सकता है कि उनका संत-दर्जा 18वीं सदी के अंत या 19वीं सदी की शुरुआत में ही दिया गया था, हालांकि भक्तपूर्ण रूसी लोगों और धर्मनिष्ठ तीर्थयात्रियों को नील-सॉर्स्की स्केट तक दलदली जंगल के संकरे रास्ते के बारे में हमेशा से पता था और वे लंबे समय से एल्डर को एक संत के रूप में पूजते थे[119] ।

माउंट अथोस की उनकी तीर्थयात्रा का नील के धार्मिक विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ा – यहीं पर एक ईसाई तपस्वी के जीवन के आंतरिक और बाहरी पहलुओं पर उनके विचार अंततः आकार में आए। नीलस की साहित्यिक विरासत मामूली है (यह संभव है कि उनके कुछ लेखन को वैचारिक विरोधियों और समय के साथ नष्ट कर दिया गया हो), लेकिन इसे उनके समकालीनों और शिष्यों के बीच मान्यता और अपार अधिकार प्राप्त हुआ। उनके चरित्र का

ज़ैथोपोलोस की 'सेंचुरी' ('सौ') है, जिसे हाल ही में ए. एम. अमान द्वारा जर्मन में प्रकाशित किया गया है: अमान, ए. एम., *डाई गॉट्शौ इम पालामिटिशेन हेसिकैस्मस* (1939), *डैस ओस्टलिचे क्रिस्टेंटम* में। 6/7। वासिलिज, मोंच. Die asketische und theologische Lehre des hl. Gregorius Palamas. 1296–1351 (1939) (उपरोक्त 8)।

[118] तपस्वी-आध्यात्मिक और धार्मिक-आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में हेसिकैज़्म को समझने के लिए, देखें: Syrku. *The Life and Times of Euthymius, Patriarch of Tarnovo* (1898); Schmidt, B. *Das Geistige Gebet* (Halle, Theol. Diss. 1916); बाउर, आई. 'ग्रीक पादरियों के धर्मशास्त्र में दिव्यता सिद्धांत की जांच', *Theol. Quartalschrift*, 98–100 (1917/18) में; जुगी, एम. *Theologia dogmatica christianorum orientalium*. 2 (1933). पृ. 47 आदि; लॉट-बोरोडिन, एम. 'La doctrine de la déification dans l'Église grecque jusqu'au XIe siècle', में: Revue de l'Histoire des Religions, 55 (1932), पृ. 1–35; 56 (1933), पृ. 325–374; 57 (1933). पृ. 8–55; मॉक बेसिल की पुस्तक में ग्रंथसूची भी देखें। उद्धृत कृति, पृ. 9।

[119] तुलना करें: रोस्टिस्लावोव, ए. 'द स्केट ऑफ द नीलो डेजर्ट', में: स्टारी गोडा (1913), अप्रैल।

आकर्षण और नैतिक कद, जिन्हें उनके आसपास के लोग बहुत महत्व देते थे, ने इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नील सोर्स्की का तपस्वी-आध्यात्मिक दृष्टिकोण पुराने रूसी मठवाद के भीतर प्राचीन पूर्वी तपस्या के आदर्शों के पुनरुद्धार के लिए आधार बन सकता था।

तपस्वी स्वभाव वाले नील का चरित्र जोसेफ के चरित्र से काफी भिन्न है। नीलस जोसेफाइट गुट के नेता की धार्मिक औपचारिकता और बाहरी कठोरता की तुलना आत्मा के धार्मिक जीवन के प्रति मनोवैज्ञानिक रूप से सूक्ष्म दृष्टिकोण से करता है। वह नैतिक पूर्णता की प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त आंतरिक स्वतंत्रता की भावना से ओत-प्रोत है; वह एक धार्मिक विचारक था जिसने ईसाई भक्ति के लिए एक रहस्यमय आधार प्रदान किया। भिक्षु के लिए वह जो कार्य निर्धारित करते हैं, वे जोसेफ की आवश्यकताओं की तुलना में अधिक मांगलिक और गहन हैं। संसार में भिक्षु और प्रत्येक ईसाई तपस्वी की गतिविधियाँ—जिन्हें जोसेफ ने इतनी बड़ी महत्ता दी थी—निलस के लिए, संसार का त्याग कर चुके व्यक्ति के प्राथमिक कार्य से बहुत दूर हैं। उनके अपने आध्यात्मिक जीवन का मुख्य केंद्र, और उनके लेखों में ईसाइयों के लिए निर्धारित मुख्य कार्य, आत्मा का पूर्णत्व था, जिसके माध्यम से एक व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास होता है और वे मोक्ष प्राप्त करते हैं। नीलस ने पूर्वी चर्च के प्राचीन तपस्वियों की परंपरा और हेसिकैज़्म के तपस्वी-रहस्यवादी विचारों का बारीकी से पालन किया।

सोरा के नीलस की कृतियाँ हमें उनके विचारों का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करने में सक्षम बनाती हैं।

सुसमाचार की भावना का पालन करने का प्रयास करने वाले एक ईसाई का पूरा जीवन निरंतर पूर्णता का मार्ग होना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से स्वतंत्र और सचेत इच्छा से संपन्न एक व्यक्ति, अपनी आत्मा के उद्धार के लिए इस मार्ग—आध्यात्मिक संघर्ष के मार्ग—पर चलता है। मोक्ष की खोज करने वाले की आंतरिक, नैतिक और आध्यात्मिक वृद्धि केवल 'मानसिक प्रार्थना' और 'हृदय की संयमशीलता' के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है; केवल तपस्या और रहस्यमय अभ्यास के ये साधन ही एक फलदायी और सक्रिय ईसाई जीवन का आधार बनाते हैं। नीलस लिखते हैं, "'शारीरिक अभ्यास,' यानी बाहरी प्रार्थना, एक पत्ते से अधिक कुछ नहीं है; आंतरिक अभ्यास, यानी बुद्धिमानी भरी प्रार्थना, फल है"[120] । इसका अभ्यास हर किसी को करना चाहिए: न केवल संतों को, बल्कि दुनिया में रहने वालों को भी। निलस ने पूर्णता के लिए प्रयास करने वाले एक ईसाई की आत्मा की स्थिति, उसके लिए घात में लगी प्रलोभनों, और उसकी वासनाओं और भ्रमों पर विशेष ध्यान दिया। वह 'विचारों के संघर्ष' की एक तस्वीर पेश करते हैं, प्रलोभनों के खिलाफ संघर्ष की एक तस्वीर - 'मानसिक लड़ाई'। इस लड़ाई को लड़ते हुए, तपस्वी 'प्रलोभनों', 'संयोगों', 'संयोगों', 'बंधनों' और 'वासनाओं' पर काबू पाता है। ये मानव पापिता के चरण हैं। 'एक प्रलोभन केवल एक विचार है, या किसी वस्तु की कल्पना है, जो अचानक हृदय में प्रवेश करती है और मन के सामने प्रस्तुत होती है... एक 'संयोजन'... की परिभाषा इस प्रकार है कि यह उत्पन्न हुए विचार के साथ संवाद है, अर्थात्, हमारे भीतर प्रकट हुए विचार के साथ एक तरह की गुप्त बातचीत, चाहे वह जुनून से प्रेरित हो या निर्लिप्त रूप से; दूसरे शब्दों में: शत्रु द्वारा लाए गए विचार को स्वीकार करना, उसे बनाए रखना, उससे सहमत होना, और उसे हमारे भीतर बने रहने की स्वैच्छिक अनुमति देना। पवित्र पिताओं इसको हमेशा पापहीन नहीं मानते... 'संयोजन' से पवित्र पिताओं का तात्पर्य मन में प्रवेश कर चुके किसी विचार, या उसके सामने प्रस्तुत हुई किसी वस्तु की पूरे मन से और अनुकूल स्वीकृति से है। ऐसा, उदाहरण के लिए, तब होता है जब कोई शत्रु द्वारा उत्पन्न किसी विचार या उसके द्वारा प्रस्तुत किसी वस्तु को स्वीकार करता है, उसके साथ संवाद में प्रवेश करता है – मानसिक बकबक के माध्यम से – और फिर शत्रु के विचार के सुझाव के अनुसार कार्य करने के लिए अपने मन को झुकाता या तैयार करता है... बन्धन किसी विचार के प्रति हमारे हृदय का अनैच्छिक आकर्षण है, जिसने मन पर कब्ज़ा कर लिया हो, या उसे अपने भीतर लगातार बनाए रखना है... यह आमतौर पर ध्यान भंग और अत्यधिक, अस्वास्थ्यकर बातचीत से उत्पन्न होता है... एक जुनून को इस तरह के स्वभाव और इस तरह की क्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है, जो लंबे समय तक आत्मा में बस जाने के बाद, आदत के कारण, एक तरह से, उसके स्वभाव का ही हिस्सा बन जाता है... इसका कारण है... लापरवाही और जानबूझकर की गई उपेक्षा के माध्यम से, संबंधित वस्तु के साथ एक लंबी अवधि तक का लगाव। जुनून, अपने सभी रूपों में, अनिवार्य रूप से या तो अपराध के अनुरूप पश्चाताप के अधीन होता है, या भविष्य की यातना के अधीन। इसलिए

[120] मैं नीलस के प्रमुख कार्य: 'द ट्रेडिशन ऑफ अवर वेनेरेबल फादर नीलस ऑफ सोरा, ऐज़ हैंडड डाउन टू हिज़ डिसाइपल कंसर्निंग द स्केटे लाइफ' (1849), पृ. 22 का सहारा लेता हूँ।

प्रत्येक वासना से मुक्ति के लिए पश्चाताप करना और प्रार्थना करना उचित है, क्योंकि प्रत्येक वासना यातना के अधीन है, न कि इसलिए कि उससे संघर्ष झेला गया है, बल्कि पश्चाताप की कमी के कारण।[121] ।

आध्यात्मिक युद्ध में, तपस्वी आठ प्रमुख जुनूनों से जूझता है, जिन्हें उसे अपने भीतर पर काबू पाना होता है ताकि, अनुभव और बाहरी कर्मों के मार्ग पर सफलतापूर्वक आगे बढ़कर, वह अंततः रहस्यमय मनन की अवस्था प्राप्त कर सके; इन सबका मुकुट दिव्यता-प्राप्ति है। यहाँ वे आठ जुनून दिए गए हैं जो तपस्वी के तपस्या के आरोहण के मार्ग में बाधा डालते हैं: लालच, व्यभिचार, धन का मोह, क्रोध, दुख, निराशा, अहंकार, और घमंड[122] .

निलस के अनुसार, प्रलोभनों के खिलाफ एक समझदारी भरा और सदाचारी संघर्ष 'दिल की रक्षा करने', 'मौन' और 'बुद्धिमानी भरी प्रार्थना' में निहित है। एक भिक्षु को गूढ़ चिंतन के लिए बहुत समय समर्पित करना चाहिए, और यीशु की प्रार्थना के शब्द—'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मुझ पापी पर दया करें'—हमेशा उसके होठों पर होने चाहिए। नीलस यह भी विस्तार से समझाते हैं कि यीशु की प्रार्थना का अभ्यास कैसे किया जाना चाहिए[123] ।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि नीलस के तपस्या संबंधी विचार वोल्त्स्की के जोसेफ के विचारों से बहुत भिन्न हैं। तपस्या के प्रति नीलस और जोसेफ की समझ का अंतर उपवास के प्रति उनके दृष्टिकोण में भी परिलक्षित होता है। जबकि जोसेफ अपने नियम में, भिक्षुओं की व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखे बिना, भोजन करने के समय और भोजन की मात्रा को बहुत विस्तार से निर्धारित करते हैं, हमें नील की शिक्षाओं में उपवास के प्रति एक बिल्कुल अलग दृष्टिकोण मिलता है। नीलस बाहरी तपस्या को तपस्वी के व्यक्तिगत आध्यात्मिक गुणों पर आधारित करते हैं, साथ ही उत्तरी रस और फिलिस्तीन के बीच जलवायु के अंतर को भी ध्यान में रखते हैं। सभी लोगों पर लागू होने वाला भोजन की खपत का एक ही नियम तैयार करना असंभव है, क्योंकि, जैसा कि नीलस कहते हैं, 'शरीर शक्ति और जोश में भिन्न होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे तांबा, लोहा और मोम भिन्न होते हैं'[124] ।

सोरा के नीलस मठों की संपत्ति के प्रश्न को भी संबोधित करते हैं। वह वोल्त्सक के जोसेफ के उस विचार को पूरी तरह से खारिज करते हैं, जो मानते थे कि मठों के पास गाँव, जमीन और अन्य संपत्ति हो सकती है, या उन्हें होनी भी चाहिए। नील के अनुसार, भिक्षुओं को अपने हाथों की मेहनत से जीना चाहिए, जीवन की आवश्यकताओं के लिए उन्होंने जो सामान बनाया है, उसे बेचकर या, उससे भी बेहतर, अदला-बदली करके। मठों और भिक्षुओं के लिए सामान्य लोगों से भीख लेना उचित नहीं है; इसके विपरीत, उन्हें स्वयं वही बाँटना चाहिए जो उन्होंने अपने हाथों से कमाया है। नीलस एक बहुत ही दिलचस्प—और, प्राचीन रूस के लिए, अत्यंत असामान्य—दृष्टिकोण भी व्यक्त करते हैं कि चर्चों की सजावट में अत्यधिक विलासिता, महंगे सोने के वस्त्र और इसी तरह की चीजें दैवीय पूजा के लिए पूरी तरह से अनावश्यक हैं। सबसे पहले, ऐसी विलासिता अक्सर अपने आप में एक उद्देश्य बन जाती है, यानी, यह एक जुनून बन जाती है; दूसरी बात, सबसे महत्वपूर्ण प्रार्थना करने वालों का आंतरिक भाव है, न कि वेष्टनों और पात्रों की भव्यता। इस दृष्टिकोण में, नील राडोनेज़ के सेंट सर्जियस के प्रति एक समानता प्रकट करते हैं, जो कई वर्षों तक साधारण लकड़ी के पात्रों का उपयोग करके लिटर्जी का अनुष्ठान करते थे और सेवाओं के दौरान हमेशा विनम्र लिनन के वस्त्र पहनते थे[125] ।

मोनastic जीवन के तीन रूपों में से, नीलस ने 'मध्य' मार्ग - 'स्वर्ण मध्यम' - को प्राथमिकता दी, जिसे उन्होंने 'स्केट जीवन' कहा: जोड़ों या तिगड़म में रहने वाले भिक्षुओं का जीवन। उन्होंने न तो सख्त संन्यास और न ही सामुदायिक जीवन को मोनastic जीवन का सबसे अच्छा रूप माना।

'स्केट जीवन' से नीलस का आशय एंकरिटिइज्म से बिल्कुल भी नहीं था। एक स्केट में कई कोठरियाँ, या झोपड़ियाँ होती थीं, जिनमें कोठरी-निवासी भिक्षु (केल्लियोट्स) रहते थे ()। ये कोठरियाँ मठ की संपत्ति होती थीं। केल्लियोट्स (स्केट निवासी) जोड़ों में या, कम आम तौर पर, तीन-तीन के समूहों में रहते थे। अक्सर, इस व्यवस्था में एक वृद्ध भिक्षु और एक नवसिखुआ शामिल होता था – एक वरिष्ठ और उसका नवसिखुआ, या एक वरिष्ठ जिसके

---

[121] परंपरा। पृ. 27, 28, 29, 31, 32। नीलस प्राचीन तपस्या परंपरा के आधार पर पाप करने वाले व्यक्ति की छवि प्रस्तुत करते हैं। तुलना करें मेरी पुस्तक से। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 24–59, 81–89; अमान, ए. एम. उद्धृत ग्रंथ, 'सेंचुरी' संन्यासियों कैलिसिटस और इग्नाशियस द्वारा (पृ. 43 आदि)।

[122] परंपरा। पृ. 67–68; 69–103। भावों की यह योजना पहले ही एवाग्रियस ऑफ पोंटस († 402) की पुस्तक *एंटीरेटिकॉन* (मिग्ने, पीजी 40) में दी जा चुकी है। पृ. 1272A–1276A)। इसे बाद के काल के तपस्वी लेखकों, जैसे कि सिनाई के नीलस, जॉन क्लाइमैकस, जॉन कैसियन और अन्य लोगों ने अपनाया। उदाहरण के लिए देखें: सिनाई के नीलस। *ट्रैक्टेटस डी ऑक्टो स्पिरिट्यूज़ मालिटिया* (आठ घातक पापों पर), PG 79, पृ. 1145, 1164 में।

[123] परंपरा. पृ. 36–40; देखें मेरी पुस्तक, उद्धृत ग्रंथ, पृ. 82, 48; साथ ही: श्मिट, ई. *Das Geistige Gebet* (1916).

[124] परंपरा. पृ. 70; उपवास पर, नीलस देखें। वही। पृ. 69–80।

[125] परंपरा. पृ. 18–20.

दो शष्यि नवसखिुआ होते थे। यह जीवन शैली तब सबसे अधकि समझदारी भरी थी जब आध्यात्मकि मार्गदर्शन की एक प्रणाली मौजूद थी। स्केटे के नविासी मठ के मठाधीश के समग्र अधकिार के अधीन रहते थे। उन्हें मठ से राशन मलिता था, जो आमतौर पर पूरे सप्ताह के लिए पर्याप्त होता था। शनविार को या कसिी पर्व के पूर्व संध्या पर, सभी स्केटा नविासी सामुदायकि दैवीय सेवा में भाग लेने के लिए मठ की चर्च में एक साथ इकट्ठा होते थे; उदाहरण के लिए, यह व्यवस्था सेंट साव्हा की लावरा में थी, जो वास्तव में एक बड़ी सेल-आधारति मठ के अलावा और कुछ नहीं थी। स्केट नविासयिों की दैनकि प्रार्थना की समय-सारणी अक्सर पूरे मठ की समय-सारणी से भन्नि होती थी। नवसखिुओं के प्रशक्षिण का स्वरूप भी अलग होता था। कई कोठरयिाँ, यदि एक-दूसरे के करीब स्थति हों, तो उन्हें एक साथ समूहबद्ध करके एक स्केट बनाया जाता था; ऐसे मामलों में, भक्षिु अक्सर एक सामान्य प्रार्थना की समय-सारणी का पालन करते थे और स्केट के लिए एक मठाधीश चुनते थे। स्केट में तपस्वी प्रशक्षिण कनिोवयिा की तुलना में अधकि सख्त था। कनिोवयिा (सामूहकि जीवन) वह होता था जहाँ मठ में सभी के लिए सामान्य आवश्यकताएँ होती थीं: एक सामान्य नयिम, सामूहकि भोजन, और एक जैसे मठीय परधिान। कनिोवयिा मठों का शासन एक वशिष्टि मठीय चार्टर के आधार पर एक मठाधीश द्वारा कयिा जाता था। आइडयिोरैथम (अलग-अलग रहना) काइनोवयिन प्रणाली के वपिरीत है। प्रत्येक भक्षिु अपनी समझ के अनुसार मोक्ष की खोज करता था, वह या तो एक अलग सेल में या मुख्य मठ की इमारत के भीतर स्थति सेल में रहता था; वह अपने भोजन और वस्त्रों का ध्यान स्वयं रखता था, और वह अपनी प्रार्थना का नयिम भी अपनी मर्जी से करता था। अलग-अलग रहने के नयिम का पालन करने वाले मठों का संचालन एक मठाधीश द्वारा कयिा जाता था, जसिे एक वर्ष के लिए चुना जाता था और वह मठीय वरष्ठिों की परषिद के प्रति जवाबदेह होता था[126] ।

नीलस के दृष्टकिोण में, एक स्केट तपस्वी को प्रार्थना और मौन में, आध्यात्मकि संयम और परहेज़ की जीवन शैली जीने के लिए सर्वोत्तम अवसर प्रदान करता है। उसे दनि की शुरुआत प्रार्थना से करनी चाहिए और अपना सारा समय ईश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्यों में व्यतीत करना चाहिए: प्रार्थना, भजन और अन्य चर्च के भजन गाने, और पवत्रि शास्त्रों का अध्ययन करने में। बाइबलि की कतिाबों में, नीलस को नए नयिम, वशिेष रूप से प्रेरतिों के पत्र, अधकि पसंद थे। यह भी आवश्यक है कि तपस्वी शारीरकि श्रम में लगा रहे: पहली बात, नरिंतर सतर्कता बनाए रखने के लिए, और दूसरी, अपने हाथों की मेहनत से अपना मामूली जीवन-यापन करने और वासनाओं से लड़ने के लिए। एक भक्षिु का भोजन उसकी शक्ति के अनुपात में होना चाहिए: आवश्यकता से अधकि नहीं, क्योंकि खाने में अनुशासनहीनता मनुष्य को वासनाओं की ओर ले जाती है। नींद भी संक्षप्ति होनी चाहिए, और उसमें मृत्यु की पूर्वछाया देखनी चाहिए। मृत्यु का वचिार हमेशा संन्यासी के साथ होना चाहिए, और उसे अपने आध्यात्मकि जीवन को इस तरह से गढ़ना चाहिए कि वह कसिी भी क्षण ईश्वर के साक्षात्कार के लिए तैयार रहे।

केवल अनुभव द्वारा स्वयं की परीक्षा करके, और वासनाओं के वरिुद्ध संघर्ष के इस पथ का अनुसरण करके ही, एक भक्षिु आध्यात्मकि सीढ़ी की उच्चतम सीढ़ियों पर चढ़ सकता है। उसका आध्यात्मकि प्रयास अब चतिंन से युक्त होना चाहिए; जैसे-जैसे वह सभी सांसारकि और भौतकि चीजों को त्यागता है, उसकी आत्मा ईश्वर के रहस्यमय दर्शन तक उठती है। यीशु की प्रार्थना, हृदय की रक्षा, पूर्ण शांति और संसार से पूर्ण नर्लिप्तिता, मौन, और आत्मा की संयमशीलता के माध्यम से, तपस्वी आध्यात्मकि रूप से वकिसति होता है और अपने प्रयास (अनुभव † मनन) के अंतमि लक्ष्य - दव्यिता - के करीब पहुँचता है। और इस अनुग्रह-पूर्ण रहस्यमय डुबकी में, ईश्वर के साथ एकता में, वह आनंद की अवस्था का सहभागी बन जाता है[127] ।

नीलस के वचिार पूर्वी चर्च की तपस्वी और रहस्यमय परंपरा में नहिति हैं। पवत्रि पतिाओं की कई कृतयिाँ नीलस से बहुत पहले ही रूस में जानी जाती थीं। फरि भी नीलस ने अपने पूर्ववर्तयिों और समकालीनों से कुछ अलग तरीके से उनका उपयोग कयिा। एक पुराने रूसी वद्विान – उदाहरण के लिए, वोल्त्सक के जोसेफ – पवत्रि पतिाओं की

---

[126] मेयर, एफ. *डाई हाउपटउर्कुंडन फ्यूर दी गेशख्ति дер अथोस-क्लोस्टर* (1894) और अथोस मठों के हालयिा इतहिास और वर्तमान स्थति पिर उनके लेख, *ज़. फ. कर्चिेनगेशख्ति* में। 11 (1890); सोकोलोव, आई. द इंटरनल स्टेट ऑफ़ मॉनास्टसीज़्म इन द बाइज़ेंटाइन चर्च फ्रॉम द मडि-9थ टू द अर्ली 13थ सेंचुरी: 842–1204 (1894), में: प्राव. सोब. 1893. 3. सोरा के नील ने 'सन्न्यास-आश्रम' शब्द का अर्थ हमेशा 'स्केटे' के रूप में समझा। प्राचीन रूस में, एक स्केटे में अक्सर एकांत जीवन की कुछ वशिेषताएँ होती थीं। प्राचीन रूस में मठ जीवन के इस रूप को समझने के लिए, तुलना करें: AI. 1. संख्या 26 और 181; PSRL. 6. पृ. 284। कुछ रूसी इतहिासकार गलती से नील को एक एंकरटि (एकांतवासी) कहते हैं; उदाहरण के लिए: नकिति्स्की। एन एसे ऑन द इंटरनल हस्टि्री ऑफ नोवगोरोड। पृ. 86। ट्रांस-वोलगा क्षेत्र (वोलोग्दा क्षेत्र में), 1371 तक कोई सेनोबटिकि मठ नहीं थे (मकाराई। 4. पृ. 214), लेकनि उससे आगे उत्तर में, श्वेत सागर के पास, 15वीं शताब्दी के मध्य तक सामुदायकि मठ पहले से ही मौजूद थे (Ayu. No. 110. 6. पृ. 145)। नोवगोरोड और उसके आसपास, आम तौर पर केवल तपस्थल ही थे। PSRL. 6. पृ. 284.

[127] परंपरा. पृ. 6–65, 69 ff., 107 ff.

रचनाओं का उपयोग केवल अपना तर्क साबित करने और अपने विरोधियों के विचारों का खंडन करने के लिए करते हैं। दूसरी ओर, नीलस अपने तर्कों को और अधिक स्पष्ट और विश्वसनीय बनाने के लिए पवित्र धर्मग्रंथ या पवित्र पिताओं की रचनाओं का उपयोग करते हैं[128] । उनका तर्क औपचारिकतावाद के किसी भी संकेत से मुक्त है; वे पाठक को चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उनके विवेक से अपील करते हैं; वे केवल बहस नहीं करते, बल्कि विश्लेषण करते हैं। इस में, नीलस खुद को एक विचारक और एक मनोवैज्ञानिक के रूप में प्रकट करते हैं। वे पवित्र पिताओं और तपस्या-आध्यात्मिक ग्रंथों से व्यापक रूप से उद्धरण देते हैं, लेकिन केवल उतना ही जितना अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है। वे उस तरह के उद्धरणों के संचय का सहारा नहीं लेते जैसा कि वोल्त्स्की के जोसेफ के कार्यों में मिलता है, जो अपनी प्रमुख रचना, *द एनलाइटनर* में, पाठक को उनके अतिप्रचुरता से थका देते हैं। जोसेफ के लिए, तपस्या हमेशा अपने आप में एक लक्ष्य था, जबकि नील के लिए यह केवल एक साधन है, केवल एक उपकरण है। उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात तपस्या का आध्यात्मिक महत्व है, क्योंकि अपने आप में यह एक ईसाई के आंतरिक जीवन का केवल एक बाहरी प्रकटीकरण है। इसलिए, वे तपस्वी की व्यक्तिगत विशेषताओं को कभी नहीं भूलते।

नीलस की प्रमुख कृति में, *द ट्रेडिशन* में तपस्या के आदर्श को प्राप्त करने के लिए किए गए आध्यात्मिक संघर्ष का वर्णन है, लेकिन स्वयं आदर्श का नहीं; इसका कारण यह हो सकता है कि नीलस, एक कुशल मनोवैज्ञानिक के रूप में, यह समझते थे कि उस समय के मठवाद की स्थिति को देखते हुए, तपस्या के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शन, एक ऐसे आदर्श के चित्रण की तुलना में अधिक उपयोगी था जिसके प्राप्त करने का मार्ग स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं था।

3. 'जोसेफ़ाइट्स' और 'गैर-अधिग्रहणकर्ताओं' के बीच विवाद

संन्यासवाद के अर्थ और संन्यासी जीवन की प्रकृति पर जोसेफ और नीलस के विचारों के बीच मतभेद, साथ ही उनके विभिन्न तपस्वी दृष्टिकोण, 16वीं शताब्दी की शुरुआत में मास्को समाज को विशेष रूप से व्यस्त रखने वाले दो दार्शनिक मुद्दों पर चर्चा के दौरान सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त हुए।

पहला मुद्दा ईसाई सिद्धांत की नींव से संबंधित था; दूसरा अधिक व्यावहारिक मामला था और यह मस्कोवाइट रूस में चर्च और राज्य के बीच संबंधों से संबंधित था।

प्राचीन रूस में ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षाओं को तोड़ने-मरोड़ने का प्रयास करने वाली विधर्म और विधर्मी एक बहुत ही दुर्लभ घटना थे। अपने आंतरिक मिशन में, चर्च ने केवल अंधविश्वासों, मूर्तिपूजा की अवशेषों और बाहरी भक्ति के भद्दे रूपों के खिलाफ संघर्ष किया। विधर्मी आंदोलनों ने पुराने रूसी ईसाई धर्म की नींव को नहीं हिलाया[129] ।

हालांकि, 14वीं शताब्दी में नोवगोरोड में उत्पन्न हुई स्ट्रिगोलनिकि संप्रदाय ने इतिहास में एक निश्चित भूमिका निभाई। इस धार्मिक आंदोलन का एक सामान्य विचार केवल इस संप्रदाय के खिलाफ निर्देशित विवादात्मक लेखन के माध्यम से ही बनाया जा सकता है। 15वीं शताब्दी के अंत के करीब, फिर से नोवगोरोड में, एक नया विधर्मी आंदोलन उभरा जिसे 'यहूदीकरणकर्ताओं का विधर्म' के नाम से जाना जाता था, क्योंकि इसमें कई यहूदी शामिल थे[130] ।

इस आंदोलन ने नोवगोरोड और मास्को में अपेक्षाकृत व्यापक अनुयायी बना लिए। हम इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करेंगे – हमारे लिए इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि इस विधर्म के प्रति जोसेफ और नील का दृष्टिकोण कैसा था, उसमें क्या अंतर था। अपने प्रमुख ग्रंथ, *द एनलाइटनर* में, जोसेफ यहूदीकरण करने वालों के खिलाफ एक बहुत ही मजबूत रुख अपनाते हैं, और उनके तथा उनके धार्मिक विचारों के खिलाफ तर्क देते हैं; इस कारण से, *द

---

[128] नीलस निम्नलिखित चर्च फादर्स और तपस्वी लेखकों का हवाला देते हैं: मैकारियस, बेसिल द ग्रेट, जॉन क्रिसोस्टोम, नीलस ऑफ़ सिनाई, आइज़ैक द सीरियन, एफ्रेम द सीरियन, अबा डोरोथियस, हेसिकियस ऑफ़ जेरूसलम, कैसियन, जॉन क्लाइमैकस, मैक्सिमस द कन्फेशर, पीटर ऑफ़ डेमास्कस, पोप ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट, थियोडोर द स्टुडाइट, फिलोथियस, सिमियन द न्यू थियोलॉजिस्ट, विशेष रूप से सिनई के ग्रेगरी और अन्य के लिए एक विशेष प्राथमिकता के साथ।

[129] पुराने रूसी वृत्तांतों में केवल सापेक्ष रूप से अस्पष्ट अंश ही उल्लेखनीय हैं, जो भिक्षु एड्रियन (निकॉन वृत्तांत, वर्ष 1004 के अंतर्गत) की 'धर्मद्रोह' और लगभग बीस वर्ष बाद एक दिमित्री से संबंधित हैं, जिन्हें बुल्गारियाई पॉलिसियनवाद से जोड़ा जा सकता है। एक मार्टिन नामक अर्मेनियाई पादरी का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिसके जीवन और शिक्षाओं के बारे में केवल अत्यंत अस्पष्ट जानकारी ही बची है; तुलना करें: गोलुबिन्स्की 1. 2 (दूसरा संस्करण), पृ. 795। बुधवार और शुक्रवार को उपवास (12वीं सदी) और 'आल्लेलुया' (14वीं सदी) के उपयोग से संबंधित विवादों का विधर्मी चरित्र नहीं था।

[130] इस आंदोलन पर अधिक जानकारी के लिए, अध्याय X देखें।

एनलाइटनर* इस मामले पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत है। अन्य लेखों में, जिनमें कुछ पत्र भी शामिल हैं, जोसेफ वधिर्मियों के खलिाफ व्यावहारकि उपाय प्रस्तावति करते हैं[131] । कठोर उपायों के एक समर्थक के रूप में, जोसेफ मृत्युदंड की भी अनुमति देते हैं। नील सोर्स्की के चक्र में गैर-स्वामी लोगों से जोसेफ के वचिारों को बहुत कड़ी प्रतक्रियिा का सामना करना पड़ा। यहूदीकरण करने वालों के खलिाफ अपनी वाद-ववािद रचना में, कठोर उपायों की आवश्यकता का बचाव करते हुए, जोसेफ मुख्य रूप से पुराने नयिम पर नरि्भर थे, जबकि गैर-स्वामी लोगों ने उनसे असहमत होते हुए, नए नयिम की भावना का सहारा लयिा। वे ईसाइयों द्वारा मृत्युदंड के उपयोग का दृढ़ता से वरिोध करते थे; वधिर्मी पापी हैं, जो यदि अपनी गलतयिों से इनकार नहीं करते हैं, तो उन्हें अन्य ईसाइयों के साथ संगति से बहष्कृत कर दयिा जाना चाहए और मठों में बंद कर दयिा जाना चाहए, ताकि वहाँ, शक्षिा के माध्यम से, वे सत्य के ज्ञान को प्राप्त कर सकें[132] . यद्यपि 1504 की परषिद में जोसेफ का दृष्टकिोण प्रभावी रूप से हावी रहा और चर्च ने कुछ वधिर्मियों को मृत्युदंड की सजा दी[133] , फरि भी यह दृष्टकिोण का अंतर वचिाराधीन इन दो मठवासी आंदोलनों की बहुत वशिष्टि वशिषता बना हुआ है।

एक अन्य मुद्दा जसि पर इन दोनों आंदोलनों की धार्मकि वचिारधाराओं में मतभेद स्पष्ट हुए, वह मठों की जमींदारयिों का प्रश्न था[134] ।

मस्कोवाइट रूस में मठों की संपत्ति का वकिास लगातार गति पकड़ रहा था। 13वीं–14वीं शताब्दयिों में स्थापति मठ धीरे-धीरे मध्य और उत्तरी रूस की आर्थकि कॉलोनयिों में वकिसति हो गए। वे कृषि और शल्पि में लगे हुए थे; कसिान मठ की भूमि पर रहते थे, या तो मठ के लिए काम करते थे या करिाया देते थे। भूमि-स्वामित्व के संबंध में वभिन्नि वशिषाधकिार, जो राजकुमारों और महा-राजकुमारों द्वारा मठों को प्रदान कए गए थे, ने उनकी समृद्धि को बढ़ाया। मठों ने स्वयं पहले से जोती गई भूमि खरीदी और रईसों, बोयारों, व्यापारयिों और अन्य व्यक्तयिों से उपहार या वसीयत के रूप में संपत्तयिाँ प्राप्त कीं; इसके अलावा, मठों की संपत्ति उन धनी लोगों के योगदानों से भी बढ़ी जो मठ में शामलि हुए। चर्च के हाथों में कृषि के लिए उपयुक्त भूमि के एक महत्वपूर्ण हस्सि के केंद्रति होने के कारण सरकार ने राज्य के उद्देश्यों के लिए खोई हुई भूमि को पुनःप्राप्त करने पर वचिार कयिा[135] ।

धार्मकि पदानुक्रम और मठवासी समुदाय के भीतर, मठवासी संपत्तयिों के संबंध में दो वचिारधाराएँ उभरीं: एक जोसेफाइट स्थति थी, और दूसरी गैर-अधग्रिहणकर्ताओं की स्थति[136] । गैर-अधग्रिहणकर्ता, या 'वोलगा के बुज़ुर्ग' , जन्हिोंने चर्च और मठों के भूमि-स्वामित्व के अधकिारों को नकार दयिा, के कुछ पूर्ववर्ती रूसी बशिप और मठवासी समुदाय के बीच पाए गए[137] ।

---

[131] मत्रिोफ़ान और ग्रैंड प्रसि वासलिी इवानोवचि को पत्र, में: च्टेनयिा. 1847. 1; बशिप नफिोंट को, में: आरआईबी. 6. पृ. 825 ff.

[132] गैर-स्वीकारकर्ताओं की प्रतक्रियिा – 'वोलोग्दा के बुज़ुर्गों का पत्र', में: DRV. 14 (1792)। पृ. 424–428।

[133] PSRL. 6. पृ. 49; 8. पृ. 244.

[134] इस वषिय पर साहत्यि काफी वस्तिृत है; मैं केवल सबसे महत्वपूर्ण कृतयिों का उल्लेख करूँगा: मल्युिटनि। 'पुरोहति वर्ग की अचल संपत्ति पर', में: रीडग्सि। 1859. 4; 1860. 3; 1861. 1, 2; गोर्चाकोव। रूसी मेट्रोपॉलटिन्स, पैट्रआर्क्स और पवत्रि सनिोड (1871) की भूमि-स्वामित्व पर; वही लेखक। मठवासी कार्यालय (1868); पावलोव। उद्धृत कृति; झमाकनि। उद्धृत कृति। एक संक्षप्ति अवलोकन पुस्तक द्वारा प्रदान कयिा गया है: गौटयिर। रूस में भूमि-स्वामित्व के इतहिास पर एक नबिंध (1915)। उत्तरी रूस में मठों के आर्थकि प्रबंधन के व्यापक अध्ययन का एक प्रयास इस कृति में मलिता है: सावचि, ए. द सोलोवेत्स्की एस्टेट इन द 15th–17th सेंचुरीज़: ए स्टडी ऑफ़ द इकोनॉमी एंड सोशल रलिेशंस इन द रशयिन फ़ार नॉर्थ। परम, 1927। अध्याय VI और VIII देखें।

[135] एडम क्लेमेंट, जन्हिोंने 1553 में मास्को का दौरा कयिा था, ने मठों के बारे में लखिा: 'वहाँ बेसलियिन मठ (कोएनोबयिा) की बहुत सारी इमारतें बनती हैं; भूमि से उनकी आय बहुत वशिाल है, क्योंकि संपूर्ण राज्य में सभी भूमि का एक तहिाई हस्सिा संन्यासयिों के पास है' (वहाँ कई बेसलियिन कोनोबयिा हैं, और वे बहुत सारी भूमि के मालकि हैं; पूरे राज्य की भूमि का एक तहिाई हस्सिा संन्यासयिों का है), में: Rerum Moscoviticarum scriptores varii. फ्रैंकफर्ट, 1600. पृ. 152.

[136] चर्च ने अपने अधकिारों का आधार सार्वभौमकि और स्थानीय परषिदों के कैनन और नयिमों पर रखा, जो हालांकि, भूमि स्वामित्व के खलिाफ बोलते हैं: 38वां प्रेरतिों का नयिम, सातवीं सार्वभौमकि परषिद का 12वां नयिम (पवत्रि प्रेरतिों, पवत्रि परषिदों और पवत्रि पतिाओं के नयिम, टीका-टप्पिणी सहति। मास्को, 1876. पृ. 87, 668) और, वशिष रूप से, 861 के कॉन्स्टेंटनिोपल के दूसरे परषिद का नयिम 6 (नौ स्थानीय परषिदों के कार्य। कज़ान, 1877. पृ. 238)। संत थयिोडोर द स्टुडाइट ने अपने भाइयों से सबसे कठोर गरीबी की मांग की और भकिषुओं के व्यक्तगित संपत्ति के अधकिार को खारजि कर दयिा। डोब्रोक्लोन्स्की, ए. द वेनेरेबल थयिोडोर, कन्फेशर एंड एबॉट ऑफ स्टुडयिोन। ओडेसा, 1915. पृ. 498.

[137] मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन (1381–1382, 1390–1406) साइप्रयिन का एक पत्र (1395/1405), अबॉट अथानासयिस (AI. 1, संख्या 253), जसिमें वे भकिषुओं के नजिी संपत्ति के अधकिार के प्रश्न को संबोधति करते हैं और इस अधकिार को पवत्रि पतिाओं के वचिारों के वपिरीत मानकर खारजि कर देते हैं। हालाँकि, वे सामुदायकि मठों के लिए भूमि-स्वामित्व की वैधता को स्वीकार करते हैं, बशर्ते कि इन संपत्तयिों का प्रबंधन एक धर्मनरिपेक्ष व्यक्ति द्वारा कयिा जाए जो मठ को उसकी सभी आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करता हो। यह वही दृष्टकिोण संत सेरगयिस ऑफ़ राडोनेज़ और संत सरिलि ऑफ़ बेलोजेर्स्क का भी था, जन्हिोंने सैद्धांतकि रूप से सामुदायकि मठों को भूमि रखने के अधकिार

1503 की परषिद में, मास्को सरकार ने मठ संपत्तयिों के मुद्दे को शांतपिूर्वक हल करने के लिए गैर-अधग्रिहणकर्ताओं के पक्ष पर भरोसा करने का प्रयास कयिा। परषिद में मठ संपत्तयिों के वरिोधयिों के दृष्टकिोण का प्रतनिधित्वि सोरा के नील और यारोस्लाव के पैसयिस ने कयिा था। सोरा के नीलस ने अपने लेखन में पहले ही कई मौकों पर मठों की जमींदारयिों और संतों की व्यक्तगित संपत्तकि खलिाफ दृढ़ता से आवाज उठाई थी। लेकनि जब परषिद में, बशिपों और अन्य पुरोहतिों को इस मामले पर कोई नर्णिय लेना पड़ा और सोरा के नीलस ने अपनी इच्छा व्यक्त की 'कमिठों के पास कोई गाँव नहीं होने चाहए, लेकनि भक्षिुओं को नर्जिन स्थानों में रहना चाहए और शारीरकि श्रम से अपनी आजीवकिा चलानी चाहए', हालांकनिील को वृद्ध पैइसयिस यारोस्लावोव का समर्थन प्राप्त था, फरि भी यह प्रस्ताव परषिद में उपस्थति अधकिांश लोगों को पसंद नहीं आया, और सबसे कम तो वोल्कोलामस्क मठ के मठाधीश, जोसेफ वोलात्स्की को[138] ।

जहाँ नील पूरी तरह से तपस्वी वचिारों से प्रेरति थे, जो कपिूर्वी चर्च के कैननकि नयिमों पर आधारति थे, वहीं जोसेफ अधकि व्यावहारकि चर्च संबंधी वचिारों से प्रेरति थे। मठ का प्राथमकि कार्य चर्च पदानुक्रम के प्रशक्षिण को सुनश्चिति करना है। मठ इस कार्य को केवल तभी पूरा कर सकता है जब वह मठवासी समुदाय को प्रदान करता है (जोसेफ एक सामुदायकि मठ का उल्लेख कर रहे हैं) ऐसे आवासीय परस्थितियिाँ स्थापति की गई हों कभिक्षिु अपनी रोजी-रोटी की चतिाओं से मुक्त हो जाएँ, और पूरी तरह से धार्मकि पदानुक्रम में भवषि्य की सेवा के लिए तैयारी में स्वयं को समर्पति कर सकें – जैसे कबिशिप, मठाधीश, आदकि रूप में। 'यदमिठों के पास कोई ज़मीन नहीं है,' जोसेफ ने 1503 की परषिद में अपनी बात रखी, 'तो कोई सम्मानति और कुलीन व्यक्तमिठवासी संन्यास के व्रत क्यों लेगा?'[139] जोसेफ के वचिारों को परषिद के बशिपों का समर्थन मलिा और वे मान गए: ज़मीन मठों के ही कब्जे में रही।

इस मामले पर दोनों दलों के प्रमुख प्रतनिधियिों के बीच मतभेद यह दर्शाते हैं कसिामान्य रूप से उनके तपस्या संबंधी वचिार कतिने परस्पर वरिोधी थे। सॉर्सक के नील के लिए, वास्तवकि तपस्या के माहौल में भक्षिु की आंतरकि पूर्णता सबसे महत्वपूर्ण थी; इस भावना में पले-बढ़े भक्षिुओं की पीढ़यिाँ, यदउिन्हें सांसारकि दुनयिा में अपनी सेवा नभिानी पड़े, तो वे वशिुद्ध रूप से ईसाई लक्ष्यों की ओर प्रयासरत होंगी। वोल्त्सक के जोसेफ ने मठवासी तपस्या को, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, पादरयिों को धार्मकि और प्रशासनकि कार्यों को करने के लिए तैयार करने के एक साधन के रूप में देखा। उन्होंने धार्मकि और राज्य के मामलों के बीच एक घनष्ठि संबंध की आवश्यकता की बात की; इसके वपिरीत, नील ने उनके पृथक्करण और एक-दूसरे से पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की। जोसेफ के दृष्टकिोण में, मठों को भक्षिु की व्यक्तगितता को वश में करना चाहए; इसी कारण, उन्होंने एक बार कहा था कि व्यक्तगित राय सभी जुनूनों की जननी है, और राय दूसरा पतन है। दूसरी ओर, नील ने मानवीय व्यक्तगितता की रक्षा की और अपने आध्यात्मकि प्रयासों में तपस्वी की आंतरकि स्वतंत्रता को बनाए रखा।

जोसेफ की वजिय ऐतहिासकि महत्व की थी। उनके अनुयायियिों ने, वशिेष रूप से 16वीं शताब्दी के दूसरे भाग से, शक्तप्राप्त की, – मेट्रोपॉलटिन जोसाफ (1539–1541) से जुड़ा एक संक्षप्ति अंतराल, जो गैर-स्वामत्विधारकों के प्रतसिहानुभूतरिखते थे लेकनि चर्च के भाग्य पर उनका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा – और जल्द ही जोसेफटि रूसी चर्च के भीतर सबसे प्रभावशाली, शासक गुट बन गए।

अध्याय V. 16वीं सदी में मॉस्को में धार्मकि और राजनीतकि वचिारों की दुनयिा

को मान्यता दी, लेकनि व्यक्तगित भक्षिुओं के लिए नजिी संपत्तकि अधकिार से इनकार कर दयिा। हालाँकदिोनों संतों ने अपने मठों में सामुदायकि जीवन के सबसे सख्त रूप को लागू करने और बनाए रखने का प्रयास कयिा, फरि भी वे मठों को उपहार के रूप में दी गई भूमि अनुदान को अस्वीकार नहीं कर सकते थे, खासकर यदयिे उपहार राजकुमारों से मलिे हों। पावलोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 11, 66; मकारी। 8 (1874)। पृ. 154; नकिोल्स्की। द करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ। खंड 1, संख्या 2 (1910)। पृ. 11. करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ में, मठवासी समुदाय दो गुटों में बंट गया, जनिके बीच ववािद 15वीं शताब्दी के दूसरे छमाही के दौरान जारी रहा और जसिके परणिामस्वरूप गैर-स्वामत्विव वाले भक्षिुओं का एक समूह बना जो मठ की जमींदारयिों का दृढ़ता से वरिोध करता था। नकिोल्स्की। करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ में सामुदायकि और सेल जीवन, में: क्रश्चियिन रीडग्सि 1907। अगस्त। पृ. 155–173। तुलना करें: वीएमसीएच। सतिंबर। पृ. 550। यह संभव है कइिन्हीं ववािदों ने नील ऑफ सोर्स्क को अपना स्वयं का स्केट स्थापति करने के लिए प्रेरति कयिा।

[138] परंपरा। पृ. 81, 14, 18; परशिषि्ट। 10. पृ. 505.

[139] पूरक। खंड 10. पृ. 508.

1. मस्कोवी शासकों और रूसी चर्च के राजनीतिक अधिकार के तहत रूसी भूमि का एकीकरण

दोनों तपस्वी आंदोलनों के बीच विवाद से मठवाद को लाभ हो सकता था, यदि दोनों पक्षों ने इससे सही निष्कर्ष निकाले होते और यह स्वीकार किया होता कि संतों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन और सामान्य रूप से मठवासी जीवन के संगठन से संबंधित मामले पूरी तरह से चर्च के मामले हैं। हालांकि इस विवाद के दौरान यह स्पष्ट हो गया कि तपस्वी विचार देश के राजनीतिक और राज्य के मामलों से सबसे अधिक जुड़े हुए थे - हम मठों की संपत्तियों के मुद्दे का उल्लेख कर रहे हैं - – जोसेफाइट और गैर-अधिग्रहणवादी दोनों ही एक मध्यम मार्ग खोज सकते थे और इस प्रकार मठवासी जीवन से विवाद के नकारात्मक परिणामों को समाप्त कर सकते थे, यदि उन्होंने संयम दिखाया होता, जो ठीक वही है जिसकी मठवासी विनम्रता ने उनसे अपेक्षा की थी। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ - न तो जोसेफाइट्स के अत्यधिक उत्साह के कारण और न ही गैर-अधिग्रहणकर्ताओं की जिद के कारण, बल्कि इसलिए क्योंकि इन दोनों आंदोलनों को राज्य और राजनीतिक विचारों, विचारधाराओं और विचारों की एक शक्तिशाली धारा में फँस जाना पड़ा, जिसने 16वीं शताब्दी में मस्कोवाइट राज्य को सचमुच में अपनी चपेट में ले लिया था। यह शायद कोई संयोग नहीं है कि मठवाद की नींव पर विवाद उस समय भड़क उठा जब मस्कोवी राजशाही अपने इतिहास के एक निर्णायक दौर में प्रवेश कर रही थी।

पूर्व और पश्चिम दोनों में मठवाद का पूरा इतिहास यह दर्शाता है कि मठ को बाहरी दुनिया से अलग करना कितना मुश्किल है, और यदि भिक्षुओं को धर्मनिरपेक्ष दुनिया में अपने कर्तव्य निभाने की आवश्यकता है, तो मठवाद को धर्मनिरपेक्षता से बचाना कितना मुश्किल है। प्रमुख धार्मिक और राजनीतिक घटनाएँ मठों की दीवारों को तोड़ देती हैं और मठवाद को धर्मनिरपेक्ष जीवन के प्रवाह में खींच लेती हैं। बिज़ान्टियम में मूर्तिभंजन, पश्चिम में क्लूनी आंदोलन, और धर्मयुद्ध इस पैटर्न की स्पष्ट पुष्टि करते हैं।

मस्कोवाइट राज्य में घटित घटनाएँ अपने समकालीन—जोसेफाइट्स और नॉन-अक्वायरर्स—और आने वाली पीढ़ी दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और चौंकाने वाली थीं। उस युग के लोगों के धार्मिक और राजनीतिक विचार, विशेषकर शिक्षित वर्गों के—जो अपनी आध्यात्मिक शक्ति केवल मठवाद से प्राप्त करते थे—इन घटनाओं से सचमुच हिल गए थे। इतिहासकार, और विशेष रूप से चर्च-संबंधी इतिहासकार, अक्सर अतीत के लोगों की विचार प्रक्रियाओं और कार्यों को अति-सरलीकृत कर देते हैं; बाद की पीढ़ियाँ कभी-कभी उन विचारों को समझने में विफल रहती हैं जो उस समय लोगों के जीवन का मार्गदर्शन करते थे, जब तक कि वे खुद को उस युग की परिस्थितियों में मानसिक रूप से न ले जाएँ और अतीत के धार्मिक दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास न करें। उस समय रूसी लोगों की विश्वदृष्टि पूरी तरह से धार्मिक थी; चर्च और राज्य-राजनीतिक जीवन की सभी घटनाओं को एक धार्मिक दृष्टिकोण से देखा, तौला और आंका जाता था। उनका सोचने का तरीका और उनके तर्क की प्रकृति आज के लोगों से काफी भिन्न थी। उस समय के लोग, अधिकांशतः भक्तिमय बच्चों की तरह थे, फिर भी उनमें वयस्कों जैसी तीव्र भावनाएँ थीं; वे ऐसे ईसाई थे जो सच्ची ईसाई पूर्णता के उदाहरणों को पहचान सकते थे, लेकिन स्वयं उस मार्ग को खोजने में असमर्थ थे। उस युग की मनोवैज्ञानिक जड़ों को समझने के लिए, हमें 16वीं शताब्दी की शुरुआत में रूसी लोगों के विशिष्ट लक्षणों को फिर से याद करना होगा: 'उस समय, लोग विचारों के संदर्भ में नहीं, बल्कि छवियों, प्रतीकों, अनुष्ठानों और किंवदंतियों के संदर्भ में सोचते थे; यानी, विचार तार्किक संयोजनों में विकसित नहीं हुए, बल्कि प्रतीकात्मक कार्यों या अनुमानित तथ्यों में विकसित हुए, जिनके लिए उन्होंने इतिहास में औचित्य खोजा। वे वर्तमान की घटनाओं की व्याख्या करने के लिए अतीत की ओर नहीं मुड़े, बल्कि अपने वर्तमान हितों को सही ठहराने के लिए मुड़े, और अपने दावों का समर्थन करने के लिए उदाहरण खोज रहे थे'[140] .

रूसी लोगों की आँखों के सामने रूसी राष्ट्रीय और वैश्विक राजनीतिक महत्व की महान घटनाएँ घटित हो रही थीं। हाल ही तक, मॉस्को की रियासत रूसी मैदान के असीम जंगलों के बीच जमीन के एक टुकड़े से अधिक कुछ नहीं थी। लेकिन यह भूमि का टुकड़ा अन्य अनुदानित रियासतों के खर्च पर लगातार विस्तार कर रहा था; मॉस्को की रियासत क्षेत्रीय, राजनीतिक और आर्थिक रूप से बढ़ी[141] । मॉस्को के राजकुमार, 'रूसी भूमि के एकीकरणकर्ता' के शासन के तहत रूसी रियासतों का एकीकरण, एक ओर की कुशल राजनीति और दूसरी ओर राष्ट्रीय आत्म-जागरूकता के विकास

---

[140] क्लयूचेव्स्की। *Geschichte Rußlands*, खंड 2, पृ. 127.

[141] निम्नलिखित कृतियाँ 15वीं–16वीं शताब्दियों में मस्कोवाइट राज्य के विकास से संबंधित मुद्दों की शृंखला का परिचय देने के लिए काम आ सकती हैं: क्लयुचेव्स्की। उद्धृत कृति, खंड 2, अध्याय 1, 2 और 5; स्टड्लनि, कार्ल। Geschichte Russlands, खंड 1 (1923), पृ. 197 ff.; प्रेस्न्याकोव, ई. द फॉर्मेशन ऑफ द ग्रेट रशियन स्टेट (1918); ल्यूबाव्स्की. द फॉर्मेशन ऑफ द मेन स्टेट टेरिटरी ऑफ द ग्रेट रशियन नेशन (1929); प्लाटोनोव, एस. हिस्ट्री ऑफ रशिया (1927)।

का परिणाम था[142] । 'मास्को द्वारा उत्तर-पूर्वी रूस के क्षेत्रीय एकीकरण की पूर्ति ने मास्को के प्रसिपिल्टी को एक महान रूसी राष्ट्रीय राज्य में बदल दिया'[143] , क्लीचेव्स्की कहते हैं।

अपनज प्रमुखताओं के विलय ने मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस को इन क्षेत्रों की संयुक्त शक्ति को अपने हाथों में केंद्रित करने में सक्षम बनाया[144] । मॉस्को के प्रिंस, इवान तृतीय (1462–1505), 'संप्रभु और निरंकुश'[145] , 'सभी रस का ग्रैंड प्रिंस' बन गए। पहले, यह उपाधि केवल एक औपचारिकता थी; अब इसने वास्तविक राज्य और राजनीतिक महत्व प्राप्त कर लिया: इवान तृतीय ने वास्तविक और वैधानिक रूप से शासन किया[146] । मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस के अधिकार के तहत रूस के क्षेत्रीय एकीकरण का महत्व केवल रूसी भूमि के लिए ही नहीं था: इस एकीकरण के परिणाम अंतरराष्ट्रीय प्रकृति के थे। अब मॉस्को का ग्रैंड डची अन्य राज्यों के साथ सामान्य सीमाएँ साझा करता था। एक समय में ओका और वोल्गा नदियों के बीच के जंगलों में छिपी एक छोटी रियासत, कुछ ही दशकों में खुद को विश्व राजनीति के जटिल जाल में उलझा हुआ पाया[147] । यह न केवल मास्को सरकार के लिए, बल्कि सोचने वाले मॉस्कोवासियों के लिए भी एक पूरी तरह से नई घटना थी। अब बढ़ी हुई राज्य की राजनीतिक भव्यता पर केवल एक ही परिस्थिति ने छाया डाली - तातार का जुआ, जो वास्तव में (de facto), निश्चित रूप से मॉस्को में मुश्किल से ही महसूस किया जाता था, लेकिन नाममात्र (de jure) में अभी भी बना हुआ था। हालाँकि, 1480 में, यह छाया भी दूर हो गई: रूसी ने उस जूए को झटक दिया जो दो और आधी सदी (1238–1480) से उस पर भारी था[148] ।

२. पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में मास्को में धार्मिक और राजनीतिक विचार

ये घटनाएँ स्वाभाविक रूप से उस युग के लोगों के जीवन पर अपना प्रभाव छोड़ गईं। यह नहीं भूलना चाहिए कि रूसी भूमि के एकीकरण में धार्मिक पदानुक्रम ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रूसी मेट्रोपॉलिटन्स[149] — मुख्य रूप से थियोग्नोस्टस (1328–1353), पीटर (1308–1325), अलेक्सियस (1354–1378) और जेरोन्टियस (1473–1489)

---

[142] मॉस्को के महान राजकुमार ने निम्नलिखित को अपने नियंत्रण में लाया: 1463 में – यारोस्लाव की अपानराज्य रियासत (एक शांति संधि के तहत); 1472 में – राजकुमार यूरी (इवान तृतीय का भाई) का अपानराज्य: दमित्रोव, मोजाइस्क और सर्पुखोव; 1472 में – उसने पर्म पर विजय प्राप्त की; इस क्षेत्र का एक हिस्सा पहले ही इवान प्रथम कलाइटा के अधीन मिलाया जा चुका था; 1478 में – उन्होंने वेलीकी नोवगोरोड पर विजय प्राप्त की; 1481 में, इवान के भाई एंड्रे का अपानगे मिला लिया गया: वोल्गोडा और तारुसा; 1482 और 1493 के बीच – चेर्नगिव और नोवगोरोड-सेवर्सकी भूमि के छोटे सामंती राज्य: व्याज्मा, चेर्नगिव, स्टारोडुब और नोवगोरोड-सेवर्सकी; 1485 में, ट्वेर का सामंती राज्य जीता गया; 1485 में, एक वसीयत के अनुसार वेरेया के सामंती राज्य को अपने में मिला लिया गया, जिसे जबरन लिखवाया गया था; 1489 में व्याटका पर विजय प्राप्त की गई; 1492 में, उनके भाई आंद्रेई द ग्रेट का सामंती राज्य उग्लिच अपने में मिला लिया गया; 1503 में, रियाज़ान के राजकुमार फ्योडोर की वसीयत के अनुसार रियाज़ान सामंती राज्य का एक हिस्सा अपने में मिला लिया गया। यह सब इवान (1462–1505) की कुशल नीति का परिणाम था। उनके बेटे, ग्रैंड प्रिंस वासिली III (1505–1533) के अधीन, मास्को का उदय जारी रहा: 1510 में, प्सकोव को वश में किया गया; 1513 में, वोल्कोलामस्क का छोटा सा सामंती राज्य; 1514 में, स्मोलेंस्क का राजतंत्र लिथुआनिया से पुनः कब्जा कर लिया गया; 1517 में, रियाज़ान का महान राजतंत्र विलय कर दिया गया; और 1523 में, सेवेर्स्क का राजतंत्र। आगे पढ़ने के लिए, पिछली टिप्पणी देखें।

[143] क्लुचेव्स्की। 2. पृ. 116.

[144] रोज्कोव। रूसी इतिहास। खंड 3, पृ. 25; प्रेस्न्याकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 458, 429.

[145] प्लातोनोव। लेक्चर्स ऑन रशियन हिस्ट्री। 9वां संस्करण (1915)। पृ. 156। तुलना करें: इस शब्द के अर्थ पर क्लुचेव्स्की (2. पृ. 126) और ड्याकोनोव (द पावर ऑफ द मॉस्को सोवरेन्स (1889)। पृ. 54 और बाद के पृष्ठों) के विचारों से।

[146] देखें: ड्याकोनोव. उद्धृत ग्रंथ; रोज़कोव. रूस में निरंकुशता का उद्भव (1906); फिलिप डब्ल्यू. इवान पेरसेवेटोव (1935). अध्याय 4; व्लादिमीरस्की-बुडानोव. समीक्षा; सर्गेयेविच. रूसी कानूनी प्राचीनताएँ.

[147] देखें: स्टडहलनि. 1; क्ल्युचेव्स्की. 2 (1925); प्लाटोनोव. गेशिख्ते रूसलैंड्स (1927); प्रेस्न्याकोव. एजुकेशन (1918); उबर्स्बर्गर एच. ऑस्ट्रिया और रूस 15वीं शताब्दी के अंत से (1906); फॉरस्ट्रूटर, के. मध्य युग में प्रूसिया और रूस: 13वीं से 17वीं सदी तक उनके संबंधों का विकास (1938); बारबाशोव, ए. विटौट्स: उनके शासन के अंतिम बीस वर्ष (1891).

[148] स्टाहलनि, खंड 1, पृ. 216 आदि। साथ ही: ग्रेकोव, बी. और याकोबोव्स्की, ए. द गोल्डन होर्डे। 13वीं और 14वीं शताब्दी के दौरान इसके गठन और उत्कर्ष के समय जोची उलुस के इतिहास की रूपरेखा (1937); स्पुलर, बी. 'द फॉरेन पॉलिसी ऑफ द गोल्डन होर्ड', में: जहरबुख फ्यूर गेशिख्ते ओस्टेउरोप्स, 5 (1940); वही. द गोल्डन होर्ड (1941) (एक विस्तृत ग्रंथसूची के साथ); मेरा लेख 'ऑन द हिस्ट्री ऑफ रशियन ईस्टर्न पॉलिसी इन द 15th एंड 16th सेंचुरीज', में: जहरबुख फ्यूर गेशिख्ते ओस्टेउरोप्स, 6 (1941). पृ. 55–84। रूसी चर्च के प्रति तातार खानों के रवैये पर: प्रिसेलकोव, एम. रूसी मेट्रोपॉलिटन्स के खान के चार्टर (1916)।

[149] देखें: प्रिसेलकोव, एम. दसवें–बारहवें शताब्दी में कीव रस के चर्च और राजनीतिक इतिहास पर निबंध (1913); प्रेस्न्याकोव। शिक्षा; सोकोलोव, डी. रूसी मेट्रोपोलिस के विभाजन का इतिहास (1900); सोकोलोव, पी. बाइज़ेन्टियम से रूसी बिशप और प्रारंभिक 15वीं शताब्दी तक उनकी नियुक्ति का अधिकार (1913); मकारीय। 5–6 (संबंधित अध्याय)।

— ने हमेशा 'रूसी भूमि के एकीकरणकर्ताओं'[150] की नीतियों का उत्साहपूर्वक समर्थन किया। चर्च पदानुक्रम की इस 'रूसी भूमि के एकीकरणकर्ताओं' की नीति में पहले से ही राज्य और चर्च के बीच ऐसे संबंधों के निर्माण की पूर्व शर्तें मौजूद थीं, जो वोल्त्सक के जोसेफ और उनके समर्थकों के विचारों के अनुरूप थीं। वोल्त्सक के जोसेफ से भी पहले भिक्षु ऐसी नीति को लागू करने में शामिल रहे थे। एक कठोर तपस्वी, राडोनेज़ के संत सेरगियस ने मठ की दीवारों के बाहर भी उसी भावना में काम किया। उन्होंने कुलिकोवो की लड़ाई (1380) में भाग नहीं लिया, जिसमें तातारों पर विजय प्राप्त हुई थी, लेकिन उन्होंने इस लड़ाई के लिए महाप्रिंस को आशीर्वाद दिया।

हालांकि, चर्च ने केवल महान राजकुमार का समर्थन और आशीर्वाद ही नहीं दिया; उसे अक्सर खुद ही राज्य अधिकारियों से सहायता मांगने के लिए मजबूर होना पड़ता था। यह विशेष रूप से 1439 में स्पष्ट था, जब रूसी चर्च और रूसी धार्मिक चेतना को फ्लोरेंस की परिषद पर अपना रुख निर्धारित करना पड़ा। रूसी मेट्रोपॉलिटन इसिडोर (1437–1441) की कार्रवाइयों, जिन्होंने परिषद में भाग लिया था और संघ को मान्यता दी थी, का मास्को में ग्रैंड प्रिंस वासिली (1425–1462) और रूसी पुरोहित वर्ग द्वारा दृढ़ विरोध किया गया[151] । फ्लोरेंस की यूनियन के बाद मास्को में पहले से मौजूद ग्रीकों के प्रति अविश्वास और गहरा हो गया, जबकि ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत की रक्षा में ग्रैंड प्रिंस द्वारा दिखाई गई दृढ़ता को न केवल धार्मिक हलकों द्वारा पहचाना और अनुमोदित किया गया, बल्कि उन्हें यह भी दिखाया गया कि राज्य प्राधिकरण ईसाई उद्देश्यों की सेवा करने के लिए तैयार और सक्षम था। यह घटना रूसी धार्मिक चेतना की एक अत्यंत महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति थी, जिसकी बाद की पीढ़ियों ने भी सराहना की। 'रूसी इतिहास के लिए फ्लोरेंस की संधि का महत्व अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसने 15वीं शताब्दी के दूसरे भाग में पैन-यूरोपीय राजनीति में रूस के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही, यह संघ और इसके महत्व का आकलन, धार्मिक पत्रकारिता के लिए, मॉस्को की बढ़ती शक्ति के बारे में चर्चाओं का आधार बन गया[152] । फ्लोरेंस का संघ 15वीं-16वीं शताब्दियों में रूसी धार्मिक पत्रकारिता के विकास के साथ-साथ बाइजेंटाइयम और ग्रीक चर्च के साथ मॉस्को के संबंध को परिभाषित करने के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण था। जब, संघ के दो दशकों बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल - दूसरी रोम - 'नास्तिक' तुर्कों के आक्रमण (1453) के तहत गिर गया, तो मास्को में ईसाइयों ने इस घटना को 'विधर्मी लैटिनों' के साथ गठबंधन की सजा के रूप में देखा। रूसी लोगों की नजर में, ग्रीक ऑर्थोडॉक्सी का धार्मिक अधिकार अपरिवर्तनीय रूप से गिर गया था[153] ।

यह समझने के लिए कि राजनीतिक उथल-पुथल ने रूसी लोगों की धार्मिक चेतना को कितनी गहराई से प्रभावित किया, व्यक्ति को मानसिक रूप से उस युग के आध्यात्मिक वातावरण में स्वयं को ले जाना होगा। रूसी लोगों की ईसाई विश्वदृष्टि ने अपना संतुलन फिर से हासिल करने का एक तरीका खोजा। सदियों से पवित्र ऑर्थोडॉक्सी का गढ़ नष्ट हो गया था, और इस गढ़ की छवि के बिना, वे न तो विश्वास कर सकते थे और न ही जी सकते थे। उनके लिए, यह दुनिया के निकट आने वाले अंत की याद दिलाता था। वर्ष 1492 ने (उस समय की कालक्रम के अनुसार) दुनिया की सृष्टि के बाद से सातवें सहस्राब्दी के अंत को चिह्नित किया, जबकि रूसी चेतना में लंबे समय से ही ईसाई अंत-विद्या समाहित हो चुकी थी। हाल के दशकों की घटनाओं - 'धर्मद्रोही संघ' और 'धर्मत्यागी बिज़िन्टियम' का पतन - ने इस अपेक्षा पर और भी गहरा साया डाल दिया था। लेकिन 24-25 मार्च 1492 की रात दुनिया का अंत नहीं हुआ: मॉस्को का ग्रैंड

---

[150] सोकोलोव्स्की। भागीदारी (1902); प्रेस्न्याकोव। शिक्षा; मकारीय। 6; ड्याकोनोव। मास्को के शासकों की शक्ति (1889)। राज्य प्राधिकरण का समर्थन करने के उद्देश्य वाली मेट्रोपोलिटिनों की नीति, उन वृत्तांत संकलनों में भी परिलक्षित होती है जो मेट्रोपोलिटिन की देखरेख में तैयार किए गए थे; देखें: प्रिसिलकोव, एम. *इलेवेंथ–फिफ्टींथ सेंचुरीज़ में रशियन क्रॉनिकलिंग का इतिहास* (1940), विशेष रूप से पृ. 149–155, 162; शखमातोफ़, ए. '14वीं और 15वीं शताब्दियों के सर्व-रूसी कालानुक्रमिक संकलन', में: ZhMNP, 1900, अंक 9–10, 11; प्रेस्न्याकोव, ए. '14वीं–16वीं शताब्दियों में वृत्तांत संकलन', में: 19वीं शताब्दी तक रूसी साहित्य का इतिहास, सं. ए. ग्रुज़्स्की, खंड 1 (1916)।

[151] ज़ीग्लर, ए., *Die Union* (1938), जो इस विषय पर एक ग्रंथसूची प्रदान करता है; तुलना करें फिलिपि, डब्ल्यू. द्वारा समीक्षा, *Jahrbuch für Geschichte Osteuropas*, खंड 5 (1940), पृ. 213 ff.; यह भी देखें: शपाकोव, ए., *The State and the Church* (1904), एक ऐसा कार्य जिसका ज़ीग्लर ने उल्लेख नहीं किया है।

[152] फिलिपि, उद्धृत ग्रंथ, पृ. 213।

[153] इसी कारण से यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस वृत्तांत में कॉन्स्टेंटिनोपल (टसरग्राद) पर कब्ज़े का इतना विस्तृत विवरण है: 'द टेल् ऑफ़ द कैप्चर ऑफ़ टसरग्राद' (PSRL. 12, पृ. 83–97 में); जर्मन संस्करण: 'बेरिच्ट उबर दी एरोबेरुंग कॉन्स्टेंटिनोपेलस'। एम. ब्राउन और ए. एम. श्नाइडर द्वारा (निकोन क्रॉनिकल के आधार पर) अनुवादित और टिप्पणीबद्ध। गोटिंगेन, 1940। यह 'कथा', या 'टसरग्राद की कथा', जो प्राचीन रूसी पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, ने आलोचनात्मक साहित्य की एक विशाल संपदा को जन्म दिया है: वी. याकोवलेव, द लेजेंड ऑफ टसरग्राद (1868); आई. श्रेज़्नेव्स्की, अकादमी ऑफ साइंसेज के दूसरे विभाग की अकादमिक कार्यवाहियों में (1854); Orlov, A., IORAS. 12 (1908) में; Archimandrite Leonid. नेस्टर-इस्कंदर द्वारा तारग्रेड की कथा, 15वीं सदी, PDP. 62 (1886) में। तुलना करें: Petukhov, पृ. 101।

डची बना रहा और उस समय के मानकों के अनुसार, राजनीतिक रूप से फल-फूल रहा था। प्राचीन रूसी के लिए, यह नए सिरे से चिंतन का विषय बन गया, जिसने उसे अपनी अंतिम-काल-विद्या की पुनःजाँच करने और चर्च तथा राज्य-राजनीतिक घटनाओं के कारणों की जाँच करने के लिए प्रेरित किया[154] ।

इस बीच, मॉस्को में ऐसी घटनाएँ घटीं जो बौद्धिक हलचल और धार्मिक भावनाओं, जुनून और विचारों के तीव्र होने के इस माहौल में अच्छी तरह से फिट बैठती थीं। मास्को का राज्य और का राजनीतिक विकास—छोटे-छोटे रियासतों का एक विशाल क्षेत्र वाले एकल ज़ारशाही में रूपांतरण—जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, ने उसके समकालीनों पर एक गहरा प्रभाव डाला। लेकिन क्लीचेव्स्की टिप्पणी करते हैं, 'महत्व नई क्षेत्रों की मात्रा का नहीं था।' 'मास्को में, लोगों ने महसूस किया कि एक महान, लंबे समय से चल रहा उपक्रम समाप्त हो रहा था, एक ऐसा उपक्रम जिसने देश के जीवन की आंतरिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया… अपने आप को एक नई स्थिति में पाते हुए, लेकिन अपनी नई महत्ता को अभी पूरी तरह से महसूस नहीं कर पाते हुए, मॉस्को राज्य प्राधिकरण ने देश-विदेश में ऐसी रूप-रेखाओं की तलाश की जो इस स्थिति के अनुरूप हों; और, इन रूप-रेखाओं को पहले ही अपना लेने के बाद, उनके माध्यम से अपनी नई महत्ता को स्वयं स्पष्ट करने का प्रयास किया। इस दृष्टिकोण से, इवान तृतीय के शासनकाल के दौरान उभरी कुछ राजनयिक औपचारिकताएँ और नए दरबारी समारोह काफी ऐतिहासिक रुचि के हैं'[155] .

इस संदर्भ में, इवान की दूसरी शादी ने उनके समकालीनों के चिंतन को एक विशेष दिशा दी। 1472 में, इवान तृतीय ने अंतिम बीजान्टिन सम्राट (1448–1453) कॉन्स्टेंटिन पलाइओलोगोस की अनाथ भतीजी सोफिया से विवाह किया। वह इटली से मास्को आईं, जहाँ वह तब तक रह रही थीं; उनके आगमन ने न केवल दरबारी समारोहों में बदलाव लाया, जिन्हें भव्य बीजान्टिन मॉडल के अनुसार पुनर्गठित किया गया, बल्कि यह मॉस्को के निरंकुश शासक की राज्य और चर्च-राजनीतिक भूमिका को मजबूत करने, उचित ठहराने और यहाँ तक कि स्थायी बनाने के उद्देश्य से एक विशिष्ट धार्मिक और दार्शनिक अवधारणा के निर्माण के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में भी काम किया।

इससे यह राजनीतिक और दार्शनिक धारणा उत्पन्न हुई कि बीजान्टिन साम्राज्यिक परिवार की एक राजकुमारी से विवाह करके मॉस्को का महाप्रसि बीजान्टिन सम्राटों का उत्तराधिकारी बन गया था। हाँ, बोस्फोरस पर स्थित महान ईसाई ऑर्थोडॉक्स साम्राज्य को नास्तिक मुसलमानों ने नष्ट कर दिया था, लेकिन यह विजय अधिक समय तक नहीं टिकेगी, शाश्वत तो दूर की बात है। 'लेकिन यह जान लो, हे नीच,' *द टेल् ऑफ़ द कैप्चर ऑफ़ तारग्राद* के लेखक भावुकता से कहते हैं, '…रूस के लोग सभी चीजों के स्रष्टा इसहाक़ को भी हरा देंगे, और सेदमखोलमागो (यानी कॉन्स्टेंटिनोपल) पर कब्ज़ा कर लेंगे। – आई. एस.) को उसके वैध शासकों को बहाल किया जाएगा, और वे वहाँ शासन करेंगे[156] . यह विश्वास कि मास्को का शासक बाइज़ेंटाइन सम्राटों का उत्तराधिकारी बन गया था, मास्को क्रेमलिन में इवान तृतीय के महल में नए दरबारी समारोहों, जो तब से बाइज़ेंटाइन अनुष्ठानों का प्रतिबिंब थे, और बाइज़ेंटाइन के दो-सिर वाले गरुड़ को दर्शाने वाले नए राज्य के प्रतीक-चिन्ह, दोनों में परिलक्षित होता है[157] । टैटार के जुए से मुक्ति (1480) के बाद, मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस ने स्वयं को न केवल एक निरंकुश शासक, बल्कि 'सभी रस का शासक' और यहाँ तक कि 'ईश्वर की कृपा से ज़ार' भी मानना शुरू कर दिया[158] । पहले कभी-कभी ग्रैंड प्रिंस को 'ज़ार' कहा जाता था, लेकिन यह केवल एक भव्य वाक्यांश था; हालाँकि, अब रूसी लोगों की दृष्टि में, इस उपाधि ने वास्तविक

---

[154] झमाकिन। मेट्रोपॉलिटिन डैनियल। पृ. 364, 362–367; तुलना करें: AI. 1. संख्या 282। पृ. 513; Prav. Sob. 1860. 2। पृ. 337; मैक्सिमिस द ग्रीक। कृतियाँ। 1। पृ. 132; ओटेन्स्क के ज़िनोवी। सत्य की गवाही। पृ. 48–49; एल्डर आर्टेमी। पत्र। RIB. 4. 1221। सामान्य रूप से प्रलय संबंधी भावनाओं पर, देखें: बॉनवेट्श, एन. मेथोडियस ऑफ़ ओलंपस। 1 (1891); साखारोव, आई. प्राचीन रूसी साहित्य में अंतिम समय संबंधी लेख और किंवदंतियाँ (1879); मालिन. एल्डर फिलोथेओस. पृ. 426, 429, 430; RIB. 6. पृ. 800, 806, 810.

[155] क्ल्यूचेव्स्की। 2. पृ. 115, 123. क्लुचेव्स्की कहते हैं (उसी में, पृ. 115), 'जब इवान तृतीय ग्रांड ड्यूकल सिंहासन पर बैठे, तो मॉस्को का क्षेत्र मुश्किल से 15,000 वर्ग मील से थोड़ा अधिक था। इवान तृतीय और उनके पुत्र की अधिग्रहणों ने इस क्षेत्र को कम से कम 40,000 वर्ग मील से बढ़ा दिया।'

[156] PSRL, खंड 12, पृ. 97; *द टेल्*, पृ. 33.

[157] बाइज़ेंटाइन दरबारी समारोह की पवित्र प्रकृति से जुड़े विचारों और सिद्धांतों पर, देखें: Treitinger, O. *Die oströmische Kaiser- und Reichsidee* (1938); सामग्री से भरपूर एक कृति: Dölger, F., *Rom in der Gedankenwelt*; इसके अलावा: Savva, V., *The Moscow Tsars and the Byzantine Basileus* (1902). बाइज़ेंटाइन साम्राज्यवाद के पवित्र तत्वों की बाइज़ेंटाइन लोगों की चेतना में बहुत पुरानी परंपरा होने के तथ्य पर, देखें: बेन्स, एन. एच. 'यूसेबियस और ईसाई साम्राज्य', *Annuaire de l'Inst. de Philos. et Hist. d'Orient* में, 2 (1934), पृ. 13 ff.

[158] क्लुचेव्स्की। 2. पृ. 126.

स्थिति को दर्शाना शुरू कर दिया[159] . दशकों तक, रूसी राजनीतिक और धार्मिक पत्रकारिता इस विषय का अन्वेषण करती रही, और अंततः एक भव्य वैचारिक ढांचा तैयार किया[160] . ये विचार राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं से नहीं, बल्कि मुख्यतः धार्मिक खोजों और ईसाई आस्था से उत्पन्न हुए; ये उल्लेखित ऐतिहासिक घटनाओं से उत्पन्न आध्यात्मिक उथल-पुथल की प्रतिक्रिया के रूप में उभरे। उस समय के रूसी समाज के लिए, ये केवल ऐतिहासिक तथ्य नहीं बल्कि धार्मिक-ऐतिहासिक घटनाएँ थीं; इसलिए इन्हें इतनी भावना के साथ स्वीकार किया गया और धार्मिक दृष्टिकोण से इन पर इतनी गहन चर्चा हुई।

इस तथ्य पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि धार्मिक रंग में रंगे पत्रकारिता लेख ऑर्थोडॉक्स ज़ार के अधिकारों और कर्तव्यों दोनों की बात करते हैं। ज़ारशाही प्राधिकरण की इस विशिष्ट विशेषता पर चर्च पदानुक्रम और मठवासी व्यवस्था के प्रतिनिधियों ने उस समय ज़ोर दिया, जब उन्होंने नोवगोरोड के विधर्मी - यहूदीकरण करने वालों[161] के खिलाफ संघर्ष में मदद के लिए ग्रैंड प्रिंस से अपील की। जोसेफाइट्स के लिए, रूढ़िवादी ज़ार के धार्मिक अधिकार और कर्तव्य उसकी दैवीय प्रकृति से उत्पन्न होते हैं। 'ज़ार स्वभाव से किसी अन्य मनुष्य के समान है,' वोलोट्स्क के जोसेफ कहते हैं, 'लेकिन अधिकार में वह सर्वशक्तिमान ईश्वर के समान है'[162] ।

ज़ार के धार्मिक कर्तव्यों का विचार, जो जोसेफाइटों के दृष्टिकोण में गहराई से और स्थायी रूप से जड़ें जमा गया था, नोवगोरोड के आर्चबिशप थियोडोसियस द्वारा भी व्यक्त किया गया था[163] । वह इवान चतुर्थ (1545–1547) को लिखे गए तीन पत्रों के लेखक थे[164] । ये वही विचार, बेशक, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटिन (1542–1563) मकारियस, 'रूसी

---

[159] ड्याकोनोव। द पावर ऑफ द मॉस्को सोवरेन्स; वाल्डेनबर्ग। ओल्ड रशियन डॉक्ट्रिन्स (1916)। 'ऑटोक्रेट' उपाधि के इतिहास पर, देखें: ओस्ट्रोगोर्स्की, जी. ऑटोक्रेटर एंड ऑटोक्रेट। बाइज़ेन्टियम और दक्षिण स्लावों में ऑटोक्रेट उपाधि के इतिहास पर। परिशिष्ट: रूस में 'ऑटोक्रेट' की उपाधि, में: ग्लास सर्प्स्के के. अकादेमिये. 2. संख्या 84 (1935)। पृष्ठ 95–181 (सर्बियाई में); तुलना करें: मेरा समीक्षा लेख: करियोस. 2 (1937)। पृष्ठ 79–80। यह भी: वर्नाडस्की, में: Byz. – Neugriech. Jb. 7; रूसी संस्करण: Collection in Honour of N. V. Kondakov (1926).

[160] शाही उपाधि के महत्व और अर्थ पर एक दिलचस्प दृष्टिकोण 16वीं सदी के रूसी प्रचारक इवान पेरेस्वेतोव की रचनाओं में मिलता है; तुलना करें: फिलिप. उद्धृत कृति.

[161] राज्य प्राधिकरण की सहायता से विधर्मों के खिलाफ संघर्ष के संबंध में चर्च के प्रति एक ईसाई ज़ार के कर्तव्यों पर जोसेफाइट विचारों के चरित्र चित्रण के लिए, निम्नलिखित पत्र देखें: नोवगोरोड के आर्चबिशप जेनाडियस द्वारा सुज़्डल के बिशप निफॉन को, में: खुरुश्चेव। Op. cit. परिशिष्ट XXIII; वही। रोस्तोव के आर्चबिशप जोआसाफ को, में: रीडगिस. 1847. 8; वही। मेट्रोपॉलिटिन ज़ोसिमा को, में: RIB. 6. पृ. 775 (यह भी में: AAE. 1. संख्या 380); वही। '1490 की परिषद पर', RIB. 6, पृ. 779, 764 में; इस विषय का एक विस्तृत विवरण वोल्होट्स्क के जोसेफ ने *द एनलाइटनर* के अध्याय 13 में दिया है; वही, 'ग्रैंड प्रिंस को पत्र', DRV. 16, पृ. 424 में। प्रेस्बिटर जॉर्ज स्क्रिपित्सा द्वारा बिशपों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए ज़ार के कर्तव्य के बारे में व्यक्त किया गया दृष्टिकोण विशेष रूप से दिलचस्प है; उन्होंने यह राय 1503 में ही पहले ही प्रस्तुत कर दी थी (रीडगिस, 1848, खंड 6, भाग 4)। जोसेफाइट्स, बेशक, धर्मनिरपेक्ष प्राधिकरण के ऐसे अधिकारों के बारे में बोलने वाले पहले नहीं थे। 13वीं सदी में ही, इस विचार को 'ईसाइयों को कैसे जीना चाहिए' नामक ग्रंथ में व्यक्त किया गया था, देखें: कलेक्शन ऑफ लॉज़, 1859। पृ. 128 ff.; 14वीं सदी का ग्रंथ *एकनिडिनि का पत्र, पवित्र माता परमेश्वर की लावरा का एक भिक्षु, महा राजकुमार को* (*RIB*. 6, पृ. 155 ff.) में पाया जाता है; यह केवल महा राजकुमार की चर्च पदानुक्रम द्वारा विधर्म के खिलाफ संघर्ष पर निगरानी के संदर्भ में है। तुलना करें: वाल्डेनबर्ग। उद्धृत कृति, पृ. 137, और गोलुबिंस्की। 2. 1, पृ. 106। बेनेशेविच (द ओल्ड स्लावोनिक कॉर्मचाया, पृ. 739) अकिंदिन के विचारों की तुलना जस्टिनियन की छठी नोवेला से करते हैं। ए. पावलोव का पूर्व का कार्य 'ट्वेर के ग्रैंड प्रिंस मिखाइल यारोस्लाविच को दो पत्र', प्रव. सोब. 1867, खंड 2, पृ. 236–253, आज भी रुचिकर है।

[162] जोसेफ द एनलाइटनर (1896)। अध्याय 16। पृ. 547। जोसेफ की विश्वदृष्टि का एक व्यापक विवरण नई कृति द्वारा प्रस्तुत किया गया है: होल्ज़वारथ, आइरीन। *डेर प्रोस्वेटटेल देस जोसिफ वॉन वोल्कोलामस्क* (बर्लिन: फिल. डिस., 1944. टाइपस्क्रिप्ट); मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस का उल्लेख करते समय जोसेफ द्वारा विभिन्न उपाधियों के उपयोग पर, देखें: वही, पृ. 250 आदि।

[163] थियोडोसियस जोसेफ-वोल्कोलांस्क मठ में एक भिक्षु था; 1531 में वह नोवगोरोड के खुटिन मठ का मठाधीश था और उसने आर्चबिशप मैकारियस, जो बाद में मॉस्को के मेट्रोपॉलिटिन बने, के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखे, जो स्वयं जोसेफ के एक उत्साही अनुयायी थे; जब मकारियस मॉस्को के मेट्रोपॉलिटिन बने, तो थियोडोसियस को मकारियस की सिफारिश पर नोवगोरोड के डायोसीस (1542) में नियुक्त किया गया।

[164] *1545–46 की एक तारीख वाली चिट्ठी काज़ान टाटर्स के खिलाफ ग्रैंड प्रिंस के अभियान के संबंध में लिखी गई थी; थियोडोसियस ग्रैंड प्रिंस की तुलना सम्राट कॉन्स्टेंटिन से करते हैं और 'मसीह के दुश्मनों' और 'नास्तिक टाटर्स' के खिलाफ इस अभियान के धार्मिक महत्व पर जोर देते हैं, स्रोत: DAI I 1. संख्या 37; एक साल बाद (1547), थियोडोसियस ने युवा ज़ार को फिर से लिखा, इस बार नोवगोरोड में हो रहे विभिन्न अपराधों के संबंध में: हे ईश्वर-पुष्टि प्राप्त शासक, मैं आपको इन मामलों के बारे में लिख रहा हूँ, न तो आपके तीव्र बुद्धि और कुलीन ज्ञान को निर्देश देने या फटकार लगाने के लिए—क्योंकि हमारे लिए अपनी जगह भूलकर ऐसे मामलों में अतिक्रमण करना उचित नहीं है—बल्कि एक शिष्य की तरह एक शिक्षक को, एक सेवक की तरह एक शासक को, मैं आपको याद दिलाता हूँ और अब निरंतर आपसे विनती करता हूँ: क्योंकि स्वर्गीय राजा ने आपको, हे सार्वभौम, स्वर्गीय अधिकार के सदृश, शक्ति के सांसारिक राज्य का राजदंड प्रदान किया है, ताकि आप मनुष्यों को सत्य की स्थापना करना सिखा सकें... इसलिए, हे धर्मनिरपेक्ष ज़ार, यह उचित है कि आप धर्म की रक्षा करने और अपने शासन के अधीन लोगों को आध्यात्मिक और शारीरिक कष्ट से बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतें, में: DAI. 1. संख्या*

चर्च के इतिहास की सबसे महान हस्तियों में से एक'[165] , 'हमारे 16वीं सदी के सभी मेट्रोपॉलिटनों में सबसे प्रतिष्ठित'[166] द्वारा भी साझा किए गए थे। उनके विचार न केवल उस युग की घटनाओं से, बल्कि – मुख्य रूप से – उनके अपने जीवन के अनुभव और जोसेफ तथा जोसेफाइट्स के विचारों के अनुरूप भी आकार दिए गए थे[167] । मैकारियस के जोसेफाइट विचार उनकी आर्चपास्टोरल मंत्रालय में भी परिलक्षित हुए। नोवगोरोड धर्मप्रांत में मठवासी जीवन में सुधार के उपायों के संबंध में, 1526 में उन्होंने न तो चर्च प्राधिकरणों से अपील की – मास्को के मेट्रोपॉलिटन – बल्कि सीधे ग्रैंड प्रिंस से, जिनसे उन्होंने मठवासी चार्टर में संशोधन करने और सामुदायिक जीवन शुरू करने की अनुमति मांगी। ग्रैंड प्रिंस वासिली तृतीय को लिखा गया उनका पत्र पूरी तरह से जोसेफिट्स की भावना में है और यह एक रूढ़िवादी ज़ार के विचार को दर्शाता है: 'हे महाराज, ईश्वर के लिए, और परमेश्वर की अति पवित्र माता तथा महान चमत्कारी संतों के लिए, कृपया दिव्य चर्चों और सम्मानित मठों का ध्यान रखें और उनकी व्यवस्था करें; क्योंकि, हे महाराज, स्वर्ग में ईश्वर के दैवीय हाथ द्वारा, आपको संपूर्ण रूस का सर्वशक्तिमान शासक और स्वामी नियुक्त किया गया है; ईश्वर, ईश्वर ने पृथ्वी पर अपने लिए एक स्थान चुना है और आपको अपने सिंहासन पर विराजमान किया है, तथा संपूर्ण महान ऑर्थोडॉक्स धर्म की दया और जीवन का भार आपको सौंपा है[168] । यह चर्च की पदानुक्रम व्यवस्था के प्रतिनिधियों द्वारा रखे गए विचारों की अभिव्यक्ति थी, जो सम्राट के धार्मिक कर्तव्यों, चर्च के साथ उसके संबंधों, और यहाँ तक कि चर्च के भीतर उसकी स्थिति से संबंधित थे।

उपरोक्त राजनीतिक घटनाओं ने इन विचारों के विकास और लिखित अभिव्यक्ति में योगदान दिया। उस युग के लिए, यह कोई बना-बनाई विचारधारा नहीं थी, बल्कि मिस्कोवाइट राज्य में विकसित हुई धार्मिक और राजनीतिक स्थिति से निकाला गया एक तार्किक निष्कर्ष था। बाइज़ेन्टियम के साथ लंबे समय से चले आ रहे धार्मिक संबंधों को फलना चाहिए था और फलना भी था, और जब बाइज़ेन्टियम एक भयानक आपदा की चपेट में आया, तो ऑर्थोडॉक्स world[169] के केंद्र में उसकी जगह लेने के लिए एक नई शक्ति का उदय निश्चित था। लेकिन मॉस्को के निरंकुश शासकों के लिए, केवल पादरीय और धार्मिक औचित्य पर्याप्त नहीं था; उन्होंने अपनी शक्ति को राजनीतिक और कानूनी शब्दों में भी औचित्यसंगत ठहराने की कोशिश की, इसे परंपरा में, 'पुराने तरीकों' में जड़ें जमाने की कोशिश की[170] ।

---

41. पृ. 55 / इससे पहले, खुटिन मठ के मठाधीश के रूप में सेवा करते हुए, थियोडोसियस ने ग्रैंड प्रिंस वासिली III की मृत्यु के तुरंत बाद बोयार इवान शिगोना (1534) को लिखा था: '... हम पर एक गहरी और अँधेरी रात छा गई है; हम एक दृढ़ और अटूट स्तंभ, एक चरवाहे और शिक्षक, एक धर्मी ज़ार से वंचित हो गए हैं... जिसने अपने पूरे झुंड का आध्यात्मिक मोक्ष की ओर मार्गदर्शन किया और पोषण किया' (AI. 1. संख्या 294, पृष्ठ 537) /

[165] Golubinsky. 2. 1. पृ. 744.

[166] मकारी। 2वां संस्करण। 6. पृ. 211। मेट्रोपॉलिटन मकारी पर, देखें: लेबेदेव, एन. मकारी, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन (1880); ज़ाउस्टिस्की, के. मकारी, पूरे रूस के मेट्रोपॉलिटन, में: झएमएनपी। 1881। संख्या 10-11; एंड्रीव, एन. 'धार्मिक कला में मेट्रोपॉलिटन मकारी की एक छवि', *सेमिनारियम कोन्डाकोवियम* में। 7 (1935); मकारी। 6–7; गोलुबिन्स्की। 2. 1. पृष्ठ 744–875; इसके अलावा: क्लूचेव्स्की। *ओल्ड रशियन लाइव्स ऑफ द सेंट्स* (1871)। पृ. 221–297; काड्लुबोव्स्की, ए. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 219–284; गोलुबिन्स्की. कैनोनाइज़ेशन का इतिहास (1903); वासिलीव. कैनोनाइज़ेशन का इतिहास (1893).

[167] झमाकिन। *द स्ट्रगल ऑफ आइडियाज इन रूस इन द फर्स्ट हाफ ऑफ द 16th सेंचुरी*, *ज़ेडएचएनपी* (ZhMNP) में, 1882, 4, पृ. 160; ड्याकोनोव। पूर्वोक्त, पृ. 108; पावलोव। *ए हिस्टोरिकल एसे ऑन द सेक्युलराइजेशन ऑफ चर्च लैंड्स इन रूस* (1871)। पृ. 109। मकरियस ने अपनी तपस्या की शिक्षा पाफनुतियेव मठ में शुरू की, जो जोसेफोव मठ से निकटता से जुड़ा था; बाद में उन्होंने लुज़ेत्स्की मठ (मोजायस्क के पास) के मठाध्यक्ष के रूप में और 1526 से 1542 तक नोवगोरोड के आर्चबिशप के रूप में कार्य किया। गोलुबिन्स्की। 2. 1. पृ. 745; मकारी. 6. पृ. 210; ज़ौस्ट्सिस्की. पृ. 213.

[168] DAI. 1. सं. 25. ज़ार इवान चतुर्थ को मकरियस के पत्र: पहला 1547 में उनकी शादी के संबंध में (AI. 1. सं. 40) और दूसरा कज़ान टाटर्स के साथ युद्ध (1552) के संबंध में (AI. 1. सं. 160). एक ऑर्थोडॉक्स ज़ार के धार्मिक कर्तव्य 'राज्याभिषेक की रस्म' (DAI. 1. संख्या 39; PSRL. 13. 1. पृ. 151) में भी निर्धारित किए गए हैं, जिसे 16 जनवरी 1547 को इवान के राज्याभिषेक के लिए मकरियस ने स्वयं संकलित किया था। तुलना करें: वाल्डेनबर्ग। उद्धृत कृति, पृ. 277। इस अनुष्ठान के पवित्र पहलुओं पर, देखें: बार्सोव, ई. पवित्र राज्याभिषेक अनुष्ठान के पुराने रूसी स्मारक (1883); लोपारेव। राज्याभिषेक अनुष्ठान पर (1887); पोपोव। द राइट ऑफ़ सेक्रेड क्राउनेशन (1896); प्रोज़ोरोव्स्की। ऑन द सिग्निफिकेंस ऑफ़ द त्ज़ार'स टाइटल (1875); सावा। उपरोक्त; माल्त्ज़ेव। डाई हाइलिगे क्रोनंग (1896); कैटेनबुश। खंड 1, पृ. 374–393. यह भी देखें: एरलिच W. *Gottkaiser und Kaiser von Gottes Gnaden*, में: *Sitzber. Bayer Ak. d. Wiss., Phil. – hist. Abt.* (1943), साथ ही: ट्रेइटगिर। उद्धृत ग्रंथ।

[169] बाइज़ेन्टियम के धार्मिक महत्व पर, देखें: कार्ल होल। 'Die Kirchliche Bedeutung Konstantinopels im Mittelalter', *Collected Works*, खंड 2 (1928), पृ. 416 (पहले यह भी प्रकाशित हुआ था: *Zeitschrift für Theologie und Kirche*, खंड 11 (1901), पृ. 83–96)।

[170] तुलना करें: क्लूचेव्स्की, खंड 2, पृ. 129। मास्को के राज्य-कानूनी दृष्टिकोणों के लिए परंपरा (प्राचीनता) के महत्व पर, देखें: फिलिपि डब्ल्यू. इवान पेरेश्वेटोव (1935)। पृ. 42–60; यह अध्ययन, जो पेरेस्वेतोव के विशिष्ट व्यक्तित्व का एक व्यापक चरित्र-चित्रण प्रस्तुत

ये राज्य-राजनीतिक विचार 'मास्को एकीकरणकर्ताओं' की गतिविधियों और मास्को के राजनीतिक उत्थान के समानांतर आकार में आए। क्ल्यूचेव्स्की[171] ने इस वैचारिक निर्माण और इसकी सामग्री का संक्षिप्त विवरण प्रदान किया: 16वीं शताब्दी के आरंभिक मॉस्को के राजनेताओं के लिए, बिज़ेन्टियम (यानी राजकुमारी सोफिया पलाइओलोगिना – आई. एस.) के साथ विवाह गठबंधन पर्याप्त नहीं था; वे रक्त संबंध से भी जुड़ना चाहते थे, और इसके अलावा सर्वोच्च शक्ति की जड़ या सार्वभौमिक मॉडल - स्वयं रोम से। उस सदी के मॉस्को वृत्तांतों में, रूसी राजकुमारों की एक नई वंशावली दिखाई देती है, जो उनकी वंशावली को सीधे रोमन सम्राट तक जोड़ती है। जाहिर है, 16वीं शताब्दी की शुरुआत में, एक किंवदंती उभरी जिसमें दावा किया गया कि अगस्टस, रोम के सीज़र, जो पूरे ब्रह्मांड के शासक थे, जब कमजोर होने लगे, तो उन्होंने ब्रह्मांड को अपने भाइयों और रिश्तेदारों में बाँट दिया और अपने भाई प्रूस को नेमन नदी के किनारे, विस्तुला नदी के पास, बसा दिया, जिसे आज भी उनके नाम पर प्रूसिया की भूमि कहा जाता है, 'और प्रुस की चौदहवीं पीढ़ी में महान शासक रूरिक का जन्म हुआ'। मास्को के राजनयिकों ने इस किंवदंती का व्यावहारिक उपयोग किया: 1563 में, पोलिश दूतों के साथ वार्ता में अपने शाही खिताब को सही ठहराते हुए, ज़ार इवान के बोयारों ने इसी वंशावली का हवाला दिया, जैसा कि वृत्तांत में लिखा है... उन्होंने एक बीजान्टिन विरासत के विचार को ऐतिहासिक महत्व देने का प्रयास किया। व्लादिमीर मोनोमाख, बीजान्टिन सम्राट कॉन्स्टेंटिन मोनोमाख की एक बेटी के बेटे थे, जिनकी मृत्यु उनके पोते के कीव में सिंहासन पर बैठने से 50 साल से भी अधिक समय पहले हो गई थी[172] । इवान द टेरिबल के शासनकाल में संकलित मास्को वृत्तांत में वर्णित है कि कीव का राजकुमार बनने के बाद व्लादिमीर मोनोमाख ने अपने कमांडरों को इसी ग्रीक ज़ार, कॉन्स्टेंटिनोपल के ज़ार कॉन्स्टेंटिन मोनोमाख के खिलाफ़ युद्ध छेड़ने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा, जिन्होंने युद्ध समाप्त करने के उद्देश्य से, यूनानी मेट्रोपॉलिटन के साथ, जीवन-दायक वृक्ष से क्रॉस और अपने ही सिर से शाही मुकुट—अर्थात् मोनोमाख की टोपी—के साथ-साथ एक कार्नेलियन कप, जिससे रोमन सम्राट अगस्टस ने पीया था, और एक सुनहरी चेन कीव भेजी... व्लादिमीर को इसी ताज से राज्याभिषेक किया गया और वे सभी ' ' रस के ईश्वर-अभिषिक्त ज़ार, मोनोमाख के नाम से जाने गए। कहानी का अंत इस प्रकार होता है, 'तब से, व्लादिमीर के सभी महान राजकुमार उसी शाही ताज से राज्याभिषिक्त होते हैं...'[173] ...किंवदंती का मुख्य विचार यह है कि बाइज़ेंटाइन सम्राटों के धार्मिक और राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में मॉस्को के शासकों का महत्व, पूरे ऑर्थोडॉक्स जगत पर यूनानी और रूसी निरंकुश शासकों के संयुक्त शासन पर आधारित है, जो व्लादिमीर मोनोमाख के अधीन स्थापित क[174] था।

3. भिक्षु फिलोथियस और उनके मसीही विचार

यह राज्य-राजनीतिक किंवदंती (जिसके, बेशक, धार्मिक रंग भी थे) और उस समय के मास्को समाज के विचार, जैसा कि ऊपर वर्णित है[175] , को मास्को के ज़ारडम को तीसरा रोम के रूप में देखने वाले बीजान्टिन-रूसी विचार में अपने

करता है, 16वीं सदी के मस्कोवाइट समाज के विचारों और उस युग के धार्मिक और राजनीतिक विचारों के तर्क को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

[171] क्ल्युचेव्स्की। 2. पृ. 127.

[172] महान राजकुमार व्लादिमीर (द्वितीय) वेस्वेलोदोविच, जिन्हें मोनोमाख के नाम से जाना जाता है, ने 1113 से 1125 तक शासन किया। सम्राट कॉन्स्टेंटिन नौवें मोनोमाख ने 1042 से 1054 तक शासन किया।

[173] यह क्लाज़्मा पर स्थित व्लादिमीर को संदर्भित करता है, जो 1157 से 1328 तक कई अंतरालों के साथ रूसी ग्रैंड प्रिंसिस की राजधानी थी; इसलिए इस पौराणिक वृत्तांत को 'व्लादिमीर के राजकुमारों की कथा' कहा जाता है। 16वीं शताब्दी के पहले छमाही (1533 से पहले), इस कथा को फिर से संपादित किया गया और यह 'मोनोमाख के ताज की कथा' के नाम से भी जानी जाने लगी। तुलना करें: पेटुखोव, पृ. 103, 101 आदि।

[174] इस विषय पर पूरी ग्रंथसूची के लिए, देखें: वाल्डेनबर्ग। उद्धृत कृति; ड्याकोनोव। Op. cit.; Sokolsky. Op. cit.; Zhdanov, I. 'The Tale of Babylon' और 'The Legend of the Princes of Vladimir', in: ZhMNP. 1891. 9. Schaeder, H. Moskau, das Dritte Rom (1929).

[175] 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध का धार्मिक और राजनीतिक माहौल राजकुमार दिमित्री के भव्य राज्याभिषेक (1498) से चिह्नित था - जो इवान तृतीय के पोते और उनके पुत्र इवान के बेटे थे, जिनकी कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी († 1490); दिमित्री को ग्रैंड प्रिंस (!) के बजाय ज़ार का ताज पहनाया गया (SGGD. 2. संख्या 25), जबकि इवान III († 1505) जीवित थे; इस समारोह के दौरान इवान III के संबोधन को भी देखें (Kljutschewskij. 2. पृ. 133)। हर्बर्स्टीन, जिसने दो बार मास्को की यात्रा की (1517 और 1526 में), अपनी प्रसिद्ध कृति *Rerum Moscoviticarum Commentarii* में 'ग्रैंड प्रिंस कैसे सिंहासन पर चढ़ते हैं' शीर्षक वाले एक अलग अध्याय में इस गंभीर समारोह का विस्तृत वर्णन प्रदान करता है। मेरे पास केवल नया जर्मन संस्करण उपलब्ध है: *Moskovia von Herrn Sigmund Freiherrn zu Herberstein, Neyperg und Guettenhag*. वी. एफ. स्टीनन द्वारा जर्मन में अनुवादित। एच. कैंडर्स द्वारा प्रकाशित। एर्लांगेन, 1926। पृ. 59–64। पहला संस्करण 1549 में वियना में प्रकाशित हुआ था; दूसरा, संशोधित संस्करण, 1556 में बासेल में प्रकाशित हुआ था; पहला जर्मन अनुवाद, जो स्वयं हर्बर्स्टीन द्वारा किया गया था, 1557 में वियना में प्रकाशित हुआ था। हर्बर्स्टीन का कार्य एक बहुत ही मूल्यवान और विश्वसनीय स्रोत है, जैसा कि ई. ज़ैमसिलोव्स्की के अध्ययन 'हर्बर्स्टीन और रूस के बारे में उनके ऐतिहासिक और भौगोलिक विवरण' (St Petersburg, 1884) में स्थापित किया गया है।

नश्चिति रूप में अभव्यिक्त मिलि[176] । इस मसीही वचिार के सूत्रधार प्सकोव के पास स्थति एलेज़ारोव मठ के भक्षिु फलिोथेयस थे। यह महत्वपूर्ण है कि इस वषिय पर लेखन न तो मास्को में, और न ही प्राचीन रूस के धार्मकि और सांस्कृतकि केंद्र में, बल्कि प्रांतों में हुआ; यह, नश्चिति रूप से, पस्कॉव के मठवासी समुदाय की न केवल पूजा-संबंधी मामलों में, बल्कि वशि्वदृष्टकिोण के प्रश्नों में भी गहरी रुचि का प्रमाण है[177] ।

अपने पत्रों की बदौलत, भक्षिु फलिोथयिस रूसी इतहिास के सबसे उत्कृष्ट व्यक्तयिों में से एक बन गए। और फरि भी हम उनके जीवन के बारे में बहुत कम जानते हैं। उनका जन्म 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पस्कॉव क्षेत्र में कहीं हुआ था, और बाद में वे पस्कॉव के संत यूफ्रोसनिस द्वारा पस्कॉव के बाहरी इलाके में लगभग 1450 में स्थापति एलेज़ारोव मठ में एक भक्षिु बन गए। वह संभवतःबाद में एलेज़ारोव मठ के मठाधीश बने। उनकी साहत्यिकि गतविधि ग्रैंड प्रंसि वासलिी तृतीय (1505–1533) और ज़ार इवान चतुर्थ (1547–1584) के शासनकाल तक फैली हुई थी। अपनी प्रसद्धि पत्रकिाएँ लखिने से पहले, फलिोथयिस वृत्तांत संकलति करने में लगे हुए थे और उन्होंने 1512 के क्रोनोग्राफ के नरि्माण में भाग लयिा था, जो नश्चिति रूप से उनकी वद्विता और साहत्यिकि प्रतभिा की गवाही देता है[178] ।

इसी क्रोनोग्राफ में, फलिोथयिस ने ये उल्लेखनीय पंक्तयिाँ लखिी थीं: 'हमारी रूसी भूमि, ईश्वर की कृपा से और परम पवत्रि ईश्वर की माता तथा सभी चमत्कारी संतों की प्रार्थनाओं के माध्यम से, बढ़ रही है, और युवा हो रही है, और उभर रही है (और वसि्तार कर रही है)'[179] । ये शब्द उनके धर्मशास्त्रीय-राजनीतकि वचिारधारा के मूल को, मस्कोवाइट रूसी 'ऑर्थोडॉक्स और ऑर्थोडॉक्स राज्य' की मसीही नयिति में उनके वशि्वास को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं। फलिोथयिस की धार्मकि-राजनीतकि अवधारणा हमारे द्वारा पहले ही वर्णति वचिारों और राय के साथ घनष्ठि रूप से जुड़ी हुई है; यह ईश्वर के नगर (Civitas Dei) के रूप में एकमात्र और शाश्वत धार्मकि समुदाय के रूप में ऑर्थोडॉक्सी के भवष्यि को लेकर चति के आध्यात्मकि माहौल में स्वाभावकि रूप से फटि बैठती है। (Civitas Dei), जसिकी स्थापना मसीह द्वारा की गई थी और बाद में बाइजेंटाइन साम्राज्य में मूर्त रूप लयिा था, लेकनि हाल के समय में, बाइजेंटाइन - 'धोखेबाज़ ग्रीक' - के धार्मकि वधिर्म और अधर्मी कर्मों के कारण यह वनिाश के कगार पर पहुँच गया था।

रूसी लोगों की और मॉस्को के ज़ारशाही की ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) पर उस क्षेत्र के कसिी भी आध्यात्मकि लेखक द्वारा कभी सवाल नहीं उठाया गया – न तो नोवगोरोड के आर्चबशिप जेनाडयिस द्वारा, न ही वोल्ात्स्क के जोसेफ द्वारा, न ही मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन मैकारयिस द्वारा, और न ही उनके समकालीनों द्वारा; लेकनि जब चर्चा मॉस्को की धार्मकि जम्मिेदारी और उसके धार्मकि और राजनीतकि कार्यों, और इस बात की आवश्यकता पर केंद्रति हुई कि इस राजनीतकि रूप से शक्तशिाली जारशाही के पास ऑर्थोडॉक्स दुनयिा के भीतर धार्मकि अधकिार और धार्मकि सर्वोच्चता भी होनी चाहिए – तो इन सभी बातों को ऐतहिासकि तथ्यों की एक पूरी श्रृंखला द्वारा प्रमाणति करना पड़ा। फ्लोरेंस की एकता के माध्यम से, ग्रीकों ने न केवल मसीह के प्रति वशि्वासघात कयिा, बल्कि अपनी ही ऑर्थोडॉक्सी पर भी संदेह के बादल छा दिए, जसिसे उसकी प्रतष्ठिा को धक्का लगा[180] । इस पाप के रूसी लोगों के लिए भी वनिाशकारी परणिाम हो सकते थे - एक ऑर्थोडॉक्स लोगों के रूप में। ईसाई दुनयिा के

---

[176] मैं इस मसीहाई सद्धिांत को समर्पति सबसे महत्वपूर्ण कृतयिों का हवाला देता हूँ: Malinin. The Elder Philotheus of the Eleazarov Monastery (1901); Dyakonov. Op. cit. (1889); वालडेनबर्ग। उपरोक्त ग्रंथ (1916); करिलिोव (1914); लुक्यानोव (1913); पावलोव। कैनन कानून में एक पाठ्यक्रम (1892; दूसरा संस्करण 1905); सोकोल्स्की। उपरोक्त ग्रंथ (1902); पावलोव। *प्रव. सोब.* 1863. 1 में वृद्ध भक्षिु एलेज़ार द्वारा ग्रैंड ड्यूक वासलिी इवानोवचि को लखिे पत्र; शपाकोव। उद्धृत ग्रंथ 1 (1904); ज़्नोव। मॉस्को – तीसरी रोम (1936)। इस वषिय को समर्पति जर्मन भाषा की कृतयिों में शामलि हैं: शेडर, एच., *मोस्काउ, दास ड्रट्सि रोम* (1929); तुलना करें: वोल्टनर, एम. द्वारा समीक्षा, *ज़. फ. स्ल. फलिोलॉजी* (1931) में और ओस्त्रोगोर्स्की, जी. द्वारा समीक्षा, *हस्टि. ज़.* 146 (1932), पृ. 368–371 में।

[177] यहाँ यह ध्यान में रखना चाहिए कि पस्कॉव 'ऑर्थोडॉक्स' मॉस्कोवीट ज़ारशाही और 'वधिर्मी' पश्चमि के बीच की सीमा पर स्थति था, जसिने रूसी लोगों के बीच धार्मकि अवश्वास या यहाँ तक कि घृणा को जन्म दयिा। पस्कोव में लंबे समय से वभिन्नि धार्मकि आंदोलन उभर रहे थे: उपवास के समय को लेकर, 'आल्लेलुया' को लेकर ववािद, और बाद में, 1770 के दशक में, 'स्ट्रगिोलनकिी' आंदोलन उभरा। देखें: सेरेब्रांस्की, एन. एस्सेज़ ऑन द हस्टि्री ऑफ़ मॉनास्टकि लाइफ़ इन द पस्कोव रीजन, इन: रीडगि्स. 1908; साथ ही मकारी और गोलुबस्किी द्वारा संबंधति खंड; क्लीचेव्स्की. द पस्कोव कंट्रोवर्सीज़, इन: कलेक्टडि वर्क्स. 1872. 12; वही. गेशख्ति रूसलैंड्स. 2; गेहरगि, योहन। *Die Sekten der russischen Kirche* (1898); अर्खानगेल्स्की। *Nil Sorsky* (1882)। पृ. 256 आदि। सेरेब्रांस्की का गहन अध्ययन यह प्रदर्शति करता है कि पस्कोव क्षेत्र में मठवाद एक तीव्र धार्मकि जीवन द्वारा वशिषता था।

[178] शखमातोफ़, ए. ए. 'एम. जी. मस्यिूर मुनेहनि की पूर्व की यात्रा और 1512 संस्करण का क्रोनोग्राफ', IORAS में. 1899. 1. पृ. 215.

[179] उपरोक्त, पृ. 214.

[180] यह दृष्टकिोण फ्लोरेंस संघ से संबंधति सभी कृतयिों में व्यक्त कयिा गया है। तुलना करें: ज़ीगलर. उद्धृत ग्रंथ और शपाकोव. उद्धृत ग्रंथ. 'ग्रीकों' की तीखी आलोचना इवान तृतीय के नोवगोरोड के आर्चबशिप आयोना को लखिे पत्र (1465–1470 के बीच) में भी नहिति है, RIB. 6. पृ. 710.

लिए यह महत्वपूर्ण समय था, क्योंकि दो दशकों बाद 1492 का वर्ष आया, जो दुनिया की सृष्टि से वर्षों की गणना के अनुसार, 7,000वां वर्ष था; और, बाइजेंटाइन कैलेंडर के अनुसार, दुनिया का अंत 24-25 मार्च की रात को होना तय था। क्या लंबे समय से चली आ रही टाटारों की गुलामी, यूनियन, बाइज़ेंटाइन साम्राज्य का राजनीतिक पतन, और नोवगोरोड में धर्मद्रोह, ये सभी ईश्वर की ओर से दिए गए भयावह संकेत नहीं थे? ये वे प्रश्न थे जो उस युग के लोग स्वयं से पूछते थे। प्राचीन रूस में सहस्राब्दी विचारों को उपजाऊ जमीन मिली, जिसका आध्यात्मिक जीवन हमेशा से एस्कैटोलॉजिकल विषयों से गहराई से प्रभावित रहा था[181] । जो पहले केवल कल्पना थी, वह अब वास्तविकता, एक पूरा हो चुका तथ्य बन सकती थी।

लेकिन 1492 का वह भयावह वर्ष बीत चुका था, और ईसाई दुनिया नष्ट नहीं हुई थी। यह चिंतन और मनन का विषय बन गया। जब रूसी लोगों ने अपने देश में हो रही घटनाओं पर विचार किया, तो उन्होंने पाया कि यहाँ, मास्को के ज़ारशाही में, राज्य की समृद्धि के बैनर तले विकास हो रहे थे।

यह संभव है कि जिस समय फिलोथियस अपना *क्रोनोग्राफ* लिख रहे थे, उसी समय *व्लादिमीर के राजकुमारों की कथा* का संकलन भी किया जा रहा था। फिलोथियस निस्संदेह अपने समय के सभी विचारों और मतों से परिचित थे, क्योंकि वे, कह सकते हैं, 16वीं शताब्दी के पहले चौथाई के बौद्धिक और सांस्कृतिक अभिजात वर्ग से थे। इन सब बातों ने उन्हें अपने *क्रोनोग्राफ* में रूसी के उपर्युक्त चरित्र चित्रण को शामिल करने का आधार दिया। उनके विचारों और विश्वासों के अंततः साकार होने से पहले एक और दशक बीत गया। 1520 के दशक की शुरुआत में ही, उन्होंने अपने पत्र लिखे, जिनमें उन्होंने मास्को को तीसरी रोम के रूप में प्रसिद्ध विचार प्रस्तुत किया[182] ।

---

[181] तुलना करें: टिप्पणी 149। कलियिसवाद—'सहस्राब्दी' और 'अंतिम न्याय' की अपेक्षा—रूसी लोगों की धार्मिक चेतना से मेल खाता था और व्यापक रूप से फैल गया। यह ईसाई धर्म के साथ बाइजेंटाइयम से रस में आया; इसमें ओलंपस के मेथोडियस († लगभग 311) के कार्य की एक प्रमुख भूमिका थी, जिन्हें प्राचीन रस में आमतौर पर 'पतरा का' कहा जाता था, जो 11वीं शताब्दी में ही स्लावोनिक अनुवाद में 'प्रकाशितवाक्य' शीर्षक के तहत सामने आया था (क्रॉनिकल, 1096 का प्रविष्टि)। 'मेथोडियस, हमारे पवित्र पिता, पतारा के आर्चबिशप द्वारा, अंतिम न्याय पर' नामक इस कृति का अनुवाद एन. एस. टिकोहनरावोव द्वारा 'मोन्यूमेंट्स ऑफ फॉरबिडन रशियन लिटरेचर' में प्रकाशित किया गया था। खंड 2, पृष्ठ 268–281। तुलना करें वी. इस्त्रिन के गंभीर अध्ययन, 'द रेवेलेशन ऑफ मेथोडियस ऑफ पाटारा एंड द एपोक्रिफिल विजन ऑफ डैनियल इन बाइज़ेंटाइन एंड ओल्ड रशियन लिटरेचर' (1897); तुलना करें: बोनवेट्श (टिप्पणी 149)। मैं यहाँ केवल उनके 'सिंपोजियम' के नौवें भाषण का संदर्भ दे रहा हूँ: BdKV. 40. दूसरी संस्करण, पृ. 370: '…जब, सातवें सहस्राब्दी में, यह दुनिया नष्ट हो जाएगी, जब, ब्रह्मांड के अंत के बाद, ईश्वर हमारे साथ आनंद में रहेंगे।' तुलना करें: अल्ज़बर्गर। प्री-क्रिश्चियन युग में ईसाई एस्केटोलॉजी का इतिहास (1896), पृ. 497, और क्रिश, योह. पी., प्राचीन ग्रीको-रोमन सांस्कृतिक दुनिया में चर्च (1930), पृ. 234, 319। और साथ ही: 'डिडाके' ('बारह प्रेरितों की शिक्षा')। अध्याय 16: '…क्योंकि अंतिम दिनों में झूठे भविष्यद्वक्ता और विनाशक बढ़ जाएँगे, और भेड़ें भेड़ियों में बदल जाएँगी, और प्रेम घृणा में बदल जाएगा' (BdKV 35, 2nd ed., पृ. 16); यूहन्ना की 'प्रकाशितवाक्य' (अध्याय 20); बर्नाबास का पत्र (अध्याय 15): 'इसलिए, मेरे बच्चों, छह दिनों में—अर्थात् छह सहस्राब्दियों में—सब कुछ समाप्त हो जाएगा। और सातवें दिन वह (ईश्वर) विश्राम करेगा' (BdKV 24, दूसरी संस्करण, पृ. 129)। कई अपोक्रीफ़ल लेखों, जिनमें से अधिकांश अंतकाल संबंधी और सहस्राब्दीवादी विषयों से ओत-प्रोत हैं, ने विश्वासियों को विचार करने के लिए समृद्ध सामग्री प्रदान की। रूस में 12वीं सदी की शुरुआत में ही, स्मोलेंस्क में अब्राहम नामक एक भिक्षु ने अंत्यकाल संबंधी विषय-वस्तु पर एक ग्रंथ लिखा था (देखें उपरोक्त अध्याय II, 2); यह संभवतः पहला रूसी ग्रंथ था जिसमें दुनिया के अंत को वर्ष 7,000 से जोड़ा गया था (देखें: फिलिप डब्ल्यू. एन्ज़े. 1940. पृ. 46)। पुराना रूसी पास्चालियन, जिसे केवल वर्ष 1492 तक संकलित किया गया था, भविष्यसूचक शब्दों के साथ समाप्त होता है: 'यहाँ भय है, यहाँ शोक है, जैसे मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने पर; यह चक्र पूरा हो गया है, यह वर्ष समाप्त हो गया है, और अंत में वह प्रकट हुआ है, जिसमें हम तेरे सार्वभौमिक आगमन की प्रतीक्षा करते हैं' (झमाकिन। मेट्रोपॉलिटन डेनियल। पृ. 364, 362–367)। 1492 के बाद की अवधि के लिए पास्कालियान का अनुक्रम नोवगोरोड के आर्चबिशप जेनाडियस द्वारा संकलित किया गया था, जिन्होंने 1489 में जोआसाफ को एक पत्र लिखा था, रॉस्तोव के आर्चबिशप, से यह अनुरोध किया कि वे बुजुर्ग पैसियस यारोस्लावोव और नील सोर्स्की से परामर्श करें, जो उस समय शायद धार्मिक हलकों में बहुत अधिक धर्मशास्त्रीय अधिकार रखते थे (दोनों जोसाफ के धर्मप्रांत में रहते थे), ताकि वे दुनिया के अंत पर उनके विचारों का पता लगा सकें और इन विचारों को उनके पास पहुँचा सकें, जेनादियस (आर्खान्गेल्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 16, 30; मालिनिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 429)। 1492 में, मास्को के मेट्रोपॉलिटन ने जेनाडीयस को आने वाले सहस्राब्दी के लिए एक पास्काल तालिका संकलित करने का काम सौंपा (मकारी। 2nd संस्करण, खंड 6, पृ. 103); इस कृति में (उपरोक्त, परिशिष्ट III, पृ. 376–383), जेनाडियस ने पुराने और नए नियमों का सहारा लेते हुए इस धारणा का खंडन किया कि दुनिया का अंत निकट था और यहूदीकरण करने वाले नोवगोरोडवासियों के साथ वाद-विवाद में शामिल हुए, जो ऑर्थोडॉक्स का मज़ाक उड़ा रहे थे क्योंकि दुनिया का अपेक्षित अंत नहीं हुआ था। वोल्त्सक के जोसेफ ने अपनी *प्रोस्वेतितेल्या* के अध्याय 8 और 9 में इसी विषय पर चर्चा की है – मुख्य रूप से यहूदीकरण करने वालों के विधर्मी विचारों का खंडन करने के लिए – (तुलना करें: होल्ज़वार्ट, पृ. 119 आदि)।

[182] उनकी रचनाओं में, निम्नलिखित हमारे लिए विशेष महत्व की हैं: 1. 'ज्योतिषियों और लैटिनों पर एक ग्रंथ', जो प्सकोव के एक डीकन, एम. जी. मिस्यूर मुनेहिन को संबोधित है, और 1510 और 1520 के बीच लिखा गया था (मैलिनिन, संकलित कृतियाँ, पृ. 159; वही, परिशिष्ट, पृ. 45, और इसमें: Collected Works, 1861, खंड 2, पृ. 95); 2. 'ग्रैंड प्रिंस वासिली इवानोविच को पत्र' (1533 से पहले), (Malinin, op. cit., परिशिष्ट, पृ. 49–55; Collected Works, 1863, खंड 1, पृ. 337–348); 3. 'ज़ार इवान (चौथे) वासिलीविच को पत्र' (मालिनिन। उद्धृत ग्रंथ, परिशिष्ट, पृ. 62 आदि और डीएआई. 1. संख्या 23)। तुलना करें: टिप्पणी 171 में उद्धृत साहित्य और शेडर। उपरोक्त, पृ. 55 आदि। 'रोमा मोबिलिस'

फलिोथयिस की धार्मकि-दार्शनकि और मसीही अवधारणा का आधार दो वचिार हैं: ईश्वर द्वारा चुने गए ईश्वर के नगर (Civitas Dei) के रूप में मास्को के साम्राज्य का सार्वभौमकि-ऐतहिासकि महत्व, और इस साम्राज्य का धर्मशाही-राजशाही मूल्यांकन।

वशि्व-ऐतहिासकि वकिास दैवीय प्रबंध के ढांचे के भीतर होता है। ईश्वर समग्र मानवता और व्यक्तदिोनों का मार्गदर्शन करता है; ईश्वर की अनुग्रहकारी इच्छा पूरी दुनयिा में राज करती है; ईश्वर राज्यों को स्थापति करता है और जब वे भ्रष्टाचार में पड़ जाते हैं तो उन्हें उखाड़ फेंकता है; प्रभु शासकों को उनके सहिासन पर पहुंचाते हैं और यदि वे पाप में गरि जाते हैं तो उन्हें दंडति करते हैं; वह शासकों और सभी लोगों का मार्गदर्शन सत्य और धार्मकिता की ओर करते हैं। पहली रोम अपोलनिारसि के धर्मद्रोह के कारण पतन हुई और, ईश्वर की इच्छा से, ईसाई ऑर्थोडॉक्स दुनयिा में अपना स्थान खो बैठी। उसकी जगह, ईश्वर की कृपा से, दूसरी रोम - कॉन्स्टेंटनिोपल, त्सारग्राद आई। लेकनि वधिर्मी रोम के साथ अपने संघ के माध्यम से, इसने ऑर्थोडॉक्सी के साथ वशि्वासघात कयिा - और नष्ट हो गई। इसके पवत्रि तीर्थस्थल, कॉन्स्टेंटनिोपल में हागयिा सोफयिा को इस पाप की सजा के रूप में अधर्मी वजिताओं द्वारा अपवत्रि और नष्ट कर दयिा गया। फरि भी ऑर्थोडॉक्स के लिए आशा बनी रही: मास्को अपनी धार्मकिता और ईश्वर के भय से दमकता है; मास्को ने इस संघ को अस्वीकार करके अपनी ऑर्थोडॉक्सी को दृढ़ कयिा और इस प्रकार वशि्व इतहिास में तीसरी और अंतमि रोम बन गया, जबकि कोई चौथी रोम नहीं होगी। रूसी ज़ार दुनयिा में एकमात्र ऑर्थोडॉक्स शासक हैं, और रूसी साम्राज्य अंतमि साम्राज्य है, जसिके बाद स्वर्ग के राज्य के सवि कुछ नहीं होगा।

फलिोथयिस ने अपने 'ज्योतषियिों और लैटनिों के वरिुद्ध पत्र' में अपने पूरे दर्शन का सारांश प्रस्तुत कयिा: 'क्योंकि सभी ईसाई राज्य समाप्त हो गए हैं और भवष्यिसूचक पुस्तकों के अनुसार, हमारे शासक के एकल राज्य, यानी रूसी राज्य, में वलिीन हो गए हैं। क्योंकि दो रोम गरि गए हैं, और तीसरा खड़ा है, जबकि चौथा नहीं होगा... अर्थात्, स्वर्ग के अधीन एकमात्र ईसाई राजा और शासक, पवत्रि सार्वभौमकि प्रेरति चर्च का परमेश्वर का पवत्रि सहिासन, जसिने रोम और कॉन्स्टेंटनिोपल की जगह ले ली है, और जो परमेश्वर द्वारा बचाए गए शहर मॉस्को में है[183] ।

और ग्रैंड प्रसि वासलिी तृतीय को, फलिोथयिस एक रूसी ऑर्थोडॉक्स साम्राज्य के लिए अपनी दृष्टकि बारे में लखिते हैं: 'क्योंकि पुरानी रोम की कलीसयिा अपोलनिारसि के संप्रदाय से भ्रष्ट हो गई थी, जबकि दूसरी रोम, कॉन्स्टेंटनिोपल की कलीसयिा के द्वार अगारयिों के वंशजों द्वारा कुल्हाड़यिों और हथौड़ों से तोड़ दिए गए थे; लेकनि यह, तीसरी रोम की पवत्रि कैथोलकि और प्रेरति कलीसयिा, आपका संप्रभु राज्य, जो ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म में संपूर्ण वशि्व में सूर्य से भी अधकि चमकता है... अतः मैं आपसे कहता हूँ, सावधान रहें, ज़ार, और एक बार फरि इसे स्पष्ट और दृढ़ता से मन में रखें: क्योंकि सभी ईसाई साम्राज्य आपके साम्राज्य में आकर वशि्राम कर चुके हैं; क्योंकि दो रोम गरि गए हैं, तीसरा खड़ा है, और कोई चौथा नहीं होगा'[184] ।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि फलिोथयिस का मसीही दृष्टकिोण वचिारों की एक श्रृंखला में अंतमि कड़ी थी जो पहले मस्कोवाइट साम्राज्य में उभरी थी और उसके युग के दौरान भी उभरती रही। साथ ही , फलिोथयिस की शकि्षा इन सभी वचिारों और धारणाओं का एक तार्ककि संश्लेषण है। अपने समकालीनों में से कसिी से भी अधकि स्पष्ट रूप से, पस्कॉव का संन्यासी अपने सभी समकालीनों से अपने देश और उसके शासक, ऑर्थोडॉक्स ज़ार के महान ईसाई मशिन के बारे में बात करता है: राजसी पद की दैवीय उत्पत्ति, इसकी पवत्रिता, और ज़ार के कर्तव्यों और अधकिारों के बारे में, जो धर्मनरिपेक्ष और चर्च दोनों मामलों में, केवल ईश्वर के प्रति ही उत्तरदायी है[185] ।

(भटकती रोम) के सद्धिांत के व्याख्याकार पश्चमि में भी मलिे; देखें: लम्नािकस, योहान्स. *Juris publici Imperii Romano-Germanici*. अर्जेन्टोराटी, 1629. खंड 1, भाग 1, अध्याय 4, संख्या 16.

[183] मालनिनि. उद्धृत ग्रंथ, परशिष्ट, पृ. 45.

[184] उपरोक्त, पृ. 49, 55.

[185] फलिोथयिस ने इन वचिारों के पूरे समूह को एक बार फरि युवा ज़ार इवान चौथे को लखि अपने पत्र में प्रस्तुत कयिा, जो उनके दो अन्य पत्रों की तुलना में अधकि वस्तिृत था और उतना संक्षप्ति या सारगर्भति नहीं था (मालनिनि। उद्धृत ग्रंथ। परशिष्ट। पृ. 62)। प्रसि ए. एम. कुरबस्की को इवान के पहले पत्र में फलिोथयिस के वचिारों की प्रतधि्वनि देखें: 'क्योंकि ईश्वर के वचन की दव्यि योजना हर जगह पूरी हो रही थी, और ईश्वर के वचन के दैवी सेवकों ने, उड़ान भरते हुए बाज़ों की तरह पूरे ब्रह्मांड का चक्कर लगाकर, भक्ति की चगिारी को रूसी राज्य तक भी पहुँचा दयिा। इस प्रकार, रूसी साम्राज्य का नरिंकुश शासन, जो वास्तव में रूढ़वािदी है, ईश्वर की इच्छा से, महान राजकुमार व्लादमिीर से शुरू हुआ, जन्हिोंने पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से रूसी भूमि को प्रबुद्ध कयिा, और महान राजकुमार व्लादमिीर मोनोमाख, जन्हिोंने ग्रीकों से सर्वोच्च सम्मान प्राप्त कयिा, और पराक्रमी महाप्रसि अलेक्जेंडर नेवस्की, जन्हिोंने नास्तकि जर्मनों पर एक बड़ी वजिय प्राप्त की, और प्रशंसनीय महाप्रसि दमित्रिी, जन्हिोंने डॉन के पार नास्तकि अगारयिों (यानी तातारों) पर वजिय प्राप्त की। – आई.

फलिोथयिस का इतहिास का धार्मकि दर्शन और जोसेफाइट्स के वचिार एक एकल चर्च-राजनीतकि वशि्वदृष्टमिें वलिीन हो गए, जो रूस में राज्य और चर्च के बीच संबंधों के आगे के वकिास की नींव बन गया, मस्कोवाइट ज़ारशाही[186] दोनों में और 18वीं-19वीं शताब्दी के पीटर महान के साम्राज्य में।[187] मास्को को तीसरी रोम की स्थति तक वैचारकि रूप से उन्नत करने में बहुत ही प्रबल धार्मकि और राष्ट्रीय स्वर था। यह रूसी लोगों के बीच लंबे समय से चली आ रही इस मान्यता के अनुरूप था कि रूसी ईसाई धर्म कसिी भी तरह से ग्रीक ईसाई धर्म से कमतर नहीं था – एक ऐसी मान्यता जसिे 11वीं शताब्दी में ही कीव के मेट्रोपॉलटिन हलिारयिन ने व्यक्त कयिा था।[188] अब, हालाँकि, समय आ गया था जब रूसी धार्मकि पदानुक्रम और रूसी मठवासी समुदाय के प्रतनिधियिों को इस दावे को वास्तवकि तथ्यों, उदाहरणों और आदर्शों के साथ प्रमाणति करना था। वचिारधारा और वाक्पटुता, चाहे वे कतिनी भी शानदार और तार्ककि क्यों न हों, रूसी लोगों के लिए अभी तक प्रमाण नहीं थीं। रूसी आत्मा ने ईसाई धर्म की सच्चाई और ऑर्थोडॉक्स शकि्षा की सच्चाई में वशि्वास इसलिए नहीं कयिा कि वे डॉगमैटकि संरचनाएँ या प्राचीन रूसी लेखन की प्रभावशाली प्रेरकता के कारण थे, बल्कि इस शकि्षा की लटिर्जकिल समृद्धि और सुंदरता के कारण। क्योंकि यह चर्च का अनुष्ठानकि जीवन ही था जसिने उसे शहीदों और संतों, चमत्कार करने वालों और धर्म की गवाही देने वालों, और यहाँ तक कि स्वर्गदूतों के गौरवशाली समूह का एक वनिम्र सदस्य होने का अनुभव करने का अवसर दयिा। धार्मकि अनुष्ठानों के दौरान, चर्च ने केवल धर्मी लोगों के भवषि्य के धन्य और शाश्वत जीवन के बारे में ही नहीं बताया; चर्च के भजन और पठन इस बात की पुष्टि करते थे कि यदि कोई व्यक्ति ईसाई भक्ति के उदाहरणों का अनुकरण करता है और अपने जीवन का नरि्माण इन्हीं उदाहरणों पर करता है तो वह भी धर्मी लोगों के इस धन्य जीवन में भाग ले सकेगा[189] । यह वरिोधाभासी लग सकता है, लेकनि रूसी धार्मकिता में धर्मवधिि ने धर्मसद्धिान्त को दूसरे स्थान पर रख दयिा; इस धार्मकिता में, मुख्य ध्यान वशि्वास की सामग्री पर नहीं, बल्कि वशि्वास के अनुभव पर था। यह रूसी धार्मकि आत्मा की सबसे वशिषि्ट और महत्वपूर्ण वशिेषता है।

प्राचीन चर्च और बाइज़ेंटाइन चर्च ने पवत्रिता के अनगनित उदाहरणों के माध्यम से अपने शकि्षण और अपनी ऑर्थोडॉक्सी की सच्चाई की गवाही दी। क्या रूसी चर्च – तीसरी रोम की चर्च – भी ऐसे उदाहरणों के माध्यम से अपनी ऑर्थोडॉक्सी की गवाही नहीं दे सकती थी? क्या यह भी अपने धर्मी लोगों को इस महमिा के सहभागी के रूप में मसीह के राज्य का प्रकटीकरण नहीं कर सकता था, और उनकी नषि्ठा, पवत्रिता और चमत्कारों की घोषणा नहीं कर सकता था—न केवल रूसी लोगों को बल्कि पूरे ऑर्थोडॉक्स जगत को, जसिमें रूसी चर्च अब ऑर्थोडॉक्सी का केंद्र बन गया है? रूसी पदानुक्रम और रूसी मठवाद ने ईसाई , तपस्या, धार्मकि उत्साह और चमत्कारों के कई उदाहरण प्रदान कयि। तीसरे रोम का अपना रूसी थेबाइड और अपने तपस्वी थे, और यहाँ तपस्या का अभ्यास करना मसि्र या सीरयिा में कहीं भी करने से आसान नहीं था। रूसी चर्च के पास पहले से ही कई संत थे जनि्होंने महान ईसाई कारनामे कयि थे। रूसी चर्च के संतों के कैलेंडर में पहले से ही इसके अपने राष्ट्रीय संत शामलि थे, जो सार्वभौमकि ऑर्थोडॉक्स धर्मात्माओं की भीड़ में एक प्रमुख स्थान पर थे। फरि भी, इनमें से कई तपस्वी लोगों के लिए अज्ञात थे, या केवल उन स्थानीय क्षेत्रों में जाने जाते थे जहाँ वे रहते थे और उन्होंने अपना तपस्या-जीवन बतिाया था। इसलिए, तीसरे रोम के नरि्माताओं के लिए, संतों के कार्यों को लखिति रूप में दर्ज करने और उनकी महमिा करने के प्रश्न को हल करना एक महत्वपूर्ण और गंभीर कार्य—उनका ईसाई कर्तव्य—था, क्योंकि इससे रूसी चर्च के उत्थान में योगदान मलिा।

एस.), और अन्याय के प्रतशिोधक, हमारे दादा, महान शासक जॉन, और हमारे पूर्वजों की भूमि के पुनर्स्थापक, हमारे स्वर्गीय पति, महान शासक वासलिी, और यहाँ तक कि हम, रूसी साम्राज्य के राजदंड के वनिम्र धारक' (Correspondence, पृ. 26)। ऊपर उल्लेखति 'व्लादमिीर के राजकुमारों की कथा' युवा ज़ार को बेशक ज्ञात थी। इसी प्रकार एक नरिंकुश शासक के कर्तव्यों पर इवान के वचिारों की भी तुलना करें (उपरोक्त, पृ. 40)।

[186] फलिोथयिस का 'मास्को तीसरी रोम' का सद्धिांत न तो चर्च और न ही राज्य द्वारा आधकिारकि तौर पर 'एक्स कैथेड्रा' घोषति कयि गया था, लेकनि हमें इसका प्रतबिबि एक आधकिारकि दस्तावेज़ में मलिता है, अर्थात् 1589 में पैट्रआर्क्रेट की स्थापना के कारणों की व्याख्या में ('उलोजेनया ग्रामाटा'), इसमें: SGGD. 2, पृ. 97. पतृिसत्ता की स्थापना के तुरंत बाद, 17वीं शताब्दी की शुरुआत में, मॉस्को में 'रूसी संतों की पुस्तक' नामक एक संतों के जीवन-चरति पर आधारति ग्रंथ संकलति कयि गया था। अंतलेख में, लेखक कहता है कि बिज़ेंटयिम में सच्चा धर्म पतन की ओर चला गया था, जबकि मस्कोवी राजशाही और रूसी चर्च ने, अपनी ऑर्थोडॉक्सी और संतों की बड़ी संख्या के कारण, ऑर्थोडॉक्स दुनयिा में पहला स्थान प्राप्त कर लयि था। यह उपसंहार पहली बार आई. मैनस्वेटोव द्वारा 'काउंट उवारोव पुरस्कार के 21वें वतिरण पर रपिोर्ट' में प्रकाशति कयि गया था; पूरी तरह से: *चेतेनया*. 1887. 4.

[187] तुलना करें मेरा कार्य: 'ज़ुर फ्रागे डेर पेरयिोडज़िीरुंग डेर गेशख्ति डेर रूससि्चे करि्खे', में: *क्यूरयिोस*. 5 (1940–1941). पृ. 66–81.

[188] उपरोक्त अध्याय II देखें।

[189] मेरी पुस्तक *Leben und Lehre der Starzen* (1936) में व्यक्तगित उदाहरण देखें।

४. मेट्रोपॉलिटन मकारियस और १६वीं सदी की रूसी संत-चरित्रावली

मुख्य कार्य रूसी तपस्वियों के जीवन का संकलन करना था। इस कार्य का अधिकांश भाग मठवासी समुदाय ने किया। 16वीं शताब्दी की शुरुआत तक, रूसी तपस्वियों और संतों के कई जीवन पहले से ही मौजूद थे, लेकिन उनकी संख्या अभी भी अपेक्षाकृत कम थी[190] । उस शताब्दी के पहले छमाही में, रूसी संत-चरित्र साहित्य काफी विस्तारित हुआ, मुख्य रूप से मेट्रोपॉलिटन मकारी (1542–1563) की व्यक्तिगत पहल और मार्गदर्शन के कारण[191] ।

नोवगोरोड धर्मप्रांत (1526–1542) के प्रमुख के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान ही, आर्चबिशप मकरियस ने *ग्रेट मेनायोन* के 12 खंडों में संकलन का विशाल कार्य शुरू किया, जिसमें प्रत्येक महीने के लिए एक खंड था; इस पर 1529–1530 में काम शुरू हुआ, और 1541 में मकारिय ने मेनोलॉजियन को नोवगोरोड में सेंट सोफिया कैथेड्रल को अपने माता-पिता की आत्मा की शांति के लिए एक योगदान के रूप में दान कर दिया। जब वह 1542 में मास्को के मेट्रोपॉलिटन बने, तो यह कार्य पूरा हो गया, और 1552 में नई पांडुलिपि को मास्को के डॉर्मिशन कैथेड्रल को प्रस्तुत किया गया[192] । क्लुचेव्स्की लिखते हैं, 'चूंकि इस संग्रह की नींव के रूप में यह कार्य निर्धारित किया गया था—कि रूसी भूमि में पाई जाने वाली "सभी पवित्र पुस्तकों" को इकट्ठा किया जाए और उनकी प्रतिलिपि बनाई जाए—इसलिए मैकारियस का माइनई पुराने रूसी साहित्य में सबसे महत्वाकांक्षी उपक्रम है'[193] । इन मेनाइयों में उस समय रूस में ज्ञात ऑर्थोडॉक्स चर्च के सभी संतों के जीवन, साथ ही विभिन्न तपस्वी, धर्मशिक्षा संबंधी, उपदेशात्मक और कुछ कैननिक कार्य शामिल थे[194] ।

मैकैरियस ने मेनायोन में रूसी संतों के जीवन को प्रमुख स्थान देने को आवश्यक समझा। उन्होंने अपने चारों ओर सहायक इकट्ठा किए, और उन्होंने उनकी आज्ञा पर इन जीवन-कथाओं का संकलन किया। यह स्पष्ट है कि मकरियस ने अपने सहायकों की तलाश जोसेफाइट परंपरा के मठवासी समुदाय में की, जिनसे उनका लंबे समय से संबंध था, जो पाफनुतियेव बोरॉव्स्क मठ में नवसिखिया के रूप में उनके समय से आरंभ हुआ था। इसलिए यह तर्क दिया जा सकता है कि इन वर्षों के दौरान रूसी संतों की जीवनी-लेखन की 'जोसेफिट स्कूल' का आकार लिया, जिसका उद्देश्य संतों के जीवन को जोसेफिट विचारों की भावना में प्रस्तुत करना और एक ऐसे तपस्वी जीवन का वर्णन करना था जिसकी सामग्री इन विचारों के अनुरूप थी या जो 'जोसेफिट' रंगों में रंगा हुआ था। यह जोसेफिट संजीवनी-लेखन विद्यालय, जिसकी कृतियों को साहित्यिक इतिहास में आमतौर पर 'मकाराइव संस्करण के जीवन'[195] के रूप में संदर्भित किया जाता है, ने साहित्यिक और चर्च-ऐतिहासिक दोनों मायनों में विभिन्न गुणवत्ता वाले जीवन की एक पूरी शृंखला

---

[190] रूसी संतों की जीवनी-लेखन पर देखें: क्ल्यूचेव्स्की। ओल्ड रूशियन लाइव्स ऑफ द सेंट्स (1871); सर्गियस, आर्चमिांड्राइट। द कम्प्लीट मंथली कैलेंडर ऑफ द ईस्ट। 2 खंड (1875); काड्लुबोव्स्की। नबिंध (1902); याखोनोव। पोमेरेनियन क्षेत्र के संतों के जीवन एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में (1881); कोनोपलेव। वोल्गोडा क्षेत्र के संत (1895), यह भी: रीडग्रिस. 1895. 4; सेरेब्रेयान्स्की। प्राचीन राजसी जीवन, में: रीडग्रिस. 1915. 3; यह भी देखें बहुत उपयोगी कृति: बोगुस्लाव्स्की, एस. 'द लिटरेरी ट्रेडिशन इन नॉर्दर्न रशियन हेजीओग्राफी', में: IORAS. 101 (1928). रूसी चर्च में कैनोनाइज़ेशन पर साहित्य: वासिलीव. 'द कैनोनाइज़ेशन ऑफ़ रशियन सेंट्स' (1893), यह भी में: रीडग्रिस. 1893; गोल्बुंस्की। रूसी चर्च में संतों के कैननाइज़ेशन का इतिहास (1903), यह भी: रीडग्रिस 1903 में; पीटर्स, पी. 'ला कैननाइज़ेशन डैनस लेग्लिस रूसे', इन: एनालेक्ट्स बोलैंडियाना, 33 (1914)। नेक्रासोव। द इमरजेंस ऑफ़ नेशनल लिटरेचर इन द ग्रेट रशियन नॉर्थ (1870) (अब प्रासंगिक नहीं); वेरुज्स्की। वोलोग्दा क्षेत्र के संतों के जीवन के ऐतिहासिक विवरण (1880); फेदोतोव, जी. द सेंट्स ऑफ़ एन्शियंट रस'। पेरिस, 1929।

[191] हम पहले ही 11वीं-15वीं शताब्दियों के संतों के बारे में लिख चुके हैं (अध्याय II और III)। 16वीं शताब्दी से पहले, निम्नलिखित रूसी संतों की या तो स्थानीय रूप से या पूरे रूस में पूजा की जाती थी: 1. संत बोरिस और ग्लेब, कष्ट-सहिष्णु राजकुमार († 1015); 2. संत राजकुमार व्लादिमीर († 1015); 3. संत राजकुमारी ओल्गा († 969); 4. संत लियोन्टियस, रोस्तोव के बिशप († 1072); 5. संत राजकुमार माइकल ऑफ चेरनिगोव और उनके बोयार थियोडोर († 1245); 6. संत इग्नाटियस, रोस्तोव के बिशप († 1288); 7. संत पीटर, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन († 1325); 8. संत अलेक्सियस, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन († 1378); 9. संत सर्गियस ऑफ़ राडोनेज़ († 1392); 10. संत यशायाह, रोस्तोव के बिशप († 1190); 11. खुटिन के संत बार्लाम († 1192); 12. स्मोलेंस्क और यारोस्लाव के राजकुमार संत थियोडोर († 1299) और उनके पुत्र डेविड और कॉन्स्टेंटिन; 13. गुफाओं के संत एंथनी († 1073); 14. गुफाओं के संत थियोडोसियस († 1074); 15. बेलोजेरो के संत सिरिल († 1427); 16. सेंट दमित्री ऑफ प्रिलुत्स्क († 1391); 17. सेंट अब्राहम ऑफ रोस्तोव († 11वीं सदी); 18. सेंट निकिता ऑफ पेरियास्लाव († 1186)। तुलना करें: सर्गियस। उद्धृत ग्रंथ 1. परिशिष्ट 15।

[192] ज़ाउस्कन्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 229; मकाराई (बुलगाकोव)। नोवगोरोड मकाराइयेव्स्की चेतीई मिनेई पर टिप्पणियाँ, में: टिकोहनरावोव। रूसी साहित्य और प्राचीन वस्तुओं का वृत्तांत। खंड 1 (1959)। अनुभाग 5, पृ. 68 आदि; क्लुचेव्स्की। लाइव्स। पृ. 228–231; मकारी। 2रा संस्करण। खंड 7। पृ. 407 आदि।

[193] क्लुचेव्स्की। पूर्वोक्त, पृ. 228।

[194] पूरे संग्रह की सामग्री के लिए, देखें मकारी। दूसरा संस्करण। खंड 7। पृ. 409 से आगे। ग्रेट मेनोलॉजियन की एक संपूर्ण सामग्री तालिका यहाँ है: रीडग्रिस। 1877। खंड 4। भाग 4।

[195] स्पेरेन्स्की। हिस्ट्री ऑफ ओल्ड रशियन लिटरेचर (1911)। पृ. 161; क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 222।

का उत्पादन कयि।[196] ; सबसे पहले, क्योंकि hagiographies के संकलकों में विभिन्न साहित्यिक प्रतिभाएँ थीं, और दूसरी बात, क्योंकि उन्होंने सामग्री को एक विशिष्ट चर्च-राजनीतिक अवधारणा के आधार पर संसाधित कयि।

1537 में ही नोवगोरोड में, मकारी, जो उस समय भी एक आर्चबिशप थे, ने एक बोयार के पुत्र वासिली तुचकोव को मिखाइल क्लोप्स्की († 1456) की जीवनी लिखने का काम सौंपा, जो मसीह के लिए एक पवित्र मूर्ख और एक तपस्वी थे और जिन्हें नोवगोरोड के लोगों द्वारा बहुत सम्मानित कयि जाता था।[197] ।

लगभग 1545 में, स्विर के संत अलेक्जेंडर († 1533) की जीवनी संकलित की गई; यह पुरानी रूसी जीवनी-साहित्य के रत्नों में से एक मानी जाती है। लेखक, हिलारियन नामक, अलेक्जेंडर-स्विर्स्की मठ के मठाध्यक्ष, संत के समकालीन और शिष्य थे; उन्होंने एक ऐसा वृत्तांत लिखा जो ऐतिहासिक रूप से बहुत सटीक है और सरल तथा अभिव्यक्तिपूर्ण भाषा में प्रस्तुत कयि गया है। यह जीवनी संत अलेक्जेंडर के चमत्कारों पर विशेष ध्यान देती है, और उन्हें बिना किसी अलंकार या कल्पना के, सरल और बोलचाल की भाषा में वर्णित करती है, जिसने पाठकों और श्रोताओं पर विशेष रूप से गहरा प्रभाव डाला।[198] । यह जीवनी अलेक्जेंडर के महिमामंडन से भी पहले संकलित की गई थी और उनके संत-घोषण का आधार बनी।

साथ ही, लगभग *1545-46 में, क्रुटित्सा के बिशप, वोल्कोलामस्क के जोसेफ के शिष्य, मेट्रोपॉलिटन मकारी सिंवा के व्यक्तिगत आदेश पर, जोसेफ की जीवनी लिखी गई। इस चरित को मेनाइया में भी शामिल कयि गया था, और साहित्यिक दृष्टिकोण से यह भी प्राचीन रूसी चरित-साहित्य के बेहतरीन उदाहरणों में शुमार है। यह ऐतिहासिक तथ्यों से भरपूर है और अपनी उत्कृष्ट शैली के लिए विशिष्ट है। जोसेफ का चित्रण बहुत जीवंत है और एक स्थायी छाप छोड़ता है। फिर भी, साथ ही, इस संकीर्णचरित्र में एक विशिष्ट रूप से जोसेफाइट धार्मिक और राजनीतिक झुकाव है। लेखक, बिशप सिंवा, जो स्वयं इस विचारधारा से संबंधित थे, ने जोसेफ के धर्मद्रोह के खिलाफ संघर्ष पर विशेष ध्यान दिया, धर्मद्रोहियों के खिलाफ मृत्युदंड सहित कठोर उपायों की आवश्यकता पर जोर दिया, और पहले से ही हो चुके executions (फांसी) का बड़े संतोष के साथ वर्णन कयि। हागियोग्राफी के संकलक जोसेफ और ग्रैंड प्रिंसेस के बीच घनिष्ठ संबंध के बारे में भी बात करते हैं, और इस बात के बारे में भी कि कैसे मठाधीश स्वयं और उनके मठ के भाई मस्कोवी तानाशाह का सम्मान करते थे, जिसे सिंवा, 1547 से पहले—'ज़ार' की उपाधि की शुरुआत से पहले—'ईश्वर के अभिषिक्त' के रूप में संबोधित करते थे, 'ज़ार' और 'ऑर्थोडॉक्स ज़ार', इन अभिव्यक्तियों को स्वयं जोसेफ का ही बताया गया है*[199] ।

लगभग उसी समय, या कुछ साल पहले, 1540 और 1546 के बीच, जोसेफ की संजीवनी लिखी गई थी; यह 'एक अज्ञात लेखक की संजीवनी' के नाम से जानी जाने लगी, क्योंकि इसके लेखक का नाम अभी तक स्थापित नहीं हो सका है। कई विद्वान ओटेन्स्की मठ के भिक्षु ज़िनोवी को इस जीवनी का लेखक मानने के पक्ष में हैं। यह अनुमान ज़िनोवी के जीवन की कुछ परिस्थितियों और hagiography की सामग्री पर आधारित है। यद्यपि ज़िनोवी जोसेफ़ाइट्स की विचारधारा को साझा करते हैं, वह नोवगोरोड के विधर्म की निंदा में एक निश्चित संयम दिखाते हैं, जोसेफ़ की इसके खिलाफ संघर्ष के लिए प्रशंसा करते हैं, लेकिन विधर्मियों को दी गई सज़ाओं के बारे में बहुत सावधानी से बात करते हैं। भिक्षु-संपत्तियों के प्रश्न पर, लेखक जोसेफाइटों के विचारों के अनुरूप ही विचार रखता है, लेकिन वह भिक्षु-गांवों पर 'गैर-अर्जनकर्ताओं' के विचारों की आलोचना में संयम बरतता है। यह संजीवनी बाह्य तपस्या के महत्व पर जोर देती है और सेंट जोसेफ मठ के एक भिक्षु, कैसियन द बAREFOOT ([200]) के तपस्वी अभ्यास में इस पहलू को उजागर करती है।

जोसेफ की तीसरी जीवनी 1547 में लिखी गई थी। इसके लेखक जोसेफ के भतीजे, संन्यासी डोसिथियस टोपोर्कोव थे, और यह जीवनी संत की प्रशंसा-रचना है। इसकी सामग्री और समग्र भावना के मामले में, यह पूरी तरह से एक जोसेफाइट कृति है।[201] ।

---

[196] उपरोक्त, पृ. 222–296।

[197] 1537 तक, माइकल क्लोप्स्की के जीवन के दो संस्करण पहले से ही मौजूद थे (उसी में, पृ. 209); ये इस में मुद्रित हैं: प्राचीन रूसी साहित्य के स्मारक, खंड 1; तुचकोव का संस्करण – उसी में, खंड 4।

[198] मेनायोन के लिए आर्चबिशप थियोडोसियस द्वारा लिखवाई गई संकीर्णचरित्र, मेनायोन में 30 अगस्त के अंतर्गत शामिल है। मकरी। द्वितीय संस्करण। 7. पृ. 418।

[199] वीसीएचएम. 9 सितंबर. पृ. 455–498; मकाराई. 2रा संस्करण. 7. पृ. 418–419; क्लीचेव्स्की. वही. पृ. 292, 293.

[200] क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 293; झरगिा। सोलहवीं सदी के रूसी पत्रकारिता के इतिहास पर निबंध। एक प्रचारक के रूप में मैक्सिमस द ग्रीक, में: TODRL. 1 (1934)। पृ. 8। यह संजीवनी पहले नेवोस्त्रुएव द्वारा प्रकाशित की गई थी: CHOLDP. 1865.

[201] नेवोस्त्रुएव। उद्धृत ग्रंथ।

जोसेफ़ के संबंध में जीवनी-साहत्यि की प्रचुरता हमें यह अनुमान लगाने के लिए प्रेरति करती है कि मेट्रोपॉलटिन मकरयिस का 1547 की परषिद में वोल्त्स्की के जोसेफ़ को संत घोषति करने का इरादा था। यह इस तथ्य से भी स्पष्ट है कि मेट्रोपॉलटिन ने सेंट जोसेफ मठ के भक्षिु फोटयिस को जोसेफ के लिए एक कैनन रचने का काम सौंपा और 'कैथेड्रल लटिर्जी के उत्सव तक' इसे नजिी तौर पर गाने का आशीर्वाद दयिा[202] ।

वोल्होट्स्क के जोसेफ का 15 सतिंबर 1515 को नधिन हो गया था, लेकनि 1547 और 1549 की परषिदों में उनका महमिीकरण नहीं कयिा गया था; 20 दसिंबर 1578 तक एक स्थानीय महमिीकरण नहीं हुआ था, जसिका अर्थ था कि उनके मठ में अब उनके लिए स्मरणोत्सव सेवाएं आयोजति नहीं की जाती थीं, और दव्यि सेवाओं के दौरान एक संत के रूप में उनके लिए प्रार्थनाएं की जाती थीं। जोसेफ़ का आधकिारकि संतों में शामलि होना 1591 में पैट्रआर्क जॉब द्वारा कयिा गया था; उन्होंने जोसेफ़ के सम्मान में एक कैनन रचने के लिए अपनी स्वीकृति दी और मेनायोन में उनका नाम शामलि कयिा[203] ।

जोसेफाइटों के तपस्यावाद की प्रशंसा उपर्युक्त भक्षिु कैसयिन द बेयरफुट († 1542) की जीवनी में भी पाई जाती है, जो एक कठोर तपस्वी थे और जन्हिोंने खुद को अत्यधकि ठंड सहने के लिए समर्पति कर दयिा था। उनकी जीवनी कैसयिन की मृत्यु के तुरंत बाद आर्चमैंड्राइट वासयिन द्वारा लखिी गई थी[204] ।

जोसेफाइट संजीवनी-कथा को वोल्कोलामस्क पैट्रआर्कॉन द्वारा पूरा कयिा जाता है, जसिे *1547–48* में *संन्यासी डोसफिेई टोपोर्कोव ने* लखिा था, *संभवतःमेट्रोपॉलटिन के मार्गदर्शन में भी। पैट्रआर्कॉन में 29 कहानयिाँ और एक प्रस्तावना है, जो संक्षेप में वोल्कोलामस्क मठ की स्थापना के इतहिास की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। पाँच कहानयिाँ जोसेफ को समर्पति हैं और इनमें मठवाद, मठवासी जीवन और ईसाई तपस्या की नींव पर उनके वचिार शामलि हैं, साथ ही अन्य मठवासी जीवन रूपों की तुलना में सामुदायकि जीवन के लाभों पर भी जोर दयिा गया है; ये टप्पिणयिाँ पैट्रकिॉन में मठाधीश जोसेफ के अपने कथन के रूप में शामलि हैं। अन्य कहानयिाँ बोरोव्स्क के हेग्यूमेन पाफनुटयिस या स्वयं जोसेफ के दृष्टकिोण से लखिी गई हैं। यद्यपि इन सभी कहानयिों का उद्देश्य वोल्कोलामस्क मठ में मठवासी जीवन का वर्णन करना है, परन्तु वास्तव में, वे वषिय-वस्तु में मौलकि नहीं हैं; वे प्रारंभकि ईसाई पतृसभीय कृतयिों के स्पष्ट प्रभाव को दर्शाती हैं, जो प्राचीन रूस में व्यापक रूप से प्रचलति और बहुत लोकप्रयि थीं। जोसेफाइटों की वशि्वदृष्टि पूरे संग्रह में एक सामान्य धागे की तरह चलती है*[205] ।

जोसेफाइटों की गहन संतों पर लेखन संबंधी गतविधि, और साथ ही, शायद, परषिद की तैयारयिों की अफवाहों ने—जो कई रूसी तपस्वयिों के संत-पद की मान्यता पर नर्णिय लेने वाली थी— और उस युग का संपूर्ण माहौल – पुराने रूसी मठवाद के भीतर दो गुटों (जोसेफाइट्स और नॉन-अक्वरिअिर्स) के बीच अथक वैचारकि संघर्ष – ने नॉन-अक्वरिअिर्स को संत-चरत्रि संबंधी साहत्यिकि कृतयिों का उत्पादन करने के लिए प्रेरति कयिा। एक ओर, वे यह प्रदर्शति करना चाहते थे कि उनके बीच कई योग्य और गौरवशाली तपस्वी थे; दूसरी ओर, उन्होंने जोसेफाइट वचिारों के प्रसार को रोकने का भी प्रयास कयिा होगा।

बेलोजेर्स्क के फेरापोंतोव मठ के मैथ्यू नामक एक भक्षिु, जो गैर-अधग्रिहणवादयिों से घनष्ठि रूप से जुड़ा था और अपने कठोर तपस्वी जीवन के लिए प्रसद्धि था, ने मठ के संस्थापक हेग्यूमेन फेरापोंत († 1426) की जीवनी लखिी। यह जीवनी वशिेष रूप से इसलिए दलिचस्प है क्योंकि इसके लेखक सामुदायकि जीवन के वचिार का समर्थन करते हैं, भक्षिुओं की व्यक्तगित शारीरकि मेहनत की आवश्यकता पर जोर देते हैं, और अनासक्ति का समर्थन करते हैं। भक्षिु मैथ्यू ने बेलोजेर्स्क के हेग्यूमेन मार्टनियिन († 1483) की जीवनी भी लखिी। यह जीवनी, जो मठाध्यक्ष को बेलोजेर्स्क के संत सरिलि के तपस्वी वचिारों के अनुयायी के रूप में चत्रिति करती है, उनके आचरण की स्वतंत्रता का उल्लेख करती है, वशिेषकर ग्रैंड प्रंसिस के साथ उनके व्यवहार में, वशिेष रूप से उस अवधि के दौरान जब उन्होंने

---

[202] ज़ाउस्कन्स्की। उद्धृत कृति में: ZhMNP. 118 (1881). पृ. 30.

[203] जेरोन्टयिस। सेंट जोसेफ-वोल्कोलांस्क मठ का वर्णन (1894)। पृ. 47; क्ल्यूचेव्स्की। पूर्वोक्त। पृ. 296, 312; मकाराई। 2रा संस्करण। 8. पृ. 47, 61।

[204] क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 295। यह भक्षिु, कैसयिन, ज़ार इवान चतुर्थ का धर्मपुत्र था, जो सेंट जोसेफ मठ और ग्रैंड ड्यूकल परविार के बीच घनष्ठि संबंधों की भी पुष्टि करता है। काड्लुबोव्स्की। उपरोक्त, में: रस्की फ़लिोलॉग, खंड 45 (1901)। पृ. 35 आदि; क्लीचेव्स्की। उपरोक्त, पृ. 289, 294–295। 'नशिब्द कस्सयिन का जीवन' भी इस 'कहानी' में शामलि है। पेटेरकिा (पेटेरकि) के नाम से जाने जाने वाले प्रारंभकि ईसाई तपस्या संग्रहों के प्रभाव पर (तुलना करें: क्रम्बैचर. 1897. पृ. 188), देखें: काड्लुबोव्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 51–70.

[205] काड्लुबोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, में: रस्की फलि्लोग, खंड 45 (1901)। पृ. 35 आदि; क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 289, 294–295। 'नम्रिाद कैसयिन का जीवन' इस 'कथा' में भी शामलि है। पैटेरकिा (पैटेरकि) के नाम से जाने जाने वाले प्रारंभकि ईसाई तपस्या संग्रहों के प्रभाव पर (तुलना करें: क्रम्बैचर. 1897. पृ. 188), देखें: काड्लुबोव्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 51–70.

अस्थायी रूप से ट्रनिटिी-सर्गीय मठ के मठाध्यक्ष के रूप में कार्य कयिा था। (1447–1455), उनके गैर-स्वामत्वि, आध्यात्मकि संयम और तपस्या की ओर झुकाव पर ज़ोर देती है, और यह सुझाव देती है कि मार्टनियिन ने आंतरकि तपस्या को प्राथमकि महत्व दयिा; संक्षेप में, पूरे ग्रंथ में ऐसी वशिेषताएँ स्पष्ट हैं जो उन्हें सोरा के नीलस के वचिारों से जोड़ती हैं। दोनों संतों की जीवनयिाँ 1547 और 1549 के बीच लखिी गई थीं।[206]

लगभग 1547 में, वोल्गा के पार मठ समुदाय के हलकों में स्पासो-कामेनी मठ के संन्यासी जोआसाफ († 1483) की एक संत-चरत्रिावली सामने आई। इस संजीवनी-चरत्रि के अनुसार, जोआसाफ, जो एक राजसी परविार से आए थे, एक ऐसे कठोर तपस्वी के आदर्श उदाहरण थे जन्हिोंने अपना पूरा जीवन प्रलोभनों के खलिाफ संघर्ष और आंतरकि आध्यात्मकि कार्य के लिए समर्पति कर दयिा; उन्होंने प्रेम को सर्वोच्च ईसाई सद्गुण माना, जबकि बाहरी तपस्या और मठ की संपत्ति को अस्वीकार कर दयिा। इस जीवनी में जोसाफ के रहस्यमय दृष्टि-अनुभव का एक बहुत ही दलिचस्प वर्णन है: एक प्रकटकिरण में उद्धारकर्ता ने उन्हें बताया कि विनिम्रता और नम्रता प्रलोभनों से लड़ने का सबसे अच्छा साधन है[207] ।

दोनों गुटों के प्रतनिधियिों द्वारा लखिी गई संतों की जीवनयिाँ प्राचीन रूसी संतों के कारनामों का वर्णन करती थीं, और यह 16वीं शताब्दी की शुरुआत के लिए महत्वपूर्ण था। यह स्पष्ट है कि मेट्रोपॉलटिन मकरि के लिए ऐसी सामग्री संकलति करना महत्वपूर्ण था जो रूसी चर्च - तीसरी रोम की चर्च - को इसके आरंभ से ही महमिामय बनाए। ठीक इसी समय, 1440 के दशक के अंत और 1450 के दशक की शुरुआत में, सेंट प्रसि व्लादमिीर, जनिके शासनकाल में रस (Rus') का बपतस्मिा हुआ था, और सेंट प्रसिस ओल्गा की वस्तिृत जीवनी संकलति की गई[208] । व्लादमिीर की संजीवनी, जसिमें उनके शासनकाल की पूरी अवधि का बहुत वस्तिृत ववरिण है (यह 72 अध्यायों से मलिकर बनी है), उस समय की वशिेषता वाले धार्मकि और राजनीतकि वचिारों को दर्शाती है जब इसे लखिा गया था। यह मॉस्को के शासकों की वंशावली के प्रश्न को भी छूती है और राजकुमार व्लादमिीर के रोमन सम्राट अगस्टस के साथ संबंध पर जोर देती है। इस जीवनी को *स्टेपेनाया कनगिा* में शामलि कयिा गया था – इस अवधि के दौरान संकलति एक वशिाल संग्रह, जसि पर नीचे चर्चा की जाएगी।

मेट्रोपॉलटिन के आदेश पर, व्लादमिीर के नेटीवटिी मठ के भक्षिु मखिाइल ने राजकुमार अलेक्जेंडर नेवस्की की मौजूदा संजीवनी को पूरक और संशोधति कयिा, और इसे संत[209] के लिए एक प्रकार की प्रशंसा-पत्र में बदल दयिा। एक स्तुति-विचन के रूप में जीवनी लखिना शायद उस समय के लोगों के वचिारों से काफी मेल खाता था, क्योंकि लगभग 1547 में, मकरि के आदेश पर, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन जोनाह († 1461)[210] और नकिोन († 1426) की जीवनयिाँ, ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ के मठाधीश[211] ; दोनों जीवनी अज्ञात लेखकों द्वारा लखिी गई थीं।

मेनायॉन के लिए 15वीं सदी के प्रसद्धि तपस्वयिों की दो जीवनीकृतयिाँ संकलति की गईं। इनमें से एक है तपस्वी पावेल ओब्नोर्स्की († 1429) की संजीवनी, जन्हिें हम पहले से जानते हैं, जो 1536–1538 में एक अज्ञात भक्षिु द्वारा लखिी गई थी, और अब, 1547 में, उनके चमत्कारों के ववरिण के साथ पूरक की गई है[212] . दूसरी थी मैकारयिस († 1483) की संजीवनी, जो ट्वर गवर्नोरेट के काशनि शहर के पास कल्याज़नि में स्थति ट्रनिटिी मठ के मठाध्यक्ष थे। एक धनी बोयार परविार में जन्मे मैकारयिस अपने कठोर तपस्वी जीवन के लिए प्रसद्धि थे – जसिमें

---

[206] क्लुचेव्स्की। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 272–273; IRI. 6. पृ. 849–853, 853–855।

[207] स्पासो-कामेन्नी मठ की कथा, में: प्राव. सोब. 1861. खंड 1, पृ. 197–214; क्ल्यूचेव्स्की, उद्धृत ग्रंथ, पृ. 275। जोसेफ की स्थानीय पूजा पर, देखें: गोलुबस्कि, कैनोनाइज़ेशन का इतहिास, पृ. 149। गैर-स्वामयिों के वचिार पेरयिास्लाव के संत डेनयिल († 1540) के जीवन में भी परलिक्षति होते हैं; यह जीवन 1547 और 1549 के परषिदों के बाद, लगभग 1553 में, एक अज्ञात लेखक द्वारा ज़ार के अनुरोध पर संकलति कयिा गया था। यह जीवन प्राचीन रूसी संतों के जीवन-चरत्रिों के रत्नों में से एक है। देखें क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत कृति, पृ. 282; मकाराई। 2nd संस्करण, खंड 7, पृ. 433।

[208] सेरेब्रेनस्की। ओल्ड रशयिन प्रन्सिी लाइव्स। पृ. 43; व्लादमिीर के जीवन का सबसे पहला, संक्षप्ति संस्करण 12वीं शताब्दी के अंत या 13वीं शताब्दी की शुरुआत में रचा गया था (उपरोक्त, पृ. 44); 'प्रसि व्लादमिीर की स्मृति और प्रशंसा', जसि भक्षिु जैकब ने लखिा था, सबसे पहले 11वीं शताब्दी के मध्य में प्रकाशति हुई; यह सेंट व्लादमिीर पर एक चर्च रचना का पहला उदाहरण है (उपरोक्त, पृ. 50)। तुलना करें: मकरि। 2रा संस्करण, खंड 7, पृ. 436।

[209] माकारी। द्वतिीय संस्करण, खंड 7, पृ. 421; क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत कृति, पृ. 238; देखें: बोगुस्लाव्स्की। 'ग्रैंड प्रसि अलेक्जेंडर नेवस्की के जीवन के मूल पाठ के प्रश्न पर', में: IORAS. 1914. खंड 1, पृ. 261। यह जीवन मंसक्षिका द्वारा, में प्रकाशति कयिा गया था: PDP. 180 (1913)।

[210] माकाराई। द्वतिीय संस्करण। खंड 7, पृ. 422; क्ल्यूचेव्स्की। पूर्वोक्त, पृ. 238, 240; काड्लुबोव्स्की। पूर्वोक्त, पृ. 64.

[211] मैकारयिस। 2रा संस्करण। खंड 7. पृ. 421; क्ल्यूचेव्स्की। पूर्वोक्त। पृ. 247; नकिोलस की जीवनी का पहला, प्राचीन संस्करण तो और भी पहले, 15वीं सदी के प्रसद्धि जीवनीकार पाचोमयिस लोगोफेत् द्वारा संकलति कयिा गया था। वही। पृ. 248, 152, 119।

[212] माकरी। दूसरा संस्करण। 7. पृ. 421; क्ल्यूचेव्स्की। पूर्वोक्त। पृ. 272; कोनोपलेव। पूर्वोक्त। पृ. 68; काड्लुबोव्स्की। पूर्वोक्त। पृ. 47.

संसार का पूर्ण त्याग, उपवास और विनम्रता शामिल थी। अपने जीवनकाल में ही, उन्हें उनके समकालीनों द्वारा सम्मानित किया गया था , और बाद की पीढ़ियों ने भी उनकी पूजा की[213] । उनके अवशेष 1521 में खोजे गए थे। मेट्रोपॉलिटन के आदेश पर, कालियाज़िन मठ के एक अज्ञात भिक्षु ने मैकारियस की एक बहुत ही उत्कृष्ट और विस्तृत जीवनी संकलित की। संभवतःयही भिक्षु उनके अवशेषों की खोज के वृत्तांत के लेखक थे, क्योंकि मैकारियस को कई मृतोपरांत चमत्कारों के कारण लंबे समय से स्थानीय रूप से एक संत के रूप में पूजा जाता था[214] ।

5. रूसी पवित्र तपस्वियों का महिमामंडन

ये सभी जीवनी संबंधी ग्रंथ मेट्रोपॉलिटन मकरियस के उकसावे पर प्रकाशित हुए, न केवल उनके मेनायोन को पूरक बनाने के लिए, बल्कि मुख्य रूप से मास्को में एक परिषद बुलाने के उनके इरादे का समर्थन करने के लिए, और उस परिषद में, कई स्थानीय रूप से पूजे जाने वाले रूसी धार्मिक संन्यासियों को संतों में शामिल करके उनका भव्य रूप से गौरव करने के लिए। अनेक रूसी संतों, पवित्र धर्मगुरुओं और धर्मात्मा राजकुमारों का महिमामंडन चर्च और राज्य की प्रतिष्ठा को बढ़ाने तथा मास्को की तीसरी रोम के रूप में प्रसिद्धि को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से किया गया था[215] ।

1547 में, यह परिषद मॉस्को में हुई – उस समय के दस्तावेजों के अनुसार महान राजकुमार इवान चौथे के 'आदेश पर'[216] । संतों की जीवनियों[217] को पढ़ने और उनकी प्रामाणिकता की पुष्टि करने के बाद, परिषद ने 21 तपस्वियों को संत घोषित करने का निर्णय लिया। उनमें से बारह को पूरे रूस में महिमामंडित किया गया, जबकि नौ को स्थानीय रूप से पूजे जाने वाले संतों के रूप में मान्यता दी गई[218] । नए संतों की मान्यता के आधार आज तक संरक्षित नहीं हैं। 'पूरी संभावना है कि परिषद ने इन विशेष संतों के लिए पर्व-दिन इसलिए स्थापित नहीं किए क्योंकि उसने केवल उन्हें ही सम्मान और महिमा के योग्य माना, बल्कि इसलिए क्योंकि उसके पास उनके बारे में आवश्यक जानकारी उपलब्ध थी, जिसके आधार पर वह अपने निर्णय की पुष्टि कर सकती थी'[219] .

यह तथ्य कि न तो मेट्रोपॉलिटन मकरियस, न ही युवा ज़ार इवान, और न ही बिशप उस उपलब्धि से पूरी तरह संतुष्ट थे और उन्होंने रूसी संतों की संख्या को और बढ़ाने का प्रयास किया—जिनकी पूजा का उद्देश्य रूसी चर्च के अधिकार को मजबूत करना था—इस बात से स्पष्ट होता है कि दो साल बाद, 1549 में, मास्को में एक नया परिषद बुलाया गया, जो फिर से केवल संतों की मान्यता के मामलों के लिए समर्पित था[220] । अजीब बात है कि इस दूसरी परिषद की कार्यवाही से संबंधित कोई विश्वसनीय दस्तावेज़ आज तक सुरक्षित नहीं है। हम केवल मेट्रोपॉलिटन जोनाह की

---

[213] वोलोट्स्क के जोसेफ व्यक्तिगत रूप से कालियाज़िन के मकारी को जानते थे और उनके तपस्वी जीवन के बारे में बहुत सम्मान के साथ लिखते हैं; देखें जोसेफ का 'आध्यात्मिक पत्र' यहाँ: VMCH. सितंबर. भाग 1. पृ. 558.

[214] क्लुचेव्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 289; मकरियस. द्वितीय संस्करण. खंड 7. पृ. 21–22, 423–424.

[215] क्लुचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 222–225, 228; सेरगियस। उद्धृत ग्रंथ, खंड 1, पृ. 194–196

[216] एएई. खंड 1, संख्या 213; गोलुबिंस्की. कैनोनाइज़ेशन का इतिहास. पृ. 94; हर्मन. डी फोंटबिस. पृ. 50.

[217] सबसे प्राचीन जीवन-चरित्रों में से, नोवगोरोड के आर्चबिशप जॉन († 1186) और सोलोवेत्स्की मठ के दोनों संस्थापकों, साव्वाती († 1435) और ज़ोसिमा († 1478) के जीवन-चरित्रों को ज़ोर से पढ़ा गया। मकरिय. 2nd संस्करण. खंड 7. पृ. 420; क्लुचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 198, 269।

[218] दो पवित्र धर्मगुरु, नौ सम्माननीय पिता और एक महान राजकुमार को पूरे रूस में संत घोषित किया गया: 1. जॉन, नोवगोरोड के आर्चबिशप († 1186); 2. योना, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन († 1461); 3. निकोन, ट्रिनिटी-सर्गेस मठ के मठाधीश († 1426); 4. ओब्नोरस्क के पॉल († 1429); 5. सोलोव्की के साव्वती († 1435); 6. ग्लुशित्सी के डायोनिसियस († 1437); 7. माइकल क्लोप्स्की († 1452); 8. बोरोव्स्क के पाफनुती († 1478); 9. सोलोव्की के ज़ोसिमा († 1478); 10. कालियाज़िन के मकारियस († 1483); 11. ग्रैंड प्रिंस अलेक्ज़ेंडर यारोस्लाविच († 1263), जिन्हें नेव्स्की के नाम से जाना जाता है, और 12. स्विर के अलेक्ज़ेंडर († 1533)। गोलुबिंस्की। कैनोनाइज़ेशन का इतिहास। पृ. 100; मैकेरियस। 2nd संस्करण। 7. पृ. 219। स्थानीय रूप से पूजे जाने वाले संतों में, एक बिशप, पांच राजकुमार और मसीह के लिए तीन पवित्र मूर्ख (सालो…) को संत घोषित किया गया (उन्होंने संन्यासी की कसमें नहीं लीं): 1. आर्सेनियस, ट्वेर के बिशप († 1409); 2, 3 और 4. कॉन्स्टेंटिन, मुरोम के राजकुमार († 1129), और उनके पुत्र माइकल और थियोडोर; 5 और 6. पीटर, मुरोम के राजकुमार, और उनकी पत्नी फेवरोनिया; 7. उस्त्युग के प्रोकॉपियस († 1285), संभवतःजर्मन मूल के; ८. उस्त्युग के जॉन (मृत्यु १४९४); ९. मास्को के मैक्सिमिस (मृत्यु १४३३) – अंतिम तीन मसीह के लिए पवित्र मूर्ख थे। गोलुबिंस्की। वही। पृ. १००; मकाराई। द्वितीय संस्करण। ७। पृ. 219। मसीह के लिए पवित्र मूर्खों के जीवन संभवतःउनकी संत-घोषणा के बाद ही प्रकाशित हुए। क्ल्यूचेव्स्की। वही। पृ. 277, 278, 246। रूसी पवित्र मूर्खों पर, देखें: फेदोतोव। प्राचीन रूस के संत (1931)। पृ. 205–219।

[219] माकरी। द्वितीय संस्करण। 7. पृ. 219.

[220] इसका प्रमाण संत अलेक्ज़ेंडर नेवस्की की जीवनी में एक अंतर्स्थापन से मिलता है, जिसे 1547 की परिषद के बाद संकलित किया गया था। मकारी। दूसरा संस्करण। 7. पृ. 227, टिप्पणी, साथ ही मेट्रोपॉलिटन जोनाह के जीवन के विस्तृत प्रस्तावना (क्लुचेव्स्की के अनुसार तथाकथित 'तीसरा संस्करण', उद्धृत ग्रंथ, पृ. 241); यह अंतर्स्थापन क्लुचेव्स्की के कार्य में शामिल है (उद्धृत ग्रंथ, पृ. 460–463)।

संजीवनी ग्रंथ में एक अंतस्थापन के आधार पर ही महिमामंडित संतों के नामों का पता लगा सकते हैं, लेकिन यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह अंतस्थापन पूरी तरह से एक विश्वसनीय स्रोत नहीं है। यह माना जा सकता है कि 1549 की परिषद में, चर्च के सात पदानुक्रम, छह सम्माननीय फादर, मठों के मठाध्यक्ष और नए मठों के संस्थापक, तीन शहीद और एक राजकुमार को महिमामंडित किया गया था, जिससे कुल 17 संत हुए[221] । इस प्रकार, ऐसा प्रतीत होता है कि इन दो परिषदों में, 38 तपस्वियों को संत घोषित किया गया था[222] ।

दोनों परिषदों का उद्देश्य रूसी चर्च और मास्को के ज़ारशाही को तीसरी रोम के रूप में स्थापित करना था; हालाँकि, मेट्रोपॉलिटन मकारी ने एक और महत्वपूर्ण कार्य किया, जो न केवल अपने समकालीनों की बल्कि आने वाली पीढ़ियों की नज़रों में भी तीसरी रोम की आंतरिक धार्मिक और राजनीतिक सामंजस्य स्थापित करना था। उनके नेतृत्व में, धार्मिक और राज्य इतिहास का एक विशाल संग्रह संकलित किया गया – *स्टेपेनाया कनिगा* – जिसमें 'पवित्र रूस' नामक मस्कोवाइट राज्य के इतिहास का एक सुविचारित विवरण, धार्मिक दृष्टिकोण से, शामिल था। हागियोग्राफिक और जीवनीपरक प्रकृति के इस संग्रह में, मस्कोवाइट राजवंश के शासकों के कार्यों का विवरण, इसके आरंभ से लेकर ग्रैंड प्रिंस इवान तृतीय के शासनकाल के अंत तक, शामिल था, और इसमें उन्हें एक ईसाई-धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से आंका गया था। 'यह कृति पुराने रूसी वृत्तांतों, कालक्रमों और अन्य ऐतिहासिक स्रोतों का नए सिद्धांतों पर एक व्यापक पुनर्निर्माण थी – जो वर्ष के अनुसार एक सरल कालानुक्रमिक विवरण के बजाय शाही वंश की वंशावली पर आधारित थी'[223] । *बुक ऑफ़ डिग्रीज़* मस्कोवाइट राजवंश के 'ईसाई निरंकुश शासकों' की संतों की जीवनियों का एक संग्रह है, जो रूस के राजनीतिक इतिहास का एक संतोषजनक विवरण है, जिसे इसके संकलकों ने पूरी तरह से सटीक और सत्य माना, हालांकि इसमें काल्पनिक घटनाओं के विवरण भी शामिल थे। 'राज्य की अवधारणा, जिसे शासक ने मूर्त रूप दिया था, रूसी चर्च की महानता की अवधारणा के साथ, और इसी तरह रूसी राज्य की अवधारणा के साथ भी विलीन हो गई; यही कारण है कि ज़ारों और राजकुमारों की जीवनियों के साथ-साथ मेट्रोपॉलिटनों, बिशपों और संतों के जीवन को भी शामिल किया गया था'[224] .

[225]इस भव्य कृति के संकलन के लिए कई लेखकों की भागीदारी आवश्यक थी, जिनमें मास्को के पुरोहित एंड्रेई—जो ज़ार के विश्वासपात्र और बाद में मास्को के मेट्रोपॉलिटन बने—ने शायद सबसे महत्वपूर्ण भूमिका, यानी संपादक की भूमिका, निभाई। इस संग्रह के संकलकों में मास्को के मठवासी समुदाय के कई सदस्य थे जिनके बारे में हमें कुछ भी नहीं पता, क्योंकि केवल इसी परिवेश में ही साहित्यिक रचनात्मकता में सक्षम लोग मिल सकते थे। हालाँकि, इस पूरे उपक्रम के प्रवर्तक और नेता मेट्रोपॉलिटन मकारी थे। *स्टेपेनियाया नगिा* का अंतिम संपादन मकारी के जीवन के अंतिम वर्षों († 1563) के दौरान हुआ। 'डिग्री की पुस्तक' किसी भी अन्य ऐतिहासिक दस्तावेज़ की तुलना में बेहतर ढंग से दर्शाती है कि 'मास्को - तीसरी रोम' की अवधारणा मेट्रोपॉलिटन के विचारों में कितनी गहराई से निहित थी।

इस प्रकार, यह कृति 'मास्को - तीसरी रोम' की विचारधारा के निर्माताओं और समर्थकों की ओर से लगभग एक सदी की वैचारिक रचनात्मकता की अवधि को समाप्त करती है, जो चर्च पदानुक्रम और मठवाद की दो या तीन

---

[221] इस अंतस्थापन के आधार पर, निम्नलिखित सूची संकलित की जा सकती है: संत: 1. पर्म के स्टीफन († 1396); 2. यूथिमियस, सुज़दल के आर्चबिशप († 1405); 3. यूथिमियस, नोवगोरोड के आर्चबिशप († 1458); 4. जोनाह, नोवगोरोड के आर्चबिशप († 1470); 5. रोस्तोव के जेम्स († 1391); और, संभवत; 6. नोवगोरोड के निकिता († 1107) (क्लुचेव्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 460, टिप्पणी); 7. नोवगोरोड के निफॉन (मृत्यु 1156); तीन शहीद जिन्हें मूर्तिपूजक लिथुआनियाई लोगों ने मारा: एंथनी, जॉन और यूस्टेथियस (मृत्यु 1347); छह भिक्षु: 1. स्मोलेंस्क के अब्राहम (मृत्यु *1219–20); 2. स्टोरोज़हेव के सावा († 1407); 3. पेलशेम के ग्रेगरी († 1441); 4. प्सकोव की यूफ्रॉसीन († 1481); 5. पेरकोम के एफ्रेम (मृत्यु 1492) और 6. वशिरस्क के सव्वा (मृत्यु 1460); एक राजकुमार: प्सकोव के वेस्वेलोद-गैब्रियल (मृत्यु 1138) । वही, पृ. 462–463; सरगियस. पूर्वोक्त 1. पृ. 194–196; गोलुबिंस्की। कैनोनाइज़ेशन का इतिहास। पृ. 103–105 । 1549 की परिषद पर, देखें: गोलुबिंस्की। 2. 1. पृ. 772; वासिलीव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 183–203 ।*

[222] तुलना करें: ज़ार इवान चतुर्थ के पत्र में उल्लिखित संतों के नाम। AI. 1. संख्या 213.

[223] स्पेरांस्की। उद्धृत ग्रंथ (1921)। पृ. 172.

[224] उपरोक्त, पृ. 173। शाही वंशावली की पुस्तक इस में प्रकाशित हुई थी: पीएसआरएल. 21 (1908)। वासेनको, पी. द बुक ऑफ रॉयल जेनिओलॉजी एंड इट्स सिग्निफिकेंस इन ओल्ड रशियन हिस्टोरिकल राइटिंग। 1 (1904); खंड 2 प्रकाशित नहीं हुआ था।

[225] तुलना करें: ड्याकोनोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 108; ज़ौस्किन्स्की. उद्धृत ग्रंथ, में: झिएमएनपी. 1881. 218. पृ. 32; स्पेरांस्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 172–173; मकारिया. 2nd संस्करण, 7. पृ. 434। वास्तव में, प्रारंभिक preparatory कार्य, तथाकथित 'प्राचीन संस्करण', जो बेशक मेट्रोपॉलिटन मकारिय को ज्ञात था, पाचोमियस लोगोथेतेस द्वारा किया गया था। तुलना करें: क्ल्यूचेव्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 242; hagiographer पाचोमियस, जो सर्बियाई मूल के थे या सर्बिया में पैदा हुए थे, पर देखें: याब्लोंस्की, वी. पाचोमियस द सर्ब एंड हिज हैगियोग्राफिक राइटिंग्स (1908); क्ल्यूचेव्स्की. उपर्युक्त, पृ. 119, साथ ही एक पूर्ववर्ती कृति: नेकरासोव, आई. 'पाचोमियस द सर्ब, एक 15वीं सदी का लेखक' (1871).

पीढ़ियों तक फैली एक युगांतकारी आध्यात्मिक गतिविधि की अवधि थी। एक हद तक, इस दृष्टि ने बाद की पीढ़ियों के ज़ारों और चर्च के उच्च पदाधिकारियों, पुरोहितों और मठवासी समुदाय, कवियों और लेखकों, राजनेताओं और आम समाज के साथ-साथ रूसी यात्रियों और किसानों को भी प्रभावित किया। भिक्षु फिलोथियस और उनके समकालीन सही थे या गलत, यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर हम यहाँ चर्चा नहीं करेंगे; इसका उत्तर देने के लिए, रूसी चर्च और रूसी राज्य के पूरे बाद के इतिहास का पता लगाना होगा। हमारा एकमात्र उद्देश्य यह दिखाना था कि रूसी भिक्षुवाद ने इस धार्मिक-राजनीतिक अवधारणा को बनाने में कितना प्रयास किया।

अध्याय VI. 16वीं-17वीं शताब्दी के विवादात्मक लेखों और विधान में मठों की भूमि-स्वामित्व का प्रश्न

1. 'राजकुमार-भिक्षु' वासियन और उनकी विवादात्मक रचनाएँ

1503 की परिषद के फरमानों – जिन पर हमने अध्याय IV में चर्चा की – ने जोसेफाइट विचारों की विजय का संकेत दिया। उस समय से, जोसेफाइटों ने मॉस्को के धार्मिक जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाना शुरू कर दिया, लेकिन उनके विरोधियों, गैर-स्वामियों ने अपनी लड़ाई की भावना नहीं खोई। उन्हें जल्द ही एहसास हो गया कि जोसेफ और उनके समर्थकों की विजय ने सरकार को विशेष रूप से प्रसन्न नहीं किया था। कुछ दशकों बाद, राज्य-राजनीतिक और आर्थिक हितों द्वारा निर्देशित मास्को सरकार को एक बार फिर से मठों की भूमि-धारिता के मुद्दे को उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा और, यदि 1503 की परिषद के आदेशों को रद्द न करने के लिए, तो कम से कम राज्य के हितों में उनकी समीक्षा करने के लिए तो मजबूर होना पड़ा। नील और पैसियस का श्रेय इस तथ्य में निहित था कि, 1503 की परिषद में अपने भाषणों के माध्यम से, उन्होंने सरकार का ध्यान मठों की जमींदारी की ओर आकर्षित किया और इस मुद्दे को पूरी तरह से धार्मिक जीवन के दायरे से निकालकर राज्य और आर्थिक हितों के दायरे में ला दिया।

अब इस मुद्दे को गैर-अधिग्रहणकर्ताओं, जोसेफाइट्स और सरकार तीनों ही संबोधित कर रहे थे। पहले ने आक्रामक रुख अपनाया, जबकि सरकार ने कुछ उपाय करके इस मुद्दे को हल करने की कोशिश की। हालाँकि, जोसेफाइटों ने रक्षात्मक रुख अपनाया और एक ओर, गैर-अधिग्रहणकर्ताओं पर काबू पाने में, और दूसरी ओर, यह सुनिश्चित करने में सफल रहे कि मठ संपत्तियों के विस्तार के खिलाफ सरकार के उपाय आधे-अधूरे साबित हुए।

1503 की परिषद ने गैर-अधिग्रहणकर्ताओं के उस संघर्ष की शुरुआत को चिह्नित किया, जिसमें उन्होंने यह विचार फैलाया कि मठों की जमींदारियाँ मठों के सामान्य जीवन के लिए हानिकारक थीं। इन दोनों संतों में से किसी ने भी, न तो सोर्स्क के नील ने और न ही यारोस्लाव के पैसियस ने, इस संघर्ष या इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए विवाद में भाग नहीं लिया। वे परिषद के तुरंत बाद निधन हो गए, पहली 1508 में और दूसरी 1503 के बाद। दोनों संतों के लिए, मठ संपत्तियों का मुद्दा एक सिद्धांत और पूरी तरह से तपस्या संबंधी महत्व का मामला था, एक तथ्य जिसे स्वयं वोल्त्स्क के जोसेफ ने भी स्वीकार किया था[226] । हालांकि, नील की मृत्यु के बाद मठ संपत्तियों का विरोध करने वाले विरोधी-स्वामित्व गुट के उन प्रतिनिधियों के मन में अन्य विचार भी थे।

यदि गैर-स्वामित्वधारियों की सामाजिक पृष्ठभूमि पर विचार किया जाए, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मठाधीशों का यह समूह मस्कोवाइट राज्य के बोयारों और सेवा कुलीनों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था। 15वीं–16वीं शताब्दी के कई रूसी तपस्वी बोयार और सेवा कुलीन परिवारों से आए थे, जैसा कि हमने अध्याय III में पहले ही उल्लेख किया है; यह ठीक 15वीं शताब्दी के अंतिम चौथाई भाग में था कि इस वर्ग के काफी संख्या में सदस्यों ने अपनी बोयार की पोशाक को संन्यासी की वेशभूषा से बदल दिया और वोल्गा के पार के मठों में, मुख्य रूप से किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ[227] में, चले गए। यह नहीं भूलना चाहिए कि जोसेफाइटों की विचारधारा का आर्थिक पहलू बोयारों और सैन्य कुलीनों के हितों के विपरीत था। बोयार और कुलीनों की जागीरों के खर्च पर मठों की संपत्ति का बढ़ना इस समूह के लोगों के लिए अत्यधिक अवांछनीय था, क्योंकि इससे उनके वर्ग के राजनीतिक और आर्थिक महत्व में गिरावट आई। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इस सामाजिक वर्ग से आए गैर-स्वामित्ववादियों में इतने सारे भिक्षु थे।

हालाँकि, इस मठाधीशों के समूह को गैर-स्वामित्वधारियों के पक्ष में खड़े होने के लिए केवल आर्थिक कारण ही प्रेरित नहीं कर रहे थे; जोसेफिटों के प्रति उनकी शत्रुता का एक राजनीतिक कारण भी था, क्योंकि वे उत्साहपूर्वक मास्को के शासकों की शक्ति के विस्तार और उनके निरंकुश शासन के सुदृढ़ीकरण को बढ़ावा देते थे। पंद्रहवीं शताब्दी के अंतिम चौथाई भाग में राज्य के शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पुराने रूसी बोयारों के लिए, ये नए

---

[226] उनका प्रबंध 'अनलव्ड पर', में देखें: सप्लीमेंट्स. 10. पृ. 505, 509–510। तुलना करें: पावलोव. ऐतिहासिक निबंध. पृ. 46।

[227] निकोल्स्की। पूर्वोक्त, में: क्रिश्चियन रीडिंग्स 1908, खंड 8, पृ. 178–188।

विचार अपरिचित और अस्वीकार्य थे, क्योंकि वे बोयारों के महत्व को कम करते थे और उनके वर्गीय गर्व को गहराई से आहत करते थे[228] । 'मास्को - तीसरी रोम' का विचार, जिसे जोसेफाइट्स से इतनी उत्साही धर्मनिरपेक्ष समर्थन मिली, बोयारों के बीच कोई प्रतिध्वनि नहीं पा सका, जो चर्च पदानुक्रम के बढ़ते प्रभाव के प्रति सहानुभूति नहीं रख सकते थे।

स्पष्ट रूप से, जोसेफाइट्स के विरोधियों—गैर-स्वामित्ववादियों—ने हिलोथियस की धार्मिक-राजनीतिक विचारधारा को स्वीकार करने की बहुत कम इच्छा दिखाई; 'मास्को ऑर्थोडॉक्स साम्राज्य' की भविष्यवाणी के लिए, वे अपने तपस्वी आदर्शों और सांसारिक से अलौकिक को अलग करने की आवश्यकता के अपने विचारों को त्यागने के लिए तैयार नहीं थे। रूसी मठाधीशों के इस समूह को बोयारों के बीच समर्थक और अनुयायी मिले। वरिष्ठ पैसियस यारोस्लावोव, नील सोर्स्की, इनोकेंटी ओखलेबिनिन—वोलगा के पार के वनों वाले क्षेत्रों में तपस्वी-आध्यात्मिक आंदोलन के संस्थापक और नेता, जिनका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं—कठोर तपस्वी और ईसाई आदर्शवादी थे; उनके विचार सांसारिक मामलों पर अपने समकालीनों के दृष्टिकोण से स्वतंत्र थे, और वे आर्थिक विचारों से पूरी तरह अप्रभावित थे। उनके अनुयायियों, 16वीं सदी के पहले छमाही के तपस्वियों के लिए स्थिति अलग थी, जब उनके कुछ ही आश्रमों में, बोयार वर्ग के कई सदस्यों—जो अपना राजनीतिक प्रभाव खो रहे थे—ने संन्यास की शपथ ली। कठोर मठवासी पोशाक उनके वर्गीय गर्व, उनके अहंकार, या उनके कुलीन रक्त के जुनून को वश में नहीं कर सकी। उन्होंने गैर-स्वामित्ववादियों के कुछ विचारों के लिए जोसेफाइट्स के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि मठ संपत्तियों पर विवाद में उनकी भागीदारी के कारणों का निस्संदेह मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है[229] ।

इस विवाद में प्रमुख व्यक्ति—हालांकि मठों के समृद्धिकरण के एकमात्र विरोधी कतई नहीं—'राजकुमार-संन्यासी' वासियन थे, जिन्हें सांसारिक जीवन में राजकुमार वासिली इवानोविच पत्रीकीव कोसोय के नाम से जाना जाता था। जन्म और पद के अनुसार, वह मॉस्को के महा-राजकुमार के दरबार के सबसे प्रतिष्ठित बोयार परिवारों में से एक से संबंधित थे। पेट्रिकिव राजपरिवार के संस्थापक, लिथुआनिया के ग्रैंड ड्यूक गेडिमिनस (1315–1341) के पोते, 1408 में मास्को गए और ग्रैंड ड्यूक वासिली प्रथम की सेवा में शामिल हो गए। उनके बच्चे और पोते-पोतियाँ पहले से ही प्रिंस पेट्रिकिव के नाम से जाने जाते थे और वे न केवल ग्रैंड प्रिंस के दरबार में प्रमुख पदों पर थे, बल्कि उससे संबंधित भी थे। राजकुमार यूरी पत्रीकेव ने ग्रैंड प्रिंस वासिली प्रथम की बेटी से विवाह किया; उनके पुत्र इवान, जो वासियन के पिता थे, ग्रैंड प्रिंस वासिली द्वितीय और इवान तृतीय के दरबार में प्रमुख बोयार थे[230] । इवान तृतीय ने युवा राजकुमार वासिली इवानोविच को बार-बार विभिन्न राजनयिक मिशन सौंपे[231] । हालाँकि, 1499 की शुरुआत में, पेट्रिकीव राजकुमारों ने दरबार में अपना प्रभावशाली पद खो दिया। ग्रैंड ड्यूकल परिवार के भीतर उत्तराधिकार को लेकर हुए विवाद में, मस्कोवाइट बोयारों की परंपराओं के अनुरूप, उन्होंने 'ग्रीक महिला', ग्रैंड डचेस सोफिया के प्रति शत्रुता रखी, और सिंहासन के उत्तराधिकारी के रूप में ग्रैंड ड्यूक के पोते, दिमित्री का समर्थन किया, न कि उनके बेटे का, वासिली, और षड्यंत्रों और खुले राजवंशीय संघर्ष दोनों में शामिल थे[232] । डिमिट्री के कुछ समर्थकों

---

[228] क्लुचेव्स्की। द बोयार ड्यूमा (1880); वही। कोर्स, खंड 2, अध्याय 27–28; ड्याकोनोव। उपरोक्त (1889); स्टडहलिन। खंड 1, पृ. 244 आदि। बोयार आई. एन. बर्सेंई-बेक्लेमिशेव और मठाधीश मैक्सिम द ग्रीक के बीच प्रसिद्ध 'संवाद' (1525) (एएई, खंड 1, संख्या 172) बोयारों के विचारों का अत्यंत विशिष्ट उदाहरण हैं। लगभग एक सदी तक, मास्को के बोयार अपनी राज्य-राजनीतिक विचारधारा और राज्य के मामलों में अपनी भूमिका को बनाए रखने के लिए लड़ते रहे, और 'ओप्रिचिनिना' (1560 और 1570 के दशक) के युग के दौरान उन्हें अंतिम हार का सामना करना पड़ा। ओप्रिचिनिना पर, प्लेटोनोव देखें। समय की परेशानियों के मस्कोवाइट राज्य में इतिहास पर निबंध (1899, 2रा संस्करण 1912); वही, इवान द टेरिबल (1924); स्टडहलिन, पृ. 269 आदि; हेनरिक वॉन स्टेडेन. ऑफ़ज़िचेनेउंगेन उबर डेन मॉस्काउर स्टाट. संपादित एफ. एपस्टीन द्वारा, में: हैम्ब. विश्ववविद्यालय – विदेशी अध्ययन के क्षेत्र में प्रबंध। खंड 34, श्रृंखला 1, संख्या 5; बुडोव्निक, आई. 'रूसी ऐतिहासिक साहित्य में इवान द टेरिबिल', में: हिस्टोरिकल नोट्स 21 (1947)। पृ. 271–330 (एक विस्तृत ग्रंथसूची के साथ)।

[229] जो कृति हमें गैर-स्वामियों के विचारों के आंतरिक माहौल से सबसे अच्छी तरह परिचित कराती है, वह है: निकोल्स्की, एन. '15वीं–16वीं शताब्दियों और 17वीं शताब्दी की शुरुआत में करिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ में सामुदायिक और कोठरी जीवन', में: क्रिश्चियन रीडिंग्स 1907–1908; और साथ ही: ग्रेचेव। द एल्डर्स ऑफ द वोल्गा रीजन, बीवी (1907) में। 7–8.

[230] पेट्रिकिव परिवार की उत्पत्ति पर, में: पीएसआरएल. 7. पृ. 254.

[231] PSRL. 8. पृ. 227–228, 256; 4. पृ. 164.

[232] इवान तृतीय ने पहले ही अपनी पहली शादी से अपने बेटे, इवान को, अपने सह-शासक और उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त कर दिया था, लेकिन बाद वाला 1490 में अचानक मर गया, और अपने पीछे सात वर्षीय बेटा, दिमित्री, छोड़ गया। ग्रीक महिला सोफिया से अपनी दूसरी शादी में, इवान तृतीय के एक पुत्र, वासिली, हुआ; इस संदेह पर कि वह अपने ही बेटे को उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी, सोफिया की प्रसिद्धि खत्म हो गई, वासिली को कैद कर दिया गया, और 1498 में दिमित्री को ज़ार (!) का ताज पहनाया गया (देखें टिप्पणी 170)। हालाँकि, बाद में, बोयार (अभिजात वर्ग) की साज़िशों के परिणामस्वरूप, इवान III ने उत्तराधिकारी के सवाल पर एक बार फिर से—और इस बार निर्णायक रूप

को मृत्युदंड दिया गया। पैट्रिकीव, पिता और पुत्र, मेट्रोपॉलिटिन के हस्तक्षेप की बदौलत मौत की सजा से बच गए, लेकिन ग्रैंड ड्यूक ने दोनों को भिक्षु बनाने का आदेश दिया। बेटे को, जो अब वासियन नामक भिक्षु था, किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ में निर्वासन के लिए भेज दिया गया[233] ।

वहाँ, मठ की दीवारों के पीछे, उसका नया जीवन शुरू हुआ। हालाँकि, वासियन मठ में ज़्यादा समय तक नहीं रुका: शायद मठ का नियम उसके स्वभाव के अनुकूल नहीं था, इसलिए उसने अपना खुद का तपस्थल बनाया[234] और सोर्सक के वृद्ध नील से मिला, जिन्होंने उसी क्षेत्र में एक तपस्थल में शरण ली थी। इस मुलाकात के बाद (हालांकि यह संभव है कि उसने पहले ही उस बुद्धिमान वृद्ध के बारे में सुना था) , वासियन गैर-स्वामित्व धारकों और उनके तपस्वी विचारों का एक उत्साही समर्थक बन गया, हालांकि, वह उन विचारों को पूरी तरह से साझा नहीं करता था, विशेष रूप से अपने स्वयं के जीवन के तरीके के संबंध में। निलिस और वासियन पूरी तरह से अलग-अलग व्यक्ति थे, और उनके जीवन ने अलग-अलग रास्ते अपनाए। वासियन ने खुद को नीलस का शिष्य माना[235] , लेकिन, ऐसा लगता है, तपस्या के प्रशिक्षण के अर्थ में नहीं; क्योंकि नीलस, जो कोमल-हृदय और आध्यात्मिक अभ्यास तथा चिंतन की ओर झुकाव रखते थे, मस्कोवाइट बोयार के घमंडी, ऊर्जावान और भावुक चरित्र को बदल नहीं सके, और न ही उसमें मठवासी विनम्रता भर सके। उनकी रचनाओं से यह आकलन किया जा सकता है कि वासियन ने बहुत कुछ सीखा, लेकिन उन्होंने नील और वास्तव में, सामान्य रूप से तपस्वी बुजुर्गों से जो ग्रहण किया, वह केवल उनके मौलिक विचार और सिद्धांत थे - अपने स्वयं के जीवन में उनका मार्गदर्शन पाने की तुलना में, मठवासी जीवन के लिए एक सच्चे आदर्श के रूप में उनका बचाव करने के लिए अधिक[236] । एक बोयार परिवार के इस जिद्दी, ऊर्जावान वंशज का चरित्र एक मठ के एकांत को सहन नहीं कर सकता था; उसे एक ऐसे मंच की आवश्यकता थी जहाँ वह नील के विचारों को व्यवहार में ला सके।

प्रसि-भिक्षु वासियन के जीवन और कार्य को पीछे मुड़कर देखने पर, हम देखते हैं कि वह 16वीं सदी के रूसी इतिहास की सबसे आकर्षक हस्तियों में से एक थे। वह एक अनूठे चरित्र के व्यक्ति थे, जिनके व्यक्तित्व और कार्यों में सबसे विपरीत गुणों का मेल था: अहंकार और जुनून; अपने उद्देश्य के प्रति समर्पण और वोल्त्सक के जोसेफ तथा जोसेफियों के प्रति शत्रुता; उस युग से सीमित विद्वता, और एक आलोचनात्मक, विवादास्पद भावना; ईसाई तपस्या के सिद्धांतों को स्वीकार करना और अपनी स्वयं की गैर-तपस्वी जीवन शैली; अंत में, मठ संपत्तियों और राज्य तथा राजनीति के मामलों पर ट्रांस-वोलगा संतों के विचारों का पालन – एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपने विश्वासों और अपने गुट के लिए दृढ़ता और प्रबलता से लड़ाई लड़ी, भले ही वह यह जानता था कि उसके विरोधी अधिक शक्तिशाली थे और उसकी जीत की लगभग कोई संभावना नहीं थी। इसके अलावा, जब उसका भाग्य पहले ही तय हो चुका था, तो अपने बोयार चरित्र के अनुरूप, उसने व्यंग्य और तीखापन के साथ अपनी सज़ा का सामना किया।

1503 की परिषद के फरमानों ने, जो नील के प्रस्ताव के विपरीत, मठों के भूमि स्वामित्व के अधिकारों की पुष्टि करते थे, वासियन को मठों की अनासक्तता की वकालत करने और नील के तपस्वी विचारों की रक्षा के लिए पत्रकारिता के हथियार का उपयोग करने का एक अच्छा बहाना प्रदान किया[237] । वासियन को उस समय की स्थिति की इतनी अच्छी समझ थी कि वह यह महसूस कर सके कि यदि संघर्ष दुनिया से दूर किसी रेगिस्तान से लड़ा जाता तो जोसेफिटों से लड़ना व्यर्थ होगा। विजय प्राप्त जोसेफिटों के खिलाफ एक विवादात्मक लेखन के लिए केवल मास्को ही एक उपयुक्त मंच हो सकता था। यह स्पष्ट नहीं है कि वासियन ने 1503 की परिषद के सत्रों में भाग लिया था या

से—वासिली के पक्ष में पुनर्विचार किया, जबकि दिमित्री को उसकी माँ एलेना के साथ निर्वासन में भेज दिया गया; वासिली के शासनकाल (1505–1533) के दौरान, वह (1509 में) मर गया, संभवतःकार्बन मोनोऑक्साइड से दम घुटने से। दोनों पेत्रिकीव, पिता और पुत्र, दिमित्री के गुट से थे।

[233] PSRL. 12. पृ. 248; रीडगिस. 1847. 9. खंड 4. पृ. 9.

[234] PSRL. 7. पृ. 236; रीडगिस. 1847. 9. भाग 4. पृ. 9.

[235] पूरक। 10. पृ. 505। वासियन का नील का एक उत्साही अनुयायी होना इस बात से सबसे अच्छी तरह स्पष्ट होता है कि उन्होंने 'द हरमिट मॉंक वासियन' नामक ग्रंथ लिखा, जो 'प्रव. सोब. 1863. 3' में प्रकाशित हुआ। पृ. 204–210। वासियन नीलस को अपना आध्यात्मिक पिता और स्वयं को उनका शिष्य कहते हैं। वही, पृ. 208।

[236] झमाकिन। मेट्रोपॉलिटिन डेनियल। पृ. 65. हमारी दृष्टि में, ज़िनोवी ओटेन्स्की द्वारा प्रदान किया गया वासियन का अत्यधिक नकारात्मक चित्रण (The Testimony of Truth, पृ. 900) पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं माना जा सकता, क्योंकि ज़िनोवी अंततः जोसेफ़ाइट्स के प्रति सहानुभूति रखते थे, और उन्होंने अपना वृत्तांत वासियन के 1531 के निर्वासन के बाद लिखा था।

[237] झमाकिन। पूर्वोक्त, पृ. 65; झमाकिन की रचना में हमें वासियन और, अधिक सामान्य रूप से, गैर-स्वामित्ववादियों और जोसेफिटों के विचारों और गतिविधियों का एक सही मूल्यांकन मिलता है; मेट्रोपॉलिटिन मकारी बुलगाकोव की *रूसी चर्च का इतिहास* (दूसरा संस्करण, खंड 6, पृ. 195–204) बहुत वस्तुनिष्ठ नहीं है, क्योंकि वह, रूसी धार्मिक पदानुक्रम के अन्य प्रतिनिधियों की तरह (यहाँ तक कि 19वीं सदी में भी), वोल्त्सक के जोसेफ के विचारों के प्रति सहानुभूति रखता था।

नहीं, क्योंकि कुछ लोगों का मानना है[238] ; वासियन ने स्वयं परिषद की कार्यवाही में अपनी भागीदारी के बारे में स्पष्ट रूप से नहीं बताया। वह शायद ग्रैंड प्रिंस इवान की मृत्यु (अक्टूबर 1505) के बाद मास्को पहुँचे[239] । बहुत जल्द, वासियन ने ग्रैंड प्रिंस के दरबार के साथ अच्छे संबंध स्थापित कर लिए: न केवल वह नए ग्रैंड प्रिंस, वासिली, की कृपा हासिल करने में कामयाब रहा, बल्कि उसने शासन के मामलों में उस पर प्रभाव भी डाला[240] । इस संबंध में , यह पूछना उचित है कि क्या वासियन ने नए मेट्रोपॉलिटन वरलाम (1511–1521) की नियुक्ति में कोई भूमिका निभाई थी। यह नियुक्ति बिशपों की परिषद के बिना, ग्रैंड प्रिंस के आदेश से की गई थी, जिन्होंने वरलाम को मेट्रोपॉलिटन पद के लिए नामांकित किया था। केवल यह परिस्थिति ही दिलचस्प नहीं है, बल्कि यह तथ्य भी है कि वरलाम गैर-स्वामित्ववादियों के प्रति सहानुभूति रखते थे और साइमनोव मठ के मठाधीश थे, जहाँ उस समय वासियन रह रहे थे और वे सम्मानित मठाधीश को अच्छी तरह जानते थे। यह संभव है कि वासियन ने ग्रैंड प्रिंस वासिली को सुझाव दिया हो कि वरलाम को मेट्रोपॉलिटन पद के लिए नामांकित किया जाए। यदि वास्तव में ऐसा था, तो यह वासियन का बहुत बड़ा श्रेय है, क्योंकि वरलाम मस्कोवी के धार्मिक पदानुक्रम के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधियों में से एक हैं[241] ।

वासियन की साहित्यिक और विवादात्मक गतिविधि मुख्यतः *1508–09 और* 1515–17 के बीच की अवधि में आती है।[242] वासियन की निम्नलिखित कृतियाँ संरक्षित हैं: 1) 'नील और उनके शिष्य वसियन द्वारा वोल्त्सक के मठाध्यक्ष जोसेफ के लिए लिखी गई प्रस्तावना, जिसमें ईश्वर और प्रार्थना को समझने तथा उनका पालन करने के तरीके बताए गए हैं'; 2) 'उन लोगों को उत्तर जो सुसमाचार की सच्चाई और मठवासी जीवन तथा चर्च के संगठन की निंदा करते हैं'; 3) 'सोर के नीलस के शिष्य वासियन द्वारा वोल्त्सक के जोसेफ पर एक संकलन, जो निकोन के पवित्र नियमों[243] और कई लेखों से लिया गया है'; 4) 'उसी भिक्षु और तपस्वी वासियन द्वारा, वोल्त्सक के मठाधीश जोसेफ पर, पवित्र नियमों और कई पुस्तकों से लिया गया एक संकलन, और उनके शिष्यों, और पुस्तकों से विभिन्न उत्तरों के आदान-प्रदान के बारे में' (यह कृति वास्यान और जोसेफ के बीच संवाद के रूप में है और कृतियों 2 और 3 के लिए

---

[238] मकारी। 2रा संस्करण। 6. पृ. 127; ख्रुश्चेव। उद्धृत ग्रंथ, में: प्राचीन और आधुनिक रूस। 1875. 3. पृ. 270.

[239] संकलित कृतियाँ। 1863। खंड 3। पृ. 207। गोलुबिन्स्की के अनुसार, वासियन केवल दुर्भाग्यपूर्ण राजकुमार दिमित्री की मृत्यु के बाद ही मास्को पहुँचे, जिनकी मृत्यु 14 फरवरी 1509 को हुई थी। गोलुबिन्स्की। खंड 2, भाग 1। पृ. 654।

[240] फेरापोंतोव मठ के भिक्षु पैसियस, वासियन के दरबार में बार-बार आने और महान राजकुमार के साथ उसकी लंबी 'दिल से दिल की बातचीतों' का उल्लेख करते हैं; वासिली के दूसरे विवाह (1525) पर उनके ग्रंथ को देखें, जो इस में है: रीडिगर। 1847. 8; तुलना करें: इस कृति पर मकारी की राय (दूसरा संस्करण 6. 175); और यह भी: पावलोव। ऐतिहासिक निबंध। पृ. 87; गोलुबिन्स्की। 2. 1. पृ. 732, 892। एक अन्य समकालीन, मिखाइल मेदोवार्त्सेव, जो वासियन को व्यक्तिगत रूप से अच्छी तरह जानते थे, उन्हें वासिली का एक प्रिय, 'अपने समय का एक महान व्यक्ति' कहते हैं, इसमें: रीडिगर। 1847. 7. खंड 2. पृ. 11. वासिली का वासियन में विश्वास आधिकारिक दस्तावेजों में भी पाया जा सकता है: 1523 में, काज़ान तातारों के खिलाफ एक अभियान पर निकलते समय, वासिली ने वासियन की उपस्थिति में मेट्रोपॉलिटन डैनियल को अपनी वसीयत सौंपी। SGGD. 1. संख्या 150. पृ. 416। गोलुबिन्स्की (2. 1. पृ. 654) का मानना है कि वासिली ने विशिष्ट धार्मिक और राजनीतिक कारणों से वासियन को तरजीह दी, ताकि मठों की संपत्तियों के विवादास्पद मुद्दे में चर्च पदानुक्रम के खिलाफ उसका उपयोग किया जा सके।

[241] बर्लाम की नियुक्ति पर: PSRL. 6. पृ. 252; Herberstein. Op. cit. (1926). पृ. 66. बर्लाम के नैतिक चरित्र के बारे में, वह कहते हैं: 'जब मुझे वहाँ भेजा गया था (1517 में मास्को की अपनी पहली यात्रा का संदर्भ देते हुए – I. S.), मेट्रोपॉलिटन बार्थोलोम्यू (यानी वरलाम – I. S.) थे, जिन्हें एक पवित्र व्यक्ति माना जाता था' (उपरोक्त, पृ. 66)। इस कृति में वरलाम की बाद की नियति को समर्पित निम्नलिखित अनुच्छेद पूरी तरह से वास्तविकता के अनुरूप नहीं है। तुलना करें: गोलुबिन्स्की। 2. 1. पृ. 637–645; गैर-स्वामित्ववादियों के विचारों के साथ वरलाम की निकटता पर: पीएसआरएल। 6. पृ. 252; 8. पृ. 252। दुर्भाग्य से, मेट्रोपॉलिटन वरलाम के बारे में जानकारी बहुत कम है।

[242] अपने एक ग्रंथ में, वासियन जोसेफ के एक उत्तर का उल्लेख करते हैं, जिनकी मृत्यु 9 सितंबर 1515 को हुई थी। जोसेफ का यह उत्तर अज्ञात है; यह माना जा सकता है कि वासियन के दरबार में प्रभाव के कारण जोसेफ की विवादास्पद गतिविधियों में बाधा आई थी। हालाँकि, बोयार वी. ए. चेलाडनिन को जोसेफ का लिखा एक पत्र मिला है, जिसमें वह उससे अपने 'लेखों' के लिए, या जैसा कि हमारा मानना है, वासियन के हमलों के जवाब को प्रसारित करने की अनुमति के लिए ग्रैंड ड्यूक से मध्यस्थता करने के लिए कहता है। तुलना करें: ख्रुश्चेव. पूर्वोक्त, पृ. 260. 1517 तक, वासियन अपनी *कोर्मचाया* पहले ही पूरी कर चुके थे; यह एक कठिन और बहुत विशाल कृति थी, जिसे पूरा करने में दो से तीन साल लगे; इसलिए यह माना जा सकता है कि विवादास्पद कार्य 1515 से पहले लिखे गए थे। इन विवादास्पद कार्यों की रचना ने वासियन को कैननिक नियमों के एक संग्रह की ओर मुड़ने के लिए मजबूर किया, जिसका उद्देश्य उनके विवादास्पद तर्कों को विशेष महत्व देना था।

[243] वासियन निकॉन द मोंटेनेग्रो (मृत्यु लगभग 1092), जो एंटिओक के राइफ मठ के एक भिक्षु थे, का उल्लेख कर रहे हैं। निकॉन की रचनाएँ, *पंडेक्ट्स* और *टैक्टिकन*, प्राचीन रूस में व्यापक रूप से प्रसारित और अत्यधिक सम्मानित थीं। गोलुबिन्स्की, 1. 1. पृ. 910–912; श्रेज़नेव्स्की, आई. 'द पंडक्ट्स ऑफ़ निकॉन ऑफ़ मोंटेनेग्रो', *प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द एकेडमी ऑफ़ साइंसेज़* में। 21. पृ. 194; सोकोलोव, आई. '9वीं शताब्दी के मध्य से 12वीं शताब्दी की शुरुआत तक: 842–1204, बाइज़ेंटाइन मठवाद की नैतिक और बौद्धिक स्थिति', में: लीगल कलेक्शन 1893. 2, 3. पृ. 608–610.

एक प्रकार की उपसंहार के रूप में कार्य करती है)[244] । एक विशेष 'प्रबंध' जिसे वसियन ने अपनी *कोर्मचाया* के उपसंहार के रूप में रचा था – एक बहुत ही संक्षिप्त कृति 5) *'एक निश्चित एल्डर द्वारा दुनिया को अस्वीकार करने के संबंध में पवित्र धर्मग्रंथ से अपने व्रत की स्मृति पर एक संग्रह'*[245] । और अंत में, 6) उनका 'कोरमचाया', प्राचीन रूस की चर्च द्वारा उपयोग किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक-कानूनी ग्रंथ का एक आलोचनात्मक संस्करण[246] ; वासियन का मानना था कि यह उनके अन्य कार्यों में प्रस्तुत विचारों की निर्णायक रूप से पुष्टि करेगा और गैर-स्वामित्वधारकों की निर्विवाद धार्मिकता को साबित करेगा।

ऊपर सूचीबद्ध वासियन की कृतियाँ विषय-वस्तु के मामले में एक-दूसरे से भिन्न हैं। 'प्रस्तावना' (1) सामान्य प्रकृति के मामलों से संबंधित है। यहाँ, अन्य बातों के अलावा, लेखक प्रार्थना पर अपना दृष्टिकोण व्यक्त करता है, जो पूरी तरह से सोरा के नीलस के तपस्वी-रहस्यवादी विचारों के अनुरूप है, अर्थात्: प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के लिए, प्रार्थना आध्यात्मिक संघर्ष में एक हथियार है और अपनी 'भीतरी कोठरी' में प्रवेश करने का एक साधन है; इसकी गहराई और शक्ति धार्मिक अनुष्ठानिक गायन की सुंदरता में नहीं निहित है। वासियन के लिए, यह कथन न केवल उनके तपस्वी विचारों की अभिव्यक्ति है, बल्कि जोसेफाइट बाहरी भक्ति के औपचारिकतावाद की एक आलोचना भी है। 'उत्तर में वचन' (2) विशेष रूप से वासियन की वाद-विवाद की प्रवृत्तियों के सिद्धांतों और स्वभाव को दर्शाता है। यहाँ वह मठवासी संकल्पों की औपचारिक व्याख्या की आलोचना करते हैं और यह मांग करते हैं कि एक भिक्षु मसीह की आज्ञाओं का पालन न केवल बाहरी रूप से बल्कि अपने तपस्वी (मठवासी) जीवन में आंतरिक रूप से भी करे। ये आज्ञाएँ आत्म-त्याग और आत्म-बलिदान, सांसारिक वस्तुओं और मूल्यों का परित्याग करने की मांग करती हैं। हालाँकि, वास्तविकता में, क्योंकि मठ किसानों द्वारा बसाई गई भूमि के मालिक हैं, और इससे जुड़ी आर्थिक जिम्मेदारियों के कारण, वासियन के दृष्टिकोण में, मठवाद मसीह की आज्ञाओं की पूरी तरह से अवहेलना करते हुए रहता है[247] । सुसमाचार के अनुसार मठवासी जीवन को संगठित करने की आवश्यकता के बारे में बात करते हुए, वासियन का एक विशिष्ट उद्देश्य है – मठवाद को उसकी ईसाई तपस्वी जड़ों पर वापस लाना: 'हम मूल आध्यात्मिक सुंदरता और पोषण पर लौटना चाहते हैं'[248] । इस कृति में, वासियन हमारे सामने एक विशेष तपस्वी आंदोलन के प्रतिनिधि के रूप में, अपने व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव के प्रवक्ता के रूप में प्रकट होते हैं; हालाँकि, उनकी दूसरी कृति – *संतों के नियमों का संग्रह* (3) – एक विशिष्ट आलोचनात्मक और विवादात्मक ग्रंथ है, जो 'भौतिकवादी' लोगों, और मुख्य रूप से जोसेफ के दावों का खंडन करने का एक प्रयास है। जोसेफ ने मठ संपत्तियों की आवश्यकता और अनुमेयता के संबंध में अपने दावों को प्राचीन रूसी मठों के संस्थापकों और तपस्वियों के जीवन से लिए गए उदाहरणों के साथ सही ठहराया। वासियन इन तर्कों को शुरुआती ईसाई तपस्वियों - मिस्र के पाकोमियस, फिलिस्तीन के यूथिमियस, सावस और थियोडोसियस के जीवन का हवाला देकर चुनौती देते हैं[249] - और लिखते हैं कि ये शुरुआती ईसाई तपस्वी गैर-स्वामित्व वाले थे और उन्होंने सांसारिक वस्तुओं के त्याग और महान कठिनाइयों का जीवन जिया। वासियन यह दावा नहीं करते कि इन और अन्य तपस्वियों के पास, मठों के मठाधीश के रूप में सेवा करते हुए, अपने पास कोई मठ संपत्ति नहीं थी; वह केवल इतना कहते हैं कि 'उनके पास गाँव थे, लेकिन उनका उनसे कोई लगाव नहीं था'। वासियन धार्मिक संस्थानों के भूमि-स्वामित्व के अधिकारों पर विवाद नहीं करते; वह ऐसे अधिकारों को धर्मप्रांत के बिशपों और पैरिश चर्चों के लिए स्वीकार करते हैं, और केवल यह मांग करते हैं कि इन संपत्तियों और उनके उपयोग से कैनन का उल्लंघन न हो[250] . लेकिन उनके दृष्टिकोण में, मठवासी जीवन को किसी भी संपत्ति के दावों से मुक्त होना चाहिए; इस मामले में वह नीलस के एक वफादार अनुयायी हैं[251] । वासियन की राय में, मठों की

---

[244] देखें: मठाधीश-राजकुमार वासियन पत्रीकेव की विवादात्मक रचनाएँ, में: लीगल कलेक्शन 1863। 3. प्रथम – पृ. 102–104; द्वितीय – पृ. 104–112; तृतीय – पृ. 180–206; चतुर्थ – पृ. 206–210। पहला प्रबंध दूसरे और तीसरे के लिए एक प्रस्तावना का काम करता है।

[245] देखें: टिकोणरावोव। रूसी साहित्य और प्राचीनता का क्रॉनिकल। 5 (1863)। खंड 3। पृ. 139–141।

[246] *कोर्मचाया कनगिा*, या *कोर्मचाया* – जो पवित्र प्रेरितों, सार्वभौमिक और स्थानीय परिषदों, और पवित्र पिताओं के नियमों का एक संग्रह है – के बारे में देखें: हरमन। *डे फोंटिबस जुरिस एक्लेसियास्टिकी रूसोरम*। पृ. 23 से आगे (एक विस्तृत ग्रंथसूची के साथ); रूसी संस्करणों पर, देखें: मकारी। 8. पृ. 143 से आगे; गोलुबिंस्की। 1. 1. पृ. 659.

[247] कैनन संग्रह, 1863। खंड 3। पृ. 104–112।

[248] उपरोक्त, पृ. 183।

[249] पावलोव ने वासियन के दावों के ठोस ऐतिहासिक आधार को प्रदर्शित किया। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 69, टिप्पणी। यह ध्यान देने योग्य है कि 11वीं-13वीं शताब्दियों में मठों की जमींदारियाँ – जोसेफ ने गुफाओं के संत थियोडोसियस का भी उल्लेख किया है – 15वीं शताब्दी के अंत और 16वीं शताब्दी की शुरुआत की जमींदारियों से पूरी तरह से अलग प्रकृति की थीं। तुलना करें: गोलुबिंस्की। खंड 1, संख्या 1 (1880)। पृ. 435।

[250] 'ए डेबेट… विद द एल्डर वास्यान', *रीडिंग्स* में: 1847. 9, 6; *कलेक्टिड वर्क्स*. 1863. 3. पृ. 200–210, 192; *एडिशन्स*. 10. पृ. 505.

[251] सेंट नील ऑफ सोरा और मठवासी जीवन पर उनका नियम (1864)। पृ. 7–9, 175.

संपत्तियाँ, भले ही वे बहुत मामूली ही क्यों न हों, भिक्षुओं में नई संपत्तियाँ हासिल करने की लालसा जगाती हैं: वे धनी लोगों से विनती या धोखे से मठ के लिए उपहार जबरदस्ती लेने लगते हैं, मामूली-सी जमीन के टुकड़ों को लेकर पड़ोसियों के साथ कानूनी विवादों में पड़ते हैं, और दस्तावेजों में हेरफेर करने तथा अधिकारियों को धोखा देने से भी नहीं हिचकिचाते[252] ।

वासियन के लिए, जो अमीर और सत्ता-लोलुप बोयारों की श्रेणी से आए थे, यह काफी असामान्य था कि उन्होंने अपनी वाद-विवाद में विशुद्ध रूप से सामाजिक मुद्दों को भी उठाया, अर्थात् मठ के किसानों की दुर्दशा का प्रश्न। इस प्रकार, किसान प्रश्न पर, राजकुमार-भिक्षु वासियन पत्रीकेव पहले रूसी उदारवादी के रूप में उभरते हैं। वह मठवासी व्यवस्था—सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से मठाध्यक्षों और उन भिक्षुओं को जो मठों की जमींदारियों का प्रबंधन करते थे—पर मठवासी किसानों की मेहनत का शोषण करने का आरोप लगाते हैं; वह भिक्षुओं के समृद्ध और आरामदायक जीवन की तुलना किसानों के कठिन जीवन से करता है, और किसानों की थका देने वाली दैनिक मेहनत, उनके सादे और कम भोजन, उनके खराब आवास, और मठ के प्रति उनकी गरीबी और कर्जदारी के बारे में बताता है, जिसके कारण किसान दासता में पड़ जाते हैं[253] ।

वासियन के विवादास्पद लेखन को पढ़कर, हम उस ऊर्जा और जुनून को देख सकते हैं जिसके साथ उन्होंने इन मुद्दों पर चर्चा करने के लिए खुद को समर्पित किया। इस विषय पर एक पूरी तरह से सिद्धांतपरक चर्चा और नील ऑफ सोर्स्क जैसे तपस्या के अनुभव वाले भिक्षुओं की उदासीनता, वासियन को संतुष्ट नहीं कर सकती थी। वासियन के लेखों में, हम उनके उबलते हुए गर्म बोयार खून, उनके जुनून, उनके अडिग रवैये और अपने विरोधियों— के जोसिफ्लियान्स—के प्रति उनके क्रोध को महसूस कर सकते हैं; उनकी भाषा तीक्ष्ण है, उनके निर्णय पैने हैं; वह अकेला रह जाने पर भी पीछे नहीं हटता, जब वह देखता है कि उसकी स्थिति (जैसा कि नीचे चर्चा की जाएगी) लगभग निराशाजनक है। इसी कारण, उन्होंने मॉस्को में कई दुश्मन बना लिए जिन्होंने उन पर कठोर निर्णय सुनाया; इसके अलावा, उन्हें चर्च के इतिहासकारों से तीखी और आंशिक रूप से अनुचित आलोचना का सामना करना पड़ा[254] ।

2. मठों की भूमि स्वामित्व के खिलाफ अन्य कृतियाँ

अपने कार्यों को लिखने के समय, 1503 और 1517 के बीच, यदि उनके विचारों ने मेट्रोपॉलिटन बरलाम से कुछ सहानुभूति और ग्रैंड प्रिंस से मौन समर्थन न प्राप्त किया होता, तो वासियन अपने उद्देश्य के लिए लगभग एक अकेला योद्धा ही रह जाता। 1517 के बाद, वासियन को नया समर्थन मिला - उन्हें माउंट अथोस के संन्यासी, प्रसिद्ध मैक्सिमिस द ग्रीक में एक सहयोगी मिला। यह विदेशी, माउंट अथोस पर वाटोपेडी मठ का एक संन्यासी जो संयोग से मास्को आया था, एक असाधारण व्यक्ति और रूसी चर्च के इतिहास में एक प्रमुख हस्ती था। गोल्बुंस्की लिखते हैं, 'आदरणीय मैक्सिम हमारे चर्च के इतिहास में एक ऐसी हस्ती हैं, जो एक ओर पूरी तरह से आकस्मिक हैं, और दूसरी ओर, उस इतिहास में उतने ही प्रसिद्ध हैं जितने कि वे इसके विद्वतापूर्ण अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं'[255] ।

मॉस्को में उनके आगमन से पहले के जीवन के बारे में जानकारी खंडित और अविश्वसनीय है[256] । उनका जन्म 1470 और 1475 के बीच अल्बानिया के आर्टा शहर में एक ग्रीक परिवार में हुआ था, जो शायद संपन्न था, क्योंकि उनके माता-पिता इटली में उनके लंबे अध्ययन के दौरान अपने बेटे का समर्थन कर सके। मैक्सिमिस वेनिस, फेरारा, पडुआ, फ्लोरेंस और अन्य शहरों में गए, जहाँ वे इतालवी विद्वता के श्रेष्ठतम मस्तिष्कों के अधीन अध्ययन करने में सक्षम थे; उन्होंने न केवल ईसाई लेखन बल्कि शास्त्रीय साहित्य (हेसियोड, होमर, थ्यूसीडाइड्स, प्लूटार्क), साथ ही ग्रीक 'बाहरी दार्शनिकों' ('बाहरी ऋषियों द्वारा संकलित') के कार्यों का भी अध्ययन किया, जैसा कि उनके

---

[252] संकलित कृतियाँ 1863. 3. पृ. 109, 110; तुलना करें: आर्खान्गेल्स्की. नील ऑफ सोरा और वासियन पेट्रिकेव. पृ. 72; मैक्सिमिस द ग्रीक. कृतियाँ 2. पृ. 37, 89, 41, 95, 110। इस तथ्य की पुष्टि कि वासियन ने अपनी बातें वाद-विवाद की गर्माहट में नहीं कहीं, स्टोग्लाव परिषद के आधिकारिक प्रस्ताव से होती है, जो यहाँ दिया गया है: AAE. 1. संख्या 227. पृ. 218।

[253] संकलित कृतियाँ 1863। खंड 3। पृ. 112, 187, 105, 184, 109, 190, 184। हमारा मानना है कि मैक्सिमिस द ग्रीक की कृतियों में मस्कोवाइट रूस में किसानों की स्थिति पर कई टिप्पणियों की उपस्थिति वासियन के प्रभाव से जुड़ी है; तुलना करें: मैक्सिमिस द ग्रीक। कृतियाँ, खंड 2। 'कहानी' – पृ. 94, 98–100; 'पश्चाताप पर एक उपदेश' – पृ. 130, 131, 132; 'आत्मा के लिए लाभकारी एक उपदेश' – पृ. 34, 38.

[254] माका□□। द्वितीय संस्करण। 6. पृ. 141, 205। तुलना करें: झमाकिन। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 65।

[255] गोल्बुइंस्की। खंड 2, भाग 1. पृ. 665। मैक्सिमिस द ग्रीक पर साहित्य अपेक्षाकृत व्यापक है; प्रमुख कृतियों में शामिल हैं: इकोनिकोव (1915); और साथ ही: क्लॉस्टरमैन, आर. ए., 'माक्सिम ग्रीक इन डेर लेगेन्डे', में: ZfKG. 53 (1943)। पृ. 177–228; डेनसिॉफ़, ई., *मैक्सिमि ले ग्रीक एट ल'ओक्साइडेंट*. पेरिस-बौवेन, 1943. पृ. XIX–XXXIV.

[256] ऊपर उल्लिखित ई. डेनिसोव का ग्रंथ देखें, जिसमें उन्होंने विभिन्न इतालवी और ग्रीक स्रोतों और साहित्य के आधार पर, मक्सिम के जीवन को उनके बचपन से लेकर मॉस्को आने तक ट्रेस करने का प्रयास किया है। तुलना करें: गोलुबिंस्की. 2. 1. पृ. 667 ff.

लेखन और ग्रैंड प्रसि बेसलि को लखि उनके पत्र[257] से स्पष्ट है। उस समय मैक्समिस के जीवन की सबसे बड़ी घटना सावोनारोला से उसकी मुलाकात थी[258] । उस युवा ग्रीक ने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि वह स्वयं फ्लोरेंस के उपदेशक की दुखद नयिति को दोहराएगा, या कि वह दृढ़ता और नैतकि महानता में उसकी बराबरी कर पाएगा। शायद, अपने जीवन के अंतमि वर्षों में, मक्समि ने मन ही मन सावोनारोला की नयिति के उदाहरण की कल्पना की और इस 'तपस्वी, अत्यंत धर्मनष्ठि और दैवीय उत्साह से सुसज्जति' की अपनी यादों में सांत्वना पाई[259] । 'धर्मनरिपेक्ष दार्शनकि' मक्समि को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं कर सकते थे; ईसाई धर्म और पूर्वी चर्च की शकि्षाओं में नहिति, उन्होंने धार्मकि धर्मशास्त्र और ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत के गहन अध्ययन के लिए प्रयास कयि; उन्होंने आंतरकि ईसाई पूर्णता की भी खोज की। और इस प्रकार, लगभग 1507 में, वह माउंट अथोस के लिए रवाना हो गए, क्योंकि उस समय पवत्रि पर्वत के भकि्षु ऑर्थोडॉक्सी का एक दुर्ग थे।

यह इतालवी पुनर्जागरण के मानवतावादी माहौल से बलि्कुल अलग एक दुनिया थी - माउंट अथोस के मठों, स्केट्स और सेलों में पाई जाने वाली शांति और जीवन की वशिष्टि शैली की दुनिया, जहाँ भकि्षु 11वीं, 16वीं और 19वीं शताब्दी में लगभग एक ही तरह से रहते थे, – और उनका जीवन इतालवी शहरों की रंगीन चहल-पहल से बलि्कुल अलग था। वाटोपेडी मठ में, मैक्समि को अपने धर्मशास्त्रीय अध्ययन के लिए एक आश्रय मलि; यहीं उन्होंने अपने संन्यासी संस्कार ग्रहण कए और उनका मुंडन कयि गया। माउंट अथोस पर, मैक्समि एक व्यक्ति, एक वद्विान और एक धर्मशास्त्री के रूप में वकिसति हुए; उन्होंने ऑर्थोडॉक्स चर्च धर्मशास्त्र के क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त कयि—एक ऐसा ज्ञान जो व्यापक और गहन दोनों था, जसिकी एक झलक उनके कार्यों से मलिती है। फरि भी, पवत्रि पर्वत का वातावरण कसिी भी तरह से इटली में उनके अध्ययन के फलों को नष्फिल नहीं कर सका। उनके वद्वितापूर्ण कार्यों में, हमें शास्त्रीय दर्शन और ईसाई धर्मशास्त्र के ज्ञान का एक शानदार संयोजन मलिता है; हालाँकि, मैक्समि के लिए, चर्च और पवत्रि पतिाओं की शकि्षा का प्राथमकि और नर्विवाद अधकिार है[260] । वाटोपेडी मठ में मैक्समिस के वद्वितापूर्ण कार्य[261] दस वर्षों तक जारी रहे ; माउंट अथोस समुदाय की नजर में, उन्होंने महान धर्मशास्त्रीय अधकिार प्राप्त कयि, क्योंकि यह कोई छोटी वजह नहीं थी कि यह जम्मिेदार कार्य उन्हें सौंपा गया था।

1515 में, महा राजकुमार ने पवत्रि पर्वत के सभी मठों के लिए उपहारों और पवत्रि पर्वत के आर्चमिांड्राइट को संबोधति एक पत्र के साथ माउंट अथोस के लिए दो दूत भेजे। महान राजकुमार ने उनसे अनुरोध कयि कि स्लावोनकि भाषा जानने वाले सावा नामक एक भकि्षु को कुछ समय के लिए मास्को की यात्रा करने की अनुमति दें: महान राजकुमार के पुस्तकालय में टप्पिणयिों सहति एक ग्रीक भजन-संग्रह (Psalter) मलि था, और महान राजकुमार इसे अनुवादति करवाना चाहते थे। बीमारी और वृद्धावस्था के कारण, भकि्षु सव्वा इतना लंबा और कठनि सफर तय करने में असमर्थ थे। इसलिए आर्चमिांड्राइट ने इस कार्य के लिए भकि्षु मैक्समि को चुना, भले ही वह न तो स्लावोनकि बोलते थे और न ही रूसी। हालाँकि, आर्चमिांड्राइट, जो उसकी क्षमताओं और भाषा-वद्यिा की शकि्षा से अवगत थे, ने आशा की (और इस बारे में उन्होंने ग्रैंड ड्यूक को अपने जवाब में लखिा भी) कि भकि्षु मैक्समि बहुत जल्दी स्लावोनकि भाषा सीख जाएगा और ग्रैंड ड्यूक की इच्छा को पूरा कर पाएगा। इस प्रकार, काफी अप्रत्याशति रूप से, भकि्षु मैक्समि को वाटोपेडी मठ छोड़ना पड़ा - जैसा कि उन्होंने सोचा था, केवल थोड़ी देर के लिए - और वह मॉस्को के लिए रवाना हो गए। लेकनि वह यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वह पवत्रि माउंट अथोस को हमेशा के लिए छोड़ रहा है, या कि मॉस्को में उसका एक असाधारण भाग्य इंतजार कर रहा है - एक ऐसा भाग्य जो उसे रूस के आध्यात्मकि इतहिास में एक प्रमुख हस्ती बना देगा, और साथ ही अप्रत्याशति मोड़ लेगा और एक त्रासदी में समाप्त होगा[262] ।

4 मार्च 1518 को, एक अपेक्षाकृत लंबी यात्रा के बाद, Maksim मास्को पहुँचे। उनके जीवन में एक बलि्कुल नया युग शुरू हुआ, जसिने एक ओर उन्हें व्यापक श्रद्धा और अनौपचारकि प्रशंसा दलिाई, और दूसरी ओर,

---

[257] भजन संहति के अनुवाद के संबंध में ग्रैंड प्रसि को मैक्समिस का पत्र देखें: सप्लीमेंट्स. 18. पृ. 184.

[258] मैक्समिस द ग्रीक। कृतयिाँ, खंड 3, पृ. 158, 194।

[259] उपरोक्त, पृ. 158.

[260] गुज़दीय, एन. 'मैक्समिस द ग्रीक और पुनर्जागरण के प्रति उनका दृष्टकिोण', में: कीव वश्विवद्यिालय, 1911, खंड 7.

[261] मैक्समिस द ग्रीक। कृतयिाँ, खंड 2, पृ. 377.

[262] मकाराई। 2रा संस्करण। खंड 6। पृ. 159–160; पीएसआरएल। खंड 6। पृ. 257; खंड 8। पृ. 259; डेनसिॉफ। उपरोक्त संदर्भ, पृ. 329–333। व्रेमेनकि. 5. खंड 3. पृ. 30 में ग्रैंड प्रसि का पत्र और वाटोपेडी मठ के आर्चमिैंड्राइट की प्रतकि्रयिा (अधूरा); मेट्रोपॉलटिन बरलाम को पत्र, एआई. 1. संख्या 122 में।

जोसेफाइट-समर्थक पदानुक्रम के हाथों कई कठनिाइयाँ और अयोग्य उत्पीड़न भी लाया। उनका अपना जीवन-यात्रा 16वीं सदी के रूसी धार्मकि इतहिास की घटनाओं से घनष्ठि रूप से जुड़ी हुई साबति हुई, और उन्होंने अपने लेखों में, वशिेष रूप से मास्को - 'तृतीय रोम' में चर्च की स्थतिि की आलोचना में, इस इतहिास का एक उल्लेखनीय ववरिण प्रस्तुत कयिा। उनके कई लेख उस युग के रूसी मठवाद के इतहिास पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण और वशि्वसनीय स्रोत हैं: वे एक ऑर्थोडॉक्स भकि्षु द्वारा लखि गए थे जसिके पास व्यापक धर्मशास्त्रीय ज्ञान था, जसिने पवत्रि पर्वत के मठों में जीवन का अवलोकन कयिा और स्वयं उस जीवन को जयिा, और इसलएि वह एक सटीक मूल्यांकन करने में सक्षम था। मॉस्को पदानुक्रम के साथ उनका संघर्ष न केवल उस पदानुक्रम को, बल्कि संपूर्ण रूसी मठवाद को भी दर्शाता है। यह नहीं भूलना चाहएि कि उस समय रूसी धार्मकि पदानुक्रम, बाद के काल की तरह नहीं, बल्कि मठ समुदाय का ही मांस-हड्डी था; इसकी उत्पत्ति मठों में हुई थी, यह अधकिांशतः भकि्षुओं के वचिारों से सहमत था, इसके पास समान धर्मशास्त्रीय ज्ञान था, और, कुल मलिाकर, इसमें भकि्षु जीवन के सभी सद्गुण और कमयिाँ थीं। और यदि धर्मप्राधान्य का कोई सदस्य गैर-अधग्रिहणवादयिों या जोसेफटिों की वचिारधारा से सहमत था - क्योंकि 16वीं शताब्दी में, वशिेष रूप से इसके पहले आधे भाग में, लगभग कोई तटस्थ बशिप नहीं थे - तो यह हमेशा उस मठ के आध्यात्मकि वातावरण से जुड़ा होता था जसिमें एक वशिेष बशिप ने अपना संन्यासी जीवन बतिाया था।

यह स्पष्ट है कि जैसे ही पवत्रि पर्वत के संत मैक्सिम मॉस्को में वकिसति हुई धार्मकि और राजनीतकि स्थतिि से परचिति हुए, वह - पवत्रि धर्मग्रंथ और पवत्रि पतिाओं के लेखों के अपने ज्ञान के कारण, जो दोनों पक्षों के काम आ सकता था - चाहे-अनचाहे, इस युग-नरि्माण ववािद में भाग लेने के लएि ववश हो गए। यह कोई संयोग नहीं था कि उनका ज्ञान, उनका अपना तपस्वी अनुभव और उनके व्यक्तगित वशि्वास उन्हें गैर-स्वामतिव पक्ष के साथ खड़े होने के लएि प्रेरति कर रहे थे; राजा-संन्यासी वासयिन के साथ उनकी जान-पहचान और बार-बार होने वाली बातचीत – जैसा कि नीचे बताया जाएगा – इस चुनाव का मुख्य कारण नहीं थे, हालांकि हमारा मानना है कि वासयिन से ही मैक्सिमस को वशिषि्ट तथ्यों और संन्यासी जीवन की सामान्य स्थतिि के बारे में जानकारी मलिी थी; हालांकि, उनके इस चुनाव का कारण यह था कि गैर-स्वामतिववादयिों के वचिार वास्तव में चर्च की सच्ची तपस्वी परंपरा में नहति थे।

मास्को पहुंचने पर, जैसा कि वृत्तांत में बताया गया है, मैक्सिम का 'बड़े सम्मान' के साथ स्वागत कयिा गया और उन्होंने पहले चुदोव मठ और फरि साइमनोव मठ में नविास ग्रहण कयिा। चूंकि वह स्लाव भाषाओं में से कोई भी नहीं जानता था, इसलएि दो रूसी अनुवादकों को, जो ' ' लैटनि में नपिुण थे, अनुवाद कार्य में उसकी सहायता के लएि नयिुक्त कयिा गया। अनुवादक दमित्रिी गेरासमिोव द्वारा डीकन मस्यिूर मुनेखनि को लखि गए एक पत्र से उनके अनुवाद कार्य में आने वाली कठनिाइयों का अंदाज़ा लगता है: मैक्सिम ने ग्रीक पाठ का लैटनि में अनुवाद कयिा, जबकि गेरासमिोव ने फरि उसका लैटनि से चर्च स्लावोनकि में अनुवाद कयिा।[263] । फरि भी, इस वशिाल खंड का अनुवाद 16 महीनों में पूरा हो गया। नए चर्च स्लावोनकि भजनसंग्रह के साथ, मैक्सिम ने महाप्रसि को एक लंबा प्रस्तावना भेंट कयिा, जसिमें उन्होंने मॉस्को में अपने आगमन की कहानी सुनाई और साथ ही वाटोपेडी मठ में लौटने की अनुमति मांगी[264] । चर्च स्लावोनकि अनुवाद की समीक्षा मेट्रोपॉलटिन वरलाम और कई बशिपों द्वारा की गई थी – स्वाभावकि रूप से, केवल स्लावोनकि पाठ की, क्योंकि उनमें से कोई भी ग्रीक में नपिुण नहीं था – और इसे मंजूरी दे दी गई और सराहा गया। हालांकि, मैक्सिम को माउंट अथोस लौटने की अनुमति नहीं दी गई, जबकि उनके साथयिों - वाटोपेडी के कई भकि्षुओं, जो उनके साथ मास्को गए थे - को घर लौटने की अनुमति दे दी गई।

ग्रैंड ड्यूक और मेट्रोपॉलटिन वरलाम दोनों ने यह महसूस कयिा कि मॉस्को में शकि्षति लोगों की भारी कमी को देखते हुए, म्याक्सिम बहुत उपयोगी हो सकते थे[265] । म्याक्सिम को एक और महत्वपूर्ण और कठनि कार्य सौंपा गया - पूजा-संबंधी पुस्तकों को, जनिमें कई त्रुटयिाँ घुस आई थीं, मूल ग्रीक पाठ से तुलना करके सुधारना। हालांकि हमें यह नहीं पता कि पहल कसिने की, यह माना जा सकता है कि मेट्रोपॉलटिन ने यह काम मैक्सिम को सौंपा था। इस बात से इनकार नहीं कयिा जा सकता कि यह वचिार राजकुमार-भकि्षु वासयिन द्वारा मेट्रोपॉलटिन को सुझाया गया था, जसिे हम पहले से जानते हैं, क्योंकि उनका मानना था कि पूजा-संबंधी पुस्तकों के सभी स्लावोनकि अनुवादों में त्रुटयिाँ, अशुद्धयिाँ और अस्पष्ट अंश थे। हमें यह भी नहीं भूलना चाहएि कि वासयिन के पास मैक्सिम को यथासंभव लंबे समय तक मास्को में रखने के व्यक्तगित कारण थे: *कोर्मचाया* पर काम करते समय उन्हें एक अनुभवी सलाहकार की

---

[263] गेरासमिोव का पत्र: सप्लीमेंट्स. 18, पृ. 190.

[264] मैक्सिमस द ग्रीक। कृतयिाँ। 2. पृ. 299 आदि। यह कृति उपरोक्त दो पत्रों की पूरक है; यह दर्शाती है कि मैक्सिमस को केवल एक वशिषि्ट अनुवाद करने के लएि भेजा गया था।

[265] मैक्सिमस ने मेट्रोपॉलटिन की कृपा और कृतज्ञता अर्जति की, जब उन्होंने उनके लएि 'पवत्रि प्रेरतिों के काम' पर एक अनाम टीका का व्यक्तगित रूप से अनुवाद कयिा। मैकारयिस। 2nd संस्करण। 6. पृ. 166.

आवश्यकता थी, और मैक्सिमि उनके लिए बहुत उपयोगी हो सकते थे। इस प्रकार, मैक्सिमि को अनिश्चित काल के लिए मास्को में रहने और एक नया कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ा[266] ।

मास्को में रहते हुए, धीरे-धीरे रूसी भाषा सीखने के बाद, मैक्सिमि अपने स्वयं के अवलोकनों और विभिन्न व्यक्तियों—विशेष रूप से भिक्षु-राजकुमार वासियन—से बातचीत करके रूस में धार्मिक जीवन, मठवासी रीति-रिवाजों, बिशपों और भिक्षुओं के विचारों, सरकारी नीति, ग्रैंड ड्यूक के निरंकुश शासन, और चर्च के मामलों में उसके हस्तक्षेप की गहन समझ हासिल करने में सक्षम था। मैक्सिमि ने मेट्रोपॉलिटन वरलाम को उनके पद से अवैध रूप से हटाए जाने का प्रत्यक्ष अनुभव किया, जो चर्च के ग्रैंड प्रिंस के तानाशाही शासन पर निर्भरता का एक स्पष्ट उदाहरण था। उन्होंने धार्मिक जीवन के इन सभी पहलुओं की तीखी और तीव्र आलोचना की; इन घटनाओं ने उन्हें विवादास्पद और आलोचनात्मक ग्रंथों की एक श्रृंखला लिखने के लिए प्रेरित किया। ये कृतियाँ हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं, जो 16वीं सदी में रूसी धार्मिकता की गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।[267] जब कोई रूसी, जैसे कि जोसेफ या वासियन, रूसी जीवन के विभिन्न पहलुओं की आलोचना करता है, तो हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि वे पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकते, कि वे अपने पक्षपाती पूर्वाग्रहों से प्रभावित होते हैं, उदाहरण के लिए मठों की संपत्तियों के मुद्दे पर। मैक्सिमि ने ऐसा पक्षपात नहीं किया होगा; इसके अलावा, उनकी आलोचनात्मक रचनाएँ पूरी तरह से चर्च-सम्बंधी भावना में रची गई थीं, क्योंकि वह माउंट अथोस और सामान्य रूप से पूर्वी चर्च में कैनन कानून और चर्च-सम्बंधी जीवन में अच्छी तरह से निपुण थे।

मैक्सिमि की कृतियों में[268] , चार ग्रंथ विशेष रूप से मठों की जमींदारियों और मठवासी जीवन के प्रश्न को समर्पित हैं, और यह हमें दोनों गुटों के बीच विवाद पर अपने निबंध में इन ग्रंथों की सामग्री का उपयोग करने का कारण देता है, भले ही मैक्सिमि रूसी नहीं था और न तो जोसेफाइट्स से और न ही नॉन-अक्विरिअर्स से संबंधित था। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जब वे रूसी धार्मिकता पर चर्चा करते हैं, तो उनके अन्य कार्य भी रूसी मठवाद के जीवन-यापन के तरीके को छूते हैं[269] ।

मठ संपत्तियों के खिलाफ उनका प्रमुख कार्य 'एक प्रसिद्ध मठवासी जीवन की कथा'[270] था, जो संवाद के रूप में लिखा गया था। फिलोक्टीमोन (लालची) और एक्टिमोन (लालच रहित) मठवासी जीवन की नींव पर चर्चा करते हैं। पहला, जो जोसेफ के विचारों का प्रतिनिधित्व करता है, यह साबित करने का प्रयास करता है कि कठोर कोएनोबियल जीवन (सामूहिक जीवन) की शुरुआत मठ संपत्तियों के उपयोग के नकारात्मक पहलुओं को समाप्त कर देती है, क्योंकि इससे भाइयों में से कोई भी व्यक्तिगत लाभ नहीं उठाता है; इस प्रकार वह संपत्तियों के सामूहिक उपयोग को सही ठहराने का प्रयास करता है। इस पर एक्टिमोन उत्तर देते हैं: 'यह कल्पना करना हास्यास्पद है कि यह उस स्थिति से अलग है जहाँ, यदि कई पुरुष एक ही वेश्या के साथ अवैध रूप से संगति करें और परिणामस्वरूप उसकी निंदा की जाए, तो प्रत्येक अपना बचाव करते हुए कहेगा: "यहाँ एक भी पाप नहीं किया गया है, क्योंकि यह साझा अधिग्रहण सभी के लिए समान है"; या यदि कोई कई डाकुओं के साथ डकैती करने जाए और, बहुत माल इकट्ठा करने के बाद, फिर, किसी घटनाक्रम से, डाकुओं की तलाश करने वालों द्वारा पकड़ा जाए, जो उसे बुरी तरह से यातना देते हैं, तो वह जवाब देगा, कहते हुए: 'मैं किसी भी तरह से दोषी नहीं हूँ; मैंने सब कुछ उनके पास छोड़ दिया और वहाँ से कुछ भी नहीं लिया'[271] ।

एक अन्य कृति ('आत्मा के लिए लाभदायक एक शब्द') में, रीज़न अपनी आत्मा से ईसाई सद्गुणों के बारे में संवाद करता है और उससे पूछता है: 'तो फिर, आप अपने लिए नम्रता, विनम्र बुद्धि और हृदय की पवित्र मौनता कैसे प्राप्त कर सकते हैं, जब आप इतनी बार और बेरोकटोक क्रोध और झगड़े में बह जाते हैं—चाहे ज़मीनों को लेकर हो,

---

[266] दुर्भाग्य से, मैक्सिमिस द्वारा स्वयं की गई कुछ टिप्पणियों के अलावा इस कृति के बारे में कोई जानकारी नहीं है। Works 1. पृ. 33, 37. तुलना करें: गोलुबिंस्की। 2. 1. पृ. 683। मैक्सिमिस के बारे में हर्बर्स्टीन का विवरण (उपरोक्त, पृ. 91) वास्तविकता से मेल नहीं खाता। यह संभव है कि हर्बर्स्टीन, जो 1526 में मास्को गया था, मास्को में प्रचलित विभिन्न अफवाहों पर निर्भर था।

[267] गोल्बुइंस्की। 2. 1. पृ. 665.

[268] मैक्सिमिस द ग्रीक। कज़ान थियोलॉजिकल अकादमी द्वारा प्रकाशित। 3 खंड: 1 (1859, दूसरा संस्करण 1894), 2 (1860), 3 (1862, दूसरा संस्करण 1897)। दूसरा संस्करण: सर्गिएव पोसाद, 1910–1911। 3 खंड (चर्च स्लावोनिक मूल का रूसी अनुवाद)। मैक्सिमि की कृतियों पर, देखें: गोलुबिंस्की। 2. 2. पृ. 232–263। डेनिसॉफ़। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 35–40। मैक्सिमि के पत्रकारिता संबंधी लेखन पर: झरगिा। 16वीं सदी के रूसी पत्रकारिता के इतिहास पर निबंध। एक पत्रकार के रूप में मैक्सिमि द ग्रीक, में: TODRL। 1 (1934)।

[269] देखें: प्रियोब्राज़ेंस्की (1881); इकोनिकोव (1915).

[270] मैक्सिमिस द ग्रीक। कृतियाँ, खंड 2, पृ. 89–119। सटीक शीर्षक है 'एक प्रसिद्ध मठवासी जीवन की कथा'। प्रतिद्वंद्वी फिलोक्टिमोन और एक्टिमोन, अर्थात् लालची और लालचहीन'। रज़गिा के अनुसार, यह कथा 1531 और 1537 के बीच लिखी गई थी। रज़गिा. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 105.

[271] मैक्सिमिस द ग्रीक। कृतियाँ, खंड 2, पृ. 114.

या स्वयं कसिानों के साथ, या अपने पड़ोसयिों के साथ—जब भी ऐसा लगता है कि उन्होंने आपको कसिी भी तरह से चोट पहुंचाई है, और आप उनका अपमान करने का प्रयास करते हैं जैसे कि वे दुश्मन हों?'[272] . एक अन्य रचना में, मैक्समिस मठवासी कसिानों के साथ व्यवहार पर अपना मौलकि दृष्टकिोण व्यक्त करते हैं, और मठ की जमींदारयिों के मालकिों को याद दलिाते हैं: 'दव्यि स्वर्ग उन लोगों को अपने भीतर स्वीकार नहीं करता जो हर तरह के लालच और अमानवीयता के साथ, पृथ्वी पर अपने लएि सोने और चांदी का खजाना जमा करते हैं, बल्कि उन्हें बाहर नकिाल देता है'[273] ; फरि भी, ठीक यही मठ थे जो अपने कसिानों को ऊँची ब्याज दरों पर पैसा उधार देते थे। मैक्समिस के दृष्टकिोण में, केवल अनासक्ति ही मठवासी जीवन के लएि सच्चा ईसाई तपस्वी ढांचा प्रदान करती है: 'ऐसे लोग, जो लगातार स्वयं को दूसरों को देते रहते हैं और, प्यार करने वाले पतिाओं की तरह, लगातार कई लोगों की मुक्ति की परवाह करते हैं, वे सभी के लएि सम्माननीय और प्रयि होते हैं'[274] . उनके अन्य कार्य, जो मठों की जमींदारयिों से संबंधति हैं और उनके खलिाफ नर्दिेशति हैं, उसी भावना में लखिे गए हैं; इनमें शामलि हैं: क) 'पश्चाताप पर एक प्रवचन', ख) 'मठ जीवन के सुधार पर एक प्रवचन', ग) 'पश्चाताप और अतृप्त पेट पर एक प्रवचन'[275] .

लेकनि मैक्समिस केवल संन्यासी जीवन के दुराचारों की वाक्पटु आलोचना से संतुष्ट नहीं हैं: उन्होंने संन्यासी जीवन के उचति संगठन का एक उदाहरण प्रस्तुत कयिा है। वह यह अपने ग्रंथ 'पूर्ण संन्यासी जीवन की एक भयानक और स्मरणीय कथा' में करते हैं, जसिमें मैक्समिस, इटली में जो उन्होंने देखा था, उसे याद करते हुए, कार्तुसयिन भक्षिुओं के सदाचारी जीवन, इस संप्रदाय के मठवासी नयिम, और उनके पूर्ण अनासक्तविाद का वर्णन करते हैं, जो इस तथ्य में व्यक्त होता है कि भक्षिु श्रद्धालुओं से भक्षिा पर नर्विाह करते हैं और, बदले में, अपने सामान्य ईसाई भाइयों को आध्यात्मकि देखभाल प्रदान करते हैं, और, अधकि सामान्य रूप से, एक आंतरकि मशिन का पालन करते हैं। मैक्समि का नष्किर्ष इस प्रकार है: सामान्य लोगों से मलिने वाला दान, जसिके बदले में भक्षिु ईसाई शक्षिा और ज्ञान प्रदान करते हैं, मठवासी जीवन का आधार है[276] ।

इन सभी कृत्यों में, मठवासी जीवन के संगठन पर चर्चा करते समय, मैक्समि एक शुद्ध तपस्वी दृष्टकिोण अपनाते हैं। मैक्समि स्वयं कसिी पक्षपाती पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं थे, ऐसा जोसेफट्सि या वासयिन पर संदेह कयिा जा सकता है। उन्होंने केवल एक 'शुद्ध वचिार'[277] की सेवा की, और वे शुद्ध आदर्शवाद तथा अपने वशि्वासों की धार्मकिता में दृढ़ वशि्वास के साथ लखिते थे। न ही हमें यह भूलना चाहएि कि उनकी ववािदास्पद गतविधियिाँ उनके लएि जोखमि से खाली नहीं थीं, क्योंकि नए मेट्रोपॉलटिन डैनयिल (1522–1539) एक कट्टर जोसेफाइट थे; वह गैर-स्वामत्विधारकों के प्रति सहानुभूति के लएि मैक्समि को दंडति कर सकते थे और उन्होंने वास्तव में उनसे बदला भी लयिा।

रूसी मठवाद की आलोचना करते हुए, मैक्समि ने मठ संपत्तयिों के जबरदस्ती और सार्वभौमकि धर्मनरिपेक्षीकरण का आह्वान नहीं कयिा। उनके लएि, कसिी भी बाहरी सुधार के माध्यम से मठ जीवन का पुनर्गठन मुख्य प्राथमकिता नहीं थी; बल्कि, आंतरकि सुधार और मठ जीवन की जीवन शैली का पुनरुद्धार प्राथमकि था। राज्य का हस्तक्षेप केवल तभी उचति हो सकता था जब उसने मठ, पैरशि और धर्मप्रांतीय संपत्तयिों से होने वाली आय को धर्मार्थ कार्यों की ओर मोड़ा होता, उदाहरण के लएि, चैरटिी[278] के लएि।

राजकुमार-भक्षिु वासयिन और माउंट अथोस के भक्षिु मैक्समि, ये दोनों पुरुष, जो अपने अतीत की परस्थितियिों और अपने आंतरकि आध्यात्मकि स्वभाव दोनों ही दृष्टकिोण से इतने भन्नि थे, अपनी असामान्य नयिति के कारण, एक-दूसरे के समान वचिारधारा वाले और एक ही उद्देश्य के समर्थक बन गए, भले ही, जैसा कि हमने पहले ही देखा है, मठों के भूमि स्वामत्वि का वरिोध करने के उनके कारण अलग-अलग थे। यह दर्शाता है कि रूस में मठवासी

---

[272] उपरोक्त। खंड 2, पृ. 5–52। 'यह प्रवचन उन लोगों के लएि आत्मा के लएि अत्यंत लाभकारी है जो इसे ध्यान से सुनते हैं। मन अपनी ही आत्मा से संवाद करता है; इसमें लोभ पर भी चर्चा है।' पृ. 42; यह भी 1531 और 1537 के बीच लखिा गया था। Rzhiga. उपरोक्त, पृ. 105।

[273] मैक्समिस द ग्रीक। कृतयिाँ, खंड 3, पृ. 178–205 (दूसरा संस्करण, पृ. 145–167): 'पूर्ण साधु जीवन के संबंध में एक भयानक और स्मरणीय कथा'। पृ. 205 (दूसरा संस्करण, पृ. 167)।

[274] मैक्समिस द ग्रीक। कृतयिाँ, खंड 2, पृ. 147.

[275] उपरोक्त 2: क) 'सच्ची पश्चाताप और सच्चे मठवासी जीवन पर एक उपदेश'। पृ. 119–144; ख) 'मठवासी जीवन के सुधार की स्मृति में एक उपदेश, जो कुछ सम्माननीय ननयिों को संबोधति है'। पृ. 394–415; ग) 'पश्चाताप पर एक उपदेश और संतोषहीन पेट और पापी भक्षिुओं के अनगनित दुष्ट कार्यों पर'। पृ. 148। मैक्समि ने अपने ग्रंथ 'शैक्षकि अध्याय' में भी भक्षिु संपत्तयिों के मुद्दे को संबोधति कयिा है। वही, पृ. 157–184।

[276] उपरोक्त। खंड 3, पृ. 178–205।

[277] पावलोव। पूर्वोक्त, पृ. 79.

[278] मैक्समिस द ग्रीक। कृतयिाँ, खंड 2. पृ. 172.

जीवन के उचित संगठन का प्रश्न कितना महत्वपूर्ण था। और फिर भी, ये दोनों वाद-विवादकार 16वीं शताब्दी के पहले छमाही में मठवासी समुदाय के एकमात्र प्रतिनिधि थे, जिन्होंने अपने लेखन में खुले तौर पर मठवासी जीवन के पुनर्गठन की मांग की। यह खेद के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए कि उनके साहित्यिक कार्य को धार्मिक हलकों में कोई प्रतिध्वनि नहीं मिली, जो जिद्दी होकर जोसेफाइटों के विचारों से चिपके रहे; इसका शायद धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों द्वारा उठाए गए कुछ आधे-अधूरे कदमों पर ही अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा।

इस संबंध में, 16वीं सदी के सबसे आकर्षक व्यक्तियों में से एक, एल्डर आर्टेमी पर ध्यान देना चाहिए, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से नहीं बल्कि अपने व्यक्तिगत कार्यों के माध्यम से यह सुनिश्चित करने में मदद की कि स्टोग्लाव परिषद में मठों की संपत्ति के मुद्दे को उठाया जाए। एल्डर आर्टेमी का जीवन और आध्यात्मिक विकास[279] हमें एक बार फिर ट्रांस-वोलगा क्षेत्र में ले जाता है, गैर-स्वामित्व धारकों के उस आश्रय स्थल में, जहाँ सॉर्स्क के नील की आत्मा अभी भी जीवित थी, और जहाँ वह नए अनुयायियों और उत्तराधिकारियों को आकर्षित करते रहे। निल और आर्टेमी, रूसी मठवाद के इतिहास में इस आंदोलन के प्रमुख प्रतिनिधि, ने अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत किए, और उनके लेखन के माध्यम से ही हम इस तपस्वी-रहस्यवादी आंदोलन का मूल्यांकन कर सकते हैं। हम बाद में आर्टेमी के लेखों पर चर्चा करेंगे—जो नील के विचारों के एक और विकास और एक निश्चित संशोधन, दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं; फिलहाल, हम केवल उनके जीवन के बारे में कुछ शब्द कहना चाहते हैं और मठों की संपत्तियों के मुद्दे को सुलझाने में उनकी भूमिका को उजागर करना चाहते हैं।

उनकी उत्पत्ति या जन्मस्थान के बारे में कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने अपनी साधु जीवन की शुरुआत सेंट कॉर्नेलियस ऑफ कोमेल († 1537) के अधीन की। 1536 में, आर्टेमी ने उस मठ को छोड़ दिया और किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ के पास ही, एक संन्यास-आश्रम में बस गए, जिसकी स्थापना संभवतः वरिष्ठ पोर्फिरी ने की थी, जो पहले ट्रिनिटी-सर्गीयस मठ (1521–1524) के मठाध्यक्ष थे। वरिष्ठ पोर्फिरी स्वयं, जो एक सख्त तपस्या का जीवन जीने वाले भिक्षु थे और अपने विचारों में, किसी संपत्ति के मालिक नहीं थे, उन्हें कुछ डांट-फटकार भरे शब्दों, '[280] ', से ग्रैंड प्रिंस का क्रोध झेलने के कारण महाधर्माध्यक्ष के पद से इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा। पोर्फिरी और अन्य गैर-स्वामित्व धारकों – वृद्ध टिकोन, डोरोथियस और इओआसाफ बेलोबायेव – के साथ उनके संबंध ने आर्टेमी को गैर-स्वामित्व धारक विचारों की दुनिया में खींच लिया और उन्हें इन विचारों का भक्त बना दिया[281] । आर्टेमी *1550–51* तक रेगिस्तान में रहे */ इसी समय, या शायद 1536 से पहले– यह निर्धारित करना कठिन है– उन्होंने प्सकोव की यात्रा की। प्सकोव से, आर्टेमी विदेश– 'जर्मन भूमि' (अर्थात् एस्टोनिया) – के लिए रवाना हुए, ताकि वे पश्चिमी ईसाई धर्म से प्रत्यक्ष रूप से परिचित हो सकें और स्थानीय लूथरन लोगों के साथ आस्था के मामलों पर चर्चा और बहस कर सकें ('पुस्तकों के माध्यम से मामलों पर चर्चा करने के लिए')[282] । पोर्फ़िरी के रेगिस्तान में बिताया गया समय आर्टेमी के जीवन की एक निर्णायक अवधि थी: यहीं पर उनका आध्यात्मिक गठन हुआ; यहीं पर उन्होंने अपने जीवन की कठोरता और अपनी धर्मशास्त्रीय शिक्षा के माध्यम से अपने साथी भिक्षुओं का सम्मान अर्जित किया, जिससे अंततः उनकी ख्याति मॉस्को तक पहुँच गई।*

1550 के अंत या 1551 की शुरुआत में, आर्टेमी को मॉस्को आमंत्रित किया गया था; हमें नहीं पता कि उनकी सिफारिश किसने की थी। इतना ही ज्ञात है कि युवा ज़ार इवान ने उन्हें चुदोव मठ में ठहराने का आदेश दिया और अपने धर्म-परामर्शदाता, पादरी सिल्वेस्टर को, आर्टेमी के ज्ञान की पूरी तरह से जांच करने और उनके व्यक्तिगत गुणों का आकलन करने का निर्देश दिया ('उनमें वह सब कुछ पहचानने के लिए जो सही और आध्यात्मिक लाभ के लिए हो')। आर्टेमी से बात करने के बाद, सिल्वेस्टर ने ज़ार को बताया कि आर्टेमी के व्यक्तिगत गुण और उनकी धर्मशास्त्रीय शिक्षा, जो कई लोगों के लिए अच्छी तरह से जानी जाती थीं, वास्तव में प्रशंसा के योग्य थीं[283] । उसी समय, ट्रिनिटी-सर्गीय मठ में कोई मठाधीश नहीं था, और ज़ार ने सिल्वेस्टर और मठवासी समुदाय के अनुरोध पर, 17 मई 1551 को आदेश दिया कि आर्टेमी को इस मठ का मठाधीश नियुक्त किया जाए। हालाँकि, यह अकेले सिल्वेस्टर की सिफारिश नहीं थी जिसने ज़ार को यह चुनाव करने के लिए प्रेरित किया। आर्टेमी के लेखों से हमें पता चलता है कि उस समय वह स्वयं युवा ज़ार के संपर्क में था, जिसने उससे पवित्र धर्मग्रंथों और दैनिक जीवन के मामलों में मार्गदर्शन करने के लिए कहा था। एक समकालीन, प्रिंस एंड्रेई कुर्बस्की ने आर्टेमी के बारे में लिखा कि 'ज़ार उन्हें

---

[279] वरिष्ठ आर्टेमियोस के बारे में जानकारी के लिए, अध्याय X के ग्रंथसूची को देखें।

[280] गोर्स्की, ए. द होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा का एक ऐतिहासिक विवरण। खंड 1 (1890)। पृ. 78.

[281] एएई. खंड 1, संख्या 238.

[282] एएई. खंड 1, संख्या 238, पृ. 251.

[283] उपरोक्त, पृ. 246.

पहले बहुत प्यार करते थे और कई मौकों पर उनसे बातचीत करते थे[284] । लेकिन आर्टेमी लंबे समय तक मठाधीश नहीं रहे; छह महीने बाद, उन्होंने मठ छोड़ दिया और एकांतवास में लौट आए। ऐसा प्रतीत होता है कि राजकुमार कुर्बस्की का यह दावा सच है, कि आर्तेमी ने जोसेफाइट-समर्थक भाइयों के साथ विवादों के कारण अपना पद त्याग दिया; क्योंकि आर्तेमी के लिए, अपने तपस्वी विचारों के साथ, मठ का वातावरण केवल अप्रिय ही नहीं बल्कि बिल्कुल असहनीय था, और, जैसा कि पादरियों सिल्वेस्टर और सिमियन के बाद के विवरणों से स्पष्ट है, उन्होंने एक बड़े, अमीर मठ के अव्यवस्थित जीवन की तुलना में रेगिस्तान की 'ईमानदार' खामोशी को तरजीह देने का फैसला किया[285] ।

हमारे लिए महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि, युवा ज़ार के साथ अपनी बातचीत में, आर्टेमी ने मठ संपत्तियों के मुद्दे को भी उठाया, और इस ज्वलंत मुद्दे पर (यानी, ठीक उसी समय जब स्टोग्लाव परिषद का सत्र चल रहा था) गैर-स्वामित्ववादियों की भावना में बोलें, यह मानते हुए कि भिक्षुओं को अपनी संपत्तियों से नहीं बल्कि अपने हाथों की मेहनत से जीना चाहिए[286] । ये बातचीतें अनदेखी नहीं हुईं, क्योंकि आर्टेमी के विचारों को ज़ार का समर्थन मिला, और शायद 11 मई 1551 का मठों की जागीरों से संबंधित प्रसिद्ध फरमान – जिस पर हम बाद में विस्तार से चर्चा करेंगे – इन बातचीतों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है[287] । इस प्रकार, वरिष्ठ आर्टेमियस की व्यक्तिगत भागीदारी ने वासियन या मैक्सिमिस के विवादास्पद लेखन की तुलना में अधिक व्यावहारिक परिणाम दिए।

एक अन्य कृति मठवासी जीवन पर मठों की जमींदारियों के भ्रष्ट प्रभाव की समस्या को समर्पित है: तथाकथित 'वालाम के चमत्कार-कर्ता, पूजनीय सर्गियस और हरमन का संवाद', जो 16वीं शताब्दी के मध्य की एक गुमनाम कृति है। साहित्यिक इतिहासकार इस बारे में अलग-अलग उत्तर देते हैं कि यह कब लिखी गई थी और इसके लेखक या लेखक कौन थे[288] । हमारी दृष्टि में, यह कृति उन मठवासी हलकों में उत्पन्न हुई थी जो पूरी तरह से गैर-अधिग्रहणकर्ता गुट से संबंधित नहीं थे, लेकिन जो धार्मिक-राजनीतिक गतिविधि और जोसेफाइट्स के विचारों से स्पष्ट रूप से घृणा करते थे। हम यह भी मानते हैं कि 'संवाद' के लेखक वासियन और मैक्सिमिस के कार्यों से अच्छी तरह परिचित थे, और इन कार्यों ने उनके लिए एक स्रोत का काम किया, साथ ही, बेशक, उनके व्यक्तिगत अनुभव और अपने समय के दैनिक धार्मिक जीवन का अच्छा ज्ञान भी। लेखक वासियन या मैक्सिमिस जितने शिक्षित नहीं थे, जो कि काम की शैली से तुरंत स्पष्ट हो जाता है: यह खराब भाषा में लिखा गया है, विचारों को बेतरतीब ढंग से व्यक्त किया गया है, और इसमें कई पुनरावृत्तियाँ हैं।

लेखकों के चर्च संबंधी और राजनीतिक दृष्टिकोण को चार मुख्य विचारों से परिभाषित किया जा सकता है: (1) मठों के भूमि-स्वामित्व के अधिकार का खंडन, (2) ज़ार के शासन और चर्च पदानुक्रम के बीच घनिष्ठ संबंधों की आलोचना, (3) मठाधीश किसानों की दुर्दशा के प्रति सहानुभूति, और (4) उस समय मास्को के जीवन के उनके मूल्यांकन में एक प्रकार का रूढ़िवाद। पहले दो विचार घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं: *द कन्वर्सेशन* ज़ार को मठों की संपत्तियों के विस्तार, मठों के वर्ग के समृद्धिकरण और उसके धर्मनिरपेक्षीकरण के लिए फटकार लगाता है, क्योंकि ज़ार भिक्षुओं के हाथों में भूमि-स्वामित्व के संचय की अनुमति देता है और अक्सर स्वयं किसानों द्वारा बसाई

---

[284] एएई. 1. संख्या 72. संख्या 238; एआई. 1. संख्या 132. कुर्बस्की. लेजेंड (1842). पृ. 136. आर्टेमी. एपिसिटल्स, में: RIB. 4. पृ. 1388, 1383, 1386, 1390, 1440.

[285] कुर्बस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 134; गॉर्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 84; एएई. 1. सं. 238.

[286] ज़ार इवान को पत्र, में: RIB. 4. पृ. 1440, 1432–1441। यह कृति संभवतः1553 में लिखी गई थी; इसमें, आर्टेमी ज़ार को उनकी पिछली बातचीत की याद दिलाते हैं और मठवासी जीवन पर अपने विचारों को दोहराते हैं। तुलना करें: गोलुबिंस्की। 2. 1. पृ. 836.

[287] तुलना करें: झदानोव, झएमएनपी. 1876. 7. पृ. 67 में; गोलुबिनिस्की. 2. 1. पृ. 836.

[288] *द कन्वर्सेशन* के पहले प्रकाशक, ओ. बोडियान्स्की (*रीडिंग्स*. 1859. 3 में) ने यह विचार व्यक्त किया कि *द कन्वर्सेशन* के लेखक प्रिंस-मोनक वासियन थे। इस दावे पर कई लोगों ने विवाद किया है। ए. एस. पावलोव (Historical Essay, पृ. 136, टिप्पणी) ने यह माना कि *द कन्वर्सेशन* की उत्पत्ति मठवासी हलकों में नहीं हुई थी। ई. ई. गोलुबिंस्की (2. 1, पृ. 655) ने भी बोडियान्स्की के विचार का खंडन किया। बोडियान्स्की का संस्करण अत्यधिक त्रुटिपूर्ण था, और वी. ड्रुझिनिन और एम. ड्याकोनोव ने एक नया संस्करण (एलजेडएके, खंड 9 में) तैयार किया; भाषा और शैली के गहन अध्ययन के आधार पर, उन्होंने भी यह निष्कर्ष निकाला कि *द कन्वर्सेशन* की उत्पत्ति मठों के परिसरों से नहीं हुई थी; एक समान दृष्टिकोण I. A. Stratonov (Notes on the History of the Zemsky Sobors, in: Academic Proceedings of Kazan University 1906. 3) द्वारा व्यक्त किया गया था। Bodiansky के दृष्टिकोण का समर्थन S. L. Avaliani (in: BV. 1909. 1), जो प्रिंस-मोनक वासियन को *बेसेदा* का लेखक मानते हैं और इसकी रचना का समय 1531–1537 बताते हैं (उसी में, पृ. 380)। अन्य साहित्यिक इतिहासकारों ने उनकी बात का खंडन किया: एन. गुद्ज़ी (में: *रूसी फिलोलॉजी*, खंड 1, 1913. 3) और जी. बेलचेन्को (1914) ने उनके इस दृष्टिकोण का खंडन किया है। हाल ही में, यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है कि *द कन्वर्सेशन* का उद्गम ट्रांस-वोल्गा क्षेत्र के किसानों के बीच हुआ था, क्योंकि उस क्षेत्र में मठों की संपत्तियों के तीव्र विस्तार ने किसानों के बीच तीव्र असंतोष पैदा कर दिया था। यह बार-बार दिया जाने वाला अनुस्मारक कि ज़ार को अपनी नीतियाँ अपनाते समय किसान वर्ग (या 'दुनिया') के प्रतिनिधियों से परामर्श करना चाहिए, ने आई. स्मिरनोव (इस्त. ज़ैप. 15. 1946. पृ. 257) यह तर्क देने में सक्षम हुआ कि *द कन्वर्सेशन* एक पत्रकारिता संबंधी कृति है जो किसान हलकों से उभरी थी।

गई भूमि मठों को प्रदान करता है: 'एक ज़ार के लिए ईसाइयों से आबाद गाँवों और जलिों को भकिषुओं को देना उचति नहीं है, और न ही ज़ार द्वारा ऐसा कोई कार्य प्रशंसनीय है।' ज़ार मठों की सहायता कर सकता है, लेकनि केवल पैसे से, जसिे दान माना जा सकता है। यह वचिार *संवाद* में कई बार व्यक्त कयिा गया है, शायद केवल दोहराव के लिए नहीं, बल्कि इस बदिु पर जोर देने के लिए। 'प्रवचन' में कहीं और भाषा और भी कठोर है: 'मूर्ख राजा, मसीह के शत्रु, भकिषुओं पर कृपा करते हैं और उन्हें अपने राजसी भू-स्वामत्वि, शहर, गाँव और जलिों को प्रदान करते हैं, जहाँ ईसाई रहते हैं, और उन्हें अपने ही ईसाइयों पर लगाए गए कर से छूट देते हैं, मानो वे अवशि्वासी हों', जबकि इस प्रकार कसिान भूमहिीन रह जाते हैं। भकिषुओं को राजाओं से ऐसे उपहार स्वीकार नहीं करने चाहिए, 'अर्थात्, प्रयि भाइयों, शैतान से—एक नई वधिर्म, जो नए अनुग्रह के वपिरीत है, कि भकिषुओं के पास ईसाइयों से आबाद जलिों का स्वामत्वि हो'।

वासयिन और मैक्समिस के पदचन्हिों पर चलते हुए, *संवाद* के लेखक मठ प्राधकिरणों और उनके प्रबंधकों द्वारा कसिानों के साथ कएि जाने वाले दुर्व्यवहार के बारे में बात करते हैं। इस प्रकार, *संवाद* में कसिानों के उत्पीड़न के खलिाफ एक सामाजकि वरिोध नहिति है। साथ ही, 'संवाद' इस बात पर जोर देता है कि मठों के समृद्ध होने के कारण मठवासी जीवन पतन की ओर जा रहा है, क्योंकि मठों की सांसारकि मामलों में संलप्तिता के परणिामस्वरूप तपस्या के मूल सद्धिांतों को या तो पृष्ठभूमि में धकेल दयिा जाता है या पूरी तरह से कमजोर कर दयिा जाता है।

द डस्कि्रोस् के संकलनकर्ताओं के राजनीतकि वचिार इस तर्क से भी वशिेषता रखते हैं कि ज़ारों को कैसे शासन करना चाहिए। *द डस्कि्रोस्* चर्च के पदानुक्रमों के शासन में भाग लेने या ज़ार के सलाहकार के रूप में कार्य करने के अधकिार को स्पष्ट रूप से खारजि करता है: 'प्रभु ने तसर को राज्य, शहरों और जलिों पर शासन करने और सत्ता संभालने का आदेश संन्यासयिों से नहीं, बल्कि राजकुमारों, बोयारों और अन्य सामान्य लोगों से दयिा था, न कि संन्यासयिों से... तसर के लिए ही, अपने अधकिारों के साथ, सभी मामलों में राज्य का शासन करना उचति है, न कि संन्यासयिों के साथ'[289] । एक ओर, बोयारों और आबादी के अन्य वर्गों के लिए देश के शासन में भाग लेने की आवश्यकता का यह वचिार, बोयार वर्ग के भीतर रूढ़विादी हलकों के वासयिन और अन्य प्रतनिधियिों के वचिारों की याद दलिाता है; दूसरी ओर, यह वेलकिी नोवगोरोड के गणराज्य शहर में सामाजकि संबंधों की याद दलिाता है[290] ।

द डस्कि्रोस् का रूढ़विाद न केवल पहले से उल्लेख कएि गए मुद्दों पर चर्चा में, बल्कि वदिेशी प्रभावों के प्रति इसके रवैये में भी व्यक्त होता है, जो *द डस्कि्रोस्* के लेखकों की राय में, ईसाइयों—यानी, रूसी लोगों—के लिए 'दुर्भाग्य, दुख और वनिाश' हैं और वशि्वास की शुद्धता पर सवाल उठाते हैं। यह कृति 'अवशि्वासी' पश्चमि और वदिेशियिों की आलोचना करती है, जो केवल इस सांसारकि, 'लौककि' जीवन से चतिति हैं, 'जबकि हम आने वाले जीवन के लिए प्रयास करते हैं'[291] ।

3. मठों के जमींदार होने के अधकिार का बचाव करने वाली रचनाएँ

'द कन्वर्सेशन' मठों की जमींदारी के खलिाफ साहत्यिकि वाद-ववािद को समाप्त करता है; इसका उद्देश्य, यदि पूरी तरह से रोकना नहीं तो कम से कम भूमि-स्वामत्वि और मठों की समृद्धि की वृद्धि को रोकना था। हालाँकि, मठों की जमींदारी के रक्षकों की गतविधियिाँ और सरकार का रुख वास्तवकि इतहिास के लिए अधकि महत्वपूर्ण था।

जोसेफ ऑफ वोल्कोलामस्क के वचिार, जनि पर हमने पहले ही 1503 की परषिद के संदर्भ में चर्चा की है, जोसेफाइट्स और चर्च पदानुक्रम के लिए हमेशा एक प्रकार का डॉगमा बने रहे। उस परषिद के तुरंत बाद (लगभग *1504–05 में), नोवगोरोड के आर्चबशिप जेनाडयिस के आदेश पर एक ग्रंथ संकलति कयिा गया, जसिमें एक बार फरि मठों के भूमि-स्वामत्वि के अधकिार का प्रश्न उठाया गया और इस अधकिार को कैनोनकि रूप से उचति ठहराने का प्रयास कयिा गया। यह एक काफी लंबा ग्रंथ है, जो अपनी लंबाई के बावजूद, *एक संक्षप्ति ग्रंथ* ([292]) शीर्षक से प्रकाशति हुआ। इसके लेखक रूसी नहीं, बल्कि बेंजामनि नामक एक डोमनिकिन भकिषु थे, जो संभवतः स्लाव मूल के थे, और जो नयिति की वडिंबना से 15 वीं शताब्दी के अंत में नोवगोरोड पहुँचे, जहाँ उन्होंने आर्चबशिप के नर्दिेश पर*

---

[289] *द कॉन्वर्सेशन* (1890)। पृ. 4, 5, 3, 10, 7, 8, 21, 17, 24, 13.

[290] दुर्भाग्य से, स्मरिनोव के वचिार को *बेसेदा* के पूरे संदर्भ से प्रमाणति नहीं कयिा जा सकता है। फरि भी, यह ध्यान दयिा जाना चाहिए कि यह वशिेष रूप से उत्तर की स्वतंत्र कसिान आबादी ('काली-मट्टिी वाले कसिान') थी जसिने मठों के संस्थापकों के खलिाफ बहुत प्रबलता से और काफी बार संघर्ष कयिा (तुलना करें अध्याय VII नीचे)। सामान्य रूप से उत्तर के कसिान वर्ग पर, देखें: बोगोस्लोव्स्की, एम. '17वीं सदी में रूसी उत्तर में ज़ेम्स्टवो स्व-शासन', खंड 1 (1909)।

[291] 'बेसेदा' (1890)। पृ. 14, 22, 24। यह ध्यान देने योग्य है कि 'बेसेदा' के लेखकों द्वारा व्यक्त कएि गए कुछ वचिार मेट्रोपॉलटिन डेनयिल की 'एपस्टिल्स' में व्यक्त वचिारों के समान हैं। इन 'एपस्टिल्स' पर नीचे चर्चा की जाएगी।

[292] 'मठ संपत्ति के बचाव में एक संक्षप्ति शब्द'। सं. ए. डी. ग्रगिोरएिव, *रीडग्सि* में: 1902. 2; तुलना करें: अवालअिनी, *बीवी* में: 1908. 3. पृ. 374।

*लैटनि वल्गेट से बाइबलि की कई पुस्तकों का स्लावोनकि भाषा में अनुवाद कयिा; यह हमें ज्ञात नहीं है कि क्या वह डोमनिकिन रोमन कैथोलकि बना रहा या ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च में परविर्तति हो गया[293] । 'द वर्ड' के मुख्य वचिार इस प्रकार हैं: धर्मनरिपेक्षता और यहाँ तक कि इसकी ओर झुकाव भी ईश्वर की इच्छा के प्रतशित्रुता की अभव्यिक्ति के अलावा और कुछ नहीं है। एपस्किोपेट और मठों को यह बात लगातार ध्यान में रखनी चाहिए। उन्हें मठों की संपत्तयिों से संबंधति मामलों में हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देनी चाहिए, लेकनि ऐसे प्रयासों या कार्रवाइयों से लड़ने के लिए बाध्य हैं। राजा और धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों को कसिी भी परस्थितिमिें चर्च और उसकी संस्थाओं की संपत्ति और जमीनों को जब्त, प्रतबिंधति या उनसे वंचति नहीं करना चाहिए। चर्च के चल और अचल संपत्ति के स्वामत्वि के अधकिार का आधार स्वयं मसीह के शब्दों में पाया जाता है; पवत्रि प्रेरति इस अधकिार की पुष्टि करते हैं; धर्मपरायण ईसाई सम्राटों ने, कॉन्स्टेंटाइन से शुरू होकर (यहाँ 'कॉन्स्टेंटाइन अनुदान' का संदर्भ है), 'रोमनों के राजा लुई प्रथम, और चार्ल्स द ग्रेट', और रोम के सम्राट ओट्टो प्रथम और हेनरी प्रथम ने चर्च के चल और अचल संपत्ति के अधकिारों का अत्यंत सम्मान कयिा। *स्लॉव* के अंत में, लेखक इस बात पर और जोर देते हैं कि आध्यात्मकि अधकिार धर्मनरिपेक्ष अधकिार से श्रेष्ठ है; यद्यपि दोनों अधकिार ईश्वर से प्राप्त होते हैं, धर्मनरिपेक्ष अधकिार को आध्यात्मकि अधकिार के अधीन होना चाहिए[294] ।*

'द वर्ड' 1503 की परषिद के बाद, 16वीं शताब्दी के पहले छमाही में, जोसेफ के वचिारों के बचाव में लखिा गया एकमात्र ग्रंथ था: उनका गुट खुद को इतना मजबूत महसूस करता था और उसे ववािदास्पद पत्रकारति की कोई आवश्यकता नहीं थी। गैर-अधग्रिहणवादयिों की यही नयति थी: अपने उद्देश्य के लिए लड़ना और जोसेफाइटों पर हमला करना।

एक और दलिचस्प अंश 16वीं शताब्दी के पहले भाग का है, जसिमें धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों को चर्च की संपत्ति से संबंधति मामलों में हस्तक्षेप न करने की चेतावनी दी गई है। 16वीं शताब्दी के मध्य में, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन के पद ने ततार ख़ानों के प्राचीन फरमानों को संकलति करने का कार्य कयिा, जनिसे चर्चों, धार्मकि पदानुक्रम और सभी पुरोहतिों के अधकिारों की पुष्टि होती थी। इस बात से इनकार नहीं कयिा जा सकता कि इस प्रयास का उद्देश्य मठों के भूमि अधकिारों की पुष्टि करने वाले नए सबूत प्राप्त करना था। इन चार्टरों के संग्रह के साथ मेट्रोपॉलटिन के नकिटवर्ती गोष्ठी के एक अज्ञात लपिकि द्वारा रचति एक उपसंहार भी संलग्न था। इसमें, लेखक रूसी चर्च के प्रति 'पैगन ख़ानों' के उदार रवैये पर ज़ोर देता है, जन्हिोंने इसके वशिेषाधकिारों को पूरी तरह से संरक्षति रखा था, जसिमें करों से छूट भी शामलि थी। वह खानों को 'ऑर्थोडॉक्स राजकुमारों' के लिए एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है और उन्हें फटकारता है: 'हे ऑर्थोडॉक्स राजकुमारों और बोयारों, पवत्रि चर्चों के प्रति दया दखिाने का प्रयास करो, कहीं ऐसा न हो कि न्याय के दनि तुम उन बर्बर लोगों से लज्जति हो जाओ'[295] ।

यर्लकिों के इस संग्रह का संकलन 1550 में युवा ज़ार इवान चतुर्थ द्वारा मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन की संपत्ति का एक हस्सिा राज्य कोष में स्थानांतरति करने के प्रयास के बाद हुआ, ताकि इन भूमि को सेवा कुलीनों को जागीर के रूप में प्रदान कयिा जा सके। ज़ार की योजनाओं, साथ ही खरीद या वनिमिय के माध्यम से भूमि अधग्रिहण के संबंध में मेट्रोपॉलटिन के साथ हुई बातचीत, को मॉस्को पदानुक्रम से तीव्र आपत्तयिों का सामना करना पड़ा। मेट्रोपॉलटिन मकरयिस ने 'पृथ्वी पर सांसारकि आशीर्वादों की वरिासत के रूप में ईश्वर को सौंपी गई अचल संपत्ति पर' शीर्षक से एक वशिेष प्रबंध रचा। इसमें, उन्होंने ज़ार की योजनाओं का ज़ोरदार वरिोध कयिा और पवत्रि धर्मग्रंथों तथा परषिद के फ़रमानों से वभिन्नि उद्धरणों के साथ चर्च के अधकिारों का औचत्यि सद्धि कयिा। 'संक्षप्ति प्रवचन' की तरह, मकारी ने 'कांस्टेंटनि की दहेज'[296] का भी उल्लेख कयिा।

धर्मनरिपेक्ष और धार्मकि प्राधकिरण के बीच यह ववािद, जो शांतपिूर्वक समाप्त हुआ, इस बात का सबसे अच्छा उदाहरण है कि राज्य पूरी तरह से चर्च की संपत्तयिों के वस्तिार के पक्ष में नहीं था, क्योंकि उसे अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भूमि का पुनर्वतिरण करना आवश्यक था।

---

[293] उपरोक्त। प्रस्तावना। पृ. XXV–XXVII।

[294] उपरोक्त। पृ. 12, 16, 24, 29–31, 48। तुलना करें: गोलुबस्किी। 2. 2. पृ. 635, और माइकोव। IORAS. 1900. 2. पृ. 377।

[295] प्रसिलकोव। ख़ानों के चार्टर (1916)। पृ. 61। गोल्डन होर्ड के ख़ानों द्वारा जारी कए गए चार्टर रूसी चर्च के अधकिारों की पुष्टि करने वाले और उसे ख़ानों को कर देने से छूट देने वाले दस्तावेज़ थे।

[296] मकारी का प्रबंध: टकिोन्रावोव। क्रॉनकिल। खंड 5, भाग 3, पृ. 129; गोलुबस्किी। खंड 2, भाग 1, पृ. 800। ज़ार का फरमान: व्रेमेननकि। खंड 20, भाग 3, पृ. 41।

४. मठों की भूमि स्वामित्व को प्रतिबंधित करने के उद्देश्य से सोलहवीं सदी के सरकारी उपाय

इस बीच, मस्कोवाइट त्सारडॉम में चर्च की संपत्ति बढ़ती रही। तपस्या के लिए आश्रम के रूप में स्थापित मठ, अंततः—खरीद, दान और अन्य साधनों से भूमि अधिग्रहण के माध्यम से—वास्तविक आर्थिक उपनिवेश बन गए। मठों के अपने किसान थे, जो या तो मठ में काम करते थे, किराया देते थे, या मठ की भूमि पर अनिवार्य श्रम (कोर्वे लेबर) करते थे। मठों की आर्थिक समृद्धि और संपन्नता को राज्य प्राधिकरणों द्वारा प्रदान किए गए कई विशेषाधिकारों से बढ़ावा मिला। एडम क्लेमेंट, जिन्होंने 1553 में मास्को का दौरा किया था, ने लिखा कि मस्कोवाइट साम्राज्य में 'बहुत सारे बेसिलियन मठ बनाए जा रहे हैं; वहाँ बहुत सारे बेसिलियन मठ हैं, और उनके पास बहुत सारी ज़मीन है; पूरे साम्राज्य की ज़मीन का एक-तिहाई हिस्सा भिक्षुओं के पास है][297] ।

हालाँकि, मास्को के प्रिंसिपिलिटी के रूसी साम्राज्य के महान साम्राज्य में रूपांतरण ने सरकार के सामने अपनी सीमाओं के लिए सशस्त्र रक्षा प्रदान करने की आवश्यकता को खड़ा कर दिया। सेना का रखरखाव—जो मुख्य रूप से उन सैनिकों से मिलकर बनी थी जिन्हें उनकी सैन्य सेवा के बदले में जागीरें दी जाती थीं—एक ऐसा कार्य था जिसे सरकार पूरी तरह से संतोषजनक ढंग से हल नहीं कर सकी। जैसा कि ऐतिहासिक विद्वता द्वारा स्थापित किया गया है, भूमि ही राज्य की एकमात्र पूंजी थी। सरकार के पास खेती योग्य भूमि की कमी थी जिसे जागीरों के रूप में दिया जा सकता था; जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, इसका कारण यह है कि भूमि का एक बड़ा हिस्सा चर्च और मठों के स्वामित्व में था, और सभी नई भूमि अनुदान सरकार की पकड़ से बाहर होते रहे[298] .

1503 की परिषद से पहले ही, मॉस्को के ग्रैंड प्रिंसि ने मठों और धार्मिक संपत्तियों के खिलाफ पहले कदम उठा लिए थे। नोवगोरोड के विजय (1478) के बाद, उन्होंने नोवगोरोड क्षेत्र में भूमि के विशाल भूखंड—जो पहले मेट्रोपॉलिटिन और सबसे अमीर मठों के स्वामित्व में थे—को मॉस्को के अपने सेवादारों को जागीरों के रूप में बाँट दिया; यह मॉस्को की उपनिवेशीकरण नीति की एक विशिष्ट विशेषता थी[299] । नोवगोरोड के आर्चबिशप थियोफिलस—जो नोवगोरोड के लोगों द्वारा चुने गए अंतिम धर्मगुरु थे—ने मॉस्को सरकार द्वारा उठाए गए इन कदमों का कड़ा विरोध किया, लेकिन 1480 में उन्हें उनके पद से हटा दिया गया और उनकी जगह मॉस्को द्वारा नियुक्त आर्चबिशप सर्गियस (1483–1484) को नियुक्त कर दिया गया। 1490–1491 में, मॉस्को से विशेष रूप से भेजे गए लिपिकों द्वारा सभी चर्च और मठ संपत्तियों का सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण किया गया[300] । इस सूची के कारण *1499–1500 में* राज्य के पक्ष में चर्च और मठों की भूमि पर और अधिक जब्ती हुई, *यह एक ऐसा उपाय था जिसने गरीब मठों को भी प्रभावित किया*[301] /

यह स्पष्ट है कि 1503 की परिषद में वोलगा के पार के बुजुर्गों द्वारा प्रस्तुत पहल सरकार के लिए बहुत सुविधाजनक थी; हालांकि, जब यह पहल वोल्कोलांस्क के जोसेफ के दृढ़ आपत्तियों के कारण विफल हो गई, तो महा राजकुमार—जो निजी तौर पर इसका समर्थन करते थे—ने परिषद के फरमानों में बदलाव करने या नोवगोरोड की जब्ती को बड़े पैमाने पर दोहराने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

राजकुमार-भिक्षु वासियन की मठ संपत्तियों के खिलाफ निर्देशित बहुत सक्रिय साहित्यिक गतिविधि के बावजूद, इवान तृतीय के उत्तराधिकारों ने भी चर्च की भूमि-धारिता को प्रतिबंधित करने के लिए कोई निश्चित कदम नहीं उठाए। इसमें एक महत्वपूर्ण कारक यह था कि मेट्रोपॉलिटिन डेनियल (1522–1539), जो जोसेफाइट्स के विचारों से पूरी तरह सहमत थे, ग्रैंड प्रिंसि के साथ अच्छे संबंधों में थे, विशेष रूप से 1525 के बाद, जब उन्होंने वासिली तृतीय के दूसरे विवाह को आशीर्वाद दिया था। हालांकि, यह सच है कि स्टोग्लाव परिषद के फरमानों से पता चलता है कि वासिली के शासनकाल के दौरान, सरकार ने टवर, मिकुलिन, टोरज़ोक और बेलोजेरो जिलों में सेवादारों को अपनी संपत्ति को अपने आत्मा की शांति के लिए योगदान के रूप में मठों को हस्तांतरित करने से रोकने का एक फरमान जारी किया;

---

[297] क्लेमेंट एडम। में: *Rerum Moscoviticarum scriptores varii* (फ्रैंकफर्ट, 1600)। पृ. 152।

[298] अध्याय VII और VIII के लिए ग्रंथसूची देखें – S. Rozhdestvensky (1897), N. Rozhkov (1899), Y. Gautier (1915), V. Milyutin (1859–1861), Gorchakov (1868) द्वारा अध्ययन; और साथ ही: Kljutschewskij. Geschichte Rußlands. 2; Stählin. 1. pp. 296 ff.; Pavlov-Silvansky, N. The Tsar's Servants (1909).

[299] PSRL. 4. पृ. 216–217. निकितिस्की। वेलिकी नोवगोरोद में चर्च के आंतरिक इतिहास पर एक निबंध (1879)। पृ. 126.

[300] पावलोव। ऐतिहासिक निबंध। पृ. 32; ग्रेकोव। द नोवगोरोड हाउस ऑफ़ सेंट सोफिया (1914)। पृ. 246–247।

[301] पीएसआरएल। खंड 4. पृ. 271; और बेलोजेर्स्क क्षेत्र में, जो नोवगोरोड गणराज्य का हिस्सा था, कई किसान परिवारों को राज्य के नियंत्रण में स्थानांतरित कर दिया गया था। एस. ए. यू. संख्या 5. अधिक जानकारी के लिए देखें: ग्नेवुशेव, ए. मॉस्को में शामिल होने के बाद नोवगोरोड क्षेत्र की ग्रामीण आबादी के आर्थिक और सामाजिक जीवन पर निबंध। 1 (1915)। पृ. 3–8, 276–307, 347 ff., 355 ff. (संक्षिप्त में: BV. 1911. 2); Yanitsky, N. '16वीं सदी में नोवगोरोड क्षेत्र में आर्थिक संकट', में: Univ. Kyiv. 1914. 7. पृ. 12–14.

बाद में, इस प्रतबिंध का वस्तिार यारोस्लावल जलिों तक कर दयिा गया, सुज़दाल और स्टारोडुब जलिों[302] । वासलिी की मृत्यु (1533) के बाद, इवान चतुर्थ की अल्पवयस्कता और ग्रैंड डचेस एलेना के संरक्षक शासन के दौरान—जब राज्य शक्ति प्रभावी रूप से उनके पसंदीदा बोयारों के हाथों में थी—सरकार मठों की संपत्तयिों के वस्तिार को आंशकि रूप से रोकने में सफल रही। 1535 का एक चार्टर मलिा है, जसिमें ग्रुशट्सि्की मठ को महा राजकुमार की अनुमति के बनिा, संपत्तयिों को खरीदने या बदलने, या आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना के बदले में उन्हें स्वीकार करने से मना कयिा गया है[303] । एक साल बाद, सरकार ने नोवगोरोड में वभिन्नि चर्चों और मठों से बंजर भूमि—अर्थात अनुपजाऊ भूमि—पर कब्ज़ा कर लयिा। ये उपाय पूरी तरह से बोयारों की वचिारधारा के अनुरूप थे, जो चर्च को बोयार संपत्तयिों के हस्तांतरण को नापसंद करते थे[304] ।

इवान चतुर्थ के शासनकाल (1533–1584, वास्तव में 1546–1584) की शुरुआत ने मठ संपत्तयिों के मामले के नपिटान में एक नए युग की शुरुआत की। 1550 में युवा ज़ार द्वारा उनके वस्तिार को रोकने का पहला प्रयास मेट्रोपॉलटिन मकरईि ([305]) के कड़े वरिोध के कारण असफल रहा। सेवा वर्ग को जागीरों के रूप में बांटने के लिए भूमि प्राप्त करने की आवश्यकता, और संभवतःवरष्ठि आर्टेमी के साथ चर्चाओं ने, ज़ार को स्टोग्लाव परषिद में अपने संबोधनों ('ज़ार के प्रश्न') में, मठवासी जीवन की आलोचना के संबंध में कई अवसरों पर मठवासी जागीरों का मुद्दा उठाने के लिए मजबूर कयिा। स्टोग्लाव परषिद ने, यद्यपि सैद्धांतकि रूप से मठ और चर्च की संपत्ति की अक्षुण्णता की पुष्टि की, एक 'फर्मान' जारी कयिा, हालांकि, 11 मई 1551 की एक 'उक्तकिा' के अनुसार, जनि बशिपों ने बोयार, सैनकिों या कसिानों के बच्चों से ऋण के भुगतान के रूप में भूमि प्राप्त की थी, उन्हें इन भूखंडों को उनके पूर्व मालकिों को वापस करना अनविार्य था। इसके अलावा, ज़ार की अनुमति के बनिा बशिपों या मठों को हस्तांतरति की गई जमीनों को भी वापस कयिा जाना था। 'और जो कोई भी, शासक की जानकारी के बनिा,' आदेश में कहा गया है, 'अपनी मर्जी से अपनी संपत्ति किसी मठ को दे देता है, और उस संपत्ति को मठ शासक को भुगतान कए बनिा अपने पास रखता है।' तब से, मठ केवल ज़ार की सहमति से ही भूमि खरीद सकते थे[306] । इसके औपचारकि कठोरता के बावजूद, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, इस आदेश को व्यवहार में शायद ही लागू कयिा गया था। यह नहीं भूलना चाहिए कि, साथ ही, परषिद ने चर्च के अधकिार को मान्यता दी - जसिका प्रतनिधित्वि मेट्रोपॉलटिन, बशिपों और मठों ने कयिा - कि वह पहले से प्राप्त भूमि का स्वामित्व बनाए रखे। परणिामस्वरूप, स्टोग्लाव परषिद का यह नर्णिय केवल एक अस्थायी उपाय साबति हुआ। हम बाद में देखेंगे कि मठों की संपत्तयिों से संबंधति कानून औपचारकि रूप से तेजी से सख्त होते गए; फरि भी, दूसरी ओर, इस सख्ती के प्रभावों को ज़ार द्वारा जारी कए गए नए शाही चार्टरों द्वारा नष्प्रिभावी कर दयिा जाता था।

1557 के एक ज़ार के फरमान ने वसीयत करने वालों के रश्तिेदारों को यह अधकिार दयिा कि वे मठों से उन्हें वरिासत में मलिी संपत्तयिों को नश्चिति कीमतों पर वापस खरीद सकें[307] । हालाँकि, कुछ वर्षों बाद, 1572 की परषिद के एक प्रस्ताव द्वारा इस फरमान को रद्द कर दयिा गया। साथ ही, परषिद ने यह नयिम बनाया कि केवल गरीब मठ, जनिके पास बहुत कम जमीन थी, ही भूमि उपहार में स्वीकार कर सकते थे। सैद्धांतकि रूप से, 9 अक्टूबर 1572 का यह नर्णिय बहुत महत्व का था, क्योंकि इसने बड़े मठों द्वारा धन के और संचय को सीमति कर दयिा: 'जहाँ पहले से ही कई संपत्तयिाँ हैं, वहाँ बड़े मठों को और संपत्तयिाँ नहीं दी जानी चाहिए'। संपत्तयिाँ सेवा पुरुषों को लौटाई जानी थीं, 'ताकि सेवा को कोई हानि न हो और भूमि सेवा से वापस न ली जाए'[308] ।

अगली परषिद (1580) ने इस मुद्दे को काफी हद तक राज्य के पक्ष में हल कयिा: एक सामान्य नयिम अपनाया गया जसिके तहत न तो मेट्रोपॉलटिन, न बशिप और न ही मठ, ज़मींदारों से खरीद या सुरक्षा के रूप में भूमि प्राप्त कर सकते थे[309] । परषिद् ने इस फैसले को इस आधार पर सही ठहराया कि मस्कोवाइट त्ज़ार्डम दुश्मनों से घरि हुआ था

---

[302] एएई. 1. संख्या 227. पृ. 219; पावलोव. ऐतहिासकि नबिंध. पृ. 37.

[303] IRI. 3. पृ. 714. चार्टर के पहले पैराग्राफ से यह नष्किर्ष नकिाला जा सकता है कि ऐसी प्रक्रयिा केवल ग्लुशत्स्कि मठ के लिए ही नहीं थी; दुर्भाग्य से, यह साबति करने के लिए कोई दस्तावेज़ मौजूद नहीं है कि यह प्रक्रयिा सार्वभौमकि थी।

[304] PSRL. 4. पृ. 299. मास्को न्याय मंत्रालय अभलिेखागार में रखे गए दस्तावेज़ों और फ़ाइलों की सूची। 1 (1869). पृ. 169 (संख्या 1736); द अलेक्जेंडर नेवस्की क्रॉनकिल, में: RIB. 3. पृ. 248.

[305] तुलना करें: स्टोग्लाव। अध्याय 98 (काज़ान संस्करण, पृ. 412)।

[306] एएई. 1. संख्या 227. पृ. 219.

[307] AI. 1. संख्या 154. IV.

[308] AI. 1. संख्या 154. XIX. पावलोव (ऐतहिासकि नबिंध, पृ. 142) और गोर्चाकोव (भूमि स्वामित्व पर, पृ. 62) ने गलती से इस आदेश की तारीख 1573 बताई है।

[309] SGGD. 1. संख्या 200 (AAE. 1. संख्या 308, पृ. 372 में दयिा गया संस्करण गलत है)।

(परिषद् संभवतः पश्चिम में, लिवोनिया में युद्ध और क्रीमियाई तातारों के हमलों का संदर्भ दे रही थी), जिनके खिलाफ अच्छी तरह से सशस्त्र और सुसज्जित सैनिकों की आवश्यकता थी। फिर भी, सैनिक चरम गरीबी में धकेल दिए गए थे और उनके पास खुद को सुसज्जित करने के लिए न तो जमीन थी और न ही पैसा। इसके अलावा, परिषद ने यह भी नोट किया कि मठों के समृद्ध होने से मठवासी जीवन में भ्रष्टाचार फैलता है, जिससे भिक्षुओं में अत्यधिक खाने-पीने की आदत पनपती है; संभव है कि यहाँ परिषद के प्रतिभागियों के विचारों को दर्शाया गया हो।

1580 की परिषद का फरमान - विशेष रूप से इसका पहला भाग - यदि इसे व्यवहार में लाया गया होता, तो यह चर्च की जमींदारियों के मुद्दे को हल करने के लिए सरकारी उपायों के एक नए कार्यक्रम के रूप में काम कर सकता था। दो साल बाद, 20 जुलाई 1584 को, जार फ्योदर (1584-1598) के शासनकाल के दौरान, एक नई परिषद बुलाई गई। इस परिषद ने 1580 के फरमान की पुष्टि की और उसमें कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण उपाय जोड़े, अर्थात्: यदि स्थायी रूप से नहीं, तो अनिश्चित काल के लिए, 'तर्खानों' को समाप्त कर दिया गया – 'जब तक ज़ार का... फरमान... नहीं आ जाता कि तर्खानों को अलग रखा जाए, जब तक कि भूमि को व्यवस्थित नहीं कर दिया जाता... और सभी ज़ारशाही कर और स्थानीय शुल्कों का भुगतान हर 'तार्हान' द्वारा, यानी सभी लोगों द्वारा, 'तार्हान' के रूप में किया जाना था[310] ।

यह नया सरकारी उपाय, जो मुख्य रूप से राज्य की अत्यंत कठिन वित्तीय स्थिति से प्रेरित था, वास्तव में चर्च और मठों की जमीनों के खिलाफ था, क्योंकि उनमें से लगभग सभी को विशेष अनुदान पत्रों और तर्हां द्वारा राज्य को देय करों और शुल्कों से छूट दी गई थी। यदि सरकार द्वारा इस कार्यक्रम को लागू किया गया होता, तो एक ओर, चर्च और मठों की संपत्तियों के संबंध में सरकारी नीति में एक तीव्र बदलाव की बात की जा सकती थी, और दूसरी ओर, राज्य कोषागार के लिए राजस्व में एक महत्वपूर्ण वृद्धि की उम्मीद की जा सकती थी। हालांकि, परिषद के इस फरमान का बहुत जल्द ही - जैसा कि मस्कोवाइट राज्य के प्रशासनिक अभ्यास में अक्सर होता था - सरकार द्वारा स्वयं उल्लंघन कर दिया गया[311] । यह दिलचस्प और महत्वपूर्ण दोनों है कि अधिकारियों ने 20 जुलाई के परिषद के फरमान को तारहनों के वास्तविक उन्मूलन के रूप में माना और इसे जल्द से जल्द लागू करने का प्रयास किया। उसी वर्ष पतझड़ की शुरुआत में ही, मठों से याचिकाएँ प्राप्त हुईं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि स्थानीय अधिकारी उनसे करों की मांग कर रहे थे[312] ।

विभिन्न दस्तावेज़ दिखाते हैं कि, 20 जुलाई 1584 के फरमान जारी होने के तुरंत बाद, मठ प्राधिकरणों ने इसे दरकिनार करने के लिए कदम उठाए। इतना ही नहीं, 11 अगस्त को—यानी तीन सप्ताह बाद—सोलोवेत्स्की मठ अपने पुराने तारहान्स को बनाए रखने में सफल रहा, हालांकि इसके बदले में उसे वार्षिक किराया चुकाने की प्रतिबद्धता करनी पड़ी[313] । सरकारी नीति की आधे-अधूरे स्वरूप के अन्य उदाहरण भी दिए जा सकते हैं, जिसका अर्थ है कि इस नए कानून से राज्य को कोई विशेष व्यावहारिक लाभ नहीं मिला।

किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ की आर्थिक गतिविधियाँ विशेष रूप से बताने वाली हैं; 16वीं शताब्दी के दौरान, इसने विशाल भूमि-स्वामित्व जमा किया। इस मठ के दस्तावेज़ दिखाते हैं कि, स्टोग्लाव परिषद के निर्णय के बाद, मठ के अधिकारियों का उस निर्णय के अनुसार अपनी भूमि अधिग्रहण को कम करने का कोई इरादा नहीं था। इसके विपरीत, परिषद के बाद के शुरुआती वर्षों में - 1551 और 1572 के बीच - मठ के अधिकारी मुख्य रूप से उत्तर में नई भूमि खरीदने में लगे हुए थे, और सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि मठ ने इसके लिए ज़ार की अनुमति लेने का प्रयास भी नहीं किया। 1572 के फरमान के बाद, जिसने सैन्य सेवकों की आत्मा की शांति के लिए भूमि दान स्वीकार करने पर रोक लगा दी थी, मठ ने दान के रूप में हस्तांतरित नमक की खदानों और लवणशालाओं के माध्यम से खुद को समृद्ध करने का प्रयास किया। और 1580 के फरमान के बाद, मठ के अधिकारियों ने ज़ार को पहले प्रदान किए गए तारहान्स

---

[310] SGGD. 1. संख्या 202, पृष्ठ 594, 595।

[311] यह तथ्य पहले ही एस. एफ. प्लाटोनोव (एसेज़ ऑन द हिस्ट्री ऑफ़ द टाइम ऑफ़ ट्रबल्स (1899). पृ. 593) द्वारा स्थापित किया जा चुका था; तुलना करें उनके उत्कृष्ट कार्य 'बोरीस गोडुनोव' (1924). पृ. 82 से भी। ए. शपाकोव (द स्टेट एंड द चर्च इन देयर रिलेशंस विदिन द मस्कोवाइट स्टेट. द एस्टैब्लिशमेंट ऑफ द पैट्रिआर्केट इन रूस (1912)। पृ. 85, 39) का मानना था कि तारहनों की बहाली धर्मपरायण ज़ार फ्योडोर के आदेश पर की गई थी, जो मठों की याचिकाओं को अस्वीकार नहीं कर सकते थे।

[312] उदाहरण के लिए देखें: यारोस्लाव में स्पस्की मठ के ऐतिहासिक कार्य। 1 (1896)। संख्या 58, 59, 60; शुमाकोव, एस. वित्त बोर्ड के पत्रों की सूची। 4 (1917)। संख्या 1798; काताएव, आई. और काबानोव, ए. काउंट उवरोव के संग्रह के कार्यों की सूची। ऐतिहासिक अधिनियम (1905)। संख्या 58 – जो 11 अक्टूबर 1584 जितनी पुरानी तारीख की है; पेट्रोव, वी. टारखानों के उन्मूलन पर 1584 का परिषद संहिता, में: एस. एफ. प्लाटोनोव के सम्मान में संग्रह (1922)। पृ. 191–201।

[313] एएई. 1. संख्या 323.

को बनाए रखने के लिए मनाने में सफलता हासिल की[314] । 16वीं शताब्दी के अंत और 17वीं शताब्दी की शुरुआत के समान उदाहरण अन्य मठों की आर्थिक गतिविधियों में भी पाए जा सकते हैं, उदाहरण के लिए ट्वर और उग्लिच जिलों में[315] । ये उदाहरण इस बात का और सबूत हैं कि मस्कोवाइट राज्य में औपचारिक कानून और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग में कितना अंतर था; पूरे 16वीं शताब्दी में, चर्च और मठों की जमींदारियों का मुद्दा कभी भी निर्णायक रूप से हल नहीं हुआ[316] ।

5. 17वीं सदी में 1648 तक उठाए गए उपाय

समस्याओं के समय (1598–1613) के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक उथल-पुथल[317] ने मठों की संपत्तियों के संबंध में सरकारी नीति में कुछ बदलाव लाए हो सकते हैं। हालाँकि, इस नीति का विश्लेषण करने पर, हमें 1649 से पहले और ज़ार अलेक्सी के संहिता (1645–1676) से पहले, 17वीं सदी के पहले छमाही में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं मिलता है।

हालांकि 'समय की परेशानियों' (Time of Troubles) के बाद मस्कोवाइट त्ज़ारशाही (Muscovite Tsardom) की वित्तीय और आर्थिक स्थिति बहुत कठिन थी, सरकार मठों की भूमि जब्त करने के लिए कोई गंभीर उपाय लागू नहीं कर सकी[318] । यह तर्क दिया जा सकता है कि चर्च की संपत्तियों का धर्मनिरपेक्षीकरण करने का विचार ही धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के धार्मिक और राजनीतिक विचारों के लिए अपरिचित था; इसके अलावा, यह नहीं भूलना चाहिए कि ज़ार मिखाइल (1613–1645) के अधीन, ज़ार के पिता, पैट्रिआर्क फिलारेट (1619–1633) का प्रभाव बहुत अधिक था, और पैट्रिआर्क ने निश्चित रूप से चर्च के भूमि अधिकारों पर किसी भी प्रतिबंध का दृढ़ विरोध किया होगा[319] । परिणामस्वरूप, सरकार ने आधे-अधूरे मन से काम करना जारी रखा और अपने फरमानों में चर्च की जमीनों के मुद्दे को केवल अप्रत्यक्ष रूप से संबोधित किया[320] ।

इस संबंध में, दो फरमानों को याद करना आवश्यक है। पहला, 28 नवंबर 1620 का, यानी, यह उस समय जारी किया गया था जब पैट्रिआर्क फिलारेट, जबकि ज़ार मिखाइल अभी भी युवा थे, राज्य के प्रशासन में एक बड़ी भूमिका निभा रहे थे[321] , और इसने सैन्य अधिकारियों को ज़ार वासिली शुइस्की के शासनकाल के दौरान अपनी सेवा के लिए प्राप्त संपत्तियों का स्वतंत्र रूप से निपटान करने की अनुमति दी, जिसमें उन्हें आत्मा की शांति के लिए मठों को दान

---

[314] निकोल्स्की। द किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ। खंड 1, खंड 2। परिशिष्ट: XLII, LVI, LXXV, LXXVIII। ज़ार ने स्वयं परिषदों के आदेशों की अवहेलना की; उदाहरण के लिए, 1575 में उन्होंने किरिलोव मठ को ज़मीन प्रदान की, जो पहले से ही सबसे अमीर मठों में से एक था (Ayu. No. 126); 1583 में उन्होंने इस मठ को फिर से तीन गाँव प्रदान किए (Makarii. 8. pp. 255)।

[315] द ट्वर एक्ट्स। सं. एस. शुमाकोव। खंड 1 (1896)। क्रमांक 19, 20, 75; द उग्लिच एक्ट्स। खंड 1 (1898)। क्रमांक 46, 48, 70–73, आदि।

[316] चर्च की संपत्तियों की अखंडता पर चर्च पदानुक्रम द्वारा लगातार जोर देना, 1589 निनांकित नव-नियुक्त पैट्रिआर्क जॉब द्वारा जॉर्जिया के मेट्रोपॉलिटिन को लिखे गए एक पत्र से भी प्रमाणित होता है। Makarii. 10. पृ. 68; पत्र इस में: Christian Readings. 1869. 2. पृ. 867–893। एस. प्लाटोनोव के अनुसार, जार बोरिस के शासन के शुरुआती वर्षों (1598–1605) में, 1584 के तारहनों को समाप्त करने वाले फरमान को फिर से लागू कर दिया गया; लेकिन पहले ही फ्योदर के अधीन, 1593–1594 में, सरकार—जो वास्तव में बोरिस गोडुनोव के हाथ में थी—मठों के दस्तावेजों की समीक्षा करने के लिए मजबूर हो गई थी, और जिन संपत्तियों के लिए मठों के पास कोई सहायक दस्तावेज़ नहीं थे, उन्हें जब्त कर राज्य कोषागार में स्थानांतरित कर दिया गया था। प्लैटोनोव। बोरीस गोडुनोव (1924)। पृ. 149–150। दुर्भाग्यवश, इस 'समीक्षा' के संबंध में न तो कोई आधिकारिक रिकॉर्ड है और न ही कोई अन्य ऐतिहासिक सामग्री।

[317] आज भी, एस. एफ. प्लातोनोव का कार्य *एसेज़ ऑन द हिस्ट्री ऑफ़ द टाइम ऑफ़ ट्रबल्स इन द मस्कोवाइट स्टेट* (1899; दूसरा संस्करण 1912) 'समय की परेशानियों' के कारणों और घटनाओं का सर्वश्रेष्ठ अध्ययन बना हुआ है।

[318] समय की परेशानियों के दौरान चर्च और मठों द्वारा प्रदान की गई वित्तीय सहायता पर नीचे चर्चा की जाएगी।

[319] पितृपाद फाइलारेत को ज़ार से नई, विशाल भूमि अनुदान प्राप्त हुई; इसके अलावा, कई संपत्तियाँ खरीद के माध्यम से प्राप्त की गईं या उपहार के रूप में मिलीं – जबकि 16वीं सदी के फरमानों को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया गया। गोरचाकोव। भूमि स्वामित्व पर (1871)। पृ. 329–336। शासन के मामलों में फिलारेट के पर्याप्त प्रभाव के बारे में, देखें: स्टेसेव्स्की। *टसर मिखाइल फेडोरोविच के शासनकाल के इतिहास पर निबंध* (1913) और मकरिय। 11. पृ. 1–75। यहाँ 1625 के प्रसिद्ध फरमान का भी उल्लेख करना उचित होगा, जिसने पैट्रिआर्क के न्यायिक अधिकारों का काफी विस्तार किया (गोर्चाकोव। द मॉनास्टिक ऑफिस। पृ. 53) और 'पैट्रिआर्कल डोमेन' के मठों के लिए अत्यधिक महत्व का था।

[320] उदाहरण के लिए, 1619 के ज़ेम्स्की सोबोर का वह निर्णय, जिसके अनुसार 'समय की परेशानियों' के दौरान या बाद में चर्च और मठ की भूमि पर बसे शहर के लोग और जिले के निवासी, अनुदान पत्रों और तारहनों के आधार पर पहले की प्रथा के अनुसार करों और अन्य शुल्कों से मुक्त नहीं थे। AAE. 3. संख्या 105.

[321] PSRL. 5. पृ. 64; तुलना करें: SGGD. 3. संख्या 4 और स्मिरनोव। पैट्रिआर्क फिलारेट, में: CHOLDP. 1873. जून. पृ. 829.

करना या बेचना शामलि था[322] । दो साल बाद, 27 अगस्त 1622 को, एक और फरमान जारी कयिा गया, जसिके अनुसार 1613 के बाद आत्मा की शांतकि लिए अनुदान, उपहार के रूप में प्राप्त संपत्तयिाँ, या खरीद के माध्यम से प्राप्त संपत्तयिाँ, वसीयत करने वालों, दाताओं या उन्हें हस्तांतरति करने वालों के रश्तिेदारों द्वारा मठों से वापस ली जा सकती थीं; हालाँकि, 1613 से पहले मठों की संपत्तबिन चुकी जमीनों को केवल तभी मुक्त कराया जा सकता था, जब उस संबंध में याचकिाएँ 1613 से पहले प्रस्तुत की गई हों और मामले की सूचना ज़ार को दी गई हो; वे जमीनें जनिके लिए कोई याचकिाएँ प्रस्तुत नहीं की गई थीं, वे मठों की संपत्तबिनी रहीं[323] ।

प्रशासनकि प्रथा में, यह प्रथा थी कि कुछ अध्यादेश पूरे राज्य के लिए नहीं, बल्कि केवल वशिष्टि क्षेत्रों के लिए जारी कएि जाते थे; ऐसे अध्यादेश अक्सर मठों की संपत्तयिों से भी संबंधति होते थे। इस प्रकार, 1624 में, उत्तर में उस्त्युग जलि के लिए एक वशिष अध्यादेश जारी कयिा गया, जसिमें 'काली भूमि' और गांवों के 'आत्मकि शांतकि लिए' बक्रिी और वसीयत बनाने पर प्रतबिंध लगाया गया—अर्थात्, उन गांवों पर जो स्वतंत्र कसिानों द्वारा बसाए गए थे, जो राज्य को करों का भुगतान करते थे और अन्य दायत्विों को पूरा करते थे। हालांकि, 16वीं सदी की तरह, मठों के अधकिारयिों ने 1624 के इस फरमान को भी दरकनिार करने के तरीके खोज लिए। परणिामस्वरूप, 1651 में, सरकार ने आदेश दयिा कि 1624 के फरमान के बाद प्राप्त 'ब्लैक लैंड्स' राज्य को वापस कर दी जाएँ और इन भूमओिं पर रहने वाले कसिानों को राज्य कोष में स्थानांतरति कर दयिा जाए[324] ।

1641 का फरमान व्यावहारकि रूप से महत्वपूर्ण था; यद्यपि यह सख्त मायनों में मठों की संपत्तयिों से संबंधति नहीं था, यह मुख्यतःमठों के कसिानों को प्रभावति करता था। यह प्रभावी साबति हुआ क्योंकि इसका क्रयिान्वयन सरकार पर नहीं बल्कि नजिी पहल पर नरि्भर था। प्रसद्धि '1641 की याचकिाएँ' इस फरमान के लिए प्रेरक बनीं।वभिन्नि नगरों और जलिों के सेवकों ने ज़ार से मठों को प्राप्त वशिेषाधकिारों के बारे में शकिायत की, जो मठों को अपनी बेहतर आर्थकि स्थतिि सुनश्चिति करने, सेवकों की वंशानुगत जागीरों और ज़मीनों से कसिानों को अपनी ज़मीनों पर लुभाने, और भागे हुए कसिानों को अपनी जागीरों पर बसाने की अनुमतदिेते थे। सेवादारों ने यह भी शकिायत की कि 'नश्चिति-अवधि' या 'आरक्षति' वर्षों से संबंधति वशिेषाधकिारों ने अधकिार क्षेत्र के संबंध में बहुत भ्रम पैदा कयिा, क्योंकि वभिन्नि मठों के न्यायकि अधकिार भन्नि-भन्नि थे। इस सब का मठों की वत्तिीय स्थतिि पर तो अनुकूल प्रभाव पड़ा, लेकनि सेवादारों को भारी नुकसान हुआ। याचकिाकर्ताओं ने अनुरोध कयिा कि एक ऐसा फरमान जारी कयिा जाए जो भूमि-स्वामयिों को समय-सीमा के बनिा, भागे हुए कसिानों और चर्च की भूमि पर बस गए लोगों, जो करिाया देने के लिए बाध्य थे, को वापस लाने की अनुमतदि दे। (कसिान स्वयं स्वतंत्र थे, लेकनि भूमि से बंधे हुए थे।) ज़ार मखिाइल ने याचकिाकर्ताओं के अनुरोधों को एक संबंधति अध्यादेश जारी करके मंजूरी दे दी, और अब कई दास अपनी पहल पर मठों के खलिाफ कानूनी कार्यवाही कर सकते थे[325] ।

1641 का यह फरमान मठों की जमींदारयिों के मौलकि मुद्दे को केवल अप्रत्यक्ष रूप से छूता था, लेकनि इसने एक बार फरि सरकार का ध्यान इस मामले की ओर आकर्षति कयिा। वास्तव में, कुछ वर्षों बाद, 1649 के संहति के साथ, धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों ने धार्मकि संस्थानों के वशिेषाधकिारों पर अतक्रिमण कयिा, हालांकि अभी तक सबसे नरि्णायक तरीके से नहीं; मठों की जमींदारयिों के मुद्दे को अलग तरह से हल करना शुरू होने से पहले आधे-अधूरे उपायों की एक और आधी सदी बीत गई।

6. 1648 का संहति

ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि का 1649 का परषिद संहति – *1648–49 के* ज़ेम्स्की सोबोर के कार्य का परणिाम[326] – *चर्च और मठ संपत्तयिों के मुद्दे को अनदेखा नहीं कर सका, जो मस्कोवी की अर्थव्यवस्था के लिए*

---

[322] स्थानीय कार्यालय की डकि्री पुस्तक। सं. एन. स्टोरोज़्हेव। संख्या 6, में: न्याय मंत्रालय के अभलिेखागार के दस्तावेज़ों और फ़ाइलों की सूची। 6 (1896)।

[323] उपरोक्त. संख्या 96.

[324] ड्याकोनोव। 16वीं–17वीं शताब्दयिों में मस्कोवाइट राज्य की ग्रामीण आबादी के इतहिास पर नबिंध (1898)। पृ. 180। बोगोस्लोव्स्की। पूर्वोक्त, में: रीडग्सि। 1909। खंड 1। पृ. 59। यह इस बात का वशिेष लक्षण है कि मठ के अधकिारयिों ने इस आदेश को बड़ी आसानी से दरकनिार कर दयिा। उदाहरण के लिए, उस्त्युग शहर में स्थति आर्कएन्जेल मठ ने 1624 और 1648 के बीच भूमि की खरीद और गरिवी रखने से संबंधति 50 से कम लेनदेन नहीं कएि; इस अवधि के दौरान अन्य उत्तरी मठों ने भी इस तरह के 42 और लेनदेन कएि। वही, पृ. 86 आदि।

[325] AI. 3. संख्या 92. पृ. 33. हम मठ की अर्थव्यवस्था पर अध्याय में नश्चिति-अवधि पट्टों के प्रश्न पर लौटेंगे।

[326] *1648–49 के* ज़ेम्स्की सोबोर *को 1649 के सोबोर से भ्रमति नहीं कयिा जाना चाहिए, जो पूजा के कुछ मामलों को समर्पति था। बेलोकुरोव। 1649 के मास्को चर्चलि सोबोर की कार्यवाही, में: रीडग्सि। 1894. 4.* 1648–49 के *ज़ेम्स्की सोबोर* और 1649 के संहति के बारे में, देखें: लाटकनि, वी. ज़ेम्स्की सोबॉर्स ऑफ़ एन्सएिंट रस (1885); प्लाटोनोव, एस. स्रोत्स् सोर ट्ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि'स कोड, इन:

बहुत महत्वपूर्ण था। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इस सबसे प्रसिद्ध ज़ेम्स्की सोबोर के कई प्रस्ताव विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों की अनेक याचिकाओं के जवाब में अपनाए गए थे - वे वर्ग जो धार्मिक संस्थानों द्वारा प्राप्त कानूनी और वित्तीय विशेषाधिकारों की निंदा करते थे। यही स्पष्ट करता है कि इस संहिता ने, जो इन जमींदारियों की मांगों को पूरा करती थी, 1580 के पूर्व के फरमान की पुनःपुष्टि की और पादरी, बिशपों और मठों को किसी भी प्रकार से नई भूमि प्राप्त करने पर निर्णायक रूप से रोक लगा दी (संहिता, अध्याय 17, §§ 30 और 42)। इसके अलावा, चर्च और मठ की भूमि पर स्थित सभी बस्तियाँ और मुक्त नगर, जिन्हें विभिन्न विशेषाधिकारों के आधार पर करवानी श्रम से छूट प्राप्त थी, उन्हें राज्य कोष के अधिकार क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया गया, जबकि चर्च संस्थानों को ऐसी बस्तियाँ प्राप्त करने या स्थापित करने से प्रतिबंधित कर दिया गया (कोड, अध्याय 19, §§ 1, 5, 7–9, 13, 15, 16). ज़ेम्स्की सोबोर में प्रतिनिधित्व करने वाले एस्टेट्स ने और अधिक की मांग की, अर्थात् 1580 के बाद पादरियों के हाथों में चली गई सभी भूमि को जब्त करने की, ताकि उन्हें भूमिहीन सेवादारों को एस्टेट्स के रूप में वितरित किया जा सके। हालाँकि, जमींदार वर्गों की इन मांगों का पुरोहित वर्ग ने कड़ा विरोध किया और उन्हें मंजूरी नहीं दी गई - वे संहिता में परिलक्षित नहीं हैं। ज़ार ने केवल 1580 के फरमान के बाद अधिग्रहित सभी भूमि की एक सूची बनाने का आदेश देने का वादा किया।[327]

आंशिक धर्मनिरपेक्षता की मांग असफल रही। सरकार केवल चर्च की संपत्तियों के और विस्तार को सीमित करने के लिए ही सहमत हो सकी। चर्च ने अपनी पुरानी संपत्तियाँ—जो उसने 1580 के फरमान से पहले और बाद में प्राप्त की थीं—बनी रखीं। चूंकि 1649 के ज़ेम्स्की सोबोर ने 1580 से पहले प्राप्त संपत्तियों के संबंध में कोई फरमान जारी नहीं किया, और चूंकि 1580 के फरमान के बाद अधिग्रहीत भूमि को जब्त करने की जमींदारों की मांग को जार ने खारिज कर दिया था, इसलिए चर्च ने माना—जैसा कि बाद में कई मौकों पर व्यक्त किया गया—कि कोड में चर्च के पास मौजूद भूमि पर उसके अधिकार की मान्यता शामिल थी।

1649 के संहिता ने मठों द्वारा भूमि की खरीद को प्रतिबंधित करने के लिए, 1580 के निर्णय और स्टोग्लाव परिषद के एक earlier निर्णय (de jure) (अध्याय 17, § 42) की पुनःपुष्टि करने का प्रयास किया। 1651 में, सरकार ने तो यह आदेश भी दिया कि मठों, पैरिशों और व्यापारियों द्वारा खरीदे गए या जमानत के रूप में प्राप्त गाँवों को 'शासक को हस्तांतरित' किया जाए, यदि ये गाँव 'काले कर-भुगतान वाले वोल्स्ट' ([328]) में स्थित थे। दुर्भाग्य से, इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इस आदेश को कभी लागू किया गया। इसके विपरीत, यह ज्ञात है कि सरकार ने - 1649 के कोड और 1651 के फरमान के विपरीत - व्यक्तिगत मठों को, उनकी याचिकाओं के जवाब में, 'ब्लैक टैक्स-पेइंग' वोल्स्ट्स में किसानों द्वारा बसी भूमि का अधिग्रहण करने की अनुमति दी[329]। ज़ारों ने स्वयं 1649 के संहिता का उल्लंघन किया: 17वीं सदी के उत्तरार्ध के दस्तावेज़ कई उदाहरण देते हैं कि मठों को ज़ारों से उपहार के रूप में, शासक की जागीरों से, दोनों—अनुपजाऊ भूमि और किसानों द्वारा बसी भूमि—मिली[330]। इस प्रकार, 17वीं सदी में, सरकार ने 16वीं सदी की

युरिदिचेस्की वेस्टनिक. 1889. 11 (एक अत्यंत मूल्यवान अध्ययन); अर्खानगेल्स्की। 'ऑर्थोडॉक्स रूसी चर्च के संबंध में ज़ार अलेक्सी मिखाइलोविच के 1649 के परिषद संहिता पर', *क्रिश्चियन रीडिंग्स* में। 1881. 2. पृ. 42–134, 300–365; स्टडहलनि। 1. पृ. 379 से आगे। परिषद में प्रतिनिधित्व करने वाले वर्गों के विचारों और आकांक्षाओं को समर्पित पी. स्मिरनोव के कार्य, संहिता के संकलन की पृष्ठभूमि और इतिहास के लिए अत्यधिक मूल्यवान हैं: 1. संहिता और *1648–49 के* ज़ेम्स्की सोबोर *की* उत्पत्ति पर, *में: ZhMNP. 1913. 9; 2. परिषद् संहिता और* 1648–49 के *ज़ेम्स्की सोबोर के इतिहास पर कई दस्तावेज़,* इसमें: रीडिंग्स. 1913. 4 (विधि अनुभाग); 3. 17वीं शताब्दी के पहले छमाही में सभी शहरों के कुलीनों और बोयार के बेटों की याचिकाएँ, इसमें: रीडिंग्स. 1915. 3; 4. विदेशियों के निर्वासन के संबंध में मास्को के व्यापारियों की एक नई याचिका, इसमें: रीडिंग्स ऑफ द नेस्टर द क्रॉनिकलर सोसाइटी. 22 (1912). संख्या 4. स्मिरनोव के कार्य एक बार फिर चर्च और मठों की संपत्तियों के विस्तार से जमींदारों की असंतोष की सीमा को दर्शाते हैं।

[327] एएई. 4. संख्या 33. इस बात के प्रमाण के लिए कि 1649 का संहिता वास्तव में लागू किया गया था (यह विशेष रूप से बस्तियों के राज्य कोषागार में हस्तांतरण पर लागू होता है), देखें एएई. 4. संख्या 35, 36, 39; एआई. 4. संख्या 32; PSZ. 1. सं. 35; 2. सं. 731.

[328] RIB. 12. पृ. 261, 910, 932.

[329] 1652 में, यह अधिकार उत्तरी भाग में इवानोव्स्की और ग्लेडेन्स्की मठों को प्रदान किया गया था (RIB. 12. पृ. 261); 1663 में, दोनों मठों को एक अनुकूलता का चार्टर मिला, जिसके तहत उनकी ज़मीनों को उनके पूर्व मालिकों या उनके वारिसों को वापस करने के अधीन नहीं किया गया था (उसी में, पृ. 372), जो 27 अगस्त 1622 के डिक्री का खंडन करता था। यह विशेषाधिकार शायद व्यवहार में व्यापक रूप से लागू किया गया था, क्योंकि अन्य मठों को भी याचिकाओं के आधार पर विशेष अधिकार मिले, जिसके परिणामस्वरूप 17वीं शताब्दी में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में भूमि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सैन्य कुलीनों द्वारा किए गए कर्ज के कारण मठों के कब्जे में चला गया। तुलना करें: गौटियर। द मॉस्को रीजन (1937)। पृ. 232–233; शुमाकोव। द बेझेत्स्क एक्ट्स, में: रीडिंग्स। 1899. 1; ए.यू. संख्या 119. 3; वही। द उग्लिच एक्ट्स। वही।

[330] निम्नलिखित को उपहार प्राप्त हुए: 1682 में, साव्वो-स्टोरोज़्हेव्स्की मठ; *1682–83* में, *पैट्रिआर्क जोआकिम; 1683 में, रोस्तोव के मेट्रोपॉलिटन जोनाह;* 1685–86 *में,* न्यू जेरूसलम मठ; *1692–93* में – *गोरीत्स्की मठ; 1689 में – रोस्तोव में रोज़्देस्त्वेंस्की मठ। गौटियर। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 224, 222। 1672 में, एक फरमान ने विभिन्न जिलों में बेकार और अनुपजाऊ भूमि को पैट्रिआर्क, बिशपों और मठों को प्रदान*

ही तरह काम कयिा, और 1649 के कोड की सख्त शब्दावली ने वास्तव में मठों के भूमि-स्वामित्व के अधिकारों पर बहुत कम प्रतिबंध लगाए।

7. ग्रैंड पैलेस कार्यालय और मठ कार्यालय

1649 संहिता के आधार पर, एक नई संस्था स्थापित की गई, जिसे तथाकथित मठ कार्यालय कहा जाता था, जिसने वास्तव में मठ संपत्तियों के मुद्दे को हल करने में कोई विशेष महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई, और न ही यह, मूल रूप से, कुछ वास्तव में नया था; हालांकि, मठ कार्यालय की स्थापना से पादरियों के अधिकार क्षेत्र में बदलाव हुए, साथ ही चर्च के प्रति मास्को सरकार की नीति में भी कुछ बदलाव आए[331] । परिणामस्वरूप, मठ विभाग की स्थापना ने पादरियों में बहुत मजबूत असंतोष और आलोचना को जन्म दिया, जो खुली और गुप्त दोनों तरह की थी; यह चर्च और मठ संपत्तियों के मुद्दे के बजाय इस विशेष क्षेत्र में हुए परिवर्तनों के कारण था[332] ।

हालांकि 1503 और 1649 के बीच मॉस्को के धर्मनिरपेक्ष अधिकारी चर्च—और, सबसे बढ़कर, मठों—की जमींदारियों के संबंध में कट्टरपंथी सुधार करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर सके, आंशिक रूप से सरकार पर बिशपों के प्रभाव के कारण और आंशिक रूप से उस युग के लोगों के धार्मिक विचारों के कारण, फिर भी सरकार ने चर्च और मठों की जमीनों की स्थिति को समझने, उन पर कुछ नियंत्रण स्थापित करने, और मठों की संपत्तियों से अपने लिए कुछ लाभ सुनिश्चित करने को कम से कम आवश्यक समझा। हालांकि, मठ कार्यालय की स्थापना सरकारी नीति में केवल एक मामूली नवाचार था, क्योंकि मठ कार्यालय और पेट्रिन युग के सिनिड से बहुत पहले ही, मास्को में धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों ने मठ संपत्तियों से संबंधित मामलों सहित, धार्मिक संस्थानों की स्थायी निगरानी पहले ही शुरू कर दी थी। यह नियंत्रण ग्रैंड पैलेस कार्यालय द्वारा किया जाता था। यह मस्कोवी की उन संस्थाओं में से एक थी, जिनकी गतिविधियों को चर्च और राज्य के बीच संबंध पर चर्चा करते समय अनदेखा नहीं किया जा सकता।

ग्रैंड पैलेस कार्यालय का पहली बार उल्लेख 1547 में[333] में मिलता है, हालांकि यह माना जा सकता है कि इसका अस्तित्व इससे पहले, ग्रैंड प्रिंस इवान तृतीय (1462–1505) के समय से ही था, यद्यपि उस समय इसकी गतिविधियाँ छोटे पैमाने पर थीं[334] । 'धार्मिक संस्थानों और उनकी संपत्तियों से संबंधित सभी मामले, जो सीधे शासक के आदेशों के अधीन आते थे, 16वीं शताब्दी के मध्य से 17वीं शताब्दी के मध्य तक (1649 के सोबोर्नोये उलोजेनिये तक) ग्रैंड पैलेस कार्यालय के माध्यम से शासक को रिपोर्ट किए जाते थे। यह वही कार्यालय था जो उनका प्रशासन करता था; यही वह कार्यालय था जिसके माध्यम से धार्मिक अधिकारियों, संस्थानों और संबंधित व्यक्तियों को ज़ार के फरमान जारी किए जाते थे[335] । अभिलेखों में कई मौकों पर ऐसे उदाहरणों का उल्लेख मिलता है जहाँ मठ संबंधी मामलों को यहीं सुलझाया गया था[336] । यह संस्थान, जो प्राचीन रूस के प्रशासन के लिए प्रथागत रूप से विभिन्न प्रकार के मामलों की देखरेख करता था, ने अन्य बातों के अलावा, मठों की संपत्तियों पर नियंत्रण भी किया; ज़ार मिखाइल (1613–1645) के शासनकाल के दस्तावेज़ अक्सर इस कार्यालय के भीतर एक विभाग का उल्लेख करते हैं, जिसे तब तक 'मठ कार्यालय और मठ एवं पुनर्वास मामलों का कार्यालय' के नाम से जाना जाता था[337] । इस कार्यालय का प्रबंधन एक बोयार, जिसे

करने का अधिकार दिया; एक साल बाद, एक नया फरमान जारी किया गया जिसने और अधिग्रहण के दायरे का विस्तार किया। पीएसजेड. 1. संख्या 521, 549, 552, 554.

[331] मठों के अधिकार क्षेत्र के लिए, अध्याय IX देखें। मठ कार्यालय पर: गोर्चाकोव, एम. *द मोनास्टिक ऑफिस* (1868) – एक ऐसा अध्ययन जिसने आज तक अपना विद्वतापूर्ण महत्व बनाए रखा है; एक अन्य कृति पर ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है: शमिको, आई., *द पैट्रिआर्केल स्टेट ऑफिस* (1894), और एक और कृति: गोर्चाकोव, *ऑन द लैंडहोल्डिंग्स ऑफ द ऑल-रशियन मेट्रोपॉलिटिन्स, पैट्रिआर्क्स एंड द होली सिनॉड* (1871)।

[332] पैट्रिआर्क निकोन ने मठ कार्यालय की स्थापना के खिलाफ विशेष रूप से तीव्र विरोध किया: 'कोड पर पैट्रिआर्क निकोन की राय', में: ओआरएसए के नोट्स। 2 (1861)। पृ. 456–497, विशेष रूप से पृ. 451; चर्च की धार्मिक संपत्ति पर अधिकारों के बारे में: पृ. 453, 449। तुलना करें: गोर्चाकोव। द मॉनास्टिक डिपार्टमेंट। पृ. 19 और झुकोव, ए. पैट्रिआर्क निकोन के विचार धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक प्राधिकरण के बीच संबंधों पर निकोन, में: लीगल कलेक्शन 1916. 3–4। हालांकि, निकोन ने केवल पादरी वर्ग के अधिकार क्षेत्र में बदलाव के खिलाफ विरोध किया। मठवासी कार्यालय की अप्रसन्नता 1667 की परिषद में व्यक्त की गई राय में भी पाई जा सकती है, में: PSZ। 1. संख्या 412; AAE. 4. संख्या 167। परिषद ने पुरोहित वर्ग पर मठवासी आदेश के अधिकार क्षेत्र को समाप्त करने का प्रयास किया। तुलना करें: गोरचाकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 95–97।

[333] AI. 1. संख्या 149.

[334] नेवोलीन, के. ए. 'जॉन तृतीय से पीटर प्रथम तक प्रशासन का गठन', में: संग्रहित कृतियाँ, खंड 6।

[335] गोर्चाकोव। द मोनास्टिक ऑर्डर। पृ. 40; ग्रैंड पैलेस कार्यालय के संक्षिप्त इतिहास के लिए वहाँ भी देखें।

[336] उदाहरण के लिए: AI. 1. संख्या 155; 2. संख्या 353; AAE. 1. संख्या 299.

[337] I. 3. संख्या 65; AAE. 2. संख्या 277; AI. 2. संख्या 355; SGGD. 2. संख्या 219.

प्रबंधक कहा जाता था, और लिपिकों द्वारा किया जाता था। यह मठ संपत्तियों से संबंधित सभी वित्तीय मामलों से निपटता था: उपजाऊ भूमि पर सामान्य कर, मछली पकड़ने के अधिकारों पर कर—जिसे राज्य मठों को एक निश्चित शुल्क पर पट्टे पर देता था—और नमक कारखानों तथा अन्य आर्थिक उद्यमों पर कर[338] ; बाद में, 17वीं शताब्दी में, यह फसल की कटाई और सैन्य सेवा के लिए भर्ती के पर्यवेक्षण के लिए भी जिम्मेदार था[339] । हालाँकि, यह सब केवल उन मठों पर लागू होता था जिनके पास विशेषाधिकार वाले शाही चार्टर थे; जिन मठों के पास ऐसे चार्टर नहीं थे - और कुछ थे - वे लेवी, किराए और करों के भुगतान के लिए स्थानीय अधिकारियों के प्रति जिवाबदेह थे[340] ।

ग्रैंड पैलेस कार्यालय ने विभिन्न मठों से संबंधित सभी फरमानों और पेटेंट पत्रों का हिसाब रखा; यहीं धार्मिक संस्थानों की भूमि-स्वामित्व और अन्य संपत्तियों की सूची और कराधान पर नियंत्रण केंद्रीकृत था, और यहीं इन संस्थानों की खरीद और व्यय की रिपोर्टें प्रस्तुत की जाती थीं। हालाँकि, यह एक समान, सार्वभौमिक रूप से बाध्यकारी कानून के आधार पर नहीं, बल्कि ज़ार द्वारा जारी व्यक्तिगत आदेशों और फरमानों के आधार पर किया जाता था, जिन्हें विभिन्न मठों पर समान रूप से लागू नहीं किया जाता था, बल्कि यह ज़ार की व्यक्तिगत पसंद, समय की परिस्थितियों और मठीय अधिकारियों की चतुराई पर निर्भर करता था। यहीं पर नए अनुदान पत्र और तारहान जारी किए जाते थे, पुराने पत्रों को मान्यता दी जाती थी, विवादास्पद मुद्दों को हल किया जाता था, याचिकाओं और शिकायतों पर विचार किया जाता था, और भूमि-धिार के रूप में मठों को दिए गए दान के साथ-साथ वार्षिक या एकमुश्त वित्तीय सहायता (रुगी) को भी दर्ज किया जाता था[341] . संक्षेप में, यह सरकारी निकायों और मठों तथा उनकी जमीनों के बीच सभी लेन-देन का केंद्र था। बड़े और छोटे, दोनों तरह के मठ, कानूनी कारणों की तुलना में अधिक व्यावहारिक कारणों से ग्रैंड पैलेस कार्यालय के अधिकार क्षेत्र में आने की कोशिश करते थे, क्योंकि इस अधीनता ने उन्हें स्थानीय अधिकारियों के साथ कई और बार-बार होने वाले टकरावों से बचाया, जो मस्कोवाइट रस में इस तरह के मामलों में बहुत निपुण थे। किसी मठ के पास विशेषाधिकार के चार्टर का होना न केवल कानूनी और आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था, बल्कि इसलिए भी कि यह मठ को स्थानीय अधिकारियों की निगरानी से मुक्त करता था। इसलिए यह विचित्र परिस्थिति थी कि मठों के लिए ग्रैंड पैलेस ऑफिस पर एक निश्चित हद तक निर्भरता वांछनीय थी और वे इसे महत्व देते थे। यह विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन उस समय के पादरियों की राज्य और चर्च के बीच संबंधों पर विचारों के अनुसार, यह निर्भरता चर्च और उसकी संस्थाओं के अधिकारों का कोई उल्लंघन नहीं थी - पादरियों के अधिकार क्षेत्र के प्रश्न के विपरीत, जो उनके लिए मौलिक महत्व का था। ग्रैंड पैलेस कार्यालय अपने आप चर्च के भूमि अधिकारों को रद्द नहीं कर सकता था; इसलिए चर्च के हित में था कि वह कार्यालय के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखे, और मौजूदा परिस्थितियों से सरकार को होने वाले वित्तीय और आर्थिक लाभों पर जोर दे। समय-समय पर, जैसे-जैसे राज्य की वित्तीय और आर्थिक स्थिति बिगड़ती गई, सरकार ने मठों की जमीनों के मुद्दे को चर्चा के लिए उठाने का प्रयास किया; हालाँकि, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सरकार इस मामले से निपटने वाली किसी भी परिषद में इसे हल करने में कोई ठोस प्रगति करने में विफल रही; औपचारिक रूप से, निर्णय अक्सर पर्याप्त रूप से कठोर होते थे, लेकिन व्यवहार में इसका परिणाम हमेशा एक सर्कुलस विटियोसस (एक दुष्चक्र – अनुवादक का नोट) होता था।

मठ विभाग की स्थापना भी किसी भी महत्वपूर्ण बदलाव को लाने में विफल रही। मस्कोवाइट रूस के विधान की सबसे विशिष्ट विशेषता इसकी दीर्घकालिक अपूर्णता और भ्रम है; क्या इसका संबंध इस ऐतिहासिक परिस्थिति से हो सकता है कि प्राचीन रूस, पश्चिमी यूरोप के विपरीत, रोमन कानून से अपरिचित था, जो सभी कानूनी मामलों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में बहुत निपुण है? 'इसलिए, संहिता के प्रावधानों में, चूके हुए हिस्से, अस्पष्टताएँ और विरोधाभास, साथ ही सिद्धांतों में एक निश्चित द्वैतता है'[342] , विशेष रूप से पुरोहित वर्ग के अधिकार क्षेत्र के संबंध में; इस प्रकार, नई संस्था के लिए संहिता में कोई स्पष्ट कानूनी आधार नहीं था। मठ कार्यालय ने ग्रैंड पैलेस कार्यालय से मठ संपत्तियों से संबंधित सभी मामलों को अपने अधीन कर लिया और उन्हें अपने पूर्ववर्ती की ही तरह संभाला। जब 1667 की परिषद ने पादरी वर्ग पर मठ विभाग के अधिकार को समाप्त कर दिया[343] , तब भी विभाग ने कोरवी श्रम और चर्च तथा मठ की भूमि पर लगाए गए करों से संबंधित मामलों की जिम्मेदारी बनाए रखी, जो पहले ग्रैंड पैलेस विभाग के अधिकार क्षेत्र में थे; ये परिवर्तन मामूली थे और मौलिक होने के बजाय व्यावहारिक प्रकृति के थे। मठ

---

[338] AI. 1. संख्या 192 और अन्य।

[339] AAE. 4. संख्याएँ 16, 82; DAI. 2. संख्या 37; तुलना करें: गोरचाकोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 42।

[340] AI. 1. संख्याएँ 155, 158; 2. संख्या 249; 3. संख्या 162; AAE. 4. संख्याएँ 56, 315.

[341] गोरचाकोव. उद्धृत कृति, पृ. 42; AI. 3. संख्या 162; AAE. 1. संख्या 227; 2. संख्या 56.

[342] गोर्चाकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 68। तुलना करें: एक भिन्न दृष्टिकोण: व्लादिमीरस्की-बुदानोव, एम. समीक्षा (1888), पृ. 210।

[343] गोर्चाकोव। पूर्वोक्त, पृ. 95। पीएसजेड. 1. सं. 412।

कार्यालय की गतविधियिाँ, जैसा कि गोर्चाकोव लखिते हैं, 'इसके लिए नरि्धारति सीमाओं के भीतर भी बहुत सीमति थीं'[344] । 17 दसिंबर 1677 को, एक ज़ार का फरमान जारी कयिा गया जसिने मठ कार्यालय के अस्तत्वि को समाप्त कर दयिा: इसे सभी मामलों को ग्रैंड पैलेस कार्यालय[345] को हस्तांतरति करने का आदेश दयिा गया, ताकि मठ की जमींदारयिाँ एक बार फरि से पहले से उल्लेखति सभी मामलों में बाद वाले के अधकिार क्षेत्र में आ गईं।

हालांकि, 1667 की परषिद ने एक कदम और आगे बढ़ाया। इस परषिद के सदस्यों—धर्मगुरुओं और पुरोहतिों—ने मठवासी जीवन पर धन के भ्रष्ट प्रभाव को पहचाना और भक्षिुओं को व्यक्तगित अचल संपत्ति रखने से मना कर दयिा, क्योंकि यह उनके मठवासी व्रतों[346] के वपिरीत था, इस प्रकार उन्होंने केवल आधा काम ही कयिा। 1667 के परषिद में मठ संपत्तयिों का मुद्दा तो उठाया भी नहीं गया था, और यह सुरक्षति रूप से कहा जा सकता है कि परषिद, जसिने पादरयिों के अधकिार क्षेत्र के प्रश्न पर इतनी बड़ी सफलता हासलि की थी, दृढ़ता से इस वचिार पर कायम थी कि धार्मकि संस्थानों को भूमि-स्वामतिव का पूरा अधकिार था[347] ।

इस प्रकार, 17वीं शताब्दी के अंत में मठ संपत्तयिों के मुद्दे को हल करने में, कुछ भी मौलकि रूप से नया हासलि नहीं हुआ: संपत्तयिाँ मठों के हाथों में ही रहीं, और इसका मठ जीवन पर प्रभाव पड़ना स्वाभावकि था। 16वीं शताब्दी के पहले छमाही के संचय-वरिोधयिों के भय और भवषि्यवाणयिाँ ऐतहिासकि घटनाक्रमों द्वारा पूरी तरह से सही साबति हुईं। दो शताब्दयिों के दौरान, मठों के जीवन का धर्मनरिपेक्षीकरण लगातार तीव्र होता गया और मठों के जीवन के ताने-बाने में और भी गहराई तक समा गया। मठ, अपनी संपत्ति और अपनी नरिंतर भौतकि चंतिाओं के साथ, संसार का त्याग करने की जगह से बदलकर एक प्रकार के वाणज्यिकि उद्यम में बदल गया। 16वीं और 17वीं शताब्दी में मठों की आर्थकि स्थति उनके आंतरकि जीवन की नींव बन गई। मठ जीवन की कई नकारात्मक वशिेषताएँ, जन्हिोंने मठवाद को धर्मनरिपेक्षता और संकट की ओर धकेला, इस तथ्य से समझी जा सकती हैं कि गैर-अधग्रिहणकर्ताओं के वचिारों को व्यवहार में नहीं लाया गया था। इसके लिए काफी हद तक दोष उनके वरिोधयिों - जोसेफट्सि पर आता है। ज़ार पीटर महान के सुधारों ने, जो मस्कोवी में एक तूफान की तरह छा गए, प्राचीन रूसी मठवासी जीवन शैली की नींव को भी हलिा दयिा। यदि उन्हें समय रहते लागू कर दयिा गया होता, तो वे कम से कम मठवासी जीवन के भीतर धर्मनरिपेक्षता की प्रक्रयिा को धीमा कर सकते थे। हालाँकि, पीटर का धार्मकि सुधार और ईसाई संन्यासवाद पर उनके वचिार एक दोषपूर्ण नींव पर बने थे और वे गैर-स्वामतिववादयिों के सद्धिांतों से उत्पन्न नहीं हुए थे। परणिामस्वरूप, धर्मनरिपेक्षीकरण की प्रक्रयिा नहीं रुकी; यह जारी रही, यद्यपि थोड़े अलग रूपों में।

अध्याय VII. 16वीं-17वीं शताब्दयिों में मठवासी उपनवि़ेशवाद के मुख्य रुझान

1. उपनवि़ेशवाद की राज्य और राजनीतकि स्थतियिाँ

भक्षिुणयिों की भूमि-स्वामतिव का प्रश्न, जो कई ववािदास्पद ग्रंथों और मॉस्को सरकार द्वारा उठाए गए कुछ उपायों के बावजूद कभी नरि्णायक रूप से हल नहीं हुआ, इस अवधि के दौरान भक्षिुणयिों के जीवन के संगठन के लिए वशिेष महत्व का था। मठों का समृद्धकिरण, कुछ दुर्लभ अपवादों को छोड़कर, रूसी मठवासी समुदाय के सर्वश्रेष्ठ तत्वों को मठवासी आदर्श के वपिरीत दशिा में नरि्देशति एक आंदोलन में खींच लाया। लेकनि यह स्थति केवल मौजूदा मठों के आर्थकि वकिास के कारण ही नहीं बनी। 16वीं–17वीं शताब्दयिों में, कई नए मठ स्थापति कएि गए, जन्हिोंने या तो उपहार में वशिाल भूमि-स्वामतिव प्राप्त कएि या स्वयं उन्हें प्राप्त कयिा, इस प्रकार मठों की संपत्ति में वृद्धि न केवल पुराने मठों की समृद्धि से जुड़ी थी, बल्कि भौगोलकि रूप से वसि्तारति मॉस्को के ज़ारशाही के वभिन्नि हस्सिों में नए मठों के उदय से भी जुड़ी थी, जो बहुत जल्द ही बड़ी आर्थकि कॉलोनयिों में बदल गए।

---

[344] गोर्चाकोव। उद्धृत कृति, पृ. 101। कुछ मठों ने भूमि-स्वामतिव से संबंधति मामलों को ग्रैंड पैलेस कार्यालय को भेजने का प्रयास कयिा (उदाहरण के लिए: AI. 4. संख्या 166)।

[345] PSZ. 2. संख्या 699. गोरचाकोव. उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 101। इस आदेश का जारी होना कम से कम 1675 की परषिद के आदेशों से प्रेरति नहीं था: इनका उद्देश्य धर्मगुरुओं को अधकिार क्षेत्र के मामलों में धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों के हस्तक्षेप से बचाना था। एएई. 4. संख्या 204 और 205।

[346] गोर्चाकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 112; पीएसजेड. 1. सं. 412। 1669 की परषिद ने इस फरमान की पुष्टकि की और आदेश दयिा कि पादरयिों या मठों के स्वामतिव वाली और उनके प्रबंधकों द्वारा प्रबंधति दुकानें और अन्य वाणज्यिकि प्रतषि्ठान ज़ार, यानी राज्य को सौंप दएि जाएँ। PSZ. 1. संख्या 442, § 12; AAE. 4. पृ. 161.

[347] गोर्चाकोव। पूर्वोक्त, पृ. 114–115।

इस अवधि के दौरान - 16वीं शताब्दी के पहले चौथाई से 17वीं शताब्दी के अंत तक - मठों द्वारा उपनिवेशवाद, 14वीं-15वीं शताब्दियों के मठों द्वारा उपनिवेशवाद से पूरी तरह अलग प्रकृति का था, जिसका वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं, जब उपनिवेशवाद के मुख्य क्षेत्र मॉस्को के ग्रैंड डची का केंद्र और उत्तरी ट्रांस-वोलगा क्षेत्र थे। 15वीं सदी में ट्रांस-वोलगा क्षेत्र में, केवल तपस्वी उद्देश्यों से प्रेरित पुराना रूसी भिक्षु, इस विशाल वन क्षेत्र—रूसी 'फिनिश'—के आर्थिक पुनरुत्थान में मुख्य कारक था, जहाँ उस समय केवल किसान बस्तियों के छोटे-छोटे 'निवास' थे। मस्कोवी राज्य ने, बहुत अधिक प्रयास किए बिना, ट्रांस-वोलगा क्षेत्र में कई वर्षों के मठवासी उपनिवेशीकरण के फलों पर कब्ज़ा कर लिया। मॉस्को के ग्रैंड डची का क्षेत्रीय विस्तार और इसका मॉस्को के ज़ारशाही में रूपांतरण, अपनज प्रमुखताओं का एकीकरण, और पूर्व में सफल अभियान, जिसके परिणामस्वरूप 1552 में 1552 में कज़ान खानत के विजयी अभियान, और डेनिएपर तथा वोल्गा के बीच के स्टेप क्षेत्र में दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की ओर धीमी लेकिन स्थिर उपनिवेशीकरण की ओर – यह सब कई किलेबंद शहरों की स्थापना और, बाद में, एक किलेबंद रेखा – 'रक्षात्मक रेखा' – के निर्माण का कारण बना, जिसने नई बस्तियों की रक्षा की। पूर्व और दक्षिण में, राज्य स्वयं उपनिवेशीकरण की मुख्य प्रेरक शक्ति और नियंत्रक था, हालांकि नए भूभागों के विकास में स्वतंत्र बस्तियाँ अक्सर उससे आगे निकल जाती थीं।

16वीं शताब्दी के पहले चौथाई भाग के बाद मठों द्वारा उपनिवेशीकरण का इतिहास इस परिस्थिति से आकार पाया है। अब, नियम के अनुसार, मठ या तो शहरों में या उनके पास बनाए जाते थे; यानी, ये शहरी मठ थे, जो रूसी उत्तर के जंगली आश्रमों से काफी अलग थे। उनमें से अधिकांश की स्थापना व्यक्तिगत तपस्वियों की स्वतंत्र पहल पर नहीं, बल्कि राज्य और धार्मिक प्राधिकरणों के आदेश से की गई थी। लगभग सभी मठ किसी शहर की स्थापना के तुरंत बाद बनाए गए थे, और उनका अस्तित्व, साथ ही उनके भीतर मठवासी जीवन की संरचना, उन शहरों के राजनीतिक महत्व से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थी जिनमें वे स्थापित किए गए थे। कई मठ धर्मनिरपेक्ष और चर्च अधिकारियों के आदेश से स्थापित किए गए थे - यह महत्वपूर्ण तथ्य विशेष ध्यान का पात्र है। ज़ार या मेट्रोपॉलिटन के लिए, मठों की स्थापना एक राजकीय मामला और एक मिशनरी प्रयास दोनों था; वे मुख्य रूप से जातीय रूप से विविध पूर्व में, अपेक्षाकृत बड़ी मूर्तिपूजक आबादी के साथ बनाए गए थे, जबकि उस समय के लोगों के लिए चर्चों और मठों के बिना एक रूसी शहर की कल्पना भी असंभव थी। नए अधिग्रहित क्षेत्रों का ईसाईकरण मॉस्को सरकार[348] के लिए एक पवित्र कर्तव्य था, और पूर्व में नव-स्थापित मठों के मठवासी समुदायों को एक व्यापक ईसाई मिशन को अंजाम देने का कार्य सौंपा गया था – 14वीं-15वीं शताब्दियों में, इस प्रकार की गतिविधियाँ काफी मामूली थीं। यह प्रयास, जिसने आंशिक रूप से मठवासी जीवन के धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया में बाधा डाली, उस युग की परिभाषित विशेषताओं में से एक था। उपनिवेशीकरण के इतिहास का अध्ययन करने पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में, स्थानीय परिस्थितियों ने किसी विशेष मठ के भीतर मठवासी जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. मठ-उपनिवेशवाद के छह मुख्य क्षेत्र

16वीं और 17वीं शताब्दी मठ निर्माण की तीव्र अवधि थी। वी. ओ. क्लुचेव्स्की[349] के अनुमानित गणनाओं के आधार पर, एक तालिका तैयार की जा सकती है जो तपस्थलों और शहरी मठों के अनुपात को दर्शाती है:

शताब्दियाँ	XIV	XV	XVI	XIV–XVI
एकांतवास	42	57	51	150
शहरी मठ	42	27	35	104
कुल	84	84	86	254

17वीं सदी में, लगभग 220 मठ स्थापित किए गए थे[350] ।

---

[348] ज़ार इवान चौथे ने काज़ान के पहले आर्चबिशप (1555–1563) गुरी को लिखे अपने पत्र में चर्च के मिशनरी कार्यों का उल्लेख किया। AAE. 1. संख्या 241। यह ध्यान देने योग्य है कि यह विचार स्वियाज़्स्क थियोलॉजिकल मठ की भित्ति-चित्रों में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है: ऐनालोव, डी. 'स्वियाज़्स्की मदर ऑफ़ गॉड मठ में मदर ऑफ़ गॉड के डॉर्मिशन चर्च के भित्ति चित्र', में: एंटीक्विटीज़। रूसी पुरातात्विक समाज की कार्यवाही 21. 1 (1906); नेकरासोव, ए. एन. पुरानी रूसी दृश्य कला (1937)। पृ. 292.

[349] क्लुचेव्स्की। कोर्स। 2 (1907)। पृ. 263। 16वीं शताब्दी में पोनिज़ोवये क्षेत्र में मठों की स्थापना के प्रश्न का अध्ययन करने पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि क्लुचेव्स्की के आंकड़ों को स्पष्टीकरण की आवश्यकता है: वास्तव में, 16वीं शताब्दी में स्थापित मठों की संख्या अधिक थी।

[350] ज़ेनामेन्स्की। रूसी चर्च के इतिहास की गाइड (1896)। पृ. 279। 18वीं शताब्दी की शुरुआत में, रूस में 1,201 मठ थे। वर्खोव्स्की। पवित्र सिनोड की आबाद संपत्तियाँ... (1909); परिशिष्ट 8 में 500 से अधिक ऐसे मठों की सूची है जिनके पास आबाद संपत्तियाँ थीं। हालांकि, पवित्र

इस प्रकार, दो शताब्दियों के दौरान 300 से अधिक नए मठ स्थापित किए गए; हालाँकि, यह उस समय रूसी लोगों के बीच तपस्या की भावना के मजबूत होने का संकेत नहीं देता, क्योंकि इस मामले में निजी पहल की भूमिका नगण्य थी। इस अवधि के दौरान नए मठों की स्थापना राज्य और चर्च-राजनीतिक विचारों से निर्देशित थी और यह उन आवश्यकताओं से जुड़ी थी जो किसी विशिष्ट स्थान पर एक विशेष समय में उत्पन्न हुई थीं। यह विशेष रूप से तब स्पष्ट हो जाता है जब नए स्थापित मठों के भौगोलिक वितरण पर विचार किया जाता है। इस संबंध में, मस्कोवाइट राज्य के क्षेत्र को छह क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है, जिनकी सीमाएँ मस्कोवाइट राज्य के जैविक क्षेत्रीय विकास की विशेषताओं से नहीं, बल्कि मस्कोवाइट सरकार के उपनिवेशीकरण उपायों से जुड़ी हैं, जो हमारे द्वारा पहचाने गए क्षेत्रों में पैमाने और महत्व में भिन्न थे; दो क्षेत्रों में इन्हें लगभग बिल्कुल भी नहीं किया गया, और यहीं उन क्षेत्रों में बहुत कम नए मठ स्थापित किए गए[351] ।

पहला क्षेत्र मस्कोवाइट राज्य के केंद्रीय जिलों से मिलकर बना है। इसकी उत्तरी सीमा मोलोगा के संगम से लेकर सूरा के मुहाने तक वोल्गा के साथ-साथ चलती है; इसकी पूर्वी सीमा ओका और सूरा नदियों का अनुसरण करती है; पश्चिम में, मस्कोवाइट केंद्र टवर क्षेत्र से घिरा है; और दक्षिण में ओका नदी और इसकी सहायक नदी, मोक्ष से।

दूसरे क्षेत्र में रूसी उत्तर – ट्रांस-वोलगा क्षेत्र और पोमोर क्षेत्र शामिल हैं, जो वोलगा से सफेद सागर तक फैली भूमि है, रूसी 'फिविइडा' जो हमें पहले से ही परिचित है, 14वीं-15वीं शताब्दी में संतों के तपस्यापूर्ण कारनामों का एक रंगमंच था।

तुला के दक्षिण और कलुगा के आसपास के क्षेत्र डॉन और ओका की ऊपरी पहुंच के बीच असीम घास के मैदानों की उत्तरी सीमा बनाते हैं; उनकी दक्षिणी सीमा को परिभाषित नहीं किया जा सकता, क्योंकि वर्ष दर वर्ष राज्य-प्रेरित और स्वैच्छिक उपनिवेशीकरण के परिणामस्वरूप मस्कोवाइट राज्य का क्षेत्र दक्षिण की ओर फैलता गया; नए शहर बनाए गए, जबकि अनुपजाऊ स्टेपी भूमि को सेवा कुलीनों को जागीरों के रूप में प्रदान किया गया। यहाँ, दिन-रात, दक्षिण-पूर्व के खानाबदोशों और क्रीमिया के तातारों के खिलाफ एक भयंकर संघर्ष चला, जो सेवा पुरुषों के नए शहरों, गांवों और एस्टेट्स पर हमला करते थे, उनका लूट-खसूट करते और उन्हें जला देते थे; परिणामस्वरूप, किसान बस्तियाँ उभरतीं और फिर गायब हो जाती थीं। ये क्षेत्र उपनिवेशवाद के तीसरे क्षेत्र का गठन करते हैं।

नोवगोरोड और प्सकोव से स्मोलेंस्क तक फैले पश्चिमी क्षेत्र, चौथा क्षेत्र बनाते हैं।

सुरा के पूर्व और मोक्ष के दक्षिण-पूर्व में मध्य वोल्गा क्षेत्र स्थित है - जो पहले कज़ान का तातार खानत था - जहाँ 16वीं शताब्दी के मध्य से तीव्र उपनिवेशीकरण हुआ; यहाँ, रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च का संपर्क एक विविध गैर-ईसाई आबादी से हुआ, और यह ठीक यहीं था जहाँ ईसाई मिशनरी कार्य के लिए प्रचुर अवसर थे। यह पाँचवाँ क्षेत्र है - निचला वोल्गा क्षेत्र।

अंत में, छठा क्षेत्र यूराल और साइबेरिया से मिलकर बना है, जहाँ रूसी उपनिवेशवाद धीरे-धीरे लेकिन लगातार आगे बढ़ा, जिसमें रूसीकरण और ईसाईकरण एक ही राज्य, धार्मिक और राजनीतिक उद्देश्य में विलीन हो गए।

3. मॉस्को केंद्र में मठों द्वारा उपनिवेशीकरण

मास्को केंद्र की बात करें तो, 16वीं और 17वीं शताब्दी में यहाँ 54 नए मठ स्थापित किए गए, जिनमें से 32 शहरों में और 22 ग्रामीण क्षेत्रों में थे, हालांकि वे शहरों के पास थे। 16वीं सदी में सोलह शहरी मठों की स्थापना हुई

सिनिड द्वारा संकलित 1762 के रजिस्टर में 954 मठ सूचीबद्ध हैं; इस संख्या से, दक्षिणी रूस के लगभग 70 मठों को घटाया जाना चाहिए। ज़ाव्यालोव। एम्परेस कैथरीन II के अधीन चर्च संपत्तियों का प्रश्न (1900)। पृ. 346–348। 17वीं सदी में चेरनिगोव धर्मप्रांत के कुछ मठ मास्को पैट्रिआर्केट के प्रशासन के अधीन थे। दुर्भाग्य से, हम इस जानकारी की पुष्टि नहीं कर सके, क्योंकि इस पुस्तक की अंतिम तैयारी के दौरान वी. ज़्वेरींस्की का कार्य हमें उपलब्ध नहीं था, और उससे हमारे प्रारंभिक अंश खो गए थे। परिणामस्वरूप, मठों के उपनिवेशीकरण का वर्णन करते समय, हम प्रत्येक क्षेत्र में नव-स्थापित मठों की संख्या पर सटीक आँकड़े भी प्रदान नहीं कर पाते हैं (पोनिज़ोवये क्षेत्र को छोड़कर – मैंने उस क्षेत्र के लिए डेटा बरकरार रखा है)। हालांकि, हमें उम्मीद है कि यहाँ नए स्थापित मठों में से सबसे महत्वपूर्ण मठों को ध्यान में रखा गया है, यानी वे मठ जिन्होंने बाद में रूसी मठवाद के इतिहास में एक निश्चित भूमिका निभाई। निष्कर्षत; मैं यह उल्लेख करना चाहूँगा कि पवित्र धर्मसभा ने स्वयं 18वीं सदी में मठों की संख्या के बारे में अत्यधिक विरोधाभासी जानकारी प्रदान की, और यह कुछ हद तक इतिहासकारों के लिए एक बहाने के रूप में काम कर सकता है।

[351] मस्कोवाइट राज्य के विभिन्न क्षेत्रों और 17वीं शताब्दी की शुरुआत में उनके राजनीतिक और आर्थिक महत्व के बारे में जानकारी के लिए, प्लेटोनोव देखें। समय की कठिनाइयों के युग के इतिहास पर निबंध (1899); चेचुलिन। मस्कोवाइट राज्य के शहर (1889); याकोवलेव, ए. मस्कोवाइट राज्य की सीमा (1916); स्मिरनोव, पी. 17वीं शताब्दी में मस्कोवाइट राज्य के शहर (1918)।

और 17वीं सदी में भी उतने ही मठों की स्थापना हुई, जबकि ग्रामीण मठों में से, केवल नौ 16वीं सदी के और 13 17वीं सदी के हैं।

राजधानी, मास्को, स्वाभाविक रूप से पहला स्थान लेती है। यहाँ स्थापित नए मठों में से, निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं: डॉन्स्कोय मठ (1592), जो बाद के समय में बहुत प्रसिद्ध हुआ और आज तक बना हुआ है, ज़नामेंस्की मठ (1613), पैशन कॉन्वेंट (1614), ज़ाइकोनोस्पासकी मठ (1660), और साथ ही रेसरेक्शन न्यू जेरूसलम मठ – पैट्रिआर्क निकोन की पसंदीदा परियोजना[352] ।

व्लादिमीर क्षेत्र में स्थापित मठों में, सुज़दल शहर से 35 किमी दूर स्थित डॉर्मिशन हर्मिटेज का उल्लेख करना चाहिए, जिसकी स्थापना भिक्षु योना ने अपनी ही पहल पर (1624) की थी, डोर्मिशन फ्लोरिश्चेव हर्मिटेज (1654) और प्रेजेंटेशन ओस्त्रोव्स्की हर्मिटेज (लगभग 1695); बाद के दो, बाद में, के अंत में और 19वीं सदी की शुरुआत में, रूसी मठवासी नेतृत्व के केंद्र बन गए। 1594 में, लुकियन नामक एक भिक्षु ने पेरस्लावल-ज़ालेस्की शहर से लगभग 25 किमी दूर बोगोरोदित्सकाया हर्मिटेज की स्थापना की।

[353]कोस्ट्रोमा क्षेत्र में छह मठों की स्थापना की गई, जिनमें से कोई भी विशेष रूप से प्रसिद्ध नहीं है। यारोस्लावल क्षेत्र में, 1529 में कठोर तपस्वी सेंट गेनाडी († 1565) द्वारा स्पास्की मठ की स्थापना की गई थी, जबकि 1543 में सेंट एड्रियन († 1550) ने पोशेखोन्ये शहर से 6 किमी दूर उस्पेंस्की मठ की स्थापना की।

ट्वेर क्षेत्र में ग्यारह नए मठ समुदाय स्थापित किए गए। उनमें से थे: सेलिगिर झील के एक द्वीप पर नीलो-स्टोलोबेन्स्काया हर्मिटेज, जहाँ तपस्वी और हर्मिट नील († 1554) 27 वर्षों तक एक स्तंभ-तपस्वी के रूप में रहे; उन्हें स्थानीय आबादी द्वारा, और बाद में पूरी रूस द्वारा बहुत सम्मान दिया गया; नील के निधन के चालीस साल बाद, संन्यासी जर्मन ने उनके तपस्या स्थल पर एक आश्रम की स्थापना की। नील की अवशेषों के माध्यम से कई चमत्कार हुए, और 1667 में रूसी चर्च ने उन्हें संत का दर्जा दिया[354] ।

कलुगा क्षेत्र में मठवासी समुदायों में से, हम वेडेन्स्काया ऑप्टिना हर्मिटेज का उल्लेख करेंगे – सख्ती से कहें तो, यह एक पुराना मठ है जो पहली बार 15वीं शताब्दी के मध्य में दिखाई दिया था, लेकिन यह उपयोग में आ गया था और 1625 में पुनर्जीवित किया गया था। 19वीं शताब्दी में, यह हर्मिटेज अपने बुजुर्गों के लिए प्रसिद्ध हो गया[355] ।

४. उत्तर में मठों का उपनिवेशीकरण

उत्तर में, ट्रांस-वोलगा क्षेत्र और पोमोरे में, जहाँ 14वीं-15वीं शताब्दियों में रूसी तपस्या का प्रसार हुआ, जंगलों और दलदलों की खामोशी और एकांत नए मठों के संस्थापकों को आकर्षित करते रहे, और अगले दो शताब्दियों के दौरान, यहाँ 30 मठ और आश्रम स्थापित हुए, जिनमें से केवल सात शहरी मठ थे। हालाँकि, इस अवधि के दौरान स्थापित आश्रम अपने पूर्ववर्तियों से अलग प्रकृति के थे: स्थापना के तुरंत बाद, उन्हें भूमि-स्वामित्व—मुख्य रूप से उनके संस्थापकों की याचिकाओं के माध्यम से—तथा विभिन्न विशेषाधिकार प्रदान किए गए; उन्होंने जोरदार आर्थिक गतिविधियों में भाग लिया, भूमि को लेकर पड़ोसी किसानों के साथ कानूनी विवाद लड़े, और उनके निवासी 14वीं-15वीं शताब्दी के कठोर तपस्वियों से बिलकुल भी मेल नहीं खाते थे। इसका एक उदाहरण सिय के संत एंथनी का मठ है, जिसकी स्थापना 1520 में सिय के पूजनीय एंथनी († 1557) ने खोल्मोगोरी शहर से 100 किमी दूर की थी। जब तक धर्मनिरपेक्षता का कानून लागू हुआ (1764), तब तक सिय के संत एंथनी का मठ पहले से ही रूस के सबसे अमीर मठों में से एक था[356] । और यहाँ एक और उदाहरण है: 1604 में, विधुर पुरोहित मरीन ने आर्कान्गेलस्क से लगभग 200 किमी दूर 'मां ऑफ गॉड' का क्रास्नोगोर्स्क मठ स्थापित किया, जो बाद में एक विशाल और समृद्ध आर्थिक उद्यम बन गया[357] ।

---

[352] मकारी। 2रा संस्करण। 7. पृ. 2, 14; बुल्गाकोव। हैंडबुक। पृ. 76–82।

[353] मकारी। 2रा संस्करण। खंड 7। पृ. 20, 23, 15। बुल्गाकोव। पृ. 60, 73–74।

[354] बुल्गाकोव। पृ. 103; हिस्टोरिकल डिक्शनरी ऑफ़ सेंट्स (1862)। पृ. 187; उस्पेंस्की, वी. डिस्क्रिप्शन ऑफ़ द नीलो डेजर्ट (1886)।

[355] मुराव्योव, ए. द होली माउंटेन एंड द ऑप्टिना हर्मिटेज (1852); चेत्वेरिकोव, एस. द ऑप्टिना हर्मिटेज (1926).

[356] अपने जीवनकाल में, संत एंथनी को ज़ार (1544) से 12 वर्ग किलोमीटर से अधिक भूमि का उपहार मिला (SGKE. 1. 1. संख्या 97)। 1764 में, मठ के पास 3,333 किसान परिवार थे। IRI. 3. पृ. 103–104। मकारी, बिशप। 'सेंट एंथनी के सिय मठ का एक ऐतिहासिक विवरण', *रीडिंग्स* में। 1878। 3; तुलना करें: रनकेविच। 'आर्खान्गेलस्क डायोसीस का वर्णन', *पीबीई* में। 1। पृ. 1113–1117। मठ के वित्त पर: सेंट एंथनी ऑफ सिय मठ के खाता-बही। ए. एफ. इज्यूमोव द्वारा संपादित, में: रीडिंग्स। 1917. 2. तुलना करें: मकारी। 2रा संस्करण। 7. पृ. 42.

[357] मकारी, बिशप। क्रास्नोगोर्स्क मठ का एक ऐतिहासिक विवरण, *रीडिंग्स* में। 1880. 3. तुलना करें: मकारी। दूसरा संस्करण। 7. 41। 1763 में, यह मठ बहुत गरीब था और उसे पवित्र सिनिड से 25 रूबल की वार्षिक अनुदान (रुगा) प्राप्त होती थी। ज़ाव्यालोव। पृ. 385।

कुल मलिाकर, इस अवधि के दौरान पोमोरयि में 19 मठों की स्थापना हुई: उनमें से 11 16वीं सदी में, सभी शहरों के बाहर, और 8 17वीं सदी में (2 शहरी मठ और 6 हर्मटिेज)।

ओलोनेत्स क्षेत्र में स्थापति मठों में से, दो वशिेष रूप से उल्लेखनीय हैं: सेंट नकिोलस ओंड्रुसोवो हर्मटिेज (1520), ओलोनेत्स शहर से 30 कमिी दूर, जसिकी स्थापना सेंट अलेक्जेंडर ऑफ स्वरि् के शष्यि, परम पूजनीय एड्रयिन († 1549) द्वारा की गई थी, और ओनेगा झील में क्लमित्स्की द्वीप पर ट्रनिटिी मठ, जसिकी स्थापना परम पूजनीय योना द्वारा की गई थी[358] ।

मठ के संस्थापकों की व्यक्तगित पहल वोल्गोडा क्षेत्र में वशिेष रूप से स्पष्ट थी, जहाँ इस अवधि के दौरान 15 मठों की स्थापना हुई[359] । परम पूजनीय आर्सेनयिस († 1550), बोयार सुखोरुसोव के परविार से थे, जो ट्रनिटिी-सर्गीय मठ में एक नवोदति थे, उन्होंने 1521 से 1529 तक वहाँ के मठाध्यक्ष के रूप में कार्य कयिा, लेकनि उन्होंने एकांत को प्राथमकिता दी और मठाध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद वोल्गोडा के जंगलों में चले गए, जहाँ उन्होंने 1530 में एक संन्यास-आश्रम की स्थापना की[360] ।

एक अन्य कठोर तपस्वी, टोट्मा के पूजनीय थयिोडोसयिस († 1568), ने स्थानीय आबादी के अनुरोध पर 1554 में स्पासो-सुमोरनि मठ की स्थापना की; बाद में, यह मठ भी एक प्रमुख जमींदार बन गया[361] ।

व्लादमिीरस्काया हर्मटिेज का अस्तत्वि भी इसके संस्थापक की व्यक्तगित पहल को ही अपनी स्थापना का कारण मानता है। धार्मकि परंपरा के अनुसार, वोलोग्दा के एक नविासी को शहर के बाहरी इलाके के एक घने जंगल में ईश्वर की माता के व्लादमिीर आइकन का दर्शन हुआ था। इस चमत्कारी प्रकट होने से चकति होकर, उन्होंने जोसेफ († 1612) नाम से संन्यास की शपथ ली और 1588 में, उस दर्शन स्थल पर एक छोटा आश्रम स्थापति कयिा। अश्रम के आसपास के जंगल पड़ोसी गांवों के नविासयिों के लिए एक वास्तवकि अभशिाप थे, क्योंकि उनके सरगना अनीका के नेतृत्व में डाकुओं का एक गरिोह वहां अपना दबदबा बनाए हुए था। कहा जाता है कि नए आश्रम के पहले मठाधीश जोसेफ ने अनीका को अपना खूनी धंधा छोड़ने के लिए मना लयिा, और इस प्रकार सौल को पॉल में बदल दयिा। नतीजतन, यह तपोवन स्थानीय रूप से ज़ा-अनकिेवस्काया तपोवन के नाम से जाना जाने लगा, क्योंकि यह उन जंगलों के पार स्थति है जहाँ अनकिा लूटपाट कयिा करता था। बाद में, वोल्गोडा के तपस्वी जोसेफ को एक स्थानीय सम्मानति संत के रूप में पूजा जाने लगा[362] ।

17वीं शताब्दी में, वोल्गोडा क्षेत्र में कई और मठों की स्थापना की गई। उनमें से एक का उल्लेख करना उचति होगा, क्योंकि इसकी स्थापना भी इसके संस्थापक की व्यक्तगित पहल पर हुई थी। 1654 में, फलिपि नामक एक भक्षिु ने ज़नामेंस्क हर्मटिेज (उस्त्युग शहर से लगभग 35 कमिी दूर) की स्थापना की, जसिे बाद में स्थानीय आबादी के बीच बहुत श्रद्धा मलिी। दुर्भाग्य से, इसकी स्थापना करने वाले तपस्वी के जीवन के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है[363] ।

1460 में, ग्लुशत्सिा के संत डायोनसियिस के शष्यिों द्वारा सेमigorodsky मठ की स्थापना की गई थी (अध्याय III देखें)। बाद में, भक्षिुओं ने इसे छोड़ दयिा, और मठ का उपयोग बंद हो गया। 17वीं शताब्दी की शुरुआत में, इसे फरि से स्थापति कयिा गया (इस बार 15वीं शताब्दी में सेंट डायोनसियिस द्वारा स्थापति पोक्रोव्स्की ग्लुशट्सि्की मठ के भक्षिुओं द्वारा)[364] ।

5. पश्चमि में मठवासी उपनविेशीकरण

मास्को केंद्र के पश्चमि में स्थति क्षेत्र में, 16वीं और 17वीं शताब्दयिों में 23 नए मठ स्थापति हुए: 15 शहरों में और 8 ग्रामीण इलाकों में।

पहले स्थान पर नोवगोरोड क्षेत्र है, जहाँ नौ मठों की स्थापना हुई। उनमें से दो महान तपस्वयिों द्वारा स्थापति कएि गए थे: करिलिो-नोवोएज़ेर्स्की मठ सेंट सरिलि ऑफ नोवोएज़ेरो († 1532) द्वारा, और ट्रॉइट्स्की-इरापस्की मठ सेंट फलिपि († 1527) द्वारा; दोनों मठ लगभग 1517 में स्थापति कएि गए थे।[365] अन्य मठों में, टक्विनि शहर में स्थति

---

[358] आईआरआई. 4. 530. बार्सोव. ओलोनेत्स में क्लीमेन्त्स्की मठ, में: रीडगि्स. 1870. 4.

[359] बुलगाकोव। पृ. 61–62.

[360] IRI. 2. पृ. 279.

[361] उपरोक्त. 6. पृ. 412–413.

[362] उपरोक्त. 5. पृ. 134; बुल्गाकोव. पृ. 184; गोलुबनिस्की. कैनोनाइज़ेशन का इतहिास. पृ. 136; क्ल्यूचेव्स्की. जीवन. पृ. 324.

[363] IRI. 6. पृ. 593.

[364] ज्वेरीस्की। 2. संख्या 1144.

[365] ज्वेरस्कि। खंड 2. संख्या 868 और 557.

'मदर ऑफ गॉड' का मठ उल्लेखनीय है। इसकी स्थापना 1560 में ज़ार के आदेश से, 1383 में टक्विनि में 'मदर ऑफ गॉड' की चमत्कारी प्रतमिा के प्रकट होने की स्मृति में की गई थी, जसिे रूसी लोग बहुत श्रद्धा से मानते हैं[366] ।

पस्कोव क्षेत्र में, मुख्य रूप से शहरी मठ ही स्थापति हुए; उदाहरण के लिए, पस्कोव में ही, मठों के अलावा 16वीं शताब्दी में चार ननघरों की स्थापना की गई थी[367] । पस्कोव के बाहर स्थति मठों में, पस्कोव-पेचेरस्क मठ का वशिेष उल्लेख कयिा जाना चाहिए; इसकी स्थापना 15वीं शताब्दी में हुई थी, उसी शताब्दी के अंत में लविोनयिाई जर्मनों द्वारा इसे नष्ट कर दयिा गया था, और लगभग 1520 में इसे फरि से स्थापति कयिा गया था।[368]

स्मोलेंस्क क्षेत्र में अपेक्षाकृत बड़ी संख्या में मठ बनाए गए थे। बोल्डनिो के पूजनीय गेरसमि († 1554) ने चार मठों की स्थापना की। इनमें सबसे प्रसद्धि बोल्डनिो का होली ट्रनिटिी मठ (1528) है, जो डोरोगोबुझ शहर से लगभग 18 कमिी दूर स्थति है; कुछ साल बाद, संत गेरसमि ने व्याज़्मा के पास जंगलों में संत जॉन द बैपटस्टि का मठ (लगभग 1535) स्थापति कयिा; फरि वे दक्षणि में अभेद्य ब्रनि के जंगलों में गए और वहाँ, झज़िद्रा नदी पर, प्रस्तुतिा का मठ स्थापति कयिा (1535 और 1545 के बीच); उनके द्वारा स्थापति अंतमि मठ डोरोगोबुझ शहर के पास नेटीवटिी मठ था। संत गेरासيم द्वारा स्थापति मठों की वशिेषता बड़ी संख्या में मठवासी भाई थे। उदाहरण के लिए, 16वीं शताब्दी के मध्य तक, बोल्डनि मठ में 100 से अधकि भक्षिु थे, जबकि ब्रनि के जंगलों में आश्रमों में 40 तक भक्षिु थे। संत गेरासيم ने अपने द्वारा स्थापति सभी मठों में एक सख्त मठवासी नयिम[369] लागू कयिा। बोल्डनिो मठ ने धीरे-धीरे वशिाल भूमि-स्वामतिव प्राप्त कर लयिा और 17वीं शताब्दी में, जोरदार आर्थकि गतविधि[370] शुरू की।

17वीं शताब्दी में स्थापति मठों में, ब्रायन्स्क शहर के रूपांतरण मठ (Transfiguration Monastery) का उल्लेख कयिा जा सकता है, जो केवल 68 वर्षों तक अस्तत्विव में रहा। इसकी स्थापना 1694 में प्रसि डी. ए. ब्यरयिाटस्किी ने की थी और धर्मनरिपेक्षता पर कानून (1764) के लागू होने के तुरंत बाद इसे बंद कर दयिा गया था। यह मठ मुख्य रूप से इसलिए जाना जाता है क्योंकि इसने पॉलीकार्प († 1624) नामक एक कठोर तपस्वी को आश्रय दयिा था, जसिने कठोर तपस्या का जीवन जयिा[371] ।

6. नचिले वोल्गा क्षेत्र में मठवासी उपनविेशीकरण

मध्य वोल्गा के दोनों कनिारों पर फैले वशिाल क्षेत्र में, पश्चमि में सूरा नदी और पूर्व में यूराल पर्वत तक, बहुत से मठ स्थापति कए गए थे – एक ऐसा क्षेत्र जसिे मॉस्को की आधकिारकि भाषा में पोनज़िोवये के नाम से जाना जाता था और जो एक अलग प्रशासनकि इकाई बनाता था[372] । जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा गया है, पोनज़िोवये ने मठों और मठ समुदाय को ईसाई मशिनरी कार्य के लिए महान अवसर प्रदान कए। भले ही उनकी गतविधियिों के माध्यम से नहीं, अत्यधकि ववविध गैर-ईसाई आबादी वाले क्षेत्र में उनकी उपस्थति ही ईसाईकरण के उद्देश्य की पूर्ति कर सकती थी। जहाँ तक 16वीं और 17वीं शताब्दी की बात है, दुर्भाग्य से, इस अवधि के दौरान मठवासी समुदाय ने कसिी वशिेष सक्रयि मशिनरी कार्य में भाग नहीं लयिा; केवल 18वीं शताब्दी में ही पोनज़िोव्ये में ईसाई मशिनरयिों की कुछ सफलताओं की बात की जा सकती है।

मस्कोवी राज्य के अन्य क्षेत्रों के वपिरीत, हमारे पास पोनज़िोवье क्षेत्र पर सामग्री का खजाना है जो न केवल मठों द्वारा उपनविेशीकरण के इतहिास पर, बल्कि मठों की भूमि-धारति में नरिंतर वृद्धि पर भी प्रकाश डालता

---

[366] मकाराई। 2रा संस्करण। 7. पृ. 34। तुलना करें: मेरा लेख: 'Die Verehrung der Gottesmutter in der russischen Frömmigkeit und Volksreligiosität', में: Kyrios. 5 *(1940–41) / पृ. 208 /*

[367] मकाराई। द्वतिीय संस्करण। 7. पृ. 38.

[368] प्रथम श्रेणी का स्कोव-पेचेरस्क मठ (1893); मकरयि. द्वतिीय संस्करण. 7. पृ. 39.

[369] IRI. 3. पृ. 413; मकारी. द्वतिीय संस्करण. 7. पृ. 18–19.

[370] तुलना करें: बोल्डनिो-डोporoबुझ मठ के आय और व्यय खाता-बही, में: RIB. 37 (1923).

[371] IRI. 5. पृ. 588.

[372] प्रशासनकि क्षेत्रों के बीच स्पष्ट सीमाओं की कमी, जो मस्कोवाइट राज्य की एक वशिेषता थी, व्यक्तगित प्रकिज़ों के कार्यों की सीमांकन में अस्पष्टता से जुड़ी हुई थी। नचिली वोल्गा क्षेत्र का प्रशासन मुख्य रूप से 'काज़ान पैलेस' द्वारा कयिा जाता था - एक वशिेष प्रकिाज़ जसिके अधकिार बहुत अस्पष्ट थे, जो 17वीं शताब्दी में, नए क्षेत्रीय प्रशासनकि नकिायों (प्रकिाज़ और, वशिेष रूप से, 'चेती') के उदय के बाद, लगातार बदलते रहे; इस परस्थितिि के एक या दूसरे प्रकिाज़ द्वारा मठों की संपत्तयिों पर अधकिार क्षेत्र पर भी प्रभाव पड़े, वशिेष रूप से उस समय जब मठ प्रकिाज़ (1649–1677) को इस मामले में वभिन्नि प्रकार के अधकिार दए गए थे। 1574 से कुछ समय पहले स्थापति, काज़ान महल पीटर महान के प्रशासनकि सुधार (1708) तक अस्तत्विव में रहा। देखें: पेरेत्यातकोवचि, जी. द वोल्गा रीजन इन द 16th एंड 17th सेंचुरीज़ (1877); प्लाटोनोव. एसेज़ ऑन द हस्ट्री ऑफ़ द टाइम ऑफ़ ट्रबल्स। अध्याय 1, § 6 (1937 संस्करण, पृ. 78–86); मल्युकॉव, पी. द स्टेट इकोनॉमी ऑफ द फर्स्ट क्वार्टर ऑफ द 18th सेंचुरी एंड द रफॉर्म्स ऑफ पीटर द ग्रेट (1890), पृ. 366–373; नेवोलीन, वी., वर्क्स, खंड 6, पृ. 179.

है[373] । काज़ान के तातार खानत के खलिाफ 100-वर्षीय संघर्ष के दौरान, जो 2 अक्टूबर 1552 को काज़ान के वजियी अभयिान के साथ समाप्त हुआ[374] , मध्य वोल्गा क्षेत्र पर मास्को का उपनविेशीकरण अपने पहले कदम उठा रहा था: 1523 में सूरा और वोल्गा नदयिों के संगम पर वासलि-सुरस्क शहर की स्थापना हुई, और 1551 में स्वयिागा और वोल्गा नदयिों के संगम पर स्वयिाज्स्क की स्थापना हुई। स्वयिाज्स्क में, ज़ार इवान के आदेश पर, न केवल चर्च बल्कि एक मठ भी बनाया गया था। स्वयिाज्स्क का यह ट्रनिटिी मठ, जसिे राज्य प्राधकिरणों के आदेश द्वारा स्थापति कयिा गया था, नचिले वोल्गा क्षेत्र में मठों द्वारा उपनविेशवाद के एक समृद्ध इतहिास की शुरुआत को चहि्नति करता है[375] । 1552 में कज़ान के वजिय के बाद, मठों द्वारा उपनविेशवाद और आगे बढ़ा; यह नए शहरों की स्थापना के साथ-साथ हुआ, जो मॉस्को सरकार के आदेश पर व्यवस्थति रूप से उभरे, जसिका उद्देश्य पोनज़िोव्ये क्षेत्र और अस्त्रखान तक पूरे वोल्गा पर नयिंत्रण बनाए रखना था, जसिे अंततः1557 में मॉस्को ने जीत लयिा था[376] केवल 'समय की परेशानयिों' के दौरान ही मॉस्को की उपनविेशी गतविधियिाँ कई वर्षों तक बाधति रहीं। इस प्रकार, नए नगरों की स्थापना का इतहिास दो कालखंडों में वभिाजति कयिा जा सकता है: 1) 16वीं शताब्दी के अंत तक, और 2) 17वीं शताब्दी। नए मठों की स्थापना का इतहिास भी इन्हीं दो कालखंडों में वभिाजति कयिा जा सकता है ; अधकिांशतः ये मठ नगरों के साथ या उनकी स्थापना के तुरंत बाद स्थापति हुए[377] ।

हमने इस अवधि के दौरान पोनज़िोवये क्षेत्र में स्थापति 21 कस्बों और 31 मठों की पहचान की है; इनमें 1551 से पहले स्थापति तीन और मठों को भी जोड़ना चाहिए (तुलना करें तालकिा 6A)। इस प्रकार, 50 वर्षों की अवधि में 30 मठ स्थापति कएि गए, और जैसा कि तालकिा 6A से देखा जा सकता है, इन मठों की वशिेषता नम्निलखिति वशिेषताएँ हैं: 1) सभी मठ शहरों में या उनके पास बनाए गए थे - यानी, वे शहरी मठ थे, जो रूसी उत्तर के एकांतवासों से काफी अलग थे; केवल वह मठ जसिके आसपास बाद में क्रास्नोस्लोबोड्स्क शहर बसा, और नज़िहेनलोमोव्स्की जलि का मठ, शहरों से अपेक्षाकृत दूर बनाए गए थे; 2) लगभग सभी मठों की स्थापना शहरों की स्थापना के तुरंत बाद की गई थी, केवल अस्त्रखान और कुरमशि ही अपवाद थे, जहाँ पहला मठ वजिय के 11 साल बाद और शहर की स्थापना के 110 साल बाद बनाया गया था; 3) ये सभी मठ उनके संस्थापकों की स्वैच्छकि पहल पर नहीं, बल्कि राज्य या धार्मकि अधकिारयिों के आदेश से बनाए गए थे[378] ।

---

[373] हमने इस मुद्दे की जांच *Kyrios* पत्रकिा के लएि लखिे गए एक लेख में की थी, लेकनि युद्ध ने इसके प्रकाशन को रोक दयिा। उस अध्ययन की सामग्री का उपयोग यहां कयिा गया है।

[374] तुलना करें: मेरा कार्य: 'ज़ूर गेशख्ति डेर रूसशि ओस्टपोलटिकि देस 15. उंड 16. जह्रन्डर्ट. 1. दी एरोबेरुंग देस काज़ानेर राइखे', जेजीओ (1941) में।

[375] ज्वेरीस्की। खंड 3, संख्या 1248; डीआरवी। खंड 17, पृ. 146.

[376] 1569 में अस्त्रखान को मॉस्को के नयिंत्रण से छीनने के तुर्की के प्रयासों पर, देखें: सादकिोव, पी. '1569 में अस्त्रखान के खलिाफ ततार और तुर्की अभयिान', इस्त. ज़ैप. 22 (1947) में। पृ. 132–165।

[377] नगरों की स्थापना पर देखें: नेवोलीन। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 70।

[378] इस अंतमि बदिु पर वशिेष ध्यान देना चाहिए। ज़ार और मेट्रोपॉलटिन के लएि मठों की स्थापना एक साथ राज्य और मशिनरी उपक्रम था। काज़ान धर्मप्रांत की स्थापना 1555 में हुई थी; इसके पहले महाधर्माध्यक्ष, गुरी (1555–1563), पहले ट्रनिटिी सेलज़िारोव मठ के मठाध्यक्ष और सेंट जोसेफ ऑफ वोल्कोलांस्क मठ में एक नवोदति थे। काज़ान पर वजिय के तुरंत बाद, इवान चतुर्थ ने डॉर्मशिन मठ की स्थापना की, जसिे बाद में ज़लिानटोव मठ के नाम से जाना गया, क्योंकि 1560 में आर्चबशिप गुरी ने मठ को ज़लिानटोव पहाड़ी पर स्थानांतरति कर दयिा था। ज्वेरीस्की। संख्या 1286 और 196। 1556 में, गुरी ने आर्चमैंड्राइट वरसनोफ़ी को दूसरे मठ - रूपांतरण मठ (कैरस्की। प्राचीन कज़ान पर नबिंध (1879)। पृ. 96) के नर्मिाण के लएि अपनी सहमति दी। गुरयि के उत्तराधकिारी, आर्चबशिप जर्मन (1564-1568) ने शहर के बाहर सेंट जॉन द बैपटस्टि का मठ बनवाया (ज्वेरस्की, संख्या 843)। 1579 में, पहली कन्वेंट - द मदर ऑफ गॉड का मठ - ज़ार के धन से स्थापति कयिा गया था (उपरोक्त, संख्या 55)। आर्चबशिप वासयिन (1575) के अधीन, फयिोदोरोव्स्की ट्रनिटिी मठ का नर्मिाण कयिा गया (उपरोक्त, संख्या 555)। इस प्रकार, 25 वर्षों की अवधि में, कज़ान में पाँच मठ स्थापति कएि गए। स्वयिाज्स्क में, जो पगन चेरेमसि क्षेत्र का प्रशासनकि केंद्र था, तीन मठों की स्थापना की गई (ज्वेरीस्की, क्रमांक 657, 874, 2148)। नक्शे को देखने पर, हम देख सकते हैं कि मठ मुख्य रूप से वोल्गा और सूरा के बीच के शहरों में स्थापति कएि गए थे; इस क्षेत्र की दक्षणिी सीमा तेत्यूशी शहर तक आलाट्यर नदी द्वारा बनाई गई है। इस रेखा के दक्षणि में केवल दो मठों की स्थापना की गई: एक अस्त्रखान में, स्वयं कैस्पयिन सागर पर, और दूसरा नज़िनी लोमोव के आसपास, पूर्व रयिाज़ान रयिासत की दक्षणि-पूर्वी सीमा पर। वोलगा और सूरा के बीच का क्षेत्र, उस समय, मस्कोवाइट सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर वकिसति कयिा जा रहा था। देखें: अर्ज़ामस लोकल रकिॉर्ड्स। संपादक: एस. वेसेलोव्स्की (1916), संख्या 390; ए. इमाउसकी, '16वीं–17वीं शताब्दी में अर्ज़ामस जलि में भूमि और कसिानों के संघर्ष के इतहिास से', में: करिीव वैज्ञानकि अनुसंधान संस्थान ऑफ लोकल हस्टि्री की कार्यवाही। 7. 3 (1934). पृष्ठ 7, 9; हेराक्लटिोव, ए. '17वीं और 18वीं सदी के भूमि सर्वेक्षण और जनगणना रकिॉर्ड के अनुसार अर्ज़ामस मॉर्डवनि्स', में: सारातोव वशि्ववद्यिालय के अकादमकि नोट्स, खंड 8, पृ. 2. 1568 में, इवान चतुर्थ ने एबॉट करिलि को अस्त्रखान में ट्रनिटिी-सेंट नकिोलस मठ बनाने का आदेश दयिा और इस मठ को वत्तिीय सहायता प्रदान की; रूस। 6. पृ. 544; कई वर्षों बाद (1573, 1575 और 1588), इस मठ को मछली पकड़ने और नमक उत्पादन का अधकिार देने वाले पेटेंट पत्र प्राप्त हुए। AI. 1. संख्याएँ 184, 193, 223.

17वीं सदी में, नए शहरों और मठों की स्थापना के संबंध में तस्वीर कुछ अलग दखिती है। यह तालकिा 6B से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है। हम देख सकते हैं कि 16वीं सदी में उभरे शहरों में 44 नए मठ स्थापति कएि गए, जबकि 17वीं सदी में उभरे शहरों में 26 मठ स्थापति कएि गए। कुल मलिाकर, 70 नए मठ थे, जो 16वीं शताब्दी में स्थापति मठों के साथ मलिकर, अकेले पोनज़िोव्ये क्षेत्र में 101 मठों की संख्या बनाते हैं। स्थलाकृति के अनुसार, मठों की बसावट का क्षेत्र मुख्य रूप से समारा–पेन्ज़ा रेखा के उत्तर में स्थति है। केवल 10 मठ और दक्षणि में स्थापति कएि गए थे[379] ।

17वीं सदी में उभरे मठों को तीन समूहों में वभिाजति कयिा जा सकता है। पहला समूह पुराने शहरों में स्थापति मठों से बना है; दूसरा समूह उन नए स्थापति शहरों में स्थति मठों से बना है जो उन क्षेत्रों में थे जहाँ कृषि उपनविेशवाद हो रहा था; और तीसरा समूह नचिली वोल्गा पर कलिेबंद शहरों में स्थति मठों से बना है, जहाँ उस समय कृषि उपनविेशवाद अभी तक शुरू नहीं हुआ था। इसके परणिामस्वरूप नम्निलखिति तालकिा बनती है:

मठों की स्थापना के वर्ष समूह 1 समूह 2 समूह 3 कुल
1600–1613 3 – 1 4
1614–1650 18 7 1 26
1651–1700 17 17 6 40
कुल 38 24 8 70

इस प्रकार, 17वीं शताब्दी के दूसरे भाग में, शताब्दी के पहले भाग की तुलना में काफी अधकि मठों की स्थापना की गई। ऐसा वोल्गा के दक्षणि-पश्चमि में, सम्बिीर्स्क और पेन्ज़ा क्षेत्रों में स्थति भूमि पर उपनविेश स्थापति करने के लिए मास्को सरकार द्वारा उठाए गए गहन उपायों के कारण था।

पोनज़िोवये क्षेत्र का उपनविेशीकरण राजनीतकि और आर्थकि दोनों उद्देश्यों के लिए व्यवस्थति रूप से हुआ। धार्मकि संस्थानों - कज़ान में आर्चबशिप के आवास और मठों - को भूमि का वतिरण पोनज़िोвье क्षेत्र में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई, क्योंकि इस भूमि का उद्देश्य न केवल इन संस्थानों का समर्थन करना था, बल्कि मास्को सरकार को अपने राजनीतकि उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करना भी था। उस समय सेवा कुलीन वर्ग की जमींदारयिाँ[380] और मठों की संपत्ति मास्को की राजनीतकि ताकत और नव-बसे क्षेत्र में उसके अधकिार की मजबूती का सबसे स्पष्ट प्रमाण थीं, जबकि रूसी शहरों का नर्मिाण और नई जमींदारयिों और बस्तयिों का उदय उस अधकिार को सुदृढ़ करने का सबसे अच्छा साधन था। वास्तव में, सरकार द्वारा मठों को उपहार में दी गई और हस्तांतरति की गई भूमि-स्वामति्वों की संख्या और आकार लगातार बढ़ रहे थे, इस तथ्य के बावजूद कि इस वृद्धि को सीमति करने के लिए अधकिारयिों द्वारा उठाए गए उपाय, जनिका हमने पहले ही उल्लेख कयिा है, तेजी से सख्त होते जा रहे थे। मठों की जमीनों पर कसिानों की स्थति कुलीनों की जमीनों की तुलना में बेहतर थी, और मठीय अधकिारी लगातार अधकि से अधकि कसिानों को अपनी जमीनों पर आकर्षति करने का प्रयास करते थे; परणिामस्वरूप, मठों की जमीनों ने वोल्गा के कनिारे नए क्षेत्रों के उपनविेशीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई[381] ।

16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान, पोनज़िोव्ये क्षेत्र में केवल छह मठों की स्थापना उनके संस्थापकों की स्वैच्छकि पहल पर की गई थी, जो कि नश्चिति रूप से एक बहुत छोटी संख्या है, जब यह ध्यान में रखा जाए कि इस अवधि के दौरान वहाँ कुल 101 मठों की स्थापना हुई थी।

इन छह मठों में दो तपस्थल हैं: द मदर ऑफ गॉड का सेडमएिज़र्स्काया हर्मटिेज और द मदर ऑफ गॉड का राइफ़स्काया हर्मटिेज। इन्हें साधारण भक्षिुओं ने स्थापति कयिा था, और ये तपस्थल शहर की दीवारों के बाहर स्थति हैं। पहले तपस्थल के संस्थापक भक्षिु यूथमियिस थे, जो ट्रांस-वोलगा क्षेत्र के उस्त्युग शहर के मूल नविासी थे। काज़ान से बीस कलिोमीटर दूर, सात झीलों के बीच, ट्रांस-वोलगा क्षेत्र की याद दलिाने वाली एक एकांत जगह पर, उन्होंने अपना आश्रम *(1613–15)* स्थापति कयिा */ यूथमियिस का छोटा सा स्कटे 1628 में ही मठ बना। फरि भी* 1645–

---

[379] ये तीन कलिेबंद नगरों में मठ थे: अस्त्रखान में पाँच, त्सारत्सिनि में दो और सारातोव में तीन। ये मठ मशिनरी कार्य के मामले में बहुत कम काम के थे; हमारा मानना है कि इन्हें सीमावर्ती शहरों को सजाने और वोल्गा घास के मैदानों के खानाबदोश लोगों के बीच मस्कोवी राजशाही की प्रतष्ठिा बढ़ाने के लिए बनाया गया था।

[380] नगरों की स्थापना और सैन्य अधकिारयिों को भूमि के वतिरण ने मस्कोवाइट राज्य को राजनीतकि रूप से मजबूत करने में योगदान दयिा। तुलना करें: पेरेत्याकोवचि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 107; चेचुलनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 202–206; 1565–1568 और 1646 के लिए काज़ान के कैडस्ट्रल रजस्टिर, में: यूएसएसआर के लोगों के इतहिास पर सामग्री। 2 (1933)। तालकिाएँ 1–3, 9–11; कोर्साकोव, डी. '16वीं और 17वीं शताब्दी में काज़ान क्षेत्र में कनि शहरों में सैनकि ज़मींदार और संपत्ति-धारक थे?', में: पुरातत्व कांग्रेस की कार्यवाही। 1 (1884). पृ. 173. कई कारीगरों को पोनज़िोव्ये क्षेत्र में भी भेजा गया था; रोमानोव, के. 'पस्कॉव, नोवगोरोड और मास्को उनके सांस्कृतकि और कलात्मक अंतर्संबंधों में', में: प्रोसीडगि्स ऑफ़ द एकेडमी ऑफ़ मटेरयिल कल्चर. 4 (1925). पृ. 239.

[381] पोक्रोव्स्की, आई. 1764 तक काज़ान मठों का इतहिास (1902)। पृ. 6.

46 में, जब मठ में 29 भिक्षु पहले से ही रह रहे थे, यह बहुत गरीब बना रहा, और भिक्षुओं ने हस्तशिल्प और अपने सब्जी के बगीचों से प्राप्त उपज के माध्यम से अपना जीवन यापन किया – यह स्थिति ट्रांस-वोलगा क्षेत्र के 15वीं सदी के मठों के लिए तो आम थी, लेकिन पोनज़ोवये क्षेत्र के मठों में लगभग अद्वितीय थी। 17वीं सदी के उत्तरार्ध में ही यूथमियस मठ को भूमि और किसान प्राप्त हुए[382] । राइफ्स्काया हर्मिटेज का इतिहास भी इसी तरह का रहा। इसके संस्थापक मॉस्को के चुदोव मठ के फ़िलारेत नामक एक भिक्षु थे। लगभग 1613 में, वह कज़ान पहुँचा, और शुरू में स्पासो-प्रयोब्राज़ेंस्की मठ में रहा, फिर वह कज़ान के उत्तर-पश्चिम में घने जंगलों में बसने के लिए वहाँ से चला गया, जहाँ उसने राइफ्स्कोए झील के किनारे एक संन्यास आश्रम की स्थापना की[383] ।

1614 से ठीक पहले, एक अज्ञात भिक्षु ने लाइसहेव शहर से 47 वर्स्ट उत्तर-पूर्व में कामा नदी के तट पर ट्रिनिटी मठ की स्थापना की। बाद में, इस मठ को मास्को में नोवोस्पासस्की मठ के अधिकार में दे दिया गया, और 18वीं शताब्दी की शुरुआत में इसका अस्तित्व समाप्त हो गया[384] । संस्थापकों की अपनी पहल पर स्थापित चौथा मठ अलातिर शहर में ट्रिनिटी मठ था (1600 और 1614 के बीच)। इसके पास कोई भूमि नहीं थी और यह बहुत गरीब था; *1614–15 में भाइयों ने इस प्रसिद्ध मठ से संबद्ध होने के लिए ट्रिनिटी-सर्गीय मठ से अनुरोध किया, जिसे उस समय मंजूरी दे दी गई[385] । परेशानियों के समय के तुरंत बाद, लगभग 1616 में, अबॉट आयोन के अधीन, एलाबुगा में ट्रिनिटी मठ ने ख्याति प्राप्त की[386] । 1702 के एक पत्र से, जो काज़ान के मेट्रोपॉलिटन टिकोन द्वारा कोज़्मोडेम्यांस्क शहर के पास मालोयुंगस्की मठ के आर्चिमांड्राइट को लिखा गया था, यह स्पष्ट होता है कि यह मठ 1627 से पहले ही अस्तित्व में था और इसकी स्थापना एक अज्ञात भिक्षु द्वारा की गई थी[387] . 17वीं शताब्दी के दूसरे भाग में, भिक्षुओं ने दो और मठों की स्थापना की: क्रास्नोस्लोबोद्स्क शहर के पास रूपांतरण मठ – भिक्षु डायोनिसियिस द्वारा (1655 से पहले)[388] – और वर्खनी लोमोव शहर में डॉर्मिशन कॉन्वेंट – 1688 में भिक्षुणी इराइडा द्वारा।*[389]

दुर्भाग्य से, हमारे पास इन मठों और उनके संस्थापकों के जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी है। क्या वे कठोर तपस्वी थे, जो शहरी मठों में मठवासी जीवन से असंतुष्ट थे? उदाहरण के लिए, क्या मास्को के चुदोव मठ के भिक्षु फिलारेट ऐसे ही एक तपस्वी थे? या क्या ऐसे अन्य कारण थे जिनकी वजह से उन्हें जंगल में अपना अपना आश्रम स्थापित करना पड़ा? शायद 'समय की परेशानियों' के कठिन वर्षों – और पहले तीन मठों की स्थापना इसी समय के तुरंत बाद हुई थी – ने मठ समुदाय पर गहरा प्रभाव डाला और एक ऐसे समय में तपस्या की भावनाओं को फिर से जगाया जब मॉस्को के मठों में मठवासी जीवन पतन की ओर था। इन सवालों का जवाब देना रूसी मठवाद के किसी इतिहासकार के लिए दिलचस्प और आवश्यक दोनों होगा।

पोनज़ोवये में स्थापित कई मठों ने इस क्षेत्र के उपनिवेशीकरण में बहुत बड़ा योगदान दिया। अगला अध्याय विस्तार से बताएगा कि कैसे उन्होंने उन्हें प्रदान की गई भूमि पर व्यापक आर्थिक गतिविधियों का विकास किया और धीरे-धीरे वोल्गा के दोनों किनारों पर पहले से निर्जन जंगलों और घास के मैदानों को एक कृषि क्षेत्र में बदल दिया। पोनज़ोवये के मठों ने, शायद मस्कोवाइट राज्य के अन्य क्षेत्रों के मठों की तुलना में, सरकार की राजनीतिक और आर्थिक योजनाओं की सेवा की। यहाँ मठों की अर्थव्यवस्था की समृद्धि की चिंता ने मठवासी जीवन के तपस्या के उद्देश्यों को लगभग पूरी तरह से विस्थापित कर दिया। यदि हम 16वीं और 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के हमें ज्ञात तपस्वियों पर विचार करें, तो हम देखेंगे कि पोनज़ोवье के मठों में प्राचीन संतों के तपस्या के सिद्धांत लगभग पूरी तरह से भुला दिए गए थे, क्योंकि इन मठों से एक भी उत्कृष्ट तपस्वी नहीं निकला।

---

[382] ज्वेरीन्स्की। संख्या 1143; पोक्रोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 7, 21; ज़नामेंस्की के अनुसार (सेद्मिएज़ेर्स्काया मदर-ऑफ़-गॉड हर्मिटेज का वर्णन, प्रव. सोब. 1869. 2. पृ. 214, 231, 232), इस आश्रम को 1645 के तुरंत बाद अपना पहला अनुदान मिला, और दूसरा 1686 में मिला; 1744 के ऑडिट के अनुसार, इसमें 513 किसान थे। Milyutin. अचल संपत्ति पर, में: रीडिंग्स. 1860. खंड 3. पृ. 145.

[383] ज्वेरस्की। खंड 2, संख्या 1110; पोक्रोव्स्की। उद्धृत कृति, पृ. 9. 1744 तक, इस संन्यास-आश्रम के नियंत्रण में पहले से ही 506 किसान थे। मिल्युटिन। उद्धृत कृति, पृ. 145.

[384] ज्वेरस्की। खंड 3, संख्या 2154।

[385] उपरोक्त। संख्या 1249। गॉर्स्की। विवरण। पृ. 204।

[386] ज्वेरस्की। खंड 3, संख्या 1267.

[387] रयाबिनिस्की, के. 'द माल्योयुंगस्की मठ', इज्वेस्तिया काज़ान, खंड 13, पृ. 3 में।

[388] ज्वेरस्की। खंड 3, संख्या 1169.

[389] उपरोक्त। संख्या 1324। निज़नी नोवगोरोड जिले में, जो 17वीं शताब्दी की शुरुआत तक प्रशासनिक रूप से केवल पोनज़ोवये का हिस्सा था, 17वीं शताब्दी में उनके संस्थापकों की पहल पर दो मठों की स्थापना की गई: साधु आयोन ने स्पस्की मठ (1658) की स्थापना की, जो शहर से लगभग 85 वर्स्ट दक्षिण में है (ज्वेरीन्स्की। 3. संख्या 1192), और साधु पाफ़नुटियस ने बालाखना गाँव में पोक्रोव्स्की मठ की स्थापना की (ज्वेरीन्स्की। 2. संख्या 1061)।

पोनज़िोव्ये के उत्तर-पूर्व में व्याटका और परम क्षेत्र स्थति हैं, जो शक्तशिाली नदयिों और अभेद्य जंगली इलाकों की भूमि है। 14वीं शताब्दी की शुरुआत में ही, सेंट स्टीफन ऑफ़ परम († 1396) के मशिनरी प्रयासों के कारण, ईसाई धर्म का प्रकाश इस क्षेत्र में पहुँच गया था, लेकनि स्थानीय फनि्नो-उग्रकि जनजातयिों का धर्मांतरण धीरे-धीरे हुआ[390] । 16वीं शताब्दी की शुरुआत में, व्याटका के संत त्रफ़िोन († 1612) ने यहाँ मूर्तपिूजक ओस्ट्याक बस्तयिों के बीच मशिनरी कार्य कयिा, और त्रफ़िोन में 'मां ऑफ गॉड के डॉर्मशिन' का मठ (1580) स्थापति कयिा। उनके मशिनरी प्रयास आसान नहीं थे; मूर्तपिूजक ओस्ट्याकों ने इस तपस्वी संन्यासी को कई मौकों पर मारने का प्रयास कयिा। संत स्टीफन और ट्रफिोन के नाम न केवल इस क्षेत्र के इतहिास के साथ, बल्कि संपूर्ण रूस में ईसाई मशिन के इतहिास के साथ भी हमेशा के लिए जुड़ गए हैं[391] ।

7. साइबेरिया का मठवासी उपनिवेशीकरण

उराल पर्वत मस्कोवाइट राज्य के पूर्व की ओर वस्तिार को रोक नहीं सके। साहसी व्यक्तयिों और उद्यमी व्यापारयिों ने पहाड़ी दर्रों से पार होकर और आगे बढ़ने की हम्मित की, और उराल तथा тобол और इरतysh नदयिों के बीच के वशिाल, अनंत घास के मैदानों और जंगलों तक पहुँचे। यर्मक तमिोफ़ीयेव († 1584), खतरनाक रोमांच की प्यास से ग्रस्त कोसैकों के एक दस्ते के अतामान, जनि्हें के. स्टेलनि ने सटीक रूप से 'भूमि-आधारति वजिय-वजिेता' कहा, ने मास्को के राज्य-प्रायोजति साइबेरयिा उपनवेिशीकरण में पहला कदम उठाया। 1587 में, тобольск शहर की स्थापना हुई, और 17वीं सदी के दौरान, साइबेरयिाई भूमि के उपनवेिशीकरण और वजिय ने लगातार पूर् की ओर प्रगति की, और प्रशांत महासागर के तटों तक पहुँच गई[392] । रूसी लोगों ने स्थानीय आबादी से अपनी रक्षा के लिए कलिेबंदी के रूप में शहरों की स्थापना की; बस्तयिाँ जल्द ही उभर आईं, जनिमें उन उपनवेिशवादयिों ने बसाहट की, जो वभिनि्न कारणों से स्वेच्छा से या मस्कोवाइट राज्य छोड़ने के लिए मजबूर हो गए थे। पोनज़िोवये क्षेत्र की तरह, यहाँ भी कई मठ बनाए गए, और उनकी प्रकृति भी वही थी – वे मुख्य रूप से शहरी मठ थे। 16वीं शताब्दी के अंत और 17वीं शताब्दी की शुरुआत में स्थापति 20 मठों में से 12 शहरी थे। साइबेरयिाई मठों का उद्देश्य पोनज़िोव्ये के मठों के समान ही था: देश का रूसीकरण और ईसाईकरण। 18वीं और 19वीं शताब्दयिों में रूसी ईसाई मशिन का इतहिास दर्शाता है कि, इस संबंध में, साइबेरयिा में मठ समुदाय ने बहुत कुछ हासलि कयिा। भक्षिुओं ने मशिन क्षेत्र में, मुख्य रूप से धार्मकि अधकिारयिों के नर्दिेशों पर, परश्रिम कयिा; फरि भी, इसी समय, इस मशिनरी कार्य में राज्य या चर्च-राजनीतकि उद्देश्यों से असंबंधति, सच्चे ईसाई तपस्या के कई उदाहरण मलिते हैं; मशिनरयिों में उच्चतम ईसाई virtue[393] के व्यक्ति शामलि थे।

8. दक्षिण में मठवासी उपनिवेशीकरण

16वीं शताब्दी के अंत से, मास्को ने ओका के दक्षिण में, डॉन और ओका की ऊपरी पहुंच के बीच के मैदानों में, और सीम के आगे, अप्पर डोनेट्स के दोनों कनिारों पर उपनवेिशवाद शुरू कर दयिा। 17वीं सदी के दौरान, यह आंदोलन बनिा रुकावट जारी रहा; यहाँ कलिेबंदी की गई और नए शहरों की स्थापना की गई[394] । पोनज़िोवये क्षेत्र की तरह, सरकारी उपनवेिशवाद के साथ नई मठों की स्थापना भी हुई। लेकनि यहाँ, दक्षिण में, मठ बहुत कम ही बड़े पैमाने पर आर्थकि उद्यमों में वकिसति हुए। शहरों और कलिेबंदी की रेखाओं के नर्मिाण के साथ-साथ, सरकार ने नई भूमि पर सैन्य सेवादारों को बसाने का प्रयास कयिा, और उन्हें सीमा की रक्षा में उनकी सैन्य सेवा के सम्मान में जागीरें प्रदान कीं। यद्यपि मठों को भी राज्य से भूमि और अन्य उपहार प्राप्त हुए, लेकनि ये पोनज़िोव्ये क्षेत्र की तुलना में

---

[390] व्यात्का में रूसी उपनवेिशवाद के शुरुआती चरणों के लिए, प्लेटोनोव देखें। एसेज़ (1899)। पृ. 171 ff. सेंट स्टीफन ने यहाँ चार मठों की स्थापना की। ज्वेरस्कि। 2. संख्या 1959; 1. संख्या 524; 3. संख्या 1330। तुलना करें: मकाराई. 4. पृ. 142, 211। 15वीं शताब्दी में, यहाँ केवल एक मठ की स्थापना हुई थी – ट्रनिटि पेचेरस्की मठ; इसके संस्थापक परम के बशिप थे। मकाराई. 2nd संस्करण. 7. पृ. 46।

[391] IRI. 6. पृ. 437.

[392] स्टेहलनि. 1. पृ. 287, 285–287. साइबेरयिा के उपनवेिशीकरण पर, देखें: ओगोरोडनकिोव, वी. 2 खंड. (1920–1924); बाखरुशनि, एस. (1927) और नया कार्य: सुंकोव, वी. (1946), जो मेरे पास उपलब्ध नहीं है। यह भी देखें: वर्थि, ए. *Geschichte Sibiriens und der Mandschurei* (1899)। पृ. 101–105, 112 ff.

[393] नए स्थापति मठों पर मेरे नोट्स खो गए हैं। सामग्री इस में संकलति है: ज्वेरींस्की, खंड 2–3। बुलगाकोव (उपरोक्त) द्वारा उद्धृत आँकड़े, मेरी राय में, अधूरे हैं; PBE में धर्मप्रांतों के वर्णन भी अधूरे हैं। इसलिए, मेरे द्वारा प्रदान की गई जानकारी की पुनःजाँच करने की आवश्यकता हो सकती है।

[394] मैं केवल सबसे महत्वपूर्ण कृतयिों का उल्लेख करूँगा: प्लाटोनोव। नबिंध (1899); बागालेय, डी. में: रीडग्सि। 1886-1887; डोब्रोक्लोन्स्की, ए. में: रीडग्सि। 1888; यासनिस्की, ए. (1900); ए. याकोवलेव (1916); और साथ ही: आई. मक्लिाशेव्स्की, 'मस्कोवाइट राज्य में आर्थकि जीवन के इतहिास पर। खंड 1: 17वीं शताब्दी में दक्षिणी यूक्रेन में बस्तयिाँ और कृषि' (1894)।

उतने व्यापक नहीं थे। इसके अलावा, यह नहीं भूलना चाहिए कि इस क्षेत्र में विशेष रूप से तीव्र उपनिवेशीकरण 17वीं शताब्दी के दूसरे छमाही में हुआ, जब 1649 के कोड के तहत, सरकार की मठों को भूमि-स्वामित्व प्रदान करने की क्षमता प्रतिबंधित थी और उसे आम तौर पर भूमि के वितरण में सावधानी बरतने के लिए बाध्य किया गया था[395] ।

नए स्थापित मठों के बारे में जानकारी के आधार पर, निम्नलिखित आरेख तैयार किया जा सकता है[396] :

शताब्दी शहरी मठ ग्रामीण मठ

16वीं 2 8

XVII 13 21

कुल 15 29

पहली नज़र में, ऐसा प्रतीत होगा कि शहर की दीवारों के बाहर स्थापित मठों की बड़ी संख्या (15 शहरी मठों की तुलना में 29) हमारे पिछले दावों का खंडन करती है। हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इनमें से लगभग सभी मठ कस्बों के पास (तीन से पाँच किलोमीटर दूर) स्थित थे और उत्तर के वास्तविक तपस्थलों से बहुत कम मिलते-जुलते थे। ओका के दक्षिण में स्थित भूमि के गहन उपनिवेशीकरण के कारण, जिसके साथ-साथ सैन्य कर्मियों के लिए कई नए शहर और बस्तियाँ (तथाकथित 'स्लॉबोड्स') भी स्थापित की गईं, और जो दक्षिणी सीमाओं की रक्षा के लिए सैन्य सेवा की आवश्यकता से प्रेरित था, इस क्षेत्र में तेजी से बस्तियाँ बसीं; इसकी बसावट की प्रक्रिया मुख्य रूप से 17वीं शताब्दी के दूसरे छमाही में हुई, जब विशेष रूप से बड़ी संख्या में नए मठ दिखाई दिए[397] ।

मठों की संख्या के मामले में, ओरील-कुर्स्क क्षेत्र पहले स्थान पर है; यह ओका नदी के दोनों किनारों पर स्थित है, जो पश्चिम की ओर देसना नदी तक और दक्षिण-पश्चिम में, यूक्रेन से सटे चेरनिहिव क्षेत्र में फैला हुआ है, जो उस समय पोलिश शासन के अधीन था[398] । यहाँ नौ नए मठ स्थापित किए गए (16वीं सदी में दो, 17वीं सदी में सात)। केवल कर्स्क क्षेत्र में ही सात मठ बनाए गए (16वीं सदी में चार, 17वीं सदी में तीन)। पूर्व में, ओरील-कर्स्क क्षेत्र वोरonezh क्षेत्र से सटा हुआ है। 1620 के दशक की शुरुआत में ही, यहाँ एक सीमा रेखा बनाई गई थी, जो पश्चिम की ओर बेलगोरोद शहर तक और उत्तर-पूर्वी दिशा में डॉन नदी को पार करके तम्बोव क्षेत्र में खोपरा नदी के उद्गम तक फैली हुई थी[399] । 17वीं शताब्दी में, यहाँ सात मठों की स्थापना की गई, जिनमें से तीन वोरonezh शहर में थे[400] ।

---

[395] रोज़कोव, एन. (1898); लाप्पो-डैनीलेव्स्की। द ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ डायरेक्ट टैक्सेशन इन द मस्कोवाइट स्टेट (1890); एक संक्षिप्त लेकिन ठोस अवलोकन: ग्नेवुशेव, ए. लैंड ओनरशिप एंड एग्रीकल्चर इन द मस्कोवाइट स्टेट इन द 16th–17th सेंचुरीज़, इन: रशियन हिस्ट्री इन एसेज़ एंड आर्टिकल्स। संपादक: एम. डोवनार-ज़ापोल्स्की। खंड 3 (1912)। पृ. 267–311।

[396] यह तालिका विभिन्न स्रोतों के आधार पर संकलित की गई है; हम इसे अधूरा मानते हैं, क्योंकि पुस्तक के अंतिम संपादन के समय ज्वेरीन्स्की का कार्य हमारे लिए उपलब्ध नहीं था; यह संभव है कि मठों की कुल संख्या अधिक थी – मुख्य रूप से, हमारा मानना है, 17वीं शताब्दी में अपनी स्थापना के तुरंत बाद गायब हो गए गैर-शहरी मठों के कारण।

[397] जब किलेबंदी की जा रही थी, तो सरकार मठों को निर्माण कार्य करने के लिए अपने किसानों को भेजने के लिए बाध्य करती थी। उदाहरण के लिए देखें: RIB. 10. पृ. 268–269; तुलना करें: याकोवलेव। उपरोक्त संदर्भ, जिसमें इस विषय पर प्रचुर मात्रा में जानकारी है। पोनिज़ोवये क्षेत्र में इसी तरह के सरकारी उपायों के लिए, देखें: ऐतिहासिक और कानूनी अधिनियम। संकलित एस. मेल्निकोव द्वारा। खंड 1 (1859)। पृ. 22, 23, 24।

[398] प्रशासनिक शब्दावली में, 17वीं शताब्दी में यूक्रेन को लिटिल रूस के नाम से जाना जाता था। 'पोलिश यूक्रेन' नाम मुख्य रूप से बेलगोरोद और खार्कव क्षेत्रों को संदर्भित करता था। 'यूक्रेन' शब्द का अर्थ 'मैदान के किनारे स्थित' है, यानी, स्टेपी।

[399] DAI. 9. पृ. 270–288। तुलना करें: बागालेय। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 197; याकोवलेव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 284।

[400] वोरोनेज़ में (1586 में स्थापित): 1620 – अकाटोव्स्की मठ, हेगुमेन किरिल द्वारा स्थापित (ज्वेरिन्स्की. 2. संख्या 609); 1623 – पोक्रोव्स्की कन्वेंट (उसी में संख्या 1060)। 1620 से पहले, ज़ादोंस्क शहर में द मॉन्स्टरी ऑफ़ द मदर ऑफ़ गॉड की स्थापना हुई थी (वही, खंड 1, संख्या 59)। लगभग 1640 में, ओस्ट्रोगोझ्स्क शहर से 20 किमी दूर दिनोगोर्स्क का डॉर्मिशन मठ बनाया गया था (वही, खंड 1, संख्या 169)। 1646 से ठीक पहले, कॉन्स्टेंटिन नामक एक कठोर तपस्वी ने वोरonezh से 40 किमी दूर, उस्मान नदी के किनारे ट्रांसफिगरेशन कॉन्वेंट (आमतौर पर टॉल्शेन कॉन्वेंट के नाम से जाना जाता है) की स्थापना की (ibid., खंड 2, संख्या 1222)। ज़ार मिखाइल के आदेश पर, 1613 में वलुइकी शहर से 3 किमी दूर डॉर्मिशन मठ का निर्माण किया गया था (उसी, खंड 2, संख्या 1329)। सातवाँ मठ, सेंट जॉन द बैपटिस्ट मठ, 1697 में पीटर द ग्रेट के आदेश पर जीते गए अज़ोव किले में स्थापित किया गया था; 1711 में, पीटर के दुर्भाग्यपूर्ण प्रुत अभियान के परिणामस्वरूप रूस द्वारा अज़ोव को खोने के बाद, इस मठ को वोरonezh में स्थानांतरित कर दिया गया था। तुलना करें: बुल्गाकोव। उद्धृत कृति, पृ. 63।

दक्षणि-पूर्वी क्षेत्र में, जसिका उत्तर-पूर्वी भाग प्रशासनकि रूप से पोनज़िोवे के अधीन था, पहला मठ 1573 में ही स्थापति कयिा गया था[401] , और 17वीं सदी तक इस क्षेत्र में आठ मठ हो गए थे। दो आश्रम वशिेष उल्लेख के योग्य हैं, क्योंकि उन्होंने बाद में, 18वीं और 19वीं शताब्दियों में, रूसी मठवाद के इतहिास में एक प्रमुख भूमकिा नभिाई: बोगोरोदत्सिकाया सनाक्सारस्काया हर्मटिेज (1659), जो टेम्नकिोव शहर से बहुत दूर नहीं है, और उस्पेंस्काया सारोवस्काया हर्मटिेज (1679, 1692 में पुनर्स्थापति), जो उसी शहर से लगभग 40 कमिी दूर है, और जो सेंट सेराफमि ऑफ़ सारोव के जीवन और कार्यों के कारण पूरे रूसी लोगों के बीच प्रसद्धि हो गई[402] ।

ओरीओल क्षेत्र में लौटकर, हम कुछ ऐसे मठों का उल्लेख करेंगे जन्हिोंने बाद में रूसी मठवाद के इतहिास में एक महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई। 16वीं शताब्दी के अंत में, सेव्स्क शहर से लगभग 60 कमिी दूर माँ ऑफ गॉड का प्लोशचांस्काया हर्मटिेज स्थापति कयिा गया था, लेकनि इसे 'समय की परेशानयिों' (Time of Troubles) के दौरान पोलशि सैनकिों द्वारा नष्ट कर दयिा गया था। 1620 में, कीव-पेचेरस्क लाव्रा के एक भक्षिु, प्रोकॉपयिस ने, पैट्रआर्क फलिारेट के आशीर्वाद से, इस खंडहर हो चुके हर्मटिेज को फरि से स्थापति कयिा। 18वीं और 19वीं शताब्दी में, यह हर्मटिेज एल्डर परंपरा[403] के केंद्रों में से एक था। लगभग 1661 में, हरिोमोंक सेरापयिन ने ब्रयानस्क शहर से लगभग 17 कमिी दूर, स्नेज़ेट नदी के तट पर, सेंट जॉन द फॉररनर का बेलोबेरेज्स्काया हर्मटिेज स्थापति कयिा, और यहीं 19वीं शताब्दी में रूसी एल्डर्स ने कार्य कयिा[404] । कर्सक क्षेत्र के मठवासी बस्तयिों में, हमें 'कोरेन्नाया' के जन्म के हर्मटिेज का उल्लेख करना चाहए, जसिे रूस में 'कोरेन्नाया' हर्मटिेज के नाम से जाना जाता है । इसका नाम माँ ईश्वर की चमत्कारी 'कोरेन्नाया' प्रतमिा के नाम पर रखा गया था जो (पहले) वहाँ रखी गई थी। यह हर्मटिेज, कर्सक से 30 कमिी दूर, 1597 में स्थापति कयिा गया था।[405]

17वीं सदी के दूसरे भाग में, मठों की उपनवेशीकरण प्रक्रयिा और दक्षणि की ओर आगे बढ़ी, डेनएिपर और डोनेट्स नदयिों के बीच के स्टेप क्षेत्र में, जहाँ कई मठ बनाए गए[406] ।

9. उपनवेशीकरण की सामान्य वशिेषताएँ

16वीं और 17वीं शताब्दियों में नए मठों के नर्मिाण की यह सामान्य तस्वीर है। हालाँकि, हम दोहराना चाहेंगे: हमारे द्वारा प्रदान कएि गए आंकड़ों के सत्यापन और परष्किरण की आवश्यकता है; एक बार सभी मठों पर आवश्यक ऐतहिासकि सामग्री और स्रोत एकत्र हो जाने के बाद, सांख्यकिी कुछ अलग दखिेगी। इस मामले पर शोध इस तथ्य से जटलि है कि कई मठ, जो धार्मकि या राज्य प्राधकिरणों के आदेश पर या संस्थापकों की अपनी पहल पर बनाए गए थे, कसिी न कसिी कारण से कई दशकों के बाद उपयोग से बाहर हो गए; भक्षिुओं ने उन्हें छोड़ दयिा और मठ, जैसा कि ऐतहिासकि दस्तावेज़ कहते हैं, 'बनिा गायन के' खड़े रहे। केवल कुछ परत्यिक्त मठों को बाद में पुनर्जीवति कयिा गया - अक्सर स्वयं भक्षिुओं की पहल पर। ऐसे कई मठ थे जनिका आधकिारकि दस्तावेजों में बल्किुल भी उल्लेख नहीं है और जो, कह सकते हैं, दुनयिा से छपिे रहे। चर्च के अधकिारयिों ने उन मठों को पुनर्जीवति करने का कोई प्रयास नहीं कयिा जो अवांछति हो गए थे। वे आमतौर पर नए मठों की स्थापना पर ध्यान केंद्रति करते थे; यह उनके हति में था, क्योंकि वे आम तौर पर राज्य के उपनवेशीकरण के प्रयासों से नकिटता से जुड़े हुए थे। 18वीं

---

[401] नकिोलेव्स्की चेर्नयेव्स्की मठ, शत्स्क शहर से 20 कमिी दूर (ज़्वेरस्किी। खंड 2, संख्या 569); लेबेड्यान शहर के पास डॉन नदी के तट पर स्थति ट्रनिटिी मठ की स्थापना संभवतः16वीं शताब्दी में हुई थी; इसके पहले वश्विसनीय अभलिेख *1620–21 के* हैं *(उपरोक्त, खंड 1, संख्या 529) I*

[402] ज़्वेरीन्स्की। 2. संख्याएँ 644 और 1141।

[403] ज़्वेरेन्स्की। 2. संख्या 1057; डेनसिोव। उद्धृत ग्रंथ, संख्या 630।

[404] ज़्वेरींस्की। खंड 1, संख्या 92; डेनसिोव। उद्धृत कृति, संख्या 626। 17वीं सदी के अंत तक संन्यासयिों ने इस आश्रम को पहले ही छोड़ दयिा था, और यह खंडहर में पड़ा था; 1721 में इसे आर्कमिैंड्राइट पटिरिमि (ब्रायन्स्क के पीटर और पॉल मठ से) द्वारा पुनर्स्थापति कयिा गया था, 1764 में इसे समाप्त कर दयिा गया, लेकनि भक्षिु वहाँ रहते रहे, और बाद में, 1817 में, इसे 'आधकिारकि तौर पर' एक बार फरि से पुनर्स्थापति कयिा गया। 18वीं सदी के अंत में यह तपोवन वहाँ रहने वाले वरष्ठिों के कारण बहुत प्रसद्धि था। अध्याय XV देखें।

[405] बुलगाकोव। उपरोक्त संदर्भ, पृ. 74। मैं दो और नव-स्थापति मठों का उल्लेख करूँगा: 1) पुतव्लि शहर के पास ग्लस्कि में स्थति ईश्वर की माता का मठ (1557), और 2) मोलचान्स्क में ईश्वर की माता का मठ (आम तौर पर सोफ्रोनएिव मठ के नाम से जाना जाता है), पुतव्लि से 25 कमिी दूर, जो 15वीं शताब्दी में स्थापति कयिा गया था और 1593 में पुनर्स्थापति कयिा गया था। ज़्वेरीन्स्की। खंड 2, संख्या 933। दोनों मठ अपने वृद्धों के लएि प्रसद्धि हुए। अध्याय XV देखें।

[406] 1654 में, अख्त्यirka बस्ती के पास पवत्रि त्रमिूर्ति मठ की स्थापना हुई, जो अख्त्यirka की माता ईश्वर की चमत्कारी प्रतमिा के लएि प्रसद्धि था; 1663 में, खार्कीव से लगभग 10 कमिी दूर रूपांतरण मठ की स्थापना हुई, जो ओज़ेरयान्का की माता ईश्वर की प्रतमिा के लएि प्रसद्धि हुआ। बुलगाकोव। उद्धृत कृति, पृ. 100। सबसे दक्षणिी मठ था सेंट नकिोलस मठ (1680) जो नोवोमोस्कोव्स्क गाँव के पास समारा नदी के तट पर (यकातेरनिोस्लाव शहर के उत्तर में, अब डनिीप्रोपेत्रोव्स्क) स्थति था। बुलगाकोव। उद्धृत कृति, पृ. 65।

शताब्दी की शुरुआत में, नए मठों की स्थापना भी बंद हो गई, यह एक ऐसा विकास था जिसका कारण पीटर द ग्रेट और धार्मिक पदानुक्रम के प्रभावशाली सदस्यों द्वारा मठवाद और मठों के प्रति अपनाया गया रवैया था। 18वीं सदी के पहले छमाही में, बहुत कम नए मठों की स्थापना हुई। 19वीं सदी में ही मठों की स्थापना की एक नई लहर शुरू हुई, लेकिन यह मास्को काल की तुलना में पूरी तरह से अलग कारणों और विचारों से प्रेरित थी। मठों की स्थापना की इस नई लहर पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि उनकी स्थापना का इतिहास पहले की तुलना में पूरी तरह से अलग प्रकृति का है।

भिक्षु-उपनिवेशवाद का एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करते समय, एक और प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है, अर्थात्: इतने सारे मठों की स्थापना पर स्थानीय आबादी की क्या प्रतिक्रिया थी? और यहाँ एक दिलचस्प तथ्य सामने आता है। हर नए मठ की स्थापना को स्थानीय आबादी की पूरी स्वीकृति नहीं मिली; कभी-कभी, उन्होंने किसी न किसी तरह से मठ के निर्माण को रोकने का भी प्रयास किया, और मामला अक्सर इस हद तक पहुँच जाता था कि मठ के संस्थापक को पीटा जाने लगता था। उन क्षेत्रों में जहाँ मठों द्वारा उपनिवेशीकरण का राज्य द्वारा उपनिवेशीकरण से घनिष्ठ संबंध था—अर्थात्, पोनिज़ोव्ये क्षेत्र और दक्षिण में—ऐसी घटनाएँ शायद ही कभी हुईं। लेकिन उत्तर में और कुछ हद तक केंद्रीय क्षेत्रों में, जहाँ रूसी लंबे समय से रहते थे और जहाँ मुक्त और खेती योग्य भूमि का मुद्दा गंभीर था, ऐसी घटनाएँ असामान्य नहीं थीं। यहाँ तक कि कुछ ऐसे संतों और तपस्वियों के जीवन-चरित्रों में भी, जिन्हें बहुत सम्मान दिया जाता था, उल्लेख मिलता है कि नए मठों की स्थापना से पड़ोसी गांवों और बस्तियों के निवासियों को हमेशा प्रसन्नता नहीं होती थी। ऐसे मामलों में, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ लोगों के धार्मिक विचारों और भक्ति पर हावी हो जाती थीं[407] । भूमि और इसका उपयोग करने का अधिकार कभी-कभी लंबे समय से चले आ रहे विवादों, मुकदमों और यहाँ तक कि हिंसा का कारण भी बनते थे, जब स्थानीय निवासी एक नए मठ की स्थापना को रोकने में असमर्थ होते थे। ऐतिहासिक दस्तावेज़ बताते हैं कि इसका दोष न केवल स्थानीय किसानों पर, बल्कि स्वयं मठों और अपनी ज़मींदारी बढ़ाने की उनकी इच्छा पर भी है, क्योंकि वे ऐसा पड़ोसी किसानों की कीमत पर करना चाहते थे। चतुराई, सोने और अधिकारियों के साथ संबंधों की बदौलत, मठों ने कानूनी विवादों को वर्षों तक खींचने में कामयाबी हासिल की, जो किसान समुदायों की पहुँच से परे था।

यह तर्क दिया जा सकता है कि किसानों का डर निराधार नहीं था: मठों की संपत्तियों के विस्तार को सीमित करने के लिए सरकारी उपायों के बावजूद, नए मठ बहुत जल्दी स्थापित हो गए और आर्थिक रूप से विस्तार करने में सफल रहे। चाहे मठों को छोटी या बड़ी भूमि अनुदान प्राप्त हुई हो, मठों की स्थापना से समग्र रूप से मठों की भूमि-धारिता में वृद्धि हुई। इस प्रकार, मठों की संख्या में वृद्धि से मठवाद की तपस्या की भावना का पुनरुत्थान नहीं हुआ, बल्कि मठों का समृद्धिकरण हुआ, और परिणामस्वरूप ऐसे परिणाम सामने आए जो लाभकारी होने से अधिक हानिकारक थे। 16वीं-17वीं शताब्दियों में मठ संपत्तियों के इतिहास पर एक नज़र डालने से इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं, और अब हम इस दुर्भाग्यपूर्ण ऐतिहासिक परिस्थिति की विस्तार से जांच करना चाहते हैं।

अध्याय VIII. 16वीं–17वीं शताब्दियों में मठ संपत्तियाँ और मठ अर्थव्यवस्था

[407] हम केवल सबसे दिलचस्प मामलों का ही उल्लेख करेंगे। पोशेखोंस्क के पूजनीय एड्रियन (16वीं सदी के अंत) के जीवन से यह स्पष्ट है कि 1543 में उन्होंने पोशेखोंये शहर के पास एक संन्यास-आश्रम की स्थापना की थी; इसे किसानों द्वारा नष्ट कर दिया गया था (IRI. 3. पृ. 70)। सेंट अलेक्ज़ेंडर ऑफ स्विर (1533), जिन्हें अपने जीवनकाल में ही एक संत के रूप में पूजा जाने लगा था, को अपने द्वारा स्थापित एक आश्रम को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा (वही, 6, पृ. 115)। उनकी जीवनी इस में भी देखें: VChM, 7 दिसंबर। लूज़्स्की के पूजनीय लियोनिद, या उस्त-नेदूम († 1654), ने एक चर्च बनाने का संकल्प लिया (1603), और उन्हें भी स्थानीय आबादी का विरोध झेलना पड़ा (IRI, 1. पृ. 114)। वोलोम के संत साइमन († 1644) ने एक चर्च बनाया, लेकिन स्थानीय निवासियों ने, इस डर से कि वह बाद में वहाँ एक मठ बना सकते हैं, उसे जला दिया (उपरोक्त, खंड 3, पृ. 608)। पैगन आबादी ने भी तपस्वियों के मिशनरी कार्य को बड़ी शंका की दृष्टि से देखा, जैसा कि सेंट त्रिफोन ऑफ पेचेन्गा († 1583) और सेंट त्रिफोन ऑफ व्याटका (IRI. 4. पृ. 582; 6, पृ. 437)। मठों के संस्थापकों के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैये का वर्णन प्रिलुत्स्क के परम पूजनीय डेमेट्रियस, मख्रिश्च के स्टीफन, झेल्टोवोडस्क के मैकारियस, और काल्याज़िन के मैकारियस (सभी 14वीं सदी के) के जीवन-चरित्रों में भी मिलता है। पावलोव। निबिंध। पृ. 20। मार्कुशेव्स्क के संत अगपियस († 1584) को वास्तव में पड़ोसी किसानों ने तब मार डाला जब उन्हें मॉस्को से उनके एकांतवास के लिए भूमि का स्वामित्व प्रदान करने वाला एक चार्टर मिला (IRI. 5. पृ. 51)। इन विवादों में, मठ स्वयं अक्सर दोषी थे, क्योंकि उन्होंने अवैध रूप से किसानों की भूमि पर कब्जा कर लिया था। किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ के इतिहास में इसी तरह के उदाहरण देखें। निकोल्स्की। उद्धृत ग्रंथ 1. पृ. 2, 8–10।

1. मठ संपत्तियों के इतिहास के स्रोत के रूप में कानूनी दस्तावेज़

मठों की भूमि-स्वामित्व के उद्भव और विकास का ऐतिहासिक कारण यह नहीं था कि वे आवश्यक थीं, जैसा कि सेंट वोलोट्स्क के आदरणीय जोसेफ ने मठवासी जीवन के उत्थान के लिए, लेकिन मुख्य रूप से, भिक्षुओं के अपने गहरे विश्वास के आधार पर ऐसा किया कि मठवासी जमींदारियाँ मठवासी तपस्या की नींव का खंडन नहीं करतीं। संत जोसेफ के अनुयायियों ने इसी गलत आधार पर अपने विचारों को स्थापित किया, और इसी बहाने उन्होंने संचय-विरोधियों[408] के साथ वाद-विवाद और संघर्ष में भाग लिया। इस दृढ़ विश्वास के बावजूद कि वे सही थे, और इन संपत्तियों पर उनके दावे धार्मिक रूप से उचित थे, मठों ने फिर भी इन अधिकारों की पुष्टि राज्य के फरमानों से भी करवाने का प्रयास किया। चूंकि राज्य, अपनी ओर से, मठों के भूमि स्वामित्व के अधिकार को कानूनी रूप से स्थापित करने में रुचि रखता था, और साथ ही अपने लाभ के लिए इस अधिकार को यथासंभव सीमित करने की भी कोशिश कर रहा था, परिणाम यह हुआ कि राज्य और चर्च बारी-बारी से सहयोगी और प्रतिद्वंद्वी के रूप में सामने आए। यह तर्क दिया जा सकता है कि कोई भी पक्ष निर्णायक विजय हासिल करने में सफल नहीं हुआ और न ही किसी को वास्तविक पराजय का सामना करना पड़ा। मठों के भूमि अधिकारों से संबंधित इस मुद्दे की अनिश्चितता और अनसुलझी प्रकृति ने मठों की अर्थव्यवस्था के विकास और समृद्धि को बढ़ावा दिया।

मठों को राजकुमारों और महा-राजकुमारों द्वारा प्रदान किए गए विभिन्न विशेषाधिकारों (प्रतिरक्षाओं) ने मठों की भूमि-धारिता के विस्तार में सुविधा प्रदान की[409] । चर्च संपत्तियों से संबंधित विशेषाधिकारों के प्रसार के लिए तातार खानों के फ़रमान अत्यंत महत्वपूर्ण थे, जिन्हें, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, चर्च पदानुक्रम द्वारा चर्च के विशेष अधिकारों के आधार के रूप में माना जाता था[410] । यह स्पष्ट है कि पदानुक्रम और व्यक्तिगत मठों ने अपने स्थानीय (अनुदान) राजकुमारों से, और बाद में महा-राजकुमारों से, इन अधिकारों की पुष्टि करने वाले पेटेंट पत्र प्राप्त करने का प्रयास किया, न केवल अपने राज्यों को धर्मनिरपेक्ष (राजसी) संस्थानों के दावों से बचाने के लिए, बल्कि, सबसे बढ़कर, भविष्य के लिए इन राज्यों को कानूनी रूप से सुरक्षित करने के लिए[411] . मठों के अधिकार और विशेषाधिकार विभिन्न प्रकार के दस्तावेजों द्वारा स्थापित और संरक्षित किए गए थे[412] .

---

[408] मठ संपत्तियों के मुद्दे की अपनी जांच में, वी. ओ. क्लुचेव्स्की लिखते हैं: 'मठों की भूमि का स्वामित्व एक भक्तिपूर्ण समाज द्वारा मठवाद की अपर्याप्त रूप से समझी गई अवधारणा के लिए किया गया एक दोहरा अनुचित बलिदान था; इसने स्वयं मठों के नैतिक सुधार में बाधा डाली और, साथ ही, राज्य की आर्थिक शक्तियों के संतुलन को बाधित किया' (Geschichte Russlands. Vol. 2, p. 294). सेंट थियोडोसियस ऑफ द केव्स के समय में ही रूसी मठों के पास भूमि थी। तुलना करें थियोडोसियस का जीवन: 1. में: याकोवलेव, उद्धृत ग्रंथ (1873, XII); 2. में: रीडगिस (1889), पृ. 1. पृ. 25। मठ समुदाय का मानना था कि इस तरह का स्वामित्व मठवासी संकल्पों की भावना के विरुद्ध नहीं था, और इस मामले में उसने अपने विचारों को बाइज़ेन्टियम में मठों की ज़मीनों के अस्तित्व पर आधारित किया, जहाँ उनका प्रबंधन 'पितृसत्ता अलेक्सियस के चर्च अधिनियम' के अनुसार किया जाता था। देखें: कैटलॉग। 3. संख्या 330 (विधान)। पृ. 231। तुलना करें: गोलुबिस्की। 1. 2. पृ. 597। पुराने रूसी वंशावलीकारों ने मठों को भूमि के राजसी अनुदान को 'धार्मिकता के कार्य' के रूप में संदर्भित किया (उदाहरण के लिए: पीएसआरएल. 1. पृ. 65, 85, 92, 129, 187; 2. पृ. 11–113, 154, आदि)। हालांकि, यह नहीं भूलना चाहिए कि ये वंशावलीकार केवल भिक्षु थे। 12वीं शताब्दी में ही, मठों के पास उस भूमि का स्वामित्व होना आम बात थी जिससे वे अपना भरण-पोषण करते थे। गोरबुनोव। मठों और चर्चों को प्रदान की गई विशेषाधिकार, में: आर्काइव। संपादक: एन. कलाचोव। 5 *(1860–61) / पृ. 4–5 / हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बिशप वर्ग के कुछ सदस्य, जैसे कि मेट्रोपॉलिटन क्लेमेंट स्मोल्याटिच (1147–1154), मठों की भूमि-स्वामित्व के विरोधी थे और इससे उत्पन्न मठवासी जीवन के भ्रष्टाचार की ओर इशारा करते थे। निकोल्स्की, एन. मेट्रोपॉलिटन क्लेमेंट स्मोल्याटिच के साहित्यिक कार्यों पर (1892) / पृ. 104, 220 / गोलुबोव्स्की। 15वीं शताब्दी की शुरुआत तक स्मोलेंस्क क्षेत्र का इतिहास (1895) / पृ. 238 / 12वीं–15वीं शताब्दियों में अधिग्रहण के तरीकों पर, देखें: गोरबुनोव। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 11–19; मिलियुटिन. उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 42; गोरचाकोव. भूमि स्वामित्व पर (1871). पृ. 83–109; मेझेचिक. 14वीं–15वीं शताब्दी के चार्टर (1883). पृ. 3.*

[409] प्राचीन रूस में प्रतिरक्षा के उदय पर सामान्य चर्चा के लिए, देखें: पावलोव-सिलिवान्स्की। कृतियाँ, 3 खंड; व्लादिमीरस्की-बुदानोव। समीक्षा (1888)। पृ. 153, 195 ff., और यह भी: सर्गेविच, ज़ागोस्किन, पावलोव। चर्च कानून पर पाठ्यक्रम। पृ. 158; सुवोरोव, एन. चर्च कानून पर पाठ्यक्रम; मकारीय। खंड 8। पृ. 191, 267, 285।

[410] खान के फरमान भूमि-स्वामित्व के संबंध में पादरियों के अधिकारों और विशेषाधिकारों को बहुत सटीकता से परिभाषित करते हैं; उदाहरण के लिए, मेंगु-तेमिर (लगभग 1267–1279) के फरमान को देखें, जो यहाँ है: SGGD. खंड 2, संख्या 2। फरमानों पर, देखें: प्रिसेलकोव, एम. द खान्स डिक्रीज़ ऑफ़ द रशियन मेट्रोपॉलिटन्स (1916); साथ ही पूर्व का अध्ययन: ग्रिगोरीव, ऑन द ऑथेंटिसिटी ऑफ़ द खान्स डिक्रीज़ (1842) और हर्मन, ओप. सिट., पृ. 69–71।

[411] अनुदान के सबसे शुरुआती पत्रों (13वीं–15वीं शताब्दी) के लिए, देखें: गोरबुनोव, उद्धृत ग्रंथ, और मिलियुटिन, उद्धृत ग्रंथ।

[412] विभिन्न प्रकार के दस्तावेजों पर: गोरबुनोव, उपरोक्त, और शुमाकोव, एस., 'बोर्ड ऑफ फाइनेंस के पत्रों का एक सर्वेक्षण', भाग 4, में: रीडगिस, 1917, संख्या 2, पृष्ठ 17 आदि; व्लादिमीरस्की-बुदानोव। समीक्षा (1888)। पृ. 195 आदि; हर्मन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 69–71; इसके अलावा वेसेलोव्स्की, एस. का कार्य भी महत्वपूर्ण है, 'पैट्रिमोनियल सिस्टम की उत्पत्ति के प्रश्न पर' (1926)। पृ. 26 आदि, 84–89, 90।

सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ अनुदान चार्टर था। जब कोई नया मठ स्थापति होता था, तो उसका संस्थापक ग्रैंड ड्यूक या ज़ार से अनुदान चार्टर प्राप्त करने का प्रयास करता था, जो भूमि-स्वामित्व की सीमाओं को सटीक रूप से परिभाषित करता था; साथ ही - और यह विशेष रूप से 16वीं सदी के लिए सच था - मठ को ग्रैंड ड्यूक या ज़ार से अन्य स्थानों से बसाहट करने वालों को स्वीकार करने का अधिकार प्राप्त होता था[413] । ये अनुदान पत्र अक्सर छूट पत्र होते थे, जिनके द्वारा मठों, उनके निवासियों और मठ की भूमि पर रहने वाले सभी लोगों को राज्य को कर चुकाने से मुक्त कर दिया जाता था; ऐसी छूटें आमतौर पर एक निश्चित अवधि – 10 या 15 वर्षों के लिए दी जाती थीं। अक्सर, यदि हमेशा नहीं तो, ये विशेषाधिकार मठ को दान की गई (अक्सर इसकी स्थापना के समय) आनुवंशिक बोयार संपत्तियों पर, साथ ही उन लंबे समय से बसे किसानों पर भी लागू होते थे जो मठ को अपना चार्टर मिलने से पहले ही इन संपत्तियों पर रह रहे थे। अत्यंत दुर्लभ मामलों में ही विशेषाधिकार पत्र अनिश्चित काल के लिए जारी किए जाते थे[414] । विशेषाधिकार पत्र के साथ ही, आमतौर पर एक प्रतिरक्षा पत्र भी जारी किया जाता था, जो मठ, उसके किसानों और श्रमिकों को राज्य अधिकारियों के अधिकार क्षेत्र से मुक्त करता था और आपराधिक मामलों - चोरी, डकैती और हत्या - को छोड़कर, मठाध्यक्ष को न्यायिक शक्तियाँ प्रदान करता था[415] । यदि इन सभी अधिकारों और विशेषाधिकारों को एक ही चार्टर में सूचीबद्ध किया जाता था और मठ को करों (भले ही केवल एक निश्चित अवधि के लिए) और राज्य प्राधिकरणों के अधिकार क्षेत्र से पूर्ण छूट प्राप्त होती थी, तो ऐसे चार्टर को 'तरखान' चार्टर, या बस 'तरखान' कहा जाता था। ये तरखान बहुत कम जारी किए जाते थे, और 1584 में, परिषद के एक फरमान द्वारा, उनका जारी करना पूरी तरह से बंद कर दिया गया था[416] ।

उपरोक्त दस्तावेज़ चर्च और मठ की संपत्तियों से संबंधित उस युग के सार्वजनिक कानून के स्रोत हैं। इन्हें निजी-कानून प्रकृति के विभिन्न दस्तावेज़ों से पूरक किया जा सकता है।

सबसे पहले तथा सर्वोपरि हैं तथाकथित वैधानिक चार्टर, जो ग्रैंड प्रिंसेस और मेट्रोपोलिटन्स के होते हैं, जो मेट्रोपोलिटन और उनके धर्मप्रांत के भीतर के मठों के बीच कानूनी संबंध को नियंत्रित करते हैं (जब तक कि उन्हें विशेष पेटेंट पत्रों द्वारा मेट्रोपोलिटन के अधिकार क्षेत्र से छूट न दी गई हो)[417] . जब संपत्तियों की सीमाओं को लेकर विवादों के परिणामस्वरूप शाही फरमान या न्यायालय के निर्णय द्वारा कुछ दस्तावेज़ तैयार किए गए, तो इन्हें कानूनी चार्टर कहा जाता था[418] . जब संपत्तियाँ (मुख्यतःआनुवंशिक संपत्तियाँ) दान की जाती थीं, तो संपत्ति का पूर्व

---

[413] तुलना करें: गोरचाकोव। भूमि स्वामित्व पर। पृ. 105. सबसे प्राचीन और विशेष रूप से उल्लेखनीय अनुदान पत्रों में से, हम केवल कुछ का ही उल्लेख करेंगे; उदाहरण के लिए, प्रिंसि इवान कलाइटा (14वीं सदी) का युर्येव मठ को दिया गया अनुदान पत्र: AAE. 1. संख्या 4 और 5; और बेलोजेर्स्की राजकुमारों द्वारा फेरापोंटोव मठ को दिए गए पत्र (1450): AAE. 1, संख्या 47; तुलना करें: संख्या 20, 21, 51, 53; ये सभी चार्टर मठों के उपनिवेशीकरण प्रयासों का समर्थन करते हैं – अनुपजाऊ भूमि का खेती के काबिल बनाना, नए बस्तियों को आकर्षित करना और नए गांवों का निर्माण करना। दीर्घकाल से बसे निवासियों के अधिकारों के बारे में, देखें: AAE. 1. संख्या 34 और 35। यारोस्लाव के राजकुमार वासिली (1321–1345) द्वारा स्पस्की मठ को (लगभग 1325) प्रदान किया गया चार्टर विशेष रूप से विस्तृत है, जो इस में है: यारोस्लाव में स्पस्की मठ के ऐतिहासिक कार्य। संपादक: वाखरामेव। 1. संख्या 1; बाद में इसे ग्रैंड प्रिंसि इवान (लगभग 1464–1466) द्वारा पूरक और पुष्टि किया गया था: OAMYU. 4. संख्या 147. निम्नलिखित अनुदान पत्र 16वीं सदी के विशिष्ट हैं: 1551 – यूरीव मठ को (DAI. 1. संख्या 46); 1560 – मिखाइलोव्स्की कन्वेंट को (DAI. 1. संख्या 113); 1556 – ट्रिनिटी पेचेन्गा मठ को (SGKE. 2. संख्या 136); 1554 – कोनेव मठ को (DAI. 1. संख्या 48); 1560 – स्पासो-कामेन्नी मठ को (उपरोक्त 1. संख्या 115)।

[414] देखें: मिल्युटिन। उद्धृत कृति; ड्याकोनोव। निबंध (1898); ग्रेकोव, वी. 'यूरीव दिवस और पवित्र वर्ष', में: यूएसएसआर के विज्ञान अकादमी की कार्यवाही (1926)। संख्या 1–2; वही। रूस में सबसे पुराने समय से 17वीं सदी तक के किसान (1946)। विशेषाधिकार प्राप्त चार्टर, जो आधिकारिक और बोलचाल की भाषाओं में लिखे गए थे, उन्हें 'ओबेल' चार्टर के रूप में भी जाना जाता था; 'ओबेल' का अर्थ है उन करों से छूट देना जिनका भुगतान 'काली' भूमि—अर्थात कर के अधीन भूमि—पर रहने वाले किसानों के लिए अनिवार्य था।

[415] मुकदमे से छूट प्रदान करने वाले चार्टर देखें: वाज्स्की मठ को (1548)। DAI. 1. संख्या 44; निकोलाएव्स्की कोरेल्स्की मठ को (1542)। AI. 1. संख्या 141; स्ट्रोकिनि हरमिटेज को (1547)। वही। संख्या 147; अस्त्रखान में ट्रिनिटी मठ (1573) को। वही। संख्या 184; कोनेव्स्की मठ (1578) को। DAI. 1. संख्या 122; ट्रिनिटी-सर्गीयस मठ (1535 और 1551) को, में: अधिनियम। फेदोतोव-चेखोव्स्की द्वारा संपादित। 1. संख्या 57 और 75; फेरापोन्टोव मठ (1534) को। वही। संख्या 42; सुज़दल में इंटरसेशन मठ (1528) को। AI. 1. संख्या 131; चुख्लोम मठ (1518) को। AI. 1. संख्या 125; सिय के सेंट एंथनी मठ (1545) को। एसजीकेई. 1. सं. 109; सेंट जोसेफ के जीवनकाल के दौरान वोल्कोलामस्क मठ को (1500)। एएई. 1. सं. 136। 15वीं शताब्दी से, हम निम्नलिखित प्रतिरक्षा पत्रों का उल्लेख करेंगे: करिलो-बेलोजेर्स्की मठ को। एएई. 1. सं. 95; ट्रिनिटी-सर्गेयस मठ को (1494)। वही। 1. संख्या 131। शोधकर्ताओं के अनुसार, 14वीं और 15वीं शताब्दियों में ही मठों की जमीनों के साथ-साथ बोयारों की आनुवंशिक जागीरों को भी अभय-अधिकार प्राप्त थे: प्रेस्न्याकोव। प्रिंसिज़ लॉ (1909)। पृ. 296; सर्गेयेवचि. उद्धृत ग्रंथ 1. पृ. 328 और, विशेष रूप से: पावलोव-सिलिवान्स्की. कृतियाँ 3. पृ. 281, 295; पावलोव. कैनन कानून में एक पाठ्यक्रम (1902). पृ. 158–160.

[416] पेत्रोव, वी. 'टार्खानों के उन्मूलन पर 1584 का परिषद संहिता', में: एस. एफ. प्लाटोनोव के सम्मान में संग्रह (1922)।

[417] उदाहरण के लिए, एएई. खंड 1, संख्या 9 – ग्रैंड प्रिंसि द्वारा मेट्रोपॉलिटन साइप्रियन (1392) को प्रदान किया गया, और संख्या 11।

[418] उदाहरण के लिए, में: AJU. 1. संख्या 8, 12, 16, 17, आदि।

स्वामी मठ को ऐसा चार्टर जारी करता था[419] , जिसके द्वारा दान की गई संपत्ति से जुड़े सभी अधिकार और विशेषाधिकार हस्तांतरित हो जाते थे; मठ, बदले में, इन चार्टरों के विवरणों की पुष्टि पेटेंट पत्रों द्वारा करने का प्रयास करते थे। मठ अक्सर आपस में या निजी भूमि मालिकों के साथ अपनी संपत्तियों के हिस्सों का आदान-प्रदान करते थे। इन आदान-प्रदानों को आदान-प्रदान चार्टरों[420] द्वारा प्रमाणित किया जाता था। ऐसे आदान-प्रदान विशेष रूप से 16वीं शताब्दी के अंत और 17वीं शताब्दी के पहले आधे भाग में आम थे, जब परिषदों के आदेशों के तहत, भूमि की खरीद पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया था या उसे पूरी तरह से निषिद्ध कर दिया गया था। पड़ोसी जमीनों के बीच विवादित सीमाओं को स्थापित करते समय, स्थानीय अधिकारियों ने 'विज़िटिंग चार्टर' जारी किए। ये चार्टर मठों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे, क्योंकि उनमें से कई अपनी जमीनों की सीमाओं को लेकर अपने पड़ोसियों (विशेषकर उत्तर में - किसानों के साथ) के साथ लंबे कानूनी विवादों में शामिल थे[421] । अंत में, 'बंधक दस्तावेज़' या 'कबाला' के रूप में जाने जाने वाले दस्तावेज़ों का भी उल्लेख किया जाना चाहिए, जिनमें सुरक्षा के रूप में दी गई धन या संपत्तियों पर अधिकारों को दर्ज किया जाता था[422] ।

ऐसे राज्य और निजी-कानूनी दस्तावेज़ थे जो मठों के भूमि अधिकारों की पुष्टि करते थे।

नई संपत्तियाँ विभिन्न तरीकों से प्राप्त की गईं। मुख्य विधि ग्रैंड प्रिंस या ज़ार से अनुदान थी, जो व्यवहार में मठ की स्थापना के समय ही मठ के संस्थापक की याचिका के जवाब में दी जाती थी, और जिसे अनुदान चार्टर द्वारा पुष्टि की जाती थी। एक नए ज़ार के सत्ता संभालने पर, मठों के मठाधीश उससे पहले से जारी किए गए पेटेंट पत्रों की पुष्टि करवाने के लिए जल्दी करते थे; यह उन मामलों में भी किया जाता था जहाँ आग लगने या मठ के नष्ट हो जाने के कारण पेटेंट पत्र खो गया था, जो कई मठों के साथ हुआ, उदाहरण के लिए, 'समय की परेशानियों' (Time of Troubles) के दौरान। अधिग्रहण का दूसरा रूप निजी व्यक्तियों से भूमि या मौद्रिक उपहारों के रूप में था; इन उपहारों की पुष्टि ऐसे चार्टर या एक वसीयत द्वारा की जाती थी - एक वसीयतनामा, जहाँ दाता चाहता था कि उसकी संपत्ति उसकी मृत्यु के बाद मठ को चली जाए। बड़े मठों ने मुख्य रूप से उपजाऊ भूमि, जंगलों, मछली पकड़ने के क्षेत्रों और नमक के कारखानों की कई खरीद के माध्यम से अपनी संपत्ति बढ़ाई, जिन्हें बिक्री विलेखों में दर्ज किया गया था। 1551 से , भूमि की हर खरीद को ग्रैंड पैलेस कार्यालय में दर्ज कराना अनिवार्य था, 'जिसकी रिपोर्ट ज़ार को दी जाती थी', और 1580 के बाद, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, एक बिक्री विलेख केवल ज़ार द्वारा प्रदान किए गए एक विशेष चार्टर के आधार पर ही कानूनी रूप से मान्य होता था। जब सायनोडल फरमानों द्वारा खरीद के माध्यम से भूमि अधिग्रहण पर आधिकारिक तौर पर प्रतिबंध लगा दिया गया, तो मठों ने भूमि-धारों के विभिन्न प्रकार के आदान-प्रदान के माध्यम से इन प्रतिबंधों को दरकिनार करने के तरीके खोज लिए। अधिग्रहण का एक और तरीका संपत्तियों को जमानत के रूप में प्राप्त करना था, जो मठों द्वारा पादरियों और मठाधीशों द्वारा सूदखोरी पर रोक लगाने वाले पवित्र नियमों की अवहेलना करते हुए, काफी बार किया जाता था। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, इन लेन-देन को बंधक दस्तावेजों द्वारा विनियमित किया जाता था।

16वीं-17वीं शताब्दी के भूमि रिजिस्टर और 17वीं शताब्दी की जनगणना रिकॉर्ड भी मठों की जमींदारियों और मठों की अर्थव्यवस्था के इतिहास के लिए विशेष महत्व के हैं। ये बहुत महत्वपूर्ण स्रोत हैं जो हमें मठों की उपनिवेशीकरण गतिविधियों, उनकी जमींदारियों के स्थिर विकास और मठों की अर्थव्यवस्था के विकास का आकलन करने में सक्षम बनाते हैं[423] ।

---

[419] उदाहरण के लिए, में: AJu. 1. संख्या 32, 63; एक वसीयत अक्सर इस तरह के चार्टर के रूप में काम करती थी; सबसे पहला उदाहरण सुज़दाल में वासिलीव्स्की मठ को एक संपत्ति का दान (1253) है, में: AJu. 1, संख्या 439; या चुखचेनेम्स्की मठ (15वीं सदी) को, में: SGKE. 1, संख्याएँ 24, 19, 26, 11, 27, आदि। तुलना करें मेरा कार्य: Studien zum Klosterwesen Rußlands. 2. '15वीं और 16वीं शताब्दी में मठ संपत्ति की समस्या', *Kyrios* में। 4 (1939)। *वोतचिना* एक आनुवंशिक संपत्ति है, जबकि *पोमेस्टिये* सेवा के बदले में सशर्त संपत्ति के रूप में प्रदान की जाती थी; इसके पश्चिमी यूरोपीय समकक्ष *अलोड* और *बेनेफिसि* हैं।

[420] उदाहरण के लिए, देखें: AYu. 2. संख्या 156; SGKE. 1. संख्याएँ 45, 49, 156।

[421] उदाहरण के लिए, में: AJU. 2. संख्या 178, 179, 180, आदि। ये 'विज़िटिंग चार्टर' अनुदान पत्रों के स्रोत के रूप में काम करते थे और अक्सर उनमें शामिल कर लिए जाते थे।

[422] उदाहरण के लिए, में: AJU. 2. संख्या 126; SGKE. 1. संख्या 3, 6, 10 (15वीं सदी)। ये विशेष रूप से 16वीं सदी के दूसरे भाग और 17वीं सदी के पहले भाग की विशेषता हैं।

[423] भूमि रिजिस्टर भूमि-धारिता का एक प्रकार का कैडस्ट्रल सर्वेक्षण है, जिसमें जनसंख्या (गृहस्वामियों) की जनगणना और उनकी संपत्तियों का विवरण शामिल होता है। भूमि रिजिस्टरों का उद्भव और स्वभाव कराधान से जुड़ा हुआ है। प्राचीन रूस में जनसंख्या (या, अधिक सटीक रूप से, परिवारों) की पहली सामान्य जनगणना 1257 और 1275 में तातारों द्वारा की गई थी। PSRL. 1. 2 (दूसरा संस्करण)। पृ. 474; 10. पृ. 152। मस्कोवाइट राज्य में परिवारों की पहली जनगणना 1538–1547 में की गई थी और इसे 'महान जनगणना' के नाम से जाना जाता था। इस जनगणना को अनुपयुक्त माना गया, और 1551 और 1580 के बीच एक नई जनगणना हुई - 'नई जनगणना' - जिसमें भूमि-स्वामित्व का

२. ओप्रचिनाइना और १६वीं सदी का कृषि संकट

मठों की कृषि का वर्णन करने से पहले, हम दो और परस्थितियों का उल्लेख करेंगे जो चर्चा के विषय के लिए अत्यधिक महत्व की हैं। पहला है ज़ार इवान चतुर्थ की तथाकथित ओप्रचिनिना, जिसके कारण कई बोयार संपत्तियाँ मठों के हाथों में चली गईं; दूसरा है 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान मॉस्को क्षेत्र में कृषि संकट।

ओप्रचिनिना, ज़ार इवान की भयानक और खूनी सुधार, का ठीक से अध्ययन केवल 20वीं सदी की शुरुआत में किया गया था, मुख्य रूप से इतिहासकार एस. एफ. प्लाटोनोव और उनके छात्रों के कार्यों में[424] । एक ओर, यह सुधार स्वभाव से राजनीतिक था और यह मॉस्को के ग्रैंड प्रिंसों की लंबे समय से चली आ रही नीति का केवल एक निरंतरता थी, जो अपानज राजकुमारों और उनके वंशजों ('न्याज़्हाट') के खिलाफ निर्देशित थी और ज़ार के निरंकुश शासन को मजबूत करने के लिए बनाई गई थी; दूसरी ओर, यह एक कृषि संबंधी प्रकृति का सुधार था। रियासत कुमारों और बोयारों से जब्त की गई कई जागीरों को छोटे-छोटे भूखंडों में विभाजित करके सेवादारों को मनोर के रूप में हस्तांतरित कर दिया गया। ओप्रचिनिना ने बोयारों से उनका सामाजिक-राजनीतिक महत्व छीन लिया और उन्हें बर्बाद कर दिया। सैन्य सेवा के नए नियम (1570) बोयारों और कई सेवादारों के लिए कठिन और लगभग असहनीय थे। इन सबके कारण बोयार परिवारों को अपनी आनुवंशिक जमींदारियों को बेचने या गिरवी रखने के लिए मजबूर होना पड़ा। एकमात्र संभावित खरीदार मठ थे: केवल उनके ही हाथों में 16वीं शताब्दी के मध्य में मौद्रिक पूंजी थी; केवल मठ ही ओप्रचिनिना से किसी भी तरह से प्रभावित नहीं थे[425] ।

कैडस्ट्रल विवरण शामिल था; इस अवसर पर, लिपिकों ने भूमि रजिस्टर संकलित किए। इनमें से कुछ आज भी मौजूद हैं और मस्कोवाइट राज्य में भूमि संबंधों के इतिहास पर एक मूल्यवान स्रोत का गठन करते हैं, विशेष रूप से मठों और धार्मिक संस्थानों की भूमि-स्वामित्व के इतिहास के संबंध में। 17वीं शताब्दी में, दो जनगणनाएं की गईं: एक 1620 के दशक में, और दूसरी 1646 से 1678 तक। (एएई. 4. संख्या 14)। पहला जनगणना पुराने सिस्टम के अनुसार किया गया था: विवरण की मुख्य इकाई क्षेत्रीय इकाई – 'सोहा' – थी, जिसमें भूमि और उसकी विशेषताओं का विवरण शामिल था। 1646 और 1678 के बीच, भूमि के विवरण के बिना कर-भुगतान करने वाले परिवारों के जनगणना रजिस्टर संकलित किए गए थे। अदालती अधिकारियों की जागीरों पर एक 'सोहा' में 800 'चवार्ट' होते थे, जबकि चर्च और मठों की जागीरों पर इसमें 600 'चवार्ट' होते थे, जिसका अर्थ था कि उस पर उच्च कर लगता था। 'चवार्ट' या 'चेट' उस समय की वह اصطلاح थी जो एक 'चवार्ट' (150 लीटर) राई बोने वाले क्षेत्र के लिए इस्तेमाल की जाती थी; एक 'चेट्वर्ट' आधी 'देसातिना' के बराबर था (1 देसातिना = 1.9 हेक्टेयर); मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर, 400–1,000 'चेट्वर्ट' मिलकर एक 'सोहा' बनाते थे; मिट्टी के तीन प्रकार थे: 'अच्छी', 'औसत' और 'खराब'। 'सोहा' मुस्कोवाइट राज्य में 1620 के दशक के अंत तक कराधान की बुनियादी इकाई - 'पोसोश्नाया पोदाती' - थी। यह प्रणाली 16वीं शताब्दी के मध्य में उभरी, जब सेवा पुरुषों को जागीरों के वितरण की प्रक्रिया को बदला गया (1556 का संहिता)। स्रोत 'क्रॉनिकल: पीएसआरएल. 13' में निहित हैं। पृ. 268–269। तुलना करें: बोरोडिन, ए. 'द 1556 कोड ऑन मिलिट्री सर्विस', में: संग्रह इन ऑनर ऑफ एस. एफ. प्लाटोनोव (1922)। पृ. 143–153। कैडस्ट्रल रजिस्टर ('सोशनोए पिसमो') का एक व्यापक अध्ययन इस कृति में निहित है: वेसेलोव्स्की, एस. द सोशनोए पिस्मो। 2 खंड (1915–1916), देखें: 1. पृ. 97; 2. पृ. 348, 363 ff. और यह भी: निकितिस्की, ए. 'प्राचीन रूस में माप के प्रश्न पर', में: झएमएनपी. 1894. 4. पृ. 414–415; रोज़कोव। 'हल', ग्रैनेट की विश्वकोशीय शब्दकोश में: खंड 40, संख्या 3 (1925)। पृ. 275; लाप्पो-दानिलेव्स्की, ए. 'मस्कोवाइट राज्य में प्रत्यक्ष कराधान का संगठन' (1890)। पृ. 220, 229–233; मिल्यूकोव, पी. *मस्कोवाइट राज्य के वित्तीय इतिहास में विवादास्पद मुद्दे* (1892). पृ. 35–76 (इस कृति में, लैप्पो-डैनीलेव्स्की के दावों की आलोचना की गई है)। एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में कर रजिस्टरों पर, रोज़कोव देखें। मस्कोवी रूस में कृषि (1899)। पृ. 221–231; कौफमैन, ए. 'ऐतिहासिक-आर्थिक अनुसंधान में सांख्यिकीय पद्धति के प्रश्न पर। ऐतिहासिक सामग्री के रूप में कर रजिस्टरों के उपयोग पर'। खंड 1, संख्या 1 (1913)। पृ. 10–39; ग्नेवुशेव, ए. 'मस्कोवाइट राज्य के कर रजिस्टरों के विश्लेषण में सांख्यिकीय विधि', *न्यू हिस्टोरिकल जर्नल*. 2 (1914). संख्या 3. पृष्ठ 16 और बाद के पृष्ठों में। शोध निष्कर्षों का एक अच्छा संक्षिप्त अवलोकन पुस्तक में दिया गया है: याकोवलेव, ए. *द ऑर्डर फॉर द रिक्रूटमेंट ऑफ सोल्जर्स* (1917)। अध्याय 1।

[424] मोनोग्राफ़ देखें: प्लाटोनोव, एस. एफ. इवान द टेरिबिल (1923; बर्लिन संस्करण 1924), जिसमें प्लाटोनोव, प्रस्तावना में, इवान चौथे पर इतिहास-लेखन की एक आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करते हैं और व्यापक शोध के आधार पर इवान के व्यक्तित्व का अपना चरित्र-चित्रण प्रस्तुत करते हैं—जिन्होंने इतिहासकारों के बीच बहुत बहस को जन्म दिया है। अध्याय 4 ओप्रचिनिना की उत्पत्ति की बहुआयामी जांच प्रदान करता है। तुलना करें: प्लातोनोव, एसेज़ (1899) और इसी लेखक, हिस्ट्री ऑफ़ रूस (1927), पृ. 157; साथ ही स्टोहल, के., खंड 1, पृ. 270-278, जो मुख्य रूप से प्लातोनोव पर आधारित है। यह ध्यान देने योग्य है कि प्लाटोनोव और उनके छात्रों द्वारा प्रदर्शित किए अनुसार, क्लीचेव्स्की का *रूस का इतिहास* (*Geschichte Russlands*, खंड 2) में ओप्रचिनिना का चित्रण और चरित्र-निर्माण, संतोषजनक नहीं माना जा सकता। साथ ही विपर, वी. की पुस्तक, *इवान द टेरिबिल* (1922), जो हाल ही में अंग्रेजी में प्रकाशित हुई है, को भी देखें। आई. बुडोव्निक के कार्य का भी उल्लेख किया जा सकता है, जो इवान चौथे और ओप्रचिनिना पर लगभग सभी साहित्य को ध्यान में रखता है।

[425] इस विषय पर, देखें: ल्यूबाव्स्की, एम. *Lectures on Ancient Russian History up to the End of the 16th Century*. 3rd संस्करण (1918)। पृ. 255–270; रोज़डेस्ट्वेंस्की, एस. *Servant Landownership in the Muscovite State* (1897)।

16वीं सदी का कृषि संकट, जिसने अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया और, जैसा कि एस. एफ. प्लाटोनोव ने स्थापित किया[426] , उन्हें (लगभग 1570 में) कुछ उपाय करने के लिए मजबूर किया, वास्तव में, जार इवान चतुर्थ के शासन के पहले आधे भाग के दौरान मस्कोवाइट राज्य के तीव्र राजनीतिक और आर्थिक प्रयासों का तार्किक परिणाम था। काज़ान टाटर्स के खिलाफ संघर्ष, लिवोनियाई युद्ध—जो शुरू में सफल लेकिन बाद में असफल रहा—और क्रीमियाई टाटर्स और नोगाइयों के हमलों से दक्षिणी सीमाओं की रक्षा—ये सभी संकट का राजनीतिक पहलू थे; ओप्रिचिनिना, सैन्य सेवा की नई प्रणाली और जमीनों के वितरण में संबंधित परिवर्तन—जो सरकार के पूंजी का मुख्य स्रोत थे—और जीते गए क्षेत्रों का व्यापक उपनिवेशीकरण संकट का आर्थिक पहलू थे और इसने इसे और गहरा कर दिया। केंद्रीय क्षेत्रों—मुख्य रूप से ओका और वोल्गा नदियों के बीच के क्षेत्र—के निवासियों की स्थिति प्रत्येक बीतते वर्ष के साथ तेजी से कठिन होती गई। छोटे सैन्य सेवकों के लिए, जिनकी जमीनों से बहुत कम आय होती थी (आंशिक रूप से खेती के आदिम तरीकों के कारण), और साथ ही इस भूमि पर रहने वाले किसानों के लिए जो आर्थिक कठिनाइयों से बहुत अधिक पीड़ित थे, बेहतर जीवन स्थितियों की खोज एक तात्कालिक आवश्यकता बन गई। वारिस में मिली जमीनों या वहाँ रहने वाले किसानों की स्थिति भी बेहतर नहीं थी। साथ ही, मध्य वोल्गा के दोनों किनारों, निचले वोल्गा क्षेत्र और दक्षिणी मैदानों की भूमि ने बस्तियों के लिए असीमित अवसर प्रदान किए। इसके अलावा, सरकार को इन क्षेत्रों के सशस्त्र रक्षा और कृषि विकास के लिए हजारों लोगों की आवश्यकता थी। नए उपनिवेशवादियों को भूमि के विशाल भूखंड प्रदान किए गए, जबकि नए मठों ने किसानों को अपनी संपत्तियों पर आमंत्रित किया और उन्हें मास्को के केंद्र में उपलब्ध रहने की तुलना में बेहतर रहने की स्थिति की पेशकश की। केंद्र से नए क्षेत्रों में लोगों का एक बड़े पैमाने पर पलायन शुरू हो गया - उस युग के स्रोतों के अनुसार, यह एक वास्तविक पुनर्वास, या 'वितरण' था - जिसके परिणामस्वरूप एक आर्थिक संकट पैदा हो गया और केंद्रीय क्षेत्र उजाड़ हो गए। देश के केंद्र में स्थित कई मठों को भी इस संकट से भारी क्षति पहुँची, जबकि इस संकट का पोनिज़ोवये क्षेत्र के मठों के आर्थिक विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ा।

इन दो परिस्थितियों का एक सामान्य मूल्यांकन (जिसे, दुर्भाग्य से, हम) यह प्रदर्शित करने के लिए आवश्यक था कि मठ संपत्तियों और मठ अर्थव्यवस्था का प्रश्न मस्कोवाइट राज्य के राजनीतिक और आर्थिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है, और यह कि मठ और उनके निवासी, जो दुनिया और दुनिया की चिंताओं से भाग गए थे, एक बार फिर इस दुनिया की चिंताओं में खिंच आए थे।

3. मठों के आर्थिक प्रबंधन के विशिष्ट उदाहरण

मठ की अर्थव्यवस्था के विकास पर कई कारकों का प्रभाव पड़ा: मठ का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व—जिसमें संस्थापक का नाम, चाहे वह चर्च द्वारा पवित्र घोषित किया गया हो या लोगों द्वारा सम्मानित हो, एक प्रमुख भूमिका निभाता था—स्थानीय परिस्थितियाँ, और शाही परिवार के साथ संबंध; मठ के आर्थिक कुशलता और उद्यमशीलता वाले मठाध्यक्षों और अन्य प्राधिकरण पदों पर बैठे व्यक्तियों का महत्व भी कम नहीं था, जिन्होंने अथक प्रयास से मठ की आर्थिक भलाई सुनिश्चित की और अक्सर, एक ऐसी दृढ़ता और धैर्य के साथ जिसके बारे में सोचना भी हमारे लिए मुश्किल है, अपने मठ को और अधिक समृद्ध करने का प्रयास किया। व्यक्तिगत मठों के भिक्षुओं या संतों के चरित्र में केवल नकारात्मक गुण देखने में यह गलत होगा। यहाँ हम उस युग की धार्मिकता की एक विशेषता पाते हैं: यह दृढ़ विश्वास कि मठों और चर्चों की सजावट में विलासिता ईश्वर को प्रसन्न करती है (इसकी, संयोग से, विरोधी-भौतिकवादियों द्वारा तीखी आलोचना की गई थी); इस वैभव को मठ के संस्थापक और संपूर्ण रूसी चर्च की महिमा की सेवा के रूप में देखा जाता था। इसके अलावा, यह नहीं भूलना चाहिए कि कई मठ धर्मार्थ कार्यों में लगे हुए थे और कठिन समय में, राज्य और लोगों को सहायता प्रदान करते थे।

16वीं-17वीं शताब्दियों में मठों की अर्थव्यवस्था के विकास की मुख्य विशेषताओं को व्यक्तिगत मठों के उदाहरण से समझाया जा सकता है। ये विशेषताएँ, मामूली भिन्नताओं के साथ, देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित मठों में स्पष्ट थीं।

---

[426] प्लातोनोव, इवान द टेरिबल (1924)। पृ. 116। संकट के सामान्य कारणों और प्रवाह पर, देखें: वही, पृ. 117–127; ग्रेकोव, यूरीव डे। पृ. 75, जहाँ लेखक लिवोनियाई युद्ध के महत्व पर जोर देते हैं; क्लूचेव्स्की, द बोयार ड्यूमा (5वां संस्करण)। पृ. 305 से आगे; 16वीं सदी के दूसरे भाग में मस्कोवाइट राज्य में सामाजिक और आर्थिक संबंधों की उचित समझ के लिए, हम प्लातोनोव के *एसेज़* (Essays) को देखने की सलाह देते हैं; इसके अलावा: रोज़कोव। *कृषि* (*Agriculture*) (1899), जो कृषि संरचना के लगभग सभी पहलुओं और संकट के कारणों की जांच करता है।

हम पहले से ही प्रसद्धि ट्रनिटिी-सर्गीय लाव्रा की स्थापना के इतहिास से परचिति हैं। इसके संस्थापक, संत सर्गीयस († 1392), अपनी मठ की सांसारकि समृद्धि में रुचि नहीं रखते थे; अपने तपस्वी वचिारों के अनुसार, भक्षिुओं को संयम और गरीबी में रहना था और अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन करना था। फरि भी, यह माना जा सकता है कि, उनके जीवन के अंतमि वर्षों में ही, मठ को उपहार के रूप में अपनी पहली भूमि प्राप्त हुई थी[427] । दूसरे मठाधीश, परम पूजनीय नकिोन (1392–1428) के काल से, हमारे पास मठ की व्यापक अधग्रिहणों के रकिॉर्ड हैं, जनिमें से कुछ उपहार के रूप में प्राप्त हुए और कुछ खरीदे गए थे। 15वीं शताब्दी के अंत तक, मठ के पास कसिानों द्वारा पट्टे पर ली गई भूमि वाले गाँवों की संपत्ति थी[428] । 16वीं शताब्दी के दौरान, मठ की संपत्ति बढ़ती रही। सदी के अंत तक, *1593–94 की* सूची के अनुसार, *मठ के पास 2,500 से अधकि गाँव और बस्तयिाँ थीं, जनिमें से अधकिांश (लगभग* 34) उपहार के रूप में प्राप्त हुई थीं, जबकि केवल *14 खरीदी गई थीं[429] । मठ की अर्थव्यवस्था की एक बहुत ही वशिषि्ट वशिेषता यह थी कि 16वीं शताब्दी के पहले छमाही में, मठ के अधकिारयिों ने मुख्य रूप से कसिानों को जमीन पट्टे पर दी, जबकि उस शताब्दी के अंतमि चौथाई भाग में उन्होंने उस जमीन के क्षेत्र का वसि्तार करने का प्रयास कयिा जसि पर मठ स्वयं खेती करता था; इन भूमि□□ की खेती कई मठ के नौकरों और नवोदतिों के साथ-साथ उन कसिानों द्वारा भी की जाती थी जो वहाँ अनविार्य श्रम (कोर्वी लेबर) करते थे[430] । 16वीं सदी के संकट के वर्षों और 17वीं सदी के 'समय-संकट' (Time of Troubles) के दौरान, भगोड़े कसिानों के कारण हुए कुछ नुकसान और परणिामस्वरूप खेती योग्य भूमि में आई कमी के बावजूद, मठ आर्थकि रूप से जीवति रहने में सफल रहा। 1620 में, मठ की भूमि पर* 1593–94 *के समान पैमाने पर खेती की जा रही थी*[431] 1646 के भूमि रजिस्टिरों के अनुसार, मठ की सभी संपत्तयिों में कुल 16,838 घर थे, जनिमें कसिान, मठ के नवसखिुए, खेत के मजदूर[432] और मठ के कारीगर[433] रहते थे। इस प्रकार, तीन शताब्दयिों के दौरान, सेंट सर्जयिस का छोटा मठ प्राचीन रूस के एक वशिाल आर्थकि संस्थान में बदल गया था। मॉस्को आए वदिेशी, ने लखिा कि 16वीं शताब्दी के अंत में मठ की अधग्रिहण की गई संपत्तयिों की लागत - डी. फ्लेचर के अनुमान के अनुसार - उस समय के 100,000 रूबल से अधकि थी (1914 के लगभग 5 मलियिन सोने के रूबल)[434] । मठ के पवत्रि संस्थापक के प्रति गहरी श्रद्धा अनेक उपहारों और अनुदानों का कारण थी, साथ ही महा राजकुमार और ज़ार से मलिे वशिेषाधकिार और प्रतरिक्षा के पत्र भी मलिे – इन सभी अनुग्रहों ने मठ की

---

[427] 1391 में, सेंट सेरगयिस की मृत्यु से ठीक पहले, मठ को सोलगिालचिस्की जलि में नमक की खदानों का उपहार मलिा। AJU 1, संख्या 63। 15वीं शताब्दी के मध्य तक, मठ के पास वहाँ पहले से ही तीन नमक कारखाने थे। AAE 1, संख्या 52। इसके अलावा, महा राजकुमार दमित्रिी (1363-1389) द्वारा मठ को प्रदान कयिा गया एक अपरविर्तनीय चार्टर भी है, जो यह साबति करता है कि मठ के पास पहले से ही भूमि-स्वामित्व था। गोर्स्की। ववरिण। 1 (1890)। पृ. 210।

[428] नकिॉन के मठाधीश के रूप में अपेक्षाकृत लंबे कार्यकाल के दौरान, मठ को अनुदान और खरीद के माध्यम से 24 संपत्तयिाँ प्राप्त हुईं। वही, पृ. 211–212। रोज़कोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 405। भूमि-स्वामित्व से संबंधति सबसे पहला चार्टर *1414–15 का है / एएई / 1. संख्या 19 /*

[429] रोज़कोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 377, 402, 405, 410–415। 1592–1594 की सूची के अनुसार, मठ के पास 142,999 चेतवर्ती उपजाऊ भूमि थी: गौटयिर। द रीजन बयिॉन्ड मॉस्को (1937)। पृ. 116; साथ ही बंजर भूमि, जंगल, मछली पकड़ने के क्षेत्र और नमक के कारखाने भी थे। इसके अलावा, पाँच उयेज़्ड (uyezds) की भूमि को भी ध्यान में रखना चाहिए, जनिकी सूची खो गई है। मठ की भूमि पर 3,988 कसिान परविार और 502 पट्टेदार परविार थे। वही। इन संपत्तयिों में से, 17.3 प्रतशित 15वीं शताब्दी में, 66.8 प्रतशित 16वीं शताब्दी में प्राप्त की गई थीं; 15.9 प्रतशित के अधग्रिहण की तारीख अज्ञात है। रोज़कोव। Op. cit., पृ. 406, 410–413। 1432 और 1633 के बीच, मठ ने नई भूमि संपत्तयिाँ प्राप्त करने के लिए 16,934 रूबल का भुगतान कयिा। Gorsky. Op. cit., पृ. 217.

[430] रोज़कोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 132। ड्याकोनोव। नबिंध (1898), पृ. 296; गौटयिर। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 332।

[431] उपरोक्त, पृ. 329। 1614–1616 की सूची के अनुसार, अनुपजाऊ भूमि 54,604 चेतवर्ती थी, जबकि 1624–1640 में यह कुल 34,980 चेतवर्ती ही थी, यानी 1592–1594 (जब यह 40,062 थी) से कम (उसी, पृ. 116)। कसिान परविारों की संख्या भी बढ़ी: 1614–1616 में (यानी, 'समय की परेशानयिों' के ठीक बाद) केवल 623 कसिान परविार और 426 'बोबलिी' परविार थे, जबकि 1624–1640 में ये आंकड़े क्रमशः बढ़कर 1,536 और 1,199 हो गए। वही।

[432] मूल रूप से, 'बोबलि' शब्द का अर्थ एक ऐसा कसिान था जसिके पास अपनी ज़मीन नहीं थी, यानी एक भूमहिीन कसिान; लेकनि 17वीं सदी में, यह शब्द अक्सर उन कसिानों पर भी लागू कयिा जाता था जनिके पास अपनी ज़मीन थी। ड्याकोनोव। एसेज़् (1889)। पृ. 218 आदि। कसिान आबादी की एक अलग श्रेणी के रूप में 'बोबलि' का प्रश्न रूसी कसिान वर्ग के इतहिास के ववािदास्पद मुद्दों में से एक है। तुलना करें: शुमाकोव, एस. 'रूसी कानून के इतहिास में अस्पष्ट बदिु', में: झएमएनपी. 1904. 4. वशिेष रूप से पृ. 206; वेसेलोव्स्की, एस. 'सोशनोये पस्मिो'। खंड 2. पृ. 517; सर्गेयेवचि. 'एंटीक्वटिीज़्'। खंड 3 (1903). पृ. 135–136, 467. स्टाशेव्स्की, ई. 'एसेज़् ऑन द हस्टि्री ऑफ़् द रेन ऑफ़् ज़ार मखिाइल फेदोरोवचि'। खंड 1 (1913). पृ. 47–49; ग्रेकोव, बी. रूस में कसिान (1946)। पृ. 734। तुलना करें: क्लीचेव्स्की। रूस में दासता की उत्पत्ति, में: नबिंध। खंड 1। पृ. 252।

[433] नकिोल्स्की। द करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ। खंड 1, संख्या 1 (1897)। परशिषि्ट VIII–XXV।

[434] रुश्चस्कि। पूर्वोक्त, पृ. 139। उस समय रूबल के मूल्य पर, देखें: क्ल्युचेव्स्की। 'वर्तमान के संबंध में 16वीं–18वीं शताब्दयिों का रूसी रूबल', में: रीडग्सि। 1884। तुलना करें: वही। Geschichte RuЯlands। खंड 2। पृ. 337।

समृद्धि का आधार बनाया, और यही कारण था कि 14वीं सदी में मठ का जीवन 17वीं सदी के जीवन से इतना अलग था।[435]

करिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ की अर्थव्यवस्था, जो मस्कोवी के सबसे प्रसिद्ध मठों में से एक था, अलग-अलग दिशाओं में विकसित हुई। इसके संस्थापक, बेलोजेरो के पूजनीय सिरिल († 1427) के समय में, मठ अपने सामुदायिक जीवन की कठोरता के लिए प्रसिद्ध था, जिसके लिए उसे बहुत सम्मान प्राप्त था; वास्तव में, इसने वोल्त्सक के पूजनीय जोसेफ की मान्यता और प्रशंसा अर्जित की[436] । सिरिल की मृत्यु के बाद और 1480 के दशक तक, उनके मठ ने वास्तव में तपस्वी मठ जीवन का एक उदाहरण स्थापित किया और यह निःस्वामित्व के आदर्श से निकटता से जुड़ा हुआ था। हालाँकि, 16वीं शताब्दी में, जीवन के पूर्व उच्च मानक में गिरावट आने लगी, और मठ के महान संस्थापक के समय एक ऐतिहासिक किंवदंती लगने लगे[437] । 15वीं शताब्दी की शुरुआत में, 1521 से पहले ही, मठ को ग्रैंड प्रिंस से कई अनुदानों और बोयार परिवारों के दानों से समृद्ध किया गया था; इसके अलावा, इसने - अपनी पूंजी मौद्रिक उपहारों से इकट्ठी की थी - मुख्य रूप से छोटे जमींदारों और यहां तक कि किसानों से भी बहुत सारी जमीन खरीदी[438] । 1551 के स्टोग्लाव के निर्णयों के बाद भी भूमि प्राप्त करने का यह अभियान कम नहीं हुआ। यह ठीक इसी परिषद के बाद था कि मठ ने कई भूमि खरीद समझौते किए जो परिषद के निर्णयों का उल्लंघन करते थे। केवल 1551 और 1555 के बीच, मठ ने 19 नए भू-स्वामित्व हासिल किए; 1564 और 1572 के बीच, मठ के अधिकारियों ने और भी अधिक भूमि हासिल करना जारी रखा। मठ ने बोयारों की आनुवंशिक जागीरों, सेवादारों के हवेलियों और छोटे किसानों के भूखंड खरीदे। जब 1572 के एक फरमान ने मठों को भूमि दान करने पर रोक लगा दी, तो मठ ने नमक के कारखाने और शहरों में भूखंड हासिल करना शुरू कर दिया। 1580 की परिषद के बाद भी, जिसने आम तौर पर मठों को भूमि प्राप्त करने से रोक दिया था, मठाध्यक्ष ने बड़ी चतुराई दिखाते हुए, ज़ार से एक अनुदान और प्रतिरक्षा चार्टर हासिल कर लिया, जिसके तहत मठ को नई संपत्तियाँ प्राप्त करने की अनुमति दी गई थी[439] . 1473 की शुरुआत में ही, मठ ने अपनी संपत्तियों का एक विस्तृत सूची तैयार की थी[440] । सबसे पुराने जीवित मठ भूमि रिजस्टर (*1543–44 के लिए*) में *केवल बेलोज़ेर्स्क क्षेत्र में 399 गांवों और बस्तियों का उल्लेख है जो मठ के स्वामित्व में थे*[441] *। 1543 और 1595 के बीच अधिग्रहीत भूमि में कम से कम 284 गाँव और बस्तियाँ शामिल थीं। 1580 के दशक में, मठ की भूमि मॉस्कोवित राज्य के 13 उयेज़्ड (प्रशासनिक इकाइयों) में फैली हुई थी; इनमें से अकेले आठ में, 5,000 से अधिक देसियाना (माप की एक इकाई) की खेती योग्य भूमि थी*[442] *। समस्याओं के समय के ठीक बाद, मठ ने अधिग्रहण करना जारी रखा। 1615 की शुरुआत में ही, मठ को युवा ज़ार मिखाइल से एक चार्टर मिला, जिसमें उसे नेनोक्सा शहर के पास नमक के कारखाने, साथ ही, स्वयं शहर में ज़मीनों के भूखंड, जिनमें जंगल, चारागाह, मछली पकड़ने के क्षेत्र और अन्य संपत्तियाँ शामिल*

---

[435] ट्रिनिटी-सर्गीय मठ के आर्थिक इतिहास पर सबसे महत्वपूर्ण सामग्री इसके अपने आर्थिक अभिलेखों ('निरीक्षण', 'सारांश' और अन्य) में निहित है, जो इस पुस्तक में है: 16वीं-17वीं शताब्दियों में मस्कोवाइट राज्य के सामाजिक-आर्थिक इतिहास के स्मारक। संपादक: एस. वेसेलोव्स्की और ए. याकोवलेव। 1 (1929).

[436] योसिफोवो की 'पवित्र पिताओं की कथा', में: LZAK. 2. पृ. 82.

[437] संन्यासवाद के पतन के इस युग का विवरण एन. निकोल्स्की के कार्य में निहित है (अध्याय III और IV के लिए ग्रंथसूची देखें)।

[438] 1397–1521 की अवधि के लिए, एन. निकोल्स्की ने 60 अनुदानों और 41 भूमि-स्वामित्व की खरीद की पहचान की। निकोल्स्की. 1. 2 (1910). पृ. 6, 11. सेंट सिरिल का विलेख (1427). ए.वाई. 1. संख्या 72; 1430। वही, संख्या 6; मठाधीश कैसियन (1448–1468) ने मछली पकड़ने के अधिकार प्राप्त किए। वही, संख्या 73; मठाधीश फिलोथियस (1469) ने एक और सेट प्राप्त किया। वही, संख्या 74। 1519 – कई गांवों और बस्तियों के साथ भूमि का अधिग्रहण। वही, संख्या 77। 1539 – कई गांवों की बिक्री सवो-स्टोरोज़हेव्स्की मठ को। वही, संख्या 80। मठ के प्रावधान खातों से पता चलता है कि 'प्रति आत्मा दान' बहुत बड़े थे। वासिली तृतीय (1505–1533) के शासनकाल के दौरान, 1,000 रूबल अनुदान के रूप में दिए गए; इवान चतुर्थ (1547–1584) के अधीन, 28,201 रूबल; और 17वीं शताब्दी के पहले तिमाही में, 5,444 रूबल। निकोल्स्की। वही। 1. 2. पृ. 170; इसके अतिरिक्त, बहुत सारी सोने, चांदी और अन्य मूल्यवान वस्तुएँ दान की गईं। प्रावधान पुस्तक, में: ORSA के नोट्स। 1 (1851)। पृ. 46–139।

[439] निकोल्स्की। वही। 1. 1. परिशिष्ट XLII, LVI, LXXV, LXVII; 1. 2. XI–XIII। ग्रेकोव। रूस में किसान (1946)। पृ. 605; 1568 में, मठ ने ड्विना जिले में एक लवणशाला और मछली पकड़ने के अधिकार खरीदे। AYU. 1. संख्या 85; 1577 में, दो और नमक कारखाने खरीदे गए। वही। संख्याएँ 88 और 98; 1598 में, कार्गोपोल शहर में भूमि खरीदी गई। वही। संख्या 96.

[440] एएई. 1. संख्या 377.

[441] AI. 1. संख्या 163.

[442] रोज्कोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 394, 391; एएई. 1. सं. 285.

थीं, प्रदान कि गए[443] */ 1646 की जनगणना के रिकॉर्ड के अनुसार, मठ की संपत्तियों पर 3,854 किसान परिवार थे*[444] */*

हमारा तीसरा उदाहरण एक शहरी मठ है - यारोस्लावल में स्पस्की मठ[445] , जो रूस के सबसे पुराने मठों में से एक है। इसका पहली बार उल्लेख 1216 में वृत्तांतों में मिलता है; इसकी स्थापना यारोस्लावल के राजकुमार कॉन्स्टेंटिन ने की थी, और उसी समय मठ के पत्थर के चर्च की नींव रखी गई थी, जिसका निर्माण आठ साल बाद पूरा हुआ[446] । 15वीं सदी (1463) के अंत तक, चमत्कार करने वाले राजकुमार थियोडोर († 1299), डेविड और कॉन्स्टेंटिन की अवशेषों की खोज और उन्हें वहाँ स्थापित किए जाने के बाद, मठ ने लोगों द्वारा पूजे जाने वाले तीर्थस्थलों में एक प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया था[447] । मठ के विशेष महत्व को चर्च पदानुक्रम द्वारा मठाधीश को आर्चिमैंड्राइट के पद पर पदोन्नत करके रेखांकित किया गया[448] ।

[449]मठ की संपत्तियों में मुख्य रूप से कृषि भूमि, विसंत की बाढ़ के दौरान बाढ़ग्रस्त होने वाले बहुत बड़े घास के मैदान, और युवा वन शामिल थे। 1321–1345 के रूप में जल्दी, मठ को यारोस्लाव के अपानज राजकुमार वासिली से प्रतिरक्षा का चार्टर मिला था। आर्चिमंड्राइट क्रिस्टोफ़र के कार्यकाल के दौरान, यानी 1464 और 1466 के बीच, ग्रैंड प्रिंस इवान III ने मठ को प्रतिरक्षा का चार्टर प्रदान किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि स्पस्की मठ के अपने नमक कारखाने थे; 1478 में, इसने एक और नमक कारखाना प्राप्त किया; 1490, 1508 और 1516 में, बसाए गए गांवों और खेतों सहित कृषि भूमि की और खरीद की गई। 1538, 1545, 1547 और 1550 में, मठ को राजकुमार एस. एफ. कुर्बस्की से आत्मा की शांति के लिए बहुत बड़े दान और ज़ार[450] से अनुदान प्राप्त हुए। स्टोग्लाव के बाद, 1555 और 1556 में, मठ ने 'ज़ार के साथ' भूमि का आदान-प्रदान किया; यह ध्यान देने योग्य है कि मठ ने सरकार को गाँवों सहित अपनी संपत्तियाँ प्रदान कीं, जबकि अपने लिए निर्जन भूमि का अनुरोध किया[451] । 1564 में, ज़ार इवान ने मठ को गाँवों सहित भूमि प्रदान की; 1562 में, मठ को बोयार प्रिंस आई. वी. पेनकोव से आत्मा की शांति के लिए एक वसीयत प्राप्त हुई; और 1564 में, प्रिंस डी. ज़ासेइकिन से एक उपहार मिला[452] . इस प्रकार, 1550 और 1560 के दशक के दौरान, मठ की संपत्ति काफी बढ़ गई; यह दर्शाता है कि 11 मई 1551 का फरमान वास्तव में कितना तुच्छ था। यह कोई संयोग नहीं था कि स्टोग्लाव में जोसेफाइट बहुमत ने इस फरमान में एक शर्त पेश की जिसमें कहा गया था कि मठ आत्मा की शांति के लिए दान के रूप में संपत्ति प्राप्त करना जारी रख सकते हैं। जागीरों का आदान-प्रदान अभी तक निषिद्ध नहीं किया गया था, और स्पस्की मठ ने इस अवसर का लाभ उठाया: इसने राज्य के साथ ही आदान-प्रदान किया – यह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि 11 मई 1551 के फरमान को कितनी आसानी से दरकिनार किया जा सकता था।[453]

1628–1631 के स्पस्की मठ के भूमि रिजस्टिरों[454] से, मठ की संपत्तियों के विस्तार का निम्नलिखित अवलोकन संकलित किया जा सकता है:

खेती योग्य भूमि: 15,993 *58 चेतवेरी (7,997 देसियातिन)*

---

[443] स्मिरनोव। उद्धृत ग्रंथ 1 (1917), पृ. 111; एआई. 3. संख्या 61।

[444] निकोल्स्की। वही। खंड 1, संख्या 1। परिशिष्ट VIII–XXV; वर्ष 1637 के लिए, तुलना करें: AAE. 3. संख्या 274 और AI. 3. संख्या 198, जहाँ, संभवतः त्रुटिवश, केवल 2,101 किसान परिवार दर्ज किए गए हैं; जोती गई भूमि का क्षेत्रफल 25,490 चेतवर्ती का अनुमान है।

[445] मुख्य स्रोत: यारोस्लाव्ल में स्पस्की मठ के ऐतिहासिक अधिनियम। वाख्रामेव द्वारा संपादित। 3 खंड (1896)। हमने इस मठ की अर्थव्यवस्था का अध्ययन इस में किया है: Цур Гешичте дер вирт्शाफ्ट дес स्पस्की-क्लोस्टर्स इन дер श्टाट यारोस्लाव्ल इम 16. – 17. जेंटरहंट (पांडुलिपि)।

[446] PSRL. खंड 1, पृ. 186, 190; खंड 10, पृ. 69।

[447] प्रियोब्राज़ेंस्की, जी. *यारोस्लावल शहर के मठ और चर्च* (1901)। पृ. 3, 7; मकारी। 7. पृ. 171; क्ल्यूचेव्स्की। *लाइव्स*। पृ. 74.

[448] स्ट्रोव। रूसी चर्च के मठों के पदानुक्रमों और मठाधीशों की सूचियाँ (1877)। पृ. 377।

[449] AI. 1. संख्या 3, 4. OAMYU. 4. संख्या 147, 149, 253; AYU. 2. संख्या 481.

[450] AI. 1. संख्या 10; 2. संख्या 13–15.

[451] उपरोक्त। 2. संख्या 19–21.

[452] उपरोक्त। 2. संख्या 32, 33, 30, 31, 35, 26, 27, 28.

[453] 9 अक्टूबर 1573 और 1 अक्टूबर 1584 के फरमानों (AAE. 1. संख्या 308; SGGD. 1. संख्या 208) ने आत्मा की शांति के लिए मठों को संपत्तियों का दान निषिद्ध कर दिया, जबकि इस प्रकार के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया। यहाँ तक कि 1674 में भी, मठ ने प्रिंस आई. पी. प्रोंस्की के साथ एक ऐसा आदान-प्रदान किया जो उसके लिए अत्यधिक लाभदायक था। खोलमोगोरोव। द रशियन टाइट (1891)। पृ. 64।

[454] 1627–1629 और 1629–1631 के रजिस्टर। AI. 3. यह गणना हमारे द्वारा की गई थी। यदि प्रत्येक देसियातिन में लगभग 20 कोपेन होते हैं (क्ल्यूचेव्स्की. कोर्स. 2 (1908)। पृ. 366), तो मठ के पास कम से कम 937.*14 देसियातिन (!) घास के मैदान थे।*

घास के मैदान: 18,745 कोपेन (937 *14 देसयितनि)*
वन: 994 *34 देसयितनि*
कसिान परविार: 1,947
गरीबों के घर: 1,374
मठ के सेवकों के परविार: 163
कुल 554 गांवों में 3,484 घर

1646 के भूमरिजस्टिरों से पता चलता है कि उस समय मठ की जमीनों पर 3,183 कसिान और मजदूर परविार थे, जबकि 1678 के भूमरिजस्टिरों में 3,915 परविार दर्ज थे[455] . दूसरे शब्दों में, 1646 और 1678 के बीच मठ की संपत्तयिों में कम से कम 732 कसिान परविारों की वृद्धि हुई, और यह 1649 के कोड के बाद हुआ, जब नए परविारों के अधग्रिहण पर औपचारकि रूप से प्रतबिंध लगा दयिा गया था[456] । 1678 की जनगणना के बाद, घरों की संख्या में वृद्धि नगण्य थी, क्योंकि 1696 तक स्पस्की मठ में केवल 4,049 घर थे[457] ।

16वीं सदी में मठों की संपत्तयिों के वकिास की प्रकृति का पता वोलोकलामस्क के सेंट जोसेफ मठ के इतहिास से भी लगाया जा सकता है। इस मठ ने, जसिे इसके संस्थापक सेंट जोसेफ के कारण एक वशिष धार्मकि और राजनीतकि महत्व प्राप्त था, 16वीं सदी में एक समृद्ध संपत्ति का स्वामत्वि प्राप्त कयिा था। 17वीं शताब्दी में, मठ की अर्थव्यवस्था में लगभग कोई वृद्धि नहीं हुई; इसका कारण यह हो सकता है कि मठ का महत्व अब पछिली शताब्दी के बराबर नहीं रहा। हालांकि सेंट जोसेफ मठ ने 16वीं शताब्दी में अपार राजनीतकि प्रभाव डाला, फरि भी यह आध्यात्मकि रूप से उतना धन्य स्थान नहीं बना, जतिना कि उदाहरण के लिए, ट्रनिटिी-सर्गीयस या सेंट साइरलि के मठ थे। लोक धर्मपरायणता धार्मकि तीर्थस्थलों को चर्च की पदानुक्रम से अलग ढंग से आंकती है; यह तथ्य रूसी चर्च के इतहिासकार को अक्सर आश्चर्यचकति कर देता है।

1479 में वोल्कोक-लम्स्का शहर के पास स्थापति, जो 15वीं-16वीं शताब्दी में मस्कोवी के सबसे व्यस्त व्यापारकि केंद्रों में से एक था, जोसेफोव मठ ने अपने अस्तत्वि की पहली ही शताब्दी के भीतर एक प्रमुख आर्थकि संस्थान बनना सफल कर लयिा[458] . मठ को 1488 और 1495 के बीच वोल्त्स्क के राजकुमार बोरसि से अपनी पहली भूमि उपहार में मलिी; केवल 100 वर्षों की अवधि में, 1591-1592 तक, मठ ने 153 से कम नहीं नए एस्टेट प्राप्त कएि, या तो उपहार के रूप में या आत्मा की शांति के लिए प्रार्थनाओं के बदले में; आत्मा की शांति के लिए दएि गए दान उस समय के लिए बहुत बड़े थे और कुल 30,861 रूबल थे (1914 की वनिमिय दर पर 1.5 मलियिन से अधकि सोने के रूबल)[459] । इन दानों के रकिॉर्ड मठ के सन्निाडकिॉन में दर्ज कएि गए थे। मठ के सबसे शुरुआती सन्निाडकिॉनों में से एक में, स्वयं सेंट जोसेफ के हाथ से नम्निलखिति प्रवष्टिि की गई थी: 'इन उद्धारकारी और आत्मा-रक्षक पुस्तकों के माध्यम से, हम इस जीवन और आने वाले जीवन में हर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं… जहाँ तक भोजन, जीवकिा, वस्त्र, जूते, कोठरयिों की व्यवस्था, और कोठरयिों में सभी आवश्यक वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति, साथ ही गाँव, बगीचे, नदयिाँ, झीलें, चरागाह, और सभी प्रकार के जानवरों और चार-पाँव वाले जीवों की बात है,[460] ।

---

[455] उपरोक्त 3. पृ. 130–252, 253–255। गणना हमारे द्वारा की गई थी।

[456] चूंकि करों के कारण, उस समय बेटों के बीच जमीनों का वभिाजन दुर्लभ था, इसलिए इस तरह के वभिाजन जमीनों की संख्या में अधकितम 10–15 प्रतशित की वृद्धि की व्याख्या कर सकते हैं; इसका मतलब है कि 600 से अधकि जमीनें नई हासलि की गई थीं।

[457] स्विकोव। भूमि स्वामत्वि के इतहिास पर। पृ. 222.

[458] हमारा ववरिण के. शेचेपेटोव के कार्य पर आधारति है, जो जोसेफ मठ की समृद्ध पुरालेखीय सामग्री पर आधारति है: '16वीं शताब्दी के अंत में जोसेफ-वोल्कोलांस्क मठ की संपत्तयिों में कृषि', इस्त. ज़ैप. 18 (1946) में। मठ के पास अभयिोजन से पूरी छूट का एक चार्टर – एक 'टार्खान' – था, जसिने इसे समृद्ध करने में योगदान दयिा, क्योंकि इसने इसे सभी करों से मुक्त कर दयिा था। वही, पृ. 96.

[459] उपरोक्त, पृ. 95। इसमें ग्रैंड प्रसि और ज़ारों से 10,031 रूबल; राजकुमारों से 4,389 रूबल; पुरोहति वर्ग (मेट्रोपॉलटिन और बशिप) से 7,195 रूबल; और बोयार और सेवा पुरुषों से 9,345 रूबल शामलि थे। केवल ज़ार इवान चौथे ने ही 7,000 रूबल प्रदान कएि; इस राशि में से 4,300 रूबल वोयवोड्स, बोयार, राजकुमारों, कुलीनों, बोयार के बच्चों और उन सभी की आत्मा की शांति के लिए दान थे, जो ओप्रचिननिा के दौरान मारे गए थे और कैद में मृत्यु हो गई थी। ज़ार इवान के पुत्र, ज़ार फ्योडोर ने मठ को 1,035 रूबल अनुदान दयिा; ज़ार बोरसि ने – 800 रूबल; ज़ारनिा इरनिा ने – 500 रूबल, यह सब आत्मा की शांति के लिए था। यह ध्यान देने योग्य है कि 17वीं सदी में, मठ को उतने दान नहीं मलि जतिने कि पहले मलिते थे; हमारी राय में, इसका कारण यह है कि अब यह पछिली सदी की तरह कोई महत्वपूर्ण 'राष्ट्रीय-धार्मकि' भूमकिा नहीं नभिा रहा था।

[460] उपरोक्त, पृ. 94। मठ के अधकिारयिों ने पैसे का खर्च संयम से कयिा: 153 नई अधग्रिहण संपत्तयिों में से, केवल 23 संपत्तयिाँ खरीदी गईं; 12 का आदान-प्रदान कयिा गया, और 118 आत्मा की शांति के लिए दान के रूप में प्राप्त हुईं।

इन सबके कारण मठ के अधिकारियों ने 1543–1566 के शुरुआती समय में ही मठ को एक पत्थर की दीवार से घेर लिया, जो उस समय एक बहुत महँगा उपक्रम था; अन्य मठीय भवन भी बनाए गए[461] । मठ की संपत्तियाँ, जो मुख्य रूप से केंद्रीय काउंटियों में स्थित थीं, में 26,170 देसियाटिने उपजाऊ भूमि, वन और चारागाह शामिल थे, जिसमें 40 गाँव और बस्तियाँ शामिल थीं; इन्हें पाँच भागों में विभाजित किया गया था और प्रशासनिक तथा व्यावसायिक सोच वाले भिक्षुओं द्वारा प्रबंधित किया जाता था[462] । स्टोग्लाव के फरमानों का मठ की आर्थिक समृद्धि पर बहुत कम प्रभाव पड़ा । 1550 के बाद, इसे उपहार और वसीयत के माध्यम से अपनी भूमि सहित 60 से अधिक गाँव प्राप्त हुए। मठ की आर्थिक और वित्तीय स्थिति इतनी सुरक्षित थी कि, अन्य मठों के विपरीत, इसने अपनी भूमि की बिक्री या गिरवी रखने में संलिप्तता नहीं दिखाई[463] । मठ की उत्कृष्ट वित्तीय स्थिति इस तथ्य से समझी जा सकती है कि अनुदान और छूट के पत्रों ने इसे 'पोस्ट-स्टेशन शुल्क' और 'स्ट्रेल्ट्सी अनाज कर' को छोड़कर सभी करों और शुल्कों से मुक्त कर दिया था[464] । 1560 और 1570 के दशकों का कृषि संकट 16वीं सदी के कृषि संकट का, मठ के अधिकारियों की इस शिकायत के बावजूद कि किसान भाग जाने के कारण आधी भूमि बंजर पड़ी थी, मठ की अर्थव्यवस्था पर वास्तविक प्रभाव बहुत कम पड़ा[465] , क्योंकि यहाँ, अन्य मठों की तुलना में जल्दी, उन्होंने यह महसूस कर लिया था कि भूमि प्रबंधन की प्रणाली को बदलना लाभदायक था। तब तक मठ या तो अपनी ज़मीन खुद जोतता था या उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटकर उन गरीब किसानों को पट्टे पर देता था जिनके पास अपनी कोई ज़मीन नहीं थी, या इन टुकड़ों पर तथाकथित 'मठ के शिष्यों' को बसा देता था। मठ को इन किरायेदारों से वार्षिक भुगतान प्राप्त होता था - एक भूमि किराया जिसे 'ओब्रोख' के नाम से जाना जाता था[466] । संकट के बाद, लगभग *1591-92 से, मठ के अधिकारियों ने स्वयं खेती करने वाली भूमि के क्षेत्र को बढ़ाने का प्रयास किया, साथ ही किसानों को भूमि किराए से हटाकर अनिवार्य श्रम (कोरवे लेबर) पर ला दिया - मठ के लिए अपने स्वयं के अनाज भंडार रखना और उन्हें बेचना अधिक लाभदायक था*[467] *। समस्याओं के समय के दौरान, जोसेफोव मठ को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, और कई किसान उसकी जमीनों से भाग गए; 1619 में, मठ को युवा ज़ार मिखाइल से भगोड़े किसानों को वापस लाने की अनुमति मिली*[468] *। 16वीं सदी मठ के लिए समृद्धि का दौर था; बाद में, समस्याओं के समय के बाद, उसकी संपत्ति में कमी आई। 1646 की जनगणना के अनुसार, इसके पास केवल 1,104 किसान परिवार थे और इस संबंध में यह 439 मठों में से 19वें स्थान पर था; 1661 में, इसकी संपत्तियों में कुल मिलाकर केवल 991 किसान परिवार शामिल थे*[469] *।*

4. 16वीं और 17वीं शताब्दी में पोनिज़ोव्ये क्षेत्र में मठों की भूमि-स्वामित्व की वृद्धि, मठों की उपनिवेशीकरण गतिविधियों के एक उदाहरण के रूप में

मठों की अर्थव्यवस्था की एक स्पष्ट तस्वीर प्रदान करने के लिए, आइए हम देश के एक क्षेत्र, अर्थात् पोनिज़ोव्ये की ओर रुख करें, क्योंकि इस क्षेत्र पर उपलब्ध सामग्री की प्रचुरता का उपयोग करके, हम अपने विषय

---

[461] उपरोक्त, पृ. 96. जेरोंटियस. वोल्कोलामस्क जोसेफ मठ, पृ. 46. ट्रिनिटी-सर्गीय मठ को पत्थर की दीवार का निर्माण 1510 में ही शुरू कर सका, यानी इसकी स्थापना के लगभग 200 साल बाद। गॉर्स्की. विवरण, पृ. 7. 1592 में, जोसेफोव मठ में एक बहुत बड़ा पशुपालन फार्म था: 292 गायें, 62 बछड़े, 117 सांड, 153 भेड़ें; अस्तबलों में 385 घोड़े थे। शेचेपेटोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 134, 137.

[462] उपरोक्त, पृ. 94, 115.

[463] रोज़कोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 418; अधिकांशतः जमींदारियाँ सेवादारों से, या तो अनुदान के रूप में या खरीद के माध्यम से प्राप्त की गई थीं। ज़ार ने मठ को 19 गाँव प्रदान किए, जबकि निजी व्यक्तियों ने 53 गाँव प्रदान किए। वही, पृ. 421.

[464] श्चेपेटोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 96। सभी मठों के लिए गाड़ी कर और स्ट्रेल्ट्सी अनाज कर अनिवार्य थे। टार्खान ने जोसेफोव मठ को विभिन्न खाद्य पदार्थ और अन्य सामान शुल्क-मुक्त रूप से मठ में खरीदने और आयात करने की अनुमति दी: ब्रेड, नमक (!), मछली, मक्खन, वनस्पति तेल, शहद, लिनन, फर और इसी तरह की अन्य चीजें। वही, पृ. 97.

[465] उपरोक्त।

[466] उपरोक्त, पृ. 99; रोज़कोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 146.

[467] शेपेटोव। पूर्वोक्त, पृ. 100–102। आर्थिक प्रबंधन की प्रणाली में यह बदलाव अन्य मठों में भी देखा जा सकता है। रोज़कोव। पूर्वोक्त, पृ. 132; 17वीं सदी के लिए, तुलना करें: गौटियर। पूर्वोक्त (1937)। पृ. 329, 251। विभिन्न कृषि खिताबही ('बुवाई' खिताबही, 'मंझनी' खिताबही, आदि), जिन्हें भिक्षु प्रबंधकों (गाँव के बुजुर्गों) या गृहस्थ प्रबंधकों द्वारा रखा जाना आवश्यक था, बड़ी सटीकता से विशेषता रखती हैं; अनाज के हर माप और भूसे के हर गट्ठे को उनमें दर्ज किया जाता था; किसानों से वसूली भी ठीक इसी तरह दर्ज की जाती थी; फसल के समय या जब कोई और कर्ज लेता था, तो किसान को उसके बकाया हर कोपेक की याद दिला दी जाती थी। कोरियाज़ेम्स्की, बोल्डींस्की और एंटोनिएव-सिरिन जैसे अन्य मठों के खेतों के हिसाब-किताब भी इसी तरह के हैं।

[468] तुलना करें: RIB. 35 (1917). संख्या 263; ड्याकोनोव. निबंध (1898). पृ. 49, 52, 54, 59; क्लूचेव्स्की. पाठ्यक्रम. खंड 2. पृ. 342 एफएफ., 326.

[469] निकोल्स्की। पूर्वोक्त। 1. 1. परिशिष्ट VIII।

पर पर्याप्त प्रकाश डाल सकते हैं[470] । यह याद रखना चाहिए कि, एक ओर, यहाँ मठों द्वारा उपनिवेशवाद के लिए पर्याप्त गुंजाइश थी; दूसरी ओर, इस क्षेत्र में उपनिवेशवाद उत्तर की तरह व्यक्तिगत तपस्वियों की पहल से नहीं, बल्कि राज्य और चर्च पदानुक्रम द्वारा शुरू किया गया था। पिछले अध्याय में, हमने पहले ही इस बात पर चर्चा कर ली है कि पोनिज़ोवъе क्षेत्र में 16वीं और 17वीं शताब्दियों के दौरान मठों द्वारा उपनिवेशवाद कितनी सीमा तक फैला; हमने इस उपनिवेशवाद की मुख्य दिशाओं की भी पहचान की और नव-स्थापित मठों की संख्या के साथ-साथ उनकी स्थापना के समय और प्रकृति की रूपरेखा भी प्रस्तुत की। 1565–1568 के भूमि रजिस्टरों के अनुसार—अर्थात् मॉस्को सरकार द्वारा पोनिज़ोवये क्षेत्र में उपनिवेशवाद शुरू करने के 13–15 साल बाद संकलित रजिस्टरों के अनुसार—वहाँ के चर्च और मठ संपत्तियाँ अभी भी अपेक्षाकृत छोटी थीं। तालिका पोनिज़ोवये क्षेत्र में विभिन्न संपत्तियों के आकार को दर्शाती है[471] :

'च्वार्ट' में खेती योग्य भूमि (1 'च्वार्ट' = *12 'देसियानास'*)
स्वामी कज़ान जिला स्विआज्स्क जिला
सैन्य अधिकारियों की संपत्तियाँ 18,243 20,644
राज्य-स्वामित्व वाली भूमि 6,225 42,191.6
काज़ान के आर्चबिशप 2,087.5 मठ 493 2,086.4
पैरिश 15 174
चुवाश और तातार ? 51,944
बाजार कस्बों के निवासी 700 ?

यहाँ मठों के भूमि स्वामित्व की शुरुआत ही हो रही थी, लेकिन व्यक्तिगत मठों की जागीरों में बहुत तेजी से वृद्धि हो रही थी। इसका उदाहरण ट्रिनिटी मठ (1551 में स्थापित)[472] है, जिसने थोड़े ही समय में अपनी संपत्ति कई गुना बढ़ा ली:

वर्ष बोया गया क्षेत्र बंजर क्षेत्र वन क्षेत्र गाँव
1575 562.4 190 6.52 ?
१५९३ १,००५ ४५६ ९.२६ १४

उपलब्ध आंकड़े दिखाते हैं कि 16वीं शताब्दी में नए मठों की स्थापना ने लोअर वोल्गा क्षेत्र के उपनिवेशीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि मठों ने इस क्षेत्र के आर्थिक पुनरुत्थान में बहुत बड़ा योगदान दिया। उनके आर्थिक विकास का मुख्य कारण यह था कि इस क्षेत्र की उपजाऊ भूमि राज्य के अन्य हिस्सों के किसानों को आकर्षित करती थी। पूर्व की ओर यह प्रवासन 1570 और 1580 के दशक के दौरान केंद्र में हुए कृषि संकट से भी जुड़ा था। नए बसाहटियों के लिए, जिन्हें अपने खेत स्थापित करने के लिए धन की आवश्यकता थी, मठ उनके सबसे बड़े सहायक थे। नए किसान बस्तियाँ मठ की भूमि पर या उसके पास ही बस गईं। जब किसी किसान का घर-बार बसाने का काम ठीक से नहीं चल रहा होता, तो किसान, पैसे या भोजन की कमी के कारण, मठ से मदद मांगने के लिए मजबूर हो जाता था। परिणामस्वरूप, जल्द ही समझौते किए गए - एक या दूसरे मठ के साथ वचन-पत्र ([473])।

16वीं सदी के अंत तक, जो किसान किसी स्वामी की जागीर या मठ की जमीन पर बसे थे, वे स्वतंत्र किरायेदार थे; अर्थात्, जमीन के मालिक के साथ एक अनुबंध के तहत, वे अपनी फसल का एक हिस्सा (*15 प्रतिशत* से *लेकर आधा तक)* सौंपते थे; *उन्हें आमतौर पर 'पोलोव्नीकी' कहा जाता था। इसके अतिरिक्त, वे जमींदार को किराया (नकद या वस्तु के रूप में) देते थे और उसके लिए विभिन्न प्रकार के काम करते थे– मठों में इसे 'मठीय श्रम' कहा जाता था।*

---

[470] पेरेत्यातकोविच के प्रारंभिक कार्यों (1877 और 1882) में, मठों की संपत्तियों के विषय को बहुत विस्तार से नहीं बताया गया है। बाद में प्रकाशित स्रोत मठों की अर्थव्यवस्था की एक अधिक संपूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

[471] रोज़कोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 374.

[472] उपरोक्त, पृ. 25; वासिलीव, ए. 'स्विआज्स्क जिले में भूमि स्वामित्व के इतिहास पर', इज्वेस्तिया काज़ान, खंड 12 (1894) में। पृ. 605, 608। तुलना करें: पेरेत्यातकोविच। उद्धृत ग्रंथ (1877)। पृ. 21। स्वियाज्स्क में एक अन्य मठ, असम्प्शन मठ, को नमक के शुल्क-मुक्त व्यापार से पर्याप्त आय प्राप्त होती थी। AAE. 1. पृ. 382। ट्रिनिटी-सर्गीय मठ के पास पोनिज़ोवये में भी जमींदारियाँ थीं; *1593–94* में, *काज़ान जिले में उसके पास अकेले 1,275 देसियाटिने बोने योग्य भूमि, 3,125 देसियाटिने वन भूमि और 41 देसियाटिने चरागाह थे। रोज़कोव। उसी में। काज़ान ज़िलानटोव मठ ने 1552 और 1598 के बीच अपनी संपत्ति में काफी विस्तार किया। यह ध्यान देने योग्य है कि मठ की संपत्ति में वृद्धि परित्यक्त भूमि के कुशल प्रबंधन के कारण हुई, जिसे पहले काज़ान सेवा पुरुषों को जागीरों के रूप में आवंटित किया गया था। ज़िलान्टोव मठ के चार्टर। पृ. 270, 278, 281–285; AI. 1. संख्या 191; रिबिस्की। काज़ान शहर का संक्षिप्त इतिहास। 1 (1898) । पृ. 48.*

[473] तुलना करें: टेट्युषी में पोक्रोव्स्की मठ और किसानों के बीच ऐसे अनुबंधों के उदाहरण, यहाँ: Acts. Ed. S. Melnikov. 1 (1859). Nos. 27, 31–37.

पट्टा समझौते – 'पोरोडने' – आमतौर पर लिखित रूप में नहीं होते थे; विभिन्न दस्तावेजों में हमें ऐसे प्रमाण मिलते हैं: 'और हमारे बीच कोई लिखित समझौता नहीं था; हमने ईश्वर की सच्चाई पर भरोसा किया'[474] । 16वीं शताब्दी में, किराए की राशि और करदेय श्रम के दायरे को हमेशा सटीक रूप से परिभाषित नहीं किया गया था; 17वीं शताब्दी के पट्टा समझौते, जो अब आमतौर पर लिखित रूप में तैयार किए जाते थे, ने भी हमेशा किरायेदारों की जिम्मेदारियों को सख्ती से परिभाषित नहीं किया था'[475] । चूंकि विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न मठ भूमियों पर किसानों की स्थिति एकसमान नहीं थी, पुराने रूसी किसान, प्रवासन के प्रति अपनी जन्मजात उत्सुकता के साथ'[476] , अक्सर बेहतर भूमि और अधिक समृद्ध मठों की तलाश में निकल पड़ते थे। पोनिज़ोवये क्षेत्र की भूमि ने उन्हें इस संबंध में सफल खेती के अवसर प्रदान किए, जिससे स्थानीय मठों की भूमि पर किसानों का आगमन बढ़ गया।

पोनिज़ोवये क्षेत्र में मठों के आर्थिक विकास के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक यह था कि 'समय की परेशानियों' के उथल-पुथल ने पोनिज़ोवये को देश के पश्चिमी और मध्य क्षेत्रों की तुलना में कम गंभीर रूप से प्रभावित किया[477] । कुछ मठों की जमीनों को 'समय की परेशानियों' से बहुत नुकसान हुआ, लेकिन इस क्षति की तुलना राज्य के केंद्रीय क्षेत्रों के मठों को हुए नुकसान से नहीं की जा सकती, जहाँ कई मठ पूरी तरह से सुनसान हो गए थे[478] । जहाँ तक पोनिज़ोवये क्षेत्र में मठों की ज़मीनों के आकार का सवाल है, दुर्भाग्य से हमारे पास इस मामले में कोई सटीक जानकारी नहीं है। हमारे पास कुछ मठों की संपत्तियों पर कोई भी डेटा नहीं है; अन्य के लिए, हमारे स्रोत अपूर्ण हैं। 1620 के दशक के भूमि रजिस्टर और 1646–1678 के जनगणना रिकॉर्ड या तो पूरी तरह से संरक्षित नहीं रहे हैं या पूरी तरह से खो गए हैं।

1646 के जनगणना रजिस्टरों से, हम काज़ान जिले के केवल 13 मठों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जिनके पास सामूहिक रूप से 2,573 किसान households[479] की भूमि थी। पी. स्मिरनोव के अनुसार, 1646 की जनगणना रिकॉर्ड के आधार पर यह माना जा सकता है कि जिले के सभी मठों के पास 2,706 घरों वाली भूमि थी[480] ; 133 घरों के अंतर को अन्य मठों द्वारा समझाया गया है। दुर्भाग्य से, मठों की भूमि स्वामित्व में वृद्धि के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। 1646 की जनगणना रिकॉर्ड से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पोनिज़ोवे जिलों में, मठों के पास 4,567 किसान परिवारों वाली भूमि थी[481] । 1678 की जनगणना रिकॉर्ड में 36 मठों की भूमि-स्वामित्व और उनसे संबंधित किसानों की संख्या के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी है[482] और 21 मठों की भूमि पर किसान परिवारों की संख्या के बारे में जानकारी है[483] । जहाँ इन 21 मठों के पास 1646 में 3,057 किसान परिवारों वाली भूमि थी, वहीं 1678 की सूची में इन्हीं मठों की भूमि पर केवल 2,425 परिवार दर्ज थे। और 1678 के बाद, कुछ मठों में किसान परिवारों की संख्या में

---

[474] उदाहरण के लिए: RIB. 14. संख्या 275 या 302; तुलना करें: ड्याकोनोव। प्राचीन रूस की सामाजिक और राजनीतिक संरचना पर निबंध (1912, चौथा संस्करण)। पृ. 105.

[475] विभिन्न प्रकार के अभिलेखों पर, उदाहरण के लिए उत्तर में, देखें: बोगोस्लोव्स्की. जेम्स्टवो स्व-शासन. खंड 1; ड्याकोनोव. निबंध (1898). पृ. 163–165. यह भी देखें: ग्रेकोव। रूस में किसान। पृ. 725। और यह भी: कर-भुगतान करने वाली आबादी के इतिहास से संबंधित दस्तावेज़। संपादित एम. ड्याकोनोव (1897)। खंड 1।

[476] क्लुचेव्स्की द्वारा उद्धृत। कोर्स। खंड 1 (1906)। पृ. 24।

[477] समय की मुसीबतों के परिणाम पोनिज़ोवье क्षेत्र के पश्चिमी जिलों - अर्ज़ामस, अलाट्यर और स्वियाज़्स्क् जिलों में अधिक तीव्रता से महसूस किए गए थे। प्लाटोनोव। निबंध। पृ. 329, 513; तुलना करें: मेट्रोपॉलिटन हर्मोजेनेस का पत्र (दिनांक 24 दिसंबर 1606) में: AAE। 2. संख्या 61 और वोइवोड जी. जी. पुश्किन की। वही। संख्या 160; और यह भी: AAE. 2. संख्या 104, 144, 149, 156; AI. 2. संख्या 112, 113, 141, 145.

[478] अधिक जानकारी के लिए देखें: वेसेलोव्स्की, एस. 'माइकल फ्योदोरोविच के शासन के शुरुआती वर्षों में कर और दशाई के पैसे के सात संग्रह', में: रीडगिस (1909)। खंड 1, पृ. 150; गौटियर. द रीजन बिहाउंड मॉस्को (1906)। पृ. 213, 230; निकोल्स्की. उपरोक्त, खंड 1, 2 (1910)। पृ. 261, 266। 'समय की परेशानियों' के दौरान, पाँच नए मठ स्थापित किए गए थे: ज्वेरेन्स्की। खंड 3, संख्या 1449, 2154, 1249; खंड 2, संख्या 1110; पोक्रोव्स्की। मठों के इतिहास पर। पृ. 7। यह विशेष है कि काज़ान सी (Kazan See) की भूमि संपत्तियाँ लगातार बढ़ीं। 1623 की सूची इस बात का संकेत देती है कि 1603 और 1623 के बीच इन संपत्तियों में कितनी वृद्धि हुई थी। उदाहरण के लिए, 1612 में, काज़ान के मेट्रोपॉलिटन, एफ्रेम (1606–1613), ने 'काज़ान राज्य की संपूर्ण भूमि के आदेश (!)' द्वारा नई जमींदारियाँ प्राप्त करने में सफलता हासिल की; इस उल्लेखनीय दस्तावेज़ को देखें: रीडगिस. 1896. खंड 3. भाग 5. पृ. 9.

[479] यह जानकारी हमारे द्वारा ली गई है; देखें 'सामग्री' (Materials): पोक्रोव्स्की. 1764 तक काज़ान मठों के इतिहास पर, इज़्वेस्तिया काज़ान. 18 (1902) में। परिशिष्ट I–XXV।

[480] स्मिरनोव। द टाउन्स ऑफ द मस्कोवाइट स्टेट। खंड 1, संख्या 2 (1919)। पृ. 298, 290.

[481] 1646 की जनगणना रजिस्टर (छूटों सहित) निकोल्स्की में: उद्धृत कृति, पृ. 1.1 (1897)। परिशिष्ट IV–XXV। काज़ान जिले के लिए, केवल 5 मठों के लिए डेटा उपलब्ध है।

[482] यह जानकारी हमारे द्वारा निकाली गई है; तुलना करें: पोक्रोव्स्की. उद्धृत ग्रंथ. परिशिष्ट X–XXV.

[483] उपरोक्त। परिशिष्ट I–XXV।

गरिावट जारी रही[484] । 18वीं सदी के पहले छमाही के दौरान, मठों की जमीनों को राज्य नयिंत्रण में लाने, इन जमीनों से प्राप्त आय का राज्य उद्देश्यों के लिए उपयोग करने, और इन जमीनों का एक हस्सिा जब्त करने के उद्देश्य से कई उपाय लागू कए गए (हम इस पर नीचे चर्चा करेंगे)। 1744 के आंकड़ों के अनुसार, काज़ान धर्मप्रांत के 14 मठों के पास 15,131 आत्माओं की ग्रामीण आबादी वाली भूमि थी[485] । जब 1762 में - यानी 18 साल बाद - पीटर तृतीय के लिए चर्च और मठों की संपत्तियों का एक नया रजस्टिर संकलति कयिा गया, तो काज़ान डायोसीज़ के 38 मठों को 14,517 कसिान आत्माओं के साथ दर्ज कयिा गया था[486] ।

16वीं–17वीं शताब्दयिों में मस्कोवाइट राज्य के एक क्षेत्र में मठों की अर्थव्यवस्था के वकिास की यही सामान्य तस्वीर थी। यह प्रक्रयिा देश के सभी क्षेत्रों में एक ही तरह से नहीं हुई; हम स्थानीय परस्थितियिों का वर्णन करने के लिए कुछ और वचिलन कर सकते थे, लेकनि हम इस स्तर पर यह उचति समझते हैं कि इन संपत्तियिों के भीतर आंतरकि संबंधों और मठ कृषि में मठ समुदाय की भूमकिा का वर्णन करने से पहले, समग्र रूप से मस्कोवाइट राज्य में मठ संपत्तियिों की ओर रुख कयिा जाए।

५ मठीय अर्थव्यवस्था का एक अवलोकन

16वीं-17वीं शताब्दयिों में मठों के स्वामतिव वाली भूमि की कुल मात्रा को सटीक रूप से नर्धिारति करना संभव नहीं है। भूमि रजस्टिर - इस वषिय पर सबसे महत्वपूर्ण स्रोत - कई स्थानों के लिए पूरी तरह से खो गए हैं, जबकि अन्य के लिए केवल अंश ही बचे हैं। कई मठों की सूचीबद्ध वस्तुओं में अक्सर मठ की भूमि-स्वामतिव के बारे में गलत जानकारी होती है; इसके अलावा, यद्यपि मठ के अधकिारयिों ने भूमि रजस्टिरों से प्राप्त सूचयिों को संरक्षति करने का ध्यान रखा, फरि भी ये कई मठों में खो गईं। केवल वभिन्नि स्रोतों से जानकारी को संश्लेषति करके ही—जैसे, रोज्कोव, वाई. गौटयिर और अन्य लोगों के अनुसार, देश के कुछ क्षेत्रों की एक सुसंगत तस्वीर बनाना संभव है। 16वीं या 17वीं शताब्दी में मास्को आए वदिेशी अपने मूल्यांकन आधकिारकि दस्तावेजों के ज्ञान की तुलना में वभिन्नि व्यक्तयिों के बयानों पर अधकि आधारति करते थे। और फरि भी इन मूल्यांकनों को बहुत अधकि आलोचना के बनिा स्वीकार कयिा जा सकता है, क्योंकि वे कमोबेश वास्तवकिता के अनुरूप थे। 1553 में मास्को आए एक क्लेमेंट एडम्स के शब्दों, कि 'tertiam fundorum partem totius imperii tenent monachi' [पूरे साम्राज्य की एक तहिाई भूमि भक्षिुओं की है], की पुष्टि अन्य वदिेशयिों के अवलोकनों से होती है। अंग्रेज़ जेरोम गॉर्स, जो 1572 से 1590 तक लगातार मास्को में रहे, 1580 की परषिद में बोले गए ज़ार इवान चतुर्थ के शब्दों का हवाला देते हैं, जनिका आशय था कि रूसी पादरी 'पूरे साम्राज्य का एक तहिाई हस्सिा' के मालकि हैं। इसी बात का उल्लेख स्वीडन के पीटर पेट्रेई ने भी कयिा था, जो 16वीं सदी के अंत और 17वीं सदी की शुरुआत में मास्को गया था और 1615 में *[487] * में मॉस्कोवति राज्य पर अपनी यात्रा संबंधी टप्पिणयिाँ प्रकाशति की थीं। अपने उत्कृष्ट *रूसी इतहिास पर व्याख्यान* में, एस. एफ. प्लाटोनोव इसे पूरी तरह से संभाव्य मानते हैं कि 16वीं शताब्दी के अंत तक, सभी उपजाऊ भूमि का 37 प्रतशित तक भाग पादरी वर्ग, मेट्रोपॉलटिन, बशिपों और मठों के हाथों में था[488] , साथ ही जंगल और चारागाह भी।

---

[484] 1696 में, ज़ार पीटर महान के शासनकाल के दौरान, एज़ोव के अभयिान के लिए धर्मप्रांतों और मठों को अपने खर्च पर जहाज़ बनाने के लिए बाध्य कयिा गया था। एलागनि, एस. हस्टि्री ऑफ़ द रशयिन फ्लीट: द एज़ोव पीरयिड (1864)। पृ. 51। पुरोहति वर्ग की जमीनों को 17 'कंपान्स्ट्वा' में वभिाजति कयिा गया, प्रत्येक में 8,000 कसिान परविार शामलि थे; काज़ान के मेट्रोपॉलटिन ने अपने अधकिार में एक अलग कंपान्स्ट्वा का गठन कयिा, जसिमें 1,126 कसिान परविार थे, और उन्होंने 9,800 रूबल का भुगतान कयिा। उपरोक्त, पृ. 54, 61। इस उद्देश्य के लिए, कसिान परविारों की एक जनगणना की गई। पोनज़िोवये क्षेत्र की इस जनगणना में, चार मठों को शामलि कयिा गया था। आइए 1696 में परविारों की संख्या की तुलना 1646 और 1678 के आंकड़ों से करें।

[485] मलिीटनि। उद्धृत ग्रंथ, में: रीडगि्स। 1860। खंड 3। पृ. 132, 142–143, 151।

[486] ज़ाव्यालोव। एम्परर कैथरीन द्वतिीय के अधीन चर्च संपत्तयिों का प्रश्न (1900)। पृ. 246–347। दो जनगणनाओं की तुलना से यह स्पष्ट होता है कि सिनिाड की चान्सलरी ने 1744 के आंकड़ों का उपयोग कयिा था।

[487] क्लेमेंस एडम, Op. cit. पृ. 152 में; हॉर्सी, रशयिा एट द क्लोज़ ऑफ़ द 16th सेंचुरी. लंदन (हार्क्लटि सोसाइटी द्वारा प्रकाशति)। उद्धृत: मकारी. 8. पृ. 229; पेट्रेजस. रेग्नी मुश्कोवटिसिी स्कोयिोग्राफयिा. स्टॉकहोम, 1615 (जर्मन संस्करण: *Historien und Bericht von dem Großfürstentum Muschkow durch Petrum Petrejum de Erlesunda*. लीपज़गि, 1620; रूसी में: *History of the Grand Duchy of Moscow*, में: *Readings*. 1867. खंड 2. पृ. 418)।

[488] प्लातोनोव। व्याख्यान (1915, 9वां संस्करण)। पृ. 165। छोटे भू-स्वामतिव, मुख्य रूप से छोटे जागीरें, मठों को बेचे या गरिवी रखे गए थे। वेसेलोव्स्की। 14वीं–16वीं शताब्दयिों में उत्तर-पूर्वी रूस में गाँव और बस्ती (1936)। पृ. 56। तुलना करें: अनेक दस्तावेज़: द ट्वर एक्ट्स। सं. एस. शुमाकोव। खंड 1 (1896) और द उग्लचि एक्ट्स (1899); यह प्रक्रयिा 17वीं शताब्दी तक जारी रही।

केवल मॉस्को क्षेत्र के पाँच जिलों में ही, मठों के पास 230,721.8 च्वार्टसि (115,360.9 देसियानाटा) भूमि थी[489] । और नोवगोरोड क्षेत्र में, 16वीं शताब्दी में मठों की संपत्ति बहुत विशाल थी[490] । 17वीं सदी में पोमोरियि (उस्त्योग, सोल्व्येचोगोडस्क, ड्विना, टोट्मा और अर्खान्गेल्स्क के जिले) और व्याटका क्षेत्र में मठों की जमींदारियाँ विशाल थीं[491] । हमने पहले ही पोनिज़ोवियि क्षेत्र पर चर्चा कर चुके हैं। मठों की जमींदारियाँ केवल पश्चिम में (नोवगोरोड के मठों को छोड़कर) और दक्षिण में, स्टेप की सीमा पर, छोटी थीं, जहाँ सरकार भूमि के मामले में बहुत कंजूस थी, जिसे वह सेवादारों को जमींदारियों के रूप में प्रदान करती थी[492] .

कई मठों की अर्थव्यवस्था के लिए मठ की भूमि पर स्थित शहर और बस्तियाँ बहुत महत्व की थीं, जो मठों को पर्याप्त मौद्रिक किराया देती थीं। ओस्ताश्कोव शहर आधा पैट्रिआर्क की सी (Patriarch's See) और आधा वोलोकलामस्क के सेंट जोसेफ मठ (St Joseph of Volokolamsk Monastery) का था; टिक्विन शहर टिक्विन मठ (Tikhvin Monastery) की भूमि पर स्थित था; नेपोकोकोक बस्ती किरिलोव मठ (Kirillov Monastery) की थी; और बोरोव्स्क बस्ती पाफनुतियेव मठ (Pafnutiev Monastery) की थी। और ये केवल कुछ उदाहरण हैं[493] । लगभग सभी प्रमुख मठों के पास तथाकथित 'मठवासी बस्तियाँ' थीं, जो मठ की भूमि पर स्थित थीं और उनमें मठ के लिए काम करने वाले कारीगर रहते थे। इन सभी शहरों, बस्तियों और गांवों को विशेष चार्टरों द्वारा राज्य को करों के भुगतान से छूट दी गई थी, जो उन्हें विशेषाधिकार और अभियोजन से छूट प्रदान करते थे, और वे मठों को नकद और वस्तुओं के रूप में बहुत भारी किराया देते थे[494] ।

17वीं सदी में मठ संपत्तियों के पैमाने को मठ की भूमि पर स्थित किसान परिवारों की संख्या से दर्शाया गया है – यह जानकारी जनगणना रिकॉर्ड से ली गई है। 1646 के जनगणना रिकॉर्ड से पता चलता है कि धार्मिक संस्थानों की भूमि पर कम से कम 109,267 किसान परिवार थे[495] :

पैट्रिआर्क की सीट के एस्टेट्स पर: 6,481 घर

बिशपरी के एस्टेट्स में: 10,857 घर

439 मठों की संपत्तियों पर: 91,829 घर

1661–62 में, *मठों की भूमि पर स्थित किसान परिवारों की एक और जनगणना की गई; हालाँकि, यह ध्यान देने योग्य है कि मठ कार्यालय की जनगणना स्वयं मठ प्राधिकरणों द्वारा प्रदान की गई जानकारी पर आधारित थी; यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि किसान परिवारों की वास्तविक संख्या कुछ अधिक थी, लेकिन मठों ने उनमें से कुछ को छिपा दिया था। इस जनगणना के अनुसार, 476 मठों के पास 87,907 किसान परिवारों वाले खेत थे*[496] *, जबकि 1696 में मठ की भूमि पर 102,476 परिवार थे*[497] *। यदि हम यह मान लें कि प्रत्येक परिवार में कामकाजी उम्र के चार वयस्क पुरुष शामिल थे - करों के कारण किसान हमेशा अपने परिवारों को विभाजित करने से बचते थे - तो इससे यह पता चलता है कि अकेले आधे मिलियन से अधिक पुरुष मठों की भूमि पर नियोजित थे, और महिलाओं और बच्चों के साथ, कम से कम आधे मिलियन और लोग*[498] *। केवल ये आँकड़े ही मठों की आर्थिक गतिविधि के पैमाने और समग्र रूप से मस्कोवाइट राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए इसके महत्व को दर्शाते हैं। यह समझाता है कि पीटर महान ने, अपने सुधारों को लागू करते समय - जो वास्तव में, मुख्य रूप से महान उत्तरी युद्ध से जुड़ी वित्तीय कठिनाइयों को कम करने के लिए थे - मठों की संपत्ति पर विशेष ध्यान क्यों दिया। मठों की समृद्ध जमींदारियाँ ऐसे उत्कृष्ट स्रोत साबित हुईं, जिनसे वह आवश्यक निधियाँ जुटा सकता था।*

---

[489] रोज़कोव। उद्धृत कृति, पृ. 399, 400। 17वीं सदी के लिए, देखें: गौटयिर। उद्धृत कृति (1937)। पृ. 251–255, 329, 351।

[490] रोज़कोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 385।

[491] बोगोस्लोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 65–77।

[492] ग्नेवुशेव। उद्धृत कृति; बगाले। उद्धृत कृति

[493] अधिक जानकारी के लिए देखें: स्मिरनोव. उद्धृत ग्रंथ 1 (1917). पृ. 108–134.

[494] उपरोक्त, पृ. 170–231.

[495] यह सूची देखें: निकोल्स्की। उद्धृत ग्रंथ 1. 1 (1897)। परिशिष्ट VII–XXV।

[496] 1661 का रजिस्टर (170वां रजिस्टर) में: ORSA के नोट्स। 2 (1861)। पृ. 401–422; 348 मठों में प्रत्येक में 100 से कम घर थे।

[497] सविकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 221–225।

[498] 1480 में मस्कोवाइट राज्य की जनसंख्या लगभग 2.1 मिलियन आत्माएँ थीं; सौ साल बाद, 16वीं शताब्दी के अंत में, यह 4.3 मिलियन थी, और 17वीं शताब्दी के अंत तक - लगभग 12.6 मिलियन थी। पोक्रोव्स्की। जनसंख्या, में: एनसाइक्लोपीडिया सोवियेटिका। खंड 40। मिलियुकॉव का अनुमान है कि 16वीं शताब्दी के मध्य में जनसंख्या 10-11.5 मिलियन थी और 17वीं शताब्दी के अंत तक यह 17-18 मिलियन हो गई थी। मिलियुकॉव। एसेज ऑन द हिस्ट्री ऑफ रशियन कल्चर। खंड 1 (6वां संस्करण)। पृ. 26।

6. मठों की भूमि स्वामित्व की राज्य और कानूनी रूपरेखा

हमने मठों की अर्थव्यवस्था और उसके विकास का एक सामान्य अवलोकन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस तस्वीर को और स्पष्ट करने के लिए, हमें मठों की संपत्तियों के भीतर आंतरिक आर्थिक संबंधों और उनके प्रबंधन में भिक्षुओं की भागीदारी का वर्णन करने की आवश्यकता है। इस वर्णन से, हम देखेंगे कि कैसे कई मठीय निवासी सांसारिक मामलों में लगे हुए थे और इस प्रकार वे सच्चे मठवासी जीवन और आध्यात्मिक तपस्या से विचलित हो गए थे।

14वीं-15वीं शताब्दी में मठवाद पर चर्चा करते समय, हमने इस बात के विशिष्ट उदाहरण दिए हैं कि उस समय नए मठ कैसे स्थापित हुए: लगभग हर संस्थापक ने कानूनी दस्तावेजों के माध्यम से उस भूमि को सुरक्षित करने का प्रयास किया जिस पर मठ स्थित था - शुरुआत में, इसमें केवल एक लकड़ी का चर्च और कुछ लकड़ी की कोठरियाँ होती थीं। शायद संस्थापक हमेशा अपने छोटे आश्रम के स्थान पर एक समृद्ध संपदा के विकसित होने की कल्पना नहीं करते थे; उस समय, उनकी मुख्य चिंता अपने पड़ोसियों से मठ की रक्षा करना (आइए एक बार फिर नए मठों के प्रति स्थानीय आबादी के कभी-कभी शत्रुतापूर्ण रवैये को याद करें), और मठ समुदाय को एक सब्जी का बगीचा उगाने या अनाज बोने में सक्षम बनाना था। इस प्रकार मठों के लिए भूमि प्रदान करने वाले पहले चार्टर सामने आने लगे। फिर उत्तराधिकारी आए: नए मठाधीश, नए मठ समुदाय; वे मठ के संस्थापक जितना तपस्वी आदर्शों से प्रेरित नहीं रहे। कुछ कठोर तपस्वियों के जीवन और उनके द्वारा स्थापित मठों के इतिहास एक पैटर्न को प्रकट करते हैं, जो शायद पुराने रूसी मठवाद की सबसे विशिष्ट विशेषता थी: तपस्वी की सांसारिक प्रसिद्धि—जिसे अक्सर मृत्यु के तुरंत बाद एक स्थानीय सम्मानित संत के रूप में पूजा जाता था—ने उसके द्वारा स्थापित मठ को समृद्ध किया और भिक्षुओं को सांसारिक बना दिया। संन्यासी के भक्तों से भेंटवस्तुएँ—सामान, धन और भूमि—मठ में एक सतत धारा के रूप में आती रहीं। मठ का क्षेत्र वर्ष-दर-वर्ष बढ़ता गया; अब यह केवल अपने आस-पास की भूमि का ही स्वामी नहीं रहा , बल्कि अक्सर मठ से काफी दूर स्थित भूमि-स्वामित्व का भी, कभी-कभी तो एक अलग ही क्षेत्र में[499] । इन नए जमीनों का प्रबंधन करना और उन पर निरंतर निगरानी बनाए रखना आवश्यक हो गया। दान की गई जमीनों पर किसान रहते थे, और मठ तथा राज्य के साथ उनके संबंधों को विनियमित करना आवश्यक था।

मठों के भूमि स्वामित्व की एक विशेष विशेषता की व्याख्या करना आवश्यक है। भूमि मालिकों के रूप में, मठों के पास उन्हें प्रदान की गई भूमि पर पूर्ण स्वामित्व था, जिसे मस्कोवाइट राज्य की कानूनी शब्दावली में आमतौर पर 'पालकत्व अधिकार' (patronage rights) कहा जाता था[500] । भूमि-स्वामियों के रूप में, मठों को अपनी स्वामित्व वाली भूमि पर लगाए गए सभी कर राज्य को चुकाने के लिए बाध्य थे; साथ ही, मठ की भूमि पर रहने वाले किसानों द्वारा चुकाया गया सारा किराया मठ को जाता था। मठों द्वारा भूमि के लिए कोषागार को चुकाए जाने वाले करों की राशि, और मठ तथा किसानों के बीच के संबंध, अनुदान और प्रतिरक्षा चार्टरों द्वारा विनियमित होते थे, जिन्होंने इन संबंधों को कानूनी बल प्रदान किया[501] ।

उसके मालिक के आधार पर, भूमि—चाहे खेती योग्य हो या अनुपजाऊ—को संप्रभु की भूमि, या महल की भूमि कहा जाता था, यदि वह राज्य की होती; पैतृक भूमि, यदि वह अपानज राजकुमारों या बोयारों के वंशजों की विरासत के रूप में उनकी संपत्ति होती, यानी एक पैतृक संपत्ति; 'एस्टेट भूमि' – यदि यह राज्य की सेवा के लिए सेवा पुरुषों को उनकी सेवा के भुगतान के रूप में प्रदान की गई हो। मेट्रोपोलिटन, बिशपरीक, मठों और पैरिशों से संबंधित भूमि को 'चर्च भूमि' कहा जाता था, और, मालिक के आधार पर, इसे 'मेट्रोपोलिटन', 'एपिस्कोपल' या 'मठ संबंधी' भूमि कहा जाता था।

मस्कोवी राज्य की आबादी को राज्य के प्रति उनकी जिम्मेदारियों और उन जिम्मेदारियों से जुड़े अधिकारों के अनुसार समूहों में विभाजित किया गया था। भूमि-स्वामियों के रूप में, इन समूहों के सदस्यों ने अपनी स्वामित्व वाली

---

[499] कुछ संतों के जीवन में इस बात का वर्णन है कि घरेलू चिंताओं ने मठवासी जीवन की पूरी संरचना को कैसे प्रभावित किया; उदाहरण के लिए, भिक्षु इनोकेन्टी द्वारा बोरोव्स्क के पाफनुटियस के सांसारिक जीवन के अंतिम दिनों का वृत्तांत: इनोकेन्टी लिखते हैं कि मृत्युशय्या पर भी, पाफनुटियस रोजमर्रा की चिंताओं में मग्न थे। क्ल्यूचेव्स्की। लाइव्स। पृ. 437.

[500] सर्गेयेवचि (3), व्लादिमीर्स्की-बुडानोव और पावलोव-सिलिवान्स्की द्वारा पहले से ही उल्लेख किए गए कार्यों के अलावा, यह भी देखें: ज़ागोस्किन, एन. हिस्ट्री ऑफ़ लॉ इन द मस्कोवाइट स्टेट (1877)। डियाकोनोव, एम. एसेज़ ऑन द सोशल एंड पॉलिटिकिल स्ट्रक्चर ऑफ़ एन्शिएंट रस (1908; 2nd ed. 1912); बेलेयाव, आई. 'मस्कोवाइट राज्य में भूमि स्वामित्व के रूप', में: व्रेमेननिक, खंड 11 (एक पुरानी लेकिन मूल्यवान कृति); ब्लूमेनफेल्ड. 'प्राचीन रूस में भूमि स्वामित्व के रूप' (1884); रोज़डेस्टवेंस्की. '16वीं सदी में मस्कोवाइट राज्य में सेवक भूमि स्वामित्व' (1897); वेसेलोव्स्की, एस. 'पैट्रिमोनियल प्रणाली की उत्पत्ति के प्रश्न पर' (1926); वही लेखक। '16वीं शताब्दी के दूसरे भाग में मस्कोवाइट रस में मठों की भूमि स्वामित्व', इस्त. ज़ैप. 10 (1941) में (दुर्भाग्य से, यह कृति मेरे पास उपलब्ध नहीं है)।

[501] विशेष रूप से देखें: वेसेलोव्स्की, 'ऑन द क्वेश्चन' (1926)।

भूमि की कानूनी स्थिति निर्धारित की; बाद में, 16वीं शताब्दी के दूसरे छमाही से, कानूनी प्रथा ने इस संबंध को उल्टी प्रक्रिया से परिभाषित किया, यानी, किसी विशेष प्रकार की भूमि का उपयोग राज्य खजाने के संबंध में जनसंख्या के एक विशिष्ट श्रेणी के भीतर मालिक की वर्गीकरण को निर्धारित करता था।

मोटे तौर पर, आबादी को दो समूहों में विभाजित किया गया था: 1) 'सफेद-भूमि' के मालिक और 2) 'कर-भुगतान करने वाले' लोग। पहले समूह में पादरी और सेवा में रहने वाले (बोयार और जमींदार) शामिल थे, जो अपनी भूमि के बदले में अपने कर्तव्यों का पालन करते थे - चाहे वह चर्च के प्रति हो या शासक के प्रति; दूसरे समूह में वे लोग शामिल थे जो करों का भुगतान करने के लिए बाध्य थे - चाहे नकद में हो या वस्तु के रूप में। परिणामस्वरूप, मस्कोवाइट राज्य में भूमि दो श्रेणियों में विभाजित थी: 'सफेद' और 'काली' भूमि। 'सफेद' भूमि उन व्यक्तियों की होती थी जो करों से मुक्त थे, जबकि 'काली' भूमि कर-भुगतान करने वाले किसानों की होती थी[502] ।

किसी मठ की भूमि 'सफेद' या 'काली' हो सकती थी। यह लगभग एक सार्वभौमिक नियम था कि जिस भूमि पर मठ स्वयं स्थित था—अपने चर्च या चर्चों, मठाधीश और भिक्षुओं की कोठरियों, भोजनशाला और सेवा क्षेत्रों के साथ—वह 'सफेद' भूमि थी और विशेष अनुदान पत्रों द्वारा करमुक्त थी। यह भूमि आमतौर पर पत्थर की दीवार या लकड़ी की बाड़ से घिरी होती थी। मठ का सब्जी का बगीचा और खेती योग्य भूमि—जिसे मठ के सामुदायिक संन्यासियों द्वारा या मठ के नौकरों और किसानों द्वारा जोता जाता था, जो मठ के साथ अनुबंध के तहत उसके लिए विभिन्न प्रकार के काम करने के लिए बाध्य थे—उन्हें भी 'सफेद भूमि' माना जाता था। आमतौर पर, हालांकि हमेशा नहीं, विशेष पेटेंट पत्रों में मठ के परिसर के पास या अन्य स्थानों पर स्थित मठ की संपत्तियों के एक हिस्से को भी 'सफेद भूमि' के रूप में नामित किया जाता था। मठों के पास इस 'सफेद भूमि' पर पूर्ण स्वामित्व होता था।

हालांकि, मठों के पास 'काली भूमि' भी हो सकती थी, जिसे यद्यपि मठ की भूमि कहा जाता था, पर वह राज्य के साथ अलग कानूनी और राजकोषीय संबंधों के अधीन थी - किसी भी अन्य 'काली भूमि' के समान। अक्सर, खरीद, विनिमय या मृतकों की स्मृति में किए गए दानों के माध्यम से, मठों ने गाँवों और बस्तियों वाले भूमि-स्वामित्व प्राप्त किए जिन्हें 'त्यागला' या 'काली' भूमि के रूप में वर्गीकृत किया गया था। मठ के कब्जे में आने पर, यह भूमि 'ब्लैक लैंड' ही बनी रही, और मठों ने उस पर पहले लगाए गए सभी करों का नकद और वस्तु के रूप में राज्य को भुगतान करने का दायित्व निभाया। 17वीं शताब्दी में, मुख्य रूप से उत्तर में, तथाकथित 'काले मठ' उभरे, जो शुरू से ही 'काली जमीन' पर बनाए गए थे और जिनकी पूरी संपत्ति 'त्यागली' जमीन से बनी थी[503] । व्यक्तिगत मठों का इतिहास दर्शाता है कि मठ प्राधिकरणों ने हमेशा अपनी 'सफेद' जमीनों का विस्तार करने, पेटेंट पत्रों के माध्यम से अपनी 'काली' जमीनों को 'सफेद' करने, और इस प्रकार राज्य के प्रति अपने वित्तीय दायित्वों को कम करने का प्रयास किया। 16वीं सदी में, इस तरह की याचिकाएँ लगभग हमेशा सफल होती थीं, लेकिन 17वीं सदी में, 'समय की परेशानियों' (Time of Troubles)

---

[502] आधिकारिक भाषा में, 'बेली' शब्द का अर्थ कर से मुक्त व्यक्ति था; 'ओबेलटि' का अर्थ था कर से छूट देना; एक 'बेलोपोमेस्टेट्स' 'बेलाया' भूमि का मालिक था, जिस पर वह राज्य को कोई कर नहीं देता था। ऐसी भूमि के स्वामित्व का अधिकार राज्य की सेवा करने के दायित्व से जुड़ा हुआ था। कर-भुगतान करने वाले किसान या तो 'सफेद' भूमि पर या शासक की भूमि पर रहते थे, और वे दोनों प्रकार की भूमि का उपयोग करने के अधिकार के लिए कर का भुगतान करते थे। इस प्रकार, भूमि के संबंध में कर-भुगतान करने वाले किसानों का अधिकार केवल दूसरों की भूमि का उपयोग करने का अधिकार था। वे कर-भुगतान करने वाले किसान जो शासक की भूमि पर रहते थे और शहरी समाज तथा ग्रामीण समुदाय बनाते थे, उन्हें 'काले लोग' के रूप में जाना जाता था। ये मुख्य रूप से राज्य के किसान और नगरवासी थे। यह निम्नलिखित परिस्थिति भी ध्यान देने योग्य है: जो किसान सेवा वर्ग की भूमि या चर्च की भूमि पर रहते थे और राज्य के प्रति कुछ दायित्वों का निर्वहन करते थे, उन्हें आधिकारिक शब्दावली में 'काले लोग' नहीं कहा जाता था, बल्कि, जिस भूमि पर वे रहते और काम करते थे, उसकी प्रकृति के अनुसार, उन्हें 'जमींदार के लोग' या 'मठवासी लोग' कहा जाता था। इस श्रेणी के किसानों के लिए, जमींदार दायित्वों के संबंध में उनके और राज्य के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता था और, छूट-पत्रों के आधार पर, न्यायिक अधिकार भी रखता था। दूसरी ओर, 'काले लोग' अपने दायित्वों को उन समुदायों के माध्यम से पूरा करते थे जिनसे वे संबंधित थे। इस विषय पर आगे पढ़ने के लिए, देखें: ड्याकोनोव, एम. एसेज़ (1908)। प्रिकाज़ (Prikazy) की भाषा में, 'शासक की काली भूमि' से तात्पर्य कर-भुगतान करने वाले काले किसानों द्वारा उपयोग की जाने वाली भूमि से था, जबकि 'शासक की भूमि' अभिव्यक्ति से तात्पर्य उस भूमि से था जो राज्य द्वारा सेवा पुरुषों को उनकी सेवा की अवधि के लिए और उस सेवा की प्रकृति के आधार पर जागीरों के रूप में प्रदान की जाती थी। तुलना करें: रोज़डेस्ट्वेंस्की, उद्धृत ग्रंथ। हालाँकि, सभी भूमि हमेशा शासक की भूमि ही रहती थी – ज़ार और महा राजकुमार की भूमि; उदाहरण के लिए, 1550 के संहिता के § 84, AI. 1, संख्या 155 की तुलना करें। मॉस्को के शासक के प्रजाजनों की कानूनी चेतना में और कानूनी दस्तावेजों की भाषा में, सभी भूमि का सर्वोच्च स्वामी राज्य या ज़ार था: hence पुराने रूसी मुहावरे: 'भूमि ज़ार की है, लेकिन मैं इसका मालिक हूँ', 'भूमि ईश्वर, ज़ार और ग्रैंड प्रिंस की है, लेकिन खेत और फसल हमारी हैं'।

[503] इस पर देखें: बोगोस्लोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ 1, पृ. 91 से आगे। उदाहरण के लिए, ऐसा ही एक 'काला' मठ चेल्मोगोर्स्क हर्मिटेज था। जैसा कि 1676 की मठाधीश की रिपोर्ट से देखा जा सकता है, हर्मिटेज में कोई किसान नहीं थे; मठ की भूमि का कुछ हिस्सा पट्टे पर दिया गया था और कुछ हिस्सा स्वयं मठ समुदाय और फसल कटाई के लिए काम पर रखे गए मजदूरों द्वारा जोता जाता था; मठ की सभी मामूली आकार की संपत्तियाँ 'ब्लैक लैंड' थीं। RIB. 14. पृ. 442.

से जुड़ी वित्तीय कठिनाइयों के कारण, सरकार ने इस मामले पर एक पूरी तरह से अलग नीति अपनाई और लगभग हमेशा मठों की अपनी 'काली' भूमि को 'सफेद' के रूप में पुनर्वर्गीकृत करने की याचिकाओं को खारिज कर दिया[504] ।

कुछ मठों को विशेष पेटेंट पत्रों द्वारा कुछ दायित्वों से छूट दी गई थी, लेकिन पूर्ण छूट एक दुर्लभ घटना थी। प्रसिद्ध ट्रिनिटी-सर्गीय मठ को सभी दायित्वों से पूर्ण छूट प्राप्त थी – एक 'टार्खन' जिसे 1551 में पुष्टि मिली; यहाँ तक कि मठ की भूमि पर रहने वाले किसान भी राज्य के सभी दायित्वों से मुक्त थे। इसके अलावा, 1541 की एक प्रतिरक्षा चार्टर के आधार पर, किसान केवल मठ के मठाधीश के अधीन थे। जहाँ तक मस्कोवाइट राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित मठ की जमीनों पर सेवा करने वाले पुरोहितों का सवाल है, वे मेट्रोपॉलिटिन (और बाद में पादरी) और डायोसीज़न बिशपों को कर देने से मुक्त थे। 1625 में, जार मिखाइल के अधीन, एक नए तिरहान ने कुछ बदलाव किए: तब से, यह मठ, अन्य मठों की तरह, महल कार्यालय को 'याम्स्काया' करों का भुगतान करने, स्ट्रेल्त्सी के रखरखाव के लिए अनाज की आपूर्ति करने, और किले के निर्माण के लिए धन का योगदान करने के लिए बाध्य था - 'किला परियोजना'[505] । वोल्कोलामस्क में स्थित सेंट जोसेफ मठ को भी 16वीं शताब्दी में सभी कर्तव्यों से मुक्त कर दिया गया था, सिवाय 'याम्स्काया' कर और स्ट्रेल्ट्सी के रखरखाव के लिए अनाज की आपूर्ति के[506] ।

सभी मठों ने यहाँ उल्लिखित दायित्वों को पूरा किया, और हमें उनके उन्मूलन के लिए किसी भी याचिका की जानकारी नहीं है।

7. मठ के किसान

मठवासी किसानों की स्थिति एक अलग अध्ययन का विषय हो सकती है – हम केवल सामान्य रूप से इसकी रूपरेखा प्रस्तुत करेंगे, क्योंकि इस मुद्दे की विस्तृत जांच हमारे कार्य के दायरे को काफी बढ़ा देगी। मठ की भूमि पर किसानों की उपस्थिति ने मठों को राज्य नीति की जटिलताओं में और भी गहराई से खींच लिया। अपने विवादों में, गैर-स्वामित्ववादियों ने न केवल मठों और उनके किसानों के बीच संबंध की प्रकृति के खिलाफ[507] , बल्कि सबसे बढ़कर आबाद जमींदारियों के खिलाफ ही विरोध किया, क्योंकि उन्हीं के कारण मठ देश के राजनीतिक और आर्थिक जीवन के सभी उतार-चढ़ावों में अपरिवर्तनीय रूप से उलझ गए थे।

मठ की भूमि पर एक श्रम शक्ति के रूप में किसानों की उपस्थिति, मठ कृषि के सफल विकास और मठों की समृद्धि में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता थी। मठ और उसके किसानों के बीच संबंध और किसानों की स्थिति दोनों पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इससे हमें उस युग के मठ जीवन के चरित्र में नई विशेषताओं का पता लगाने में मदद मिलेगी।

16वीं सदी तक, किसान जमींदार की जमीन पर स्वतंत्र किरायेदार के रूप में रहते थे, जो 'पोरादना' नामक एक अनुबंध के तहत—जो 16वीं सदी में आमतौर पर मौखिक और 17वीं सदी में लिखित रूप में होता था—अपनी फसल का एक हिस्सा जमींदार को सौंपते थे। इस किराए के अतिरिक्त – जो फसल का एक चौथाई से आधा तक होता था – किसानों को ज़मींदार के निर्देशानुसार कुछ निश्चित कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़ता था; अक्सर, इन अनुबंधों की शर्तों में, हमें नकद या वस्तु के रूप में किराए के भुगतान, और फसल का एक हिस्सा सौंपे बिना ही करवट श्रम (corvée labour) करने के प्रावधान मिलते हैं। इसके अलावा, किसानों को भूमि पर लगाया गया राज्य कर भी चुकाना होता था। पट्टेदारों के लिए, ज्यूबिली वर्ष (jubilee years) स्थापित किए गए थे, जिनके दौरान उन्हें किराए और अनिवार्य श्रम (corvée labour) से छूट दी जाती थी, जबकि इन वर्षों के दौरान भूमि-स्वामी राज्य कर का भुगतान करने की जिम्मेदारी

---

[504] बोगोस्लोव्स्की। पूर्वोक्त, पृ. 93, 96। दक्षिण में, जिसे 'जंगली क्षेत्र' के नाम से जाना जाता था, वहाँ हर भूखंड औपचारिक रूप से ज़ार (संप्रभु की भूमि) की संपत्ति था; हालाँकि, वास्तविकता में, वहाँ की सारी भूमि सेवादारों में बाँट दी गई थी; वहाँ नव-स्थापित मठों को बहुत कम भूमि मिली। तुलना करें: नेकरासोव, एन. '16वीं सदी में रियाज़ान क्षेत्र के इतिहास पर निबंध', में: झएमएनपी. 1914. 4; बेलोसेरकोव्स्की, जी. '16वीं और 17वीं सदी में तुला और तुला जिले', में: कीव विश्वविद्यालय. 1914–1915. यद्यपि वहाँ काली मिट्टी नहीं थी, कर किसानों, मठों और कुछ हद तक सैन्य सेवा वर्ग द्वारा भी राज्य को चुकाए जाते थे। डोब्रोक्लोन्स्की, ए. 'द सोलोचिनिस्की मठ', में: रीडिंग्स. 1888. 1. पृ. 48, 61, 62–68.

[505] गोर्स्की। विवरण। खंड 1। पृ. 324। प्रतिरक्षा चार्टर में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया गया: मठ का मठाधीश, जो पहले (गैर-धार्मिक मामलों में) ज़ार के अधिकार क्षेत्र के अधीन था, अब पैट्रिआर्क के अधिकार क्षेत्र के अधीन हो गया। ज़ार बोरिस के शासनकाल के दौरान, मठ की ज़मीनों पर रहने वाले किसानों को कुछ नए विशेषाधिकार प्रदान किए गए। वही, पृ. 225।

[506] स्मिरनोव। पूर्वोक्त, पृ. 96.

[507] यह ध्यान देने योग्य है कि किसानों की आर्थिक स्थिति अक्सर इतनी अनुकूल होती थी कि मठ पर उनका कोई बकाया ऋण नहीं होता था। सेंट जोसेफ-वोल्कोलांस्क मठ के किसानों की स्थिति भी ऐसी ही थी, विशेष रूप से 1573–1581 के दौरान, जब आसपास के क्षेत्र में एक कृषि संकट मंडरा रहा था, जिसने मॉस्को के केंद्र को हिला कर रख दिया था; यह उल्लेखनीय है कि मठ के अधिकारियों ने उन किसानों को, जो अपनी सेवा की निश्चित अवधि के अंत में बिना किसी ऋण के मठ की भूमि छोड़ रहे थे, सेवा समाप्ति पर भुगतान दिया। 16वीं शताब्दी के अंत से वोल्कोलांस्क मठ के आय और व्यय खातों में, इस्त. अर्ख. 2 में, पृष्ठ 72, 76, 83, आदि।

लेता था। पट्टे की अवधि हमेशा पट्टा समझौतों में निर्दिष्ट नहीं होती थी; कुछ मामलों में, इसे 10 साल निर्धारित किया गया था, जिसके अंत में किरायेदार, बशर्ते उसने जमीन मालिक के साथ सभी खाते निपटा लिए हों, संपत्ति छोड़ सकता था। 17वीं शताब्दी में, पट्टा समझौतों में किरायेदार के लिए प्रतिकूल एक बदलाव पेश किया गया: अब किरायेदार को जमीन छोड़ने का अधिकार खो बैठता था, और अगर वह चला जाता भी, तो जमीनदार को उसे वापस लाने का अधिकार मिल जाता था। इस तरह से किसानों का उस जमीन से बंधन बना जिस पर वे खेती करते थे, जो बाद में जमीनदार से उनके बंधन में विकसित हुआ और दासता का आधार बन गया[508] ।

ये सभी बातें, सामान्य रूप से, मठ की ज़मीन पर रहने वाले किसानों पर भी लागू होती हैं, लेकिन यहाँ किसानों की विभिन्न श्रेणियों से संबंधित कुछ विशिष्ट विशेषताओं की पहचान की जा सकती है। ये श्रेणियाँ मठ की ज़मीन के स्वामित्व के विकास के दौरान उभरीं।

इसके स्थापना पर, एक मठ अनुदान-पत्र के आधार पर उस भूमि को प्राप्त करता था जिस पर किसान पहले से ही रहते थे, ताकि वे अब मठ के किसान या 'मठ के लोग' बन गए। वे मठ के साथ औपचारिक पट्टा समझौते करते थे और किराया देते थे। 16वीं शताब्दी में, इन किसानों को कर रजिस्टरों में 'पुराने बस्तियों वाले' (old settlers) के पदनाम के तहत दर्ज किया गया; बाद में, सभी मठ संबंधी अभिलेखों में उन्हें इसी नाम से संदर्भित किया गया। एम. ड्याकोनोव के अनुसार, धीरे-धीरे एक ऐसा नियम विकसित हुआ जिसके तहत इस श्रेणी के किसान, एक बार भूमि रिजिस्टरों में दर्ज हो जाने के बाद, अपने पट्टे पर ली गई ज़मीन छोड़ने का अधिकार खो देते थे । मठ के अधिकारियों को भगोड़े 'पुराने बस्तियों' को ढूंढकर वापस लाने का अधिकार प्रदान किया गया था[509] । उपहार या खरीद के माध्यम से, मठों ने नई जमींदारियाँ प्राप्त कीं, जिनमें किसान भी बसे हुए थे। मठ के अभिलेख इन किसानों को भी 'पुराने बस्तियों' के रूप में वर्गीकृत करते हैं। ज्यादातर मामलों में, पिछले भूमि मालिकों के साथ किए गए पट्टा समझौते लागू रहे; मठ के अधिकारियों ने केवल इन समझौतों की पुनःपुष्टि की, साथ ही कुछ संशोधन भी किए, जो अक्सर किसानों के दायित्वों को कम करने के लिए बनाए गए थे। यह राहत मुख्य रूप से मठ के लिए अनाज के रूप में किराया और अनिवार्य श्रम (कोर्वे) के भुगतान से संबंधित थी[510] ।

मठिया किसानों की दूसरी श्रेणी में तथाकथित 'नव आगंतुक', या 'नए बसाहटियों' शामिल थे। पहले, ये वे किसान थे जो मठ प्राधिकरणों के पास मठ की भूमि पर बसाने की अनुमति के अनुरोध के साथ गए थे; दूसरे, वे किसान थे जिन्हें मठों ने स्वयं अपनी भूमि पर आमंत्रित किया था या उन्हें एक संपत्ति से दूसरी संपत्ति में बसाया था। 'काली' भूमि पर लगाया गया कर का बोझ अक्सर किसानों को अपने गाँव छोड़ने और मठों की 'सफेद' भूमि पर बसाने के लिए मजबूर करता था, जहाँ उन्हें अपना घर बसाने के लिए वित्तीय सहायता मिल सकती थी और उन्हें करों से छूट दी जाती थी[511] । नए आगंतुकों को एक निश्चित अवधि के लिए भूमि किराए से लगभग हमेशा छूट दी जाती थी – जो 3 से 5 वर्षों तक, या, कम आम तौर पर, 10 वर्षों तक होती थी – या इस किराए को काफी कम कर दिया जाता था; इसके अलावा, उन्हें अपना घर बसाने के लिए मठ से वित्तीय 'सहायता' प्राप्त होती थी। मठ के साथ किए गए अनुबंध में, पट्टे की अवधि और वित्तीय सहायता, मठ के प्रति श्रम दायित्व, राज्य को देय कर और मठ को देय किराया – नकद और अनाज के रूप में – से संबंधित शर्तें बहुत विस्तार से निर्धारित की गई थीं, जैसा कि सभी दायित्वों के पालन की मांग करने और उन किसानों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने का मठ प्राधिकरणों का अधिकार था जो इन दायित्वों को पूरा करने में विफल रहे। मठ आमतौर पर विशेष खाता-बही रखते थे, जिसमें सभी किसानों के दायित्व बड़ी सटीकता से दर्ज किए

---

[508] देखें: बेलेयेव, आई. रूस में किसान (1860); द्याकोनोव, एम. निबंध (1898); ग्रेकोव, बी. रूस में किसान (1946). दासता की उत्पत्ति पर: ग्रेकोव, उद्धृत ग्रंथ; एंगेलमैन, आई., *Die Leibeigenschaft in Russland* (1884); क्लूचेव्स्की, वी., 'रूस में दासता की उत्पत्ति', *Russkiy Mir*, 1885, संख्या 10 में, और यह भी: *Experiments and Studies* (1918) में; वही, *Geschichte Russlands*, खंड 2, अध्याय 17; डेबोल्स्की, एन. 'जमींदार किसानों के दासत्व के प्रश्न पर', में: ZhMNP. 1895. 11; बेलेयेव, पी. 'पुराना रूसी स्वामित्व और किसानों का दासत्व', में: ZhMNP. 1916. 8–9.

[509] ड्याकोनोव। निबंध (1898)। पृ. 16–39। ग्रेकोव। पूर्वोक्त, पृ. 630, 641, जहाँ उन्होंने ड्याकोनोव के कुछ दावों को पूरक किया है; और यह भी: स्मिरनोव, आई. 'दीर्घकाल से बसे किसानों के प्रश्न पर', में: वोप्रोसी इस्तोरि. 1946. 8–9 (यह कृति मेरे पास उपलब्ध नहीं है)।

[510] ड्याकोनोव। वही; निकोल्स्की। उद्धृत ग्रंथ 1, 2, पृष्ठ 37 आदि; शेचेपेटोव। उद्धृत ग्रंथ, पृष्ठ 97। 15वीं शताब्दी की शुरुआत में ही, अनुदान पत्रों में 'पुराने बस्तियों वालों' का उल्लेख है, जो उन किसानों के विपरीत हैं जो बाद में मठ की भूमि पर बसे थे। उदाहरण के लिए, तुलना करें: AAE. 1. संख्याएँ 20, 21, 51, 53; और साथ ही संख्याएँ 5, 34, 35। मेट्रोपॉलिटन साइप्रियन (1391) का पत्र मठ के लिए किसानों द्वारा किए जाने वाले श्रम की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता है। AAE. 1. संख्या 11.

[511] हमारे पास 16वीं और 17वीं शताब्दी के कई दस्तावेज़ हैं जो 'काले गांवों' और सेवा वर्ग के एस्टेट्स से किसानों के पलायन का उल्लेख करते हैं। AAE. 1. संख्या 234 (1552), 258 (1561); AYU. संख्या 177, 178, 183 (16वीं सदी); 189, 194, 196 (17वीं सदी)। ट्रिनिटी-सर्गेयस मठ पर: खातों का संग्रह (1614), में: सामाजिक और आर्थिक इतिहास के स्मारक। 1 (1929); इओसिफोव मठ पर: आय और व्यय खाता-बही, में: ऐतिहासिक अभिलेखागार 2. पृ. 70, 74, 83, 84.

जाते थे; ये कतिाबें व्यक्तगित मठ संपत्तयिों के इतहिास और मठ के कसिानों की स्थतिकिा वर्णन करने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत हैं; इनमें सभी कसिानों की अनविार्य श्रम (कोर्वी लेबर) का वसि्तृत रकिॉर्ड भी शामलि था; 17वीं शताब्दी में, इनमें इस श्रम के मौद्रकि मूल्य का संकेत भी शामलि था, क्योंकउिस समय, मस्कोवाइट राज्य में मौद्रकि संबंधों के वकिास के संबंध में, मठ प्राधकिरणों ने वस्तु-रूप में करिाए के भुगतान को मौद्रकि भुगतान से बदलने का प्रयास कयिा था। केवल धनी मठ, जनिके पास मौद्रकि करिाए, नमक की बक्री और व्यापार से प्राप्त पूंजी थी, ही प्रबंधन की मौद्रकि प्रणाली में पूर्ण रूप से परविर्तति हो सके; छोटे मठों, जन्हिें वभिन्नि कृषउित्पादों—जैसे बीन्स, सब्जी और मक्खन तेल, पनीर, शहद, अंडे, मशरूम, बेरी, आदि—की आवश्यकता होती थी, वे आमतौर पर अपने कसिानों से मठ को उनके श्रद्धांजलकिा एक नश्चिति हस्सिा वस्तु के रूप में सौंपने की मांग करते थे[512] . उत्तर में, पोमोरे में, नए बसने वाले आमतौर पर 'पोलोव्नकिी' के रूप में मठ की भूमपिर बसे, और वे खेती की गई भूमकि लिए अपनी फसल का आधा हस्सिा करिाए के रूप में देते थे; वभिन्नि दस्तावेज़ दखिाते हैं ककिरियेदारों की यह श्रेणी 15वीं शताब्दी में पहले से ही व्यापक थी, उदाहरण के लिए करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ की भूमपिर। 'पोलोव्नकिी' के लिए मठ के प्रतदिायत्वि आमतौर पर फसल का आधा हस्सिा सौंपने तक ही सीमति था, और यदउिन्हें करिाया भी देना होता था, तो वह नगण्य होता था[513] ।

मठवासी कसिानों की एक तीसरी श्रेणी, तथाकथति 'बोबल्सि' ([514]), ने भी मठ की भूमि-धारति में एक महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई। बोबल्सि शायद ही कभी मठ की भूमपिट्टे पर लेते थे; उन्हें केवल उनके घर-आँगन के लिए भूमप्रिदान की जाती थी - अक्सर कसिी मृत या भाग गए कसिान के घर-आँगन के लिए; वे मठ के साथ कसिी भी संवदिात्मक समझौते में नहीं बँधते थे और कर नहीं देते थे; अधकितम, यदउिनके पास अपना सब्जी का बगीचा या एक छोटा सा खेत होता तो वे थोड़ा सा करिाया देते थे। वे मठ के लिए कएि गए काम के माध्यम से अपना जीवन यापन करते थे: वे मछुआरे, कारीगर, दर्जी, मधुमक्खी पालक, आदथि। वभिन्नि मठों की जमीनों पर बोबलि परविारों की संख्या अलग-अलग थी, लेकनि ऐसे परविार सभी मठों की जमीनों पर मौजूद थे; 'समय की परेशानयिों' (Time of Troubles) के बाद उनकी संख्या में काफी वृद्धहिुई, जब कई कसिान परविार पूरी तरह से बर्बाद हो गए थे; केवल 17वीं शताब्दी के दूसरे छमाही में ही बोबलि परविारों की संख्या में गरिावट देखी गई। मठों के लिए, 'बोबल्सि' एक सस्ती श्रम शक्तप्रिदान करते थे, जो वभिन्नि प्रकार के कार्यों के लिए उपयुक्त थी, जैसा कविभिन्नि खाता-बही[515] द्वारा प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शति कयिा गया है।

जागीरों के प्रसार और मठों की अर्थव्यवस्थाओं के वसि्तार के लिए एक लगातार बढ़ती हुई श्रम शक्तकिी मांग हुई; ऊपर बताई गई कसिानों की तीन श्रेणयिाँ अपर्याप्त थीं। इसने मठों को दो तरह की कार्रवाई करने के लिए मजबूर कयिा: पहली, कसिानों की संख्या बढ़ाना; और दूसरी, मठों पर नर्भिर कसिानों की दो और श्रेणयिाँ बनाना – मठ के नौकर, या 'sluzhki', और मठ के 'संतान'।

8. मठ संपत्तयिाँ और दासता का उदय

16वीं सदी के उत्तरार्ध और 17वीं सदी के पूर्वार्ध के दौरान मठों ने अपनी भूमपिर नए कसिानों को आकर्षति करने के प्रयास जारी रखे। चूँकयिह अनदेखा नहीं रहा—चाहे वह कुलीनों की जागीरों और हवेलयिों का मामला हो या राज्य-स्वामत्वि वाली जागीरों का—सरकार को समय-समय पर मठों द्वारा कसिानों को अवैध रूप से भर्ती करने पर रोक लगाने या उस पर प्रतबिंध लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा। फरि भी इस मुद्दे पर भी, सरकारी नीतअिसंगत थी,

---

[512] प्रॉमसिरी नोट के उदाहरण: AYu. क्रमांक 177, 178 (16वीं सदी, व्याझत्स्की मठ से संबंधति); RIB. 12. पृष्ठ 458, 1366, 1468 (प्रलिुत्स्की मठ से संबंधति); Acts. मेल्नकिोव द्वारा संपादति। 1. संख्या 21, 23, 26, 27, आदि(पोनज़िोव्ये में पोक्रोव्स्की मठ से)। वभिन्नि स्थानों पर व्यक्तगित मठों की जमींदारयिों पर, कसिानों ने वभिन्नि कर्तव्य नभिाए; यह स्थानीय परस्थितियिों पर नर्भिर करता था; उदाहरण के लिए देखें: AAE. 1. संख्या 348 (ट्रनिटिी-सर्गीय मठ)। डोब्रोक्लोन्स्की। उद्धृत कृति, पृ. 61, 69–85; ड्याकोनोव। नबिंध (1898), पृ. 131, 163। खाता पुस्तकें: जोसेफ़ मठ की, में: Ist. arkh. 2; बोल्डनि मठ की, में: RIB. 37; कोर्नलिएिव-कोमेल्स्की मठ की, में: LZAK. 5 (1871); कोरयिाज़ेम्स्की मठ के कार्य, में: LZAK. 23 (1910).

[513] RIB. 12. पृ. 198 (1634), 201 (1637); AI. 3. संख्या 240 (1627). ड्याकोनोव. नबिंध (1898). पृ. 147 आदि; ग्रेकोव. रूस में कसिान. पृ. 694.

[514] हम पुराने रूसी शब्द 'बॉबलि' का जर्मन में अनुवाद 'उंग्लक्लिीशे' ('दुर्भाग्यपूर्ण') के रूप में करते हैं; दस्तावेज़ों में, इन कसिानों को अक्सर 'नेवज़ोद्नकिी' के रूप में संदर्भति कयिा जाता है। तुलना करें: ड्याकोनोव। नबिंध (1898)। पृ. 206–240; बोगोस्लोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ 1. पृ. 136।

[515] यह भी देखें: रोज़डेस्ट्वेंस्की, एस. '16वीं–17वीं शताब्दयिों में मस्कोवाइट राज्य की ग्रामीण आबादी', में: रूसयिन हस्टि्री इन एसेज़। संपा. एम. डोवनार-ज़ापोल्स्की। खंड 3 (1912)। पृ. 41–44।

क्योंकि नए पेटेंट पत्रों की एक निरंतर धारा ने विशेष मठों को छूट दे दी या पहले से जारी किए गए नियमों में उनके लिए खामियाँ खोल दीं, जिसने, बेशक, मठों के पक्ष में काम किया।

चूंकि किसानों को मठों की भूमि पर भेजना निजी या सरकारी जमीनों से उनके प्रस्थान से जुड़ा हुआ था, इसलिए 16वीं और 17वीं शताब्दी में लागू किए गए सरकारी उपाय किसानों के प्रवासन पर सामान्य प्रतिबंध लगाने पर लक्षित थे; दूसरे शब्दों में, किसानों की स्वतंत्रता पर एक धीमी, क्रमिक प्रतिबंध, जिसने अंततः दासता के उदय को जन्म दिया। व्यापक ऐतिहासिक शोध से पता चला है कि किसानों की दासता मॉस्कोवित रूस में कृषि की स्थिति से जुड़ी विभिन्न परिस्थितियों की एक जटिल अंतक्रिया का परिणाम थी; मूल रूप से, यह सामंती सत्ता की चाहत का नतीजा होने के बजाय आर्थिक आवश्यकता का परिणाम था, और दासता का पहला चरण उस जमीन के मालिक के बजाय, किसान को उस जमीन से बांधना था जिसे वह जोतता था और जिस पर वह रहता था। 16वीं और 17वीं शताब्दी में इस प्रक्रिया में मठों के स्वामित्व द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को मठों द्वारा बड़े पैमाने पर की जाने वाली खेती दर्शाती है; इस भूमिका को ऐतिहासिक शोध में स्वीकार किया गया है, लेकिन पूरी तरह से नहीं। 16वीं शताब्दी के मध्य में, सभी जमींदारों ने अपनी जागीरों पर अपनी जमीन पर काम करने वाले किसानों को बनाए रखने की कोशिश की, और उस समय, अमीर मठों की जोरदार आर्थिक गतिविधि ही वह मुख्य कारक थी जो किसानों को अपने पुराने घर छोड़ने और मठ की जमीनों पर उमड़ने के लिए प्रेरित कर रही थी[516] ।

15वीं शताब्दी की शुरुआत में ही – जैसा कि नीचे दिखाया जाएगा – मठों ने कृषि में लगे श्रम बल को अपने साथ बांधे रखने और उनके लिए छोड़कर जाने को मुश्किल बनाने का प्रयास किया, साथ ही किसानों को उनकी भूमि से कानूनी रूप से जोड़ने की भी कोशिश की; ऐसा करते हुए, उन्होंने भविष्य के ऐसे कानूनों की नींव रखी जो किसानों को दास बना देंगे।

यहाँ हमारा उद्देश्य समग्र रूप से इन सभी मुद्दों का विस्तृत विवरण देना नहीं है; हम केवल उन विशिष्ट घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो सीधे मठों की भूमि स्वामित्व के इतिहास से जुड़ी हैं।

सामान्यतः भूमिस्वामियों के लिए, और विशेष रूप से मठों की संपत्तियों के लिए, यह महत्वपूर्ण था कि वे किसानों द्वारा अपनी भूमि से दूर बिताए जाने वाले समय को सीमित करें और इसके लिए एक विशिष्ट समय सीमा निर्धारित करें। और इस प्रकार, मठ संबंधी दस्तावेज़ों में हमें ऐसी समय-सीमा स्थापित मिलती है: 1450 में बेलोजेर्स्क के राजकुमार मिखाइल द्वारा किरिलो-बेलोजेर्स्की मठ को प्रदान किए गए चार्टर में, 26 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार) – संत जॉर्ज का पर्व, 'यूरीव दिवस' – को किसानों के प्रस्थान की तारीख के रूप में निर्धारित किया गया था[517] । ट्रिनिटी-सर्गीय मठ को दिए गए अनुदान पत्रों में से एक (1455–1462) में, मठ को कुछ संपत्तियों से किसानों को बिल्कुल भी मुक्त न करने की अनुमति दी गई थी[518] । 1497 के संहिता ने पूरे देश में लागू होने वाली तारीख के रूप में 26 नवंबर को किसानों द्वारा अपनी जमीनें छोड़ने की तारीख के रूप में निर्धारित किया; किसानों को इस तारीख से पहले के आठ दिनों और बाद के आठ दिनों के दौरान नई जमीनों में जाने की अनुमति दी गई थी। 1550 के संहिता (धारा 88) ने इस प्रावधान की पुष्टि की[519] । इन प्रावधानों ने मठों को किसानों को अपनी भूमि पर आकर्षित करने के लिए कानूनी साधन प्रदान किए, और इस अधिकार का बहुत बड़े पैमाने पर प्रयोग किया गया। स्टोग्लाव (1551) ने किसानों को सेंट जॉर्ज दिवस को मुक्त प्रस्थान का दिन भी बनाया; साथ ही, एक प्रावधान पेश किया गया जिसके तहत इस समय-सीमा तक, भूमि-स्वामियों और मठों को अपने किसानों को—चाहे वे कृषि में लगे हों या नहीं—बस्तियों में खाली घरों में बसाने का अधिकार दिया गया[520] । हालांकि स्टोग्लाव ने पूरी स्पष्टता से केवल उन किसानों को अपनी भूमि पर बसाने की अनुमति दी थी जिन पर कोई बकाया कर नहीं था, मठों ने इस प्रावधान को तोड़ा, और सरकार को अक्सर, कई याचिकाओं के जवाब में, ऐसे दुरुपयोगों के खिलाफ कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा[521] । 1570 और 1580 के

---

[516] टिप्पणी 503 देखें, साथ ही निम्नलिखित कृतियाँ: ओडनिट्स, डी. 'मस्कोवाइट राज्य के जमींदार किसानों द्वारा पारगमन के अधिकार की हानि', में: पी. एन. मिल्युकॉव के सम्मान में संग्रह। पेरिस, 1929; मिखाइलोव, पी. 'दीर्घकालिक पट्टा और दासता की संस्था', में: झएमएनपी. 1912. 1; वही लेखक। 'दीर्घकालीन निवासियों द्वारा भूमि-स्वामित्व की उत्पत्ति के प्रश्न पर'। वही। 1910. 6.

[517] एएई. 1. संख्या 48; डीएआई. 1. संख्या 198। रूसी किसान कैलेंडर में सेंट जॉर्ज दिवस की भूमिका पर, देखें: कालिस्की, आई. द चर्च-फोक कैलेंडर इन रूस, इन: प्रोसीडिंग्स ऑफ द जियोग्राफिकल सोसाइटी, एथनोग्राफी सेक्शन. 1 (1877)। पृ. 325।

[518] AI. 1. संख्या 59; AAE. 1. संख्या 64, 83.

[519] व्यवहार में इससे विचलन के उदाहरणों के लिए, देखें, उदाहरण के लिए: AYu. संख्या 186 और 290।

[520] स्टोग्लाव (काज़ान संस्करण, 1862)। पृ. 412–414; AI. 1. 165; AAE. 1. संख्या 257.

[521] एएई. खंड 1, संख्या 234 (वाज्स्की और शेनकुर्स्की जिलों के संबंध में, 1552); एआई. खंड 1, संख्या 193 (अस्त्रखान में ट्रिनिटी मठ के संबंध में, 1575); डियाकोनोव. निबंध (1898)। 6 (स्वियाज्स्क में मदर ऑफ गॉड के मठ के संबंध में, 1576)। इस विषय पर सामग्री 16वीं सदी के कर रजिस्टरों में भी निहित है। तुलना करें: नेवोलीन। प्रयायतनिस और पोगोस्ट्स पर। पृ. 167।

दशकों के आर्थिक संकट ने किसानों के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में बड़े पैमाने पर पुनर्वास को जन्म दिया; इससे किसानों को मठों की भूमि पर आकर्षित करने के अवसर में वृद्धि हुई। सरकार भी अक्सर किसानों को एक मालिक की ज़मीन छोड़कर दूसरे की ज़मीन पर जाने की अनुमति देती थी, जिससे अपने जीवन की परिस्थितियों से असंतुष्ट किसानों का एक बड़ा समूह और जगह-जगह भटकने वाले नए प्रवासी पैदा हो गए। इसके अलावा, 1580 के दशक की शुरुआत में, एक सामान्य आर्थिक गिरावट के कारण, 1550 के फरमान को—जिसने किसानों के जाने पर सेंट जॉर्ज दिवस तक प्रतिबंध लगाया था—रद्द कर दिया गया; इसके बाद से, किसानों को अन्य दिनों में भी अपनी भूमि छोड़ने की अनुमति दी गई, जबकि तथाकथित 'ज़ार के संरक्षित वर्ष' ([522]) पेश किए गए।

किसानों के निरंतर पलायन के कारण सरकार को संबोधित याचिकाओं की बाढ़ आ गई और सांसारिक जमींदारों और मठों के बीच, साथ ही मठों के आपस में भी कानूनी विवाद हुए[523] । 1597 के एक फरमान[524] द्वारा, सभी भूमिस्वामियों, धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक दोनों को, अदालतों के माध्यम से उन किसानों की वापसी की मांग करने का अधिकार दिया गया था जो पाँच साल से अधिक पहले भाग गए थे और अन्य संपत्तियों पर बस गए थे; जो किसान पाँच साल से अधिक पहले भाग गए थे, वे अब अपने पूर्व स्थान पर लौटने के अधीन नहीं थे और अपने नए भूमिस्वामियों के साथ रह सकते थे। इसके परिणामस्वरूप तथाकथित 'परीक्षा अवधि' (probationary periods) का उदय हुआ, जिसने 1649 के संहिता (Code of 1649) तक मस्कोवाइट राज्य के किसान वर्ग के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और मठों के भूमि स्वामित्व के विकास पर एक निश्चित प्रभाव डाला। 9 मार्च 1607 के एक फरमान द्वारा, 'निश्चित अवधियों' को 15 वर्षों की अवधि तक बढ़ा दिया गया[525] । 'समस्याओं के समय' के तुरंत बाद, मठों ने अपनी 'निश्चित अवधियों' के विस्तार के लिए सरकार से याचिका करना शुरू कर दिया[]। **इस प्रकार, 1614 में, ट्रिनिटी-सर्गीय मठ को पिछले नौ वर्षों में अपनी संपत्तियों से भाग गए किसानों को वापस पाने का अधिकार प्रदान किया गया, और 1615 में, इसके पट्टे की शर्तों को दस वर्षों की अवधि के लिए बढ़ा दिया गया। वोलोकलामस्क में स्थित सेंट जोसेफ मठ को 1619 में यही विशेषाधिकार मिला[526] इन विशेषाधिकारों ने सेवादारों के बीच असंतोष पैदा कर दिया – विशेष रूप से क्योंकि, उदाहरण के लिए, ट्रिनिटी-सर्गेयस मठ अपने भागे हुए किसानों को 10-वर्षीय अवधि की समाप्ति के बाद भी वापस कर रहा था – और उन्होंने सरकार से इस विशेषाधिकार को रद्द करने के लिए याचिका दी। हालाँकि, 1637 और 1642 के फरमानों ने ट्रिनिटी-सर्गीय मठ के लिए 10-वर्षीय दासता की अवधि की पुष्टि की[527] । यह नहीं कहा जा सकता कि सेवा पुरुषों की याचिकाओं ने बाद के कानूनों को प्रभावित किया। 1646 में, जनगणना रजिस्टरों की शुरुआत के बाद, जनगणनाकर्ताओं के लिए जारी निर्देशों में कहा गया कि इन रजिस्टरों में दर्ज किसानों और उनके बच्चों को बिना किसी निश्चित सेवा अवधि के स्थायी रूप से भूमि से जोड़ दिया जाएगा। दो साल बाद, कार्यकाल की निश्चित शर्तों को आधिकारिक तौर पर समाप्त कर दिया गया, और 1649 के संहिता (अध्याय 9, § 3; 15, § 3) ने निश्चित रूप से किसानों को भूमि और भूमि-स्वामी से, और भूमि-स्वामी को किसानों से बांधने की व्यवस्था स्थापित की। यह पूरी तरह से मठों के आर्थिक हितों में था कि 1646 के जनगणना रजिस्टरों ने किसानों को भूमि से बांधने का आधार बनाया; इस प्रकार, मठ की भूमि पर स्थित किसान के घर मठों के कब्जे में रहे, एक तथ्य जिसे 1649 के संहिता द्वारा आधिकारिक तौर पर पुष्टि की गई थी।**

---

[522] डेबोल्स्की। उद्धृत ग्रंथ, में: ZhMNP. 1895. 1. पृ. 99; ग्रेकोव। यूरीव डे। पृ. 78; वही। नोवगोरोड सेंट सोफिया हाउस की अर्थव्यवस्था पर निबंध, में: LZAK. 34 (1927). पृ. 113; ओडनित्स. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 205.

[523] RIB. 14. पृ. 135। 17वीं सदी के लिए, हमारे पास इस तरह के विवादों से संबंधित दस्तावेज़ों का खज़ाना है: AI. 3. संख्या 286 (1621)। 160 (1629); AAE. 3. संख्या 141 (1623); RIB. 35. संख्या 263 (1616). तुलना करें: ड्याकोनोव. एसेज़ (1898). पृ. 52–59.

[524] इस फरमान को पहले गलती से किसानों को भूमि से स्थायी रूप से बांधने और दासता की शुरुआत का प्रतीक माना जाता था। यह फरमान संरक्षित नहीं है और इसका पुनर्निर्माण बाद के दस्तावेजों के आधार पर किया गया है। तुलना करें: व्लादिमीरस्की-बुडानोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 139।

[525] उपरोक्त, पृ. 139; रोज़डेस्ट्वेंस्की. संदर्भित कृति में: निबंधों में रूसी इतिहास। खंड 3, पृ. 63. 1597 के प्रावधानों की पुष्टि बाद के वर्षों में नए फरमानों द्वारा की गई और उनमें पूरकता की गई: दिनांक 28 नवंबर 1601, 1 फरवरी 1606 और 9 मार्च 1607। व्लादिमीरस्की-बुडानोव। वही, पृ. 139 ff.; क्लुचेव्स्की। Geschichte Rußlands. खंड 2. पृ. 342–344; ड्याकोनोव। Essays (1898). पृ. 49.

[526] भाग गए किसानों पर मठ के रिकॉर्ड देखें: ट्रिनिटी-सर्गीय मठ के सारांश रिकॉर्ड, इसमें: 16वीं-17वीं शताब्दियों में मस्कोवाइट राज्य के सामाजिक-आर्थिक इतिहास के स्मारक, खंड 1 (1929); एएई। खंड 3, संख्या 66 (1615); एएमजी. 2. संख्या 143। तुलना करें: रोज़्दस्तेव्स्की। '17वीं सदी में मस्कोवाइट राज्य में भगोड़े किसानों की खोज के लिए "स्थिर वर्षों" के इतिहास पर', में: वी. ओ. क्ल्यूचेव्स्की के सम्मान में संग्रह (1909)। पृ. 152–154।

[527] एएमजी. 2. संख्या 143.

9. 'मठ के सेवक' और 'मठ के संरक्षित'

विभिन्न सरकारी फरमान, जो विशिष्ट और सामान्य दोनों प्रकृति के थे, और परिषदों के निर्णय मठों की जमींदारियों के विकास को प्रतिबंधित नहीं कर सके—और, हमारी राय में, उनका ऐसा कोई इरादा भी नहीं था; इस प्रकार, जार के फरमान और 1497 और 1550 के संहिताएँ भिक्षु संपत्तियों के विस्तार को वास्तविक बाधा नहीं बन सके। इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण 17वीं शताब्दी के अंतिम चौथाई भाग में इन भूमियों पर किसान परिवारों की संख्या के संबंध में हमारे द्वारा ऊपर उद्धृत आंकड़े हैं। मठ प्राधिकरणों को एहसास हुआ कि विशेष पेटेंट पत्र प्राप्त करके इन फरमानों को हमेशा दरकिनार किया जा सकता है; और कुछ मामलों में, मॉस्को में मठ के प्रतिनिधियों की कुशल चालाकी के कारण, वे इन फरमानों को मठों के लाभ के लिए मोड़ने में सफल रहे। उन्होंने यह भी देखा कि कैसे सरकार स्वयं लगातार अपने कानूनी प्रावधानों का उल्लंघन करती थी और भूमि का वितरण जारी रखती थी। हालांकि मठों को अपनी भूमि पर किसानों के आगमन में कमी का डर नहीं था, फिर भी उन्होंने लगातार श्रम के नए स्रोत तलाशे। इसका एक कारण पहले ही बताई गई परिस्थिति थी - मठों का कृषि की एक नई प्रणाली की ओर धीरे-धीरे संक्रमण और उनके अपने खेती योग्य क्षेत्रों का विस्तार। इसके अलावा, जैसे-जैसे मठों की जमींदारियाँ बढ़ीं, व्यक्तिगत मठों में कृषि की नई शाखाएँ उभरीं या मौजूदा शाखाओं का विस्तार हुआ, और मठों के लिए यह अधिक सुविधाजनक हो गया कि वे इनमें ऐसी कार्यबल को नियोजित करें जो मठ के मतानुयायी किसानों की तुलना में मठ से अधिक निकटता से जुड़ी हो। यह शब्द के संकीर्ण अर्थ में मठवासी लोगों के तीन समूहों की अपेक्षाकृत व्यापक उपस्थिति की व्याख्या करता है: 1) मठ के नौकर, या 'स्लुज्की', 2) मठ के शिक्षु, और 3) कारीगर[528] ।

मठों और मठ संपत्तियों पर मठ के नौकर लंबे समय से नियोजित थे[529] । वे मठ के भीतर विभिन्न प्रकार के कार्य करते थे, जैसे घोड़ों के सवार, गड़रिये, चौकीदार, मछुआरे, मधुमक्खी पालक, कारीगर आदि के रूप में सेवा करते थे। जैसे-जैसे मठ का परिसर नए विस्तार, इमारतों, अस्तबलों, गोदामों आदि के निर्माण के साथ बढ़ा, मठ के सेवकों की संख्या भी बढ़ी। उन्हें मठ से आवास, कपड़े और भोजन के साथ-साथ कुछ मौद्रिक पारिश्रमिक भी मिलता था, जो आमतौर पर क्रिसमस, ईस्टर, ट्रिनिटी संडे या संत पीटर और पॉल के पर्व के दिन उपहार के रूप में होता था। इस समूह में गरीबी-ग्रस्त किसान, जो अब अपनी ज़मीन की खेती करने में सक्षम या इच्छुक नहीं थे , बसाहती, युद्ध के अपंग, और इसी तरह के अन्य लोग शामिल थे। 17वीं शताब्दी में, मठ के नौकर आमतौर पर मठ के साथ एक मौखिक समझौते या लिखित अनुबंध में प्रवेश करते थे[530] ।

'डेटेन्यशी' मठ की भूमि पर रहने वाले लोगों के सबसे दिलचस्प वर्गों में से एक हैं; यद्यपि इस वर्ग का मठ के दस्तावेजों में अक्सर उल्लेख मिलता है, लेकिन इसकी स्पष्ट रूप से परिभाषित सीमाएँ नहीं थीं। ऐतिहासिक साहित्य इस समूह का कोई स्पष्ट चित्रण प्रदान नहीं करता है; न तो इसकी उत्पत्ति और न ही इसके विकास के इतिहास का पता लगाया गया है[531] । स्पष्टता की इस कमी का कारण यह है कि दस्तावेज़ 'डेटन्याशी' का विभिन्न तरीकों से उल्लेख करते हैं: कभी-कभी उन्हें मठ के नौकरों के साथ सूचीबद्ध किया जाता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि वे नौकरों की तरह ही मठ के लिए काम करते थे; तो कभी, 'डेटन्याशी' को जमीन पर काम करने वाले किसानों के रूप में वर्णित किया जाता है; वे मठ की दीवारों के भीतर और मठ बस्तियों दोनों में रहते थे; कभी-कभी तो मठ के गांवों में उनके अपने आंगन भी होते थे; वे कारीगरों के रूप में भी काम करते थे – वास्तव में, 17वीं सदी के दूसरे छमाही में, वे मठ की अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों में लगे हुए थे[532] । स्रोत 16वीं शताब्दी के मध्य से 'मठ के बच्चों' का उल्लेख करते हैं[533] ; उनके उदय और उनकी संख्या में वृद्धि को मठों की अपनी भूमि-धारिता के विस्तार से जोड़ा जा सकता है[534] । एक

---

[528] भिक्षु-सेवकों और लोगों के एक ऐसे समूह के बीच अंतर करना आवश्यक है जो सेवक बिल्कुल नहीं थे, हालांकि दस्तावेजों में उन्हें 'भिक्षु-जन' के रूप में भी संदर्भित किया जाता है - वे मठ की संपत्ति के प्रबंधन में नियोजित थे और मुख्य रूप से बोयारों और कुलीनों के बच्चे थे। उनकी चर्चा नीचे संपत्ति प्रबंधन की प्रणाली का वर्णन करते समय की जाएगी।

[529] मेट्रोपॉलिटिन जेरोंटियस के पत्र में मठ के सेवकों का बहुत उल्लेख मिलता है। AAE. 1. संख्या 113 (1478).

[530] आर्सेनी, आर्किमंड्राइट। रिपोर्ट्स, में: रीडिंग्स। 1867. 3; डोब्रोक्लोन्स्की। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 11–12; यारोस्लावल के स्पास्स्की मठ के ऐतिहासिक दस्तावेज़। 3. पृ. 77। तिखोमिरोव, एम. '16वीं सदी में मठ एक ज़मींदार के रूप में', ऐतिहासिक टिप्पणियाँ। 3. पृ. 149–152 (जोसेफोव मठ पर)।

[531] मुख्य रूप से देखें: ड्याकोनोव। एसेज़ (1898)। पृ. 295–321 (ग्रंथसूची सहित)। ग्रेकोव। पीज़ेंट्स इन रूस। पृ. 695 और बाद के पृष्ठ।

[532] तुलना करें: ड्याकोनोव के कार्य में बच्चों पर स्रोतों की विस्तृत सूची। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 295, 298; डोब्रोक्लोन्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 33; पेरेत्यातकोविच। द वोल्गा रीजन इन द 17th एंड 18th सेंचुरीज़ (1882)। पृ. 93, 117.

[533] 1547 में, जोसेफोव मठ के अनुसार: ग्रेकोव। उद्धृत कृति, पृ. 695; 1576 में, ट्रिनिटी-सर्गेयस मठ के अनुसार: द सर्वे बुक्स ऑफ द मस्कोवाइट स्टेट। खंड 1। अनुभाग 1. पृ. 68, 73, 82, 76, 611, 642, आदि।

[534] ग्रीकोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 695, 710; ड्याकोनोव. निबंध (1898), पृ. 303 – लगभग समान।

ओर, ये वयस्क थे—गरीबीग्रस्त कसिान और छोटे-धारक; वे मठ के खेतों में खेती करते थे, घास काटते थे, और मछली पकड़ने का काम करते थे। मठों से मलिी आर्थकि सहायता के कारण, उन्होंने अपनी खुद की गृहस्थयिाँ प्राप्त कीं या उन कसिानों की उपेक्षति गृहस्थयिाँ उन्हें प्रदान की गईं जो भाग गए थे या कर्ज में डूब गए थे। भक्षिुओं की तरह, 'डेटेन्यशी' करों और शुल्कों से मुक्त थे[535] ; उन्होंने श्रम के माध्यम से मठ के प्रतिअपनी जम्मिेदारयिाँ पूरी कीं। दूसरी ओर, अधकिांश बच्चे (वशिषकर 17वीं सदी में) अनाथ थे या मठ के कसिानों और दासों के बच्चे थे। इस प्रकार, 1636 में, सोलोवेत्स्की मठ में एक उचति अनाथालय था, जसिमें लगभग 300 बच्चे रहते थे जो हल्के मठ संबंधी कार्य करते थे: जैसे कि सब्जी के बगीचे में, मठ की रसोई में, और इसी तरह। – जसिके कारण ज़ार ने मठ के मठाधीश को एक वशिष संदेश भेजा, जसिमें उसने दुराचार को रोकने के लिए अनाथों की सख्त नगिरानी, साथ ही मठ की दीवारों के बाहर इन बच्चों के लिए एक अलग घर के नर्मिाण की मांग की[536] । कसिान, और वशिष रूप से गरीब कसिान, अपने बेटों को मठ में भेजने में खुश थे। शुरू में उन्होंने हल्का काम कयिा, जैसा कि सोलोवेत्स्की मठ में होता था; बाद में उन्होंने कसिान लड़कयिों से शादी की, अपना घर बसाया और मठ के खेतों में काम कयिा, फरि भी मठ के रकिॉर्ड में उन्हें परंपरा और वत्तिीय कारणों दोनों से मठ के 'बच्चों' के रूप में सूचीबद्ध कयिा जाता रहा। 17वीं सदी में, हमें मठ और उसके वयस्क 'डेटन्यात्स्की' के बीच अनुबंध मलिते हैं (इस मामले में, उन्हें आमतौर पर 'पोराडने' नहीं बल्कि 'झलित्स्की' प्रवष्टियिों के रूप में संदर्भति कयिा जाता था), जनिमें दोनों पक्षों की पारस्परकि जम्मिेदारयिों को सूचीबद्ध कयिा गया था[537] . 17वीं सदी के भूमरिजस्टिरों में मठों पर नर्भिर इन व्यक्तयिों के समूह और 'deteni' की संपत्तयिों के बारे में भरपूर जानकारी है[538] ।

मठों को वभिन्नि प्रकार की हस्तशल्पि वस्तुओं की नरिंतर आवश्यकता होती थी, जन्हिें उस समय की आत्मनर्भिर अर्थव्यवस्था के कारण उन्हें स्वयं ही तैयार करना पड़ता था। इसी से स्पष्ट होता है कि अनेक कारीगर मठों के लिए रहते और काम करते थे, चाहे वे स्वयं मठों के भीतर हों या आसपास की मठवासी बस्तयिों में। इनमें बढ़ई, राजमस्त्रिी, फर्नीचर बनाने वाले, बर्तन बनाने वाले, लोहार, जूते बनाने वाले, दर्जी, सवार और अन्य कारीगर शामलि थे जो मठ के लिए औजार, हल, जुताई करने वाले औजार और फावड़े बनाते थे, और अक्सर मठ के कसिानों के लिए भी; दर्जी और जूता बनाने वाले भक्षिुओं, मठ के नौकरों और बच्चों के लिए कपड़े और जूते सलिते थे।

जोसेफ़ मठ में 100 से अधकि ऐसे कारीगर थे, जनिमें से 37 शक्षिु थे[539] । 1628–1629 में, यारोस्लावल के स्पस्की मठ के पास 27 घर थे, जनिमें 27 कारीगर मठ के लिए रहते और काम करते थे। उस बस्ती में 194 घर थे, जनिमें, एक बार फरि, मठ के कारीगर रहते थे; उनमें से 25 शक्षिु थे, और वे मठ और उसकी जमींदारयिों के लिए आवश्यक लगभग सभी चीजें बनाते थे[540] । रयाज़ान जलि में स्थति सोलोचनिस्की मठ ने अपने कारीगरों की मेहनत से अपनी लगभग सभी आवश्यक वस्तुएँ स्वयं का उत्पादन कयिा, और कुछ सामान तो बेचे भी गए[541] । स्मोलेंस्क क्षेत्र के डोरोगोबुज् में स्थति बोल्डनिो मठ की खाता-बही हमें मठ के कारीगरों द्वारा कए गए कार्यों, मठ के वत्तिीय प्रबंधन और कारीगरों को दी जाने वाली पारश्रिमकि के महत्व का आकलन करने के लिए पर्याप्त सामग्री प्रदान करती है। उन्हें अपनी मेहनत के लिए न केवल मौद्रकि मजदूरी मलिती थी, बल्कि प्रोत्साहन के रूप में क्रसिमस और ईस्टर पर उपहार भी मलिते थे—आमतौर पर पैसे के रूप में[542] ।

वशिषज्ञ दर्जी पादरयिों के वस्त्र बनाते थे, जबकि सुनार और चाँदीकार पूजा के लिए पात्र बनाते थे; बड़े मठों में, जहाँ हमेशा अपने मधुमक्खी पालन के छत्ते होते थे, मोमबत्तयिाँ बनाई जाती थीं।

करिाए के मजदूरों ने एक बहुत महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई, उदाहरण के लिए, सोलोवेत्स्की मठ की वशिाल संपत्ति में, जहाँ, मठ के दस्तावेजों के अनुसार, 1621 में 700 करिाए के मजदूरों को काम पर रखा गया था, जन्हिें मठ से

---

[535] ग्रीकोव. उद्धृत कृति, पृ. 711.

[536] एएई. खंड 3, संख्या 262। ज़ार की फटकारें उचति थीं: मठ के चार्टर के अनुसार, पुरुष बच्चों को मठों में रहने या ठहरने की अनुमति नहीं थी। स्टोग्लाव ने इस प्रथा पर सख्त प्रतबिंध लगाया था: स्टोग्लाव। काज़ान संस्करण। पृ. 229, 233, 236। ट्रनिटि-सर्गेयस मठ में अनाथों के बारे में, जनिकी संख्या 600 तक पहुँच गई थी, देखें: आर्सेनी। उद्धृत कृति, पृ. 8, 56।

[537] ड्याकोनोव। नबिंध (1898)। पृ. 333।

[538] उपरोक्त, पृ. 298, 303, 306; डोब्रोक्लोन्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 33.

[539] टखिोमरिोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 151.

[540] इतहिासकि अधनियिम स्पस्की मठ, खंड 3, पृ. 77–85; नकिोल्स्की. उद्धृत कृति, खंड 1, खंड 2, परशिष्ट 'डी'.

[541] डोब्रोक्लोन्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 74.

[542] बोल्डनिो मठ के आय और व्यय खातों की पुस्तकिाएँ, RIB. 37 में, पृ. 20–22, 36–38, 43–46, 64–69, आदि।

आवास, कपड़े और पैसा मलिता था। उन्हें वभिन्नि आर्थकि गतविधियिों में नयिोजति कयिा गया था: मछली पकड़ना, नमक कारखानों में और नमक के परविहन में[543] ।

10. मठों का व्यापार

मठों की संपत्तयिों के नरिंतर वस्तिार और मठों के कृषि विकिास के कारण, मठों के पास अक्सर वभिन्नि वस्तुओं का अधशिष हो जाता था, जसिकी मात्रा उनकी अपनी जरूरतों से अधकि होती थी, जसिसे उन्हें व्यापार में संलग्न होने के लिए मजबूर होना पड़ता था। दूसरी ओर, मठों को अपने भकि्षुओं के लिए वभिन्नि खाद्य पदार्थों और वस्तुओं की आवश्यकता होती थी। व्यापार की जाने वाली पहली और सबसे महत्वपूर्ण वस्तु रोटी थी। कुछ मठों के पास यह अधशिष में होती थी, जबकि इसके वपिरीत, अन्य मठों को अपनी समुदाय के लिए इसे खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ता था। चूँकि मठों के पास अक्सर पर्याप्त पूँजी होती थी, जो मुख्य रूप से आत्मा की शांति के लिए दिए गए मौद्रकि दानों से होती थी, वे इस पूँजी का उपयोग वाणज्यिकि उद्देश्यों के लिए करने में सक्षम थे।

छोटे, गरीब मठों को आवश्यक खाद्य आपूर्ति खरीदने के लिए अपने खेतों के उत्पादन का एक हस्सिा बेचना पड़ता था। दूर उत्तर में स्थति पेचेन्गा ट्रनिटिी मठ के भकि्षुओं ने ज़ार इवान चतुर्थ को एक याचकिा में लखिा कि कठोर जलवायु और भूमि की उजाड़ता के कारण, वे कृषि करने में असमर्थ थे, लेकनि 'उस मठ में अपना जीवन यापन करते हैं... जब भी वे समुद्र में मछली पकड़ते हैं और उसे नमक में पकाते हैं, और उस नमक को बेचने के लिए ले जाते हैं... और एक बार जब वे वह नमक वोल्गोडा और वोल्गोडा जलि में बेच देते हैं, तो वे नमक से प्राप्त पैसे का उपयोग मठ की जरूरतों के लिए हर तरह का सामान खरीदने में करते हैं: राई, आटा, जौ, जई, पसिा अनाज, दलयिा, मक्खन, कपड़ा, जूते, और सभी प्रकार के मठ संबंधी सामान'[544] । उपजाऊ दक्षणिी जलिों के मठों ने भी, यदि उनके अपने खेत उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरी तरह से पूरा नहीं कर पाते थे, तो सामान खरीदने का सहारा लयिा[545] । व्यापार करने के लिए, कई मठों ने वोल्गोडा में अपनी खुद की दुकानें और व्यापारकि चौकयिाँ बनाईं—जो 17वीं शताब्दी तक एक प्रमुख व्यापारकि केंद्र बन गया था—जहाँ वशिष रूप से नयिुक्त भकि्षुओं या वश्विसनीय एजेंटों द्वारा खरीद-फरोख्त की जाती थी। इस प्रकार, 1626 में, वोल्गोडा में कम से कम 36 मठ की दुकानें और गोदाम थे[546] ।

नमक मठों और मस्कोवी की पूरी अर्थव्यवस्था दोनों के लिए सबसे महत्वपूर्ण वस्तु थी; इसका उपयोग मुख्य रूप से मछली को नमक लगाने के लिए कयिा जाता था, जो उपवास के दनिों में मुख्य भोजन था, जसिका उस समय न केवल मठों में बल्कि सभी रूसी लोगों द्वारा भी सख्ती से पालन कयिा जाता था। मठों द्वारा व्यापार की जाने वाली वस्तुओं की सूची में इसके बाद मछली, शहद और मोम थे। धनी करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ, जो अपनी ही खेतों में पर्याप्त अनाज उगाने में असमर्थ था, उसे खरीदता था और साथ ही अपने ही नमक के कारखानों से नमक बेचता था, जसिसे उसे पर्याप्त आय होती थी; यह भकि्षुओं और मठ के नौकरों के लिए अन्य खाद्य पदार्थ, हस्तशलि्प, कृषि उत्पाद, कपड़े और जूते-चप्पल भी खरीदता था[547] ।

ट्रांस-वोलगा क्षेत्र और पोमोर क्षेत्र में, मठ व्यापार में वशिष रूप से सक्रयि थे। उनके स्वामतिव में कई नमक की खदानें और लवणशालाएं, मछली पकड़ने के क्षेत्र और मधुमक्खी पालन के स्थान थे, जनिका उत्पादन मास्को के बाजारों में जल्दी बकि जाता था; बदले में, उन्हें स्वयं खाद्य आपूर्ति और हस्तशलि्प की आवश्यकता होती थी। पोनज़िोवये क्षेत्र के मठ, जो वोल्गा और कामा नदयिों पर मछली पकड़ने के क्षेत्रों के मालकि थे, कैवयिार और सफेद मछली—जैसे स्टर्लेट, बेलुगा और स्टर्जन—का व्यापार करते थे, जनिकी बहुत अधकि मांग थी[548] ।

---

[543] क्लुचेव्स्की। व्हाइट सी क्षेत्र में सलोवेत्स्की मठ की आर्थकि गतविधियिाँ, में: मॉस्को यूनविर्सटिी बुलेटनि। *1866–67 / संख्या 7 / पृ. 574; और साथ ही रसिर्च स्टडीज़ (1913) में भी।*

[544] सावचि। मुख्य बदिु। पृ. 55।

[545] उदाहरण के लिए, रयिाज़ान जलि में स्थति सोलोचनिस्की मठ: डोब्रोक्लोन्स्की, उद्धृत ग्रंथ, पृ. 89–93; या स्मोलेंस्क क्षेत्र में स्थति बोल्डस्कि मठ: RIB, खंड 37. पृ. 188, 192, 219, 240 आदि, साथ ही नज़िनी नोवगोरोड में ब्लागोवेश्चेन्स्की मठ: RIB. 2. संख्या 51; तुलना करें: कोर्याज़ेम्स्की मठ के अधनियिम, LZAK. 23 में (केवल अधनियिमों का वर्णन)।

[546] स्टोरोज़हेव। वोलोग्दा में मठों की भूमि-स्वामतिव, इन: वी. ओ. क्ल्यूचेव्स्की के सम्मान में संग्रह (1909)। पृ. 362, 366। दूरस्थ मठों ने भी वहाँ अपनी खुद की दुकानें बनाए रखीं।

[547] 15वीं सदी के अंत तक, करिलिोव मठ वोलोग्दा में सालाना कम से कम 2,400 पूड अनाज खरीदता था। AAE. 1. संख्या 126, तुलना करें संख्या 283; नकिोल्स्की। उद्धृत ग्रंथ 1. 1. अनुभाग 'डी'। पृ. 248। मठ वभिन्नि शहरों में नमक की दुकानें चलाता था। AAE. 1. सं. 378; 1566 में, मठ ने अकेले दमित्रिोव शहर में एक ही दुकान में 10,000 पूड तक नमक बेचा। वही, सं. 271; तुलना करें: मकारी. 8. 2nd संस्करण. 8. पृ. 267.

[548] दस्तावेजों के संग्रह (AI, AAE, SGGD) में इस वषिय पर वस्तिृत सामग्री शामलि है; तुलना करें: मठों की वाणज्यिकि गतविधियिों पर हेन्सलर की टप्पिणयिाँ, इसमें: रीडग्सि। 1874. 4. पृ. 24। अस्त्रखान में मठ व्यापार पर: AI. 1. सं. 193; और साथ ही: कुलशिर। *रूसी

हम पहले ही कुछ अमीर मठों की आर्थिक गतिविधियों का वर्णन कर चुके हैं; अब हम अपना ध्यान श्वेत सागर पर स्थित प्रसिद्ध सोलोवेत्स्की मठ की अर्थव्यवस्था पर केंद्रित करेंगे, जो शीघ्र ही दूर उत्तर में सबसे बड़ा व्यापारिक केंद्र बन गया और व्यापार की बदौलत, मस्कोवाइट राज्य के सबसे अमीर मठों में से एक के रूप में उभरा।

सोलोवेत्स्की मठ की स्थापना 1429 और 1436 के बीच दो तपस्वियों, परम पूज्य जर्मन और साव्वतीय ने की थी, जो निर्जन उत्तरी द्वीपों पर दुनिया से अलग-थलग रहना चाहते थे; आदरणीय जोसिमा (1452–1478) के अधिष्ठातृत्व के दौरान, मठ काफी बढ़ा, जबकि इसके आर्थिक गतिविधियाँ अधिष्ठाता फिलिप के अधीन फलती-फूलती रहीं (1548–1566), जो मास्को के भविष्य के मेट्रोपॉलिटिन थे, असाधारण प्रतिभा के धनी थे और जैसा कि ज़ार इवान चतुर्थ के साथ उनके विवाद से स्पष्ट है[549] , वे चर्च के हितों की सिद्धांतगत रक्षा में पदानुक्रम के एक उल्लेखनीय प्रतिनिधि थे। 15वीं शताब्दी के दूसरे भाग में ही, वेलिकी नोवगोरोड द्वारा प्रदान किए गए पेटेंट पत्रों और प्रतिरक्षा पत्रों के आधार पर, मठ के पास श्वेत सागर पर भूमि के बड़े भूखंड और मछली पकड़ने के क्षेत्र थे; इन संपत्तियों की पुष्टि बाद में मठ की होने के रूप में की गई और ग्रैंड प्रिंसेस के पत्रों द्वारा उनका विस्तार किया गया। 1555 में, अकेले सुमी जिले में, मठ के पास 33 नमक की खदानें थीं; बाद में और खदानें हासिल की गईं[550] । इसने मठ को पूरे मस्कोवाइट राज्य में नमक का व्यापार करने में सक्षम बनाया। 16वीं शताब्दी के मध्य में, सोलोवेत्स्की मठ ने 6,000 पूड नमक बेचा; एक सदी बाद, मठ के लवणशालाएं पहले ही 1,30,000 पूड नमक का उत्पादन कर रही थीं, जिसे मठ के अपने जहाजों पर ड्विना और सुखोना नदियों के किनारे वोल्गोडा तक ले जाया जाता था और वहाँ बेचा जाता था। इस व्यापार के लिए, मठ हर साल राज्य को 658 रूबल शुल्क के रूप में भुगतान करता था। 17वीं सदी के मध्य में मठ द्वारा चुकाए गए सभी करों की कुल राशि 4,000 रूबल थी। मठ के नमक के कारखानों, मछली पकड़ने के कार्यों और जहाजरानी सेवाओं में 700 श्रमिक काम करते थे, जिन्हें मठ से वेतन, कपड़े और राशन मिलता था; यह आंकड़ा मठ की आर्थिक गतिविधियों के पैमाने को दर्शाता है[551] । 17वीं सदी के दूसरे भाग में उद्यमशील मठाधीशों ने तो श्वेत सागर और उत्तरी नदियों में अपने व्यापारी बेड़े के लिए एक रस्सी कारखाना भी बनाया था[552] ।

मठों ने औद्योगिक उद्यम भी स्थापित किए; इसका एक उदाहरण ब्रायन्स्क के पास स्थित स्वेन्स्की मठ है, जिसके पास अपनी लोहा पिघलाने की भट्टी थी[553] ।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, आत्मा की शांति के लिए उपहारों और दान से बनी पूंजी मठों की वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी[554] । इसके अलावा, 16वीं शताब्दी के मध्य में, जार इवान चतुर्थ के अधीन ओप्रिचिनाइना के दौरान, कई बोयार और सेवादार, डकैती या जब्ती के डर से, अपने पैसे, सोने और आभूषणों को सुरक्षित रखने के लिए मठ को सौंप देते थे[555] । जमा रजिस्टरों में दोनों प्रकार की संपत्ति का उल्लेख मिलता है – चल संपत्ति – धन, सोना, आभूषण, खाद्य पदार्थ, पशुधन, घोड़े, साथ ही आइकॉन और पूजा-संबंधी पुस्तकें, वस्त्र आदि[556] – और अचल संपत्ति – भूमि और गाँव। आमतौर पर, दानपत्र में एक ऐसी शर्त होती थी जिसके तहत दाता अपने जीवन के बाकी दिनों तक अपनी संपत्ति – भूमि या जमींदारियाँ – का उपयोग करता रहता था, जो पावलोव-

---

अर्थव्यवस्था का इतिहास*। 2 (1925)। पृ. 324। उदाहरण के लिए, ट्रिनिटी-सर्गेई मठ ने अपनी ही अनाज की चक्कियों में पीसे गए आटे को अस्त्रखान में निर्यात किया। गौटियर। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 537।

[549] माकारी। द्वितीय संस्करण। 7. पृ. 41.

[550] क्लुचेव्स्की। 'द इकोनॉमिक एक्टिविटीज़ ऑफ़ द सोलोवेत्स्की मॉनास्ट्री', *एक्सपेरिमेंट्स एंड रिसर्च* में, पृ. 11; सावित्च। द सोलोवेत्स्की एस्टेट (1927)। पृ. 148। मठ की भूमि-धारिता पर, देखें: बोगोस्लोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ। खंड 1। पृ. 73–75।

[551] क्लुचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ: *Experiments*। पृ. 36 (में: मॉस्को यूनिवर्सिटी बुलेटिन 7. पृ. 574)। निम्नलिखित आँकड़े मठ के नमक के व्यापार के पैमाने को दर्शाते हैं: 1588 में, 81,201 पूड वोल्गा भेजे गए थे; 1598 में, – 92,990 पूड वोल्गोडा भेजे गए, और 1608 में – 123,137 पूड। Savich. Op. cit., p. 148. वोल्गोडा में, मठ ने विभिन्न प्रकार के अनाज खरीदे, जिन्हें फिर उसी जहाज़ पर मठ वापस लाया गया। उदाहरण के लिए, 1608 में मठ ने अपनी खपत के लिए 15,000 चेत्वरति राई खरीदी; उस समय इसमें 827 स्थायी और 286 मौसमी कर्मचारी कार्यरत थे। वही, पृ. 110, 142, 154, 213, 221.

[552] उपरोक्त, पृ. 167.

[553] हिरोथियोस, आर्चिमांड्राइट। ओरियोल गवर्नरेट में ब्रायन्स्क स्वेन्स्की डॉर्मिशन मठ (1866)। पृ. 47.

[554] इस विषय पर बहुत सारी सामग्री मठ के खातों में निहित है; उदाहरण के लिए देखें: द लेजर्स ऑफ़ द एंटोनिएव सिया मठ। ए. इज़्यूमोव द्वारा संपादित, इसमें: रीडगिस। 1917. 1. इस विषय पर सामग्री मठों के घरेलू रजिस्टरों द्वारा भी प्रदान की जाती है।

[555] रोज़्द्ज़ेस्ट्वेंस्की। पादरीय भूमिस्वामित्व। पृ. 87; पावलोव। धर्मनिरपेक्षीकरण पर एक निबंध। पृ. 150.

[556] अवरामी पलिचिन, जो बाद में ट्रिनिटी-सर्गीय मठ के प्रसिद्ध कोषाध्यक्ष बने, ने मठ में प्रवेश करते समय अपना गाँव, पूजा-संबंधी पुस्तकें और सोना दान किया। शुमाकोव। सोतनित्sy, में: रीडगिस। 1902. 2. पृ. 226.

सलिवान्स्की के अनुसार पश्चिमी यूरोपीय मध्ययुगीन praecaria oblata[557] से मिलती-जुलती है। दानकर्ता ने अपनी संपत्ति का पूरा स्वामित्व मठ को हस्तांतरित कर दिया और इसे उपयोग के लिए मठ से वापस प्राप्त किया, अब यह संपत्ति के रूप में नहीं बल्कि मठ से एक अनुदान के रूप में था। दान रिकॉर्ड में निम्नलिखित शब्दावली अक्सर पाई जाती है: 'और जब तक ईश्वर मुझे जीवन प्रदान करता है, तब तक आर्चिमैंड्राइट कृपा करके मुझे यहाँ से न भेजें।' 1590 के दशक में, सरकार ने मठ को दान की गई संपत्तियों के आजीवन उपयोग (यूज़फ्रूट) की वैधता को मान्यता दी। दुर्भाग्य से, दान रिकॉर्ड और वसीयतों से यह ठीक-ठीक पता लगाना मुश्किल है कि दानकर्ता या वसीयतकर्ता के जीवित रहते हुए मठ ने दान की गई संपत्ति का उपयोग कैसे किया, यह एक ऐसी स्थिति थी जो कई दशकों तक चल सकती थी[558] । चूंकि विरासत में मिली संपत्ति हमेशा मठ के लिए सुविधाजनक स्थान पर नहीं होती थी या उसकी अर्थव्यवस्था के लिए अलाभकारी हो सकती थी, मठ अक्सर ऐसे दान को अधिक उपयुक्त संपत्तियों के लिए बेच देते या बदल देते थे, जो हमेशा उनके अपने लाभ के लिए होता था[559] ।

इन लेन-देन से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था मठों द्वारा जमीनों को गिरवी के रूप में स्वीकार करने का प्रचलन, क्योंकि मठों के पास हमेशा बड़ी मात्रा में धन उपलब्ध रहता था। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि, अन्य जमींदारों के विपरीत, जिनकी जागीरों को शासक की सेवा के परिणामस्वरूप बहुत नुकसान उठाना पड़ता था (वे सैन्य उपकरणों पर बड़ी रकम खर्च करते थे, और जब जमींदार सैन्य अभियानों पर जाते थे तो उनकी जागीरों और संपत्तियों को उनकी अनुपस्थिति के कारण नुकसान होता था, और इसलिए वे आमतौर पर उपेक्षा की स्थिति में रहती थीं), मठों की जमींदारियाँ हमेशा सावधानीपूर्वक निगरानी में रहती थीं। आवश्यकता ने सेवा में लगे लोगों को पैसे उधार लेने के लिए मजबूर किया - सैन्य उपकरणों के लिए या अपनी जमींदारियों की बहाली के लिए। इसीलिए मठों को जमींदारियाँ गिरवी रखने या मठों से ब्याज पर पैसा उधार लेने के अनगिनत मामले सामने आए। एकीकृत परिषदों के नियमों के विपरीत, इस तरह का दुराचार रूसी पादरियों के दैनिक जीवन में गहराई से समा गया; यह 16वीं और 17वीं शताब्दी दोनों में बना रहा, इस तथ्य के बावजूद कि स्टोग्लाव परिषद और ज़ार अलेक्सी के संहिता ने पादरियों के लिए ब्याज वसूलने पर सख्त मनाही कर दी थी[560] । जब पैसा उधार दिया जाता था, तो एक मठ जमानत के रूप में जमीन या घर लेता था; एक बंधक-पत्र तैयार किया जाता था, जिसे ऋण अवधि की समाप्ति पर, एक बिक्री-पत्र से बदल दिया जाता था, जिसके तहत, ब्याज के बजाय, कुछ संपत्ति - चल या अचल - मठ के कब्जे में चली जाती थी[561] । वसीयत, उपहार-पत्र और बंधक-पत्रों के माध्यम से प्राप्त संपत्तियों को अक्सर मठ प्राधिकरणों द्वारा बेचा या विनिमय किया जाता था, जो हमेशा मठ के पक्ष में होता था; यह असामान्य नहीं था कि एक मठ राज्य कोषागार के साथ संपत्तियों का आदान-प्रदान करे – या तो शासक के आदेश पर या मठ की याचिका के बाद[562] ।

इस प्रकार के सभी लेन-देन से मठों को समृद्धि मिली, भिक्षुओं को मठ की दीवारों के बाहर विभिन्न गतिविधियों में संलग्न होने के लिए मजबूर होना पड़ा और अंततः मठ के अनुशासन पर इसका हानिकारक प्रभाव पड़ा।

---

[557] पावलोव-सिलवान्स्की। *फीउडलवाद इन अपानज रस'*, *कलेक्टिड वर्क्स*, खंड 3, पृ. 338 में। निम्नलिखित वाक्यांश दान-पत्रों में अक्सर पाया जाता है: 'और मैं अपने जीवन के अंत तक उस संपत्ति में रहूँगा'। तुलना करें: रोज़डेस्ट्वेंस्की। *सर्वलि लैंडओनरशिप*, पृ. 104–107।

[558] पावलोव-सिलवान्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 389; रोज़्देस्ट्वेंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 107, 105।

[559] तुलना करें: क्लीचेव्स्की का मठ व्यापार पर दृष्टिकोण, द बॉयर डुमा (1884), पृ. 288.

[560] पहला सार्वभौमिक परिषद, 17वां कैनन; छठी सार्वभौमिक परिषद, 10वां कैनन; और लाओडिसिया की परिषद, 4था कैनन। ये कैनन जॉन स्कॉलैस्टिकस के नोमोकेनन में भी निहित हैं, जो मस्कोवाइट रस में जाना जाता था। 1416 में, मेट्रोपॉलिटन फोतिउस ने प्सकोव के पुरोहितों को एक पत्र भेजा जिसमें उन्होंने इस दुरुपयोग की कड़ी निंदा की। AI. 1. संख्या 22, और साथ ही: स्टोग्लाव। कज़ान संस्करण। पृ. 345; 1649 का संहिता। अध्याय 10। 1727 में, ऋण अवधि की समाप्ति पर पादरियों को प्रति विर्ष 6 प्रतिशत चार्ज करने की अनुमति दी गई थी। मिलियुटिन। उद्धृत कृति, में: रीडगिस। 1859. 4. पृ. 101। इस अनुमति की पुष्टि 13 मई 1754 के एक फरमान द्वारा की गई थी। पीएसजेड। सं. 10235। 15वीं–16वीं शताब्दी के कई दस्तावेज़ दिखाते हैं कि मठ और भिक्षु व्यक्तिगत रूप से ब्याज वसूलते थे। तुलना करें: AYu. सं. 15, 71, 232, 238, 241, 243, 245, 248, 255, 267, आदि; DAI. 1, संख्या 51, 55। इस पर और विवरणों के लिए, देखें: Kyrios. 4 (1939)। पृ. 29–38।

[561] चयनित उदाहरण: AYu. संख्या 234, 236, 237, 241 (ये तीनों किरिलोव मठ से संबंधित हैं), 254; AI. 1. संख्या 104, 106, 163; DAI. 1. संख्या 157; AI. 3. संख्या 138; 5. संख्या 32, आदि।

[562] एएई. खंड 2, संख्या 42 (1646); खंड 4, संख्या 26 (1648); DAI. 1. संख्या 21, 113, आदि। AYu. संख्या 108। 1649 के संहिता (अध्याय 16, §§ 4–5) में, इस तरह के आदान-प्रदान पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया गया था, लेकिन यह असफल रहा।

11. मठों की संपत्तियों का प्रबंधन और राज्य के प्रति मठों की बाध्यताएँ

अनेक और विशाल मठ संपत्तियों से राजस्व बढ़ाने के लिए – जो लगभग सभी मठाधीशों के लिए चिंता का विषय था – एक बड़े प्रशासनिक कर्मचारियों की आवश्यकता थी। इस स्टाफ के दो कार्य थे: यह सुनिश्चित करना कि मठ को कोई वित्तीय हानि न हो, और उससे भी अधिक सावधानी से यह सुनिश्चित करना कि मठ राज्य को आवश्यक से अधिक भुगतान न करे, ताकि अनजाने में राज्य अधिकारियों को विशेषाधिकार चार्टर में निर्धारित से अधिक की मांग करने का आधार न मिल जाए।

मठाध्यक्ष मठ के आध्यात्मिक और प्रशासनिक दोनों प्रबंधन के प्रभारी थे। पदभार संभालने पर, मठाध्यक्ष ने एक बहुत ही विस्तृत सूची, या 'महान कोषागार की सूची' के अनुसार मठ की संपत्ति का प्रभार संभाला। इस सूची में मठ की निधियाँ, पूजा संबंधी बर्तन, आइकन (चित्र), सभी प्रकार की चल संपत्ति और दस्तावेज़ शामिल थे - जिनमें किसानों के साथ मठ के सभी अनुबंधों की सूची, बिक्री के दस्तावेज़ और बंधक रिकॉर्ड आदि शामिल थे।[563] मठ के प्रबंधन से संबंधित सभी मामलों में, कोषाध्यक्ष द्वारा मठाध्यक्ष की सहायता की जाती थी, जिसकी प्रत्यक्ष जिम्मेदारी मठ की संपत्ति की देखरेख करना था।

मठ की संपत्तियों का प्रबंधन या तो वरिष्ठ भिक्षुओं द्वारा या मठ समुदाय के विश्वसनीय सदस्यों द्वारा किया जाता था। ये भिक्षु, जिन्हें आमतौर पर भ्रातृसंघ द्वारा चुना जाता था और कभी-कभी मठाध्यक्ष द्वारा नियुक्त किया जाता था, मठ संबंधी दस्तावेजों में 'परिषद् बुजुर्ग' के रूप में उल्लेखित हैं[564] । उन्हें मठ की जागीरों या गांवों में 'गांव के बुजुर्गों' के रूप में भेजा जाता था, जहाँ वे मठ के अधिकार का प्रतिनिधित्व करते थे। मठ के भीतर, वे कई तरह के कर्तव्य निभाते थे: अस्तबल के बुजुर्ग अस्तबलों और सारसियों की देखरेख करते थे, जबकि भोजनशाला के बुजुर्ग भोजनशाला की देखरेख करते थे।

धीरे-धीरे, विशेष रूप से 17वीं शताब्दी में, उनकी जगह 'बेल्त्सि' नामक सामान्य सेवकों ने ले ली। ये लोग मठ से जुड़े हुए लोग थे। इन मठवासियों, या यहाँ तक कि मठ के नौकरों को, ऊपर उल्लेखित मठ के नौकरों से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। ये नौकर, जो मुख्य रूप से प्रशासन में लगे हुए थे, ज़्यादातर गरीब बोयार और कुलीन परिवारों से आते थे; दस्तावेज़ों में उन्हें अक्सर 'मठ के बोयार बच्चे' के रूप में संदर्भित किया जाता है। ऐसे किसी बोयार के बेटे के लिए अपनी कर्ज़ में डूबी जागीर को मठ को उपहार के रूप में या अपनी आत्मा की शांति के लिए सौंपना असामान्य नहीं था; फिर वह मठ की बस्ती में बस जाता और मठ की जागीरों तथा उसके गांवों में एक गांव के प्रबंधक या प्रबंधक के रूप में मठ की सेवा करके अपनी आजीविका कमाता था। बड़े मठों में ऐसे 'मठवासी लोगों', या मठ के सेवकों की संख्या बहुत महत्वपूर्ण थी। मठों के बस्तियों में, उनके अपने स्थायी आंगन होते थे; इसके अलावा, उन्हें कभी-कभी विभिन्न प्रशासनिक कर्तव्य निभाने के लिए पूरे एक साल के लिए दूर-दराज के गांवों और जमीनों पर भेजा जाता था। 1420 के दशक की शुरुआत में ही, ट्रिनिटी-सर्गीयस मठ में एक 'सेवा बस्ती' थी, जो धीरे-धीरे सर्गेव पोसाद में विकसित हो गई। 1594 में, मठ में ऐसे 159 मठवासी नौकर थे, जिनमें से 43 प्रशासनिक कार्यों में लगे हुए थे, जबकि 116 ने मठ की घुड़सवार रेजिमेंट बनाई। संकट के समय के दौरान, जब मठ पर पोलिश लोगों ने घेराबंदी कर रखी थी, उन्होंने मठ की दीवारों पर सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी; 1692 तक, इस बस्ती में पहले से ही 160 घर थे, और 1651 में मठ में 371 घुड़सवार योद्धा थे; 1646 के कर रजिस्टरों में 217 घुड़सवार योद्धाओं का उल्लेख है, जिनमें से 60 बोयार या कुलीन वंश के थे; 1677 के कर रजिस्टरों में मठ के सेवकों के 242 घरों का उल्लेख है। 1651 में, ज़ार अलेक्सी ने एक सैन्य अभियान पर इस मठ से 230 घुड़सवार योद्धाओं को लिया था। मठ के सेवकों में पुरोहितों के बेटे और व्यापारी भी शामिल थे; एकमात्र अनुपस्थित समूह किसान थे, जिन्हें मठ के सेवकों की एक अलग श्रेणी या 'डेटन्याशी' ([565]) के रूप में

---

[563] RIB. 32. संख्या 229 (1567, कोरियाज़ेम्स्की मठ के संबंध में) या RIB. 35. संख्या 470 (1638, प्रिलुट्स्की मठ के संबंध में)।

[564] पुराने रूसी धार्मिक साहित्य में 'स्टारेट्स' शब्द के विभिन्न अर्थों को स्पष्ट करना आवश्यक है। सबसे पहले, 'स्टारेट्स' शब्द का उपयोग अक्सर पवित्र पदवी के बिना एक वृद्ध भिक्षु - यानी एक हाइरोमोंक नहीं - को संदर्भित करने के लिए किया जाता था; इसी अर्थ में हम मॉस्को - तीसरी रोम - पर कृतियों के लेखक, स्टारेट्स फिलोथियस की बात करते हैं; दूसरे, 'स्टारेट्स' शब्द का प्रयोग तथाकथित 'कैथेड्रल एल्डर्स' - यानी उन भिक्षुओं के लिए किया जाता था, जो मठाधीश के साथ मिलकर मठ का प्रबंधन करते थे और विशिष्ट कर्तव्य निभाते थे; और अंत में, 'स्टारेट्स' शब्द का प्रयोग उन वृद्ध और अनुभवी भिक्षुओं के लिए भी किया जाता था जो नवसिखुओं और अन्य भिक्षुओं को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते थे - ये ही शब्द के वास्तविक अर्थ में 'स्टारेट्स' हैं। शब्द 'एल्डर' के विभिन्न अर्थों में उपयोग का एक उदाहरण नोवगोरोड के आर्चबिशप सिमियन का स्नेतोगोर्स्क मठ को लिखे गए एक पत्र में मिलता है, जहाँ दो उदाहरणों में 'एल्डर' शब्द एक आध्यात्मिक गुरु को संदर्भित करता है, जबकि दो अन्य में यह एक परिषद के एल्डर को संदर्भित करता है। RIB. 6. संख्या 45; तुलना करें: स्मिरनोव। द ओल्ड रशियन स्पिरिचुअल फादर, में: रीडिंग्स। 1914. 2. पृ. 26.

[565] I. A. सर्गेव पोसाद में मसीह के जन्म की चर्च, में: रीडिंग्स। 1891. 3. पृ. 4–8, 17, 28, 33। ऐसे मठवासी व्यक्तियों की सूची के लिए, देखें: आर्सेनी। उद्धृत कृति, में: रीडिंग्स। 1867. 3.

वर्गीकृत कयिा गया था। पुरोहतिों के बेटों ने मठ के कार्यालयों में लपिकि - डीकन या क्लर्क - के रूप में, साथ ही मठ के रसोइयों के रूप में भी सेवा की। बाद वाले सभी प्रमुख मठों में एक महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाते थे। वे मॉस्को में मठों के अधकिृत प्रतनिधि थे, जहाँ वे मठों की संपत्तयिों में रहते थे और मठों की ओर से महल कार्यालय, और बाद में मठ कार्यालय, के साथ वभिन्नि प्रकार के मामलों पर समन्वय करते थे। ये अत्यधकि सक्रयि और सक्षम व्यक्त थे, जो स्थानीय परस्थितियिों के अपने ज्ञान और मास्को में प्रशासनकि कार्यालयों की जटलि कार्यप्रणाली से अपनी परचिति होने के कारण, मठों के लिए लगभग अपरहिार्य थे। उनका प्रभाव काफी था, और मठाधीश हमेशा उनकी इच्छाओं और मांगों को पूरा करते थे[566] ।

उदाहरण के लिए, बड़ी मठों की संपत्तयिों के प्रबंधन की जटलिता इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि 18वीं शताब्दी की शुरुआत में ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ में 60 प्रशासनकि वभिाग थे; सेंट जोसेफ-वोल्कोलांस्क मठ ने अपनी भूमि को पाँच प्रशासनकि वभिागों में वभिाजति कयिा था, जनिमें से प्रत्येक का नेतृत्व एक गाँव का बुजुर्ग करता था[567] । जागीरों और गांवों के भीतर मठों के चौकीदार ठकिाने थे, जहाँ गाँव के बुजुर्ग रहते थे; ये प्रशासनकि केंद्र थे जहाँ कसिान प्रतनिधि मिठ के अधकिारयिों के साथ मामले सुलझाते थे, जहाँ मौद्रकि और वस्तुगत करिाया का भुगतान कयिा जाता था, और जहाँ गाँव के बुजुर्ग, अभय-पत्रों के आधार पर, कसिानों पर न्याय का प्रशासन करते थे[568] ।

चार्टर्ड और, मुख्य रूप से, 'प्रतरिक्षा' चार्टर मठ और उसके मठाधीश के अधकिारों के लिए कानूनी आधार थे, जो मठ की भूमि पर रहने वाले कसिानों पर थे। ग्रैंड पैलेस कार्यालय – और, 1649 और 1677 के बीच, मठ कार्यालय – मठ संपत्तयिों से संबंधति राजकोषीय और न्यायकि मामलों के लिए जम्मिेदार सरकारी नकिाय था[569] । जैसा कि अध्याय VI में पहले चर्चा की गई है, ग्रैंड पैलेस कार्यालय का वर्णन पहले ही कयिा जा चुका है; यहाँ हम इसका उल्लेख केवल मठ संपत्तयिों के आंतरकि प्रशासन के संबंध में ही करेंगे।

चार्टर अनुदानों ने मठों को वत्तिीय अधकिार प्रदान कएि, लेकनि उन्होंने मठ की भूमि पर रहने वालों के दायत्वों के दायरे या सीमा को नर्दिष्टि नहीं कयिा; यह एक ऐसा मामला था जसिे स्वयं मठ प्राधकिरणों द्वारा नर्धिारति कयिा जाना था। मठों और उनकी भूमि के नविासयिों के बीच हुए अनेक समझौतों से यह स्पष्ट है कि इन दायत्वों की सीमा एक मठ से दूसरे मठ में और यहाँ तक कि एक ही मठ के वभिन्नि एस्टेट्स में भी भन्नि थी। अपने प्रतनिधियिों - गाँव के बुजुर्गों या प्रबंधकों - के माध्यम से, मठ करमुक्त श्रम के नष्पिादन और नकद तथा वस्तु के रूप में करों के समय पर भुगतान की नगिरानी करता था; स्थानीय परस्थितियिाँ या प्राकृतकि आपदाएँ - पाला, सूखा या बाढ़ - कर की राशि में कमी करने के आधार हो सकती थीं, और यह मठ के वविेक पर था। सरकार और मठ दोनों का उद्देश्य एक ही था - कसिानों को करों का भुगतान करने से बचने से रोकना, 'ताकि कर-सेवा के दायत्वि वाले अपने कर्तव्यों से न बच सकें'। ग्रैंड पैलेस कार्यालय कर रजस्टिर रखता था; बाद में, मठ कार्यालय के युग के दौरान, जनगणना रजस्टिरों ने वही भूमकिा नभिाई; सरकार के लिए, ये कर बोझ के आवंटन के लिए कानूनी आधार के रूप में काम करते थे।

मठ द्वारा राज्य को चुकाए जाने वाले कर, कर रजस्टिरों में नर्दिष्टि 'सोहा' (एक 'सोहा' कृषि योग्य भूमि का एक माप) की संख्या के आधार पर नर्धिारति कएि जाते थे; मठ की जमीनों पर, कुछ दुर्लभ अपवादों को छोड़कर, एक 'सोहा' 600 'च्वार्ट्स' के बराबर होता था। वभिन्नि मठों पर लगाया जाने वाला कर का राशि भन्नि-भन्नि होती थी। *1557–58 में* पेनोशस्की मठ (मास्को के पास) को प्रदान कएि गए एक चार्टर *में प्रति सोहा 1 रूबल का कर नर्धिारति कयिा गया था। इसके वपिरीत, उदाहरण के लिए, सोलोचनिस्की मठ ने 17वीं शताब्दी के अंतमि चौथाई भाग में प्रति सोहा 3.27 रूबल का भुगतान कयिा।*[570] *जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा गया है, 1679 में, 1676–1678 के नए जनगणना रकिॉर्ड के आधार पर, प्रति हिल कर को प्रत्येक मठ संपत्ति पर लगाया जाने वाला कर से बदल दयिा गया। इस बीच, मठ संपत्तयिों के लिए यह कर पहले ही 1623–1630 के दौरान लागू कयिा जा चुका था। इसे अंततः 19 मई 1630 के एक फरमान द्वारा वनियिमति कयिा गया। यह ध्यान देने योग्य है कि यह उपाय, जो राज्य के लिए लाभकारी था लेकनि मठ*

---

[566] यह उदाहरण के लिए, सोलोचनिस्की मठ के दस्तावेजों से स्पष्ट है। डोब्रोक्लोन्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 28–29। मठ के प्रबंधकों पर, देखें: वेव्डेन्स्की, ए. '16वीं–17वीं शताब्दी के उत्तरी रूसी मठों में प्रबंधकों की श्रम गतविधियिाँ', सेवर (1923) में। पृ. 36–64 (दुर्भाग्य से, यह मेरे पास उपलब्ध नहीं है)।

[567] I. A. द चर्च ऑफ द नेटविटिी ऑफ क्राइस्ट। पृ. 8; शेचेपेटोव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 115।

[568] डोब्रोक्लोन्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 24 आदि; तुलना करें: मकारीय। 2nd संस्करण। खंड 8, पृ. 260–262।

[569] गोर्चाकोव। द मॉनास्टकि ऑफसि। पृ. 40 आदि।

[570] भक्षिु संपत्तयिों से कर लगाने के बारे में, देखें: रोझकोव। कृषि। पृ. 221–231; वेसेलोव्स्की। द प्लowing लेटर। खंड 1, संख्या 1। पृ. 300; व्लादमिीर्स्की-बुदानोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 189; डोब्रोक्लोन्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 61।

संपत्तियों के लिए बोझिल था, पहले ही फिलिरेत के पैट्रिआर्केट के दौरान लागू किया जा चुका था। 19 मई 1630 के 'लविंग क्वार्टर' से संबंधित फरमान के तहत, कर भूमि के क्षेत्रफल के आधार पर नहीं बल्कि मठ की संपत्तियों के भीतर स्थित घरों की संख्या के आधार पर लगाए गए थे; दूसरे शब्दों में, कृषि में लगे हुए नहीं—जैसे दिहाड़ी मजदूर या कारीगर—लोगों के घरों को भी ध्यान में रखा गया था। यह स्पष्ट है कि यह नई प्रथा मठों के लिए अत्यधिक हानिकारक थी[571] । हालांकि, 17वीं सदी में, सरकार ने वित्तीय मामलों में 16वीं सदी की तुलना में अधिक निर्णायक रुख अपनाया, जब विशेष चार्टरों ने कुछ मठों—जैसे ट्रिनिटी-सर्गेयस और वोल्कोलामस्क के सेंट जोसेफ—को सभी कराधान से छूट दी थी, जबकि अन्य को एक निर्दिष्ट अवधि के लिए कुछ प्रकार के करों से छूट दी गई थी। 1649 के कोड ने इन विशेषाधिकारों को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।

[572]भूमि कर के अतिरिक्त, मठ राज्य के प्रति अन्य दायित्वों के अधीन थे। इन दायित्वों के संबंध में, यह लंबे समय से स्पष्ट था कि राज्य, मठों को चार्टर प्रदान करते समय, उन पर कुछ कर्तव्य थोपना चाहता था, जो मुख्यतः सैन्य सेवा और जेलों के प्रशासन से संबंधित थे। 15वीं सदी के पेटेंट पत्रों में ही ऐसी शर्तें निर्धारित की गई थीं, जिनके अनुसार मठ, करों से मुक्त होते हुए भी, किलों के निर्माण में वित्तीय और भौतिक सहायता प्रदान करने के लिए बाध्य थे[573] । जैसा कि एस. रोज़्देस्ट्वेंस्की ने स्थापित किया, 16वीं सदी के पेटेंट पत्रों में हमेशा मठों की राष्ट्रीय और सैन्य प्रकृति की गतिविधियों में भागीदारी का प्रावधान होता था। जब पुराने पत्र-पेटेंट (letters patent) अनुमोदित किए गए, तो पिछली कुछ विशेषाधिकारों को अक्सर रद्द कर दिया गया[574] । 1584 के फरमान द्वारा तारहनों (tarhans) को समाप्त करना रक्षा आवश्यकताओं के आधार पर उचित ठहराया गया था। सरकार ने अमीर मठों को छोटे सैन्य दलों को बनाए रखने या किलों के निर्माण में भाग लेने के लिए बाध्य किया। उदाहरण के लिए, सोलोवेत्स्की मठ को 100 धनुर्धारियों को बनाए रखने की आवश्यकता थी; इसके अलावा, इसने श्वेत सागर के तटों पर किलेबंदी चौकियाँ बनाईं, जिसके लिए उसे स्वीडन के साथ युद्ध के बाद पोसोशनी कर से छूट दे दी गई थी। ट्रिनिटी-सर्गीय मठ को, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, सैन्य सेवा के लिए घुड़सवार योद्धाओं का एक दल प्रदान करने की आवश्यकता थी। दक्षिण में, काशिरा शहर के पास स्थित बेलोपेसोत्स्की मठ ने विशाल पत्थर की दीवारें खड़ी कीं, जिन पर मठ के नवोदितों द्वारा संचालित तोपें रखी गई थीं। पोनज़िोवये में टेट्युशी शहर के ट्रिनिटी मठ ने एक किलेबंदी रेखा - रक्षात्मक रेखा - के साथ चौकीदारी की ड्यूटी प्रदान की। कोस्त्रोमा में इपाटियेव मठ[575] के पास भी विशाल पत्थर की दीवारें और मठ समुदाय से लिया गया एक सैन्य दल था। एस. रोज़्देस्ट्वेंस्की लिखते हैं, "'मठों की ज़मीनों' पर 16वीं शताब्दी के दूसरे छमाही में पैतृक और सामंती जमीनों की तुलना में अधिक कर लगाया जाता था", हालांकि उन्हें पेटेंट पत्रों द्वारा विभिन्न विशेषाधिकार प्रदान किए गए थे[576] । समस्याओं के समय (1605–1613) के दौरान, कई मठों ने अपनी शक्तिशाली किलेबंदी की दीवारों की बदौलत रक्षात्मक महत्व प्राप्त किया और उन्हें मस्कोवाइट राज्य की सेनाओं द्वारा पोलिश टुकड़ियों के खिलाफ लड़ने के लिए इस्तेमाल किया गया ; इस प्रकार, 16वीं शताब्दी में उठाए गए उपायों ने अपनी उपयोगिता साबित कर दी। ट्रिनिटी-सर्गीय मठ की घेराबंदी विशेष रूप से प्रसिद्ध है; मठ को घेरने वाले पोलिश सैनिकों को भारी नुकसान उठाना पड़ा और मठ के रक्षकों – मठ के नौकरों, भिक्षुओं और आसपास के गांवों के निवासियों[577] – द्वारा उन्हें पीछे हटना पड़ा। परेशानियों के समय के दौरान, राज्य ने अपने सैनिकों को बनाए रखने के लिए मठ के कोष और अनाज के भंडार का भी उपयोग किया[578] । 17वीं सदी में भी, सरकार ने सैन्य उद्देश्यों

---

[571] ड्याकोनोव। *एसेज़* (1898)। पृ. 312–316। वही। 'ऐतिहासिक साहित्य में द लविंग क्वार्टर', *रूसी हिस्टोरिकल जर्नल* में। 5 (1918)। पृ. 154–176; वेसेलोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ। खंड 1, अध्याय 1; खंड 2, पृ. 660। लाप्पो-दानिलेव्स्की। प्रत्यक्ष कराधान का संगठन। पृ. 530 (संयोगवश, यह कृति चिर्च इतिहासकारों के लिए भी अत्यधिक मूल्यवान है)। 1630 का फरमान यहाँ मुद्रित है: स्टोरोज़हेव। स्थानीय कार्यालय की फरमान पुस्तक। पृ. 101–103।

[572] एएई. 3. संख्या 34, 97–99; डीएआई. 2. संख्या 26, 33 (करीलोव मठ); एएई. 3. संख्या 97 (पस्कोव-पेचेरस्क मठ); एएई. 2. संख्या 160 (प्रिलुत्स्की मठ).

[573] एएई. 1. संख्या 28, 131; एवाईयू. 1. संख्या 31. 4; एआई. 1. संख्या 71, 74; तुलना करें: रोज़डेस्ट्वेंस्की. सेर्विलाई लैंडओनरशिप. पृ. 138.

[574] उपरोक्त. पृ. 138; AAE. 1. सं. 200; AI. 1. सं. 143; मिल्युकॉव. विवादास्पद मुद्दे. पृ. 17.

[575] रोज़डेस्ट्वेंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 140–143; स्मिरिनोव। द टाउन्स ऑफ़ द मस्कोवाइट स्टेट। खंड 1 (1917)। पृ. 108; स्टोरोज़हेव। ऑन द हिस्ट्री ऑफ़ एग्रीकल्चरल लाइफ़ एट द कोस्त्रोमा इपातियेव एंड बोगोयाव्लेन्स्की मॉनेस्ट्रीज़, इन: रीडिंग्स। 1894। पृ. 137.

[576] रोज़्हेस्ट्वेंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 144; मिल्यूकोव ने भी यही विचार व्यक्त किया (विवादास्पद मुद्दे। पृ. 48, 79)।

[577] अव्रामी पालित्सिन। किंविदंती, में: RIB. 13.

[578] एएई. 2. संख्या 135. ट्रिनिटी-सर्गेस मठ की पवित्र-कोठरी से विशेष रूप से बड़ी रकम ली गई; ज़ार बोरिस ने 15,400 रूबल, झूठे दिमित्री ने 30,000 रूबल, ज़ार वासिली शुइस्की ने 20,000 रूबल लिए, जो उस समय के मानकों के अनुसार एक विशाल संपत्ति थी। माकारी. 10. पृ. 223. 'समय की परेशानियों' के बाद मास्को आए विदेशी यात्रियों ने मठों से धन वसूलने के बारे में लिखा। रुश्चिस्की. उद्धृत ग्रंथ, में: रीडिंग्स. 1871. 3. पृ. 144.

के लिए मठों के कोष और अनाज भंडार का अक्सर उपयोग किया; न ही मठों को सैनिकों के समर्थन के लिए एकमुश्त करों से छूट मिली थी[579] । परिणामस्वरूप, इतिहासकारों की आलोचनात्मक टिप्पणियाँ या समकालीन लोगों की शिकायतें, जो पीटर द ग्रेट की कार्रवाइयों के बारे में हैं, जिन्होंने मठों के कोष का सैन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग किया, निराधार हैं। पीटर केवल मॉस्को सरकार की पिछली नीति को ही जारी रख रहे थे, और जब, 1696 में, उन्होंने मठों को उनकी अनुमति के बिना किसी भी प्रकार का खर्च करने से रोकते हुए, मठों की खाता-बही को ग्रैंड पैलेस कार्यालय में प्रस्तुत करने का आदेश दिया, मठों के लिए इस उपाय में कुछ भी नया नहीं था, क्योंकि मठ कार्यालय ने पहले ही मठों के खातों की जांच की थी; हालाँकि, इस अवसर पर राज्य द्वारा अपनाया गया लहजा और कठोर हो गया[580] ।

तथाकथित 'याम्स्काया' कर भी राज्यव्यापी दायित्वों में से एक था; इसकी अदायगी 15वीं-17वीं शताब्दी के पेटेंट पत्रों द्वारा सभी मठों पर थोपी गई थी[581] । इसी प्रकार बंदियों की रिहाई के लिए धन एकत्र करने पर भी यही लागू था: मठों और सामान्यतःसभी धार्मिक संस्थानों को 'बंदी धन' का भुगतान करना अनिवार्य था; स्टोग्लाव ने भी इस दायित्व की पुष्टि की[582] .

12. मठ संपत्तियों पर अधिकार क्षेत्र

अब हम मठभूमियों पर रहने वाले व्यक्तियों के अधिकार क्षेत्र के प्रश्न की ओर मुड़ते हैं। कानूनी रूप से, एक ओर मठों और भिक्षुओं के बीच, और दूसरी ओर चर्च और राज्य के बीच संबंध इस प्रकार था: भिक्षु, पुरोहितों के रूप में, धार्मिक मामलों में मेट्रोपॉलिटन और डायोसीन बिशपों के अधिकार क्षेत्र के अधीन थे, जबकि मठ, भूमि मालिकों के रूप में, राज्य के अधीन थे—अर्थात, ग्रैंड प्रिंसेस और बाद में, जारों के अधीन। इस अंतिम परिस्थिति पर चर्च पदानुक्रम द्वारा कोई आपत्ति नहीं उठाई गई; न तो वोलात्स्क के जोसेफ ने और न ही 'Stoglav[583] contested' के बिशपों ने इस अधिकार क्षेत्र पर आपत्ति जताई। हालांकि, व्यवहार में, एक ओर मठों और धर्मप्रांत के बिशपों के बीच, और दूसरी ओर मठों और राज्य के बीच कानूनी संबंध, ग्रैंड प्रिंस या ज़ार द्वारा जारी की गई अभय-पत्रों द्वारा निर्धारित किया जाता था। इन पत्रों की सामग्री भिन्न होती थी: उनमें से कुछ ने मठों को धर्मप्रांत के बिशप के अधिकार क्षेत्र से पूरी तरह से छूट दी, जबकि अन्य ने उन्हें केवल शुद्ध चर्च संबंधी मामलों को छोड़कर सभी मामलों में अधिकार क्षेत्र से छूट दी। चर्च की पदानुक्रम व्यवस्था, बेशक, प्रतिरक्षा पत्रों के पहले प्रकार के खिलाफ थी, क्योंकि वे चर्च के नियमों का खंडन करते थे और चर्च के अधिकार क्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप को दर्शाते थे। स्टोग्लाव ने यह आदेश दिया कि इस प्रकार के अभय-पत्र अब जारी नहीं किए जाने चाहिए। हालाँकि, यह आदेश जल्द ही भुला दिया गया, और ज़ार इवान चौथे ने ऐसे पत्र जारी करना जारी रखा[584] ।

प्रतिरक्षा पत्रों में, जो मठ के निवासियों और मठ की भूमि पर न्यायिक अधिकार मठाधीश को हस्तांतरित करते थे, तीन प्रकार के मामलों को प्रतिष्ठित किया गया है: 1) आपराधिक मामले – हत्या, डकैती और चोरी, रंगे हाथों पकड़े गए, सामान्य राज्य संहिता के आधार पर राज्य प्राधिकरणों के अधिकार क्षेत्र में थे; 2) मठ के किसानों के बीच अन्य आपराधिक मामले और विवादों की सुनवाई मठाधीश या उनके प्रतिनिधि द्वारा की जाती थी; 3) यदि विवाद में शामिल पक्ष विभिन्न प्राधिकरणों के अधिकार क्षेत्र में आते थे, तो एक 'मिश्रित न्यायालय' स्थापित किया जाता

---

[579] AI. 4. संख्या 3; मकारी. 11. पृ. 204; DAI. 10. संख्या 34; RIB. 12. पृ. 1046–1065, 1188–1215; मिल्युटिन. उद्धृत ग्रंथ, में: रीडिंग्स. 1861. 2. पृ. 465, 471–477। इस प्रकार, पोलिश युद्ध के दौरान, ज़ार अलेक्सी ने ट्रिनिटी-सर्गीय मठ से 100,000 रूबल और किरिलोव मठ से 10,000 रूबल लिए, जबकि पैट्रिआर्कल जिला (मठों सहित) ने 10,000 सैनिक प्रदान किए।

[580] AAE. खंड 1, संख्या 298; स्टोग्लाव. काज़ान संस्करण. पृ. 235, 297; AI. खंड 1, संख्या 154, 2; AAE. खंड 4, संख्या 315; PSZ. खंड 3, संख्या 1664; गोर्चाकोव. मठ आदेश। पृ. 41–55।

[581] AI. 1. संख्या 115 (1505), 147 (1547); AAE. 1. संख्या 164 (1517), 179 (1534); AYU. 1. संख्या 30. 4 (1554) और अन्य।

[582] AYu. 1. संख्या 30. 4; 209. 5; 211; स्टोग्लाव। कज़ान संस्करण। अध्याय 5 और 72।

[583] DRV. 14. पृ. 196; स्टोग्लाव. कज़ान संस्करण. पृ. 235, 297.

[584] उपरोक्त। अध्याय 5 और 67; DAI. 1. संख्या 46, 48, 114, 130। न्यायिक चार्टरों के उदाहरण: 1471 – किरिलोव मठ को। AAE. 1. संख्या 95; 1494 – ट्रिनिटी-सर्गीय मठ को। वही। संख्या 131; 1500 – जोसेफोव मठ को। वही। संख्या 136; 1535 और 1551 – ट्रिनिटी-सर्गेयस मठ को। AJU. 1. संख्या 97 और 75; 1542 – कोरेल में सेंट निकोलस मठ को। AI. 1. संख्या 141; 1547 – स्ट्रोकिन्स्काया हर्मिटेज को। उपरोक्त। संख्या 147; 1573 – अस्त्रखान में ट्रिनिटी मठ को। उपरोक्त। संख्या 184 और अन्य। धार्मिक मामलों में न्यायिक अधिकार के बिशपों को हस्तांतरण के उदाहरण: AAE. 1. संख्या 386; 2. संख्या 16, 62; 3. संख्या 67; AI. 2. संख्या 58, 69, 77, 86; AI. 2. संख्या 65; DAI. 2. संख्या 37, आदि। हालाँकि, बहुत बार, प्रतिरक्षा चार्टर के माध्यम से, धार्मिक मामलों पर न्यायिक अधिकार व्यक्तिगत रूप से धर्मप्रांत के बिशप को प्रदान किया जाता था, न कि उनके न्यायिक अधिकारियों (डेकानी) को, उदाहरण के लिए: DAI. 1. संख्या 44 (1548); तुलना करें: मकरिय. 2nd संस्करण. 8. पृ. 223.

था, जिसमें मठाधीश का एक प्रतिनिधि या स्वयं मठाधीश और एक राज्य अधिकारी शामिल होता था। आमतौर पर, मठाधीश स्वयं न्यायिक कार्यवाही नहीं करते थे, जो मठ की संपत्तियों के विशाल विस्तार को देखते हुए उनके लिए असंभव भी था। उन्होंने अपने अधिकारों को गाँव के बुजुर्गों को सौंप दिया था, जो अदालत की अध्यक्षता करते थे और किसान वर्ग के कई (तीन से पाँच) प्रतिनिधियों की उपस्थिति में फैसले सुनाते थे। किसानों को किसी अन्यायपूर्ण निर्णय के खिलाफ स्वयं मठाधीश के समक्ष अपील करने का अधिकार था[585] ।

मठों के बीच, या मठों और धर्मनिरपेक्ष जमींदारों के बीच, विभिन्न विवादास्पद मुद्दों—जैसे कि जमीनों की सीमा रेखा, भाग गए किसान आदि—से संबंधित विवादों पर ग्रैंड पैलेस कार्यालय का अधिकार था, और 1646 के बाद, मठ कार्यालय का अधिकार था[586] । इन धर्मनिरपेक्ष संस्थानों के प्रति मठों की संपत्तियों का न्यायिक अधीनस्थ होना पादरियों को पसंद नहीं आया होगा, क्योंकि धर्मनिरपेक्ष अधिकारी अक्सर उन मामलों में हस्तक्षेप करते थे जो चर्च पदानुक्रम की दृष्टि में उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर थे; साथ ही, कई मठों (मुख्य रूप से पहले से उल्लेखित 'काले मठ') ने ठीक ऐसी ही अधीनता की मांग की। पैट्रिआर्क निकोन ने मठ विभाग के अस्तित्व और उसकी गतिविधियों के खिलाफ विशेष रूप से तीव्र विरोध किया[587] । 1667 और 1675 की परिषदों के निर्णय चर्च पदानुक्रम के लिए राज्य पर एक अस्थायी विजय थी, क्योंकि इन फैसलों ने, जिन्हें ज़ार अलेक्सी ने अनुमोदित किया था, पुरोहित वर्ग पर मठ कार्यालय के न्यायिक अधिकार को समाप्त कर दिया, और मठ मठ संपत्तियों से संबंधित सभी मामलों में धर्मप्रांत के बिशपों के न्यायिक अधिकार के अधीन आ गए[588] । तब से, मठ कार्यालय केवल मठ की भूमि से करों के संग्रह से संबंधित था; इसने पहले की तरह मठों की खाता-बही की जांच करना और राज्य-व्यापी दायित्वों के पालन की निगरानी करना जारी रखा, कराधान के उद्देश्यों के लिए मठ की संपत्तियों का एक सूचीपत्र रखा, और इसी तरह। 1677 में, मठ कार्यालय को समाप्त कर दिया गया, और ये सभी मामले एक बार फिर से ग्रैंड पैलेस कार्यालय को हस्तांतरित कर दिए गए। यह स्थिति 17वीं सदी के अंत तक बनी रही, जब पादरियों के अधिकार क्षेत्र के संबंध में पीटर महान के सुधारों के साथ-साथ मठ संपत्तियों के सामान्य मुद्दे के सिलसिले में, कुछ बदलाव हुए[589] ।

अध्याय IX. 16वीं–17वीं शताब्दी में मठवासी जीवन का संगठन

1. प्राचीन रूस में मठवासी नियमों के इतिहास से, उनकी उत्पत्ति से 16वीं शताब्दी तक

जबकि दुनिया का भ्रष्ट प्रभाव बाहरी रूप से मठवासी जीवन में घुसपैठ कर रहा था, मठ की दीवारों के भीतर तपस्या की नींव को कभी-कभी धार्मिक परंपरा की भावना में नहीं, बल्कि अपनी समझ के अनुसार समझा जाता था। इस खतरे को ईसाई तपस्या के शुरुआती दिनों में ही पहचाना जा चुका था, जैसा कि सबसे प्राचीन तपस्या संबंधी ग्रंथों और मठवाद के संस्थापकों की गतिविधियों, दोनों से प्रमाणित होता है। अपने लेखन और व्यवहार में, पवित्र पिताओं ने तपस्या के अभ्यास में आत्म-इच्छा के खतरे पर विशेष ध्यान दिया, क्योंकि अपनी समझ के अनुसार मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा आमतौर पर मठवासी जीवन के सांसारिकपन से पहले आती थी। इसका मुकाबला करने के लिए, मठवासी जीवन के लिए विभिन्न नियम बनाए गए, जिन्हें मठवासी विधानों में संकलित किया गया है। ये विधान समय और स्थान की परिस्थितियों से प्रभावित होकर, और अपने लेखकों के तपस्या संबंधी विचारों की व्यक्तिगत विशेषताओं को दर्शाते हुए, धीरे-धीरे विकसित हुए। फिर भी, अपने मूल में, वे सभी मठवाद के संस्थापक और पहले नियम के लेखक, महान संत पाचोमियस की भावना में, प्रारंभिक ईसाई परंपरा में निहित हैं। बाद की पीढ़ियों के तपस्वियों ने संत पाचोमियस के कार्य को जारी रखा और पूर्वी ईसाई मठवाद को वास्तविक ईसाई तपस्या के सही मार्ग पर निर्देशित किया[590] ।

---

[585] मकारिई। द्वितीय संस्करण। खंड 8. पृ. 263–265।

[586] उपरोक्त, पृ. 265; गोर्चाकोव. द मोंस्टिक ऑफिस. पृ. 43, 48, 54–57, 66 ff.

[587] उपरोक्त, पृ. 91.

[588] एएई. खंड 1, संख्या 155 (1667), 204 (1675); पीएसजेड. खंड 1, संख्या 412; गोरचाकोव। वही, पृ. 96 आदि।

[589] उपरोक्त, पृ. 99–102; PSZ. 2. सं. 699 (1677)। यह ध्यान देने योग्य है कि 1667 और 1675 के फरमानों के बाद भी, कुछ मठ विभिन्न मामलों पर ग्रैंड पैलेस कार्यालय से अपील करते रहे; उदाहरण के लिए, AI. 4. सं. 166।

[590] तुलना करें अध्याय I, 1. संत पाचोमियस और संत बेसिल महान के नियमों ने चर्च में मठवासी जीवन का आधार बनाया। संत सावस का नियम, जिसे पवित्र संत सावस († 532) ने फिलिस्तीन में अपने मठ के लिए तैयार किया था, के साथ एक नया युग शुरू होता है। यह कोटेलेरि द्वारा *Monumenta Ecclesiae Graecae* में मुद्रित है। खंड 3, पृ. 222 ff.; तुलना करें: बार्डनहेवर। खंड 5, पृ. 127; वेल्ज़र। *Kirchenlexikon*. 2nd संस्करण, खंड 10, पृ. 1434; फिशर, डब्ल्यू. 'ऑन द टाइपिकॉन ऑफ़ सेंट सब्बास', में: बीज़ेड. 8 (1890), पृ. 306 आदि; कुर्ज़, ई. ओप.

पहले (देखें अध्याय II), पुराने रूसी मठवाद के शुरुआती चरणों का वर्णन करते हुए, हमने पहले ही कीव रस के पहले मठों के नियमों पर चर्चा कर ली है। अब हम 16वीं–17वीं शताब्दियों के मठों के विधान के प्रश्न की ओर मुड़ेंगे। शुरुआत में, हमें यह बताना चाहिए कि 14वीं से 17वीं शताब्दी की अवधि के लिए रूसी चर्च के मठों के विधान का इतिहास बहुत खंडित और काफी अस्पष्ट है।

कीव गुफाओं के मठ में सेंट थियोडोसियस द्वारा लागू किया गया नियम सेंट थियोडोर द स्टुडाइट का नियम था, जिसे पैट्रिआर्क अलेक्सियस ने संशोधित किया था; इसमें मठवासी जीवन के लिए एक सामुदायिक (किनोवियन) संगठन का प्रावधान था[591] . हालाँकि स्टुडाइट नियम का भाग्य, विशेष रूप से इसका अनुशासनात्मक खंड जो सख्त सेनोबिटिक पालन की मांग करता था, काफी दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ: मठवासी सामुदायिक जीवन की नींव बहुत जल्द ही विस्मृति में चली गई, और मठवाद ने लगभग हर जगह एकान्तवासी जीवनशैली अपना ली। हालांकि, इडियोराइथम (व्यक्तिगत अनुशासन) भी हमेशा मठवासी जीवन का आधार नहीं रहा; 12वीं-15वीं शताब्दियों को एक ऐसे युग के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है जिसमें मठवासी नियम नहीं थे, और यह 13वीं-15वीं शताब्दियों के दौरान पस्कोव क्षेत्र में मठवाद पर सेरेब्रांस्की के उत्कृष्ट कार्य में अच्छी तरह से दर्शाया गया है[592] हालांकि, मठवासी अनुशासन और आचरण के सभी मामलों पर 'द रूल्स ऑफ सेंट सिरिल, मेट्रोपॉलिटन ऑफ रस' नामक एक ग्रंथ है, जिसे संभवतः वास्तव में मूल रूप से ग्रीक मेट्रोपॉलिटन सिरिल (13वीं सदी) द्वारा रचित किया गया था; यह 16वीं और यहां तक कि 17वीं सदी की पांडुलिपियों में मिलता है और इसमें अपेक्षाकृत विस्तृत मठवासी चार्टर शामिल है। संभावना है कि यह चार्टर 14वीं–15वीं शताब्दियों में अज्ञात था; वास्तव में, यह संदेहास्पद है कि इसे कभी किसी मठ में लागू किया गया हो[593] । सब संभावना है कि जब सेंट सेरगियस ऑफ़ राडोनेज़ मस्कोवी में मठवासी जीवन का आयोजन कर रहे थे, तब उन्हें भी इसके बारे में कुछ नहीं पता था। शुरुआत में, जैसा कि उल्लेख किया गया है, उन्होंने अपने मठ में अलग रहने का नियम लागू किया और केवल बाद में, भाइयों के विरोध के बिना नहीं, सामुदायिक नियम के आधार पर मठवासी जीवन का पुनर्गठन किया। उनके शिष्यों ने आदरणीय गुरु के उदाहरण का अनुसरण किया और, नए मठों की स्थापना करते समय, उनमें सख्त सामुदायिक नियम लागू किए, जो हालांकि, हर जगह जड़ नहीं पकड़ पाए[594] । 14वीं-15वीं शताब्दी के रूसी मठाधीशों के लिए मठ जीवन की नींव का प्रश्न पूरी तरह से स्पष्ट नहीं था, जैसा कि उदाहरण के लिए स्पासो-कामेनी मठ के इतिहास से पता चलता है, जहाँ एबॉट डायोनिसियस (1389 से ठीक पहले और 1418 तक) ने शुरू में सख्त सामुदायिक एथोनाइट नियम पेश किया था, लेकिन बाद में उन्होंने स्वयं और कुछ भिक्षुओं ने इडियोराइथम[595] का पालन किया। ट्रिनिटी-सर्गेयस मठ में, सामुदायिक नियम अधिक समय तक नहीं टिक पाया। जब 1478 में सेंट जोसेफ ऑफ वोल्त्स्क कुछ समय के लिए वहाँ रुके, तो मठ इडियोराइथमिक नियम के अनुसार चल रहा था, जैसा कि कुछ दस्तावेजों[596] द्वारा पुष्टि की गई है। हालांकि हम जानते हैं कि 14वीं-15वीं शताब्दियों में

सिट. 3 (1894), पृ. 167–170; और यह भी: ओल्टार्ज़ेव्स्की। पैलेस्टाइनी मठवाद चौथी से छठी शताब्दी तक (1896) और थियोडोसियस, हायरोमोंक। चौथी शताब्दी में पैलेस्टाइनी मठवाद, में: टीकेडीए (1899)। सब्बास के नियम में कुछ पूजा संबंधी निर्देश शामिल हैं, क्योंकि इसे व्यक्तिगत कोशिकाओं में रहने वाले भिक्षुओं के लिए बनाया गया था। संत सावस का अनुष्ठानात्मक नियम ऑर्थोडॉक्स सर्व-रात्रि जागरण का आधार-स्तंभ बन गया। मैनस्वेटोव, आई. द चर्च रूल (टायपिकॉन): इसकी ग्रीक और रूसी चर्चों में गठन और भाग्य (1885)। पृ. 168 आदि)। सेंट थियोडोरस द स्टुडाइट († 826) ने अपने मठ के लिए एक विशेष नियम संकलित किया, जिसे स्टुडाइट नियम के नाम से जाना जाता है। सावास के नियम के विपरीत, जो व्यक्तिगत कोशिकाओं में रहने वाले भिक्षुओं के लिए था, थियोडोरस के नियम को एक सामुदायिक नियम के रूप में वर्णित किया गया है (पीजी 99. पृ. 1704 आदि)। 10वीं सदी के अंतिम चौथाई भाग में, तथाकथित 'पवित्र पर्वत का विधान' सामने आया, जिसे माउंट अथोस पर लावरा के संस्थापक, सेंट अथानासियस ने संकलित किया था (तुलना करें: मेयर, पीएच. *Die Haupturkunde für die Geschichte der Athosklöster* (1894)। पृ. 101 आदि)। एथोस नियम स्टुडाइट नियम का एक अनुकूलन है: यह भी सामुदायिक जीवन की आवश्यकता पर जोर देता है, लेकिन इसके अतिरिक्त, यह उपवास और मठवासी अनुशासन के संबंध में विशेष रूप से सख्त नियम निर्धारित करता है (मैनस्वेटोव, उपरोक्त, पृ. 222)। इसके बाद की शताब्दियों में, बाइज़ेंटाइन सामुदायिक मठ आम तौर पर स्टुडाइट नियम के अनुसार रहते थे, हालांकि उनकी संस्कार संबंधी प्रथाएं काफी हद तक यरूशलेम नियम, जिसे साधारण तौर पर सावस का नियम कहा जाता था, द्वारा निर्धारित थीं। सोकोलोव। बीजान्टिन चर्च में 9वीं शताब्दी के मध्य से 13वीं शताब्दी की शुरुआत तक, 842–1204, मठवाद की आंतरिक स्थिति, में: Prav. sob. 1893. 3. पृ. 122; लेक्लेर्क, एच. सेनोबिटिस्म, में: डिक्शनैयर डी'आर्कीओलॉजी क्रिश्चियन एट डी लिटर्जी. 2. पृ. 3049–3248 और Monachisme. वही. 11. 2. पृ. 1774–1974. Sergius. उद्धृत कृति. 1. पृ. 33–46, 113 आदि.; Golubinsky. 2. 2. पृ. 429.

[591] गोल्बुइंस्की। खंड 1, भाग 2. पृ. 320–371, 502–608; खंड 2, भाग 2. पृ. 428; मंसवेतोव। वही। पृ. 113 ff., 121 ff.

[592] सरेब्रेयान्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 261.

[593] गोर्चाकोव, एम. 'ऑर्थोडॉक्स चर्च के प्रायश्चित्तात्मक नोमोकेनॉन के इतिहास पर' (1874)। पृ. 104–110।

[594] गोल्बुस्की। रेडोनज़ेज़ के आदरणीय सर्गियस और उनके द्वारा स्थापित ट्रिनिटी-सर्गियस लावरा, में: रीडगिस। 1909। खंड 2। पृ. 47, 75–86; खंड 3। पृ. 103; RIB। खंड 6। संख्या 21।

[595] स्पासो-कामेनी मठ की कथा, में: प्राव. सोब. 1861. 1. पृ. 203, 206.

[596] जोसेफ की 'आध्यात्मिक पत्रिका', में: VChM. सितंबर. भाग 1. पृ. 551; AI. 1. सं. 274; AYu. 2. सं. 126.

इडियोराइथमकि जीवन शैली धीरे-धीरे सेनोबटिकि जीवन शैली की जगह ले रही थी, हमारे पास लगभग कोई भी सामग्री नहीं है जो इस सवाल का जवाब देने में मदद करे कि पुराने रूसी मठ में इस व्यक्तगित मठवासी जीवन में वास्तव में क्या शामलि था। हालांकि, हमारे पास इस बात के प्रचुर प्रमाण हैं कि कई मठों में सामुदायकि जीवन जड़ नहीं पकड़ पाया; उस समय वकिसति मठवासी जीवन की व्यवस्था की बहुत तीखी आलोचना हुई, जसिका अर्थ है कि, वास्तव में, मठवासी जीवन न तो वास्तवकि एकान्त-नविास (idiorhythm) के मानदंडों के अनुरूप था और न ही सामुदायकि-नविास (cenobitic) नयिम की आवश्यकताओं के अनुरूप था[597] ।

साथ ही, उस युग के साहत्यि में हमें न केवल मठवासी जीवन की आलोचना मलिती है, बल्कि सामुदायकि नयिम के सख्त पालन की जोरदार मांग भी मलिती है। 14वीं-15वीं शताब्दी के कई धार्मकि पदानुक्रम के सदस्यों ने काइनोवयिन नयिम को लागू करने की आवश्यकता पर जोर दयिा: सुज़दल के आर्चबशिप डायोनसियिस (1382), नोवगोरोड के आर्चबशिप समियिन (1417–1421), मेट्रोपॉलटिन फोटीयस (1418), आयोना (1455) और थयिोडोसयिस (1461–1464)[598] । हालांकि व्यक्तगित मठों को लखिे उनके पत्र और मेट्रोपॉलटिन चार्टर (लगभग 1500)[599] यह दर्शाते हैं कि किनोवयिा को मठवासी जीवन की नींव के रूप में मान्यता प्राप्त थी, फरि भी 15वीं शताब्दी में इसके सार्वभौमकि कार्यान्वयन को सुनश्चिति करने के लिए कोई उपाय नहीं कए गए।

इसका एक कारण यह था कि केंद्र और उत्तर के दूरदराज के क्षेत्रों में फैले अनगनित मठों के जीवन पर नज़र रखना व्यावहारकि रूप से असंभव था, और आंशकि रूप से इस तथ्य में कि इस अवधि के दौरान पुराने रूसी मठवाद ने वशिेष रूप से तपस्या के मार्ग में और एकांत जीवन में संयम के कई उदाहरण प्रदान कए, जसिने मठवासी जीवन के इस रूप को प्रमुखता में ला दयिा। उस समय के मठ समुदाय की वशिेषता, लखिति मठवासी नयिमों के प्रति तीव्र अरुचि ने भी एक भूमकिा नभिाई। वोलोकलामस्क के पूजनीय जोसेफ ने उल्लेख कयिा कि उनके समकालीन, उत्तरी मठों के भक्षिुओं ने बड़ी दृढ़ता से जोर देकर कहा कि पवित्र पतिाओं ने, जन्हिोंने आदि काल से रूसी भूमि में परश्रिम कयिा था, कोई लखिति नयिम या संवधिान नहीं बनाए, बल्कि जीवंत वचन के माध्यम से भक्षिुओं को नर्दिेश दयिा; और इसलिए, उनका तर्क था, कि मठ के वधिानों को अब भी लखिति नहीं कयिा जाना चाहिए, बल्कि भाइयों को मौखकि रूप से नर्दिेश दयिा जाना चाहिए[600] । यह कहना अतशियोक्ति नहीं होगी कि ऐसे वचिार न केवल जोसेफ के समकालीनों के लिए, बल्कि पूरे पंद्रहवें सदी के लिए वशिषि्ट थे। वे पुराने रूसी तपस्वयिों की भक्ति के अनुरूप थे, जो सबसे बढ़कर मठ के मठाधीश या संस्थापक के व्यक्तगित उदाहरण, उनके कार्यों, उनकी शक्षिाओं और भाइयों के प्रति उनके रवैये को महत्व देते थे।

हालांकि, मठ के कुछ संतों, जनिमें मठों के संस्थापक और मठाधीश भी शामलि थे, ने मठ के नयिम को लागू करने की आवश्यकता को पहचाना। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, यहाँ प्सकोव के संत यूफ्रोसनिस († 1481) का उल्लेख कयिा जाना चाहिए। उनकी जीवनी केवल एक कठोर तपस्वी और एक मठ के संस्थापक की जीवन-कथा नहीं है, बल्कि रूसी चर्च इतहिास का एक काफी महत्वपूर्ण अध्याय है, हालांकि हमारे कार्य का दायरा हमें इस जीवनी पर वस्तिार से चर्चा करने की अनुमति नहीं देता[601] । संत यूफ्रोसनिस सबसे पुराने सामुदायकि नयिम के संकलक थे, जसिे उन्होंने प्सकोव क्षेत्र में स्थापति अपने मठ में पेश कयिा था[602] । यह नर्धिारति करना कठनि है कि उसने अपने नयिम संकलति करते समय कनि स्रोतों का उपयोग कयिा; पुराने और नए नयिमों से उद्धरणों के अलावा, यूफ्रॉसनिस ने संत बेसलि द ग्रेट, संत जॉन क्लाइमक्स और संत इसाक द सीरयिन की कृतयिों का उल्लेख कयिा है। उसके नयिम की वशिषि्ट वशिेषता इस तथ्य में नहिति है कि इसमें केवल अनुशासनात्मक आवश्यकताएँ शामलि हैं और ईश्वरीय

---

[597] सुज़दल के आर्चबशिप डायोनसियिस का स्नेतोगोर्स्क मठ के भाइयों को पत्र (1382), इसमें: RIB. 6. संख्या 24 (और इसमें भी: AI. 1. संख्या 5); नोवगोरोड के आर्चबशिप समियिन का उसी मठ को पत्र। उसी में, संख्या 45; मेट्रोपॉलटिन फोतउिस का 1488 दनिांकति पत्र। उसी में, संख्या 46; मेट्रोपॉलटिन जोनाह का व्लादमिीर में बोगोलीुबस्की मठ को (लगभग 1455) पत्र। उपरोक्त। संख्या 75 (यह भी इसमें: AI. 1. संख्या 265); पेस्नोश्स्की मठ *(1461–64) को* मेट्रोपॉलटिन थयिोडोसयिस का पत्र */ उपरोक्त। संख्या 96 (यह भी इसमें: AI. 1. संख्या 276) /*

[598] तुलना करें पछिले नोट से। हालाँकि, यह काफी वशिेषतापूर्ण है कि, उदाहरण के लिए, मेट्रोपॉलटिन फलिपि संन्यास की कसमें लेने के बाद भी भक्षिुओं के संपत्ति रखने के अधकिार पर ववािद नहीं करते हैं। RIB. 6. संख्या 104 (1472), भक्षिु पाम्वा के घोड़े से संबंधति मामला।

[599] मेट्रोपॉलटिन चार्टर, में: RIB. 6. संख्या 128 (और यह भी: AAE. 1. संख्या 381 में)।

[600] VChM. सतिंबर. भाग 1. पृ. 548, 547.

[601] यूफ्रोसीन का जीवन, में: प्राचीन रूसी साहत्यि के स्मारक। 4 (1862)। पृ. 67–119, 172–179। यूफ्रोसीन पर, देखें: सेरेब्रांस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 508। तुलना करें: मकाराई। 2nd संस्करण। 8। पृ. 129 आदि।

[602] सेरेब्रायान्स्की। उद्धृत कृति, पृ. 508।

पूजा[603] का कोई उल्लेख नहीं है। यह नियम 28 खंडों, या अनुच्छेदों (विशेष रूप से, एक प्रस्तावना और 27 नियम) में विभाजित है। संन्यासी जीवन के संगठन के संबंध में लेखक के तपस्वी विचारों को इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है: 1) सामुदायिक नियम के सख्त पालन की मौलिक आवश्यकता (§§ 1–4, 8); 2) मठाधीश की इच्छा और निर्देशों के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता (§§ 5, 7, 18); 3) भाइयों द्वारा प्रेम और पारस्परिक सम्मान के साथ किया जाने वाला निरंतर शारीरिक श्रम (§ 8, 9, 27); 4) सभी भिक्षुओं के लिए सामान्य तपस्वी नियम, जो प्रार्थना, उपवास, ब्रह्मचर्य और अनासक्ति से संबंधित हैं (§ 10–15, 4, 17, 26, 27); और 5) गरीबों और ज़रूरतमंदों की सहायता (§ 24 और 25)। इस नियम में मठ के मठाधीश और उनके कर्तव्यों (§§ 5, 21, 23, 20) का भी उल्लेख है। यद्यपि संत यूफ्रोसिनिस ने यह नियम अपने स्वयं के मठ के लिए बनाया था, अन्य मठ भी इसका उपयोग कर सकते थे, क्योंकि यह काफी सामान्य प्रकृति का था और सामुदायिक जीवन के सख्त पालन की आवश्यकता पर जोर देता था। हालांकि, हमें यह नहीं पता कि इसे अन्य मठों में लागू किया गया था या नहीं, और यह भी ज्ञात नहीं है कि यूफ्रोसिनिस का सख्त सामुदायिक नियम अपने ही मठ में कितने समय तक बना रहा। भिक्षु फिलोथियस, जो हमें अपनी रचनाओं के माध्यम से ज्ञात हैं, 16वीं शताब्दी की शुरुआत में, यानी यूफ्रोसिनिस की मृत्यु के दो या तीन दशकों बाद, एलेज़र मठ के एक भिक्षु, और शायद मठाधीश भी थे। उनकी रचनाएँ, जो विशेष रूप से धार्मिक और राजनीतिक मुद्दों को समर्पित हैं, हमें उस प्रश्न को स्पष्ट करने में सक्षम नहीं बनातीं जिसमें हमारी रुचि है। हम नहीं जानते कि क्या उसके मठ का संगठन इतना त्रुटिहीन था कि वह आलोचना का कोई कारण नहीं देता था, या वह धार्मिक और राजनीतिक मुद्दों में इतना मग्न था कि रोजमर्रा की मठवासी जीवन की 'छोटी-मोटी बातें' अब उसे परेशान नहीं करती थीं। यह अफ़सोस की बात है कि फिलोथियोस, उस युग के सबसे दिलचस्प और प्रतिभाशाली लेखकों में से एक, ने इस मुद्दे को अनदेखा कर दिया।

भिक्षु जीवन के नियम के प्रश्न पर चर्चा करते हुए, हमें सोर के एल्डर नीलस के बारे में भी कुछ शब्द कहने चाहिए, जिनके तपस्वी विचार अध्याय IV, 2 में विस्तार से प्रस्तुत किए गए हैं। संत यूफ्रोसिनिस के समकालीन, सच्चे मठवासी जीवन के इस उत्साही रक्षक और हिमायती ने, सामुदायिक जीवन के नियम की तुलना में एकान्तवासी जीवन के नियम को प्राथमिकता दी, लेकिन एक भिक्षु के दैनिक जीवन—शारीरिक श्रम, प्रार्थना और अनासक्ति—के बारे में उनके विचार यूफ्रोसिनिस के विचारों के लगभग समान थे। मूलतः दोनों तपस्वियों ने एक ही लक्ष्य के लिए प्रयास किया: संन्यासी जीवन को इस तरह व्यवस्थित करना कि वह सांसारिकता से सुरक्षित रहे, लेकिन उन्होंने इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अलग-अलग मार्ग निर्धारित किए। यूफ्रोसिनिस के नियम की भाषा तथ्यात्मक और कुछ हद तक शुष्क है, जबकि एल्डर नीलस के कार्य में हमें उन प्रलोभनों के खिलाफ आध्यात्मिक संघर्ष का विस्तृत चित्रण मिलता है जिनका सामना एक भिक्षु को ईसाई पूर्णता के अपने मार्ग पर करना पड़ता है, साथ ही इस संघर्ष को कैसे लड़ना है, इस पर निर्देश भी मिलते हैं।

केवल एल्डर नीलस ने ही स्केटे जीवन के विशेष महत्व पर जोर नहीं दिया। एक स्केट नियम है, जिसे एक अज्ञात लेखक ने संकलित किया था, संभवतः 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, एल्डर नीलस की मृत्यु से ठीक पहले[604] यह संभव है कि यह नियम ठीक उस समय लिखा गया था जब रूस में सामुदायिक मठवासी जीवन प्रचलन से बाहर हो गया था, और गुमनाम लेखक ने अपने नियम के माध्यम से इडियोराइथम के विकृतियों से लड़ने का प्रयास किया। स्केट नियम को रूसी उत्तर के छोटे-छोटे एकांतवासों में व्यावहारिक रूप से लागू किया गया, जहाँ एकांत जीवन व्यापक था और कभी-कभी स्केट जीवन का स्वरूप ले लेता था, विशेष रूप से 15वीं शताब्दी और 16वीं शताब्दी के पहले चौथाई भाग में, जब वहाँ कठोर तपस्या का प्रचलन था; स्केट नियम की कई प्रतियों के अस्तित्व से यह पता चलता है कि इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था[605] ।

इसके विपरीत, वोल्कोलामस्क के पूजनीय जोसेफ († 1515) ने सामुदायिक जीवन का सख्त पालन करने की मांग की। उन्होंने जो मठवासी नियम संकलित किया, जिसे 'आध्यात्मिक पत्र'[606] के नाम से जाना जाता है, उसका वर्णन हम पहले ही सामान्य शब्दों में कर चुके हैं (अध्याय IV, 1)। जोसेफ का नियम, यूफ्रोसीन के नियम की तरह,

---

[603] उपरोक्त, पृ. 275–278, 271।

[604] मान्सवेतोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 298–300। यह चार्टर केवल अपने विस्तृत विवरण के माध्यम से ही ज्ञात है। विवरण। खंड 2, भाग 3, पृ. 730–732; मकारी का सुझाव (दूसरा संस्करण, खंड 6, पृ. 77–78) कि यह चार्टर सोरा के नीलस के किसी शिष्य द्वारा तैयार किया गया हो सकता है, गलत है, क्योंकि इसके सबसे पुराने संस्करण 15वीं शताब्दी के मध्य के हैं।

[605] Mansvetov. Op. cit. pp. 301–303, 299.

[606] वीसीएचएम. सितंबर. भाग 1. पृ. 499–615। सारांश में: खुरुश्चेव. इओसिफ वोल्त्स्की. पृ. 59–63, 75–80। मकाराई. 2रा संस्करण. 7. पृ. 61–66।

एक सामुदायकि नियिम है; लेकनि जहाँ यूफ्रोसीन का नियिम बहुत संक्षप्ति है, वहीं जोसेफ का नियिम मठवासी जीवन के मूलभूत नियिमों पर शक्षिाओं का एक प्रकार का संग्रह है। नियिम की यह वशिषि्ट वशिषता—मठीय समुदाय की एक से अधकि पीढ़ियों के लिए काम आ सकने वाले उपदेशों या प्रवचनों के संग्रह से इसकी समानता—शायद इस तथ्य से समझा जा सकता है कि, जैसा कि जोसेफ ने स्वयं देखा, उनके समय के भक्षिुओं ने केवल मठाधीश के व्यक्तगित नरि्देशों ( ) का ही पालन कयिा; शायद यही कारण है कि जोसेफ ने अपने कार्य को 'मठवासी नियिम' कहने के बजाय, एक 'आध्यात्मकि वसीयत', यानी एक वरिासत कहा।

उनके नियिम के पहले नौ अध्याय शक्षिाओं के रूप में हैं, जनि्हें पवत्रि धर्मग्रंथ और पवत्रि पतिाओं की तपस्या संबंधी लेखनी से उद्धरणों द्वारा समर्थति कयिा गया है। अध्याय 11 में मठाधीश के लिए एक वशिेष नरि्देश है, जसिमें मठ के प्रति उनके कर्तव्यों को बताया गया है, और भाइयों के लिए एक शक्षिा है। जोसेफाइट ऑर्डर के संस्थापक की सामान्य समझ और धार्मकि औपचारकितावाद ने उन्हें पहले नौ उपदेशों को संक्षप्ति नियिमों के रूप में दोहराने के लिए प्रेरति कयिा, जनिका उद्देश्य सुबह से लेकर रात तक मठ के पूरे जीवन को नयिंत्रति करना था।

इसके बाद दो और अध्याय आते हैं[607] ; इनमें से पहले में नौ 'परंपराएँ' हैं - यह नरि्देश कि बुज़ुर्गों की परषिद को नियिम का पालन कैसे करना चाहिए, जबकि दूसरे में नौ 'नषिेध' हैं जनि्हें मठाधीश और बुज़ुर्गों की परषिद भाईचारे के उन सदस्यों पर लागू कर सकते हैं जनि्होंने नियिम का उल्लंघन कयिा है। इस अध्याय के शीर्षक में, जोसेफ इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मठवासी सामुदायकि जीवन के नियिम, सेंट बेसलि द ग्रेट के नियिमों और तपस्या संबंधी नरि्देशों तथा सेंट थयिोडोर द स्टुडाइट के मठवासी नियिम के मॉडल का पालन करते हुए, उनके द्वारा तैयार कए गए थे।

अंतमि अध्याय में, कठोर तपस्या की आवश्यकता पर जोर देने के लिए, जोसेफ उन संतों द्वारा कए गए मठवासी कारनामों के उदाहरण देते हैं जो पूरे रूसी भूभाग में चमके, जनिका जीवन रूसी मठवाद के लिए एक 'नियिम' और 'आदर्श' के रूप में कार्य करता है। जोसेफ के अनुसार, उन्होंने इन तपस्वयिों के बारे में मठों की तीर्थयात्रा के दौरान जाना। परचिय में, वे लखिते हैं कि पवत्रि पतिाओं ने सामुदायकि क्वार्टरों में रहने वाले भक्षिुओं को न केवल मौखकि रूप से बल्कि लखिति रूप में भी नरि्देश दए। क्योंकि, वह आगे कहते हैं, सभी मठों में भक्षिुओं का जीवन-यापन अनुकरण के योग्य नहीं है, इसलिए वर्तमान मठाध्यक्षों को भी ऐसा ही करना चाहिए – भाईचारे को मौखकि और लखिति दोनों तरह के नरि्देश देना, जो उन पर पवत्रि पतिाओं की शक्षिाओं की तरह ही बाध्यकारी हों[608] ।

जोसेफ का 'आध्यात्मकि पत्र' एक वसि्तृत मठवासी नियिम है, जो मठों के दैनकि जीवन को छोटी से छोटी बात तक नयिंत्रति करता है, और साथ ही एक भक्षिु के बाहरी आचरण पर वशिेष ध्यान देता है।

सोरा के पूजनीय नीलस († 1508) की 'स्केट जीवन पर अपने शषि्यों को नरि्देश' में एक अलग ही भावना व्याप्त है, जो अपनी सामग्री के संदर्भ में, एक मठवासी नियिम नहीं है, क्योंकि यह केवल मठवासी जीवन के मूल सद्धिांतों से संबंधति है, मुख्य रूप से संतों के प्रलोभनों और पापों के खलिाफ संघर्ष। हमने ऊपर ('नरि्देश' के) वषिय-वस्तु पर वसि्तार से चर्चा की है (अध्याय IV, 2)। यहाँ हम केवल यह याद करेंगे कि मठवासी जीवन पर नीलस के वचिार जोसेफ के वचिारों से बहुत अलग हैं, क्योंकि वह जोसेफ की तरह सामुदायकि जीवन के बजाय एकान्तवासी जीवन को प्राथमकिता देते हैं।

हमें सेंट कॉर्नेलयिस ऑफ कोमेल († 1538) के मठवासी नियिम में मठवासी जीवन के दोनों रूपों को संयोजति करने और दोनों से भाईचारे के लिए उपयोगी बातें नकिालने का प्रयास मलिता है। उनका 'संवधिान, या आचरण के नियिम' (भक्षिुओं के लिए)[609] , जसिका हमने प्राचीन रूस के इस प्रसद्धि तपस्वी के जीवन का वर्णन करते समय उपयोग कयिा (अध्याय III, 4), मठवासी तपस्या की नींव के रूप में जोसेफ के कठोर सामुदायकि जीवन और नीलस के पूर्ण नरि्वाहवाद को आधार बनाता है। कोर्नेलयिस ने अपने मठ में इन दोनों सद्धिांतों को व्यवहार में लागू कयिा।

एक और सामुदायकि नियिम 16वीं शताब्दी के मध्य का है। इसके उद्भव की कहानी इस प्रकार है: बोल्डनिो के आदरणीय गेरासमिस († 1554), जनि्होंने स्मोलेंस्क क्षेत्र में चार मठों की स्थापना की, ने एक बार बोल्डनिो के अपने होली ट्रनिटिी मठ के भक्षिुओं और तीन अन्य मठों के मठाधीशों को इकट्ठा कयिा, और एक भक्षिु को नरि्देश

---

[607] 'आध्यात्मकि पत्र' की कुछ प्रतयिों में, स्वयं पाठ के बनिा, केवल इन दोनों अध्यायों के लंबे शीर्षक शामलि हैं। ववरिण। खंड 2, भाग 2. पृ. 520।

[608] ये अध्याय (VChM, पृ. 546–563), जनि्हें 'जज्ञासुओं को उत्तर' के नाम से जाना जाता है, अक्सर अलग से प्रकाशति कए जाते हैं, उदाहरण के लिए, LZAK, खंड 2 (1862) में या Chteniya, 1847, संख्या 7 में (संक्षप्ति रूप में)। जोसेफ के मठवासी जीवन पर वचिार उनके प्रमुख ग्रंथ – 'प्रकाशक' – की 7वीं उपदेशकिा में और एक अज्ञात भक्षिु को लखिे पत्र में (DAI. 1. संख्या 211) भी व्यक्त कए गए हैं।

[609] नियिम, IRI. 4. पृ. 673–704 में; एक वसि्तृत ववरिण Konoplev. Op. cit. 96–100 और Makarii. 2nd ed. 7. पृ. 67 में; और Muravyov. Russian Thebaid. पृ. 20 में भी।

दयिा कि वह उनकी बताई के अनुसार, उनके अपने मठवासी जीवन की यादें लखि दे। उन्होंने इसमें एक 'वसीयत' जोड़ी, जसिमें उन्होंने अपनी स्थापति की गई मठों में सामुदायकि जीवन को बनाए रखने की आवश्यकता के बारे में बताया है[610] । यह नयिम गेरा سيم के तपस्वी वचिारों की व्यक्तगित वशिषताओं को प्रतबिबिति नहीं करता है; इसमें केवल सामुदायकि जीवन के सामान्य सद्धिांत शामलि हैं । मठ के मठाधीश से संबंधति खंड वशिष रूप से दलिचस्प है। गेरा سيم इस बात पर जोर देते हैं कि भ्रातृत्व को हर बात में मठाधीश की इच्छा का पालन करना चाहए; हालाँकि, यदि मठाधीश स्वयं नयिम का उल्लंघन करता है, तो मठ का भ्रातृत्व उनके पास एक प्रतनिधिमिंडल भेज सकता है, जसिमें उनके जीवन की कठोरता से वशिष्टि सबसे सम्मानति भक्षिु शामलि हों, ताकि वे उन्हें प्रेम और वनिम्रता की भावना में, उनकी गलतयिों या दुरुपयोग की ओर इंगति कर सकें। इसके अलावा, गेरासमिस भक्षिुओं से यह अपेक्षा करते हैं कि वे एक मठ से दूसरे मठ में जाने के बजाय हर समय एक ही मठ में ही रहें।

इन सभी मठ संबंधी वधिानों की उत्पत्ति व्यक्तगित तपस्वयिों की व्यक्तगित पहल से हुई है। मूल रूप से, वे सभी इसलिए अस्तित्व में आए क्योंकि तपस्वयिों ने उनके माध्यम से, अपने द्वारा स्थापति मठों में आंतरकि मठवासी जीवन को इस तरह से व्यवस्थति करने का प्रयास कयिा कि यह उनके तपस्वी आदर्शों के अनुरूप हो; इन नयिमों का उद्देश्य यह सुनश्चिति करना भी था कि मठ के संस्थापक की मृत्यु के बाद स्थापति व्यवस्था को यथासंभव लंबे समय तक संरक्षति रखा जाए। हमने ऊपर पहले ही चर्चा की है कि एक मठ के संस्थापक का व्यक्तगित अधकिार कतिना महत्वपूर्ण था, और मृत्यु के बाद उनकी कैसे पूजा की जाती थी। यद्यपि इन सभी वधिानों में—जो संकलक के समकालीनों और भक्षिुओं की भावी पीढ़यिों के लिए एक प्रमाण के रूप में लखिे गए थे—स्पष्ट संत-चरित्रात्मक वशिषताएँ हैं, फरि भी वे बहुत अधकि स्थानीय रंग से परपिूर्ण हैं। परणिामस्वरूप, उनका अनुकरण करने या एक मठ के नयिम को दूसरे मठ पर लागू करने की संभावना को खारजि कर दयिा गया था, खासकर पुरानी रूसी संतों की उन लखिति नयिमों से अरुचि को देखते हुए जो हर छोटी-छोटी बात को नयिंत्रति करते थे। यह वभिन्नि मठों में मठवासी जीवन के संगठन में उल्लेखनीय ववििधिता की व्याख्या करता है, भले ही ये सभी मठ एक सामुदायकि नयिम के अनुसार रहते हों, साथ ही एक ही मठ के भीतर मठवासी जीवन की संरचना में वभिन्नि युगों में देखे गए अंतरों को भी समझाता है, जो इस बात पर नरि्भर करता था कि मठ के संस्थापक या कसिी ऐसे वशिष मठाधीश की मृत्यु को कतिना समय बीत चुका था, जसिमें दृढ़ इच्छाशक्ति और आध्यात्मकि मार्गदर्शन का महान वरदान था। ये सभी नयिम पुराने रूसी मठवाद के सामान्य इतहिास की तुलना में, व्यक्तगित मठों के इतहिास और प्राचीन रूस की नैतकि धर्मशास्त्र से अधकि नकिटता से जुड़े हुए हैं। हालाँकि वे सभी आधी सदी के भीतर अस्तित्व में आए - 15वीं शताब्दी के अंत में नील की 'परंपरा', और 1554 से ठीक पहले गेरसम की 'वसीयत' - उनका प्रभाव वशिष रूप से महान नहीं था, और उन्होंने मठवासी जीवन में कोई सुधार नहीं लाया। ऐसे नयिम ने अपने रचयति की आध्यात्मकि छवि को और अधकि आकर्षक बना दयिा, लेकनि यह केवल थोड़े समय के लिए ही प्रभावी और फलदायी रहा। सोर्स्की के नील के नयिम को छोड़कर, इन सभी नयिमों में एकमात्र समान वशिषता सामुदायकि जीवन शैली को प्राथमकिता देना है।

२. १६वीं और १७वीं शताब्दी के मठवासी नयिम

संयुक्त जीवन के नयिमों के सद्धिांतों के अनुसार, मठों के जीवन में सुधार करने और उसके आध्यात्मकि स्तर को ऊँचा उठाने का चर्च पदानुक्रम द्वारा पहला प्रयास 16वीं शताब्दी के पहले चौथाई भाग के अंत तक नहीं हुआ। यह पहल नोवगोरोड के आर्चबशिप, मॉस्को के भवषि्य के मेट्रोपॉलटिन, मकरयि से आई। *1526–27 में, उन्होंने ग्रैंड प्रसि वासली तृतीय को एक पत्र भेजा, जसिमें उन्होंने अपने धर्मप्रांत के मठों के संगठन में कुछ बदलाव और सुधार लाने की अनुमति मांगी*[611] *। अपने पत्र में, मकरयिस ने लखिा कि नोवगोरोड धर्मप्रांत में केवल चार मठ ही कनिोवयिन नयिम का पालन करते थे, जबकि बाकी सभी इडयिोराइथमकि नयिम का पालन करते थे, और यह कि, सामान्य रूप से, मठवासी जीवन में बहुत अव्यवस्था थी। क्रॉनकिल*[612] *से हमें पता चलता है कि 1528 में मकरयिस ने धर्मप्रांत के सभी मठाधीशों को नोवगोरोड बुलाया और अपने आर्चपास्टोरल संबोधन में उन्होंने मठों में मठवासी जीवन में सुधार करने और उनके अधीन मठों में एक सख्त सामुदायकि नयिम लागू करने के उपाय करने की सफिारशि की। सोलह मठाधीशों ने ऐसा करने का वादा कयिा, जबकि दो ने बशिप की सलाह का वरिोध कयिा और अपने मठों में इडयिोराइथ्मकि प्रथा*

---

[610] गेरासमि की 'इच्छा' में: स्मोलेंस्क धर्मप्रांत का वर्णन (1864)। पृ. 291–295; IRI. 3. पृ. 413; क्लीचेव्स्की. जीवन. पृ. 305; काड्लुबोव्स्की. उपर्युक्त ग्रंथ, पृ. 290 आदि। सयि के एंथनी की जीवनकथा से यह स्पष्ट है कि उनके मठ में भी एक सामुदायकि नयिम लागू कयिा गया था। काड्लुबोव्स्की। उपर्युक्त ग्रंथ, पृ. 311।

[611] DAI. 1. संख्या 22.

[612] PSRL. 6. पृ. 284.

को बनाए रखने पर जोर दिया। क्रॉनिकल के अनुसार, आर्चबिशप ने हठी मठाधीशों पर कोई जबरदस्ती नहीं की, बल्कि केवल यह कहा कि वे अपने कार्यों के लिए ईश्वर के प्रति उत्तरदायी होंगे। इस सुधार के संबंध में, आर्चबिशप मकरियस ने मठों को तथाकथित 'नियमों का चार्टर' भेजा, जिसमें उन्होंने सामुदायिक जीवन के पालन के संबंध में अपने निर्देशों को दोहराया। इन वैधानिक चार्टरों में से एक, जो होली स्पिरिट मठ को भेजा गया था, आज तक सुरक्षित है[613] । मकरियस द्वारा दिए गए ये निर्देश अन्य किनोवियन विधानों, जैसे कि सेंट जोसेफ के विधान से भिन्न नहीं हैं; इन्हें बहुत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। यह ध्यान देने योग्य है कि मैकारियस के कार्य में हमें एक ऐसी विशेषता मिलती है जो बाद में बोल्डिनो के सेंट गेरासिमस के नियम में फिर से दिखाई देगी, अर्थात् भाइयों के उस अधिकार का उल्लेख कि वे मठाधीश को उनके द्वारा मठ के नियमों के किसी भी उल्लंघन के बारे में बता सकें।

अलग-अलग रहने की प्रथा से निपटने के उपायों के साथ-साथ, आर्चबिशप मकारियोस ने तथाकथित 'डबल मठों' को समाप्त कर दिया। उनकी धर्मप्रांत में आठ महिला मठ बचे रहे, लेकिन अब वे पहले की तरह मठाध्यक्षों के बजाय मठाध्यक्षिनीयों द्वारा संचालित किए जाते थे; तब से, महिलाओं के मठों में धार्मिक सेवाएँ केवल पैरिश पादरियों द्वारा ही आयोजित की जा सकती थीं[614] । दोहरे मठ () पहले से ही बाइज़ेन्टियम में मौजूद थे, और मध्य युग के दौरान पश्चिम में भी जाने जाते थे[615] । मस्कोवी में मिश्रित मठ, बाइज़ेन्टियम की तरह ही, अलग-अलग रहने की व्यवस्था के आधार पर संगठित थे: भिक्षु और भिक्षुणियाँ अलग-अलग कोठड़ियों में रहते थे, जो चर्च के चारों ओर व्यवस्थित होती थीं और मिलकर मठ का निर्माण करती थीं, जो अक्सर एक दीवार से घिरा भी होता था; मठ एक ही मठाधीश के अधिकार के अधीन था। सेंट नील ऑफ सोरा ने इस दुरुपयोग की निंदा की[616] । उदाहरण के लिए, ऐसी मठें 15वीं शताब्दी के अंत और 16वीं शताब्दी की शुरुआत में प्सकोव में मौजूद थीं[617] । 1503 की परिषद ने मिश्रित मठों को समाप्त कर दिया; इसके अलावा, इसने महिलाओं के मठों में भिक्षुओं में से एबॉट या आध्यात्मिक पिता रखने पर प्रतिबंध लगा दिया; आध्यात्मिक पिता पैरिश का पादरी होना था[618] । हालांकि, इस प्रतिबंध का शायद कोई व्यावहारिक प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि 1528 में आर्चबिशप मकरियस को एक बार फिर से यही प्रतिबंध जारी करना पड़ा। स्टोग्लाव ने दोहरे मठों को एक दुरुपयोग बताया और 1503 के फरमान की पुनःपुष्टि की।[619]

इडियोराइथम के खिलाफ मैकारियस के उपाय स्थानीय प्रकृति के थे, क्योंकि वे केवल उनके धर्मप्रांत से संबंधित थे। स्टोग्लाव के फरमानों से यह स्पष्ट है कि सामुदायिक और अलग-अलग रहने वाले दोनों प्रकार के मठ मौजूद रहे। स्टोग्लाव की कार्यवाही (अध्याय 52) से पता चलता है कि दोनों प्रकार के मठों को मान्यता दी गई थी; इसके अलावा, स्टोग्लाव (अध्याय 85) में कहा गया है कि भिक्षु अक्सर सेनोबिटिक मठों को इसलिए छोड़ देते थे क्योंकि वे सामुदायिक चार्टर के नियमों का पालन करने में असमर्थ या अनिच्छुक थे। स्टोग्लाव ने नए छोटे आश्रमों की स्थापना पर प्रतिबंध लगा दिया, जहाँ भिक्षु आमतौर पर व्यक्तिगत जीवन के नियम के अनुसार रहते थे; इसने आदेश दिया कि एक-दूसरे के करीब स्थित छोटे आश्रमों को एक ही मठ में विलय कर दिया जाना चाहिए, लेकिन इन आदेशों में यह नहीं बताया गया है कि ऐसे विलय किए गए मठों में कौन सा नियम अपनाया जाना चाहिए। विशेष रूप से 'ईमानदार मठों' को समर्पित अध्याय 49 में मठ जीवन पर सामान्य प्रावधान हैं; सामुदायिक भोजन की आवश्यकता और कोशिकाओं में खाद्य आपूर्ति लाने तथा उन्हें वहाँ संग्रहीत करने पर प्रतिबंध, साइनोबिटिक मठों पर लागू होता है।

16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान, मठों को एकांत जीवन जीने वालों और सामुदायिक जीवन जीने वालों में विभाजित किया जाता रहा। व्यक्तिगत तपस्वियों की पहल पर कई नए मठ संबंधी विधान सामने आए। एलेज़ार († 1656) नामक एक प्रसिद्ध तपस्वी ने सत्रहवीं शताब्दी के पहले चौथाई भाग में श्वेत सागर के अंज़र द्वीप पर अपने आश्रम के लिए एक विधान लिखा, जहाँ भिक्षु अलग-अलग कोठरियों में रहते थे। इस नियम में मठवासी जीवन शैली के संबंध में सख्त आवश्यकताएँ शामिल हैं[620] । मॉस्को में साइमनोव मठ के मठाध्यक्ष, आर्चिमांड्राइट गैब्रियल (डोमेट्स्की) ने दो नियम बनाए: एक व्यक्तिगत जीवन के लिए (1683) और एक सामुदायिक जीवन के लिए (1690); यह इंगित कर

---

[613] AI. 1. संख्या 292.

[614] PSRL. 6. पृ. 285.

[615] सोकोलोव। आंतरिक राज्य। पृ. 325.

[616] नीलो की 'द लीजेंड' (1849)। पृ. XXI–XXII.

[617] PSRL. 4. पृ. 278.

[618] मकाराई। द्वितीय संस्करण। खंड 6। पृ. 123–124।

[619] स्टोग्लाव। अध्याय 82। संपादक कोझान्चिकोव। पृ. 244।

[620] फिलारेत। रूसी संतों (1861)। जनवरी। पृ. 77। संतों की पुस्तक, में: रीडिंग्स। 1887। 4। संख्या 324; याकोन्टोव। उत्तरी रूसी तपस्वियों के जीवन (1882)। पृ. 197–198।

सकता है कि उन वर्षों के दौरान मठ इडियोराइथम से सेनोबटिज़्म में परविर्तति हो गया था, या मठ के भीतर दोनों वधिान एक साथ लागू कएि गए थे। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह मठ मास्को के सबसे बड़े मठों में से एक था और शाही परविार के करीब था, वशिेष रूप से ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि († 1676) के शासनकाल के दौरान। मास्को के एक अन्य मठ - पुनरुत्थान मठ - के मठाध्यक्ष, नकिानोर (1688-1698), ने अपने भाइयों के लएि एक कनिोवयिन नयिम तैयार कयिा[621] । यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन नयिमों को तैयार करने के पीछे वास्तवकि प्रेरणा राजधानी के इन बड़े और अमीर मठों में मठवासी जीवन में गरिावट थी। (साइमनोव मठ के पास वशिाल भूमि-स्वामत्वि था)। इस मठ की स्थापना के समय ही (1370), रोस्तोव के आदरणीय थयिोडोर ने वहाँ एक सख्त सामुदायकि नयिम लागू कयिा था, जसिका पालन, आदरणीय जोसेफ के अनुसार, 15वीं शताब्दी के दूसरे भाग में भी कयिा जाता था; ओटेन्स्क के भक्षिु ज़निोवी ने अपनी रचनाओं में 1520 के दशक में साइमनोव मठ में भक्षिुओं के वशिेष रूप से कठोर और साधारण जीवन का उल्लेख कयिा है, जब प्रसि-भक्षिु वासयिन पत्रीकेव वहाँ ठहरे हुए थे[622] ।

चर्च पदानुक्रम ने बार-बार सामान्य नर्दिेश जारी कएि, जनिमें मठाध्यक्षों को दोनों प्रकार के मठवासी वधिानों के अनुपालन को सुनश्चिति करने का नर्दिेश दयिा गया। इस पर 1667, 1675 और 1681 की परषिदों में चर्चा की गई, जन्हिोंने यह आदेश दयिा कि धर्मप्रांतीय बशिपों को वधिानों के कार्यान्वयन की देखरेख करनी चाहएि[623] । 1680 और 1690 के दशक से, वभिन्नि मठों को कई आर्चपास्टोरल अनुस्मारक हमें प्राप्त हुए हैं, जनिमें मठ के वधिानों के उल्लंघन न करने का आग्रह कयिा गया है[624] । आज तक बचे हुए सभी दस्तावेज़, चाहे वे सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से मठों के वधिान के मुद्दे से संबंधति हों, यह इंगति करते हैं कि 16वीं–17वीं शताब्दयिों में रूसी मठों में सामुदायकि और व्यक्तगित दोनों तरह की रहने की व्यवस्थाएँ अपनाई जाती थीं; दुर्भाग्य से, दो प्रकार के मठों के बीच संख्यात्मक अनुपात स्थापति करना संभव नहीं है। केवल इतना ही अनुमान लगाया जा सकता है कि, चूँकि स्रोत अधकि बार सामुदायकि नयिम का उल्लेख करते हैं, इसलएि यह नयिम या तो अधकि व्यापक था या इसका उल्लंघन अधकि बार होता था, जबकि व्यक्तगित जीवन का नयिम, जो मुख्य रूप से उत्तरी रेगस्तिानों में अपनाया जाता था, का पालन अधकि सख्ती से कयिा जाता था।

3. मठवासी जीवन की आंतरकि संरचना

मठ का नयिम स्पष्ट रूप से एक मठ के आंतरकि संगठन की आधारशलिा होने के लएि अभप्रिेत है, लेकनि यह सवाल उठता है कि क्या वास्तव में ऐसा था। मठ जीवन के दो पहलुओं के बीच अंतर करना आवश्यक है: प्रशासन के संगठन और नयिम की आवश्यकताओं का पालन। पहले बदिु के संबंध में, यह कहा जा सकता है कि, जहाँ तक हमारे पास उपलब्ध सामग्री हमें आँकलन करने की अनुमति देती है, दोनों प्रकार के मठों में प्रशासनकि संगठन व्यवहार में एक-दूसरे से बहुत अलग नहीं था; एक महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि दोनों प्रकार के लगभग सभी मठों के पास भूमि थी, जसिकी खेती से कुछ परणिाम नकिलते थे। संन्यासी अनुशासन तीन कारकों से प्रभावति था: पहला, उस युग के संन्यासी तपस्या, इसके अर्थ और उद्देश्य पर वचिार; दूसरा, सेनोबटिकि और इडियोराइथमकि जीवन शैली के प्रति सामान्य दृष्टकिोण; और तीसरा, आंतरकि संन्यासी जीवन का दूरगामी धर्मनरिपेक्षीकरण और भूमि स्वामत्वि के परणिामस्वरूप अनुशासन में गरिावट। संन्यासी जीवन का नरिंतर धर्मनरिपेक्षीकरण प्रशासन के संगठन, संन्यासी अधकिारयिों की गतविधियिों और संन्यासी अनुशासन पर हानकिारक प्रभाव डालता था। इसके अलावा, मठ प्रशासन की प्रकृति पर धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों का प्रभाव था, जो अक्सर धार्मकि मामलों में हस्तक्षेप करते थे, जैसा कि चर्च-राज्य संबंधों, मठों के उपनवेिशीकरण और मठों के आर्थकि प्रबंधन के हमारे अध्ययन से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है।

चार्टर के अनुसार, 16वीं और 17वीं शताब्दयिों में, जैसा कि पहले 14वीं और 15वीं शताब्दयिों में हुआ करता था, एक मठ के मठाधीश का चुनाव मठीय समुदाय द्वारा कयिा जाता था और उसे धर्मप्रांत के बशिप द्वारा पुष्टि दी जाती थी; तथाकथति स्टाउरोपेजयिल मठों में, जो पैट्रआर्क के अधकिार क्षेत्र में आते थे, मठाधीश के चुनाव के लएि

---

[621] फलिारेत। समीक्षा। खंड 1. पृ. 377, 363, 266; पोपोव, एन. 'मास्को में साइमनॉव मठ के पांडुलपियिों का ववरिण', में: रीडगि्स। 1910. खंड 3. पृ. 233.

[622] जोसेफ का 'आध्यात्मकि पत्र' इसमें: VChM. पृ. 552; ओटेन्स्की के जनिोवी। सत्य की गवाही (1863). पृ. 901.

[623] एएई. 4. संख्या 204; एआई. 4. संख्या 253; 5. संख्या 75. पीएसजेड. 1. संख्या 412.

[624] AAE. 4. संख्या 311, 312; एड्रयिन का चार्टर, में: Vremennik. 11. पृ. 30–46.

पैट्रआर्क की पुष्टि आवश्यक थी[625] . चयन प्रक्रिया में न केवल उम्मीदवार की व्यक्तिगत योग्यताएँ, उसके जीवन की कठोरता और उसकी शिक्षा को, बल्कि अन्य परिस्थितियों को भी ध्यान में रखा जाता था: बोयार वंश और संपत्तियों के प्रबंधन की क्षमता[626] । कई दिलचस्प दस्तावेज़ बचे हुए हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि, जब एक नए मठाधीश का चुनाव होता था, तो मठवासी समुदाय उसके साथ एक तरह का अनुबंध करता था; या, बल्कि, समुदाय उसे अपना 'फैसला' प्रस्तुत करता था, जिसे उसे हस्ताक्षर करने और बाद में पालन करने की आवश्यकता होती थी[627] । अक्सर, मठाधीश किसी दूसरे मठ से आता था। 16वीं शताब्दी के दूसरे भाग और 17वीं शताब्दी के दौरान, मठवासी समुदाय द्वारा एक मठाधीश का चुनाव एक दुर्लभ घटना बन गया; यह प्रथा केवल दूर-दराज या छोटे मठों में ही बनी रही। बड़े और अमीर मठों में, साथ ही मॉस्को के सभी मठों में, मठाधीशों की नियुक्ति शाही फरमान और ज़ार या पैट्रआर्क के आदेश पर की जाती थी। मठों के आंतरिक मामलों में धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों द्वारा इस प्रकार के हस्तक्षेप पहले भी, ग्रैंड प्रिंस वासिली III (1505–1533) के शासनकाल के दौरान हुआ था, लेकिन यह प्रथा ज़ार इवान IV (1547–1584) और अलेक्सी (1645–1676)[628] के अधीन विशेष रूप से जड़ें जमा गई। स्टोग्लाव (अध्याय 86) में निम्नलिखित कहा गया है: मठाध्यक्ष की नियुक्ति मठवासी समुदाय के अनुरोध पर, ज़ार की सहमति से, मेट्रोपॉलिटन या डायोसीज़न बिशप द्वारा की जाती है। कई संतों की जीवनियाँ दिखाती हैं कि मठों के संस्थापकों की नियुक्ति कितनी बार मेट्रोपॉलिटन द्वारा, और बाद में पैट्रआर्क द्वारा की जाती थी[629] ।

हालांकि उपरोक्त विधान मठवासी समुदाय को मठाध्यक्ष की इच्छा का पालन करने की आवश्यकता के बारे में निर्देश देते हैं, साथ ही वे मठाध्यक्ष के अधिकार और पहल पर कुछ सीमाएँ भी लगाते हैं; यह अधिकार मठ के वरिष्ठों की परिषद द्वारा प्रतिबंधित है – एक ऐसी परिषद जिसमें सबसे अनुभवी वरिष्ठ भिक्षु शामिल होते हैं, जिनकी संख्या आमतौर पर 12[630] होती है। यूफ्रोसिन के निम में, इस परिषद का उल्लेख बिल्कुल नहीं है; इसके विपरीत, सेंट जोसेफ के निम में, मठ के वरिष्ठ संतों की परिषद को मठ के प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई है (अध्याय 13 और 14)। इन अध्यायों से यह स्पष्ट है कि वरिष्ठ संतों की परिषद की संस्था मठाधीश की इच्छा और अधिकार के समानांतर काम करती थी। सख्त मायने में, परिषद ने अभी तक मठाधीश के अधिकार को सीमित नहीं किया था, लेकिन मठीय अनुशासन के मामलों में उसके पास मठाधीश के लगभग समान अधिकार थे, क्योंकि संत जोसेफ ने परिषद को नियमों के उल्लंघन के लिए भाइयों को दंडित करने और, अधिक सामान्य रूप से, इसके पालन की निगरानी करने का अधिकार दिया है। यह 'संवैधानिक' विशेषता बोल्डिनो के संत गेरा سيم के चार्टर में और भी स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई थी; जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, इस चार्टर के तहत बुजुर्गों की परिषद मठाधीश को अपनी टिप्पणियाँ और फटकार दे सकती थी। वरिष्ठों की परिषद के अधिकारों में महाधर्माध्यक्ष मैकारियस द्वारा होली स्पिरिट मठ के लिए तैयार किए गए चार्टर में भी उल्लेख मिलता है, जिसमें महाधर्माध्यक्ष की त्रुटियों को इंगित करने का अधिकार शामिल है। एक भिक्षु की महाधर्माध्यक्ष के प्रति आज्ञाकारिता, एक भिक्षु की अपने आध्यात्मिक पिता के प्रति निश्चिरता आज्ञाकारिता से बिल्कुल अलग है। शायद यही कारण था कि 16वीं और 17वीं शताब्दी में, आध्यात्मिक मार्गदर्शन की प्रणाली व्यापक नहीं हुई (विशेषकर सेनोबिटिक मठों में)[631] ।

मठाधीश के अधिकारों की तुलना बुजुर्गों की परिषद के अधिकारों से करने में असहमति के बीज निहित थे। हम कई ऐसे उदाहरण जानते हैं जहाँ एक मठाधीश, मठ के चार्टर की तपस्या संबंधी आवश्यकताओं के उल्लंघनों से

---

[625] उदाहरण के लिए: RIB. 6. संख्या 54, 61, 63, 129, 113; AI. 1. संख्या 37; AAE. 1. संख्या 40, 108। जोसेफ और गेरसम के विधानों में भी मठवासी समुदाय द्वारा मठाध्यक्ष के चुनाव का उल्लेख है; यह भी देखें: स्टोग्लाव। अध्याय 86। सं. कोज़ान्चिकोव। पृ. 250; AYu. 2. सं. 274; झमाकिन। मेट्रोपॉलिटन डेनियल। पृ. 110। स्टाउरोपैजियल मठों पर: मिलि. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 672, 675।

[626] आरआईबी. 6. पृ. 54. ओल्डपी (1881). पृ. 89.

[627] दोसीफेई। सोलोवेत्स्की मठ का वर्णन (1836)। पृ. 67.

[628] गोल्बुस्की। 2. 1. पृ. 700। वोल्त्स्की के जोसेफ ने बेसिल तृतीय से एक मठाधीश नियुक्त करने का अनुरोध किया और उन्हें 10 उम्मीदवारों की एक सूची भेजी। हालाँकि, बेसिल ने आदेश दिया कि सूची में शामिल नहीं, उसी मठ के भिक्षु डेनियल को मठाधीश नियुक्त किया जाए। झमाकिन। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 110; पीएसआरएल. 6. पृ. 288, 289; एएई. 1. सं. 238; एवाईयू. 1. सं. 381; आरआईबी. 6. पृ. 61. गॉर्स्की. ट्रिनिटी-सर्गीय लाव्रा का वर्णन. 1 (1890). पृ. 77, 80, 84, 85, 88, 97, 130, 156। ज़ार अलेक्सी के युग पर: AAE. 3. संख्या 262, 307, 331; 4. संख्या 37, 225, 253, 275, 322।

[629] रेडोनज़ के आदरणीय सर्गियस, बेलोज़ेरो के किरिल, बोरोव्स्क के पाफनुटियस, वोल्त्सक के जोसेफ, बोल्डिनो के गेरासिमस, अंज़र के एलेज़ार, कल्याज़िन के मकारियस, सिय के एंथनी, प्सकोव के यूफ्रोसिनिस और अन्य।

[630] 17वीं शताब्दी में, जब मठाधीश की नियुक्ति ज़ार द्वारा होने लगी, तो कैथेड्रल के वरिष्ठों ने धीरे-धीरे मठ के प्रबंधन में अपनी पूर्व भूमिका खो दी। सावो-स्टोरोज़हेव्स्की मठ में, जिसे ज़ार अलेक्सी का विशेष अनुग्रह प्राप्त था, उदाहरण के लिए, 1688 में केवल तीन परिषद के बुजुर्ग थे, जबकि संतों की संख्या 150 से अधिक थी। बेलोकुरोव। रूसी इतिहास के लिए सामग्री (1888)। पृ. 161.

[631] अध्याय XV देखें।

नपिटने का प्रयास करते हुए, मठवासी समुदाय के प्रतरिोध का सामना करने पर पराजति हो गया, जो मठाधीश के नरि्देशों का पालन करने और चार्टर का उल्लंघन करने वाली अपनी आदतों को छोड़ने के लिए अनचि्छुक थे। वरषि्ठ पैसयिस यारोस्लावोव, जनि्होंने कई वर्षों (1479–1482) तक ट्रनिटिी-सर्गीय मठ का शासन कयिा था, उन्हें मठाध्यक्ष के पद से इस्तीफा देने और बेलोज़ेरो के जंगलों में लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। वरषि्ठ आर्टेमी केवल आधे वर्ष (1551) तक ही इस मठ का शासन कर सके, और फरि, भकि्षुओं की अवज्ञा के कारण, उन्होंने मठाध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे दयिा[632] । परम आदरणीय जोसेफ को भी मठवासी समुदाय के साथ संघर्ष में पड़ना पड़ा। मेट्रोपॉलटिन डैनयिल (1522–1539), जोसेफ की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद, सेंट जोसेफ मठ के मठाध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्हें भी मठवासी समुदाय के साथ अपने संबंधों में कठनिाइयों का सामना करना पड़ा और उन्होंने एक वशिेष ग्रंथ भी रचा जसिमें उन्होंने भाइयों को सामुदायकि जीवन के मूल सद्धिांत समझाए और अपने आदेशों को सही ठहराया[633] । 17वीं सदी में मठ के जीवन में नकारात्मक घटनाओं से संबंधति लगभग सभी ग्रंथों में मठवासी समुदाय की अवज्ञा का उल्लेख मलिता है[634] । 17वीं सदी में मठाधीश के चुनाव को उसकी नयिुक्ति से बदलना, जो एक आम प्रथा बन गई, ने स्वाभावकि रूप से मठ के भीतर उसकी स्थतिि को मजबूत कयिा, जो आंशकि रूप से बुजुर्गों की परषिद के खर्च पर था।

संन्यासी बुजुर्गों की परषिद[635] , जसिमें आमतौर पर 12 सदस्य होते थे, में न केवल मठ के सबसे वरषि्ठ संन्यासी शामलि होते थे, बल्कि वे संन्यासी भी शामलि होते थे जो मठ के प्रबंधन से संबंधति वशिषि्ट पदों पर होते थे। इनमें सबसे पहले सेलर (कोषाध्यक्ष) था। मठ के भीतर उसकी स्थतिि विशिेष रूप से जम्मिेदार और प्रतषि्ठति थी; वह मठ के आंतरकि प्रशासन से संबंधति सभी मामलों का प्रभारी था, और, यदि मठ के पास भूमि थी, तो वह उस पर सामान्य नगिरानी भी रखता था। इस नगिरानी के संबंध में, सेलरर (15वीं शताब्दी के अंत से) को मठ समुदाय और मठ के कसिानों पर न्यायकि अधकिार प्राप्त था, जसिे वह या तो व्यक्तगित रूप से या अपने प्रतनिधियिों के माध्यम से प्रयोग करता था। मेट्रोपॉलटिन चार्टर (लगभग 1500) में, सेलरर का उल्लेख एबॉट के ठीक बाद कयिा गया है। 1495–1505 की तथिि वाले ट्रनिटिी-सर्गीय मठ के दस्तावेज़ बताते हैं कि सेलरर को मठ की संपत्तयिों के प्रबंधन का प्रभार सौंपा गया था; वह नई संपत्तयिाँ प्राप्त करने और पुरानी संपत्तयिों का आदान-प्रदान करने या बेचने के लिए भी जम्मिेदार था। 16वीं शताब्दी में, प्रशासन या वत्तिीय मामलों से संबंधति ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ के दस्तावेजों पर एक वशिेष सेलरर की मुहर भी लगाई जाती थी। 17वीं शताब्दी के दूसरे भाग में, ट्रनिटिी-सर्गीय मठ का सेलर मठ कार्यालय ([636]) में एक क्लर्क के रूप में भी कार्य करता था। बड़े मठों में हमेशा सेलर का पद होता था ([637])। सेंट जोसेफ के चार्टर में, सेलर की कोठरी को सबसे महत्वपूर्ण मामलों पर बैठकों के लिए स्थान के रूप में नामति कयिा गया है ([638])। सुज़दाल में स्पासो-यूथमियिन मठ को संबोधति एक ज़ार के फरमान (1640) में बर्सार के सभी कर्तव्यों को वस्तिार से सूचीबद्ध कयिा गया है: आंतरकि अर्थव्यवस्था और मठ की संपत्तयिों का प्रबंधन, मठ के कोषागार की सुरक्षा, धन का भुगतान और प्राप्ति; मठ के कसिानों द्वारा करिाए के समय पर भुगतान और सभी दायत्विों के पालन की नगिरानी करना, मठ के खातों के रखरखाव की देखरेख करना, मठ के नौकरों और कसिानों पर न्यायकि अधकिार का प्रयोग करना, ज़ार के कार्यालयों और प्रशासनकि नकिायों में मठ का प्रतनिधित्वि करना, और इसी तरह।[639]

16वीं शताब्दी के दूसरे भाग में, और वशिेष रूप से 17वीं शताब्दी में, यह एक आम प्रथा थी कि छोटे और गरीब मठ बड़े और अमीर मठों से संबद्ध हों - तथाकथति 'संबद्ध मठ'; यह छोटे मठों द्वारा अपनी वत्तिीय स्थतिि में सुधार

---

[632] गोर्स्की। उद्धृत ग्रंथ 1. पृ. 73; एएई. 1. सं. 237. पृ. 247. कुर्बस्की। द टेल् (1842)। पृ. 134, 132। मठाधीश की अवज्ञा पर, देखें: AI. 1. संख्या 265 और 276 (दोनों 15वीं शताब्दी से संबंधति)।

[633] द लाइफ़ ऑफ़ जोसेफ़, एक अज्ञात लेखक द्वारा, में: रीडग्सि। 1903। खंड 3। पृ. 18; झमाकनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 664। डैनयिल का कार्य: वही। परशिषि्ट। पृ. 55-57। डैनयिल के अन्य कार्य भी आज्ञाकारति की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

[634] AI. 5. संख्या 75; AAE. 4. संख्या 311, 312; PSZ. 1. संख्या 412.

[635] उस्पेंस्की, एन. 'करिीलो-बेलोज़ेर्स्की मठ के महान नरि्माताओं पर', में: रीडग्सि. 1897. खंड 1. पृ. 3, 4, 11–12, 17.

[636] गोल्बुंस्की। खंड 1, संख्या 2, पृ. 692; एआई। खंड 1, संख्या 100, 192, 292; खंड 3, संख्या 69; डीएआई। खंड 3, संख्या 87; एएई. खंड 1, संख्या 381; खंड 3, संख्या 47, 104, 294, आदि; केद्रोव. अवरामी पलtsyn, में: रीडग्सि. 1880. खंड 6. पृ. 18. गोरचाकोव. द मोंस्टकि ऑफसि. पृ. 78.

[637] वीसीएचएम. सतिंबर. पृ. 607; एएई. 1. संख्या 221; 3. संख्या 298; एआई. 1. संख्या 212; माकाऱी, बशिप. क्रास्नोगोर्स्क मठ का ऐतहिासकि ववरिण, में: रीडग्सि. 1880. 3. पृ. 81; बोगोस्लोव्स्की. उपरोक्त संदर्भ 1. पृ. 72; बेलोकुरोव. सामग्री (1888). पृ. 164; डोब्रोक्लोन्स्की. उपरोक्त संदर्भ. पृ. 11.

[638] वीसीएचएम. सतिंबर. पृ. 607.

[639] AAE. 3. संख्या 298.

करने और एक प्रभावशाली मठ के संरक्षण में आने के लिए किया जाता था, जो उससे जुड़े मठों तक अपनी विशेषाधिकारों का विस्तार करना चाहता था। मुख्य मठ का सेलर वह व्यक्ति था जिसके पास संबद्ध मठों पर प्रशासनिक और न्यायिक अधिकार होता था; इसके अलावा, संबद्ध मठों के मठाधीशों द्वारा धार्मिक अधिकार क्षेत्र का अधिकार भी उन्हें हस्तांतरित कर दिया गया था[640] ।

मठ की संपत्ति का वास्तविक प्रबंधन – तहखाना, गोदाम, रसोई, अस्तबल और मवेशी का आँगन – व्यवस्थापक, या कोषाध्यक्ष को सौंपा गया था; वह सेलरर का सबसे करीबी सहायक था और सीधे उसे रिपोर्ट करता था। वह एक वृद्ध, सम्माननीय भिक्षु था जिसे भाईचारे द्वारा एक निश्चित अवधि के लिए इस पद पर चुना जाता था; और वह संभवतः बुजुर्गों की परिषद में भी शामिल था। बदले में, मठ की अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं के लिए जिम्मेदार भिक्षु उसके अधीन थे: सहायक व्यवस्थापक, जो तहखानों और गोदामों की देखरेख करता था; बेकर; भोजनशाला का प्रभारी; अस्तबल का प्रभारी; पूजा-सामग्री का प्रभारी; और अक्सर सहायक पूजा-सामग्री का प्रभारी, और इसी तरह। मठ की संपत्तियों का प्रबंधन करने के लिए, कोषाध्यक्ष के पास सहायकों का एक पूरा स्टाफ भी होता था: सहायक कोषाध्यक्ष, गाँव के बुजुर्ग, या प्रबंधक। बड़े मठों में, विशिष्ट कर्तव्यों के लिए नियुक्त भिक्षुओं की संख्या काफी बड़ी होती थी। उदाहरण के लिए, 17वीं शताब्दी में, सोलोचनिस्की मठ (रियाज़ान जिला) में कम से कम 46 और सावो-स्टोरोज़ेव्स्की मठ में 51 थे; उनमें से कुछ ने विभिन्न कर्तव्य निभाए, जिनमें दैवीय सेवा से संबंधित कर्तव्य भी शामिल थे[641] ।

मठ समुदाय की आध्यात्मिक देखभाल में, मठाध्यक्ष का सबसे करीबी सहायक मठ का पाप-स्वीकार करने वाला होता था, और कुछ मठों में आध्यात्मिक वरिष्ठ भी होते थे; आध्यात्मिक वरिष्ठ नवोदितों और नए दीक्षित भिक्षुओं के लिए मार्गदर्शक और आध्यात्मिक पिता के रूप में कार्य करते थे । मठों में दैवीय सेवाएँ केवल हाइरोमोंक्स और हाइरोडीकन्स द्वारा ही संपन्न की जाती थीं; पैरिश पादरी (सफेद पादरी, या 'बेल्ट्सी') केवल 1503 और 1551 के परिषदों द्वारा स्थापित महिलाओं के मठों में ही सेवा करते थे। इक्लेसियार्क (उस्तावश्चिक) यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार था कि सेवाएं नियमों के अनुसार आयोजित की जाएं; वह टाइपिकॉन (मठवासी नियम) में अच्छी तरह से पारंगत एक वृद्ध भिक्षु था; उसकी सहायता कैनोनार्क (गोलोवश्चिक) – बड़े मठों में एक समय में दो या तीन कैनोनार्क होते थे – के साथ-साथ भजन-पाठी और पैरामोनार (पोनोमार) करते थे; एक जगाने वाला भिक्षु भी होता था – एक भिक्षु जो रात की प्रार्थनाओं के लिए भाइयों को जगाता था; एक मोमबत्ती-वाहक, या मोमबत्ती-वरिष्ठ – एक भिक्षु जो प्रार्थनाओं के लिए मोमबत्तियाँ बाँटता था (उदाहरण के लिए, पवित्र सप्ताह के दौरान); एक चर्च पर्यवेक्षक, या चर्च का बुजुर्ग, जो यह सुनिश्चित करता था कि भाई-बहनों का सेवाओं के दौरान ठीक से व्यवहार हो और चर्च को स्वच्छ रखा जाए, एक प्रोस्फोरा-निर्माता, और एक घंटी बजाने वाला[642] ।

यह स्पष्ट है कि विशिष्ट कर्तव्यों में लगे भिक्षुओं की संख्या बड़े और छोटे मठों के बीच भिन्न होती थी; सामुदायिक मठों में, विशेष रूप से जिनके पास विशाल संपत्तियां थीं, काफी संख्या में भिक्षु अर्थव्यवस्था की विभिन्न शाखाओं में लगे हुए थे। यदि, इसके अलावा, उन्हें दूर के गांवों या उद्यमों (जैसे मिलें, नमक कारखाने, मछली पकड़ने के स्थान या लकड़ी काटने के स्थान) में प्रबंधक या पर्यवेक्षक के रूप में भेजा जाता था, तो वे मठ के आंतरिक जीवन से पूरी तरह से अलग हो जाते थे; हालांकि वे मठ से दृढ़ता से जुड़े रहे, यह बंधन अब आध्यात्मिक या धार्मिक प्रकृति का नहीं था, बल्कि पूरी तरह से सांसारिक था - मठ की संपत्तियों की देखभाल और प्रबंधन। छोटे मठों और आश्रमों में, आध्यात्मिक स्तर आम तौर पर उच्च था और मठ के नियमों का उल्लंघन कम बार होता था, हालांकि इस कथन को सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है। मठ जीवन की संरचना में ही धर्मनिरपेक्षता के बीज निहित थे, और केवल कुछ ही तपस्वी सामान्य आध्यात्मिक स्तर से ऊपर उठने में सक्षम थे।

---

[640] एआई. खंड 1, संख्या 25, पृ. 178; खंड 5, संख्या 65, पृ. 195; एएई. खंड 4, संख्या 144.

[641] सेरेब्रांस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 472; वीसीएचएम. सितंबर. पृ. 600, 605, 588–590; खुटिन के वरलाम का जीवन, में: ओएलडीपी (1881)। पृ. 72, 78, 80, 93; AAE. 2. संख्या 298; IRI. 7. पृ. 193, 194; डोब्रोक्लोन्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 11, 14; माकारी, बिशप। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 81; बोगोस्लोव्स्की। Op. cit., पृ. 72; बेलोकुरोव. Materials, पृ. 164; AI. 1. संख्या 212; AAE. 1. संख्याएँ 56, 75.

[642] गोल्बुंस्की। खंड 1, संख्या 2, पृ. 689। हिरोमोंक और हिरोडीकन की संख्या बदलती रहती थी: उदाहरण के लिए, *1582–83 में* किरिलोव मठ में *7 हिरोमोंक और 3 हिरोडीकन थे; जबकि 1688 में सवो-स्टोरोज़ेव्स्की मठ में 20 हाइरोमोंक्स और 15 हाइरोडीकन्स थे। AI. 1. संख्या 212; बेलोकुरोव। सामग्री। पृ. 164.*

४. मुंडन संस्कार और नवोदतिों का आध्यात्मकि मार्गदर्शन

कसिी मठ में प्रवेश करना और एक भकि्षु के रूप में बाद में सरि मुंडवाना, अपने जीवन को एक वशिेष ईसाई-तपस्वी अर्थ और उद्देश्य से भरने की चाह रखने वाले व्यक्तकि लिए हमेशा एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम था। इस कदम का महत्व मठ जीवन में नहिति धार्मकि जमि्मेदारी से जुड़ा था। भवषि्य के भकि्षु के लिए आंतरकि आध्यात्मकि जमि्मेदारी इस तथ्य से और भी बढ़ गई थी कि, पूर्वी चर्च और ऑर्थोडॉक्स मठवाद में, एक भकि्षु के मुंडन को लंबे समय से एक संस्कार माना जाता रहा है। डयिोनसियिस द एरोपागटि (5वीं शताब्दी के अंत या 6वीं शताब्दी की शुरुआत), जनिकी कृतयिों को ऑर्थोडॉक्स मठवाद बहुत महत्व देता है, ने मठवासी मुंडन को छह संस्कारों में से पांचवें संस्कार के रूप में माना; संत थयिोडोर द स्टुडाइट († 826) ने भी मठवासी मुंडन को संस्कारात्मक महत्व दयिा: नव-मुंडति भकि्षु के लिए, यह दूसरे बपतस्मिा के समान है। ये वचिार पूर्वी चर्च में टोंसुर की रस्म में परलिक्षति होते हैं: जब भवषि्य के भकि्षु को टोंसुर के धार्मकि और संस्कारगत महत्व की व्याख्या की जाती है, तो मठाधीश इस रस्म को 'दूसरा बपतस्मिा' कहकर संबोधति करते हैं। हालाँकि, सद्धिांत रूप में, पूर्वी चर्च टोंसुर को केवल एक संस्कारकि अनुष्ठान के रूप में ही मानता है[643] ।

प्राचीन रूस में, समाज के सभी वर्गों ने ईसाई तपस्या और मठवासी जीवन की ओर झुकाव दखिाया। प्राचीन रूसी तपस्वयिों के जीवन में इसका प्रचुर प्रमाण मलिता है; प्राचीन और बाद के समय दोनों में, भकि्षुओं में वद्विान और साधारण दोनों तरह के लोग थे; मठों ने सामाजकि वर्गों के बीच कोई भेदभाव नहीं कयिा[644] ।

ये संतों के जीवनचरति यह भी इंगति करते हैं कि मठ में प्रवेश पर कसिी वशिषि्ट आयु प्रतबिंध का कोई सवाल नहीं हो सकता था; यह केवल स्पष्ट है कि एक भकि्षु या तो अपनी युवावस्था में या अपने बाद के वर्षों में मठ में प्रवेश करता था[645] । मॉस्कोवति रूस में, अपने जीवन के अंतमि वर्ष एक मठ में बतिाना प्रथा थी; मठ के कोष में एक योगदान दयिा जाता था, जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा गया है, और मठाधीश के साथ एक समझौता कयिा जाता था, जसिके तहत योगदानकर्ता को इस योगदान के बदले में, मठ में एक भकि्षु के रूप में अपना शेष जीवन, 'जब तक ईश्वर उसे जीवन प्रदान करता है ', व्यतीत करने का अधकिार दयिा जाता था। इन्हें तथाकथति 'टोन्सुर के लिए योगदान'[646] कहा जाता था। 16वीं और 17वीं शताब्दी में, एक व्यापक प्रथा भी थी जसिके तहत शहर के लोगों या कसिानों ('मरि') का एक समुदाय ज़ार को एक याचकिा भेजता था, जसिमें एक मठ स्थापति करने की अनुमति मांगी जाती थी, जसिे इस 'मरि' समुदाय के सदस्यों ने 'अपने लिए, अपने बच्चों और पोते-पोतयिों के लिए, मठवासी दीक्षा और उनके अंतमि संस्कार की सेवाओं के लिए... इरादा कयिा था'[647] । ऐसे मठों में, साधु tonsure केवल वृद्धावस्था में ही कयिा जाता था; इसके अलावा, युद्ध के अपंग और अन्य वकिलांग व्यक्तयिों का भी वहां tonsure कयिा जाता था। मठ में प्रवेश करते समय, नकद या वस्तु के रूप में एक नश्चिति योगदान देना प्रथा थी। कुछ मठों, अक्सर सामुदायकि मठों, ने काफी बड़ी रकम की मांग की; ऐसे ज्ञात मामले हैं जहां इस बारे में त्सार से शकिायतें की गई थीं[648] ।

टोन्सुर हमेशा टोन्सुर कराने वाले व्यक्तकि इच्छा से नहीं कयिा जाता था; कभी-कभी, सरकार उन व्यक्तयिों को, जन्हिें वह राजनीतकि रूप से अवांछनीय समझती थी, मठों में नर्विासति कर देती थी और उन्हें धर्मनरिपेक्ष और राज्य-राजनीतकि जीवन में कसिी भी भागीदारी से हटाने के लिए उनका टोन्सुर करवाती थी। राजकुमार-भकि्षु वासयिन पत्रीकेव, जनिका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं, ऐसे अपमानति नर्विासयिों में से एक थे। उत्तरी मठों में, और वशिेष रूप से करिलिो-बेलोज़ेर्स्की में, कई भकि्षु बोयार परविारों से आते थे। इस तरह के मुंडन का आयोजन ग्रैंड प्रंसि इवान तृतीय (1462–1505) के शासनकाल के दौरान और ज़ार इवान चतुर्थ (1533–1584) के अधीन दोनों ही समय होता था[649] ।

---

[643] देखें: स्टग्लिमेयर, जे. 'डए लेहरे वॉन डेन सकरामेंटन उंड डेर करि्चे नख प्स्यूडो-डायोनसियिोस', में: जेइट्सक्रफि्ट फर कैथोलशि थयिोलोगी. 22 (1898). पृ. 246 ff.; हॉल, के. *एन्थूज़यिास्मस उंड बुर्गेवाल्त्* (1898)। पृ. 205 आदि; हीलर. *उर्कर्खे उंड ओस्टकरि्खे*. 1 (1937)। पृ. 375; लेबेदेव, पी. *द साइंस ऑफ डविाइन वर्शपि इन द ऑर्थोडॉक्स चर्च*. 2 (1881)। पृ. 169; एंथनी (ख्रापोवट्स्की), मेट्रोपॉलटिन। एक ईसाई ऑर्थोडॉक्स कैटेकज़्िम का प्रयास (1924)। पृ. 65.

[644] टप्पिणी 67 देखें।

[645] गोल्बुंस्की। खंड 1, खंड 2. पृ. 668.

[646] रोज़्हेस्ट्वेंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 105–107; बोगोस्लोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 82, 77।

[647] AI. 1. संख्या 211; AAE. 2. संख्या 11; RIB. 12. पृ. 1218 और अन्य; ज़्वेरेन्स्की. 2. संख्या 1247, 122, 924.

[648] उदाहरण के लिए, खलनिोव्स्कोये डॉर्मशिन मठ के मठाध्यक्ष, जो एक 'धर्मनरिपेक्ष' मठ भी था, ने 10 रूबल का योगदान मांगा, जो उस समय (1559) में एक बड़ी रकम थी। AAE. 2. संख्या 11.

[649] नकिोल्स्की। सामुदायकि और सेल जीवन, में: क्रश्चियिन रीडगि्स 1907. 8. पृ. 181, 184; एआई. 1. संख्या 214.

मठ में प्रवेश करने पर, एक परीक्षा अवधि शुरू होती थी – नवोदति काल। यहाँ पहले से ही उल्लखिति व्यक्तगित तथ्यों से यह स्पष्ट है कि मठाधीशों को अक्सर उन व्यक्तियों पर मुंडन की रस्म करने के लिए मजबूर होना पड़ता था जिन्होंने मठ में नवोदति अवधि (novitiate) पूरी नहीं की थी; इस प्रकार, वास्तव में, केवल वे ही जिनके पास अपनी इच्छा से और कम उम्र में मठ में प्रवेश किया था, मठ के चार्टर की सभी आवश्यकताओं का पूरी तरह से पालन करते हुए मुंडन किए जाते थे।

तपस्वी आदेश के अनुसार, रूसी चर्च के सभी भिक्षुओं को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है: 1) रियासोफोरे, 2) लघु स्कीमा के भिक्षु, और 3) महा स्कीमा के भिक्षु; ये श्रेणियाँ केवल क्रमिक रूप से प्राप्त की जा सकती हैं। इन तीन श्रेणियों के अनुरूप, सिर मुंडवाने की तीन विधियाँ हैं।

जो मठ में प्रवेश करते हैं उन्हें नवसिखुआ कहा जाता है। नवसिखुआ काल की विधिवत अवधि पूरी करने पर, उन्हें रसोफ़ोर भिक्षु के रूप में मुंडन किया जाता है, और यह मुंडन भिक्षु संन्यास के बिना किया जाता है। हालाँकि, वे उच्च दर्जे के भिक्षुओं की तरह ही कठोरता से मठ के नियमों का पालन करने के लिए बाध्य हैं; और यद्यपि वे मठ के संन्यास-व्रत नहीं लेते हैं, वे नैतिक रूप से उनसे बँधे होते हैं। एक विशिष्ट अनुष्ठान करने के बाद, रसोफ़ोर भिक्षुओं को रसू () और कमेलाउकियन () पहनने का अधिकार दिया जाता है। नए मुंडित भिक्षुओं को 103 गाँठों वाली एक माला () दी जाती है – जिसे रूसी मठों में 'लेस्टोवकी' के नाम से जाना जाता है। मुंडन समारोह के दौरान, मठाधीश भिक्षु के सिर को क्रूस के आकार में मुंडवाता है और फिर उसे मठवासी वस्त्र पहनाता है। रसोफ़ोर के रूप में मुंडन कराए गए नवसिखियों को अपनी मर्जी से मठ जीवन छोड़ने की मनाही है[650] ।

दूसरी डिग्री में लघु स्कीमा (पार्वी हैबिटिस,) के भिक्षु शामिल होते हैं; यह पदनाम उन्हें महा स्कीमा के भिक्षुओं से अलग करने के लिए उत्पन्न हुआ था। स्कीमा () बाहरी विनिम्रता को दर्शाता है, जो आंतरिक आध्यात्मिक पश्चाताप का प्रतीक है। इस पश्चाताप की डिग्री के आधार पर, लघु स्कीमा () और महा स्कीमा ( ) के बीच अंतर किया जाता है। लघु स्कीमा में मुंडन संस्कार के दौरान, भिक्षु मठवासी संस्कार ग्रहण करता है। उसे करना चाहिए: क) हर उस चीज़ का त्याग करना जो कामुक इच्छाओं को संतुष्ट करती है; ख) मृत्यु तक सभी के प्रति आज्ञाकारी रहना; ग) कभी भी संपत्ति प्राप्त करने का प्रयास नहीं करना[651] । छोटे स्कीमा में टोंसुर की रस्म के दौरान, भिक्षु पर एक () रखा जाता है; पुरानी रूसी मठों में इसे 'स्वटिको' और बाद में 'व्लासीत्सा' कहा जाता था, जो स्वैच्छिक गरीबी का प्रतीक है; व्लासियात्सा के ऊपर परमान (Paraman) रखा जाता है, जो कोनों पर चार डोरियों वाला एक चौकोर कपड़ा है, जिसे छाती और कंधों पर पहना जाता है; परमान का उद्देश्य भिक्षु को स्वैच्छिक , स्वयं पर मसीह का धन्य जुआ लेने और यह याद दिलाना है कि यह बोझ हल्का है; परमान को कसकर बाँधा जाता है, जो सभी सांसारिक जुनूनों के बंधन का प्रतीक है; इसके ऊपर एक मंटल () पहना जाता है, और अंत में, कामेलौका से जुड़ी एक ट्रेन वाला एक विशेष सिर का आवरण – (या, रूसी में, एक क्लोबुक)। निम्न स्कीमा के भिक्षु अपने मठवासी व्रतों का त्याग नहीं कर सकते, जबकि रियासोफोरे पद के भिक्षुओं के लिए विशेष अनुमति और अत्यंत जबरदस्त कारणों से यह अभी भी संभव है; कैननिकली और नैतिक रूप से, वे मृत्यु तक अपने लिए लिए गए व्रतों का पालन करने के लिए बाध्य हैं।

महान स्कीमा में टोंसुर के दौरान, उम्मीदवार पर परमान के समान लेकिन आकार में बड़ा एक कपड़ा, जिसे अनालाव (analav) कहा जाता है, रखा जाता है; काउल के बजाय, कुकुल (kukul) पहना जाता है—एक प्रकार का हुड जो सिर और कंधों को ढकता है; कुकुल पर पाँच क्रॉस होते हैं: माथे पर, छाती पर, कंधों पर और पीठ पर; समारोह के बाद पहले सात दिनों तक, भिक्षु को इसे उतारना नहीं चाहिए। एक भिक्षु जिसने महा-स्कीमा (रूसी में, एक 'स्खिमिनिक') ग्रहण की है, वह विशेष रूप से कड़े उपवास और अखंड प्रार्थना का जीवन जीने का व्रत लेता है; वह अब अपनी कोठरी के बाहर कोई भी कर्तव्य नहीं करता है। प्रत्येक भिक्षु के लिए महा-स्कीमा ग्रहण करने की एक पूर्व शर्त एक निष्कलंक तपस्वी जीवन है; मठ में ऐसे जीवन के 30 वर्ष बाद, बशर्ते कि उसमें उच्च मठवासी सद्गुण हों, उसे महा स्कीमा में मुंडन कराने के लिए मठाधीश से अनुमति और आशीर्वाद प्राप्त होता है; मुंडन भिक्षु की अपनी इच्छा से किया जाता है। रयासोफ़ोर पहनने वाले भिक्षु 30 वर्षों के निष्कलंक तपस्या के तुरंत बाद महा स्कीमा ग्रहण कर सकते हैं। यदि कोई भिक्षु ग्रेट स्कीमा लेने से पहले ही हायरोंक (hieromonk) के रूप में अभिषिक्त हो

---

[650] Golubinsky. 1. 2. पृ. 668–670; Milaљ. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 657. मुंडन संस्कार पर: Maltzew. Begrбnis-Ritus (1898). पृ. 202–203; 17वीं सदी का मुंडन संस्कार, में: OLDP. 24 और 63; इन्नोकेन्टी, आर्चमैंड्राइट। मठवासी जीवन में मुंडन (1899); पाल्मोव, आई. पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च में मुंडन की रस्में (1914). भिक्षु वस्त्रों के व्यक्तगित भागों के धार्मिक प्रतीकवाद पर: ओपेनहाइमर, Ph. Symbolik und religiöse Wertung des Mönchskleides im christlichen Altertum (1932). तुलना करें: गोलुबिंस्की, खंड 1, भाग 2, पृ. 675–686।

[651] Milaљ. उद्धृत कृति, पृ. 658.

चुका है, तो वह लटिर्जी (Liturgy) का अनुष्ठान करने का अधकिार बनाए रखता है; हालाँकि, नोमोकेनन (Nomokanon) के अनुसार, बशिप ग्रेट स्कीमा लेने के बाद अपनी बशिप की सेवा का प्रयोग नहीं कर सकता है[652] ।

संन्यास की शपथ लेने से पहले, एक नवसखिुआ को एक योग्य और अनुभवी वृद्ध भकि्षु के आध्यात्मकि मार्गदर्शन में रहना चाहएि। दूसरे शब्दों में, यह आवश्यक है कि भवषि्य का भकि्षु, कम से कम अपने मुंडन तक, एक वृद्ध के मार्गदर्शन में आध्यात्मकि प्रशकि्षण प्राप्त करे। यह नरि्धारति करना मुश्कलि है कि 16वीं और 17वीं शताब्दयिों में यह आवश्यकता कसि हद तक पूरी हुई थी। इस अवधि के दौरान वरषि्ठ के मार्गदर्शन की प्रकृति और प्रचलन पर अध्याय XV में अधकि वसि्तार से चर्चा की जाएगी; यहाँ, हम केवल यह उल्लेख करेंगे कि नवोदतिों के आध्यात्मकि नरि्माण को समर्पति दो कृतयिाँ इसी अवधि की हैं।

पहली कृति का शीर्षक है 'नवसखि भकि्षुओं के लएि वरषि्ठ का नरि्देश: वरषि्ठ के प्रति आज्ञाकारिता में कैसे रहना चाहएि'[653] । भवषि्य के भकि्षु का जीवन प्रार्थना, पवत्रि धर्मग्रंथों के पाठ (यदि वह साक्षर है; यदि नरिक्षर है, तो केवल प्रार्थना) और शारीरकि श्रम से मलिकर बनना चाहएि; और यह सब वृद्ध के आदेशानुसार कयिा जाना चाहएि। 'परंपरा' कहती है कि नवसखिुए को 'वरषि्ठ की कृपा-आशीर्वाद के बनिा कसिी भी कार्य की ओर एक कदम भी नहीं उठाना चाहएि'; एक भकि्षु के पास कोई खाली समय नहीं होना चाहएि; उसका जीवन हमेशा ईश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्यों से भरा होना चाहएि, क्योंकि 'एक सच्चे भकि्षु के लएि पृथ्वी पर कोई पर्व का दनि नहीं है, न ही ईस्टर; उसके लएि, ईस्टर तब होता है जब वह (पार्थवि) व्यर्थता से शाश्वत वशि्राम में प्रवेश करता है'।

एक अन्य ग्रंथ का शीर्षक है 'धार्मकि ग्रंथों से प्राप्त, एक वशिेष वृद्ध द्वारा अपने शषि्य को मठवासी जीवन और कोठरी के नयिम पर उपदेश'; इसका रचनाकाल 15वीं सदी है और यह ओब्नोर्स्क के सेंट पॉल मठ में लखिा गया था, जहाँ उस समय वृद्ध की परंपरा फल-फूल रही थी। 17वीं सदी के पांडुलपियिों के अस्तत्वि से यह पता चलता है कि यह कृति उस समय व्यावहारकि रूप से उपयोग में थी[654] । प्रस्तावना से यह स्पष्ट है कि ध्यान एक नए दीक्षति भाई—अर्थात् रसोफोरा पहनने वाले भकि्षु—के आध्यात्मकि मार्गदर्शन पर केंद्रति है, जो पहली कृति के वपिरीत है, जो संभवतः नवोदतिों के लएि थी। अंतर इस तथ्य में नहिति है कि पहला प्रबंध तपस्या के काफी सामान्य मुद्दों को संबोधति करता है, और एक नवसखिुआ के व्यवहार के बाहरी पहलुओं पर अधकि ध्यान केंद्रति करता है, जबकि दूसरा एक ऐसे भकि्षु को सलाह देता है जसिने पहले ही कुछ आध्यात्मकि अनुभव प्राप्त कर लयिा है, यीशु की प्रार्थना के वशिेष महत्व पर जोर देता है, और भकि्षु और उसके आध्यात्मकि पति के बीच नरिंतर संचार के लएि बुनयिादी नयिम नरि्धारति करता है।

५ *संस्कार संबंधी मठ का नयिम और संतों का दैनकि जीवन*

व्यावहारकि और तपस्वी दृष्टकिोण से, एक नवसखिुआ या नवदीक्षति भकि्षु के लएि, न केवल मठ में प्रचलति मठवासी नयिम या मठाधीश द्वारा प्रदान कयिा गया मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण था, बल्कि मठ का संपूर्ण आध्यात्मकि वातावरण, साथ ही दैनकि मठवासी जीवन की संरचना भी थी। इस संबंध में, वभिन्नि कर्तव्यों के बीच दनि के वभिाजन का आधार दैवीय सेवाओं का क्रम था, जो प्रार्थना, शारीरकि श्रम और वशि्राम के समय को नरि्धारति करता था।

दव्यि सेवाओं के वार्षकि चक्र की संस्कारकि सामग्री पूरे पूर्वी चर्च, जसिमें रूसी चर्च भी शामलि है, की संस्कारकि व्यवस्था नरि्धारति करती है। 'हालांकि दव्यि संस्कार की वास्तवकि सामग्री, हमारे चर्च के वपिरीत, लगभग अपरविर्तति रहती है, – पूर्वी चर्च में उपासना के वार्षकि चक्र पर अपने संक्षपि्त लेकनि अंतर्दृष्टपिूर्ण नबिंध में पी. कलियिन करि्चहॉफ लखिते हैं – पूर्वी आध्यात्मकिता की वह पूर्ण समृद्धि, जो उपासना की लय में व्याप्त है, लगभग वशिेष रूप से दव्यि धर्मवधि से जुड़ी सेवाओं में ही व्यक्त होती है। चर्च की दैवीय सेवाओं का पूरा दायरा चार अनुष्ठानकि चक्रों में नहिति है जो एक-दूसरे के पूरक और परस्पर संचारति हैं: दो वार्षकि, एक साप्ताहकि और एक दैनकि'[655] . ऑर्थोडॉक्स चर्च की संस्कार संबंधी सेवाओं के समृद्ध और ववििधि स्वरूप ने मठवासी जीवन पर

---

[652] उपरोक्त; माल्टज़ेव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 203–204, 280; हाइलर. उद्धृत ग्रंथ, खंड 1, पृ. 382–384. आधुनकि ग्रीक चर्च में टोंसुर की रस्म पर, देखें स्पुंडा, एफ. *ग्रएिचशि मोन्चे* (1928)। पृ. 27–44 (लि॥ज॥जकिल अनुक्रम से अंशों के साथ)। रेव्स्की. *यूचोलॉजयिन*. खंड 3। पृ. 199–217; कैटेनबुश. खंड 1। पृ. 529–536।

[653] संदर्भ: सेरेब्रांस्की, उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 265–267 (अंश)।

[654] उपरोक्त, पृ. 571 आदि (जर्मन में: मेरी पुस्तक *लेबेन उंड लेह्रे डेर स्टारज़ेन*, पृ. 65–70)।

[655] करि्चहॉफ, पी. कलियिन, ओ. एफ. एम. 'पवत्रि वर्ष – पवत्रि मंत्रालय', *डेर क्रसि्टलीशेर ओस्टेन* में। संपादक जी. वुंडरले (1939)। पृ. 75. ईश्वरीय सेवाओं की सामग्री और वकिास पर आगे के लएि: Heiler. खंड 1, पृ. 335–364; Kattenbusch. खंड 1, पृ. 447–456. Lebedev. उद्धृत ग्रंथ, खंड 2, पृ. 44–82.

एक वशिष्टि छाप छोड़ी, जहाँ सभी नरि्धारति सेवाओं को कयिा जाना आवश्यक था, और वास्तव में कयिा भी जा सकता था। इसके कारण कोई एकरूपता नहीं थी, जो एक नवसखिुआ या अनुभवहीन भकि्षु के लिए वशिेष रूप से दमनकारी हो सकती है – और साथ ही, दव्यि भजनों की प्रचुरता, जो चर्च की धर्मशास्त्रीय शकि्षाओं से ओत-प्रोत हैं और ऑर्थोडॉक्स पूजा का सार हैं[656] , ने खोल दयिा आध्यात्मकि प्रबोधन का अवसर[657] । दो वार्षकि चक्र – ईस्टर से जुड़े परविर्तनशील पर्वों का चक्र, और उद्धारकर्ता, परमेश्वर की माता और संतों की स्मृति को समर्पति स्थरि पर्वों का चक्र – आधार बनाते हैं; इनमें साप्ताहकि और दैनकि चक्रों द्वारा पूरकता की जाती है, जो वार्षकि चक्रों की संस्कारकि सामग्री से परपिूर्ण होते हैं, क्योंकि सप्ताह के प्रत्येक दनि को पवत्रि इतहिास की एक वशिष्टि घटना या संतों की स्मृति को समर्पति कयिा गया है, जबकि दनि भर प्रार्थना के सख्त रूप से परभिाषति घंटे जपे जाते हैं[658] । वार्षकि चक्र के पर्व वे दनि हैं जो साल में केवल एक बार आते हैं, जबकि दैनकि और साप्ताहकि चक्रों की सेवाओं में मठवासी अभ्यास[659] के लिए अत्यंत महत्व के लगातार दोहराए जाने वाले भजन शामलि होते हैं, क्योंकि दनि भर का संपूर्ण मठवासी जीवन का ढाँचा शाम 6 बजे से शुरू होकर, सात भागों में वभिाजति होता है[660] । मठवासी नयिम मठवासी जीवन के अनुशासनात्मक पहलू को परभिाषति करता है , जबकि मठ में दैनकि दनिचर्या धार्मकि नयिम द्वारा नरि्धारति होती है। इसका आधार ऑर्थोडॉक्स चर्च का टाइपकिॉन (रूसी में: 'उस्ताव') है, जो कई शताब्दयिों में वकिसति हुआ है[661] ।

उपरोक्त सेंट सावा और सेंट थयिोडोर द स्टुडाइट के वधिानों में ये दोनों पहलू—अनुशासनात्मक और संस्कारकि—शामल थे, और रूस पहुँचने पर, वे रूसी चर्च के संस्कारकि वधिान[662] का आधार बन गए। नयिम के

---

[656] पी. के. करि्चहॉफ द्वारा ऑर्थोडॉक्स भजनों के उत्कृष्ट अनुवाद देखें: 1. *Die Ostkirche betet*. 4 खंड (1934-1937); 2. *In paradisum*. मृतकों के लिए भजन (1939); 3. *Ehre sei Gott. Dreifaltigkeitshymnen* (1940). 4. *Uber Dich freut sich der Erdkreis. Marienhymnen* (1940); इसमें एक वस्तिृत प्रस्तावना है। यह भी देखें: जे़नकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 93–99। संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, 'क्योंकि कोई भी चीज़, सामंजस्यपूर्ण गायन और एक अच्छी तरह से रचति दव्यि भजन की तरह, आत्मा को इतना ऊँचा नहीं उठाती और प्रेरति नहीं करती, उसे पृथ्वी से अलग नहीं करती, शरीर के बंधनों से मुक्त नहीं करती, और सभी सांसारकि चीजों पर चतिन करने और उन्हें तुच्छ समझने के लिए तैयार नहीं करती। हमारे स्वभाव को राग-रागनियिों में इतनी प्रसन्नता होती है और वे इतनी आकर्षति करती हैं कि शशिु भी, जब वे रोते और बेचैन होते हैं, तो उनसे ही सुलाकर सुला दयिा जाता है।' भजन संहति 41 पर व्याख्यान; उद्धृत: केसर, योहन. *Beiträge zur Geschichte und Erklärung der älteren Kirchenhymnen*. दूसरा संस्करण 1881। पृ. 47। ग्रीक (ऑर्थोडॉक्स) भजन-संगीतशास्त्र पर, यह भी देखें: क्रस्टि, डब्ल्यू. 'मध्ययुगीन ग्रीक कवति में हरि्मोई, ट्रॉपारयिा और कानन के महत्व पर', में: प्रोसीडगि्स ऑफ द बावेरयिन एकेडमी ऑफ साइंसेज 1870. 2; Jacobi, L. 'ग्रीक चर्च भजनों के इतहिास पर', Z. f. KG (1882) में; Meyer, W. 'लैटनि और ग्रीक लयात्मक कवति की शुरुआत और उत्पत्ति', Proceedings of the Bavarian Academy of Sciences 17. 2 (1885) में। Krumbacher (1897). पृ. 655 ff.

[657] देखें वुंडरले, जी., *फ्रॉम द होली वर्ल्ड ऑफ एथोस: स्टडीज़ एंड मेमोयर्स* (1937. *ईस्टर्न क्रशि्चयिनटिी*, खंड 2)।

[658] तुलना करें टपि्पणी 651; और यह भी: Büdumer, S. *History of the Breviary* (1895); Leclercq, H. *Bréviaire*, in: *Dictionnaire d'Archéologie chrétienne et de liturgie*. 2. 1 (1925). pp. 1262–1316.

[659] सप्ताह का प्रत्येक दनि हमारे उद्धार के इतहिास में कसिी वशिेष घटना या संतों को समर्पति है: सोमवार – पवत्रि स्वर्गदूतों को; मंगलवार – जॉन द फॉररनर और बपतसि्मादाता को; बुधवार – यहूदा के वशि्वासघात को; गुरुवार – पवत्रि प्रेरतिों, चमत्कार करने वालों और पवत्रि धर्मगुरुओं को; शुक्रवार – मसीह के दुख-क्लेश और पवत्रि क्रूस को; शनविार – पवत्रि कन्फैसरों, शहीदों और सभी संतों को; रवविार – मसीह के पुनरुत्थान और पवत्रि त्रमिूर्ति को। सप्ताह के सभी दनि परमेश्वर की अति धन्य माता, मरयिम, को समर्पति हैं, लेकनि वशिेष रूप से बुधवार, शुक्रवार और रवविार। इस वषिय पर उत्कृष्ट चतिन देखें: साइप्रयिन, हायरोमोंक। 'प्रार्थनामय ललिी'। बेलग्रेड, 1928। पृ. 57–208।

[660] ऑर्थोडॉक्स चर्च में, सप्ताह के दनिों की गनिती रवविार से नहीं बल्कि सोमवार से की जाती है; दनि की शुरुआत आधी रात को नहीं बल्कि शाम 6 बजे से मानी जाती है; घंटों की गनिती सुबह 6 बजे से की जाती है। दनि भर, भकि्षुओं को नम्निलखिति सेवाएँ मनानी होती हैं: शाम को (6 बजे) वेस्पर्स, जसिके बाद कॉम्प्लाइन; रात में (12 बजे) मैटनि्स; सुबह-सुबह (3 बजे) मैटनि्स; सुबह (6 बजे) पहला घंटा; 9 बजे – तीसरा घंटा; दोपहर में – छठा घंटा; और दोपहर 3 बजे – नौवां घंटा। धर्मवधि (Liturgy) तीसरे और छठे घंटे के बीच मनाई जाती है। दनि के इन अनुष्ठानों का क्रम कुछ मामलों में रोमन कैथोलकि दनि के अनुष्ठानों से भनि्न होता है। तुलना करें: Bdumer. Op. cit. पृ. 31–130.

[661] सेवाओं के दैनकि चक्र का क्रम टाइपकिॉन द्वारा नरि्धारति कयिा जाता है। टाइपकिॉन के वकिास और संरचना पर, देखें: मैनस्वेटोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 269 ff. प्राचीन टाइपकिॉन्स की अनेक प्रतयिों पर, देखें मूलभूत कृति: दमिति्रीव्स्की, ए. पूर्वी पुस्तकालयों में संरक्षति धार्मकि अनुष्ठान पांडुलपियिों का ववरिण। 2 खंड (1894, 1916)। यह भी देखें: कैटेनबुश, खंड 1, पृ. 479 ff.; सेर्गीयस, आर्चमिांड्राइट। उद्धृत कृति, 2 खंड *(1875–76); नकिोल्स्की, के. *टाइपकिॉन के अध्ययन के लिए एक गाइड* (1884, 1908); स्काबालोनोवचि, एम. *एक व्याख्यात्मक टाइपकिॉन* / 2 खंड* (1911–13); बडमर, पृ. 31 आदि; हाइलर, खंड 1, पृ. 297, 299 आदि।

[662] मान्सवेटोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 78, 127, 294–296, 298 आदि; ओडटिसोव, एन. प्राचीन रूस में 16वीं शताब्दी तक सार्वजनकि और नजिी दैवीय सेवाओं का क्रम (1881); दमिति्रीव्स्की, ए. 'पहली पाँच शताब्दयिों के दौरान रूसी चर्च में दैवीय सेवा', में: प्राव. सोब. 1882–1883; वही लेखक. '16वीं शताब्दी में रूसी चर्च में दैवीय सेवा' (1884)। लयिोनदि, आर्चमिंड्राइट. 'चर्च के अनुष्ठानकि क्रम के स्लावोनकि अनुवादों

अनुष्ठानकि भाग का वकिास सामुदायकि और एकांत मठों में कुछ अलग तरह से हुआ। ऐसा लगता है कि 14वीं शताब्दी में, स्टुडाइट नयिम के अनुष्ठानकि भाग को तथाकथति यरूशलेम नयिम द्वारा धीरे-धीरे प्रतस्थिापति कर दयिा गया। यह सेंट सावस का नयिम (इसके अनुष्ठानात्मक भाग में) था, जसिमें कुछ संशोधन और अतरिक्तिताएँ की गई थीं, जन्हिें मुख्य रूप से पैट्रआर्क एलेक्सयिस (1025–1043) और फलिोथयिोस (1354–1355, 1362–1376) ने पेश कयिा था। 14वीं-15वीं शताब्दयिों में प्राचीन रूस में, इस वधिान के तीन संस्करण ज्ञात थे, जो केवल छोटे ववरिणों में भन्नि थे[663] । इस वधिान के अनुसार, रववार और प्रमुख पर्वों की पूर्व संध्याओं पर पैरशि चर्चों में धर्मवधि, संध्या, मध्यरात्रि प्रार्थना और संपूर्ण-रात्रि जागरण मनाया जाता था। मठों में, घंटयिाँ—पहली और नौवीं घंटी, वेस्पर्स और मध्यरात्रि की प्रार्थना—भी मनाई जाती थीं; आमतौर पर, बाद की दो प्रार्थनाओं को एक में मलिा दयिा जाता था, जबकि तीसरी और छठी घंटी को लटिर्जी के साथ मलिाया जाता था: तीसरी घंटी लटिर्जी से पहले पढ़ी जाती थी, और छठी घंटी इसके बाद। यह दैवीय सेवाओं का क्रम मुख्य रूप से सामुदायकि मठों में मौजूद था[664] । कुछ मठों के अपने संस्कार संबंधी वधिान थे, उदाहरण के लिए, ट्रनिटिी-सर्गीस लाव्रा या करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ[665] । 15वीं-16वीं शताब्दयिों के वभिन्नि दस्तावेज़ बताते हैं कि वधिान (टपिकिॉन) के प्रावधानों का मठों में हमेशा पालन नहीं कयिा जाता था[666] । स्टोग्लाव ने यह स्थापति कयिा कि पैरशि और मठों के चर्चों में, दव्यि सेवाएं टाइपकिॉन (अध्याय 6, 8, 41, 5, 7, 16) के अनुसार नहीं की जाती थीं। उत्तर के छोटे-छोटे एकांतवासों में, जहाँ मुख्य रूप से स्केटे टाइपकिॉन का पालन कयिा जाता था, दव्यि सेवाओं के संचालन में कुछ वशिष्टि वशिषताएँ थीं। यह वशिष रूप से यही नयिम था जसिने अनुशासनात्मक पहलू की तुलना में पूजा-संबंधी पहलू को अधकि महत्व दयिा; यह वशिष रूप से रववार और प्रमुख पर्वों की पूर्व संध्या पर 'घंटों' और 'सारी रात की प्रार्थना सभा' के लिए सच था, जबकि सामुदायकि मठों में, रववार और प्रमुख पर्वों पर, अक्सर केवल 'सांध्य प्रार्थना' ही मनाई जाती थी; इस संबंध में, स्केट नयिम संत सावा के मूल नयिम के अधकि नकिट था[667] ।

तथाकथति 'मठवासी मैनुअल' मठों में दैवीय सेवाओं के क्रम पर दलिचस्प सामग्री का खजाना प्रदान करते हैं, जो हमें मठवासी जीवन की रोजमर्रा की तस्वीर दखिाते हैं। ये पुस्तकें मठवासी डप्टिच्सि के संबंध में उभरीं, जो पूरे संस्कारकि वर्ष को कवर करती थीं और एक प्रकार के मठवासी कैलेंडर के रूप में काम करती थीं। वे चल और स्थरि पर्वों के वार्षकि चक्रों पर आधारति थे, जन्हिें मासकि कैलेंडर की प्रवष्टियिों से पूरक बनाया गया था। प्रभु, परमेश्वर की माता और संतों के पर्वों के संबंध में, 'ओबकिhodniki' में यह नर्दिष्टि करने वाले नोट्स शामलि थे कि पर्व की पूर्व संध्या पर मठ में कौन-कौन सी सेवाएं मनाई जानी थीं। इनमें दविंगत और जीवति महान राजकुमारों और ज़ारों के नाम भी शामलि थे, वशिष रूप से यदि उन्होंने मठ को दान दयिा था, साथ ही सभी क्षेत्रों के अन्य दाताओं के नाम भी; इन नामों का चर्च में दैवीय सेवाओं के दौरान स्मरण कयिा जाता था। दैनकि कार्यक्रम कसिी वशिष मठ में रोजमर्रा की जदिगी की एक उत्कृष्ट झलक प्रदान करते हैं। वे दर्शाते हैं कि के सामुदायकि मठों, जैसे कि सेंट जोसेफ का मठ, ट्रनिटिी-सर्गेस लव्रा या नोवोस्पासकी मठ में, 'ऑल-नाइट वजिलि' केवल रववार या प्रमुख त्योहारों की पूर्व संध्या पर मनाया जाता था; जबकि एकांत जीवन के नयिम वाले छोटे आश्रमों में, यह बुधवार को भी मनाया जाता था, बशर्ते उस दनि सप्ताह में कोई प्रमुख त्योहार न पड़ता हो[668] ।

ये दैनकि कार्यक्रम मठवासी तपस्या के इतहिास पर मूल्यवान सामग्री का खजाना भी प्रदान करते हैं, क्योंकि इनमें भोजन के संबंध में दैनकि नर्देश होते हैं, जो पूर्वी चर्च में अनविार्य उपवासों के पालन से संबंधति नयिमों की आवश्यकताओं का सख्ती से पालन करते हैं। यहां तक कि बाइज़ेंटाइन चर्च में भी, उपवास और उनके पालन के

पर', में: च्टेनयि्या. 1867. 2; मंसवेतोव, आई. 'मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन इन हजि लटिर्जकिल एक्टविटिी' (1882); लसित्सिनि, एम. 'द ओरजिनिल स्लावोनकि-रशयिन टाइपकिॉन' (1911)। रूसी चर्च का पहला मुद्रति टाइपकिॉन 1610 में मास्को में प्रकाशति हुआ था।

[663] मैन्सवेटोव। वही। पृ. 269, 275, 284, 304; गोलुबस्किी। खंड 1, संख्या 1। पृ. 320–329, 330–377, 507; खंड 2, संख्या 2। पृ. 406; मकाarii. 2nd संस्करण. 8. पृ. 77.

[664] गोल्बुइंस्की। खंड 2, भाग 2. पृ. 428–433; ओडनि्त्सोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 40। मंसवेतोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 271।

[665] मकाराई। द्वतिीय संस्करण। खंड 8। पृ. 78।

[666] सरेब्रेयान्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 368–371; एआई. 1. सं. 478.

[667] मान्सवेतोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 301; मकारीय। द्वतिीय संस्करण। खंड 8. पृ. 77।

[668] डायप्टख्सि के लिए देखें Leclercq, H., *Manuel d'archéologie chrétienne depuis les origines jusqu'au VIIIe siècle*. खंड 2 (1917), पृ. 333 ff. मठ संबंधी तालकिाएँ: 1. सेंट जोसेफ मठ (*1589–90), में: आर्चमैंड्राइट लयिोनदि, *मठ के भोजन-मेनू*, में: *रीडगि्स*. 1880. 3. पृ. 5–22; 2. मॉस्को में नोवोस्पासस्की मठ (17वीं सदी का दूसरा भाग) । वही, पृ. 24; 3. ट्रनिटिी-सर्गीय मठ (1 – वर्ष 1445–1533 को कवर करता है, 2 – वर्ष 1533–1547 को कवर करता है), में: गोर्स्की। ऐतहिासकि ववरिण। 2 (1900) । पृ. 16–44 । मंसवेतोव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 301 ।*

प्रश्न ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई[669] । संन्यासी अनुशासन संबंधी विधानों ने उपवास के पालन पर विशेष ध्यान दिया, क्योंकि यह एक भिक्षु के सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक था। प्राचीन रूस में, और विशेष रूप से भिक्षुओं ने, अन्य तपस्या संबंधी प्रथाओं की तुलना में उपवास को शायद अतिशयोक्तिपूर्ण महत्व दिया।

रूसी चर्च उपवास की चार लंबी अवधियों का पालन करता है: ईस्टर से पहले महा-तप (चालीस दिन), जो चीज़ सप्ताह के बाद वाले सोमवार को शुरू होता है; जन्म उपवास (क्रिसमस से पहले), जो प्रेरित फिलिप (14 नवंबर) की स्मृति के बाद वाले दिन से शुरू होता है, और इसी कारण इसे आम तौर पर फिलिप का उपवास कहा जाता है; संत पतरस का उपवास, जो पवित्र पेंटेकोस्ट के बाद दूसरे सप्ताह के सोमवार से लेकर संत पतरस और पॉल के पर्व (29 जून) तक होता है; अंत में, डॉर्मिशन फास्ट – ईश्वर की माता के निधन (15 अगस्त) से दो सप्ताह पहले। उपवास हर बुधवार (जुडास की विश्वासघात की याद में) और हर शुक्रवार (मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने की याद में) को भी किया जाता है; पवित्र क्रूस के उत्थान के पर्व (14 सितंबर), संत योहन बपतिस्मादाता के शिरच्छेदन की स्मृति में (29 अगस्त), क्रिसमस की पूर्व संध्या और एपिफेनी की पूर्व संध्या (5 जनवरी) पर उपवास। उपवास पर टाइपिकॉन के नियमों के अनुसार, मठों के पूजा-विधि कैलेंडर में पूरे वर्ष भिक्षुओं के भोजन के बारे में सटीक निर्देश होते हैं।

टाइपिकॉन उपवास के चार प्रकार (या श्रेणियों) के बीच अंतर करता है, जिनका भिक्षुओं द्वारा सख्ती से पालन किया जाना चाहिए, और यह उनसे मांस खाने से पूरी तरह परहेज़ करने की मांग करता है ([670])। उपवास की उच्चतम श्रेणी भोजन से पूर्ण परहेज़ है, जो ग्रेट लेन्ट के पहले सप्ताह के सोम और मंगल तथा गुड फ्राइडे को निर्धारित है। उपवास के अन्य दिनों में, टाइपिकॉन सूर्यास्त के बाद शाम को दिन में एक बार भोजन की अनुमति देता है। उपवास का दूसरा स्तर शुष्क उपवास है, जो ग्रेट लेंट के दौरान किया जाता है। एकमात्र अपवाद शनिवार और रविवार हैं, जब बिना तेल के उबली हुई सब्जियां खाई जा सकती हैं। (वनस्पति) तेल के साथ उबली हुई सब्जियां खाना उपवास का तीसरा स्तर है, जबकि मछली खाना चौथा और अंतिम स्तर है; मछली का सेवन घोषणा के पर्व (बशर्ते यह पवित्र सप्ताह के दौरान न हो) और यीशु के यरूशलेम में प्रवेश के पर्व पर किया जा सकता है।

टाइपिकॉन उन दिनों का उल्लेख करता है जिन पर शराब और तेल की अनुमति है; इन दिनों, कोई पानी में मिलाकर शराब पी सकता है और वनस्पति तेल से तैयार भोजन खा सकता है। पूर्वी चर्च में, भिक्षुओं के लिए मांस खाने पर सख्त मनाही है; उपवास के दौरान और सभी कार्यदिवसों पर, डेयरी उत्पादों और अंडों से परहेज़ करना भी आवश्यक है। डेयरी व्यंजन या मक्खन वाली सब्जियां, दूध या मक्खन वाली दलिया, सफेद ब्रेड या पत्तागोभी या मछली से भरी पाई केवल रविवार और पर्व के दिनों में ही मठ की मेज पर दिखाई देती हैं। प्रभु और परमेश्वर की माता के पर्वों पर, संतों की स्मृति या ज़ार के नाम दिवस को समर्पित पर्वों की तुलना में भिक्षुओं का भोजन बेहतर और अधिक भरपूर (तीन से चार व्यंजनों का) होता है। मठ के नियम-पुस्तकों में उस समय की भक्ति की एक और विशिष्ट विशेषता निहित है: परमेश्वर की माता के पर्वों के लिए विशेष रूप से 'अच्छा और हल्का' भोजन निर्धारित किया गया है; विशेष रूप से पूजनीय माँ के आइकन - उदाहरण के लिए, व्लादिमीर और काज़ान ' ' - को समर्पित उत्सवों पर भी अधिक भरपूर भोजन निर्धारित किया गया था। संस्थापक के निधन के दिन को भी भक्तिपूर्वक मनाया जाता था, जो उनकी संत-घोषणा के बाद एक चर्च का उत्सव बन गया था, और इसी तरह उनके नाम-दिन को भी मनाया जाता था।

उदाहरण के लिए, सेंट जोसेफ मठ ने 9 सितंबर को सेंट जोसेफ की निधना की स्मृति मनाई। इस दिन, मठ के भिक्षुओं को पिछले दिन, 8 सितंबर, जो ईश्वर की माता के जन्म का दिन था, की तुलना में बेहतर भोजन परोसा गया; सेंट जोसेफ की स्मृति के दिन, मेजों पर सबसे अच्छी मेज़पोशें बिछाई गई थीं। 8 और 9 सितंबर दोनों को, भिक्षुओं ने सफेद ब्रेड खाई, लेकिन 9 सितंबर को उन्हें तली हुई मछली के तीन व्यंजन परोसे गए, जबकि 8 सितंबर को उन्हें केवल उबली हुई मछली के दो व्यंजन, दो साइड डिश, हर्सरैडिश और सरसों के साथ परोसे गए; 9 सितंबर को, उन्होंने मठ के संस्थापक के सम्मान में एक स्टफ्ड पाई और अंडे और शहद के साथ पेस्ट्री भी खाई – जबकि 8 सितंबर को उन्होंने केवल पनीर और दूध के साथ पनीर का सूप और दलिया खाया; सेंट जोसेफ की स्मृति में, भिक्षुओं ने ईश्वर की माता के जन्म के दिन की तुलना में बेहतर शहद का क्वास पिया। यदि 9 सितंबर बुधवार या शुक्रवार को पड़ता था

[669] पूर्वी चर्च में उपवास पर: मैनस्वेटोव। 'ऑर्थोडॉक्स पूर्वी चर्च में उपवास पर', में: प्रिबावलेनिया। 1885. 36. पृ. 355–399; 37. पृ. 630–698; होल, के. 'ग्रीक चर्च में चार महान लेंट अवधियों की उत्पत्ति', में: संग्रहित निबंध। 2 (1928) (यह भी: प्रोसीडिंग्स ऑफ द बर्लिन अकादमी 1923; Phil-hist. Kl. No. 5); Büdumer. Op. cit. pp. 63–67; Golubinsky. Vol. 1, Part 2, pp. 399–462; Vol. 2, Part 2, p. 607.
[670] लेबेदेव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 84–91।

- यानी, उपवास का दिन - तो भाइयों को दोपहर के भोजन के लिए केवल काली मिर्च के साथ मटर का सूप[671] , आधा पाव रोटी और एक मग क्वास परोसा जाता था, जबकि उत्सव का भोजन अगले दिन, 10 सितंबर को होता था। 9 सितंबर को, सभी भिखारियों, गरीबों और तीर्थयात्रियों को मठ में एक भरपेट भोजन मिलता था, जबकि वरिष्ठ भिक्षुओं, प्रार्थना सभा के बाद, भिखारियों को मठ के कोषागार से छोटे सिक्के देते थे। दिलचस्प बात यह है कि इस दिन भिक्षुओं को स्वयं भी मठ से मौद्रिक उपहार (प्रत्येक को एक कोपेक) मिलते थे।

ईस्टर के पहले दिन, मेज़ विशेष रूप से भव्य और 'हल्का' था: ईस्टर केक, सफेद ब्रेड, जिसे भिक्षु बिना किसी प्रतिबंध के, 'मन भर' खा सकते थे, उबले और रंगे अंडे, ताज़ी मछली (दो प्रकार की, दो तरीकों से तैयार - तली हुई और उबली हुई), दूध का दलिया, दोपहर के भोजन के लिए शहद का क्वास और रात के खाने के लिए सफेद ब्रेड का क्वास; रात के खाने में फिर से मछली का व्यंजन परोसा गया। 15 अगस्त को, ईश्वर की माता के निद्रोत्सव के पर्व पर, जो मठ के चर्च का संरक्षक पर्व था, सारा भोजन ज़ार के खर्च पर प्रदान किया गया (जैसा कि 16वीं शताब्दी में होता था); यह मठ के लिए उनका विशेष उपहार था। जहाँ तक महा-उपवास और पवित्र सप्ताह के पहले सप्ताह के सोमवार और मंगलवार का प्रश्न है, मठ के नियम में कहा गया है: न भोजन, न रोटी, न पानी[672] ।

हमने मठ के नियम-पुस्तकों से इतने विस्तृत अंश उद्धृत करने की स्वतंत्रता इसलिए ली है ताकि यह दिखाया जा सके कि मठवासी तपस्या के महत्व को किस हद तक सतही रूप से समझा गया था, और यह समझ किस हद तक विकृत थी। हाँ, उपवास पर टाइपिकॉन के नियमों का सख्ती से और समय पर पालन किया जाता था, लेकिन अन्य दिनों में मठवासी भोजन मठवासी तपस्या के अर्थ और आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं था। हम पहले ही उपवास के अर्थ और रूप पर एल्डर नीलस के विचार का हवाला दे चुके हैं (अध्याय IV, 2)। एल्डर आर्टेमियस के लेखों से यह भी स्पष्ट है कि, 16वीं शताब्दी के मध्य में भी, गैर-स्वामित्वधारियों ने उपवास के धार्मिक और तपस्वी महत्व की अपनी सही समझ नहीं खोई थी[673] ।

हालाँकि, सबसे बढ़कर, मठ के संस्थापक की स्मृति को पूजा-विधि के अनुसार मनाया जाता था। उत्सव की पूर्व संध्या पर, संपूर्ण-रात्रि जागरण मनाया जाता था, जो लगभग पूरी रात तक चलता था। टाइपिकॉन द्वारा मैटिन्स के लिए निर्धारित पठन को तीन या चार भागों में विभाजित किया गया था, और अंतिम पठन, कैनन की छठी ओड के बाद, संत - मठ के पूजनीय संस्थापक - के जीवन पर आधारित होता था, जिसका उद्देश्य भाइयों को एक बार फिर से स्मरण और शिक्षा देना था। सारी रात की प्रार्थना सभा अक्सर सुबह तक चलती थी; फिर, एक छोटे से विराम के बाद, जिसमें भ्रातृगण चर्च में ही रहते थे, उत्सव का अनुष्ठान शुरू होता था। इसका संचालन मठ के मठाधीश एक हाइरोमोंक के साथ मिलकर करते थे। लिटजी दोपहर तक चलती थी और मठ की सुरक्षा के लिए प्रार्थना के साथ संत के सम्मान में एक विशेष प्रार्थना सेवा के साथ समाप्त होती थी। सेवा के बाद, मठाधीश के नेतृत्व में मठाधीश भाई भोजनशाला की ओर बढ़ते थे – धीरे-धीरे और गंभीरता से, भजन 'हे मेरे प्राण, प्रभु की स्तुति कर' (भजन संहिता 145) गाते हुए। भोजनशाला में, वाचा के संदूक या आइकनोस्टासिस के सामने (भोजनशाला अक्सर एक वेदी और आइकनोस्टासिस के साथ चर्च के रूप में बनाई जाती थी), दिन का ट्रॉपारियन गाया गया। मठाधीश ने भोजन का आशीर्वाद दिया, जो पहले से ही मेजों पर परोसा हुआ था, और मठवासियों को चर्च से लाई गई प्रॉस्फोरा वितरित की – यह कई घंटों के उपवास के बाद उनका पहला भोजन था: मठवासियों ने आखिरी बार सर्व-रात्रि जागरण से एक रात पहले ही भोजन किया था। मठाधीश के बाद, भिक्षुओं ने, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, मेजों पर बैठकर चुपचाप खाना शुरू कर दिया। इस खामोशी को केवल सेवा करने वाले भाइयों की पदचापों और संत के जीवन या मठाधीश द्वारा निर्धारित किसी अन्य पाठ के पठन की आवाज़ ही तोड़ती थी। दोपहर के भोजन में मठ के जीवन के नियमों द्वारा निर्धारित व्यंजन शामिल होते थे; इसका समापन धन्यवाद की प्रार्थना और ट्रॉपारियन के बार-बार गायन से होता था। उसी क्रम में, भाई भोजनशाला से चर्च के लिए निकलते थे, और भजन 'हे सेनाओं के प्रभु, तेरे वास कितने सुन्दर हैं!'

---

[671] 16वीं सदी में काली मिर्च को एक स्वादिष्ट व्यंजन माना जाता था। सोलोवेत्स्की मठ को लिखे अपने पत्र में, मेट्रोपॉलिटन फिलिप विशेष रूप से मठ के भाइयों को 1 पाउंड काली मिर्च का उपहार देने का उल्लेख करते हैं; यह पत्र देखें: फेदोतोव, जी. सेंट फिलिप, मेट्रोपॉलिटन ऑफ मॉस्को (1928)। पृ. 222.

[672] जोसेफोव मठ के घरेलू नियम। पृ. 7, 8, 17, 22, 13, 16। यदि हम इन घरेलू नियमों की तुलना नोवोस्पासस्की मठ के नियमों से करें, तो हम देख सकते हैं कि वहाँ मठवासी जीवन का धर्मनिरपेक्षीकरण कितना आगे बढ़ गया था। वहाँ, भिक्षुओं को वोल्गा मछली की बेहतरीन किस्में, सबसे अच्छे अचार वाले मशरूम, चीज़ पाई, कैवियार, शहद वाली दलिया आदि परोसी जाती थीं। जबकि 16वीं सदी में सेंट जोसेफ के मठ में मठवासी समुदाय और मठ के नौकर एक ही भोजन खाते थे (पृ. 9), नोवोस्पासस्की मठ में मठ के नौकरों को एक अलग, सादा भोजन परोसा जाता था (पृ. 24)।

[673] आरआईबी. 4. पृ. 1210, 1419। एक तपस्या अभ्यास के रूप में उपवास के महत्व पर विशेष रूप से 'फिलिप के उपवास पर प्रबंध' में जोर दिया गया है, जो 15वीं शताब्दी के अंत या 16वीं शताब्दी की शुरुआत में लिखा गया था; अर्कांगेल्स्की। निल सोर्स्की। पृ. 215, 217।

गाते थे। (भजन संहति 83) या 'जब उन्होंने मुझसे कहा: "आओ हम यहोवा के भवन को चलें" तो मैं आनन्दति हुआ' (भजन संहति 121)। चर्च में, एक हएिरोमोंक या स्वयं मठाधीश वदिाई का उद्घोष करते थे, और भाईगण अब अगली दैवीय सेवा तक आराम करने के लएि अपनी कोठरयिों में जा सकते थे[674] ।

6. संन्यासी जीवन की अवस्था

सच्ची तपस्वी मठ जीवन की व्यवस्था के लएि मुख्य बाधा न तो सह-नविासी या अलग-अलग रहने वाले मठों के लएि एक सामान्य नयिम की अनुपस्थति थी, न ही यह तथ्य कि चर्च के प्रमुखों द्वारा ऐसा कोई नयिम लागू नहीं कयिा गया था, और न ही यह कि व्यक्तगित मठों में लागू नयिम एक-दूसरे से भन्नि थे, बल्कि यह कि सामान्य रूप से ईसाई तपस्या और वशिष रूप से मठवासी तपस्या के आंतरकि अर्थ की सही समझ केवल व्यक्तगित संतों या संतों के समूहों के बीच ही संरक्षति थी। जोसेफाइट्स और नॉन-अक्वरियर्स के बीच का ववािद, जो जोसेफ और नीलस की रचनाओं में परलिक्षति होता है, ने बाद के समय में मठवासी जीवन के संगठन को प्रभावति कयिा। संत जोसेफ, जो स्वयं एक कठोर तपस्वी थे और जन्हिोंने अपने नयिम में मठ जीवन के संगठन के लएि कठोर आवश्यकताएँ नर्धिारति कीं, ने तपस्या को बाहरी और औपचारकि अर्थ में समझा[675] । आध्यात्मकि जीवन या मठ के अनुष्ठानकि जीवन की आंतरकि नींव के प्रति उनकी उपेक्षा बस चौंकाने वाली है। वे ईश्वरीय सेवाओं के दौरान या नजिी प्रार्थना में एक भक्षिु को स्वयं का आचरण कैसे करना चाहएि, इस पर सटीक नर्दिेश देते हैं, जबकि साथ ही भक्षिु की आध्यात्मकि संतुलन की आवश्यकता की अनदेखी करते हैं। धार्मकि औपचारकितावाद कतिना व्यापक था, इसका प्रमाण आधी सदी बाद मैक्समिस द ग्रीक और एल्डर आर्टेमयिस द्वारा मठवासी जीवन पर की गई आलोचनात्मक टप्पिणयिों से भी मलिता है[676] ।

यह धार्मकि औपचारकितावाद न केवल जोसेफट्सि के आध्यात्मकि पतिाओं की भक्ति पर छाया डालता है; यह धर्मनष्ठि ज़ार फ्योडोर इवानोवचि के चरत्रि में भी अभव्यिक्त हुआ (1584–1598)[677] या ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि (1645–1678), जन्हिोंने अनुष्ठानों को इतनी बड़ी अहमयित दी; और इसका अंतमि रूप 17वीं सदी के वभिाजन में देखने को मलिा, जब एक से अधकि पीढ़ी के लोगों ने रक्तपात और आत्मदाह के माध्यम से धार्मकि औपचारकितावाद के प्रति अपनी प्रतबिद्धता को साकार कयिा।

भक्षिु जीवन का पतन न केवल हमारे लएि, ऐतहिासकि दृष्टकिोण से स्पष्ट है; बल्कि समकालीन लोगों ने भी इसे पहचाना था। न केवल गैर-स्वामत्विवादयिों, जैसे कि राजकुमार-भक्षिु वासयिन या वृद्ध आर्टेमी ने, बल्कि सेंट जोसेफ के सबसे वफादार शष्यिों में से एक, मेट्रोपॉलटिन डैनयिल और ज़ार इवान चौथे ने भी इस पतन के बारे में खुले तौर पर बात की। स्टोग्लाव के फरमान और उस युग के कुछ अन्य स्रोत 16वीं सदी में मठवासी जीवन की समग्र तस्वीर को पूरा करते हैं; परणिामस्वरूप, गैर-स्वामत्विवादयिों या उनके प्रति सहानुभूति रखने वाले मैक्समिस द ग्रीक द्वारा की गई तीखी आलोचना अपना पक्षपाती रंग खो देती है।

उपरोक्त राजकुमार-संन्यासी की रचनाओं में (हालाँकि हमें इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनकी कुछ टप्पिणयिाँ अपनी ही कस्मिित से नराशिा के कारण की गई थीं और लेखक के चरत्रि से जुड़ी हुई हैं), संन्यासवाद के धर्मनरपिेक्षीकरण का श्रेय मठों की भौतकि समृद्धि को दयिा गया है। एल्डर नीलस के वचिारों के प्रति वफादार रहते हुए, वह संन्यासयिों या सामान्यतःचर्च की सांसारकि संपत्ति को कोई महत्व नहीं देता: 'चर्च की सजावट आग में नष्ट हो जाती है, और बर्बर तथा चोर इन्हें चोरी कर लेते हैं।' 'लेकनि अगर कोई गरीबों को देता है, तो शैतान भी इसे नहीं चुरा सकता,' वे कहते हैं[678] । वासयिन का मानना है कि सांसारकि समृद्धि का पाप न केवल मठों बल्कि व्यक्तगित भक्षिुओं में भी वशिष रूप से पाया जाता है, और इस प्रकार गरीबी का व्रत—जो मठवासी जीवन की नींव होना चाहएि—टूट जाता है। मठवासी नयिम का यह उल्लंघन सबसे व्यापक बुराई थी। , वसयिन और मैक्समिस द ग्रीक के साथ-साथ मेट्रोपॉलटिन डैनयिल और स्टोग्लाव[679] द्वारा भी इसका उल्लेख कयिा गया है। उन मठों में भी जहाँ भक्षिु अलग-

---

[674] ववरिण. 2. 1. पृ. 239; वनिोग्रादोव. वैधानकि पठन, में: बीवी. 1912. 4. पृ. 785.

[675] वीसीएचएम। सतिंबर। पृ. 505–513; तुलना करें: स्मरिनोव में उनका प्रबंध 'पश्चाताप पर'। द ओल्ड रशयिन स्परिचिुअल फादर (1899)। परशिष्टि VI। वशिष रूप से पृ. 109, 110, 111। यही नयिम सेंट कॉर्नेलयिस ऑफ कोमेल के नयिम में भी पाया जाता है, संदर्भ: IRI. 4. पृ. 669।

[676] मैक्समिस द ग्रीक। वर्क्स 2. पृ. 241, 243; आर्टेमयिस का पत्र 'टू द अननोन', में: RIB. 4. पृ. 1399.

[677] तुलना करें: RBS में उनकी जीवनी।

[678] संकलति कृतयिाँ 1863। खंड 3। पृ. 209।

[679] वासयिन, में: कैनन संग्रह 1863। खंड 3। पृ. 109; मैक्समिस द ग्रीक। कृतयिाँ। खंड 2। पृ. 37, 89, 41, 110, 131, 104, 262; डैनयिल, मेट्रोपॉलटिन। मठवासी कानून और सामान्य जीवन के नयिम पर, में: झमाकनि। संकलति कृतयिाँ। परशिष्टि। पृ. 644, 666 ff.; स्टोग्लाव। अध्याय 5।

अलग कोठरियों में रहते थे, भिक्षुओं ने मठ में प्रवेश करने के बाद बहुत अधिक संपत्ति और बहुत अधिक पैसा अपने पास रखा[680] । 16वीं सदी के कई दस्तावेज़ बताते हैं कि मठवासी संविधान के नियमों और गरीबी के व्रत का कितना बुरी तरह से उल्लंघन किया गया था[681] । ये बुराइयाँ 17वीं सदी में भी सामुदायिक मठों में पाई जाती थीं, इसलिए 1667 की परिषद को इन्हें सबसे सख्त शब्दों में समाप्त करने की मांग करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जबकि 1681 की परिषद ने एक बार फिर बिना चूके सामुदायिक नियमों का पालन करने के दायित्व की ओर ध्यान आकर्षित किया[682] . अत्यधिक खाने की प्रथा देखी गई, साथ ही कई मठों में मठवासी समुदाय के लिए सामूहिक भोजन की अनुपस्थिति भी थी। मठाधीश अक्सर विशेष व्यंजन तैयार करने का आदेश देते थे और अपने लिए, अपने मेहमानों, रिश्तेदारों और धनी भक्तों के लिए अलग-अलग भोजन का आयोजन करते थे। इस दुराचार के प्रचलन ने युवा ज़ार इवान को, सेंटोग्लाव परिषद को संबोधित अपने प्रश्नों में से एक में, परिषद का ध्यान इस घोटाले की ओर आकर्षित करने के लिए प्रेरित किया[683] । किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ, जो पहले अपने संतों के कठोर तपस्या के लिए प्रसिद्ध था, में भी 16वीं शताब्दी में गिरावट देखी गई, जो 1573 में ज़ार द्वारा अपने प्रसिद्ध पत्र में व्यक्त की गई निंदा में परिलक्षित होती है; इसी तरह की घटनाएँ ट्रिनिटी-सर्गीयस मठ में भी हुईं[684] । 1547 और 1551 के बीच, किसी रोचक कृति का प्रकाशन हुआ, जिसका शीर्षक था 'ज़ार इवान वासिलीविच को भिक्षुओं की याचिका', जिसमें लेखक या लेखकों ने मास्को के पास के मठों में मठवासी चार्टर के उल्लंघनों के बारे में लिखा और यह सुनिश्चित करने के लिए उपाय करने का अनुरोध किया कि मठों में जीवन चार्टर के अनुरूप हो[685] । शायद यह 'याचिका' ही थी जिसने युवा ज़ार पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि उन्होंने परिषद में मठवासी जीवन के मूल सिद्धांतों के निरंतर उल्लंघनों के संबंध में इतने सारे प्रश्न उठाए।

सामान्य दोषों में से एक शराब पीना था। पहले से ही उल्लेखित मठ के विधान इस दोष की कड़ी निंदा करते हैं और भिक्षुओं को अपनी कोठरियों में शराब रखने या पीने से मना करते हैं[686] । स्टोग्लाव (अध्याय 49) इस बात की गवाही देता है कि मठों में शराब पीना बहुत व्यापक था। संभावना है कि स्टोग्लाव के फरमानों में निहित प्रतिबंधों को प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया गया था, क्योंकि दो दशकों बाद, किरि□व मठ को लिखे अपने पत्र (1573) में, ज़ार ने फिर से संतों के शराब पीने के बारे में लिखा[687] । 1667 और 1682 के परिषदों के फरमानों से पता चलता है कि यह बुराई 17वीं सदी में भी व्यापक रूप से फैली हुई थी।[688]

मेट्रोपॉलिटन डैनियल (1522–1539) ने 16वीं शताब्दी के पहले छमाही में मठवासी जीवन के नकारात्मक पहलुओं को समर्पित छह पत्र लिखे, जिनमें उन्होंने सामुदायिक नियमों के उल्लंघनों पर चर्चा की। ये पत्र विशिष्ट व्यक्तियों या मठों को संबोधित थे। लेखक केवल इस या उस दोष का उल्लेख ही नहीं करते, बल्कि अपने संबोधित लोगों को तपस्या के मूल सिद्धांतों को समझाने, सामुदायिक (सेनोबिटिक) और व्यक्तिगत (आइडियोराइथ्मिक) जीवन-शैली के बीच के अंतर को प्रदर्शित करने, और सामूहिक जीवन की श्रेष्ठता पर जोर देने का प्रयास करते हैं। वह अपने तर्कों का समर्थन पवित्र शास्त्र और तपस्या संबंधी लेखन से उद्धरणों के साथ करता है। डैनियल की ये कृतियाँ न केवल साधु जीवन का मूल्यांकन करने के लिए, बल्कि लेखक के अपने तपस्या संबंधी विचारों का वर्णन करने के लिए भी सामग्री का खजाना प्रदान करती हैं। यहाँ, डैनियल अपने गुरु, परम आदरणीय जोसेफ के विचारों से बंधे रहते हैं; उनके लेखन में कुछ भी मौलिक नहीं है, न ही कोई ऐसी व्यक्तिगत विशेषताएँ हैं जो इस सत्ता-लोलुप चर्च के गणमान्य व्यक्ति—जो राज्य अधिकारियों से निपटने में निपुण था—को एक स्वतंत्र विचारक में बदल सकती थीं[689] .

---

[680] ज़िनोवी ओटेन्स्की। द टेस्टमिनी ऑफ़ ट्रुथ (1863)। पृ. 899.

[681] तुलना करें: मेरा लेख, *Kyrios*. 4 (1939)। पृ. 29–38; झमाकिन। उद्धृत ग्रंथ। परिशिष्ट। पृ. 39–44।

[682] PSZ. 1. संख्या 412. AAE. 4. संख्या 161; AI. 5. संख्या 112; और साथ ही AAE. 4. संख्याएँ 311, 312.

[683] स्टोग्लाव। अध्याय 5. पृ. 49, 52; ज़िनोवी ओटेन्स्की। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 899; मेट्रोपॉलिटन डेनियल द्वारा उनके ग्रंथ 'मठवासी जीवन में मतभेदों पर' में अलग-अलग आवासों में रहने वाले मठवासी समुदायों के भिक्षुओं का वर्णन, में: झमाकिन। उपरोक्त। परिशिष्ट। पृ. 660। किरिलोव और ट्रिनिटी-सर्गीय मठों पर (1590), में: डीएआई। 1. संख्या 135।

[684] निकोल्स्की। सामुदायिक और सेल जीवन, में: क्रिश्चियन रीडिंग्स 1907. 224. पृ. 157, 173 आदि; AI. 1. संख्या 204। इस पत्र की तारीख के बारे में: निकोल्स्की। किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ को ज़ार इवान वासिलीयेविच चौथे का फटकार पत्र कब लिखा गया था?, में: क्रिश्चियन रीडिंग्स 1907। 223। पृ. 852।

[685] देखें 'याचिका'। सं. जी. कुन्त्सेविच (1912)।

[686] यूफ्रोसीन का नियम, अध्याय 11; जोसेफ का, अध्याय 2; कॉर्नेलियस का, अध्याय 13; तुलना करें: RIB. 6. पृ. 209, 602; और भी: 'संवाद'। संपादक ड्रुझिनिन। पृ. 13, 21।

[687] AI. 1. संख्या 204; स्टोग्लाव। अध्याय 52।

[688] एएई. 4. संख्या 161. तुलना करें: वही, संख्या 311, 312; एआई. 5. संख्या 7, 75.

[689] झमाकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 650–690। यहाँ दानियेल के पत्र शामिल हैं।

मठवासी जीवन के तपस्या-आधार को समझने का औपचारकि दृष्टकिोण, जो मेट्रोपॉलटिन डेनयिल और स्टोग्लाव के बशिप दोनों की वशिेषता था, ने मठवासी जीवन में देखी गई कुरीतयिों और दुरुपयोगों को दूर करने में मदद नहीं की। न ही अगली शताब्दी में मठवाद के धर्मनरिपेक्षीकरण की प्रक्रयिा को रोकने के लिए कोई प्रभावी उपाय कए गए; और न ही हमें उस युग की कसिी ऐसी रचना की जानकारी है जसिने तपस्या के आंतरकि अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास कयिा हो। 14वीं और 15वीं शताब्दी के सच्ची तपस्या के उत्कृष्ट उदाहरण व्यापक मठवासी समुदाय की चेतना से मटि चुके थे। केवल कुछ ही व्यक्त प्राचीन तपस्या की परंपरा से जुड़े रहे, लेकनि उनमें संगठनात्मक प्रतभिा या सुधार की इच्छा वाले कोई व्यक्त नहीं थे। चर्च पदानुक्रम ने भी साधु जीवन को शुद्ध करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया। इस युग ने – 'समय की परेशानयिों' से लेकर पीटर महान के रूसी जीवन के सभी पहलुओं में सुधारों तक – अपना ध्यान, अपनी ऊर्जा और अपने जुनून को कहीं और केंद्रति कर दयिा।

16वीं और 17वीं शताब्दी में मठवासी जीवन का चरत्रि चत्रिति करते समय, मस्कोवी में भक्षिुओं की संख्या नर्धिारति करना सहायक होगा। 17वीं शताब्दी के अंत तक, 1,200 से अधकि मठ थे[690] , लेकनि भक्षिुओं की कुल संख्या पर कोई आधकिारकि आँकड़े नहीं हैं। केवल अलग-थलग पड़े दस्तावेज़ और स्रोत ही कुछ मठों में भक्षिुओं की संख्या का अनुमान लगाना संभव बनाते हैं।

आमतौर पर, मठवासी समुदाय छोटा था। कई मठों में 3 से 10 भक्षिु थे। मकर, अपनी *रूसी चर्च का इतहिास* में लखिते हैं क 16वीं शताब्दी में, केवल 10 मठों में 20 से 50 भक्षिु थे, जबक 8 या 10 मठों में प्रत्येक में 50 से अधकि भक्षिु थे[691] । *1582–83 में, करिलिोव मठ में 52 भक्षिु थे: उनमें मठाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, गरिजाघर के बुज़ुर्ग, दो सैकरास्टन, सात हायरोमोंक, तीन हायरोडीकन और 36 साधारण भक्षिु शामलि थे[692] । उस समय, केवल दो मठों में एक बड़ा मठवासी समुदाय था: सोलोवेत्स्की मठ और ट्रनिटि-सर्गीय मठ। सोलोवेत्स्की मठ में 1584 और 1594 के बीच लगभग 270 भक्षिु थे, और 1649 में लगभग 350 थे[693] । मॉस्को आने वाले वदिेशी यात्रयिों ने लखिा क 16वीं सदी के पहले क्वार्टर में, ट्रनिटि-सर्गीय मठ में लगभग 300 भक्षिु रहते थे, जो सदी के अंत तक बढ़कर 700 तक हो गए[694] । 17वीं सदी में, मठों की संख्या में वृद्धि के बावजूद, उनमें भक्षिुओं की संख्या हर जगह कम ही रही। उत्तर में मठों में आमतौर पर कम नविासी होते थे[695] । मास्को के शहरी मठों के मठवासी समुदाय अपेक्षाकृत अधकि संख्या में थे। मास्को के पास सावो-स्टोरोज़हेव्स्की मठ में, जसिे ज़ार अलेक्सी (1645–1676) का वशिेष अनुग्रह प्राप्त था, 1688 में वहाँ 165 भक्षिु थे, जनिमें 20 हायरोमोंक्स और 15 हायरोडीकन्स शामलि थे, जबक 54 भक्षिु वभिन्नि प्रशासनकि पदों पर कार्यरत थे[696] । स्टोग्लाव परषिद ने यह आदेश दयिा क नकिटवर्ती छोटे मठों को एक ही मठ में वलिय कर दयिा जाए (अध्याय 5); फरि भी, 17वीं शताब्दी में, 3 से 10 भक्षिुओं वाले मठ आम बात थे[697] । इन सभी आंकड़ों के आधार पर, यह अनुमान लगाया जा सकता है क मठवासयिों की कुल संख्या, भक्षिुओं और भक्षिुणयिों दोनों को मलिाकर, लगभग 25,000 थी[698] .

7. धार्मकि मामलों में मठों पर अधकिार क्षेत्र

मठवासी जीवन और मठवासी अनुशासन में गरिावट का आंशकि रूप से मठवासी समुदाय पर अधकिार क्षेत्र को लेकर अनश्चितिता से समझाया जा सकता है।

---

[690] चुडेट्स्की, में: टीकेडीए. 1877. खंड 4. पृ. 73.

[691] मकाराई। द्वतिीय संस्करण। खंड 7। पृ. 54।

[692] एआई. 1. संख्या 212. 1508 में, नीलो-सॉर्सक हर्मटिेज में केवल 12 संन्यासी थे। मकरयि. 2रा संस्करण. 7. पृ. 44.

[693] क्लुचेव्स्की। नबिंध (1913)। पृ. 36; 1568 में, 200 भक्षिुओं ने सोलोवेत्स्की मठ में शरण ली। फेदोतोव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 224.

[694] मकाराई। 2रा संस्करण। खंड 7। पृ. 55; रीडग्सि। 1884। खंड 4। पृ. 23।

[695] बोगोस्लोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ। खंड 1। पृ. 72; 1606 में स्थापति क्रास्नोगोर्स्क मठ (खोलमोगोरी जलिा) में, 1624 में 9 भक्षिु और 1677 में 12 भक्षिु थे, हालांक 1661 में ही कीव मेट्रोपोलसि के 17 भक्षिु वहाँ आ गए थे। मकाऱी, बशिप। 'क्रस्नो8०6्स्क मठ का ऐतहिासकि ववरिण', में: रीडग्सि। 1880। खंड 3। पृ. 62, 81। दक्षणिी रूस से उत्तरी रूस के मठों में भक्षिुओं के प्रवासन पर, यह भी देखें: खार्लामोवचि, के. 'रतिशिचेव स्कूल', में: बीवी। 1913। खंड 5। पृ. 8।

[696] बेलोकुरोव। सामग्री। पृ. 164.

[697] वोजनेन्स्की मठ स्वरि नदी पर स्थापति कयिा गया था; 1684 में इसमें पाँच भक्षिु थे, जबक 3–4 कमिी दूर एक और मठ, नकिोल्स्की, था, जसिमें केवल तीन भक्षिुओं ने शरण ली थी। बेलोकुरोव। वही। पृ. 445।

[698] 1724 में, सनिड ने पुरुष मठों में 14,534 भक्षिुओं और महलिा मठों में 10,673 भक्षिुणयिों को दर्ज कयिा। चुडेट्स्की, में: टीकेडीए. 1877. 10. पृ. 46.

भिक्षुओं द्वारा मठवासी अनुशासन के उल्लंघन को धर्मप्रांतीय बिशपों के धार्मिक अधिकार क्षेत्र के अधीन रखा जाता था। हालांकि, मठों और बिशपों के बीच संबंध में, विशेष रूप से अधीनता और अधिकार क्षेत्र के मुद्दों पर, काफी असंगति थी।

तथाकथित स्टाउरोपेजियल मठ[699] पूरी तरह से बिशप के अधिकार क्षेत्र से हटा दिए गए थे, और इसके बजाय मेट्रोपॉलिटन और 1589 के बाद, मॉस्को के पैट्रिआर्क के अधिकार क्षेत्र में आ गए थे। बाकी मठ सभी धार्मिक मामलों में संबंधित धर्मप्रांत के बिशपों के अधिकार क्षेत्र के अधीन थे और उन्हें अदालत द्वारा निर्धारित जुर्माना चुकाना अनिवार्य था। इस प्रकार के धार्मिक-कानूनी संबंध पूर्वी चर्च के कैनन (नियमों) द्वारा स्थापित किए गए थे; उन्हें रूसी शासकों के विधानों और पेटेंट पत्रों[700] द्वारा मान्यता और पुष्टि दी गई थी। फिर भी, ये वही शासक थे, जो मठों को पेटेंट पत्र और प्रतिरक्षा पत्र प्रदान करते हुए, मेट्रोपॉलिटन को जारी किए गए अपने अन्य विधानों और पेटेंट पत्रों का उल्लंघन कर रहे थे।

मठों की संपत्तियों की कानूनी स्थिति के लिए पेटेंट पत्रों और अभय पत्रों के महत्व पर पहले ही चर्चा की जा चुकी है। हालाँकि, कुछ अभय पत्र ऐसे भी जारी किए गए थे जिनमें धार्मिक अधिकार क्षेत्र के क्षेत्र में भी बदलाव शामिल थे। इन अभय-पत्रों की सामग्री भिन्न-भिन्न थी: कुछ ने मठों को धर्मप्रांत के बिशप के अधिकार क्षेत्र से पूरी तरह से छूट दे दी; अन्य ने मठों को धार्मिक मामलों में बिशप के अधिकार क्षेत्र के अधीन रखा; और अन्य ने मठों को बिशप के अधिकारियों के अधिकार क्षेत्र से छूट दी, लेकिन स्वयं बिशप के अधिकार क्षेत्र से नहीं[701] ।

न्यायिक समीक्षा से मुक्त ऐसे पत्रों की वैधता के संबंध में स्टोग्लाव परिषद में ज़ार इवान का प्रश्न (अध्याय 5, प्रश्न 14) मेट्रोपॉलिटन मकरिई के प्रभाव के बिना नहीं उठा था, क्योंकि ये पत्र धर्मप्राचीन परिषद के लिए कैननिक दृष्टिकोण की बजाय व्यावहारिक दृष्टिकोण से अवांछनीय थे। इसलिए यह स्पष्ट है कि स्टोग्लाव परिषद में बिशपों ने इनके खिलाफ दृढ़ता से आवाज़ उठाई, और परिषद ने यह निर्णय लिया कि 'अब से ऐसे चार्टर मौजूद नहीं होने चाहिए' (अध्याय 67)। वास्तव में, यह प्रस्ताव केवल कागज पर ही रहा, क्योंकि ज़ार इवान ने परिषद के बाद भी प्रतिरक्षा पत्र जारी करना जारी रखा[702] । इस प्रस्ताव की अवहेलना 17वीं सदी तक जारी रही[703] । इस सरकारी नीति का कारण यह था कि, ज़िलाधीश बिशप के साथ विवाद की स्थिति में, मठों के मठाधीश एक याचिका मेट्रोपॉलिटन को नहीं, बल्कि ज़ार को संबोधित करते थे। यह अनिश्चितता और इन संबंधों का विरोधाभासी स्वरूप, जो चर्च की कैनोनिकल व्यवस्था के विपरीत था और मठवासी समुदाय की नजर में बिशपों के आध्यात्मिक अधिकारों को कमजोर करता था, के परिणामस्वरूप प्रभाव पड़ना ही था; इसने बिशपों को मठवासी अनुशासन के पालन पर निरंतर और सख्त निगरानी रखने में सहायता नहीं की[704] । जबकि 1625 का प्रसिद्ध चार्टर, जो युवा ज़ार मिखाइल द्वारा पैट्रिआर्क फिलारेट को जारी किया गया था, ने एक तरह से धार्मिक पदानुक्रम के न्यायिक अधिकारों को बहाल कर दिया[705] , 1649 के संहिता और मठ कार्यालय की स्थापना ने धर्मप्रांत के बिशपों और मठों के सामान्य संबंधों में और अधिक भ्रम पैदा कर दिया। पितृपक्षीय निकोन के विरोध और पदानुक्रम के कैननिक अधिकारों को पूरी तरह से बहाल करने के उनके प्रयास असफल रहे[706] । 1667 की परिषद, जिसके सदस्यों ने 1666 की परिषद में भी भाग लिया था और तब पैट्रिआर्क निकोन और ज़ार के बीच विवाद में ज़ार का पक्ष लिया था, इस बार, धार्मिक अधिकार क्षेत्र के प्रश्न पर, पदच्युत पैट्रिआर्क के विचारों से सहमत हुए और एक ऐसा निर्णय जारी किया जिसके द्वारा धार्मिक पदानुक्रम ने अपने सभी न्यायिक अधिकारों को बनाए रखा। यह ज्ञात है कि ज़ार अलेक्सी ने इस निर्णय की पुष्टि की[707] । यह चर्च के लिए एक पूर्ण विजय थी; मठ समुदाय अब हर तरह से अपने महा-पशुपालकों के अधीन था, धर्मप्रांत के बिशपों

---

[699] मीला, उद्धृत ग्रंथ, पृ. 672, 675।

[700] तुलना करें: गोएट्ज़, एल. के. *स्टैट उंड किर्चे इन अल्ट्रुयालैंड. कीवर पेरियोडे. 988–1240* (1908). पृ. 151–154; (संत राजकुमार व्लादिमीर का विधान), और यह भी: मकारी. 2nd संस्करण. खंड 8. पृ. 143–168, 176, 202; हरमन. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 23 आदि.

[701] माकरी। खंड 8, पृ. 220; खंड 10, पृ. 207, 209; एआई। खंड 1, संख्या 224, 232, 234, 235, 240; खंड 2, पृ. 58, 86, 77; एएई. 1. संख्या 386; 2. संख्या 14, 62; 3. संख्या 67; आरआईबी. 2. संख्या 190.

[702] AI. 1. संख्या 46, 114, 130, आदि।

[703] AI. 1. संख्या 46, 114; AAE. 2. संख्या 62। उसी समय, नए पैट्रिआर्क और कुछ बिशपों को नियुक्ति पत्र जारी किए गए: SGGD. 2. संख्या 73; AAE. 3. संख्या 109; AI. 1. संख्या 148।

[704] एएई. 2. संख्या 17; दोसफिई. सोलोवेत्स्की मठ का वर्णन. 3. पृ. 205. डीएआई. 1. संख्या 148; एएई. 2. संख्या 14; 3. संख्या 285.

[705] AAE. 2. संख्या 164 (साथ ही SGGD. 3. संख्या 7)। चार्टर में आपराधिक मामलों के संबंध में एक विशिष्ट प्रावधान शामिल था, जो धर्मनिरपेक्ष अधिकार क्षेत्र के अधीन बना रहा।

[706] गोर्चाकोव। मोन. ऑर्डर. पृ. 91. तुलना करें: ORSA के नोट्स. 2 (1861); AAE. 3. संख्या 225, 262, 275.

[707] PSZ. 1. 412.

के न्यायकि अधकिारों को सुदृढ़ कयिा गया, और बशिपों और मठों के बीच का संबंध सामान्य कैननकिल स्वरूप धारण कर गया। 1675 की परषिद और ने ज़ार इवान अलेक्सेवचि और पीटर द्वारा उनके संयुक्त शासन के दौरान बशिपों को जारी कएि गए पेटेंट पत्रों ने 1667 के नरि्णय की वैधता की पुष्टि की; मामले 17वीं सदी के अंत तक ऐसे ही रहे[708] ।

धर्मप्रांतीय बशिपों और उनके अधकिार क्षेत्र के मठों के बीच सामान्य, सुव्यवस्थति और सुसंगत संबंधों की अनुपस्थतिि ने स्वाभावकि रूप से धार्मकि कानूनी कार्यवाहयिों के संचालन पर हानकिारक प्रभाव डाला। मठों के मठाधीश, जन्हिें अक्सर प्रशासनकि मामलों पर अत्यधकि ध्यान देने के लिए मजबूर होना पड़ता था, उनके पास सख्त अनुशासन बनाए रखने के लिए न तो समय था और न ही पर्याप्त अधकिार। उनके अधकिार और कर्तव्य मठ के चार्टर या धर्मप्रांत के बशिप के आदेशों से उतने नहीं बल्कि मठ को प्रदान की गई वशिषाधकिारों से और आंशकि रूप से केवल रीति-रिवाज से उत्पन्न होते थे। हम पहले ही बुज़ुर्गों की परषिद का उल्लेख कर चुके हैं, जन्हिें, उदाहरण के लिए, वोल्कोलामस्क के जोसेफ के चार्टर के अध्याय 14 ने चार्टर का उल्लंघन करने वालों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करने का अधकिार दयिा था। यदि मठाधीश और बुजुर्गों की परषिद के बीच अच्छे संबंध थे, तो कामकाज सुचारू रूप से चलता था; लेकनि यदि उनके बीच टकराव और ववािद होते थे, तो सर्वसम्मति समाप्त हो जाती थी और मठ के भीतर अव्यवस्था उत्पन्न हो सकती थी। इन सभी परस्थितियिों ने मठों में सख्त अनुशासन बनाए रखना मुश्कलि बना दयिा। मठों की सामान्य स्थतिि ने एक ओर, धार्मकि अधकिारयिों द्वारा कुछ उपायों और दूसरी ओर, स्वयं मठ समुदाय के भीतर से सक्षम व्यक्तयिों को बढ़ावा देने की मांग की। दुर्भाग्य से, हालांकि, इनमें से कोई भी बात नहीं हुई।

8. एपस्किोपेट

16वीं और 17वीं शताब्दयिों में, मठ समुदाय देश के सामान्य धार्मकि जीवन में भाग लेने और मठ की दीवारों के बाहर काम करने में सक्षम था। बड़े मठों के मठाधीशों का चर्च परषिदों की कार्यवाही में भाग लेना एक आम प्रथा थी। यहां तक कि ज़ेम्स्की परषिदों में भी, जन्हिें वशिेष रूप से 17वीं शताब्दी में, सरकार द्वारा वभिन्नि प्रकार के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए समय-समय पर बुलाया जाता था, मठों के मठाधीश बशिपों के साथ मौजूद रहते थे[709] । परषिद के फरमानों के नीचे दएि गए हस्ताक्षरों और 1575–1584 के वर्षों के लिए ज़ार के अभलिेखागार में दएि गए ववरिण से यह स्पष्ट है कि सभी मठों को पदक्रम के अनुसार वर्गीकृत कयिा गया था। यह वर्गीकरण दर्शाता है कि किनि मठों को वशिेष सम्मान और श्रद्धा प्राप्त थी, कनिका नेतृत्व आर्चमिांड्राइट्स करते थे, और कनिका इग्यूमेन्स करते थे। 1561 से, जब ट्रनिटिी-सर्गीय मठ के मठाधीश को आर्चमिैंड्राइट के पद पर पदोन्नत कयिा गया, तो उन्हें सभी मठाधीशों में वरषि्ठता का अधकिार प्राप्त हुआ। पदक्रम में दूसरे स्थान पर व्लादमिीर के प्राचीन नेटीवटिी मठ के आर्चमिांड्राइट थे, और उनके बाद मॉस्को के नोवोस्पासकी मठ, नोवगोरोड के यूरीव्स्की मठ, और मॉस्को के चुदोव तथा साइमनोव मठों के मठाध्यक्ष थे। करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ के आर्चमिांड्राइट का स्थान 12वां था, जबकि योसफिो-वोल्कोलांस्की मठ का 19वां[710] । चूँकि इन सभी दस्तावेज़ों में केवल अंतमि आदेश ही शामलि हैं, इसलिए इनके आधार पर व्यक्तगित हस्तयिों द्वारा नभिाई गई वास्तवकि भूमकिा की एक स्पष्ट तस्वीर बनाना संभव नहीं है।

रूस में, पूर्वी चर्च के कैनन के अनुसार, केवल भकि्षुओं को ही बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा जा सकता था; परणिामस्वरूप, चर्च पदानुक्रम और व्यापक भकि्षु समुदाय के बीच एक घनषि्ठ संबंध था। 16वीं और 17वीं शताब्दयिों में, और वास्तव में पहले के काल में भी, एक रूसी बशिप अपने बशिप पद की स्थापना से पहले कई साल एक मठ में बतिाता था। मेट्रोपॉलटिन या आर्चबशिप का पद, वास्तव में, केवल एक मानद उपाधि थी जो उस पद की गरमिा से जुड़ी हुई थी; धार्मकि और प्रशासनकि दृष्टि से, धर्मप्रांतीय मेट्रोपॉलटिन, आर्चबशिप और बशिप के समान

---

[708] गोर्चाकोव। पूर्वोक्त, पृ. 95। पीएसजेड. 1. सं. 442 (1669, आपराधकि मामलों में नरि्णय), या एएई. 4. सं. 204 (1675)। 1667 और 1675 के बीच, आध्यात्मकि कार्यालय (मठ कार्यालय का एक वभिाग) की गतविधियिों के परणिामस्वरूप, जसिे शायद 1667 के बाद स्थापति कयिा गया था, 1667 के नरि्णय का उल्लंघन कयिा गया, जसिसे 1675 की परषिद द्वारा एक नरि्णय की आवश्यकता उत्पन्न हुई। काप्टेरेव। धर्मनरिपेक्ष एपस्किोपल अधकिारी। पृ. 211। पीटर महान के शासनकाल के दौरान नए तनाव उत्पन्न हुए, जसिसे पैट्रआर्क एड्रयिन को चर्च संबंधी अधकिार क्षेत्र के मामलों पर फरमानों का एक संग्रह संकलति करने के लिए प्रेरति कयिा। कालाचोव, एन. 'प्राचीन रूसी कानून की प्रणाली में कोर्मचाया के महत्व पर', में: रीडग्सि. 1847. 4. परशिष्टि 4. पृ. 11–80: 'पतृिसत्तात्मक न्यायालय पर लेख'। ये 'पतृिसत्तात्मक न्यायालय पर लेख' स्टोग्लाव के फरमानों, 1625 के चार्टर (1657 में पुष्टि कयिा गया) और 1668 तथा 1671 के पतृिसत्ता जोआसाफ के फरमानों पर आधारति हैं। वही। पृ. 15, 16, 67, 69। इसके अलावा, पैट्रआर्केट ने एक बार फरि चर्च के अधकिारों के संबंध में ततार ख़ानों के फ़रमानों का एक संग्रह संकलति कयिा, जसिे हालांकि अनुमोदन के लिए ज़ार को प्रस्तुत नहीं कयिा गया था (वही, पृ. 2)।

[709] मकाराई। दूसरा संस्करण। 7. पृ. 84–86; और यह भी: चतेनयिा। 1912। 2. 2. ववििधि। पृ. 39–41।

[710] मकाराई। द्वतिीय संस्करण। 7. पृ. 85।

अधकिार थे। कसिी मठ के मठाधीश को तुरंत मेट्रोपॉलटिन, आर्चबशिप या बशिप के पद पर पदोन्नत करना एक आम प्रथा थी। उदाहरण के लिए, 1491 में, मास्को में समिोनोव मठ के आर्चमिांड्राइट ज़ोसमिा, और 1495 में, ट्रनिटिी-सर्गीयस मठ के मठाध्यक्ष समिोन को तुरंत मास्को के मेट्रोपॉलटिन के रूप में अभषिक्ति कयिा गया था। साइमन के उत्तराधकिारी, मेट्रोपॉलटिन वरलाम, जो साइमोनोव मठ के आर्चमिांड्राइट थे, ग्रैंड प्रसि के आदेश से मेट्रोपॉलटिन[711] बने। मेट्रोपॉलटिन डैनयिल पहले सेंट जोसेफ-वोल्कोलामास्क मठ के मठाध्यक्ष थे, और मेट्रोपॉलटिन जोआसाफ ट्रनिटिी-सर्गीयस मठ के मठाध्यक्ष थे; मॉस्को के भावी मेट्रोपॉलटिन, मकरयिस, मोज़ाइसक में लुज़हेत्स्की मठ के आर्चमिांड्राइट थे, और बाद में नोवगोरोड के आर्चबशिप बने। मेट्रोपॉलटिन अथेनासयिस (1564–1566) मॉस्को के चुडोव मठ में एक भक्षिु थे, और उससे पहले वे एक आर्चप्रीस्ट और ज़ार के आध्यात्मकि पतिा थे; उन्हें मेट्रोपॉलटिन के पद पर नयिुक्त होने से ठीक पहले भक्षिु के रूप में दीक्षा दी गई थी[712] । संत फलिपि, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन (1566–1569), ने अपने अभषिेक से पहले 18 वर्षों तक सोलोवेत्स्की मठ के मठाध्यक्ष के रूप में कार्य कयिा। 17वीं शताब्दी में, साइमनोव मठ के आर्चमिंड्राइट, जोसेफ को मॉस्को और पूरे रूस का पैट्रआर्क (1642–1652) चुना गया था[713] ।

मठ में बतिाए गए वर्ष कसिी व्यक्तकि े वचिारों को प्रभावति कएि बनिा नहीं रह सकते थे, खासकर उस समय में। मठ उसके लिए एक स्कूल था, जहाँ उसने न केवल तपस्या जीवन के सामान्य सद्धिांतों को सीखा, बल्कि वहाँ प्रचलति चर्च और राजनीतकि मामलों पर वचिारों और दृष्टकिोणों से भी परचिति हुआ, और इन वचिारों का उस पर प्रभाव पड़ा। बाद में, मठ के बाहर जीवन के हर क्षेत्र में, उन्होंने अपने मठ के आध्यात्मकि वातावरण को बनाए रखा, उसकी भावना के अनुसार कार्य कयिा, और अपने मठ की परंपराओं के आधार पर धार्मकि जीवन के सभी पहलुओं का मूल्यांकन कयिा।

इस प्रकार की आध्यात्मकि मानसकिता ने 16वीं शताब्दी में एक महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई। इस संबंध में, वोलोकलामस्क के सेंट जोसेफ का मठ रूसी चर्च के इतहिास में एक काफी अनूठी जगह रखता है। 16वीं शताब्दी के चर्च जीवन में सबसे प्रभावशाली आंदोलन सेंट जोसेफ और उनके मठ से जुड़ा हुआ है। रूसी चर्च के पूरे इतहिास में, इस मठ की तरह चर्च के जीवन में, चाहे वह सीमति अवधकि े लिए हो या वस्तिारति अवधकि े लिए, कसिी अन्य मठ ने इतनी महत्वपूर्ण भूमकिा नहीं नभिाई है; इसके अलावा, जोसेफटि आंदोलन ने आज तक रूसी धार्मकि जीवन के सामान्य प्रवाह को प्रभावति करना जारी रखा है - कभी कमजोर रूप से, तो कभी मजबूत रूप से। 16वीं सदी के दौरान - या, अधकि सटीक रूप से कहें तो, 1522 के बाद से - इस मठ के कम से कम 19 भक्षिुओं और मठाध्यक्षों ने इसकी दीवारों को छोड़कर वभिन्नि बशिपरी संभालीं और मठ के संस्थापक के वचिारों को चर्च के जीवन में गहराई से स्थापति कयिा। इनमें से सात बशिप पहले मठ के मठाधीश रह चुके थे; अन्य को साधारण भक्षिुओं में से अभषिक्ति कयिा गया था[714] । 1555 से 1581 तक, काज़ान का आर्चबशिप पद लगातार जोसेफोव मठ के पुरुषों द्वारा धारति कयिा गया था। 17वीं शताब्दी में, वोल्कोलामस्क मठ ने बशिप की पदावली को भरने में अपनी पूर्व भूमकिा नभिाना बंद कर दयिा। केवल एक ज्ञात उदाहरण है जब मठ के मठाधीश, अलेक्ज़ेंडर (1682–1688), को वेलकिी उस्त्युग (1688–1699) का आर्चबशिप चुना गया था[715] । जोसेफाइट मठ के भक्षिुओं, जैसे कि मेट्रोपॉलटिन डैनयिल, बशिप वासयिन (सानन), वासयिन (टोपोरकोव) और सव्वा (चेर्नी), साथ ही मेट्रोपॉलटिन मकारी, जो पाफनुटवि मठ से आए थे—जो जोसेफाइट भावना का था—ने अपने कार्यों और लेखों के माध्यम से अपने स्कूल के वचिारों को फैलाया और पुष्ट कयिा। स्टोग्लाव परषिद में प्रचलति वचिार इस आंदोलन के प्रतनिधियिों द्वारा व्यक्त कएि गए वचिार थे[716] । मठ की भावना बाद में कई धर्मगुरुओं की गतविधियिों में संरक्षति रखी गई। इसी तरह, सेंट सर्गयिस के समय में ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ के कठोर तपस्वी समुदाय ने नए मठों के कई संस्थापकों को पोषति कयिा, जन्हिोंने अपने स्वयं के मठों में मठवासी जीवन की उसी व्यवस्था को पेश कयिा जो सेंट सर्गयिस के मठ में अपनाई जाती थी। गैर-स्वामत्तिववादयिों का तपस्वी स्कूल, पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वोल्गा के पार के रेगस्तिानों में प्रचलति भावनाओं और वचिारों के बनिा अकल्पनीय

---

[711] PSRL. खंड 4, पृ. 157–158, 165; खंड 8, पृ. 219, 230; खंड 6, पृ. 252.

[712] AI. खंड 1. संख्या 173.

[713] मकाराई. 11. पृ. 96.

[714] जेरोन्टयिस, आर्चमिांड्राइट। वोल्कोलामस्क में सेंट जोसेफ मठ। पृ. 44–45.

[715] जेरोन्टयिस। वही, पृ. 45.

[716] तुलना करें: क्ल्यूचेव्स्की। जीवनी। पृ. 291। यह कोई संयोग नहीं है कि ट्रोपारयिन में जोसेफ को 'रूस का तारा' कहा गया है। जेरोंटयिस। वही। पृ. 48। 19वीं सदी की शुरुआत में ही, भक्षिु जोसेफ के नयिम की प्रतयिाँ बना रहे थे। पोपोव, एन. 'साइमनोव मठ से पांडुलपियिों का संग्रह', *रीडगि्स* में। 1910. 2. पृ. 14, 15.

है। जैसे ही यह भावना फीकी पड़ गई - चाहे यह मठवाद के वकिास के लिए फायदेमंद हो या हानकिारक - कोई ऐसे उत्कृष्ट व्यक्तसिामने नहीं आए जन्हिोंने चर्च जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

17वीं शताब्दी में, सोलोवेत्स्की मठ से कई बशिप उभरे, लेकनि चर्च जीवन पर कसिी वशिष उल्लेखनीय प्रभाव डालने का श्रेय उन्हें नहीं दयिा जा सकता। हालाँकि, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन सेंट फलिपि (1566–1568), जो सोलोवेत्स्की मठ से घनष्ठि रूप से जुड़े थे, ने अपने कार्यों और शहीद होने की मृत्यु के माध्यम से यह साबति कर दयिा कि मठवासी हलकों में धार्मकि जम्मिेदारी की भावना पूरी तरह से खत्म नहीं हुई थी[717] ।

ट्रनिटिी-सर्गीय मठ के तेरह मठाधीश 16वीं और 17वीं शताब्दी में बशिप बने[718] , लेकनि उनमें से केवल दो ने ही चर्च के जीवन में महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई। ये थे नोवगोरोड के मेट्रोपॉलटिन जॉब (1697–1716), जनिके नए स्कूल स्थापति करने और धर्मनरिपेक्ष पादरयिों को प्रशक्षिति करने के प्रयासों की अत्यधकि प्रशंसा की जानी चाहए, और पैट्रआर्क जोआसाफ द्वतिीय (1667–1672), जन्हिोंने 11 वर्षों तक (1656–1667) उन्होंने इस मठ के मठाधीश के रूप में सेवा की; हालांकि, वृद्ध पैट्रआर्क वशिष रूप से सक्रयि व्यक्तनिहीं थे। 1667 की परषिद में उनकी भूमकिा, जसिने चर्च के अधकिारों की जोरदार और सफल रक्षा की, वशिष रूप से महत्वपूर्ण नहीं थी।

जब हम मठवासी जीवन के धर्मनरिपेक्षीकरण की प्रक्रयिा पर वचिार करते हैं, तो यह प्रश्न स्वाभावकि रूप से उठता है कि बशिपों ने इस प्रक्रयिा को रोकने के लिए कोई नर्णिायक कदम क्यों नहीं उठाया, और मठों की स्थतियिों में सुधार के लिए कोई उपाय क्यों नहीं कए गए, भले ही यह प्रत्येक बशिप द्वारा अपने ही धर्मप्रांत में ही क्यों न कयिा गया हो। फरि भी ये बशिप स्वयं ऐसे मठों में रहते थे जहाँ तपस्या को एक बहुत ही वशिष्ट, सीमति स्थान दयिा गया था, और जहाँ धार्मकि औपचारकितावाद – अनुष्ठान के प्रतिएक कठोर 'आसक्त' – ने जड़ें जमा ली थीं। 17वीं सदी में, हमें चर्च पदानुक्रम में मठवासी जीवन के शुद्धीकरण और सुधार के लिए कोई प्रमुख हमियती नहीं मलिता है। रयिाज़ान के मेट्रोपॉलटिन हलिारयिन (1657–1673) कुछ गनि-ेचुने धर्मप्रांत के प्रमुखों में से एक थे, जो अपने धर्मप्रांत के मठों में मठवासी जीवन के स्तर को बढ़ाने में सफल रहे[719] । एक अन्य हलिारयिन, सुज़दल के मेट्रोपॉलटिन (1682–1705), जन्हिोंने 17वीं शताब्दी के मध्य में फ्लोरशिचेवा हर्मटिज (व्लादमिीर के पास) में एक बहुत ही संयमी जीवन व्यतीत कयिा, ने 1694 में, उस आश्रम के मठाधीश को लखिे एक पत्र में—जहाँ तब तक सामुदायकि नयिमों का उल्लंघन आम बात हो गई थी—अपने मठाधीश के कार्यकाल के दौरान ऐसे उल्लंघनों के खलिाफ उठाए गए उपायों के बारे में लखिा। उनके नेतृत्व में, यह हर्मटिज अपने नयिमों की सख्ती के लिए प्रसद्धि था। ज़ार फ्योडोर अलेक्ज़ेवचि इस वनिम्र मठाधीश का बहुत सम्मान करते थे, और ज़ार की स्वीकृति के बनिा ही हलिारयिन को एक छोटे हर्मटिज के मठाधीश के पद से सुज़दल के मेट्रोपॉलटिन के पद पर पदोन्नत नहीं कयिा गया था[720] । 17वीं सदी के दूसरे छमाही के दो सबसे उत्कृष्ट और वास्तव में वद्विान धर्मगुरु – नोवगोरोड के मेट्रोपॉलटिन जोब (1697–1716), और खलोमोगोरी के आर्चबशिप अथानासयिस (1682–1702) – ने मुख्य रूप से पैरशि जीवन और पुरोहतिों के प्रशक्षिण में सुधार पर अपना ध्यान केंद्रति कयिा[721] ।

मठीय जीवन के मामलों पर धर्मप्रांतीय बशिपों द्वारा दए गए ध्यान की कमी ने मठीय जीवन के धर्मनरिपेक्षीकरण में और योगदान दयिा। मठीय कार्यालय और 1667 की परषिद के उन्मूलन के बाद, धर्मप्रांतीय बशिपों को अपने धर्मप्रांतों के भीतर अपने काम को प्रभावी ढंग से करने के लिए अधकि अवसर प्रदान कए गए, लेकनि इस कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्तयिों की अनुपस्थतिने उनकी सफलता में बाधा डाली।

रूसी बशिपों की कतार से दो धर्मगुरु वशिष रूप से उभरकर सामने आते हैं: सेंट फलिपि, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन (1566–1568), और पैट्रआर्क नकिोन (1652–1666)। उनकी तकदीरों में एक आम धागा है: राज्य के अधकिार के साथ टकराव। इन टकरावों का चर्च-सम्बंधी और ऐतहिासकि पृष्ठभूमएिक अलग, यहाँ तक कि कहा जा सकता है कि वपिरीत, प्रकृतकिी थी। और इस संघर्ष का स्वरूप ही – सेंट फलिपि के मामले में संक्षप्ति, लेकनि पैट्रआर्क नकिोन

---

[717] मकाarii, बशिप। आर्कान्गेलस्क के महाधर्मप्रांत के भीतर ईसाई धर्म, *रीडग्सि* में। 1878। खंड 3। पृ. 52.

[718] गोर्स्की। ववरिण। खंड 2। पृ. 122–123।

[719] फलिारेत। समीक्षा। खंड 1। पृ. 234।

[720] एएई. 4. संख्या 311; बर्सुकोव. रूसी हागीओग्राफी के स्रोत. पृ. 218. हलिारयिन का जीवन: व्लादमिीर अकादमकि अभलिेखीय आयोग की कार्यवाही. 10 (1908). एक संक्षप्ति कृति: जेरोम. सुज़डल के मेट्रोपॉलटिन हलिारयिन का जीवन (1867) – मेरे लिए उपलब्ध नहीं था।

[721] चस्टिोवचि, आई. 'नोवगोरोड के मेट्रोपॉलटिन जॉब', में: स्ट्रानकि. 1861. 2; कृतयिाँ: पोस्टनकिोव. 'अथेनासयिस, खलोमोगोरी के पहले आर्चबशिप' (1866); वेरयुज्स्की। अतानासयिस, खलोमोगोरी के आर्चबशिप (1914) – दुर्भाग्य से, हमारे लिए अनुपलब्ध हैं। तुलना करें: PBE. 1. पृ. 1087; 2. पृ. 181, 182।

के मामले में लंबा खिचा हुआ – भी अलग था। यह नहीं कहा जा सकता कि दोनों महा-धर्माध्यक्ष समान रूप से रूसी मठवाद के इतिहास से जुड़े हुए हैं। उनकी व्यक्तिगत मठवासी जीवनयिाँ अलग-अलग मार्ग पर चलीं।

निकिोन के लिए, चर्च के एक कुलीन राजकुमार के भव्य परिधानों ने विनिम्र मठवासी वेश को पूरी तरह से छा दिया; उनके कार्यों की प्रकृति भी मठवासी भावना के अनुरूप नहीं थी। उनकी चिंताएँ और उद्देश्य मुख्य रूप से सामान्य चर्च जीवन के मामलों से जुड़े थे; जिसि भव्य कार्यक्रम को उन्होंने लागू करने का प्रयास किया, उसमें अपनी ऊर्जा, अपनी प्रतिभा और अपने उद्देश्य की सच्चाई में अपनी अटूट आस्था पर अहंकारपूर्वक निर्भर रहते हुए, संन्यासी जीवन से संबंधित मामलों के लिए कोई जगह नहीं थी। निकॉन एक महान हस्ती थे; वे रूसी लोगों के दिल से आए थे, और ऐसी हस्ती का उदय इस बात का प्रमाण ह कि लोगों के भीतर कितनी शक्तियाँ सुप्त पड़ी थीं; जबकि उनके विरोधियों - बस उतने ही प्रसिद्ध आर्चप्रीस्ट अव्वाकुम और अन्य संप्रदायिक नेताओं को याद करना ही काफी है - ने उस जोश का प्रदर्शन किया जिससे ये शक्तियाँ प्रकट हो सकती थीं। जैसा कि अक्सर महान ऐतिहासिक हस्तियों के साथ होता है, निकिोन की स्वाभाविक प्रतिभा आध्यात्मिक कठोरता के साथ मिली हुई थी; उनकी ऊर्जा, जो अक्सर तानाशाही में बदल जाती थी, संकोच के साथ मिली हुई थी; और उनका सिद्धांतवादी रुख स्वार्थ के साथ मिला हुआ था। इस व्यक्ति को उनके विरोधियों और प्रशंसकों, लेखकों और विद्वानों, सभी ने समान रूप से निंदा और सराहा है। निकिोन को समर्पित साहित्य के विशाल भंडार के बावजूद, यह नहीं कहा जा सकता कि उनके व्यक्तित्व और कार्यों का व्यापक और गहन अध्ययन किया गया है[722] ।

रूसी मठवाद के इतिहास में, निकिोन का कोई विशेष प्रमुख स्थान नहीं है; एक बिशप के रूप में अभिषेक होने से पहले उन्होंने मठ में जो वर्ष बिताए, वे उनके जीवन के लिए कोई महत्व नहीं रखते थे, और सोलोवेत्स्की मठ तथा एंज़र के एलेज़र के स्केट में उन्होंने जो तपस्वी प्रशिक्षण लिया (यदि निकिोन के संबंध में ऐसे किसी स्कूल की बात की जा सकती है), उसका उनके उत्कट स्वभाव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। एक साधारण मठवासी टोपी उसके स्वभाव के लिए उपयुक्त परिधान नहीं थी, जो मास्को के पैट्रिआर्क के भव्य सुनहरे राजसी आभूषणों के लिए अधिक उपयुक्त थी, क्योंकि वे बाहरी रूप से उसके धार्मिक विचारों को मूर्त रूप देते थे। एक संक्षिप्त निबंध में निकिोन के कार्यों और भाग्य का चरित्र-चित्रण करना असंभव है, क्योंकि उन्हें केवल सत्रहवीं सदी के रूस के चर्च-राजनीतिक या ऐतिहासिक माहौल के आधार पर नहीं समझा जा सकता; – वे एक ओर, एक ईसाई राज्य में राज्य और चर्च के बीच संबंधों की समस्या को हल करने के लिए चर्च पदानुक्रम के प्रयास का परिणाम, या यूँ कहें कि चरम परिणाम थे; दूसरी ओर, उनके सुधार चर्च जीवन के भीतर कुछ ऐसी घटनाओं के खिलाफ निर्देशित थे जो देश के चर्च इतिहास में बहुत गहराई से जड़ें जमा चुकी थीं।

मेट्रोपॉलिटिन फिलिप का जीवन एक अलग रोशनी में दिखाई देता है; उनकी गतिविधियों को निश्चित रूप से रूसी मठवाद के इतिहास के संदर्भ में देखा जा सकता है। वह मठवाद जिसने 'मास्को - तीसरी रोम' की अवधारणा के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लिया और जिसने चर्च के महाधर्माध्यक्ष सेंट फिलिप को इस विचार को व्यवहार में आज़माने के लिए आगे रखा। संत फिलिप और ज़ार इवान के बीच संघर्ष ने यह प्रकट किया कि सिद्धांत और व्यवहार कितनी व्यापक रूप से अलग थे, और व्यवहार ने कितनी बार सिद्धांत को विकृत किया। संत फिलिप के लिए, यह मामला धर्मनिरपेक्ष प्राधिकरण के संबंध में एक प्रायमेट के कर्तव्यों से संबंधित था, और उन्होंने इस मामले को अपने कार्यालय की मांग के अनुसार, एक चर्च-तपस्वी दृष्टिकोण से हल किया।

संत फिलिप कोल्यचेव के बोयार परिवार से थे (जन्म 1507); उनका सांसारिक नाम फ्योडोर था, और उन्होंने अपने शुरुआती साल वासिली तृतीय के शासनकाल में मास्को में बिताए, उस युग में जिसका वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं। मेट्रोपॉलिटिन फिलिप की जीवनी, *[723] * में, जी. फेदोतोव ने उस समय मास्को में छिड़ी राजनीतिक उथल-पुथल की तीव्रता पर प्रकाश डाला; इससे युवा कोलचेव अछूता नहीं रहा, और तीस वर्ष की आयु में, फ्योडोर ने मास्को छोड़ने का निर्णय लिया। वह उत्तर की ओर गए और एक नवसिखिया (1537) के रूप में सोलोवेत्स्की मठ में प्रवेश किया। जैसा कि उनकी जीवनी बताती है, वह किसी भी प्रकार का शारीरिक श्रम करने की अपनी इच्छा के लिए विशिष्ट थे और उन्होंने अपने सभी कर्तव्यों को विनिम्रता से निभाया। बाद में उन्हें एक भिक्षु के रूप में दीक्षित किया गया। उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शक एल्डर योना थे। भिक्षु फिलिप ने मठ के बाहर एक घने जंगल में, पूर्ण एकांत में कई साल बिताए। एक भिक्षु के रूप में 11 वर्षों के बाद, जब फिलिप की उम्र 41 वर्ष हो चुकी थी, तो सेवानिवृत्त हो रहे मठाधीश के सुझाव पर, मठ के भाइयों ने उन्हें मठ का नया मठाधीश चुना (1548)। तभी इस विनिम्र तपस्वी के चरित्र

---

[722] निकॉन पर मुख्य साहित्य के लिए, अध्याय XII देखें।

[723] फेदोतोव, जी. सेंट फिलिप, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटिन (1928)। विशेष रूप से, पृ. 120–137, 206–220; रोज़्द्जेस्ट्वेंस्की, एस. मेट्रोपॉलिटिन फिलिप, में: RBS।

में नई वशिषताएँ उभरीं: उन्होंने बड़ी लगन के साथ मठ के मामलों को व्यवस्थति करना शुरू कयिा और इस काम के लिए एक वशिष प्रतभिा का प्रदर्शन कयिा। शायद इसी गतविधि में, मठ के वेश से अस्थायी रूप से दबी 16वीं सदी के एक बोयार के बेटे की ऊर्जावान प्रकृतकिो एक नकिास मलिा। फलिपि के पद पर कार्यकाल मठ के लिए आर्थकि समृद्धि और संपन्नता का दौर था। उन्होंने मठ की इमारतों का पुनर्नरि्माण कयिा, एक नया, अधकि वशिाल पशु-शाला, एक ईंट भट्टी और एक बड़ी चक्की का नरि्माण कयिा, जूता बनाने की एक कार्यशाला स्थापति की और यहाँ तक कि, जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णति है, फसल काटने के लिए एक काफी जटलि और कुशलतापूर्वक काम करने वाली मशीन का भी डजिाइन बनाया। हालांकि, मठाधीश ने यह भी सुनश्चिति कयिा कि मठवासी समुदाय एक कठोर जीवन जिए।

फलिपि ने 18 वर्षों तक मठ का प्रशासन संभाला। 1566 में, उन्हें ज़ार का एक संदेश मलिा जसिमें उन्हें मॉस्को बुलाया गया था। यह स्पष्ट नहीं है कि ज़ार ने फलिपि को कनि आधारों पर चुना। मास्को में, राजनीतकि और धार्मकि दोनों तरह से स्थति अत्यंत तनावपूर्ण थी। यह कुख्यात ओप्रचि्ननिा का समय था - बोयारों और अन्य लोगों की फांसी का दौर, जन्हिोंने कसिी न कसिी कारण से, या बनिा कसिी कारण के, ज़ार के क्रोध को भड़काया था और उसकी अप्रसन्नता का शकिार हो गए थे। धार्मकि मामलों का माहौल भी अशांत था। मेट्रोपॉलटिन अथानासयिस (1565–1566), जनिके पास शायद इवान के उन्मत्त जुनून को रोकने या कम से कम उसे शांत करने की न तो ताकत थी और न ही अवसर, उन्होंने मेट्रोपॉलटिन का पद छोड़ दयिा – उस युग के एक दस्तावेज़ में बताई गई 'बीमारी के कारण' – और चुदोव मठ में सेवानवृित्त हो गए। मेट्रोपॉलटिन पद के लिए नए उम्मीदवार, कज़ान के आर्चबशिप जर्मन ने, अपने अभषिेक से पहले ज़ार के साथ बातचीत की—यदि प्रसि ए. कुर्बस्की के ववरिण पर पूरी तरह से भरोसा कयिा जाए—और परणिामस्वरूप, उनकी उम्मीदवारी खारजि कर दी गई। हालांकि अथानासयिस के पद पर रहते हुए ही महाधर्माध्यक्ष फलिपि को मॉस्को का नमिंत्रण मलिा था, फरि भी यह संभावना है कि इवान का इरादा फलिपि को, यदि मॉस्को के पद के लिए नहीं, तो कसिी अन्य पद के लिए नयिुक्त करने का था। मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन के रूप में फलिपि के पद ग्रहण को दर्ज करने वाले आधकिारकि दस्तावेज़ से पता चलता है कि, फलिपि को मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त करने के इवान के प्रस्ताव के बाद भी, स्थति तिनावपूर्ण बनी रही, क्योंकि नए उम्मीदवार ने ओप्रचिननिा के संबंध में ज़ार से आपत्ति जताई थी, और यह शर्त मानकर ही पद संभालने के लिए सहमत हुआ कि इसे समाप्त कर दयिा जाएगा। हालांकि इस प्रस्ताव से ज़ार नाराज़ हो गया, फरि भी उसने फलिपि को मेट्रोपॉलटिन के रूप में देखने की अपनी इच्छा को दोहराया। ज़ार ने ओप्रचि्ननिा को समाप्त करने की मांग को खारजि कर दयिा, और परषिद को घोषणा की कि ओप्रचि्ननिा महानगरपति के अधकिार क्षेत्र में नहीं आता है, लेकनि इस बात पर सहमत हो गया कि फलिपि को महानगरपति के रूप में शोक मनाने का प्राचीन अधकिार (और कर्तव्य) बनाए रखना चाहिए, जसिे ओप्रचि्ननिा के दौरान औपचारकि रूप से और प्रभावी ढंग से समाप्त कर दयिा गया था। इवान द्वारा यह रयिायत, और शायद बशिपों की परषिद के दबाव ने, फलिपि को अपनी मांग वापस लेने और अपने पद ग्रहण करने के लिए सहमत होने पर मजबूर कर दयिा। 20 जुलाई 1566 का अधनियिम इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि इसमें भवष्यि के मेट्रोपॉलटिन द्वारा ओप्रचिननिा के मामलों में हस्तक्षेप न करने का वादा शामलि है, जसिे फलिपि और बशिपों के हस्ताक्षरों से पुष्टि मलिी। मॉस्कोवति रूस में चर्च और राज्य के संबंधों में यह उल्लेखनीय अधनियिम अपनी तरह का अनूठा है। अगर हम उस युग में रहते, तो हम यह समझ पाते कि 'मास्को - तीसरी रोम' की भव्य वैचारकि संरचना को यह कतिना बड़ा धक्का था![724]

शुरू से ही, मेट्रोपॉलटिन की स्थति कठनि थी, क्योंकि वह ज़ार के अपराधों पर आँखें मूंदकर देखने को तैयार नहीं थे। 1566-1568 के वर्ष वशिष रूप से बार-बार होने वाली फाँसयिों और अन्य अत्याचारों का समय थे। मेट्रोपॉलटिन की जीवनी में कहा गया है कि यह सब अंततः उन्हें उस शोक व्यक्त करने के अधकिार का प्रयोग करने के लिए मजबूर कर गया जो उन्हें प्रदान कयिा गया था। चूँकि यह लगभग नष्फिल साबति हुआ, मेट्रोपॉलटिन ने खुली कार्रवाई करने का संकल्प लयिा। मार्च 1568 में एक दनि, ज़ार उस चर्च में प्रवेश कयिा जहाँ मेट्रोपॉलटिन उस समय पूजा कर रहे थे, ओप्रचिनकिी से घरि हुए और खुद ओप्रचिनकिी के काले चोगा में लपिटे हुए। मेट्रोपॉलटिन ने ज़ार को आशीर्वाद देने से इनकार कर दयिा, और जब ओप्रचिनीकी के रूप में सेवा कर रहे बोयार ने उन्हें याद दलिाया कि ज़ार उनकी आशीर्वाद का इंतज़ार कर रहा है, तो फलिपि ने ऊँचे स्वर में एक कठोर चेतावनी दी। मेट्रोपॉलटिन और ज़ार के बीच अगला टकराव, जो एक प्रार्थना सभा के दौरान ही हुआ, ने ज़ार के क्रोध को और बढ़ा दयिा; फरि भी उस समय उसने फलिपि के खलिाफ खुले तौर पर कार्रवाई करने की हम्मित नहीं की, जो इस दृढ़ वश्विास से मजबूत था कि वह एक

[724] फेदोतोव। वही, पृ. 104।

महा-धर्मगुरु के रूप में अपना कर्तव्य निभा रहा था। जीवनचरित्र दोनों प्राधिकरणों के बीच संघर्ष का विस्तार से वर्णन करता है, जबकि अन्य स्रोत ज़ार के अहंकारी और क्रोधित कार्यों और मेट्रोपॉलिटन की विनम्र दृढ़ता के विवरणों के साथ इस दुखद चित्र को और पूरक बनाते हैं। अपमानित महसूस करने वाले ज़ार का गुस्सा बदला लेने की प्यास में बदल गया। मेट्रोपॉलिटन के रिश्तेदारों को उत्पीड़न, संपत्ति ज़ब्त और फांसी का सामना करना पड़ा; बिशपों में फिलिप के दुश्मनों ने, सोलोवेत्स्की मठ की भाईचारे के झूठे गवाहों के साथ मिलकर, मेट्रोपॉलिटन पर बदनामी की, उन पर अन्य बातों के अलावा, जादू-टोना करने का काल्पनिक आरोप लगाया; अंत में, मेट्रोपॉलिटन के खिलाफ एक धार्मिक मुकदमा चलाया गया, जो पहले ही शहादत के मार्ग पर चल पड़े थे। अदालत ने उन्हें पदच्युत कर ट्वेर के ओट्रोच मठ में कैद की सज़ा सुनाई। 23 दिसंबर 1569 को, कुख्यात मालयुटा स्कुरातोव—जो अपनी क्रूरताओं में ज़ार इवान चतुर्थ का मुख्य सहायक और उनके सीधे अमल करने वाला था—मठ में आया और शहीद को गला घोंट कर मार डाला।

1590 में, सोलोवेत्स्की मठ के मठाधीश ने इवान के बेटे, ज़ार फ्योडोर से शहीद के अवशेषों वाली कफ़न को अपने मठ में स्थानांतरित करने की अनुमति मांगी, जो उन्हें दे दी गई। जब कब्र खोदी गई, तो शहीद के अवशेष अपरिवर्तित पाए गए। सोलोवेत्स्की मठ में उनकी कब्र पर चंगाई और अन्य चमत्कार हुए। 1636 में, शहीद को संत घोषित किया गया, और 1646 में उनकी अवशेषों को मठ के कैथेड्रल में स्थानांतरित कर दिया गया। कुछ साल बाद, 1652 में, ज़ार अलेक्सी ने भविष्य के पैट्रिआर्क निकोन के नेतृत्व में सोलोवेत्स्की मठ के लिए एक विशेष दूतमंडल भेजा, जो उस समय नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटन थे । इस दूतमंडल ने संत की अवशेषों को मॉस्को लाया। संत फिलिप के सम्मान में आयोजित दैवीय सेवा में, चर्च उन्हें 'सत्य के रक्षक' के रूप में संदर्भित करती है और इस प्रकार जार इवान पर अपना निर्णय व्यक्त करती है।

९. *१६वीं और १७वीं शताब्दियों में तपस्या*

हालाँकि 16वीं और 17वीं शताब्दी को रूसी मठवाद के लिए संकट और धर्मनिरपेक्षता का युग ही कहा जा सकता है, फिर भी इस अवधि में कुछ अलग प्रकार की घटनाएँ भी घटीं। जैसे राख के नीचे दबी अंगारों की तरह, सच्चे ईसाई तपस्या के दीपक मठ की दीवारों के भीतर छिपे हुए थे। धार्मिक औपचारिकतावाद और उदासीनता की मोटी चादर को चीरकर सच्ची तपस्या की भावना उभर आई, और मठवासी जनसमूह से ऐसे व्यक्ति सामने आए जिन्होंने इस उदास युग में तपस्वी के आदर्श का मूर्त रूप धारण किया। आमतौर पर, इन तपस्वियों ने बड़े और प्रसिद्ध मठों से दूर आश्रय लिया, जो पहले, 14वीं-15वीं शताब्दियों में, मठवासी तपस्या और संसार का त्याग करने के केंद्र रहे थे। रूसी धार्मिकता और पवित्रता धीरे-धीरे संसार से पीछे हट गईं, केवल बाद के समय में फिर से प्रकट होने के लिए, 18वीं और 19वीं शताब्दी में, सावधानी से और, जैसे कि, संकोच के साथ दुनिया के सामने प्रकट होने लगे, जैसे जलती हुई चिंगारियाँ या सूर्य की किरणें, जो केवल उस ईश्वर-प्रेमी आत्मा को ही दिखाई देती हैं जो लगातार उनकी तलाश करती है, या उस शोधकर्ता को जो उस युग के मठवासी जीवन में गहराई से झाँकने का प्रयास करता है।

शोधकर्ता के लिए कठिनाई इस तथ्य से भी उत्पन्न होती है कि इस अवधि पर रूसी संतों के जीवन-चरित्रों का साहित्य 14वीं और 15वीं शताब्दी को कवर करने वाले साहित्य जितना व्यापक नहीं है। यहाँ दो कारकों को ध्यान में रखना होगा। मेट्रोपॉलिटन मकरि और अभी भी जीवंत तपस्वी परंपरा की गतिविधियों ने 14वीं-15वीं शताब्दियों में, और उस युग के संतों के कारनामों के साहित्यिक विवरणों में बढ़ती रुचि में योगदान दिया। हालाँकि, बाद में, मठवासी जीवन के धर्मनिरपेक्ष होने और भाईचारे के आर्थिक चिंताओं में व्यस्त होने के कारण, साहित्यिक गतिविधि के लिए न तो समय बचा और न ही ऊर्जा। 17वीं शताब्दी में, मठवासी समुदाय ने उस स्तर के प्रचारकों और लेखकों को नहीं दिया, जो हमें पिछली शताब्दी के पहले छमाही से ज्ञात हैं। और फिर भी, 17वीं शताब्दी की आध्यात्मिकता के कुछ रूप साहित्य में अभिव्यक्त हो सकते थे, यदि पेट्रिन युग के उथल-पुथल ने चर्च के जीवन को इतनी बुरी तरह से नहीं हिला दिया होता। बहुत कुछ खो गया, जबकि कुछ चीजें केवल खंडों या किंवदंतियों और लोक स्मृति में ही बची रहीं; फिर भी यह सामग्री लोककथाओं में इसलिए पहुँच गई क्योंकि समकालीनों द्वारा दिए गए विश्वसनीय विवरण किसी भिक्षु के परिश्रमी हाथ द्वारा कागज पर नहीं उतारे गए थे। भिक्षु समुदाय स्वयं अब अपने ही बीच आध्यात्मिकता के कई रूपों पर ध्यान नहीं देता था और न ही उन्हें महत्व देता था। तपस्या के कारनामों के प्रति प्रशंसा और उनके महत्व की समझ अब पहले की तरह सहज रूप से स्वीकृत नहीं रही। इन सब से यह स्पष्ट है कि 16वीं–17वीं शताब्दी के कुछ ही तपस्वियों के बारे में हमारा ज्ञान अत्यंत अपर्याप्त है।

कुछ तपस्वियों के नाम, जो भावना से पंद्रहवीं शताब्दी के संन्यासवाद से ही संबंधित थे, पहले ही उल्लेख किए जा चुके हैं (अध्याय IV)। वे एक संक्रमणकालीन अवधि में रहते थे जब संन्यासवाद का संकट पहले ही प्रकट होने लगा

था। वे दोनों युगों से संबंधित थे, क्योंकि वे मस्कोवी की संन्यासी परंपरा के तपस्या के कारनामों की महिमा की अंतिम करिण को मूर्त रूप देते थे, और एक नए युग की दहलीज पर खड़े इन धर्मनिष्ठ संन्यासियों के जीवन इस महिमा से भरे हुए थे।

रूसी चर्च की कैलेंडर में, 16वीं और 17वीं शताब्दी के दूसरे भाग के बहुत कम संत ऐसे हैं जिन्हें संपूर्ण चर्च द्वारा पूजित किया जाता है; अधिक संत ऐसे हैं जिन्हें स्थानीय रूप से पूजा जाता है। इसका कारण यह हो सकता है कि, पैट्रिआर्कात्मक और सिनोडल काल के दौरान, रूसी चर्च ने केवल कभी-कभार ही संतों की सूची में शामिल करने के प्रश्न पर अपना ध्यान केंद्रित किया, हालांकि लोकप्रिय भक्ति ने कई ऐसे संतों को, जिन्हें अभी तक आधिकारिक मान्यता नहीं मिली थी, पूजना जारी रखा। मेट्रोपॉलिटन मकरि के समय की तरह, ऊपर से संतों को मान्यता देने की पहल 17वीं से 19वीं शताब्दी में एक बहुत ही दुर्लभ घटना थी। परिणामस्वरूप, रूसी चर्च ऐसे कई तपस्वियों को जानती है जिन्होंने वास्तव में ईश्वर को प्रसन्न किया लेकिन जिन्हें आधिकारिक तौर पर महिमामंडित नहीं किया गया; फिर भी, उन्हीं में ईसाई धर्म की आत्मा चमकती है, और यह प्रकाश उस युग की छायाओं को मृदु करता है[725] .

तपस्वी की भावना—14वीं-15वीं शताब्दी के तपस्वियों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, दुनिया का सख्त त्याग करने की भावना—नोवोएज़ेर्स्क के पूजनीय सिरिल († 1532), कोमेल के कोर्नेलियस († 1537) और स्विर के अलेक्जेंडर († 1533) में जीवित रही[726] । 17वीं शताब्दी की शुरुआत में, सेंट सिरिल की जीवनी लिखी गई, साथ ही उनके मकबरे पर हुए 17 मरणोत्तर चमत्कारों (1648 तक) के वृत्तांत भी शामिल थे; 1648 में, उन्हें महिमामंडित किया गया और सार्वभौमिक धार्मिक श्रद्धा प्राप्त हुई[727] । सेंट कॉर्नेलियस का पैन-रूसी धार्मिक महिमामंडन, जिन्हें उनके निधन के तुरंत बाद स्थानीय श्रद्धा प्राप्त हुई थी, 1600 में पैट्रिआर्क जॉब[728] द्वारा किया गया था। सेंट अलेक्जेंडर ऑफ स्विर को 1547 की परिषद में ही महिमामंडित किया गया था। दूर उत्तर में, 'सी के' के नाम से जाने जाने वाले एंथनी अपने जीवन की कठोर तपस्या के लिए प्रसिद्ध थे; एक हायरomonk के रूप में, उन्होंने सी नदी (खोलमोगोरी जिला) के किनारे एक आश्रम की स्थापना की, जो बाद में विस्तृत भूमि के साथ एक मठ बन गया। एंथनी को एक प्रतिमा चित्रकार के रूप में भी जाना जाता है, और पवित्र त्रिमूर्ति की उनकी प्रतिमा, जो आग से बिना किसी नुकसान के बच गई थी, रूसी उत्तर के सबसे बड़े पवित्र खजाने में से एक मानी जाती है। 1579 में, एंथनी को पूरे रूस के संत के रूप में मान्यता दी गई[729] ।

मास्को केंद्र के लिए दो व्यक्ति विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं: स्टोलोबेनस्क के नील († 1554) और प्सकोव के निकिंडर († 1581)। दोनों ने संन्यासियों का जीवन जिया: पहले वाले ने सेलिगर झील के एक द्वीप पर एक गुफा में दुनिया का पूर्ण त्याग कर 20 से अधिक वर्षों तक जीवन व्यतीत किया, जबकि बाद वाले ने एक मौन संन्यासी के रूप में तपस्या की। नीलस ने न तो कोई मठ स्थापित किया और न ही कोई तपस्थल; उनके निधन के बाद ही उनके तपस्या स्थल पर एक तपस्थल का निर्माण हुआ, जो बाद में एक समृद्ध मठ बन गया और कई तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने लगा; 19वीं सदी में, यह मध्य रूस के सबसे पूजनीय पवित्र स्थलों में से एक था। संभावना है कि 16वीं सदी के अंत तक ही, नीलस को एक स्थानीय रूप से सम्मानित संत के रूप में पूजा जाने लगा था[730] । निकान्द्र का जीवन नीलस जितना शांतिपूर्ण नहीं था; वह उनसे मिलने आने वाले आगंतुकों से बचने के लिए कई बार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता रहा। बाद में, उनके निवास स्थल पर घोषणा आश्रम (Annunciation Hermitage) की स्थापना की गई, और 1686 में निकान्द्र को उनके मकबरे पर हुए चमत्कारों के लिए महिमामंडित किया गया[731] ।

पहले से उल्लेखित तपस्वियों के अलावा, रूसी चर्च के संतों की सूची में कई ऐसे संतों के नाम शामिल हैं जो मठवासी वर्ग से थे और जो अपने विनम्र जीवन, संसार का त्याग और धार्मिकता के लिए, स्थानीय आबादी द्वारा

---

[725] 17वीं–19वीं शताब्दी में संत-घोषणा पर, देखें: गोलुबिन्स्की। रूसी चर्च में संत-घोषणा का इतिहास (1903)।

[726] तुलना करें अध्याय III, 4.

[727] क्लुचेव्स्की। लाइव्स। पृ. 319; गोलुबिन्स्की। इतिहास ऑफ़ कैनोनाइज़ेशन। पृ. 130.

[728] उपरोक्त, पृ. 120; कोनोपलेव. उद्धृत कृति, संदर्भ: रीडगिस. 1895. 4. पृ. 86–101.

[729] गोल्बुंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 117; माकारी, बिशप। सेंट एंथनी ऑफ़ साय के मठ पर ऐतिहासिक जानकारी, में: रीडगिस। 1878. 3.

[730] गोल्बुंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 155, 314; 'द नाइल हर्मिटेज', *रीडगिस* में। 1875. 3; उस्पेंस्की, वी. 'ए हिस्टोरिकल डिस्क्रिप्शन ऑफ द नाइल स्टोलोबेन्स्क हर्मिटेज' (1867; 3रा संस्करण 1886)।

[731] गोल्बुंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 132; क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 392; सेरेब्रेयान्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 317–326, 538–545, 568 ff. (निकिंडर का जीवन)।

ईश्वर को प्रसन्न करने वाले लोगों के रूप में पूजे जाते थे, और बाद में उन्हें स्थानीय रूप से पूजे जाने वाले संतों के रूप में महिमामंडित किया गया[732] ।

17वीं सदी के रूसी संतों के कारनामों के वृत्तांत पढ़ने पर, हमें दो विशिष्ट विशेषताएँ मिलती हैं: पहला, तपस्या और एकांत की ओर अपेक्षाकृत व्यापक झुकाव; और दूसरा, शारीरिक पीड़ा के माध्यम से शरीर को कष्ट देने की इच्छा, जैसे भारी बेड़ियाँ पहनना – इससे पहले, ये प्रथाएँ रूसी तपस्वियों के बीच विशेष रूप से व्यापक नहीं थीं।

वोलोग्दा के गालक्शियन († 1612), जिन्हें संभवतःएक भिक्षु के रूप में दीक्षा नहीं दी गई थी, ने अपनी झोपड़ी में एक तपस्वी और स्तंभवासी के रूप में जीवन व्यतीत किया: उन्होंने खुद को दीवार से जकड़ लिया था और एक छोटी सी खिड़की के माध्यम से रोटी और पानी का भोजन प्राप्त किया; उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि वोल्गोडा शहर, जहाँ वे रहते थे, पोलिश लोगों द्वारा कब्जा कर लिया जाएगा, जो वास्तव में 1613 में हुआ, जबकि गैलाक्शियन की मृत्यु स्वयं पोलिश सैनिकों के हाथों एक शहीद की तरह हुई[733] । उनके समकालीन, रोस्तोव के पास बोरिसोग्लेबस्की मठ के इरिनार्ख († 1616), को अपना मठ छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि मठ के अन्य सदस्य उनके जीवन के विशेष कठोरपन से असंतुष्ट थे। उनकी संजीवनी 'समय की परेशानियों' के दौरान मठवासी जीवन के पतन की गवाही देती है। इरिनार्ख एक दूसरे मठ में चले गए और अपने पैरों और कंधों पर भारी बेड़ियाँ डालकर अपनी कोठरी में खुद को बंद कर लिया। हालाँकि, तीन साल बाद, वे बोरिसोग्लेबस्की मठ में लौटने में सक्षम हुए और एक बार फिर खुद को अपनी कोठरी में बंद कर लिया, खुद को एक बेंच से जकड़ लिया; वे 30 से अधिक वर्षों तक इसी अवस्था में रहे[734] । वासियन († 1624), जिन्हें टोटेम्स्की या टिक्सेंस्की के नाम से जाना जाता था, ने वोल्गोडा क्षेत्र के टोटेम्स्की जिले में तपस्या के समान ही कारनामे किए; वह एक संन्यासी थे जो अपनी कोठरी में रहते थे, दीवार से एक भारी जंजीर से बंधे रहते थे, उन्हें भोजन एक छोटी खिड़की से मिलता था, और वे केवल कभी-कभार ही पवित्र Communion प्राप्त करने के लिए चर्च जाते थे। डायोडोरस († 1633), सोलोवेत्स्की मठ के एक भिक्षु, ने एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत किया । मठवासी जीवन से असंतुष्ट होकर, वह व्हाइट सी में एक छोटे से द्वीप पर चले गए, फिर ओनेगा नदी के किनारे घने जंगलों में चले गए और अंत में ओलोनेत्स शहर के पास एक आश्रम की स्थापना की। चुडोव मठ में जीवन के तरीके से असंतोष ने निकोडेमस नामक एक अन्य भिक्षु को मठ छोड़ने के लिए प्रेरित किया; वह उत्तर की ओर चल पड़ा और कार्गोपोल जिले के विशाल दलदलों के बीच अपने लिए एक स्थान चुना। उसके जीवन की कठोरता की खबर मॉस्को तक पहुँच गई। निकोडेमस ने दलदलों के बीच 30 से अधिक वर्ष बिताए और 1640 में उनकी मृत्यु हो गई।[735] साइमन वोल्मस्की († 1641) भी एक तपस्वी थे; उन्होंने वोल्गोडा के घने जंगलों में शरण ली और पास के गांवों के किसानों द्वारा मारे गए, क्योंकि उन्होंने यह तय किया कि वह एक मठ स्थापित करने की योजना बना रहे थे और उनकी ज़मीन तब मठ को मिल जाएगी; इसके अलावा, व्रखोटुर्ये के सिमियन († 1642) थे, जो एक कड़े तपस्वी थे और जिन्होंने स्वदेशी वोगुल्स को ईसाई धर्म का उपदेश दिया, और उस्त-नेडुम के लियोनदि († 1654), जिन्होंने पर्म के अविभाज्य जंगलों में एक आश्रम की स्थापना की[736] ।

सोलोवेत्स्की मठ में जीवन के तरीके ने, भिक्षु एलेज़ार को, जो वास्तव में एक तपस्वी जीवन की आकांक्षा रखता था, मठ छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। वह अंज़र द्वीप (मठ से लगभग 25 किमी दूर) पर बस गया; कुछ वर्षों बाद, जब कठोर तपस्या की ओर झुकाव रखने वाले अन्य भिक्षु उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए, तो एलेज़र ने एक स्केट (skete) की स्थापना करने का फैसला किया। मठ की कोठरियाँ एक-दूसरे से एक वर्स्ट (verst) की दूरी पर स्थित थीं। केवल शनिवार की शाम को ही संन्यासी सामूहिक संध्या सेवा और रविवार की धर्मविधि के लिए एक साथ इकट्ठा होते थे; इसके बाद, वे फिर से अपनी-अपनी कोठरियों में बिखर जाते थे। संन्यास-आश्रम में अनुशासन बहुत सख्त था, और एलेज़र का अपना जीवन भाईचारे के लिए एक उदाहरण था। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, एलेज़र

---

[732] आइए हम कुछ विशेष रूप से प्रसिद्ध तपस्वियों का उल्लेख करें: वोलोग्दा के गेनाडियस († 1565), इलोएज़ेर्स्क के हेरोडियन († 1564), ज़ोनकियेव्स्क के जोसेफ († 1612); एंड्रुसोवो के एड्रियन († 1549), पोशेखोंस्क के एड्रियन († 1550), सोइगनो के साइमन († 1561), वोर्बोज़ोम के ज़ोसिमा († 16वीं शताब्दी का दूसरा भाग), लेख्नोवो के लियोन्टियस († 1611), नोवगोरोड के आर्सेनियस († 1570), शहीद ज़ेलेनेट्स्की († 1603), अगपटिस मार्कुशेव्स्की († 1584), इग्नेशियस वोल्गोगोड्स्की († 1592), सेरगियस शुख्तोव्स्की († 1609), क्रसिटोफ़र कोरियाज़ेम्स्की († लगभग 1572), थियोडोसियस ऑफ़ टोटमा (मृत्यु 1568), फेरापोंट ऑफ़ मॉन्ज़ेन (मृत्यु 1591)। तुलना करें: हिस्टोरिकल डिक्शनरी ऑफ़ सेंट्स (1836; दूसरा संस्करण 1862); गोलुबिंस्की, उद्धृत कृति; बार्सुकोव, उद्धृत कृति।

[733] IRI. 4. पृ. 64; बेल्स्की परिवार से उनकी वंशावली का विवरण पौराणिक है।

[734] क्ल्यूचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 323; शब्दकोश (1862)। पृ. 105–107; गोलुबिन्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 158; प्लाटोनोव। ओल्ड रशियन टेल्स ऑफ द टाइम ऑफ ट्रबल्स। पृ. 293.

[735] IRI. 6. पृ. 366; क्ल्यूचेव्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 334; शब्दकोश (1862). पृ. 181.

[736] क्लुचेव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 346; IRI. 3. पृ. 607; गोलुबिंस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 129, 136।

ने अपनी स्केटा के लिए एक नियम बनाया। उनकी मृत्यु 1656 में हुई[737] स्केटा-निवासी एलेज़र के जीवन में, हम एक लंबे अंतराल के बाद, सामूहिक मठों के विपरीत, जो तब तक पहले ही काफी धर्मनिरपेक्ष हो चुके थे, प्राचीन स्केटा नियमों पर आधारित मठवासी व्यवस्था में लौटने का एक प्रयास देखते हैं।

यहाँ उल्लेखित तपस्वियों के जीवन का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि सभी उस समय मठों में प्रचलित परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं थे; इस असंतोष ने तपस्वियों को मठ छोड़कर संसार का पूर्ण परित्याग करने के लिए विवश किया। दूर-दराज, एकांत स्थानों—घने जंगलों और दलदलों के बीच कहीं—की खोज, जहाँ कोई बिना किसी बाधा के मसीह के लिए तपस्या कर सके, एक नई तपस्वी आंदोलन की तुलना में मठ जीवन के धर्मनिरपेक्षीकरण से असंतोष को दर्शाती है। ये 17वीं सदी के तपस्वी अब मठवासी जीवन का सामान्य पुनरुत्थान करने में सक्षम नहीं रहे। वे अलग-थलग व्यक्तित्व वाले रहे, जिनमें से प्रत्येक का अपना अलग चरित्र था, लेकिन उन्होंने किसी भी तरह से 17वीं सदी के मठवासी समुदाय की सामान्य भावनाओं और विचारों में किसी भी बदलाव का संकेत नहीं दिया।

10. संतों का मिशनरी कार्य

मस्कोवी राज्य के क्षेत्रीय विस्तार और pagan लोगों और जनजातियों के समावेशन ने रूसी चर्च को इन लोगों के बीच ईसाई धर्म का प्रचार करने का अवसर दिया। निश्चित रूप से, मठवासी समुदाय से इस प्रयास में अपनी उचित जगह लेने की उम्मीद की गई थी। दुर्भाग्य से, हालांकि, इसने इस क्षेत्र में आवश्यक से कम प्रयास किया। चर्च पदानुक्रम ने इस मिशन को पूरा करने के लिए मठवासी समुदाय की आध्यात्मिक ऊर्जा का निर्देशन करने हेतु बहुत कम किया, हालांकि मास्को सरकार ने बार-बार बिशपों और मठों के लिए मिशनरी कार्यों के महत्व पर जोर दिया[738] । इस क्षेत्र में भी, व्यक्तिगत संतों की स्वतंत्र पहलों का अधिक महत्व था। स्मारकों में भिक्षु वेशधारी सभी मिशनरियों के नाम तो संरक्षित नहीं हुए हैं; यह विशेष रूप से साइबेरिया जैसे दूरदराज के क्षेत्रों के लिए सच है।

कोर्निली, प्सकोव-पेचेर्स्क मठ के मठाधीश, जिनसे हम पहले ही मिल चुके हैं, उन मिशनरियों में से एक थे जिनके उपदेश को बहुत सफलता मिली। उन्होंने पगन एस्टोनियाई लोगों के बीच उपदेश दिया, साथ ही 16वीं शताब्दी के मध्य में इन क्षेत्रों में आए कैल्विनिवादियों के साथ बहस में भी हिस्सा लिया[739] ।

उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भूमि में, लादोगा झील के आसपास के क्षेत्रों में, वालाम मठ के भिक्षुओं ने पगन कैरेलियनों को ईसाई धर्म का उपदेश दिया; कोनेव के आर्सेनियस († 1447) का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए। उत्तर के मूर्तिपूजक लोगों के बीच, चेल्मोगोर्स्क के पूजनीय सिरिल († 1367) ने अपने मिशनरी कार्य को बड़ी सफलता के साथ पूरा किया[740] ।

पर्म और व्याटका क्षेत्रों में, जहाँ संत स्टीफन बिशप († 1396) ने महान त्याग के साथ ईसाई धर्म प्रचार के कार्य की सेवा की, और बिशप पितिरिम († 1455) ने अपने कार्य को सफलतापूर्वक जारी रखा, सेंट त्रिफोन ऑफ व्याटका († 1613) ने 16वीं शताब्दी के अंत में परिश्रम किया; पिसकोर मठ के संतों ने भी ईसाई धर्म को फैलाने में बहुत योगदान दिया। दूर उत्तर में, पोमोरे में, जहाँ 15वीं-16वीं शताब्दियों में सोलोवेत्स्की मठ[741] ईसाई धर्म का एक गढ़ बन गया था, रूसी ईसाई मिशन के इतिहास में दो नामों का एक विशेष स्थान है: कोला के थियोडोरेट और पेचेन्गा के त्रिफोन।

1480 के आसपास जन्मे थियोडोरेट ने 14 साल की उम्र में सोलोवेत्स्की मठ में प्रवेश किया, संन्यास की शपथ ली और भिक्षु ज़ोसिमा के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में 15 साल तक वहाँ रहे; फिर वह सेंट अलेक्ज़ेंडर ऑफ स्विर् के मठ में चले गए, और वहां से किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ में; लगभग 1529 में, वह सोलोवेत्स्की मठ लौट आए और, जोसिमा की मृत्यु के बाद, उन्होंने एक तपस्वी का जीवन जीने का संकल्प लिया; थियोडोरेट ने कोला नदी के किनारे एक एकांत और जंगली स्थान पाया और वहाँ मित्рофान नामक एक अन्य संन्यासी के साथ, संसार का पूर्ण परित्याग और एकांत में लगभग 12 वर्ष बिताए। 1540 में, दोनों संन्यासी आर्चबिशप मकरियस से मिलने के लिए नोवगोरोड गए,

---

[737] याखोंटोव। उत्तरी रूसी संतों का जीवन। पृ. 197 आदि; संतों की पुस्तक, में: रीडिंग्स। 1887। 4. सं. 324। एलेज़र का जीवन, में: संकलित कृतियाँ। 1860। 1.

[738] उदाहरण के लिए, इवान चतुर्थ का कज़ान के आर्चबिशप गुरी को लिखा पत्र देखें: AI. खंड 1, संख्या 241; साथ ही 1649 का संहिता, अध्याय 20, 21, 26; DAI. खंड 5, संख्या 241–244; माकारी। 10. पृ. 72; एआई। 5. संख्या 69, 75; साइबेरिया के आर्चबिशप को एक पत्र, में: इवानोव। पुराने मामलों के राज्य अभिलेखागार का विवरण। 1 (1850). पृ. 263.

[739] डोब्रोक्लोन्स्की। रूसी चर्च के इतिहास की गाइड। खंड *12 (1889) / पृ. 131, 132 /*

[740] माकारी। 2रा संस्करण। 6. पृ. 357; गोलुबिंस्की। कैनोनाइज़ेशन का इतिहास। पृ. 148; सेरेब्रेयांस्की। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 342–344; क्ल्यूचेव्स्की। संतों के जीवन। पृ. 236.

[741] 15वीं–17वीं शताब्दियों में उत्तरी पोमोरे में रूसी चर्च, में: प्राव. सोब. 1860. 2. पृ. 3 आदि.

जनि्होंने थयिोडोरेट को एक हायरोंक के रूप में दीक्षा दी और उन्हें अपना आध्यात्मकि पति नयिुक्त कयिा। 1542 में, जब मकारयिस मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन बने, तो थयिोडोरेट, कई भक्षिुओं के साथ, कोला प्रायद्वीप लौट आए और वहाँ ट्रनिटिी मठ की स्थापना की। सोलोवेत्स्की मठ में रहते हुए, थयिोडोरेट ने लैप्पश्ि भाषा सीख ली थी, और अब उन्होंने उन्हें मसीह की शक्षिाओं का उपदेश देना शुरू कर दयिा; उनका मशिनरी कार्य बहुत सफल साबति हुआ, लेकनि यह लंबे समय तक नहीं चला। मठवासी समुदाय के साथ ववािदों, जो उस तपस्वी की कठोर तपस्या से असंतुष्ट थे, ने उनकी गतविधियिों में बाधा डाली, और अंत में थयिोडोरेट को अपने द्वारा स्थापति मठ छोड़ने और अपना मशिनरी उपदेश बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसके बाद उन्होंने बेलोजेर्स्क क्षेत्र में एक छोटे आश्रम के मठाधीश के रूप में कई साल बतिाए, जहाँ वे गैर-स्वामत्ि ववादयिों और एल्दर आर्टेमयिस से नकिटता से परचिति हुए। 1551 में, जब आर्टेमयिस ने संक्षेप में ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ का प्रशासन संभाला, तो ज़ार ने उनकी सफि़ारशि पर थयिोडोरेट को सुज़दल में यूथमियिस मठ का आर्चमैंड्राइट नयिुक्त कयिा। 1554 की परषिद में, बाशकनि और आर्टेमी के खलिाफ मामले पर चर्चा के दौरान, थयिोडोरेट का नाम भी लयिा गया; उसे गलत तरीके से आर्टेमी के साथी के रूप में दोषी ठहराया गया और करिलिोव मठ में नर्विासति कर दयिा गया। हालांकि, 1557 में, ज़ार के नर्दिेश पर, वह कॉन्स्टेंटनिोपल गए और पादरी का एक पत्र लेकर आए जसिमें इवान चौथे के ज़ार के रूप में राज्याभषिेक की पुष्टि की गई थी। कॉन्स्टेंटनिोपल से लौटने पर, थयिोडोरेट ने वोल्गोडा के पास प्रलिुत्स्की मठ में शरण ली, और वहां से वह ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए एक बार फरि कोला के लिए रवाना हो गए। थयिोडोरेट की मृत्यु लगभग 1577 में हुई। इस प्रकार, इस कठोर तपस्वी का जीवन उस युग की धार्मकि और राजनीतकि घटनाओं के तूफान में उलझ गया, और साथ ही वह रूसी मठवाद के इतहिास का एक उल्लेखनीय उदाहरण बना रहा[742] ।

एक अन्य मशिनरी, पेचेन्गा के पूजनीय त्रफिोन का जीवन थयिोडोरेट की तुलना में अधकि शांतपिूर्ण था। उनकी संजीवनी हमें प्राप्त हुई है। अपनी युवावस्था में, उन्होंने अपने माता-पति का घर छोड़ दयिा और नोवगोरोड के जंगलों में एक तपस्वी के रूप में रहे। फरि वह उत्तर में कोला क्षेत्र की ओर गए, जहाँ पेचेन्गा नदी के तट पर, उन्होंने थयिोडोरेट के मशिनरी कार्य शुरू होने से पहले ही स्वदेशी मूर्तपिूजक लैप्स लोगों को उपदेश दयिा। बाद में, त्रफिोन ने एक चर्च बनाने की अनुमति और सुसमाचार का प्रचार करने का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए नोवगोरोड की एक लंबी यात्रा की। वे कई कुशल कारीगरों के साथ लौटे, और उन्होंने चर्च का नर्मिाण कयिा। कोला में, जो तब तक एक रूसी बस्ती बन चुकी थी, ट्रफिॉन को एक हायरोमोंक मलिा जसिने चर्च को समर्पति कयिा और उन्हें एक भक्षिु के रूप में दीक्षा दी। अब वे मूर्तपिूजकों का बपतस्मिा दे सकते थे, और उनका चर्च उनके मशिनरी कार्य का केंद्र बन गया। बाद में, त्रफिोन ने चर्च से जुड़ा एक मठ स्थापति कयिा और, 1556 में, ज़ार से एक चार्टर प्राप्त कयिा जसिमें उसे पड़ोसी भूमि और मछली पकड़ने के क्षेत्रों का अधकिार दयिा गया। उन्होंने परविर्तति क के मूल नविासयिों के लिए एक दूसरा चर्च बनाया और 1583 में अपनी मृत्यु तक लगभग 30 साल और ईसाई धर्म का प्रचार कयिा।[743]

मास्को सरकार ने पोनज़िोवये क्षेत्र में ईसाई मशिन पर वशिेष ध्यान दयिा, जो इस क्षेत्र में तीव्र मठों द्वारा उपनविेशीकरण में परलिक्षति होता है (तुलना करें अध्याय VII)। जब 1555 में बशिप गुरी (1555–1563) को काज़ान का पहला आर्चबशिप नयिुक्त कयिा गया, तो उन्हें मूर्तपिूजकों और मुसलमानों के ईसाई धर्म में धर्मांतरण पर वशिेष ध्यान देने का नर्दिेश दयिा गया था[744] । तब कई कुलीन तातारों को ईसाई शक्षिा और धर्मांतरण के लिए वभिन्नि मठों में भेजा गया; जनिका बपतस्मिा हुआ था, नव-बपतस्मितिों ने अपनी संपत्तयिाँ बनाए रखीं[745] । मठों और यहाँ तक कि

---

[742] शेस्टाकोव, पी. 'आर्कमैंड्राइट थयिोडोरेट, लोपारों के प्रबोधक, और पेचेन्गा के संत त्रफिोन', में: झएमएनपी. 1868. 7. पृ. 242 आदि.; मकारी. 2रा संस्करण. 6. पृ. 330–332.

[743] त्रफिोन का जीवन: Prav. Sob. 1859. 2. पृ. 89–120; IRI. 4. पृ. 582; गोलुबनिस्की. उद्धृत ग्रंथ. पृ. 156; शेस्ताकोव. उद्धृत ग्रंथ.

[744] एएई. 1. संख्या 241; डीआरवी. 5. पृ. 241; पोक्रोव्स्की, I. कज़ान बशिप का आवास (1902). पृ. 6. कज़ान के आर्चबशिप (और बाद में मेट्रोपॉलटिन) बशिपों में वरीयता क्रम में तीसरे स्थान पर थे (पहला – मास्को; 2 – नोवगोरोड)। DAI. 4. संख्या 102; SGGD. 2. पृ. 59।

[745] DAI. 1. संख्या 97; हेस्सेन, जी. 'मस्कोवाइट राज्य में कैदयिों का जीवन', *रूसी अतीत* 2 (1923), पृ. 61 में। पोनज़िोवये क्षेत्र में ईसाई मशिन के इतहिास के लिए देखें: मोज़ारोव्स्की, ए. '1552 से 1867 तक काज़ान के गैर-रूसी लोगों के ज्ञानोदय के लिए मशिनरी कार्य की प्रगति का वविरण', में: रीडगि्स. 1880. 1; नकिोल्स्की, एन. वी. '16वीं–18वीं शताब्दी में मध्य वोल्गा क्षेत्र के चूवाश लोगों के बीच ईसाई धर्म', में: काज़ान बुलेटनि. 28. 1 (1912); स्मरिनोव, आई. एन. 'चेरेमसि', *प्रोसीडगि्स ऑफ़ द काज़ान एकेडमी ऑफ़ साइंसेज़* 6 (1889); वही, 'वोत्याक्स', *प्रोसीडगि्स ऑफ़ द काज़ान एकेडमी ऑफ़ साइंसेज़* 8. 2 (1890); वही, 'परम्याक्स', *प्रोसीडगि्स ऑफ़ द काज़ान एकेडमी ऑफ़ साइंसेज़* 9. 2 (1891); ibid., मर्दवनि, में: प्रोसीडगि्स ऑफ़ द काज़ान सोसाइटी 10–12 (1892–1895); पेरयिाटकोवचि, जी., op. cit. (1877 और 1882); साथ ही एन. एन. और एन. ए. फर्सोव (1864 और 1868) के पूर्व के कार्य। नए बपतस्मिा प्राप्त टाटार कुलीनों को जागीरों के प्रदान पर, देखें: द आर्काइव ऑफ प्रसि वी. आई. बायुशेव। द हस्टिोरकिल एंड लीगल मटेरयिल्स फ्रॉम द डस्टि्रक्टि ऑफ द फोरमर कज़ान पैलेस ऑफसि। 1 (1882)।

पैरशि चर्चों को भी बड़ी ज़मीनें मलिीं; उदाहरण के लिए, काज़ान जलि में 16वीं शताब्दी के अंत तक ही, 65 प्रतशित कृषि योग्य भूमि धार्मकि संस्थानों के स्वामित्व में थी। पहले (अध्याय VII और VIII में) हमने उस प्रक्रयिा की कुछ वस्तिार से जांच की थी, जसिके द्वारा पोनज़िोवये क्षेत्र के मठ अमीर हुए और समझाया था कि सरकार ने ऐसी नीति क्यों अपनाई। हालाँकि, काज़ान के मेट्रोपॉलटिन, हर्मोजेनेस (1589–1606) की रपिोर्टों से यह स्पष्ट है कि मशिनरी गतविधि बिहुत अधकि सफलता के बनिा वकिसति हुई, क्योंकि मुस्लमि पुरोहतिों ने धीरे-धीरे tatar आबादी पर अपना प्रभाव बहाल कर लयिा[746] । 17वीं सदी में कई मठों द्वारा कोई वशिष सक्रयि मशिनरी कार्य भी नहीं कयिा गया था; इसके अलावा, राजनीतकि स्थति में कसिी भी उग्रता—जैसे कि राज़नि के वद्रिोह (1667–1671), जसिमें कई तातारों ने भाग लयिा था—के कारण पहले से ही बपतस्मिा ले चुके लोगों ने धर्मत्याग कर दयिा, और सरकार को जवाबी कार्रवाई करने के लिए मजबूर होना पड़ा[747] । पोनज़िोवये क्षेत्र के दक्षणि-पश्चमिी भाग में, जो रयिाज़ान धर्मप्रांत के अंतर्गत था, स्वदेशी आबादी में मूर्तपिूजक मॉर्डवन्सि और मुस्लमि टाटर्स शामलि थे। यहाँ, 17वीं शताब्दी के मध्य में दक्षणि की ओर बढ़ी उपनवेशवाद (शत्स्की, तम्बोव और कादोम्स्की जलि) के संबंध में, रयिाज़ान के आर्चबशिप, मसिाइल (1651–1656) ने एक वशिष रूप से जोरदार मशिनरी अभयिान शुरू कयिा। इस क्षेत्र में कई मठों की स्थापना की गई, लेकनि उनमें से केवल पुरदशि्चेव्स्की मठ ([748]) का ही वशिष उल्लेख कयिा जाना चाहए।

साइबेरयिा में, मठों और कस्बों का नर्मिाण एक साथ हुआ। साइबेरयिा के पहले इतहिासकार, स्लोवत्सोव लखिते हैं, 'जहाँ एक कस्बा है, वहाँ एक चर्च के अलावा, एक वोइवोड का प्रशासन, आग्नेयास्त्र और एक मठ है'[749] – लेकनि यहाँ ईसाईकरण की प्रक्रयिा बहुत धीमी गति से आगे बढ़ी; 1620 की शुरुआत में ही, जब टोबोल्स्क में एक अलग धर्मप्रांत स्थापति कयिा गया था, तो इसके पहले बशिप, साइप्रयिन (1621–1624) को पैट्रआर्क फलिारेट से नर्दिेश मलिा था कि वे मूर्तपिूजकों और मुसलमानों के धर्म परविर्तन पर वशिष ध्यान दें, साइप्रयिन ने सुसमाचार का प्रचार करने के लिए वशिष रूप से कई भक्षिुओं को अपने साथ टोबोल्स्क ले भी लयिा। उनके उत्तराधकिारी, बशिप मकारयिस (1624–1635) को मॉस्को से एक वशिष संदेश ('पाम्याट') मलिा, जसिमें उन्हें मूर्तपिूजकों के धर्म परविर्तन की याद दलिाई गई[750] । इसेट नदी के कनिारे स्थति डॉर्मशिन मठ का वशिष उल्लेख कयिा जाना चाहए (इसकी स्थापना 1644 में भक्षिु डलमेट ने की थी और इसलिए इसे डलमेट का मठ के नाम से जाना जाता है); वहाँ के भक्षिु मशिनरी कार्य से अपरचिति नहीं थे। सदी के अंत (1681) तक पूर्वी साइबेरयिा के लिए एक वशिष मशिन का आयोजन नहीं कयिा गया था – हेग्यूमेन थयिोडोसयिस और 12 भक्षिुओं को सेलेनगन्स्क भेजा गया था ताकि अन्य धर्मों के सभी लोगों को ऑर्थोडॉक्स धर्म में परविर्तति कयिा जा सके, जबकि, जैसा कि उन्हें नर्दिेश दयिा गया था, ऐसा बनिा कसिी जबरदस्ती के कयिा जाना था। यह ध्यान देने योग्य है कि ज़ार फ्योडोर ने 1682 की परषिद में अन्य धर्मों के लोगों के धर्म परविर्तन के लिए पूर्वी साइबेरयिा में एक नया धर्मप्रांत स्थापति करने का प्रस्ताव रखा, लेकनि बशिपों ने इस प्रस्ताव को खारजि कर दयिा; केवल यह नर्णिय लयिा गया कि समय-समय पर टोबोल्स्क से भक्षिुओं और पादरयिों को पूर्वी साइबेरयिा भेजा जाएगा[751] ।

मशिनरी गतविधि के सीमति दायरे के कारण मुख्य रूप से भक्षिुओं की अपर्याप्त शक्षिा और सुसमाचार का प्रचार करने के लिए चर्च पदानुक्रम की ओर से पहल और उत्साह की लगभग पूर्ण कमी में नहिति थे। अगली शताब्दी तक रूस में मशिनरी कार्य में पुनरुत्थान नहीं हुआ, लेकनि इस क्षेत्र में पहल सरकार की ओर से अधकि थी, जो राजनीतकि वचिारों से प्रेरति थी।

11. मठों की सामाजकि और धर्मार्थ गतविधियिाँ

वभिन्नि ऐतहिासकि दस्तावेज़ दखिाते हैं कि मठ 16वीं-17वीं शताब्दी से पहले भी परोपकारी कार्यों में लगे हुए थे। सोलहवीं सदी के भूमि रजिस्टिर, जब मठों की भूमि और संपत्तयिों का वर्णन करते हैं, तो अक्सर गरीबों के लिए वशिष आश्रयों का उल्लेख करते हैं, जन्हिें दान या मठ की परोपकारति से सहायता दी जाती थी[752] . सेंट यूफ्रोसनिस

---

[746] 1. मकरयि. 10. पृ. 72; मोझारोव्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 7, 23; एएई. 1. सं. 358.

[747] मोझारोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 23, 30, 32। पीएसजेड. 2. सं. 867; 1649 का संहति। अध्याय 16. § 44; 20. § 70–71; 25. § 24। कुछ टाटार राजकुमारों के धर्म परविर्तन पर, देखें: वेलेमनिोव-ज़र्नोव। *ए स्टडी ऑफ़ द कासमिोव तज़ार्स*। 3 (1866)। पृ. 207–215।

[748] वोज्द्वज़िहेन्स्की, आई. द हस्टि्री ऑफ़ द रयिाज़ान हयिरार्की। पृ. 122.

[749] स्लोव्त्सोव। साइबेरयिा का ऐतहिासकि सर्वेक्षण। 1 (1836)। पृ. 58.

[750] यह पत्र यहाँ पाया जाता है: इवानोव। ववरिण। 1 (1850)। पृ. 263।

[751] एआई. 5. संख्या 69, 75; बस्त्रिोव, एफ. साइबेरयिाई क्षेत्र में पहले ईसाई (1586–1631), में: प्रावदा. 1866. 2. पृ. 377; सुमारोकोव. 'साइबेरयिा में मशिनरी कार्य', में: क्रश्चियिन रीडग्सि 1883. 9–10; 1884. 5–6.

[752] मस्कोवाइट राज्य के जनगणना रजिस्टिर। खंड 1, संख्या 1. पृष्ठ 76, 279, 611, आदि।

ने अपने मठवासी नियम में दान के लिए एक अलग अध्याय (24) समर्पित किया है; उनके नियम के अनुसार, मठों को तीर्थयात्रियों को मठ में उनके प्रवास के पहले तीन दिनों के लिए निशुल्क भोजन कराना चाहिए[753] । सौरा के नील और आर्टेमियस जैसे संन्यासियों ने अपनी रचनाओं में लिखा कि यदि किसी मठ के पास संपत्ति है, तो उसका उपयोग गरीबों की मदद के लिए किया जाना चाहिए। जोसेफाइट पाफनुटियस ऑफ बोरॉव्स्क और जोसेफ ऑफ वोल्त्स्क ने न केवल अपने मठों में गरीबों को भोजन खिलाया, बल्कि खराब फसल के वर्षों में उन्होंने ब्रेड और अन्य खाद्य पदार्थों के साथ पड़ोसी गांवों की भी मदद की। किरिलोव मठ[754] ने भी ऐसा ही किया। हमने पहले ही उल्लेख किया है कि 15 अगस्त को, परमेश्वर की माता के स्वर्गारोहण के पर्व – जो मठ की चर्च का संरक्षक पर्व है – पर जोसेफनि मठ में गरीबों में पैसे बांटे गए थे। ट्रिनिटी-सर्गीय मठ अपनी धर्मार्थ गतिविधियों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था। हर्बर्स्टीन ने (16वीं सदी के दूसरे क्वार्टर में) लिखा, 'वहाँ, एक बड़ी संख्या में लोग प्रतिवर्ष तीर्थस्थल की पूजा करने के लिए उमड़ते हैं... और चाहे कितने भी लोग इकट्ठा हो जाएँ, सभी के लिए हमेशा पर्याप्त भोजन होता है, और मठ के सेवकों को खिलाने के लिए भी हमेशा ठीक-ठाक भोजन बच जाता है, ताकि वहाँ कभी कमी या अधिशेष न हो।' विदेशियों ने अन्य मठों के धर्मार्थ कार्यों के बारे में भी लिखा[755] । 1649 के कोड के अनुसार, जो भिखारी मठ के परिसर में रहते हैं और मठ द्वारा खिलाए जाते हैं, वे धार्मिक अधिकार क्षेत्र के अधीन हैं[756] ।

काज़ान के विजय के बाद, ज़ार ने आदेश दिया कि बंदियों को ईसाई शिक्षा के लिए मठों में भेजा जाए, और नव-बपतिस्मितों को मठों के खर्च पर रखा गया[757] । 17वीं सदी में, पैट्रिआर्कल जिले में मठ की संपत्तियों से प्राप्त आय का उपयोग करके मॉस्को में 412 लोगों की क्षमता वाला गरीबों के लिए एक आश्रय स्थापित किया गया, और प्रमुख पर्वों के दिनों में चर्चों में दान वितरित किया जाता था। हर साल क्रिसमस, ईस्टर और क्षमा रविवार को, चुदोव मठ मॉस्को जेल के कैदियों को रोटी, तली हुई मछली, दलिया, क्वास और नकद उपहार भेजता था। नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटिन जॉब (17वीं सदी के अंत में) ने नोवगोरोड में गरीबों के लिए एक आश्रय, दो अस्पतालों और दो रात्रि आश्रयों को बनाए रखने के लिए डायोसीसन मठों के कोष से पर्याप्त धन भेजा[758] । मास्को के पास साव्वो-स्टोरोज़हेव्स्की मठ में, भिक्षुओं और सामान्य लोगों के लिए 48 बिस्तरों वाली दो अस्पताल कोशिकाएँ थीं। (इस युग की विशेषता बताने और यह दर्शाने के लिए कि मठ के दिनि-प्रतिदिन के जीवन में धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों और स्वयं ज़ार का हस्तक्षेप कितना तुच्छ हो सकता था, यह ध्यान देने योग्य है कि 1688 में ज़ार ने बिस्तरों की संख्या घटाकर 30 करने का आदेश दिया था[759] ।)

समस्याओं के समय के बाद, कुछ मठों में अनाथालय दिखाई देने लगे। सरकार ने उनके स्थापना का स्वागत किया, और सदी के मध्य में (1651) बड़ी संख्या में अनाथों को ट्रिनिटी-सर्गीय मठ – युद्ध में मारे गए सैनिकों के बच्चे; उस समय वहाँ 600 तक अनाथ थे, जिन्हें न केवल आश्रय और भोजन मिला, बल्कि उन्हें पढ़ना, लिखना और शिल्प कौशल सीखना भी सिखाया गया। 1636 की तारीख के एक पत्र से पता चलता है कि बड़ी संख्या में बच्चों को सोलोवेत्स्की मठ में उनके लिए विशेष रूप से बनाए गए एक घर में रखा गया था, जहाँ मठ के खर्च पर उनका पालन-पोषण किया जाता था, लेकिन बदले में उन्हें मठ के सब्जी उद्यान में हल्का काम करने के लिए कहा जाता था[760] । किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ में अनाथालय विशेष रूप से सुव्यवस्थित था। बच्चों को कोठड़ियों में रखा जाता था; उन्हें मठ से भोजन, कपड़े और ईस्टर पर उपहार मिलते थे। अनाथालय का संचालन एक विशेष भिक्षु-शिक्षक – 'अनाथों के लिए वरिष्ठ' – द्वारा किया जाता था। बच्चे विभिन्न कार्य करते थे; बड़े बच्चे बगीचे में या मठ की रसोई में शिक्षु के रूप में काम करते थे। 18–20 वर्ष की आयु तक, उन्हें पहले ही 'युवा पुरुष' (अध्याय VIII देखें) कहा जाने लगा था और मठ द्वारा उन्हें जमीन के टुकड़े दिए जाते थे, जिस पर वे अपना घर बसाते थे और साथ ही मठ के लिए कुछ कार्य करते रहते थे। कुछ सारथी बन गए; जिन्होंने कोई धंधा सीखा था, वे मठ की बस्ती में बस गए और मठ के कारीगरों में गिने गए। अनाथ मुख्य रूप से मठ के land[761] पर स्थित गांवों से आते थे।

---

[753] सेरेब्रांस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 325.

[754] माकारी। 7. पृ. 299; एआई। 1. सं. 204.

[755] हर्बर्स्टीन। मोस्कोविया। वी. एफ. डी. स्टीनन द्वारा संपादित (1926); पृ. 92; चेतेनिया। 1884. 4. पृ. 24.

[756] फिलारेत। रूसी चर्च का इतिहास। खंड 3, पृ. 211.

[757] DAI. 1. संख्या 149; ज्वेरींस्की. 3. संख्या 2231; हेस्सेन. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 61.

[758] फिलारेत. उद्धृत ग्रंथ. खंड 4, पृ. 240; रीडगिस. 1863. खंड 4, परिशिष्ट, पृ. 22.

[759] बेलोकुरोव। सामग्री। पृ. 163, 166.

[760] अर्सेनी. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 3; डोसीफे. सोलोवेत्स्की मठ का वर्णन. खंड 1 (1853). पृ. 267 आदि.

[761] Petrov, V. 'Monastic Rags', in: Deeds and Days. 1923. 3.

यहाँ केवल कुछ व्यक्तिगत मामलों का उल्लेख किया गया है, जो निश्चित रूप से, मठ के धर्मार्थ कार्यों की संपूर्ण तस्वीर नहीं दे सकते, लेकिन ये भी इस बात का संकेत देते हैं कि इस संबंध में बहुत अच्छा काम किया गया था। हम पहले ही 'समय की मुसीबतों' (Time of Troubles) और युद्ध के समय में विभिन्न मठों के कोषागारों से किए गए विशाल योगदानों के बारे में लिख चुके हैं; ये योगदान बहुत बड़ी रकमों के बराबर थे। इस संबंध में, राज्य और समाज दोनों को मठों की संपत्तियों से लाभ हुआ।

अध्याय X. 16वीं–17वीं शताब्दियों का मठवाद और चर्च साहित्य।

1. रक्षात्मक और विवादपरक लेखन। वोल्त्स्क के हेगुमेन जोसेफ

16वीं शताब्दी के पहले छमाही में मुस्कोवी के धार्मिक और राजनीतिक जीवन के लिए, धार्मिक और राजनीतिक पत्रकारिता के क्षेत्र में मठवासी समुदाय के प्रतिनिधियों की गतिविधियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण थीं, हालांकि मठवासी समुदाय अन्य क्षेत्रों में भी सक्रिय था। धर्मनिरपेक्षता की प्रक्रिया के बावजूद, मठवासी समुदाय ने कई उल्लेखनीय व्यक्तियों को जन्म देना जारी रखा, जिन्होंने या तो देश के चर्च संबंधी जीवन में सक्रिय रूप से भाग लिया या चर्च संबंधी जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार लिखित रूप में रखना अपना कर्तव्य माना। धार्मिक जिम्मेदारी की यह भावना उन संतों में विशेष रूप से स्पष्ट थी, जिन्हें पंद्रहवीं शताब्दी के अंतिम चौथाई और सोलहवीं शताब्दी के पहले आधे हिस्से में, जब श्रद्धालुओं के विभिन्न वर्गों के बीच खतरनाक धार्मिक अशांति उभरी, तो रक्षात्मक ग्रंथ लिखने के लिए मजबूर होना पड़ा। एक ओर, यह अशांति विदेशी प्रभावों के बिना नहीं उत्पन्न हुई; दूसरी ओर, फिर भी इसे चर्च जीवन की विशुद्ध रूसी परिस्थितियों द्वारा समझाया जा सकता है। चूंकि उस समय उभरी नई हलचलों ने ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षाओं से एक स्पष्ट विचलन दिखाया, इसलिए धार्मिक पदानुक्रम और मठवासी समुदाय के प्रतिनिधियों ने तुरंत इन विधर्मी विचलनों का जोरदार मुकाबला करना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप, धर्मरक्षात्मक और विवादपरक कृतियाँ सामने आईं, जो अपने लेखकों के धर्मशास्त्रीय ज्ञान की गवाही देती हैं और साथ ही, धार्मिक हलकों के भीतर धार्मिकता की विशिष्ट विशेषताओं को भी दर्शाती हैं।

यहूदीकरण करने वालों की विधर्मी आंदोलन, जिसका उल्लेख पहले ही हो चुका है (अध्याय IV, 3), इसने व्यापक प्रसार का खतरा पैदा कर दिया और चर्च को इसके खिलाफ एक दृढ़ संघर्ष करने के लिए मजबूर कर दिया, और यह और भी अधिक आवश्यक था क्योंकि नोवगोरोड के कुछ पुरोहित इस विधर्म में शामिल थे, और यहां तक कि मेट्रोपॉलिटन ज़ोसिमा (1490–1494) ने भी यहूदीकरणवादियों के विचारों की ओर एक निश्चित झुकाव दिखाया था[762] ।

इस संप्रदाय के सदस्यों और उसकी शिक्षाओं के खिलाफ संघर्ष में, वोल्त्सक के हेगुमेन जोसेफ ने एक विशेष भूमिका निभाई - एक विवादकार, प्रतिरक्षक और इस विधर्म के सबसे सक्रिय विरोधी के रूप में। उन्होंने एक बहुत ही विस्तृत ग्रंथ रचा, जिसे बाद में *द एनलाइटनर* (प्रकाशक) के नाम से जाना गया। यह पुस्तक, निस्संदेह, पुराने रूसी चर्च साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण कृतियों में से एक है, जैसा कि रूसी इतिहासकारों[763] और हाल के समय में होल्ज़वार्ट[764] द्वारा किए गए गहन शोध, दोनों द्वारा स्थापित किया गया है।

'प्रकाशक' में 16 अध्याय, या 'शब्द' हैं, और यह दो भागों में विभाजित है। पहले 12 अध्याय विवादात्मक और रक्षात्मक खंड बनाते हैं, जबकि अंतिम चार विधर्मीयों से लड़ने के उपायों पर चर्चा करते हैं। 'द एनलाइटनर' वह

---

[762] इस धार्मिक आंदोलन के बारे में इतिहास के लिए, देखें: गेहरिग, योह. *Die Sekten der russischen Kirche* (1898). पृ. 11–16; अर्न्ड्ट, ए., में: *Z. f. Kath. Th.* 38 (1914). कोस्तोमारोव, एन. *Russische Geschichte in Biographien*. लाइपज़िग, 1886. पृ. 292–322; मकारी. 6. पृ. 81–118; गोलुबिन्स्की. 2. 1. पृ. 560–607; पानोव. 'यहूदीकरणकर्ताओं का विधर्म', में: ZhMNP. 1877. 2; निकितिन्स्की. वेलिकी नोवगोरोद में चर्च के आंतरिक इतिहास पर एक निबंध, ibid. 1879. 7 में; इल्यिन्स्की, एफ. 'मेट्रोपॉलिटन ज़ोसिमा और डीकन फ्योडोर कुरित्सिन', BV. 1905. 10 में। पृ. 212–235; डोलगोव, एस. 'यहूदीकरणवादियों के खिलाफ 1490 की मास्को परिषद', में: चटेनिया. 1902. 3. पृ. 113; सेडेल्निकोव, ए. 'इन्क्विजीशन पर 1490 की परिषद', में: पुरानी रूसी साहित्य पर आयोग की कार्यवाही. 1 (1932). पृ. 33–58: और साथ ही: *Religion in Geschichte und Gegenwart*. 4 (1930). पृ. 2159–2165 (त्रुटियों सहित); एक पुरानी कृति: सर्वट्स्की। *An Attempt at a Study of the Heresy of the Novgorod Heretics*, in: *Prav. ob.* 1862. 6–8, – अब अप्रचलित है।

[763] माकारी। 2रा संस्करण। पृ. 7, 184; गोलुबिन्स्की। खंड 2, संख्या 1, पृ. 606; खंड 2, संख्या 2, पृ. 219। तुलना करें पी. ज़ेमेन्स्की के कार्य (गुमनाम रूप से प्रकाशित) से, जिसकी आज भी अपनी कीमत कम नहीं हुई है, 'प्रकाशक, वोलोत्स्क के पूजनीय जोसेफ', में: Prav. sob. 1859. 3; खुरुश्चेव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 133.

[764] Holzwart. Op. cit., पृ. 264.

प्रमुख स्रोत है जिससे यहूदीकरणकर्ताओं[765] के विचारों का एक विचार प्राप्त किया जा सकता है; साथ ही, यह हमें जोसेफ की धार्मिक शिक्षा और सामान्य रूप से उसके युग के धार्मिक ज्ञान की एक अंतर्दृष्टि भी देता है।

[766]पहले प्रबंध में, जोसेफ उन विधर्मियों का खंडन करते हैं जो पवित्र त्रिमूर्ति से इनकार करते थे और पवित्र त्रिमूर्ति के रूढ़िवादी सिद्धांत को प्रस्तुत करते हैं, जिसे उन्होंने लगभग शब्दशः मोंटेनेग्रो के निकोन (11वीं सदी) के लेखों से लिया है। यहूदी-उन्मुख समूह का पवित्र त्रिमूर्ति से इनकार, ईश्वर के पुत्र के अवतार से इनकार से भी जुड़ा था: उनके लिए, मसीह केवल मूसा जैसे एक नबी हैं। चर्च की उनके पुनरुत्थान पर शिक्षा को भी यहूदीकरण करने वालों ने खारिज कर दिया था। जोसेफ ने अपनी दूसरी प्रवचन को इस त्रुटि को समर्पित किया है, जिसमें, संप्रदायियों को उनके ही तर्कों से परास्त करने के लिए, वह पुराने नियम के नबियों के उद्धरणों का सहारा लेते हैं। तीसरे प्रवचन में, लेखक उन दावों का खंडन करते हैं कि किसी को केवल मूसा की व्यवस्था का पालन करना चाहिए, जबकि चौथे प्रवचन में वह ईश्वर की दैवीय व्यवस्था और उनकी सर्वशक्तिमत्ता पर चर्चा करते हैं, जिन्हें यहूदीकरण करने वालों ने नकार दिया था। इसके बाद के तीन प्रबंध (पाँचवाँ, छठा और सातवाँ) मुख्य रूप से प्रतिमाओं की पूजा से संबंधित हैं, जिसमें जोसेफ चर्च फादर्स (जॉन क्रिसोस्टोम, जॉन ऑफ़ डेमास्कस, एंड्रयू ऑफ़ क्रीट, जॉन क्लाइमैकस, और अन्य) के कई उद्धरणों का सहारा लेते हैं। सातवाँ प्रवचन विशेष रूप से विस्तृत है, जिसमें जोसेफ विभिन्न विषयों के आइकन (चित्रों) के बारे में स्पष्टीकरण प्रदान करते हैं और सामान्य रूप से आइकन की पूजा के अर्थ पर चर्चा करते हैं। उनके स्पष्टीकरण पूरी तरह से मौलिक नहीं हैं (वे यहाँ आइकन-विरोधियों के खिलाफ दमास्कस के प्रसिद्ध लेखों से प्रेरणा लेते हैं), लेकिन यह प्रवचन अपनी शैली की शुद्धता और स्पष्टता के साथ-साथ उसमें व्यक्त आस्था की मजबूती के लिए भी उल्लेखनीय है। नौवाँ और दसवाँ अध्याय उन लोगों के तर्कों का खंडन करने के लिए समर्पित हैं जिन्होंने प्रेरितों की रचनाओं और चर्च के पिता के कार्यों को अस्वीकार कर दिया था। ग्यारहवें और बारहवें प्रवचनों में, जोसेफ मठवाद के धार्मिक महत्व को समझाते हैं।

ये 12 प्रवचन, जो *द एनलाइटनर*[767] के धर्मशास्त्रीय खंड का गठन करते हैं, जोसेफ के विद्वता का भी प्रदर्शन करते हैं। वह लगातार पुराने और नए नियम का संदर्भ देते हैं और अक्सर पवित्र धर्मग्रंथ से उद्धरण देते हैं। पुरानी वाचा से लिए गए अनगिनत उद्धरण जोसेफ की वाद-विवाद में निपुणता को प्रमाणित करते हैं: वह यहूदीकरण करने वालों के दावों का खंडन करते हैं, जिन्होंने नए नियम को अस्वीकार कर दिया था, पुरानी वाचा का हवाला देकर, जिसे वे स्वयं मान्यता देते थे। अपने धार्मिक और कट्टरपंथी विचारों में, जोसेफ न केवल पवित्र धर्मग्रंथों, बल्कि सभी 'दिव्य लेखों' की अचूकता को स्वीकार करते हैं, जिनमें वे पवित्र पिताओं की कृतियों, शहीदों के कार्यों, संतों के जीवन, और यहां तक कि कुछ एपोक्रिफ़िल लेखों को भी शामिल करते हैं[768] । इस संबंध में, जोसेफ हमें एक विशिष्ट पुराने रूसी धर्मशास्त्री के रूप में दिखाई देते हैं, जो दृढ़ विश्वास के साथ अपने धर्म का प्रचार करते हैं, एक ऐसे प्राचीन रूस के व्यक्ति के रूप में जिसके लिए पवित्र धर्मग्रंथ और चर्च की परंपरा का समान महत्व और समान अधिकार है; जोसेफ़ धर्मशास्त्र, पूजा और यहां तक कि संस्कार संबंधी परंपरा को एक-दूसरे से अलग नहीं करते; उनके लिए ये घनिष्ठ रूप से गुंथे हुए हैं और, एक साथ मिलकर, धार्मिक शिक्षा और विश्वास का सार बनाते हैं। यह उल्लेखनीय है कि जोसेफ आइकन की पूजा के विषय को तीन पूरे अध्याय (पाँचवाँ, छठा और सातवाँ) समर्पित करते हैं, जिससे इस बात पर जोर दिया जाता है कि ऑर्थोडॉक्स दुनिया के धार्मिक जीवन में यह कितना महत्वपूर्ण था।

---

[765] यह नहीं कहा जा सकता कि इस आंदोलन की धार्मिक जड़ों को निर्णायक रूप से स्पष्ट किया गया है। वी. बोचानोव्स्की ('14वीं-16वीं शताब्दियों के रूसी स्वतंत्र विचारक', *नोवो स्लोवो*, 1896, संख्या 12, में, पृ. 170) यहूदीकरण करने वालों के विचारों को हुसीतों के विचारों से जोड़ते हैं; दूसरी ओर, एफ. इलिंस्की, उन्हें बोगोमिल्स के विचारों तक ट्रेस करते हैं (15वीं सदी के रूसी बोगोमिल्स, बीवी. 1905. 6. पृ. 447)। मूल रूप से, इस संप्रदाय के विचारों में एक विशिष्ट तर्कवादी चरित्र था; उनका सिद्धांत मुख्य रूप से पुराने नियम पर आधारित था और इसने त्रिमूर्ति और मसीह के व्यक्तित्व पर नए नियम की शिक्षाओं के साथ-साथ क्रूस और प्रतिमाओं की पूजा को भी खारिज कर दिया था; इसके अलावा, वे चर्च पदानुक्रम और संन्यासवाद के विरोधी थे। विद्वतापूर्ण बहस के लिए, यह भी देखें: पेरेत्ज़, वी. '15वीं सदी के यहूदीकरणकर्ताओं और उनके साहित्य पर नए अध्ययन', में: कीव विश्वविद्यालय, 1908, संख्या 10; बेदेरज़ित्स्की. 'यहूदीकरणकर्ताओं से संबंधित साहित्य पर टिप्पणियाँ', में: रूसी भाषाशास्त्रीय जर्नल, 1911, संख्या 3–4; वही. 'यहूदीकरणकर्ताओं की साहित्यिक गतिविधि', ZhMNP, 1912, संख्या 3 में; साथ ही स्पेरेन्स्की, उद्धृत ग्रंथ, और पेटुखोव, उद्धृत ग्रंथ।

[766] मकारिय। दूसरी संस्करण, खंड 7, पृ. 187।

[767] *प्रोस्वेटिटेल* (चौथा संस्करण, काज़ान, 1904) के प्रकाशक ने यह विचार व्यक्त किया कि पहले 11 शब्द अंतिम पाँच (12–16) से पहले, 1490 की परिषद के तुरंत बाद रचे गए थे (पृ. 15)।

[768] 'पुरानी और नई वाचा की रचनाओं के अलावा, जिनमें वह अपोक्रीफल और गैर-कैननिक पुस्तकें जोड़ता है, जोसेफ पितरों के कार्यों, शहीदों के कृत्यों और संतों के जीवन को अचूक मानता है… हॉल्ज़वार्ट तर्क देते हैं, 'दिव्य धर्मग्रंथों और चर्च की परंपरा की अचूकता, और इस संबंध में किसी भी प्रकार की आलोचना की अस्वीकृति, जोसेफ के लिए स्वयंसिद्ध हैं।' (हॉल्ज़वार्ट। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 266, 268); तुलना करें जोसेफ की शिक्षाओं के व्यक्तिगत खंडों की सूची से (उसी में, पृ. 293, 311)।

बाद में, हम देखेंगे कि कैसे 16वीं सदी के रूसी धार्मिकता के एक अन्य प्रवक्ता, एल्डर आर्टेमी—जिनके ईसाई विचार कई मायनों में जोसेफ से भिन्न थे—ने समान उत्साह के साथ प्रतिमाओं की पूजा का बचाव किया, और उसे उतनी ही बड़ी धार्मिक महत्वता दी जितनी कि सेंट जोसेफ ने दी थी।

डॉगमा और पूजा का एक एकल संपूर्ण में यह विलय मॉस्कोविट रूस की धार्मिकता की एक विशिष्ट विशेषता है। 17वीं सदी के संप्रदायिक विभाजन के दौरान, ऐसी पहचान दुखद घटनाओं को जन्म देगी, जिसने अपने विश्वासों में अटूट लोगों को शहादत की ओर धकेल दिया। इसे औपचारिकता कहना और इसका श्रेय धार्मिक जीवन की कठोरता को देना गलत होगा। इस प्रकार की धार्मिकता, जिसमें सांसारिक में अलौकिक और मानवीय में दैवीय देखा जाता है, की व्याख्या और गहन अध्ययन की अभी भी आवश्यकता है।

'प्रकाशक' के अंतिम चार शब्द विधर्म से लड़ने के साधनों को समर्पित हैं। वे एक तरह से जोसेफ के व्यक्तित्व का वर्णन करते हैं। ठीक इन्हीं विचारों ने एक बहुत ही तीखी बहस को जन्म दिया कि चर्च और धार्मिक पदानुक्रम, साथ ही धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों ने विधर्म को खत्म करने और इसके उकसाने वालों को दंडित करने के लिए क्या कर सकते हैं और क्या करना चाहिए। इसके अलावा, यह सवाल उठा कि क्या धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के पास धार्मिक स्वतंत्र विचारकों - विधर्मियों - के खिलाफ कार्रवाई करने का अधिकार था। जोसेफ इन दोनों सवालों का जवाब हाँ में देते हैं। एक ईसाई शासक के रूप में जो अपना अधिकार ईश्वर से प्राप्त करता है, ग्रैंड ड्यूक धर्म की शुद्धता को विधर्मी विकृतियों से सुरक्षित रखने और विधर्मियों को दंडित करने के लिए बाध्य है। यह दृष्टिकोण चौदहवें प्रवचन में विशेष रूप से जोरदार तरीके से व्यक्त किया गया है, जिसमें जोसेफ मांग करते हैं कि ग्रैंड ड्यूक विधर्मियों को 'क्रूर दंड और मृत्यु' के अधीन करे[769] ।

जोसेफ तीन विशिष्ट पत्रों में विधर्मियों को दंडित करने पर भी जोर देते हैं। बिशप निफॉन (1493) को लिखे एक पत्र में जोसेफ लिखते हैं कि विधर्मी न केवल कारावास बल्कि मृत्युदंड के भी पात्र हैं; एकमात्र अपवाद वे बिशप हैं जिन्हें विधर्म का दोषी पाया गया हो[770] . धर्मद्रोहियों के खिलाफ निर्णायक कदम उठाने के लिए ग्रैंड प्रिंस इवान तृतीय को प्रेरित करने हेतु, जोसेफ ने 1504 में अपने आध्यात्मिक सलाहकार को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने फिर से धर्मद्रोहियों की सजा और फांसी का उल्लेख किया[771] । वह इसी विषय पर ग्रैंड प्रिंस वासिली (1505 के बाद) को लिखे एक पत्र में भी लिखते हैं, जिसमें वे यह दावा करते हैं कि पापियों और विधर्मियों को मानव हाथों और चर्च द्वारा बहिष्कार, दोनों से नष्ट और दंडित किया जा सकता है: ये एक ही हैं[772] । ऐसे विचार जोसेफ के अन्य अनुयायियों द्वारा भी साझा किए गए थे। उदाहरण के लिए, मेट्रोपॉलिटन डैनियल, अपनी रचना 'प्रार्थनाओं का पालन कैसे किया जाए और उन्हें सम्मान कैसे दिया जाए' में, धर्मनिरपेक्ष प्रार्थना की सहायता से विधर्मियों से लड़ने की आवश्यकता के बारे में विस्तार से लिखते हैं[773] ।

यहूदीकरण करने वालों के विधर्म से लड़ने के तरीकों पर जोसेफ के विचारों ने, विशेष रूप से विधर्मियों को मृत्युदंड देने की उनकी जोरदार मांग ने, अन्य मठवासी हलकों में, अर्थात् वोल्गा के पार के मठों के गैर-स्वामित्ववादियों के बीच, तीव्र असंतोष पैदा किया। वे इसे केवल जोसेफ के तर्कों की आलोचना करने का ही नहीं, बल्कि इस मामले पर अपनी दृष्टिकोण व्यक्त करने का भी अपना कर्तव्य मानते थे। 'जोसेफ के विरुद्ध वोल्गोदा मठों के बुजुर्गों का प्रबंध' शायद मठ-राजकुमार वासियन के मार्गदर्शन या सहायता से रचा गया था[774] । 'प्रबंध' की प्रस्तावना ('वोलोग्दा के सभी मठों के बुजुर्ग एकत्रित हुए और इस कार्य को अंजाम दिया') से यह स्पष्ट है कि गैर-स्वामित्ववादकों की स्थिति, अपने अंतिम रूप में, प्रारंभिक चर्चाओं का परिणाम थी। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गैर-अधिग्रहणकर्ताओं का मानना है कि 'अपश्चात्तापी विधर्मी' और 'जो पश्चात्ताप करते हैं और अपने ही विधर्म को शाप देते हैं' के बीच अंतर किया जाना चाहिए। जहाँ पहले वाले अधिकतम कारावास के पात्र हैं, वहीं बाद वालों को 'ईश्वर की कलीसिया फैले हाथों से ग्रहण करती है', क्योंकि 'ईश्वर का पुत्र पापियों के लिए अवतार हुआ, जो नाश हो रहे थे उन्हें बचाने के लिए आया', 'और हमें, इस नई कृपा में, प्रभु ने एक मसीह-प्रेमी

---

[769] 'प्रोस्वेटिएटेल' (1857)। पृ. 539, 597, 601, 604, 588.

[770] निफॉन को पत्र, में: RIB. 6. पृ. 825.

[771] रीडिंग्स. 1847. 1.

[772] डीआरवी. 16 (1791). पृ. 423–424.

[773] झमाकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 406–424 (डैनियल का एक कार्य)।

[774] डीआरवी. 16 (1791). पृ. 424, 428; पत्र के मसौदे में वासियन की संलिप्तता पर, तुलना करें: खुरुशेव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 188; झमाकिन. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 69.

एकता प्रकट की है, कि हम भाई को भाई के विरुद्ध दोषी न ठहराएं, बल्कि मानव पापों का न्याय केवल एक परमेश्वर पर ही छोड़ दें'।

जहाँ वोलगा के पार के बुजुर्गों की 'शास्त्र' कहें तो, एक गंभीर घोषणा थी, वहीं राजकुमार-भिक्षु वासियन ने नंदिति विधर्मीयों[775] को व्यावहारिक सहायता प्रदान करने और गैर-स्वामित्ववादियों के विचारों को फैलाने का प्रयास किया। स्वयं एक स्वाभाविक वाद-विवादकर्ता, वासियन लिखते हैं कि पहले उन लोगों को वचन की शक्ति से सही मार्ग पर लाने का प्रयास करना चाहिए जो भटक गए हैं—अर्थात्, जाहिर तौर पर, उपदेश और वाद-विवाद के माध्यम से। वोलगा क्षेत्र के बुजुर्गों की अपनी 'लिपि' की तरह, वासियन चर्च के इस अधिकार और कर्तव्य को स्वीकार करते हैं कि वह अविचल विधर्मियों को धार्मिक बहिष्कार के अधीन करे, जबकि धर्मनिरपेक्ष अधिकारी अपनी सत्ता का प्रयोग करते हुए उन्हें कैद या मृत्युदंड दे सकते हैं; लेकिन यदि, जैसा कि वासियन का तर्क है, जिन विधर्मियों ने पहले ही पश्चाताप कर लिया है, उन्हें फांसी दी जाती है, वे अब विधर्मी नहीं बल्कि शहीद हैं, और इन फांसीयों का पाप उनके जल्लादों पर पड़ता है[776] ।

यह तुरंत यह सवाल खड़ा करता है: तो फिर, यह विवाद क्यों है, जिसमें विरोधी गुटों के प्रतिनिधि, जोसेफ और वासियन—अपने-अपने स्वभाव के प्रति सच्चे—अपने विचारों को इतनी तीव्रता से प्रस्तुत करते हैं, यदि अंततः दोनों ही फिर भी विधर्मियों की फांसी को अनुमेय मानते हैं? हालाँकि पहली नज़र में उनके रुख समान प्रतीत होते हैं, वास्तव में विधर्मियों के प्रति उनका दृष्टिकोण एक जैसा नहीं, बल्कि बिल्कुल विपरीत है।

जोसेफ के लिए, एक ईसाई जो झूठे सिद्धांत के रास्ते पर भटक गया है, उसे ईसाई समुदाय से अपरिवर्तनीय रूप से निकाल दिया जाता है; अपनी धार्मिक औपचारिकतावाद के कारण, उसमें उस भटकी हुई आत्मा को मदद का हाथ बढ़ाने का एक और प्रयास करने की आंतरिक शक्ति की कमी थी। हालाँकि, वासियन सहित, गैर-स्वीकारकर्ताओं के लिए, धर्मद्रोही तब तक ईसाई बने रहते थे जब तक कि उन्हें चर्च से बहिष्कृत नहीं कर दिया जाता था; इन भटके हुए आत्माओं की मदद करना चर्च और सभी ईसाइयों का कर्तव्य था। यहाँ, व्यवहार में, प्रेम को प्रकट किया जाना चाहिए - जो मसीह की शिक्षा की सर्वोच्च, अनुग्रह-पूर्ण शक्ति है। हालांकि, विधर्मियों के प्रति जोसेफ का रवैया उसी कठोरता और अड़ियलपन को दर्शाता है जो दोषी भिक्षुओं की सजा़ से संबंधित उनके मठवासी चार्टर के नियमों की विशेषता है - दोनों ही मामलों में, भटक गए व्यक्ति की आत्मा को समझने और उसकी मुसीबत में उसकी मदद करने में अनिच्छा है। इस प्रकार की औपचारिक धार्मिक कठोरता केवल जोसेफ का ही लक्षण नहीं है। यह गुण बाद के समय में भी रूसी धार्मिकता में बहुत बार स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। यह निकोन का भी लक्षण था, यद्यपि वह जोसेफ को बहुत नापसंद करता था, साथ ही अव्वाकुम, पैट्रिआर्क जोआकिम, और रूसी विभाजन के लगभग सभी प्रमुख व्यक्तियों का भी।

एक और मुद्दा है जिस पर जोसेफ और गैर-अधिग्रहणकर्ताओं के बीच मतभेद स्पष्ट हो जाते हैं। भ्रांतिवाद से लड़ने के तरीके खोजते हुए, जोसेफ ने चर्च और राज्य के बीच कोई अंतर नहीं किया, उन्हें केवल अनुशासन और दंड देने की शक्ति वाले प्राधिकरणों के रूप में देखा। उनके बीच अंतर न कर पाने की यह विफलता, राज्य और चर्च के बीच संबंध, उनके पारस्परिक समर्थन, और चर्च के प्रति ज़ार की सेवा तथा ज़ार के प्रति चर्च की सेवा पर उनके विचारों के केंद्र में है। हमारे अनुसार, यहीं पर जोसेफवाद और 'मास्को - तीसरी रोम' की अवधारणा के बीच गंभीर मतभेद निहित है, जिसमें धर्मनिरपेक्ष और चर्च प्राधिकरण के अधिकारों और कर्तव्यों के निश्चित विलय की पूर्वधारणा नहीं थी; क्योंकि फिलोथियस की विचारधारा ने ऑर्थोडॉक्स शासक के अधिकारों के बजाय उसके कर्तव्यों को विशेष महत्व दिया। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि फिलोथियस की रचनाएँ, जिनमें उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए, ऐसे समय में सामने आईं जब विधर्मियों के खिलाफ जोसेफ की रचनाएँ व्यापक रूप से प्रसारित हो रही थीं और जब यहूदीकरण करने वालों के विद्रोह से जुड़ी घटनाओं की यादें मॉस्को में अभी भी ताज़ा थीं, क्योंकि भिक्षु फिलोथियस उन घटनाओं का लगभग समकालीन था। चूंकि उन्होंने विधर्म के खिलाफ संघर्ष में एक ऑर्थोडॉक्स शासक के विशेष अधिकारों और कर्तव्यों पर अपने स्वयं के विचारों पर जोर नहीं दिया—या वास्तव में इस मुद्दे से पूरी तरह से बच गए—उनके विचार शायद जोसेफ के विचारों से मेल नहीं खाते थे। इस मामले पर जोसेफ के विचारों और गैर-अधिग्रहणकर्ताओं के विचारों की हमारी तुलना का सारांश यह है कि गैर-अधिग्रहणकर्ताओं ने विधर्मियों के लिए निर्वासन को उच्चतम धार्मिक दंड माना और उन उपायों से खुद को दूर रखा जो धर्मनिरपेक्ष अधिकारी उनके खिलाफ लागू कर सकते थे।

---

[775] देखें: झमाकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 69; परिशिष्ट। 10, पृ. 506।

[776] संग्रहित कानून, 1863, खंड 3, पृ. 199, 201, 204.

धर्मद्रोह और धर्मद्रोहियों के प्रति इसी तरह का दृष्टिकोण उनके लेखों में एल्डर आर्टेमियस[777] द्वारा व्यक्त किया गया था। बाद में, जब आर्टेमियस लिथुआनिया में रह रहे थे और वहाँ के लूथरन के खिलाफ उन्होंने रक्षणात्मक और विवादात्मक ग्रंथों की एक श्रृंखला लिखी, उन्होंने बार-बार यह दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि विधर्म के धार्मिक और मनोवैज्ञानिक कारण धार्मिक खोजों में निहित हैं, जो व्यक्तियों के जीवन और पूरी चर्च समुदाय दोनों में अपरिहार्य हैं, और यह मानव स्वतंत्र इच्छा की अभिव्यक्ति है, जो अच्छाई और बुराई के बीच के चुनाव में डगमगाती है। आर्तेमी के दृष्टिकोण में, मनुष्य की पतित प्रकृति का पाप ही मनुष्य की त्रुटि के मार्ग पर आसानी से भटकने की प्रवृत्ति के लिए एक पूर्वापेक्षा है[778] । आर्तेमी के तर्क, जो एक तरह से गैर-स्वामित्व धारकों की प्रवृत्ति को समाप्त करते हैं, में उस युग की धार्मिकता के लिए कुछ असामान्य है, जब धार्मिक प्रश्नों को आमतौर पर अत्यधिक औपचारिक तरीके से हल किया जाता था। धार्मिक जीवन की प्रक्रिया की मनोवैज्ञानिक खोज की ओर उनका झुकाव, आर्टेमियस को सोरा के एल्डर नीलस के करीब लाता है। आर्टेमियस और नीलस के विचार चर्च फादर्स के प्रभाव को दर्शाते हैं, और कई मुद्दों पर उनके बीच एक निश्चित आध्यात्मिक समानता स्पष्ट है; आर्टेमियस पर नीलस का प्रभाव भी ध्यान देने योग्य है, लेकिन आर्टेमियस की रचनाओं में ऐसी विषय-वस्तु भी प्रकट होती है जो विशेष रूप से नीलस की कृतियों में परिलक्षित नहीं होती है। इस पर नीचे चर्चा की जाएगी; फिलहाल, आर्टेमी की शख्सियत पर और प्रकाश डालने के लिए, आइए हम उसकी जीवनी की अधिक विस्तार से जांच करें, जो तथाकथित मटवे बशकिन के धर्मद्रोह से जुड़ी हुई थी, जो जोसेफाइट्स और नॉन-अक्विरिज़िट्स के बीच विवाद के इतिहास का अंतिम अध्याय बन गई।

एक ओर, बाशकिन का मामला आर्टेमी के मामले की पृष्ठभूमि बिना; दूसरी ओर, बाशकिन का धर्मद्रोह यह दर्शाता है कि आधिकारिक रूढ़िवादी धर्म के भीतर भी धार्मिक खोजें और उभरती हुई धार्मिक movements थीं, और यह कि 16वीं सदी के रूसी ने एक निश्चित आध्यात्मिक असंतोष का अनुभव किया जिसने उसे अपने चर्च के बाहर अपने सवालों के जवाब खोजने के लिए मजबूर किया। हालांकि यहूदीकरण करने वालों और मट्वे बाशकिन के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है, फिर भी वे कलीसियाई परंपरा को अस्वीकार करने में एकजुट हैं।

बाशकिन का जन्म एक अमीर परिवार में हुआ था और अपने समय के हिसाब से वह बहुत पढ़ा-लिखा व्यक्ति था। पवित्र शास्त्र पढ़ते समय, वह विभिन्न प्रश्नों और उलझनों से ग्रस्त हो गया। इस मानसिक स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता खोजते हुए, वह मास्को के एक पादरी के पास गया और उसने पाप-स्वीकार के दौरान पवित्र शास्त्रों के विभिन्न अंशों के बारे में अपनी शंकाएँ उसके सामने रखीं। बश्किन के लगातार सवाल करने से पुरोहित चकित रह गया, जो शायद इतने अध्यात्मिक रूप से अपरिपक्व लोगों का पाप-स्वीकार सुनने का आदी नहीं था, और उसने बश्किन की शिकायत फादर सिल्वेस्टर से करने का फैसला किया, जो ज़ार के करीबी थे। और इस तरह यह पूरा मामला उजागर हो गया। बाशकिन और उसके कुछ समान विचारधारा वाले अनुयायियों से पूछताछ की गई, और 1553 में मास्को में आयोजित परिषद में, बाशकिन ने अपना 'विधर्मी सिद्धांत' प्रस्तुत किया[779] । परिषद में उपस्थित समकालीन लोगों की गवाहियों से बाशकिन के कबूलनामों की तुलना करके, उनके शिक्षण को इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है: बाशकिन इस विचार का बचाव करते थे कि पवित्र धर्मग्रंथ – सुसमाचार और प्रेरितों के पत्र – की व्याख्या किसी की अपनी समझ के अनुसार करना संभव और आवश्यक है। इसी आधार पर, बाशकिन ने चर्च की परंपरा और पवित्र पिताओं की शिक्षाओं को खारिज कर दिया; डॉगमैटिक सिद्धांत को खारिज करके, उन्होंने परिषदों के फरमानों को भी मान्यता देने से इनकार कर दिया। उन्होंने संपूर्ण ख्रिस्तोलॉजिकल सिद्धांत का खंडन किया: बाशकिन के अनुसार, परमेश्वर का पुत्र परमपिता परमेश्वर के समान नहीं है, और इसलिए ईसाइयों को अपनी प्रार्थनाओं में केवल पिता को ही संबोधित करना चाहिए; उसके लिए, अवतार और मसीह का उद्धारकारी कार्य भी अस्तित्व में नहीं था। कलीसिया केवल विश्वासियों का एक स्वतंत्र समुदाय है; पश्चाताप और यूखरिस्त संस्कार नहीं हैं, और यूखरिस्त में विश्वासियों को साधारण रोटी और दाखमधु दी जाती है; पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप आवश्यक नहीं है – विश्वासियों के लिए, जीवन में नैतिक मानकों का पालन करना ही काफी है, और पूजा की कोई आवश्यकता नहीं है। बाशकिन ने संतों, क्रूस और आइकन (चित्रों) की पूजा का भी खंडन किया।

बाशकिन की विधर्म में मूल रूप से यहूदीकरण करने वाले विधर्मियों के समान ही तर्कवादी विचार शामिल थे। 1553 की परिषद ने यहूदीकरण करने वाले विधर्मियों को दी गई सज़ाएँ नहीं लगाईं: बाशकिन और उसके समान

---

[777] एएई. खंड 1, संख्या 239, पृ. 253.

[778] आरआईबी. 4. पृ. 1221, 1384, 1232.

[779] बाशकिन के विचारों पर: AAE. खंड 1, संख्या 239, 238. मकारी. दूसरी संस्करण, खंड 6, पृ. 250–258; गोलुबिन्स्की. खंड 2, संख्या 1, पृ. 821–825

विचारधारा वाले अनुयायियों को आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई। पूछताछ के दौरान, बाशकिन ने स्वीकार किया कि उसने अपनी शिक्षाएँ 'लिथुआनियाई लोगों' से बातचीत किए बिना नहीं बनाई थीं। चूँकि उस समय लिथुआनिया में कैल्विनवाद और सोसिनियनवाद व्यापक थे, यह स्पष्ट है कि बाशकिन का स्वतंत्र चिंतन पश्चिमी प्रभाव में था[780] ।

बाशकिन और उसके अनुयायियों की पूछताछ के दौरान यह बात सामने आई कि वह वोल्गा के पार के रेगिस्तानों के कुछ संतों के संपर्क में था और उसने उनके साथ विभिन्न मामलों पर चर्चा की थी। वरिष्ठ आर्टेमी का नाम लिया गया। यह पूछताछ के लिए परिषद में उसे बुलाने के लिए काफी था। गैर-स्वामित्ववादियों के विचारों का एक उत्साही प्रचारक, आर्टेमी, जोसेफाइट-समर्थक पदानुक्रम के लिए एक काँटा था। ट्रिनिटी-सर्गीय मठ में मठाधीश रहते हुए, जहाँ आर्टेमी ने मठवासी जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया था, उसने कई दुश्मन बना लिए थे जो उत्पन्न हुई स्थिति का फायदा उठाने के लिए उत्सुक थे।

1551 के अंत या 1552 की शुरुआत में, आर्टेमी ने मठाधीश के पद से इस्तीफा दे दिया और ट्रांस-वोलगा क्षेत्र में एक संन्यास आश्रम में चले गए। ई. ई. गोलुबिनिस्की का मानना है कि आरम्भ में आर्टेमी को बाशकिन के खिलाफ परिषद में एक विद्वान भिक्षु के रूप में बुलाया गया था[781] ; हालाँकि, जब बाशकिन और अन्य आरोपियों ने उस पर यह आरोप लगाकर बदनाम किया कि वह स्वयं 'ईसाई कानून का पालन नहीं करता था', तो आर्टेमी गुप्त रूप से मास्को से भाग गया, लेकिन रास्ते में ही उसे रोक लिया गया और वह इस बार एक प्रतिवादी के रूप में मास्को लौट आया। परिषद में, गवाहों—ट्रिनिटी-सर्गेयस और किरिलोव मठों के भिक्षुओं—ने गवाही दी और आर्टेमी पर धार्मिक स्वतंत्र चिंतन का आरोप लगाया: उन पर वोल्त्सक के जोसेफ और उनकी रचनाओं के बारे में आलोचनात्मक टिप्पणी करने, नोवगोरोड के विधर्मियों (यानी, यहूदी धर्म का पालन करने वालों) के उत्पीड़न की निंदा करने, और अन्य 'अपमानजनक और विधर्मी बयानों' का आरोप लगाया गया। ये सभी आरोप निराधार, अक्सर बेबुनियाद थे, और उन्होंने आर्टेमी के वास्तविक विचारों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया। आर्तेमी ने कुछ आरोपों, जैसे कि उपवास तोड़ने के आरोप, का खंडन नहीं किया; उसने परिषद में स्वीकार किया कि उसने एक बार ज़ार द्वारा आयोजित एक दावत में मांस खाया था। न ही आर्तेमी ने इस बात का खंडन किया कि, प्सकोव के पास पेचेरस्क मठ में रहने के दौरान, उसने 'लिथुआनियाई लोगों' के साथ विभिन्न धार्मिक मामलों पर चर्चा की थी। आर्टेमियस के विचारों में कोई विधर्म नहीं था, लेकिन वह एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने धार्मिक जीवन को जोसेफाइट औपचारिकतावाद की संकीर्ण सीमाओं के भीतर सीमित नहीं रखना चाहता था; वह मठों के भूमि स्वामित्व का विरोधी था, और मठ जीवन के सिद्धांतों पर उसके विचार मेट्रोपॉलिटन मकारी, परिषद के बिशपों और प्रतिशोधी झूठे गवाहों के विचारों से भिन्न थे। आर्टेमियस का विजयी जोसेफाइटों का शिकार बनना तय था, क्योंकि उनकी निंदा ने गैर-स्वामित्वधारकों के दल पर दोहरा आघात किया: उसके सबसे मजबूत प्रतिनिधि को खत्म करने और सभी गैर-अधिग्रहणकर्ताओं पर विधर्म का आरोप लगाने के लिए, जो, बेशक, उन्हें धार्मिक और राजनीतिक जीवन से बाहर कर देता और उसमें जोसेफाइटों के निर्विरोध प्रभुत्व को सुनिश्चित कर देता।

अपने *रूसी चर्च का इतिहास* में, मकारी बुल्गाकोव गैर-स्वामित्ववादियों की गतिविधियों के बारे में शत्रुता और यहाँ तक कि पक्षपात के साथ लिखते हैं, लेकिन आर्टेमियस को विधर्मी घोषित करने की हिम्मत नहीं करते, क्योंकि स्रोत ऐसा करने का कोई आधार प्रदान नहीं करते हैं, और उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में मानते हैं जो 'आम तौर पर विश्वास के पवित्र मामलों पर स्वतंत्र रूप से अटकलें लगाना पसंद करता था', एक तरह से, एक धार्मिक उदारवादी थे – और फिर भी मकरिई परिषद के फैसले को सही ठहराते हैं[782] । ई. ई. गोलुबिनिस्की, सभी उपलब्ध सामग्रियों की गहन जांच के बाद, यह स्थापित करने में असमर्थ रहे कि आर्टेमी का विधर्म क्या था, और उन्हें धार्मिक और राजनीतिक साजिश का शिकार मानने के लिए झुकाव रखते हैं[783] ।

---

[780] 1530 के दशक की शुरुआत में ही, लूथर की पहली रिपोर्टें मॉस्को में दिखाई देने लगीं, जैसा कि 1536 में लिखे गए 'ऑन लूथर एंड हिज हेरेसी' नामक ग्रंथ से प्रमाणित होता है। पोपोव, ए. *रिव्यू ऑफ रशियन क्रोनोग्राफ्स*. 2 (1869). पृ. 130. मैक्सिम द ग्रीक ने लूथर का खंडन लिखा, जो मुख्यतः आइकनों की पूजा से संबंधित था (Works 1, पृ. 485–494)। 1552 के पोलिश सेयम से भी पहले, जिसने श्लाख्टा को धर्म की स्वतंत्रता प्रदान की, कैल्विन की शिक्षाएँ पोलैंड और लिथुआनिया में प्रवेश कर चुकी थीं, जबकि सोसिनियनवाद भी वहाँ तेजी से फैल रहा था। तुलना करें: वोकर, के. *क्रिश्चेनगेशिचटे पोलेन्स* (1930); ग्राबोव्स्की, थ. पोलैंड में कैल्विनवादी साहित्य का इतिहास (1906); ल्यूबोविच, एन. पोलैंड में धर्म सुधार का इतिहास। कैल्विनवाद और विरोधी-त्रिमूर्तिवादी (1883); वोत्शके, थ. पोलैंड में धर्म सुधार का इतिहास (1901); सोकोलोव। 16वीं और 17वीं शताब्दियों में प्रोटेस्टेंटवाद और रूस के बीच संबंध (1880)।

[781] आर्टेमियस की जीवनी का पुनर्निर्माण करने के गोलुबिस्की के प्रयास को देखें (खंड 2, संख्या 1, पृष्ठ 832–836); और साथ ही: सैडकोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृष्ठ 60–85।

[782] मकारी। 2nd संस्करण। खंड 6, पृ. 265।

[783] गोल्बुंस्की। खंड 2, भाग 1, पृ. 835.

2. एल्डर आर्टेमी। उनकी तपस्वी-रहस्यमय और रक्षात्मक रचनाएँ

बाशकिनि मामले में सुनाए गए उदार दंड की तुलना में—जहाँ प्रतिवादी ने वास्तव में ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत की नींव को ही खारिज कर दिया था—वरिष्ठ आर्टेमी को बहुत कठोर सज़ा दी गई, अर्थात् पदच्युत कर दिया गया (वह एक हायरomonk थे) और उन्हें सोलोवेत्स्की मठ में कैद कर दिया गया। आर्टेमी इस मठ में अधिक समय तक नहीं रहे, जहाँ उस समय भविष्य के मेट्रोपॉलिटिन फिलिप मठाध्यक्ष थे। हमारे लिए अज्ञात परिस्थितियों में, वे भाग गए और लिथुआनिया पहुँच गए। वहाँ उन्होंने कैल्विनिवाद और कुछ हद तक टेओडोसियस द क्रूक्ड के खिलाफ[784] प्रकृति के कई प्रतिरक्षात्मक और विवादास्पद कार्य लिखे। ये कार्य न केवल अपनी सामग्री के लिए, बल्कि मुख्य रूप से इसलिए भी रुचिकर हैं क्योंकि वे आर्टेमी के धार्मिक और तपस्वी विचारों में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

ये विचार हमारे ध्यान के योग्य हैं, क्योंकि वे तपस्वी जीवन पर आर्टेमियस के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, और इनमें वृद्ध नीलस के विचारों से एक निश्चित विचलन देखा जा सकता है। नीलस ने 'बौद्धिक प्रार्थना' () को मोक्ष और दिव्यता के मार्ग पर आध्यात्मिक प्रयास के केंद्र बिंदु के रूप में माना। दूसरी ओर, आर्टेमियस 'आध्यात्मिक प्रेम' की अधिक बात करते हैं, जिसे वे तपस्या के प्रयासों और मठवासी जीवन की नींव मानते हैं, और जो अपने पड़ोसी की सेवा करने में निहित है[785] । ऐसा करते हुए, आर्टेमियस मठवासी जीवन की अपनी अवधारणा प्रस्तुत करते हैं। आर्टेमियस के अनुसार, आध्यात्मिक प्रेम प्राप्त करने के लिए, पहले अपने पड़ोसियों से अलग होना चाहिए और मठवास के एकांत को समर्पित होना चाहिए; तभी प्रेम की सच्ची आवश्यकता उत्पन्न होगी। स्वाभाविक रूप से, आर्टेमियस सामुदायिक जीवन की निंदा करते हैं और उसे अस्वीकार करते हैं, विशेष रूप से क्योंकि उस समय मठवासी नियम का पालन न करने के कारण सेनोबिटिक जीवन की नींव लगभग सार्वभौमिक रूप से कमजोर हो गई थी। इसके अलावा, सामुदायिक जीवन 'शारीरिक कल्पना' की ओर ले जाता है, जिसके लिए मठवासी धन उपजाऊ जमीन प्रदान करता है[786] । आध्यात्मिक प्रेम की प्राप्ति केवल 'एकांत में रहने वाले' व्यक्ति के लिए, एक स्केटे में रहने वाले भिक्षु के लिए ही संभव है, जहाँ दुनिया का त्याग करके, मौन और आध्यात्मिक चिंतन में, अकेले या अधिकतम जोड़ों में रहकर, कोई धीरे-धीरे आध्यात्मिक प्रेम प्राप्त कर सकता है। एकांत, पवित्र धर्मग्रंथों और तपस्या संबंधी ग्रंथों का अध्ययन, मौन और प्रार्थना से आश्रम का जीवन परिपूर्ण होना चाहिए। बाह्य दरिद्रता और यह भावना कि कोई इस सांसारिक दुनिया में केवल एक यात्री मात्र है, का विशेष महत्व है क्योंकि, इनके कारण, सांसारिक चिंताओं से स्वयं को मुक्त करने और आत्मा के संचय के लिए पूर्णतःसमर्पित होने का अवसर मिलता है[787] ।

एक व्यक्ति, जिसने तपस्वी जीवन जीने का संकल्प लिया है, द्वारा आत्मा के संकलन के लिए बाहरी पूर्वापेक्षाओं का वर्णन करने के बाद, आर्टेमियस तपस्वी के आध्यात्मिक और नैतिक स्वभाव का वर्णन करते हैं। यह स्वभाव तीन प्रकार का है: इसमें संवेदी, मानसिक और आध्यात्मिक शामिल हैं। आध्यात्मिक पूर्णता के मार्ग पर, मानव स्वभाव तीन चरणों से गुजरता है, जिन्हें आर्टेमियस, मुख्य रूप से आइज़ैक द सीरियन के तपस्वी लेखों से प्रेरणा लेते हुए, 'आत्म-क्रूसदंड' कहता है।

पहले चरण में, अंतिम न्याय के भय से एक व्यक्ति की नैतिक संवेदनशीलता जागृत होती है, और वे अपनी क्षमता के अनुसार अच्छे कर्म करने के लिए विवश हो जाते हैं। यह अभ्यास, जिसे आर्टेमियस 'मांस का क्रूस पर चढ़ाया जाना' कहते हैं, कामुक और मनोवैज्ञानिक जुनून के खिलाफ संघर्ष के अलावा और कुछ नहीं है। इस अवस्था में, निराशा में पड़ने का प्रलोभन आमतौर पर उत्पन्न होता है, लेकिन धैर्य, दृढ़ता और ईश्वर की कृपापूर्ण सहायता के लिए प्रार्थना द्वारा इस पर काबू पाया जाता है। प्रार्थना विशेष रूप से आवश्यक है, क्योंकि प्रभु हमेशा अविराम प्रार्थना को सुनते हैं और साधु के आध्यात्मिक संघर्ष में उसकी सहायता के लिए आते हैं। तपस्वी ईसाई धीरे-धीरे अच्छे कर्म करने के लिए एक नया आधार पाता है: वह अब उन्हें एक दास के रूप में - डर के कारण - नहीं करता, बल्कि एक सेवक के रूप में - पुरस्कार के लिए - करता है। और फिर तपस्वी को दूसरे चरण[788] पर आरोहण करने का

---

[784] आरआईबी. खंड 4। यहाँ आर्टेमी की चौदह कृतियाँ प्रकाशित हैं। उनमें से पाँच उनके जीवन के मॉस्को काल की हैं (पृ. 1359–1373, 1382–1390, 1390–1400, 1400–1420, 1432–1441); नौ लिथुआनिया में लिखे गए थे (1555 के बाद): पहला: पृ. 1201–1266; दूसरा: पृ. 1266–1273; तीसरा: पृ. 1273–1287; चौथा: पृ. 1287–1328; पाँचवाँ: पृ. 1423–1432; छठा: पृ. 1420–1423; सातवाँ: पृ. 1441–1448; आठवाँ: पृ. 1328–1359; नौवाँ: पृ. 1373–1381। विशेष महत्व के हैं: 1. ल्यूटोरेन शिक्षकों के लिए; 4. विधर्मी साइमन बडनी के लिए; 5. उन्हीं के लिए। देखें: प्लिसि, वी. 'साइमन बडनी और लिथुआनिया में धर्मसुधार', में: क्रिश्चियन रीडिंग्स 1911, 2, 9, 10.

[785] RIB. 4. पृ. 1228, 1259, 1261, 1249.

[786] उपरोक्त, पृ. 1223, 1260, 1224, 1261, 1236, 1271.

[787] उपरोक्त, पृ. 1261.

[788] उपरोक्त, पृ. 1232, 1275, 1342.

अवसर प्रदान किया जाता है। यदि यह नई अवस्था उसके भीतर दृढ़ता से स्थापित हो जाती है, तो वह वास्तव में इस दूसरे चरण - 'सक्रिय आध्यात्मिक प्रेम' के चरण - पर आरोहण करता है। वह प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने की आवश्यकता को समझने लगता है, न तो अंतिम न्याय के भय से और न ही पुरस्कार के लिए, बल्कि ईश्वर के प्रति प्रेम से। ईश्वर के प्रति प्रेम, मानव आत्मा में प्रवेश करके, सांसारिक वासनाओं को नष्ट करता है, आत्मा को पवित्र करता है और उसे रूपांतरित करता है। तपस्वी धीरे-धीरे 'मूल शुद्धता' की अवस्था में लौट आता है। यदि वह ईश्वर के प्रेम में बने रहने की अपनी इच्छा में अडिग रहता है, तो न केवल उसकी आत्मा रूपांतरित होती है, बल्कि उसका मन भी, जिससे उसमें आध्यात्मिक चिंतन की क्षमता विकसित होती है। प्रार्थना इस क्षमता को प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन है; एक रूपांतरित मन के साथ, एक व्यक्ति यह महसूस करता है कि वह ईश्वर का पुत्र है। पुत्रत्व की यह भावना ईसाई और ईश्वर के बीच के बंधन को मजबूत करती है, एक ऐसा बंधन जो बपतिस्मा के समय स्थापित हुआ था लेकिन पाप के कारण टूट गया था। ईश्वर के प्रति अपने पुत्रत्व की भावना हृदय का एक अनुग्रहपूर्ण उपहार है जो एक व्यक्ति के पूरे आध्यात्मिक अस्तित्व में व्याप्त होता है; दिव्य प्रकाश आत्म-क्रूस-वहन के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को आध्यात्मिक पूर्णता के तीसरे चरण की दहलीज़ तक ऊँचा उठाता है, जिसे आर्टेमी 'क्रूस की महिमा' कहते हैं। एल्डर आर्टेमी आत्म-क्रूस-वहन के दूसरे और तीसरे चरणों के बीच इस दहलीज़ को एक ऐसी सीमा मानते हैं जिसे एक ईसाई केवल परलोक में ही पार कर सकता है। वहाँ, अनंत जीवन में, प्रभु उन लोगों को जो परमेश्वर की संतान बने रहने में सफल रहे हैं, दिव्य रहस्यों के दर्शन का वरदान देते हैं, जो प्रबुद्ध व्यक्ति को अकथनीय और अनंत आनंद से भर देता है। सांसारिक जीवन में, केवल कुछ ही—पूर्ण, संत—'क्रूस की महिमा' का वरदान, परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करते हैं, और तीसरे चरण[789] पर बने रहते हैं।

आत्म-क्रूसदंड किसी व्यक्ति की अनुग्रह-पूर्ण प्रबोधन का स्रोत है; यह उन्हें पवित्र शास्त्र में निहित दिव्य सत्य का साक्षी बनाता है। केवल एक प्रबुद्ध व्यक्ति ही सत्य को ग्रहण कर सकता है और शास्त्र को सही ढंग से समझ सकता है। इस प्रकार, आत्म-क्रूसदंड प्रभु की आज्ञाओं और संपूर्ण पवित्र शास्त्र की सच्ची समझ की आधारशिला है। जिन ईसाइयों ने आत्म-क्रूसदंड की इस उपलब्धि को हासिल नहीं किया है, वे पवित्र शास्त्र की गलत व्याख्या करने और यहाँ तक कि विधिर्म में पड़ने के खतरे में हैं। आत्म-क्रूस पर चढ़ना नम्रता और पश्चाताप का एक कार्य है। एक अज्ञानी मन अहंकार के लिए एक उपजाऊ जमीन है; यह एक सांसारिक मन है, जो प्रभु की आज्ञाओं को सही ढंग से समझने में असमर्थ है; यह उन्हें इसलिए नहीं समझता क्योंकि यह दिव्य सत्य की खोज नहीं करता है, बल्कि अपने ही उद्देश्यों को पूरा करता है, और इस प्रकार दिव्य अनुग्रह से बाहर रहता है। भौतिकवादी मन वाला व्यक्ति दिव्य धर्मग्रंथों को पढ़ता है, लेकिन या तो उन्हें बिल्कुल समझ नहीं पाता है या उन्हें गलत समझता है। इस तरह की विकृत सोच व्यक्ति को प्रलोभी, शैतान की बाहों में धकेल देती है, और उसे एक विधर्मी बना देती है[790] ।

आर्टेमियस के ये तपस्वी चिंतन, जो उनके प्रतिरक्षात्मक और विवादास्पद लेखनों में बिखरे हुए हैं, हमें उनके व्यक्तिगत विचारों का वर्णन करने की अनुमति देते हैं, लेकिन वे लिथुआनिया में उनके समय के दौरान रूढ़िवादी चर्च के सिद्धांत का बचाव करने के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सके। जिन लोगों के लिए उन्होंने चर्च की शिक्षाओं के बारे में लिखा, वे लिथुआनिया में सक्रिय कैल्विनिवादियों और विरोधी-त्रिमूर्तिवादियों के मजबूत प्रभाव में थे, इसलिए उन्होंने न केवल आर्टेमियस के विचारों को स्वीकार नहीं किया, बल्कि वे उसके तपस्वी और रहस्यमय विचारों को समझ ही नहीं सके, जो पैट्रिस्टिक तपस्यावाद और ऑर्थोडॉक्स रहस्यवाद के स्रोतों से प्रेरित थे। उसके लेखन का एक अन्य भाग, जिसमें धार्मिक जीवन के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई है, व्यावहारिक महत्व का साबित हुआ। विशेष महत्व के हैं कैल्विनिवादी पादरी साइमन बुडनी और अन्य लिथुआनियाई लोगों को संबोधित उनके लेख[791] ।

इन लेखों—या, बल्कि, पत्रों, जिनमें से कुछ बहुत संक्षिप्त हैं—में आर्टेमियस इस बात पर जोर देते हैं कि ईसाइयों के लिए पवित्र शास्त्रों को जानना और यहाँ तक कि उन्हें सही ढंग से समझने तथा विधिर्म से बचने के लिए नियमित रूप से उनका अध्ययन करना आवश्यक है; फिर भी, वह सुसमाचार की कीमत पर पुराने नियम पर अत्यधिक

---

[789] उपरोक्त पृ. 1278, 1343, 1298, 1299.

[790] उपरोक्त, पृ. 1341, 1335, 1406, 1303, 1324, 1275, 1301, 1444, 1384, 1407.

[791] साइमन बुडनी संभवतः शुरू में ग्रीक ऑर्थोडॉक्स धर्म के अनुयायी थे; बाद में वे कैल्विनिवादी बन गए और 16वीं शताब्दी के मध्य में लिथुआनिया के मिन्स्क के पास क्लेट्स्क शहर में एक कैल्विनिवादी पादरी के रूप में कार्य किया, जहाँ उन्होंने उत्साहपूर्वक कैल्विनिवादी सिद्धांत का प्रचार किया। उन्होंने दो रचनाएँ लिखीं: 1. कैटेकिज़्म (1562, बेलारूसी में) और 2. मनुष्य के औचित्य पर (रूसी में)। बाद में, बुडनी ने एंटी-ट्रिनिटेरियन में शामिल हो गए; मालशिव्स्की, I. पोलोव्त्सियन इवान स्मेरा से ग्रैंड प्रिंस व्लादिमीर के लिए एक जाली पत्र, में: TKDA. 1876. 2. पृ. 507–513; प्लिसि, वी. उद्धृत कृति.

ध्यान केंद्रति करने का कड़ा वरिोध करते हैं[792] । सुसमाचार सर्वोपरि महत्व रखता है क्योंकि मसीह की नई वाचा की उपदेश ने पुराने वधिान को नरिस्त कर दयिा[793] । चूंकि साइमन बड्नी ने अपनी त्रत्वि-वरिोधी बयानों में त्रत्वि के सद्धिांत को नकार दयिा, इसलएि आर्टेमयिस को उनके तर्कों का खंडन करने के लएि बाध्य होना पड़ा[794] । वह कैल्वनिवादी सद्धिांत का कड़ा वरिोध करते हैं और मोक्ष के लएि अच्छे कर्मों की आवश्यकता पर जोर देते हैं। भले कामों के बनिा वश्विास ईसाई वश्विास नहीं है, बल्कि वधिर्मी अहंकार और ईश्वर से वमिुखता है, यद्यपि आर्टेमी नैतकि सुधार, वासनाओं के खलिाफ संघर्ष, और आत्म-क्रूस की आवश्यकता के चरम महत्व के बारे में भी बात करते हैं, जसिके बनिा कोई उद्धार संभव नहीं है[795] । अपने लेखों में, आर्टेमी ईसाई पूजा-वधिि का बचाव करते हैं। उनके दोनों वरिोधयिों, साइमन बडनी और इवान ज़ारेत्स्की ने पवत्रि यूखरस्ति और वश्विासयिों पर इसके अनुग्रह-पूर्ण प्रभाव, साथ ही सामान्य रूप से पूजा के सभी रूपों को अस्वीकार कर दयिा। इन त्रुटयिों का खंडन करते हुए, आर्टेमी प्रेरति पौलुस के पत्रों के अंशों का सहारा लेते हैं और सामान्य रूप से संस्कारों तथा ईसाइयों के अनुष्ठानकि जीवन पर प्रोटेस्टेंट वचिारों के वरिुद्ध तर्क करते हैं[796] । बडनी को लखिे दोनों पत्रों में, वह परंपरा को संरक्षति करने की आवश्यकता के बारे में लखिते हैं और इस संदर्भ में यह भी उल्लेख करते हैं कि परंपरा[797] को पुराने नयिम में भी मान्यता प्राप्त थी। नैतकि सुधार की आवश्यकता के संबंध में, आर्टेमयिस इस बात पर जोर देते हैं कि ईसाइयों के लएि आत्म-त्याग और सभी चीजों में संयम का पालन कतिना महत्वपूर्ण है, और वे उपवास के शैक्षकि महत्व के बारे में बात करते हैं; वे अपने वरिोधयिों को याद दलिाते हैं कि मसीह स्वयं रेगस्तिान में गए और वहाँ उपवास कयिा। इसलएि, मठवासी जीवन ईश्वर-प्रसन्न करने वाला प्रयास है; यह लोगों को मोक्ष के मार्ग पर मदद करता है, क्योंकि इसकी नींव संयम और आत्म-त्याग, और वासनाओं तथा अहंकार के खलिाफ संघर्ष है[798] । अंत में, यह ध्यान दयिा जाना चाहिए कि आर्टेमयिस क्रॉस का चह्नि बनाने की ईसाई प्रथा, और संतों तथा आइकनों की पूजा का बचाव करते हैं[799] ।

आर्टेमयिस के सभी रक्षात्मक लेखों से यह स्पष्ट है कि वह ऑर्थोडॉक्स चर्च का एक वफादार पुत्र था। शायद *1553–54 के* परषिद में उन पर लगाए गए आरोप *उस समय उन पर लगाए गए आरोपों का कुछ आधार हो सकता है, लेकनि बाद में आर्टेमी ने अपनी धार्मकि स्वतंत्र सोच (यदि वास्तव में यह कभी उनकी वशिेषता थी) का पूरी तरह से त्याग कर दयिा और लथिुआनयिा में प्रोटेस्टेंट प्रचार के खलिाफ नरि्देशति अपनी ववािदास्पद गतविधियिों के माध्यम से उसके लएि प्रायश्चति कयिा।*

3. ओटेन्स्क के ज़निोवी और उनकी रचनाएँ

जहाँ आर्टेमी की रक्षात्मक लेखनी में शुद्ध धर्मशास्त्र एक गौण भूमकिा नभिाता है, वहीं ओटेन्स्की मठ (नोवगोरोड क्षेत्र में) के भक्षिु ज़निोवी की रचनाओं में इसका प्रमुख स्थान है। ज़निोवी की जीवनी में कई अंतराल हैं, और उनकी आध्यात्मकि वकिास की प्रक्रयिा आज तक अपर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं हो पाई है। उनकी मृत्यु 1568 में ओटेन मठ में हुई, जहाँ उन्हें कैद कयिा गया प्रतीत होता है: 1520 के दशक में, ज़निोवी मठाधीश मैक्सिम द ग्रीक के संपर्क में थे और, उनके दोषसद्धि के बाद, उन्हें संभवतः नरि्वासति कर दयिा गया या ओटेन मठ में कैद कर दयिा गया। ज़निोवी ने मास्को क्यों छोड़ा (चाहे उसने स्वेच्छा से ऐसा कयिा हो या अधकिारयिों के आदेश पर) यह आज भी अस्पष्ट है। यह तथ्य कि ज़निोवी को, उनकी मृत्यु के बाद, ओटेन्स्की मठ के कैथेड्रल में सेंट जोनाह की कब्र के पास दफनाया गया था, इस बात को दर्शाता है कि मठ समुदाय द्वारा उन्हें कतिनी बड़ी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था[800] । कोई यह सोच सकता है कि मठ के अधकिारयिों ने एक नरि्वासति को ऐसा सम्मान देने की हम्मित शायद

---

[792] RIB. 4. पृ. 1442 (संख्या 4: साइमन बड्नी को), 1231 (एक लूथरन शक्षिक को), 1343 (संख्या 8: एक अज्ञात व्यक्ति को); और साथ ही: RIB. 4. पृ. 1265, 1309.

[793] उपरोक्त, पृ. 1205–1208, 1278, 1350.

[794] उपरोक्त, पृ. 1314.

[795] उसी में, पृ. 1203, 1265, 1326, 1342, 1443.

[796] उपरोक्त. पृ. 1251, 1277–1279.

[797] उपरोक्त, पृ. 1253, 1264, 1268, 1348.

[798] उपरोक्त, पृ. 1210, 1255, 1358–1359, 1265, 1422.

[799] उपरोक्त, पृ. 1211, 1250, 1295–1297, 1444–1445, 1243, 1247, 1270, 1284, 1446.

[800] देखें: एंड्रीव, एन. 'आइकन veneration और आइकन पेंटगि पर ओटेन के भक्षिु ज़निोवी', में: *सेमनिारयिम कोन्डाकोवयिम*. 8 (1936). पृ. 259–262; लेखक ज़निोवी की जीवनी का पुनर्नरि्माण करने का प्रयास करते हैं। ज़निोवी पर प्रमुख कृति: कालुगनि, एफ. *ज़निोवी, ओटेन्स्क का भक्षिु, और उनकी धर्मशास्त्रीय-ववािदात्मक तथा चर्च-नैतकि रचनाएँ* (1894) – दुर्भाग्यवश, मेरे लएि उपलब्ध नहीं थी। इसकी तुलना इस कृति की रूसी समीक्षा से करें: बोचानोव्स्की, वी., *ZhMNP* में। 1894. 11; और साथ ही: कलुगनि, एफ. 'ओटेन्स्क के

ही की होती। हालांकि, दूसरी ओर, ज़िनोवी के ओटेन मठ में आने को 40 से अधिक वर्ष बीत चुके थे, और इस दौरान उनकी विद्वता ने उन्हें मठवासी समुदाय और मठाधीशों का सम्मान दिलाया था; इसके अलावा, नोवगोरोड में स्थानीय भावनाओं को भी ध्यान में रखना होगा, जो अक्सर राजधानी के अधिकारियों के प्रति विरोध के रूप में प्रकट होती थीं[801] ।

ज़िनोवी ने अपने युग के धार्मिक और राजनीतिक जीवन में भाग नहीं लिया[802] ; अपने मठ के कोठरी में उनका एकांतवास इतिहास के लिए एक बड़ी सौभाग्य की बात साबित हुआ, क्योंकि उनकी बदौलत ही हम 16वीं सदी के एकमात्र धर्मशास्त्री के बारे में जानते हैं, जिन्होंने अपने लेखन में एक निश्चित स्वतंत्रता और मौलिकता का प्रदर्शन किया[803] । उनकी रचनाएँ, जोसेफ की *द एनलाइटनर* की तरह, विवादात्मक उद्देश्यों के लिए रची गई थीं, लेकिन ज़िनोवी की विवादात्मक रचनाएँ पूरी तरह से भिन्न प्रकृति की हैं। वे उद्धरणों से भरी नहीं हैं, जैसा कि जोसेफ के मामले में होता है। ज़िनोवी चर्चा के तहत मुद्दों की अपनी स्वतंत्र जांच करना पसंद करते हैं; अपनी विवादात्मक रचनाओं में, वह एक स्पष्ट अवधारणा प्रकट करते हैं, वह अपने ही हथियारों से अपने प्रतिद्वंद्वी पर प्रहार करते हैं, तार्किक निष्कर्ष निकालते हैं और, अपने दावों को प्रमाणित करने के लिए, तर्क से प्राप्त साक्ष्य की उपेक्षा नहीं करते हैं। ज़िनोवी ने दो प्रमुख कृतियाँ लिखीं: 'नए सिद्धांत के बारे में पूछताछ करने वालों के लिए सत्य का प्रदर्शन' और 'कोसोय की विकृति पर एक लंबा पत्र'[804] । पहला ग्रंथ, जो बहुत व्यापक है, विशेष महत्व का है, क्योंकि एक ओर, यह कोसोय के विधर्मी विचारों की प्रकृति को स्पष्ट करता है, जबकि दूसरी ओर, यह ज़िनोवी को एक कुशल वाद-विवादकर्ता और धर्मशास्त्री के रूप में चित्रित करता है।

1553–54 की उपर्युक्त मास्को परिषद *ने, बाशकिन की झूठी शिक्षाओं की जांच करते हुए—जिसके लिए वोल्गा के पार के मठों के कई भिक्षुओं को गवाह के रूप में बुलाया गया था—एक और 'नास्तिक विधर्म' के प्रचारक, थियोडोसियस कोसोय नामक एक भिक्षु पर ध्यान दिया, और उससे पूरी तरह पूछताछ की। दुर्भाग्य से, पूछताछ के मिनट खो गए हैं, और थियोडोसियस कोसोय और उनके धार्मिक विचारों के बारे में जानकारी का हमारा एकमात्र स्रोत ज़िनोवी का कार्य *द टेस्टिमिनी ऑफ़ ट्रुथ* ही बचा है।*

कोसी के बारे में जीवनी संबंधी विवरण उसे एक अनुकूल रूप में प्रस्तुत नहीं करते: वह मॉस्को के एक बोयार का नौकर था, उसने अपने मालिक से चोरी की और बेलारूसी क्षेत्र में भाग गया। बाद में, कोस एक मठ में शामिल हो गया और संन्यासी की शपथ ली। मॉस्को लाए जाने और उससे पूछताछ किए जाने के बाद, वह एक बार फिर भाग गया और लिथुआनिया में पहुँच गया, जहाँ वह बस गया और कुछ सफलता के साथ अपने विचारों का प्रचार करने लगा।

ज़िनोवी लिखते हैं कि उन्हें कोसोय की विधर्मी शिक्षाओं के बारे में संयोग से पता चला। एक अवसर पर – 1554 के बाद लेकिन 1566 से पहले, जब ज़िनोवी अपना ग्रंथ लिख रहे थे, – पड़ोस के एक मठ के दो भिक्षु, एक गृहस्थ के साथ, ओटेन्स्की मठ में उनसे मिलने आए और उन्होंने उनसे चर्च सिद्धांत, मोक्ष, पवित्र धर्मग्रंथ और इसकी प्रामाणिकता, और क्या पुराने और नए नियम को वास्तव में 'दिव्य धर्मग्रंथ' माना जा सकता है, इस बारे में विभिन्न प्रश्न पूछे। चर्चा जारी रही, और कुल 12 बातचीतें हुईं। इन बातचीतों के दौरान, ज़िनोवी के प्रश्नकर्ताओं ने भिक्षु थियोडोसियस द क्रुक्ड का नाम लिया और चर्च के सिद्धांत पर उनके विचारों को विस्तार से बताया। हालांकि ज़िनोवी कोसोय को आर्टेमियस का शिष्य बताते हैं (यानी, हमें ज्ञात एल्डर आर्टेमियस), लेकिन ज़िनोवी की इस बात से सहमत होना मुश्किल है, क्योंकि कोसोय के विचार, जो कच्चे तर्कवाद से प्रभावित हैं, आर्टेमियस के विचारों से बहुत कम मिलते-जुलते हैं, जैसा कि उनके लेखों में परिलक्षित होता है। कोसोय और बाशकिन के विचारों में बहुत अधिक समानता है, हालांकि यह ठीक से स्थापित करना असंभव है कि दोनों 'विधर्मी नेताओं' का संपर्क कहाँ और कब हुआ, या क्या वे वास्तव में एक-दूसरे को जानते थे[805] । इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता - और हम इस बारे में लगभग निश्चित हैं - कि कोसोय ने, या तो पूरी तरह से अपने दम पर या मास्को में कुछ परिचितों के माध्यम से, चर्च के सिद्धांतों की आलोचना की और अपने स्वयं के सिद्धांतों को तैयार किया। दूसरी ओर, कोसोय का विधर्म हमें यह दर्शाता है कि

भिक्षु ज़िनोवी के धर्मोपदेश संबंधी कार्य', में: ZhMNP. 1893. 2 और 5; तारासिय, हायरोंमंक. 'पुराने रूसी धर्मशास्त्र में एक निर्णायक मोड़' (1927).

[801] तुलना करें: पोम्यालोव्स्की, एम. '15वीं–16वीं शताब्दियों में मास्को–नोवगोरोड संबंधों के प्रश्न पर', ZhMNP. 1898. 9 में।

[802] रज़िग। मैक्सिमि द ग्रीक एज़ अ पब्लिसिस्ट। पृ. 8.

[803] गोल्बुंस्की। 2. 2. पृ. 224–225, 227–228; और साथ ही: तारासिय, हायरोंक। उद्धृत कृति।

[804] ओटेन्स्की के ज़िनोवी: 1. 'सत्य की गवाही', में: प्राव. सोब. 1863–1864 (काज़ान, 1863) और 2. 'दीर्घ पत्र', में: चेतेनिया. 1880. 2; गोलुबिन्स्की (2. 1. पृ. 827; 2. 2. पृ. 230) ज़िनोवी को केवल पहले ग्रंथ का लेखक मानते हैं। तुलना करें: गुज़दीय। हिस्ट्री ऑफ़ ओल्ड रशियन लिटरेचर (1938)। पृ. 282।

[805] तुलना करें: गोलुबिन्स्की। खंड 2, भाग 1, पृ. 819, 820।

यहूदीकरण करने वालों के कुछ धार्मिक विचार मॉस्को समाज से अभी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए थे, क्योंकि कोसोय की शिक्षाएं कुछ विचलनों और परिवर्तनों के साथ, ठीक उन्हीं विचारों को दोहराती हैं। कोसोय भी केवल पुराने नियम, 'मोशे के कानून' की रचनाओं को ही आधिकारिक और सत्य मानते हैं, और नए नियम की रचनाओं को खारिज करते हैं। कोसोय चर्च के कैनन और पवित्र पिताओं के कार्यों को शून्य और अमान्य घोषित करते हैं, हालांकि वह अपने कुछ धार्मिक विचारों को बेसिल द ग्रेट या जॉन क्रिसोस्टोम की रचनाओं से उद्धरणों के साथ सही ठहराने का प्रयास करते हैं। कोसोय त्रिमूर्ति के सिद्धांत, मसीह की दिव्यता और उनके उद्धारकारी कार्य, और संस्कारों का स्पष्ट रूप से खंडन करते हैं; वह परमेश्वर की माता और संतों की आराधना को अस्वीकार करते हैं; वह चर्च की उपासना और सामान्य रूप से सभी धार्मिक अनुष्ठानों को मूर्तिपूजा कहते हैं; और न ही वह चर्च पदानुक्रम को स्वीकार करते हैं। कोसोय के विचारों से प्रभावित लोगों के साथ जिनोवी की बातचीत से, उसकी शिक्षा के सकारात्मक पहलू की तुलना में आलोचनात्मक पहलू अधिक स्पष्ट होता है; बाद वाला केवल बहुत अस्पष्ट और अनिर्दिष्ट दावों से बना है कि सच्चा धर्म एक ईश्वर की 'आत्मा में' पूजा[806] में निहित होना चाहिए।

'सत्य का प्रदर्शन' ज़िनोवी द्वारा स्वयं और अपने प्रश्नकर्ताओं के बीच एक संवाद के रूप में रचित किया गया था। हालाँकि, पुस्तक की सामग्री की सावधानीपूर्वक जाँच से पता चलता है कि इसका सकारात्मक खंड, जिसमें ज़िनोवी के उत्तर और उनके खंडन शामिल हैं, विशेष रूप से कोसोय की विधर्म के खिलाफ निर्देशित नहीं है, जैसा कि रूसी चर्च के इतिहासकार दावा करते हैं[807] , बल्कि यह ज़िनोवी द्वारा अन्य कारणों से लिखा गया था। एक ओर, यह उत्तरों की आंतरिक तर्कसंगति से संकेत मिलता है, जो, कह सकते हैं, एक परस्पर जुड़ी हुई धर्मशास्त्रीय प्रणाली बनाती है; दूसरी ओर, कोसोय के त्रुटिपूर्ण विचारों का खंडन करने के लिए आवश्यक होने से कहीं अधिक विस्तृत हैं। ओटेन्स्की मठ, जहाँ ज़िनोवी ने शरण ली और जहाँ वह कोसोय के अनुयायियों से मिला, नोवगोरोड क्षेत्र में स्थित है। यहीं, छह दशक पहले, यहूदीकरण संप्रदाय पहली बार उभरा था, और इसकी झूठी शिक्षाएँ, सरकार और चर्च अधिकारियों द्वारा उठाए गए उपायों के बावजूद, पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई हैं। नोवगोरोड क्षेत्र में, मास्को के केंद्र की तुलना में पश्चिमी देशों के साथ संबंध अधिक प्रबल और स्पष्ट रूप से महसूस किए जाते थे; विदेशी, पश्चिमी धार्मिक विचार और राय विभिन्न माध्यमों से नोवगोरोड तक पहुँचते थे; वहाँ की आबादी मास्को की तुलना में उच्च सांस्कृतिक स्तर पर थी; वहाँ के सामाजिक संबंध भी उत्तर-पूर्वी रूस के अन्य हिस्सों में विकसित हुए संबंधों से बहुत अलग थे, और इससे पूरी तरह से अलग प्रकार के लोग उत्पन्न हुए; और नोवगोरोड समाज के धार्मिक जीवन में हमें कुछ विशिष्ट विशेषताएँ और बहुत कुछ मौलिकता मिलती है: यहूदीकरणवादियों के अलावा, हम धार्मिक मामलों पर नोवगोरोड के इतिहासकारों के विचारों और नोवगोरोड की जीवनी-लेखन की विशिष्ट प्रकृति का उल्लेख कर सकते हैं[808] । जब ज़िनोवी ओटेन्स्की मठ पहुँचे, तो स्थानीय परिस्थितियों की यह सारी विशिष्टता उनके ध्यान से छूट नहीं सकती थी। यह स्पष्ट है कि उनका ध्यान सबसे पहले और सबसे ज़्यादा धार्मिक और चर्च-संबंधी मामलों की ओर गया। उन्होंने अपनी क्षमता और ज्ञान के अनुसार चर्च की सेवा करना अपना कर्तव्य समझा। कोसोय के अनुयायियों का उसकी कोठरी में आगमन और उनसे उसकी बातचीत ने नई विधर्म की आलोचना करने और इस प्रकार अपने काम को एक सामयिक, समकालीन प्रतिध्वनि देने का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार, उसका धर्मशास्त्रीय और प्रतिरक्षात्मक कार्य एक प्रमुख प्रतिरक्षात्मक और विवादात्मक ग्रंथ बन गया।

ज़िनोवी द्वारा अपनी धर्मशास्त्रीय प्रणाली की व्याख्या में एक विशिष्ट तर्क स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यद्यपि टेडोसियस द क्रूक्ड और उनके अनुयायियों को ईश्वर के अस्तित्व पर कोई संदेह नहीं था, फिर भी ज़िनोवी ने इस धर्मशास्त्र पर चर्चा करके शुरुआत करने का निर्णय लिया। ऐसा करते हुए, उन्होंने एक ऐसी विशेषता प्रदर्शित की जो अन्य पुराने रूसी धार्मिक लेखकों में नहीं मिलती, अर्थात् तर्क या ratio से प्राप्त साक्ष्यों के साथ अपनी बातों को समझाने और प्रमाणित करने की इच्छा। तार्किक रूप से सही अनुमानों के माध्यम से अपने सिद्धांतों

---

[806] ज़िनोवी। सच्चाई की गवाही। अध्याय 4, 21, 22, 8, 29, 26, 30, 23, 27, 43, 44, 45। तुलना करें: मकरिय। 2nd संस्करण। 6। पृ. 275–278; एमेल्यानोव, आई. 'द टीचिंग्स ऑफ थियोडोसियस द क्रुक्ड', में: टीकेडीए. 1862. 6; गोलुबिंस्की. 2. 1. पृ. 820, 825–830; सदकोव्स्की. 'एल्डर आर्टेमी', में: रीडिंग्स. 1891. 4. पृ. 106–109; मालिशेव्स्की. उद्धृत ग्रंथ. पृ. 518–524; सोकोलोव, आई. '16वीं और 17वीं शताब्दियों में रूस के प्रति प्रोटेस्टेंटवाद का दृष्टिकोण' (1880). पृ. 266–267.

[807] तुलना करें: मकरि। दूसरा संस्करण। खंड 6, पृ. 273; खंड 8, पृ. 467; गोलुबिंस्की। खंड 2, संख्या 1, पृ. 826; खंड 2, संख्या 2, पृ. 225। यह स्पष्ट नहीं है कि यह कृति वास्तव में संयोग से बनी, केवल इसलिए कि भिक्षु ज़िनोवी के पास आए और उन्होंने उसे कोसोय के विचारों के बारे में बताना शुरू कर दिया। तुलना करें: ज़िनोवी। 'एक लंबा पत्र', में: रीडिंग्स। 1880। खंड 2। एन. पोपोव द्वारा प्रस्तावना। पृ. 1।

[808] तुलना करें: बेस्टुशेव-र्यूमिन। *Geschichte Rußlands*. 1 (1877), पृ. 230 ff., 265, 273 ff.; ल्यूबाव्स्की, एम. *Ancient Russian History up to the End of the 16th Century* (1918); निकितिंस्की। वेलिकी नोवगोरोड के जीवन पर निबंध, में: ZhMNP. 1869. 10; ग्रेकोव, बी. द नोवगोरोड हाउस ऑफ़ सेंट सोफिया (1914).

को साबति करने की यह प्रवृत्ति ज़िनोवी की रचनाओं में कई मौकों पर स्पष्ट है; यह पवित्र धर्मग्रंथों के उनके विवेकपूर्ण और उपयुक्त उद्धरण में भी स्पष्ट है, जो यह दर्शाता है कि यह कृति बातचीत के दौरान स्वतःउत्पन्न होने के बजाय, पहले से चुने गए विषय पर preparatory research के बाद रची गई थी। 'वैज्ञानिक उपकरण' का उचित उपयोग करने की उनकी क्षमता उनके लेखन की एक उल्लेखनीय विशेषता है। ज़िनोवी अपने समय के विद्वतापूर्ण मानकों से ऊपर उठते हैं; उन्हें वास्तव में प्राचीन रूस में वैज्ञानिक धर्मशास्त्र के पहले प्रतिनिधि के रूप में माना जा सकता है।

वह ब्रह्मांड की जांच के माध्यम से ईश्वर के अस्तित्व को साबित करते हैं। पृथ्वी पर जीवित प्राणियों का स्व-उत्पादन अकल्पनीय है; परिणामस्वरूप, एक ईश्वर है जिसने उन्हें बनाया। सभी लोग और सभी राष्ट्र ईश्वर में विश्वास करते हैं, चाहे सच में हो या झूठ में। इसका अर्थ है कि आस्था की भावना मानव स्वभाव में अंतर्निहित है और ईश्वर द्वारा मानव आत्मा में स्थापित की गई है। निर्जीव प्रकृति भी बिना किसी कारण के नहीं है; यह अपने आप शून्य से उत्पन्न नहीं हो सकती थी - परिणामस्वरूप, एक ईश्वर है जिसने ब्रह्मांड की रचना की। दुनिया का संरक्षण, जिसमें विभिन्न तत्व लगातार एक-दूसरे के संघर्ष में रहते हैं और फिर भी स्थिर सामंजस्य में बने रहते हैं, केवल सृष्टिकर्ता की दिव्य व्यवस्था द्वारा ही संभव है – ज़िनोवी भी ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण के रूप में इस तर्क का हवाला देते हैं। सृष्टि और सृष्टिकर्ता के बीच का संबंध सृष्टिकर्ता की दिव्य व्यवस्था में प्रकट होता है[809] । ईश्वर के अस्तित्व के ब्रह्मांडीय और टेलियोलॉजिकल प्रमाण प्रस्तुत करने के बाद, और उन्हीं के आधार पर, ज़िनोवी ईश्वर की त्रिमूर्ति और दिव्य सार की व्याख्या करते हैं। ईश्वर, सभी सजीव और निर्जीव चीजों के प्रथम कारण के रूप में, और ब्रह्मांड के स्रष्टा और संरक्षक के रूप में, केवल एक जीवित सार, एक जीवित ईश्वर ही हो सकते हैं। तो, यदि ईश्वर जीवित हैं, तो उनमें अनिवार्य रूप से वचन और आत्मा का निवास होना चाहिए। यदि दिव्य सार में वचन और आत्मा का निवास न होता, तो वह जीवित ईश्वर न होता। चूँकि ईश्वर सभी चीजों का पहला कारण हैं, वह शाश्वत, आरंभ रहित, अनंत और सर्वशक्तिमान हैं; उनके वचन और उनकी आत्मा में भी ये ही गुण हैं। ज़िनोवी अपनी दलीलों का समर्थन उत्पत्ति की पुस्तक और अन्य स्रोतों से कई उद्धरणों के साथ करते हैं। ज़िनोवी ने मसीह के अवतार और उनके 'घर-निर्माण' ( ) पर चर्च की शिक्षा (अध्याय 23-27) पर काफी ध्यान दिया है, जिसे यहूदीकरण करने वालों, बाशकिन और कोसोय, सभी ने खारिज कर दिया था। पुरानी वाचा के वादों का हवाला देते हुए, ज़िनोवी लिखते हैं कि परमेश्वर को मनुष्य के भविष्य के पतन की शुरुआत से ही जानकारी थी और उन्होंने अपने पुत्र के अवतार की पूर्वसूचना दी, जिसकी उन्होंने पुराने नियम के युग के दौरान इज़राइल को बार-बार और कई तरीकों से घोषणा की। चूंकि मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च और सबसे पूर्ण रचना है, मानव जाति का उद्धार केवल ईश्वर के पुत्र, मसीह द्वारा ही संभव था; क्योंकि जो पूर्ण है, उसे केवल सबसे पूर्ण के द्वारा ही बचाया जा सकता है, और जो कीमती है, उसे केवल सबसे कीमती के द्वारा ही बचाया जा सकता है। मोक्ष की संभावना, परमेश्वर के अवतार का रहस्य—जो मानव मन की समझ से परे है—और एक कुंवारी से परमेश्वर के पुत्र के जन्म की संभावना, ये सभी परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता में निहित हैं। और ज़िनोवी लिखते हैं कि पुराने नियम में इस संबंध में कई वादे हैं, ताकि उन विरोधियों को मनाया जा सके जो मुख्य रूप से पुराने नियम पर निर्भर थे।

कार्य के वास्तविक भाग का धर्मशास्त्रीय खंड इन मुद्दों की व्याख्या के साथ समाप्त होता है। अगले अध्यायों (28–42) में, ज़िनोवी प्रतिमाओं की पूजा, संतों की अवशेषों, क्रूस और चर्च की परंपरा का बचाव करते हैं, साथ ही ईसाइयों के लिए पश्चाताप, प्रार्थना और उपवास का अभ्यास करने की आवश्यकता का भी समर्थन करते हैं; वे बाद वाले का समर्थन मुख्य रूप से संत बेसिल द ग्रेट की तपस्या संबंधी रचनाओं के संदर्भों से करते हैं। ज़िनोवी इन कार्यों का सहारा बिशपशाही, मठों और सामान्य रूप से मठवाद के अस्तित्व को सही ठहराने के लिए भी लेते हैं (अध्याय 43–46)। यहाँ, ज़िनोवी को मठवाद से संबंधित भूमि-स्वामित्व के मुद्दे—जो उस समय विवादास्पद था—को संबोधित करने के लिए मजबूर होना पड़ता है, अर्थात् मठों के आबाद भूमि के मालिक होने और उससे आय प्राप्त करने के अधिकार[810] ।

---

[809] सत्य की गवाही। अध्याय 5–12, 14–19, 20।

[810] यह भी देखें: मकारी। 2nd संस्करण। 7. पृ. 467–492 और गोलुबिंस्की। 2. 2. पृ. 225–229। ज़िनोवियस और जोसेफ की तुलनात्मक विशेषता के लिए, देखें: मकारी। 2nd संस्करण। 7. पृ. 492–494; और यह भी: टारासियस, हायरोमोंक. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 7–16, 32–40, 98–110, 137, 146. हाइरोमोंक तारासियस, जिन्होंने *1899–1900 में काज़ान थियोलॉजिकल अकादमी में रक्षा के लिए* इस कार्य को *एक थीसिस के रूप में* प्रस्तुत किया था, *मठवाद और मठ संपत्तियों पर जोसेफाइट विचारों को साझा करते हैं (पृ. 40–46)। यह इस बात का एक बहुत ही स्पष्ट संकेत है कि ये विचार रूसी मठवाद में कितनी गहराई से निहित थे।*

अपने दूसरे कार्य – 'वस्तृत पत्र' (Extensive Epistle), जो पहले वाले से काफी छोटा है – में, ज़नोवी वभिन्नि गैर-सद्धिान्तवादी मुद्दों को संबोधति करते हैं। यह कार्य एक प्रकार का संग्रह है, जसिमें लथिुआनयि के वभिन्नि व्यक्तयिों द्वारा कोसोग के वधिर्म पर उनकी राय जानने के लिए भेजे गए आठ पत्रों के ज़नोवी के उत्तर शामलि हैं। ये प्रश्न इस बारे में थे कि क्या सामुदायकि प्रार्थना, प्रतमिाओं की पूजा, वश्विासयिों के लिए बपतस्मिा और यूखरस्ति की आवश्यकता, संतों और उनके अवशेषों की पूजा, और पुरोहति वर्ग आवश्यक थे। अपने अंतमि उत्तर में, ज़नोवी चर्च के वधिर्म और वधिर्मयिों से लड़ने के अधकिार के बारे में लखिते हैं। इस कृतमिें *द ट्रुथ ऑफ़ टेस्टमिनी* की वशिषता वाली व्यवस्थति संरचना का अभाव है। ये उत्तर संभवतःज़नोवी द्वारा अलग-अलग समय पर लखि गए थे और बाद में एक ही संग्रह में संकलति कयि गए थे, यही कारण है कि यहाँ बार-बार दोहराव मलिता है।

४. मेट्रोपॉलटिन डैनयिल

मास्को के साहत्यिकि हलकों में एक प्रमुख हस्ती मेट्रोपॉलटिन डेनयिल (1522–1539) थे, जनिका इस कृति में पहले ही कई बार उल्लेख हो चुका है। उनकी धार्मकि और राजनीतकि गतविधियिों, साथ ही उनके लेखन, पर रूसी चर्च के इतहिास पर लखिी गई सबसे उत्कृष्ट मोनोग्राफों में से एक में वस्तिार से चर्चा की गई है, जो वी. झमाकनि द्वारा लखिी गई है। डेनयिल की कुशल चर्च राजनीति, जसिने अक्सर उसे ग्रैंड ड्यूकल प्राधकिरण के सामने घुटने टेकने के लिए मजबूर कयिा; गैर-स्वामत्विधारयिों के खलिाफ उसका संघर्ष, जसि उसने जुनून और घृणा के साथ लड़ा; उसका अहंकार; जोसेफाइट वचिारों के प्रति उनकी प्रशंसा और रूसी चर्च के जीवन में उन्हें लागू करने की उनकी इच्छा – यह सब डेनयिल को एक व्यक्ति और चर्च के राजकुमार के रूप में दर्शाता है। फरि भी, एक ही समय में, वह शोधकर्ता को पुरानी मॉस्को शक्षिा और वद्विता के एक आदर्श के रूप में दखिाई देते हैं। डेनयिल के बारे में उनके समकालीनों की राय बहुत वरिोधाभासी है: बोयार इवान बेक्लेमशिेव-बर्सेन उन्हें एक अक्षम चर्च नेता मानते थे[811] ; अधकि वस्तुनष्ठि थे डेनयिल के वैचारकि प्रतद्विंद्वी और उनकी शत्रुता के शकिार, भक्षिु मैक्समि द ग्रीक, जन्होंने उन्हें एक धर्मशास्त्र से शक्षिति व्यक्ति के रूप में वर्णति कयिा[812] । ई. ई. गोलुबस्किी भी अपनी *रूसी चर्च का इतहिास* में मैक्समि द ग्रीक की इस राय से सहमत हैं; साहत्यिकि इतहिासकार डेनयिल को सबसे महत्वपूर्ण पुराने रूसी लेखकों में से एक मानते हैं, और वे उनकी भाषा की जीवंतता और सार्वजनकि लेखन की प्रतभिा पर ध्यान देते हैं[813] । संन्यासी जीवन को समर्पति कृतयिों के अलावा, जनिका वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं , दानयिल ने कई और प्रबंध और पत्र लखि[814] । इन्हें दो संग्रहों में संकलति कयिा गया है, जन्हें तदनुसार नाम दयिा गया है: एक *सोबोर्नकि* और दूसरा *स्बोर्नकि*। 'सोबोर्नकि' में 16 प्रवचन शामलि हैं, जनिमें से छह मठवासी जीवन के मामलों से संबंधति हैं; 'स्बोर्नकि' में 14 पत्र हैं। ये कृतयिाँ धर्मशास्त्रीय और नैतकि मुद्दों को संबोधति करती हैं[815] ।

[816]चार धर्मोपदेश (5वां–7वां और 11वां) धर्मशास्त्रीय मुद्दों को समर्पति हैं; ये प्रकृति में रक्षात्मक हैं और डैनयिल द्वारा यहूदीकरणवादयिों के वधिर्मों के स्पष्ट संदर्भ के साथ रचे गए थे। इन धर्मोपदेशों की सामग्री में अवतार और मसीह के परविार से संबंधति धर्मसद्धिान्तों की व्याख्या शामलि है। पाँचवीं होमलिी अवतार के सद्धिांत पर चर्च की शक्षिा को प्रस्तुत करने के लिए समर्पति है; यह अन्य तीन होमलिीज़ का परचिय है। पवत्रि पतिाओं की रचनाओं से सुवचारति उद्धरणों की सहायता से (यह ध्यान देने योग्य है कि लेखक, जोसेफ और ज़नोवी के वपिरीत, लगभग वशिष रूप से नए नयिम और पवत्रि पतिाओं का, और कभी-कभी तो पूजा-संबंधी पुस्तकों का भी उल्लेख करता है) दानयिल परमेश्वर के पुत्र के बारे में यह सद्धिांत स्थापति करता है कि वह पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य है, और यह अवलोकन करता है कि वधिर्मयिों की झूठी शक्षिाओं में परलिक्षति कल्पनाएँ—अर्थात्, कि मसीह ने केवल मानव स्वभाव धारण कयिा प्रतीत हुआ—गलत और वधिर्मी हैं। मसीह दो स्वभावों और दो इच्छाओं वाले एक दव्यि-मानवीय व्यक्ति हैं (पहला सद्धिांत डैनयिल द्वारा अधकि स्पष्ट और बेहतर ढंग से व्यक्त कयिा गया है), जो न तो अजन्मे पति के साथ और न ही पाप को छोड़कर सृजति मनुष्य के साथ एकसार हैं, वह स्वयं न तो अजन्मा है और न ही सृष्ट है, बल्कि 'सभी युगों से पहले उत्पन्न हुआ' है – इस प्रकार डैनयिल ने मसीही धर्मशास्त्र के सद्धिांत को

---

[811] एएई. 1. संख्या 172. पृ. 142; मकारी. 2nd संस्करण. 6. पृ. 169, 170, 171, 172.
[812] मैक्समिस द ग्रीक। कृतयिाँ, खंड 1, पृ. 530।
[813] गोल्बुंस्की। खंड 2, संख्या 1, पृ. 703; खंड 2, संख्या 2, पृ. 221। स्पेरांस्की, एम. प्राचीन रूसी साहत्यि का इतहिास। मॉस्को काल (1921)। पृ. 146; गुज़दी. उद्धृत कृति (1938). पृ. 279; मकारी. 2nd संस्करण. खंड 7. पृ. 295; झमकनि. उद्धृत कृति. पृ. 259 और अन्य.
[814] डेनयिल के कार्यों पर, देखें: झमाकनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 263–270।
[815] उपरोक्त, पृ. 263।
[816] माकारी। द्वतीय संस्करण, खंड 6, पृ. 203।

स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया है। यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि डैनियल के धर्मशास्त्रीय विचारों में कोई अस्पष्टता या धुंधलापन नहीं है, जो उदाहरण के लिए, राजकुमार-भिक्षु वासियन के विचारों की विशेषता थी। 6वीं व्याख्यान 5वीं से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। इसमें, डैनियल कहते हैं कि मसीह का अवतार और सूली पर चढ़ाया जाना पापी मानवता के प्रति उद्धारकर्ता के असीम प्रेम की गवाही देते हैं, और इसलिए यहूदी धर्म का अनुसरण करने वालों द्वारा किए गए दावे—कि मानव स्वभाव का ग्रहण और क्रूस पर अपमानजनक यातनाएँ ईश्वर के अनुरूप नहीं हैं—मूल रूप से गलत हैं; वे हमारे प्रति ईश्वर और उनके पुत्र के अनुग्रहपूर्ण प्रेम को तुच्छ साबित करने का एक प्रयास हैं। पुत्र के अवतार में, दानियेल अपने चिंतन को 7वें प्रवचन में जारी रखते हैं, जिसमें ईश्वर की असीम बुद्धि और उनका अनंत प्रेम दोनों व्यक्त हुए; क्योंकि मसीह के अवतार की बदौलत, 'दुष्ट की चालाकी को मात देना', 'शैतान को बांधना', 'नरक को नष्ट करना' और मानव जाति को छुटकारा दिलाना और बचाना संभव हुआ। अंतिम प्रवचन दैवीय व्यवस्था, इसके अर्थ और मानव जीवन में इसके प्रकट होने को समर्पित है।

पहले संग्रह (सोबोर्नाकि) में शेष प्रवचन नैतिक धर्मशास्त्र के मुद्दों को संबोधित करते हैं। डैनियल सिखाते हैं कि एक व्यक्ति को सभी बातों में दैवीय धर्मग्रंथों के अनुसार विश्वास करना और कार्य करना चाहिए (पहला प्रवचन)। यह चर्च के पादरियों के लिए विशेष रूप से आवश्यक है, जो चर्च के सत्य के लिए दृढ़ और अडिग रहने के लिए बाध्य हैं (दूसरा प्रवचन)। दिव्य शास्त्रों के अतिरिक्त, एक को चर्च की परंपरा का सम्मान करना चाहिए और उसमें संरक्षित निर्देशों, अनुष्ठानों, नियमों, कानूनों और कैनन का पालन करना चाहिए, क्योंकि इसी के माध्यम से हम अपने जीवन में केवल दिखावे से नहीं, बल्कि वास्तव में ईसाई बनते हैं (तीसरी धर्मोपदेश)। आठवां कथन विशेष रूप से दिलचस्प है, जिसमें दानियेल सांसारिक प्राधिकरण और ऐसे प्राधिकरणों की दैवीय स्थापना के प्रति ईसाइयों के रवैये के बारे में बात करते हैं। राज्य का प्राधिकरण अपने अधीनस्थों से दैवीय कानूनों—अर्थात्, विश्वास के कानूनों—का पालन करने की मांग करने के लिए बाध्य है, और, किसी भी विधर्मी या झूठे शिक्षकों द्वारा उनके पालन न करने या उन्हें तोड़ने-मरोड़ने की स्थिति में, दोषियों को दंडित करता है। विश्वास की पवित्रता को बनाए रखना और विधर्मियों से इसकी रक्षा करना सभी विश्वासियों का कर्तव्य है। शेष शब्द (9वां, 10वां और 12वां–16वां) सार्वजनिक जीवन में लोगों के बीच संबंधों को समर्पित हैं; यहाँ आंतरिक प्रलोभनों पर काबू पाने की आवश्यकता के बारे में बताया गया है, जो अक्सर बाहरी रूप में भी प्रकट होते हैं: झूठ, क्रोध, अहंकार, दंभ, झगड़े, बदनामी और षड्यंत्र, क्योंकि ये लोगों के बीच संबंधों को नुकसान पहुँचाते हैं और सामाजिक जीवन को भ्रष्ट करते हैं। दानियेल विश्वासियों के लिए स्वीकारोक्ति के विशेष धार्मिक और शैक्षिक महत्व पर जोर देते हैं (12वां शब्द)।

यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि 'दुनिया और जो लोग दुनिया में हैं' शीर्षक वाला 13वां वचन सबसे मौलिक है। इसमें, लेखक एक ऐसे प्रश्न का उत्तर देते हैं जो उस युग के लोगों को बहुत व्यस्त रखता था: क्या दुनिया में रहते हुए (अर्थात्, संन्यास के व्रत लिए बिना) उद्धार पाना संभव है? डैनियल निश्चित रूप से कहते हैं कि यदि कोई ईसाई सार्वजनिक और पारिवारिक जीवन दोनों में प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार जीता है, तो स्वर्ग के राज्य के द्वार उसके लिए हमेशा खुले रहते हैं। बड़ी कुशलता और सुंदर, जीवंत भाषा में , डैनियल ने संसार में रहने वाले लोगों के लिए ईसाई तपस्या की नींव रखी है। सभी सांसारिक चीजों का त्याग करने का मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति को सभी गतिविधियाँ बंद कर देनी चाहिए; इसके विपरीत, व्यक्ति को एक सक्रिय व्यक्ति होना चाहिए, लेकिन सांसारिक मूल्यों के प्रति जुनूनी लगाव नहीं होना चाहिए, और व्यक्ति को स्वर्ग के राज्य के शाश्वत आनंद को कभी नहीं भूलना चाहिए। एक ईसाई के लिए सांसारिक मामलों में लापरवाही सद्गुण होने के बजाय एक पाप है। कहा जा सकता है कि डैनियल सामाजिक नैतिकता के मुद्दों को सबसे प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं और इस प्रकार पुराने रूसी ईसाई समाजशास्त्र के विकास में योगदान करते हैं; 13वें प्रवचन में, हमें कई विशिष्ट विवरण और उदाहरण मिलते हैं जो 16वीं सदी के नैतिक माहौल और सामाजिक जीवन को दर्शाते हैं, जो इस कृति को पुरानी रूसी संस्कृति के इतिहास पर एक मूल्यवान स्रोत बनाता है[817] ।

दूसरा संग्रह, जिसका साधारण शीर्षक 'संग्रह' है, में पहले से उल्लेखित छह पत्र शामिल हैं, जो मठवासी जीवन से संबंधित हैं; शेष पत्र, जो विभिन्न व्यक्तियों को संबोधित हैं, नैतिक मुद्दों से संबंधित हैं; वे अपेक्षाकृत संक्षिप्त हैं (केवल 13वां पत्र ही कुछ लंबा है) और, अपनी महत्वता के मामले में, पहले संग्रह *[818] * में निहित लेखों से नीच हैं। मेट्रोपॉलिटन डेनियल के 'संग्रह' को पढ़ते समय, कोई भी यहाँ पहले से ही उद्धृत ई. ई. गोलुबिंस्की के मूल्यांकन से पूरी तरह सहमत हो जाता है, और साथ ही 16वीं सदी के रूसी लोगों के चरित्रों की विविधता और उस युग

[817] झमाकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 263 आदि।

[818] तुलना करें: मकरिय। दूसरी संस्करण, खंड 7, पृ. 345–367।

के ऐतिहासिक जीवन में उनकी भूमिकाओं की विविधता पर एक बार फिर से हैरानी होती है। इन कृतियों को पढ़ते हुए, कोई यह भूल जाता है कि उनके लेखक चर्च के एक गौरवान्वित, चालाक और प्रतिशोधी राजकुमार और एक राजनेता थे; और यदि कोई इसे याद भी रखता है, तो वह यह देखकर चकित रह जाता है कि किस प्रकार सबसे बुरे प्रकार की राजनीतिक चालाकी एक ही व्यक्ति में इतनी बड़ी प्रतिभा के साथ मिल सकती थी। जोसेफ के एक वफादार शिष्य डैनियल, अपने कुछ लेखों में जोसेफाइट स्कूल की सीमाओं से आगे बढ़ते हैं और इसके धार्मिक औपचारिकतावाद को पार करते हैं।

लेकिन यदि हम एक बार फिर से उनकी जीवनी की ओर मुड़ें, तो हम देखेंगे कि उनके लेखन में स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाले ये 'विद्यालय से विचलन', वास्तव में उनके धार्मिक और राजनीतिक करियर को प्रभावित करते थे। उनके एक पत्र, जिसे *संग्रह* में शामिल नहीं किया गया था, का उद्देश्य भावी ज़ार इवान चौथे की अल्पसंख्यक अवधि के दौरान बोयार गुट के भीतर संघर्ष और बोयारों के दमनकारी रवैये के खिलाफ था। यह पत्र, जो जनवरी 1539 में रचा गया था और सभी धर्मप्रांतों को एक आर्चपास्टोरल पत्र के रूप में वितरित किया गया था, उनके साहित्यिक और धर्मशास्त्रीय कार्य की परिणति थी; इसके कारण उन्हें अपना मेट्रोपॉलिटन पद छोड़ना पड़ा, जिसे उन्हें यह दस्तावेज़ भेजे जाने के एक महीने बाद त्यागने के लिए मजबूर होना पड़ा। डेनियल ने जोसेफ मठ में अपनी जीवनलीला समाप्त की, जहाँ उन्होंने कभी अपने संन्यासी जीवन की शपथ ग्रहण की थी[819] ।

आबट जोसेफ, बड़े आर्टेमी, भिक्षु ज़िनोवी और मेट्रोपॉलिटन डैनियल 16वीं सदी के सबसे उत्कृष्ट चर्च-संबंधी लेखक थे। हालाँकि, इस सूची में भिक्षु फिलोथियस का नाम भी जोड़ा जाना चाहिए, जिनकी रचनाएँ चर्च-संबंधी और राजनीतिक प्रकृति की हैं। ये सभी अत्यधिक दिलचस्प व्यक्तित्व थे, हालांकि उनकी गतिविधियों का दायरा और धार्मिक जीवन पर उनका प्रभाव अलग-अलग था। वे एक ऐसे युग से संबंधित हैं जिसमें रूस के सभी बाद के धार्मिक और आध्यात्मिक इतिहास की जड़ें खोजी जा सकती हैं। धार्मिक और राजनीतिक घटनाओं की तीव्रता और तनाव उस समय के सभी लेखों की प्रतिरिक्षात्मक और विवादपरक लेखनी, तपस्या और सिद्धांतवाद में परिलक्षित होता था। क्योंकि ठीक उसी युग में, उस पीढ़ी के जीवनकाल में जिसने यह महसूस किया कि केवल रूस में, केवल मास्को में, तीसरी रोम में, ऑर्थोडॉक्स धर्म की शुद्धता संरक्षित रही थी – और ठीक उसी समय ऐसे लोग प्रकट हुए जिन्होंने धर्म की शुद्धता पर सवाल उठाया, जिन्होंने चर्च की शिक्षाओं पर हमला किया, नई विधर्मों का प्रचार करना शुरू कर दिया और, सबसे बुरी बात यह कि, उन्हें काफी संख्या में अनुयायी मिल गए। उस युग के सभी धर्मशास्त्रीय कार्य इस घटना से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। यह स्पष्ट है कि चर्च के रक्षक मठवासी समुदाय से ही उभरे थे। उन्होंने अपनी आध्यात्मिक शक्ति न केवल इस विश्वास से प्राप्त की कि उनका उद्देश्य न्यायसंगत था; उन्होंने पिछले युग, 14वीं और 15वीं शताब्दी, के आध्यात्मिक स्रोतों से भी प्रेरणा ली, जब रूसी मठवाद अपने चरम पर था - एक युग जिसने सैद्धांतिक रूप से सेंट नील ऑफ सोरा के तपस्वी लेखन में अपनी परिणति पाई, और जो ऐतिहासिक रूप से जोसेफाइट्स और नॉन-अक्विरिस्ट्स के बीच विवाद के साथ समाप्त हुआ। उस युग के धर्मशास्त्रीय कार्यों में, भविष्य के विकास की जड़ें देखी जा सकती हैं। हम यह महसूस करते हैं कि उस समय जो कुछ लिखा गया था, वह बहुत कुछ मौलिक नहीं था और विद्वान धर्मशास्त्र की हमारी वर्तमान धारणाओं के अनुरूप नहीं है। फिर भी, यह सोलहवीं सदी के धर्मशास्त्रीय विद्वता के महत्व को कम नहीं करता है, क्योंकि अग्रदूतों को एक अधिक परिपक्व युग के मानकों से नहीं आंका जा सकता। अपने समय के लिए, यह एक शानदार चमक थी जो, दुर्भाग्य से, अगली सदी में फीकी पड़ गई। 16वीं सदी के दूसरे छमाही और पूरी 17वीं सदी में रूसी मठवासी समुदाय में से एक भी महत्वपूर्ण चर्च लेखक नहीं निकला: मठवासी समुदाय, अपने मठों के मामलों के प्रबंधन में व्यस्त, चुप रहा। केवल पैट्रिआर्क निकोन द्वारा किए गए सुधार प्रयासों और पवित्र उपहारों के रूपांतरण के समय पर धर्मशास्त्रीय विवाद, जो 17वीं शताब्दी के अंतिम चौथाई भाग में भड़क उठा, ने ही इस मौन को तोड़ा। लेकिन पहले, हमें 16वीं और 17वीं शताब्दियों में मठवासी समुदाय की धार्मिक और साहित्यिक गतिविधियों से संबंधित कुछ और घटनाओं पर विचार करना होगा।

5. जीवनी संबंधी और ऐतिहासिक कृतियाँ

यदि हम 16वीं और 17वीं शताब्दियों में मठवासी समुदाय की साहित्यिक गतिविधि की तुलना करें, तो हमें 17वीं शताब्दी में एक बहुत ही स्पष्ट गिरावट दिखाई देगी। 1570 के दशक की शुरुआत से लेकर 17वीं सदी के अंत तक, हमें एक भी ऐसा लेखक नहीं मिलता जिसकी शिक्षा, प्रतिभा और वाक्पटुता को पिछले पैराग्राफों में उल्लेखित लोगों के बराबर रखा जा सके। एक ओर, नई पीढ़ियों में अतीत के साथ आंतरिक संबंध की कमी थी और वे अपने युग की सबसे

[819] प्राचीन रूसी साहित्य के स्मारक। खंड 4। पृ. 194–199 ('सभी रूस के मेट्रोपॉलिटन, विनम्र डैनियल द्वारा, विनम्रता और एकता पर')। तुलना करें: मकारियस। खंड 6। पृ. 206–207।

तीव्र घटनाओं में गहराई से उलझे हुए थे; दूसरी ओर, मठवासी जीवन के धर्मनरिपेक्षीकरण की प्रक्रिया का मठवासी समुदाय की आध्यात्मिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। यद्यपि इस शताब्दी के दौरान लिखी गई सभी कृतियों और उनके लेखकों की एक विस्तृत सूची में मठवासी समुदाय के सदस्यों के कई नाम शामिल होंगे, ये लेखक रूसी धार्मिक साहित्य[820] के लिए विशेष महत्व के नहीं थे। हम यहाँ केवल उन कृतियों का उल्लेख करेंगे जो, हमारे दृष्टिकोण से, सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक हैं।

मेट्रोपॉलिटन मकरियुस के युग में फल-फूलने वाला संतों के जीवन पर आधारित साहित्य, उनके समय के बाद पतन की ओर चला गया। 11वीं शताब्दी से मकरियुस के समय तक—यानी, 1528 तक, जब वे नोवगोरोड में रहते हुए शिक्षित भिक्षुओं और अन्य लोगों को संतों के जीवन पर आधारित लेखन में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे—प्राचीन रूस में कुल मिलाकर केवल 33 संतों के जीवन पर आधारित ग्रंथ ही रचे गए थे; मकारी के युग के दौरान, 49 जीवनी-ग्रंथ या जीवनी-सामग्री से युक्त अन्य कृतियाँ लिखी गईं, जिनमें से 28 भिक्षुओं द्वारा रचित थीं[821] । 16वीं शताब्दी के दूसरे भाग और 17वीं शताब्दी के पहले चौथाई भाग में लिखी गई जीवनी-ग्रंथों में से, निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं।

सोलोवेत्स्की मठ के भिक्षु मिसाइल ने बेसिल द ब्लेस्ड की एक जीवनी और संत के लिए एक कैनन रचा, जो दोनों ही लोगों में बहुत लोकप्रिय हो गए। नोवगोरोड के एंटोनिएव मठ में, सेंट एंथनी द रोमन की जीवनी का संशोधन किया गया, और लगभग 1558 में उसी मठ के निकिफोर नामक एक भिक्षु ने एंथनी की एक नई, बहुत विस्तृत जीवनी लिखी। स्टोलोबेन्स्क के पूजनीय नीलस के समकालीन, भिक्षु हरमन के नोट्स के आधार पर, बोल्डिनो मठ के एक भिक्षु, फिलोथियस पिरोगोव ने 16वीं शताब्दी के अंत में इस संत का जीवन-चरित्र और एक कैनन लिखा। 1590 में, सोलोवेत्स्की मठ में, मेट्रोपॉलिटन सेंट फिलिप की अवशेषों को उस मठ में स्थानांतरित करने के संबंध में, एक अज्ञात भिक्षु ने संत के जीवन पर एक ग्रंथ संकलित किया। पेरियास्लाव में दानिलोव मठ के भिक्षु सर्गियस और वोइवोड एस. आर. ओल्फेयेव ने मिलकर 'उग्लिच के संत राजकुमार रोमन की कथा' और मॉस्को के संत राजकुमार डैनियल के लिए एक कैनन संकलित किया। 1600 से ठीक पहले, कोर्नलिएिव कोमेलस्की मठ के भिक्षु नाथनेल ने मठ के संस्थापक, आदरणीय कोर्नलियिस की जीवनी और उनके सम्मान में एक कैनन लिखा। पितृपक्ष जॉब के आदेश पर, वोल्गोडा के आर्चमिंड्राइट आयोन डुमिन ने संत राजकुमार अलेक्जेंडर नेव्स्की की एक और (श्रृंखला में तीसरी) जीवनी संकलित की, जो मूल रूप से, पहले दो जीवनियों की केवल एक पुनर्कल्पना थी[822] ।

1627 और 1632 के बीच, एक भव्य संतों-चरित संग्रह संकलित करने का कार्य किया गया। हियिरोमोंक जर्मन तुलुपोव († 1637) इस व्यापक कार्य के संपादक थे। उन्होंने मेट्रोपॉलिटन मकारी के मेनाइया को अपने आधार के रूप में लिया, और उसमें मकारी के मेनाइया में शामिल नहीं किए गए जीवन-चरित्रों को जोड़ा; उन्होंने अपने संग्रह में कुछ जीवन-चरित्र कई अलग-अलग संस्करणों में शामिल किए। चूंकि जर्मन ने जीवन-चरित्रों को बिना किसी संक्षिप्त किए, उनकी संपूर्णता में प्रतिलिपि बिनाई, इसलिए उनके संग्रह में एक निश्चित वैदिवतापूर्ण मूल्य है[823] ।

मेट्रोपॉलिटन फिलिप के संत-उपाधि प्रदान करने के संबंध में, सोलोवेत्स्की मठ के भिक्षु गेरा سيم फर्सोव ने 1652 में तीन कृतियाँ लिखीं: संत की जीवनी, उनके सम्मान में एक प्रशंसा-गीत, और एक कैनन[824] ।

16वीं–17वीं शताब्दी के संतों के जीवन-चरित साहित्य को सेंट डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव († 1709) के 'चेती-मिनेई' से पूरक किया गया, जिसका पहला खंड 1689 में मुद्रित हुआ था। ये मेनाइया, जो शुरू से ही व्यापक रूप से प्रसारित हुईं और रूसी लोगों द्वारा बहुत पसंद की गईं, कथात्मक रूप में रचित हैं, जिसके लिए स्रोत सामग्री पर काफी मात्रा में प्रारंभिक वैदिवतापूर्ण कार्य की आवश्यकता थी। रूसी लोगों के बीच उनकी लोकप्रियता बेजोड़ है, और इन मेनाइया के प्रसिद्ध संकलक का नाम रूस के सुदूर से सुदूर कोने में भी जाना जाता है। दक्षिणी रस के मूल निवासी (उनका जन्म 1651 में कीव के पास हुआ था) और कीव-ब्रात्स्क स्कूल[] के एक शिष्य, **दिमित्री तुप्तालो ने रूसी लोगों के ईसाई प्रबोधन के लिए उत्साही, अथक कार्य हेतु अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया; वह एक प्रतिभाशाली उपदेशक थे - उनके उपदेशों ने आज भी अपना मूल्य नहीं खोया है - और जहाँ भी उन्होंने चर्च की सेवा की, उनके प्रयासों का अच्छा फल मिला। दक्षिणी रस के एक मठ के मठाधीश के रूप में, फिर**

---

[820] इसका सर्वोत्तम विवरण के लिए देखें: फिलारेट। समीक्षा। 1–2।

[821] गोल्बुंस्की। 2. 2. पृ. 181–182, 184–187।

[822] मकारी। 10. पृ. 226–227.

[823] क्लुचेव्स्की। लाइव्स। पृ. 297, 298; मेनोलोजियन के आई. मिलियुटिन के संग्रह पर, देखें: वही। पृ. 298 और मकारी। 11. पृ. 222.

[824] PDP. 188 (1916). अन्य, कम महत्वपूर्ण जीवनी संबंधी कृतियों पर: फिलारेट. समीक्षा. 1. पृ. 303, 316, 319, 351, 354, 360, 367, 369; मकारी. 11. पृ. 220–222.

साइबेरिया के मेट्रोपॉलिटन (1701-1702) के रूप में और, अंत में, रोस्तोव के मेट्रोपॉलिटन (1702–1709) के रूप में, वे अपनी आत्मा और विचारों की पवित्रता के साथ-साथ अपनी गहरी भक्ति से ओत-प्रोत विद्वता, बुद्धिमत्ता और शानदार वाक्पटुता के लिए भी विशिष्ट थे। अपने धर्मप्रांतों में, मेट्रोपॉलिटन ने पैरिश पादरी के शिक्षण और स्कूलों के संगठन पर विशेष ध्यान दिया। साथ ही, उन्होंने अपना अधिकांश समय अपने व्यापक साहित्यिक कार्यों को समर्पित किया। उनका व्यक्तित्व मस्कोवी के मठवासी समुदाय के लिए असामान्य था; संत दिमित्री कीव मेट्रोपोलिस के दक्षिणी रूसी मठवासी संघ से संबंधित थे, जहाँ मठवासी जीवन, धार्मिक हलकों की विश्वदृष्टि और उनकी शिक्षा उन ऐतिहासिक परिस्थितियों से आकारित थी जो मास्को में विकसित हुई परिस्थितियों से भिन्न थीं[825] ।

यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि 16वीं शताब्दी के पहले छमाही में, मठवासी समुदाय ऐतिहासिक प्रकृति के कार्यों के संकलन में लगा हुआ था। इसके अलावा, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, भिक्षु, साक्षर होने के नाते, पुराने रूसी वृत्तांतों के संकलक और प्रतिलिपिकार बनाने वाले थे। 1520 के दशक के अंत में, तथाकथित 'सोफिया क्रॉनिकल' - नोवगोरोड क्रॉनिकल - नोवगोरोड में संकलित किया गया था। इस कार्य की पहल और समग्र पर्यवेक्षण मुख्य रूप से आर्चबिशप मकरियस के पास था। यह वृत्तांत 1538 तक के रूसी इतिहास को कवर करता है; यह अपनी सामग्री की व्यापकता और अपनी ऐतिहासिक सटीकता के लिए विशिष्ट है[826] । 'बुक ऑफ रैंक्स', जिससे हम पहले से ही परिचित हैं – जिसकी उत्पत्ति और संकलन भी मेट्रोपॉलिटन मकारी के नाम से गहरी से जुड़ा हुआ है – को भी अपनी तरह की एक ऐतिहासिक कृति माना जा सकता है, जिसमें संतों के जीवन-चरित्र संबंधी सामग्री का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है।

पुराने रूसी इतिहासलेखन के क्षेत्र में, मॉस्को के एक अन्य मेट्रोपॉलिटन – जोआसाफ – के कार्यों को विशेष सम्मान मिलना चाहिए। जोआसाफ स्क्रिपित्सिन शुरू में एक साधारण भिक्षु थे; बाद में, 1529 से 1539 तक, उन्होंने ट्रिनिटी-सर्गीय मठ के मठाध्यक्ष के रूप में सेवा की। 1539 में, उन्हें मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त किया गया, लेकिन उन्होंने यह उच्च पद केवल 1542 तक ही संभाला, जब इवान चतुर्थ की अल्पवयस्कता के दौरान बोयारों के एक गुट के दबाव में, उन्हें सिंहासन से जबरदस्ती हटा दिया गया और किरिलोव मठ में निर्वासित कर दिया गया। 1547 में, मेट्रोपॉलिटन मकारियस के संरक्षण के बिना नहीं, जोआसाफ को ट्रिनिटी-सर्गीय मठ में लौटने की अनुमति मिली, जहाँ 26 जून[827] को उनकी मृत्यु हुई। अपने तपस्वी और चर्च-राजनीतिक विचारों के मामले में, वह 'नॉन-अक्विरिअर्स' के बहुत करीब थे और उन्होंने प्रसिद्ध मैक्सिमस द ग्रीक के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखे, जिन्हें उनकी मध्यस्थता के कारण मठ की कालकोठरी से रिहा कर दिया गया था। जोआसाफ के विरोधी-जोसेफाइट विचार नोवगोरोड के आर्चबिशप सेरापियन की संजीवनी, जिसे उन्होंने संकलित किया था, और स्टोग्लाव[828] पर उनकी आलोचनात्मक टिप्पणियों में बहुत स्पष्ट रूप से स्पष्ट थे। उनके धार्मिक विचार और 'मास्को - तीसरी रोम' विचारधारा के प्रति उनका रवैया उनकी 'कन्फेशन' में विशेष रूप से स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया था, जिसमें उन्होंने मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन के रूप में, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क [829] के साथ अपने कैननिक संबंध पर जोर दिया। अपने समय के लिए, जोआसाफ एक उच्च शिक्षित बिशप थे; उनके पास अपनी खुद की पुस्तकालय थी और वे टाइपिकॉन (इसके धार्मिक अनुष्ठान संबंधी खंड) के संपादन में शामिल थे, जिसे ट्रिनिटी-सर्गीय लाव्रा में संशोधित किया जा रहा था। हाल ही में, रूसी साहित्य के इतिहासकारों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि जोसाफ क्रोनोग्राफ और निकॉन क्रॉनिकल के पश्चिमी रूसी संस्करण के लेखकों में से एक, या यहां तक कि मुख्य लेखक थे, जिसे 16वीं शताब्दी के मध्य में संकलित किया गया था[830] ।

पोस्कोव-पेचेरस्क मठ (1529–1570) के मठाध्यक्ष, कॉर्नेलियस, को भी विशेष ध्यान देने का पात्र माना जाता है[831] । एक इग्यूमेन के रूप में, कॉर्नेलियस ने खुद को एक उत्कृष्ट व्यक्ति के रूप में साबित किया। उन्होंने मठ

---

[825] रॉस्तोव के संत डेमेट्रियस पर, मोनोग्राफ़ देखें: श्लापकिन, आई. ए. रॉस्तोव के संत डेमेट्रियस और उनका समय. 1651–1709 (1891).

[826] गोल्बुस्की। खंड 2, भाग 2। पृ. 192; सोफिया क्रॉनिकल, में: पीएसआरएल। खंड 6।

[827] Макарii. 2nd संस्करण. 6. पृ. 207–209; निकोल्स्की. किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ. 1. 1. पृ. LXVIII; गोलुबिंस्की. 2. 1. पृ. 740.

[828] रोज़ानोव, एस. "'निकोनीयन" वृत्तांत संकलन और जोआसाफ इसके संकलकों में से एक के रूप में', IORAS. 1930. 13. पृ. 277; स्टोग्लाव। अध्याय 100; शखमातोफ़, ए. 'द इओआसाफ़ क्रॉनिकल', में: झएमएनपी। 1904. 5.

[829] गोल्बुस्की। 2. 1. पृ. 740.

[830] उपरोक्त, पृ. 620. रोज़ानोव। वही। पृ. 268–270। लावरोव, एन. 'निकोन् क्रॉनिकल पर नोट्स', में: LZAK. 34 (1927). 1. पृ. 55। यह क्रॉनिकल निकोन् क्रॉनिकल के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसका पांडुलिपि पैट्रिआर्क निकोन् का था।

[831] Серебрянский। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 21, 39–46, 339–341, 345, 370। मठ के प्रमुख कॉर्नेलियस के संबंध में अधिकांश जानकारी के लिए मैं कला इतिहासकार एन. ई. एंड्रीव (प्राग) का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे 1937–1938 में पस्कोव-पेचेरस्क मठ में किए गए अपने शोध और इस

जीवन के संगठन की देखरेख की, मठ में नई इमारतों के नरि्माण की नगिरानी की, एस्टोनयिा की मूरतपिूजक आबादी के बीच ईसाई मशिनरी कार्य में सफलतापूर्वक भाग लयिा, और मठ के भीतर आइकन चत्रिकला को बढ़ावा देने पर बहुत ध्यान दयिा। उन्होंने जो नई संरचनाएँ खड़ी की थीं – या, अधकि सटीक रूप से, मठ के चारों ओर बनी वशिाल कलिबंदी की दीवार – ने उनके भाग्य में एक नरि्णायक भूमकिा नभिाई। 1570 में मठ के दौरे के दौरान, ज़ार इवान चौथे—जो उस समय पोलशि राजा स्टीफन बटोरी के खलिाफ एक थका देने वाली और असफल युद्ध लड़ रहे थे—ने मठाधीश पर देशद्रोह का आरोप लगाया: दावा कयिा गया कि कॉर्नेलयिस ने स्टीफन के समर्थन में अपनी सेनाओं के खलिाफ यह पत्थर की दीवार खड़ी की थी; ज़ार ने वृद्ध, सम्माननीय मठाधीश पर कुल्हाड़ी से वार कयिा और उन्हें काटकर हत्या कर दी। मठ का सन्निाडकिॉन इस घटना का वर्णन इस प्रकार करता है: 'इस नश्वर जीवन से, उन्हें सांसारकि ज़ार द्वारा स्वर्गीय राजा के पास उनके शाश्वत नविास में वर्ष 7078 (1570), फरवरी के 20वें दनि भेजा गया था'[832] । शहीद के अवशेष बनिा क्षय के संरक्षति रहे, और कॉर्नेलयिस को मठ और आसपास के क्षेत्रों में एक संत के रूप में पूजति कयिा जाने लगा[833] । हाल के समय में, यह स्थापति हो गया है कि मठाध्यक्ष कॉर्नेलयिस प्सकोव क्रॉनकिल के प्रमुख संकलक थे, जो 1547 संकलन का हस्सिा है[834] । कॉर्नेलयिस ने 'पेचेर्सक मठ का क्रॉनकिल' भी लखिा। यह ध्यान देने योग्य है कि, अपने मठ की स्थापना के इतहिास का अध्ययन करते समय, कॉर्नेलयिस ने स्रोतों—जो अक्सर पौराणकि सामग्री से भरे होते थे—की कठोर, यूं कहें तो वैज्ञानकि और ऐतहिासकि आलोचना की, और सावधानीपूर्वक सत्यापति सामग्री के आधार पर अपनी 'क्रॉनकिल' लखिी। इस अर्थ में, कोर्नेलयिस रूसी में इतहिासलेखन में आलोचनात्मक पद्धति लागू करने वाले पहले लोगों में से एक थे। 'दुर्भाग्य से, 'कीव केव्स मठ का वृत्तांत' हमें इसके लेखक के धार्मकि और राजनीतकि वचिारों के बारे में नष्किर्ष नकिालने की अनुमति नहीं देता है – कि वह जोसेफाइट्स के करीब था या नॉन-अक्वरियर्स के – क्योंकि अपने संक्षप्ति और स्पष्ट वर्णन में, जो ऐतहिासकि तथ्यों के प्रति वफादार है, वह उन मुद्दों पर कोई राय व्यक्त करने से बचता है जन्हिोंने इन दोनों गुटों को वभिाजति कयिा था। हेग्यूमेन सेंट कॉर्नेलयिस हमें अपने समय के एक शक्षिति व्यक्ति, एक ऊर्जावान, व्यावहारकि चरत्रि वाले, और एक सख्त मठाधीश के रूप में दखिाई देते हैं, जनिके कीव केव्स मठ के प्रशासन की वशिेषता एक नश्चिति तपस्वी कठोरता थी। उनकी शहीद मृत्यु ने उनके व्यक्तित्व के आसपास कई कविदंतयिों को जन्म दयिा, जन्हिें मठवासी समुदाय की बाद की पीढ़ियों ने उत्साहपूर्वक संरक्षति कयिा और संत के प्रति लोगों की श्रद्धा को और बढ़ाया। फरि भी, इतहिासकार हेग्यूमेन कॉर्नेलयिस को इन कविदंतयिों के बनिा भी 16वीं सदी के मस्कोवी में मठवाद के उत्कृष्ट दायरों के अंतमि प्रतनिधियिों में से एक मानते हैं।

6. भक्षिु एर्मोला-एरास्मस की रचनाएँ

16वीं सदी के उन लेखकों की बहुआयामी गतविधियिों का एक सहिावलोकन, जो मठवासी समुदाय से संबंधति थे, उनकी सबसे मौलकि लेखकों में से एक का उल्लेख कए बनिा अधूरा रहेगा। इस हस्ती ने हाल ही में साहत्यिकि इतहिासकारों का ध्यान आकर्षति कयिा है: हम एर्मोलाई द सनिर, या एर्मोलाई-एरास्मस की बात कर रहे हैं। उनके जीवन के बारे में बहुत कम पता है, केवल कुछ आइसोलेटेड ववरिण ही ज्ञात हैं। हम केवल इतना जानते हैं कि उनका करयिर मध्य-16वीं सदी तक फैला था; वह, पूरी संभावना है, 1550 और 1555 के बीच मास्को के ' ' चर्च के प्रधान पुरोहति थे, और बाद में उन्होंने संन्यास की शपथ ली; यर्मोलाई 1550 के दशक में मेट्रोपॉलटिन मकाराई के चक्र से संबंधति थे, जब रूसी 'बुद्धजिीवयिों' ने पहली बार साहत्यिकि कृतयिों में अपनी छाप छोड़ी; यह उनके शक्षिा के कारण ही संभव हुआ कि मेट्रोपॉलटिन के भव्य साहत्यिकि उपक्रम साकार हो सके। इस समूह के भीतर, यर्मोलाई-एरास्मस एक उत्कृष्ट प्रचारक के रूप में उभरे, जन्हिोंने अपने युग के सामाजकि संबंधों से संबंधति कुछ प्रश्नों के मौलकि उत्तर दए[835] । उन्हें 16 वभिन्नि कृतयिों का श्रेय दयिा जाता है, जनिमें से 11 नस्सिंदेह उनके द्वारा लखिी गई थीं।

शोध के नष्किर्षों पर आधारति अपनी मोनोग्राफ के बारे में सूचति कयिा, जो, दुर्भाग्य से, 1939–1945 के युद्ध के दौरान जर्मन अधकिारयिों द्वारा बनिा कसिी औचत्यि के जब्त कर ली गई और तब से खो गई है।

[832] द बुक ऑफ़ द सेंट्स, में: रीडग्सि। 1887। 4. पृ. 55 (संख्या 157)।

[833] गोल्बुंस्की। कैनोनाइज़ेशन का इतहिास। पृ. 332.

[834] नासोनोव, ए. 'पस्कोव वंशावली के इतहिास से', *इतहिास संबंधी टप्पिणयाँ* 18 (1945)। पृ. 261.

[835] श्ल्यापकनि, आई. 'एर्मोलाई द वाइज़, इवान द टेरबिल के समय के एक नए लेखक', *संकलन इन ऑनर ऑफ एस. एफ. प्लाटोनोव* (1911) में। पृ. 550, 553. नकिोल्स्की, एन. 'एरास्मस द सनिर पर और टप्पिणयाँ, में: bbliographic क्रॉनकिल 1 (1914); झ्रगिा. 'एर्मोलाइ-एरास्मस की साहत्यिकि गतविधि, में: LZAK 33 (1926). पृ. 103–200; यावोर्स्की, ए. 'एर्मोलाय-एरास्मस की साहत्यिकि गतविधि के प्रश्न पर', *स्लावयिा* में। 9 *(1930–31) / पृ. 59–80, 273–299 /*

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, 'अपनी आत्मा के लिए एक अनुशोचन' का उल्लेख करना चाहिए: यह सामान्य रूप से पश्चाताप के अर्थ पर, और विशेष रूप से अधिकार और निर्णय करने के अधिकार से युक्त लोगों के लिए, उनकी धार्मिक जिम्मेदारी पर, और पादरीय अहंकार, 'पार्थिव महानता की गरिमा' के नैतिक खतरे पर एक काव्यात्मक चिंतन है। साथ ही, लेखक हमें यह याद दिलाने में विफल नहीं रहते कि आध्यात्मिक अधिकार आत्मा को नियंत्रित करता है, जबकि धर्मनिरपेक्ष अधिकार केवल शरीर को नियंत्रित करता है[836] । उनकी 'पवित्र त्रिमूर्ति पर पुस्तक' भी उल्लेखनीय है। इसमें, हर्मोलाउस यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि त्रिमूर्ति का सिद्धांत 'सभी चीजों' की नींव में निहित है। 'पुस्तक' के पहले भाग में, वह पवित्र धर्मग्रंथों से चुनिंदा उद्धरणों का सहारा लेते हुए, पवित्र त्रिमूर्ति के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को प्रस्तुत करते हैं। लेकिन, हर्मोलाउस के अनुसार, त्रिमूर्ति का सिद्धांत पूरे ब्रह्मांड में निहित है - एक बिंदु जिस पर वह 'पुस्तक' के दूसरे भाग में चर्चा करते हैं। मनुष्य, एक सर्वोच्च सृष्टि के रूप में, त्रिमूर्ति के भीतर एकता के बिना अकल्पनीय है, क्योंकि उसके घटक भाग - आत्मा, प्राण और शरीर - केवल ऐसी एकता के कारण ही अस्तित्व में रह सकते हैं; इसके विपरीत, इन तीन भागों के बिना, मानव पूर्ण और सामंजस्यपूर्ण नहीं हो सकता। 'पुस्तक' का तीसरा भाग पवित्र त्रिमूर्ति को संबोधित प्रार्थनाओं से बना है, जो काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत की गई हैं[837] । एर्मोलाई के विचार, जो स्पष्टता और आंतरिक तर्क के साथ लिखे गए हैं, अपनी भाषा और अभिव्यक्तियों की सादगी से विशेषता रखते हैं; लेखक के ज्ञान और धार्मिक शिक्षा को कोई नकार नहीं सकता।

एर्मोलाई ने सामाजिक मुद्दों में भी रुचि दिखाई। उनका नैतिक और धर्मशास्त्रीय निबंध जिसका शीर्षक 'प्रेम और सत्य पर और शत्रुता और मिथ्या पर विजय पर एक प्रवचन'[838] है, संरक्षित है; इसमें, लेखक 1550 के दशक के मॉस्को समाज में सामाजिक असमानता पर अपने विचार व्यक्त करता है। वह मॉस्को की अभिजात वर्ग, 'कुलीनों', पर ईसाई प्रेम की कमी का आरोप लगाते हैं; उनकी संपत्ति दूसरों, यानी लोगों के वास्तविक श्रमिक वर्ग, मुख्य रूप से उन लोगों की कठिनाइयों के खर्च पर बढ़ती है जो अपनी मामूली जीविका कठोर दैनिक श्रम के माध्यम से कमाते हैं। येरमोलाई-एरास्मस के ये दावे हमें प्रिंस-मोंक वासियन द्वारा मॉस्को समाज में सामाजिक असमानता पर किए गए अवलोकनों और 16वीं शताब्दी के मध्य में किसानों पर पड़े कर के बोझ पर मेट्रोपॉलिटिन जोआसाफ के शब्दों की याद दिलाते हैं।[839] और भी अधिक विशिष्ट है उनकी 'ज़ार इवान को पत्र' रचना, साथ ही किसान वर्ग के आर्थिक महत्व पर उनका प्रबंध, जिसे उन्होंने ज़ार को प्रस्तुत किया था। यहाँ उन्होंने तत्काल भूमि सुधारों का एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है, जो भूमि के न्यायपूर्ण वितरण और करों में कटौती (*फसल के 15 प्रतिशत तक!)* के माध्यम से *किसानों की स्थिति में सुधार कर सकता है और इस प्रकार उनकी उत्पादक क्षमता को मजबूत कर सकता है। परिणामस्वरूप, एरास्मस का मानना है कि राज्य की सामान्य भलाई बढ़ेगी और न्याय और प्रेम की ईसाई आज्ञाओं को पूरा किया जाएगा, जिससे ज़ार की अधिक महिमा होगी। इसके साथ ही, लेखक व्यापार की स्थिति पर कुछ टिप्पणियाँ करता है और विभिन्न सुधारों का प्रस्ताव करता है*[840] *।*

एक मठवासी टोपी पहने इस अनोखे 'विशेषज्ञ' की रचनाएँ, शायद, मठवाद की तुलना में उस युग की सामान्य तस्वीर की अधिक विशेषता हैं - यह युग पीटर के सुधारों के समय से कम ऐतिहासिक तनाव वाला नहीं था, और न ही रूस के भाग्य के लिए कम महत्वपूर्ण था। जब कोई इतिहासकार पीटर के सुधारों में रूसी इतिहास की विभिन्न घटनाओं - राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और चर्च-राजनीतिक - के कारणों और जड़ों की पहचान करने का प्रयास करता है, तो वह इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि ये जड़ें कहीं अधिक गहरी हैं, कि वे 16वीं शताब्दी, मुख्य रूप से उस शताब्दी के पहले छमाही की हैं। हालांकि, आज के मानकों और धारणाओं के अनुसार, धार्मिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर उभरे ये सभी व्यक्ति कितने महत्व के लग सकते हैं, लेकिन अपने युग और उसके सांस्कृतिक तथा धार्मिक-राजनीतिक माहौल के लिए, वे प्रमुख और विशिष्ट व्यक्ति थे।

---

[836] श्ल्यापकिन। पूर्वोक्त। पृ. 555–562।

[837] रज़्गिा. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 173–176.

[838] उपरोक्त, पृ. 157।

[839] तुलना करें अध्याय VI; स्टोग्लाव। अध्याय 100। (832) रझगिा। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 173–176।

[840] इस कृति पर, देखें: रझगिा। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 193–199; साथ ही पृ. 152, 158, 186; आंशिक रूप से: झमाकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 69–71। तुलना करें: सोबोलेव्स्की, ए. 'पुराने रूसी साहित्य पर सामग्री और टिप्पणियाँ', IORAS में. 17 (1912). पृ. 2, 94–96.

7. सत्रहवीं सदी का साहित्य

17वीं सदी एक फीका, अधकि अपersonal और कम रचनात्मक दौर था। मठवासी हलकों में, हम आध्यात्मकि और सांस्कृतकि रुचयिों में गरिावट देखते हैं। इस सदी की सामाजकि और आर्थकि चतिाएं और कठनिाइयां केवल 'समय की परेशानयिों' (Time of Troubles)[841] के परणिामों से समझाई नहीं जा सकतीं। असल में, इसके कारण पछिली सदी की परस्थितियिों में नहिति थे। एक तरह से, यह यहाँ पहले से ही बताए गए वचिारों और मूल्यांकनों को सही ठहराता है, जो उन प्रचारकों द्वारा व्यक्त कएि गए थे, जन्हिोंने प्रचलति परस्थितियिों की ओर ध्यान आकर्षति तो कयिा, लेकनि उनके पास भवष्यि के वकिास का अनुमान लगाने और उचति नष्किर्ष नकिालने के लएि आवश्यक ज्ञान नहीं था। भक्षिुओं के समुदाय ने इन कठनिाइयों पर कोई प्रतक्रियिा नहीं दी, और इस वषिय पर कुछ ही पत्रकारति संबंधी लेखन उल्लेखनीय नहीं हैं। धार्मकि और राजनीतकि जीवन में, ऐसी कोई गंभीर समस्याएँ नहीं थीं, जैसे कि उदाहरण के लएि, चर्च की भूमकि के स्वामत्वि का मुद्दा, जसिने एक सदी पहले लोगों का बहुत ध्यान खींचा था।

ट्रनिटिी-सर्गेई मठ के भक्षिुओं में—जसिकी समुदाय ने 16वीं शताब्दी के दौरान धार्मकि साहत्यि के क्षेत्र में वशिष रूप से खुद को प्रतष्ठिति नहीं कयिा था—फरि भी कई लेखक थे जो उल्लेख के योग्य थे। इस मठ के कोषाध्यक्ष, अव्राम पालत्सिनि († 1627), ने 'समय की परेशानयिों' के दौरान अपनी प्रसद्धि कृति 'ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ की घेराबंदी का ववरिण' रची। यह कृति, समग्र रूप से, 'समय की परेशानयिों' के इतहिास पर एक बहुत अच्छा स्रोत है, और इसके लेखक से साहत्यिकि प्रतभिा होने से इनकार नहीं कयिा जा सकता[842] ।

इस मठ का एक अन्य सेलर, साइमन अज़ारनि (मृत्यु 1665), मुख्य रूप से *ऑन द न्यूली रविीलड मरिकल्स ऑफ द वेनेरेबल सेरजयिस* (ऑफ राडोनेज़) नामक कृति के लेखक के रूप में जाने जाते हैं, जो इस संत की पछिली जीवनी-ग्रंथों का पूरक है[843] । अज़ारनि की एक अन्य कृति, *हमारे पति, आर्चमिंड्राइट डायोनसियिस का जीवन और कृत्य*, भी बहुत लोकप्रयि थी; यह इस उत्कृष्ट व्यक्तति की गतविधियिों का वर्णन करती है। यह कृति पलत्सिनि की 'कथा' का पूरक है, और मलिकर वे 'समय की परेशानयिों' के दौरान राष्ट्रीय महत्व की घटनाओं में मठ की भागीदारी की एक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, जब आर्चमिंड्राइट डायोनसियिस (1610–1633) मठ के मठाधीश थे[844] । कम प्रसद्धि अज़ारनि का तीसरा कार्य है, *द टेल ऑफ़ द रुइन ऑफ़ द मस्कोवाइट स्टेट*, जसिमें लेखक 1654 के रूसो-पोलशि युद्ध के कारणों के बारे में लखिते हैं - यह संभवतःसरकार द्वारा कमीशन कयिा गया लोगों की नज़रों में इस युद्ध की आवश्यकता को उचति ठहराने का एक प्रयास था[845] । अज़ारनि वार्षकि त्योहारों और रूसी संतों के एक वस्तिृत मासकि कैलेंडर के भी लेखक हैं, जो केवल पांडुलपिकि के रूप में ही बचा है। 'सेंट डायोनसियिस को प्रार्थना कैनन' अज़ारनि के साहत्यिकि करयिर का समापन करता है[846] ।

वशिष रूप से दलिचस्प हैं यरूशलेम *(1651–52)* की तीर्थयात्रा पर यात्रा नोट्स, *जो हाइरोडीकन आयोना द्वारा लखि गए थे, जन्हिें 'छोटा' उपनाम दयिा गया था*[847] *. इओना के वृत्तांत में यरूशलेम और उसके पवत्रि स्थलों का बहुत वस्तिृत वर्णन है; यह सादगी और प्रामाणकिता से परपूर्ण है और पुराने रूसी लेखकों द्वारा लखिी गई अन्य 'पवत्रि स्थानों की तीर्थयात्राओं' में पाए जाने वाले काल्पनकि तत्वों से रहति है।*

संन्यासी आर्सेनी सुखानोव द्वारा एक अत्यंत व्यापक कृति संकलति की गई थी, जो ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ के कोषाध्यक्ष भी थे। पूजा-संबंधी पुस्तकों के नयिोजति संशोधन के सलिसलिे में, पैट्रआर्क नकिोन ने आर्सेनी को कॉन्स्टेंटनिोपल की यात्रा करने और वहाँ पूजा-संबंधी संस्कारों और पुस्तकों से प्रत्यक्ष रूप से परचिति होने का काम सौंपा। अर्सेनी ने इस यात्रा (1649–1653) के परणिामों को एक पुस्तक में प्रस्तुत कयिा, जसिका शीर्षक उन्होंने

---

[841] हम इस कृति का संदर्भ देते हैं: प्लातोनोव, एस. एफ. मस्कोवाइट राज्य में संकट के समय के इतहिास पर नबिंध (1899)।

[842] 'कथा' (पहली बार 1784 में प्रकाशति) में 86 अध्याय हैं, जनिमें से अध्याय 1–6 1584 से 1611 की अवधि को समर्पति हैं; अध्याय 7–58 में मठ की घेराबंदी का वस्तिृत ववरिण है; अंतमि अध्याय, 59–86, 'समय की परेशानयिों' के दौरान पूरे रूस की स्थति को दर्शाते हैं। अव्रामी पर, देखें: केद्रोव. उद्धृत ग्रंथ और वही लेखक, 'एक लेखक के रूप में अव्रामी पलtsyn', में: रस्की आर्खवि, 1886, संख्या 8; 'कहानी' में: पीडीपी, खंड 8 (1883)।

[843] क्लुचेव्स्की। लाइव्स। पृ. 350–351।

[844] यह कृति, *हमारे पति, आर्चमिंड्राइट डायोनसियिस का जीवन और कर्म*, कई बार प्रकाशति हो चुकी है (प्रथम संस्करण 1809) और यह बहुत लोकप्रयि है।

[845] 'मस्कोवाइट राज्य और पूरे रूस देश के वनिाश की कथा', में: रीडग्सि। 1881. 2 (प्रथम संस्करण)।

[846] गोर्स्की। होली ट्रनिटिी-सर्गीय लव्रा का एक ऐतहिासकि ववरिण। खंड 2 (1890)। पृ. 15.

[847] यह कृति, *द टेल् एंड लेजेंड ऑफ द जर्नी टू जेरूसलम एंड कॉन्स्टेंटनिोपल*, कई बार पुनर्मुद्रति हुई है: 1836; 1849; इसमें: *रीडग्सि*। 1871. 1; पीडीपी (1882); सर्वश्रेष्ठ संस्करण: पीपीएस. 42। सं. एस. डोलगोव, प्रस्तावना में आयोन के बारे में जानकारी के साथ।

प्रोस्कनिटिार रखा[848] । आर्सेनयिस का *प्रोस्कनिटिारयिन* तीन भागों में वभिाजति है; पहले भाग में उनकी यात्रा डायरी है (आर्सेनयिस ने मोल्दावयिा में याशी, कॉन्स्टेंटनिोपल, ग्रीक द्वीपसमूह के कई द्वीपों, मस्रि और यरूशलेम का दौरा कयिा, और कॉकेसस और जॉर्जयिा होते हुए मास्को लौटे); दूसरा भाग पूरी तरह से यरूशलेम और उसके पवत्रि स्थलों के वर्णन को समर्पति है, जबकि तीसरा भाग ग्रीक चर्च के अनुष्ठानों का वर्णन करता है। इसके अलावा, आर्सेनयिस अपने साथ 700 तक की संख्या में पूजा-संबंधी और धर्मशास्त्रीय वषिय-वस्तु वाली पांडुलपियिों की एक बड़ी संख्या वापस लाए, जन्हिें पैट्रआर्क नकिोन के पूजा-संबंधी पुस्तकों को संशोधति करने के उपक्रम के आधार के रूप में उपयोग करने के लिए बनाया गया था।

वशिष रूप से धर्मशास्त्रीय साहत्यि के संबंध में, 17वीं सदी से कोई वशिष मौलकि कृतयिाँ संरक्षति नहीं हैं। उस समय लखिी गई कृतयिों की संख्या अपेक्षाकृत बड़ी थी, लेकनि वे अपनी सामग्री के मामले में महत्वपूर्ण नहीं हैं[849] । हालाँकि, उन कृतयिों पर अधकि ध्यान दयिा जाना चाहए जो पवत्रि उपहारों के अभषिेक के समय को लेकर हुए ववािद से उत्पन्न हुईं या नकिोन द्वारा की गई पूजा-संबंधी पुस्तकों के संशोधन के संबंध में लखिी गईं। पहले मुद्दे पर मुख्य रूप से मठवासी समुदाय के प्रतनिधियिों द्वारा चर्चा की गई थी, जबकि पुस्तकों के संशोधन के संबंध में उत्पन्न हुए अत्यधकि प्रचुर साहत्यि में, मठवासी समुदाय ने अब प्रमुख भूमकिा नहीं नभिाई। लेकनि सबसे उल्लेखनीय कृतयिों का नाम लेने से पहले, 17वीं सदी के चर्च संबंधी साहत्यि के बारे में एक सामान्य टप्पिणी करना उचति होगा। इस साहत्यि की भाषा वशिष्टि है। उस युग के लेखकों की वशिषता वाक्पटुता और अलंकारवाद के प्रति एक वशिष लगाव था, जसिमें, हालांकि, सच्ची वाक्पटुता का अभाव था; उन्होंने भाषा को रूसीकृत पोलशि, लैटनि और कुछ हद तक ग्रीक शब्दों की बहुतायत से खराब कर दयिा, जो पश्चमिी और दक्षणि-पश्चमिी प्रभावों का एक नकारात्मक परणिाम था। कुल मलिाकर, यह सब पाठक को थकाता है और समझ में बाधा डालता है; परणिामस्वरूप, इन कार्यों का व्यावहारकि मूल्य उनके समकालीनों के लिए भी कम हो गया था। शायद इसी कारण से इनमें से अधकिांश पांडुलपिि के रूप में ही रहे और हमें मुख्य रूप से सूचीपत्रों या संक्षप्ति पुरालेखीय ववरिणों से ज्ञात हैं।

'स्वर्ग के राज्य पर वचन' (1626), जसिे पोडॉल्स्की के नाम से जाने जाने वाले भक्षिु एंथनी ने लखिा था, जो संभवतः दक्षणि-पश्चमिी रस'[850] के मूल के थे, मौलकिता से रहति नहीं है। 'वचन' के छह अध्यायों में, लेखक पहले पवत्रि त्रमिूर्ति की प्रकृति और मसीह के अवतार – जो हमारे उद्धार का स्रोत है – पर चर्चा करते हैं; फरि वे स्वर्ग के राज्य को चत्रिति करने, संतों के आनंद, उनकी अक्षयता और उनकी 'आयु' का वर्णन करने का प्रयास करते हैं (अध्याय 1–4); दूसरे भाग (अध्याय 5 और 6) में सांसारकि मूल्यों और स्वर्गीय आनंद का तुलनात्मक वश्लिेषण शामलि है। यद्यपि एंथनी का *वचन* आंतरकि तर्क और सच्ची भक्ति से रहति नहीं है, अत्यधकि अलंकारकि भाषा और सजावटी भाषा इस कृति के मूल्य को कम कर देती है[851] । खोलमोगोरी के आर्चबशिप (1682–1702) अथानासयिस द्वारा उत्पत्ति की पुस्तक पर व्याख्यात्मक कार्य – *द सक्सि डेज़* – और उनके *कन्फेशन ऑफ़ फेथ* – धर्मवश्विास की व्याख्या[852] का भी उल्लेख करना उचति है।

इग्नेशयिस रम्स्कि-कोर्साकोव एक अत्यधकि बहुमुखी लेखक थे। सेवा कुलीन वर्ग में जन्मे, और कुछ समय तक ज़ार अलेक्सी के दरबार में चेंबरलेन के रूप में सेवा करने के बाद, वह 1677 में सोलोवेत्स्की मठ में प्रवेश कर गए; 1685 तक वह पहले से ही नोवोस्पासस्की मठ के आर्चमिांड्राइट थे, और पवत्रि उपहारों के स्थानांतरण पर हुए ववािद के दौरान वह पैट्रआर्क जोआकमि के सबसे उत्साही समर्थकों में से एक थे। नए पैट्रआर्क एड्रयिन के साथ उनके संबंध बहुत अच्छे नहीं रहे, और साइबेरयिा के मेट्रोपॉलटिन के रूप में उनकी नयिुक्ति शायद एक प्रकार का सम्मानजनक नर्विासन ही था। उनका जीवन दुखद रूप से समाप्त हुआ: इग्नेशयिस का मन संतुलन बगिड़ गया, उन्हें 1700 में सेवानवृित्त कर दयिा गया, और 1701 में उनकी मृत्यु हो गई। 1780 और 1790 के दशक में, उन्होंने तीन संत-चरत्रि लखिे: 1) 'काशनि की संत राजकुमारी अन्ना का जीवन', 2) 'वर्चोटुरी के संत समियिन का जीवन' और 3) 'पैट्रआर्क जोआचमि का जीवन और वसीयत'। यह अंतमि कृति, एक वशिष्टि उद्देश्य - जोआचमि के संत-पद की मान्यता को बढ़ावा देने के लिए लखिी गई थी, एक ऐसी योजना जसिे पैट्रआर्क एड्रयिन ने मंजूरी नहीं दी - 'ऑर्थोडॉक्स पार्टी' की स्थति से घनष्ठि रूप से जुड़ी हुई है, जो उपहारों के स्थानांतरण पर ववािद में थी; यह कृति

---

[848] अर्सेनी सुखानोव। *प्रोस्कनिटिारयिन*, *पीपीएस* (1889) में। सुखानोव पर: एस. बेलोकुरोव, *अर्सेनी सुखानोव* (1891)।

[849] तुलना करें: फलिारेट. ओब्ज़ोर. 1–2, जहाँ इन कृतयिों का वश्लिेषण करने के बजाय सूचीबद्ध कयिा गया है।

[850] तुलना करें: मकाarii. 11. पृ. 223–227; प्रकाशति: Prav. sob. 1864. 1. पृ. 108–126, 227–246। यह भी देखें मकाarii. 10. पृ. 195।

[851] पोडॉल्स्क के एंथनी ने नैतकि और शक्षिाप्रद प्रकृति की कई और कृतयिाँ रचीं; मकारी. 11. पृ. 224; इसके अतरिक्ति, ववािदास्पद प्रबंध 'शुद्धकिरण अग्नि पर' (मकारी. 10. पृ. 195), जो 17वीं शताब्दी के पहले क्वार्टर में पुस्तकों के संशोधन के संबंध में लखिा गया था।

[852] फलिारेत। समीक्षा। 1. संख्या 367.

वशिष रूप से वस्तुनष्ठि नहीं है, जो एक प्रशंसा-गीत का रूप लेती है, फरि भी यह अपने युग के इतहिास के लएि एक महत्वपूर्ण स्रोत बनी हुई है। इसके अतरिक्ति, इग्नाटयिस 'सोफयिा, ईश्वर की बुद्धि के आइकन की व्याख्या' के लेखक हैं, जो प्रोटेस्टेंटवाद और कैथोलकिवाद के खलिाफ नरि्देशति दो ववािदास्पद कृतयिाँ हैं, वभिाजन के खलिाफ तीन कृतयिाँ जन्हिोंने वशिष रूप से व्यापक प्रसद्धि प्राप्त की, और, अंत में, 'रूसी ज़ारशाही की खबरें' और 'सेना के नाम एक शब्द', जो 1685 के क्रीमयिा अभयिान के संबंध में रचति थे। ये अंतमि दो कृतयिाँ स्वभाव से राजनीतकि हैं; उनका उद्देश्य राजकुमारी सोफयिा की सरकार का समर्थन करना था; 'सोफयिा की छवि की व्याख्या' में राजकुमारी सोफयिा की 'बुद्धमित्ता' के उल्लेख भी शामलि हैं[853] ।

अपने धर्मप्रांत में व्यवस्था बनाए रखने का ध्यान रखने वाले एक बशिप का उदाहरण रयाज़ान के मेट्रोपॉलटिन पावेल (1681–1686) हैं। वह अपने धर्मप्रांत के पुरोहतिों के लएि एक लंबी 'परपित्र पत्र' के लेखक थे। इस पत्र में, मेट्रोपॉलटिन, पैरशि के पुरोहतिों को संबोधति करते हुए लखिते हैं कि जब वे अपने धर्मप्रांत का दौरा कर रहे थे और चर्चों का नरीक्षण कर रहे थे, तो उन्होंने दैवीय सेवाओं के आयोजन में कई अनयिमतिताएँ पाईं; वे अपनी नरि्देशों को पवत्रि शास्त्र और कैननकि पुस्तकों के अंशों से पुष्ट करते हैं, जो उनके सुदृढ़ शक्षिा की गवाही देता है। पॉल जोर देकर मांग करते हैं कि पैरशि के पुरोहति और मठों के मठाधीश पादरी नकिोन के अधीन संशोधति और बाद के पूजा-संबंधी पुस्तकों के अनुसार धार्मकि अनुष्ठान करें, जो, ऐसा प्रतीत होता है, हर जगह नहीं कयिा जा रहा था। मेट्रोपॉलटिन पॉल उस समय के कुछ बशिपों में से एक थे जो मौखकि उपदेश देते थे[854] ।

यह ज्ञात है कि मिस्कोवाइट रूस में अंबो से दिए गए उपदेशों पर बहुत कम ध्यान दयिा जाता था, और इसका कारण न केवल पादरयिों की शक्षिा की कमी या लापरवाही थी, बल्कि प्राचीन रूसी धार्मकिता की वशिष्टि प्रकृति भी थी[855] । 11वीं–13वीं शताब्दयिों की तुलना में – हमें केवल ल्यूक द ज्यू, केव्स के संत थयिोडोसयिस, मेट्रोपॉलटिन हलिारयिन, टुरोव के सरिलि और संत अब्राहम को याद करना चाहिए – बाद का काल इस संबंध में बहुत पीछे रह गया। 17वीं शताब्दी में, 1654 के बाद और वशिष रूप से 1686 के बाद, जब कीव मेट्रोपोलसि मास्को के पैट्रआिर्क के अधकिार क्षेत्र में आ गया[856] , तो कीव के धार्मकि और चर्च संबंधी प्रभाव मास्को के जीवन में तीव्रता से व्याप्त होने लगे। परणिामस्वरूप, धार्मकि उपदेश का एक नश्चिति पुनरुत्थान हुआ। सेंट दमित्रिी ऑफ रोस्टोव का वशिष उल्लेख कयिा जाना चाहिए; यद्यपि वे शताब्दी के अंतमि चौथाई भाग में धार्मकि शक्षिा के इतहिास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, तथापि, वे मॉस्को के मठवासी समुदाय के एक वशिष्टि व्यक्ति नहीं थे, क्योंकि उनका आध्यात्मकि गठन दक्षणि-पश्चमिी रस में हुआ था, जहाँ आध्यात्मकि शक्षिा की एक वशिष्टि प्रणाली थी[857] । मॉस्को के मठवाद और बशिप वर्ग ने स्वयं धार्मकि उपदेशन के वकिास को आगे बढ़ाने में बहुत कम योगदान दयिा। हम केवल कुछ परपित्रों का उल्लेख कर सकते हैं, जन्हिें उपदेश-मंच से लोगों को पढ़कर सुनाया जाता था और जो उपदेश का वकिल्प थे। आइए हम उनमें से तीन का नाम लें: दो पैट्रआिर्क नकिोन द्वारा लखिे गए थे और एक रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन आयोन (1652–1691) द्वारा। पतिृपक्षीय नकिोन आमतौर पर स्वयं उपदेश देते थे, जो उस समय एक बहुत बड़ी दुर्लभता थी; दुर्भाग्य से, उनके उपदेश खो गए हैं[858] , लेकनि दो परपित्र (1656) संरक्षति हैं। उनमें से एक क्रॉस के मठ की स्थापना के अवसर पर रचति था। पैट्रआिर्क ने क्रूस पर मसीह की मृत्यु के उद्धारकारी महत्व के बारे में लखिा है और क्रूस के तीन-उँगलयिों वाले चह्नि की एक धर्मशास्त्रीय व्याख्या पेश की है[859] । दूसरा पत्र मस्कोवी में एक महामारी (1656) के दौरान रचा गया था; यह लोगों को संबोधति है और वश्विासयिों से पश्चाताप करने और नैतकि

---

[853] श्ल्यापकनि। सेंट डेमेट्रयिस ऑफ रोस्टोव। पृ. 168–169; 'पैट्रआिर्क जोआकमि का जीवन और वसीयत', ओएलडीपी (1879) और पीडीपी में। 1880. संख्या 2। ववािदात्मक कृतयिाँ: लेबेदेव, ए. 'दक्षणिी रूस के अभलिखागार में ऐतहिासकि अनुसंधान', में: रीडग्सि. 1884. 3; देखें: त्सवेतायेव. 'रूस में वदिेशी धर्म-स्वीकारों के इतहिास से' (1866). पृ. 215–236। संप्रदायवाद के खलिाफ लेखन: एपस्टिल्स (काज़ान, 1855); बाकी कृतयिाँ केवल पांडुलपिि के रूप में ही बची हैं। कृति: अब्रामोव, एन. 'मेट्रोपॉलटिन इग्नाटयिस कोर्साकोव', में: स्ट्रानकि, 1862 – मेरे लएि अनुपलब्ध थी। इग्नाटयिस और पैट्रआिर्क एड्रयिन के बीच संबंधों पर: उस्त्र्यालोव। पीटर द ग्रेट का इतहिास, खंड 3, परशिष्टि 7, पृ. 536।

[854] यह पत्र नम्निलखिति में पाया जाता है: पक्सिानोव, ए. प्राचीन पत्र और रयिाज़ान क्षेत्र के कार्य (1854)। संख्या 51 और वोझ्द्वज़िंस्की, टी. रयिाज़ान पदानुक्रम की ऐतहिासकि समीक्षा (1820)। पृ. 171–181। तुलना करें: फलिारेट. समीक्षा. खंड 1, संख्या 236; और यह भी: सोलोवयिोव. रूस का इतहिास. खंड 14. पृ. 90.

[855] फलिारेत. ओब्ज़ोर. खंड 1, संख्या 367; पेटुखोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 234.

[856] PSZ. खंड 2, संख्या 1198 और 1199।

[857] तुलना करें: टप्पिणी 820 और पॉपोव, एम. सेंट डमिट्रिी ऑफ रोस्टोव एंड हजि वर्क्स (1910)।

[858] मकाराई। 12. पृ. 269 आदि।

[859] IRI. 4. पृ. 831–860; मकारीय. 12. पृ. 255–257.

रूप से खुद को शुद्ध करने का आह्वान करता है। यहाँ, निकोन उस समय के व्यापक अंधविश्वासी विश्वास का खंडन करते हैं कि महामारी के खिलाफ कोई भी उपाय करना एक पाप था, जिसे ईश्वर की सजा माना जाता था; वह पवित्र धर्मग्रंथ के उद्धरणों[860] के साथ इस प्रकार के उपायों को सही ठहराते हैं। मेट्रोपॉलिटन योना के व्यापक आर्चपास्टोरल पत्र में पादरी वर्ग और अपने धर्मप्रांत के लोगों, दोनों के लिए नैतिक शिक्षा समाहित है। इसमें, योना पादरियों के मंत्रालय संबंधी कर्तव्यों और जीवन के उचित तरीके के बारे में लिखते हैं, सामान्य लोगों के लिए ईसाई नैतिकता की नींव रखते हैं, और शराब पीने की व्यापक बुराई की कड़ी निंदा करते हैं[861] ।

मॉस्को के चुदोव मठ के हेगुमेन कैरियन इस्तोमिन (मृत्यु 1717) एक असाधारण व्यक्ति थे। वह दो युगों के संगम पर खड़े थे, जब पीटर द ग्रेट के सुधारों से मस्कोवी की परंपराएं और विश्वदृष्टि हिल गई थीं और समाज के आध्यात्मिक चरित्र में नई विशेषताएं उभरने लगी थीं। करियोन प्रबोधन काल के एक उत्साही समर्थक और अभ्यासी थे। ज़ाइकोनोस्पस्की मठ में भाइयों इओनिकियोस और सोफ्रोनिओस लिखुदोव द्वारा संचालित स्कूल के पहले छात्रों में से एक[862] , उन्होंने कुछ समय के लिए कीव अकादमी (1681 और 1687 में) में अध्ययन किया[863] । मास्को में, उन्होंने रॉयल प्रिंटिंग हाउस में प्रूफरीडर के रूप में कार्य किया, अत्यंत रूढ़िवादी पैट्रिआर्क जोआकिम (1674–1690) के सबसे करीबी चक्र से जुड़े थे – जो कि कैरियन की 'कूटनीतिक' प्रतिभा का संकेत हो सकता है – और उनके कुछ महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा किया। कारियन को जोआचिम के उत्तराधिकारी, पैट्रिआर्क एड्रियन (1690–1700) का भी पूरा विश्वास प्राप्त था, और उन्होंने एक निजी सचिव के समान क्षमता में उनकी सेवा की। बाद में उन्होंने रॉयल प्रिंटिंग हाउस का प्रभार संभाला। 1712 में, कैरियन मेट्रोपॉलिटन जॉब द्वारा स्थापित एक स्कूल में पढ़ाने के लिए नोवगोरोड गए, लेकिन वहाँ लंबे समय तक नहीं रुके। वे रोस्तोव के सेंट डेमेट्रियस के करीबी दोस्त थे और उन्होंने उनके मेनोलॉजियन के लिए संतों के जीवन-चरित्र संबंधी सामग्री संकलित करने में उनकी सहायता की। करियन इस्तोमिन ने कई उपदेश और अन्य कृतियाँ लिखीं, जिन्हें 'वेसेलिति' (Veseliti) नामक एक पांडुलिपि संकलन में संकलित किया गया है, जो उस समय की विकृत भाषा का एक विशिष्ट शीर्षक था, साथ ही कई कविताएँ, एक 'प्राइमर' जो न केवल 'युवा पुरुषों' बल्कि 'युवा महिलाओं' (!), और यहाँ तक कि 'सदाचार की नागरिकता' – शिष्टाचार पर एक मैनुअल[864] के लिए था। करिऑन 17वीं शताब्दी के अंत के रूसी भिक्षु के एक नए प्रकार का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम अपनी पुस्तक में अन्य विषयों के संबंध में बाद में इसी तरह के व्यक्तियों से मिलेंगे। उस समय, अपने करियर को आगे बढ़ाने के लिए मठवासी वेश धारण करने का एक प्रचलित चलन था। हालाँकि, उस युग की परिस्थितियों को देखते हुए, जिसे सामान्य और चर्च-संबंधी शिक्षा के पुनरुद्धार की आवश्यकता थी, ऐसे व्यक्तियों की गतिविधियाँ फिर भी सकारात्मक प्रकृति की थीं।

अध्याय XI. पश्चिमी प्रभाव और पवित्र उपहारों के रूपांतरण पर धर्मशास्त्रीय विवाद

1. 17वीं सदी में पश्चिमी प्रभावों का प्रवेश

17वीं सदी के अंतिम चौथाई भाग में, मठवासी समुदाय एक बार फिर मास्को के धार्मिक जीवन में सक्रिय रूप से शामिल हो गया। दैवीय धर्मविधि के दौरान पवित्र उपहारों के अभिषेक के समय को लेकर धर्मशास्त्रीय विवाद इस बात के लिए उल्लेखनीय है कि यह मास्को के मठवासी समुदाय के भीतर दो अलग-अलग धाराओं को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है: 'ग्रीक ऑर्थोडॉक्स' और 'पश्चिमी', या 'रोमन कैथोलिक' धाराएँ। रोमन कैथोलिक सिद्धांतों के प्रवेश को अचानक या अप्रत्याशित घटना नहीं कहा जा सकता; इसके विपरीत, यह ऐतिहासिक परिस्थितियों की एक पूरी श्रृंखला का परिणाम था, जिसे साहित्य में सामान्य रूप से 'पश्चिमी प्रभाव' के नाम से जाना जाता है। यह उस विस्तृत विविधता और पीटर महान के सुधारों से भी पहले मस्कोवाइट जीवन और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर

---

[860] PSZ. 1. संख्या 188.

[861] AI. 4. संख्या 172–177.

[862] मिरिकोविच। पाट्रियार्शल काल के दौरान स्कूल और शिक्षा, में: ZhMNP. 1878. 7. सेमेंटोव्स्की, एम. लिखुदा भाइयों। 17वीं शताब्दी के अंत और 18वीं शताब्दी की शुरुआत के चर्च शिक्षा और चर्च जीवन के इतिहास का एक अध्ययन (1899); लिखुदा भाइयों पर, अध्याय XI देखें।

[863] श्ल्यापकिन। उपरोक्त। परिशिष्ट। पृ. 77–79। कैरियन इस्तोमिन पर: ब्राइलोव्स्की, एस. 'कैरियन इस्तोमिन: उनका जीवन और कृतियाँ', में: CHOLDP. 1889. 4–6; वही. 'कैरियन इस्तोमिन की जीवनी पर', में: ZhMNP. 1891. 8।

[864] श्ल्यापकिन। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 256, 263, 283, 368, 370, 442; परिशिष्ट, पृ. 79।

उनके प्रभाव की जांच करने का स्थान नहीं है[865] । हम केवल उन प्रभावों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं जो धार्मिक विश्वदृष्टि के क्षेत्र में प्रकट हुए।

जैसा कि हमारे विवरण से स्पष्ट है, 16वीं और 17वीं शताब्दी के मॉस्कोवासियों के मन में दो विश्वास गहराई से जड़ें जमा गए: पहला, यह दृढ़ विश्वास कि ईसाई धर्म केवल ग्रीक ऑर्थोडॉक्स धर्म के भीतर, या यहां तक कि उसके 'रूसी ऑर्थोडॉक्स' रूप में शुद्ध और अछूता रहा है; और दूसरा, कि मानव समाज का जीवन मसीह की शिक्षाओं की नींव पर बनाया जाना चाहिए और उनके अनुसार विकसित होना चाहिए। ये विचार रूसी लोगों के बीच ईसाईकरण की शुरुआत से ही लंबे समय से स्थापित थे - हमें बस मेट्रोपॉलिटन हिलारियन के *स्लॉव* (11वीं सदी) (अध्याय I) को याद करना है - और तब से वे बस विकसित और मजबूत होते रहे। भिक्षु फिलोथियस की रचनाएँ और उसमें व्यक्त 'तीसरी रोम' के रूप में मास्को का विचार, इन विचारों की महज एक गंभीर घोषणा मात्र थे।

अपने स्वयं के ऑर्थोडॉक्सि (सही आस्था) में दृढ़ विश्वास और परिणामस्वरूप, अपनी विशिष्टता में, एक निश्चित धार्मिक गर्व भी जड़ें जमा लेता है। ऑर्थोडॉक्सी की सच्चाई में विश्वास, अपने आप में, धार्मिकता का एक बिल्कुल सामान्य, गैर-पापी प्रकटीकरण है; फिर भी अनावश्यक अतिशयोक्ति अक्सर सच्ची धार्मिक भक्ति की सीमाओं से परे चली जाती है। रूसी लोगों ने अपनी ऑर्थोडॉक्सी में अपने विश्वास को अन्य ईसाई संप्रदायों के प्रति स्पष्ट शत्रुता के साथ जोड़ा और रूसी ऑर्थोडॉक्स नहीं होने वाली ईसाई धर्म की किसी भी रूप को विधर्म करार दिया। इस प्रकार की धार्मिक चेतना, सार में, विशिष्ट रूप से रूसी नहीं थी; वस्तुनिष्ठ रूप से कहें तो, यह सभी मध्ययुगीन धार्मिकता की विशेषता थी, लेकिन अपरिहार्य 'उना सैंक्टा' [एक पवित्र चर्च] के इतिहास में एक रूसी योगदान—एक नकारात्मक योगदान—भी था। रूसी धार्मिक चेतना की इन विशेषताओं के कारण प्रतिरक्षा-शास्त्र—जो अपने आप में उचित था—अत्यधिक कठोर स्वरूप ले गया, जिससे शब्द और कर्म में रक्षा अनुचित शत्रुता के साथ की गई, जबकि साथ ही पश्चिमी ईसाई धर्म के बारे में ज्ञान की कमी भी प्रकट हुई।

रोमन कैथोलिक प्रभावों के प्रवेश के परिणामस्वरूप, जो शुरू में कीव मेट्रोपोलिस के चर्च जीवन में और बाद में कीव के माध्यम से मॉस्को मेट्रोपोलिस के चर्च जीवन में हुआ, रोमन कैथोलिक सिद्धांत को रूसी मठवासी समुदाय के बीच भी अनुयायी मिले। 14वीं सदी की शुरुआत में ही, रूसी लोगों का वह हिस्सा जो आस्था में ग्रीक ऑर्थोडॉक्स था, उसने रूसी चर्च के साथ एकता केवल आस्था और कैनन (नियमों) की एकता के संदर्भ में बनाए रखी, न कि पदानुक्रम के संदर्भ में, क्योंकि वे एक अलग कीव मेट्रोपोलिस की स्थापना के परिणामस्वरूप अपनी मातृ चर्च से अलग हो गए थे। (1448, 1458 में अंतिम रूप दिया गया)[866] । 1569 में, ल्यूब्लिन संघ के परिणामस्वरूप लिथुआनिया और दक्षिण-पश्चिमी रस एकल राज्य में एकजुट हो गए, और इस प्रकार कीव मेट्रोपोलिस के ग्रीक ऑर्थोडॉक्स धर्मप्रांत पोलिश राजाओं के राजनीतिक अधिकार के अधीन आ गए। पोलैंड एक रोमन कैथोलिक देश था; कैथोलिक

---

[865] 'ग्रीक प्रभाव धार्मिक था,' वी. ओ. क्ल्यूचेव्स्की लिखते हैं, 'जबकि पश्चिमी प्रभाव राजनीतिक था। ग्रीक प्रभाव पूरे समाज में व्याप्त हुआ, पर पूरे व्यक्ति में नहीं; पश्चिमी प्रभाव पूरे व्यक्ति में व्याप्त हुआ, पर पूरे समाज में नहीं' (Geschichte Russlands. Vol. 3, p. 283). मार्गदर्शन के लिए, मैं केवल सबसे महत्वपूर्ण कृतियों का उल्लेख करूँगा जो पश्चिमी प्रभावों की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करने में मदद करेंगी: एस. प्लाटोनोव, *मास्को और पश्चिम* (1925); एन. पेट्रोव, 'प्राचीन रूसी साहित्य पर पश्चिमी रूसी साहित्य के प्रभाव पर', *टीकेडीए* में। 1872. अंक 4, 5 और 7 (यह पुरानी कृति आज भी पूरी तरह से प्रासंगिक है); क्लुचेव्स्की, वी. '17वीं सदी में रूस में पश्चिमी प्रभाव: एक ऐतिहासिक-मनोवैज्ञानिक निबंध', *Questions of Philosophy and Psychology* में। 36, 38 और 39 (1897); वही, *Geschichte Russlands*। 3. पृ. 281–307; मिल्युकॉव, पी. *Sketches of Russian Cultural History*। 2 खंड (1898–1901); ब्रुक्नर, ए. द यूरोपियनाइज़ेशन ऑफ रूस (1888); लूथर, ए. हिस्ट्री ऑफ रशियन लिटरेचर (1925); विक्लर, एम. रशियन हिस्ट्री सिंस द बिगिनिंग ऑफ द 17th सेंचुरी, इन: प्रोपाइलिया वर्ल्ड हिस्ट्री. 9 (1933). पृ. 310–420.

[866] 1037 से, रूसी चर्च के प्रमुख, कीव के मेट्रोपॉलिटन का आसन कीव था। मेट्रोपॉलिटन सिरील द्वितीय (1240–1280) बारी-बारी से कीव और क्लाज़्मा पर स्थित व्लादिमीर में रहते थे; उनके उत्तराधिकारी, मेट्रोपॉलिटन मैक्सिम (1283–1305), 1299 में स्थायी रूप से व्लादिमीर चले गए। मेट्रोपॉलिटन पीटर (1308–1325) ने अपना आवास व्लादिमीर से मास्को में स्थानांतरित कर दिया। उस समय दक्षिण-पश्चिमी रूसी धर्मप्रांत लिथुआनिया में स्थित थे। 1448 में, योना को मॉस्को का मेट्रोपॉलिटन नियुक्त किया गया। पोलैंड के राजा और लिथुआनिया के ग्रैंड ड्यूक, कैसिमिर चौथे ने एक विशेष चार्टर (1451) के माध्यम से लिथुआनियाई धर्मप्रांतों पर योना के कानूनी अधिकार को मान्यता दी। 1458 में, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क ग्रेगरी मामिया ने नौ लिथुआनियाई धर्मप्रांतों (ब्रायन्स्क, स्मोलेंस्क, प्रेज़्मिसिल, टुरोव, लुट्स्क, वोलोडिमिर-वोल्हिनिस्की, खोल्म और हलिच) के प्रशासन के लिए एक विशेष 'कीव के मेट्रोपॉलिटन' – ग्रेगरी बुलगारिन – को नियुक्त किया। मेट्रोपॉलिटन जोनाह (1461) की मृत्यु के बाद, मास्को के मेट्रोपॉलिटन को 'मास्को और सभी रस' की उपाधि प्रदान की गई। उस समय से, कीव का मेट्रोपॉलिस अपने एक अलग ऐतिहासिक मार्ग पर चल पड़ा। इस विषय पर देखें: सोकोलोव, डी. *द हिस्ट्री ऑफ द डिवीजन ऑफ द रशियन मेट्रोपोलिस* (1900); सोकोलोव, पी. *द रशियन बिशप फ्रॉम बाइज़ेन्टियम एंड द राइट टू हिज़ अपॉइंटमेंट अनटिल द बिगिनिंग ऑफ द 15th सेंचुरी* (1913); और साथ ही: मकारी, खंड 4-5, और गोलुबिन्स्की, खंड 2, पृ. 1.

और ऑर्थोडॉक्स आबादी के बीच आर्थकि और सांस्कृतकि संबंधों ने कैथोलकि प्रभावों के लिए मार्ग प्रशस्त कयिा, और यह और भी अधकि महत्वपूर्ण था क्योंकि इन प्रभावों को पोलशि सरकार से दृढ़ समर्थन मलिा।

ऐतहिासकि दृष्टकिोण से, यह दुर्भाग्यपूर्ण था कि रूसी लोगों ने रोमन कैथोलकि चर्च का मूल्यांकन पोलशि कैथोलकि धर्म के मानकों के आधार पर कयिा, क्योंकि पोलशि कैथोलकि धर्म ने रूसी लोगों के बीच दरार डाल दी थी, एक ओर रूसी चर्च और दूसरी ओर रोमन कैथोलकि चर्च के बीच पारस्परकि समझ और वस्तुनष्ठि मूल्यांकन बाधति हुआ और यहां तक कि असंभव भी हो गया। रूसी लोगों ने पोलशि कैथोलकि धर्म के साथ अपने संपर्क के माध्यम से कैथोलकि चर्च के बारे में अपनी धारणा बनाई। पोलशि सरकार की नीति, जो, अपने नयिंत्रण में पूरी तरह से रूसी भूमि पर, ने राजनीतकि और चर्च संबंधी परस्थितियिों को अवभिाज्य रूप से आपस में जोड़ दयिा, जबकि रूसी लोगों के लिए 'पोलशि' और 'कैथोलकि' शब्द पर्यायवाची बन गए। रूसी 'समय की परेशानयिों' (False Dmitry के प्रकट होने के बाद एक अनुचति नीति) में पोलैंड के हस्तक्षेप और रूस में कैथोलकि धर्म का प्रचार करने के लिए पोलशि पादरयिों के अनाड़ी प्रयासों के वशिेष रूप से गंभीर परणिाम हुए। समय की परेशानयिों के बाद की शताब्दयिों में, रूसी-पोलशि संबंध, ववािद और युद्ध केवल दखिावटी तौर पर राष्ट्रीय-राजनीतकि प्रकृति के थे; वास्तव में, दांव पर लगे मुद्दे राज्य की सीमाओं और प्रभाव क्षेत्रों से परे थे; इन घटनाओं का एक गहरा, चर्च-ऐतहिासकि महत्व था, क्योंकि इनके परणिामस्वरूप चर्चों को एकजुट करने की कसिी भी संभावना का अंत हो गया। सरकारों और धार्मकि पदानुक्रम दोनों की गलतयिाँ, जन्हिोंने स्थानीय महत्व की घटनाओं के आधार पर जल्दबाजी में नर्णिय लिए; वभिन्नि गुटों के नेताओं की कटुता और उनके अयोग्य कृत्य, जन्हिोंने पोलैंड और पश्चमिी रूस में संघ के पूरे इतहिास पर एक अंधेरा साया डाल दयिा - यह सब दो ईसाई संप्रदायों को दुश्मन बना गया। अब से 'वभिाजनकारी' और 'धर्मद्रोही' एक-दूसरे के वरिोधी हो गए, और कसिी भी अन्य राजनीतकि आंदोलन, कसिी भी अन्य साहत्यिकि ववािद में इतनी पारस्परकि पूर्वाग्रह, आरोप और बदनामी नहीं थी। ये दो शत्रु शविरि थे जो, फरि भी, एक-दूसरे के बनिा नहीं रह सकते थे।

पश्चमिी सांस्कृतकि प्रभाव, और वशिेष रूप से पश्चमिी शक्षिा, दक्षणि-पश्चमिी रस के आध्यात्मकि जीवन में और भी गहराई से प्रवेश कर गई; यह 16वीं शताब्दी के दूसरे भाग में वशिेष रूप से स्पष्ट हो गया। धीरे-धीरे, ये नए रुझान मस्कोवी तक पहुँच गए, और यह प्रक्रयिा अगली शताब्दी तक जारी रही[867] । ये प्रभाव स्कूल शक्षिा के क्षेत्र में वशिेष रूप से गहराई से जड़ें जमा गए; कई शहरों में स्कूल स्थापति हुए, जो अधकिांशतः ऑर्थोडॉक्स भाईचारे द्वारा स्थापति थे, जनिके पाठ्यक्रम और शक्षिण वधियिों में पश्चमिी प्रभाव झलकता था। 1615 में, कीव ब्रदरहुड स्कूल की स्थापना हुई; 1631 में, मेट्रोपॉलटिन पेट्रो मोहलिा ने एक कॉलेज की स्थापना की, जो बाद में कीव थयिोलॉजकिल अकादमी बन गया। कएिव कॉलेज के इतहिास से यह ज्ञात है कि वहाँ की शैक्षणकि और धर्मशास्त्रीय शक्षिा की प्रणाली, अपनी शास्त्रीय शक्षिण पद्धतयिों के साथ, जेसुइट कॉलेजों की ही लगभग बलि्कुल समान थी। धीरे-धीरे, कुछ कैथोलकि धर्मशास्त्रीय सद्धिांत दक्षणि रूसी धर्मशास्त्रीय साहत्यि में शामलि होने लगे। पुरोहति वर्ग, मठों और बशिपों के कई सदस्य, जो वहाँ शक्षिति हुए थे या ऐसे साहत्यि को पढ़कर अपने ज्ञान को बढ़ाया था, इन सद्धिांतों को स्वीकार करने के लिए झुकाव रखते थे और इस प्रकार कीव मेट्रोपोलसि के चर्च संबंधी जीवन के भीतर कैथोलकि वचिारों के समर्थक बन गए[868] । हालांकि, जैसे ही अन्य भक्षिुओं[869] और बशिपों ने ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च की शक्षिाओं का दृढ़ता से पालन कयिा, कीव मेट्रोपोलसि के भीतर भी एक काफी तीव्र ववािद उत्पन्न हुआ, जसिके परणिामस्वरूप कई धर्मशास्त्रीय ग्रंथों का प्रकाशन हुआ[870] ।

---

[867] इस वषिय पर वस्तिृत साहत्यि में से, हम उल्लेख कर सकते हैं: सोबोलेव्स्की, ए. पश्चमिी प्रभाव मस्कोवी के साहत्यि पर 15वीं–17वीं शताब्दयिों में (1899); श्ल्यापकनि, ए. उद्धृत कृति; फ्लोरोव्स्की, ए. द कॉन्फ्लक्टि ऑफ टू ट्रेडशिन इन इंटेलेक्चुअल लाइफ इन ईस्टर्न यूरोप इन द 16th–17th सेंचुरजि। प्राग, 1937; खॉडनकिी, के. द ऑर्थोडॉक्स चर्च एंड द पोलशि-लथिुआनयिन कॉमनवेल्थ। 1370–1632 (1934)।

[868] श्ल्यापकनि। उद्धृत कृति, पृ. 108 आदि; खार्लामोवचि, के. पश्चमिी रूसी ऑर्थोडॉक्स स्कूल ऑफ द 16वीं और शुरुआती 17वीं सदी (1905); गोलुबेव. मेट्रोपॉलटिन पीटर (मोगाइला) ऑफ कीव एंड हजि एसोसएिट्स। खंड 1 (1883); मकाराई (बुलगकोव)। कीव अकादमी का इतहिास (1843); टटिोव, एफ. कीव यूक्रेन में उच्च शक्षिा (1924); गोलुबेव. कीव थयिोलॉजकिल अकादमी का इतहिास। मोहलिा काल (1886); पेट्रोव, एन. सत्रहवीं शताब्दी के दूसरे भाग में कीव अकादमी (1885)।

[869] ग्रीक ऑर्थोडॉक्स पार्टी में एक दलिचस्प हस्ती भक्षिु इओआन वशिंस्की († 17वीं सदी के पहले क्वार्टर में नधिन) थे। देखें: झतिेत्स्की, आई. इओआन वशिंस्की की साहत्यिकि गतविधि (1890); फ्रैंको, आई. इवान वशिंस्की और उनके कार्य (1895); उनके कुछ लेख प्रकाशति हुए: AYUZR. 2 (1865). पृ. 205–270; Arkh. YUZR. 1. 7 (1887). पृ. 19 से आगे और इसमें: गोलुबेव, एस. मेट्रोपॉलटिन पीटर (मोगाइला) ऑफ कीव। 1 (1883)। परशिष्टि। पृ. 67 से आगे। वशिेन्स्की के लेख उस युग के दक्षणिी रूस में सामाजकि संबंधों और मठवासी जीवन पर प्रचुर सामग्री प्रदान करते हैं।

[870] यह साहत्यि बहुत वस्तिृत है। हम केवल नम्निलखिति का उल्लेख करेंगे: 'पश्चमिी रूस में ववािदात्मक साहत्यि के स्मारक', में: RIB. 7 और 19; अर्खान्गेल्स्की, ए. '16वीं शताब्दी के अंत और 17वीं शताब्दी के पहले छमाही के कैथोलकिवाद और पश्चमिी रूसी साहत्यि के

इन सभी पर मॉस्को में बारीकी से नजर रखी गई, और कीव मेट्रोपोलसि के भीतर उत्पन्न लगभग सभी धार्मकि लेखों पर 'लैटनि वधिर्म' का संदेह कयिा गया; रक्षात्मक उपाय भी कएि गए। हम इनमें से केवल सबसे उल्लेखनीय का ही उल्लेख करेंगे। इस प्रकार, 1620 में, पैट्रआिर्क फलिारेट के अधीन, मास्को में एक परषिद बुलाई गई, जसिने यह आदेश दयिा कि यदि कैथोलकि और यूनएिट रूसी चर्च में परविर्तति होना चाहते हैं तो उन्हें बपतस्मिा का संस्कार फरि से दयिा जाना चाहए। पतिृपाद जोआसाफ (1634–1641) के अधीन, इस आदेश को ट्रेब्नकि (1639) में भी शामलि कर दयिा गया था, और 1667 की परषिद तक कैथोलकिों का पुनर्बपतस्मिा नश्चिति रूप से नषिद्धि नहीं कयिा गया था[871] । 1628 में, ज़ार मखिाइल और पैट्रआिर्क ने चेर्नगिोव के आर्चमिांड्राइट सरिलि ट्रांक्वलियिन के कार्यों को जलाने का आदेश दयिा; उसी समय, लथिुआनयिाई प्रेस की सभी पुस्तकों—यानी, लथिुआनयिा या यूक्रेन में प्रकाशति—पर प्रतबिंध लगा दयिा गया था। इससे पहले, वे मास्को में व्यापक रूप से प्रसारति हो चुके थे, मठों की पुस्तकालयों में पहुँच चुके थे और पादरयिों तथा बशिपों द्वारा प्राप्त कर लएि गए थे[872] । 1644 में, 'करिलि की पुस्तक' के नाम से एक संग्रह प्रकाशति हुआ, जसिका उद्देश्य 'रोमनों और लैटनिों, साथ ही लूथरन और कैल्वनिवादयिों' की नंदिा करना था, ताकि 'उन वधिर्मी जीभों को चुप कराया जा सके'[873] । हालाँकि, एक अन्य संग्रह ने व्यापक प्रसार प्राप्त कयिा – 'वशि्वास की पुस्तक', जो बाद में पुराने वशि्वासयिों (वभिाजनवादयिों) के लएि अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई। इसे लगभग 1644 में कीव के सेंट माइकल मठ के इग्यूमेन नाफानैल ने लखिा था, और 1648 में कुछ संशोधनों के साथ मास्को में मुद्रति कयिा गया था।[874]

न तो सरकार और न ही चर्च के अधकिारी दक्षणि रूसी प्रभावों के प्रसार को रोक सके। एक अन्य महत्वपूर्ण कारक यह था कि 1330 और 1340 के दशकों में ही कई भक्षिु, पोलशि उत्पीड़न के कारण, व्यक्तगित रूप से या समूहों में कीव मेट्रोपोलसि से मस्कोवी भाग गए और वभिन्नि मठों में बखिर गए[875] । पतिृपक्षीय नकिोन को उन पूजा-संबंधी पुस्तकों के संशोधन के लएि शक्षिति लोगों की आवश्यकता थी, जन्हिें उन्होंने हाथ में लयिा था, और वे ऐसे लोग केवल कीव मेट्रोपोलसि में ही पा सकते थे। यही कारण है कि उस समय, दक्षणि रूसी मठों के कई भक्षिु मॉस्को में दखिाई दएि, जन्हिोंने लेखक, प्रूफरीडर और अनुवादक के रूप में पुस्तकों के संशोधन में भाग लयिा[876] । ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि ने, अपने धार्मकि रूढ़विाद के बावजूद, यह महसूस कयिा कि चर्च का जीवन पादरयिों के बीच शक्षिा और ज्ञान की कमी से पीड़ति था। पश्चमिी प्रभाव तो शाही परविार तक भी पहुँच चुके थे: राजकुमारी सोफयिा और ज़ारवचि फ्योडोर का पालन-पोषण उस भावना से बल्कुि अलग कयिा जा रहा था जो पहले सामान्य रूप से प्रचलति थी[877] । 1649 में, ज़ार अलेक्सी ने कीव के मेट्रोपॉलटिन को एक वशिेष संदेश भेजा, जसिमें अनुरोध कयिा गया कि वे मॉस्को को 'यूनानी बाइबलि का स्लावोनकि भाषा में अनुवाद करने के लएि शक्षिक भेजें, जो कुछ समय के लएि हम, महान शासक, की सेवा करें'। जसि तरह मॉस्को ने 16वीं शताब्दी की शुरुआत में मैक्समि को यही काम करने के लएि आमंत्रति कयिा था, उसी तरह अब बाहर से उपयुक्त लोगों की आवश्यकता थी – उस समय से बीती शताब्दी में शक्षिा की उपलब्धयिाँ इतनी मामूली थीं। अन्य लोगों के अलावा, उस समय मॉस्को में तीन भक्षिु आए जन्हिोंने वशिेष उल्लेख का हकदार हैं। वे थे आर्सेनी सातानोव्स्की, दमास्कनि प्टत्सि्की और एपफिनी स्लावस्कि[878] ।

खलिाफ संघर्ष', में: रीडग्सि। 1888. 1; आगे: मकारी। 10; और साथ ही ऊपर उल्लेखति ए. फ्लोरोव्स्की का कार्य। वशिेषीकृत मोनोग्राफ: ज़ावटिेवचि, वी. ज़कारयिास ऑफ़ कोपस्टिेन की पैलनिोडयिा और 16वीं और 17वीं शताब्दी के पश्चमिी रूसी ववािदात्मक साहत्यि के इतहिास में इसका स्थान (1883); सुमत्सोव, एन. इओनकियि गैल्याटोव्स्की (1884); वही लेखक। सत्रहवीं शताब्दी के दक्षणि रूसी साहत्यि के इतहिास पर। 1. लाज़ार बारानोवचि (1885); सचिव्स्काया, के. पाम्वा बेरडिा, में: नेस्टर द क्रॉनकिलर सोसाइटी की रीडग्सि। 23. 1 (1912); ओत्रोकोव्स्की, वी. 'तारास ज़ेम्का, एक 17वीं सदी का दक्षणिी रूसी व्यक्ति', में: रूसी भाषा वभिाग का संग्रह। 96. 2 (1921).

[871] माकरी। 11. पृ. 25 आदि; 12. पृ. 171, 195–197; ग्रेन्कोव, ए. '1620 में पैट्रआिर्क फलिारेट के अधीन रूस में आयोजति परषिद, और इसके फरमान', में: प्राव. सोब. 1864. 1. पृ. 153–180. ज़ार अलेक्सी के शासनकाल के दौरान कैथोलकिों के खलिाफ उठाए गए उपायों पर, देखें: मकाराई. 11. पृ. 232.

[872] SGGD. 3. संख्या 77; Makarii. 11. पृ. 48 आदि; Shlyapkin. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 108, 100.

[873] मकाराई. 11. पृ. 122.

[874] उपरोक्त. 11. पृ. 124.

[875] बागालेय. उद्धृत ग्रंथ, में: रीडग्सि. 1887. 2. पृ. 162; माकारयि, बशिप. 'क्रस्नोगोर्स्क मठ का ऐतहिासकि ववरिण', में: रीडग्सि. 1880. 3. पृ. 81; बेलोकोरोव. सामग्री (1888). पृ. 79, 162, 164.

[876] कैप्टरेव, एन. 'चर्च सुधारक के रूप में पैट्रआिर्क नकिोन और उनके वरिोधी', में: प्राव. सोब. 1887. 1. पृ. 145.

[877] तुलना करें: क्लायुचेव्स्की, वी. *Geschichte RuЯlands*. खंड 3.

[878] AYUZR. खंड 3. संख्या 259. पृष्ठ 323–324: Einhorn, V. 'On Relations', in: Readings. 1893. खंड 2. पृष्ठ 38–39; Kljutschewskij. खंड 3. पृष्ठ 302.

भिक्षु एपफिनियस स्लावनिट्स्की ने पैट्रिआर्क निकोन के अधीन की गई पूजा-संबंधी पुस्तकों के संशोधन और बाद में पवित्र उपहारों के स्थानांतरण को लेकर उत्पन्न हुए विवाद, दोनों में ही एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने मॉस्को में किसी भी ऐसी गतिविधि से खुद को अलग नहीं किया जो एक आम पर्यवेक्षक के लिए विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हो; इसके विपरीत, वह एक विनम्र, प्रतिभाशाली और नैतिक रूप से सच्चे व्यक्ति थे जो हमेशा छाया में रहे। वह ज्ञान के एक आदर्श व्यक्ति थे, जो मॉस्को की हलचल से दूरी बनाए रखते थे। फिर भी, अपने चरित्र और शिक्षा के कारण, वह दूसरों को प्रभावित करने और उन छात्रों का मार्गदर्शन करने में सक्षम थे, जिन्होंने बाद में सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाई।

एपफिनियस का जन्म संभवतःपश्चिमी रूस के पसिक शहर में एक संपन्न परिवार में हुआ था। उन्होंने 1631 से पहले कीव ब्रदरहुड स्कूल में अध्ययन किया, यानी मेट्रोपॉलिटिन पीटर (मोगाइला) द्वारा स्कूल में सुधार किए जाने से पहले, जब वहाँ ग्रीक-स्लावोनिक परंपरा अभी भी प्रचलित थी। उस दौरान, उन्होंने अपनी ईफ़फ़ि़नियस शिक्षा प्राप्त की और ग्रीक तथा स्लावोनिक भाषाओं का पर्याप्त भाषाई ज्ञान अर्जित किया। एपफि़नियस ने पश्चिमी पोलैंड के विभिन्न स्कूलों में 10 या 12 वर्ष बिताए, जिससे वह पोलिश और लैटिन भाषाओं का गहन अध्ययन कर सके। 1640 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने कीव-पेचेरस्क लाव्रा में अपने संन्यासी संस्कार ग्रहण किए, और 1642 तक वे उसी ब्रदरहुड स्कूल में शिक्षक बन चुके थे जहाँ उन्होंने पहले अध्ययन किया था। वह 1649 तक वहाँ पढ़ाते रहे। इस अवधि के दौरान, एपफिनियस अपने विद्वतापूर्ण कार्यों के प्रति समर्पण के उत्साह के लिए सबसे अलग थे। लेकिन केवल इसी कारण से नहीं कि उन्होंने मॉस्को में ध्यान आकर्षित किया। उनके शिष्य, भिक्षु यूथमियस द्वारा बाद में लिखी गई एक रचना से, यह स्पष्ट होता है कि एपफिनियस कीव के उन छोटे समूह के विद्वानों में से थे जो पोलिश-कैथोलिक प्रभावों से दूर रहते थे, और सख्त रूप से ऑर्थोडॉक्स बने रहे। 'स्लावनित्सी के परम बुद्धिमान हयेरोमोंक एपफिनियस पर' से यह स्पष्ट होता है कि एपफिनियस कीव के उन कुछ विद्वानों में से थे जो पोलिश-कैथोलिक प्रभावों से दूर रहे, सख्त रूप से ऑर्थोडॉक्स बने रहे, और ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षाओं के प्रति वफादार रहे[879] . ठीक इसी कारण से मॉस्को में उनके साथ विश्वास और सम्मान के साथ व्यवहार किया गया; यह अकल्पनीय नहीं है कि पूजा-संबंधी पुस्तकों को सुधारने की आवश्यकता पर उनके विचार ने निकोन के सुधार को अंजाम देने के संकल्प को और मजबूत किया, जैसा कि यूथमियस की रचना 'ऑन द मोस्ट वाइज़ हायरomonk एपफिनियस' में भी पढ़ा जा सकता है। लगभग 30 वर्षों तक – एपफिनियस की मृत्यु 1675 में हुई – वह मास्को में पुस्तकों के संशोधन और चर्च के पितरों के कार्यों का अनुवाद करने में व्यस्त रहे[880] ।

२. मॉस्को रूढ़िवाद के प्रतिनिधि के रूप में भिक्षु यूथमियस और पैट्रिआर्क जोआचिम

यह दावा करना अनुचित होगा कि उस समय मॉस्को में केवल अज्ञानी लोग रहते थे। प्रसिद्ध धार्मिक रूढ़िवाद और धार्मिक कठोरता के साथ-साथ शिक्षा और ज्ञान की भी तीव्र प्यास थी। जहाँ कुछ लोगों ने अपना ध्यान पश्चिम की ओर केंद्रित किया, वहीं अन्य लोगों ने प्राचीन स्रोत, अर्थात् ग्रीक ऑर्थोडॉक्स दुनिया से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया। यूनानी संस्कृति की ओर आकर्षित लोगों का एक समूह एपफिनियस के चारों ओर इकट्ठा हुआ, जो चुदोव मठ में सक्रिय थे – यह कहना मुश्किल है कि यह एक उचित स्कूल था[881] – और एपफिनियस के साथ लगातार बातचीत करके, उनकी किताबें कॉपी करने में मदद करके और विभिन्न कृतियों को पढ़कर, वे अपने क्षितिज का विस्तार करने में सक्षम हुए।

एपफिनियस के घेरे में एक उल्लेखनीय व्यक्ति सिन्यासी यूथमियस थे, जिन्होंने बाद में 'रोटी-पूजा की विधि' के खिलाफ अपने संघर्ष में पैट्रिआर्क जोआकिम की सहायता की। यूथमियस († 1705) चुदोव मठ में एक साधारण भिक्षु था, लेकिन यह शायद महज संयोग से कहीं अधिक था कि वह एपफिनियस के संपर्क में आया, जिसने उसी मठ में शरण ली थी और काम कर रहा था। यूथमियस स्वाभाविक रूप से प्रतिभाशाली और अत्यधिक जिज्ञासु व्यक्ति थे; उन्होंने ग्रीक भाषा में बहुत अच्छी तरह से महारत हासिल की और एपफिनियस के मुख्य सहायक बन गए; बाद में उन्होंने अपने धर्मशास्त्रीय ज्ञान को और निखारा और एक अनुवादक तथा चर्च संबंधी लेखक के रूप में काम

---

[879] एपफिनियस पर यूथमियस का प्रबंध देखें, इसमें: एवगेनी। डिक्शनरी ऑफ क्लरिकिल राइटर्स। खंड 1. पृ. 178–183; और इसमें: ओस्टेन (1865)। पृ. 70; श्लापकिन। उपरोक्त, पृ. 149; आइन्होर्न. उपरोक्त, पृ. 1113. एपफिनियस पर, देखें: पेव्नित्स्की, वी. 'स्लावनित्सी के एपफिनियस, 17वीं सदी में रूसी धार्मिक साहित्य के प्रमुख व्यक्तियों में से एक', में: टीकेडीए. 1861. 2–3; रोतार, आई. 'एपफिनियस ऑफ स्लावनित्सी, सत्रहवीं सदी का एक साहित्यिक व्यक्तित्व', में: कीव आर्टिकल्स 1900, पृ. 10–12.

[880] Eingorn. उद्धृत कृति में: रीडिंग्स. 1899. 2. पृ. 1013–1026; Rotar. उद्धृत कृति. 11. पृ. 199 आदि।

[881] रोतार. उद्धृत ग्रंथ, खंड 12, पृ. 383.

कयि[882] । धर्मशास्त्रीय ववािद में उनके प्रतद्विंद्वी और 'लैटनि पार्टी' के समर्थक, हरिोमोंक सल्विेस्टर मेदवेदेव ने, अपनी *कन्फेशन ऑफ रपिेंटेंस* में उन्हें 'सत्य का उत्साही समर्थक, चर्च का समर्थक, और आस्था का रक्षक'[883] कहा, और यद्यपि यह कुछ हद तक चालाकी और गणना के बनिा नहीं कहा गया था, फरि भी यूथमिीयस का जीवन और कार्य इस तथ्य की गवाही देते हैं कि वह अपनी दृढ़ता, अपने दृष्टकिोण को व्यक्त करने में एक वशिष स्पष्टता, और सभी गैर-ऑर्थोडॉक्स प्रभावों के प्रति एक ऐसी अरुचि से प्रतिष्ठति थे जो शत्रुता के करीब थी। जब, 1880 के दशक में, मास्को समाज में पवत्रि उपहारों के स्थानांतरण को लेकर एक तीव्र ववािद भड़क उठा, यूथमिीयस इसके प्रमुख प्रतभिागियों में से एक और कम पढ़े-लखिे पैट्रआर्क जोआकमि के सबसे उत्साही सहायक बन गए; वास्तव में, वह 'रोटी-पूजा की वधिर्म' के खलिाफ जोआकमि के कठोर और सख्त उपायों के सच्चे प्रेरक हो सकते हैं। यूथमिीयस और जोआचमि मॉस्को रूढ़िवाद के आखरिी योद्धा थे, उस वचिार के अंतमि पैरोकार कि 'मॉस्को तीसरी रोम है'।

पैट्रआर्क जोआचमि (1674-1690) के व्यक्तित्व में मुरझाते हुए मास्को रूढ़िवाद को जितिनी शक्ति और तीव्रता से मूर्त रूप मलिा, उतना कसिी अन्य व्यक्ति में नहीं मलिा। उनका जन्म 1620 में सावेलोव परविार में हुआ था, जो मामूली साधनों वाला सैन्य कर्मचारियों का एक परविार था, और उन्होंने शुरू में कीव के पास दक्षणिी रस में सेना में सेवा की। अपनी पत्नी और बच्चों की मृत्यु के बाद, उन्होंने संन्यास की शपथ लेने का फैसला कयि और 1655 में कीव के मेज़गिोर्स्क मठ में प्रवेश कयि। यह ज्ञात नहीं है कि वह पैट्रआर्क नकिोन को कैसे जानने लगा—शायद मॉस्को में कसिी काम से रहते हुए—लेकनि यह ज्ञात है कि 1657 में नकिोन ने उसे आइवर्सकी मठ का नर्मिाता नयिुक्त कयि, जसिकी स्थापना उसने की थी। जोआकमि के समकालीन और शत्रु, डीकन थयिोडोर—जो शुरू में 'रोटी-पूजकों' में से एक थे और बाद में संप्रदायवाद के एक उत्साही समर्थक बने—ने वषिैली व्यंग्य के साथ दावा कयि कि जोआकमि पहले नरिक्षर थे और उन्होंने केवल आइवर्सकी मठ में ही पढ़ना शुरू कयि; उससे पहले, वे न तो पढ़ सकते थे और न ही लखि सकते थे, चर्च के मामलों के बारे में कुछ नहीं जानता था और सेवा को बलि्कुल भी नहीं समझता था (शायद थयिोडोर का मतलब यह था कि जोआचमि स्वभाव से बलि्कुल भी धार्मकि नहीं था। – आई. एस.), वह एक सैनकि था जो दूर-दराज के गांवों में रहता था और खरगोशों का शकिार करता था (!), और शायद ही कभी चर्च में कदम रखता था, केवल प्रमुख पर्वों के दनिों में ही[884] . भले ही थयिोडोर अतशियोक्ति कर रहे हों, फरि भी यह स्वीकार करना होगा कि, अपने समय के लिए भी, जोआचमि एक अनपढ़ व्यक्ति थे; हालाँकि, उनके पास एक व्यावहारकि दमिाग और सामान्य ज्ञान था, जसिने यूथमिीयस की साहत्यिकि प्रतभिा के साथ मलिकर—जो उनके नजिी सचवि के रूप में काम करते थे—उन्हें धर्मशास्त्रीय बहसों में भाग लेने में सक्षम बनाया। शायद इसी सामान्य ज्ञान - या, थयिोडोर के शब्दों में, चालाकी - के कारण जोआचमि ने धार्मकि शक्ति के शखिर पर अपना तीव्र उत्थान कयि।

बोयार एफ. रतशि्चेव के समर्थन के कारण, जो स्वयं पश्चमिी शकि्षा के एक बड़े समर्थक थे – यह इस बात का सुझाव देता है कि जोआचमि उन हलकों में भी दोस्त बनाने और संरक्षक खोजने में सक्षम थे जो उनके वचिारों से सहमत नहीं थे – – उन्हें मास्को में सेंट एंड्रयू मठ का मठाधीश नयिुक्त कयि गया, फरि नोवोस्पासस्की मठ में कोषाध्यक्ष, जो वशिष रूप से शाही परविार के करीब था, और 1664 तक, जोआचमि पहले ही मास्को में चुदोव मठ के आर्चमिैंड्राइट बन चुके थे। उन्होंने 'अनुष्ठान के प्रति अपनी नष्ठिा' और अपनी मलिनसारति के कारण ज़ार अलेक्सी की वशिष कृपा प्राप्त की, जैसा कि वही डीकन थयिोडोर व्यंग्यात्मक रूप से टप्पिणी करते हैं। 1673 में, जब जोआचमि को—संभवतः ज़ार के हस्तक्षेप के बनिा नहीं—नोवगोरोड का मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त कयि गया, तो वह पहले ही धार्मकि पदानुक्रम के सर्वोच्च पदों पर पहुँच चुके थे। वहाँ, जोआचमि ने खुद को एक अधकिारशाली धर्मगुरु साबति कयि, जन्हिोंने अपने धर्मप्रांत का सख्ती से शासन कयि और अपना मुख्य ध्यान धार्मकि औपचारकिताओं के पालन पर केंद्रति कयि। इसके बावजूद, जोआचमि के कुछ प्रशासनकि उपाय लाभकारी साबति हुए; उदाहरण के लिए, पैरशि पादरी और पादरयिों पर कर लगाने की नई प्रणाली के संबंध में उनके फरमान, जन्हिें उन्होंने बाद में (1675

---

[882] अन्य बातों के अलावा, यूथमिीयस ने अलेक्जेंड्रयिा के डायोनसियिस की कई कृतयिों का अनुवाद कयि, यरूशलेम के संत सरिलि के कई धर्मोपदेशों का अनुवाद कयि, और स्वयं नैतकि और शकि्षाप्रद प्रकृति की कई कृतयिाँ लखिीं। फलिारेट. रवि्यू. 2nd संस्करण. खंड 1. पृ. 259–261; ब्राइलोव्स्की, एस. 'चुडोव मठ के भकि्षु यूथमिीयस का दया पर उपदेश', में: पीडीपी. 100 (1894); ववरिण. 2. 3. परचिय. पृ. 424, 447, 461, 501, आदि।

[883] ववरिण। 2. 3. पृ. 501; ओस्टेन (1865). पृ. 93; श्लापकनि. उद्धृत ग्रंथ. पृ. 231.

[884] वभिाजन के इतहिास के लिए सामग्री। सं. एन. सुबोटनि। 6 (1879)। पृ. 227। श्लापकनि। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 140–141। तुलना करें: ल्यूबमिोव, एस. 'प्रतनिधियिों के बीच संघर्ष', में: झएमएनपी. 1875. 180. पृ. 127; और इस कृति में भी: एन. ए. ए. 'मास्को के पैट्रआर्क. पैट्रआर्क जोआचमि', में: रीडगि्स. *1847–48. पृ. 123–136.*

और 1687 में) पूरे रूसी चर्च के लिए लागू किया। उन्होंने पैरिश के पादरियों की भौतिक भलाई सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती, पैरिशों को भूमि वितरित की; उनके शासन के तहत, मठ कार्यालय को समाप्त कर दिया गया (1677), और पादरियों के अधिकार क्षेत्र के प्रश्न पर, जोआचिम ने धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों को धार्मिक न्यायालयों में हस्तक्षेप करने से पूरी तरह से हटाने में सफलता हासिल की[885] ।

सख्ती से कहें तो, जोआकिम अपने करियर के लिए पैट्रिआर्क निकोन का ऋणी था; हालाँकि, जब पूर्व पैट्रिआर्क अपने निर्वासन के अंतिम स्थान, किरिलोव मठ में थे, तब जोआकिम द्वारा उनके साथ किया गया व्यवहार एक इंसान के रूप में उनकी एक बुरी छवि पेश करता है। त्सार फ्योडोर द्वारा निकोन की दुर्दशा को कम करने के सभी प्रयास और यहां तक कि अनुरोधों को भी जिद्दी और स्वार्थी जोआचिम ने खारिज कर दिया। साथ ही, जोआचिम निकोन के सुधारों का एक उत्साही समर्थक और अपने वैचारिक विरोधियों का उत्पीड़क था। उन्होंने संप्रदायवादियों को क्रूरता, धार्मिक कट्टरता और हठधर्मिता के साथ सताया। लेकिन मास्को में जीवन के वे सभी पहलू जिनमें पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट थे, उन्हें भी जोआकिम का दृढ़ विरोध और निंदा का सामना करना पड़ा। 'विदेशी' और 'लैटिन' उसकी नज़र में हमेशा विधर्मी थे; उसने विदेशी राजदूतों को स्वीकार करने, ज़ार की मेज़ पर उनके साथ बैठने या भोजन करने से इनकार कर दिया, और उसने विदेशियों को अपनी आयोजित की गई धार्मिक सेवाओं में भाग लेने की अनुमति नहीं दी। उनकी वसीयत पढ़कर, हमारे सामने एक धार्मिक कट्टरपंथी और औपचारिकतावादी की छवि उभरती है, और यह उस समय था जब मास्को में सांस्कृतिक और धार्मिक औपचारिकतावाद पहले से ही घट रहा था। हालांकि इओआकिम जैसे पात्र 17वीं सदी के आखिरी चौथाई के मॉस्को के लिए विशिष्ट नहीं थे, फिर भी उनका अस्तित्व यह साबित करता है कि मॉस्को के धार्मिक रूढ़िवाद और औपचारिकतावाद ने संघर्ष के बिना नए लोगों और नए विचारों को रास्ता नहीं दिया[886] ।

3. पश्चिमी प्रभावों के वाहक के रूप में पोलोत्स्क के सिमियन और सिल्वेस्टर मेदवेदेव

मॉस्को के जीवन में पश्चिमी प्रभावों के प्रवेश को न केवल उनकी सामग्री, बल्कि कहीं अधिक हद तक उनके समर्थकों की गतिविधियों द्वारा सुगम बनाया गया, जो अत्यधिक सफल थीं। हायरओमोंक सिल्वेस्टर मेदवेदेव 'पश्चिमी', या 'लैटिन', गुट के केंद्र में थे; उनकी धार्मिक शिक्षा, वास्तव में उनके आध्यात्मिक विकास की पूरी प्रक्रिया, ऐसे लोगों के साथ निरंतर व्यक्तिगत संपर्क से आकार मिली, जिनके माध्यम से वे पश्चिमी सोच का तरीका सीखने और पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हुए, क्योंकि वे उनके फायदों से आश्वस्त हो गए थे।

उदाहरण के लिए, ऐसे थे प्रसिद्ध पोलोत्स्क के सिमियन, जिन्होंने मॉस्को के सांस्कृतिक जीवन पर व्यापक प्रभाव डाला, और जिनकी गतिविधियाँ हमें पवित्र उपहारों के रूपांतरण से संबंधित धर्मशास्त्रीय विवाद के पूर्व-इतिहास में ले जाती हैं। 1629 में बेलारूस के पोलोत्स्क क्षेत्र में जन्मे सिमियन पेट्रोव्स्की-सित्नियानोविच, जिन्हें साहित्यिक इतिहास में आमतौर पर पोलोत्स्क के सिमियन के नाम से जाना जाता है, 1663 में मॉस्को में बसने के बाद से पश्चिमी प्रबोधन के प्रमुख प्रवर्तक थे। अपने समकालीन और वैचारिक प्रतिद्वंद्वी, एपिफानियस स्लावनित्स्की की तुलना में, वह एक बिल्कुल अलग व्यक्ति थे; उन्हें जो शिक्षा मिली वह भी एपिफानियस की शिक्षा से काफी भिन्न थी। 1640 के दशक में, उन्होंने कीव कॉलेजियम में अध्ययन किया, जहाँ प्रसिद्ध दक्षिणी रूसी उपदेशक और विद्वान लाज़र बारानोविच (1620–1693), जिन्होंने बाद में, चेर्निगोव के आर्चबिशप (1657–1692) के रूप में, कीव मेट्रोपोलिस के चर्च संबंधी जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई[887] । उनका नाम यहाँ इसलिए उल्लेखनीय है क्योंकि, पवित्र उपहारों के रूपांतरण के संबंध में पैट्रिआर्क जोआकिम के साथ अपने बाद के पत्राचार में, लाज़ार बारानोविच ने रोमन कैथोलिक सिद्धांत का समर्थन किया, और यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सिमिओन के धर्मशास्त्रीय विचारों का आकार कीव कॉलेज में उनके अध्ययन के दौरान ही बना। उस समय, कॉलेज में शैक्षणिक शिक्षण प्रणाली फल-फूल रही थी; इसने उनके व्यक्तित्व के आध्यात्मिक चरित्र को प्रभावित किया और उनके लेखन में परिलक्षित हुआ। कॉलेज से स्नातक होने के बाद, सिमियन कीव से पोलोत्स्क लौट आए, जहाँ उन्होंने

---

[885] AI. 4. संख्या 175, 259, 228, 204, 253; 5. संख्या 135, 167, 156, 183, 186; विशेष रूप से 4. संख्या 204 और 5. संख्या 75।

[886] पैट्रिआर्क जोआकिम का जीवन और वसीयत। सं. एन. बर्सुकोव, ओएलडीपी. 62 (1879) में। श्लापकिन। उपरोक्त, पृ. 139–144; बेलोव. उपरोक्त, ZhMNP. 1887. 1 में; स्मेंत्सोव्स्की. लिकुदा भाइयों (1899).

[887] बारानोविच के प्रवचनों में स्कॉलैस्टिक प्रभाव स्पष्ट रूप से स्पष्ट हैं। 17वीं सदी में बारानोविच की रचनाओं के दो संग्रह विशेष रूप से प्रसिद्ध और व्यापक रूप से प्रसारित थे: *द स्पिरिचुअल स्वोर्ड* (कीव, 1666; दूसरी संस्करण 1686 में ही) और *द ट्रम्पेट्स ऑफ़ सेरमोन वर्ड्स* (कीव, 1674; द्वितीय संस्करण 1686)। यद्यपि बारानोविच पवित्र उपहारों के रूपांतरण के रोमन कैथोलिक सिद्धांत को मानते थे, उन्होंने, कई दक्षिणी रूसी धर्मशास्त्रीय विद्वानों की तरह, अपनी विवादात्मक रचनाओं में फिलिओक्वे को अस्वीकार कर दिया। बारानोविच पर: तुलना करें टिप्पणी 865, और साथ ही: आइनहोर्न. उद्धृत कृति और मकारी. 12. पृ. 535–540, 553.

मठवासी संन्यास ग्रहण कयि और स्थानीय स्कूल में शकि्षक बन गए। जब ज़ार अलेक्सी शहर आए, तो पोलोत्स्क के समियिन को ज़ार को व्यक्तगित रूप से संबोधति करने और इस अवसर के लएि वशिेष रूप से लखिी गई एक स्वागत कवति भेंट करने का सम्मान मलि, जसिसे ज़ार का ध्यान उनकी ओर गया। इस प्रकार, उनका भवषि्य का करयिर तब शुरू हुआ जब वे अभी भी पोलोत्स्क में ही थे।

1660 में, पोलोत्स्क के समियिन का मॉस्को जाना हुआ, और एक बार फरि उन्होंने छंदों में एक प्रशंसा-गीत प्रस्तुत करके ज़ार का ध्यान आकर्षति करने का अवसर नहीं छोड़ा। पोलशि सैनकिों द्वारा पोलोत्स्क पर कब्ज़ा करने (1661) के बाद, समियिन 1663 में मॉस्को चले गए। आर्चबशिप लाज़ार बारानोवचि द्वारा गैज़ के मेट्रोपॉलटिन, पैसयिस लगिारसि—जो उस समय मास्को में रह रहे थे और ज़ार अलेक्सी की वशिेष कृपा प्राप्त थी—को दएि गए अनुशंसा पत्रों की बदौलत, समियिन ज़ार के दरबार में संबंध बनाने में सफल रहे, और इस प्रक्रयिा में उन्होंने अपनी काव्यात्मक प्रतभिा का कुशलतापूर्वक उपयोग कयि। इसी समय, उन्होंने ज़ाइकोनोस्पस्की मठ के स्कूल में अपने शकि्षण करयिर की शुरुआत की, जहाँ उनके एक छात्र सल्विेस्टर मेदवेदेव थे, जो बाद में हायरोंमक बने[888] । हम समियिन की वशिुद्ध साहत्यिकि गतविधियिों में नहीं जाएँगे, बल्कि केवल उनके जीवन के उन पहलुओं पर ध्यान केंद्रति करेंगे जो उस युग की धार्मकि घटनाओं से जुड़े हैं।

समिओन मास्को में उस समय पहुँचे जब ज़ार अलेक्सी और पैट्रआिर्क नकिोन के बीच संबंध वशिेष रूप से तनावपूर्ण हो गए थे[889] , और साथ ही, वभिाजन के नेताओं के साथ एक वाद-ववािद भी भड़क उठा था। समिओन को वभिाजनवादी शकि्षकों के वचिारों की गहन आलोचना करने का काम सौंपा गया था। इस प्रकार उनका पहला प्रमुख कार्य - *शासन का राजदंड* - अस्तत्वि में आया - जसिे शुरू में 1666 के संप्रदायवाद-वरिोधी परषिद का आधकिारकि दस्तावेज़ माना गया था। समिोन ने यह कृति काफी वद्वितापूर्ण परषि्कार और वाद-ववािद कौशल के साथ रची, जसिमें उन्होंने चर्च साहत्यि का उत्कृष्ट ज्ञान प्रदर्शति कयि; वास्तव में, उन्होंने मैक्समिस द ग्रीक और ज़निोवी ऑफ ओटेना की रचनाओं के साथ-साथ स्टोग्लाव परषिद के फरमानों से भी उद्धरण लएि, फरि भी, एक ही समय में उनका काम कुछ त्रुटयिों, वरिोधी दल के प्रतनिधियिों के वचिारों और बयानों के वकि्रत रूपों, संप्रदायवाद के नेताओं की कठोर नदिा, और यहाँ तक कि कई अपमानजनक शब्दों के उपयोग से भी मुक्त नहीं है—यह एक ऐसी प्रथा है जो मध्ययुगीन ववािदात्मक लेखन की भी वशिेषता थी[890] ।

उनके करयिर को उड़ान मलि; उन्हें ज़ार के बच्चों का शकि्षक नयिुक्त कयि गया: सबसे बड़े, त्सारेवचि अलेक्सी, और उनकी मृत्यु (1669) के बाद, भावी ज़ार फ्योडोर और त्सारेवना सोफयि। बाद वाली की पश्चमिी संस्कृति की ओर झुकाव और उसके प्रकट रूपों के प्रति उनकी सहानुभूति नश्चिति रूप से समियिन के प्रभाव का परणिाम मानी जा सकती है। यहीं से उनके जीवन का सबसे उत्तम काल शुरू हुआ; वे ऐश्वर्य में रहते थे, और ज़ार का दरबार उनकी गतविधियिों का केंद्र बन गया, जहाँ वे उपदेश देते थे, बधाई कवतिाएँ, नाटक और अन्य साहत्यिकि कृतयिाँ लखिते थे। उन्होंने मास्को में एक अकादमी स्थापति करने के प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन कयि, जसिे स्वयं या उनके शषि्य सल्विेस्टर मेदवेदेव द्वारा तैयार की गई एक योजना के अनुसार, कीव कॉलेजयिम के मॉडल पर संगठति कयि जाना था। 1680 में अपनी मृत्यु तक, समिओन एक सम्मानति व्यक्ति, एक मान्यता प्राप्त वद्विान और एक प्रसद्धि साहत्यिकार थे।

ज़ार के दरबार में और मास्को के समाज के भीतर पोलोत्स्क के समियिन की व्यापक गतविधियिाँ (उन्होंने कई बोयार परविारों और पादरयिों के सदस्यों के साथ परचिय स्थापति कयि था), साथ ही उनकी बढ़ती लोकप्रयिता, मास्को में पश्चमिी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव का प्रमाण थीं। उसका संन्यासी का चोगा, जो उसने संयोग से धारण कर लयि था, उसकी वाक्पटुता और भावुकता से भरी प्रवचन *[891] *, और कठोर पैट्रआिर्क जोआकमि से नपिटने में उसकी कूटनीतकि कुशलता—जो स्वभाव और वशि्वास से, समियिन का वरिोधी था—इन सबने उसे मास्को के रूढ़वािदी हलकों की नजर में संदेह से ऊपर रखा। उन्होंने अपने ग्रंथ *द क्राउन ऑफ फेथ* (1670) में अपनी 'सम्यक-आस्था' को साबति करने में सफलता हासलि की। *द क्राउन*, एक तरह से, ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत को स्थापति करने का एक

---

[888] माइकोव। नबिंध (1889)। पृ. 8–17; मकरयि। 12। पृ. 640; पोलोत्स्क के समियिन पर: पोपोव, वी. एक उपदेशक के रूप में पोलोत्स्क के समियिन (1886); Tatarsky, I. Simeon of Polotsk: His Life and Work (1886); और एक पूर्व का कार्य: Pevnitsky. Simeon of Polotsk, in: Pravda Obraztsova 1860. Vol. 10, pp. 193–232; Vol. 11, pp. 327–356.

[889] मकाऱी। खंड 12, पृ. 443, 592।

[890] माइकोव. पूर्वोक्त, पृ. 27 आदि; मकरयि. खंड 12, पृ. 681। पहला संस्करण 1667 में प्रकाशति हुआ था।

[891] पोलोट्स्की के संग्रह *ओबेद दशेव्नी* और *वेचेरयिा दशेव्नाया*, जो *1682–83* में प्रकाशति हुए थे, *मैं शामलि थे: पहला – रवविार के उपदेश; दूसरा – प्रभु और परमेश्वर की माता के पर्वों के लएि उपदेश; वे नैतकि और शकि्षाप्रद प्रकृति के हैं, जनिमें दुर्गुणों, अंधवशि्वासों और संप्रदायवादयिों के वचिारों आदि की तीखी नदिा शामलि है। पेव्नत्स्की। उद्धृत ग्रंथ, खंड 11, पृ. 327 आदि*

प्रयास था। समिोन ने इस व्याख्या को नाइसनि-कॉन्स्टेंटनिोपल धर्मवशि्वास पर नहीं, बल्कि 'अपोस्टल्स क्रीड' (अध्याय 4–16) पर आधारति कयिा, जसिने, अजीब बात है, शुरुआत में मॉस्को के रूढ़विादयिों के बीच संदेह नहीं जगाया, हालांकि मॉस्को में इसे अकेले ही 'संप्रदायकि प्रवृत्ति' माना जा सकता था—हालांकि, यहाँ समिोन ने फलिोक्वे पर रोमन कैथोलकि सद्धिांत की तीखी आलोचना की है। केवल बाद के ववािदात्मक लेखों में ही भक्षिु यूथमिीयस ने उन पर इस त्रुटि और एंसेल्म, डंस स्कॉटस, थॉमस एक्वनिास और बेलारमाइन की कृतयिों से लएि गए साक्ष्यों के उपयोग, दोनों के लएि फटकार लगाई। उस समय, समियिोन के उपदेशों में नहिति सभी 'लैटनि वचिलनों' को यूथमिीयस ने अभयिोजन के लएि साक्ष्य के रूप में संकलति कयिा था[892] । यह स्पष्ट है कि समियिन की संपूर्ण वशि्वदृष्टि मास्को जैसी नहीं थी, और उससे जुड़े या उसके अधीन अध्ययन करने वाले लोग धीरे-धीरे पश्चमिी प्रबोधन के अनुयायी और कुछ हद तक उसकी 'लैटनि झुकाव' के समर्थक बन गए, खासकर इसलएि क्योंकि पोलोत्स्क के समियिन ही मास्को में ऐसे वचिारों का प्रसार करने वाले एकमात्र व्यक्ति नहीं थे।

जो लोग दृढ़ता से मॉस्को के सांस्कृतकि रूढ़विाद को अस्वीकार करते थे और पश्चमिी संस्कृति की श्रेष्ठता को पहचानते थे, उनमें बेशक, हायरोमोंक समियिन मेदवेदेव थे, जो अपने धर्मनरिपेक्ष नाम सल्वियेस्टर से जाने जाते थे, जो न केवल अपनी दुखद नयिति के लएि बल्कि अपने चरत्रि के लएि भी एक उल्लेखनीय व्यक्ति थे। उस समय के धर्मशास्त्रीय बहसों में उनकी भूमकिा के महत्व ने उनके वजियी प्रतद्विंद्वी, भक्षिु यूथमियिस को, सल्वियेस्टर के आध्यात्मकि वकिास की एक जीवनी संकलति करने के लएि प्रेरति कयिा, जसिे बाद में अन्य अध्ययनों द्वारा पूरक बनाया गया[893] । 1665 में, सल्वियेस्टर मेदवेदेव ज़ार अलेक्सी[894] के अधीन गुप्त परषिद में एक क्लर्क थे। उन्होंने वहाँ लंबे समय तक सेवा नहीं की; 1672 तक वे मोल्चानस्काया हर्मटिेज में रह रहे थे, और लगभग 1675 से उन्हें एक भक्षिु के रूप में जाना जाता है। एक साल बाद, हम उन्हें मास्को के ज़ाइकोनोस्पासकी मठ में पाते हैं, जहाँ उस समय पोलोत्स्क के समियिन ठहरे हुए थे। वे नरिंतर संपर्क में थे, और इस समय से सल्वियेस्टर पर समियिन का प्रभाव स्पष्ट हो गया। पोलोत्स्क के समियिन के साथ बातचीत और उनकी व्यक्तगित पुस्तकालय की कतिाबों को पढ़ने से—जसिमें दक्षणिी रूस और पश्चमि की कई कृतयिाँ थीं (उनके वरिोधी यूथमिीयस ने सल्वियेस्टर पर वशिेष रूप से इन लैटनि कतिाबों का अध्ययन करने के लएि फटकार लगाई थी)—सल्वियेस्टर की शकि्षा समृद्ध हुई और उनकी जज्ञिासा को बढ़ावा मलिा। उन्होंने पोलोत्स्क के समियिन की वभिन्नि शोध परयिोजनाओं में सहायता की[895] । पोलोत्स्क के समियिन की मृत्यु (25 अगस्त 1680) के बाद, संभवतः उनकी सफिारशि पर, सल्वियेस्टर को ज़ाइकोनोस्पस्की मठ का मास्टर बल्डिर नयिुक्त कयिा गया और उन्होंने समियिन के स्कूल का प्रभार संभाला, जहाँ उन्हें लैटनि पढ़ाने का काम सौंपा गया[896] ।

उसी वर्ष सल्वियेस्टर ने धर्मशास्त्र के वषियों पर अपना पहला सार्वजनकि भाषण दयिा। कहानी इस प्रकार है: इससे ठीक पहले, एक व्यक्ति यान बेलोबोट्स्की मास्को पहुँचा था; पोलोत्स्की की मास्को में एक उच्च वद्यिालय स्थापति करने की योजना के संबंध में, वह इस अभी तक अस्तत्वि में न आए वद्यिालय में शकि्षक के पद की तलाश कर रहा था। उनकी पृष्ठभूमि और धार्मकि आस्थाएँ काफी अस्पष्ट थीं; वह पश्चमिी रूस से आए थे, लेकनि कैथोलकि नहीं थे, और उनके शब्दों से ऐसा प्रतीत होता था कि वह कसिी भी वशिेष संप्रदाय से नहीं थे, जबकि साथ ही उन्होंने

---

[892] पेव्नत्स्की। उद्धृत ग्रंथ, खंड 10, पृ. 218 आदि; ओस्टेन (1865)। पृ. 130-137।

[893] यह प्रसद्धि 'ओस्टेन' है, जसिे पादरी जोआकमि के नर्दिेशों पर भक्षिु यूथमियिस ने वभिन्नि दस्तावेजों से संकलति कयिा था और इसमें यूथमियिस द्वारा स्वयं (1690) लखिे गए व्याख्यात्मक नोट्स और लेखन को भी शामलि कयिा गया था। पहला संस्करण 1865 में काज़ान में प्रकाशति हुआ था। सल्वियेस्टर मेदवेदेव की एक संक्षप्ति जीवनी एस. बेलोकोरोव द्वारा उनके कार्य *इज़वेस्टयि इस्टनिोए* की प्रस्तावना में *चेतेनयिा* में दी गई है। 1885. 4; एक व्यापक मोनोग्राफ: प्रोज़ोरोव्स्की, ए. *सल्वियेस्टर मेदवेदेव*, *चेतेनयिा* में। 1896. 2–4; और यह भी: कोज़लोव्स्की, आई. 'सल्वियेस्टर मेदवेदेव', में: टीकेडीए. 1895. 2, 3, 5.

[894] गुप्त आदेश वास्तव में ज़ार का चान्सलरी था; इस शीर्षक के तहत पहले जो माना जाता था, वैसा कोई वशिेष सरकारी रहस्य छपिा नहीं था। देखें: ज़ाओज़र्स्की, ए. आई., *ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि इन हज़ि हाउसहोल्ड* (1917)।

[895] ओस्टेन (1865)। 74; ववरिण। 2. 2. संख्या 151.

[896] प्रोज़ोरोव्स्की। पूर्वोक्त, में: रीडगि्स। 1896. 2. पृ. 183–185। संभवतः1681 और 1684 के बीच, मेदवेदेव ने दो कृतयिाँ लखिीं: 1. 'पुस्तकों की सामग्री-सूची और इन्हें संकलति करने वाले', में: रीडगि्स। 1846. 3. भाग 4. पृ. 1–90; 2. 'वर्ष 7190, 91 और 92 (अर्थात् 1682–1684 – आई. एस.) पर एक संक्षप्ति प्रतबिबि, और उन वर्षों के दौरान नागरकि मामलों में जो हुआ', *रीडगि्स* में। 1894. 4. पृ. 1–197। सं. एस. बेलोकुरोव। (एक अन्य, बाद का संस्करण: यूनविर्सटिी ऑफ़ कीव। 1895–1896। सं. आई. कोज़लोव्स्की।) यह 1682 के स्ट्रेल्त्सी वद्रिोह का एक बहुत अच्छा, वस्तुनषिठ ववरिण है; तुलना करें: परचिय। पृ. XXXVI। और भी: श्मुरलो, ई. 'सल्वियेस्टर मेदवेदेव के नोट्स पर', में: ZhMNP. 1889. 262. पृ. 335–369. मेदवेदेव ने यह 'मनन' राजकुमारी सोफयिा के अनुरोध पर लखिा था। 1682–1684 की घटनाओं के इतहिास पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत। पुराने संस्करण (जैसे: टुमांस्की। पीटर महान के जीवन पर टप्पिणयिाँ। खंड 1, भाग 6; और: साखारोव, ए. रूसी लोगों की टप्पिणयिाँ। खंड 1, 1841) त्रुटयिों से रहति नहीं हैं।

ईसाई चर्च के पवित्र भोज (Holy Communion) के संस्कार को भी पूरी तरह से खारिज कर दिया था। बेलोबोत्स्की की 'लुथरन विधर्म' की अफवाहें पैट्रिआर्क तक पहुँच गईं, और जोआचिम ने मांग की कि वह अपना 'विश्वास-प्रमाणपत्र' प्रस्तुत करे। मेदवेदेव को बेलोबोत्स्की के लिखित 'विश्वास-प्रमाणपत्र' का खंडन करने का काम सौंपा गया था; यह तथ्य, एक ओर, यह दर्शाता है कि उस समय मेदवेदेव पर किसी भी संदेह से ऊपर थे, और दूसरी ओर, कि उनकी धार्मिक शिक्षा को बहुत सम्मान दिया जाता था। 11 जुलाई 1681 को, पैट्रिआर्क के कक्षों में एक बैठक हुई जिसमें मेदवेदेव ने बेलोबोट्स्की के कैल्विनिवादी प्रकृति के विचारों का खंडन करते हुए पवित्र भोज के संस्कार पर पूर्वी चर्च की शिक्षा को प्रस्तुत किया[897] । संभावना है कि धर्मशास्त्रीय बहस में इस जीत ने मेदवेदेव को प्रेरित किया और उन्हें आगे के धर्मशास्त्रीय शोध के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने 'जीवित रोटी' शीर्षक से एक ग्रंथ लिखा, जो एक शिक्षक और उसके शिष्य के बीच संवाद के रूप में था, जिसमें उन्होंने पवित्र उपहारों के रूपांतरण के क्षण पर कैथोलिक शिक्षण को खुले तौर पर प्रस्तुत किया: 'शिष्य का प्रश्न: दिव्य लिटर्जी के दौरान किस क्षण रोटी का रूपांतरण परम शुद्ध देह में और दाखरस का रूपांतरण परम शुद्ध रक्त में होता है? शिक्षक का उत्तर: परम शुद्ध देह और रक्त का रूपांतरण रोटी पर दिव्य लिटर्जी के दौरान पुरोहित द्वारा बोले गए मसीह के शब्दों से होता है: 'ग्रहण करो'[898] .

४. *पवित्र उपहारों के अभिषेक के समय को लेकर विवाद*

मेदवेदेव द्वारा अपने कार्य में प्रस्तुत रोमन कैथोलिक सिद्धांत बहुत पहले ही दक्षिण रूसी पूजा-संबंधी और चर्च संबंधी लेखन में अपना स्थान बना चुका था। यह गेदियन बालाबन की सेवा पुस्तक (1604) और विल्नियस संस्करण (1610) में स्पष्ट रूप से व्यक्त है। मेट्रोपॉलिटन पीटर मोहिला (1629 संस्करण) द्वारा सबसे अधिक प्रसारित सेवा पुस्तक में अभी भी ग्रीक ऑर्थोडॉक्स शिक्षण शामिल है, लेकिन 1639 और 1646 के पुनर्मुद्रण पहले ही रोमन कैथोलिक हो चुके हैं। इसके अलावा, यह सिद्धांत दक्षिण रूसी धर्मशास्त्रीय कार्यों की एक विस्तृत श्रृंखला में निर्धारित किया गया है जो मस्कोवी में बड़े पैमाने पर प्रसारित हुए थे[899] । इनमें, थियोडोसियस साफ़ानोविच की पुस्तक *एक्सपोज़िशन ऑन द होली चर्च* का उल्लेख किया जाना चाहिए (1667), जिसका दक्षिणी रूस में 1667 और 1674 के बीच चार संस्करणों तक प्रकाशन हुआ; इस पुस्तक के रूसी में अनुवाद (यह लिटिल रूसी, या यूक्रेनी, बोली में लिखी गई थी) 17वीं सदी की पांडुलिपियों में संरक्षित हैं। पूर्वी चर्च की पूजा-विधि संबंधी सेवाओं की अपनी व्याख्याओं के लिए, लेखक ने मुख्य रूप से थेस्सालोनिकी के सिमियन († 1429)[900] और अन्य लेखकों की कृतियों का सहारा लिया;

---

[897] प्रोज़ोरोव्स्की। उद्धृत कृति, पृ. 198, 203, 205, 208; श्लापकिन। उद्धृत कृति, पृ. 145। बेलोबोडस्की का 'विश्वास का स्वीकारोक्ति' और मेदवेदेव की 'समीक्षा' इस में: रूस में प्रोटेस्टेंटवाद के इतिहास के स्मारक, इस में: रीडगिस। 1884. खंड 3, संख्या 20। तुलना करें: गाव्रीलोव, एन. 'मास्को में जर्मन विश्वास के उपदेशक और उनके प्रति पैट्रिआर्क जोआकिम का दृष्टिकोण', में: स्ट्रानिक. 1873. खंड 3, पृ. 125–137।

[898] श्ल्यापकिन। पूर्वोक्त, पृ. 146; विवरण। खंड 2, संख्या 3, पृ. 470। इस प्रतिक्रिया ने ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च की उस शिक्षा से विचलन का संकेत दिया, जिसके अनुसार, दिव्य लिटर्जी के दौरान, अभिषेक संस्थापन के शब्दों के उच्चारण के बाद नहीं, बल्कि केवल एपिक्लेसिस के बाद होता है, यानी रोटी और शराब को पवित्र उपहारों में बदलने के लिए पवित्र आत्मा से प्रार्थना के बाद। देखें: मकारी (बुल्गाकोव)। ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी। 2 (1868)। पृ. 381। और भी: होप्पे, ए. *Die Epiklesis der griechischen und orientalischen Liturgien und der römische Konsekrationskanon* (1864); गैस. *Symbolik der griechischen Kirche* (1872); फ्रान्ज़ जे. थ. द यूकेरिस्टिक ट्रांससब्सटान्टिएशन एंड एपिक्लिसिस इन द ग्रीक एंड ओरिएंटल लिटर्जीज़ (1879); होलर, जे. द एपिक्लिसिस इन द ग्रीक-ओरिएंटल लिटर्जीज़ (1912); स्ट्राइट्ज़. द डॉक्ट्रिन ऑफ द यूकेरिस्ट इन द ग्रीक चर्च, इन: जेबी. डी. ड्यूश. थ. 9–13 (1864); स्पेन, थ. *Doctrina Theologiae orientalis separati de S. Eucharistia*, में: *OCA* 13. 3 (1928); 14. 1 (1929). लिटर्जी के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत का एक ऐतिहासिक-धर्मशास्त्रीय अवलोकन इसमें दिया गया है: हीलर, फ्र. *Urkirche und Ostkirche*. 1 (1937). पृ. 250–262। तुलना करें: कैसल, ओ. *Die ostkirchliche Opferfeier als Mysteriengeschehen*, में: *Der Christliche Osten* (1939)। पृ. 59–74, विशेष रूप से 68–71।

[899] श्ल्यापकिन। उद्धृत कृति, पृ. 115, 117–118; गोलुबेव, एस. पीटर मोगिला। 1 (1883)। पृ. 373; एस. पी. पीटर मोगिला, में: रीडगिस। 1877। 1. पृ. 142, 124। मोगिला पर, यह भी देखें: वलिर, एम. *ला कॉन्फेशन ऑर्थोडॉक्स डे पयिरे मोगिलास*; और यह भी: जुगी, *थेओलॉजिया डॉगमैटिका क्रिस्टियानोरोम ओरिएंटालियम*। 3 (1930)।

[900] प्रोज़ोरोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 221–222। थेसालोनिकी के आर्चबिशप सिमियन († 1429), अपनी रचनाओं के कारण (मिग्ने। पीजी. 155), जो ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च की 'रहस्यमय धर्मशास्त्र' का निर्माण करते हैं, पूर्वी चर्च के सबसे प्रसिद्ध और पूजनीय धर्मशास्त्रियों में से एक हैं। जेरूसलम के संत सिरिल († 386) ने अपनी 'कैटेकेटिकल ऑरेशन्स' के साथ रहस्यमय धर्मशास्त्र की नींव रखी। रहस्यमय धर्मशास्त्र के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधि थे डायोनिसियस द एरोपाजिट (5वीं शताब्दी), मैक्सिमस द कन्फेसर (मृत्यु 662), सोफ्रोनीयस ऑफ जेरूसलम (मृत्यु 638), जर्मनस ऑफ कॉन्स्टेंटिनोपल (मृत्यु 738), थियोडोर ऑफ एंडिडा (11वीं सदी) और निकोलस काबासिलस (मृत्यु 1371)। तुलना करें PRE. 13. पृष्ठ 612 ff. यह भी देखें: Engdahl, R. 'Beiträge zur Kenntnis der byzantinischen Liturgie', in: Neue Studien zur Geschichte der Theologie und Kirche. 5 (1908).

इसके अलावा, पवत्रि उपहारों के अभषिेक के समय पर शक्षिण को रोमन कैथोलकि सद्धिांत[901] के अनुसार प्रस्तुत कयिा गया था। जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा गया है, पोलोत्स्क के समिोन ने लगभग उसी समय अपने ग्रंथ *द सेप्ट्र ऑफ गवर्नमेंट* (1666) में और 1673 में एपफिानयिस स्लावस्कि की के साथ हुई एक बातचीत में इसी तरह की शक्षिा प्रस्तुत की। लेकनि उस समय पोलोत्स्की अभी भी एक बहुत प्रभावशाली हस्ती थे; इसके अलावा, नकिोन के नर्विासन के बाद, मास्को में कोई ठोस चर्च प्राधकिरण नहीं था[902] । 1682 में, ज़ार फ्योडोर की मृत्यु हो गई; राजकुमारी सोफयिा, जसिने सरकार की बागडोर अपने हाथ में ले ली थी, और उनके प्रयि, प्रसि वी. वी. गोलत्सिनि, पश्चमिी प्रभावों के प्रत सिहानुभूत रिखते थे[903] , और इसलएि कुछ समय के लिए धार्मकि अधकिारयिों द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई। सल्विेस्टर मेदवेदेव अपनी वद्वितापूर्ण गतविधियिों को बनिा कसिी बाधा के जारी रखने में सक्षम थे, और इसी समय उन्होंने 'जीवन का रोटी' नामक ग्रंथ लखिा, जसिका उल्लेख पहले ही कयिा जा चुका है।

कुछ वर्षों बाद वास्तवकि धार्मकि ववािद भड़क उठे, जब ऑर्थोडॉक्स गुट को 'सबसे वद्विान भक्षिुओं', ग्रीक इओआनकियिोस और सोफ्रोनओिस लकिुदोव से पर्याप्त समर्थन मलिा। वे 1685 में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के एक अनुशंसा पत्र के साथ अकादमी में पढ़ाने के लिए मास्को पहुँचे, जसिका उद्घाटन होने वाला था[904] । शुरुआत से ही, सल्विेस्टर मेदवेदेव दोनों भाइयों को शत्रुतापूर्ण दृष्टि से देखते थे, क्योंकि उनके आगमन ने उनकी योजनाओं को वफिल कर दयिा था। वास्तव में, पोलोत्स्की, या सल्विेस्टर, ने अकादमी की चार्टर तैयार की थी, जसिे ज़ार को प्रस्तुत कयिा गया था। हालाँकि, चार्टर को मंजूरी नहीं दी गई, और सल्विेस्टर को केवल ज़ाइकोनोस्पस्की मठ में स्कूल चलाते रहने की अनुमति दी गई; स्कूल के लिए केवल दो वशिेष रूप से नर्मिति इमारतें खड़ी की गई थीं, जो जाहरि तौर पर जोआचमि[905] के हस्तक्षेप के बनिा नहीं बनी थीं, और सल्विेस्टर ने इसे अपमान माना। इस बीच, अकादमी के चार्टर में संशोधन क कयिा गया था (संभव है कि भक्षिु यूथमियिस भी इस संशोधन में शामलि थे), और परणिामस्वरूप, लैटनि के बजाय ग्रीक सखिाने का नर्णिय लयिा गया। अकादमी को ग्रीक धर्म की शुद्धता की संरक्षक और वधिर्म के खलिाफ संघर्ष में एक मजबूत कलिा बनना था[906] । लट्विेनयिा और दक्षणिी रस की भूमि से लोगों को पढ़ाने के लिए आमंत्रति करने पर भी प्रतबिंध लगाया गया था, 'क्योंकि शुरुआत में ऐसे लोग पूरी तरह से धार्मकि प्रतीत होते हैं, लेकनि फरि, धीरे-धीरे, वे भ्रष्ट शक्षिाओं को फैलाना शुरू कर देते हैं और धर्म की अखंडता को कमजोर करते हैं'[907] ।

मेदवेदेव और लकिहुड्स के बीच व्यक्तगित संबंध भी सौहार्दपूर्ण से बहुत दूर थे। ग्रीक भाइयों के लिए, जनिके दावों में पोलोत्स्क के समियिन के दावों से कुछ समानता थी, ज़ाइकोनोस्पस्की मठ में एक वशिेष पत्थर का घर बनाया गया था—जहाँ सल्विेस्टर मेदवेदेव मठाध्यक्ष के रूप में सेवारत थे—उनके कुछ प्रयासों के बाद। संयोग से, जो लोग जल्द ही इस तीव्र ववािद में प्रतद्विंद्वी बनने वाले थे, वे एक ही मठ में रहते थे और अपनी ववािदास्पद रचनाएँ लखिते थे। हालाँकि, लकिहुदास और यूथमियिस के बीच एक घनष्ठि संबंध वकिसति हो गया, क्योंकि यूथमियिस उनके पास से धर्मशास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने और मेदवेदेव के प्रत उनकी शत्रुता का लाभ उठाने में सक्षम था।

हालाँकि, शुरुआत में यूथमियिस—जो शायद *द एनमिल ब्रेड* के प्रकाशन के तुरंत बाद ही इसके काम से परचिति हो गए थे—ने खुद मेदवेदेव पर हमला कयिा और *द ब्रेड* का जवाब देते हुए *फ्रॉम द होली फादर्स इन डफिेंस ऑफ द ईस्टर्न चर्च* शीर्षक से एक लेख लखिा[908] । मेदवेदेव के दावों का खंडन करते हुए, यूथमियिस चर्च के धर्मगुरुओं के उद्धरणों और एपफिानयिस स्लावस्कि की के साथ अपनी व्यक्तगित बातचीत का सहारा लेते हैं; उनका

---

[901] श्ल्यापकनि। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 134।

[902] नकिोन के पदच्युत और नर्विासन के बाद, मॉस्को में कुछ भ्रम था; नए पैट्रआर्क जोआसाफ द्वतिीय (1667–1672) बहुत बूढ़े थे; फरि पटिरिमि ने थोड़े समय के लिए (अक्टूबर 1672 – अप्रैल 1673) पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा, जसिके बाद 26 जुलाई 1674 तक एक 'इंटररेग्नम' (शासक रहति अवधि) रहा, जब जोआकमि का राज्याभषिेक हुआ। इसके अलावा, सरकार और चर्च अधकिारयिों का पूरा ध्यान संप्रदायवाद के खलिाफ संघर्ष में लगा हुआ था।

[903] 1680 और 1690 के दशक की शुरुआत का सर्वश्रेष्ठ अवलोकन यहाँ दयिा गया है: बेलोव, ई. ए. 'द मॉस्को टर्मोइल एट द एंड ऑफ द 17th सेंचुरी', में: झएमएनपी. 1887. खंड 9, पृ. 99–146; खंड 10, पृ. 319–365.

[904] लखिुद भाइयों पर, उत्कृष्ट कृत देखें: स्मेंत्सोव्स्की, एम. द लखिुद ब्रदर्स (1899); और यह भी: स्मरिनोव. हस्ट्री ऑफ़ द मॉस्को स्लावोनकि-ग्रीक एकेडमी (1855).

[905] स्मेंत्सोव्स्की। पूर्वोक्त, पृ. 37 आदि।

[906] संशोधति चार्टर (मेदवेदेव का मसौदा, जो दुर्भाग्य से खो गया है – संभवतःउनके वरिोधयिों द्वारा नष्ट कर दयिा गया) में: डीआरवी। दूसरी संस्करण। खंड 6। पृ. 397 आदि, तुलना करें: स्मेंत्सोव्स्की। पूर्वोक्त। पृ. 42–46।

[907] श्ल्यापकनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 147।

[908] रीडग्सि। 1885। 4. पृ. xvii.

मानना है कि पवित्र उपहारों के रूपांतरण का सिद्धांत, जैसा कि मेदवेदेव द्वारा प्रस्तुत किया गया है, 'ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन' से लिया गया था। पीटर मोहिला द्वारा 1645 का, जो यूथिमियस की दृष्टि में 'लैटिन' था। यह कहना मुश्किल है कि यूथिमियस अपने तर्क में किस हद तक स्वतंत्र थे[909] । हालाँकि, जिस पैराग्राफ में यूथिमियस ग्रीक धर्मशास्त्र के 'ठोस तर्क' की प्रशंसा करते हैं, वह उस सहायता का संकेत दे सकता है जो उन्हें विद्वान लिखित भाइयों से मिली थी।

[910]मेदवेदेव, जो संभवतः 'लैटिन विद्वता' के बारे में यूथिमियस की उपहासपूर्ण टिप्पणियों से सबसे अधिक क्रोधित थे - यद्यपि यह पूरी तरह से उचित था, क्योंकि *जीवन की रोटी* एक व्यावसायिक, विद्वतापूर्ण शैली में लिखी गई है - अब *जीवन की रोटी के मानना पर पुस्तक* को बहुत चिड़चिड़ाहट और विवादास्पद उत्साह के साथ लिखते हैं. बाद में, पूछताछ के दौरान (1689 की शरद ऋतु में), मेदवेदेव ने ईव्हेमियुस को बताया कि उसने *मानना* 'राजकुमारी सोफिया अलेक्सेयेवना के आदेश पर' लिखा था[911] । *मानना* में — जो केवल प्रतियों से ही ज्ञात है, क्योंकि इसे 1690 की परिषद के आदेश से जला दिया गया था — पवित्र उपहारों के रूपांतरण के रोमन कैथोलिक सिद्धांत को एक बार फिर विस्तार से प्रस्तुत किया गया है, जिसमें चर्च फादर्स की कृतियों, दक्षिण रूसी लेखों और यहां तक कि गोर की *सर्वसि बुक*[912] से कई उद्धरण दिए गए हैं।

यह *जीवन का रोटी* नामक ग्रंथ ही था जिसने यूथिमियस को न केवल विवादात्मक लेखन में उतरने के लिए प्रेरित किया, बल्कि लिखित भाइयों को, उनके धर्मशास्त्रीय ज्ञान के साथ, अपने सबसे मजबूत हथियार के रूप में शामिल करने के लिए भी प्रेरित किया। चूंकि भाइयों रूसी नहीं बोलते थे, यूथिमियस ने या तो मेदवेदेव के ग्रंथ का उनके लिए अनुवाद किया—जो कि संभव नहीं लगता—या फिर भाइयों को 'धर्मद्रोही' के मुख्य सिद्धांतों से परिचित कराया। भाइयों ने अपना जवाब ग्रीक में लिखा, जिसका बाद में यूथिमियस के संपादन में शाही मुद्रणालय में स्लावोनिक में अनुवाद किया गया[913] । 'अकोस, या सांप के विषैले काटने का इलाज' – यह शीर्षक लेखकों ने अपने ग्रंथ[914] को दिया था, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया था कि इसे दोनों जारों और राजकुमारी सोफिया के आदेश पर, और पैट्रिआर्क के आशीर्वाद से लिखा गया था। यह दर्शाता है कि नवंबर 1688 में रूसी चर्च के प्रमुख ने भी धर्मशास्त्रीय विवाद में भाग लिया था।

लेकिन मेदवेदेव अकेले नहीं थे। उदाहरण के लिए, सव्वा डोलगी नामक एक पादरी ने पूरे मॉस्को में *मानना* से उद्धरण और इसकी प्रतियां उत्साहपूर्वक वितरित कीं। एक डीकन अथेनासियस भी थे, जिन्होंने मेदवेदेव की कोठरी में इन प्रतियों को तैयार किया और उनसे अंश निकाले; और, इस कृति के प्रसार को तेज करने के लिए, उन्होंने कई और प्रतिलिपि बनाने वालों की मदद ली। पूछताछ के दौरान, ज़ाइकोनोस्पस्की मठ के एक कैंटर ने गवाही दी कि *1687–88 की* सर्दियों में 'कई *कुलीन (शायद कुछ बोयार – आई. एस.) और अतिथि दल के सदस्य उसके पास आए*

---

[909] श्ल्यापकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 148.

[910] एफ. शाक्लोविटि से संबंधित जाँच-पड़ताल के मामले। 1 (1884)। संख्या 15। पृष्ठ 544।

[911] सोफ्या अलेक्सेयेवना (जन्म 1657), ज़ार अलेक्सी मिखाइलोविच की पुत्री, एक प्रतिभाशाली, बुद्धिमान और महत्वाकांक्षी महिला थीं; वह अक्सर और उत्सुकता से उन पाठों में शामिल होती थीं जो पोलोत्स्क के सिमेओन उनके भाइयों, राजकुमार अलेक्सी और फ्योडोर को देते थे; राजकुमारी पश्चिमी शिक्षा की समर्थक थीं और उन्होंने बड़े पैमाने पर और उत्सुकता से अध्ययन किया। 1682 में, ज़ार फ्योडोर की मृत्यु के बाद, जब भाइयों इवान और पीटर को ज़ार घोषित किया गया – यह ध्यान में रखना चाहिए कि यह स्वयं पैट्रिआर्क जोआकिम ही थे जिन्होंने युवा ज़ारेविच पीटर के उत्तराधिकार में व्यक्तिगत रूप से सहायता की (उस्त्र्यालोव। हिस्ट्री ऑफ पीटर द ग्रेट। खंड 1, पृ. 16; Belov. Op. cit., in: ZhMNP. 1887. Vol. 1, p. 109 ff.) – सोफिया ने दोनों ज़ारों की अल्पवयस्कता के कारण, सत्ता अपने हाथों में लेने, राज्य की रीजेंट बनने और व्यक्तिगत रूप से देश पर शासन करने के लिए यह क्षण अनुकूल समझा, और उसने ऐसा किया भी। अपने शासनकाल (1682–1689) के दौरान, सोफिया ने पश्चिमी प्रभावों और पश्चिमी शिक्षा के प्रति स्पष्ट सहानुभूति दिखाई। 1689 में पीटर द्वारा पदच्युत किए जाने के बाद, उन्हें मास्को के नोवोदेविchy कन्वेंट में बंद कर दिया गया और एक नन बना दिया गया; उनकी मृत्यु 1704 में वहीं हुई। सोफिया पर, देखें: अरिस्तोव, *द मॉस्को टर्मोइल ड्यूरिंग द रेन ऑफ प्रिंसेस सोफिया* (1871); बेलोव, ई., उपरोक्त; श्मुरलो, ई., 'द फॉल ऑफ प्रिंसेस सोफिया', में: *ZhMNP*, 1896, संख्या 1; और यह भी: सोलोव्योव, *इतिहास ऑफ रूस*, खंड 13-14।

[912] श्ल्यापकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 150। मेदवेदेव का धर्मशास्त्रीय ज्ञान बहुत व्यापक था; उनके ग्रंथ *द ट्रू गॉस्पेल* में हमें चर्च के कई फादरों के उद्धरण और उनके संदर्भ मिलते हैं। उनकी गिरफ्तारी के बाद, उनकी व्यक्तिगत पुस्तकालय की एक सूची बनाई गई, जिसमें 603 पुस्तकें थीं - जर्मन, लैटिन और पोलिश में - और उनमें से केवल 18 पुस्तकें स्लाव भाषा में थीं। *रीडिंग्स*। 1885। 4। प्रस्तावना। पृ. XXXV।

[913] विवरण। 2. 3. संख्या 299। पृष्ठ 461; पांडुलिपि यूथिमियस के अपने हाथ से लिखी गई थी।

[914] 'अकोस, या उपचार' केवल पांडुलिपियों से ही ज्ञात है। विस्तृत विवरण के लिए देखें: कैटलॉग। 2. 3. संख्या 299, 300 और 301।

सेलविर्स्टका, कई कुलीनों (शायद कुछ बोयार – आई. एस.) और गार्ड के अधकिारी मलिने आते थे... और कहा जाता है कि उनकी बातचीत 'मसीह के वचनों (यानी, रूपांतरण के समय) के बारे में होती थी[915] ।

इन हलकों से, जो या तो मेदवेदेव की वचिारधारा से सहमत थे या उनमें कुछ रुचि रखते थे, एक और ग्रंथ सामने आया, जसिका शीर्षक था 'नए छपि हुए भेड़यिों पर एक अभयिोग', जसिमें लेखक 'अंधे मन वाले वदिेशयिों' (यानी, लकिहुड्स) के खलिाफ जोरदार तर्क देता है, और 'पागल कुत्ते' जैसे अपमानजनक शब्दों का उपयोग करता है, 'घृणति चमगादड़', 'अंधी उल्लूक' और 'मसीह के झुंड द्वारा वश में न कएि गए भेड़यि'। एक काफी लंबी प्रस्तावना के बाद, लेखक रोमन कैथोलकि सद्धिांत को प्रस्तुत करता है, जो मुख्य रूप से दक्षणि रूसी लेखन[916] पर आधारति है। हालांकि लकिुदा भाइयों ने मेदवेदेव को 'एक्सपोजर' का लेखक माना था, लेकनि ऐसा बलि्कुल नहीं है। रचना की भाषा, गाली-गलौज की भरमार, और दक्षणि रूसी लेखकों के उद्धरण – यह सब मेदवेदेव की लेखकता के खलिाफ तर्क देता है; यह न तो उनके चरत्रि से मेल खाता है और न ही उनकी रचनाओं की शैली से। यहाँ तक कि भक्षिु यूथमियस ने भी इस रचना के लेखक को 'अनाम' कहा था।

उस समय, मेदवेदेव अपने स्वयं के ववािदास्पद ग्रंथ पर काम में व्यस्त थे, जसिका उद्देश्य *अकोस* के दावों का खंडन करना था, जसिमें ट्रांस्यूबस्टैंटएिशन के समय पर ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत को बहुत स्पष्ट और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कयिा गया था, और ईसाई धर्मशास्त्र का व्यापक उपयोग कयिा गया था; क्योंकि कोई भी ग्रीक भाइयों की धर्मशास्त्रीय वद्विता से इनकार नहीं कर सकता। 1688 की शुरुआती पतझड़ में, मेदवेदेव ने अंततः *अकोस* की अपनी आलोचना पूरी की। इसका शीर्षक था *मस्कोवाइट ज़ारडम में प्राचीन पुस्तकों के नए वनियिमन के संबंध में एक सच्चा ऑर्थोडॉक्स ववरिण और एक धर्मनरिपेक्ष गवाही*। यह एक व्यापक कृति है[917] , जो दो भागों में वभिाजति है। पहला भाग, जो पूरे ग्रंथ का लगभग एक चौथाई हस्सिा है, 17वीं सदी की शुरुआत से पूजा-संबंधी पुस्तकों के संशोधन के इतहिास को समर्पति है, जो मुख्य रूप से पैट्रआर्क नकिोन के युग के दौरान शुरू हुआ और 1667 की परषिद तक जारी रहा, और इसमें लेखक की इस प्रयास के संबंध में नष्पिक्ष आलोचनात्मक टप्पिणयिाँ भी शामलि हैं। यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि मेदवेदेव ने यह परचिय क्यों लखिा; शायद वह यह दखिाना चाहते थे कि उनके वरिोधयिों द्वारा उपयोग कएि जाने वाले ग्रंथों में कई त्रुटयिाँ शामलि हो गई थीं। इसके बाद, बनिा कसिी स्पष्ट संबंध के, दूसरा भाग आता है, जो एक वद्वितापूर्ण धर्मशास्त्रीय अध्ययन[918] है, जसिमें लेखक दृढ़ता से अपने दृष्टकिोण का बचाव करते हैं। संभवतः मेदवेदेव की इसी जदि के कारण उन्हें पतझड़ 1688 में रॉयल प्रटिंगि हाउस में प्रूफरीडर के पद से हाथ धोना पड़ा, जहाँ वह और यूथमियिस सबसे अधकि जानकार और सक्षम वशिेषज्ञ थे[919] ।

हालाँकि, 'ऑर्थोडॉक्स पार्टी' ने मेदवेदेव के खलिाफ अपनी ववािदास्पद लेखनी जारी रखी। *सत्य की गवाही* नामक एक कृति सामने आई, जो नस्सिंदेह यूथमियिस द्वारा लखिी गई थी, यद्यपि लेखक इसमें सोफ्रोनीयस लकिुड की ओर से बोलता है[920] । इसमें, यूथमियिस ने मेदवेदेव की *ट्रू न्यूज़* और 'अज्ञात लेखक' द्वारा लखिति *एक्सपोज़र* दोनों के साथ ववािदात्मक चर्चा की है, जसिे यूथमियिस इस बार मेदवेदेव का ही मानते हैं और उस कृति में नहिति प्रस्तावानां के लएि उन्हें उत्तरदायी ठहराते हैं। इसके अलावा, चर्च पदानुक्रम के एक प्रतनिधि – ख्लोमोगोरी के आर्चबशिप अथानासयिस, जनिकी कुछ धर्मशास्त्रीय कृतयिों का उल्लेख पहले ही यहां कयिा जा चुका है – ने इस बहस में प्रवेश कयिा। उनकी दो कृतयिाँ, जो दुर्भाग्य से, केवल पांडुलपि के रूप में ही बची हैं और केवल अत्यंत असंतोषजनक ववरिणों से ही जानी जाती हैं, ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च की शक्षिा के अनुसार पवत्रि उपहारों के रूपांतरण के प्रश्न को समर्पति हैं[921] ।

हालांकि, यह मुद्दा धीरे-धीरे एक धर्मशास्त्रीय ववािद की सीमाओं से आगे बढ़ गया। दोनों दृष्टकिोण लोगों के बीच व्यापक रूप से प्रचलति हो गए। वभिन्नि प्रकार के लोग मेदवेदेव से मलिने आते थे और उसके साथ चर्चा में शामलि होते थे; मास्को के पुरोहतिों में भी उसके समान वचिारधारा वाले सहयोगी थे: पादरी सव्वा, डकिन अथानासयिस और जैकब, और भक्षिु एंटोन मुरोमेट्स। यहाँ तक कि मास्को छावनी के भीतर, स्ट्रेल्त्सी रेजमिेंटों में भी, 'लैटनि गुट'

---

[915] एफ. शाक्लोवटि से संबंधति जांच फाइलें। 1. संख्या 29.

[916] श्ल्यापकनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 154 आदि।

[917] 'द ट्रू न्यूज़', में: रीडगि्स. 1885. 4. पृ. 1, 79.

[918] श्ल्यापकनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 157.

[919] बेलोकुरोव, में: रीडगि्स। 1885. 4. पृ. 19.

[920] तुलना करें: ए. गोरस्की की राय, ववरिण। खंड 2, संख्या 3, संख्या 299, पृ. 469.

[921] ये हैं: 1) 'ऑर्थोडॉक्स धर्म-स्वीकृति की एक संक्षप्ति पुस्तक... मसीह के शरीर और रक्त के रूपांतरण पर' और 2) 'मौंडी गुरुवार पर सेवाओं का क्रम... रहस्यों के अभषिेक और रूपांतरण पर'; तुलना करें: श्लापकनि. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 164.

ने रुचि जगाई और अनुयायी बनाए[922] । उस युग के धार्मिक माहौल की एक अत्यंत विशिष्ट विशेषता यह परिस्थिति थी—जो पहली नज़र में समझ से परे लगती है—कि 'लैटिन गुट' को संप्रदायिकता के करीब के हलकों में समर्थन मिला। निकोन द्वारा किए गए सुधारों के दौरान, ग्रीकों और उनके धर्मशास्त्र का अधिकार न केवल निकोन के विरोधियों की बल्कि संदेह रखने वालों की नजर में भी कम हो गया। मेदवेदेव ने *इज़्वेस्तिये इस्टिन्नोये* के पहले भाग में एक बार फिर इस अधिकार की तीखी आलोचना की, और निकोन के सुधारों में त्रुटियों की ओर इशारा किया। एक और महत्वपूर्ण कारक यह था कि 'ग्रीक', या 'ऑर्थोडॉक्स', गुट का नेतृत्व पैट्रिआर्क जोआचिम कर रहे थे, जिनके कठोर उपायों और उत्पीड़न ने संप्रदायवादियों और उन लोगों के बीच शत्रुता और घृणा को जन्म दिया जो गुप्त रूप से उनकी सहानुभूति रखते थे। यूथिमियस द्वारा संपादित और आंशिक रूप से लिखित *ओस्टेन* में, लोगों के बीच हुई तीव्र बहसों का उल्लेख है। आखिरकार, इस धर्मशास्त्रीय विवाद का एक बाहरी पहलू भी था जो ऐसी चर्चाओं को हवा देता था, और जो मस्कोवाइट्स के लिए बहुत महत्व रखता था। दैवीय धर्मविधि की रस्म के अनुसार, जब 'लो, खाओ' शब्द बोले जाते हैं, तो धर्मविधि संपन्न करने वाला पुरोहित अपना सिर झुकाता है और उसी क्षण घंटियाँ बजती हैं। एक व्यापक प्रथा थी जिसके अनुसार जो लोग उस समय घर में या सड़क पर लिटिर्जी में शामिल नहीं हो रहे थे, वे भी खुद पर क्रॉस का निशान बनाते थे। उस समय, बाहरी अनुष्ठानों को 'लिटुर्जिकल' (धार्मिक अनुष्ठान संबंधी) महत्व दिया जाता था, और संप्रदायिक विभाजन के युग ने इस अनुष्ठानिक विश्वास को और भी तीव्र कर दिया[923] ।

धार्मिक विवाद धीरे-धीरे पूरे समाज के लिए एक मामला बन गया और मास्को की राजनीतिक परिस्थितियों से जुड़ा हुआ साबित हुआ। राजकुमारी सोफिया और युवा ज़ार पीटर के बीच संबंध दिन-ब-दिन तनावपूर्ण होते जा रहे थे[924] । मेदवेदेव सोफिया के गुट से संबंधित थे: वे अक्सर स्ट्रेल्ट्सी विभाग के प्रमुख, ओकोल्निकी फ्योडोर शाक्लोविटी के साथ मेलजोल करते थे, जिनका करियर राजकुमारी की वजह से था और जिन्होंने स्ट्रेल्ट्सी रेजिमेंटों को उनके पक्ष में उकसाया; इसके अलावा, मेदवेदेव सर्वशक्तिमान प्रिंसि वी. वी. गोलित्सिन, जो राजकुमारी के प्रिय थे[925] , और स्वयं राजकुमारी की कृपा में थे। मेदवेदेव के खिलाफ राजनीतिक आरोप लगाने के ये ही आधार थे। उस समय पैट्रिआर्क पीटर के पक्ष में थे; पीटर की पश्चिमी-समर्थक प्रवृत्तियाँ अभी सोफिया और गोलित्सिन की प्रवृत्तियों जितनी तीव्र रूप से प्रकट नहीं हुई थीं; इसके अलावा, पीटर अभी भी युवा था, जबकि उसकी माँ, ज़ारिना नतालिया, का गुट हमेशा पुराने मास्को के तरीकों का समर्थक रहा था, जिनका पैट्रिआर्क प्रतीक थे। मेदवेदेव के प्रति इओआकिम की व्यक्तिगत शत्रुता ने भी एक भूमिका निभाई; पादरी को अफवाहें मिली थीं कि मेदवेदेव उनके बारे में उपहासपूर्वक बात करते थे, जैसा कि कुछ गवाहों ने बाद में पूछताछ के दौरान गवाही दी। इसके अलावा, ऐसी अफवाहें भी फैलीं कि गोलित्सिन के अनुयायियों ने इओआकिम के स्थान पर मेदवेदेव को पैट्रिआर्क नियुक्त करने का फैसला किया था या, कम से कम, उसे इओआकिम का उत्तराधिकारी बनाने का[926] । यह अजीब होता अगर इसके बाद इओआकिम मेदवेदेव से नफरत न करने लगा होता।

8 अगस्त 1689 को सोफिया की सरकार का तख्ता पलट दिया गया, और उन्होंने अपने जीवन के अंतिम 15 वर्ष नोवोदेविchy कन्वेंट में एक नन की पोशाक में बिताए; उनकी मृत्यु 1704 में हुई। 9 सितंबर को प्रिंसि गोलित्सिन को निर्वासन में भेज दिया गया, जबकि शाक्लोविटी और सोफिया के अन्य समर्थकों को गिरफ्तार कर लिया गया और उनसे पक्षपाती पूछताछ और यातना की गई। 12 सितंबर को शाक्लोविटी को फांसी दी गई। मेदवेदेव को भागने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन रास्ते में उसे पहचान लिया गया और पकड़ लिया गया। ज़ार पीटर के खिलाफ एक गद्दार

---

[922] जांच फाइलें। संख्या 29, 30 और 26।

[923] पीटर मोहिला की *सर्विस बुक* (1639) और अन्य दक्षिणी रूसी कृतियों में, पुरोहित द्वारा उपहार अर्पित करने की इस क्रिया पर विशेष रूप से जोर दिया गया है। श्लापकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 115; प्रोज़ोरोव्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 225।

[924] प्लातोनोव। व्याख्यान (1915)। पृ. 474, 478; और विवरण: श्मुरलो, ई. उद्धृत ग्रंथ, में: झएमएनपी। 1896. 1.

[925] राजकुमार वासिली वासिलीविच गोलित्सिन (1643–1714) एक सुशिक्षित व्यक्ति थे; उन्होंने पश्चिमी यूरोप में गहरी रुचि ली, पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभावों और पश्चिमी शिक्षा को प्रोत्साहित किया, और अपने निजी जीवन को पश्चिमी तरीके से व्यवस्थित किया। गोलित्सिन के पास विभिन्न सुधारों की योजनाएँ थीं। 1682 से 1689 तक, वह विदेश मामलों (राजदूत कार्यालय) के प्रभारी थे और सोफिया का अटूट विश्वास और व्यक्तिगत कृपा प्राप्त थी। सोफिया के पतन (8 अगस्त 1689) के बाद, गोलित्सिन को उत्तर में निर्वासित कर दिया गया, जहाँ 21 अप्रैल 1714 को उनकी मृत्यु हो गई। गोलीत्सिन पर, देखें: ब्रुक्नर, ए. *Beiträge zur Kulturgeschichte Russlands im 17. Jahrhundert* (1887); पेट्रोव्स्की, 'प्रिंसि वी. वी. गोलीत्सिन', *Russkiye Staty*, 1875, संख्या 5 में; गॉर्डन, जनरल। Tagebuch; और साथ ही: डी ला न्यूविल (मास्को में फ्रांसीसी राजदूत)। Relation curieuse et nouvelle de Moskovie। पेरिस, 1698 (रूसी में संक्षिप्त रूप में: Russkiye Statye 1891, संख्या 9 और 11); सोलोव्योव। 12–14।

[926] जांच फाइलें। 1. संख्या 26 और 30; बेलोव। उपरोक्त, पृ. 365, टिप्पणी। खोलमोगोरी के आर्चबिशप आर्सेनी की प्रसिद्ध कृति *द शील्ड ऑफ द फेथ* में, यह भी कहा गया है कि मेदवेदेव ने लोगों को विद्रोह करने और पैट्रिआर्क जोआकिम और अन्य लोगों की हत्या करने के लिए उकसाया, जो हमारी राय में, सच नहीं हो सकता। तुलना करें: कैटलॉग। 2. 3. संख्या 310. पृष्ठ 503.

और साज़शिकर्ता के रूप में, मेदवेदेव भी पूछताछ और यातना से बच नहीं सके; इसके अलावा, उनके दुश्मनों को उनके खलिाफ झूठी गवाही देने का एक सुनहरा अवसर मलिा, क्योंकि वास्तव में, जैसा कि शाक्लोवटिी के मामले की जांच से स्पष्ट है, मेदवेदेव का उनकी साज़शि से कोई लेना-देना नहीं था। इसके बावजूद, मेदवेदेव को मौत की सज़ा सुनाई गई। वह राजनीतकि और धार्मकि जुनून का शकिार हो गया। ई. बेलोव, जन्हिोंने 'जांच फाइलों' का गहन अध्ययन कयिा है, लखिते हैं, 'ऐसा लगता है कि मेदवेदेव की एकमात्र गलती यह थी कि राजकुमारी सोफयिा और वी. वी. गोलत्सिनि, उनकी बुद्धमित्ता का सम्मान करते हुए, अपनी योजनाओं के सफल होने पर उन्हें पैट्रआिर्क नयिुक्त करने का सपना देख रहे थे'[927] । 'मेदवेदेव,' आई. श्लापकनि लखिते हैं, जन्हिोंने पवत्रि उपहारों के स्थानांतरण पर ववािद के पूरे इतहिास का वस्तुनष्ठि और गहन अध्ययन कयिा है, 'अपने चरत्रि या त्रुटि के शकिार नहीं हुए, बल्कि उन ऐतहिासकि परस्थितियिों के शकिार हुए जो उनके खलिाफ हो गई थीं और लकिहुड्स की साजशिों के शकिार हुए'[928] ।

हालांकि, मेदवेदेव को तुरंत फांसी नहीं दी गई; शुरू में, उसे चर्च के मुकदमे का सामना करने के लिए पैट्रआिर्क के हवाले कर दयिा गया। जनवरी 1690 में, एक परषिद का आयोजन कयिा गया जसिे, जैसा कि आई. श्लापकनि बल्कुिल सही कहते हैं, 'कठोरता से कहें तो, एक परषिद नहीं थी', क्योंकि इसकी कार्यवाही में केवल चार बशिप और पैट्रआिर्क ने ही भाग लयिा था। मेदवेदेव को पदच्युत कर दयिा गया (वह एक हायरोमोंक थे) और आजीवन कारावास की सजा दी गई; उनके ग्रंथ *मानना* को जला दयिा गया[929] । इस सजा के बावजूद, धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों ने मेदवेदेव को मृत्युदंड के लिए सौंप दयिा; उन्हें 11 फरवरी को फांसी दी गई। श्ल्यापकनि का मानना है, शायद काफी हद तक सही भी, कि यह जोआचमि[930] के हस्तक्षेप के बनिा नहीं हुआ।

'ओस्टेन' में 'रॉस्ट्रगि पर, पूर्व भक्षिु सल्विेस्टर मेदवेदेव' शीर्षक से एक लेख है, जसिके साथ उनका 'पश्चाताप का बयान' संलग्न है[931] । यह ज्ञात नहीं है कि यह 'पश्चाताप की स्वीकारोक्ति' वास्तव में मेदवेदेव द्वारा ही लखिी गई थी या नहीं। इस पर कोई हस्ताक्षर नहीं है, जबकि साव्हा डोलगोय की 'पश्चाताप की स्वीकारोक्ति' पर है, जो मेदवेदेव के अनुयायी के रूप में भी चर्च की अदालत के सामने पेश हुए थे; उनके अपने धर्मशास्त्रीय वचिारों की कठोर नदिा, ट्रांससब्सटैंशएिशन के समय के संबंध में ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत को स्वीकार करना, और अंत में, अपनी ही रचनाओं के खलिाफ शाप-भर्त्सना—जन्हिें इतनी लगन और दृढ़ वश्विास के साथ लखिा गया था—यह सब पाठक के मन में संदेह पैदा करता है। यह संभव है कि 'कबूलनामा' मेद्वेदेव को तब पढ़कर सुनाया गया हो जब पादरी के प्रतनिधि उनके पुनःधर्मत्याग को सुनश्चिति करने के लिए उनकी कोठरी में आए थे। वे यह अच्छी तरह जानते थे कि उनके दनि गनि-चुने थे, इसलिए 'कबूलनामे' पर बनिा हस्ताक्षर के ही छोड़ दयिा गया होगा। इओआकमि और यूथमियिस के लिए, यह 'कबूलनामा' बस अत्यावश्यक था। जोआकमि के लिए – क्योंकि इसने मेदवेदेव के समर्थकों को एक बड़ा झटका दयिा, क्योंकि उनकी नजर में शहीद की मृत्यु केवल उनके वश्विासों की धार्मकिता की पुष्टि कर सकती थी, और अब 'कबूलनामा' ने उनके सभी धर्मशास्त्रीय तर्कों को नरिस्त कर दयिा था। यूथमियिस के लिए, यह इस बात की पुष्टि के रूप में काम करता था कि 'ऑर्थोडॉक्स पार्टी' सही थी और इसे उस ववािद में भाग लेते हुए कएि गए प्रयासों के लिए एक प्रकार के पुरस्कार के रूप में देखा जा सकता था।

मेदवेदेव के *कन्फेशन* ने 'लैटनि पार्टी' की स्थति को कमजोर करने में मदद की, क्योंकि वे मेट्रोपोलसि के कुछ बशिप खुले तौर पर या गुप्त रूप से मेदवेदेव के धर्मशास्त्रीय वचिारों को साझा करते थे[932] , और वास्तव में मॉस्को के बशिपों के बीच की स्थति बलिकुल भी सीधी-सादी नहीं थी। जहाँ एक ओर ख्लोमोगोरी के आर्चबशिप अथानासयिस ने नस्सिंदेह 'ऑर्थोडॉक्स पार्टी' का पक्ष लयिा—जैसा कि उनके पहले उल्लेखति लेखों से पुष्टि होती है—वहीं काज़ान के मेट्रोपॉलटिन एड्रयिन, जो भवष्यि के पैट्रआिर्क बने, और साथ ही जॉब की स्थति, वस्कोपोत्रोव्स्की मठ के आर्चमिांड्राइट, जो बाद में नोवगोरोड के मेट्रोपॉलटिन बने, का रुख पूरी तरह से स्पष्ट नहीं था, बशर्ते कि आर्चमिांड्राइट गेब्रयिल और हाइरोडीकन दमास्कनि (पहले 'लैटनि पार्टी' से और दूसरे 'ऑर्थोडॉक्स पार्टी' से) के अवलोकनों पर भरोसा कयिा जा सकता है[933] । 'ऑर्थोडॉक्स गुट' को आर्चमिैंड्राइट

---

[927] प्रोज़ोरोव्स्की। उद्धृत कृति, पृ. 324–377; बेलोव। उद्धृत कृति, पृ. 365; श्लापकनि भी यही वचिार रखते हैं (उद्धृत कृति, पृ. 208, 211, 234)।

[928] श्ल्यापकनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 235.

[929] एआई. 5. संख्याएँ 194, 339.

[930] श्ल्यापकनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 201; सोलोव्योव। 14. पृ. 137.

[931] ओस्टेन (1865)। पृ. 83–90; एक अन्य संस्करण: रीडग्सि। 1870। खंड 2। पृ. 1–12। तुलना करें श्लापकनि के वचिार से (उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 208)।

[932] श्ल्यापकनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 176–201।

[933] उपरोक्त, पृ. 165–166.

इग्नेशियस रम्स्की-कोर्साकोव (जन्हिोंने, 1692 और 1700 के बीच, वह साइबेरिया के मेट्रोपॉलिटन थे), जन्हिोंने *पैट्रिआर्क जोआकिम का जीवन और वसीयत* लिखी, जिसमें पैट्रिआर्क को एक संत के रूप में महिमामंडित किया गया है—एक ऐसा कदम जिससे लेखक ने संभवतःउनकी संत-घोषणा के लिए मार्ग प्रशस्त करने का इरादा किया था[934] । उदाहरण के लिए, दोनों गुटों के बीच विवाद में एक मध्यवर्ती स्थिति आर्किमंड्राइट इग्नाटियस रम्स्की-कोर्साकोव (1692–1700) ने अपनाई थी, जो मार्केल, प्सकोव (1681–1690) और कज़ान (1690–1698) के मेट्रोपॉलिटन, एक विद्वान व्यक्ति जो लैटिन, फ्रेंच और इतालवी जानता था, और जोआकिम की मृत्यु के बाद, पैट्रिआर्क के सिंहासन के उम्मीदवारों में से एक था[935] । रयाज़ान के मेट्रोपॉलिटन पावेल (मोराव्स्की) (1681–1686), अपनी धर्मप्रांत के पादरियों को लिखे उनके परिपत्र पत्र से यह आँका जा सकता है कि वे 'लैटिन' विचारों के समर्थक थे[936] । साइमनोव मठ के आर्चिमंड्राइट गाव्रील डोमेट्स्की भी 'लैटिन पार्टी' से ही थे। शुरू में उन्होंने शांत रहने की नीति अपनाई, लेकिन मेदवेदेव की फांसी के बाद उन्हें आइवर्सकी मठ भेज दिया गया। 1704 में, डोमेट्स्की नोवगोरोड में मेट्रोपॉलिटन जॉब के धर्मप्रांत के अंतर्गत यूरीव मठ के मठाधीश थे, और इसी समय उन्होंने '105 प्रश्न' नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें उन्होंने रूपांतरण के रोमन कैथोलिक सिद्धांत का बचाव किया। चुदोव मठ के हिएरोडीकन दमास्किन की रचना, 'डोमेट्स्की को 105 उत्तर', ट्रांससब्सटैंटिएशन के समय पर विवाद को समाप्त करती है[937] ।

'ग्रीक', या 'ऑर्थोडॉक्स', और 'लैटिन', या 'पश्चिमी', गुटों के बीच विवाद 17वीं सदी के अंतिम चौथाई भाग की एक बहुत ही विशिष्ट विशेषता थी। मेदवेदेव के विचारों और लेखन ने निस्संदेह चर्च जीवन पर एक निश्चित प्रभाव डाला। इस प्रभाव का कारण क्या था? क्या यह मस्कोवी के धार्मिक जीवन में कैथोलिक धर्म का प्रवेश था? क्या इसने चर्चों के संघ के लिए कोई नई संभावनाएं खोल दीं? दूसरे प्रश्न का उत्तर निश्चित रूप से नकारात्मक में दिया जा सकता है। भले ही रोमन कैथोलिक चर्च के किसी एक धर्मशास्त्रीय सिद्धांत को अपना लिया गया होता (मान लीजिए कि मेदवेदेव और उनके अनुयायी सफल हो गए होते, और उनके विचारों को सभी ने स्वीकार कर ऊपर से मान्यता दे दी होती), तो भी कई अन्य मुद्दों को सुलझाना बाकी रह जाता। इसके अलावा, यह नहीं भूलना चाहिए कि पीटर रोमन कैथोलिक चर्च को विशेष रूप से उच्च सम्मान में नहीं रखते थे, क्योंकि वे स्पष्ट रूप से प्रोटेस्टेंट प्रभावों के अधीन थे। 17वीं शताब्दी के दूसरे छमाही में हुए विभाजन के परिणामस्वरूप, सभी धार्मिक मामलों ने एक अत्यधिक तीव्र और दर्दनाक स्वरूप ले लिया। 'लैटिन पार्टी' दक्षिणी रूसी धार्मिक प्रभाव का परिणाम थी, और यद्यपि लिटिल रूस में ट्रांससब्सटैंटिएशन के कैथोलिक सिद्धांत के कई समर्थक थे, रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति शत्रुता बहुत अधिक थी। उदाहरण के लिए, लाज़ार बारानोविच कैथोलिक सिद्धांत में विश्वास रखते थे, फिर भी वह रोमन कैथोलिक चर्च के कट्टर विरोधी थे। ठीक दक्षिणी रस से ही, कैथोलिक प्रभाव के साथ-साथ, कैथोलिक-विरोधी विवादात्मक साहित्य भी मास्को तक पहुँचा। जहाँ पहले को एकता के पक्ष में एक कारक माना जा सकता है, वहीं बाद वाला, बेशक, इसका विरोध करने का एक साधन था।

मेदवेदेव और उनके अनुयायियों की गतिविधियों और विचारों को एक बिल्कुल अलग रोशनी में देखा जाना चाहिए। यह मस्कोवी की बौद्धिक दुनिया में एक पूरी तरह से नई विचार प्रणाली के प्रवेश से कम नहीं था। मस्कोवाइट रूढ़िवाद, अब 17वीं सदी के दूसरे छमाही में, विशेष रूप से निकोनियन युग के उथल-पुथल के बाद, अब अपनी कठोरता में जमे नहीं रह सकता था। पश्चिमी प्रभावों ने आलोचनात्मक सोच के विकास को बढ़ावा दिया, ठीक उसी तरह जैसे 16वीं शताब्दी के मध्य में, प्रोटेस्टेंट प्रभावों ने बाशकिन या कोसोय की आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दिया था; और पूर्वसर्ग (preposition) का प्रश्न, विशेष रूप से उस पर विभिन्न दृष्टिकोणों के कारण, उभरते हुए, मुक्ति-साधक नए सोच के तरीके को व्यावहारिक अनुप्रयोग का पहला अवसर प्रदान करता था। संयोग से, यह मुद्दा सिद्धांतवादी (dogmatic) बन गया। यह कहना गलत नहीं होगा कि मेदवेदेव के लिए—हालांकि निश्चित रूप से उनके विरोधियों के लिए नहीं—यह एक सिद्धांतवादी बल्कि एक वैज्ञानिक मुद्दा था। मेदवेदेव ने देखा कि ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षाएं रोमन कैथोलिकों की शिक्षाओं[938] की तरह व्यवस्थित रूप से संगठित नहीं थीं। इसी कारण से, *द ट्रू न्यूज़* नामक कृति विशेष रूप से उनकी विशेषता है। मेदवेदेव की जीवनी में, एक ओर हमें रूसी विद्वान धर्मशास्त्र की उत्पत्ति की तलाश करनी चाहिए; दूसरी ओर, यह रूसी आलोचनात्मक सोच के इतिहास का एक अध्याय है—जो अपनी खोजों और असंतोष

---

[934] उपरोक्त, पृ. 169, 212। इग्नेशियस कोर्साकोव के कैथोलिक-विरोधी निबंध के लिए यह भी देखें: रीडगिस। 1884। खंड 3।

[935] श्ल्यापकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 167.

[936] सोलोव्योव। 14. पृ. 90; श्लापकिन। पूर्वोक्त, पृ. 168; फिलारेट। 1. सं. 236; पिस्कारेव। पूर्वोक्त, सं. 51.

[937] श्ल्यापकिन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 164–166; RBS. पृ. 54; डेमास्किन पर: याकोन्टोव, I. हिएरोडीकन डेमास्किन, एक 17वीं सदी के रूसी विवादाकार (1884) (मेरे लिए उपलब्ध नहीं); तुलना करें: झएमएनपी. 1884. 4 में एन. पेट्रोव की समीक्षा।

[938] तुलना करें: पूर्वी चर्च के रूपांतरण सिद्धांत की व्याख्याएँ: हाइलर. उद्धृत ग्रंथ, खंड 1, पृ. 257 आदि; या: गैस. सिम्बोलिक, पृ. 225 आदि।

के साथ रूसी चरित्र और मानसिकता की एक स्थायी विशेषता है। मेदवेदेव नए, पेट्रिन रूस के ऐतिहासिक मंच पर अधिक सहज प्रतीत होते; वहाँ उन्हें अपनी शिक्षा, बुद्धि और जिज्ञासा के अनुरूप एक भूमिका मिलती, और वे पीटर के सुधारों में उनके सहायकों में से एक बन सकते थे। इओआकिम, जो निस्संदेह मेदवेदेव की मृत्यु के लिए जिम्मेदार था, ने पीटर को उसके भविष्य के सहयोगियों में से एक से वंचित कर दिया - शायद जानबूझकर, पश्चिम से मस्कोवी में प्रवेश कर रही हर चीज़ के प्रति घृणा और अरुचि के कारण।

अध्याय XII. विभाजन और मठवाद

1. विभाजन के धार्मिक और मनोवैज्ञानिक कारण

सत्रहवीं शताब्दी रूसी राज्य और रूसी चर्च दोनों के लिए एक 'कठिन शताब्दी' थी। इसकी शुरुआत 'समय की परेशानियों' से हुई और इसका अंत फूट और पीटर के सुधारों के तूफान के साथ हुआ। समस्याओं के समय ने एक नई राष्ट्रीय और राज्य पहचान को जन्म दिया: पूर्व की वर्ग-आधारित पहचान अपनी नींव तक हिल गई थी, और राजनीतिक व सामाजिक उथल-पुथल ने एक वास्तविक राष्ट्रीय पहचान के जन्म को जन्म दिया – अंततः राज्य और लोगों के प्रमुख कार्यों को पहचाना गया। समस्याओं के समय के परिणाम 17वीं सदी भर महसूस किए गए, जो एक तूफानी समुद्र की तरह थी: सरकार की आर्थिक और वित्तीय कठिनाइयाँ, लोकप्रिय अशांति, कई ज़ेम्स्की सोबोर, सार्वजनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में सुधार करने या, कम से कम, कुछ सुधार लाने के सरकार के प्रयास, 15वीं और 16वीं शताब्दी से चले आ रहे राष्ट्रीय मुद्दों को हल करने के लिए पड़ोसियों के साथ युद्ध, और अंत में, देश के जीवन में पश्चिमी प्रभावों का निरंतर प्रवेश, जिसने पुराने मॉस्को की लंबे समय से स्थापित प्रथाओं और लोगों की सोच के साथ पारंपरिक जीवन शैली को, साथ ही मॉस्कोइट संस्कृति की पूरी संरचना को कमजोर कर दिया - यह शायद, केवल 100 वर्षों की अवधि के लिए बहुत अधिक था। इन सभी घटनाओं में पीटर के भविष्य के सुधारों के बीज निहित थे, और फिर भी पीटर का रूस महान पीड़ा के बीच अस्तित्व में आया...[939]

इस 'कठिन शताब्दी' के दौरान रूसी चर्च का जीवन भी अशांत था। न केवल इसलिए कि चर्च को इन परिस्थितियों में रहना पड़ा, बल्कि इसलिए भी कि राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल ने ईसाई चर्च—और पुरोहित वर्ग—के आंतरिक व्यवस्था को भी अछूता नहीं छोड़ा। पादरियों की मानसिकता और उनका विश्व-दृष्टिकोण अपनी पूर्व दृढ़ता और स्पष्टता खोने लगे। सोलहवीं सदी में अभी संदेह का प्रवेश नहीं हुआ था: बाशकिन और कोसोय, जो बाद की रूसी धार्मिक खोजों के अग्रदूत थे, अपने युग के असामान्य व्यक्ति थे; गैर-स्वामित्ववादियों द्वारा की गई आलोचना संदेह की भावना से नहीं, बल्कि सुधार की एक स्वस्थ इच्छा से उत्पन्न हुई थी; लेकिन 'समय की परेशानियों' के बाद, 'मास्को - तीसरी रोम' का विचार अपनी पूर्व स्पष्टता और असाधारण आकर्षण खो बैठा, और एक राष्ट्रीय व धार्मिक आदर्श होना बंद हो गया, क्योंकि राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल ने उसे अछूता नहीं छोड़ा था। एक तरह से, सत्रहवीं सदी इस विचार के लिए परीक्षा का समय था, यह परखने का समय था कि इसे व्यवहार में कितनी दूर तक लाया जा सकता है, क्या इसमें हर चीज़ को वास्तव में अपरिवर्तित रहना चाहिए, और क्या इस विचार में हर बात निस्संदेह सच थी। साथ ही, इस बारे में संदेह बढ़ रहे थे कि क्या हर चीज़ का समान धार्मिक महत्व था; यह पहचानना आवश्यक था कि क्या शाश्वत और अपरिवर्तनीय था, और क्या अस्थायी और परिवर्तन के अधीन था। इन संदेहों और प्रश्नों ने धार्मिक पदानुक्रम, शेष पुरोहित वर्ग और यहां तक कि सामान्य श्रद्धालुओं को भी परेशान किया।

पदानुक्रम यथास्थिति को बनाए रखने और गलतियों को सुधारने के उपायों के बीच झूलता रहा: एक ओर, इसने विदेशी प्रभावों के खिलाफ लड़ाई लड़ी – जैसा कि पहले तिमाही में, पैट्रिआर्क फिलारेट के अधीन, और बाद में, पैट्रिआर्क जोआकिम के अधीन; दूसरी ओर, उसे दक्षिणी रस के विद्वानों की भर्ती करनी पड़ी जो स्पष्ट रूप से पश्चिमी प्रभाव में थे, और, इसके अलावा, पूरे शताब्दी के दौरान विभिन्न सुधार और सुधार कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि चर्च की पदानुक्रम हमेशा एक सीधे रास्ते पर नहीं चली; इसके भीतर 'मास्को - तीसरी रोम' के विचार के कई कट्टर समर्थक थे, लेकिन केवल कुछ ही पदानुक्रम वाले इस विचार के लिए दृढ़ता से लड़ने को तैयार थे। नतीजतन, निर्णायक क्षणों में, यह चर्च पदानुक्रम नहीं बल्कि अधीनस्थ पुरोहित

---

[939] तुलना करें: प्लाटोनोव। व्याख्यान (1915)। पृ. 315 आदि, विशेष रूप से 317–318; और यह भी: श्मुरलो, ई. रूस का इतिहास। म्यूनिख, 1922। पृ. 190–248, जहाँ 17वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं का संक्षिप्त विवरण पाया जा सकता है। तुलना करें: फ्लोरोव्स्की, जी. द पाथ्स ऑफ रशियन थियोलॉजी। पेरिस, 1937। पृ. 57 ff.

और सामान्य श्रद्धालुओं की भीड़ थी जिसने दृढ़ विश्वास और अडिगता के साथ लड़ाई लड़ी, भले ही पूरे 'मास्को - तीसरी रोम' विचारधारा के लिए नहीं, तो कम से कम इसके अलग-अलग तत्वों के लिए ही सही। और ऐसा न केवल इसलिए हुआ क्योंकि सत्ता में बैठे लोग इन तत्वों को किसी तरह से बदलने या सुधारने का प्रयास कर रहे थे, बल्कि इसलिए भी क्योंकि ये तत्व ही लोगों की धार्मिक भावना के प्रिय थे।

उस युग में धार्मिकता का केंद्रबिंदु संस्कारिक जीवन था: इसने धार्मिक सिद्धांतों की जागरूकता और ज्ञान की जगह ले ली थी; लोगों का संपूर्ण विश्वास इसमें समाहित था; यह एक श्रद्धालु के हृदय का सबसे संवेदनशील हिस्सा था। डॉग्मा के ज्ञान की कमी के बावजूद, मॉस्को का एक ऑर्थोडॉक्स ईसाई लंबी दिव्य सेवाओं की सामग्री से अच्छी तरह परिचित था, जिसके साथ उसने एक आंतरिक बंधन बना लिया था; वह प्रार्थनाओं के शब्दों और धार्मिक अनुष्ठानों को जानता था। धार्मिक अनुष्ठान विश्वासी की आत्मा में आसानी से जड़ें जमा लेते हैं; वे उसके लिए धर्मशास्त्रों की तुलना में अधिक बोधगम्य होते हैं, विशेष रूप से यदि चर्च और धार्मिक पदानुक्रम उनका संरक्षण करने का ध्यान रखते हैं। हालाँकि, जब धार्मिक पदानुक्रम ने उन अनुष्ठानों को बदलने का प्रयास किया जो लोकप्रिय भक्ति के लिए बहुत प्रिय थे, तो यह सवाल उठा: क्या पदानुक्रम ने इस तरह काम करके खुद को एक गलत और विनाशकारी रास्ते पर नहीं ला खड़ा किया था; क्या उसके कार्य धर्मत्याग, अर्थातवाद की ओर नहीं ले जाएँगे? इन सवालों के उठने मात्र से कई समकालीनों की धार्मिक चेतना हिल गई। इस प्रकार, धर्मशास्त्र के ज्ञान की कमी और अनुष्ठानों तथा चर्च की प्रथाओं के महत्व के अतिशयोक्ति के कारण, दो पूरी तरह से अलग चीजों के बीच एक घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गया। रस्मों में सुधार को धर्म में बदलाव माना गया और धर्म के प्रति विश्वासघात के रूप में निंदा की गई। इसी धार्मिक और मनोवैज्ञानिक आधार पर 17वीं सदी का वह चर्च संबंधी उथल-पुथल—जिसे 'विभाजन' (Schism) के नाम से जाना जाता है—जिसने रूसी लोगों के लिए विनाशकारी साबित हुआ, अपनी जड़ें जमाईं। पैट्रिआर्क निकोन ने स्वयं पूजा-संबंधी पुस्तकों के संशोधन (जो उनके आदेश पर तो किया गया था, परन्तु उनकी कल्पना नहीं थी) के लिए अडिग संघर्ष किया, और यह संघर्ष इस संशोधन की आवश्यकता की सिद्धांतगत स्वीकृति से अधिक, आत्म-महत्व और अहंकार के कारण था।

२. पैट्रिआर्क निकोन से पहले पूजा-संबंधी पुस्तकों में संशोधन

धार्मिक ग्रंथों को संशोधित करने और कुछ धार्मिक अनुष्ठानों को बदलने के लिए निकोन के उपाय, सार में, कुछ भी नया नहीं थे; वे केवल इसी तरह के उपायों की एक लंबी श्रृंखला की अंतिम कड़ी थे, जिन्हें या तो पहले ही उनके से पहले लागू किया जा चुका था या भविष्य में लागू किया जाना था। निकॉन ने बहुत कठोरता और निर्दयता से काम लिया; यह किसी भी तात्कालिक आवश्यकता के कारण नहीं, बल्कि उनके अपने चरित्र के कारण था। उन्हें आम तौर पर अपने अनुयायियों की धार्मिक भावना की बहुत कम समझ थी, और यही कारण है कि उनकी 'सुधारों' ने एक ऐसी तबाही मचाई जिसने रूसी चर्च पर एक असाध्य घाव दिया और एक विभाजन पैदा किया, जिसने उसके सदस्यों के एक हिस्से को उससे अलग कर दिया[940] । विच्छेदित समूह की उपस्थिति ('पुराने विश्वासियों' जैसा कि वे खुद को कहते थे, या 'विभाजनकारी' जैसा कि आधिकारिक चर्च ने उन्हें बहुत लंबे समय तक कहा) मातृ चर्च के बाहर के इस समूह का रूसी चर्च के मुख्य निकाय पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था, क्योंकि उसकी आध्यात्मिक ऊर्जा काफी हद तक अपने प्रत्यक्ष कर्तव्यों की पूर्ति से हटकर इस विभाजन से निपटने की ओर निर्देशित हो गई थी।

रूस के ईसाई धर्म अपनाने के बाद, दैवीय सेवाओं के आयोजन के लिए आवश्यक पुस्तकें, और स्वयं संस्कार संबंधी अनुष्ठान, ग्रीकों या दक्षिण स्लावों से उधार लिए गए थे। लंबे समय तक उपयोग किए जाने के कारण, पुस्तकें जीर्ण-शीर्ण हो गईं; नई प्रतियां पुरानी प्रतियों को प्रतिलिपि बनाकर तैयार की गईं, जिससे लेखकों—जो मुख्य रूप से भिक्षु थे—के बीच शिक्षा की कमी के कारण त्रुटियों और गलतियों का उदय हुआ। पुस्तकों में सुधार, जो व्यक्तिगत लेखकों की पहल पर किए गए, ने केवल दोषों की संख्या को बढ़ा दिया। उस युग के पवित्र धर्मग्रंथों की विभिन्न

---

[940] हालांकि, यह समझना गलत होगा कि रूसी संप्रदायिक विभाजन केवल धर्मग्रंथों के संशोधन के विरोध में एक प्रदर्शन था। संप्रदायिक विभाजन का इतिहास दर्शाता है कि यह रूसी धार्मिक जीवन में एक अत्यधिक जटिल घटना थी, जिसकी बहुआयामी प्रकृति का, दुर्भाग्य से, यहाँ पूरी तरह से और विस्तार से पता नहीं लगाया जा सकता है। हम पाठक को निम्नलिखित कृतियों का संदर्भ देते हैं, जो इस संबंध में सहायक हो सकती हैं: मेल्निकोव, पी. विभाजन पर पत्र (1862) (*सेवर्नाया पचेला*, 1862 में भी); गिल्यारोव-प्लैटोनोव, एन. विभाजन का तर्क। इवान अक्साकोव को पत्र, *रूसकोए ओबोज्रेनिये*, 1895, संख्या 10 में; ग्रोमोगलासोव, आई. 'द रशियन स्किज़्म एंड यूनिवर्सल ऑर्थोडॉक्सी', में: बीवी, 1898, अंक 4-5; गोलुबिनस्की, ई. 'ऑन अवर पोलमिक विद द ओल्ड बिलीवर्स' (1905); रोज़ानोव, वी. 'द साइकोलॉजी ऑफ द रशियन स्किज़्म', में: रिलीजन एंड कल्चर (1901); बोरोज़्डिन, ए. रूसी धार्मिक असंतोष (1907); पुराने विश्वास की सच्चाई (संग्रह) (1916); कार्टाशोव, ए. 'पुराने विश्वास का अर्थ', में: पी. बी. स्ट्रूवे के सम्मान में संग्रह। प्राग, 1925; फ्लोरोव्स्की, जी. रूसी धर्मशास्त्र के मार्ग (1937)।

पांडुलिपियाँ भी अक्सर एक-दूसरे से काफी भिन्न होती हैं । धार्मिक अनुष्ठान संबंधी पुस्तकों - सर्वसि बुक, टाइपिकॉन (संविधान), ट्रायोडियन, घंटों की पुस्तक, ऑक्टेकोहोस और अन्य - के साथ स्थिति और भी खराब थी[941] – क्योंकि त्रुटियाँ और विसंगतियाँ स्वयं धार्मिक अनुष्ठानों में और उनके साथ दी गई व्याख्याओं दोनों में पाई गईं। एक और महत्वपूर्ण कारक यह था कि एक ही संस्कार संबंधी संहिता का हमेशा उपयोग नहीं किया जाता था; बल्कि, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है (अध्याय VIII), प्रारंभ में प्रचलित स्टुडाइट संहिता की जगह यरूशलेम संहिता ने ले ली थी[942] । न ही ग्रीकों और स्लावों के संस्कार संबंधी अनुष्ठानों में एकरूपता थी, जिनकी ओर मार्गदर्शन के लिए देखा जा सकता था।

धार्मिक ग्रंथों में घुस आई त्रुटियों को ठीक करने के पहले प्रयास 14वीं शताब्दी में ही मेट्रोपॉलिटिन अलेक्सियस (1354–1378) और साइप्रियन (1390–1406) के अधीन किए गए थे। हालांकि, 15वीं शताब्दी में, दो घटनाएँ घटीं जिन्होंने पुस्तकों के सुधार के बाद के इतिहास को एक दुखद स्वरूप दिया: ये फ्लोरेंस की संधि (1439) और कॉन्स्टेंटिनोपल का पतन (1453) थे। इन घटनाओं के परिणामस्वरूप, मास्को में ग्रीकों की आस्था की शुद्धता के बारे में संदेह उत्पन्न हुए। और यद्यपि बाद में चर्च की पुस्तकों के संशोधन के लिए ग्रीक पुस्तकों को आधार माना गया, फिर भी ऐसे लोग थे जो इन पुस्तकों को पूर्णतः 'ऑर्थोडॉक्स' नहीं मानते थे। जब एक ग्रीक मूल के भिक्षु मैक्सिमिस को पुस्तकों के संशोधन का कार्य सौंपा गया, तो उन्होंने रूसी धार्मिक पुस्तकों की ग्रीक पुस्तकों से तुलना करते हुए कई गंभीर त्रुटियाँ पाईं, जो कुछ मामलों में, उनकी राय में, लगभग विधर्मी प्रकृति की थीं[943] । 'मास्को – तीसरी रोम' की विचारधारा के समर्थकों के लिए, ऐसे दावे पूरी तरह से अविश्वसनीय थे, और ग्रीक विद्वान पर स्वयं विधर्मी अनुमान का आरोप लगाया गया, और ऊपर से जोसेफ के समर्थक मेट्रोपॉलिटिन डैनियल की साजिशें भी थीं, जिसके लिए मैक्सिमिस और राजकुमार-भिक्षु वासियन के बीच घनिष्ठ संबंध लंबे समय से एक काँटा बने हुए थे। 1525 और 1531 की परिषदों ने मैक्सिमि के खिलाफ सभी आरोपों की जांच की (जिनमें से अधिकांश निराधार थे) और उसे मठ में कैद की सज़ा सुनाई[944] ।

स्टोग्लाव परिषद को यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि विभिन्न स्थानों पर कुछ पूजा-संस्कार अलग-अलग तरीकों से किए जा रहे थे। युवा ज़ार इवान ने स्वयं परिषद में कहा: 'अभी हम देखते और सुनते हैं कि, दैवीय विधान के अलावा, कई चर्च अनुष्ठान पूरी तरह से नहीं किए जाते हैं, न तो पवित्र नियमों के अनुसार और न ही विधान के अनुसार'[945] , और परिषद ज़ार के बयान से सहमत हो गई। स्टोग्लाव ने अच्छे अनुवादों का उपयोग करके चर्च की पुस्तकों को सुधारने का निर्णय लिया, लेकिन यह नहीं बताया गया कि ये अच्छे अनुवाद कहाँ से या कैसे प्राप्त किए जाएँ – और, सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि, इसे प्राप्त करने के लिए कुछ भी नहीं किया गया। हालांकि स्टोग्लाव परिषद के बाद मास्को में शाही मुद्रणालय खोला गया, जिससे चर्च की किताबों की हाथ से नकल करने से होने वाली त्रुटियों से बचने का अवसर मिला, लेकिन व्यवहार में इसने ग्रंथों को सुधारने के लिए कुछ भी नहीं किया, क्योंकि पहली मुद्रित पुस्तकें ऐसे पांडुलिपियों से प्रकाशित हुईं जिनमें पहले से ही त्रुटियाँ थीं; एक तरह से, पुस्तकों के मुद्रण ने इस उद्देश्य में बाधा ही डाली, क्योंकि बाद में पहली मुद्रित पुस्तकों को अचूक मानकों के रूप में माना जाने लगा।

चर्च की पुस्तकों को संशोधित करने का पहला व्यवस्थित प्रयास सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में किया गया था। 1617 में इस उद्देश्य के लिए एक विशेष आयोग का गठन किया गया: इसमें ट्रिनिटी-सर्गीयस लावरा के आर्किमंड्राइट डायोनिसियस, ग्रीक भाषा पर अपेक्षाकृत अच्छी पकड़ रखने वाले मठवासी आर्सेनियस बिरि, मठवासी एंथनी क्रिलोव और पुरोहित इवान नासाडका शामिल थे। डेढ़ साल के काम के बाद, इस आयोग ने सेवा पुस्तक को सुधार दिया और, साथ ही, इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि अन्य संस्कार संबंधी पुस्तकों में भी त्रुटियां थीं। लेकिन

---

[941] पवित्र अनुष्ठानिक पुस्तकों के लिए देखें: Heiler. Op. cit. 1. पृ. 297 ff.; Kattenbusch. 1. पृ. 498; और साथ ही: Lübeck, K. *Die christlichen Kirchen des Orients* (1911). पृ. 120 ff.

[942] कैप्टरेव। पैट्रिआर्क निकोन और ज़ार अलेक्सी मिखाइलोविच। खंड 1 (1909)। पृ. 213–216; मकारी। खंड 8। पृ. 75 आदि।

[943] मैक्सिमिस द ग्रीक। कृतियाँ। खंड 1, पृ. 28, 30; खंड 3, पृ. 51–60, 62, 67, आदि। तुलना करें: मकारियस। दूसरी संस्करण, खंड 6, पृ. 179 ff.

[944] इन घटनाओं के बारे में मकारियस का विवरण (दूसरा संस्करण, खंड 6, पृ. 177–195) को पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं माना जा सकता। गोलुबिन्स्की का तर्क है (खंड 2, भाग 1, पृ. 663, 712 ff.) कि मैक्सिमिस षड्यंत्रों और रूसी भाषा में प्रवीणता की कमी का शिकार थे, और उन पर धर्मद्रोह के लगाए गए आरोप निराधार थे। हम इस विचार से सहमत हैं।

[945] स्टोग्लाव। अध्याय 5 और 23 (ज़ार का प्रश्न); अध्याय 16, 6, 9, 10, 12, 33, 34। ओटेन्स्क के ज़िनोवी भी इसी घटना का उल्लेख करते हैं (द ट्रू टेस्टमिनी, पृ. 952, 955, 958–961)। तुलना करें नोवगोरोड के आर्चबिशप जेनाडियस के खिलाफ लगाए गए कुछ आरोपों से (PSRL, खंड 6, पृ. 221, 232), जो पूजा-संस्कार संबंधी रीति-रिवाजों में मतभेदों की गवाही भी देते हैं; इसके अलावा, प्सकोव में 'आल्लेलुया' को लेकर प्रसिद्ध विवाद और क्रॉस के चिह्न का प्रश्न – कि इसे दो या तीन उंगलियों से बनाया जाता है। Makarii. 8. पृ. 129, 91 ff.

डायोनसियिस का भाग्य भी मैक्समिस द ग्रीक के भाग्य जतिना ही दुखद साबति हुआ: उनके और उनके सहायकों पर यह आरोप लगाया गया कि वे वधिर्मी सुधार कर रहे थे, क्योंकि एपफिनी (6 जनवरी) के पर्व पर जल का आशीर्वाद देने की रस्म में, पवत्रि आत्मा से प्रार्थना में, उन्होंने 'और आग द्वारा' शब्द हटा दिए थे, जन्हिें वे एक बाद में डाला गया और नरिर्थक सम्मलिन मानते थे। 1618 की परषिद, जसिने इस मामले की जांच की, उसके पास यह नरि्धारति करने के लिए आवश्यक सबूत नहीं थे कि यह संशोधन सही था या गलत। उसके वरिोधयिों और बदनाम करने वालों का जोश हावी हो गया। डायोनसियिस और आर्सेनयिस, पूरी तरह से नरि्दोष होने के बावजूद, मठ में नरि्वासन से नहीं बच सके[946] । सौभाग्य से, उस समय यरूशलेम के पैट्रआर्क, थयिोफेन्स, मॉस्को आए और उन्होंने नए पैट्रआर्क, फलिारेट को डायोनसियिस द्वारा की गई सुधार की शुद्धता के बारे में मना लयिा। 1619 की परषिद ने उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति को बरी कर दयिा, लेकनि 'और आग द्वारा' वाला प्रवष्टिि सर्वसि बुक में बनी रही; 1626 में जाकर मस्कोव के पैट्रआर्क फलिारेत को यरूशलेम और अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्कों के पत्रों ने सर्वसि बुक से इस प्रवष्टिि को हटाने के लिए प्रेरति कयिा[947] ।

हालांकि फलिारेट पूजा-संबंधी पुस्तकों को सुधारने की आवश्यकता को पहचानते थे, उन्होंने इस मामले को अत्यंत सावधानी और सुस्ती से संभाला। पूजा-संबंधी वधिान, जो 1610 में मुद्रति हुआ था और बाद में कई त्रुटयिों वाली पुस्तक के रूप में पहचाना गया, को फलिारेट के आदेशों पर उपयोग से वापस ले लयिा गया और जला दयिा गया। फलिारेत के अधीन, कई पुस्तकों को संशोधति कयिा गया – यह कार्य, अन्य लोगों के अलावा, पहले की तरह ही भकि्षु आर्सेनी ग्लुखोई और पादरी इवान नासाडका द्वारा कयिा गया – और संशोधति पुस्तकों को छापा गया। हालाँकि, पुराने संस्करण, जनिमें कई त्रुटयिाँ थीं, उन्हें वापस नहीं लयिा गया और वे कुछ स्थानों, वशिेष रूप से दूरदराज के इलाकों में, उपयोग में बने रहे, जसिसे नश्चिति रूप से कुछ प्रार्थना पुस्तकों और धार्मकि अनुष्ठानों में वसिंगतयिाँ उत्पन्न हुईं[948] । हालाँकि जोआसाफ (1634–1641) और जोसेफ (1642–1652) के पैट्रआर्कात् के दौरान लगभग सभी पूजा-संबंधी पुस्तकें मुद्रति की गई थीं, लेकनि प्रूफरीडर इस कार्य के लिए सक्षम नहीं थे, और उन वर्षों के संस्करणों में व्याख्याओं में कई त्रुटयिाँ और अस्पष्ट अंश हैं, वशिेष रूप से 1633 के वधिान में[949] लेकनि मुख्य बात यह थी कि, यद्यपि पैट्रआर्क नकिोन से भी पहले मास्को में कतिाबों को सुधारने की पूर्ण आवश्यकता को स्वीकार कर लयिा गया था, यह काम, दुर्भाग्य से, अनचि्छा और बहुत संदेह के साथ शुरू कयिा गया था, क्योंकि मास्को में इस कार्य के लिए योग्य शकि्षति लोगों की कमी थी, जनिके पास, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, ग्रीक भाषा का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक था, और, इसके अलावा, उनके पास सबसे आवश्यक सामग्री उपलब्ध नहीं थी। मई 1649 में, ज़ार अलेक्सी ने कीव के मेट्रोपॉलटिन सल्विेस्टर (कोसोव) से मस्कोव में 'ग्रीक बाइबलि का स्लावोनकि भाषा में अनुवाद करने के लिए शकि्षकों' को भेजने का तत्काल अनुरोध कयिा[950] ।

तभी मास्को में तीन भकि्षु आए: आर्सेनयिस सातोनोव्स्की, डमास्कनि प्टत्सिकी और एपफिानयिस स्लावस्किी, जन्हिोंने पुस्तकों को सुधारने के कार्य में महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई[951] ।

3. पैट्रआर्क नकिोन

15 अप्रैल 1652 को पैट्रआर्क जोसेफ की मृत्यु हो गई, और उनके उत्तराधकिारी, पैट्रआर्क नकिोन के अधीन, चर्च पुस्तकों के संशोधन का इतहिास एक नए चरण में प्रवेश कर गया।

नकिोन एक कसिान का बेटा था; उसका जन्म 1605 में नज़िनी नोवगोरोड में हुआ था और उसका नाम नकिति रखा गया था। जन्म देने के तुरंत बाद उसकी माँ की मृत्यु हो गई, और नकिति की परवरशि उसकी सौतेली माँ ने की, जो बच्चे के साथ बुरा व्यवहार करती थी, इसलिए उसका बचपन आसान नहीं था। संभावना है कि बचपन में ही, उन्होंने एक मजबूत इच्छाशक्ति वकिसति कर ली थी, जो कभी-कभी, ऐसा लगता है, लड़खड़ा जाती थी और तंत्रकिा संबंधी

---

[946] Makarii. 11. पृ. 173–199; काज़ान्स्की, पी. 'पैट्रआर्क फलिारेट के अधीन पूजा-संबंधी पुस्तकों का संशोधन', में: रीडग्सि. 1848. 8; डायोनसियिस पर, देखें: स्क्वॉर्ट्सोव, डी. 'ज़ोब्नकिोवो के डायोनसियिस, ट्रनिटी-सर्गीय मठ के आर्चमिांड्राइट' (1890).

[947] मकाराई. 11. पृ. 10 आदि; RIB. 2. 902; 10. 189–190.

[948] मान्सवेतोव। *द चर्च स्टैच्यूट*। पृ. 311 आदि, 319 आदि; वही। 'हमारे देश में चर्च पुस्तकों का संकलन कैसे कयिा गया', *सप्लीमेंट्स* में। 1883. 4; मकाराई। 9. पृ. 43, 66, 89, 120।

[949] मान्सवेतोव। चर्च अधनियिम। पृ. 319; काप्टेरेव। पादरी नकिोन और चर्च की पुस्तकों तथा अनुष्ठानों को सुधारने के मामले में उनके वरिोधी। खंड 1। पतिृश्रेष्ठ जोसेफ का शासन (1887; द्वतिीय संस्करण, वस्तिारति और संशोधति, 1913); प्रथम संस्करण एक लेख के रूप में भी प्रकाशति: 'एक चर्च सुधारक के रूप में पतिृश्रेष्ठ नकिोन और उनके वरिोधी', में: Prav. ob. 1887. 1–2, छोटे-मोटे परविर्तनों के साथ।

[950] AYUZR. 3. संख्या 259. पृ. 323.

[951] रोटरी। एपफिनयिस ऑफ स्लावनित्सी, में: कीव आर्टकिल्स 1900. 10–12। तुलना करें अध्याय XI।

कमजोरी के आगे हार मान लेती थी, यह एक ऐसी आदत थी जो बाद में अक्सर उनके व्यवहार में प्रकट होती थी। वी. ओ. क्ल्यूचेव्स्की ने लिखा, 'निकोन उन लोगों में से एक थे जो भयानक दर्द को भी शांति से सहन कर सकते थे, फिर भी सुई चुभोने पर कराह उठते और निराशा में डूब जाते थे। उनमें एक ऐसी कमजोरी थी जिससे अक्सर मजबूत लेकिन अधीर लोग पीड़ित होते हैं: वे शांति से ऊब जाते थे और धैर्यपूर्वक इंतजार नहीं कर पाते थे; उसे लगातार रोमांच की ज़रूरत होती थी, किसी साहसिक विचार या किसी बड़े काम से, या फिर किसी अप्रिय व्यक्ति से झगड़े से ही वह उत्साहित हो जाता था। ऐसा लगता था मानो वह एक पाल हो जो तूफान में तो खुद को थामे रखती है, लेकिन शांत मौसम में एक बेबस चीथड़े की तरह मस्तूल पर लहराती रहती है[952] । निकिता शारीरिक रूप से मजबूत और भव्य था; वह तीव्र जिज्ञासा वाला एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था; उसने बहुत कम उम्र में ही पढ़ना और लिखना सीख लिया था, जैसा कि उसके बाद के शब्दों, उपदेशों और कुछ लेखों से पता चलता है जो आज तक सुरक्षित हैं। किताबें पढ़ने – जिनमें से उस समय लगभग सभी धार्मिक प्रकृति की थीं – ने उनके आध्यात्मिक विकास को एक निश्चित दिशा दी: उन्होंने मठवासी संस्कार लेने के इरादे से ज़ेल्टोवोडस्क मठ में प्रवेश किया। हालाँकि, उनके पिता ने उन्हें इस योजना से रोक दिया, और निकिता घर लौट आए। 20 वर्ष की आयु में, उन्होंने विवाह किया और एक पादरी बन गए: तब तक वे इसके लिए पर्याप्त साक्षर हो चुके थे। शुरुआत में उन्होंने एक ग्रामीण पैरिश में सेवा की; बाद में, सिफारिश पर, उन्हें मास्को में एक पैरिश में नियुक्त किया गया। अपने जीवन से असंतोष, और बाद में उनके तीनों बच्चों की मृत्यु ने, फादर निकिता के विचारों को फिर से एक भिक्षु बनने की उनकी पुरानी आकांक्षा की ओर मोड़ दिया।

उन्होंने अपनी पत्नी को एक कन्वेंट में जाने के लिए मना लिया, जबकि वे स्वयं उत्तर की ओर चल पड़े, और वहाँ, कठोर तपस्वी एलेज़र (जिनका हमने पहले ही उल्लेख किया है) के स्केट में, उन्होंने संन्यास की शपथ ली। लेकिन निकोन उस तरह के व्यक्ति नहीं थे जो खुद को पूरी तरह से तपस्या के अनुशासन को समर्पित कर सकें। अपनी ओर से, एलेज़र ने तपस्वी आश्रम को बड़ी कठोरता से चलाया और अपने शिष्यों से यह मांगा कि वे वृद्ध की आध्यात्मिक मार्गदर्शन के प्रति पूरी तरह से समर्पित हो जाएं। एल्डर एलेज़र के साथ अनबन के बाद, निकोन ने तपस्वी आश्रम छोड़ दिया और कोझेज़ेर्स्क तपस्वी आश्रम में शामिल हो गए। यह लगभग 1639-1640 के आसपास हुआ। तीन साल बाद, भाईचारे ने उन्हें अपना मठाधीश चुना।

1646 में, निकोन अपने हर्मिटेज (एकांतवास) के संबंध में काम से मास्को गए; उनका परिचय युवा, प्रभावशील और अत्यंत धार्मिक ज़ार अलेक्सी से हुआ, जिन्होंने कई मौकों पर उनसे बातचीत की। मठाध्यक्ष निकोन का समग्र आचरण – उनका गरिमामय बरताव, भव्य कद-काठी, वाक्पटुता, दृढ़ इच्छाशक्ति और ऊर्जावान चेहरे की बनावट – ने अलेक्सी पर गहरा प्रभाव डाला। स्वभाव से ही सौम्य और शांत, ज़ार ऊर्जावान लोगों से घिरे रहना पसंद करते थे, और उन्हें राज्य तथा चर्च में प्रमुख पदों पर नियुक्त करते थे। शायद निकोन ने ज़ार पर इतना गहरा प्रभाव डाला था कि बाद में, जब अब परिपक्व हो चुके ज़ार और पैट्रिआर्क के बीच विवाद छिड़ गया, तो अलेक्सी लंबे समय तक निकोन के खिलाफ एक दृढ़ रुख नहीं अपना सके। ज़ार के अनुरोध पर, निकोन को मॉस्को के नोवोस्पासस्की मठ का आर्चिमैंड्राइट नियुक्त किया गया, जो शाही परिवार के करीब था। धार्मिक अलेक्सी अक्सर इस मठ में आते थे और निकोन की विशेष रूप से गंभीर धार्मिक सेवाओं में शामिल होना पसंद करते थे। यह गंभीरता ज़ार को बहुत पसंद थी। निकोन उनसे अक्सर मिलने लगे, हर हफ्ते ज़ार के महल में आने लगे, ज़ार के लिए मैटिन्स का आयोजन करने लगे और उनके साथ लंबी बातचीत करने लगे। निकॉन अक्सर इन बैठकों का उपयोग विभिन्न लोगों, जिनमें से अधिकांश आम जनता थे और जिन्हें अधिकारियों द्वारा अन्यायपूर्ण रूप से दंडित किया गया था, की ओर से ज़ार से दया की याचना करने के लिए करते थे; ये अनुरोध, जिनके साथ मामले का एक स्पष्ट विवरण होता था, न केवल युवा ज़ार द्वारा हमेशा समझा जाता था, बल्कि संवेदनशील अलेक्सी को भी गहराई से प्रभावित करते थे। ज़ार का निकॉन पर भरोसा और दरबार में उसका प्रभाव दिन-ब-दिन बढ़ता गया, जबकि इसी समय मॉस्कोवासियों के बीच नोवोस्पासस्की के आर्चिमैंड्राइट की लोकप्रियता भी बढ़ी।

1649 में, नोवगोरोड का प्राचीन धार्मिक पद खाली हो गया, और निकोन को नोवगोरोड का मेट्रोपॉलिटिन नियुक्त किया गया। उन्होंने अपने धर्मप्रांत का शासन ऊर्जा, अधिकार और स्वतंत्रता के साथ किया। सम्मान और विशेषाधिकारों से लाद दिए गए, यहाँ तक कि स्वयं पैट्रिआर्क से भी अधिक, निकोन ने वहाँ चर्च के एक सच्चे राजकुमार के रूप में शासन किया। मठवासी कार्यालय की स्थापना पर (1649), निकोन ने, तब भी एक आर्चिमैंड्राइट रहते हुए, संबंधित दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए – जैसा कि उन्होंने बाद में बताया, 'जबरदस्ती में' – हालाँकि वह ऐसे किसी कार्यालय के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते थे, क्योंकि, उनके शब्दों में, यह 'हर तरह से पवित्र सुसमाचार,

[952] क्ल्युचेव्स्की। Geschichte RuЯlands. 3. पृ. 327.

पवत्रि पतिाओं के नयिमों और ग्रीक सम्राटों के कानूनों का खंडन करता है'। उन्होंने 1649 के संहति को 'गैरकानूनी पुस्तक' और मठवासी आदेश के फरमानों को शैतानी भी कहा[953] । उनके नेतृत्व में, नोवगोरोड मेट्रोपोलसि को सभी मामलों में मठवासी आदेश के अधकिार क्षेत्र से छूट दे दी गई, और, संहति के वपिरीत, ज़ार ने मेट्रोपॉलटिन को कई संपत्तयिाँ प्रदान कीं[954] । नोवगोरोड में नकिोन की गतविधियिाँ दर्शाती हैं कि वहाँ भी वह चर्च जीवन की वभिन्नि कमयिों को सुधारने के उद्देश्य से सुधारों की ओर झुका हुआ था।

ज़ार के साथ उनकी दोस्ती जारी रही। नकिोन मास्को गया, ज़ार के साथ पत्राचार कयिा, और ज़ार पूरी तरह से नकिोन के आध्यात्मकि अधकिार के अधीन हो गया, क्योंकि नकिोन में एक मजबूत चरत्रि था। 1650 के नोवगोरोड वद्रिोह के दौरान, जब वोइवोड खलिकोव अपना आपा खो बैठा था, तो यह नकिोन ही था जसिने चरत्रि और दृढ़ संकल्प दोनों का प्रदर्शन कयिा। जब नकिोन सोलोवेत्स्की मठ जा रहे थे, जहाँ से उन्हें सेंट फलिपि के अवशेष मॉस्को लाने थे, तब पैट्रआिर्क जोसेफ की मृत्यु हो गई, और मॉस्को में हर कोई जानता था कि नकिोन, जो ज़ार के प्रयि थे, नए पैट्रआिर्क बनेंगे[955] ।

अपने शासनकाल - संक्षप्ति लेकनि उथल-पुथल भरे - के दौरान, नकिोन ने दो मुद्दों को हल करने का प्रयास कयिा। पहला था पूजा-संबंधी पुस्तकों का संशोधन; दूसरी समस्या ज़ार और पैट्रआिर्क के बीच जटलि व्यक्तगित संबंध से उत्पन्न हुई—या, अधकि सटीक रूप से, बाद वाले के सद्धिांतपरक वचिारों और पहले वाले के राज्य और चर्च के बीच संबंध पर पारंपरकि वचिारों से (तुलना करें अध्याय X)। हम यहाँ इस मुद्दे पर वस्तिार से चर्चा नहीं कर सकते क्योंकि, पहली बात तो यह कि यह हमारे वषिय के दायरे से बाहर है, और दूसरी बात यह कि धर्मनरिपेक्ष और धार्मकि अधकिार के बीच ववािद का एक लंबा इतहिास है, और इसे बताने में बहुत अधकि स्थान लग जाएगा। हालाँकि, हम पाठक को पादरी नकिोन, उनके वचिारों और उनकी गतविधियिों का एक संक्षप्ति चरत्रि-चत्रिण प्रस्तुत करना चाहते हैं, जसिे एन. काप्टरेव ने चार साल के शोध के आधार पर संकलति कयिा था और जसिने अपने समय में काफी तीखा ववािद खड़ा कर दयिा था[956] ; सब कुछ होने के बावजूद, यह चरत्रि-चत्रिण सटीक है।

एन. काप्टेरेव का तर्क है, 'चर्च सुधारक के रूप में नकिोन, ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि की एक रचना थे, जनिके कार्यक्रम को उन्होंने अपनी चर्च सुधार गतविधियिों में महज अंजाम दयिा। नकिॉन स्वयं, यद्यपि एक समय में वे अपने चर्च सुधार कार्य में गहराई से लगे हुए थे, उन्होंने इसे कभी भी अपने पैट्रआिर्केट का मुख्य कार्य नहीं माना; परणिामस्वरूप, पैट्रआिर्कल पद छोड़ने के बाद, उन्होंने इसमें सारी रुचि खो दी... नकिॉन के पैट्रआिर्केट की सच्ची, आवश्यक भावना—जसिे उसने स्वयं अपने पैट्रआिर्केट का मुख्य कार्य और वास्तवकि अर्थ माना, जसिके लिए उसने पैट्रआिर्कल पद पर रहते हुए लगातार और दृढ़ता से प्रयास कयिा, और जसिे छोड़ने के बाद भी वह अथक और उत्साहपूर्वक लड़ता रहा— – यह था कि वह न केवल धार्मकि अधकिार को राज्य के अधकिार से मुक्त करना चाहता था, क्योंकि उस समय बाद वाला उस पर हावी था, बल्कि उस स्थति को स्थापति करना भी चाहता था जसिका उसने बचाव कयिा, अर्थात् कि पुरोहति वर्ग राज्य से श्रेष्ठ है[957] ।

एक ऐसे वचिार के प्रति उनका उत्साह, जो स्वयं में सही था, ने Nikon को पुस्तक-संशोधन परयिोजना के सूक्ष्म ववरिणों पर गहन वचिार करने का समय नहीं दयिा। सामान्यतःयह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि Nikon ने संशोधनों की आवश्यकता और उपयुक्तता को केवल चर्च-सम्बंधी और धार्मकि-नैतकि दृष्टकिोण से कसि हद तक स्वीकार कयिा। एन. काप्टेरेव के शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि वास्तव में, नकिोन अपने समय में हो रहे पुस्तकों के संशोधन का आरंभकर्ता नहीं था। नकिोन को पुस्तकों के संशोधन का कार्य जारी रखने के लिए बाध्य होना पड़ा, लेकनि यह बाध्यता उसके स्वभाव के ठीक वपिरीत थी और इसने उसमें इस मामले में कोई वास्तवकि रुचि नहीं जगाई।

---

[953] गोर्चाकोव। द मोंस्टकि ऑर्डर। पृ. 77; 'कोड पर पैट्रआिर्क नकिोन की राय', में: नोट्स ऑफ द ORSA. 2 (1861)। पृ. 423–497, वशिेष रूप से 449, 451, 453, 456।

[954] माकारी। खंड 11, पृ. 193–196; गोर्चाकोव। भूमि स्वामतिव पर। पृ. 330, 337। नकिोन की धार्मकि नीति पर, देखें: काप्टेरेव। पैट्रआिर्क नकिोन और ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि। 2 खंड। (1909–1912); और ज़िज़िकिनि और झुकोव के कार्य भी।

[955] 1652 तक नकिॉन की जीवनी के लिए, देखें मकरयि. 11. पृ. 162–166; तुलना करें: बोनवेट्श. 'नकिॉन', में: PRE.

[956] हम 1980 के दशक में एन. काप्टारेव और एन. सुबोटनि के बीच हुए ववािद का संदर्भ दे रहे हैं; देखें काप्टारेव, एन. *पैट्रआिर्क नकिोन एंड हजि अपोजटिंट्स* (1913)। पृ. 185–203; नकिोन की गतविधियिों के लिए सबोटनि के 'न्यायसंगत ठहराने' को एम. ज़िज़िकिनि की कृति *पैट्रआिर्क नकिोन* (3 खंड, 1931–1937) में उनके आदर्शकरण द्वारा जारी रखा गया।

[957] काप्टरेव। 'नकिॉन के पैट्रआिर्केट से पहले प्राचीन रूस में राज्य और चर्च प्राधकिरण के बीच संबंध', में: बीवी. 1910. 1, 20, 21। यह भी देखें: पैट्रआिर्क नकिोन एंड त्ज़ार ए. एम., खंड 1 (1909), पृष्ठ 60-62 में काप्टरेव द्वारा नकिोन का चरत्रि चत्रिण। जी. फ्लोरोव्स्की के कुछ अवलोकन उत्कृष्ट हैं (द पाथ्स ऑफ रशयिन थयिोलॉजी, पृ. 63)।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि, बाहरी तौर पर, निकोन ने पुस्तकों में संशोधन के अपने उपायों को बहुत ही गंभीरता से प्रस्तुत किया; शायद इस 'गंभीरता' से उसे कुछ संतुष्टि मिली, क्योंकि उसे इस मामले में समय देना पड़ता था, लेकिन आंतरिक रूप से, यह पूरा उपक्रम उसके लिए अपरिचित था। इसी से उस जल्दबाजी की व्याख्या होती है जिससे 'सुधारों' को लागू किया गया, उन लोगों की राय की पूरी तरह से अनदेखी की गई जिन्होंने उनका विरोध किया, जिस रूखेपन से उपायों को लागू किया गया, और अपने विरोधियों के खिलाफ उठाए गए कठोर कदमों की। इस संघर्ष में, निकोन ने अपने चरित्र की पूरी ताकत और ईमानदारी का प्रदर्शन किया: उन्होंने सुधारों के खिलाफ विरोध को अपनी ओर व्यक्तिगत शत्रुता के रूप में लिया – यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस संबंध में निकोन आंशिक रूप से सही थे – और इससे यह भ्रम पैदा हुआ (हालांकि यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि उनके समकालीनों की तुलना में बाद की पीढ़ियों में अधिक) कि वह इन सुधारों के उद्देश्य के लिए पूरी तरह से समर्पित थे। इस विशेषता ने निकोन के अधीन पुस्तकों के संशोधन के पूरे इतिहास को एक नाटकीय स्वर दिया और दुखद परिणामों को जन्म दिया[958] ।

४. पैट्रिआर्क निकॉन के अधीन धर्मग्रंथों का संशोधन

विभाजन के इतिहास का विस्तृत विवरण देना हमारा काम नहीं है; हमारे लिए, विरोध की लहर में और निकोन के सुधारों के खिलाफ संघर्ष में मठवासी समुदाय द्वारा निभाई गई भूमिका को दिखाना ही महत्वपूर्ण है। इसलिए, हम पाठक को केवल विभाजन के इतिहास और सुधारों के खिलाफ विरोध में मठवासी समुदाय की भागीदारी की सबसे संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करना चाहते हैं।

[959]25 जुलाई 1652 को, निकोन को भव्य समारोह के साथ मॉस्को के पैट्रिआर्क के रूप में पदस्थ किया गया। पैट्रिआर्क जोसेफ के अधीन किए गए पूजा-संबंधी पुस्तकों के संशोधन का कार्य जारी रखा गया: भिक्षुओं एपिफानियस स्लाविनेत्स्की, आर्सेनियस सातानोव्स्की और डमास्किन पट्टिस्की ने संकलन पर काम करना जारी रखा; भिक्षु आर्सेनियस सुखानोव को 1650 में ही पूर्वी चर्च भेज दिया गया था ताकि वह ग्रीक चर्च की रीतियों से परिचित हो सके और आवश्यक दस्तावेज़ (ग्रीक पुस्तकें, पांडुलिपियाँ आदि) मास्को ला सके। *कोर्मचया*[960] , जिसे 1649 में छपाई के लिए भेजा गया था और जो निकोन के समय में प्रकाशित हुई थी, और *शेस्टोद्नेव*, जो 1650 में मुद्रित हुई थी, की समीक्षा यूनानी पांडुलिपियों से तुलना करने के बाद की गई थी। 1650 के अंत के करीब, नासरत के मेट्रोपॉलिटन गैब्रियल मास्को पहुँचे, जो ज़ार और मास्को के पैट्रिआर्क के लिए यरूशलेम के पैट्रिआर्क के पत्र लेकर आए थे; गैब्रियल ने मास्को की पूजा-संस्कार संबंधी रीतियों में 'अंतर' पर बार-बार टिप्पणी की; यरूशलेम के पैट्रिआर्क, पैसियस, जिन्होंने मॉस्को का दौरा किया था, ने भी रूस (1650) छोड़ने से पहले तसर और पैट्रिआर्क जोसेफ से 'मॉस्को के मतभेदों' के बारे में बात की। निकॉन, जो उस समय नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटन थे, ज़ार के साथ अपने निरंतर संपर्क के कारण स्वाभाविक रूप से ग्रीकों द्वारा रखे गए इन विचारों से अवगत थे। निकॉन ने कॉन्स्टेंटिनोपल के पूर्व पैट्रिआर्क, अथानासियस (1633, 1633–1635, 1651), जो अप्रैल 1653 में मास्को आए थे और उन्होंने निकोन के लिए 'पूर्व में धर्मविधि के पदानुक्रमित उत्सव का आदेश'[961] की प्रतिलिपि बनाने का आदेश दिया, जिसकी गंभीरता निकोन को विशेष रूप से भाई।

[962]निकोन ने 1653 की वसंत में अपने सुधारों को लागू करने में पहला कदम उठाया – महा-लेंट की शुरुआत से पहले, उन्होंने मॉस्को के सभी चर्चों के रेक्टरों को एक निर्देश ('स्मरण') जारी किया: सेंट एफ्रेम की प्रार्थना पढ़ते समय, जो लेंट की सेवा में एक विशेष स्थान रखती है, को सख्ती से 'पवित्र प्रेरितों और पिताओं की परंपरा के अनुसार' प्रणाम करना चाहिए; यानी, सभी 17 प्रणाम पूरे प्रणाम नहीं होने चाहिए, बल्कि केवल 4 पूरे प्रणाम किए जाने चाहिए,

---

[958] हम पहले ही निकोन और उनकी धार्मिक नीति पर सबसे महत्वपूर्ण साहित्य का हवाला दे चुके हैं। हम इस कृति पर भी विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहेंगे: पामर, विलियम। *द पैट्रिआर्क एंड द ज़ार*। लंदन, 1871–1876। 6 खंड; यह कृति लगभग सभी प्राथमिक स्रोतों को संकलित और अनुवादित करती है। इसके अलावा, पामर ने अपनी कृति में निकोन पर कई अध्ययनों को शामिल किया है।

[959] मकारी। खंड 11, पृ. 118 आदि; खंड 12, पृ. 117, 125।

[960] *कोर्मचाया* और रूसी चर्च के लिए इसके महत्व पर, देखें: हरमन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 23 आदि; प्रासंगिक साहित्य का वहां उल्लेख किया गया है। यह भी देखें: मकारी। 2nd संस्करण। खंड 8। पृ. 143 आदि।

[961] इन संबंधों पर, देखें: काप्टेरेव, एन. द नेचर ऑफ रशियाज़ रिलिशंस विद द ऑर्थोडॉक्स ईस्ट इन द 16th एंड 17th सेंचुरीज़ (1885)।

[962] आर्चप्रीस्ट अव्वाकुम पर, देखें: 'Das Leben des Protopopen Awwakum von ihm selbst'। आर. याग्दिच द्वारा अनुवादित और प्रस्तावना सहित (1930)। आगे के साहित्य के लिए, ग्रंथसूची देखें। अव्वाकुम का सर्वश्रेष्ठ चरित्र चित्रण म्याकोटिन और मेल्निकोव द्वारा प्रस्तुत किया गया है। विभाजन से संबंधित सभी मुद्दों के लिए, आई. बार्स्कोव और पी. स्मिरनोव द्वारा अव्वाकुम के लेखों पर लिखी गई प्रस्तावना देखें, जो: RIB में है। 39 (1927), साथ ही एन. गुडज़िया द्वारा: द लाइफ़ ऑफ़ प्रोटोपोप अवक्वम (1934) में लिखी गई प्रस्तावना और टीका; तुलना करें: याग्दिच, इन: क्यूरियोस 1 (1936)। पृ. 410–413।

और बाकी कमर तक के प्रणाम होने चाहिए। इस पहले 'ग्रीक नवाचार' ने कुछ मॉस्को के पादरियों के बीच, विशेष रूप से प्रोटोपॉप्स इवान नेरोनोव, अव्वाकुम पेट्रोव और कोस्त्रोमा के डैनियल के बीच, जो कलह के इतिहास में इतने महत्वपूर्ण स्थान पर हैं, बहुत हलचल मचा दी। प्रोटोपॉप अवक्वम ने इस भ्रम का वर्णन तीक्ष्ण स्पष्टता के साथ उन शब्दों में किया है जिन्हें हजारों बार उद्धृत किया गया है: 'हम इकट्ठा हुए और गहरी सोच में पड़ गए,' अवक्वम ने अपनी *लाइफ़* में लिखा, 'हम देखते हैं कि सिर्दी आ रही है, हमारे दिल ठंडे पड़ गए हैं और हमारे पैर कांप रहे हैं।'

निकोनीय नवाचारों के पहले मॉस्को विरोधियों के बीच यह आंतरिक कलह लंबे समय तक बना रहा; इससे पहले निराशा का माहौल उभरा, और फिर 'पुराने धर्म' के लिए कड़वे अंत तक लड़ने का संकल्प। नेरोनोव ने ऑर्थोडॉक्स धर्म के रक्षक के रूप में ज़ार को एक याचिका प्रस्तुत करने का निर्णय लिया; यह संप्रदायिक विभाजनों की एक बहुत ही विशिष्ट विशेषता थी - धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों से मदद, समर्थन और सुरक्षा की तलाश करना। संप्रदायिकों ने 'मास्को - तीसरी रोम' की अवधारणा के प्रति अपनी निष्ठा को पवित्र रूप से बनाए रखा। बाद में, वे ऑर्थोडॉक्स क्षेत्र में इस दृढ़ विश्वास को खो देंगे और साम्राज्य पर विधर्म का आरोप लगाएंगे। वे इस स्थान को छोड़ देंगे, जो लंबे समय से उनके लिए पवित्र था, और खोए हुए 'Civitas Dei' को खोजने के लिए रेगिस्तान से रेगिस्तान तक, गाँव से गाँव तक यात्रा पर निकल पड़ेंगे। [ईश्वर का नगर], और हर जगह दुनिया के निकट अंत की घोषणा करते हुए। अंततः यह विभाजन अपनी एकता खो देगा, अलग-अलग गुटों में बंट जाएगा और संप्रदायों के एक भयावह प्रसार को जन्म देगा।

नेरोनोव की याचिका और उसके लेखक के साथ हुए विवादों, साथ ही मॉस्को के पुरोहितों द्वारा नेरोनोव को दिए गए समर्थन[963] ने निकोन को यह विश्वास दिला दिया कि अपनी पहलों को केवल अपने नाम पर नहीं बल्कि एक परिषद[964] के नाम पर करना अधिक बुद्धिमानी होगी। उन्होंने ज़ार से पूजा-संस्कारों और पुस्तकों के संशोधन पर चर्चा करने के लिए एक परिषद बुलाने का अनुरोध किया। 1654 की वसंत में, ज़ार और पैट्रिआर्क के अलावा, पाँच मेट्रोपॉलिटन, चार आर्चबिशप, एक बिशप, कई आर्चिमैंड्राइट और मठाधीश, और 13 प्रोटोपॉप[965] परिषद के लिए ज़ार के महल में एकत्र हुए। निकोन ने परिषद के समक्ष कुछ ऐसे पूजा-संस्कारों में विकृतियों से संबंधित मुद्दे उठाए जिनका कोई धर्मशास्त्रीय महत्व नहीं था, और उन्होंने अपने प्रस्तावों को यूनानी टाइपिकॉन्स के संदर्भों से सही ठहराया। परिषद् ने सभी धार्मिक संस्कारों को सुधारने, उन्हें यूनानी टाइपिकॉन्स के अनुरूप लाने, और अब से इन सेवाओं को उनके संशोधित रूप में आयोजित करने का निर्णय लिया; धार्मिक पुस्तकों के सुधार के संबंध में भी यही निर्णय लिया गया, और इन सुधारों को लागू करने के लिए पैट्रिआर्क निकॉन को पूरा अधिकार दिया गया। परिषद के केवल एक सदस्य, कोलोम्ना के बिशप पॉल ने, अपने हस्ताक्षर के साथ एक टिप्पणी जोड़ी जिसमें कहा गया कि, महा-उपवास के दौरान प्रणाम करने के मामले में, वह परिषद के प्रस्तावों से सहमत नहीं हो सकते थे[966] .

शुरुआत से ही, कोलोमना के बिशप पॉल ने प्रस्तावित सुधारों का पुरज़ोर विरोध किया था – यह कहना मुश्किल है कि यह बिशप और पैट्रिआर्क के बीच व्यक्तिगत असहमति के कारण था या नहीं[967] , – और रूढ़िवादी मठवासी समुदाय में से पहला शिकार बने; बाद में, पुराने विश्वासियों (Old Believers) की रचनाओं में, उन्हें एक संत के रूप में महिमामंडित किया गया और संप्रदायवाद के पहले शहीद के रूप में माना गया। पॉल की कठोर सजा को उचित नहीं

---

[963] माकारी। 12. पृ. 125–138; वेवेंस्की, एस. 'कोस्ट्रोमा के प्रोटोपॉप डैनियल', में: बीवी. 1913. 4.

[964] 16वीं और 17वीं शताब्दी के मास्को के धार्मिक परिषदों का संगठन पूरी तरह से ज़ार की इच्छा पर निर्भर था, जो धर्मनिरपेक्ष प्राधिकरण के प्रमुख के रूप में, सत्ता के सभी साधनों को अपने हाथ में रखता था। ज़ार परिषदों का प्रवर्तक था, और उसकी इच्छा के बिना वे नहीं हो सकती थीं। वह सत्रों का समय और स्थान, साथ ही प्रतिभागियों की संरचना और संख्या निर्धारित करता था; वे सत्रों का उद्घाटन करते थे, परिषद के निर्णयों को अनुमोदित करते थे, उन्हें कानूनी बल प्रदान करते थे, और अपने शाही फरमानों और आदेशों के माध्यम से उनके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करते थे। देखें: काप्टेरेव। पैट्रिआर्क निकोन और ज़ार अलेक्सी मिखाइलोविच। खंड 1 (1912, 2nd संस्करण)। पृ. 82, 62।

[965] 1654 की परिषद के कार्यों को शुरू में निकोन द्वारा *द टैबलेट्स* (1656) के परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित किया गया था, और बाद में एक अलग खंड के रूप में जारी किया गया: *द एक्ट्स ऑफ़ द काउंसिल ऑफ़ 1654 ऑन द करेक्शन ऑफ़ चर्च बुक्स* (1873)।

[966] माकाराई। 12. पृ. 139–145; माकाराई। *रूसी संप्रदायवाद का इतिहास*। पृ. 160।

[967] बिशप पॉल निकोन के ही क्षेत्र से थे; वे एक-दूसरे को अपनी जवानी से जानते थे; इसके अलावा, पॉल, हायरोमोंक एंथनी के रिश्तेदार थे; यह एंथनी, 1652 में, एक नए पैट्रिआर्क के चुनाव के दौरान, तीन उम्मीदवारों में से लॉटरी द्वारा चुना गया था और इस प्रकार पैट्रिआर्कल सिंहासन के लिए एकमात्र उम्मीदवार बन गया; हालाँकि, चूँकि ज़ार अलेक्सी निकोन को पैट्रिआर्क के रूप में देखना चाहते थे, एंथनी को पैट्रिआर्कल पद से इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा। मकारी। रूसी विभाजन का इतिहास, पृ. 178; मेल्निकोव। पादरीत्व पर निबंध, पृ. 14; पोगोडिन, एम. 'पितृपक्षीय निकोन और उनके विरोधियों के मूलभूमि पर टिप्पणियाँ', में: मॉस्क्वेटियानिन। 1854. 19 (यह कृति मेरे पास उपलब्ध नहीं है)।

ठहराया जा सकता, जैसा कि मिकारी बुल्गाकोव अपनी *हस्ट्री ऑफ द रशियन स्कज़िम* (1855)[968] में करने का प्रयास करते हैं। पॉल को बिशप पद से हटा दिया गया, उत्तर में पेलोस्ट्रोव्स्की मठ में निर्वासित कर दिया गया और यहाँ तक कि, जैसा कि पुराने विश्वासियों की रचनाओं में लिखा है, निकोन के आदेश पर उन्हें कोड़ों से पीटा भी गया।

अब निकोन के लिए यह स्पष्ट हो गया कि जल्द ही, जब संशोधित और नए मुद्रित पुस्तकों को चर्चों में वितरित कर दिया जाएगा और पुरानी पुस्तकों को वापस ले लिया जाएगा, तो सुधारों के नए विरोधी उभरेंगे[969] । हालाँकि, पुस्तकों में संशोधन जारी रखने के निकोन के निर्णय को इस तथ्य से बल मिला कि अंताकिया के पैट्रिआर्क मकरियस और सर्बिया के पैट्रिआर्क गैब्रियल, जो 1654 और 1655 में मास्को आए थे, ने भी मास्को के 'विचलनों' पर अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। निकोन ने एक और परिषद बुलाने का फैसला किया और अपने साथ दो अन्य पैट्रिआर्क को भी मौजूद रखकर अपने फरमानों को और अधिक अधिकार देने का प्रयास किया। इस परिषद में पूर्वी पैट्रिआर्क शामिल थे, यह 25 से 31 मार्च 1655 तक चली और इसने पुस्तकों के संशोधन को जारी रखने का निर्णय लिया[970] ।

परिषद के तुरंत बाद, मई 1655 की शुरुआत में, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, पैइसियस का एक दूत मॉस्को पहुंचा। वह अपने साथ ज़ार और निकोन को संबोधित पत्र, साथ ही कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद की कार्यवाही भी लाया, जिसे पैसियस ने 1654 की परिषद और उसके प्रस्तावों के बारे में निकोन द्वारा भेजी गई रिपोर्ट पर चर्चा करने और उसे मंजूरी देने के लिए विशेष रूप से बुलाया था। यह ध्यान देने योग्य है कि इस परिषद ने बिशप पॉल को पदच्युत करने को मंजूरी दी। पैट्रिआर्क पैसियस को लिखे अपने पत्र में, निकोन ने उनसे 26 प्रश्न पूछे ताकि उनके पास पुस्तकों और अनुष्ठानों में सुधार के अपने उपायों के लिए एक वैध आधार हो। पैसियस ने उन्हें इन प्रश्नों के उत्तर, धर्म-विश्वास का पाठ, 'आल्लेलुया' के गायन, तीन-उँगलियों वाले क्रॉस के चिह्न, और कुछ संस्कार संबंधी अनुष्ठानों की व्याख्याएँ भेजीं। निकॉन के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण था कि उसके पास परिषद की उन व्याख्याओं के साथ धर्म-सत्य-विश्वास हो जो निकिन (होना चाहिए: निकिन-कांस्टेंटिनोपलटिन। – अनुवादक की टिप्पणी) धर्म-सत्य, जिसमें एक भी शब्द जोड़ा नहीं जा सकता और एक भी शब्द हटाया नहीं जा सकता[971] । यह सर्ववदिति है कि धर्म-सत्य के 8वें अनुच्छेद में 'सच्चा' शब्द हटाने के संशोधन ने पुरातन विश्वासियों से सबसे कड़ा विरोध उत्पन्न किया[972] और यह विभाजन के लिए एक प्रकार का डॉगमैटिक औचित्य बन गया। 1655 की परिषद और पैसियस के पत्र के तुरंत बाद, संशोधित सेवा पुस्तक और 'स्क्रिज़ाल' प्रकाशित हुए, जिसमें दो परिशिष्ट थे: एक त्रि-अंगुली क्रॉस के चिह्न पर और एक धर्मविश्वास पर[973] ।

अप्रैल 1656 में, निकोन ने पुस्तकों के संशोधनों को समर्पित तीसरी और अंतिम परिषद बुलाई, और उसमें उपस्थित 8 बिशपों ने, 22 आर्चिमैंड्राइट्स और 9 एबॉट्स ने दो-उंगली और तीन-उंगली वाले क्रॉस के चिह्नों पर अपना अंतिम निर्णय सुनाया: दो-उंगली वाले चिह्न को विधर्मी घोषित किया गया, और जो लोग दो उंगलियों से क्रॉस का चिह्न बनाते थे, उन्हें निंदित किया गया, क्योंकि वे चर्च की शिक्षा का पालन नहीं करते थे। परिषद के कार्यों को 'स्क्रिज़ाल' में एक अलग अध्याय के रूप में शामिल किया गया था:[974] .

---

[968] मकारियस। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 180।

[969] निकोन के पैट्रिआर्केट के दौरान, निम्नलिखित संशोधित पूजा-संबंधी पुस्तकें मुद्रित की गईं और चर्चों में वितरित की गईं: 1. द सर्वसिद्ध बुक (1655)। 2. द टैबलेट (1656) – एक पुस्तक जिसमें पूजा का विवरण है। 3. द स्मॉल प्रेयर बुक (1656)। 4. लेन्टन ट्रायोडियन (1656)। 5. इरमोलोजियन (1657)। 6. सुसमाचार (1657)। 7. भजन संहिता (1658) और 8. सेवाओं की पुस्तक (1658)। मकरिय. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 182.

[970] 1655 की परिषद पर रिपोर्ट, जिसे निकोन के आदेश पर जारी किया गया था, को 1655 की सर्वसिद्ध बुक में प्रस्तावना के रूप में शामिल किया गया था; बाद में, पी. स्ट्रोव ने इसे अपनी *Description of the Tolstoy and Tsar's Library* में प्रकाशित किया। विशेष रूप से मूल्यवान है अलेप्पो के आर्चडीकन पॉल की यात्रा डायरी, जो अंटिओक के पैट्रिआर्क मकरियस के पुत्र थे, जिन्होंने 1654–1655 और 1666 में मॉस्को की अपनी यात्राओं पर पैट्रिआर्क का साथ दिया था; देखें: *ट्रैवल्स ऑफ़ मकरियस*। लंदन, 1829–1836। 2 खंड। (डायरी का एक हिस्सा रूसी में अनुवादित किया गया है: *Chteniya*. 1890. 4) और बाद में: Palmer, W. 2. 1655 की परिषद पर: *Macarius*. 12. पृ. 172 ff.

[971] मैकरियस। रूस के संप्रदायिक विभाजन का इतिहास। पृ. 161–165; मैकरियस। 12. पृ. 179 ff.; पैसियस का पत्र: क्रिश्चियन रीडिंग्स। 1881. 1 (मूल और अनुवाद)।

[972] पुरातन विश्वासियों की आस्था-सूची का आठवाँ अनुच्छेद इस प्रकार है: 'और पवित्र आत्मा में, जो सच्चा और जीवन-प्रदायक प्रभु है, जो पिता से उत्पन्न होता है, जिसे पिता और पुत्र के साथ मिलकर पूजा और महिमा दी जाती है, जिसके विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था, और जिसका राज्य अनंतकाल तक रहेगा'। ये जोड़, जो एक गलत अनुवाद के परिणामस्वरूप डाले गए थे, 16वीं शताब्दी तक मास्को में प्रकट नहीं हुए। मकरिय। रूसी विभाजन का इतिहास। पृ. 23–25।

[973] मकाराई. 12. पृ. 186.

[974] उपरोक्त। 12. पृ. 191–195; मकरियस। रूसी विभाजन का इतिहास। पृ. 170–175। रूस में दो-अंगुली वाले क्रॉस के चिह्न के उद्भव पर: उपरोक्त। पृ. 25–31; और यह भी: काप्टेरेव। पैट्रिआर्क निकोन और उनके विरोधी (1913)। पृ. 58–61, 78–96, 189–203; गोलुबिन्स्की।

1656 का परषिद, कह सकते हैं, धार्मकि अनुष्ठान संबंधी पुस्तकों और संस्कारों के संशोधन के मामले में अंतमि आधकिारकि कार्य था, जो नकिोन के पैट्रआर्केट के दौरान हुआ था। इस प्रकार, यह अवधि चार वर्ष से अधकि नहीं चली, जसिे रूसी वभिाजन की प्रस्तावना माना जा सकता है – तभी रूसी चर्च के भीतर इसके प्रतदिृष्टकिोण नर्धिारति हुए, और तभी वभिाजन के पहले अनुयायी सामने आए। यदहिम सुधारों के सबसे पहले वरिोधयिों को देखें, तो हम देखेंगे कउिनमें से लगभग सभी 'सफेद' पादरी वर्ग से थे—अर्थात्, पैरशि के पादरी, न कमिठवासी पादरी—केवल कोलोमना के बशिप पावेल को छोड़कर, जो मठवासी संप्रदाय से थे। सामान्य तौर पर कहा जा सकता है कनिकिोन के उपाय केवल एक संकीर्ण समूह, मुख्य रूप से मास्को के पुरोहति वर्ग को प्रभावति करने वाली बात थी। आम जनता, पुरोहति वर्ग और मठवासी समुदाय, तत्काल के लिए, अपनी असहमतबिहुत अस्पष्ट तरीके से व्यक्त कर रहे थे। नकिोन अभी भी अपनी शक्तकि चरम पर था, लेकनि जब उसकी कस्मित में एक नर्णिायक मोड़ आया, तो सुधारों के खलिाफ वरिोध आंदोलन फैलने लगा, और रूसी राज्य के सबसे दूर-दराज के कोनों में भी वभिाजन बढ़ गया; यह आंशकि रूप से इस तथ्य के कारण था कनिकिोन के सुधारों के कुछ वरिोधयिों ने मास्को छोड़ दयिा था और पूरे देश में सुधारों के खलिाफ प्रचार फैलाना शुरू कर दयिा था।

10 जुलाई 1658 को, नकिोन ने स्वेच्छा से और मनमाने ढंग से पैट्रआर्कल सहिासन त्याग दयिा और मास्को छोड़ दयिा, जसिसे रूसी चर्च पर उसका शासन वास्तव में समाप्त हो गया। यह कार्य उसके स्वच्छंद स्वभाव को दर्शाता था। हालाँकि, जो कार्रवाई नकिोन ने अपनी शक्तकि को सुदृढ़ करने और ज़ार अलेक्सी के साथ संबंधों में सुधार करने के लिए की थी, वह खुद उसके लिए एक झटका साबति हुई। यह कार्रवाई पछिले दो वर्षों में ज़ार के साथ उसके संबंधों में आई ठंडक का परणिाम नहीं थी; बल्कि, यह धर्मनरिपेक्ष और धार्मकि अधकिार के बीच संबंधों पर नकिोन के वचिारों का परणिाम या प्रत्यक्ष अभव्यिक्तथि[975] ।

पतृिसत्तात्मक पद से इस्तीफा देने के बाद, नकिोन पुस्तकों के संशोधन के बाद के इतहिास से तो अलग हो गए, लेकनि रूसी वभिाजन के इतहिास से नहीं। यहाँ तक कहा जा सकता है कनिकिोन और उसके कर्मों की छाया उसके वरिोधयिों को सताती रही, जो उसे मसीह-वरिोधी या मसीह-वरिोधी का अग्रदूत मानना चाहते थे; अनेक लेख सामने आए, जनिका वषिय उसकी गतविधियिाँ भी नहीं थीं, बल्कि स्वयं नकिोन का व्यक्तत्वि था[976] । ज़ार के साथ हुए मतभेद ने पुस्तकों के संशोधन के संबंध में उनके सुधारों के सकारात्मक पहलुओं को काफी कमजोर कर दयिा और, एक तरह से, वभिाजन को गहरा करने में योगदान दयिा[977] ।

५ *नकिोन के उपायों के प्रतमिठवासी समुदाय का वरिोध*

मास्को में आकार लेने वाले सुधारों का वरिोध और भी दूर-दूर तक फैल गया। यह वभिन्नि तरीकों से प्रकट हुआ: 1) ववािदास्पद लेखन के माध्यम से, 2) 'नकिोनीय पुस्तकों' के जदि्दी अस्वीकृतकि के माध्यम से, और अंत में, 3) धार्मकि और धर्मनरिपेक्ष प्राधकिरण के खलिाफ खुले संघर्ष के माध्यम से, जो वशिेष रूप से सोलोवेत्स्की मठ के भाइयों के प्रसदि्ध वदि्रोह में स्पष्ट था। धर्मप्रांतों और मठवासी समुदाय दोनों ने नई छपी कतिाबों के खलिाफ 'पुराने वशि्वास' के लिए संघर्ष में भाग लयिा - पहला कम हद तक, जबकदि्दूसरा अधकि सक्रयि रूप से।

बशिप पॉल रूसी चर्च के पहले पदानुक्रम थे जनि्होंने शुरू से ही नकिोन के सुधारों से अपनी असहमतखिुले तौर पर व्यक्त की। व्याटका के बशिप अलेक्जेंडर (1657–1674) ने भी खुले तौर पर वरिोध कयिा; यद्यपि उन्होंने 1656 की परषिद के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर कएि थे, कुछ साल बाद (1663), जब ज़ार और नकिोन के बीच संबंध वशिेष रूप से तनावपूर्ण थे, नकिोन ने तब से अपना धर्मप्रांत छोड़ दयिा था, ने ज़ार को एक लंबा पत्र भेजा जसिमें उन्होंने नकिोन

पुरातन वशि्वासयिों के साथ हमारी ववािद पर (1905, यह भी: रीडगि्स. 1905. 3)। पृ. 153–196; इवानोव्स्की (गाइड. खंड 2. पृ. 126–135) तीन-अंगुली वाले क्रॉस के चहि्न को एकमात्र सही इशारे के रूप में बचाव करते हैं; उनके कार्य ने सनिाडल मशिनरयिों के लिए एक संदर्भ गाइड के रूप में काम कयिा। परषिद का फैसला बहुत जल्दबाजी में लयिा गया था, शायद नकिोन के आग्रह पर अपनाया गया था, और इसके औचत्यि आलोचना का सामना नहीं कर सकते, क्योंकि दो-अंगुली वाले क्रॉस के चहि्न में कोई भी वधिर्म नहीं है। तुलना करें नकिोन द्वारा उठाए गए उपायों के औचत्यि के लिए: मकारी. 12. पृ. 221–223.

[975] हम धर्मनरिपेक्ष प्राधकिरण के प्रतआिध्यात्मकि प्राधकिरण के अधीनता की आवश्यकता, और 'पादरी वर्ग' की 'राज्य' पर प्रधानता के संबंध में नकिोन के मौलकि वचिारों का संदर्भ देते हैं। कोड पर पैट्रआर्क नकिोन की राय, में: ORSA के नोट्स। 2 (1861), वशिेष रूप से पृष्ठ 456, 449, 451, 453; तुलना करें: पावलोव, ए. 'पूर्वी पापवाद का सदि्धांत', प्रव. ऑब. 1879. 12 में और अंडोल्स्की, वी. 'ज़ार ए. एम. के संहति पर पैट्रआर्क नकिोन की समीक्षा', रस. अर्ख. 1886. 2 में, पृष्ठ 615–620।

[976] पेरेत्ज़, वी. 'अफवाहें और अटकलें', में: IORAS 5, 1909, संख्या 1, पृष्ठ 123 आदि।

[977] नकिॉन के पद छोड़ने के बाद उसकी नयतिकि के बारे में, देखें: मकारी, खंड 12, पृ. 326–524, 683–751; नकिोलेव्स्की, पी., नर्विासन में नकिॉन का जीवन (1882)।

और उनके द्वारा शुरू की गई पुस्तकों के संशोधन की निंदा की; अन्य बातों के अलावा, उन्होंने धर्मविश्वास-सूत्र से 'सच्चा' शब्द हटाने पर आपत्ति जताई। 1667 की परिषद में, अलेक्जेंडर ने अपने आरोपों को वापस ले लिया, अपने विचारों की त्रुटि को स्वीकार किया और परिषद के फरमानों को स्वीकार कर लिया। फिर भी, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने एक बार फिर से बिशपों के रूढ़िवाद और विरोधी भावनाओं को प्रदर्शित किया[978] । अलेक्जेंडर ने अन्य बिशपों की तुलना में अधिक साहस दिखाया, जो अपने दिल में निकोन के सुधारों के भी विरोधी थे - जैसे, उदाहरण के लिए, नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटन मैकारियस († 1663), या वोल्गा के आर्चबिशप मार्सेलस († 1663) – लेकिन खुले तौर पर विरोध जताने के बजाय, उन्होंने सुधारों के कार्यान्वयन में देरी करना या, एक आधुनिक अभिव्यक्ति में कहें तो, उन्हें बाधित करना पसंद किया[979] . इस बिशपों के समूह में वह बिशप भी शामिल था जिसने गुमनाम रूप से अपना 'पैट्रिआर्क निकॉन का खुलासा'[980] प्रसारित किया था।

सुधारों के प्रति धर्मपरांत के बिशपों के रवैये को देखते हुए, नए संशोधित पूजा-संबंधी पुस्तकें बेशक दूर-दराज के कस्बों और मठों तक पहुँच गईं, लेकिन इसका यह मतलब कतई नहीं था कि पुरोहित वर्ग और मठवासी समुदाय उनका उपयोग दिव्य अनुष्ठान करने के लिए करेंगे। रोस्तोव के मेट्रोपॉलिटन जोनाह, जो निकोन का समर्थन करते थे, को अपने धर्मपरांत के लोगों को कई परपित्र पत्र लिखने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिनमें वे धार्मिक अनुष्ठानों को सुधारने का प्रयास कर रहे थे – उदाहरण के लिए, जल का आशीर्वाद केवल एपिफेनी के पर्व (6 जनवरी) की पूर्व संध्या पर देना। करिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ के मठाधीश और मठवासी समुदाय, जिन्होंने बाद में निकोन का अपमान और अपमानित किया जब उन्हें उनके मठ में निर्वासित किया गया था, ने अपने शासक बिशप[981] के इन निर्देशों का पालन करने से इनकार कर दिया। 17वीं शताब्दी के दूसरे भाग के दौरान, कई मठों में 'निकोनीय पुस्तकों' का कड़ा विरोध बार-बार उत्पन्न हुआ, जैसा कि धर्मपरांतीय बिशपों के कई पत्रों से स्पष्ट है[982] । सोलोवेत्स्की मठ के आर्चिमंड्राइट इल्या ने व्यक्तिगत रूप से 1654 की परिषद के फरमान पर हस्ताक्षर किए, लेकिन वह किसी भी तरह से निकोन के सुधारों का समर्थक बनकर अपने मठ में वापस नहीं आया और अपनी मृत्यु († 1659) तक मठवासी समुदाय के साथ पूरी तरह से सहमत रहा, जिसने 8 जुलाई 1658 को मठ की परिषद में, नई पुस्तकों को स्वीकार न करने और पुरानी पुस्तकों के अनुसार दैवीय सेवाएं आयोजित करने का संकल्प लिया था। सोलोवेत्स्की के अलावा किसी भी अन्य मठ ने निकोन के सुधारों को इतनी दृढ़ता से खारिज नहीं किया।

आम तौर पर, विरोधियों के विचार निराशा से लेकर धार्मिक कट्टरता तक फैले हुए थे; हालांकि बाद वाला, जो उस युग की धार्मिक चेतना की एक बीमारी थी, न केवल आर्चप्रीस्ट अवाकुम बल्कि पैट्रिआर्क निकोन का भी एक विशिष्ट लक्षण था। कोझेज़ेर्स्की मठ के बूढ़े बोगोलेप ल्वोव, जिन्होंने शुरू से ही निकोन के 'विधर्मी' सुधारों को खारिज कर दिया था, ने अपनी आस्था की 'शुद्धता' को कलंकित न करने के लिए दस साल तक मठ के आध्यात्मिक पिता से पाप-स्वीकृति नहीं ली और बीस साल तक पवित्र कम्युनियन ग्रहण नहीं किया – यह व्यवहार ऐसे कट्टरपंथ का एक अत्यंत विशिष्ट उदाहरण है[983] । ऐसे मामले किसी भी तरह से अलग-थलग नहीं थे; हर गुजरते साल के साथ उनकी संख्या बढ़ती गई, और यह 1667 के फैसले से पहले भी हो रहा था। यहाँ एक और उदाहरण है: निज़िनी नोवगोरोद के बाहरी इलाके में स्थित मदर ऑफ गॉड मठ के एक कठोर तपस्वी, हिरोमोंक अवरामी, जो अव्वाकुम के घनिष्ठ सहयोगी थे, ने अपनी जंगल की झोपड़ी छोड़ दी, जहाँ तक तब उन्होंने प्रार्थना और संसार का पूर्ण त्याग से भरा जीवन जिया था, और मास्को आकर ज़ार को अपनी याचिका प्रस्तुत की, जिसमें उसने निकोन के सुधारों पर तीखा हमला बोला। वह उन संप्रदायवादियों में से एक थे जो निकोन को 'मसीह-विरोधी' कहते थे, जैसा कि उनके *प्रश्नोत्तर* से स्पष्ट है, जिसे उन्होंने दो मेट्रोपॉलिटन - कुतित्सा के पॉल और रियाज़ान के हिलारियन - के निष्फल उपदेशों के जवाब में लिखा था; निकोन के बारे में यही दृष्टिकोण उनके अन्य कार्यों में भी व्यक्त किया गया है: 'ईश्वर-प्रेमी को पत्र' और 'मसीह-विरोधी की धोखाधड़ी पर प्रबंध'[984] । पुस्तोज़ेर्स्क में निर्वासित, अवरामी ने वहां उस मसीह-विरोधी के बारे में उपदेश दिया जो पहले ही पैदा हो चुका था, और 1681 में, पैट्रिआर्क जोआकिम के आदेश से, उसे अपने

---

[978] 1667 की परिषद की कार्यवाही, डीएआई. 5. संख्या 102 में, पृ. 447 या मटेरियल्स. 1 में, पृ. 79; काप्टेरेव. पैट्रिआर्क निकोन और ज़ार ए. एम. 1 (1909) में, पृ. 494।

[979] काप्टरेव। उद्धृत कृति, पृ. 492; मेल्निकोव। पादरीत्व पर निबंध, में: संपूर्ण कृतियाँ, खंड 7 (1909), पृ. 14; मकाराई। रूसी विभाजन का इतिहास, पृ. 274.

[980] कैप्टरेव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 500; 'पैट्रिआर्क निकोन पर एक अभियोग', में: क्रॉनिकल ऑफ़ रशियन लिटरेचर. 5 (1863). भाग 2.

[981] योना का पत्र, में: रीडिंग्स। 1884। 1. विविध। पृ. 21–22।

[982] उदाहरण के लिए, रियाज़ान धर्मपरांत पर, देखें: पिसानोव। प्राचीन चार्टर (1851)। संख्या 51।

[983] प्रेरितों के काम, में: DAI. 5. संख्या 102. पृ. 458; सामग्री. 1. संख्या 11.

[984] सामग्री. 7 (1885). संख्या 3, 4 और 5.

समान वचिारधारा वाले अनुयायियों, कट्टर पुराने वशि्वासयिों के साथ फांसी पर जला दयिा गया। आर्कमैंड्राइट स्परिडिोन पोतेमकनि († 1663) भी नकिोन के सबसे कट्टर वरिोधयिों में से एक थे; उन्होंने एक वस्तिृत कृतरिची – *सच्चे वशि्वास पर पुस्तक*[985] ।

सबसे प्रमुख संप्रदायवादयिों में मठवासी समुदाय के दो और प्रतनिधि थे, जो यद्यपि एक-दूसरे के घनष्ठि संपर्क में थे, फरि भी बहुत अलग व्यक्त थे। टकि्वनि के पास स्थति सेंट नकिोलस मठ के मठाधीश डोसथियिस, सभी नवाचारों के खलिाफ उपदेश देने वालों में सबसे पहले थे। अपने धर्म की शुद्धता बनाए रखने के लिए, वह मठ छोड़कर उत्तर में पोवेन्त्सा शहर के पास एक छोटे से तपस्वी-आश्रम में चला गया; वहां से (लगभग 1685 में) वह दक्षणि में डॉन कोसैक्स के पास गया, जहां इस वभिाजन के कई अनुयायी थे। जब सरकार ने डॉन पर इस वभिाजन पर कार्रवाई शुरू की, तो दोसफिेई डॉन छोड़ गए और कुछ समय बाद (1688 के बाद) उत्तरी काकेशस में फरि से सामने आए, जहाँ उनकी मृत्यु लगभग 1691 में हुई। डोसएिफ़ी जहाँ भी गए, पुराने वशि्वास के एक उत्साही प्रचारक थे और उन्हें शुरुआती पुराने वशि्वासयिों के बीच सबसे बड़े प्राधकिरणों में से एक माना जाता था; हालाँकि, वह धार्मकि कट्टरता के वरिोधी थे और उन्होंने इसकी नदिा की, जसिमें अन्य बातों के अलावा, आत्मदाह भी शामलि था, जो 1680 के दशक में कट्टरपंथी संप्रदायवादयिों के बीच व्यापक हो गया था। उन्होंने उन लोगों को धर्म के शहीद के रूप में मान्यता देने से इनकार कर दयिा जो खुद को आग लगा लेते थे[986] ।

[987]एक अलग हस्ती थे एक अन्य संप्रदायकि नेता, भकि्षु कॉर्नेलयिस, जो पुरातन वशि्वासयिों के बीच सबसे प्रभावशाली हस्तयिों में से एक थे, जन्हिें वे एक संत के रूप में पूजते भी थे। उनकी संत-चरति कथा पुरातन वशि्वासयिों की सबसे व्यापक रूप से प्रसारति रचनाओं में से एक थी और यह संप्रदाय के शुरुआती इतहिास पर एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में काम करती है। 15 वर्ष की आयु में, कॉर्नेलयिस ने कॉर्नलीयेवो-कोमेलस्की मठ में अपने संन्यासी के संकल्प लिए और वहाँ 20 से अधकि वर्ष बतिाए; फरि वह एक मठ से दूसरे मठ में भटकने लगा, और अंततःमास्को पहुँचकर चुदोव मठ में प्रवेश कर गया, जहाँ उन्होंने पहले पैट्रआर्क जोसेफ, फरि नोवगोरोड के मेट्रोपॉलटिन अफोनी, और अंत में नकिॉन के लिए बेकर के रूप में काम कयिा, जन्हिें वह इस प्रकार व्यक्तगित रूप से अच्छी तरह जानते थे। नोवगोरोड में, उनकी मुलाकात उपर्युक्त हेग्यूमेन डोसतिउिस से हुई। नोवगोरोड से, कॉर्नेलयिस एक बार फरि पैट्रआर्क जोसेफ के पास लौट आए और मठ के कालकोठरी के पर्यवेक्षक नयिुक्त हुए, लेकनि उन्होंने यह पद लंबे समय तक नहीं संभाला और जल्द ही एक साधारण भकि्षु के रूप में चुदोव मठ में स्थानांतरति हो गए। पूजा-संबंधी पुस्तकों के संशोधन की शुरुआत से ही, वह नकिोन के वरिोधी थे और डोसतिउिस के साथ मलिकर डॉन नदी की ओर भाग गए। तीन साल बाद, कॉर्नेलयिस डोसथियिस से अलग हो गए और करिलिोव मठ चले गए, जहाँ सुधारों को लेकर भी भारी असंतोष था; लेकनि जब वहाँ अंततःनई पूजा-संबंधी पुस्तकों का उपयोग करके सेवाएँ आयोजति की जाने लगीं, तो वह नीलोव हर्मटिेज चले गए, जो उस समय सुधारों के वरिोधयिों का एक गढ़ बन गया था, और कॉर्नेलयिस इस वरिोध में सबसे सक्रयि हस्तयिों में से एक थे। नलिोव हर्मटिेज छोड़ने के लिए मजबूर होकर, वह व्याग नदी के कनिारे के जंगलों में भाग गया, जहाँ तक उस समय पुराने वशि्वास के कई अनुयायी पहले ही इकट्ठा हो चुके थे। कॉर्नेलयिस पुराने वशि्वासयिों का नेता बन गया। उसने एक समुदाय की स्थापना के लिए अपनी सहमतदिी, जसिे वभिाजन के इतहिास में बाद में 'व्याग समुदाय' के नाम से जाना गया। उनकी जीवनी के अनुसार, कॉर्नेलयिस का 21 मार्च 1695 को 125 वर्ष की आयु में नधिन हो गया। वाइग समुदाय, जो कट्टर धार्मकिता का गढ़ बन गया था, श्रम और संसार का त्याग करने के सबसे कठोर तपस्या नयिमों पर स्थापति कयिा गया था: यही वह था जसिकी कॉर्नेलयिस ने अपने आध्यात्मकि बच्चों से मांग की थी। 18वीं शताब्दी में, वगिोव्स्काया समुदाय ने 'बेज़पोपोवत्सी' के बीच फूट में एक महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई; इस आंदोलन के लगभग सभी फूट डालने वाले नेता 'वयगोव्स्की समुदाय' से ही आए थे।

---

[985] स्मरिनोव। *वभिाजन में आंतरकि मुद्दे* (1898)। पृ. 12, 137; *सामग्री*। 6. पृ. 230; तुलना करें: मकारी। 12. पृ. 627 एवं बाद के पृष्ठ।
[986] स्मरिनोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. XXIV–XXVII; मकाराई। रूसी वभिाजन का इतहिास। पृ. 273; डीएआई। 12. संख्या 130, 134, 180।
[987] एंडरसन, वी. पुराना वशि्वास और संप्रदायवाद (1903)। पृ. 131 आदि; दुरुज़निनि। 'वगिोव्स्क के तपस्वी, कॉर्नेलयिस के जीवन पर', में: झएमएनपी। 1884. 9; ओस्ट्रोव्स्की, डी. द वगिोव्स्क हर्मटिेज एंड इट्स सग्निफिकिेंस (1914); फलिपिोव, आई. हस्ट्री ऑफ द वगिोव्स्क हर्मटिेज (1862) (मेरे लिए उपलब्ध नहीं)।

6. सोलोवेत्स्की मठ में विद्रोह

'निकोनीय नवाचारों' और संशोधित पूजा-ग्रंथों के प्रति मठवासी विरोध विशेष रूप से सोलोवेत्स्की मठ के भाइयों के विद्रोह में स्पष्ट था[988] । इस मठवासी विद्रोह के समान किसी अन्य घटना ने इस विभाजन के प्रसार में इतना योगदान नहीं दिया – जो रूसी लोगों के चर्च संबंधी इतिहास में एक असाधारण रूप से विशिष्ट अध्याय था। संन्यासवाद, जो सदियों से चर्च और राज्य का एक वफादार सहयोगी रहा था, ने पुराने मॉस्कोइट संस्कृति और विश्वदृष्टि को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी, और आम तौर पर धार्मिक जीवन में मुख्य प्रेरक शक्ति रहा था – यही संन्यासवाद अचानक और खुले तौर पर धार्मिक पदानुक्रम और राज्य प्राधिकरणों दोनों के खिलाफ हो गया। यह नहीं भूलना चाहिए कि मठवासी भाईचारा, उसकी प्रकृति चाहे जो भी हो, लोगों की नजर में हमेशा अपार धार्मिक अधिकार रखता था, और पुराना रूसी मठ अभी भी लोकप्रिय धार्मिकता और भक्ति का केंद्र बिंदु बना हुआ था। विरोधी भावनाएँ, जो कई मठों में अधिक या कम मात्रा में प्रकट हो रही थीं, अंततः सोलोवेत्स्की मठ समुदाय के विद्रोह में जबरदस्त शक्ति के साथ फूट पड़ीं, जो मठों के भविष्य के इतिहास के लिए निर्णायक साबित हुआ। इस विद्रोह ने यह साबित कर दिया कि संपूर्ण मठवासी समुदाय नीकॉन के सुधारों का विरोधी था, और यद्यपि मठों और संतों ने बाद में 'नीकॉनियन नवाचारों' को स्वीकार कर लिया, यह नीकॉन के सुधारों के साथ आंतरिक धार्मिक सहमति या उसके कार्य की निरंतरता की अभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि एक बाहरी समर्पण था; सुधारों को स्वीकार करना चर्च के अधिकार के बजाय राज्य की शक्ति के समक्ष आत्मसमर्पण का प्रतीक था। मठवासी समुदाय के बाहरी, जबरन समर्पण के रूस के धार्मिक जीवन में इसकी भविष्य की भूमिका के लिए महत्वपूर्ण परिणाम हुए। हमारी दृष्टि में, मठवासी समुदाय और राज्य, तथा मठवासी समुदाय और चर्च के बीच इस नए प्रकार के संबंध की जड़ें न केवल पेत्रुस महान के सुधारों में मिलती हैं, जिन्होंने मठों को धार्मिक जीवन की पृष्ठभूमि में धकेल दिया था, बल्कि इस विभाजन के शुरुआती इतिहास में भी मिलती हैं। बेशक, मठ समुदाय पहले की तरह ही रूसी चर्च की गोद में रहा, लेकिन पूर्व का आंतरिक बंधन और पूर्व का घनिष्ठ पारस्परिक समर्थन एक गंभीर घाव से ग्रस्त हो गया था, जो अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों के दौरान पूरी तरह से भर नहीं सका। उपरोक्त बात इस बात की भी व्याख्या करती है कि इस अवधि के दौरान मठवासी जीवन, मानो, लकवाग्रस्त क्यों हो गया था।

सोलोवेत्स्की मठ में घटनाएँ अपेक्षाकृत धीमी गति से सामने आईं, क्योंकि धर्मनिरपेक्ष अधिकारी निर्णायक कार्रवाई करने में हिचकिचा रहे थे, जबकि धार्मिक अधिकारी उदासीन बने रहे। विद्रोह के खिलाफ कार्रवाई में देरी का कारण मठ का मॉस्को से दूर होना, मॉस्को के अधिकारियों को मठ की स्थिति की जानकारी का अभाव और, सबसे बढ़कर, इन घटनाओं के प्रति ज़ार का व्यक्तिगत रवैये को भी बताया जा सकता है। यह नहीं भूलना चाहिए कि 1658–1666 के वर्ष पैट्रिआर्क और ज़ार के बीच विरोधाभासों के सबसे जटिल जाल को सुलझाने में व्यतीत हुए, जिसने निस्संदेह मास्को की स्थिति को कमजोर किया और मठ की स्थिति को मजबूत किया। मठ की स्थिति अधिक अनुकूल थी, क्योंकि मठ समुदाय मास्को की तुलना में मठ के भीतर के मामलों के बारे में बेहतर जानकारी रखता था। एक स्टाउरोपेजियल मठ के रूप में, जो सीधे पैट्रिआर्क के अधीन था, सोलोवेत्स्की मठ ने हमेशा मास्को में अपने प्रतिनिधि बनाए रखे, जो स्वाभाविक रूप से, मठ के अधिकारियों और मठवासी समुदाय को मास्को में प्रचलित भावनाओं, 'निकोनीय नवाचारों' के प्रति शत्रुता, और इस तथ्य के बारे में तुरंत सूचित करते थे कि इन नवाचारों के विरोधी प्रभावशाली बोयार परिवारों और स्वयं ज़ार के घर में भी पाए जाते थे। हालांकि, मास्को की सरकार को केवल मठ के मठाधीश की आधिकारिक रिपोर्टों पर ही निर्भर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। आर्चिमंड्राइट एलाजा, जो 1654 की परिषद के बाद मठ में लौटे थे—जिसके फरमानों पर उन्होंने हस्ताक्षर किए थे—उन्होंने नई पूजा-संबंधी पुस्तकों के अनुसार पूजा शुरू करने के लिए कुछ नहीं किया, और मठ ने पुरानी पुस्तकों का ही उपयोग करना जारी रखा। 8 जुलाई 1658 को, मठ समुदाय ने 'निकोनीय पुस्तकों' को बिल्कुल भी स्वीकार न करने का संकल्प लिया।

विरोध की भावना इस तथ्य से और बढ़ गई कि निकोन के सुधारों के 100 से अधिक विरोधियों को मास्को से इस मठ में निर्वासित कर दिया गया था; उनके आगमन पर, उन्होंने आग में और घी डालने का काम किया। निर्वासितों में राजकुमार ल्वोव, जो आर्चप्रीस्ट अव्वाकुम के एक उत्साही अनुयायी थे, और भिक्षु थियोक्टिस्ट शामिल थे,

---

[988] मकारी. 12. पृ. 630; मकारी. रूस के संप्रदायिक विभाजन का इतिहास. पृ. 215; कई दस्तावेज़: AAE. 4; DAI. 5; AI. 4; रीडगिस. 1846. 3. अनुभाग 1; काज़ानस्की, पी. 'सोलोवेत्स्की विद्रोह के उकसाने वाले कौन थे?', में: रीडगिस. 1867. 4; सरित्सोव, आई. 'सोलोवेत्स्की पुराने विश्वासियों भिक्षुओं का विद्रोह', में: प्राव. सोब. 1880. 1, 2, 4, 5–7, 10; 1881. 1, 2, 4, 5 (और एक अलग प्रकाशन के रूप में: काज़ान, 1881); मटेरियल्स. 3. एक महत्वपूर्ण, यद्यपि पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं, स्रोत विगोवस्काया पुराने विश्वासियों के समुदाय के नेता, एस. डेनिसोव का कार्य *द हिस्ट्री ऑफ़ द फ़ादर्स एंड मार्टियर्स ऑफ़ सोलोवकी* (प्रथम संस्करण 1788; द्वितीय संस्करण 1788; तृतीय संस्करण 1789) है।

जनि्होंने यहाँ मसीह-वरिोधी के राज्य पर ग्रंथ लखि; इसके अलावा, इन नवाचारों का वरिोध करने वाले कई भकि्षु अपने-अपने मठों को छोड़कर सोलोवेत्स्की मठ में आ गए। उदाहरण के लिए, नकिानोर मठ के मठाधीश साव्वनि, जो बाद में वद्रिोह के मुख्य उकसाने वालों में से एक बने, ने भी यहाँ शरण ली।

लेकनि, बेशक, मठवासी भाईचारे के भीतर ही सुधारों के वरिोधी भी थे। नकिोन के सबसे प्रभावशाली दुश्मनों में से एक भकि्षु गेरसमि फर्सोव थे। वह एक मजबूत चरत्रि के व्यक्त,ि एक आदर्श नेता, अत्यधकि सक्षम और धर्मशास्त्रीय शकि्षा से भी वंचति नहीं थे। 1658 में ही, गेरसमि ने 'उंगलयिों की स्थतिि पर एक भाई को पत्र' लखिा, जो धार्मकि साहत्यि का उपयोग करके दो-उंगली के चह्नि को सही ठहराने का पहला प्रयास था; इस कृतनि ने बाद में पुराने वशि्वासयिों के बीच व्यापक प्रसार और मान्यता प्राप्त की। हालाँकि 1666 की परषिद में गेरसमि ने अपने वशि्वासों में संशोधन कयिा और पश्चाताप का एक बयान दयिा—जो, ऐसा प्रतीत होता है, सच्चा नहीं था—फरि भी इस कृतनि ने पुराने वशि्वासयिों के बीच अपनी प्रामाणकिता बनाए रखी। गेरासیم को जोसेफ मठ में नर्विासति कर दयिा गया, जहाँ परषिद के आदेश पर, उन्हें अपनी 'एक भाई को पत्र' का खंडन तैयार करना था; लेकनि उन्होंने देरी की, शायद इसलिए क्योंकि वे ऐसा नहीं करना चाहते थे, और उन्होंने 1667 में अपनी मृत्यु तक ऐसा कोई खंडन तैयार नहीं कयिा।[989]

1658 और 1666 के बीच, मॉस्को और सोलोवेत्स्की मठ, और मॉस्को और आर्चमैंड्राइट सर्जयिस के बीच पत्राचार जारी रहा, जनि्हें वशिेष रूप से भाइयों को फटकार लगाने के लिए मठ भेजा गया था। भाइयों ने ज़ार को संबोधति 'वशि्वास पर पाँच याचकिाएँ' भेजीं[990] । वशिेष रूप से ध्यान देने योग्य 23 सतिंबर 1667 की अंतमि याचकिा है, जसिमें मठवासी समुदाय के धार्मकि वचिार व्यक्त कएि गए थे[991] । यह याचकिा, कह सकते हैं, उन कारणों की एक वस्तिृत व्याख्या थी कि मठवासी समुदाय न तो नई पुस्तकों को और न ही पूजा-संस्कारों में बदलाव संबंधी आदेशों को क्यों स्वीकार कर सकता था। अपनी सामग्री के संदर्भ में, 23 सतिंबर की याचकिा कोई वद्रिवतापूर्ण धर्मशास्त्रीय आलोचना नहीं है, बल्कि एक प्रलय-सम्बंधी वचिारधारा की व्याख्या है, जो उस समय नकिोन के सुधारों के वरिोधयिों के बीच आकार लेने लगी थी, और बाद में इस वभिाजन की पूरी धार्मकि वशि्वदृष्टि की एक परभिाषति वशिेषता बन गई।

याचना में कहा गया है कि अंतमि समय आ रहा है, जब वरिोधी मसीह (एंटीक्रस्टि) प्रकट होगा। पूरे वशि्व में आस्था क्षीण हो रही है; मसीही आस्था से भटकने वाले और देशद्रोही हर जगह प्रकट हो गए हैं; केवल रूस ने ही हाल तक इसे नर्विोष शुद्धता में संरक्षति रखा था, लेकनि फरि नकिोन अपने शष्यिों के साथ आ गया। अब वे मस्कोवाइट ज़ारशाही के ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों पर एक 'अज्ञात नया वशि्वास' थोपने का प्रयास कर रहे हैं; उन्होंने धर्मत्यागी ग्रीकों से उधार लिए गए परविर्तनों के द्वारा 'प्रामाणकि' पुरानी कतिाबों को भ्रष्ट कर दयिा है, और दैवीय सेवा में पापी वकि्रतियाँ पेश की हैं। जब कोई यह सब देखता है, तो उसे मसीह के उन शब्दों की याद आती है जो उनके दूसरे आगमन से पहले वशि्वास के पतन के बारे में हैं: 'मैं तुम से कहता हूं, उनका न्याय शीघ्र लयिा जाएगा। परन्तु जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर वशि्वास पाएगा?' (लूका 18:8)। लेकनि रूस और उसके ऑर्थोडॉक्स लोगों को वनिाश से तब बचाया जा सकता है और वे सच्चे मार्ग पर लौट सकते हैं, जब ज़ार, ईश्वर को प्रसन्न करने वाले अपने पूर्वजों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, 'नकिोनीय नवाचारों' को समाप्त कर दे और अछूते 'पुराने वशि्वास' को बहाल कर दे। सोलोवेत्स्की मठ के भ्राता 1666–1667 की परषिद के आदेशों और शपथों को स्वीकार नहीं करते हैं, क्योंकि यह परषिद अवैध थी, चूँकि इसमें भाग लेने वाले बशिप 'नकिोनाइट' थे जो सच्चे पुराने वशि्वास से भटक गए थे। मठ के भ्राता अपने रक्त का अंतमि बूँद तक बहाने की कीमत पर सच्चे धर्म के प्रतवि फादार रहेंगे, और, यदि आवश्यक हुआ, तो वे अपना जीवन बलदिान करने और पुराने धर्म में मरने के लिए तैयार हैं[992] ।

इस पत्र के लेखकों के मन में 'मास्को - तीसरी रोम' की अवधारणा के पतन, और इस प्रकार दुनयिा के अंत की बहुत वास्तवकि संभावना मंडरा रही थी। उनके लिए, यह कोई भ्रम नहीं, बल्कि एक दृढ़, अटूट वशि्वास था। यह वचिार कि मिस्कोवी राज्य शुद्ध ईसाई धर्म का अंतमि दुर्ग था, लोकप्रयि चेतना में गहराई से जड़ें जमा चुका था; और नकिोन के वरिोधयिों के लिए, यह इसके नर्मिाता, संन्यासी फलिोथयिस की तुलना में और भी अधकि प्रभावशाली था, क्योंकि इस वचिार की घोषणा के बाद से बीते समय में, यह जीवन के सभी क्षेत्रों में, नजिी और सांस्कृतकि-राजनीतकि दोनों में - चर्च, राज्य और लोगों के जीवन में - व्याप्त हो गया था। ज़ार अलेक्सी स्वयं, नकिोन और 1666 की परषिद के

---

[989] सामग्री. 3. पृ. 107; 2. पृ. 116; नकिोल्स्की, एन. 'सोलोवेत्स्की भकि्षु गेरसम फर्सिोव के लेख', में: पीडीपी. 188 (1916).

[990] सामग्री. 2. संख्या 14, 30, 31, 43, 45.

[991] उपरोक्त, पृ. 213–262। यह याचकिा ज़ार के समक्ष प्रस्तुत नहीं की गई थी। सरित्सोव। पूर्वोक्त, Prav. sob. 1880 में: 1. पृ. 164; AI. 4. संख्या 248।

[992] सरित्सोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 169–173।

बशिप इस वचिार के प्रत अिपने पूरे दलि और दमिाग से पूरी तरह से प्रतबिद्ध थे। सोलोवेत्स्की मठ के भक्षिुओं ने एक बात पर ध्यान नहीं दयिा। उन्होंने इस वचिार को पूरी तरह से धार्मकि या केवल एक धार्मकि दृष्टकिोण से देखा, जबकि ज़ार और नकिोन ने इस चर्च-राजनीतकि संरचना की पूरी जटलिता को पहचाना, जो बज़िान्टयिम से टूटने की अनुमत नहीं देती थी। इस वचिार की व्याख्या में बहुत सूक्ष्म अंतर केवल ज़ार या पैट्रआिर्क नकिॉन के फलिहेलेनज़िम (ग्रीक-प्रेम) में नहीं था; यह उस भूमकिा से जुड़ा था जो इस वचिार ने उनमें से प्रत्येक को सौंपी थी। प्रत्येक इस वचिार के लिए एक संरक्षक, एक सुरक्षा कवच और जीवन शक्त का स्रोत था - एक ऑर्थोडॉक्स ज़ार के रूप में, तो दूसरा चर्च के प्रायमेट (प्रथम) के रूप में। हालांकि, ज़ार अलेक्सी और नकिोन के बीच ववािद ने यह दखिाया कि वे भी इस वचिार की व्याख्या एक ही तरह से नहीं करते थे। बेशक, इस वचिार का राज्य-राजनीतकि तत्व अलेक्सी के लिए नकिोन की तुलना में अधकि महत्वपूर्ण था, जसिने, इसकी महत्ता को नकारते हुए नहीं, इस वचिार को स्थापति करने में एक अधकि महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाने की कोशशि की, जतिनी कि ज़ार उसे सौंपने में सक्षम और इच्छुक था।

इस प्रकार, एक ही वचिार को तीन दृष्टकिोणों से अलग तरह से देखा गया। अलेक्सी की स्थति इस तथ्य से मजबूत और सही ठहराई गई कि पूर्वी पैट्रआिर्क ज़ार के पक्ष में थे, यद्यपि सद्धिांतगत कारणों की तुलना में व्यावहारकि कारणों से अधकि; क्योंकि, एक ओर, 1453 के बाद राज्य और चर्च के संबंधों का प्रश्न पूर्वी पैट्रआिर्क के लिए पूरी तरह से अलग अर्थ रखता था, जतिना कि यह मॉस्को के लिए रखता था; और दूसरी ओर, वे धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों की इच्छा का वरिोध नहीं करना चाहते थे - ऐसे अधकिारी जो, भौतकि और कूटनीतकि दोनों रूप से, तुर्कों के खलिाफ संघर्ष में उनकी सहायता कर सकते थे और वास्तव में एक से अधकि अवसरों पर ऐसा कर चुके थे[993] . 1666–1667 की परषिद के फरमानों ने, जन्हिें ज़ार ने बेशक पूरी तरह से ऑर्थोडॉक्स और न्यायसंगत माना, नकिोन के साथ अपने ववािद में उन्हें धार्मकि और नैतकि रूप से सही ठहराया; साथ ही, उन्होंने उन्हें नकिोन के सुधारों का समर्थन करने और धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों की सहायता से रूसी चर्च के भीतर उन्हें लागू करने की आवश्यकता के बारे में आश्वस्त कयिा। अलेक्सी के लिए, सुधारों के शुरुआती वर्षों में—उदाहरण के लिए, अव्वाकुम के संबंध में—उसने जो संदेह और हचिकचिाहट का दौर अनुभव कयिा था, वह अब पीछे छूट गया था। अपने 20-वर्षीय शासनकाल (1646 से 1666 तक) के दौरान, नकिॉन के प्रभाव में रहे वह युवा व्यक्त एक नरिंकुश शासक के रूप में वकिसति हो गया, जसिके राज्य, चर्च और राजनीत पर वचिार बहुत अधकि नश्चिति और स्पष्ट हो गए थे। एक अन्य कारक को नहीं भूलना चाहए, अर्थात् ज़ार पर पश्चमिी प्रभाव और इस बात का एहसास कि राज्य में शक्षिति लोगों की कमी थी। ज़ार ने नकिोन के सुधारों के कार्यान्वयन को धर्मशास्त्रीय शक्षिा के क्षेत्र में कुछ सफलता के प्रमाण के रूप में देखा, जसिने न केवल 'मास्को - तीसरी रोम' की उसकी धारणाओं का खंडन नहीं कयिा, बल्कि इस वचिार को एक अंतर्नहिति पूर्णता भी प्रदान की। इसी में इस प्रश्न का उत्तर नहिति है कि ज़ार और संप्रदाय के नेता प्रतद्विंद्वी क्यों बने। संक्षेप में, इसे शायद इस प्रकार सारांशति कयिा जा सकता है: दोनों पक्षों ने 'मास्को - तीसरी रोम' के समान वचिार की वकालत की, लेकनि जहाँ ज़ार अलेक्सी इस वचिार को एक जीवति जीव के रूप में देखते थे जो समय में जमे हुए, सुस्ती की अवस्था में नहीं रह सकता, वहीं दूसरी ओर—वभिाजनकारी—इस वचिार को ठीक उसी रूप में संरक्षति करने की वकालत करते थे जैसा यह इसके उद्घोष के समय प्रकट हुआ था, और इसे पुनर्जीवति करने के कसिी भी प्रयास को धर्मत्याग मानते थे। इसने राज्य अधकिारयिों को सोलोवेत्स्की मठ के वरिोध, जो हद से आगे बढ़ गया था, के जवाब में अंततःकार्रवाई करने के लिए मजबूर कर दयिा।

स्थति और भी अधकि बगिड़ गई क्योंकि 13 मई 1667 को परषिद का नर्णिय, जो अनावश्यक जल्दबाजी में सुनाया गया था, ने सरकार के हस्तक्षेप को उचति ठहराया, जबकि मठवासी समुदाय अब सुधारों के प्रत अिपने प्रतरिोध को पुराने धर्म के लिए शहादत मानने लगा। 13 मई 1667 को अपने अंतमि सत्र में, परषिद ने एक ऐसा नर्णिय सुनाया जसिके बहुत गंभीर परणिाम हुए: नकिोन के नवाचारों को न केवल नर्णिायक रूप से मंजूरी दे दी गई, बल्कि जो लोग उन्हें स्वीकार नहीं करते थे, उन्हें चर्च से बहष्कृत कर दयिा गया और शाप दयिा गया। 1654 और 1666 के बीच संशोधति और मुद्रति पूजा-संबंधी पुस्तकों को अपनाने की स्पष्ट मांग के बाद, और सभी सुधारों की स्पष्ट रूपरेखा तैयार करने (गलतफहमी और त्रुटयिों से बचने के लिए यह कयिा गया था) और उनकी वकृित व्याख्याओं की नदिा करने के बाद, परषिद के नर्णिय में कहा गया है: 'हम इसके द्वारा यह परषिद का नर्णिय और वसीयत उपर्युक्त सभी ऑर्थोडॉक्स पुरोहतिों को संप्रेषति करते हैं, और हम आदेश देते हैं कि सभी को पवत्रि पूर्वी चर्च का अचूक रूप से पालन करना चाहए और उसके प्रत समर्पति रहना चाहए। लेकनि यदि कोई हमारे आदेशों की अवज्ञा करता है

[993] कैप्टरेव। रूस के ऑर्थोडॉक्स पूर्व के साथ संबंध (1885)।

और पवत्रि पूर्वी चर्च और इस अभषिकि्त परषिद के प्रत समर्पति नहीं होता है, या हमारे खलिाफ बोलना और हमारा वरिोध करना शुरू कर देता है, हम, सर्व-पवत्रि और जीवन-दायी आत्मा द्वारा हमें प्रदत्त अधकिार से, ऐसे वरिोधी को—यदि वह अभषिकि्त पद का हो—बहषि्कृत कर देंगे, और उसे हर पवत्रि पद और अनुग्रह से वंचति कर देंगे, और उसे शाप (अनाथेमा) के हवाले कर देंगे; लेकनि यदि वह सामान्य वर्ग का है, तो हम उसे बहषि्कृत कर देंगे, और उसे पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा से अलग कर देंगे, और उसे एक वधिर्मी और वदि्रोही के रूप में श्राप और अनथमा के हवाले कर देंगे, और उसे ऑर्थोडॉक्स संप्रदाय और झुंड और परमेश्वर की कलीसयिा से काट देंगे, जैसे सड़ा हुआ और एक बेकार अंग, जब तक कि वह होश में न आ जाए और पश्चाताप के माध्यम से सत्य की ओर न लौट आए"[994] ।

इस नरि्णय द्वारा, पुराने धर्म—या, बल्कि, पुराने संस्कार—के अनुयायियों को ऑर्थोडॉक्स चर्च से बहषि्कृत कर दयिा गया; इस प्रकार, 13 मई 1667 को रूसी वभिाजन की शुरुआत माना जा सकता है।

हालांकि, इस फैसले के बाद, ज़ार अलेक्सी ने सोलोवेत्स्की मठ के भाइयों—जो इस फैसले की वैधता को स्वीकार नहीं करते थे—के खलिाफ अपने उपायों को पूरी तरह से उचति माना होगा, फरि भी सरकार ने मठ के खलिाफ कार्रवाई करने में देरी की। भकि्षुओं के समुदाय के साथ और बातचीत हुई। नए आर्चमिांड्राइट जोसेफ, *स्ट्रेल्ट्सी के साथ,* मठ में *(1668–69)* पहुँचे *ताकि समुदाय को उन्हें अपना मठाधीश मानने के लिए मजबूर कर सकें। हालांकि, भकि्षुओं ने, जनिके पास राशन का बड़ा भंडार और किले की दीवारों और मीनारों पर लगी 90 तोपें थीं, खुद को मठ के अंदर ही घेर लयिा और स्ट्रेल्ट्सी पर गोलीबारी शुरू कर दी*[995] ।

1672 में, इवलेव की कमान के तहत स्ट्रेल्ट्सी का एक और दल (775 सैनकि) भेजा गया, जनि्हें पहले मठ समुदाय को आत्मसमर्पण करने के लिए मनाने की कोशशि करने का आदेश दयिा गया था। जब ये प्रयास वफिल हो गए, तो इएवलेव ने मठ पर गोला बरसाने का आदेश दयिा, लेकनि मठ के पास स्ट्रेल्ट्सी की तुलना में अधकि बारूद और तोप के गोले थे; इसके अलावा, स्ट्रेल्ट्सी का शविरि खराब तरीके से संगठति था, और मठ की घेराबंदी आधे मन से की गई थी। 12 मई 1673 को, ज़ार अलेक्सी ने एक फरमान जारी कयिा जसिमें उन्होंने वदि्रोही भकि्षुओं को पूरी माफी देने का वादा कयिा यदि वे मठ के द्वार खोल दें और परषिद के फैसले के आगे आत्मसमर्पण कर दें, लेकनि मठवासी समुदाय डटा रहा। स्ट्रेल्त्सी के बीच स्कर्वी के प्रकोप ने अंततः इएवलेव को घेराबंदी हटाने और मास्को लौटने के लिए मजबूर कर दयिा।

1674 की पतझड़ में, प्रसि इवान मेशचेरयाकोव को 1,700 स्ट्रेल्त्सी और तोपों के साथ सोलोव्की का वोइवोड बनाकर भेजा गया, जनि्हें वदि्रोह को तुरंत दबाने का आदेश दयिा गया था। एक बार फरि, मठ पर गोलीबारी हुई; मठाधीशों ने भी बदले में मॉस्को के दस्ते पर गोलीबारी की, और वे इसमें सफल भी रहे। 28 दसिंबर 1674 को, मठ समुदाय की एक परषिद में, यह नरि्णय लयिा गया कि धार्मकि अनुष्ठानों के दौरान ज़ार के नाम का उल्लेख नहीं कयिा जाएगा; कुछ भकि्षु, जैसे कि कोषाध्यक्ष गेरोन्टयिस, हाइरोमोंक पॉल और अन्य, इस बात से असहमत थे और उन्हें मठ के कालकोठरी में डाल दयिा गया। घेराबंदी 1676 की शुरुआत तक जारी रही; अंतत; 22 जनवरी को, मेश्चेरयाकोव,

---

[994] DAI. 5. संख्या 102. पृ. 487। परषिद के फरमान में नम्निलखिति बदिु शामलि थे: 1) धार्मकि अनुष्ठान केवल नई, संशोधति पुस्तकों के अनुसार ही आयोजति कए जाने थे, क्योंकि यह संशोधन सही था; 2) धर्म-वशि्वास के 8वें अनुच्छेद में, 'सच्चा' शब्द हटा दयिा गया था; 3) डॉक्सोलॉजी में 'आल्लेलुया' का उच्चारण तीन बार कयिा जाना था, साथ ही 'महमिा तुझे हो, हे ईश्वर' जोड़ा गया; 4) तीन-अंगुली वाले क्रॉस के चहि्न को नरि्धारति कयिा गया; 5) यीशु की प्रार्थना को नरि्धारति रूप में पढ़ा जाना था: 'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारे ईश्वर, हम पापयिों पर दया करो'; 6) प्रॉस्फोरा पर एक चार-बदिु वाला क्रॉस अंकति कयिा जाना था (वही, पृ. 485–487)। 1667 की इस 'शपथ', जसिके द्वारा पुराने संस्कार के अनुयायियों ने स्वयं को ऑर्थोडॉक्स चर्च से बहषि्कृत कर लयिा था, को एक ही चर्च की गोद में पुराने वशि्वासयिों की वापसी पर मौलकि कैननकि महत्व प्राप्त हुआ। इस 'शपथ' ने साहत्यि में काफी ववािद को जन्म दयिा; सबसे महत्वपूर्ण कृतयिों में शामलि हैं: '1667 की मॉस्को परषिद की शपथों पर', *क्रश्चियिन रीडगि्स*, 1872, संख्या 5 में; फलिपिोव, टी., '1667 की परषिद की शपथों पर', *द सटिजिन*, 1876. 17; पावेल, हेग्यूमेन। '1667 की परषिद की शपथों पर', में: व्याटका डायोसीज़न गज़ेट। 1871. 4; ग्रेन्कोव, ए. '1666–1667 की मॉस्को परषिद का फरमान', में: प्राव. सोब. 1863. 5, 9, 11 और 12; इवानोव्स्की। गाइड। 2. पृ. 150; गोलुबनिस्की, ई. 'पुराने वशि्वासयिों के साथ हमारे ववािद पर', में: रीडगि्स। 1905. 3.

[995] डोसीफ़ी। *सोलोवेत्स्की मठ का वर्णन*। खंड 1. पृ. 151; सरित्सोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 281, 347; सोलोवेत्स्की मठ, जो श्वेत सागर पर मास्को का एक कलि था, मुख्य रूप से स्वीडशि लोगों के खलिाफ था, और इसे वशिेष रूप से मजबूत बनाया गया था। पी. काज़ान्स्की (*रीडगि्स* में। 1867. 4. पृ. 6) का मानना है कि मठ का यही 'सैन्यीकरण'—जसिमें लगातार स्ट्रेल्त्सी की एक बड़ी टुकड़ी रहती थी—और साथ ही मठ का व्यापार, मठ के धर्मनरिपेक्षीकरण में योगदान देने वाले कारक थे। हालांकि, इस दृष्टकिोण से सहमत नहीं हुआ जा सकता, क्योंकि भकि्षुओं का धार्मकि कट्टरपंथ धर्मनरिपेक्षीकरण का परणिाम नहीं हो सकता था। मठ में बड़ी संख्या में नरि्वासयिों की उपस्थति—जो संप्रदायकि वभिाजन से सहानुभूति रखते थे और इसलिए प्रतरिोध में भाग लयिा था—ने नश्चिति रूप से इसमें एक भूमकिा नभिाई। तुलना करें: सरित्सोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 372 आदि।

एक भिक्षु थियोक्टिस्ट की मदद से, जो मठ से भाग गया था और उसे मठ में एक गुप्त मार्ग दिखाया था, रात के समय मठ पर कब्जा करने में सफल रहा। इसके बाद एक बड़े पैमाने पर लड़ाई छिड़ गई; कई भिक्षु मारे गए। विद्रोह के मुख्य षड्यंत्रकारियों, जैसे कि मिठाधीश निकानोर, को मौत की सजा दी गई; जो लोग 13 मई 1667 के परिषद के फैसले को मानने से इनकार कर दिए थे, उन्हें अन्य मठों में निर्वासित कर दिया गया, जबकि कुछ ही संन्यासी जो ज़ार और परिषद के सामने झुक गए थे, वे अपने मठ में ही रहे। भिक्षु समुदाय के बड़ी संख्या में लोग भागने में सफल रहे।

रूसी उत्तर के जंगलों में बिखरकर, एक निर्जन स्थान से दूसरे निर्जन स्थान तक भटकते हुए, ये भटकते भिक्षु संप्रदायवाद के प्रमुख प्रस्तावक और पुराने धर्म के योद्धा बन गए; अपने विवरणों में उन्होंने निकोन का अपमान किया, और उसे 'पाताल लोक का पुत्र' कहा, 'धर्मत्यागी', 'मसीह-विरोधी का अग्रदूत', और, कुछ सफलता के साथ, लोगों से प्राचीन धार्मिकता पर दृढ़ रहने का आह्वान किया। सोलोवेत्स्की मठ की घेराबंदी और पतन ने पुराने विश्वास के अनुयायियों और उनके सहानुभूति रखने वालों पर गहरा प्रभाव डाला; योद्धा भिक्षुओं को धर्म के लिए शहीद होने का गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई, और भटकने वाले भिक्षुओं ने इस गौरव को देश के सबसे दूर-दराज के कोनों तक बड़ी लगन से पहुँचाया। 15 मई 1682 के प्रसिद्ध स्ट्रेल्त्सी विद्रोह में, जो ज़ार फ्योडोर (1676–1682) की मृत्यु के बाद भड़का था, जब शीर्ष पर कुछ भ्रम था और सत्ता के लिए संघर्ष शुरू हो गया था, इस विभाजन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और विद्रोह के नेता, प्रिंसि आई. ए. द्वारा दिखाई गई सहानुभूति का तो उल्लेख ही नहीं करना चाहिए। खोवान्स्की ने पुराने विश्वासियों के प्रति यह सहानुभूति दिखाई[996] ।

हालांकि, पैट्रिआर्क जोआकिम (1674–1690) के अधीन चर्च द्वारा उठाए गए उपाय, इस विभाजन के प्रसार और इसके आंतरिक विकास, इसकी विचारधारा के गठन, और विशेष रूप से राज्य और उभरती हुई साम्राज्य के साथ इसके संबंध के लिए बहुत महत्व के थे। पितृआचार्य जोआकिम इस विभाजन के कट्टर विरोधी थे, यद्यपि उनके अपने धार्मिक विचार पुराने विश्वासियों से बहुत अलग नहीं थे, और उन्होंने विभाजन के खिलाफ सबसे कठोर उपायों का उपयोग करते हुए अभियान चलाया। 7 अप्रैल 1685 को, एक फरमान जारी किया गया[997] , जिना के तहत संप्रदाय के अनुयायियों के राज्य के शत्रु तत्व मान के सताविल आ सजा दिल जाए; यह तरह, राज्यन शुद्ध रूप से धार्मिक मामलिन में हस्तक्षेप करे के फैसला किलस। इस फरमान में संप्रदायवादियों और संप्रदाय के प्रति सहानुभूति रखने वालों को विभिन्न दंडों की धमकी दी गई, जिसमें पुराने विश्वासियों को विद्रोही और राज्य के गद्दार के रूप में जलाना भी शामिल था। इस प्रकार, ये दोनों तिथियाँ, 13 मई 1667 और 7 अप्रैल 1685, संप्रदाय के इतिहास में शुरुआती बिंदु बन गईं। पहली तारीख ने पुराने विश्वासियों के धार्मिक अलगाव को चिह्नित किया, जबकि दूसरी ने बहुत लंबे समय के लिए मतभेदवादियों के नागरिक और कानूनी अलगाव का संकेत दिया[998] ।

संन्यासी समुदाय के लिए, इस फूट के कई परिणाम हुए, जिनमें से कुछ अत्यंत गंभीर थे। निकोन्स के सुधारों का विरोध करने के उत्तेजक के रूप में संप्रदाय में भिक्षुओं की भागीदारी ने मठवासी समुदाय को चर्च पदानुक्रम से जोड़ने वाले बंधनों को तोड़ दिया और, पीटर महान के शासनकाल के दौरान, उन पर राज्य के प्रति शत्रुता का संदेह पैदा कर दिया—एक संदेह जो, एक अर्थ में, पूरी तरह से निराधार नहीं था; अंत में, यह नहीं भूलना चाहिए कि मठवासी समुदाय का वह हिस्सा जो धर्मनिरपेक्षता की प्रक्रिया से सबसे कम प्रभावित था, उसने भी इस विभाजन में भाग लिया। यह अत्यंत विशेष है कि चर्च के भीतर रहे मठवासी समुदाय के लिए, 18वीं सदी का पहला आधा हिस्सा पूर्ण साहित्यिक बंजरता की अवधि थी; ऐसा लग रहा था कि यह एक सुन्न अवस्था में जी रहा है। विभाजन ही उस बात की जड़ में है कि साम्राज्यवादी युग के दौरान, मठवासी समुदाय अप्रासंगिक महसूस कर रहा था और अपने लिए कोई निश्चित उद्देश्य नहीं ढूंढ सका। तुलनात्मक रूप से लंबे समय तक, यह दृढ़ता से एक दोराहे पर खड़ा रहा; कुछ भिक्षुओं ने आगे बढ़ने का रास्ता खोज लिया, जबकि अन्य - बहुमत - 1917 तक इसी स्थिति में बने रहे।

अध्याय XIII. धर्मनिरपेक्षता का युग (1701–1764)

---

[996] घेराबंदी के विवरण के लिए, सिरित्सोव या: मकरियस। रूसी संप्रदायिक विभाजन का इतिहास। पृ. 240–258 देखें।

[997] पीएसज़ेड. 2. संख्या 1102.

[998] केवल 17 अप्रैल 1905 के एक फरमान द्वारा ही पुराने विश्वासियों को 'विभाजनकारी' के रूप में आधिकारिक नामकरण समाप्त किया गया था; इसमें आदेश दिया गया कि अब से 'पुराने विश्वासियों' की उपाधि, वर्तमान में प्रचलित शब्द 'विभाजनकारी' के स्थान पर, उन विभिन्न व्याख्याओं और समुदायों के सभी अनुयायियों पर लागू की जाए जो रूढ़िवादी चर्च के मूल सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं लेकिन इसके द्वारा अपनाई गई कुछ रीतियों को नहीं मानते हैं और अपनी धार्मिक सेवाएं पुरानी-छपी किताबों के अनुसार करते हैं। (उद्धृत: गोलुबिनिस्की, ई. 'ओन अवर कंट्रोवर्सी विद द ओल्ड बिलीवर्स', पृ. 238-239।)

1. पीटर महान और मठवाद के प्रति उनका दृष्टिकोण

17वीं सदी के अंतिम दशक में, रूसी मठवाद अपने इतिहास के तीसरे और अंतिम चरण में प्रवेश कर गया। इसके आंतरिक विकास और बाहरी भाग्य के लिए दो घटनाएँ निर्णायक महत्व की थीं: विभाजन और पीटर महान द्वारा उठाए गए वे उपाय जिन्हें आमतौर पर 'चर्च सुधार' कहा जाता है। हालाँकि, यदि सुधार से पहले और बाद के रूसी चर्च के जीवन की तुलना की जाए, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस शब्द का उपयोग एक निश्चित सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। हाँ, 17वीं सदी के अंत में रूस में चर्च का जीवन आदर्श से बहुत दूर था; इसमें वास्तव में कई गंभीर बदलावों की आवश्यकता थी - लेकिन ये बदलाव नहीं हुए। सुधार के बाद भी, चर्च जीवन में वही कमियाँ बनी रहीं, जो सुधारों की एकतरफा और अपूर्ण प्रकृति की ओर इशारा करती हैं। सबसे महत्वपूर्ण मामले - पुरोहित वर्ग के शिक्षण - में तो सबसे अधिक आवश्यक कदम भी नहीं उठाए गए।

हालांकि, इस सुधार ने रूसी चर्च के प्रति राज्य के रवैये में मौलिक परिवर्तन लाए। ये परिवर्तन अत्यंत महत्वपूर्ण थे - 'आध्यात्मिक विनियमों' ने चर्च और राज्य के बीच संबंधों को पूरी तरह से नए आधार पर स्थापित किया। चर्च ने अपनी कानूनी स्वतंत्रता खो दी और एक राज्य संस्थान - रूढ़िवादी धर्म विभाग - बन गया; यह नाम उन्नीसवीं सदी के अंत तक आधिकारिक दस्तावेजों में बरकरार रहा। 'आध्यात्मिक विनियमों' ने राज्य और चर्च के बीच एक नए संबंध की स्थापना की, जिसकी विशेषता राज्य द्वारा चर्च की संरक्षकता ग्रहण करना था; धार्मिक मामलों में इसका हस्तक्षेप कानूनी मानदंड बन गया, और इसने इस सिद्धांत को अटूट रूप से बनाए रखा। बेशक, मस्कोवी में—यानी, महान पीटर से भी पहले—धर्मनिरपेक्ष अधिकारी अक्सर धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करते थे, और रूसी चर्च अक्सर राज्य के दबाव में आ जाता था; फिर भी, ऐसे हस्तक्षेप को सामान्य नहीं माना जाता था; पीटर महान से पहले और बाद में राज्य और चर्च के बीच संबंधों पर विचार केवल भिन्न ही नहीं थे, बल्कि सीधे तौर पर विपरीत थे। अब रूसी चर्च मस्कोवी रूस में अपनी पूर्व, अत्यधिक सम्मानित स्थिति खो रहा है और पीटर के धार्मिक सुधारों के परिणामस्वरूप, इसे महज एक राज्य संस्थान का दर्जा दिया जा रहा है। यह भूमिका पूरी तरह से पीटर के इरादों के अनुरूप थी, क्योंकि उन्होंने चर्च से न केवल एक शुद्ध आध्यात्मिक मंत्रालय बल्कि, सबसे बढ़कर, एक राज्य-राजनीतिक मंत्रालय की मांग की थी। अपने संस्थापक की दृष्टि के अनुसार, पीटर के राज्य में, हर चीज़ का उद्देश्य राज्य की सेवा करना और उसे लाभ पहुँचाना था – उस अर्थ में जिसमें वह उस लाभ को समझते थे[999] ।

चर्च पदानुक्रम के साथ-साथ मठवासी समुदाय के लिए भी, पीटर के सुधारों से उत्पन्न यह नई स्थिति अवांछनीय थी, केवल इसलिए कि राज्य और चर्च के बीच के संबंध को अब एक स्पष्ट और दृढ़ कानूनी परिभाषा दी गई थी। मस्कोवाइट राज्य के पास धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक अधिकारों के बीच कानूनी संबंधों की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं थी। ये संबंध परंपरा, पुराने तरीकों—यहाँ तक कि अतीत की भावना—और निरंकुश ज़ार[1000] की वास्तविक शक्ति और सामर्थ्य पर आधारित और बनाए रखे गए थे। यहाँ तक कि 1649 का संहिता, जो धार्मिक मामलों को काफी स्थान देता है, ने हालांकि धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक प्राधिकरण के बीच संबंध को विस्तार से परिभाषित नहीं किया, न ही इन संबंधों के लिए एक स्पष्ट कानूनी ढांचा प्रदान किया। धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के लिए, शासन का अभ्यास, साथ ही राज्य और धार्मिक-राजनीतिक विचारधारा, अभी भी एक कानूनी संहिता का स्थान लेती थी। उदाहरण के लिए, तथाकथित 1654 के चार्टर में, जो वास्तव में रूस में राजकोषीय मामलों के लिए कानूनी मानदंड निर्धारित करता है, प्रथागत कानून से कुछ विचलन पाए जा सकते हैं; फिर भी वहाँ इस बात पर जोर दिया गया है कि ज़ार इस तरह शासन करता है 'जैसा प्रभु ईश्वर और हम, महान शासक, को धार्मिकता और निर्दोषता से प्रसन्न करता है'[1001] । यदि 1649 के संहिता ने राज्य और चर्च के बीच संबंधों की एक विस्तृत कानूनी परिभाषा प्रदान की होती और साथ ही राज्य की सर्वोच्चता को भी स्थापित किया होता, तो यह कहा जा सकता है कि चर्च ने भी इसे स्वीकार कर लिया होता; 1667 की परिषद का निर्णय, जिसने स्पष्ट रूप से पैट्रिआर्क निकोन के साथ अपने विवाद में ज़ार का समर्थन किया, हमारे

---

[999] पीटर महान के धार्मिक सुधार पर, देखें वर्खोवस्काया, पी. द एस्टैब्लिशमेंट ऑफ द स्पिरिचुअल कोलजियिम एंड द स्पिरिचुअल रेगुलेशंस। 2 खंड। (1916); विषय की शुरुआत के लिए, निम्नलिखित कार्य की सिफारिश की जाती है: स्टूपेरिच, आर. श्टाट्सगेडांके उंड रिलीजनस्पोलीटिके पीटर्स डी. ग्र. (1936) (ओस्टेउरोपेइशे फोर्श. एन. एफ. 22); ब्रुक्नर, ए., *पीटर द ग्रेट* (1879)। रूसी चर्च की नई स्थिति और राज्य के प्रति इसके अधीनता को 19 नवंबर 1817 और 15 मार्च 1824 के फरमानों द्वारा निर्णायक रूप से स्थापित किया गया था। (PSZ. 34, संख्या 27106 और 39, संख्या 29919; तुलना करें: 26 अगस्त 1824 की संख्या 30037)।

[1000] तुलना करें: फिलिप डब्ल्यू., *इवान पेरेश्वेटोव और मॉस्को साम्राज्य के नवीनीकरण पर उनके लेखन* (1935)। पृ. 42 से आगे, जो इस राज्य-राजनीतिक विचारधारा का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करता है।

[1001] PSZ. 1. संख्या 122। परंपरा से यह विचलन 'नए व्यापार चार्टर' (PSZ. 1. संख्या 408) और 1682 के धर्मार्थ कानून के मसौदे में भी पाया जा सकता है, जो पीटर महान से भी पहले, 'यूरोपीय रीति-रिवाजों' का उल्लेख करता है। तुलना करें: व्लादिमीरस्की-बुदानोव। समीक्षा (1888)। पृ. 211.

अनुमान की प्रतगिामी पुष्टि करता है। यहाँ जो कुछ भी कहा गया है, उससे यह स्पष्ट है कि पैट्रआर्क निकोन को छोड़कर, चर्च के नेता सैद्धांतिक रूप से राज्य और चर्च के बीच संबंध की कानूनी परिभाषा को लेकर विशेष रूप से चिंतित नहीं थे, लेकिन वे यह सुनिश्चित करने के लिए उत्सुक थे—न कि सैद्धांतिक रूप से, बल्कि व्यवहार में—अपने विशेषाधिकारों, अधिकार क्षेत्र और धार्मिक संपत्तियों की के संबंध में—चर्च के लिए 'स्टेटस इन स्टेटू' [राज्य के भीतर एक राज्य] की स्थिति को संरक्षित करना था, जिसे वे 1667 और 1675 की परिषदों में हासिल करने का प्रयास कर रहे थे और जिसके लिए उन्होंने मठ कार्यालय (1677) को समाप्त करवाया।

ये परिस्थितियाँ ही थीं जो पीटर की राज्य और राजनीतिक योजनाओं के लिए अस्वीकार्य थीं, और उनका चर्च सुधार—या यूँ कहें कि, इसके पहले कदम—मुख्य रूप से इसी 'status in statu' के खिलाफ निर्देशित थे, ताकि बाद में एक बार और हमेशा के लिए राज्य और चर्च के बीच के संबंध को स्पष्ट और औपचारिक बनाया जा सके। भिक्षुओं के समुदाय और मठों के लिए, चर्च सुधार की इस पृष्ठभूमि के परिणाम 1721 में पैट्रआर्केट के उन्मूलन और सर्वपवित्र शासीन सिनाड की स्थापना से भी अधिक गंभीर थे।

पिछली सदी की धार्मिक और राजनीतिक घटनाएँ पीटर के लिए अभी भी बहुत ताज़ा और बहुत खतरनाक थीं, जिन्होंने राज्य शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली थी। 17वीं सदी में, एक से अधिक मौकों पर ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न हुईं जिनकी उनके द्वारा विकसित राज्य और राजनीतिक अवधारणाओं में कोई जगह नहीं थी। शायद यह फिर से याद करने योग्य है कि ज़ार मिखाइल के शासनकाल के दौरान राज्य के शासन में पैट्रआर्क फिलारेट की भूमिका, निकोन की धार्मिक नीति, रूसी चर्च के विशेषाधिकारों के संबंध में 1667 और 1675 की परिषदों के फरमान, और पैट्रआर्क जोआकिम की ऊर्जावान गतिविधियों जैसी घटनाएँ थीं, जिन्होंने मठ कार्यालय को समाप्त कर दिया और हर संभव तरीके से चर्च की राज्य से स्वतंत्रता बनाए रखने का प्रयास किया, और जो, यूं कहें तो, दिल से एक 'छोटे निकोन' थे; और, अंत में, 1690–1700 के वर्षों में अंतिम पैट्रआर्क, एड्रियन के साथ पीटर के व्यक्तिगत टकराव। एड्रियन की निष्क्रियता या निष्क्रियता के बारे में पहले से प्रचलित व्यापक दृष्टिकोण को सुस्थापित नहीं माना जा सकता; जैसा कि उनकी धार्मिक नीति को विशेष रूप से समर्पित एक अध्ययन[1002] में प्रदर्शित किया गया है, एड्रियन, यद्यपि स्वभाव से जोआकिम की ऊर्जा और निकोन के लड़ाकू गुणों से वंचित थे, फिर भी उन्होंने चर्च के विशेषाधिकारों की रक्षा के लिए एक अटूट दृढ़ संकल्प प्रदर्शित किया। यह निष्क्रिय प्रतिरोध और उनके विचारों का रूढ़िवाद यह संकेत देता है कि धार्मिक सुधार—और वास्तव में पीटर द्वारा प्रस्तावित सभी सुधारों—को उनकी ओर से विरोध का सामना करना पड़ता। जब तक पीटर की माँ, त्सारिना नतालिया († 1694), जीवित थीं और उनके रूढ़िवादी अनुचर मॉस्को की पुरानी रीति-रिवाजों का समर्थन करते थे, एड्रियन की स्थिति अनुकूल थी; इसके अलावा, पीटर अभी भी अपने 'मनोरंजक' कार्यों में मग्न थे। लेकिन 1694 के बाद, राज्य के शासन में पीटर की भूमिका काफी बढ़ गई। वह, बेशक, एड्रियन की विदेशियों और सामान्य रूप से पश्चिमी प्रभावों से होने वाली घृणा से अच्छी तरह वाकिफ था[1003] । 1694 के बाद, पीटर ने धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। बेशक, इसमें कुछ भी नया नहीं था, क्योंकि उनके पिता, ज़ार अलेक्सी, पहले ही इसी तरह काम कर चुके थे; लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि पीटर 'आक्रामक हो गए थे'। हालाँकि, 'आध्यात्मिक विनियमों'[1004] के माध्यम से राज्य और चर्च के बीच एक नया संबंध स्थापित करने से पहले 20 और साल बीत गए।

[1002] स्क्वॉर्टसोव। पैट्रआर्क एड्रियन। 17वीं सदी के अंतिम दशक में रूसी चर्च की स्थिति के संबंध में उनका जीवन और कार्य (1913) (यह भी इसमें: प्राव. सोब. 1912–1913)।

[1003] पीटर मोगिला के *ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन* के नए संस्करण की प्रस्तावना में, एड्रियन ने लिखा कि विदेशियों ने, 'भेड़ की खाल में भेड़ियों' की तरह, रूस में घुसपैठ कर ली थी। सोकोलोव। द एटीट्यूड ऑफ प्रोटेस्टेंटिज़्म टुवर्ड्स रूस इन द 17th सेंचुरी। पृ. 139. भिक्षु यूथमियस (मेदवेदेव का एक विरोधी), जिससे हम पहले ही मिल चुके हैं और जो एड्रियन के सबसे करीबी लोगों में से एक था, ने उसे लिखा कि लूथरन और कैल्विनवादी रूढ़िवादी चर्च के खिलाफ प्रचार कर रहे थे। 'चर्च के कई दुश्मन हैं, लेकिन कोई रक्षक नहीं दिख रहे हैं' – इन शब्दों के साथ यूथमियस ने अपना पत्र समाप्त किया। विवरण। 3. 2. संख्या 310। पृष्ठ 496।

[1004] हमारा उद्देश्य आध्यात्मिक विनियमों का विस्तृत विवरण प्रदान करना नहीं है। हम केवल एक मौलिक बिंदु पर जोर देना चाहते हैं। जब आध्यात्मिक विनियम कानून बन गए, तो रूसी चर्च, एक स्थानीय चर्च के रूप में, रूसी राज्य का हिस्सा बन गई, और पवित्र सिनिड एक चर्च संस्था होने के बजाय एक राज्य संस्था बन गई। सिद्धांत और पूजा में ही रूसी चर्च ने सार्वभौमिक पूर्वी चर्चों के साथ एकता बनाए रखी। रूसी चर्च के लिए महत्वपूर्ण यह नहीं था कि पीटर महान ने पादरीशाही को सहकर्मी शासन से बदल दिया था, बल्कि यह था कि राज्य और चर्च के बीच संबंधों की एक पूरी तरह से नई प्रणाली उभर आई थी: 'रूसी चर्च' 'रूस में रूढ़िवादी चर्च' बन गया, यानी, इसे राज्य नियंत्रण में रख दिया गया और राज्य विधान के आधार पर शासित किया जाने लगा। तुलना करें: टेम्निकोव्स्की, ई. 'आध्यात्मिक विनियमों के स्रोतों में से एक', में: खार्कीव ऐतिहासिक और भाषाशास्त्रीय सोसायटी का संग्रह 18 (1909)। पृ. 5; वही, रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च में सार्वभौमिक धर्मपरायण अधिकार के सामान्य सिद्धांत के संबंध में सभी रूस के सम्राट की स्थिति (1909)। पृ. 15; साथ ही ऊपर उल्लेखित पी. वर्खोव्स्की का कार्य और मेरे लेख *करियोस* 5 *(1940–41) / पृ. 66 ff.*

[1005][1006]पतिृपक्षीय एड्रयिन (15 अक्टूबर 1700) की मृत्यु के बाद, पीटर ने केवल एक अस्थायी धार्मकि प्राधकिरण स्थापति कयिा और रयिाज़ान के अपेक्षाकृत युवा आर्चबशिप, स्टीफन यावोर्स्की को पतिृपक्षीय सहिासन का कार्यवाहक नयिुक्त कयिा[1007] । आर्चबशिप थयिोफान प्रोकपोवचि, जो धार्मकि सुधारों के कार्यान्वयन में पीटर के मुख्य सहायक थे, ने अपनी प्रसद्धि कृति *द ट्रुथ ऑफ द मोनार्क'स वलि* (1722) में नए कानून बनाने के शासक के अधकिार को प्रमाणति और उचति ठहराने का प्रयास कयिा, जसिसे *आध्यात्मकि वनियिमों* के लिए एक कानूनी आधार प्रदान कयिा गया। 'संप्रभु सम्राट वैध रूप से लोगों को आदेश दे सकता है,' थयिोफेनेस लखिते हैं, 'न केवल अपनी मातृभूमि के महान लाभ के लिए आवश्यक सभी मामलों में, बल्कि वह जो कुछ भी चाहे उसमें भी; बशर्ते कि यह लोगों के लिए हानकिारक न हो और ईश्वर की इच्छा के वरिुद्ध न हो। राजा की इस शक्ति का आधार इस तथ्य में नहिति है कि लोगों ने शासक की इच्छा के प्रति समर्पण कयिा है और स्वयं पर अपना सारा अधकिार उसे सौंप दयिा है। और इसमें सभी प्रकार के नागरकि और धार्मकि अनुष्ठान, रीति-रिवाजों में बदलाव, कपड़े पहनने का तरीका, घरों का नरि्माण, और दावतों, शादयिों, अंतमि संस्कार आदि के अवसर पर होने वाले अनुष्ठान और समारोह आदि शामलि हैं'[1008] .

हमने इस कथन को वशिेष रूप से उद्धृत कयिा है क्योंकि यह मनोवैज्ञानकि दृष्टकिोण से अत्यधकि दलिचस्प है: इसमें हमें नकिोन के सुधारों की एक नश्चिति प्रतधि्वनि और चर्च के अनुष्ठान के क्षेत्र में पीटर के संभावति नवाचारों को उचति ठहराने का एक प्रयास दखिाई देता है, हालांकि यहाँ यह नश्चिति रूप से नकिोन के मामले की तुलना में एक अलग दृष्टकिोण से कयिा गया है। 'आध्यात्मकि वनियिम' स्वयं औचत्यि और तर्क की उसी प्रकृति के वाहक हैं; जैसा कि जी. फ्लोरोव्स्की ने उत्कृष्ट रूप से कहा है, वे 'कोड' (नयिम-संग्रह) की तुलना में अधकि एक 'प्रवचन' थे[1009] , क्योंकि 'वनियिमों' के लेखक थयिोफेंस ने सभी वधिायी प्रावधानों को औचत्यिसंगत ठहराना और प्रमाणति करना आवश्यक समझा: थेओफानेस और पीटर के सामने वरिोध का खतरा मंडरा रहा था! वास्तव में, ऐसा कोई खतरा नहीं था: चर्च की आंतरकि ताकतें वभिाजन से बहुत अधकि कमजोर हो गई थीं; इसके अलावा, सुधारों ने मुख्य रूप से पादरयिों और मठवासी वर्गों के वर्ग हतिों को प्रभावति कयिा - चर्च का सद्धिांत अछूता रहा, और आम जनता के पास पीटर के नवाचारों को उसी दृष्टकिोण से देखने का कोई कारण नहीं था, जसिसे उन्होंने नकिोन के नवाचारों को देखा था। पीटर के सुधारों के प्रति धार्मकि रूप से रंगति वरिोध की जड़ें, उनके चर्च संबंधी सुधारों की प्रोटेस्टेंट भावना में नहीं, बल्कि संप्रदायकि वभिाजन से उत्पन्न भावनाओं में खोजी जानी चाहिए।

रूस में चर्च के भवषि्य के लिए, और वशिेष रूप से मठवाद के लिए, यह वशिेष रूप से महत्वपूर्ण था कि, अपनी सुधारों के माध्यम से, पीटर ने मस्कोवी को एक पुलसि राज्य में बदल दयिा था: तब से, सार्वजनकि जीवन के सभी पहलुओं को राज्य द्वारा वनियिमति कयिा गया, यहाँ तक कि नजिी जीवन को भी[1010] । यह तथ्य - पीटर के सुधारों के परणिामस्वरूप मस्कोवाइट ज़ारों के राज्य का एक पुलसि राज्य में रूपांतरण - ने चर्च और उसकी संस्थाओं को अछूता नहीं छोड़ा। धार्मकि मामलों में हस्तक्षेप या धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों द्वारा उनका वनियिमन अब, अधकिांशत; कसिी सुधार को लाने की इच्छा से जुड़ा नहीं था, बल्कि यह राज्य या अर्थव्यवस्था के लाभ की चतिाओं से उत्पन्न हुआ था; सामान्य भलाई की चति ही लगभग हमेशा पीटर के सुधारों के पीछे की मुख्य प्रेरक शक्ति थी। संन्यासवाद और मठों से संबंधति कई फरमान और आदेश वशिेष रूप से पुलसि-राज्य की प्रकृति और उपयोगति के वचिारों से

[1005] थेओफ़ेनेस के इस कार्य पर, देखें: गुरवचि, डी. 'द ट्रुथ ऑफ़ द मोनार्क'स वलि' बाय थेओफ़ेनेस प्रोकॉपोवचि एंड इट्स वेस्टर्न यूरोपयिन सोर्सेस (1915)। थयिोफ़ेनेस पर, यह भी देखें: सैमरनि, यू. 'स्टेफान यावोर्स्की और थयिोफ़ेनेस प्रोकपोवचि', में: संग्रहति कृतयिाँ, खंड 5 (1880) (प्रथम संस्करण 1844 – कुछ अंशों को छोड़कर, क्योंकि उस समय सेंसरों ने कुछ अंशों को प्रकाशति करने की अनुमति नहीं दी थी); कार्टाशोव, ए. 'द थ्योफेंस प्रकोपोवचि'स ऑर्थोडॉक्सी क्वेश्चन', में: कलेक्शन इन ऑनर ऑफ डी. एफ. कोबेको (1913); कोच, एच. *डएि रूसचि ऑर्थोडॉक्सी इम पेट्रनिशि्चेन ज़ेइटाल्टर* (1929); फ्लोरोव्स्की, जी. *द पाथ्स ऑफ रशयिन थयिोलॉजी* (1937)। वशिेष रूप से पृष्ठ 89 और बाद के पृष्ठ देखें। एक पुरानी कृति ने आज तक अपना मूल्य बनाए रखा है: पेकार्स्की, पी., पीटर महान के अधीन रूस में वज्ञिान और साहत्यि (1862); थयिोफन की जीवनी पर: चस्तिोवचि, आई., थयिोफन प्रोकपोवचि और उनका समय (1868) और टट्लिनिोव, बी., थयिोफन प्रोकपोवचि, में: RBS.

[1006] आध्यात्मकि वनियिमों पर, पी. वर्खोव्स्की की मौलकि कृति देखें, जो मस्कोवाइट रूस में राज्य और चर्च के बीच संबंधों पर तथा पीटर के सुधारों के बाद के साहत्यि का एक वसि्तृत सर्वेक्षण प्रदान करती है। एन. केद्रोव का कार्य 'पीटर द ग्रेट के सुधारों के संबंध में चर्च संबंधी वनियिम' (1886) (जो प्राव. ऑब. 1885 में भी है) बहुत कमजोर और एकतरफा है।

[1007] तुलना करें: स्टपरचि। उद्धृत ग्रंथ, अध्याय 2।

[1008] सम्राट की इच्छा का सत्य, में: पीएसज़ेड. 7. संख्या 4870. पृष्ठ 628.

[1009] फ्लोरोव्स्की। पूर्वोक्त, पृ. 84 आदि। तुलना करें: वेर्खोव्स्काया। 1, पृ. 156।

[1010] वशिेष रूप से 'मुख्य मजस्टि्रेट के लिए नयिम' वशिेषतापूर्ण हैं, जो पुलसि के कार्यों और कर्तव्यों को नरि्धारति करते हैं। PSZ, संख्या 3708। पीटर के सुधारों का एक संक्षपि्त और स्पष्ट ववरिण यहाँ दयिा गया है: श्मुरलो, ई. हस्टि्री ऑफ रूस (1922), पृ. 270–342।

चह्निति थे। ये फरमान संन्यासी जीवन के एक सुवचारित, राष्ट्रव्यापी सुधार के अलग-अलग चरण नहीं थे, बल्कि अक्सर राज्य की अचानक जरूरतों और आवश्यकताओं के जवाब में जारी कए गए थे। सन्न्यासवाद, मठों और सन्न्यासी जीवन से संबंधित सभी फरमानों के पीछे एक ही मौलिक सिद्धांत था: मठों को राज्य के लिए उपयोगी बनाना। यद्यपि, बेशक, एक ईसाई और चर्च संबंधी संस्था के रूप में सन्न्यासवाद पर पीटर के विशिष्ट दृष्टिकोण का भी प्रभाव पड़ा।

पीटर महान नास्तिक नहीं थे। इसके विपरीत, वह धार्मिक थे, लेकिन उनकी धार्मिकता चर्च जाने की प्रकृति की नहीं थी। मास्को में पुराने नियम की भक्ति के वातावरण में पले-बढ़े पीटर ने अपने पूरे जीवन में यह धार्मिक विश्वास बनाए रखा कि ईश्वर ही संसार का स्रष्टा और संरक्षक है, और एक शासक के रूप में ईश्वर के प्रति उसकी जिम्मेदारी की भावना हमेशा पीटर की विशेषता थी। उन्होंने न केवल 'आध्यात्मिक विनियमों' में बल्कि सैन्य विनियमों (1716) में भी खुद को 'ईसाई शासक' कहा, और उन्होंने निरंकुश शक्ति को एक दैवीय संस्था माना। थेओफान प्रोकोपोविच ने पीटर को 'एक ईसाई शासक, ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) और चर्च के भीतर सभी पवित्र व्यवस्थाओं के संरक्षक' के रूप में संदर्भित किया[1011] ; यह पीटर की अपनी भी दृढ़ मान्यता थी। अब थियोफैन ने इस दृढ़ विश्वास का उपयोग—जो लंबे समय से उसके शाही पूर्वजों और पूरे राष्ट्र की विशेषता रहा था—रूस में एक राज्य चर्च की शुरुआत को उचित ठहराने के लिए किया। राज्य चर्च का विचार राज्य के भीतर चर्च की भूमिका और कार्यों पर पीटर के विचारों के साथ पूरी तरह से सुसंगत था[1012] । ये विचार मास्को के जर्मन क्वार्टर के विदेशी प्रोटेस्टेंटों के प्रभाव के बिना नहीं बने थे। पीटर के लिए, चर्च मुख्य रूप से एक नैतिक और शैक्षिक शक्ति थी जिसे राज्य के हितों की सेवा करनी चाहिए। उन्होंने चर्च के संस्कारिक जीवन को अस्वीकार नहीं किया; वे स्वयं अक्सर धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होते थे, और सैन्य विजयों के बाद हमेशा धन्यवाद सेवाएं आयोजित करने का आदेश देते थे; अज़ोव (1697) पर विजय के बाद, उन्होंने वहाँ एक मठ की स्थापना की; बाद में, सेंट पीटर्सबर्ग में, उन्होंने अलेक्जेंडर नेवस्की मठ की स्थापना की और संत अलेक्जेंडर नेवस्की, धर्मनिष्ठ राजकुमार के अवशेषों को उस स्थल पर स्थानांतरित कर दिया – ये उनके जीवन के सुप्रसिद्ध तथ्य हैं। न ही वे चर्च के सिद्धांतों से अनभिज्ञ थे, जैसा कि उनके समकालीन ज़ार के साथ बातचीत से जान सकते थे[1013] ।

हालांकि पीटर हर चीज़ में सुधार और बेहतरी के लिए बहुत उत्सुक थे, उन्होंने 17वीं सदी में उनसे पहले की गई तरह के नवाचारों को पेश करने का—चाहे अपनी पहल पर या चर्च पदानुक्रम की ओर से—कोई प्रयास नहीं किया। शायद, अपनी सामान्य समझ और महान बुद्धि के कारण, उन्होंने निकोन के दृष्टिकोण में दोष को पहचाना: कि अपनी नवाचारों को पेश करने से पहले, निकोन को आध्यात्मिक शिक्षा में सुधार को प्राथमिकता देनी चाहिए थी, और तभी सुधार के साथ आगे बढ़ना चाहिए था। अपने समकालीनों में से किसी से भी बेहतर, पीटर समझ गए थे कि पुरोहित वर्ग और पूरी आबादी दोनों के शैक्षिक स्तर को बढ़ाना आवश्यक था; अन्यथा, रूस के नियोजित परिवर्तन को साकार नहीं किया जा सकता था। शायद इसका कारण यह भी था कि राज्य के भीतर चर्च की प्रकृति और भूमिका के बारे में उनका दृष्टिकोण रूसी पादरियों और रूसी लोगों की सोच से पूरी तरह से अलग था। पीटर का भरोसा ठीक पादरियों—विशेषकर बिशपों और मठवासी वर्ग—पर नहीं था। उन्होंने देखा कि बिशप और मठवासी वर्ग दोनों ही, न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, बल्कि राजनीतिक दृष्टिकोण से भी, उनके और उनके सुधारों के प्रति शत्रुतापूर्ण थे[1014] । क्या बिशप वर्ग, पुरोहित वर्ग और मठवासी समुदाय स्ट्रेल्त्सी विद्रोह में शामिल नहीं थे, जिसने उस पर इतना गहरा और भयानक प्रभाव डाला था? क्या उसे यह महसूस नहीं हुआ कि पैट्रिआर्क के सिंहासन के कार्यवाहक, स्टीफन यावोर्स्की, भी उसके द्वारा कल्पित सुधारों को आंतरिक रूप से स्वीकार नहीं करते थे? पीटर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि रूस के यूरोपीयकरण की उनकी योजनाओं का रूसी चर्च द्वारा समर्थन करने के लिए, उसे मौलिक रूप से रूपांतरित और सुधारित किया जाना होगा। केवल तब, जब पदानुक्रम और पुरोहित वर्ग में सुधार हो जाता, और शिक्षा उन्हें उसके हाथों में एक आज्ञाकारी उपकरण बना देती, तब ही चर्च जीवन में अधिक गहन सुधार का प्रयास करना संभव हो पाता। लेकिन पीटर के पास चर्च सुधार के लिए बहुत कम समय बचा था, इसलिए वह इसमें केवल वही हासिल कर

[1011] आध्यात्मिक विनियम। भाग 1। परिचय। पीएसजेड. 6. संख्या 3718। सैन्य विनियम। पीएसजेड. 5. संख्या 3006। अनुच्छेद 20।

[1012] पीटर की राज्य की अवधारणा पर, देखें: Stupperich. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 23.

[1013] उपरोक्त, पृ. 32.

[1014] सोलोव्योव। 17. पृ. 246। सभी बिशपों ने पीटर के सुधारों को नकारात्मक रूप से नहीं देखा। थियोफेंस उनके सबसे प्रमुख सहायकों में से एक थे। इसके अलावा, वोरोनेज़ के बिशप मित्रोफान का उल्लेख किया जाना चाहिए, जिनका, यह सच है, 1709 में ही निधन हो गया था; नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटन जॉब († 1716); और शायद ख्लोमोगोरी के आर्चबिशप अथानासियस, जिन्होंने पीटर के सुधारों की शुरुआत में उनका अनुकूल समर्थन किया था, हालांकि उनकी मृत्यु 1702 में ही हो गई थी। तुलना करें: स्क्वॉर्टसोव। पैट्रिआर्क एड्रियन। पृ. 112.

सका जसिे वह सबसे महत्वपूर्ण मानता था - राज्य और चर्च के बीच एक पूरी तरह से नए संबंध का नर्िमाण और उच्चतम धार्मकि प्राधकिरण का रूपांतरण।

चर्च सुधार के नकारात्मक पहलुओं का सारा दोष केवल पीटर पर मढ़ना अनुचति होगा। यदि उस समय रूसी पदानुक्रम में कम से कम एक ऐसा व्यक्ति होता जो उसकी सहायता करता और जसि पर उसे भरोसा होता, तो 1721 का चर्च सुधार एक बलि्कुल अलग स्वरूप ले लेता। लेकनि उस समय पदानुक्रम का नेतृत्व कायर और कपटी स्टीफन यावोर्स्की कर रहे थे, जो राजनीतकि और राजनयकि दूरदर्शति से वंचति थे, और जनिकी चर्च की वास्तवकि जरूरतों की कोई स्पष्ट समझ भी नहीं थी। जहाँ तक थयिोफान प्रोकपोवचि का सवाल है, इस बशिप को रूसी चर्च की भलाई की बहुत कम परवाह थी – वह एक स्वार्थी, महत्वाकांक्षी और प्रतशिोधी व्यक्ति था; पीटर के अधीन उसे कुछ हद तक खुद को संयमति करने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकनि सम्राट की मृत्यु के बाद उसके चरित्र के सभी बुरे गुण सामने आ गए।

संन्यासवाद और चर्च की संपत्तयिों के संबंध में पीटर के उपाय मुख्य रूप से ईसाई तपस्या के प्रति उनके नकारात्मक रवैये और मानवीय तथा सार्वजनकि जीवन में नष्क्रियिता और आलस्य के सभी रूपों से उनकी घृणा द्वारा समझाए जा सकते हैं, जो, उनके वचिार में, संन्यासी जीवन में सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त होता था। यदि मठों के पास कम भूमि होती, या बलि्कुल भी नहीं होती, तो पीटर शायद इस क्षेत्र में इतनी पूरी तरह से हस्तक्षेप नहीं करते। उनके लिए, यह भूमि राज्य के लिए लगभग खोई हुई जैसी थी; इसलिए, जैसे-जैसे सुधार लागू हुआ—एक ऐसी प्रक्रयिा जो उत्तरी युद्ध के साथ मेल खाती थी, जसिके लिए लगातार बढ़ते संसाधनों की मांग थी—उन्होंने राज्य के उद्देश्यों के लिए मठों की संपत्ति का सबसे कट्टरपंथी तरीके से उपयोग करने पर वशिेष ध्यान केंद्रति कयिा। दूसरी ओर, वे उपाय जो कसिी न कसिी तरह से मठवासी जीवन के आंतरकि क्रम में हस्तक्षेप करते थे, उनकी इस आशंका से प्रेरति थे कि मठवासी समुदाय राज्य और राजनीतकि दृष्टकिोण से एक शत्रुतापूर्ण तत्व था। पीटर को संप्रदायकि वभिाजन में मठों की व्यवस्था की भूमकिा का अच्छी तरह से पता था, जसिे वह न केवल धार्मकि बल्कि राज्य-राजनीतकि दृष्टकिोण से भी देखते थे; वह पश्चमिी संस्कृति के प्रति मठों की व्यवस्था की अरुचि से भी अवगत थे। संक्षेप में, पीटर को इसमें कोई संदेह नहीं था कि उनके समय की मठों की व्यवस्था सुधारों के कार्यान्वयन में केवल बाधा डाल सकती है[1015] . यह सब इस बात की व्याख्या करता है कि क्यों पीटर ने लगातार, एक चौथाई सदी तक, मठों के संघ को सचमुच सताया और मठवासी जीवन के बारीक-से-बारीक मामलों में भी हस्तक्षेप कयिा। उसने इसे सुधारने या कोई सुधार लाने के लिए लगभग कुछ भी नहीं कयिा; इसके वपिरीत, पीटर ने मठवाद के अधकिार को कमजोर करने और उसे शक्तहिीन बनाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी।

2. मठों, मठ संपत्तयिों और मठ संघ से संबंधति सरकारी उपाय

पीटर महान के चर्च सुधार ने रूस में एक राज्य चर्च की स्थापना की, और इसने चर्च संस्थानों, शक्तयिों और संपत्ति के लिए आधार तैयार कयिा कि वे तब से न केवल चर्च बल्कि राज्य की भी सेवा करें[1016] । 25 जनवरी 1721 को रूस में राज्य-प्रायोजति ईसाई धर्म के जन्म के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि उस दनि 'आध्यात्मकि वनियिम' साम्राज्य के भीतर रूसी चर्च की स्थति को परभिाषति करने वाला मूल कानून बन गया, हालांकि उस समय तक मठों से संबंधति व्यक्तगित सुधार पहले से ही पूरे ज़ोरों पर थे। इन उपायों में से पहले की शुरुआत 1696–1698 से हुई थी[1017] , जन्होंने धर्मनरिपेक्षता के एक लंबे युग की शुरुआत की, जसिका अंत 1764 में महारानी कैथरीन द्वतिीय के अधीन हुआ। यह 70-वर्षीय अवधि मठवासी जीवन में सुधार करने की तुलना में, मठवाद को ऐसी परस्थितियिों में रखने का एक प्रयास था जसिने रूसी चर्च के भीतर और लोगों के जीवन में इसकी स्थति को पूरी तरह से बदल दयिा—यह मठवाद को राष्ट्रीय जीवन की पृष्ठभूमि में धकेलने का एक प्रयास था। ये उपाय कभी-कभी, उदाहरण के लिए महारानी अन्ना इओनोव्ना (1730-1740) के शासनकाल के दौरान, उत्पीड़न का स्वरूप भी धारण कर लेते थे, जसिने आंतरकि मठवासी जीवन को पूरी तरह से अस्त-व्यस्त कर दयिा और जसिका स्थायी प्रभाव बना रहा, ताकि सनिोडल युग के दौरान मठवाद, यों कहें, एक सुन्न अवस्था में बना रहा। अपने अस्तत्वि के 200 वर्षों में, पवत्रि सनिॉड ने कई मौकों पर मठों

[1015] प्लातोनोव। व्याख्यान (1915)। पृ. 485.

[1016] धार्मकि वनियिमों को थयिोफैन प्रोकपोवचि ने पीटर के नर्िदेशों पर तैयार कयिा था। 25 जनवरी 1721 को, एक घोषणापत्र प्रकाशति कयिा गया जसिमें धार्मकि मामलों के कॉलेजयिम की स्थापना की घोषणा की गई (PSZ, संख्या 3718; तुलना करें: PSPiR, खंड 1, दूसरा संस्करण, संख्या 1), और 14 फरवरी को इसका आधकिारकि उद्घाटन कयिा गया। उस दनि, 'धार्मकि मामलों का कॉलेजयिम' नाम को बदलकर 'सर्वपवत्रि शासीन सनिाड' रखा गया। अधकि जानकारी के लिए, पी. वर्खोव्स्की देखें।

[1017] PSZ. 3. संख्या 1541 और 1664.

के मुद्दे पर गंभीरता से चर्चा की, लेकिन मठवासी जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की। ऐसा लगता था कि पवित्र सिनॉड—और वास्तव में समग्र रूप से सिनॉडल युग की रूसी धार्मिक पदानुक्रम—मठों की स्थिति से पूरी तरह से संतुष्ट थे। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मठवाद के पतन की स्थिति के लिए दोषी पीटर के धार्मिक सुधार या उसके प्रारंभिक उपाय नहीं, बल्कि 18वीं-19वीं शताब्दी का सिनोडल प्रशासन और रूसी बिशप वर्ग था।

एक चर्च संस्थान के रूप में मठवाद पर पीटर का दृष्टिकोण अपेक्षाकृत देर से तैयार किया गया था, अर्थात् 31 जनवरी 1724 के फरमान में, जिसे पीटर और थियोफान प्रोकोपोविच[1018] ने संयुक्त रूप से तैयार किया था। इस फरमान का शीर्षक भी अत्यंत विशेष है: 'एक घोषणा कि मठवासी क्रम कब और किस कारण से शुरू हुआ, प्राचीन संतों का जीवन-यापन कैसा था, और वर्तमान संतों का जीवन-यापन कैसे ठीक किया जाना चाहिए, यद्यपि यह एक निश्चित प्राचीन मॉडल के अनुसार है'। यह उन उपायों के लिए एक विलंबित औचित्य सिद्ध करने के अलावा और कुछ नहीं था जो पहले ही उठाए जा चुके थे और, साथ ही, जो अभी आने वाले थे। 'घोषणापत्र' में कहा गया है, 'सच्चे संन्यासी ऐसे थे कि वे न केवल लोगों से कोई मांग नहीं करते थे,' 'बल्कि वे यह भी नहीं चाहते थे कि लोग उन्हें देखें या उनके बारे में सुनें... तब जो हुआ वह यह था कि कुछ कट्टरपंथियों ने यूनानी सम्राटों से, और उनसे भी अधिक उनकी पत्नियों से संपर्क किया (संभवतः यह पीटर की पहली पत्नी, सम्राज्ञी यूडोक्सिया, और उनके रूढ़िवादी अनुचर दल का संकेत है। – आई. एस.), और मठ रेगिस्तानों में नहीं, बल्कि स्वयं शहरों और आस-पास के स्थानों में बनाए जाने लगे, और उन्होंने इस कथित पवित्र स्थल के लिए वित्तीय सहायता की मांग की; इससे भी बुरी बात यह थी कि वे स्वयं परिश्रम नहीं करना चाहते थे, बल्कि दूसरों की मेहनत पर जीना चाहते थे, जिसके लिए सम्राट... स्वयं... बिल्कुल इच्छुक साबित हुए। ...यह भी हमारे बीच बड़े पैमाने पर फैलने लगा... क्योंकि संतों का वर्तमान जीवन केवल दिखावा और अन्य कानूनों का मज़ाक है; और इससे बहुत बुराई उत्पन्न होती है, क्योंकि उनमें से अधिकांश आलसी हैं, और क्योंकि सभी बुराइयों की जड़ आलस्य है; कितनी अंधविश्वासी मान्यताएँ, फूट, और यहाँ तक कि उपद्रवी पैदा हुए हैं, यह सभी जानते हैं... क्या वे, तथापि, पवित्र शास्त्रों और सिद्धांत के अध्ययन में स्वयं को समर्पित करते हैं? कतई नहीं। और जहाँ तक उनकी प्रार्थनाओं का प्रश्न है, वे कहते हैं कि वे प्रार्थना करते हैं, और इस प्रकार वे सभी प्रार्थना करते हैं... लेकिन इससे समाज को क्या लाभ होता है? सच्चाई में, यह केवल एक पुरानी कहावत है: 'न तो ईश्वर के लिए और न ही लोगों के लिए', क्योंकि अधिकांश लोग करों और आलस्य से भागते हैं, ताकि वे मुफ्त में अपनी रोटी खा सकें। फिर भी इन आलसी लोगों के लिए एक जीवन का तरीका है—आलस्य का नहीं, बल्कि एक ऐसा जो ईश्वर को प्रसन्न करे और शर्मनाक न हो—अर्थात्, सच्चे गरीबों, बुजुर्गों और शिशुओं की सेवा करना।' 'घोषणापत्र' में पीटर के संन्यासवाद पर विचारों का औचित्य और मठों की संख्या कम करने तथा मठ संपत्तियों का राज्य के उद्देश्यों के लिए उपयोग करने के उनके सभी उपायों को प्रस्तुत किया गया है।

मठ व्यवस्था, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, 1677 में समाप्त कर दी गई थी, और अब, 1696 में, पीटर ने एक विशेष फरमान में, धर्मप्रांतीय बिशपों को मठों और धर्मप्रांतीय सिंहासनों की आय और व्यय का एक सटीक वार्षिक विवरण ग्रैंड पैलेस कार्यालय को प्रस्तुत करने का आदेश दिया; दो साल बाद, 1698 में, इस आदेश की पुष्टि की गई और अनाज के भंडार का विशेष रूप से विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता के साथ पूरक किया गया, साथ ही यह आदेश भी दिया गया कि ज़ार की अनुमति के बिना मठों में कोई निर्माण या मरम्मत नहीं की जाएगी[1019] । 24 जनवरी 1701 को, मठ कार्यालय को फिर से स्थापित किया गया[1020] । 1701 के फरमान और उसके बाद के अन्य फरमानों में मठों और मठ संपत्तियों का तत्काल सूचीकरण करने और भिक्षुओं की संख्या को सटीक रूप से निर्धारित करने की आवश्यकता थी; मठों को केवल उतने ही भिक्षुओं को बनाए रखने की अनुमति दी गई थी जितने कि धार्मिक सेवाओं का संचालन करने और संपत्तियों का प्रबंधन करने के लिए आवश्यक थे (इस प्रकार प्रत्येक मठ में स्थापित भिक्षुओं की संख्या को 'स्टाफ' कहा जाता था); जिन मठवासियों ने मठवासी संन्यास की

[1018] चिस्तोविच। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 139। 'संन्यास व्यवस्था कब और किन परिस्थितियों में शुरू हुई, इस पर घोषणा' शीर्षक वाला अध्यादेश, PSPiR. 4. संख्या 1197 में। पीटर ने 31 दिसंबर 1701 के दिनांक वाले एक अध्यादेश में अपने समय के संन्यासवाद का पहले ही नकारात्मक मूल्यांकन कर दिया था। PSZ. 4. संख्या 1886.

[1019] एएई. 4. संख्या 315; पीएसजेड. 3. संख्या 1664। 31 दिसंबर 1701 के फरमान ने भिक्षुओं के लिए 10 रूबल और 10 क्वार्टर रोटी का वार्षिक भत्ता निर्धारित किया; 1705 में इस भत्ते को आधा कर दिया गया, यह कटौती 1710 की तालिका में निर्णायक रूप से शामिल कर दी गई। गोर्चाकोव। भूमि स्वामित्व पर। पृ. 473; केद्रोव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 229। इस तालिका में एक भिक्षु के वार्षिक भत्ते को 6 रूबल और 5 चौथाई रोटी निर्धारित किया गया, जिसमें मठाधीश के लिए एक छोटा पूरक शामिल था। PSPiR. 4. परिशिष्ट। पृ. 333–335; इस तथ्य के संबंध में कि यह भत्ता भी हमेशा नहीं दिया जाता था, देखें: वही, 2. पृ. 998।

[1020] PSZ. 4. संख्या 1829; तुलना करें: संख्या 1834 भी।

शपथ नहीं ली थी, उन्हें बेदखल कर दिया जाना था; नए भिक्षुओं के मुंडन की अनुमति केवल तभी दी गई जब स्थापित संख्याओं में रिक्तियों की घोषणा की गई हो[1021] । 'भिक्षुओं से संबंधित आध्यात्मिक नियमों का परिशिष्ट' (1722)[1022] ने 30 वर्ष से कम आयु के पुरुषों के सिर मुंडवाने पर प्रतिबंध लगा दिया, जबकि महिलाओं के सिर केवल 50 और 60 वर्ष की आयु के बीच मुंडवाए जा सकते थे; अपवादों की अनुमति केवल सिनिड की प्राधिकरण से दी जाती थी; सैन्य कर्मियों और सरकारी कर्मचारियों के लिए सिर मुंडवाने पर पूरी तरह से प्रतिबंध था; कर्ज के बोझ तले दबे, विवाहित, या नाबालिग बच्चों वाले लोगों के लिए भी मठ में प्रवेश की अनुमति नहीं थी; दास केवल जमीन मालिक की अनुमति से ही मठ के संस्कार ले सकते थे; निरक्षर लोगों को केवल ज़ार या सिनिड की जानकारी से ही मठ में प्रवेश करने की अनुमति थी[1023] ।

एम. गोरचाकोव के अनुसार, 1701 का मठिक आदेश पूरे रूस के लिए सर्वोच्च केंद्रीय संस्था था, जो अपनी गतिविधियों के समग्र संदर्भ में पीटर के सुधारवादी उद्देश्यों को समर्पित था।[1024] 1720 में इसे समाप्त कर दिया गया, 1721 में पुनःस्थापित किया गया और यह 1724 के अंत तक संचालित रहा। इस अवधि के दौरान, मठ कार्यालय मठ जीवन से किसी न किसी रूप में संबंधित लगभग सभी मामलों में सर्वोच्च प्राधिकरण था। उपरोक्त 'आध्यात्मिक विनियमों का परिशिष्ट' ने सिनिड की अनुमति के बिना नए मठों की स्थापना पर प्रतिबंध लगा दिया; आश्रमों या स्केट्स के निर्माण पर निश्चित रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया; 30 से कम भिक्षुओं वाले छोटे मठों या आश्रमों को या तो बंद कर दिया जाना था या अन्य मठों के साथ मिला दिया जाना था; किसी मठ के बंद होने की स्थिति में, उसका चर्च एक पैरिश चर्च बन जाएगा; इसके अलावा, सिनिड को ज़रूरत पड़ने पर बड़े मठों को भी बंद करने की अनुमति ज़ार से मिली थी[1025] ।

'परिशिष्ट' (§ 35) में यह भी आवश्यक किया गया कि निरक्षर भिक्षुओं को पढ़ना और लिखना सीखना चाहिए; इस उद्देश्य के लिए, मठों में पाठों के लिए विशेष कोठरियाँ आरक्षित की जानी थीं; 1723 में एक नया फरमान जारी किया गया, जिसके अनुसार 30 वर्ष से कम आयु के सभी भिक्षुओं को शिक्षा के लिए मास्को के ज़ाइकोनोस्पासकी मठ में भेजा जाना था। यह तथ्य कि, 1723 और 1727 के बीच, केवल तीन भिक्षुओं को प्रशिक्षण के लिए भेजा गया था—जिनमें से दो बाद में फरार हो गए, जबकि चार ने अपनी मर्ज़ी से प्रशिक्षण के लिए खुद को प्रस्तुत किया (accord[1026])—इस बात को बखूबी दर्शाता है कि इस फरमान को धर्मप्रांत के बिशपों ने कैसे स्वीकार किया। 1724 के 'घोषणापत्र' में सेंट पीटर्सबर्ग और मॉस्को में दो धर्मशास्त्र सेमिनरी स्थापित करने का प्रस्ताव शामिल था, जिनके स्नातकों को बाद में उन्हीं सेमिनरी में शिक्षक बनना था; 30 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, वे, यदि वे चाहें, तो संन्यासी की शपथ ले सकते थे। इसके बाद, उन्हें अलेक्जेंडर नेवस्की मठ में तीन साल की परिवीक्षा अवधि से गुजरना पड़ता था और फिर उन्हें विद्वतापूर्ण कार्यों में नियोजित किया जाता था – उदाहरण के लिए, अनुवाद करना या उपदेश तैयार करना; ये विद्वान भिक्षु साधारण भिक्षुओं की तुलना में बेहतर भोजन और वस्त्र पाने के हकदार थे; बशर्ते वे उचित परिश्रम और अनुकरणीय आचरण दिखाएं, वे मठों के मठाधीश, धर्मशास्त्र महाविद्यालयों के प्राचार्य और धर्मप्रांतीय बिशपशिप के पदों के उम्मीदवार बन जाते थे[1027] . यह परियोजना, जो उस समय केवल कागज पर ही थी, में विद्वान संन्यासियों की एक भविष्य की श्रेणी के बीज निहित थे, जो, जैसा कि नीचे विस्तार से दिखाया जाएगा, रूसी चर्च के जीवन में एक सकारात्मक विकास नहीं था।

उद्योग की सभी शाखाओं में सुधार की पीटर की इच्छा यहाँ भी स्पष्ट थी, जिसमें व्यावहारिकता पर ध्यान और काल्पनिक आदर्शवाद का संयोजन था। उदाहरण के लिए, *प्रिबिवलेंये* पुरुषों के मठों में 'शिल्प शुरू करने' की सिफारिश करता है, जहाँ उन्हें बढ़ईगीरी और अन्य व्यवसाय अपनाने चाहिए; महिला मठों में, सुई का काम बहुत

[1021] उपरोक्त, संख्याएँ 1834, 1839, 1886, 1948।

[1022] यह 'परिशिष्ट' यहाँ मिलता है: PSPiR. खंड 2, संख्या 596; PSZ. खंड 6, संख्या 4022; इसे विनियमों के बाद के संस्करणों में भी शामिल किया गया है।

[1023] PSPiR. खंड 2, संख्या 596, 671; खंड 4, संख्या 1197.

[1024] गोर्चाकोव। मठवासी आदेश। पृ. 123; मठवासी आदेश के अधिकार क्षेत्र पर, देखें: वही। पृ. 123–128।

[1025] PSPiR. खंड 2, संख्या 596, §§ 44, 45, 48; खंड 4, संख्या 1200, 1244, 1379; खंड 3, संख्या 1091. 1724 की एक रिपोर्ट के अनुसार, भिक्षुओं की संख्या इस प्रकार थी: पुरुषों के मठों में – 14,534, महिलाओं के मठों में – 10,673, कुल 25,207। Chudetsky. An Essay on Research, in: TKDA. 1877. Vol. 4. p. 46.

[1026] PSPiR. 3. संख्या 1099, 1136; 5. संख्या 1929। तीन मठों (एंड्रोनिकोव्स्की, पेरेरवस्की और निकोल्स्की, तीनों मास्को धर्मप्रांत में) से मठ समुदाय को हटा दिया गया, और मठ परिसरों को स्कूलों के रूप में उपयोग के लिए हस्तांतरित कर दिया गया। PSPiR. 4. संख्या 1316, 1328, 1284.

[1027] PSPiR. 4. संख्या 1197. 2.

प्रचलित था, और 1724 के 'घोषणापत्र' में ब्रैबंट—अर्थात् लिल शहर—से 'कुशल' लेस-निर्माताओं को रूस लाने और उन्हें महिला मठों में शिक्षकों के रूप में भेजने का प्रस्ताव शामिल था[1028] । साथ ही, मठों और मठों की इमारतों का उपयोग धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए भी किया जाता था: कई मठों में अनाथों, बीमारों, मानसिक रूप से बीमारों और युद्ध के अपंगों को आश्रय दिया जाता था, कुछ मठ इतने भीड़भाड़ वाले हो गए थे कि इन लोगों को खिलाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था; कई भिक्षुओं को मठों से असभ्य और अपमानजनक तरीके से निकाल दिया गया, और मठों की संपत्तियाँ अनदेखी रह गईं। बाद में, मठों की अर्थव्यवस्था को बहाल करने के लिए मठ विभाग को निकाले गए भिक्षुओं को मठों में फिर से प्रवेश करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिसकी स्थिति कमजोर हो गई थी; मठों के नए निवासी, विशेष रूप से युद्ध के अपंग, अक्सर उत्पात मचाते थे, और इस तरह की लड़ाइयाँ और अन्य घटनाएँ होती थीं; कभी-कभी, मठों में डकैती भी होती थी[1029] ।

राज्य प्राधिकरणों ने, मठों के आंतरिक जीवन की उपेक्षा किए बिना, इसे सुधारने के उद्देश्य से कई फरमान जारी किए। 'आध्यात्मिक विनियमों का परिशिष्ट' बताता है कि मठाध्यक्षों का चुनाव मठवासी समुदाय द्वारा किया जाना चाहिए[1030] । इसमें यह भी शर्त थी कि मठों को सामुदायिक नियमों के अनुसार रहना चाहिए; मठवासी संन्यास ग्रहण करने के लिए शुल्क लेने पर प्रतिबंध था; एक भिक्षु की मृत्यु पर, उसकी कोठरी की हर चीज़ मठ या सिनिड के कब्जे में चली जाती थी, और भिक्षुओं को वसीयत बनाने से मना किया गया था; एक मठ से दूसरे मठ में स्थानांतरण—जो पहले काफी आम था—अब सख्त मना कर दिया गया था; एक भिक्षु को अपने जीवन में केवल एक बार ही ऐसा स्थानांतरण करने की अनुमति थी, और वह भी मठाधीश की लिखित अनुमति से। धर्मप्रांत के बिशपों को यह सुनिश्चित करने के लिए बाध्य किया गया था कि इस आदेश का सख्ती से पालन किया जाए। मठाध्यक्षों को मठ समुदाय का एक रजिस्टर रखने और फरार हो जाने वाले किसी भी भिक्षु के लिए उत्तरदायी ठहराया जाना आवश्यक था; फरार भिक्षुओं को गिरफ्तार होने पर बेड़ियों में जकड़ दिया जाता था। मठ छोड़ने की अनुमति केवल मठाध्यक्ष की अनुमति से और अल्पकालिक अवधि के लिए[1031] ही दी जाती थी। मठ में जीवन को भिक्षुओं के परिचितों या रिश्तेदारों के दौरे से बाधित नहीं किया जाना था। हालांकि, भिक्षुओं को साल में चार बार अपने रिश्तेदारों से मिलने की अनुमति थी, लेकिन हर बार मठाधीश की अनुमति से; दूसरी ओर, भिक्षुणियों को यह भी मना था, और वे केवल किसी बुजुर्ग और भरोसेमंद साथी भिक्षुणी के साथ ही अपने रिश्तेदारों से मिल सकती थीं, और वह भी केवल किसी की बीमारी या मृत्यु की स्थिति में। भिक्षुओं को याचिकाएँ या किसी भी प्रकार की विरोधी प्रकृति की कोई भी रचना लिखने से रोकने के लिए, उन्हें अपने सेलों में लिखने का कागज, स्याही और कलम रखने पर सख्त मनाही थी[1032] ।

1720 में, मठ प्राधिकरणों को आदेश दिया गया कि वे मठों में रखे गए सभी प्रदान किए गए और निर्विवाद चार्टर और इस प्रकार की अन्य 'विशेष वस्तुओं' को बिना किसी देरी के मठ कार्यालय को भेज दें और अब से उन्हें मठों में न रखें। इस उपाय के कारण, मठ कार्यालय को मठों की जमीनों से संबंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज़ प्राप्त हुए: इससे पहले, कार्यालय के पास लगातार दस्तावेजों की कमी थी और वह मठ संबंधी मामलों की एक स्पष्ट तस्वीर

[1028] PSPiR. 2. संख्या 596. § 18; 4. संख्या 1197. 1. § 12.

[1029] PSPiR. खंड 2, संख्या 596, §§ 46 और 47; संख्या 997; खंड 3, संख्या 1153; 2. संख्या 536, 595; 1723 में, एक विशेष अध्यादेश जारी किया गया था जिसमें यह प्रावधान था कि 'सेवानिवृत्त सैनिकों' को मठ के कर्मचारियों में 'खाली पदों पर नियुक्त किया जाना चाहिए', जिसे बाद में रद्द कर दिया गया। PSZ. संख्या 4141, 4455, 4672. 'परिशिष्ट' के अनुसार, चुदोव और वोज़नेसेन्स्की जैसे कुछ मठों को अपने परिसरों में अस्पताल और रात्रि आश्रय स्थापित करने के लिए कहा गया था, जबकि नोवोदेविची कॉन्वेंट को एक अनाथालय स्थापित करना था। PSPiR. 2. संख्या 1279. 1724 के 'घोषणापत्र' में मठों को अस्पतालों में बदलने की एक योजना शामिल थी, ताकि कुछ भिक्षु बीमारों की देखभाल करें, जबकि अन्य, 'कैसिन भिक्षु', इन अस्पतालों का समर्थन करने के लिए भूमि पर काम करें। PSPiR. 2. संख्या 1197. 1. §§ 1–8. कई फरमानों के माध्यम से, पीटर ने युद्ध के अपंगों के समर्थन की जिम्मेदारी मठों और उनकी जमीनों पर डालने का प्रयास किया: PSZ. खंड 4, संख्या 1856 (1701); खंड 5, संख्या 3409 (1719); खंड 7, संख्या 4183 (1723); संख्या 4450. भाग 1. §§ 1 और 3 (1724); तुलना करें: 6. संख्या 3576, जहाँ 8 अप्रैल 1720 के फरमान को अमान्य घोषित किया गया है।

[1030] PSPiR. 2. संख्या 596. § 49. केवल नव-स्थापित अलेक्जेंडर नेवस्की मठ के मठाधीश की नियुक्ति सरकार द्वारा की गई थी; इस प्रावधान की पुष्टि बाद के फरमानों द्वारा की गई थी। PSZ. संख्या 2959; § 50 में मठाध्यक्षों को मठों का संचालन मठवासी चार्टर के अनुसार करने और एक सहायक रखने का निर्देश है, जो मठाध्यक्ष की बीमारी या अनुपस्थिति की स्थिति में मठ का प्रशासन संभाल सके। आध्यात्मिक विनियम। बिशपों पर अध्याय। § 7.

[1031] PSPiR. खंड 2, संख्या 596, §§ 30, 51–53, 31–33; संख्या 426 और 954; खंड 4, संख्या 1456; आध्यात्मिक विनियम। बिशपों पर अध्याय। § 8; PSZ. संख्या 1834, 2985, 3172.

[1032] आध्यात्मिक विनियमों का परिशिष्ट। PSPiR. खंड 2, संख्या 596; खंड 2, संख्या 984; PSZ. संख्या 1834.

बनाने में असमर्थ रहा था, जैसा कि 1701 में कराई गई कसिान परविारों की जनगणना से स्पष्ट होता है, जब कुछ धर्मप्रांतों ने कोई भी जानकारी प्रस्तुत नहीं की[1033] ।

यह आदेश मठों, मठ संपत्तयिों और उनमें रहने वाले व्यक्तयिों पर अधकिार क्षेत्र के प्रश्न से नकिटता से जुड़ा था। भक्षिु वभिाग की पुनःस्थापना के साथ, 1667 की परषिद के फरमान आधकिारकि रूप से रद्द नहीं कएि गए थे, क्योंकि उन्हें केवल एक नई परषिद के फरमान द्वारा ही नरिस्त कयिा जा सकता था; बल्कि, वे सरकारी फरमानों के परणिामस्वरूप प्रभावी होना बंद हो गए। यह पादरयिों और चर्च की संपत्तयिों के अधकिार क्षेत्र के मामलों में, 1649 के संहति द्वारा स्थापति कानूनी मानदंडों की बहाली के अलावा और कुछ नहीं था। 1701 से पहले भी, कई राजनीतकि मुकदमों में—वशिषकर 1682 और 1698 के स्ट्रेल्त्सी वद्रिोहों से संबंधति मुकदमों में—चर्च के प्रतनिधियिों की भागीदारी के बनिा ही पादरयिों और भक्षिुओं से पूछताछ की गई और उन्हें दोषी ठहराया गया, जो 1667 के फरमान का उल्लंघन था। मठ कार्यालय अक्सर चर्च के प्रतनिधियिों के बनिा, धर्मनरिपेक्ष न्यायाधीशों के माध्यम से कानूनी मामलों का नरि्णय करता था। इसके अलावा, कई मुकदमे मठ कार्यालय में भी नहीं, बल्कि रूपांतरण कार्यालय में चलाए गए - जो कि ज़ार का एक प्रकार का नजिी चान्सलरी था[1034] ।

28 जनवरी 1725 को, पीटर महान का नधिन हो गया। उनके नधिन के बाद, मठवासी व्यवस्था से संबंधति नए सरकारी उपाय न केवल उनकी नीतयिों को जारी रखे हुए थे, बल्कि वशिेष रूप से महारानी ऐनी (1730-1740) के अधीन और भी कठोर साबति हुए। कैथरीन प्रथम (1725–1727) के अधीन, पीटर के कई फरमानों को सबसे पहले फरि से पुष्ट कयिा गया। उदाहरण के लएि, यह आदेश दयिा गया कि जो भक्षिु अपने मठों से भाग गए थे, उनसे उनका भक्षिु का दर्जा छीन लयिा जाए, उन्हें एक धर्मनरिपेक्ष अदालत के सामने पेश कयिा जाए और सार्वजनकि रूप से कोड़े मारे जाएं; यह भी आदेश दयिा गया कि बीमार, युद्ध के अपंग, मानसकि रूप से बीमार और यहां तक कि दोषी अपराधयिों (कैदयिों) को मठों में भेजा जाए; वधिुर पुरोहतिों को ही भक्षिु बनाने की अनुमति थी, जबकि अन्य को संन्यास ग्रहण करने की अनुमति के लएि सनिाड से याचकिा देनी पड़ती थी। एक फरमान, जसिे पहले कोई खास सफलता नहीं मलिी थी, ज़ाइकोनोस्पासकी मठ से संबद्ध स्कूल में युवा नवसखियिों को भेजने के संबंध में फरि से जारी कयिा गया। वास्तव में, यह फरमान अब नरिर्थक हो गया था, क्योंकि पहले लागू कएि गए सभी उपायों के बाद, मठों में अब कोई युवा नवसखिी ही नहीं बचे थे[1035] ।

चूंकि भक्षिुओं की संख्या, वशिेष रूप से कम सदस्यों वाले मठों में, में भारी गरिावट आई थी, पीटर द्वतिीय (1727–1730) के शासनकाल के दौरान कई अध्यादेश जारी कएि गए जन्हिोंने इस श्रेणी के मठों के खलिाफ पहले उठाए गए उपायों को नरम कर दयिा। कई छोटे मठ फरि से खोले गए, और मठवासी समुदाय उनमें लौट आया[1036] । पीटर द्वतिीय के शासन का संक्षप्ति काल, जसिके दौरान थयिोफान प्रोकॉपोवचि ने सनिाड और सामान्यतः चर्च प्रशासन में अपनी पूर्व भूमकिा अस्थायी रूप से खो दी थी, मठवासी व्यवस्था को वभिन्नि रयिायतें देने और वरिोध की भावनाओं के पुनरुत्थान का समय था। कुछ समय के लएि, पैट्रआर्केट को बहाल करने का वचिार पुनर्जीवति हुआ। नाबालगि पीटर के अनुचर दल में (1727 में वह केवल 11 साल का था), प्रसि ए. जी. डोलगोरुकी के रूढ़वािदी-मनोवृत्ति वाले परविार ने एक प्रमुख भूमकिा नभिाई; उनकी सबसे छोटी बेटी, एकेतेरनिा, की सगाई युवा सम्राट से हुई थी। पीटर द्वतिीय, पीटर महान के पुत्र, दुर्भाग्यशाली त्ज़ारेवचि अलेक्सी के पुत्र थे, जनिसे वरिोधी चर्च हलकों ने भी अपनी उम्मीदें लगाई थीं; डोलगोरुकी और चर्च पदानुक्रम के कुछ सदस्यों ने युवा पीटर द्वतिीय के शासनकाल के दौरान पीटर महान के चर्च सुधारों के परणिामों को उलटने का सपना देखा। लेकनि 18 जनवरी 1730 को चेचक से पीटर द्वतिीय की अचानक मृत्यु ने इन योजनाओं को वफिल कर दयिा[1037] ।

[1033] ज़नामेंस्की। पीटर महान के अधीन चर्च संपत्तयिाँ, में: कानूनों का संग्रह 1864। खंड 1। पृ. 140; गोर्चाकोव. द मोंस्टकि ऑफसि. पृ. 131. 1701 में, मठ कार्यालय ने मठ भूमपिर केवल 137,823 कसिान परविारों को दर्ज कयिा, जसिमें अस्त्रखान, पस्कॉव और साइबेरयिा के धर्मप्रांत शामलि नहीं थे, जो इसके अधकिार क्षेत्र में नहीं थे।

[1034] 16 दसिंबर 1700 के एक फरमान में यह नरि्धारति कयिा गया था कि पादरयिों और सामान्य लोगों के बीच सभी ववािदों को सक्षम अधकिारयिों के पास भेजा जाना था। पीएसजेड. संख्या 1818। गोर्चाकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृष्ठ 132–136, 195। पूरे साम्राज्य के सर्वोच्च शासी नकिाय के रूप में सीनेट की स्थापना के साथ, मठ कार्यालय को इसके अधकिार के अधीन कर दयिा गया। PSZ. 4. संख्या 1829, 1834; तुलना करें: संख्या 2321, 2349, 2571, आदि। तुलना करें: ज़ाव्यालोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 64।

[1035] PSPiR. 5. संख्या 1678, 1778, 1492, 1787.

[1036] उपरोक्त. संख्याएँ 1716, 1767, 1772, 1786, 1907। लयिोनदि, आर्चमिांड्राइट। 'कलुगा धर्मप्रांत में स्थति रद्द कएि गए मठों पर', में: रीडग्सि। 1862। खंड 2। पृ. VI।

[1037] वेर्खोवस्कोय। पूर्वोक्त। 1. पृ. XXVI–XXVII; संग्रह। 63. पृ. 696 ff., 793; जॉर्जी दाश्कोव, में: RBS. पृ. 135; प्लाटोनोव। व्याख्यान। पृ. 546. यह भी देखें: बाह्नसन। स्टैम-उन्ड रेगेन्टेनटैफ़ेलन। खंड 3. संख्या 81.

सम्राज्ञी अन्ना इओआनोव्ना (1730–1740) का दस वर्षीय शासन रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण था, और सबसे कठिन था मठवासी समुदाय के लिए[1038] । बाद में, महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में, प्रतिभाशाली उपदेशक आर्चबिशप दिमित्री सेचेनोव ने अन्ना के शासनकाल को 'दुर्भाग्यपूर्ण काल' के रूप में वर्णित किया: 'ईसाई सिद्धांत... को केवल किंवदंतियों तक सीमित कर दिया गया और उनका कोई सम्मान नहीं किया गया; ईश्वर के पवित्र संतों का सम्मान नहीं किया गया; प्रेरितों और पवित्र पिताओं की परंपराओं को खारिज कर दिया गया। और सबसे बढ़कर, धर्मपरायणता के रक्षकों, यानी पादरियों – बिशपों, पुरोहितों और भिक्षुओं के खिलाफ कितना उत्पीड़न हुआ, उन्हें यातना दी गई, फांसी दी गई और पदच्युत कर दिया गया... भिक्षुओं, पुरोहितों और धर्मनिष्ठ लोगों को दूर के साइबेरियाई शहरों में ले जाया गया... और वे इससे इतने भयभीत हो गए कि यहाँ तक कि स्वयं चरवाहे, स्वयं परमेश्वर के वचन के प्रचारक, चुप हो गए और उन्होंने धर्मपरायणता के बारे में मुँह खोलने की हिम्मत नहीं की[1039] । यह 'जर्मन प्रभुत्व' का युग था, 'जिनके लिए स्वर्ण युग अभी-अभी शुरू हुआ था', के. स्टेलिन अपनी *रूस का इतिहास* में लिखते हैं। – 'वे महान राज्य के पूर्ण स्वामी बन गए।' बिरौन 'हर रूसी चीज़ को तिरस्कार की दृष्टि से देखता था', और 'समय के साथ, उसने इस तिरस्कार को कम और कम छिपाया, जिससे विदेशी जुए के खिलाफ रूसी लोगों का गुस्सा - जो पहले से ही पूरी तरह से उचित था - दोगुना समझ में आता है; यह तिरस्कार इस व्यक्ति पर रूसी इतिहास-लेखन के फैसले को समझाने में भी काफी हद तक मदद करता है, जिसमें स्पष्ट रूप से एक पूर्ण राजनेता बनने के लिए आवश्यक गुणों का अभाव था। उसे घोड़ों का एक बेहतरीन पारखी माना जाता था, लेकिन रूसी उसे अपने ही लोगों की उतनी ही अच्छी समझ रखने का श्रेय नहीं देते थे, भले ही उसे महारानी के बाद दूसरे सबसे ऊँचे पद पर रखा गया था।[1040] । जर्मनों का प्रभुत्व आबादी के सभी वर्गों में घृणा और भय उत्पन्न कर गया। घमंडी प्रिय बिरौन; निर्दयी ऑस्टरमैन, जिसने ठोस कूटनीतिक कौशल को षड्यंत्रकारी स्वभाव के साथ जोड़ा था; महारानी स्वयं, जो बौद्धिक रूप से सीमित थीं और जिनका स्वभाव अत्यंत कठोर और क्रूर था[1041] ; और अंत में, गुप्त चान्सलरी, जहाँ बिरौन के एजेंट ही असल में फैसला करते थे – ये वे लोग थे जो रूस पर शासन करते थे, और उनकी शक्ति के उपकरण निर्वासन और फाँसी का तख्ता थे[1042] ।

उस समय, पीटर की धार्मिक नीति के मुख्य वास्तुकार थियोफेंस प्रोकपोविच थे, जिन्होंने अन्ना और बिरौन का विश्वास जीतने में कामयाबी हासिल की थी[1043] । अपनी मृत्यु (1736) तक, थियोफेंस सिनेड में एक सर्वशक्तिमान पदाधिकारी थे और अब वे अपने सभी पूर्व शत्रुओं से बदला लेने में सक्षम थे। 1731 की शुरुआत में ही, सिनेड मंत्रियों की कैबिनेट के पूरी तरह से अधीनस्थ हो गया था, जिसका नेतृत्व ऑस्टरमैन कर रहे थे[1044] । पिछले फरमानों को नए फरमानों द्वारा पुनःपुष्टि की गई और उन्हें और सख्त बना दिया गया; धर्मप्रांत के बिशपों को अपने अधिकार क्षेत्र में आने वालों द्वारा किए गए मामूली से मामूली अपराधों के लिए भी पूरी तरह से जिम्मेदार ठहराया गया, और 100 रूबल का जुर्माना लगाया गया; बाद में, 1734 में, कानून को दरकिनार कर भिक्षु की शपथ लेने पर जुर्माना – क्योंकि ऐसा करने की अनुमति केवल विधुर पुरोहितों और सेवानिवृत्त सैनिकों को ही थी – बढ़ाकर 500 रूबल कर दिया गया, जबकि मठ के मठाधीश को आजीवन निर्वासन की सजा दी गई, और नए मुंडित भिक्षु को उसके मठवासी पद से हटा दिया

[1038] अन्ना की चर्च नीति पर, देखें: टिट्लिनोव, बी. द रेन ऑफ़ अन्ना इओआनोव्ना (1905); चिस्तोविच, फेओफ़ान प्रोकपोविच। पृ. 316 आदि; वेरखोवस्कोय। उद्धृत कृति। पृ. XXXII आदि। एम्प्रेस एलिजाबेथ के घोषणापत्र में अन्ना के शासनकाल का वर्णन भी देखें। PSZ. 11. संख्या 8506.

[1039] 25 मार्च 1742 को दिया गया उपदेश, में: पोपोव, एन. महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल के दौरान दरबारी उपदेशक, में: टिकोहनरोव। क्रॉनिकल। 2. पृ. 12। आर्चमैंड्राइट किरिल फ्लोरिंस्की ने बिरौन और उसके एजेंटों को 'शैतान के दूत' कहा। सोलोवियोव। 21. पृ. 182।

[1040] स्टेडहलिन. 2. पृ. 222, 223.

[1041] तुलना करें: श्चेरबातोव, एम. एम., 'रूस में नैतिकता के पतन पर', *रूसी लेख 1870* में। खंड 7, पृ. 50. अन्ना की चर्च नीति को लागू करने में ए. आई. ऑस्टरमैन की भूमिका पर, देखें: मॉन्यूमेंट्स ऑफ रशियन हिस्ट्री। संपादक काश्पिरोव (1873)। खंड 3, पृ. 260; पीएसजेड। खंड 11, संख्या 8506।

[1042] प्लातोनोव। व्याख्यान। पृ. 552; कोर्साकोव, डी. 'अन्ना इओनोव्ना', आरबीएस में; बिरौन पर: स्ट्रोव, वी. 'द बिरौन युग और मंत्रियों का कैबिनेट' (1909)। संस्मरण अन्ना के युग के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत हैं: मैनस्टीन, जनरल। रूस पर ऐतिहासिक, राजनीतिक और सैन्य संस्मरण, 1727 से 1744 तक। लेखक की जीवनी के साथ, ह्यूबर्ट द्वारा संकलित (लाइपज़िग, 1771; जर्मन में: वही, 1771; रूसी में: रस्कीये इज्वेस्टिया, 1875)।

[1043] चिस्तोविच। उद्धृत कृति, पृ. 257, 295, 316; टिट्लिनोव। उद्धृत कृति, पृ. 146, 162।

[1044] PSPiR. 7. संख्या 2505 और 2531 (दोनों 1731 दिनांकित)। मंत्रिपरिषद् की स्थापना 1 नवंबर 1731 को 'राज्य और हमारे वफादार प्रजा के लाभ के लिए' की गई थी, जैसा कि फरमान में कहा गया है। PSZ. 8. संख्या 5871; सिनाड को मंत्रिपरिषद् को मासिक रिपोर्ट ('रिपोर्टें') प्रदान करने के लिए बाध्य किया गया था।

गया और शारीरकि दंड दयिा गया[1045] । धर्मप्रांत के बशिपों को धर्मनरिपेक्ष संस्थानों में अपने प्रतनिधियिों के रूप में भक्षिुओं को भेजने, या उनके माध्यम से वहाँ बातचीत करने से मना कयिा गया[1046] । मठाध्यक्षों को न केवल अपने मठों के भीतर व्यवस्था बनाए रखने के लिए, बल्कि संतों द्वारा कए गए सभी अपराधों की सीधी रपिोर्ट सनिेड को देने के लिए भी बाध्य कयिा गया था; दोषी पाए गए लोगों को या तो सेना में भर्ती कर दयिा जाता था या साइबेरयिाई खदानों में नर्विासति कर दयिा जाता था। सनिाड को न्यायकि मामलों से पूरी तरह से बाहर रखा गया था; उसे केवल दोषयिों से उनका मठवासी दर्जा छीनना था, लेकनि यह भी वह सरकार के नर्दिेशों पर ही करती थी[1047] । उस समय के मठवासी जीवन का एक अच्छा उदाहरण वह स्थति है जहाँ मॉस्को एसेन्शन कॉन्वेंट का संचालन एक वर्ष से अधकि समय तक मठ की प्रमुख के बजाय सेमेनोव्स्की रेजमिेंट के एक कप्तान द्वारा कयिा गया था, जो उस समय सेंट पीटर्सबर्ग में पूछताछ के लिए लाई गई थीं[1048] ।

तथाकथति 'भक्षिुओं की जांच' मठवासी जीवन और मठवासी समुदाय के लिए वशिेष रूप से वनिाशकारी थी। इन जांचों के दौरान, कई भक्षिुओं को मुख्य रूप से राजनीतकि आरोपों पर उनके मठों से नकिाल दयिा गया – युवाओं को सेना में भर्ती कर लयिा गया, जबकि बुजुर्गों से उनका भक्षिु का दर्जा छीन लयिा गया और उन्हें उराल या साइबेरयिा में जबरन श्रम करने के लिए भेज दयिा गया। ये शुद्धकिरण उपरोक्त गुप्त चान्सलरी द्वारा कए गए थे, और परणिामस्वरूप, मठाधीशों की संख्या में काफी गरिावट आई। जबकि 1724 में, रपिोर्ट के अनुसार, मठों में 25,207 भक्षिु और भक्षिुणयिाँ थीं, अन्ना के शासनकाल के अंत तक उनकी संख्या घटकर केवल 14,282 (7,829 भक्षिु और 6,453 भक्षिुणयिाँ) रह गई थी। सम्राज्ञी की मृत्यु के बाद, जनिके शासनकाल में रूसी चर्च को बहुत कठनिाइयों का सामना करना पड़ा था, सनिाड ने सरकार के लिए एक रपिोर्ट तैयार की, जसिमें मठवासी जीवन के पतन की एक चौंकाने वाली तस्वीर पेश की गई थी: कुछ मठ पूरी तरह से खाली थे, जबकि अन्य में इतने कम भक्षिु बचे थे, और वे इतने कमजोर हो गए थे, कि दविि्य सेवाओं का संचालन करने वाला कोई नहीं था; जांच के दौरान, मठों के एक वशिेष रूप से बड़ी संख्या में मठाध्यक्षों को हटा दयिा गया और हरिासत में ले लयिा गया , और मठों का प्रशासन अत्यंत दयनीय स्थति में था; मठों के दैनकि जीवन में मठवासी जीवन के लक्षण भी नहीं थे; धर्मशास्त्र सेमनिारयिों में शक्षिकों की कमी थी, और उनकी जगह लेने के लिए बुलाने के लिए कोई नहीं था। सनिड की रपिोर्ट ने नष्किर्ष नकिाला कि रूस में मठवाद पूर्ण वनिाश के कगार पर था; इसलिए, सनिड ने अनुरोध कयिा कि मिठाधीशों के दीक्षा-संस्कार की अनुमति एक बार फरि से दी जाए, तीन साल की अवधि के बजाय केवल छह महीने के नवोदति प्रशक्षिण के बाद। रीजेंट अन्ना की सरकार ने इस याचकिा को अनुकूल रूप से स्वीकार कयिा और इसे मंजूरी दे दी[1049] ।

यह स्पष्ट है कि, चर्च की ऐसी नीति के कारण—जसिके लिए सरकार के पास न तो कोई औचति्य था और न ही कोई तर्कसंगत आधार—चर्च जीवन एक नरिाशाजनक तस्वीर प्रस्तुत कर रहा था। लेकनि उस समय सरकार की सामान्य नीति के संबंध में रूसी जीवन के अन्य पहलुओं के लिए भी यही सच था, क्योंकि देश और उसके लोगों को पूर्ण रूप से तरिस्कार और घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। एस. प्लाटोनोव लखिते हैं, 'जर्मनों का शासन दस साल तक चला,' 'दस साल जनिके दौरान रूसी लोगों की सबसे पवति्र सहानुभूति और भावनाओं का अपमान कयिा गया'[1050] ।

सम्राज्ञी एलजिाबेथ (1741–1761) के अधीन, चर्च और मठवासी व्यवस्था अंततः स्वतंत्र रूप से सांस ले सकीं। कम से कम, धर्मनष्ठि सम्राज्ञी ने उन उपायों का सहारा नहीं लयिा जो उनके शासन से पहले आम थे, लेकनि कई मुद्दों पर वह अपने पति, पीटर द ग्रेट द्वारा अपनाई गई नीति के प्रति वफादार रहीं। उनकी व्यक्तगित धार्मकि नष्ठि ने उन्हें चर्च पर अनावश्यक हमलों से रोका, लेकनि उनकी चर्च नीति प्रशासनकि नीति के सामान्य सद्धिांतों द्वारा नर्धिारति की गई थी[1051] . भक्षिुओं की सफ़ाई बंद हो गई, और महारानी ने राज्य के खर्च पर दो वशिेष रूप से पूजनीय मठों – वालाम और कोनेव्स्की – के पुनर्स्थापन की अनुमति दी, जो 18वीं सदी में उठाए गए उपायों के परणिामस्वरूप पूरी तरह से खस्ताहाल हो गए थे। उन्होंने यह भी आदेश दयिा कि ट्रनिटिी-सर्गेयस मठ को एक लाव्रा

[1045] PSZ संख्याएँ 6177, 6189, 6574, 6561, 6585.

[1046] PSZ संख्या 7993.

[1047] PSZ संख्या 7660 और 7538, साथ ही संख्या 8543।

[1048] ज़ाव्यालोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 72।

[1049] एन. एम. रूसी मठवाद 18वीं सदी में, में: स्ट्रानकि. 1884. खंड 1. पृ. 212, 435 आदि; पीएसजेड. संख्या 8303, 8309, 9382.

[1050] प्लातोनोव। व्याख्यान। पृ. 556.

[1051] एलजिाबेथ की चर्च नीति पर, देखें: वेदेन्यापनि, पी. 'ऑर्थोडॉक्स पुरोहति वर्ग के संबंध में महारानी एलजिाबेथ पेट्रोव्ना का वधिान', *प्रव. ओब.* 1865 में। अंक 5, 7, 10; ज़नामेंस्की, पी. 'पीटर के सुधारों के समय से रूस में पैरशि पुरोहति वर्ग' (1873)। पृ. 242, 441–459; वही, 1808 के सुधार से पहले रूस में धर्मशास्त्रीय स्कूल (1881)। पृ. 175 ff., 188। एलजिाबेथ की एक और दलिचस्प जीवनी है: बेन, एन. द डॉटर ऑफ पीटर द ग्रेट (वेस्टमंस्टिर, 1891)।

घोषति कयिा जाए (1744); कई मठों को वत्तिीय सहायता मलि[1052] । हालाँकि, मठवासी संस्कारों को लेने पर सरकार का नयिंत्रण बना रहा; केवल दक्षणिी रूस के धर्मप्रांतों (लटिलि रूसी मठों) में ही बशिपों और कीव-पेचेरस्क लाव्रा के मठाधीश को अपनी ववि्क-बुद्धि से टोंसुर संस्कार करने का अधकिार था। 1761 में, अपनी मृत्यु से ठीक पहले, महारानी ने एक फरमान जारी कयिा जसिमें मुक्त मठवासी दीक्षा की अनुमति दी गई। उनके शासनकाल के दौरान, मठ युद्ध के अपंगों, वृद्ध सैनकिों, मानसकि रूप से बीमार और कशिोर अपराधयिों के लिए आश्रय के रूप में काम करते रहे। 1758 में, एक योजना पर चर्चा की गई जसिके तहत इन नविासयिों को मठों से हटाकर उनके लिए वशिेष आश्रय बनाए जाने थे, और इन आश्रयों का रखरखाव मठों की भूमि-धारति का उपयोग करके कयिा जाना था; हालाँकि, यह योजना केवल कागज पर ही रह गई[1053] । पीटर तृतीय (1761–1762) के अधीन, स्वेच्छा से संन्यास ग्रहण करने पर प्रतबिंध न केवल ग्रेट रूस के धर्मप्रांतों में बल्कि दक्षणिी रूस के धर्मप्रांतों में भी फरि से लगाया गया[1054] ।

इन सभी नीतयिों के परणिामस्वरूप, जन्हिोंने मठवासी जीवन के नर्मिाण की तुलना में अधकि वनिाश कयिा, मठवाद एक दयनीय स्थतिि में आ गया। 1762 तक, केवल 7,659 भक्षिु और 4,733 भक्षिुणयिाँ ही बची थीं, जो 1740 की संख्या से भी कम थीं[1055] मठों के आंतरकि जीवन की एक स्पष्ट तस्वीर बनाने के लिए हमारे पास 18वीं सदी के पहले छमाही की बहुत कम सामग्री है। असंख्य फरमान और आदेश सटीक तस्वीर नहीं देते हैं: हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें कसिी वशिेष पक्षपात के साथ (वशिेष रूप से अन्ना के शासनकाल के दौरान) तैयार कयिा गया था, ताकि किसी एक या दूसरे उपाय को सही ठहराया जा सके। इन उत्पीड़नों ने मठजीवन को पुनर्जीवति करने में बहुत कम योगदान दयिा। उस समय आध्यात्मकि शक्ति और ऊर्जावान, प्रतभिाशाली व्यक्तयिों की कमी थी जो मठजीवन को पुनर्जीवति करने का सही मार्ग खोज सकें। बाद में, 18वीं सदी के दूसरे छमाही में, इस दशिा में कुछ प्रयास कएि गए, लेकनि ई से पहले मठवासी समुदाय को राज्य प्राधकिरणों द्वारा कएि गए एक और सुधार को सहना पड़ा; जसिकी आवश्यकता, एक ओर, लंबे समय से ज़रूरी थी, लेकनि दूसरी ओर, इसका कार्यान्वयन कई खामयिों से भरा था। फरि भी, इस सुधार ने मठवासी जीवन के धर्मनरिपेक्षीकरण में योगदान देने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारणों को समाप्त कर दयिा, ताकि, अंतत; आंतरकि मठवासी जीवन के एक व्यापक सुधार पर वचिार करना संभव हो गया।

3. 1764 का धर्मनरिपेक्षीकरण

1764 के धर्मनरिपेक्षीकरण ने उन उपायों की एक शृंखला का चरमोत्कर्ष चह्निति कयिा, जन्हिोंने केवल मठों के अपनी भूमकिा उपयोग करने के अधकिारों को प्रतबिंधति कयिा था और उनकी आय का एक हस्सिा सीधे राज्य कोषागार में भेज दयिा था, जबकि स्वामतिव का अधकिार पहले की तरह मठों के पास ही रहा। इसके कारण इस तथ्य में नहिति थे कि पीटर महान ने कोई वशिेष योजना नहीं बनाई थी, और उनके उत्तराधकिारी आधे-अधूरे उपायों से ही संतुष्ट थे। मठों की जमींदारयिाँ एक ऐसा स्रोत बन गईं जसिसे सरकार जब भी पैसे की ज़रूरत होती थी, संसाधन जुटा सकती थी। चूँकि रूस की अर्थव्यवस्था लगातार वत्तिीय कठनिाइयों का सामना कर रही थी—मुख्य रूप से पीटर के सुधारों से जुड़ी लागतों के कारण, और बाद के दशकों में खराब प्रबंधन के परणिामस्वरूप भी—सरकार ने बार-बार मठों और चर्च की संपत्तयिों से होने वाली आय का इस्तेमाल कयिा। यह खुलेआम लूट के समान था। धार्मकि अधकिारयिों ने कसिी भी आर्थकि सुधार में सारी रुचि खो दी: वे ऐसे उपाय कर सकते थे, लेकनि सरकार केवल तत्काल लाभ से चतिति थी और इन सुधारों के फल देने का इंतजार करने को तैयार नहीं थी। मठों की संपत्तयिों से होने वाली आय का उपयोग वभिन्नि संस्थानों द्वारा वभिन्नि उद्देश्यों के लिए कयिा जाता था, और सरकार के पास इसका वतिरण कैसे होता था, इस बारे में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं थी। इसके अलावा, इन संपत्तयिों की देखरेख और प्रशासन लगातार पुनर्गठन की एक शृंखला के अधीन था, जसिसे स्थतिि में कोई सुधार नहीं हुआ।

जब 24 जनवरी 1701 को मठों की संपत्तयिों के पर्यवेक्षण की जम्मिेदारी मठ कार्यालय को हस्तांतरति की गई, तो इसने एक ही समय में सभी धार्मकि संपत्तयिों – जो पहले पैट्रआर्कट, धर्मप्रांतों और मठों की थीं – पर नयिंत्रण करने का अधकिार भी प्राप्त कर लयिा, जैसा कि उस फरमान में कहा गया है। हालाँकि, मठ कार्यालय को अपने अधकिारों की सीमाओं के संबंध में कोई सटीक नर्दिेश नहीं मलि। यह लगभग 20 वर्षों तक अस्तत्वि में रहा और

[1052] IRI. खंड 3, पृ. 618, 486; खंड 4, पृ. 662; PSZ. संख्या 8959; उसी समय, 8 जुलाई 1744 के एक फरमान द्वारा (PSZ. 12. संख्या 8960), एलजिाबेथ ने लाव्रा के अपने सभी एस्टेट्स रखने के अधकिार की पुष्टि की। गोर्स्की। ऐतहिासकि ववरिण। 2. पृ. 129.

[1053] PSZ. संख्या 9591, 10665, 11332, 1079; तुलना करें संख्या 8583, जसिके तहत दव्यि सेवाओं के दौरान वकिलांग अधकिारयिों को व्यवस्था बनाए रखने के लिए कहा गया था।

[1054] PSZ. संख्या 11441, 11481.

[1055] IRI. खंड 2. पृ. 81.

इस दौरान इसने कोई निश्चित संरचना विकसित नहीं की। इसके कार्यों में नियंत्रण रखना, राजस्व एकत्र करना—जिसे इसे पीटर के अपने निर्देशों के अनुसार उपयोग करना था—और, अंत में, भूमि सर्वेक्षण करना शामिल था[1056] । यह सर्वेक्षण लगभग 10 वर्षों तक चला, और इसके परिणाम को '1710 की तालिका' के नाम से जाना जाता है; इसका केवल कुछ ही हिस्सा ही बचा है। 30 दिसंबर 1701 के फरमान और इसे पूरक करने वाले कुछ बाद के फरमानों[1057] से यह स्पष्ट होता है कि पीटर के पास, आखिरकार, मठ संपत्तियों से प्राप्त राजस्व के उपयोग के संबंध में एक निश्चित योजना थी: इसका एक हिस्सा मठों के रखरखाव के लिए निर्धारित किया गया था, जबकि दूसरे हिस्से का उद्देश्य विभिन्न शैक्षिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए था।

परिणामस्वरूप, मठ कार्यालय ने राजस्व की दो श्रेणियों के बीच अंतर करना शुरू कर दिया: 'निर्दिष्ट' राजस्व, जो मठों सहित धार्मिक संस्थानों के रखरखाव के लिए था, और 'गैर-निर्दिष्ट' राजस्व, जो पीटर द्वारा निर्दिष्ट शैक्षिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए राज्य कोष के लिए था[1058] । जिन मठों के पास बहुत कम भूमि थी, उन्हें करों से छूट दी गई थी और उन्हें इन दोनों श्रेणियों में शामिल नहीं किया गया था। 1701 में एक भिक्षु के रखरखाव की लागत प्रति वर्ष 10 रूबल और 10 क्वार्टर अनाज निर्धारित की गई थी; बाद में, '1710 की तालिका' के तहत उन्हें कम किया गया और, अंततः 1724 में प्रति वर्ष 6 रूबल और 5 चौथाई अनाज तक घटा दिया गया, जिसमें मठाधीशों और हाइरोमोंक्स के लिए थोड़ी सी रियायत शामिल थी[1059] । हालाँकि, इसके अलावा, अक्सर—विशेष रूप से महान उत्तरी युद्ध के दौरान—पूरी तरह से अप्रत्याशित ज़ार के फरमान जारी किए जाते थे, जो अन्य बातों के अलावा, मठों की अर्थव्यवस्था से संबंधित थे। यदि ज़ार को घुड़सवार सेना के लिए घोड़ों की आवश्यकता होती, तो पश्चिमी जिलों के मठों को उन्हें उपलब्ध कराने के लिए बाध्य किया जाता था; यदि ड्रैगून के घोड़ों को भूसे की आवश्यकता होती, तो मठों को तुरंत उनकी आपूर्ति की ज़िम्मेदारी लेने के लिए कहा जाता था । यदि विदेश से लाए गए तंबाकू उगाने के विशेषज्ञों (तंबाकू मास्टर्स) को आवास और भोजन की आवश्यकता होती, तो मठों को यह भी[1060] प्रदान करने के लिए बाध्य किया जाता था। धार्मिक संस्थानों की आय का एक हिस्सा धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए उपयोग करने की पीटर की मूल योजना युद्ध छेड़ने की लागतों के कारण अव्यवहार्य साबित हुई, और धन और वस्तु-रूप में आय का उपयोग मुख्य रूप से सैन्य जरूरतों और राज्य कोषागार[1061] से अन्य अनियोजित व्यय के लिए किया गया। कुछ मठ संपत्तियों को विशिष्ट विभागों – प्रियोब्राज़ेन्स्की या डाक विभाग – के अधिकार में रखा गया, जबकि अन्य को राज्य-चालित कारखानों से संलग्न कर दिया गया। इन संपत्तियों से राजस्व बढ़ाने के लिए, मठ विभाग ने उन्हें निजी व्यक्तियों को पट्टे पर दिया, बशर्ते कि किरायेदार अतिरिक्त किराया चुकाने की शर्त पर अनुबंध करने के लिए सहमत हों। यह उस बिंदु तक पहुँच गया जहाँ इन भूमि के पूर्व मालिक – यानी, धार्मिक संस्थान – भी उन्हें पट्टे पर दे सकते थे, बशर्ते वे प्रासंगिक अनुबंधों में प्रवेश करने के लिए तैयार हों।

1710 के बाद यह सबसे आम प्रथा बन गई, जबकि इसी समय मठ कार्यालय का महत्व और उसकी गतिविधियों का दायरा धीरे-धीरे कम होता गया। यह प्रक्रिया 17 अगस्त 1720 के एक फरमान के साथ चरम पर पहुँची, जिसके द्वारा मठ कार्यालय को समाप्त कर दिया गया। 16 अक्टूबर 1720 के एक फरमान द्वारा, जमीनों को उनके पूर्व मालिकों को वापस कर दिया गया, और उनका प्रशासन एक बार फिर से मठों के मठाध्यक्षों को सौंप दिया गया। मठों ने केवल वही कर देना जारी रखा जो पहले मठ कार्यालय द्वारा स्थापित किए गए थे, जबकि मठ संपत्तियों से राजस्व का संग्रह अब चैंबर कॉलेजियम (कर प्राधिकरण) द्वारा देखा जाता था[1062] .

पीटर के लिए, इस मामले का कानूनी पहलू की तुलना में व्यावहारिक पहलू सर्वोपरि महत्व का था; यानी, वह इस सवाल से चिंतित नहीं था कि संपत्तियों का मालिक कौन था, या माना जाना चाहिए था - राज्य या चर्च। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि 'आध्यात्मिक विनियम' इस मुद्दे पर बहुत कम ध्यान देते हैं। इस मामले को यहां केवल सबसे सामान्य शब्दों में छुआ गया है: 'आध्यात्मिक महासंघ को यह जांचना चाहिए कि चर्च की जमीनों का मालिक कौन है और कैसे, और अनाज तथा लाभ—यदि वे धन के रूप में हैं—कहाँ खर्च किए जाते हैं। और यदि कोई चर्च की संपत्ति चुराता है, तो

[1056] गोर्चाकोव। मठ आदेश। पृ. 102, 122 ff.; ज़ावयालोव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 50। कृतियाँ: ज़ावयालोव। सम्राज्ञी कैथरीन द्वितीय के अधीन चर्च संपत्तियों का प्रश्न (1900) और वेरखोवस्काया, पी. पवित्र सिनोड, बिशपों के आवास और मठों की अचल संपत्ति (1909) – धर्मनिरपेक्षता के पूरे युग, 1701–1764 के इतिहास पर सबसे महत्वपूर्ण स्रोत।

[1057] गोर्चाकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 139; पीएसजेड. संख्या 1886।

[1058] तुलना करें: मिल्युकॉव. द स्टेट इकोनॉमी (1890). पृ. 495.

[1059] PSZ. संख्या 1886; गोर्चाकोव। भूमिholdings पर। पृ. 473.

[1060] गोर्चाकोव। द मोनास्टिक ऑर्डर। पृ. 140। परिशिष्ट संख्या 6, 10 और 11।

[1061] ज़ाव्यालोव। पूर्वोक्त, पृ. 60; पीएसज़े संख्या 1926, 2462, 3659; गोर्चाकोव। शाही आदेश। पृ. 165 आदि।

[1062] गोर्चाकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 167; पीएसज़ेड. संख्या 3659.

आध्यात्मिक महासंघ को उस व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए और जो चोरी हुआ है उसे वसूल करना चाहिए' (भाग 3, § 9). यह स्पष्ट है कि सिनिड को इस प्रश्न पर विशेष ध्यान देना पड़ा कि चर्च की संपत्तियों का प्रबंधन कौन करे, विशेष रूप से 16 अक्टूबर 1720 के फरमान के बाद। इस मामले पर पहले ही 14 फरवरी 1721 को सिनिड के पहले सत्र में चर्चा हो चुकी थी, और इस संबंध में ज़ार से अनुरोध किया गया था: 'क्या संपत्तियों को... केवल धार्मिक कॉलेज के अधिकार क्षेत्र में रखा जाना चाहिए, यह देखते हुए कि वे नागरिक प्रशासकों के अधीन जर्जर और उपेक्षित हो गई हैं, और धार्मिक कॉलेज ने अन्य कॉलेजों की तरह ही निष्ठा और महामहिम ज़ार के हितों को बनाए रखने की शपथ ली है?' इसके अलावा, 'आध्यात्मिक विनियम' यह निर्धारित करते हैं कि इस तरह का प्रशासन आध्यात्मिक कॉलेजियम के अधीन होगा।' यह ऊपर उद्धृत पैराग्राफ की एक काफी उदार व्याख्या थी, लेकिन ज़ार ने फैसला सुनाया: 'ऐसा ही हो' - और ये संपत्तियाँ एक बार फिर से धार्मिक संस्थानों के प्रशासन में लौट आईं[1063] ।

जब सिनिड ने इन संपत्तियों की वित्तीय स्थिति और उनसे राजस्व संग्रह के संगठन की पूरी तरह से जांच कर ली, तो उसने मठ कार्यालय को फिर से स्थापित करने का निर्णय लिया, लेकिन इस बार स्वयं सिनिड के एक प्रशासनिक निकाय के रूप में। 10 मार्च 1721 की सिनिड की याचिका के जवाब में, पीटर ने मठ कार्यालय को फिर से स्थापित करने का आदेश दिया, लेकिन इस बार सिनिड के अधीन। सिनिड को मठ कार्यालय के माध्यम से राजस्व एकत्र करने और उन्हें चैंबर कॉलेज[1064] को स्थानांतरित करने का निर्देश दिया गया। 14 दिसंबर 1724 को सिनोडल मठ कार्यालय का नाम बदलकर सिनोडल प्रशासन का चैंबर कार्यालय रख दिया गया और यह 29 सितंबर 1726 तक इसी नाम से अस्तित्व में रहा, जब इसका नाम एक बार फिर से बदला गया, इस बार इसे सिनोडल प्रशासन का वित्त महाविद्यालय नाम दिया गया। यह कॉलेज 15 अप्रैल 1738 तक अस्तित्व में रहा, जब महारानी अन्ना के फरमान द्वारा, इसे सिनिड के अधिकार क्षेत्र से हटाकर सीनेट के अधिकार के अधीन कर दिया गया। उस दिन से, सभी चर्च संपत्तियाँ सरकारी निकायों के नियंत्रण में आ गईं[1065] ।

इस अवधि के दौरान, सिनिड की मठ विभाग और चैंबर कार्यालय की गतिविधियाँ केवल संपत्तियों से राजस्व एकत्र करने और उसे राज्य कोष में स्थानांतरित करने तक ही सीमित थीं। जैसा कि इन आरंभिक रूप से शुद्ध प्रशासनिक उपायों से पता चलता है, सरकार ने धीरे-धीरे यह विचार अपनाना शुरू कर दिया कि चर्च की संपत्ति, जिसमें मठों की भूमि होल्डिंग्स भी शामिल हैं, को राज्य की संपत्ति माना जाना चाहिए; हालाँकि, इस विचार को राज्य कानून में शामिल होने में कई और दशक लग गए।

पीटर के शासन के अंतिम वर्षों में भी, 'निर्दिष्ट' संपत्तियों से प्राप्त राजस्व का उपयोग विशेष रूप से राज्य की जरूरतों पर किया जाता था[1066] . मठों के रखरखाव पर होने वाले खर्च को कम करने और 'निर्दिष्ट' जमीनों से होने वाली आय का एक हिस्सा मुक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम 1724 का फरमान था, जिसमें मठों के कर्मचारियों की सूचियाँ तैयार करने का आदेश दिया गया था – यह वही प्रसिद्ध फरमान है, जिसका हमने कई बार हवाला दिया है, जिसमें मठवाद और मठ जीवन के प्रति पीटर का दृष्टिकोण विशेष रूप से पूरी तरह से व्यक्त किया गया था। हालांकि, इस फरमान का उद्देश्य वैचारिक होने के बजाय व्यावहारिक था, अर्थात: इसका उद्देश्य भिक्षुओं की संख्या कम करना और इस प्रकार चर्च के व्यय को कम करना था। 22 मई 1724 को, पीटर के विशिष्ट व्यक्तिगत निर्देशों पर कार्य करते हुए, सिनिड ने तथाकथित '1724 स्टाफिंग तालिकाएँ' तैयार कीं, लेकिन कुछ समय के लिए इन्हें लागू नहीं किया गया, क्योंकि सम्राट की मृत्यु ने इस[1067] को रोक दिया। 1726 के सिनोडल प्रशासन के वित्त बोर्ड में, जिसमें अब सभी मामलों का निर्णय पादरियों द्वारा नहीं बल्कि धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों द्वारा किया जाता था— जिन्होंने प्रभावी रूप से इसे सिनोड के अधिकार से हटा दिया था और महत्वपूर्ण मामलों में मामलों को सीनेट के पास भेज दिया था— ने 1724 के स्टाफिंग विनियमों को मंजूरी नहीं दी और महारानी कैथरीन प्रथम (1725–1727) से इन्हें लागू न करने का अनुरोध किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया[1068] । 1724 के स्टाफिंग विनियमों के अनुमोदित न होने

[1063] PSPiR. खंड 1, संख्या 3; PSZ. खंड 6, संख्या 3734, § 5। पीटर का निर्णय केवल 26 जून 1741 के फरमान से ज्ञात है। PSZ. संख्या 8406।

[1064] PSPiR. खंड 1, संख्या 30, 41, 79, 273, 729.

[1065] ज़ाव्यालोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 66–70। पीएसज़ेड. संख्या 4567। सिनोडल मठ कार्यालय और चैंबर कार्यालय के संगठन पर, देखें: बार्सोव, टी. भूतपूर्व सिनोडल संस्थान (1897)। पृ. 171–184। सितंबर 1726 में की गई सुधार को सामान्य सिनोडल प्रशासन के पुनर्गठन से जोड़ा गया था; 15 जुलाई 1726 को, सिनिड को दो विभागों में विभाजित किया गया था, जिनमें से एक दिन-प्रतिदिन के मामलों से संबंधित था, जबकि दूसरा धार्मिक न्यायालयों और संपत्तियों के प्रशासन से संबंधित था। PSZ. 7. संख्या 4559. तुलना करें: बार्सोव। वही, पृ. 187 आदि।

[1066] PSPiR. 1. संख्या 313.

[1067] PSZ. 7. संख्या 4488; PSPiR. 4. संख्या 1237, 1266.

[1068] देखें 'सुप्रीम प्रिवी काउंसिल का जर्नल' 25 सितंबर 1726, § 4, में: संग्रह. 56. पृ. 100.

का परणिाम यह हुआ कि उच्चतम अधकिारयिों ने मठों की संपत्तयिों के मुद्दे को चर्चा के लिए रखा। सर्वोच्च नजिी परषिद और सीनेट ने सब कुछ जस का तस छोड़ने और 1724 के वधिानों को लागू न करने का संकल्प लयिा, जसिे एक तरह से सनिड की जीत माना जा सकता है, क्योंकि वत्ति बोर्ड सनिड के एक वभिाग के रूप में कार्य करता रहा, और इसने कुछ हद तक बोर्ड के भीतर के मामलों के संचालन पर अपना प्रभाव बनाए रखा। इस व्यवस्था की बाद में 6 फरवरी 1727 के एक फरमान द्वारा पुष्टि की गई।[1069]

हालांकि आधकिारकि तौर पर वत्ति बोर्ड सनिड के प्रति जिवाबदेह एक नकिाय बना रहा, महारानी अन्ना के अधीन, 17 मार्च 1733 के एक फरमान द्वारा, उसे अपनी रपिोर्टें सनिड को नहीं बल्कि सीनेट को प्रस्तुत करने के लिए कहा गया, जसिसे सनिड इन रपिोर्टों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता था[1070] . इस अपेक्षाकृत जटलि नौकरशाही रपिोर्टगि प्रणाली को 15 अप्रैल 1738 के एक फरमान द्वारा समाप्त कर दयिा गया, जब मठों की संपत्तयिों का मामला नरि्णायक रूप से सनिड के अधकिार क्षेत्र से हटा दयिा गया[1071] ।

अप्रैल 1738 से 15 जुलाई 1744 तक, वत्ति बोर्ड पूरी तरह से सीनेट के अधीन था। अब इसने पूर्व मठ कार्यालय के सभी अधकिार प्राप्त कर लिए, जो 1677 से पहले और 1701 के बाद उसके पास थे[1072] । चर्च और मठ संपत्तयिों के लिए, ये सबसे कठनि वर्ष थे। हालाँकि, सनिॉड ने 2 जनवरी 1739 के फरमान को वशिेष रूप से आपत्तजिनक पाया। पहले, 'चर्च संबंधी वनियिमों के परशिष्ट' के अनुसार, मृत बशिपों और मठाध्यक्षों की व्यक्तगित संपत्ति और धन सनिाद के स्वामत्वि में चले जाते थे; अब, हालांकि, एक ऐसी प्रक्रयिा शुरू की गई जसिके तहत पूरी संपत्ति बनिा कसिी देरी के वत्ति बोर्ड के नपिटान के लिए हस्तांतरति की जानी थी और महारानी के आदेश के बनिा इसे वहां से रहिा नहीं कयिा जाना था[1073] . जायदादों को बर्बाद कयिा जा रहा था क्योंकि उन पर उनकी आय से अधकि कर लगाए गए थे; इसके अलावा, इन करों में लगातार वृद्धि की जा रही थी, उदाहरण के लिए बरिॉन द्वारा स्थापति अश्वपालन केंद्रों की लागतों को पूरा करने के लिए; कई जायदादों पर बकाया था; नामति और गैर-नामति दोनों तरह की जायदादों की स्थति समान रूप से असहनीय थी। कर बकाया कार्यालय, जसिे सम्राज्ञी ऐन के अधीन स्थापति कयिा गया था, ने बकाया वसूलने के लिए सैन्य दस्ते भेजे। यदि किसी मठ की संपत्ति का कोष और अनाज भंडार खाली थे, तो मठ के कसिानों को खुलेआम लूट लयिा जाता था[1074] ।

सम्राज्ञी एलजिाबेथ के शासनकाल में उदारीकरण और सुधार की एक नई लहर शुरू हुई। सहिासनारोहण के तुरंत बाद (1741), सनिॉड ने चर्च की स्थति पर एक ज्ञापन उनके समक्ष प्रस्तुत कयिा, जसिमें उसने वत्ति बोर्ड पर अक्षमता का आरोप लगाया। हालाँकि, तीन साल बाद, 15 जुलाई 1744 को, महारानी ने वत्ति कॉलेज को समाप्त करने और चर्च तथा मठों की संपत्तयिों के प्रशासन को वापस सनिेड को हस्तांतरति करने का आदेश दयिा। इस उद्देश्य के लिए, सनिेड ने सनिेड वत्ति प्रशासन की चांसलरी ([1075]) की स्थापना की। इस कार्यालय के प्रबंधन के लिए, सनिड ने दो आर्चमिांड्राइट्स और एक एबॉट को नयिुक्त कयिा। फरि भी, इन प्रशासनकि सुधारों ने मठों की जमींदारयिों की आर्थकि स्थति में सुधार करने में बहुत कम मदद की। पहले की तरह, उन पर अपनी आय से अधकि करों का बोझ था, और इन जमींदारयिों के कसिान अन्ना के शासनकाल के दौरान पूरी तरह से बर्बाद हो गए थे। नव-नयिुक्त प्रशासकों – एक बार फरि पुराने दनिों की तरह गाँव के बुजुर्ग – ने अपने कार्य को बहुत कठोरता से शुरू कयिा। मठवासी कसिानों के बीच अशांति की नौबत आ गई[1076] । संप्रदाय की यह आशा कि अब, धर्मपरायण एलजिाबेथ के शासनकाल में, सरकार चर्च की जागीरों के प्रति अपना रवैया बदलेगी, साकार नहीं हुई। इन जमीनों से होने वाली आय लंबे समय से राज्य कोषागार में जा रही थी, और अब कोषागार इसके बनिा काम नहीं चला सकता था। अपनी सभी

[1069] PSZ. 7. संख्या 5005; PSPiR. 5. संख्या 1907.

[1070] PSZ, संख्या 6354।

[1071] केवल पूर्व पैट्रिआर्कल संपत्तयिाँ, जनि्हें 1721 में इसके स्थापना के बाद सनिाड को हस्तांतरति कयिा गया था, सनिाड के प्रशासन के अधीन रहीं; सनिाड ने, पीटर से संभावति नए फरमानों को ध्यान में रखते हुए, सावधानीपूर्वक इन संपत्तयिों को सनिाड मठ कार्यालय को हस्तांतरति नहीं कयिा, बल्कि उन्हें अपने प्रत्यक्ष अधकिार में बनाए रखा। अब, हालाँकि, 15 मई 1738 के फरमान के बाद, इन संपत्तयिों को भी सनिोडल प्रशासन से हटाकर वत्ति बोर्ड को स्थानांतरति कर दयिा गया। ज़ाव्यालोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 74; पीएसजेड. 10. संख्या 7679.

[1072] PSZ, संख्या 7639 (1738), 7850 (1739), 8074 (1740)।

[1073] PSPiR. 2. संख्या 596. § 61. ज़ाव्यालोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 75। हालाँकि, यह ध्यान में रखना चाहिए कि चर्च के धर्मगुरुओं की व्यक्तगित संपत्ति काफी हो सकती थी: धर्मगुरुओं के पास कीमती वेषभूषा, पवत्रि पात्र, आइकन, कतिाबें, आदि होती थीं।

[1074] 1. ज़नामेंस्की। उद्धृत ग्रंथ; प्राव. सोब. 1864. 1. पृ. 274; तुलना करें: ज़ाव्यालोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 77 और बाद के पृष्ठ।

[1075] PSZ. 12. संख्या 8993; तुलना करें: ज़ावयिालोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 77। इससे पहले, 26 जून 1741 के एक फरमान द्वारा, वत्ति बोर्ड को अस्थायी रूप से सनिड को स्थानांतरति कर दयिा गया था। PSZ. संख्या 8406।

[1076] PSZ. 13. संख्या 10168; ज़ाव्यालोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 100; सोलोव्योव. 24 (1874). पृ. 242, 360, 363.

आंतरकि भक्ति और चर्च पदानुक्रम तथा मठों के प्रति अपनी कृपा के बावजूद, एलिजाबेथ, केवल राज्य और आर्थिक कारणों से, सिनाड की इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकीं[1077] । इसके अलावा, वह अपने पिता, पीटर महान, के विचारों की शुद्धता में दृढ़ता से विश्वास रखती थी[1078] । सरकार को यह स्पष्ट हो गया कि चर्च की संपत्तियों का पूर्ण रूप से धर्मनिरपेक्षकरण आवश्यक था। इसका आधार 30 सितंबर 1757 के एक फरमान से तैयार किया गया था, जिसके तहत सेवानिवृत्त अधिकारियों को इन संपत्तियों के प्रशासक के रूप में नियुक्त किया गया था; इन संपत्तियों पर भूमि-स्वामियों की संपत्तियों के समान आधार पर कर लगाया गया था, लेकिन मठों के रखरखाव के लिए एकत्र किए गए कर पूर्व स्तरों पर ही रहे[1079] .

एलिजाबेथ के उत्तराधिकारी, पीटर तृतीय ने उसी दिशा में एक निर्णायक कदम उठाया। 21 मार्च 1762 के उनके फरमान ने इन संपत्तियों का प्रशासन सिनिड से हटा दिया और पुराने अर्थव्यवस्था बोर्ड को फिर से स्थापित कर दिया। सीनेट के अधीन एक राज्य प्राधिकरण के रूप में, कॉलेज ने सेवानिवृत्त अधिकारियों के माध्यम से इन संपत्तियों का प्रबंधन किया, जैसा कि 30 सितंबर 1757 के फरमान द्वारा पहले ही प्रदान किया जा चुका था[1080] । 21 मार्च 1762 के फरमान ने इस मामले के वित्तीय पहलुओं को भी पूरी तरह से नए आधार पर पुनर्गठित किया। इन जमीनों पर किसानों को, सभी पर लगाए जाने वाले प्रति व्यक्ति कर (जो हर पुरुष पर 70 कोपेक था) के अलावा, 1 रूबल और का भुगतान करना होता था। हालाँकि, जो भूमि वे पहले चर्च और मठों की जमीनों के मालिकों के लाभ के लिए संभालते थे, वह अब उनके व्यक्तिगत उपयोग में आ गई। इस प्रकार, वे राज्य के किसान बन गए, जो वस्तु-रूप में भुगतान और अनिवार्य श्रम से मुक्त थे। रूबल कर बोर्ड ऑफ इकोनॉमी में जमा किया जाता था। मठों और धर्मप्रांत के बिशपों को 22 मई 1724 की स्टाफिंग तालिका के अनुसार अपना भत्ता मिलता था, और इन्हें तो बढ़ा भी दिया गया था[1081] । इस फरमान का पैराग्राफ 6 विशेष रूप से सार्थक है: बकाया और किसान विद्रोह से संबंधित भूमि मालिकों और किसानों के बीच सभी कानूनी विवाद, हत्या के आरोपों को छोड़कर, बंद कर दिए गए, और अदालती दस्तावेजों को नष्ट कर दिया जाना था। यह एक वास्तविक क्षमादान था, जिसने एलिजाबेथ के शासनकाल के दौरान किसान अशांति से संबंधित सभी कार्यवाहियों को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया[1082] । धारा 7 भी रुचिकर है, जिसके अनुसार संपत्तियों का प्रबंधन करने वाले अधिकारियों को किसी भी राजस्व वृद्धि का 10 प्रतिशत बोनस के रूप में प्राप्त हुआ। 6 अप्रैल 1762 के एक सीनेट के फरमान ने बोर्ड ऑफ इकोनॉमी की स्थापना और मठों के रखरखाव के लिए जल्द से जल्द स्टाफिंग तालिकाएं तैयार करने का आदेश दिया[1083] ।

यह ज्ञात है कि इस आदेश ने चर्च पदानुक्रम में बड़ी निराशा और असंतोष पैदा किया। मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन तिमोफी ने रोस्तोव के प्रसिद्ध मेट्रोपॉलिटन आर्सेनी मासेविच को लिखा: 'Nunc non Vestram Sanctitatem, sed omnes nos dolenda ista tetigit metamorfosis, quae vitam nostram ad gemitus et dolores ducit' [केवल आपकी पवित्रता ही नहीं, बल्कि हम सभी को इस दुखद परिवर्तन ने छू लिया है, जो हमारे जीवन को आहों और पीड़ा की ओर ले जाता है][1084] . लेकिन वास्तव में, यह कोई बदलाव नहीं था, जैसा कि मॉस्को के महानगरपति मानते हैं, बल्कि एलिजाबेथ के उन उपायों की एक तार्किक निरंतरता थी, जिन्हें कुछ हिचकिचाहट के साथ लागू किया गया था। इस मामले को हल करने का सबसे उपयुक्त क्षण आ गया था, हालांकि शायद पहले कुछ प्रारंभिक उपाय किए जाने चाहिए थे। इसके अलावा, यह फरमान उतना 'अन्यायपूर्ण' नहीं था जितना कि ए. ज़्व्यालोव मानते हैं[1085] ।

[1077] वेदेन्यापिन. उद्धृत ग्रंथ, में: प्राव. ऑब. 1865. 3. पृ. 220; पीएसजेड. 14. सं. 10765.

[1078] इस संबंध में, एलिजाबेथ का वह फरमान एक विशिष्ट उदाहरण है जिसमें युद्ध-अपाहिजों को मठों में रखने और मठों के खर्च पर उनका भरण-पोषण करने का आदेश दिया गया था, साथ ही इस बात पर उनकी असंतोष भी कि सिनिड ने इस संबंध में बहुत कम प्रयास किया था। PSZ. 14. No. 10765.

[1079] PSZ. 14. संख्या 10765; ज़ाव्यालोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 96–100। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि केवल एलिजाबेथ की अचानक मृत्यु (25 दिसंबर 1761) ने ही चर्च की संपत्तियों के धर्मनिरपेक्षीकरण को होने से रोका।

[1080] PSZ. 15. संख्या 11481। पीटर तृतीय पर, मोनोग्राफ देखें: बेन, एन. *पीटर तृतीय, रूस का सम्राट। एक संकट और एक अपराध की कहानी* (वेस्टमिस्टर, 1902)।

[1081] पहले, स्टाउरोपेजियल मठों के आर्चिमांड्राइट्स को सालाना 100 रूबल मिलते थे; 21 मार्च 1762 के फरमान के तहत, उन्हें 500 रूबल, दूसरे दर्जे के मठों के मठाध्यक्षों को 200 रूबल, और तीसरे दर्जे के मठों के मठाध्यक्षों को 150 रूबल मिलने लगे।

[1082] पीटर तृतीय द्वारा इस फरमान का जारी किया जाना 18वीं सदी में एक अत्यंत दुर्लभ घटना थी, जब रूस में दासप्रथा अपने चरम पर थी। इस फरमान ने कैथरीन द्वितीय के शासनकाल के दौरान और पुगाचेव के समय में बाद के किसान विद्रोहों में एक भूमिका निभाई।

[1083] PSZ. 15. संख्या 11498.

[1084] रस. आर्ट. 25 (1879)। पृ. 586, और यह भी: सोलोव्योव। 25 (1875)। पृ. 147। कैथरीन के सिंहासनारोहण के बाद आर्सेनी मात्सेविच द्वारा काउंट ए. पी. बेस्टुजेव-र्यूमिन को लिखा गया पत्र भी देखें; वही, पृ. 146।

[1085] ज़ाव्यालोव। पूर्वोक्त, पृ. 123, 125।

हालांकि, कुल मिलाकर, महारानी कैथरीन द्वितीय (1762–1796) की चर्च नीति उनके व्यक्तिगत धार्मिक विचारों के प्रभाव से रहित नहीं थी[1086] , 1764 का धर्मनिरपेक्षीकरण, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, 18वीं शताब्दी में लागू की गई उपायों की एक पूरी श्रृंखला का निरंतरता और निष्कर्ष था। कैथरीन खुद को पीटर महान के सुधारवादी प्रयासों की उत्तराधिकारी के रूप में वर्णित करना पसंद करती थीं, जिसने धर्मनिरपेक्षता के प्रति उनके मूलभूत रवैये को निर्धारित किया; उनके व्यक्तिगत धार्मिक विचारों ने इस सुधार को यथासंभव कम समय में पूरा करने में योगदान दिया। यह तथ्य कि इस सुधार ने न केवल चर्च की संपत्तियों के मुद्दे को संबोधित किया, बल्कि मठों और मठाधीशों की संख्या को भी संबोधित किया, यह कैथरीन की मठवाद को ईसाई चर्च के एक संस्थान के रूप में देखने की धारणा से जुड़ा था।

उनके विचारों की एक संक्षिप्त रूपरेखा देना शायद उचित होगा। हम पहले ही एक अन्य कृति में (देखें टिप्पणी 1081) यह उल्लेख कर चुके हैं कि अठारहवीं सदी की यह महान महारानी, जो दोनों संप्रदायों—अपने देश के इवेंजेलिकल धर्म और रूस में ग्रीक ऑर्थोडॉक्स धर्म—से केवल नाम मात्र के लिए संबंधित थी, आंतरिक भक्ति से रहित थी; और वह धार्मिक तथा चर्च-संबंधी मामलों का निर्णय केवल राज्य-राजनीतिक दृष्टिकोण से करती थीं। यह न केवल उनके पिता को बेचैन करने वाला था, बल्कि उनके ऑर्थोडॉक्स प्रजाजनों को भी आश्चर्यचकित करने वाला था, जब तक कि वे स्वयं प्रबोधन काल के ईश्वरवाद (deistic) विचारों के मजबूत प्रभाव में न हों। कैथरीन द्वितीय के धार्मिक विचार देववाद की सीमाओं से आगे नहीं बढ़े। अपनी महान बुद्धि और ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि के कारण, उन्होंने अपने लोगों के व्यापक जनसमूह पर अपने धार्मिक विचारों को थोपने से परहेज किया। सिंहासन पर चढ़ने से पहले ही, कैथरीन ने सभी को यह दिखा दिया था कि वह चर्च की रस्मों के सभी पहलुओं को कितनी अधिक महत्व देती थीं; इस प्रकार महारानी ने चर्च पदानुक्रम और लोगों का समर्थन तेजी से हासिल किया, इसके विपरीत उनके पति, जो सिंहासन के उत्तराधिकारी और बाद में सम्राट के रूप में, अनुष्ठानों को अनदेखा कर चुके थे और इसलिए रूसी लोगों की नजर में एक बाहरी, एक 'जर्मन' बने रहे। यह ठीक 'ऑर्थोडॉक्स' सम्राट द्वारा रूसी चर्च की परंपराओं से की गई ये विचलन, और उसके फरमान थे—जिन्होंने सम्राज्ञी एलिजाबेथ के 'अच्छे पुराने दिनों' के बाद, एक बार फिर चर्च के मामलों में राज्य के घोर हस्तक्षेप को प्रदर्शित किया—जिसने पदानुक्रम को बहुत परेशान किया[1087] । कैथरीन इस मनोवैज्ञानिक स्थिति को बहुत अच्छी तरह से समझती थीं, और 28 जून 1762 के घोषणापत्र में , सम्राट के पदच्युत होने का कारण मुख्य रूप से धार्मिक संदर्भों में समझाया गया था: 'रूसी मातृभूमि के सभी सच्चे पुत्रों के लिए यह स्पष्ट हो गया है कि इस बहुत ही कृत्य के परिणामस्वरूप पूरे रूसी राज्य पर क्या खतरा मंडरा रहा था, अर्थात्: हमारी ऑर्थोडॉक्स ग्रीक चर्च ने सबसे पहले इस उथल-पुथल और अपनी धार्मिक परंपराओं के विनाश को महसूस किया, जिससे हमारी ग्रीक चर्च पहले से ही रूस की प्राचीन ऑर्थोडॉक्सी में बदलाव और एक अलग धर्म के कानून को अपनाने के अंतिम खतरे के प्रति अत्यंत संवेदनशील हो गई थी'[1088] ।

कैथरीन खुद को 'ऑर्थोडॉक्स सम्राज्ञी' कहना पसंद करती थीं[1089] , और उनके शासनकाल के इतिहास में, जिसे उन्होंने स्वयं संकलित किया था, यह कहा गया था: 'कैथरीन को सिंहासन पर बिठाया गया था; उन्हें ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा के लिए वहाँ रखा गया था' [कैथरीन को ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा के लिए सिंहासन पर बिठाया गया था]। वह स्वयं को 'chef de l'Église grecque' [ग्रीक चर्च की प्रमुख] या 'chef de son Église' [अपनी चर्च की

[1086] कैथरीन के धार्मिक विचारों पर, मेरा लेख देखें: *जहरबुख फ्यूर गेशिख्ते ओस्टेउरोप्स*. 3 (1938); और साथ ही: टिट्लिनोव, बी. गाव्रील पेट्रोव, नोवगोरोड और सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलिटिन (1916) – कैथरीन द्वितीय के अधीन रूसी चर्च का एक गहन अध्ययन, जिसमें सम्राज्ञी के विचारों को विभिन्न स्थानों पर वर्णित किया गया है। साथ ही पूर्व का कार्य देखें: ज़नामेन्स्की, पी. *कैथरीन द्वितीय के शासनकाल के दौरान रूसी चर्च के इतिहास पर व्याख्यान*, *प्रव. सोब.*, 1875 में।

[1087] मेरे संकलित कार्य, पृ. 571, 574। चर्च संपत्तियों से संबंधित आदेशों पर उपरोक्त टिप्पणियों की तुलना करें; इसके अलावा, पीटर तृतीय की कुछ 'प्रोटेस्टेंट नवाचारों' को लागू करने की योजनाओं की अफवाहें थीं। देखें काउंट मर्सि-अर्जेंटो का काउंट कौनिट्ज़ को पत्र (28 मई और 18 जून 1752), संग्रह 18, पृ. 371 और 391; तथा बोलोटोव, नोट्स 2. पृ. 172; मेमॉयर डी ला प्रिंसेस डाचकोफ़. 1. पृ. 41; रशियन आर्काइव्स. 1871. पृ. 2055; और साथ ही 26 मार्च 1762 का फरमान, जो PSZ में शामिल नहीं है, इसमें: रशियन आर्टिकल्स. 6 (1872). पृ. 567.

[1088] PSZ. 16. संख्या 11582; 7 जुलाई 1762 को राज्याभिषेक के संबंध में जारी घोषणापत्र ने 28 जून की घटनाओं को एक बार फिर से उचित ठहराया: सम्राज्ञी ने घोषणा की कि यह 'ईश्वर की दृष्टि में (!) उनके चर्च और पवित्र विश्वास के सामने उनके पद की मांग' थी। PSZ. 16. संख्या 11598; पीटर तृतीय की मृत्यु को दैवीय विधान की इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया था। PSZ. 16. संख्या 11599. तुलना करें: मेरा उद्धृत कार्य, पृ. 574.

[1089] संग्रह. 7. पृ. 156.

प्रमुख] के रूप में भी संबोधित करती थीं[1090] । उसे इस बात पर ज़ोर देने में आनंद आता था कि वह अपनी गतिविधियों को एक धार्मिक कर्तव्य मानती थी; उसके विचारों में, अपने पेशे - 'वोकेशन' - के प्रति एक धार्मिक दृष्टिकोण की लूथरन अवधारणा, एक ऑर्थोडॉक्स ज़ार के ईसाई कर्तव्य की धारणा के साथ संयुक्त थी। बोस्यू के शब्द, जिन्हें उसने अपनी 'इंस्ट्रक्शन' के लिए आदर्श वाक्य के रूप में चुना था, शायद उसे इन मान्यताओं के प्रकाश में ही समझ आए थे: 'Seigneur mon Dieu! Sois attentif à ma voix et donne-moi de l'intelligence pour juger Ton peuple selon Ta sainte loi et selon la justice' [हे मेरे ईश्वर, मेरी सुनो और मुझे समझ प्रदान करो कि मैं तेरे पवित्र विधान और न्याय के अनुसार तेरी प्रजा का न्याय करूँ][1091] । यह उनकी धार्मिकता का आधिकारिक पहलू था। हालाँकि, यदि कोई कैथरीन के आंतरिक धार्मिक जीवन को देखे, तो एक बिल्कुल अलग माहौल सामने आता है। उनके करीबी सहयोगियों के साथ उनके पत्रों और वार्तालापों से एक अलग तस्वीर सामने आती है। वह चर्च जाने वाली व्यक्ति नहीं थी - चर्च के नियम और रीति-रिवाज उसके लिए केवल एक आवश्यकता थे; वह कभी भी किसी भी आंतरिक प्रेरणा से उनका सहारा नहीं लेती थी। इसने प्रिंस एम. एम. श्चेरबाटोव को निम्नलिखित प्रश्न पूछने का आधार दिया: 'क्या उसे ईश्वर के विधान में विश्वास है? क्योंकि, अगर ऐसा होता, तो ईश्वर का कानून स्वयं ही उसके दिल को सीधा कर सकता था और उसके कदमों को सत्य के मार्ग पर ले जा सकता था। लेकिन—नहीं! वह आधुनिक लेखकों के बेमतलब के पढ़ने से मदहोश है। वह ईसाई कानून का बिल्कुल भी सम्मान नहीं करती (हालांकि वह काफी धार्मिक होने का दिखावा करती है)'[1092] । कैथरीन की चर्च नीति का सबसे अच्छा वर्णन उनके अपने उस कथन से किया जा सकता है, जो उन्होंने सिंहासन पर आरोहण से पहले ही कहा था: 'Respecter la religion, mais ne la faire entrer pour rien dans les affaires d'État' [धर्म का सम्मान करो, लेकिन इसे किसी भी तरह से राज्य के मामलों में हस्तक्षेप न करने दो][1093] .

कैथरीन के सिंहासनारोहण के तुरंत बाद चर्च और मठों की संपत्तियों का प्रश्न चर्चा में आ गया। 16 जुलाई 1762 को, यानी सिंहासन पर उनके आरोहण के दो सप्ताह बाद, सीनेट ने 'पादरी वर्ग के अनुरोध पर', धार्मिक संस्थानों को संपत्तियाँ वापस करने और 70 कोपेक के ऊपर मठवासी किसानों से अतिरिक्त 1 रूबल लगाने का एक प्रस्ताव पारित किया प्रति व्यक्ति कर के रूप में, 1 रूबल अतिरिक्त लगाया जाना था, जिसे दो भागों में विभाजित किया जाना था: विकिलांगों के रखरखाव के लिए कोषागार को 50 कोपेक और उन चर्च संस्थानों को 50 कोपेक, जिनके पास मठों के किसानों को लौटाया जा रहा था; इन जमीनों की देखरेख चर्च संस्थानों द्वारा नियुक्त प्रशासकों द्वारा नहीं, बल्कि किसानों द्वारा चुने गए गाँव के बुजुर्गों द्वारा की जानी थी। इस फरमान के दो दिन बाद, 18 जुलाई को, सीनेट और सिनिड का एक संयुक्त सत्र हुआ, जिसे दौरान सिनाड के सदस्यों की राय बँट गई; आर्कबिशप दिमित्री सेचेनोव ने यह विचार व्यक्त किया कि धर्मगुरुओं और सरकार के प्रतिनिधियों से मिलकर एक विशेष आयोग का गठन किया जाना चाहिए जो धर्मप्रांतों और मठों के लिए स्टाफ तालिकाएँ तैयार करे और संपत्तियों से होने वाली आय के वितरण की प्रक्रिया निर्धारित करे।

कैथरीन, इस बैठक पर एक रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद, इस मामले पर स्वयं अभी तक कोई निश्चित राय नहीं बना पाई थीं, और उनका 12 अगस्त 1762 का घोषणापत्र संभवतः काउंट ए. पी. बेस्तुज़ेव[1094] के साथ इस मुद्दे पर चर्चा करने के बाद जारी किया गया था। यह अत्यंत लंबा घोषणापत्र[1095] , जो पीटर तृतीय के उपर्युक्त फरमानों का एक आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है, यह दर्शाता है कि कैथरीन अपने पूर्ववर्तियों की कार्रवाइयों की आलोचना करने से नहीं हिचकिचाईं, जो चर्च की संपत्तियों के प्रति पीटर के रवैये को समझने में विफल रहे थे और उन्होंने उस काम को जारी रखने से इनकार कर दिया था जो उन्होंने अपनी भावना में शुरू किया था। घोषणापत्र में कहा गया है, 'हमारा न तो इरादा है और न ही इच्छा है, कि हम चर्च की संपत्तियों को अपने लिए हड़प लें, लेकिन हममें ईश्वर द्वारा प्रदत्त अधिकार है कि हम ईश्वर की महिमा और मातृभूमि के लाभ के लिए उनके सर्वोत्तम उपयोग

[1090] रूसी अभिलेखागार 1865, पृ. 490; संग्रह 13, पृ. 378 (वोल्टेयर को, दिनांक 27 दिसंबर 1773)। 33, पृ. 142 (ग्रिमे को, दिनांक 23 अप्रैल 1781)।

[1091] 'निर्देश'। एड. चेचुलिन (1907)। यद्यपि बिशपों (आर्चीबिशप इनोकेन्टी की तथाकथित आयोग) ने कैथरीन के कार्यों की प्रशंसा की (टिट्लिनोव, गाव्रील पेट्रोव। पृ. 131–134), फिर भी रूसी चर्च और उसके हित विधान आयोग के दायरे से बाहर रहे; पादरी वर्ग का इसमें अपने स्वयं के प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिनिधित्व नहीं किया गया था; केवल सिनिड ने आयोग में एकमात्र प्रतिनिधि भेजा। फ्लोरोव्स्की, ए. द कंपोजीशन ऑफ द लेजिस्लेटिव कमीशन, 1767–1774 (1915)। पृ. 57; Stöhlin. 2. पृ. 468. तुलना करें: मेरा पूर्वोक्त ग्रंथ।

[1092] शचेरबटोव। 'रूस में नैतिकता के पतन पर', रूसी लेख 1871 में। पृ. 686; और यह भी: डोलगोरुकी, आई. एम. '1777 में कीव की यात्रा', रीडिंग्स 1870 में। खंड 3। पृ. 8; मेरा पूर्वोक्त ग्रंथ, पृ. 574–576।

[1093] संग्रह. 7. पृ. 97.

[1094] सोलोव्योव। 25 (1875)। पृ. 148; तुलना करें: काउंट ए. पी. बेस्टुज़ेव को कैथरीन का पत्र। संग्रह। 7. पृ. 135.

[1095] PSZ. 16. संख्या 11643.

से संबंधित कानून बनाएं। और इस उद्देश्य के लिए, ईश्वर की सुरक्षा में, हम अपने सबसे प्रिय दादा, महामहिम सम्राट पीटर महान द्वारा अनुसरण किए गए चर्च संबंधी नियमों के अनुसार, पूरे पुरोहित वर्ग के संगठन को पूर्णता तक पहुँचाने का इरादा रखते हैं, और इसके लिए हम अपनी ही निगरानी में, धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों हस्तियों का समावेश करते हुए एक विशेष आयोग स्थापित करेंगे।" इसके अलावा, सीनेट के प्रस्ताव (दिनांक 16 जुलाई) और सिनोड की याचिका का हवाला देते हुए, घोषणापत्र में यह आदेश दिया गया - जब तक कि यह आयोग अपना काम शुरू करके कोई निर्णय नहीं ले लेता: 1) कि संपत्तियाँ पुरोहित वर्ग को वापस कर दी जाएँ; 2) आर्थिक बोर्ड को समाप्त किया जाए और अधिकारियों को प्रशासन से हटा दिया जाए, 3) मठवासी किसानों पर प्रति व्यक्ति 1 रूबल का कर लगाया जाए, या 'स्थानीय परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार'; किसानों को श्रम के लिए काम पर रखना जारी रखना था, लेकिन 'किसी भी अत्यधिक कर या अनावश्यक श्रम से थके बिना'।

29 नवंबर 1762 को, एक नए शाही फरमान ने चर्च संपत्तियों पर आयोग की स्थापना की, जिसमें चर्च का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन सदस्य और सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले पांच सदस्य शामिल थे[1096] । आयोग को अपने काम के लिए विशिष्ट निर्देश मिले। निर्देशों का निष्कर्ष है, 'हम चाहते हैं कि चर्च की संपत्ति का परमेश्वर की सेवा में, यानी धर्मपरायणता को बढ़ावा देने और लोगों के लाभ के लिए, सर्वोत्तम संभव उपयोग किया जाए।' इस घोषणापत्र के उद्देश्य प्रशंसनीय थे, लेकिन दुर्भाग्य से, इससे न तो धार्मिकता में वृद्धि हुई और न ही लोगों को कोई लाभ हुआ। इस आयोग के गठन के संबंध में, सरकार ने कई और अध्यादेश जारी किए।

8 जनवरी 1763 को ही, कैथरीन का एक और घोषणापत्र सामने आया, जिससे यह स्पष्ट है कि, पहली बात तो यह कि, पीटर तृतीय के फरमानों और 12 अगस्त के घोषणापत्र ने मठों के किसानों के बीच भ्रम पैदा कर दिया था और अतिरिक्त व्यक्तिगत कर का भुगतान करने में अनिच्छा उत्पन्न कर दी थी; और दूसरी बात, पुरोहित वर्ग ने शायद उन संपत्तियों का प्रबंधन करने में बहुत अधिक उत्साह दिखाया था, जो उनके नियंत्रण में लौटा दी गई थीं, इसलिए नवीनतम घोषणापत्र में किसानों को 'अच्छी व्यवस्था में रखने' की सिफारिश शामिल थी[1097] । 12 मई 1763 को, कैथरीन ने धार्मिक संपत्तियों के लिए अर्थव्यवस्था बोर्ड की स्थापना की[1098] । आर्थिक प्रबंधन बोर्ड धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों से मिलकर बना था और सम्राज्ञी तथा सीनेट के प्रति उत्तरदायी था; इसे केवल विशुद्ध रूप से धार्मिक प्रकृति के मामलों को सिनॉड के पास भेजना आवश्यक था। अंत में, 26 फरवरी 1764 को, चर्च संपत्तियों पर प्रसिद्ध फरमान जारी किया गया, जिसने चर्च और राज्य के बीच सदियों पुराने विवाद – जिसकी शुरुआत 1503 से हुई थी – को समाप्त कर दिया[1099] ।

इस विधायी अधिनियम के सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान इस प्रकार थे: 1. सिनिड, धर्मप्रांतों, मठों और पैरिशों से संबंधित सभी संपत्तियों को निर्णायक रूप से वित्त बोर्ड को हस्तांतरित कर दिया गया। सभी धार्मिक संस्थानों को इन संपत्तियों के प्रशासन से हटा दिया गया। इन जमीनों पर रहने वाले किसान, जिनकी संख्या 1760 की जनगणना के अनुसार 910,866 'रेविस्की आत्माएँ' (यानी, केवल पुरुष; इस आंकड़े में उनके परिवार के सदस्यों को जोड़ना होगा) थी, उन्हें अर्थव्यवस्था बोर्ड के अधिकार क्षेत्र में रखा गया, और आगे से 'आर्थिक किसान' कहा जाने लगा। 2. 1 जनवरी 1764 से, कोर्वे श्रम और विभिन्न शुल्कों के बजाय, किसानों को 1.5 रूबल का प्रति व्यक्ति कर चुकाना अनिवार्य कर दिया गया, जिसे बोर्ड ऑफ इकोनॉमी के ' ' के माध्यम से राज्य कोषागार में जमा किया जाता था। 3. बोर्ड ऑफ इकोनॉमी को धार्मिक संस्थानों - धर्मप्रांतों, मठों और पैरिश चर्चों - के रखरखाव के लिए एक निश्चित राशि आवंटित करनी होती थी, जिनके पास पहले भूमि होती थी। 4. धर्मप्रांतों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया था, और उनके रखरखाव के लिए उनके वर्ग के अनुसार आवंटन किया गया था। 5. मठों के लिए – शुरुआत में केवल ग्रेट रूस के, यानी कीव के मेट्रोपॉलिटिन के अधीनस्थ मठों को छोड़कर – मठों के बजट तैयार किए गए थे[1100] ।

ये मठ सूची हमारे लिए दो मायनों में महत्वपूर्ण हैं: पहली बात, वे उन मठों की संख्या निर्दिष्ट करती हैं जिन्हें इन सूचियों के अनुसार वार्षिक भत्ता मिला; दूसरी बात, सूचीबद्ध मठों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया था।

[1096] PSZ. 16. संख्या 11716; आयोग की गतिविधियों पर: ज़ाव्यालोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 127 आदि.

[1097] PSZ. 16. संख्या 11730; अतिरिक्त रूप से, वही, संख्या 11745, 11747, 11789 और 11791 (राजस्व और व्यय के प्रबंधन और लेखांकन पर)।

[1098] PSZ. 16. संख्या 11814; अर्थव्यवस्था बोर्ड के लिए विशेष निर्देश: वही, संख्या 11844; इसने 12 जुलाई को काम शुरू किया। वही, संख्या 11864.

[1099] PSZ. 16. संख्या 12060.

[1100] तुलना करें: ज़ाव्यालोव। पूर्वोक्त, पृ. 155–190, 190–234, 283–321, 322–340 (बिंदु A, B, C और D पर)।

रूसी मठवाद के बाद के इतिहास के लिए, पहला बदि दूसरे की तुलना में अधकि महत्वपूर्ण साबति हुआ। मठों की संख्या में भारी कमी आई; यानी, कई मठों को या तो पूरी तरह से बंद कर दयिा गया या दूसरों के साथ मलिा दयिा गया; हालाँकि, रजिस्टरों में शामलि नहीं कयि गए कुछ मठों को बनाए रखने की अनुमति दी गई - तथाकथति 'अनयिंत्रति' मठ। इन दो श्रेणयिों के मठों का भवषि्य न केवल वति्तीय रूप से, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण, उनके आंतरकि आध्यात्मकि वकिास के मामले में भी अलग था। इस प्रकार न केवल मठों बल्कि संतों के भी दो अलग-अलग प्रकार, मठ जीवन के दो अलग-अलग रूप, और दो अलग-अलग तपस्वी मार्ग उभरे। मठवासी जीवन की नींव के रूप में, मठवासी चार्टर ने लंबे समय तक अपना महत्व खो दयिा।

1700–1701 में, रूस में 1,201 मठ थे, जनिमें से 965 पुरुषों के लिए और 236 महलिाओं के लिए थे[1101] । 21 जनवरी 1721 को, पीटर महान ने कुछ मठों को बंद करने का आदेश दयिा, जबकि अन्य, जनिमें भकि्षुओं की संख्या कम थी, उन्हें बड़े मठों में मलिा दयिा जाना था, और भकि्षुओं की संख्या कम की जानी थी। 'घोषणा' (1724) में भकि्षुओं की संख्या में कमी के संबंध में भी एक प्रावधान शामलि था। 'आध्यात्मकि वनियिमों' (§ 46, भकि्षुओं पर) में यह अनुशंसा की गई थी कि किसी भी एक मठ में भकि्षुओं की संख्या 30 से अधकि नहीं होनी चाहए। 18वीं शताब्दी में, 1764 तक, उपयुक्त उपाय कयि गए, और इस अवधि के दौरान कुल 175 मठ (पुरुषों के लिए 141 और महलिाओं के लिए 34) वलिय के परणिामस्वरूप बंद कर दयि गए या उनका आकार कम कर दयिा गया; हालाँकि, 1700 और 1744 के बीच, पुरुषों के लिए 33 नए मठ और महलिाओं के लिए 4 मठ स्थापति कयि गए[1102] . ये आंकड़े पूरी तरह से वशि्वसनीय नहीं हैं, क्योंकि सनिॉड और इसकी संस्थाओं को केवल तथाकथति 'नरि्दषि्ट' मठों के बारे में ही जानकारी मलिती थी, जनि्हें जमीनों से सहायता मलिती थी; छोटे मठ जो जमीनों के मालकि नहीं थे और जनि्हें 'गैर-नरि्दषि्ट' या 'छोटे-बंधुत्व' मठों के रूप में वर्गीकृत कयि गया था, वे अक्सर अस्तति्वहीन हो गए, और सनिॉड के पास इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। 1738 और 1741 के बीच, 624 मठ रखरखाव प्राप्त कर रहे थे[1103] ।

26 फरवरी 1764 के वधिायी अधनियिम के अनुसार, मठों के रजिस्टरों में नम्निलखिति को शामलि कयि गया था:

वर्ग 1 वर्ग 2 वर्ग 3 कुल
लाव्रास (अलेक्जेंडर नेवस्की और ट्रनिटिी-सर्गीयस) 2 – 2
पुरुष मठ 15 41 100 156
कन्वेंट्स 4 18 45 67

उन्हें वति्त बोर्ड से प्राप्त होने वाला रखरखाव नम्निलखिति राशि (रूबल में) पर नरि्धारति कयि गया था:

वर्ग 1 वर्ग 2 वर्ग 3 कुल
लव्रास (अलेक्जेंडर नेवस्की और ट्रनिटिी-सर्गीयस)[1104] 2 10,070 – – 2
पुरुष मठ 15 2,017.5 41 1,311.9 100,806.3 156
कन्वेंट्स 4 2009,[1105] 18,475.8 375.6 67 225 207,750.4

[1106]1 जनवरी 1762 को दनिांकति सनिाड की एक रपिोर्ट के अनुसार, सभी धर्मप्रांतों में, संपत्तयिों सहति और बनिा संपत्तयिों के, कुल 954 मठ थे, जनिमें 11,153 मठाधीश रहते थे[1107] । 1764 के धर्मनरिपेक्षीकरण के बाद, सनिाड ने 418 मठों को समाप्त करने का नरि्णय लयि। इससे 536 मठ शेष रह गए, जनिमें से 226 राज्य द्वारा समर्थति थे, जबकि शेष 310 लोगों से स्वैच्छकि दान पर नरि्भर थे[1108] । इस प्रकार, दो प्रकार के मठ उभरे: राज्य-समर्थति और गैर-राज्य-समर्थति। 31 मार्च 1764 को, एक पूरक अध्यादेश जारी कयि गया जसिमें यह प्रावधान कयि गया कि गैर-राज्य-वति्तपोषति मठों को भी तीन वर्गों में वभिाजति कयि जाएगा: वर्ग 1 – 20 मठ, वर्ग 2 – 56, और वर्ग 3 – 85,

---

[1101] चुडेट्स्की, पी. '18वीं और 19वीं शताब्दी में बंद रूसी मठों की संख्या पर ऐतहिासकि अनुसंधान का एक प्रयास', में: टीकेडीए. 1877. 4. पृ. 73.

[1102] PSPiR. 4. संख्या 1200; चुडेट्स्की. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 57, 58, 73, 74; IRI. 6. पृ. 1144–1147.

[1103] पोक्रोव्स्की, आई. अठारहवीं सदी में रूसी धर्मप्रांत. परशिषि्ट 2; ज़ाव्यालोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 235.

[1104] सेंट पीटर्सबर्ग में अलेक्जेंडर नेवस्की लाव्रा को सेंट पीटर्सबर्ग डायोसीसयिन सीट के साथ मलिकर वति्त पोषण प्राप्त हुआ।

[1105] 1 मठ 2009.8; 1 मठ 2007.7 और 1 मठ 1506.38 रूबल।

[1106] मलिीutin. उद्धृत ग्रंथ, में: रीडगि्स. 1861. 2. पृ. 565; ज़ाव्यालोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 266। 1768, 1775 और 1793 में, उनकी स्थापति संख्या के अनुसार मठों पर कुल व्यय में वृद्धि हुई। पीएसज़े. संख्या 13061, 14361 और 17124।

[1107] ज़ाव्यालोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 346–348, तालकिा।

[1108] उपरोक्त, पृ. 274। ये आँकड़े पूरी तरह से वशि्वसनीय नहीं हैं, क्योंकि व्यक्तगित मठ एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में चले गए; कुछ को बाद में बंद कर दयिा गया, जबकि अन्य को फरि से खोल दयिा गया। चुडेट्स्की। उपरोक्त, पृ. 73–75, 88–102, 104–107।

कुल 161 मठों में 1,247 भिक्षु; उन्हें या तो लोगों से स्वैच्छिक दान द्वारा या मठों के पास स्थित निर्जन भूमि से, जिसे भिक्षु स्वयं जोतते थे, बनाए रखा जाना था। शेष 149 मठों को भी बंद किया जाना था। इस प्रकार, 226 राज्य-वित्त पोषित और 161 गैर-राज्य-वित्त पोषित मठ बचे, कुल 387 मठ[1109] ।

1764 के धर्मनिरपेक्षता सुधार ने केवल ग्रेट रूसी मठों को प्रभावित किया; 22 साल बाद, 1786 में, कीव, चेर्निगोव और नोवगोरोड-सेवर्स्की गवर्नोरेटों में, और 1788 में – खार्कीव, येकातेरिनोस्लाव, कुर्स्क और वोरोनेज़ गवर्नोरेटों में इसी तरह की स्थिति उत्पन्न हुई[1110] ।

कर्मचारी विनियमों के तहत मठों को आवंटित वित्त पोषण वास्तव में बहुत कम था। यह मठ समुदाय का समर्थन करने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त था; मठ की इमारतें जर्जर हो गईं और साल-दर-साल ढहती रहीं, फिर भी मठाध्यक्षों ने यह डरकर सिनोड को इसकी सूचना नहीं दी कि मठ को तब समाप्त कर दिया जाएगा; मठों की वित्तीय स्थिति में सुधार करने के लिए, मठाध्यक्षों ने नियमों में निर्धारित संन्यासियों की संख्या को कम करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप, सबसे बड़े मठों को छोड़कर हर जगह, संतों की संख्या जल्द ही विनियमों में निर्धारित आंकड़ों से कम हो गई। 1771 में ही, मठों में 527 रिक्त स्थान थे[1111] ।

1764 के धर्मनिरपेक्षीकरण के तुरंत बाद मठों और संन्यास जीवन की बाहरी स्थिति ऐसी ही थी। मठ और संन्यासवाद अपने इतिहास के एक नए युग में प्रवेश कर चुके थे। स्थिति कठिन थी, लेकिन चर्च पदानुक्रम और भिक्षुओं को स्वयं इन कठिनाइयों से पार पाने के तरीके खोजने थे; और अब जब मठ संपत्तिहीन हो गए थे, तो केवल तपस्या के आधार पर भिक्षु जीवन में सुधार करना संभव हो गया था।

अध्याय XIV. 1764 के धर्मनिरपेक्षीकरण से लेकर 20वीं सदी की शुरुआत तक का मठवाद।

1. मठवाद का बाह्य इतिहास

1764 में चर्च की संपत्तियों का धर्मनिरपेक्षीकरण रूसी चर्च के भीतर मठवासी जीवन के लिए पूरी तरह से नई परिस्थितियाँ पैदा कर गया। ऐसा प्रतीत होता है कि धर्मनिरपेक्षीकरण को अर्थव्यवस्था के मठवासी जीवन पर सांसारिक प्रभाव को समाप्त कर देना चाहिए था। इसको देखते हुए, सिनोड और धर्मप्रांतीय बिशपों के लिए मठवासी जीवन में सुधार लाना या, कम से कम, इसे बेहतर बनाने के लिए प्रभावी उपाय करना अत्यंत आवश्यक था। हालाँकि, कुछ भी नहीं किया गया, और इस मामले पर बिल्कुल भी गंभीरता से चर्चा नहीं की गई। धर्मनिरपेक्षता के 20-30 साल बाद ही, कुछ बिशपों द्वारा (अपनी पहल पर) मठवासी जीवन को किसी न किसी तरह से बेहतर बनाने के प्रयास देखे गए; फिर भी यह ऐसे समय में हुआ जब धर्मनिरपेक्षता की प्रक्रिया मठवासी जीवन में और भी गहराई तक प्रवेश कर रही थी। एक ओर, ये केवल सीमित, स्थानीय प्रकृति के अलग-थलग उदाहरण थे; दूसरी ओर, इन प्रयासों के पीछे सुधार के किसी सुविचारित कार्यक्रम की कोई भावना नहीं थी। और फिर भी, जैसा कि हम देखेंगे, ये प्रयास व्यक्तिगत मठों के जीवन पर अपनी छाप छोड़े बिना नहीं गए, और उस पर एक लाभकारी प्रभाव डाला। लेकिन जब इन सुधारों के सकारात्मक परिणाम स्पष्ट हो गए, तब भी सिनोड इस अनुकूल अवसर का लाभ उठाने में विफल रहा। उसने या तो आधे-अधूरे उपाय अपनाए या, यदि पूरी तरह से विपरीत कदम नहीं भी, तो कम से कम नकारात्मक प्रकृति के उपाय तो लागू किए ही, जिन्होंने मठवासी जीवन में पहले से हो चुके सुधारों के प्रभावों को कमजोर कर दिया।

जब 1764 में धर्मनिरपेक्षता लागू की गई, तो धार्मिक हलकों में इस सुधार के प्रति दो अलग-अलग दृष्टिकोण उभरे। एक दृष्टिकोण में चर्च की संपत्ति का धर्मनिरपेक्षीकरण करने के राज्य के अधिकार का मौलिक इनकार शामिल था; दूसरा पूरी तरह से व्यावहारिक प्रकृति का था, यानी, यह चर्च और उसकी संस्थाओं के लिए धर्मनिरपेक्षीकरण के परिणामों के आकलन, इसके नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं का तौलने, और इन संस्थानों के दैनिक जीवन को इस तरह से व्यवस्थित करने पर केंद्रित था कि वह नई स्थिति के अनुरूप हो। हमारे कार्य से यह स्पष्ट है कि चर्च ने पहले कभी भी ऐसी कार्रवाइयों के लिए राज्य के अधिकार को स्वीकार नहीं किया था, और अब, धर्मनिरपेक्षीकरण के बाद, उसने खुद को राज्य द्वारा लूटा हुआ माना, भले ही राज्य ने जब्त की गई संपत्तियों के बदले में, राज्य कोष से उसे एक भत्ता दिया, जो, यद्यपि यह जब्त की गई संपत्तियों से होने वाली आय के बराबर

[1109] PSZ. 16. संख्या 12121; मिलियुटिन. उद्धृत ग्रंथ, में: च्टेनिया. 1861. 2. पृ. 568–569; चुडेट्स्की. उद्धृत ग्रंथ. पृ. 74; ज़ाव्यालोव. उद्धृत ग्रंथ. पृ. 270–271.

[1110] PSZ. 22. संख्या 16375, 16649 और 16650.

[1111] PSZ. संख्या 13721.

नहीं था, फरि भी यह काफी था; इसने, मूल रूप से, चर्च को कसिी भी तरह से नरिाशाजनक स्थतिमें नहीं डाला; इसके अलावा, जैसा कहिम देखेंगे, बाद में इस भत्ते में वृद्धकिी गई। पेत्रुस महान के अधीन एक राज्य-नयिंत्रति चर्च की शुरुआत, जो अंततःकैथरीन के शासनकाल में स्थापति हुई, का धर्मनरिपेक्षीकरण एक तार्ककि परणिाम था। कैथरीन के अधीन नरिंकुश साम्राज्यवादी शक्तकि सुदृढ़ीकरण को देखते हुए, चर्च द्वारा चर्च पर राज्य के नयिंत्रण के खलिाफ कोई भी संघर्ष व्यर्थ हो गया। इसलिए चर्च के लिए धर्मनरिपेक्षता के व्यावहारकि पहलुओं को ध्यान में रखते हुए अपनी नई स्थतिकि अनुकूल ढलना आवश्यक था। मठवासी समुदाय के लिए कैथरीन के सुधारों के इस पहलू को ध्यान में रखना वशिेष रूप से महत्वपूर्ण था, क्योंकनिई स्थतिको स्वीकार करके, वह आंतरकि मठवासी जीवन में एक व्यापक सुधार कर सकता था। लेकनि मठवासी समुदाय ने ऐसा नहीं कयिा; यह तब उचति होता यदचिर्च ने वास्तव में अपने धार्मकि संपत्तयिों के अधकिारों को बहाल करने के लिए अपने सभी प्रयासों को नरि्देशति कयिा होता। गुप्त रूप से, चर्च पदानुक्रम धर्मनरिपेक्षता को चर्च की एक प्रकार की लूट मानता था, लेकनि बाहरी रूप से, वरिोध केवल रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन आर्सेनी मात्सेवचि के प्रसदि्ध भाषण में ही प्रकट हुआ, जनि्हें पदानुक्रम या मठवासी समुदाय के बीच कोई स्पष्ट समर्थन नहीं मलिा। शायद इसका कारण यह है कधिर्मनरिपेक्षता के आर्थकि परणिामों ने चर्च की उच्च-श्रेणी और मठवासी समुदाय का पूरा ध्यान खींच लयिा था। संन्यासी समुदाय ने कोई स्पष्ट या प्रभावी वरिोध नहीं कयिा – आखरिकार 18वीं सदी के सरकारी उपायों के बाद, वह इसके लिए बहुत अधकि थका हुआ और आंतरकि रूप से कुचला हुआ रह गया था; चर्च के जीवन पर उसका इतना कम प्रभाव बचा था कवि ह धर्मनरिपेक्षता का खुले तौर पर वरिोध करने या उसके खलिाफ बोलने की हम्मित नहीं कर सकता था।

आर्सेनी मात्सेवचि उन्नीसवीं सदी के उन बशिपों के समूह से थे जो दक्षणिी रूस, लटिलि रूस से थे, और जनि्होंने पीटर महान के शासनकाल के दौरान रूसी चर्च के भीतर अपना बढ़ता हुआ प्रभाव हासलि कर लयिा था; ज़ार, जो ग्रेट रूसी बशिपों पर भरोसा नहीं करता था, दक्षणि रूसी पदानुक्रम के प्रतनिधियिों का पक्षधर था और उन्हें आसानी से बशिप पदों पर नयिुक्त कर देता था[1112] । आर्सेनयिस का जन्म 1697 में वोल्हनियिा के व्लादमिीर-वोल्इन्स्की शहर में एक पैरशि पादरी के परविार में हुआ था; उन्होंने शुरुआत में पोलैंड में अध्ययन कयिा, और 1715 तक वे पहले ही कीव थयिोलॉजकिल अकादमी में छात्र बन चुके थे, जसिे उन्होंने एक साल बाद एक मठ में प्रवेश करने के लिए छोड़ दयिा; अर्सेनी ने अपनी शक्षिा पूरी करने के लिए अकादमी में लौटने से पहले मठ में दो साल बतिाए। 1723 में, वह अकादमी के चर्च में एक हायरोंक और उपदेशक बन गए। फरि उन्होंने मठ में और दो या तीन साल (1728–1730) बतिाए, और 1730 में उन्हें साइबेरयिा के टोबोल्स्क में एक डायोसीशयिन उपदेशक के रूप में भेजा गया। वह वहाँ अधकि समय तक नहीं रुके और, सोलोवेत्स्की मठ में थोड़ी देर रहने के बाद, 1734 में कम्चाट्का प्रायद्वीप के लिए एक अभयिान के साथ एक कन्फेशनर के रूप में रवाना हो गए। बीमारी के कारण, आर्सेनी रूस लौट आए और कुछ समय के लिए वोल्गोडा में बशिप के आवास में रहे; 1738 में, उन्होंने सेंट पीटर्सबर्ग में एक हायरोंक और कैनन कानून के शक्षिक के रूप में कार्य कयिा। बल्कुिल अप्रत्याशति रूप से, 26 मार्च 1741 को, उन्हें टोबोल्स्क के मेट्रोपॉलटिन के रूप में अभषिक्ति कयिा गया, लेकनि उन्होंने टोबोल्स्क में लंबे समय तक सेवा नहीं की; 1742 में, उन्हें रोस्तोव के प्राचीन सहिासन पर पदोन्नत कयिा गया। यहाँ उन्होंने खुद को एक उल्लेखनीय उपदेशक और एक अधकिारशाली धर्मप्रांतीय बशिप के रूप में साबति कयिा।

आर्सेनी बहुत मजबूत चरत्रि के व्यक्तथि, जदि्दी और अत्यधकि चड़िचड़ि थे। उनके धार्मकि और राजनीतकि वचिार ऐसे थे कउिन्होंने पीटर महान में गहरी अवश्विास पैदा कर दयिा होता। अर्सेनी ''रूस में राज्य और चर्च के बीच नए संबंध के एक कट्टर वरिोधी थे; पीटर महान की राज्य-चर्च नीतनि े उनमें एक तीव्र नकारात्मक दृष्टकिोण और नदिा को जन्म दयिा। पीटर तृतीय के अधीन भी, जब बाद वाले ने चर्च संपत्तयिों पर अपने फरमान जारी कए, तो अर्सेनी पदानुक्रम के शीर्ष पर थे, जो शाही फरमानों से अत्यंत असंतुष्ट थे। जब कैथरीन के अधीन, 12 अगस्त और 29 नवंबर 1762 के उनके घोषणापत्रों के अनुसार चर्च और मठों की संपत्तयिों का एक सूचीकरण करने का आदेश दयिा गया, तो आर्सेनी ने इन उपायों का खुले तौर पर वरिोध कयिा। उन्होंने सनिाड को दो 'रपिोर्ट्ें'[1113] भेजीं, जनिमें उन्होंने 29 नवंबर के फरमान की बहुत कड़ी नदिा की। उनका मानना था कचिर्च की संपत्तअिछूत है, और उन्होंने इसका उदाहरण पगान तातार ख़ानों का दयिा, जनि्होंने चर्च की संपत्तपिर कब्ज़ा करने की हम्मित नहीं की; अर्सेनी ने चर्च संस्थानों के वत्तिीय मामलों में हस्तक्षेप करने या उनकी संपत्तयिों से होने वाली आय का सरकारी उद्देश्यों के लिए उपयोग करने के राज्य के अधकिार को स्वीकार नहीं कयिा; उन्होंने पीटर द ग्रेट द्वारा पेश कए

[1112] यह भी देखें: खार्लामोवचि। द लटिलि रशयिन क्लर्जी (1898) और श्लापकनि। उद्धृत ग्रंथ।

[1113] आर्सेनी द्वारा 'रपिोर्ट्ें', में: रीडग्सि. 1862. 2. पृ. 25.

गए धर्मप्रांतीय सहिासनों और मठों के लिए कर्मचारयिों के नयिमों का कड़ा वरिोध कयिा। अर्सेनी का मानना था कि यदि मामले इसी रास्ते पर चलते रहे, तो रूसी साम्राज्य एक प्रोटेस्टेंट या उससे भी बदतर, एक नास्तकि राज्य में बदल जाएगा; एपस्किोपेट और मठवाद पूर्ण पतन में चले जाएंगे, जबकि चर्च और धार्मकिता लगभग नष्ट हो जाएँगी।

सनिाड ने रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन की 'रपिोर्टों' को महारानी के समक्ष प्रस्तुत करने का नर्णिय लयिा। सम्राज्ञी, इन लेखों की सामग्री और भाषा से क्रोधति होकर, जसिमें उसे व्यक्तगित अपमान महसूस हुआ, ने सनिाद को, महामहमि का अपमान करने, राजद्रोहपूर्ण भावनाओं और सामान्य भलाई के प्रतशित्रुतापूर्ण वचिारों के आधार पर, आर्सेनी को उसके बशिप पद से हटाने और उसे उत्तर में एक दूरस्थ मठ में नर्विासति करने का आदेश दयिा। जब, 1767 में, यह पता चला कि आर्सेनी ने अपने वचिार नहीं बदले थे और वह खुद को अवैध रूप से दोषी ठहराया हुआ मानता था, जबकि लोगों के बीच वह सत्य के लिए एक शहीद के रूप में पूजे जाते थे; और इसके अलावा, जैसा कि महारानी को बताया गया, बातचीत में उन्होंने सहिासन पर उनके आरोहण और पीटर III की अचानक मृत्यु से जुड़ी कुछ परस्थितियिों का संकेत दयिा, – कैथरीन ने मांग की कि आर्सेनी को एक बार फरि मुकदमे का सामना कराए। इस बार, उससे उसका संन्यासी दर्जा छीन लयिा गया और उसे रेवल कलि में कैद कर दयिा गया। अर्सेनी ने जेल में और पाँच साल बतिाए, जसि 'अपराधी एंड्रेई व्राल' के नाम से सूचीबद्ध कयिा गया था; उसे एक छोटी सी कोठरी में बंद कर दयिा गया था, जहाँ 1772 में उसकी मृत्यु हो गई।[1114] कलिा कमांडेंट को लखिे एक पत्र में कैथरीन ने आर्सेनी को 'हरामज़ादा और पाखंडी' कहा[1115] , जो बेशक, उस कैदी के चरत्रि से बलि्कुल भी मेल नहीं खाता था, क्योंकि वह खुद एक पाखंडी थी, और मेसेवचि की नयति हमेशा के लिए कैथरीन और उसकी चर्च नीति दोनों पर एक छाया डालती रहेगी।

रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन की दुखद नयति ने धार्मकि पदानुक्रम पर गहरा और भयावह प्रभाव डाला और उसे धर्मनरिपेक्षीकरण की प्रक्रयिा को चुपचाप देखने के लिए मजबूर कर दयिा। केवल टोबोल्स्क के मेट्रोपॉलटिन पावेल कोन्युस्केवचि (1758–1768) ने अपने धर्मप्रांत में मठों के बंद होने के खलिाफ वरिोध कयिा, लेकनि उसका कोई फायदा नहीं हुआ[1116] । मठवासी समुदाय ने भी खुले तौर पर वरिोध करने की हम्मित नहीं की[1117] ।

1764 के धर्मनरिपेक्षीकरण से उत्पन्न स्थति स्थरि नहीं रही। यद्यपि चर्च की जमींदारयिाँ वास्तव में समाप्त हो गई थीं, कानूनी रूप से राज्य ने चर्च संस्थानों के भूमि स्वामित्व के अधकिारों को रद्द नहीं कयिा, और अगले 100 वर्षों में राज्य वधिान ने चर्च-स्वामित्व वाली भूमि के लिए वभिन्नि वशिषाधकिार स्थापति कए। 19वीं सदी तक आते-आते, व्यक्तगित मठों की जमींदारी अब उतनी व्यापक नहीं रह गई थी जतिनी कि 16वीं और 17वीं सदी में थी; फरि भी, मठ काफी सफलतापूर्वक भूमि का अधग्रिहण करते रहे। 19वीं सदी में भी कुछ मठ और अधकि धनी हो गए। इसके अलावा, कुछ मठों ने मौद्रकि उपहारों और आभूषणों के दानों के कारण काफी संपत्ति अर्जति की। ठीक वैसे ही जैसे 16वीं सदी में ई , 19वीं सदी में कई मठों के पास पर्याप्त पूंजी थी, जसिका उपयोग मठाधीश मठ की समृद्धि बढ़ाने के लिए बहुत कुशलता से करते थे।

धर्मनरिपेक्षता ने मठों की संख्या में वृद्धि को नहीं रोका। 1764 और 1917 के बीच, कई मठों को समाप्त कर दयिा गया, लेकनि उसी समय नए मठों की स्थापना भी की जा रही थी। 1701 से 19वीं सदी के मध्य तक, 1764 के धर्मनरिपेक्षकरण से पहले और बाद में, कुल 822 मठ बंद कर दए गए[1118] ।

बंद (साइबेरयिा को छोड़कर) पुरुष महलिा कुल

18वीं सदी की शुरुआत से 1764 तक 141 34 175

[1114] आर्सेनी मात्सेवचि पर एक बहुत ही जानकारीपूर्ण अध्ययन के लिए, देखें: पोपोव, एम. *आर्सेनी मात्सेवचि एंड हजि केस* (1912); टट्लिनिोव. *гаврилл पेट्रोव* (1916); मोरोशकनि, आई. *आर्सेनी मात्सेवचि एंड हजि केस*, में: *स्ट्रानकि*. 1885. 3. पृ. 457–487, 655–672; इकोनकिोव, वी. 'अर्सेनी मात्सेवचि', में: रस्स्कीये स्टेटी. 1879. 4, 5, 8–10; अर्सेनी मात्सेवचि के प्रत सहानुभूति रखने वाले दो अन्य आर्चमैंड्राइट्स को भी उसी समय दोषी ठहराया गया था।

[1115] प्रव. सोब. 1875. 3. पृ. 248.

[1116] टटिोव, ए. 'पावेल कोन्युस्केवचि', इस्तोरचिस्के वेस्टी, 1888, खंड 1, पृ. 180 आदि; टॉलस्टॉय, एम. 'सेंट पावेल, टोबोल्स्क के मेट्रोपॉलटिन', च्टेनयि्या, 1870, खंड 2, पृ. 158, 163, 168.

[1117] सांप्रदायकि वरिोध के उदाहरण के रूप में नम्निलखिति घटना का हवाला दयिा जा सकता है: कीव मेट्रोपोलसि (1786) में मठों की जमीनों के धर्मनरिपेक्षीकरण के तुरंत बाद, कैथरीन द्वतिीय ने कीव का दौरा कयिा और शहर के बाहरी इलाके में स्थति मेज़गिोर्स्क मठ में एक प्रार्थना सभा में शामलि होना चाहा। हालाँकि, महारानी के इरादे की जानकारी मलिते ही, भक्षिुओं ने—अफवाहों के अनुसार—यात्रा के नर्धिारति दनि सुबह-सुबह अपने ही मठ में आग लगा दी, और इस प्रकार कैथरीन की यात्रा नहीं हो सकी। रोझ्डेस्ट्वेंस्की, पी. सैमुअल मस्लिाव्स्की, मेट्रोपॉलटिन ऑफ़ कीव, में: टीकेडीए. 1877. 4. पृ. 17.

[1118] चुडेट्स्की। उद्धृत ग्रंथ, संदर्भ: टीकेडीए. 1877. 4. पृ. 104 एवं बाद के पृष्ठ। बेलारूस में, मठों को पहली बार *1796–97* में बंद कयिा जाना शुरू हुआ; *मठों का अंतमि बंद होना 1855–1860 में हुआ; काकेशस में, जॉर्जयिा में, कुछ मठ 1811 और 1819 में भी बंद कर दए गए थे। चुडेट्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 68, 73–76, 88–102।*

1764 के धर्मनरिपेक्षीकरण के दौरान 471 118 589
1764 के बाद से अठारहवीं शताब्दी के अंत तक 35 8 43
19वीं सदी के पहले छमाही में 13 2 15
कुल 660 162 822
पुनःआरंभ (साइबेरिया को छोड़कर) पुरुष महिलाएँ कुल
18वीं सदी में 18 4 22
19वीं सदी में 15 2 17
कुल 33 6 39 33 6 39

धर्मनरिपेक्षता के बाद, 226 नियमित और 161 अनियमित मठ बचे, कुल 387 (महान रूस में)। 19वीं सदी की शुरुआत में, जब दक्षिणी रूस और बेलारूस में 40 मठ बंद कर दिए गए, तो पूरे साम्राज्य में केवल 452 मठ ही बचे थे; 19वीं सदी मठों की संख्या में वृद्धि का निम्नलिखित चित्र प्रस्तुत करती है:

वर्ष पुरुष महिलाएँ कुल
1810 358 94 452
1825 377 99 476
1836 360 101 461
1855 415 129 544
1,887,469,202,671
1,893,507,235,742
1907 522 448 970
1914 550,475,1025

हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पुरुषों के मठों की संख्या मुख्य रूप से उन पुराने मठों की पुनःस्थापना के माध्यम से बढ़ी जिन्हें समाप्त कर दिया गया था; दूसरी ओर, महिलाओं के मठ या तो नए स्थापित किए गए थे या बहनों के संघों को मठों में बदलकर बनाए गए थे (अध्याय XIV, 4 देखें)। इस प्रकार, उन्नीसवीं सदी के दौरान, मठों की संख्या दोगुनी से भी अधिक हो गई (जबकि महिलाओं के मठों की संख्या 94 से बढ़कर 475 हो गई)। 1764 में, पूरे साम्राज्य में लगभग 1,070 मठ थे, और 1914 तक उनकी संख्या बढ़कर more[1119] हो गई थी।

मठों की संख्या में इस वृद्धि को इस तथ्य से सुविधा मिली कि, 1764 के बाद, मठों से संबंधित कई नए फरमान जारी किए गए, जिन्होंने 1764 के कानून को काफी हद तक बदल दिया। पहले से ही कैथरीन के अधीन, सर्वोच्च प्राधिकरण[1120] की जानकारी और अनुमति से नए मठ खोलने और पुराने मठों को फिर से खोलने की अनुमति दी गई थी। कैथरीन के पुत्र, सम्राट पॉल प्रथम (1796–1801), ने आंशिक रूप से मठवाद के प्रति अपनी अनुकूलता और आंशिक रूप से अपनी माता के सभी फरमानों के प्रति अपनी असहमति के कारण, 1764 के विधान में काफी ढील दी। 1797 में, मठों को अपनी शेष निर्जन भूमि (सब्जी के बगीचे, चारे के मैदान और कुछ हद तक चरागाह) को 30 देसियाटिन तक विस्तारित करने की अनुमति दी गई; मठों को मठ की इमारतों से काफी दूरी पर (पहले 15 वर्स्ट से अधिक नहीं) चक्कियाँ और मछली तालाब स्थापित करने का अधिकार दिया गया ([1121])। साथ ही, मठों के लिए मानक वित्त पोषण को संशोधित किया गया, और मठ समुदाय के रखरखाव के लिए भुगतान बढ़ा दिया गया; यहां तक कि गैर-सब्सिडी वाले मठों को भी राज्य कोष से वार्षिक 300 रूबल प्राप्त होने लगे[1122] । 8 जून 1805 के एक फरमान द्वारा, जो पहले से ही अलेक्जेंडर प्रथम (1801–1825) के अधीन था, मठों को उपहार या वसीयत के माध्यम से निर्जन भूमि के भूखंड प्राप्त करने का अधिकार दिया गया, बशर्ते उन्हें ऐसी भूमि की आवश्यकता हो; हालाँकि, भूमि की खरीद के लिए उच्चतम प्राधिकरण से अनुमति की आवश्यकता थी। मठों के लिए भूमि कर से कुछ श्रेणियों की भूमि को छूट देने वाले प्रावधान भी बहुत महत्वपूर्ण थे, जिन्हें बाद में 1857 के कानून संहिता में पुष्टि मिली और कुछ संशोधनों के साथ 1917 तक

[1119] 1882, 1889, 1894, 1910 और 1916 के वर्षों के लिए पवित्र सिनोड के मुख्य अभियोजक की रिपोर्टें देखें।

[1120] पीएसजे. संख्या 15379. § 58 (डीनेरी परिषद का फरमान)। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, मास्को के मेट्रोपॉलिटन प्लाटन के प्रयासों के कारण, निकोलो-पेसनोशस्की मठ को 1766 में और बर्ल्यूकोवस्काया हर्मिटेज को 1780 में पुनर्स्थापित किया गया था। पमिन। स्मरणिकाएँ, में: रीडिंग्स। 1877। 1. पृ. 250, 253।

[1121] PSZ. 24. संख्या 18273, 18590। मठों द्वारा अधिग्रहीत भूमि के भूखंडों के आकार में और वृद्धि के लिए अनुरोधों को 5 अप्रैल 1800 के एक फरमान द्वारा खारिज कर दिया गया था। वही। संख्या 19370।

[1122] उपरोक्त. संख्या 18273; संविधान। भाग 2। अनुभाग 3। पृ. 63–67।

कानून के रूप में लागू रहे।[1123] निकोलस प्रथम (1825–1855) के शासनकाल के दौरान भी यही नीति जारी रही; 1797 के फरमान को (1835 में) केवल दोहराया ही नहीं गया, बल्कि कुछ मामलों में भूमि प्राप्त करने की शर्तें और भी अनुकूल हो गईं: अक्सर उच्चतम प्राधिकरणों की अनुमति से, धर्मप्रांतों और मठों ने 300 देसियाटिन तक के निर्जन भूखंड प्राप्त किए। केवल आबाद भूमि के संबंध में ही सरकार ने 1764 के कानून के प्रावधानों का दृढ़ता से पालन किया: 1841 में, पश्चिमी प्रांतों में मठों से ऐसी संपत्तियों को जब्त कर लिया गया, जहाँ वे तब तक बनी हुई थीं, और 1842 में इन मठों के लिए विशेष नियम बनाए गए।[1124]

1836 और 1861 के बीच, विभिन्न मठों ने सरकारी वानिकी से 9,000 देसियाना उपजाऊ भूमि और 16,000 देसियाना वनभूमि प्राप्त की; इस प्रकार के अधिग्रहण 1870 और 1880 के दशक में भी असामान्य नहीं थे।[1125] 1861 के नए नियमों के तहत मठों के रखरखाव भत्ते में प्रति विर्ष 168–200 रूबल की वृद्धि की गई[1126] । केवल वे मठ जो आधिकारिक रजिस्टर में शामिल नहीं थे, 1867 में सरकारी वित्तीय सब्सिडी प्राप्त करना बंद कर दिए गए[1127] । 1881 में, पंजीकृत मठों को कोषागार से 425,000 रूबल तक प्राप्त हुए।[1128]

19वीं सदी में मठों की वित्तीय स्थिति में लगातार सुधार हुआ। उन्हें विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों से, विशेषकर व्यापारियों से, पर्याप्त दान प्राप्त हुआ, जिन्होंने सम्राट निकोलस प्रथम के अधीन तेजी से बड़ी संपत्ति अर्जित की और करोड़ों की दौलत जमा की। मठों को धन और कीमती वस्तुओं (प्रतिमाएँ, घंटियाँ, वेस्टमेंट, आदि) का दान मिलता था, जबकि परोपकारी अपने खर्च पर मठों के चर्च और अन्य संरचनाएँ बनवाते थे। मठों ने स्वयं भी बड़े पैमाने पर निर्माण परियोजनाओं की शुरुआत की, जिससे बड़े पत्थर के चर्चों और भवनों के उदय के साथ उनका स्वरूप काफी बदल गया।

इस प्रकार के भवन अक्सर राज्य-पालित मठों में सामुदायिक नियमों की शुरुआत के संबंध में बनाए जाते थे, जैसा कि उदाहरण के लिए, निकोलो-उग्रेश्स्की मठ (मास्को के पास) के मठाधीश, आर्चिमांड्राइट पिमेन की 'स्मरणों' से देखा जा सकता है। इन 'स्मरणों' में 19वीं सदी की शुरुआत से लेकर 1870 के दशक के अंत तक मॉस्को धर्मप्रांत में मठवासी जीवन के कई विवरण शामिल हैं। मठों ने शहरों में बड़े पत्थर के घर हासिल करने की कोशिश की और इससे उन्हें काफी लाभ हुआ। सदी के मध्य तक, कुछ मठ लाभदायक डेयरी या सब्जी के खेत स्थापित करने में कामयाब हो गए थे। इसके अलावा, मठों को पर्याप्त दान प्राप्त हुए। आर्चिमैंड्राइट पिमेन के 'स्मरण' इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि 19वीं सदी में कई मठों की वित्तीय स्थिति में काफी सुधार हुआ था; 18वीं सदी के दूसरे भाग में उनकी गरीबी के प्रमाण अब केवल मठों के वृत्तांतों और मठों के लंबे समय से सेवा कर रहे सदस्यों के खातों में ही मिल सकते थे[1129] ।

आर्चबिशप सावा तिखोमिरोव (1819–1896) के *क्रॉनिकल ऑफ माई लाइफ़* में अन्य धर्मप्रांतों में मठों के समृद्ध होने के बारे में कई दिलचस्प विवरण हैं। अपने लंबे जीवन के दौरान, उन्होंने तीन धर्मप्रांतों का प्रशासन संभाला: पोलोत्स्क (1866–1874), खार्कीव (1874–1879) और ट्वेर (1879–1896)। उनका 'क्रॉनिकल', जो असाधारण विस्तार से लिखा गया है और जिसमें कई दस्तावेज़, पत्र और इसी तरह की चीज़ें शामिल हैं, उन अनगिनत

[1123] पीएसज़े. 28. संख्या 21785; तुलना करें संख्या 24246 (1810)। इस अध्यादेश के प्रावधानों को 1819 में पैरिश चर्चों पर भी लागू किया गया। पीएसज़े. 36. संख्या 27622. नगरों में मठों के स्वामित्व वाले घरों को आवास कर और भूमि कर से छूट दी गई; नगर प्राधिकरणों को देय कुछ अन्य शुल्कों को भी समाप्त कर दिया गया। PSZ. सं. 22894; 24627, 28611; 2 PSZ. संख्या 3326; बाद में 1857 के कानून संहिता (9. § 386, 391–392) में पुष्टि की गई। 1819 के बाद, अपने पैसे को लाभप्रद रूप से निवेश करने की इच्छा से, मठों ने अक्सर शहरों में घर खरीदे।

[1124] 2 पीएसजेड संख्या 26313, 15152, 15189, 15907। मुख्य अभियोजक की रिपोर्टें। 1836. पृ. 80; 1846. पृ. 91; 1841. पृ. 39, 80; 1842. पृ. 6, 12; 1856. पृ. 90; 1859. पृ. 5; 2 PSZ. संख्या 26736 – जॉर्जिया में मठों के संबंध में एक समान अध्यादेश (1852)।

[1125] 1838 के बाद, 150 देसियातिन तक के बड़े पैमाने पर निर्जन भूमि और जंगलों को अधिग्रहित करने की अनुमति दी गई। 2 PSZ. संख्या 11518। तुलना करें: कानून संहिता। 8. भाग 1 (वन चार्टर)। पृ. 536। इस प्रकार, ट्रिनिटी-सर्गेयस लावरा ने 1,249 देसियाटिन राज्य-स्वामित्व वाले वनों का अधिग्रहण किया। पिमेन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 259। रोस्टिस्लावोव। अनुसंधान निष्कर्ष। पृ. 73–74 (वन अधिग्रहण के कई उदाहरण)। रोस्टिस्लावोव का अनुमान है (उपरोक्त, पृ. 86) कि 1870 के दशक की शुरुआत में, 200 मठों के पास 250,000 डेसियानाइट से अधिक भूमि थी।

[1126] 2 PSZ. संख्या 36967.

[1127] 2 पीएसजेड. संख्या 45341; जारी किए गए निधियों का उद्देश्य धर्मप्रांतों के कर्मचारियों के भत्ते बढ़ाना था।

[1128] स्ट्रानिक। 1882। 8। पृ. 622; रिपोर्ट्स। 1884।

[1129] पिमेन, आर्चिमैंड्राइट। संस्मरण (1877) (*रीडिंग्स* 1876. 3–4; 1877. 1 में भी)। कड़े अनुशासन के एक भिक्षु द्वारा लिखित ये *संस्मरण* 19वीं सदी में मठों के इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं; दुर्भाग्य से, हमारे पास तुलनीय विश्वसनीयता के अन्य बहुत कम स्रोत हैं।

दानों का वर्णन करता है जो मध्यम और अमीर व्यापारी वर्गों, कुलीनों और अन्य सामाजिक वर्गों के लोगों से मठों में आए थे[1130] ।

होली सिनोड के मुख्य अभियोजक की वार्षिक रिपोर्टें 19वीं और 20वीं शताब्दी में विभिन्न सामाजिक स्तरों के लोगों से मठों को प्राप्त हुए कीमती सामान और संपत्ति के रूप में मिले अनेक दान को प्रकट करती हैं। इन दानों के पैमाने का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि, उदाहरण के लिए, काउंटेस ऑर्लोवा-चेस्मेंस्काया ने 1848 में तैयार अपनी वसीयत में निर्देश दिया था कि 340 मठों को 1,700,000 रूबल से कम का दान न दिया जाए (प्रति मठ 5,000 रूबल); इसके अलावा, उन्होंने सोलोवेत्स्की और यूरीएव मठों और पोचाइव लावरा (वोल्हिनिया में) को मूल्यवान वस्तुएँ विरासत में दीं[1131] । हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मठ इन सभी संपत्तियों का आर्थिक उद्देश्यों के लिए उपयोग करने में असमर्थ थे। सबसे पहले, कई दान – और यह दाताओं की धार्मिक निष्ठा की विशेषता है – का उपयोग केवल चर्चों को भव्य रूप से सजाने और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए किया गया; अर्थात् सोने की जड़ौंदी और कीमती पत्थरों से सुसज्जित असंख्य प्रतिमाएँ, सोने और कीमती पत्थरों से अलंकृत पूजा के वस्त्र, पूजा के बर्तन, और सोने-चांदी से सजे आइकनोस्टेस। भव्य पूजा के प्रति लगाव और प्रेम 16वीं, 19वीं और 20वीं शताब्दी की रूसी भक्ति का एक समान लक्षण था।[1132] हालाँकि, यह दावा करना अनुचित होगा कि सभी दान इसी प्रकृति के थे। उपरोक्त आर्कमैंड्राइट पिमेन की *मेमोइर* और आर्चबिशप साव्वा की *क्रॉनिकल* से हमें कई ऐसे उदाहरणों के बारे में पता चलता है जहाँ विशिष्ट शैक्षिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए, अनाथालयों, अस्पतालों और स्कूलों के निर्माण के लिए मठों को बड़ी धनराशि दान की गई, जिनमें कई बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। ऐसे दानों की बदौलत, मठ—मुख्य रूप से महिला मठ—उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी की शुरुआत में, व्यापक शैक्षिक और धर्मार्थ गतिविधियों को अंजाम देने में सक्षम हुए[1133] । यहाँ बहुत कुछ मठ की अधिष्ठात्री के विचारों पर निर्भर था। उदाहरण के लिए, वेरकोल्स्की कन्वेंट (उत्तरी रूस में), जो विशेष रूप से अमीर नहीं था, ने अपनी मठाधीश, आर्चिमंड्राइट थियोडोसियस ओरेखोव (1829–1882) की ऊर्जा के कारण, 1870 के दशक में व्यापक शैक्षिक गतिविधियों की शुरुआत की[1134] ।

बेशक, सभी मठ अपनी क्षमता के अनुरूप परोपकारी कार्यों में लगे हुए नहीं थे, जिसकी अक्सर जनता, विशेष रूप से 1860 और 1870 के दशक के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में आलोचना होती थी। कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि 20वीं सदी की शुरुआत में रूस में कोई भी मठ ऐसा नहीं था जिसके पास मठ समुदाय और स्वयं मठ का समर्थन करने के लिए पर्याप्त धनराशि न हो (हालांकि ये धनराशियाँ मठों के बीच असमान रूप से वितरित थीं); अन्यथा, वे अपनी धर्मार्थ गतिविधियों का विस्तार करने की स्थिति में नहीं होते।

[1130] साव्वा, आर्चबिशप। *क्रॉनिकल ऑफ माई लाइफ़*। खंड 5, पृ. 172, 178, 216; खंड 6, पृ. 276; खंड 7, पृ. 59, 221, 385; खंड 8, पृ. 739. आर्चबिशप सावा की संक्षिप्त जीवनी: Ist. v. 1896. 66. पृ. 1106; 1910. 120. पृ. 316। साव्हा के 'क्रॉनिकल' में कई प्रामाणिक दस्तावेज़, पत्र और इसी तरह की अन्य चीज़ें शामिल हैं, और इसलिए यह 19वीं सदी में रूसी चर्च के इतिहास पर एक बहुत ही मूल्यवान कृति है। यह भी देखें: रोस्टिस्लावोव। अनुसंधान पर एक निबंध। पृ. 329, 331, 232, 212, 336। रोस्टिस्लावोव का कार्य, जिसमें मठों पर बहुत अधिक सामग्री है, का कुछ सावधानी के साथ उपयोग किया जाना चाहिए, क्योंकि रोस्टिस्लावोव की लेखनी पक्षपाती थी।

[1131] रिपोर्टें। 1848। पृ. 86; तुलना करें: अन्य वर्षों की रिपोर्टें। उदाहरण के लिए, 1869 में इवानोव्स्की मठ (मास्को धर्मप्रांत में) को विधवा मकरोवा-जुब्चाननिोवा से 300,000 रूबल प्राप्त हुए; एक निश्चित डेरज़ावनि ने ज़नामेंस्की कन्वेंट (नोवगोरोड डायोसीस में) की स्थापना की और इसे 98,279 रूबल और 890 देसियाटिन कृषि भूमि और वन क्षेत्र दान किया।

[1132] तुलना करें: रीडगिस. 1870. 2. पृष्ठ 54, 51 में आई. एम. डोलगोरुकी के 'नोट्स' में।

[1133] पिमेन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 103, 246, 280, 282, आदि; तुलना करें: साव्वा की 'क्रॉनिकल' और रिपोर्ट्स के विभिन्न अंश; उदाहरण के लिए, 1887 में, मठों द्वारा 100 अस्पतालों और 72 रात्रि आश्रयों को सहायता दी गई थी। रिपोर्ट्स फॉर 1887 (1889)। पृ. 156; 1884. पृ. 231 आदि। और युद्ध के दौरान, उदाहरण के लिए 1812 में, मठों ने सैन्य अस्पतालों को बड़ी धनराशि दान की; अकेले ट्रिनिटी-सर्गीस लावरा ने 70,000 रूबल दान किए। ज़नामेन्स्की। रूसी चर्च के इतिहास की एक गाइड (1876)। पृ. 429–431; *1877–78 में, कई मठों में सैन्य अस्पताल स्थापित किए गए थे। रिपोर्ट्स। 1877 । पृ. 5–29; 1878 । पृ. 145–146 ।*

[1134] उन पर ए. ग्रेकोव का बहुत ही दिलचस्प कार्य देखें, 'फादर आर्चिमांड्राइट थियोडोसियस, आर्कहैंगेलस्क गवर्नरेट के पिनेज़्की जिले में वर्कोल्स्की मठ के मठाध्यक्ष' (1893)। थियोडोसियस ओरेखोव एक अधिकारी के बेटे थे। उन्होंने अपना माध्यमिक शिक्षा एक जिमनासियम और एक उच्च कृषि विद्यालय से पूरी की; इसके बाद, दो साल (1854–1856) तक, वे एक मठ से दूसरे मठ तक भटकते रहे; 1857 में, वे कोझेज़ेर्स्की मठ में एक नवसिखिया के रूप में प्रवेश हुए और 1860 में उन्होंने अपने मठवासी संकल्प लिए। 1861 में ही थियोडोसियस छोटे वर्कोल्सी मठ के मठाधीश बन गए; उन्होंने वहाँ एक सामूहिक नियम लागू किया, और जल्द ही लगभग खंडहर हो चुका मठ सच्ची मठवासी भक्ति का स्थान बन गया। फादर थियोडोसियस ने मठ में एक आश्रय स्थापित किया, साथ ही किसान बच्चों के लिए बोर्डिंग सुविधाओं वाले दो स्कूल भी खोले; उन्होंने एक शिल्प स्कूल बनाया और आसपास के गांवों की आबादी के बीच सफल शैक्षिक कार्य किया।

2. मठवासी जीवन का आंतरिक संगठन

सिनोडल काल के दौरान, इस तथ्य के बावजूद कि मठवासी जीवन के नकारात्मक पहलू स्पष्ट रूप से स्पष्ट थे और चर्च पदानुक्रम को ज्ञात थे, शुरू में स्थिति में सुधार के लिए न तो कोई गंभीर उपाय प्रस्तावित किए गए और न ही लागू किए गए।

'आध्यात्मिक विनियमों का परिशिष्ट' (1722) ने विशेष रूप से मठवाद, मठ जीवन और मठों के प्रशासन से संबंधित सभी मामलों को संबोधित किया। यह मठवाद को पाँच खंड समर्पित करता है: 1) 'कैसे को और कैसे भिक्षु के रूप में स्वीकार किया जाए'; 2) 'भिक्षुओं के जीवन पर'; 3) 'भिक्षुणियों पर'; 4) 'मठों पर'; 5) 'मठाध्यक्षों और मठाध्यक्षियों पर'। इसकी सामग्री के संदर्भ में, यह न तो कोई सटीक रूप से तैयार किया गया फरमान है और न ही कोई मठवासी चार्टर। 'परिशिष्ट' अत्यधिक सामान्यीकृत शैली में लिखा गया है और यह भिक्षु जीवन के लिए नहीं बल्कि भिक्षु जीवन के बारे में लिखा गया है। मठाधीशों पर लिखी गई अनुभाग भी इसी अंदाज़ में रची गई है। और फिर भी, 'परिशिष्ट' सभी मठों के लिए एकल सामुदायिक चार्टर तैयार करने के लिए आधार के रूप में काम कर सकता था[1135] । यह संभव है कि 'परिशिष्ट' के संकलक थियोफान प्रोकोपोविच का इरादा इस दिशा में काम करना जारी रखने का था।

1723 में, संभवतः पीटर के अनुरोध पर, उन्होंने सेंट पीटर्सबर्ग में नव-स्थापित अलेक्जेंडर नेवस्की मठ के लिए एक चार्टर लिखा – 'अलेक्जेंडर नेवस्की मठ के भिक्षुओं के मठवासी जीवन का वर्णन'[1136] । इसमें चार अध्याय हैं: 1) 'भिक्षु जीवन का वर्णन'; 2) 'चर्च सभाओं और सामूहिक प्रार्थना पर'; 3) 'भिक्षुओं के भोजन सभा के क्रम का वर्णन'; 4) 'मठाधीश के कर्तव्य'।

एक साल बाद, 31 जनवरी 1724 का वह फरमान प्रकाशित किया गया, जिससे हम परिचित हैं; इसमें तथाकथित 'संन्यास पर घोषणा' शामिल है, जिसका यहां पहले ही हवाला दिया जा चुका है[1137] । यह 'घोषणा' एक चार्टर के बजाय एक प्रबंध के रूप में भी है। हालांकि थियोफेंस द्वारा लिखी गई इन सभी प्रबंधों ने सामुदायिक जीवन की प्रशंसा की, फिर भी वे केवल प्रबंध ही रहे, जिनका मठवासी जीवन पर कोई व्यावहारिक प्रभाव नहीं पड़ा; मठवासी जीवन को सेनोबिटिज़्म के सिद्धांतों पर पुनर्गठित करने के लिए धर्मप्रांतीय पदानुक्रमों द्वारा कोई विशेष उपाय नहीं किए गए।

साथ ही, महारानी अन्ना के शासनकाल के दौरान मठों की संपत्तियों से संबंधित आदेश और की गई जांचें मठ समुदाय पर अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहीं और उनके नकारात्मक परिणाम सकारात्मक परिणामों से अधिक थे। यह तर्क दिया जा सकता है कि मठों का आंतरिक जीवन कभी भी 18वीं सदी के पहले छमाही में देखी गई ऐसी पतन की स्थिति में नहीं पहुंचा था। हालांकि आधिकारिक तौर पर कुछ मठ सामूहिक नियमों का पालन करते थे जबकि अन्य अलग रहने के नियमों का पालन करते थे, व्यवहार में भिक्षुओं का जीवन इतनी अव्यवस्था और अराजकता की स्थिति में था कि उनके भीतर की कुछ घटनाओं की व्याख्या केवल प्रकाशित नियमों और फरमानों की अपर्याप्त समझ से ही की जा सकती है। सिनोड ने स्वयं, रीजेंट अन्ना लियोपोल्डोव्ना को दी गई एक रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकाला कि मठवासी व्यवस्था 'अब पतन की स्थिति में है' और इस डर का इज़हार किया कि रूसी मठवाद पूर्ण विनाश के कगार पर था[1138] ।

1692 में स्थापित सारोव हर्मिटेज की कहानी इस बात का उदाहरण है कि इन जांचों के परिणाम कितने भयानक थे। आबा जॉन († 1737) और डोरोथियस (1731–1746) की ऊर्जा और तपस्वी समर्पण के कारण, यहाँ शुरू से ही एक सख्त सामुदायिक नियम लागू किया गया था, और संतों के जीवन की विशेषता उच्च स्तर की आध्यात्मिक भक्ति थी। हालाँकि, अन्ना के अधीन मठवाद पर हुए अत्याचार ने दो या तीन दशकों की अवधि में सब कुछ अव्यवस्था और अराजकता में डाल दिया, इसलिए 18वीं सदी के दूसरे छमाही तक ही abbots , एफ्रेम (1758–1777) और पाचोमियस (1777–1794) एक बार फिर मठ के नियम को फिर से लागू करने और तपस्वी आश्रम को वास्तविक तपस्यापूर्ण भक्ति का स्थान बनाने में सक्षम हुए[1139] ।

[1135] 'आध्यात्मिक विनियमों का परिशिष्ट', इसमें: पीएसजेड, संख्या 4022 और पीएसपीआईआर, खंड 2, संख्या 596। यह 'परिशिष्ट' आध्यात्मिक विनियमों के सभी बाद के संस्करणों में शामिल है।

[1136] मठ जीवन का यह 'चित्रण' अलग पोस्टरों के रूप में मुद्रित किया गया था, जो संभवतः कोठरियों की दीवारों पर लटकाए जाने के लिए थे। पहली बार प्रकाशित: बोगदानोव। सेंट पीटर्सबर्ग का वर्णन (1779); बाद में, मेट्रोपॉलिटन इवजेनी बोलखोवितिनोव ने 'चित्रण' को *हिस्ट्री ऑफ द रशियन हायरार्की*, खंड 2 में शामिल किया; तुलना करें: टिट्लिनोव, बी. *दियोफान प्रोकोपोविच*, आरबीएस में, पृ. 433।

[1137] PSZ. 7. संख्या 4450; PSPiR. 4. संख्या 1197; चिस्तोविच। थियोफान प्रोकोपोविच और उनका समय। परिशिष्ट।

[1138] एन. एम. '18वीं सदी में रूसी मठवाद', *स्ट्रानिक* में। 1884. 1. पृ. 212, 435.

[1139] ज़्वेरेन्स्की। खंड 2, संख्या 1141; डेनिसोव। संख्या 889; प्राव. सोब. 1863। खंड 7, पृ. 154; सरोव हर्मिटेज के संस्थापक और प्रथम मठाधीश, हिरोस्केमामोंक जॉन का जीवन और कृत्य (1892)।

महत्वपूर्ण रूप से, नए मठों की स्थापना और पुराने मठों के पुनरुद्धार का कार्य सदि्ध तपस्वियों को सौंपा गया था। उदाहरण के लिए, हेगुमेन फलिारेट (1773–1841) का कार्य अत्यधकि सफल रहा; उन्होंने माउंट अथोस के सख्त मठवासी नयिम को लागू करके ग्लस्किाया बोगोरॉदट्स्किाया हर्मटिेज (कर्सक डायोसीस में) में जीवन को सचमुच बदल दयिा, जसिके परणिामस्वरूप, 19वीं सदी के पहले छमाही में, इस मठ ने तपस्या के आदर्शों के पुनरुद्धार में एक प्रमुख भूमकिा नभिाई। फलिारेत ने 'नए मुंडति भकि्षु के लिए एक वस्तिृत नर्दिेश' (An Extensive Instruction for the Newly Tonsured Monk) भी रचा, जो उस समय भकि्षु समुदाय में व्यापक रूप से प्रसारति हुआ था[1140] । सेंट पीटर्सबर्ग और नोवगोरोड के मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल पेट्रोव ने मठवासी सामुदायकि जीवन को पुनर्जीवति करने के लिए बहुत कुछ कयिा; उन्होंने मठों में आध्यात्मकि पतिाओं की प्रणाली को शुरू करने के लिए भी प्रोत्साहति कयिा, जैसा कि नीचे चर्चा की जाएगी। अपने धर्मप्रांतों में, 1760 के दशक के दौरान और बाद में 1780 और 1790 के दशकों में, छह मठों के जीवन को सामुदायकि चार्टर के आधार पर पुनर्गठति कयिा गया था; वरषि्ठ थयिोफान सोकोलोव की सहायता से, गैब्रयिल ने 'सामुदायकि जीवन के नयिम' संकलति कए, जन्हिें उनके धर्मप्रांत के मठों के मठाध्यक्षों को इस प्रकार के मठवासी जीवन की ओर मठ समुदाय में रुचि जगाने के लिए भेजा गया था[1141] ।

जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा गया है, 1764 के मठ संबंधी नयिमों ने शेष मठों को दो श्रेणयिों में वभिाजति कयिा: राज्य-वत्तिपोषति और गैर-राज्य-वत्तिपोषति। राज्य-वत्ति पोषति न होने वाले मठ केवल श्रद्धालुओं की स्वैच्छकि भेंटों और दानों पर ही जीवति रह सकते थे। परणिामस्वरूप, कई राज्य-वत्ति पोषति न होने वाले मठ पूरी तरह से समाप्त हो गए; अन्य मठों में, भकि्षुओं की संख्या में लगातार गरिावट आई, जनिमें से कई ऐसे राज्य-वत्ति पोषति मठों में चले गए जहाँ अभी भी रक्तियिाँ थीं, जबकि अन्य दक्षणिी रूस के लिए नकिल पड़े; अत्यधकि तपस्वी स्वभाव वाले भकि्षु माउंट अथोस या मोल्डोवा चले गए; उनमें से कुछ बाद में रूस लौट आए और 18वीं सदी के अंतमि चौथाई भाग में मठवासी आध्यात्मकि जीवन के पुनरुद्धार में एक महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई।

[1142]राज्य-समर्थति मठों की स्थति बेहतर थी, जन्हिें राज्य से एक मामूली लेकनि नश्चिति भत्ता मलिता था। इन मठों ने मठवासी नयिम की बहाली और रखरखाव के लिए उपयुक्त परस्थितियिाँ प्रदान कीं। दुर्भाग्य से, हालांकि, धार्मकि अधकिारयिों[1143] द्वारा इस दशिा में कोई महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाए गए। जैसा कि हम उन्नीसवीं सदी के वभिन्नि स्रोतों से देखेंगे, राज्य-समर्थति मठ, कुछ दुर्लभ अपवादों को छोड़कर, सामुदायकि नयिमों के अनुसार नहीं बल्कि व्यक्तगित जीवन के नयिमों के अनुसार रहते थे, और वे भी सख्ती से पालन नहीं कए जाते थे। भकि्षुओं को मठ द्वारा कोठरयिाँ और भोजन प्रदान कयिा जाता था—जो कभी-कभी भोजनशाला में नहीं बल्कि उनकी कोठरयिों में संग्रहीत कयिा जाता था—लेकनि उन्हें अपने जीवनयापन के लिए आवश्यक अन्य सभी चीजें, जैसे कपड़े, स्वयं प्राप्त करनी पड़ती थीं; इस उद्देश्य के लिए, उन्हें मठों से एक नश्चिति राशि मलिती थी; उन पर कोई कर्तव्य नहीं थोपे जाते थे; यदि वे कोई कर्तव्य नभिाते भी थे, तो उन्हें उसके लिए अतरिक्ति भुगतान कयिा जाता था; एकमात्र दायत्वि धार्मकि अनुष्ठानों में शामलि होना था; अन्य समय में, भकि्षु मठ छोड़ने के लिए स्वतंत्र थे। ऐसे हालात में, मठाधीश भाईचारे पर नरिंतर नगिरानी नहीं रख सकते थे। यह स्पष्ट है कि राज्य द्वारा संचालति मठों में भकि्षुओं का यह जीवन यापन, तपस्या के सदि्धान्तों[1144] के अनुरूप नहीं था। राज्य द्वारा संचालति मठों में व्यवस्था बहाल करने के लिए वभिन्नि उपाय कए जाने के बावजूद—जो, हालांकि, केवल व्यक्तगित मठों से संबंधति थे—19वीं सदी के दौरान मठ समुदाय के आध्यात्मकि जीवन का स्तर लगातार गरिता रहा। जब, 1821 में, आर्चबशिप फलिारेट ड्रोज़दोव ने अपने धर्मप्रांत का पहला दौरा कयिा, तो वे मठवासयिों के जीवन-यापन के तरीके से, वशिेष रूप से राज्य-पालति मठों में,

---

[1140] यह 'नर्दिेश' लखि जाने के कई साल बाद प्रकाशति हुआ था (मास्को, 1824)। एल्डर फलिारेट और उनकी गतविधियिों के बारे में, देखें 'द लाइफ ऑफ द ब्लेस्ड एल्डर, रविaŭवर ऑफ द ग्लस्कि हर्मटिेज, हेगुमेन फलिारेट' (1860)।

[1141] मकाराई, आर्चमिांड्राइट। ए नैरेटवि ऑफ द लाइफ एंड वर्क्स ऑफ हजि एमनिेंस गैब्रयिल, मेट्रोपॉलटिन ऑफ नोवगोरोड एंड सेंट पीटर्सबर्ग (1857)। पृ. 69–71, 172; उस्पेंस्की, वी. डस्क्रिप्शिन ऑफ द नीलोव हर्मटिेज (1886)। पृ. 45; तुलना करें: टट्लिनिोव, बी. गैब्रयिल पेट्रोव (1916); अध्याय 6 में इस पर वस्तिार से चर्चा की गई है।

[1142] पमिेन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 121।

[1143] 1816 में, लेबेडनिो के जोसाफ नामक एक आर्चमिंड्राइट ने सनिड को एक सामुदायकि चार्टर का मसौदा प्रस्तुत कयिा; सनिड ने जवाब दयिा कि आध्यात्मकि वनियिमों में नहिति प्रावधान मठवासी जीवन को ठीक से व्यवस्थति करने के लिए काफी थे। चेर्नविोव डायोसीस का ऐतहिासकि ववरिण। खंड 3. पृ. 232; RBS. पृ. 290.

[1144] एन. एम. '18वीं सदी में रूसी मठवाद', में: स्ट्रानकि. 1884. 1. पृ. 210. इस वषिय पर पमिेन की 'मेमोयर्स' और उनका लेख 'मोनैस्टसिज़्म एंड कंटेम्पररी इंटरप्रटिेशन्स ऑफ इट', देखें: च्टेनयिा. 1874. 2. पृ. 96 ff., साथ ही बेसेदा. 1872 में प्रकाशति 'आवर मॉनास्ट्रीज़' लेख (जो मेरे लिए उपलब्ध नहीं था)।

गहराई से असंतुष्ट थे। उनमें से अधिकांश सामुदायिक नियमों का पालन नहीं करते थे; भाई इतने आरामदायक जीवन के आदी हो गए थे कि उन्होंने सामुदायिक जीवन शुरू करने के किसी भी प्रयास का कड़ा विरोध किया।

[1145]आर्किमैंड्राइट पमिन अपने *मेमोयर्स* में लिखते हैं कि राज्य-संचालित मठों में सामुदायिक नियमों का अस्वीकार बहुत व्यापक था। अत्यंत प्रतिभाशाली और ऊर्जावान मेट्रोपॉलिटिन फिलारेट भी अपने नाम से सामुदायिक नियमों को लागू करने को लेकर सतर्क थे, और उन्होंने एक परोक्ष तरीका अपनाना पसंद किया – व्यक्तिगत मठाधीशों के माध्यम से, जिन्होंने धीरे-धीरे अपने-अपने मठों में इन नियमों को लागू किया। उदाहरण के लिए, उग्रेश मठ में, जहाँ सामुदायिक नियम इसकी स्थापना (1380) से 1764 तक लागू था, वहाँ 1853 में जाकर—और मठीय समुदाय के विरोध के बिना नहीं—मठाध्यक्ष इसे फिर से लागू करने में सफल हुए; बाद में कुछ भिक्षुओं ने मठ छोड़ दिया। 1860 और 1870 के दशक में, मॉस्को डायोसीस (मॉस्को के बाहर) के केवल 10 नियमित मठों ने सामुदायिक नियम को अपनाया, यह एक ऐसा विकास था जिसके लिए वे काफी हद तक उपर्युक्त पमिन के प्रयासों के ऋणी थे। इस मामले में व्यक्तिगत मठाध्यक्षों की व्यक्तिगत पहल ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निकिंद्रोव हर्मिटेज (प्स्कॉव गवर्नरेट में) में, मठाधीश द्वारा 1800 में सामुदायिक नियम पेश किया गया था, और 1817 में जाकर ही मठवासी समुदाय ने इसे मठवासी जीवन की नींव के रूप में अपनाया[1146] । जब हिलारियन, लेदोगा झील के एक द्वीप पर स्थित कोनेव्स्की मठ के मठाध्यक्ष थे (1805–1823), तो उन्हें भी उतनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जब उन्होंने सबसे सख्त सामुदायिक नियमों को बहाल किया (उस समय मठ आधिकारिक रजिस्टर से बाहर था और पूर्ण पतन की स्थिति में था); उन्हें तिखविन में उस्पेंस्की मठ (1823–1851) के प्रशासन के दौरान भी यही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा[1147] । जहाँ तक व्यक्तिगत मठाध्यक्षों की व्यक्तिगत पहल कितनी सफल हो सकती है, यह वोल्गोडा धर्मप्रांत के हेगूमन आयोना के कार्यों से स्पष्ट होता है। उन्नीसवीं सदी के पहले चौथाई भाग में दो दशकों के दौरान, उन्होंने कम से कम छह मठों में मठवासी जीवन को सचमुच पुनर्निर्मित और रूपांतरित किया। वह एक किसान परिवार से आए थे और उन्हें कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं थी, फिर भी वह एक सख्त, सांसारिकता से परे रहने वाले भिक्षु और उत्तम प्रशासनिक कौशल वाले मठाधीश थे; उन्होंने सच्चे संन्यासी जीवन की सही समझ साहित्य से कम और अपने स्वयं के तपस्वी अनुभव से अधिक प्राप्त की; वे अच्छी तरह जानते थे कि संन्यासी जीवन से विभिन्न बुराइयों को कैसे खत्म किया जाए और स्थापित मठों के सांसारिक-चित्त भाइयों को सामुदायिक नियम[1148] का पालन करने के लिए कैसे मनाया जाए।

18वीं शताब्दी में, मठों से सर्वश्रेष्ठ भिक्षुओं को धर्मप्रांत के आध्यात्मिक प्रशासन में नियुक्त करने की व्यापक प्रथा के नकारात्मक परिणाम स्पष्ट हो गए; यह एक पूरी शताब्दी तक जारी रहा, और इस तरह मठ समुदाय अपने सर्वश्रेष्ठ सदस्यों से वंचित हो गया, जो मठों में एक सच्चे तपस्वी जीवन के उदाहरण के रूप में सेवा कर सकते थे[1149] । संन्यासी जीवन उस बहुत ही व्यापक प्रथा से भी बुरी तरह प्रभावित हुआ, जिसके तहत धर्मप्रांत के बिशप, दुराचार की सजा के रूप में, भिक्षुओं को शहरी मठों से ग्रामीण मठों में स्थानांतरित कर देते थे, जहाँ—विशेष रूप से बिना सामुदायिक नियम वाले राज्य-संचालित मठों में—वे संन्यासी समुदाय पर एक विशेष रूप से मोहक और भ्रष्ट प्रभाव डालते थे। यह प्रथा 19वीं सदी के मध्य तक जारी रही।[1150]

न ही मठाधीश की नियुक्ति की प्रक्रिया को विनियमित किया गया था। एक ओर, पुरानी व्यवस्था—जो 17वीं सदी की थी और 'आध्यात्मिक विनियमों' द्वारा निर्धारित थी, अर्थात् मठ समुदाय द्वारा मठाधीश का चुनाव—को समाप्त नहीं किया गया था; लेकिन, दूसरी ओर, 18वीं सदी में स्वयं सिनिड ही मठाधीशों की नियुक्ति करता था। यह प्रथा, जो मूल रूप से 17वीं सदी की थी, उन मठों की पुनःस्थापना के मामले में उचित ठहराई गई थी जिन्हें समाप्त कर दिया गया था या जो पूरी तरह से जर्जर हो गए थे। अव्यवस्थित मठवासी समुदाय में से एक नए मठाधीश का चुनाव एक संदिग्ध मामला था, क्योंकि ऐसा मठाधीश आमतौर पर समुदाय का सम्मान हासिल करने में विफल रहता था, और इसलिए मठवासी जीवन से अव्यवस्था और दुराचार को खत्म करने के उसके '' प्रयास शुरू से ही विफल होने के लिए

[1145] उपरोक्त, पृ. 90, 100, 127, 250, 256, 275, 282–286।

[1146] सेरेब्रांस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 328।

[1147] संग्रह. 113. 1 (1902). पृ. 21। हिलारियन की *कोनेव्स्की मठ के विधान* (1824) एक बहुत ही दुर्लभ छोटी पुस्तिका है जिसे मुझे बर्लिन सिटी लाइब्रेरी में (1943 से पहले) खोजने का सौभाग्य मिला। मठवासी जीवन के इस सम्मानित समर्थक के बारे में अधिक जानकारी के लिए, एक और पुस्तिका देखें: ओ. ए. एम. आर्किमंड्राइट हिलारियन, कोनेवस्की मठ के संस्थापक के जीवन पर एक निबंध (1861)। उनके चार्टर को उपर्युक्त आर्किमंड्राइट थियोडोसियस ओरेखोव (देखें टिप्पणी 1127) द्वारा वर्कोल्स मठ में पेश किया गया था।

[1148] पमिन। उद्धृत कृति, पृ. 112–114।

[1149] पीएसजेड. संख्या 8988 (1744); 13163 (1768); 18273 (1797).

[1150] पमिन। पूर्वोक्त। पृ. 246, 250, 254।

अभशिप्त थे। आर्कमिैंड्राइट पमिैन अपने *मेमोयर्स* में लखिते हैं कि एक मठाधीश का चयन कसिी भी तरह से आसान काम नहीं है, और यह कि हर वह संन्यासी जो एक अच्छा और कठोर जीवन जीता है, मठाधीश बनने के लिए उपयुक्त नहीं होता। पमिैन के समय में, यानी 1840-1870 के दशक में, राज्य-समर्थति मठों में मठवासी समुदाय स्वयं अपने ही बीच से एक मठाधीश के चयन के खलिाफ था। इसके अलावा, अनुभव से यह पता चला था कि राज्य-समर्थति मठों में सामुदायकि चार्टर लागू होने पर, बाहर से नयिुक्त नए मठाधीश अधकि सफलतापूर्वक कार्य करने में सक्षम थे[1151] ।

हालाँकि, एक उपाय जसिका उपयोग सनिड द्वारा अक्सर कयिा जाता था, मुख्य रूप से 19वीं सदी के दूसरे छमाही में, अव्यवहारकि साबति हुआ: धर्मप्रांत के बशिपों की मठों के मठाध्यक्ष के रूप में नयिुक्ति, या तो दंड के रूप में या उनकी सेवानविृत्ति के अनुरोधों के जवाब में। यह ध्यान में रखा जाना चाहए, जैसा कि नीचे और वस्तिार से चर्चा की जाएगी, कि सनिोडल अवधि के दौरान रूसी बशिप वर्ग काफी हद तक वद्विान भकि्षुओं की श्रेणी से आता था, फरि भी ये वद्विान भकि्षु लगभग कभी भी मठों में नहीं रहते थे और मठ संबंधी मामलों की उन्हें बहुत कम समझ थी; ऐसा बशिप अपने सुपुर्द कए गए मठ को अपनी नजिी जागीर मानने लगता था; 'बशिप की गरमिा', जसिे वह अक्सर एक अजीब तरह से समझता था, उसे मठ के चार्टर की आवश्यकताओं के अनुसार एक मठाधीश के कर्तव्यों को पूरा करने से रोकती थी। इसके अलावा, मठवासी संस्कारकि जीवन के लिए, पूर्वी चर्च में बशिप की पूजा की वशिष्टिताओं के कारण, बशिप की देखरेख से कसिी भी लाभ के बजाय असुवधिाएँ होती थीं[1152] ।

चूंकि कई मठों, नयिमति अनुदान वाले और बनिा अनुदान वाले दोनों में, एक परभिाषति मठवासी चार्टर का अभाव था, इसलिए उनमें धार्मकि अनुष्ठान की व्यवस्था भी बाधति हो गई। 19वीं सदी में, शहरी मठों में, उपस्थति भक्तों की रहने की परस्थितियिों को ध्यान में रखते हुए, धार्मकि सेवाओं को अक्सर छोटा कर दयिा जाता था, लेकनि ऐसी कटौती ग्रामीण मठों में भी अक्सर की जाती थी। आर्चमिंड्राइट पमिैन लखिते हैं कि उन्हें अपने उग्रेश मठ में दैवीय सेवाओं के दौरान टाइपकिॉन[1153] के सभी नयिमों और आवश्यकताओं का पूर्ण पालन शुरू करना कठनि लगा।

सनिोद ने अपनी ओर से मठों में सामुदायकि जीवन की व्यवस्था करने के लिए कोई नर्णिायक कदम नहीं उठाया; 1869 में, इसने केवल यह इच्छा व्यक्त की कि मठों में सामुदायकि जीवन को मठवासी तपस्या की एक अनविार्य नींव के रूप में लागू कयिा जाए, और अपनी उस सफिारशि को दोहराया जो पहले ही 1862 में की जा चुकी थी:[1154] मठों के मठाध्यक्षों के लिए तथाकथति 'नर्दिेशों' के इतहिास से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतम धार्मकि प्राधकिरणों ने मठवाद पर कतिना कम ध्यान दयिा। दसिंबर 1797 में एक शाही फरमान में ऐसी 'नर्दिेशकिाएँ' तैयार करने और लागू करने की सफिारशि की गई थी। लेकनि 1828 तक ऐसा नहीं कयिा गया था कि तब जाकर 'नर्दिेश' तैयार कए गए और उन्हें धर्मप्रांतीय बशिपों को भेजा गया; ये प्रारंभकि 20वीं सदी तक अपरविर्तति रहे, केवल चर्च स्लावोनकि लपिि को नए संस्करणों में नागरकि लपिि से प्रतस्थिापति कयिा गया और कुछ अनुच्छेदों का पुनर्वन्यिास कयिा गया। 'नर्दिेश' केवल मठाध्यक्षों के अधकिारों और कर्तव्यों से संबंधति हैं[1155] । 1910 तक ऐसा नहीं हुआ था कि सनिोद के नर्दिेशों पर, हरिीमोंक सेराफमि ने एक नया मठवासी नयिम तैयार कयिा, जसिका उद्देश्य मठवासी जीवन की नींव के रूप में काम करना था; दुर्भाग्य से, हमें इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि यह नयिम कभी कसिी मठ में लागू कयिा गया था या नहीं। इसकी काफी लंबाई के कारण, यह व्यावहारकि तपस्या के उद्देश्यों की पूर्ति करने की तुलना में भकि्षुओं और धर्मनष्ठि मठाधीशों में भय पैदा करने की अधकि संभावना रखता था[1156] ।

[1151] उपरोक्त। पृ. 101, 120, 243, 252, 255, आदि।

[1152] पमिैन. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 363. इसका एक उदाहरण अस्त्रखान के बशिप इसाक (पेलोवनिस्की) († 1894), या रयिाज़ान के डायोसीस के सहायक बशिप इसडिोर (कोलोकोलोव) († 1911) का मामला है; देखें: ल्वोव, एन. एन. ड्रेव्नकि, में: क्रास्नी आर्खवि. 39. पृ. 148; ज़ारशाही शासन का पतन। खंड 2, पृ. 68, 88; खंड 4, पृ. 190, 199, 308, 479, 480. तुला के बशिप लाव्रेन्ती (नेक्रोसोव) को 1908 में उनके 'उदारवाद' के कारण उनके पद से हटा दयिा गया और मास्को के vysokopetrovsky मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया। Ist. v. 122. पृ. 778; BV. 1908. 4. सम्राट नकिोलस प्रथम के युग पर, देखें: सामग्री, संग्रह में। 113। वशिेष रूप से भाग 2।

[1153] पमिैन। पूर्वोक्त, पृ. 249, 265, 252, 275, 120। यह, बेशक, केवल घंटों, मैटनि्स और वेस्पर्स पर ही लागू होता है, जनिमें व्यक्तगित पठन और स्टचिैरा को छोड़ दयिा गया या छोटा कर दयिा गया था; धर्मवधिि की सेवा का एक नश्चिति क्रम होता है और इसे कभी भी छोटा नहीं कयिा जाता है।

[1154] देखें: 'इंटीरयिर चर्च रविय्यू', में: स्ट्रानकि. 1897. 8. पृ. 560. 19वीं सदी के पहले छमाही के दौरान, सनिड ने वभिन्नि नर्दिेश जारी कए जो, हालांकि, केवल डायोसीज़न बशिपों को संबोधति थे और जन्हिें मठवासी जीवन में सुधार के प्रयास के रूप में नहीं माना जा सकता। तुलना करें: रपिोर्ट्स. 1841, 1862 (पाठ भी इसमें: बीवी. 1905. 9. पृ. 158), 1874, 1884, आदि।

[1155] PSZ. संख्या 18273; बार्सोव, टी. सनिोडल संस्थान। पृ. 162। परशिष्टि 43–48।

[1156] सेराफमि, हायरोमोंक। पुरुषों के सामुदायकि जीवन के लिए मठवासी नयिम। 3 खंड। (1910)।

यह स्थिति 1917 तक बनी रही: दो प्रकार के मठ थे, लेकिन किसी एक नियम का पालन और अनुपालन मठाधीशों के उत्साह और आध्यात्मिक स्वभाव पर निर्भर करता था[1157] । में, सामान्य रूप से, शहरी मठों में जीवन ग्रामीण इलाकों के मठों की तुलना में कम सख्त था। संन्यासी प्रथाओं में कई अंतर थे, और कोई भी उपासक या तीर्थयात्री इसे तुरंत देख सकता था। यह काफी बताने वाला है कि उन्नीसवीं सदी के दौरान और बीसवीं सदी की शुरुआत में, सिनॉड ने एक बार भी संन्यासी जीवन के मुद्दे को गंभीरता से संबोधित नहीं किया और केवल कभी-कभार ही इसके छोटे-मोटे विवरणों पर ध्यान दिया। जब, 1906 में, 1904-1905 की क्रांतिकारी आंदोलन के बाद मौलिक राज्य कानूनों में संशोधन के परिणामस्वरूप, बिशपों और पुरोहितों के बीच सुधार की एक उल्लेखनीय इच्छा उभरने लगी, और सिनिड—मुख्य रूप से सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलिटन एंथनी की पहल पर (वाडकोव्स्की, 1898–1912), सम्राट निकोलस द्वितीय के परामर्श से, ने 14 जनवरी 1906 को प्री-काउंसिल असेंबली की स्थापना की, जिसे चर्च जीवन में विभिन्न सुधारों को लागू करने की संभावना पर चर्चा करने का काम सौंपा गया था – मठवाद को, कहा जा सकता है, एक बार फिर से अनदेखा कर दिया गया; किसी भी मामले में, मठ संबंधी मुद्दों से निपटने के लिए कोई विशेष उप-समिति नहीं बनाई गई[1158] ।

3. 19वीं सदी में मठाधीशों की संख्या में वृद्धि

उन्नीसवीं सदी में मठाधीशों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, और मठों की संख्या भी काफी बढ़ी। इस घटना को दो कारणों से समझाया जा सकता है। 18वीं सदी में धार्मिक निष्ठा में गिरावट के बाद, आबादी के विभिन्न वर्गों में धार्मिक भक्ति का पुनरुत्थान हुआ। यह पुनरुत्थान मुख्य रूप से रूसी मठवासी नेतृत्व के प्रभाव के कारण था, साथ ही 18वीं सदी में मठों के पतन के बाद उनकी स्थिति में सुधार के कारण भी था – मठ और मठवासी जीवन अब एक बार फिर से लोगों की धार्मिक निष्ठा की धारणा के अनुरूप हो गए थे। एक बाहरी कारक को अनदेखा नहीं किया जा सकता, अर्थात् 1861 में दासप्रथा का उन्मूलन, जिसने किसानों को स्वतंत्र रूप से अपनी नियति निर्धारित करने की अनुमति दी। इसका महिलाओं के मठों की स्थिति पर विशेष प्रभाव पड़ा, जहाँ नवोदितों की संख्या साल-दर-साल बढ़ने लगी।

पीटर द ग्रेट द्वारा लाए गए मठवासी संन्यास लेने पर प्रतिबंध 18वीं सदी के दौरान लगभग पूरी तरह से लागू रहे, लेकिन 19वीं सदी में इन सरकारी फरमानों को उतनी सख्ती से लागू नहीं किया गया। 1738 की सामान्य जनगणना के अनुसार, देश में 14,282 मठवासी निवासी थे, जिनमें 7,829 पुरुष और 6,453 महिलाएँ शामिल थीं (इस आंकड़े में भिक्षु और भिक्षुणियाँ, नवसिखुए और नवसिखुआ भिक्षुणियाँ शामिल हैं)[1159] । 1764 के मठ संबंधी नियमों में 226 अधिकृत मठों के लिए कुल 5,105 भिक्षुओं और भिक्षुणियों का प्रावधान था; इसके अतिरिक्त, 161 और अनधिकृत मठ थे, जहाँ मठाधीशों की संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं था[1160] । 1840 तक, भिक्षुओं और भिक्षुणियों की संख्या बढ़कर 15,251 (नवसिखों सहित) हो गई थी, और 50 साल बाद रूस में पहले से ही 12,712 भिक्षु और 27,574 भिक्षुणियाँ थीं (कुल 40,286 लोग, नवसिखों सहित); 1907 में, पुरुषों के मठों में पहले से ही 24,144 भिक्षु (नवसिखों सहित) थे, और महिलाओं के मठों में 65,989 भिक्षुणियाँ (नवसिखियों सहित) थीं; मठों की संख्या 970 थी (522 पुरुषों के और 448 महिलाओं के) (देखें तालिका X और XI)[1161] . नन की संख्या विशेष रूप से तेजी से बढ़ी, यह प्रवृत्ति 19वीं सदी में रूसी महिलाओं के बीच तपस्या की भावनाओं में वृद्धि के कारण थी। रूसी महिलाओं के मठों का इतिहास चर्च के इतिहासकारों का विशेष ध्यान देने योग्य है, जो भविष्य में, जब पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होगी, इस विषय पर गहन अध्ययन लिखेंगे। यहाँ, हालांकि, हमारे पास उपलब्ध सामग्री के आधार पर, हम इस इतिहास के केवल मुख्य बिंदुओं को ही छूएंगे।

[1157] मठों और मठवाद से संबंधित सिनिड की विभिन्न निर्देशों और आदेशों के संग्रह के लिए, देखें: चिज़हेव्स्की। मठों पर प्रस्तावों का संग्रह (1896)।

[1158] सुधार योजनाओं पर, देखें: सुएटोव। ऑन द स्पेशल कमिटी अपूव्ड बाय हिज इम्पेरियल मेजेस्टी एंड एस्टैब्लिश्ड अंडर द होली सिनॉड टू डेवलप इश्यूज टू बी कंसीडर्ड बाय द ऑल-रशियन काउंसिल (1912); ओग्नेव। द एक्लेसियास्टिकल काउंसिल (1905); जर्नल्स एंड मिनिट्स ऑफ द प्री-काउंसिल कमिटी। 4 खंड *(1906–07); पूरक खंड: चर्च सुधार के प्रश्न पर धर्मप्रांतीय बिशपों की रायों का सारांश (1906); ए. आर. ऑर्थोडॉक्स चर्च के भाग्य पर ऐतिहासिक पत्राचार (1912); मेरा लेख: 1906 की पूर्व-परिषद समिति में: पुट् (1933). 38; तुलना करें: स्टुपेरचि, आर. *स्टैट्सगेडांके उंड रलिजनस्पोलीटिके पीटर्स ड. ग्र.* (1936). पृ. 105–107 । गोलुबिस्की, ई. ई. 'रूसी चर्च के जीवन में सुधार पर', *रीडिंग्स* में। 1913. 3. पृ. 126 ।*

[1159] सोलोव्योव। 4 (सं. ओपी)। पृ. 1510, 1649।

[1160] पीएसजेड. 16. संख्या 12060. विधान पुस्तक।

[1161] 1890 और 1907 (1893 और 1910) के लिए रिपोर्ट। यह भी देखें: प्रियोब्राज़ेंस्की। सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार रूसी चर्च (1897), 1840-1891 के लिए सांख्यिकीय आंकड़े वाले तालिकाएँ।

४. १९वीं सदी में महिला मठ

हमारी राय में, 19वीं सदी में महिलाओं के मठों की संख्या में हुई महत्वपूर्ण वृद्धि की व्याख्या केवल रूसी महिलाओं के बीच तपस्या की भावनाओं के उदय से नहीं की जा सकती - यह केवल धार्मिक खोज की अभिव्यक्ति नहीं थी। धार्मिक पुनरुत्थान और आध्यात्मिक खोज वास्तव में बहुत मजबूत थीं, लेकिन यह तथ्य कि ये आध्यात्मिक खोजें मठवासी जीवन से आगे नहीं बढ़ीं, इसका श्रेय मठवासी पदानुक्रम के प्रभाव को दिया जा सकता है। 19वीं सदी के दूसरे छमाही में रूस के सामान्य आध्यात्मिक इतिहास की विशुद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों ने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पीटर महान के सुधारों, जिन्हें रूस को यूरोपीय बनाने के उद्देश्य से लागू किया गया था, ने परिवार के भीतर और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की स्थिति में बदलाव लाया। यद्यपि ये बदलाव समाज के विभिन्न वर्गों में धीरे-धीरे और अलग-अलग तरीकों से प्रकट हुए, लेकिन हर जगह इसका परिणाम स्वतंत्रता और शिक्षा के लिए महिलाओं की आकांक्षाओं का मजबूत होना था। इस बात से कि इन आकांक्षाओं का सार्वजनिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता था, इस बात का प्रमाण उन्नीसवीं सदी के दूसरे क्वार्टर की शुरुआत में ही रूस की बौद्धिक इतिहास में रूसी महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका से मिलता है[1162] । यदि कोई रूसी रोमांटिसिज़्म, रूसी पश्चिमीकरण और स्लावोफिलिज़्म के इतिहास में गहराई से उतरता है—जिसकी वैचारिक दुनिया इन आंदोलनों के प्रतिनिधियों के व्यापक पत्राचार में सबसे अच्छी तरह से परिलक्षित होती है—और यदि कोई रूसी आत्मा में 'तूफान और तनाव' की इस अवधि के असंख्य संस्मरणों को पढ़ता है, – हर जगह हमें प्रतिभाशाली और जिज्ञासु महिलाओं की छवियाँ मिलती हैं जिन्होंने या तो अपने पुरुष समकालीनों पर लाभकारी प्रभाव डाला या, अपने स्वयं के आध्यात्मिक विकास के माध्यम से, उस युग के बौद्धिक जीवन में योगदान दिया। धार्मिक मुद्दों को किसी भी तरह से अलग नहीं रखा गया था। हालांकि इन मुद्दों पर चर्चाओं में अक्सर अभी तक संप्रदायिक चरित्र नहीं था या, जैसा कि प्रथम अलेक्जेंडर के अधीन रहस्यमय खोजों के युग के दौरान हुआ था, रूढ़िवादी चर्च की शिक्षाओं से विचलित नहीं हुई थी, फिर भी यह कहा जा सकता है कि धार्मिक प्रश्नों ने रूसी महिलाओं के आध्यात्मिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान लिया; साथ ही, महिलाओं ने इन मुद्दों को अमूर्त रूप से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और निजी तौर पर संबोधित करने का प्रयास किया[1163] । यह ठीक रूसी महिलाओं की आध्यात्मिक खोजों का वही पहलू था—जो विशेष ध्यान का पात्र है—जिसने कई खोजी आत्माओं को साधुओं से मिलने के लिए प्रेरित किया। बेशक, हमारा यह सुझाव देने का इरादा नहीं है कि धार्मिक खोजें केवल किसी एक या दूसरे साधु के प्रभाव में ही मठवासियों के जीवन में परिणत हुईं; कई लोग आध्यात्मिक मार्गदर्शन के बिना ही इस निर्णय पर पहुँचे।

हमने अभी-अभी रूसी लोगों के आध्यात्मिक इतिहास में पत्राचार के महत्वपूर्ण स्थान पर चर्चा की है। पत्र, मुद्रित कृतियों की तुलना में, लेखक के आध्यात्मिक जीवन की विविधता को अधिक प्रतिबिंबित करते हैं और पत्राचार करने वाले को अपनी आत्मा को खोलने का एक विशेष अनुकूल अवसर प्रदान करते हैं - यह एक ऐसा गुण है जो न केवल 1830 और 1840 के दशकों में रूसी लोगों में विशेष था 19वीं सदी में ही नहीं, बल्कि बाद के युगों में भी – जबकि एक पत्र का उत्तर देना किसी को विशेष विश्वास, मनाने की क्षमता और संवेदनशीलता प्रदर्शित करने का अवसर देता था। कई संतों ने, विशेष रूप से महिलाओं के साथ अपने पत्राचार में, अक्सर अपने पत्रों के माध्यम से खोजी

[1162] 19वीं सदी में रूसी महिलाओं की मुक्ति और शिक्षा की उनकी खोज के विषय में देखें: शोखोल, के. पी. 'रूस में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा के विकास पर', ZhMNP में. 1912. 8; 1913. 3 और 7.

[1163] 19वीं सदी के पहले छमाही में रूसी संस्कृति के इतिहास पर, निम्नलिखित कृतियों की अनुशंसा की जाती है: ज़मोतिन, रोमांटिक आदर्शवाद: 19वीं सदी के 20 और 30 के दशक में रूसी समाज (1907); गेर्शेनज़ोन, एम. निकोलस प्रथम का युग (1910); बर्सुकोव, एन. एम. पी. पोगोडिन का जीवन और कृतियाँ। खंड 1 और इसके बाद (1888–1899); कोशेलेव, ए. आई. नोट्स (1884); फिलिपोव, एम. एम. 'रूसी दर्शन का भाग्य', में: रस्कोए बोगट्स्वो. 1894. अंक 1, 3, 4, 8, 9; स्मिरनोवा, ए. आई. नोट्स (1897); 'अलेक्जेंडर प्रथम के अधीन धार्मिक आंदोलन'। सं. एन. पिक्सानोवा (1916); द टुर्गेनेव ब्रदर्स आर्काइव। अकादमी ऑफ साइंसेज द्वारा संपादित। 4 खंड। (1911–1915); डुब्रोविन, एन. एफ. 'हमारे रहस्यवादी और संप्रदायवादी', में: रूसी लेख 1895–1896; द उत्कृष्ट की संग्रह (1897); गेर्शेनज़ोन, एम. ऐतिहासिक नोट्स (1910; दूसरी सं., बर्लिन, 1923); ज़ावितेविच, ए. एस. खोम्याकोव। 2 खंड। (1902); कोर्निलोव, ए. द वॉन्डरिंग इयर्स ऑफ़ मिखाइल बाकुनिन (1925); स्तैंकेविच, एन. वी. कृतियाँ (1890); हर्ज़ेन. अतीत और विचार (विभिन्न संस्करण, जिसमें जर्मन संस्करण भी शामिल है); स्टेपुन, एफ. 'जर्मन रोमांटिसिज़्म और स्लावोफाइल का इतिहास दर्शन', में: लोगोस. 16 (1927); कोर्निलोव, ए. द अर्ली इयर्स ऑफ़ मिखाइल बकुनिन (1915) और अन्य। एक विस्तृत ग्रंथसूची (1918 तक) यहाँ दी गई है: पोलएविक्टोव, एम. एम्परर निकोलस I: ए बायोग्राफी एंड अकाउंट ऑफ़ हिज़ रेन (1918)।

आत्माओं का मार्गदर्शन कयि; यह इस बात का संकेत देता है कि मार्गदर्शन का ऐसा धार्मकि और तपस्वी रूप प्राप्तकर्ताओं के साथ मेल खाता था, जन्हिोंने अन्यथा अपने पाप स्वीकार करने की हम्मित नहीं की होती।

यह मुख्य रूप से शक्षिति महलिाओं पर लागू होता है; हालाँकि, महलिाओं के मठों में कसिान पृष्ठभूमि की वशिेष रूप से बड़ी संख्या में नन थीं। 1861 में दासप्रथा के उन्मूलन का कसिान परविारों में महलिाओं की स्थति पिर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। हालांकि रूढ़विादी और पतिृसत्तात्मक रीति-रविाज अभी भी बने हुए थे, कानूनी रूप से, एक कसिान लड़की—और एक वधिवा तो और भी अधकि—ने सुधार के बाद अपेक्षाकृत स्वतंत्रता और आत्मनर्भिरता हासलि कर ली थी। अब वह अधकि बार स्वतंत्र नर्णिय लेने में सक्षम थी, यहां तक कि परविार के वरषि्ठ सदस्यों की इच्छा के वरिुद्ध भी। शक्षिा की प्यास, जसिने उन्नीसवीं सदी के दूसरे भाग में रूसी लोगों के सभी वर्गों को इतनी मजबूती से जकड़ लयि था, उसे एक कन्वेंट के भीतर भी[1164] शांत कयि जा सकता था। वास्तव में, इसी दौर में महलिाओं के कन्वेंटों ने सार्वजनकि शक्षिा के क्षेत्र में व्यापक गतविधियिाँ शुरू कीं, एक ऐसा तथ्य जसि पर अभी तक अकादमकि साहत्यि में उचति ध्यान नहीं दयि गया है। वे सामाजकि और परोपकारी कार्यों में भी सफल रहीं, जो रूसी महलिाओं के दलिों के हमेशा करीब रहे हैं। अपने दैनकि मठवासी जीवन में, एक रूसी कसिान लड़की को ऐसी गतविधियिाँ मलिीं जो उसे अपने माता-पति के घर से परचति थीं: सभी प्रकार के घरेलू और घर के काम। यह तर्क दयि जा सकता है कि कन्वेंट में प्रवेश करने से उसके जीवन के तरीके में कसिी कट्टर बदलाव की आवश्यकता के बनिा ही उसकी आध्यात्मकि खोजें पूरी हो गईं; साथ ही, उसकी सामाजकि स्थति में सुधार हुआ, और उसके पूरे जीवन को एक गहरा अर्थ मलि गया। इसलिए, मठों में पर्दा डालने वाली महलिाओं की संख्या में वृद्धि को कसिी वशिेष रूप से मजबूत तपस्या की प्रवृत्तयिों के लिए जम्मिेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए। रूसी महलिाओं के मठों का इतहिास सबसे कठोर तपस्या के उदाहरणों से भरा है, लेकनि अधकिांश मठों में जीवन मध्यम तपस्या के माहौल में संचालति होता था, जसिमें मुख्य जोर संसार का पूर्ण परत्यिाग करने के बजाय उसकी सेवा करने पर दयि जाता था।

महलिा मठों के जीवन में सामाजकि और परोपकारी कार्यों ने एक केंद्रीय भूमकिा नभिाई और यह पुरुष मठों की परोपकारी गतविधियिों की तुलना में कहीं अधकि व्यापक था। इसका कारण न केवल पुरुष और महलिा की प्रकृति में अंतर है, बल्कि यह भी है कि कई महलिा मठ अपने सामाजकि और धर्मार्थ मशिन के कारण ही फलते-फूलते थे; इस संबंध में, वे अन्य मठों के लिए उदाहरण बन गए और लोगों की मान्यता और स्नेह को प्राप्त कयि।

रूसी चर्च पर अक्सर संस्कृति के क्षेत्र में बहुत कम करने का आरोप लगाया जाता था; जवाब में, महलिा मठों की गतविधियिों की ओर इशारा कयि जा सकता है, और फरि इनमें से अधकिांश आरोप अपना अर्थ खो देंगे। हालांकि, यह सच है कि ठीक उसी समय जब इन गतविधियिों ने एक ठोस आधार बना लयि था और वशिेष सफलता के साथ फलने-फूलने के लिए तैयार थीं, तब यह सब अचानक रुक गया। इतहिासकार के लिए, गतविधि का यह क्षेत्र एक अनअन्वेषति क्षेत्र बना हुआ है, क्योंकि अधकिांश संबंधति सामग्री नष्ट हो गई है, और यह स्पष्ट नहीं है कि क्या इसे कभी कसिी मौलकि अध्ययन में व्यापक और पूरी तरह से प्रस्तुत करना संभव होगा।

महलिा मठों के स्वर्णकाल के दौरान, संन्यासयिों की व्यक्तगित पहल की प्रमुख भूमकिा थी; ये मठ, कहा जा सकता है, अपने आप वकिसति हुए, जन्हिें लोगों ने धार्मकि अधकिारयिों की कसिी भी सहायता के बनिा स्थापति कयि; यह उनके श्रेय में है कि चर्च की पदानुक्रम ने नए मठों के खुलने में बाधा नहीं डाली।

1764, 1786 और 1788 के धर्मनरिपेक्षीकरण उपायों के बाद, 1780 के दशक के अंत तक पूरे रूस में केवल 80 महलिा मठ थे (75 अधकिृत और 5 अनधकिृत)। हालाँकि, 1810 तक रूस में पहले से ही 94 महलिा मठ थे, जसिे 19वीं सदी के दौरान उनकी संख्या में हुई तीव्र वृद्धि का आकलन करने के लिए एक प्रारंभकि बदिु माना जा सकता है। चार दशकों बाद, 1855 में, पहले से ही 129 कॉन्वेंट (97 अधकिृत और 32 अनधकिृत) थे, जनिमें 2,508 नन और 6,606 नवसखियिा थीं (देखें तालकिा X और XI)।

यह ध्यान देने योग्य है कि दोनों श्रेणयिों में महलिाओं के मठों की स्थति पिुरुषों के मठों से बहुत भन्नि थी, पहली बात तो भौतकि रूप से और दूसरी बात उनकी आंतरकि संगठन के मामले में। राज्य-वत्तिपोषति पुरुष मठ गैर-राज्य-वत्तिपोषति मठों की तुलना में बेहतर वत्तिीय स्थति में थे। हालांकि, महलिाओं के मठों में यह अंतर वशिेष रूप से ध्यान देने योग्य नहीं था; वास्तव में, गैर-राज्य वत्ति पोषति महलिा मठ अक्सर अपने राज्य-वत्ति पोषति समकक्षों से

[1164] 19वीं शताब्दी की शुरुआत में, नजिी मुद्रणालयों की संख्या में वृद्धि के साथ, कई तपस्या संबंधी कृतयिाँ, संतों के जीवन और अन्य प्रेरणादायक पुस्तकें व्यापक रूप से उपलब्ध हो गईं। 1821 के बाद से, पत्रकिा *क्रश्चियिन रीडगि* (सेंट पीटर्सबर्ग: थयिोलॉजकिल अकादमी द्वारा प्रकाशति) ने रूसी में कई तपस्या संबंधी कृतयिों को छापा; कुछ तपस्या संबंधी ग्रंथ ओप्टनिा हर्मटिेज में मुद्रति कए गए थे। तुलना करें अध्याय XV। 1860 के दशक में, धर्मशास्त्रीय पत्रकिाओं ने न केवल शैक्षणकि मुद्दों पर चर्चा करना शुरू कयि, बल्कि समकालीन आध्यात्मकि आंदोलनों पर भी काफी ध्यान दयि और वे प्रांतों में बहुत लोकप्रयि थीं।

अधिक समृद्ध थे। लगभग सभी नव-स्थापित महिला मठ, जो अपनी संस्थापिकाओं की व्यक्तिगत पहल पर स्थापित किए गए थे, को शुरू में गैर-राज्य वित्त पोषित माना जाता था; ऐसे मठ की संस्थापक—या, कम आम तौर पर, पुरुष संस्थापक—उसमें चल और अचल संपत्ति का दान कर देती थी। इसके अलावा, महिलाओं के मठों में, चाहे वे राज्य-वित्त पोषित हों या गैर-राज्य-वित्त पोषित, हमेशा पुरुष मठों की तुलना में अधिक संन्यासिनियाँ होती थीं, इसलिए राज्य-वित्त पोषित मठों में भी कर्मचारियों के नियमों में निर्धारित संख्या से अधिक संन्यासिनियाँ और नवसिखुएँ थीं। यदि हम इस बात को भी ध्यान में रखें कि पुरुषों के मठों को महिलाओं के मठों की तुलना में अधिक उदार सरकारी सहायता मिलती थी, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि एक महिला मठ की प्रमुख के पास प्रति निवासी उपलब्ध राशि पुरुष मठ के प्रमुख की तुलना में बहुत कम थी। हालांकि, चूँकि महिला मठ अपने स्वयं के खेतों (दुग्ध गायों और मुर्गीपालन रखने, और सब्जियां उगाने) को चलाने में अत्यधिक सफल थे, वे अपनी आय में काफी वृद्धि करने में सक्षम थे, इतना कि पुरुषों और महिलाओं के मठों की वित्तीय स्थिति में अंतर मिट गया। और फिर भी, महिलाओं के मठों में नन और नवसिखियों के रखरखाव के लिए उपलब्ध धन बहुत मामूली था, क्योंकि वे अपनी वार्षिक आय का अधिकांश हिस्सा खेती से सामाजिक और धर्मार्थ कार्यों पर खर्च करती थीं। आर्किमैंड्राइट पिमेन, जिसे हम पहले से ही परिचित हैं, अपने *मेमोइर* में मॉस्को डायोसीस के सामुदायिक मठों में जीवन के बारे में कुछ बहुत ही दिलचस्प विवरण प्रदान करते हैं, वह भी उस अवधि के दौरान जब वे मठों के डीन के रूप में कार्यरत थे। ये संस्मरण 1860 के दशक के अंत के हैं और इनमें महिलाओं के मठों की वित्तीय स्थिति के बारे में बहुत सारी जानकारी शामिल है।

अनोसिनो-बोरीसोглебस्की कन्वेंट 1860 के दशक में एक सामुदायिक मठ था, जहाँ 180 नन और नवसिखिया रहती थीं; इसकी स्थापना 1823 में हुई थी, और उस समय वहाँ केवल लगभग 10 बहनें रहती थीं। 1860 के दशक में, मठ की वार्षिक आय 5,000–6,000 रूबल थी; यह राशि श्रद्धालुओं के दान और लेस बनाने की कार्यशालाओं, डेयरी और मुर्गी फार्म से होने वाले मुनाफे से बनती थी; मठ में एक सब्जी का बगीचा भी था, जिसकी उपज मठ की मेज पर परोसी जाती थी। इन सब के अलावा, मठ ने एक अस्पताल और अपनी वृद्ध बहनों के लिए एक गृह बनाए रखा।

स्पसो-बोरोडनिस्की कन्वेंट एक सामुदायिक समुदाय भी था, जिसमें 170 नन और नवसिखिया रहती थीं; इसकी स्थापना 1830 में हुई थी, और शुरुआत में 12 बहनें वहाँ रहती थीं; मठ की वार्षिक आय 5,000 रूबल थी और यह, एक बार फिर, श्रद्धालुओं के दान और मठ के खेतों के मुनाफे से मिलकर बनी थी; मठ के भीतर कोई चैरिटेबल संस्थान नहीं थे।

ट्रिनिटी-ओडिजिट्रिया जोसिमा महिला हर्मिटेज, एक सामुदायिक कन्वेंट, की स्थापना 1826 में हुई थी; उस समय, वहाँ लगभग 40 बहनें रहती थीं, जबकि 1860 के दशक के अंत तक वहाँ पहले ही 160 नन और नवसिखिया थीं; मठ की वार्षिक आय 4,000 रूबल थी, जिसमें मठ के खेत से दान और मुनाफा और मॉस्को में एक बड़ा, आय उत्पन्न करने वाला घर शामिल था जो मठ को दान में मिला था। यह मठ किसी भी विशेष सामाजिक या धर्मार्थ गतिविधियों में शामिल नहीं था।

सामुदायिक चार्टर के तहत संचालित स्पासो-व्लाचेर्ना कॉन्वेंट की स्थापना 1854 में हुई थी; 1860 के दशक के अंत तक, इसमें पहले से ही 170 नन और नवसिखिया थीं; मठ की वार्षिक आय 5,000 रूबल तक थी और इसमें, एक बार फिर, दान और मठ के खेत तथा मॉस्को में आय-उत्पादक संपत्ति से प्राप्त लाभ शामिल थे। यह मठ भी किसी विशेष धर्मार्थ गतिविधियों में शामिल नहीं था।

होली क्रॉस सिस्टरहुड, जो एक सामुदायिक चार्टर के तहत संचालित थी, की स्थापना 1856 में हुई थी और इसमें 100 बहनें थीं; मठ की वार्षिक आय दान से होती थी और लगभग 2,000 रूबल थी; इस बहन-संघ ने एक मुफ्त स्कूल का आयोजन किया जिसमें 30 लड़कियाँ पढ़ती थीं।

यहाँ उल्लेख किए गए पहले चार मठों ने मठ के अतिथि गृह भी बनाए रखे थे, जिनसे कोई आय उत्पन्न नहीं होती थी[1165] ।

ये उदाहरण न केवल मॉस्को धर्मप्रांत के, बल्कि 19वीं शताब्दी के मध्य में पूरे रूस के कई महिला मठों के भी विशिष्ट उदाहरण हैं। यह एक ऐसा युग था जब मठ अपनी सामाजिक और परोपकारी गतिविधियाँ शुरू ही कर रहे थे। हालांकि, यदि हम 1880 के दशक से पवित्र सिनिड के मुख्य अभियोजक की रिपोर्टों या उस अवधि से संबंधित धर्मप्रांतों के विवरणों की जांच करें, तो एक बिल्कुल अलग तस्वीर सामने आती है[1166] । उदाहरण के लिए, 1887 में,

---

[1165] पिमेन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 309–311।

[1166] प्रांतों का संक्षिप्त विवरण, सांख्यिकीय आंकड़ों के साथ, PBE में पाया जा सकता है; इन्हें आधिकारिक सामग्री के आधार पर संकलित किया गया है। एक और महत्वपूर्ण स्रोत *डायोसीज़न रिपोर्ट्स* है, जिनका प्रकाशन उन्नीसवीं सदी के दूसरे छमाही में लगभग हर प्रांत में शुरू हो गया था।

मठों द्वारा 93 अस्पताल और 66 वृद्धाश्रम चलाए जाते थे, जिनमें से दो-तिहाई महिला मठों द्वारा संचालित थे, जबकि उस समय 469 पुरुष मठ और केवल 202 महिला मठ थे (1887 की रिपोर्ट)। 1880 और 1890 के दशक में, अलेक्ज़ेंडर तृतीय (1881–1894) के शासनकाल के दौरान, जब सरकार ने पैरिश स्कूलों की स्थापना को प्रोत्साहित किया, तो ऐसे स्कूल लगभग सभी ननघरों में खोले गए, जो आमतौर पर लड़कियों के लिए थे, और हमेशा स्वयं ननघरों द्वारा वित्तपोषित थे[1167] ।

व्यापक परोपकारी कार्यों के क्रमिक विकास का एक उत्कृष्ट उदाहरण होली वर्जिन लेस्निस्की कॉन्वेंट का इतिहास है (1914 तक पश्चिमी रूस के सेडल्ट्स प्रांत में)[1168] । (अब पोलैंड। – अनुवादक का नोट), बियाला शहर के पास) । 1683 में, बियाला जिले के लेस्नी नामक वन गांव के पास, दो किसान चरवाहों को जंगल में परमेश्वर की माता की एक प्रतिमा मिली, जिससे असाधारण प्रकाश निकल रहा था। यह आइकन लाल पत्थर से तराशा गया था और इसमें सर्वपवित्र वर्जिन को दाहिने हाथ में शिशु मसीह और बाएं हाथ में एक किताब के साथ दर्शाया गया था; किताब के ऊपर एक कबूतर था, जो पवित्र आत्मा का प्रतीक है। कुल मिलाकर, यह एक अत्यंत दुर्लभ रचना है। ग्रीक ऑर्थोडॉक्स पुरोहितों ने इस प्रतिमा को बुकोविंची गाँव के चर्च में लाया, जहाँ आसपास के गाँवों के निवासियों द्वारा इसकी बहुत आराधना की जाने लगी। कुछ वर्षों बाद, जिस स्थान पर यह प्रतिमा मिली थी, वहाँ संत पॉल को समर्पित एक रोमन कैथोलिक मठ की स्थापना की गई, और पोलिश अधिकारियों (उस समय यह क्षेत्र पोलैंड का था) ने इस प्रतिमा को इस मठ में स्थानांतरित करने का आदेश दिया। समय के साथ, स्थानीय आबादी यूनियन में परिवर्तित हो गई। 1863 में, पोलिश विद्रोह के बाद, लेस्नो में रोमन कैथोलिक मठ को विद्रोहियों को दिए गए समर्थन के लिए रूसी सरकार द्वारा बंद कर दिया गया था, लेकिन मठ का चर्च, अपनी सभी प्रतिमाओं के साथ, यूनिएट्स के हाथों में बना रहा। 1875 के बाद, इस क्षेत्र के कई यूनिएट पैरिश – कुछ स्वेच्छा से, अन्य सरकार के दबाव में – यूनियन से रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च में परिवर्तित हो गए; 1881 में, लेस्नो का पैरिश चर्च भी ग्रीक ऑर्थोडॉक्स बन गया। चूंकि उस समय सेंट पॉल मठ की पुरानी इमारतें अभी भी खड़ी थीं, आर्चबिशप लियोन्टियस ने लेस्नो में ननों का एक समुदाय स्थापित करने का निर्णय लिया। इस प्रकार, 1884 में, परमपवित्र माता परमेश्वर का समुदाय स्थापित किया गया।

इसके अस्तित्व के शुरुआती वर्ष अधिष्ठात्री और पाँच बहनों दोनों के लिए कठिन थे, क्योंकि समुदाय के पास बिल्कुल भी धन नहीं था। लेकिन अधिष्ठात्री, मदर एकेटेरिना, जन्म नाम काउंटेस एफिमोवस्काया († 1925 सर्बिया में), एक ऊर्जावान और प्रतिभाशाली महिला थीं। शुरुआत में, स्थानीय आबादी के साथ तनावपूर्ण संबंधों के कारण समुदाय के जीवन में बाधा आई, जिनमें से अधिकांश यूनिएट चर्च से संबंधित थे। सिस्टर एकटेरिना और दो या तीन अन्य बहनों को चिकित्सा प्रशिक्षण प्राप्त था, और उनका परोपकारी कार्य मुख्य रूप से बीमार किसानों की देखभाल करने पर आधारित था। फिर बच्चों के लिए एक स्कूल खोलने का प्रयास किया गया, और यह सफल साबित हुआ। महज दो वर्षों के भीतर, बहनें सभी धर्मों के 80 बच्चों को पढ़ा रही थीं।

1889 में, लेस्निस्काया समुदाय को एक आवासीय महिला मठ में बदल दिया गया, और इसकी प्रमुख एब्रेस बन गईं। मठ तेजी से बढ़ा, और 1914 तक इसमें 20 नन और 300 नौसिखिया ([1169]) और पोस्टुलेंट्स थे; कई बहुत लंबे समय तक नवसिखिया ही रहीं, क्योंकि उनकी प्रमुख, मदर एकेटेरिना, ननज़ों का मुंडन कराने में कोई जल्दबाज़ी नहीं कर रही थीं और केवल तभी अपनी सहमति देती थीं जब उन्हें यह दृढ़ विश्वास हो जाता था कि मुंडन चाहने वाली बहन इसके लिए आध्यात्मिक रूप से पर्याप्त परिपक्व है। 25 वर्षों (1889–1914) की अवधि में, बहनों का एक समय का छोटा समुदाय एक बड़े मठ में बदल गया, जो एक अस्पताल, बुजुर्ग महिलाओं के लिए एक आश्रय, और दवाइयाँ बाँटने वाली एक मुफ्त बाह्य रोगी क्लिनिक चलाता था – बीमारों के लिए बाह्य रोगी देखभाल विशेष रूप से व्यापक हो गई थी – और, इसके अलावा, कन्वेंट ने अपने ही फंड का उपयोग करके उन ननों और नवसिखियों को चिकित्सा प्रशिक्षण प्रदान किया जो इन चिकित्सा संस्थानों में काम करती थीं। बच्चों के लिए स्कूलों के अलावा, विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षण देने वाला एक माध्यमिक विद्यालय खोला गया, और इस स्कूल के शिक्षकों को भी कन्वेंट के खर्च पर शिक्षित किया गया। नन और नवसिखियों ने पुस्तक बाइंडिंग की एक कार्यशाला, कढ़ाई सिखाने का एक स्कूल, जूता बनाने की एक कार्यशाला और धार्मिक वस्त्र बनाने की एक कार्यशाला, साथ ही आइकन-चित्रण की एक

[1167] दुर्भाग्य से, 'मुख्य अभियोजक की रिपोर्टें' वर्तमान में मेरे लिए उपलब्ध नहीं हैं; पहले, 1943 से पहले, मैंने उनसे विभिन्न सांख्यिकीय अंश निकाले थे, लेकिन वे बहुत अधूरे थे, इसलिए अब मैं केवल अपने कागजातों में कुछ बिखरे हुए नोट्स और अपनी स्मृति पर ही निर्भर कर सकता हूँ।

[1168] मेरा स्रोत 'लेस्नोई में होली वर्जिन मैरी मठ का एक संक्षिप्त इतिहास' था (एक टाइपराइट की गई पांडुलिपि जिसे 1925 में सर्बिया के होपोवो मठ में एबेस नीना द्वारा संकलित किया गया था, जो पहले लेस्नोई मठ की एबेस थीं)।

[1169] ऱ्यास पहनने वाले भिक्षुओं के बारे में, अध्याय IX देखें।

कार्यशाला स्थापति की; उन्होंने ग्रीनहाउस और एक सब्जी के बगीचे के साथ एक उत्कृष्ट बागान वकिसति कयिा, और एक मधुमक्खी पालन केंद्र, एक डेयरी फार्म और एक मुर्गी फार्म स्थापति कयिा। 1914 से ठीक पहले, कॉन्वेंट ने पास में ही स्कूलों, फार्मेसयिों और चकित्सिा केंद्रों सहति चार और छोटे समुदाय स्थापति कएि। बेशक, इन सभी धर्मार्थ गतविधियिों के लएि धन की आवश्यकता थी। सरकार ने पोलशि आबादी के बीच ऑर्थोडॉक्स मशिन के लएि इस कन्वेंट में ननों के काम के महान लाभ को पहचाना और, 1914 तक, 1,200 देसयिाटनि (dessiatines) की खेती योग्य भूमि और चार खेत कन्वेंट के उपयोग के लएि उपलब्ध करा दएि थे। 1914 में, मठ के कोष ने दो सार्वजनकि स्कूलों, दो शकि्षक-प्रशकि्षण महावद्यिालयों, एक माध्यमकि वद्यिालय, एक कृषि महावद्यिालय और एक अनाथालय को समर्थन दयिा।

जब प्रथम वशि्व युद्ध शुरू हुआ, तो अधकिारयिों द्वारा ननों और नवसखियिों को मठ छोड़ने और अन्य मठों में जाने के लएि कहा गया। ननों के एक बड़े समूह को बेसरबयिा में एक मठ दयिा गया, जहाँ उन्होंने दो पैरशि स्कूल और एक कृषि कॉलेज स्थापति कयिा। 1920 में, लेस्ननिस्की कन्वेंट की प्रमुख मदर नीना के नेतृत्व में ननों के इस समूह को सर्बयिा की यात्रा करने और वहाँ परत्यिक्त खोपोव मठ में बसने का नमिंत्रण मलिा। चूंकि नन रोमानयिाई सरकार के साथ वभिन्नि कठनिाइयों का सामना कर रही थीं—जो मठ की गतविधियिों को संदेह की दृष्टि से देखती थी, और उन्हें बेसरबयिा की आबादी को रोमानयिाई बनाने की अपनी नीति में एक बाधा मानती थी— अबेस नीना और उनके मठ की बहनों ने यह नमिंत्रण स्वीकार कर लयिा और होपोव मठ (नोवी साद शहर के पास) में आ गईं। सीमति संसाधनों के कारण, लेस्ननिस्की होपोव मठ वहाँ केवल एक अनाथालय ही चला सका।

लेस्ननिस्की मठ का इतहिास 19वीं सदी के कई मठों का एक सामान्य उदाहरण है। यह स्पष्ट है कि सरकार द्वारा उनके सामाजकि और धर्मार्थ कार्यों को वशिेष रूप से महत्व दयिा जाता था, क्योंकि वह इसे चर्च के राजनीतकि मशिन को पूरा करने के साधनों में से एक मानती थी और इसलएि उसने मठों को वत्तिीय सहायता प्रदान की। लेकनि शुद्ध रूप से धार्मकि दृष्टकिोण से भी, इस मठ ने अपने प्रयासों को सही दशिा में नर्दिेशति कयिा, और इसकी सभी गतविधियिाँ लोगों की भलाई के लएि थीं।

एक और उदाहरण के रूप में, आइए यकातेरनिबर्ग के पास यूराल में नोवो-टख्विनि कॉन्वेंट के इतहिास पर वचिार करें। 1799 में, वहाँ ननयिों का एक छोटा समुदाय स्थापति कयिा गया था, जसिे 1809 में एक सामुदायकि कॉन्वेंट में बदल दयिा गया। 1900 तक, यह छह चर्चों और कई पत्थर की इमारतों वाला एक बड़ा मठ बन गया था, जसिमें 450 ननयिों और नवसखिुओं के लएि घर की व्यवस्था थी। चूंकि कॉन्वेंट के पास दो खेत थे, इसलएि वह एक पैरशि स्कूल, एक अनाथालय, एक अस्पताल और बुजुर्गों के लएि एक आश्रय चलाने में सक्षम था। कॉन्वेंट के धर्मार्थ कार्य को श्रद्धालुओं द्वारा उनके उदार दानों के माध्यम से समर्थन प्राप्त था[1170] ।

यहाँ कसिान पृष्ठभूमि से आई ननों की पहलों को दर्शाने वाले दो और उदाहरण दएि गए हैं।

ज़ाडोंस्क के पास जंगल में, जहाँ ज़ाडोंस्क के संत टकिॉन अक्सर एकांत में प्रार्थना करते थे, 1813 में एक चैपल बनाया गया था। कई महलिाएँ, मुख्य रूप से पास के त्यूमनिो गाँव की, इसके पास छोटी-छोटी झोपड़यिों में बस गईं; 1827 तक उनकी संख्या बढ़कर 50 हो गई थी। वे अपना समय प्रार्थना और सुई के काम – लनिन बुनने – में बतिाती थीं और अपने बीच से एक अधीक्षक चुनती थीं। 1860 में, कसिान महलिा ई. पी. बोगारेवा की पहल के कारण, इस बस्ती को एक भगनिी-संघ का दर्जा दयिा गया, और सात साल बाद इसे एक सामुदायकि मठ में बदल दयिा गया।

वही वोरोनज़ेज़ धर्मप्रांत में, ट्रॉइट्सकोये गाँव (नोवोखोपर्सकी जलिा) में, 20 कसिान महलिाओं का एक भगनिी संघ स्थापति कयिा गया; 1878 में, उन्होंने अपने ही धन का उपयोग करके एक चर्च का नर्मिाण कयिा, जबकि एक अमीर कसिान वधिवा, एच. ई. पाश्कोवा ने एक भूखंड खरीदा और बहनों के एक साथ रहने के लएि उस पर एक आवासीय घर बनाया। 1890 में, समुदाय को पवत्रि सनिड द्वारा मान्यता दी गई और 1895 में इसे एक सामुदायकि मठ में बदल दयिा गया[1171] ।

[1170] येकातेरनिबर्ग धर्मप्रांत का ववरिण, इसमें: PBE. 5. पृ. 353; बुलगाकोव. पृ. 65। उदाहरण के लएि, व्लादमिीर धर्मप्रांत में, 1895 और 1899 के बीच तीन भगनिी-संघ स्थापति कएि गए थे (PBE. 2. पृ. 625), हालाँकि उस समय वहाँ पहले से ही छह महलिा मठ थे, जनिमें से एक—पेरयिास्लावल शहर का पोक्रोव्स्की मठ—में 1899 में कम से कम 350 नन और नवसखियिा थीं; इसने एक अस्पताल, बुजुर्गों के लएि एक आश्रय और एक स्कूल चलाया। PBE. 3. पृ. 619, 624, 625.

[1171] वोरोनेज़ धर्मप्रांत का ववरिण, इसमें: PBE. 3. पृ. 866, 867.

टाम्बोव धर्मप्रांत में, 1887 में 13 महिला मठ थे, जिनमें से 10 अपने अस्तित्व के शुरुआती वर्षों के दौरान बहन समुदाय थे; पहला समुदाय 1783 में स्थापित किया गया था, जब धर्मप्रांत में केवल एक महिला मठ था (1690 में स्थापित)। पेन्ज़ा के धर्मप्रांत में, 11 महिलाओं के मठों में से 10 मूल रूप से समुदाय थे[1172] ।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, *19वीं सदी में उभरे 23 नए महिला मठ इन्हीं समुदायों से विकसित हुए थे। कुछ ही अपवादों को छोड़कर, ये समुदाय एक सामूहिक नियम का पालन करते थे। वे हमेशा व्यक्तिगत तपस्वियों की पहल पर ही स्थापित हुए। महिलाएं और छोटी लड़कियां कुछ प्रकार का सिलाई-कढ़ाई का काम करने के लिए एक साथ इकट्ठा होती थीं, जो सामूहिक प्रार्थना से शुरू और समाप्त होती थी; काम करते समय, जो पढ़ सकती थीं वे तपस्या संबंधी ग्रंथ - जैसे संतों के जीवन आदि - ज़ोर से पढ़ती थीं। अंततः एक ऐसा समुदाय बन जाता था जिसमें बहनें एक साथ रहती थीं। वे अपने द्वारा बनाए गए सामानों की बिक्री से अपनी आजीविका चलाती थीं। सामूहिक प्रार्थना ( ) ने धीरे-धीरे उचित मठवासी पूजा की शुरुआत की; पड़ोसी पैरिशों के पुरोहितों द्वारा दिव्य अनुष्ठान (Divine Liturgy) का आयोजन किया जाता था। अंत में, बहनों ने अपने समुदाय को महिलाओं के मठ में बदलने के लिए सिनिड से निवेदन किया। उनमें से कुछ ने मठवासी संन्यास की शपथ ली, जबकि अन्य लंबे समय तक भेषधारी बहनें या नवसिखिए बने रहे। इस प्रकार के समुदाय अक्सर धर्मप्रांत के बिशप का ध्यान आकर्षित करते थे, जो कभी-कभी स्वयं समुदाय को एक मठ में बदलने का प्रस्ताव रखते थे।*

उदाहरण के लिए, 1823 में, अनोसिनो गाँव (मास्को गवर्नरेट) में बोरिसोग्लेब्स्की कॉन्वेंट की स्थापना हुई। इसकी संस्थापक राजकुमारी एवडोकिया मेशचर्सकाया (जन्म 1774), जन्मजात ट्यूचेवा थीं। उन्होंने प्रिंस मेशचर्सकी से विवाह किया, जिनकी शादी के दो महीने बाद ही इन्फ्लूएंजा से मृत्यु हो गई। कुछ वर्षों बाद, अनोसिनो में उनकी संपत्ति पर महिलाओं का एक छोटा समूह (जो सभी उनकी दास थीं) राजकुमारी के चारों ओर इकट्ठा हो गया; उन्होंने ठीक वैसा ही जीवन जिया जैसा हमने ऊपर वर्णन किया है; कई वर्षों तक, राजकुमारी अपने छोटे से समुदाय को एक महिला मठ में बदलने का सपना संजोए रहीं। वोरोनज़ के बिशप एंथनी और मॉस्को के आर्चबिशप फिलारेट के साथ उनका पत्राचार मानवीय अनुभव का एक बहुत ही दिलचस्प विवरण प्रस्तुत करता है। अंततः वह अपने समुदाय को एक महिला मठ में बदलने में सफल रहीं; यह 1823 में हुआ।

राजकुमारी ने अपनी संपत्ति अपनी बेटी को विरासत में दी और स्वयं को पूरी तरह से मठवासी जीवन के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने आर्चबिशप फिलारेट से नए मठ के लिए एक अधिष्ठात्री नियुक्त करने और उन्हें स्वयं वहीं रहने की अनुमति देने का अनुरोध किया। हालांकि, आर्चबिशप ने उनकी यह कहते हुए अनुरोध को अस्वीकार कर दिया कि उनके पास कोई उपयुक्त अधीक्षिका नहीं है, और उन्होंने स्वयं उन्हें समुदाय की अस्थायी अधीक्षिका नियुक्त कर दिया; एक नन के रूप में उनका मुंडन स्थगित कर दिया गया। नया मठ समुदाय के नियम के अनुसार सख्ती से रहता था। अपने कार्य में, राजकुमारी ने खुद को अपनी पूर्व दासों से अलग नहीं रखा (जिनमें से कुछ ने पहले ही धर्मपरायण जीवन अपना लिया था)। एक साल बाद, उसे अप्रत्याशित रूप से आर्चबिशप के सामने पेश होने और उन्हें कन्वेंट में जीवन का हिसाब देने का निमंत्रण मिला। फिलारेट अपनी सख्ती के लिए जाने जाते थे, और डरी हुई प्रायोरस मॉस्को के लिए रवाना हो गईं। वहाँ उसे बताया गया कि अगले दिन उसे चर्च जाना है, जहाँ महाधर्माध्यक्ष दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान करेंगे। वह बिना किसी शक के वहाँ गईं, और सेवा के दौरान उन्हें बताया गया कि उनकी पहले व्यक्त की गई इच्छा के अनुसार, महाधर्माध्यक्ष स्वयं उन्हें रासोफोरे नन के रूप में संन्यास-संस्कार देंगे। अगले दिन, फिलारेट ने नन एवगेनिया (उनका नया मठवासी नाम) को मठ की अधीक्षिका नियुक्त किया। उन्होंने 14 वर्षों तक मठ का नेतृत्व किया और 1837 में उनका निधन हो गया। उन वर्षों के दौरान, उन्होंने मठ के भीतर सामुदायिक नियमों के और भी सख्त पालन को सुनिश्चित करने का प्रयास किया। और शायद यही बात थी जिसने संन्यासी तपस्या की चाह रखने वाली महिलाओं को उनकी मठ की ओर आकर्षित किया: 40 साल बाद, मठ में 180 तक नन और नवसिखिया थीं[1173] ।

स्पासो-बोरोडिनिस्की कन्वेंट की स्थापना इसी तरह एम. एम. तुचकोवा द्वारा की गई थी, जो 1812 के युद्ध के दौरान खुद को प्रतिष्ठित करने वाले एक जनरल की विधवा थीं[1174] । होली क्रॉस सिस्टर्स कम्युनिटी (मास्को के पास) की स्थापना किसान महिला पी. आर. सवात्युगिना ने की थी; उस्मान कॉन्वेंट (वोरोनेज़ गवर्नरेट के उस्मान शहर

[1172] बुलगाकोव। पृ. 97, 89।

[1173] एबेस इवजेनिया, बोरिसोग्लेब्स्की बालिकाओं के सामुदायिक मठ की संस्थापक, में: रीडग्रिस. 1875. 2; उनका पत्राचार भी वहाँ पाया जाता है; तुलना करें: पमिन. उद्धृत ग्रंथ. पृ. 309.

[1174] पमिन. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 310, 288.

के पास) की स्थापना 1799 में एन. फेडोरोवा, 'मेजर की बेटी' के कारण हुई, जिन्होंने अपने खर्च पर, उपयोग में न आने वाले और जर्जर कॉन्वेंट का पुनर्निर्माण किया और अपनी संपत्ति बहाल मठ को विरासत में दी[1175] ।

बेशक, नए मठों और भगिनी-संघों की स्थापना हमेशा तेजी से या सुचारू रूप से नहीं होती थी, क्योंकि 19वीं सदी में सिनोडल प्रशासन की नौकरशाही राज्य संस्थानों की नौकरशाही से भी बदतर थी। उदाहरण के लिए, जब अनोसिनो-बोरीसोглебस्की कन्वेंट की नन परास्केवा ज़ाग्रेबेन्याया, जिससे हम पहले से ही परिचित हैं, ने व्लादिमीर के डायोसीस में एक हर्मिटेज (तपस्थली) की स्थापना करने का निर्णय लिया, तो इस मामले पर पत्राचार चार साल से अधिक समय तक चलता रहा[1176] ।

कभी-कभी भिक्षुणियों के ऐसे समुदाय संतों की सहायता से अस्तित्व में आते थे, जो 19वीं सदी में धार्मिक खोजों में लगी रूसी महिलाओं के आध्यात्मिक मार्गदर्शन पर बहुत ध्यान देते थे, ताकि उन्हें चर्च जीवन से परिचित कराया जा सके।

इस क्षेत्र में परिश्रम करने वालों में से एक पहले के संत ज़ोसिमा वर्खोव्स्की थे। 18वीं शताब्दी के दूसरे भाग में, अत्यंत संयमी जीवन जीने वाले संन्यासियों और तपस्वियों के एक समूह ने ब्रायन्स्क के घने जंगलों में शरण ली (उनके बारे में अगले अध्याय में और बताया जाएगा); ये तपस्वी मोल्दाविया के एल्डर पैसियस वेलीचकोव्स्की के साथ आध्यात्मिक संवाद में थे। अन्य लोगों के अलावा, एल्डर एड्रियन ने अपने शिष्यों के साथ यहाँ सेवा की। उनमें से एक ज़कारियास वर्खोव्स्की थे, जो एक उच्च-पदस्थ अधिकारी, एक पूर्व अधिकारी और एक कुलीन व्यक्ति के पुत्र थे। इन संतों के आश्रमों पर आवारा और लुटेरों द्वारा अक्सर छापे मारे जाते थे, जो मानते थे कि मार्गदर्शन और सलाह लेने आए लोगों द्वारा लाया गया सोना और चाँदी संतों की साधारण झोपड़ियों में छिपाया गया था। यह उत्पीड़न अंततः इतना असहनीय हो गया कि एल्डर एड्रियन और ज़कैरी ने जंगल छोड़ने का फैसला किया। चूँकि एड्रियन को पहले ही सेंट पीटर्सबर्ग और नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटन, गैब्रियल का, उनके पास आने और कई मठों के पुनर्स्थापन में सहायता करने का निमंत्रण मिल चुका था, इसलिए वह ज़कारियास के साथ सेंट पीटर्सबर्ग के लिए रवाना हो गया। मेट्रोपॉलिटन ने एड्रियन को सेंट पीटर्सबर्ग के डायोसीस में कोनेव्स्की मठ में एक मठवासी नियम लागू करने का काम सौंपा। ज़कारियास उनके साथ गए और वहाँ उन्होंने ज़ोसिमा नाम ग्रहण कर भिक्षु दीक्षा ली। वे वृद्ध एड्रियन के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में लगभग दस वर्षों तक इस मठ में रहे, और फिर मौन और प्रार्थना की तलाश में जंगल की गहराई में चले गए। बाद में, अपने एक पत्र में, जोसिमा ने एक ऐसे व्यक्ति की आंतरिक स्थिति का वर्णन किया जो संपूर्ण संसार का परित्याग करने और स्वयं को ईश्वर के साक्षात्कार के सामने खड़ा महसूस करने के लिए, संन्यास के जीवन और प्रार्थना को समर्पित कर देता है[1177] ।

इसके बाद, ज़ोसिमा, भिक्षु वासिलिस्क के साथ, दूरस्थ साइबेरिया के लिए रवाना हुए। वे तुरीन्स्क शहर के पास घने जंगलों में बस गए। वासिलिस्क पूर्ण एकांत और मौन में रहते थे, जबकि ज़ोसिमा समय-समय पर कुछ राशन इकट्ठा करने के लिए पास के गांवों में जाते थे। इस तरह बीस साल बीत गए। आसपास के गाँवों के लोग जोसिमा को जानने लगे और अक्सर उनसे आध्यात्मिक मार्गदर्शन मांगते थे। एक दिन, एक विधवा महिला ज़ोसिमा के पास उनसे आध्यात्मिक देखभाल में लेने का अनुरोध लेकर आई। बहुत विनती करने पर, ज़ोसिमा ने उसे अपने आश्रम से लगभग 30 वर्स्ट (लगभग 25 किमी) दूर एक गाँव में बसने और समय-समय पर उनसे वहाँ बात करने की अनुमति दे दी। फिर अन्य महिलाएँ भी आईं, जो आध्यात्मिक मदद और सलाह भी मांग रही थीं। और इस प्रकार, कुछ समय बाद, लगभग 40 महिलाओं का एक समूह इकट्ठा हो गया; उन्होंने एक समुदाय बनाया और जोसिमा के आध्यात्मिक मार्गदर्शन के तहत, शारीरिक श्रम और प्रार्थना का जीवन जिया। बुजुर्ग जोसिमा और वासिलिस्क ने, एक-दूसरे से परामर्श करने के बाद, यह निर्णय लिया कि यह समुदाय एक उचित मठ बन जाए तो बेहतर होगा। विघटित कन्वेंट की इमारतों को तुरीन्स्क शहर में संरक्षित किया गया है। वरिष्ठ जोसिमा, जो पहले से ही लगभग 60 वर्ष के थे, ने तुरीन्स्क में

[1175] उपरोक्त, पृ. 310; पीएसजेड. संख्या 19110.

[1176] डोब्रोनरावोव, वी. जी. 'द स्वयितोएज़र्स्की हर्मिटेज', *प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द व्लादिमीर साइंटिफिक एंड आर्काइवल कमीशन* में। 11 (1909)। पृ. 60. यदि मठ की संस्थापक के सेंट पीटर्सबर्ग में संबंध थे, तो मामले और तेज़ी से आगे बढ़े; उदाहरण के लिए, राजकुमारी वी. बी. स्वयितोपोलक-चेतवर्टिंस्काया द्वारा स्थापित व्लादिमीर बहनों के समुदाय (मास्को डायोसीस) की स्थापना के इतिहास की तुलना करें। सोलोव्योव, आई. 'द व्लादिमीर वमिन'स कम्युनिटी', में: रशियन ईयरबुक 1898। ४९. पृ. ८६९–८८५; इस कृति में समुदाय के दैनिक जीवन के कई रोचक विवरण शामिल हैं।

[1177] यह उल्लेखनीय पत्र एल्डर वासिलिस्क († 1824) की जीवनी: *द लाइफ ऑफ द मॉक एंड हर्मिट वासिलिस्क* (1849) में मुद्रित है (दुर्भाग्य से, मैं इसे प्राप्त नहीं कर सका), और पमिन के *सेलेक्टेड वर्क्स*, पृ. 298 में अंशों में भी शामिल है। यह संभवतः'मानसिक प्रार्थना के प्रभाव पर' नामक ग्रंथ है, जो 'एल्डर वासिलिस्क की कथा' पांडुलिपि में शामिल है; तुलना करें: पोपोव, एन. 'मास्को साइमनोव मठ की पांडुलिपियों का विवरण', में: रीडिंग्स. 1910. 3. पृ. 53.

एक महलिा कन्वेंट की स्थापना की अनुमतपि्राप्त करने के लिए सेंट पीटर्सबर्ग की एक कठनि और लंबी यात्रा की। ज़ोसमिा अनुमतपि्राप्त करने में सफल रहे, लेकनि धर्मप्रांत के बशिप ने उस वरषि्ठ के रास्ते में वभिन्नि बाधाएँ डालीं। तब ज़ोसमिा ने अपनी आध्यात्मकि बेटयिों के साथ रूस की यात्रा करने का फैसला कयिा, इस उम्मीद में कि वह वहां अपनी योजना को अंजाम दे पाएंगे। समुदाय के अधकिांश सदस्य उनके साथ चल पड़े। 1826 में, वे सभी मास्को पहुँचे। बखमेतेवा नाम की एक अमीर वधिवा ने बहनों को अपने घर में आश्रय दयिा; वे बाद में मास्को के बाहरी इलाके में उसकी संपत्तमिें चली गईं, जसिका एक हस्सिा वधिवा ने एक मठ की स्थापना के लिए दान कर दयिा। इस प्रकार ट्रनिटिी हर्मटिेज का अस्तत्वि में आया, जसिे अक्सर जोसमिा का हर्मटिेज भी कहा जाता है। वरषि्ठ जोसमिा ने समुदाय को आध्यात्मकि मार्गदर्शन देना जारी रखा और 1833 में उनका नधिन हो गया। 1856 में, जोसमिा के हर्मटिेज को एक सामुदायकि नयिम के साथ एक कन्वेंट में बदल दयिा गया[1178] ।

ट्रोएकुरोवो गाँव (टाम्बॉव गवर्नरेट) में स्थति दमित्रिीव्स्की कॉन्वेंट भी ननयिों के एक समुदाय *(1853-54)* से वकिसति हुआ, *जसिे 1871 में एक सामुदायकि कॉन्वेंट में बदल दयिा गया। इस समुदाय के संस्थापक कठोर तपस्वी और संन्यासी इलारयिन फोकनि (1758–1853) थे; पहले उन्होंने दक्षणिी रूस (कीव के पास) में अपने तपस्या का अभ्यास कयिा, फरि कई वर्षों तक वे एक मठ से दूसरे मठ तक घूमते रहे—जो 19 वीं सदी में एक आम प्रथा थी—और अंत में, 1824 में, वे त्रोएकुरोवो गाँव में बस गए, जहाँ लोग उनसे सलाह और आध्यात्मकि मार्गदर्शन के लिए आने लगे। उन्होंने उसे पैसे दान कए, जसिसे हलिारयिन ने एक भूखंड खरीदा और उस पर ननयिों के एक समुदाय के लिए एक घर बनाया*[1179] ।

रूसी महलिाओं की आध्यात्मकि देखभाल के इतहिास में, परम पूज्य सारोव के एल्डर सेराफमि († 1833)[1180] का एक बहुत ही वशिष स्थान है। 1780 में स्थापति, कज़ान दव्यिेवो समुदाय[1181] , अपनी आंतरकि धार्मकि और तपस्वी जीवन में कई वर्षों तक परम पूज्य सेराफमि से सबसे नकिट रूप से जुड़ा हुआ था। उन्होंने एक और, केवल महलिाओं का समुदाय – मेल्नचियाया की स्थापना की। 1842 में, वे मलिकर सेराफमि-दवियेवो समुदाय का गठन करने के लिए वलिय हो गए, जसिे बाद में, 1861 में, सेराफमि-दवियेवो कन्वेंट में बदल दयिा गया। इस क्षेत्र में दो और मठ संत सेराफमि के आध्यात्मकि मार्गदर्शन में थे: पोक्रोव्स्की कन्वेंट (अर्दातोव शहर में) और स्पासो-ज़ेलेनोगोर्स्की मठ। वे सभी मठ के नयिमों का सख्त पालन करने के लिए व्यापक रूप से प्रसद्धि थे - जसिकी वशिषता उत्तम सामुदायकि जीवन, तपस्या और धार्मकि अनुष्ठानों के क्रम का सावधानीपूर्वक पालन करना था; सेराफमिो-दीवेयेवो कन्वेंट वशिष रूप से प्रसद्धि था।

19वीं सदी के एक अन्य महान वृद्ध – ऑप्टनि के एम्ब्रोज़ – भक्तमिय महलिाओं की आध्यात्मकि भलाई के प्रतगिहरी चति रखते थे[1182] । उन्होंने शमोर्डनिो (ऑप्टनि से 15 कमिी दूर) में ननों का एक समुदाय स्थापति कयिा। कई वर्षों तक उन्होंने समुदाय को आध्यात्मकि मार्गदर्शन प्रदान कयिा और 1891 में शमोरдино की यात्रा के दौरान उनका नधिन हो गया।

इस संबंध में, एक और तपस्वी - बशिप थयिोफान द रकि्लूज़ - का नाम लेना बलि्कुल आवश्यक है, जनिका रूसी लोगों के धार्मकि जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव था। उनके कार्य में दो वशिष्टि वशिषताएँ सामने आती हैं, जो ऊपर उल्लेखति संतों की वशिषता नहीं थीं। यहाँ हम एक अलग प्रकार का आध्यात्मकि मार्गदर्शन देखते हैं। जहाँ अन्य रूसी संतों के लिए, प्रत्यक्ष व्यक्तगित संवाद उनके आध्यात्मकि और तपस्वी मार्गदर्शन का केंद्र था, वहीं बशिप थयिोफान ने अपने आध्यात्मकि बच्चों—और वशिष रूप से अपनी आध्यात्मकि बेटयिों—को पत्राचार के माध्यम से मार्गदर्शन कयिा। एक ओर, यह उनके एकांतवास के कारण था; दूसरी ओर, थयिोफान स्वभाव से ही साहत्यिकि गतविधियिों की ओर झुकाव रखते थे और उन्होंने ईसाई आत्मा के सद्धिांतों पर अपने वचिारों को—जो उनके हतिों का

[1178] पमिेन. पूर्वोक्त, पृ. 295–300, 310.

[1179] PBÉ. खंड 5. पृ. 853–854; RBS. पृ. 86–87.

[1180] सेंट सेराफमि ऑफ़ सारोव पर, मेरी पुस्तक *लेबेन उंड लेह्रे डेर स्टारज़ेन* (1936), साथ ही अध्याय XV देखें।

[1181] दव्यिेवो समुदाय नज़्नी नोवगोरोड धर्मप्रांत में स्थति था, लेकनि यह सारोव हर्मटिेज से केवल 15 कमिी दूर था, जो पहले से ही टैम्बोव धर्मप्रांत का हस्सिा था। देखें: सेराफमि (चचिागोव), आर्चमिंड्राइट। *क्रॉनकिल ऑफ़ द सेराफमि-दवियेवो मठ* (1903); इसमें संत सेराफमि की जीवनी पर प्रचुर सामग्री है; और यह भी: इल्यनि। *द वेनेरेबल सेराफमि ऑफ़ सारोव* (1925)। पृ. 87 ff.

[1182] मेरी पुस्तक। उपरोक्त संदर्भ, पृ. 202 से आगे; तुलना करें: वर्तमान कृतकिा अध्याय XV। शमोर्डनिो में भगनिी-समाज पर: चेत्वेरकिोव, एस. *ऑप्टनि के एल्डर, हायरomonk एम्ब्रोस की जीवनी* (1912) और उसी लेखक। द ऑप्टनि हर्मटिेज (1927)। ऑप्टनि के एल्डर मकाराई (इवानोव) ने कुछ ननयिों के समुदायों को भी आध्यात्मकि मार्गदर्शन प्रदान कयिा (चेटवेरकिोव। उद्धृत ग्रंथ (1927)। पृ. 52), उदाहरण के लिए, होली क्रॉस कॉन्वेंट; अधकि वविरण के लिए: लयिोनदि (कावेलनि)। *ए हस्टिोरकिल अकाउंट ऑफ द बेलेव्स्की होली क्रॉस कॉन्वेंट फॉर गर्ल्स, अ थर्ड-क्लास मठ* (1863)।

केंद्र थे—एक सुसंगत धार्मिक और तपस्वी प्रणाली में विकसित करने का प्रयास किया। इसके अलावा, थियोफान ने थियोलॉजिकल अकादमी (कीव में, 1837-1844) में दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय शिक्षा प्राप्त की थी और विशेंस्का हर्मिटेज में एकांतवास के दौरान भी उन्होंने अपने विद्वतापूर्ण धर्मशास्त्रीय प्रयासों को नहीं छोड़ा। इन सबके कारण उनके पत्रों और लेखों में ऐसी विशिष्ट विशेषताएँ और अभिव्यक्ति का ऐसा तरीका था जो अन्य संतों की मौखिक शिक्षाओं के लिए असामान्य था। परिणामस्वरूप, थियोफान का प्रभाव मुख्य रूप से, यदि विशेष रूप से नहीं, तो शिक्षित लोगों, रूसी बुद्धिजीवियों तक फैला—जिनके बीच उन्नीसवीं सदी के दूसरे छमाही में धार्मिक विचारों की विभिन्न धाराएँ देखी गईं—और, विशेष रूप से, महिलाओं तक।

उनकी कई कृतियों में, *मोक्ष का मार्ग* (The Path to Salvation) पुस्तक विशेष रूप से प्रसिद्ध और व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली है; यह पहली बार 1868 में प्रकाशित हुई थी और बाद में इसके कई संस्करण निकले, जैसे *ईसाई जीवन पर पत्र* (Letters on the Christian Life) – जो प्रेसिस पी. एस. को लिखे गए पत्रों का संग्रह है। लुकोमस्काया, जो 1860 में प्रकाशित हुई थी। यह पुस्तक अब जर्मन अनुवाद में *[1183] * के रूप में प्रकाशित हो चुकी है। *पत्रों* के अनुवादक और प्रकाशक का उल्लेख है कि बिशप थियोफैन 'किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक जीवन के लिए मार्गदर्शन और आत्मा के ईसाई व्यवस्था का एक उदाहरण प्रदान करना चाहते थे। उनके पत्रों में ईसाई जीवन शैली पर सलाह शामिल है… इन पत्रों में एक विशेष आकर्षण है; वे अपनी भावना की ताजगी, अपने हार्दिक करुणा, अपनी सादगी और अपने विचार की स्फटिक-सी स्पष्टता से प्रभावित करते हैं; वे 'रूसी भक्ति के सार की एक झलक पाने का अवसर प्रदान करते हैं'। पुस्तक *द लाइफ़ एंड टीचिंग्स ऑफ़ द एल्डर्स* [] में, **हम ने पहले ही वर्णित्की तपस्वी की एक तस्वीर पेश करने का प्रयास किया है। हालाँकि, यहाँ, रूसी महिलाओं की धार्मिक खोजों के विवरण के संबंध में, हम केवल इतना जोड़ेंगे कि *लेटर्स ऑन द क्रिश्चियन लाइफ़*, जो मूल रूप से बिशप थियोफान के व्यक्तिगत रूप से परिचित एक विशिष्ट पत्राकार को संबोधित किए गए थे, उन्हें इस तरह से रचा गया है कि वे कई अन्य महिलाओं की आत्माओं के लिए, दैनिक जीवन के मामलों और उनके आंतरिक आध्यात्मिक संघर्षों और संदेहों, दोनों में, बहुत लाभकारी हो सकते हैं। इसी कारण, थियोफान की मृत्यु († 5 जनवरी 1894) के आधा सदी बाद भी, इन पत्रों को बड़ी उत्सुकता से पढ़ा जाता है और, जैसा कि हम व्यक्तिगत अनुभव से जानते हैं, वे आज भी रूसी महिलाओं पर जबरदस्त प्रभाव डालते हैं। कहा जा सकता है कि थियोफान की रचनाओं ने बहुत सी महिलाओं को मठ में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया और दुनिया में रहने वालों के जीवन-यापन के तरीके को प्रभावित किया - यह मुख्य रूप से शिक्षित महिलाओं पर लागू होता है।**

रूसी महिलाओं को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करने वाले केवल वही वरिष्ठ थे जिनका हमने पहले उल्लेख किया है, ऐसा नहीं था। कई अन्य सम्मानित और कठोर तपस्वी भी थे जिनका कार्य उनके समकालीनों की धार्मिक खोजों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण था; उन्होंने अपनी महिला शिष्यों का मार्गदर्शन या तो व्यक्तिगत बातचीत के माध्यम से या पत्राचार द्वारा किया। हमें बिशप गेरसम (डोब्रोसर्डोव; 1809–1878) का भी उल्लेख करना चाहिए, जिन्होंने कई ननों के साथ पत्राचार किया और उन्हें आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया। उनकी *एक आध्यात्मिक पिता के पत्र एक नन को*[1184] विशेष रूप से सुंदर हैं। ऑप्टिना के एल्डर एम्ब्रोज़ ने भी पुरुषों और महिलाओं दोनों के नाम लिखे गए, ईसाई तपस्वी जीवन शैली पर पत्रों का एक खजाना छोड़ा है, जिसमें वे अपने विशिष्ट नम्रता और स्नेह, स्पष्टवादिता और गहराई के साथ जीवन की सबसे जटिल समस्याओं को सुलझाते हैं[1185] ।

कन्वेंट की दीवारों के भीतर अपना जीवन व्यतीत करने वाली रूसी महिलाओं में कई तपस्विनियाँ थीं जिन्होंने महिला मठों में एक सच्चे मठवासी जीवन की स्थापना में योगदान दिया; उनमें से कुछ का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए।

ऐसी ही एक नन थीं एबेस थियोफानिया गोतोवत्सेवा (1787–1866)। उनका जन्म एक प्राचीन वंश के कुलीन परिवार में हुआ था और उन्होंने सेंट पीटर्सबर्ग के कैथरीन इंस्टीट्यूट फॉर नोबल मेडेंस में शिक्षा प्राप्त की, जहाँ उन्होंने विदेशी भाषाओं के अध्ययन में विशेष रूप से उत्कृष्टता हासिल की। उन्होंने जनरल ए. एस. गोतोवत्सेव से

[1183] इस पुस्तक के हाल ही में प्रकाशित अंशों को जर्मन अनुवाद में देखें: *Russische Frömmigkeit. Briefe eines Starzen*. रूसी से अनुवादित, प्रस्तावना सहित और एन. बुब्नोव द्वारा संपादित (वीज़बाडेन, 1947)।

[1184] ये 'पत्र' में प्रकाशित हुए हैं: *Stranik*. 1865. 1; और यह भी में: *Questions by the Nun Eupraxia and Answers by Archimandrite Gerasim*. 2 खंड (1883) (आंशिक रूप से यह भी में: *Dushep. cht.* *1882–83) / बिशप गेरसम शुरू में एक पैरिश पादरी थे, फिर उन्होंने संन्यास की शपथ ली; उन्होंने ओप्टिना हर्मिटेज के साथ आध्यात्मिक संबंध बनाए रखा और एक बहुत ही दिलचस्प पुस्तक संकलित की, *व्वेडेन्स्काया ओप्टिना हर्मिटेज के मठाधीश, फादर आर्चिमैंड्राइट मूसा के जीवन का एक संक्षिप्त विवरण* (1865) /*

[1185] ऑप्टिना के वृद्ध एम्ब्रोज़ द्वारा मठाधीशों को लिखे पत्रों का संग्रह। 2 खंड (1908–1909)।

वविाह कयिा। हालाँकि, उनका वविाह केवल दो दनि ही चला: उनके पति को युद्ध के मैदान के लिए रवाना होने का आदेश मलिा (यह 1809 में, रूसो-स्वीडशि युद्ध के दौरान था), जहाँ उन्हें गोली लग गई। उनकी छोटी बेटी की चार साल की उम्र में मृत्यु हो गई, और कुछ साल बाद, 1818 में, गोतोवत्सेवा अपनी 12 दास लड़कयिों के साथ गोरीत्स्की कॉन्वेंट में एक नवोदति के रूप में प्रवेश कर गईं। 1837 में, उन्होंने मठवासी संकल्प और स्कीमा लेने का संकल्प लयिा। नवसखियिा रहते हुए, गोतोवत्सेवा ने करिलिो-नोवेज़ेर्स्की मठ के एल्डर थयिोफान सोकोलोव के साथ कई वर्षों तक पत्राचार कयिा, और उनकी तपस्वी वचिारधारा, साथ ही कन्वेंट में एक सामुदायकि नयिम लागू करने के उनके प्रयास, इस पत्राचार से जुड़े हैं, क्योंकि एल्डर थयिोफान सोकोलोव मठ के सामुदायकि जीवन के सबसे उत्साही अनुयाययिों और समर्थकों में से एक थे[1186] । 1845 में, नन थयिोफानयिा (उन्होंने एल्डर थयिोफान की स्मृति में अपना मठवासी नाम लयिा था) को सम्राट नकिोलस प्रथम (1825-1855) से खुद उनके सामने पेश होने का नमिंत्रण मलिा। यह ध्यान देने योग्य है कि यह नमिंत्रण धार्मकि अधकिारयिों से नहीं बल्कि धर्मनरिपेक्ष अधकिारयिों से आया था; सनिाडल युग के दौरान यह एक आम बात थी, क्योंकि सिनिाडल पदानुक्रम ने मठवाद पर बहुत कम ध्यान दयिा। सम्राट ने थयिोफानयिा से सेंट पीटर्सबर्ग में सख्त सामुदायकि नयिमों वाला एक महलिा मठ स्थापति करने के लिए कहा, और आदेश दयिा कि उन्हें स्वयं एबेस नयिुक्त कयिा जाए। इस प्रकार, 1845 में नोवोदेवची रेसरेक्शन कॉन्वेंट की स्थापना हुई, जहाँ एबेस थयिोफानयिा ने 1866 में अपनी मृत्यु तक अथक ऊर्जा और उल्लेखनीय सफलता के साथ कार्य कयिा। शुरुआत से ही, वॉस्करेन्स्की कॉन्वेंट, शाही परविार के संरक्षण में होने के कारण – इसकी प्रमुख को दरबार में बहुत सम्मान प्राप्त था और वह कई ग्रैंड डचेस की धर्ममाता थीं – अपनी सामाजकि और धर्मार्थ गतविधियिों के व्यापक पैमाने के लिए वशिष्टि था। नन और नवसखियिा (जनिकी संख्या 19वीं सदी के अंत तक 300 से अधकि हो गई थी) वभिन्नि कार्यशालाओं में काम करती थीं। वे सोने और मोतयिों से कढ़ाई ( ) करती थीं, जूते और पादरयिों के वस्त्र बनाती थीं, और अनाथालयों तथा वृद्धाश्रमों के लिए कपड़े धोती थीं। 19वीं सदी के अंत में, मठ ने लड़कयिों के लिए एक स्कूल, गाँव के स्कूल शक्षिकों के लिए एक प्रशक्षिण कॉलेज, लड़कों के लिए एक स्कूल और सोने की कढ़ाई की एक उत्कृष्ट कार्यशाला खोली[1187] ।

रूस के एक बलि्कुल अलग हस्सि में, और कहीं कम अनुकूल परस्थितियिों में, स्कीमा-एबेस थयिोफानयिा सदिोरोवा ने भी उतनी ही कड़ी मेहनत से खुद को अलग साबति कयिा। वह मूल रूप से वोल्गोडा की रहने वाली थीं, एक मामूली व्यापारी परविार से। 1800 में जन्मीं, उन्होंने अमीर व्यापारी सदिोरोव से शादी की, लेकनि जल्द ही वधिवा हो गईं (1827)। 20 से अधकि वर्षों तक वह एक मठ से दूसरे मठ तक भटकती रहीं, उन्होंने फ़लिस्तीन के पवत्रि स्थलों की तीर्थयात्रा की, और उस धर्मनष्ठि वधिवा ने अपनी सारी संपत्ति चर्च और धर्मार्थ कार्यों को दान कर दी। 60 वर्ष की आयु में (1860) उन्होंने अंततः उत्तर में स्थति खोल्मोगोरी मठ में मठवासी संन्यास ग्रहण करने का संकल्प लयिा, जसि बाद में भंग कर दयिा गया, और पाँच साल बाद उन्होंने महान स्कीमा भी ग्रहण की, तथा थयिोफानयिा नाम धारण कयिा। एक साल बाद, उन्हें शेंकुरस्क शहर (सफेद सागर के तट पर) में उस समय के एक छोटे से मठ की अधीक्षक नयिुक्त कयिा गया। उन्होंने 14 वर्षों तक मठ का नेतृत्व कयिा, इस दौरान समुदाय के भीतर मठवासी संवधिान के सभी नयिमों का सख्ती से पालन कयिा गया। 1880 में, मदर थयिोफानयिा बीमार पड़ गईं; वह अक्सर और लंबे समय तक बस्तिर पर ही रहती थीं, फरि भी वह ननयिों की मुख्य आध्यात्मकि मार्गदर्शक बनी रहीं; 1888 में एक बहुत उन्नत आयु में उनका नधिन हो गया। यह उत्तरी मठ, जो सुनसान टुंड्रा में स्थति था, अपने कड़े नयिमों और अपनी ननों के तपस्वी जीवन के लिए प्रसद्धि था; 1900 में, इसमें 36 ननें और 86 नवसखियिा थीं[1188] ।

और इसी दुनयिा से एक और हस्ती हैं: एबेस फलिरेटा, जनिका जन्म बारोनेस वरवारा श्लपिेनबैक के रूप में हुआ था, जो आधी जर्मन थीं। फयिोफानयिा गोतोवत्सेवा की तरह, वह भी एक कुलीन परविार से थीं; राजधानी में, उन्होंने सेंट पीटर्सबर्ग पैट्रयिॉटकि इंस्टीट्यूट फॉर नोबल यंग लेडीज़ से स्नातक की उपाधि प्राप्त की; बहुत कम उम्र में, वरवारा नोवगोरोड में स्थति प्राचीन और प्रसद्धि होली स्परिटि कॉन्वेंट में एक नवोदति बनीं, जसिकी स्थापना 12वीं

[1186] एल्डर थयिोफेंस सोकोलोव पर, मेरी पुस्तक देखें। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 128 से आगे, साथ ही वर्तमान कृति का अध्याय XV।

[1187] थयिोफानयिा गोतोवत्सेवा पर: वी. अस्कोचेन्स्की, *थयिोफानयिा, रेसरेक्शन कॉन्वेंट की अधष्ठिात्री* (1866) (बहुत संक्षप्ति); और भी: एबेस थयिोफानयिा (1868), जसिमें कई प्रकाशति पत्र शामलि हैं; उनके मठ पर: स्नेसोरेवा, एस. द रेसरेक्शन कॉन्वेंट फॉर वीमेन इन सेंट पीटर्सबर्ग (1887)।

[1188] स्कीमा-एबेस थयिोफानयिा सडिोरोवा के बारे में एक दलिचस्प छोटी सी कतिाब लखिी गई है, जो हमें एक दूरस्थ प्रांत में मठवासी जीवन से परचिति कराती है: शेनकर्सकी कन्वेंट की स्कीमा-एबेस थयिोफानयिा की स्मृति में (1891)।

शताब्दी में हुई थी[1189] ; बाद में वह कीव के फ्लोरोव्स्की कॉन्वेंट[1190] में चली गईं, और 1848 में उन्होंने अपने मठवासी संकल्प लिए। आठ वर्षों तक उन्होंने ओडेसा के सेंट माइकल द आर्कएन्जेल कॉन्वेंट में एक शिक्षिका के रूप में काम किया, जहाँ उन्होंने लड़कियों (पुरोहित परिवारों की अनाथों) के लिए एक स्कूल चलाया। 1858 में, फलिरेटा श्लपिनबैक को लेबेडनि सेंट निकोलस कॉन्वेंट की अधिष्ठात्री नियुक्त किया गया (कीव गवर्नरेट के चिहिरिनि शहर के पास)। वहाँ उन्होंने किसान बच्चों के लिए रविवार स्कूल, लड़कियों के लिए एक स्कूल और आइकन पेंटिंग का एक स्कूल आयोजित किया। 1875 में, अपने परोपकारी कार्य के चरम पर उनका निधन हो गया[1191] ।

अबेस तैसिया सलोपोवा के 'नोट्स'[1192] हमें 19वीं सदी के उत्तरार्ध में महिलाओं के मठों के आंतरिक जीवन से परिचित कराते हैं। हार्दिक स्पष्टवादिता के साथ, वह अपने व्यक्तिगत धार्मिक संघर्षों और कठिनाइयों, अपने युग में मठ जीवन के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं, और मठों तथा चर्च प्राधिकरणों के बीच संबंधों के बारे में लिखती हैं – ये सभी बातें वह रूस भर के विभिन्न मठों में रहने के दौरान अच्छी तरह जान चुकी थीं। उनका वृत्तांत तपस्या की परंपरा, सामुदायिक नियमों का पालन या उनसे विचलन, और मठ जीवन के उचित संगठन के लिए अधिष्ठात्री के परिश्रम और उदाहरण के महत्व को प्रकट करता है। उनके 'नोट्स' इस तथ्य की गवाही देते हैं कि महिलाओं के मठों में, ठीक वैसे ही जैसे पुरुषों के मठों में, तपस्या का विकास धार्मिक अधिकारियों के निर्देश से नहीं हुआ, बल्कि इसने अपनी आध्यात्मिक शक्ति या तो लोकप्रिय भक्ति से या तपस्या की परंपरा से प्राप्त की, जिसे सिनोडल काल की 'आधिकारिक भावना' ने न तो समर्थन करने का प्रयास किया और अक्सर इसका विरोध भी किया। रूस में धार्मिक खोजों और चर्च जीवन के इतिहास से परिचित सभी ईसाई तपस्वियों, ने इन दोनों स्रोतों से आध्यात्मिक पोषण प्राप्त किया।

रूसी महिलाओं के बीच तपस्या के इतिहास का अभी भी गहन अध्ययन किया जाना बाकी है; कई मुद्दों पर, अभी भी स्रोत सामग्री की कमी है; कुछ आंदोलनों और घटनाओं की उत्पत्ति का पता लगाना और विभिन्न प्रभावों, जैसे कि बुजुर्गों द्वारा डाले गए प्रभावों की गहन जांच करना अभी भी आवश्यक है। सभी घटनाओं की व्याख्या इस प्रभाव से नहीं की जा सकती। रूस के राजनीतिक और आर्थिक जीवन के उतार-चढ़ाव से जुड़े कभी-कभी के अस्थायी उतार-चढ़ाव के बावजूद, आंतरिक व्यक्तिगत भक्ति कभी पूरी तरह से गायब नहीं हुई, हालांकि यह अक्सर चर्च की आधिकारिक भावना से असंतोष के कारण दुनिया से एक प्रकार की आध्यात्मिक वापसी में पीछे हटती हुई प्रतीत होती थी। यह वही लोकप्रिय भक्ति थी जिसने रूसी महिला संन्यासियों को, उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि चाहे जो भी हो, मजबूत किया; इस अर्थ में, वे सभी एक ही स्रोत से प्रेरित थीं। हमारे द्वारा दिए गए उदाहरण स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि कोई भी सामाजिक वर्ग इन स्रोतों से अलग-थलग नहीं था। रूसी संतों का इतिहास, जिस पर नीचे चर्चा की जाएगी, इस घटना को और भी जीवंत रूप से प्रकट करेगा।

रूसी महिलाओं की भक्ति की शुरुआत में, अपने पड़ोसी के प्रति उनके प्रेम और ईश्वर के प्रति उनकी निष्ठा में, हमें इउलियाना ओसोरिना (या ओसोरगिना; † 1605) का व्यक्तित्व दिखाई देता है; अपनी व्यक्तिगत भक्ति के मामले में, वह अन्य महिलाओं से विशेष रूप से अलग नहीं थीं, लेकिन उनके सामाजिक और परोपकारी कार्य उल्लेखनीय थे: उन्होंने संक्रामक रोगियों की देखभाल की और इतनी दान-दक्षिणा दी कि उन्हें खुद भूखा रहना पड़ता था; यह उदाहरण एक ऐसी भावना को दर्शाता है जो 16वीं शताब्दी के अंत के रीति-रिवाजों के लिए असामान्य थी, फिर भी यह इसे 19वीं सदी की कई रूसी महिलाओं द्वारा स्थापित उदाहरणों के करीब लाता है[1193] ।

सारोव के संत सेराफिम के प्रभाव में बनी तपस्वी महिलाओं के समूह में, सबसे विशिष्ट गुण ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण था। अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शन और मार्गदर्शन में, संत सेराफिम ने प्रार्थना और अपने पड़ोसी

[1189] पवित्र आत्मा बोरोवित्स्की कन्वेंट 1162 से पहले भी जाना जाता था; शुरू में यह पुरुषों का मठ था, लेकिन 1787 में इसे महिलाओं के कन्वेंट के रूप में फिर से स्थापित किया गया था; यह सेंट निकोलस द वंडरवर्कर (16वीं शताब्दी की शुरुआत) की अपनी सुंदर प्राचीन प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है।

[1190] कीव के इस कन्वेंट में, धार्मिक अनुशासन का विशेष कठोरता से पालन किया जाता था। 1917 तक, यह लगभग 500 ननों और नवसिखुओं का घर था।

[1191] आरबीएस. पृ. 76। हमें खार्कीव के पास सेंट निकोलस कॉन्वेंट की संस्थापक (1845) एबेस एमिलिया का भी उल्लेख करना चाहिए: कोवालेव्स्की, ए. 'अबेस एमिलिया, अपर खार्कीव सेंट निकोलस गर्ल्स कॉन्वेंट की संस्थापक', में: डुशेप. रीडिंग्स 1885. 2. पृ. 283–311, 385–428.

[1192] एबेस तैसिया के संस्मरण। बर्लिन, 1939।

[1193] इसका कई उदाहरण यहाँ देखें: आर्सेनीव, एन. वी. *डास हाइलिगे मॉस्को* (1940)। जूलियाना ओसोरगिना, जिन्हें लाज़ारेवस्काया के नाम से जाना जाता है (एक अमीर कुलीन व्यक्ति से विवाह करने के बाद, वह मुरोम के पास लाज़ारेव्स्कोये गाँव में रहती थीं), के बारे में देखें: क्लुचेव्स्की, वी. 'प्राचीन रूस में अच्छे लोग', में: निबंध और भाषण (1913); फेदोतोव, जी. प्राचीन रूस के संत (1931). पृ. 228–232.

के प्रति आध्यात्मिक प्रेम को विशेष महत्व दिया - उन्होंने सामाजिक और परोपकारी गतिविधियों को प्रोत्साहित नहीं किया। सेराफिम-दिवेयेवो कन्वेंट के इतिहास से, हम देखते हैं कि सेंट सेराफिम ने, शायद महिलाओं की आध्यात्मिक देखभाल में लगे अन्य संतों की तुलना में अधिक, अपनी आध्यात्मिक बेटियों से तपस्या का अभ्यास करने की मांग की। यह संभव है कि इसकी नींव मठ के भीतर पहले ही रखी जा चुकी थी, कि वहाँ एक तपस्वी परंपरा मौजूद थी जिसे उन्होंने जारी रखा, क्योंकि तपस्या के अभ्यास के लिए एक ठोस नींव समुदाय की संस्थापक और मठ की प्रमुख, नन अलेक्जेंड्रा मेलगुनोवा († 1794) द्वारा रखी जा चुकी थी, जिन्हें पूजनीय पिता व्यक्तिगत रूप से जानते थे। मसीह में पवित्र मूर्ख पेलगिया सेरेब्राकोवा († 1884) और इन महिला मठों के अन्य निवासियों के उदाहरण से पता चलता है कि संत के निधन के बाद भी, तपस्या की परंपरा समाप्त नहीं हुई बल्कि जारी रही[1194] ।

'18वीं और 19वीं सदी के रूसी तपस्वियों की जीवनी'[1195] के पन्नों से, कई महिला तपस्वियों की छवियाँ हमारे सामने आती हैं: तम्बोव के पास ज़नामेंस्की कन्वेंट की अधिष्ठात्री डोरोथेया (जनवरी खंड); तुला धर्मप्रांत में काशीरा के पास स्रेतेन्स्की कन्वेंट की अधिष्ठात्री एंटोनिया (उसी में); मॉस्को के सेंट जॉन कॉन्वेंट की सिस्टर डोरोथिया (फरवरी); काशिरा के पास स्रेतेन्स्की कॉन्वेंट की स्कीमा-नन अवरामिआ (फरवरी); निज़नी नोवगोरोड गवर्नरेट के अर्ज़ामस कॉन्वेंट की स्कीमा-नन मार्था; खार्कीव से दो एकांतवासी, मार्था और यूडोकीया (मार्च); स्कीमा-एबेस ओलंपियाडा, निज़नी नोवगोरोड गवर्नोरेट के अर्ज़ामस शहर में अलेक्ज़ेव्स्की कॉन्वेंट की एबेस (अगस्त); काशिरा के पास स्रेटेंस्की कॉन्वेंट से नन एलिजाबेथ (सितंबर)। या, उदाहरण के लिए, भिक्षुणी इलारिया कोबेलेवा (1810–1892), जो 13 वर्ष की आयु में एक नवसिखिया के रूप में कर्सक ट्रिनिटी कन्वेंट में प्रवेश कर गईं, 19 वर्षों के कठोर तपस्वी जीवन के बाद उन्होंने अपने संन्यास के संकल्प लिए, उस कन्वेंट में 70 वर्ष बिताए और उस पूरे समय में लगातार परोपकारी कार्यों को समर्पित रहीं[1196] .

केवल यह सूची ही दर्शाती है कि इनमें से कुछ तपस्वी नन एक ही कन्वेंट से आई थीं – जो वहां बनी रहने वाली जीवंत तपस्या परंपरा का प्रमाण है। यह इस बात का प्रमाण है कि निज़नी नोवगोरोड गवर्नरेट में, जहाँ सेराफिमो-दिवेयेवो मठ स्थित था, मठवासी तपस्या विशेष रूप से फलती-फूलती थी; शायद यह सारोव के परम पूजनीय सेराफिम के आध्यात्मिक पराक्रम का प्रतिबिंब था, जो 19वीं सदी की रूसी भक्ति के शिखर का प्रतीक थे। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, रूसी महिलाओं द्वारा अपने भक्तिपूर्ण तपस्या में अपनाए गए कुछ ही मार्गों का किसी भी महत्वपूर्ण हद तक अध्ययन किया गया है; यह उम्मीद की जाती है कि ये मार्ग हमेशा के लिए ऐतिहासिक विद्वता से खो नहीं जाएँगे और एक दिन, रूसी महिलाओं के तपस्या के कारनामों की एक व्यापक तस्वीर को एक साथ रखना संभव होगा।

5. एपिस्कोपेट और 'विद्वान मठवासी आदेश'

सिनाडल काल के दौरान मठवाद के इतिहास की एक और विशेषता है: एपिस्कोपेट के साथ पूर्व के घनिष्ठ संबंधों का टूट जाना। 18वीं सदी तक, बिशप वर्ग अपने सदस्यों को संन्यासवाद के हृदय से ही चुनता था; यद्यपि बाहरी रूप से बिशप का पद उसे साधारण संतों से अलग करता था, आंतरिक रूप से वह संतों के समान ही तपस्वी और चर्च-राजनीतिक विचारों का पालन करता था। एपिस्कोपेट के सकारात्मक और नकारात्मक गुणों की व्याख्या मुख्य रूप से प्रचलित परंपरा के साथ इसके अंतर्निहित संबंध द्वारा की गई थी। यदि बिशपों ने मठवासी जीवन में सुधार के लिए बहुत कम किया, तो यह इसलिए था क्योंकि यह उनके लिए कुछ सामान्य और परिचित था, और जैसा कि हम जानते हैं, केवल कुछ ही बिशप इसके बारे में वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने में सक्षम थे। पीटर महान मठवासी व्यवस्था और बिशप पद के बीच इस संबंध से अच्छी तरह वाकिफ थे। मठवासी व्यवस्था से संबंधित उपायों के समानांतर, उन्होंने ऐसे व्यक्तियों का एक बिशप पद बनाने का प्रयास किया जो उनकी योजनाओं और चर्च सुधार के प्रति सहानुभूति रखते थे। उन्होंने इन उद्देश्यों के लिए लिटिल रशियन धार्मिक पदानुक्रम के भीतर उपयुक्त उम्मीदवारों को पाया, जो ग्रेट रशिया के संतों और बिशपों के विचारों से अलग था; यह पदानुक्रम पीटर के सुधारों को पूरी तरह से स्वीकार करने के लिए अधिक इच्छुक था, या कम से कम अपने अधिकार के अधीन पादरियों के बीच विरोध के लिए उकसावे या गुप्त प्रचार में शामिल नहीं था।

[1194] तुलना करें: मेरी पुस्तक, उद्धृत कृति, और इलिन, उद्धृत कृति, पृ. 87।

[1195] निकोडेमस, आर्चिमैंड्राइट। *18वीं और 19वीं सदी के रूसी तपस्वियों की जीवनियाँ*। 12 खंड (1908–1909); यह कृति महीने के अनुसार व्यवस्थित है, जिसमें तपस्वियों के जीवन की जानकारी उनके निधन के दिन के अनुसार कालानुक्रमिक क्रम में प्रस्तुत की गई है। मुझे केवल जनवरी से सितंबर तक के खंड ही उपलब्ध हो सके।

[1196] RBS. पृ. 87.

ज़ार एलेक्सी के मामले के बाद, जिसके इर्द-गिर्द पदानुक्रम और मठवासी समुदाय के भीतर रूढ़िवादी पुराने-मास्को के हलकों ने एकजुट होने की कोशिश की थी, पीटर ने ग्रेट रशियन बिशपों में विश्वास खो दिया। चर्च सुधार और चर्च से संबंधित विभिन्न उपायों को लागू करने में उनके मुख्य सहायक थियोफन प्रोकोपोविच बन गए; वह दक्षिणी रूस का मूल निवासी था और महान रूसी बिशपों के प्रति कोई विशेष सहानुभूति नहीं रखता था। पीटर ने अपेक्षाकृत युवा बिशप स्टीफन यावोर्स्की को पैट्रिआर्कात्मक सिंहासन का कार्यवाहक नियुक्त किया; वह भी 'चेरकासियिनों' में से एक था (यानी, लिटिल रशियंस), जैसा कि मिस्कोवाइट्स उन्हें उपहासपूर्वक और शत्रुता के बिना नहीं कहते थे; जब पीटर को एहसास हुआ कि स्टीफन यावोर्स्की दिल से उनके धार्मिक सुधारों का समर्थन नहीं करते थे, तो उन्होंने उन्हें किनारे कर दिया।

यह बात बहुत कुछ बताती है कि लोकम टेनेन्स का कार्यकाल 1700 से 1721 तक कितना लंबा रहा: पीटर तुरंत ही पादरीराज्य को समाप्त नहीं कर सके। और जब तक सर्वोच्च धार्मिक अधिकार के स्वरूप का मौलिक प्रश्न हल नहीं हो गया था, पीटर ने अपनी नीति जारी रखी – उन्होंने चर्च पदानुक्रम को लिटिल रशियनों से भर दिया, और मठों के मठाधीशों की नियुक्ति भी आमतौर पर कीव मेट्रोपोलिस के हिरोमोंक और आर्चिमैंड्राइट्स में से की जाती थी। यह नीति 18वीं सदी के पहले छमाही के दौरान जारी रही, और एलिजाबेथ (1741–1761) के शासनकाल के दौरान विशेष रूप से सुसंगतता के साथ इसका पालन किया गया[1197] ।

महान रूसी मठों के मठवासी समुदाय ने, जो पूर्व-पीटरिन परंपरा के प्रति विफादार था, लिटिल रूसी लोगों को 'लातिन' के रूप में बहुत संदेह की दृष्टि से देखा: अपने समय में पैट्रिआर्क जोआकिम और एड्रियन, संन्यासी यूथिमियस और अन्य लोगों ने भी उन्हें इसी तरह देखा था। बिशप जोआसाफ गोर्लेन्को († 1754) अपने पत्रों में लिखते हैं कि महान रूसी हर जगह लघु रूसी लोगों को संदेह की दृष्टि से देखते थे[1198] । इसके अलावा, लघु रूसी और महान रूसी पुरोहितों के बीच सामाजिक मतभेद भी थे। सबसे पहले, जब वे पोलिश ताज के अधीन रहते थे (पश्चिमी रूस, जिसके कई निवासी रूस पलायन कर रहे थे, तब भी पोलैंड का हिस्सा था), तो पोलिश-लिथुआनियाई कानूनों ने उन्हें कुलीन वर्ग (श्लाख्ता) के बराबर कुछ अधिकार प्रदान किए थे। 1728 तक, कीव मेट्रोपोलिस के पुरोहितों को कुलीनों की तरह भूमि खरीदने और उपहार के रूप में संपत्ति स्वीकार करने का अधिकार था। सम्राज्ञी अन्ना के शासनकाल में, इसने कुछ ऐसे विशेषाधिकार बनाए रखे जो ग्रेट रूसी पादरी वर्ग के पास नहीं थे [1199] । यह भी लिटिल रूसी और ग्रेट रूसी पादरी वर्ग के बीच पारस्परिक वैमनस्य का एक कारण था, क्योंकि पहला वर्ग दूसरे वर्ग को तिरिस्कार की दृष्टि से देखता था। लिटिल रूस के बिशपों की विशेषता विशेष अहंकार, कठोर प्रशासन और अपने अधिकार के अधीन पैरिश के पादरियों और मठाधीशों के साथ क्रूर व्यवहार था। इस प्रकार के कई बिशपों का उदाहरण दिया जा सकता है, उदाहरण के लिए, गेदियन (विश्निव्स्की), स्मोलेंस्क के बिशप (1728–1761); तिमोफ़ी (शचेरबात्स्की), मॉस्को के मेट्रोपॉलिटिन (1757–1767); एम्ब्रोज़ (ज़र्टसिस-कामेंस्की), मॉस्को के आर्चबिशप (1767–1771), जिन्हें 1771 में 'प्लेग दंगे' के दौरान लोगों ने मार डाला था; पाचोमियस (सिमांस्की), तम्बोव के बिशप (1751–1766); आर्सेनियस (मात्सिएविच), साइबेरिया के मेट्रोपॉलिटिन (*1741–1742) और रोस्तोव (1742–1763); पॉल (कोन्यूसकेविच), साइबेरिया के मेट्रोपॉलिटिन (1758–1767); सिरिल (फ्लोरिंस्की), सेवस्क के बिशप (1766–1778)*[1200] .

छोटे रूसी बिशपों ने अक्सर उल्लेखनीय रूप से तेजी से करियर बनाया। बिशप गेडियन (क्रिनोव्स्की), जिनके उपदेशों ने महारानी एलिजाबेथ पर गहरा प्रभाव डाला, महज 27 वर्ष की आयु में साव्वो-स्टोरोज़ेव्स्की मठ के आर्चिमैंड्राइट बने, हालांकि उन्होंने इसका प्रशासन नहीं किया और सेंट पीटर्सबर्ग में रहे; एक साल बाद उन्हें होली सिनॉड का सदस्य और ट्रिनिटी-सर्गीय लव्रा का आर्चिमैंड्राइट नियुक्त किया गया; 31 वर्ष की आयु में उन्हें प्सकोव का धर्मप्रांत सौंपा गया, लेकिन ठीक दो साल बाद (22 जुलाई 1763) उनकी अचानक मृत्यु के कारण उनका शानदार करियर समाप्त हो गया[1201] ।

1764 के धर्मनिरपेक्षीकरण से पहले, मठों की तरह, धर्मप्रांतीय अधिष्ठानों के पास भी विशाल जमींदारियाँ थीं और वे उनसे काफी आय प्राप्त करते थे। वे बहुत बड़ी संख्या में नौकरों को काम पर रखते थे, विशेष रूप से जब इन

[1197] डोब्रोकलोन्स्की। गाइड। 4 (1893)। पृ. 107; पहले से उल्लेखित के. खार्लामोविच और आई. श्ल्यापकिन के कार्य को भी देखें; तुलना करें पी. मिल्युकॉव के दृष्टिकोण से (एसेज़। 3 (1930)। पृ. 169) और अध्याय XI।

[1198] ODDS. 4. पृ. 515.

[1199] टिट्लिनोव। अन्ना इओनोव्ना का शासन। पृ. 183.

[1200] रूसी हिस्टोरिकल रिव्यू 1871, खंड 3, पृ. 583; 1908, खंड 7, पृ. 40–54; स्नेगिरेव। नोट्स, में: रूसी आर्काइव्स 1866; संग्रह, खंड 10, पृ. 275.

[1201] टिट्लिनोव। गाव्रील पेट्रोव। पृ. 46; टिटोव। प्सकोव और नार्वा के बिशप गेडियन क्रिनोव्स्की की जीवनी पर (1907)।

अधष्ठिानों पर लटिलि रूसी बशिपों का कब्ज़ा होता था। नौकरों और प्रबंधकों की कुल संख्या 31 से 135 लोगों तक होती थी। रोस्तोव धर्मप्रांत के पास ऐसी भूमि थी जिस पर 16,796 किसान रहते थे, जो 5,000 रूबल तक का किराया और पादरियों पर लगाया गया 'कर' देते थे; इस प्रकार, बशिप की कुल आय 8,000 रूबल थी। इस बीच, 1764 के स्टाफगि नियिमों के अनुसार, रोस्तोव धर्मप्रांत के रखरखाव के लिए मात्र 2,014 रूबल आवंटित किए गए थे। संभव है कि यही परस्थितिि रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन, आर्सेनी मात्सेवचि द्वारा धर्मनरिपेक्षता के खलिाफ वरिोध का कारण थी, जन्हिोंने कैथरीन के सुधार के खलिाफ न केवल सद्धिांत के आधार पर बल्कि दृढ़ता और तीव्रता से भी आवाज उठाई[1202] ।

इन्हीं लटिलि रूसी बशिपों, आर्सेनी मात्सेवचि और पावेल कोन्यूसकेवचि ने धर्मनरिपेक्षीकरण के खलिाफ खुले तौर पर वरिोध व्यक्त किया। यही कारण था कि कैथरीन ने लटिलि रूसियों को संदेह की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया और यह सुनश्चिति किया कि 1764 के बाद से, बशिप की सीटें ग्रेट रूसियों द्वारा संभाली जाएँ। उस समय *(1763–64), 26 धर्मप्रांतकि बशिपों में से केवल 12 महान रूसी थे। हालाँकि, कैथरीन के उपाय, जो इसके अलावा कुछ हद तक तात्कालकि थे, बशिप और पुरोहति वर्ग के बीच की खाई को पाट नहीं सके - एक खाई जो समय के साथ और चौड़ी होती गई*[1203] ।

18वीं सदी के मध्य में एक रोचक ग्रंथ प्रकाशति हुआ। इसके लेखक का दावा है कि 'बशिप' और 'प्रेस्बटिर' दोनों में पुरोहतित्व की समान कृपा नहिति है और इन दोनों पदों के बीच का भेद ऐतहिासकि रूप से अपेक्षाकृत बाद में वकिसति हुआ है। साथ ही, लेखक सामान्य रूप से बशिपशाही और मठवाद की तीखी आलोचना करते हैं, क्योंकि वे दोनों ही बाहरी और आंतरकि रूप से प्रारंभकि चर्च की भावना से भटक गए हैं[1204] । यह गुमनाम नबिंध, जो पुरोहतिों के बीच प्रसारति हुआ, विद्वानों द्वारा मॉस्को क्रेमलनि में स्थति आर्कएन्जेल कैथेड्रल के एक पुरोहति, आर्चप्रीस्ट प्योटर अलेक्सेव से संबंधति माना जाता है। वह मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन प्लेटोन और, अधकि सामान्य रूप से, एपस्किोपेट और मठवाद के प्रति अपने वरिोध के लिए जाने जाते हैं, जैसा कि प्रभावशाली आर्चप्रीस्ट पैनफलिोव, जो महारानी कैथरीन के आध्यात्मकि वश्विासपात्र थे, के साथ उनके पत्राचार से स्पष्ट है। अलेक्सेव ने 'क्या एक योग्य पादरी के लिए, मठवाद को दरकनिार कर, बशिप के पद पर पदोन्नत होना उचति है?' नामक एक और ग्रंथ लखिा, जो अपनी दलीलों के मामले में, 'बशिपों के वरिुद्ध ग्रंथ'[1205] से बहुत मलिता-जुलता है। तर्क की इस धारा को श्वेत पादरी वर्ग और तथाकथति 'विद्वान संन्यासवाद' के बीच सामाजकि और भौतकि स्थति के अंतर से समझाया जा सकता है, जो 18वीं सदी के दूसरे छमाही में तेजी से उभरा और, बशिपों और संन्यासी पादरी वर्ग के साथ मलिकर, श्याम पादरी वर्ग का गठन किया[1206] ।

विद्वान मठवासी आदेश उन व्यक्तियों से मलिकर बना था जन्हिोंने धर्मशास्त्र अकादमियों में उच्च शक्षिा प्राप्त की थी और बाद में मठवासी संन्यास ग्रहण किया था। 17वीं सदी की शुरुआत से ही विद्वान भक्षिु दक्षणिी रूस—अर्थात् कीव के मेट्रोपोलसि—और पश्चमिी रूस से मस्कोवी में आ रहे थे। उस समय उनमें से लगभग सभी कीव थयिोलॉजकिल अकादमी के स्नातक थे। उदाहरण के लिए, उनमें पोलोत्स्क के समियिन भी थे, जनिका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं। 17वीं सदी के दूसरे भाग में, वे मास्को पहुँचे और शक्षिति धर्मशास्त्रियों की कमी के कारण, उन्होंने सभी शक्षिण गतविधियिों का प्रभार संभाला, शुरुआत में मास्को में स्लावकि-ग्रीक अकादमी में, और 18वीं सदी में नव-स्थापति धर्मशास्त्र सेमनिारियों में भी।

1724 के 'मठवाद पर घोषणापत्र' ने शक्षिण में लगे धर्मशास्त्र अकादमियों के स्नातकों को 30 वर्ष की आयु पूरी करने पर भक्षिु के रूप में दीक्षा लेने की अनुमति दी[1207] । उन्हें मठवासी भक्षिुओं से अधकि वेतन मलिता था और आमतौर पर उन्हें तुरंत ही हायरआिर्क के रूप में अभषिक्ति कर दिया जाता था। यदि वे बाद में धर्मशास्त्र

[1202] पोक्रोव्स्की। द काज़ान बशिप'स हाउस (1906)। पृ. 367, 372–381; पोपोव। आर्सेनी मात्सेवचि। पृ. 99। बशिपों के कार्यालयों के लिए नए स्टाफगि नियिमों पर: ज़ाव्यालोव। उपरोक्त ग्रंथ। पृ. 216। पुरोहति वर्ग से बशिप की सीटों को प्राप्त होने वाली आय के बारे में जानकारी के लिए, सबसे बढ़कर देखें: काप्टेरेव, एन. धर्मनरिपेक्ष बशिप कार्यालय के अधकिारी (1874)। पृ. 114, 135 ff.; गोल्ब्स्की। खंड 1, भाग 1. पृ. 423, 436; गोर्चाकोव। मठवासी कार्यालय। पृ. 236.

[1203] ज़नामेन्स्की। पैरशि पुरोहति वर्ग। पृ. 615.

[1204] 'बशिपों के वरिुद्ध प्रबंध'। संपादक वी. आई. साव्वा, में: रीडग्सि। 1909। खंड 1। पृ. 7, 35, 26, 4।

[1205] रीडग्सि। 1867। खंड 3। पृ. 17; रशयिन आर्काइव्स। 1871। पृ. 218–220, 230; 1892। खंड 4। पृ. 456। लेखक के रूप में अलेक्ज़ेव पर, देखें: फ्लिारेत. समीक्षा. 3रा संस्करण. 2. पृ. 384; ज़नामेंस्की. उद्धृत ग्रंथ. पृ. 651; सुखोमलनिोव. रूसी अकादमी का इतहिास. 1. पृ. 280.

[1206] काले और सफेद पादरियों के बीच का वभिाजन—अर्थात्, मठाधीशों और पैरशि पादरियों के बीच—पहले से ही बीजान्टयिम में मौजूद था; इस पर देखें: ट्रॉइट्स्की, आई. ई. आर्सेनयिस, नकिया और कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क (1873)।

[1207] PSPiR. खंड 4. संख्या 1197.

सेमनिारयिों के रेक्टर के रूप में कार्य करते थे, तो उन्हें एक ही समय में मठों के मठाधीश के रूप में भी नयिुक्त कयिा जाता था, और ऐसे मामलों में उन्हें दो वेतन मलिते थे। सम्राट पॉल के अधीन, 1799 में एक फरमान जारी कयिा गया था जसिके द्वारा शक्षिण कार्य में लगे हायरोमोंक्स को शहर के कैथेड्रल से संबद्ध कर दयिा गया और उन्हें उसकी आय का एक हस्सिा प्राप्त हुआ। 1766 की शुरुआत में ही, बशिपों और वद्विान भक्षिुओं को अपनी संपत्त (पैसा, कतिाबें, कपड़े) का स्वतंत्र रूप से नपिटान करने की अनुमत दी गई थी, जबक पीटर के फरमानों ने मठवासी भक्षिुओं के लिए ऐसा करना मना कर दयिा था; बशिप और वद्विान भक्षिु अपनी संपत्त रशि्तेदारों और अन्य व्यक्तयिों को वरिासत में दे सकते थे, जबक मठवासी भक्षिुओं की संपत्त उनकी मृत्यु पर राज्य के हाथों में चली जाती थी[1208] । इस प्रकार, वद्विान भक्षिु मठवासी भक्षिुओं या पैरशि पादरयिों (बड़े शहर के गरिजाघरों या अमीर पैरशि चर्चों के मठाध्यक्षों को छोड़कर) से अधकि धनी थे; वे अपने सहयोगयिों—धर्मशास्त्र अकादमयिों और सेमनिारों के शक्षिकों—से भी बेहतर स्थतिि में थे, जो सामान्य नागरकि की हैसयित में बने रहे।

1724 के 'मठवाद पर घोषणापत्र' में नहिति प्रावधान, जसिमें यह नर्धिारति था क कोई व्यक्त केवल 30 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर ही मठवासी संन्यास ले सकता है, को भी उनके मामले में अक्सर अनदेखा कर दयिा जाता था। 29 मई 1832 के होली सनिॉड के एक फरमान द्वारा, कैनन के इस उल्लंघन को वैध कर दयिा गया। तब से, यह आधकिारकि तौर पर अनुमत दे दी गई क उन धर्मशास्त्र अकादमयिों के स्नातकों को, जन्हिोंने मठ में प्रवेश की अवध से छूट लेने की इच्छा व्यक्त की थी, मठ में प्रवेश की अवध से छूट दी जाए; यही नयिम उन वधिुर पुरोहतिों पर भी लागू था जन्हिोंने भक्षिु बनने का नर्णिय लयिा था[1209] . धर्मशास्त्र अकादमयिों के छात्रों के लिए, मठवासी संन्यास ग्रहण करने की न्यूनतम आयु घटाकर 25 कर दी गई, और उन्हें भी बनिा नवोदति काल के तुरंत ही उपनयन संस्कार दे दयिा जाता था[1210] । अकादमी से स्नातक होने पर, ऐसे छात्र—बशर्ते क उनका ज्ञान और क्षमताएँ उन्हें शक्षिण का कार्य संभालने में सक्षम बनाती हों और उन्होंने मठवासी संन्यास ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की हो—जीवन में एक काफी एकरस मार्ग पर चल पड़े। अपना संन्यास ग्रहण करने के तुरंत बाद, उन्हें हायरोमोंक के रूप में अभषिक्ति कयिा जाता था और एक धर्मशास्त्र सेमनिरी में शक्षिण पद दयिा जाता था (वशिेष रूप से प्रतभिाशाली लोग अकादमी में व्याख्याताओं के रूप में बने रहते थे); फरि वे धर्मशास्त्र सेमनिरयिों के नरीक्षक और रेक्टर के रूप में सेवा करते थे। यह भी प्रथा थी क सेमनिरी के रेक्टर को आर्चमैंड्राइट के पद पर पदोन्नत कयिा जाए, इसके बाद एक धर्मशास्त्र अकादमी का रेक्टर पद आता था। ऐसे आर्चमिांड्राइट-रेक्टरों का 28 से 35 वर्ष की आयु के बीच के पुरुष होना असामान्य नहीं था। केवल नाम मात्र के लिए, उन्हें मठों का एबॉट नयिुक्त कयिा जाता था, जनिका वे वास्तव में मेहमान के रूप में केवल एक बार दौरा करते या कभी-कभी तो उन्हें देख भी नहीं पाते थे। इस उन्नत की श्रृंखला में अंतमि ' ' कड़ी बशिप का अभषिेक[1211] था। ऐसे मामलों में, यह सामने आता था क बशिप पहले कभी कसिी मठ में नहीं रहे थे और वास्तव में, वे एक ब्रह्मचारी पुरोहति[1212] थे। 18वीं और 19वीं शताब्दी में जब धर्मप्रांतों की संख्या तीन गुना हो गई, और कई धर्मप्रांतों में वाइकर बशिप नयिुक्त कए गए, तो कसिी वद्विान भक्षिु का 10-12 वर्षों के बाद बशिप बनना कोई असामान्य बात नहीं थी।

18वीं सदी के दूसरे भाग तक, वद्विान भक्षिु नहीं रहे बशिप एक असाधारण घटना बन गए थे। ऐसे मामलों में, वे लगभग हमेशा अत्यधकि योग्य व्यक्त होते थे; हालाँक, चूँक उन्हें चर्च पदानुक्रम के उच्चतम रैंक पर पदोन्नत नहीं कयिा गया था, इसलिए उन्हें रूसी चर्च के इतहिासकारों द्वारा भी जल्द ही भुला दयिा गया। अपने नजिी जीवन और वचिारों में, वे ऑर्थोडॉक्स मठवाद की वास्तव में तपस्वी परंपरा से सबसे अधकि जुड़े हुए थे।

[1208] PSZ. संख्या 12577, 16684.

[1209] मलिाज़. उपरोक्त, पृ. 663.

[1210] ऐसा भी हुआ क पुरुषों को 25 वर्ष की आयु पूरी होने से पहले ही टॉन्सर कर दयिा गया; उदाहरण के लिए, यह आर्चमिांड्राइट बुखारेव और मेट्रोपॉलटिन एंथनी ख्रापोवट्स्की के मामले में हुआ था।

[1211] एक वद्विान भक्षिु के ऐसे करयिर के ववििधि उदाहरणों के लिए, आर्चबशिप नकिानोर (ब्रोवकोवचि) द्वारा लखिति अत्यंत रोचक और जानकारीपूर्ण 'जीवनी संबंधी टप्पिणयिाँ' देखें, जो 1840 के दशक से 1870 के दशक की अवध से संबंधति हैं: Biographical Notes. 1 (1900).

[1212] 'यह कहना गलत है,' सेंट त्सान्कोव लखिते हैं (Das orthodoxe Christentum des Ostens. बर्लनि, 1928. टप्पिणी 125), 'क पूर्वी चर्च में बशिप भक्षिु होते हैं। वे भक्षिुओं की पंक्त से चुने जा सकते हैं, लेकनि वे स्वयं भक्षिु नहीं होते, क्योंक 879 के कॉन्स्टेंटनिोपल परषिद के नयिम 2 के अनुसार, बशिप का पद भक्षिु संघ के साथ असंगत है; बशिप बनना स्वतःही (उस तथ्य के कारण) भक्षिुत्व का त्याग करना है। बेथ (बेथ कार्ल। *Die orientalische Christenheit der Mittelmeerländer. Reisestudien zur Statistik und Symbolik der griechischen, armenischen und koptischen Kirchen*. बर्लनि, 1902. पृ. 333) यह मानने में बलि्कुल सही थे क, एक ऑर्थोडॉक्स बशिप के मामले में, मठवाद के बजाय ब्रह्मचर्य कहना अधकि सटीक होगा।"

शायद आर्चबशिप वरलाम (पेट्रोव; † 1802) को उनमें सबसे पहले स्थान दयिा जाना चाहएि; अपने अभषिेक के बाद, उन्होंने अपना शेष जीवन—34 वर्ष—उसी धर्मप्रांत में बतिाया, जो उस समय और बाद में, 19वीं सदी में, एक बहुत बड़ी दुर्लभता थी; उन्होंने साइबेरयिा में टोबोल्स्क के आर्चबशिप (1768–1802) के रूप में सेवा की। वे बशिप के परधिानों में एक सच्चे तपस्वी थे: वनिम्र, दयालु और नस्विार्थी; उन्होंने अपनी सारी आय जरूरतमंदों को दे दी। धर्मप्रांत के पुरोहति वर्ग वार्लाम से असीम प्रेम करता था क्योंकि उनके पूर्ववर्ती, मेट्रोपॉलटिन पावेल कोन्यूसकेवचि के अधीन, उन्हें कठोर प्रशासनकि उपायों से बहुत कष्ट उठाना पड़ा था; लोग भी उनसे बहुत प्यार करते थे, जो उनके चरत्रि के सच्चे ईसाई गुणों की सराहना कर सकते थे। उन्होंने अपना संन्यासी जीवन सेंट पीटर्सबर्ग में अलेक्जेंडर नेवस्की मठ में एल्डर डोसटियिस के मार्गदर्शन में बतिाया, और इसी एल्डर ने उन्हें एक सच्चे भकि्षु और तपस्वी के रूप में ढाला। बर्लाम, नोवगोरोड और सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल के भाई थे। इस रशि्तेदारी ने मठ के मठाधीश के रूप में एक संक्षप्ति अवधि के बाद बर्लाम के बशिप के रूप में अभषिेक में योगदान दयिा; हालाँकि, अपनी व्यक्तगित गुणों के मामले में, वह अपने समकालीन अधकिांश बशिपों की तुलना में बशिप पद के लएि कहीं अधकि योग्य थे[1213] ।

यकातेरनिोस्लाव के आर्चबशिप जॉब (पोतेमकनि; 1750–1823), जहाँ तक हम पता लगा सके हैं, 18वीं सदी के एकमात्र रूसी बशिप थे, जनिका गठन मोल्दावयिा में परशि्रम करने वाले एल्डर पैसयिस (वेलकिॉव्स्की) के आध्यात्मकि मार्गदर्शन में हुआ था। वे प्रसद्धि राजकुमार जी. ए. पोतेमकनि के चचेरे भाई थे; उनके सामने एक शानदार सैन्य करयिर था[1214] , लेकनि उन्होंने उसे ठुकरा दयिा और 29 वर्ष की आयु में अप्रत्याशति रूप से इस्तीफा दे दयिा; 1779 में वह मोल्दावयिा के लएि रवाना हुए, जहाँ उन्होंने पैसयिस से जुड़े साधुओं के मार्गदर्शन में कई साल बतिाए। फरि हम उन्हें बेसरबयिा में डॉर्मशिन मठ के मठाधीश (1785–1793) के रूप में सेवा करते हुए पाते हैं; बाद में, जॉब थयिोडोसयिा (1793–1797) के बशिप बने, फरि मन्स्कि (1797–1812) के और, अंत में, येकातेरनिोस्लाव के धर्मप्रांत के आर्चबशिप (1812–1823) थे। एक धर्मप्रांतीय बशिप के रूप में, वे अपनी असाधारण ऊर्जा, सनिड के साथ व्यवहार में अपने स्वतंत्र रुख, और मठवासी जीवन को बेहतर बनाने के उपायों को लागू करने में अपनी दृढ़ता के लएि वशिषि्ट थे[1215] ।

जब उन्होंने ट्वर के डायोसीस (1763–1770) का प्रशासन कयिा और वहाँ मठवासी जीवन को पुनर्जीवति करने के अपने पहले प्रयास कएि, उस दौरान मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल के सबसे करीबी सहायक ओत्रोच मठ (1765–1773) के मठाध्यक्ष आर्सेनयिस (वेरेश्चागनि; 1736–1799)। बाद में, नोवगोरोड और सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलटिन के रूप में सेवा करते हुए, गैब्रयिल ने अपना काम जारी रखा, जसिसे उन्होंने मठवासी नेतृत्व के इतहिास पर अपनी छाप छोड़ी, जबकि आर्चबशिप आर्सेनयिस वेरेश्चागनि, जन्होंने कई धर्मप्रांतों का प्रशासन कयिा – अर्कांगेलेस्क (1773– 1775), टवर (1775–1783) और रोस्तोव (1783–1799)—पैरशि पादरी की शकि्षा में सुधार करने और धर्मशास्त्रीय स्कूलों को व्यवस्थति करने में व्यापक रूप से और सफलतापूर्वक लगे रहे[1216] ।

19वीं सदी में, वद्विान मठवासी वर्ग से न आने वाले बशिप तब भी एक दुर्लभ घटना थे। मैं ऐसे दो बशिपों का उल्लेख करना चाहूँगा: जुवेनाल (पोलोव्त्सेव; 1826–1904), लथिुआनयिा के आर्चबशिप (1898–1904), और फ्लावयिन (गोरोडेट्स्की; 1840–1912), कीव के मेट्रोपॉलटिन (1903–1912)[1217] । जुवेनाल पोलोव्त्सेव एकमात्र ऐसे

[1213] वार्लाम पेट्रोव पर: अब्रामोव, एन. 'वार्लाम, टोबोल्स्क के आर्चबशिप', में: स्ट्रानकि. 1863. 3.

[1214] यह उल्लेखनीय है कि उनके बड़े भाई ने भी सेंट पीटर्सबर्ग छोड़ दयिा, माउंट अथोस गए, वहाँ मठवासी संन्यास की शपथ ली, और बाद में कोरोचा शहर में स्थति सेंट नकिोलस मठ के मठाधीश बने। इस कृति के अध्याय XV को देखें।

[1215] आरबीएस. पृ. 301–303.

[1216] टटिोव, ए. 'आर्सेनी, रोस्तोव के अंतमि आर्चबशिप', में: इस्तोरीचेस्की वेस्टी, 1886, खंड 2.

[1217] फ्लेवयिन गोरॉडेट्स्की (1840–1912) ने मॉस्को वशि्ववद्यिालय के वधि संकाय में अध्ययन कयिा; अपनी सरकारी परीक्षाओं से ठीक पहले, वह पैदल ही पेस्नोश्स्की मठ के लएि रवाना हो गए और वहीं ठहर गए। 1863 से 1866 तक, वह मॉस्को में साइमनोव मठ में एक नवसखिुआ थे; फरि उन्होंने कुछ समय के लएि रोम में रूसी चर्च के सचवि के रूप में कार्य कयिा। 1870 से 1880 तक, अब एक भकि्षु के रूप में, उन्होंने चीन में रूसी ऑर्थोडॉक्स मशिन में सेवा की। 1880 में, फ्लेवयिन को डॉन के डायोसीस के एक सहायक बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया; 1885 से 1896 तक उन्होंने पोलैंड में सेवा की, शुरुआत में एक सहायक बशिप के रूप में और बाद में वारसॉ के आर्चबशिप के रूप में, जहाँ उन्होंने खुद को रोमन कैथोलकि चर्च का एक कट्टर वरिोधी साबति कयिा; 1896 से 1903 तक, वह जॉर्जयिा के आर्चबशिप और एक्ज़ार्क थे; 1903 में, उन्हें कीव का मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त कयिा गया। कैथोलकि धर्म के खलिाफ उनका संघर्ष, जो अलेक्जेंडर III (1880 और 1890 के दशक) के युग की एक बहुत ही वशिषि्ट वशिषेता थी, फ्लावयिन ने सनिड के भीतर और मुख्य अभयिोजक, के. पी. पोबेदोनोस्टेव के साथ अपने व्यवहार में उच्च स्तर की स्वतंत्रता के साथ-साथ एक तपस्वी जीवन शैली को भी अपनाया; उन्होंने अपने धर्मप्रांत में मठवासी समुदाय के प्रति एक कठोर रुख अपनाया और पैरशि के पुरोहतिों के बीच उनका बहुत अधकिार था। उनकी जीवनी देखें: रोडॉस्की। उद्धृत

बशिप थे जन्हिें ऑप्टनिा हर्मटिेज के वृद्धों द्वारा प्रशक्षिति कयिा गया था। जन्म से एक कुलीन और उच्च तोपखाना वद्यिालय से स्नातक अधकिारी, उन्होंने 1847 में ऑप्टनिा पुस्तनि में प्रवेश कयिा और वहाँ वृद्ध मकरि (इवानोव) के अधीन एक नवसखि के रूप में सात वर्ष बतिाए; एक हायरोंक बनने के बाद, उन्होंने यरूशलेम में रूसी मशिन में कई वर्ष बतिाए। बाद में, कुर्स्क के बशिप (1893–1898) और फरि लथिुआनयिा के आर्चबशिप (1898–1904) के रूप में, जुवेनाल को रूसी चर्च के सबसे योग्य धर्मगुरुओं में गनिा जाता था; उनके अपने जीवन और उनके आसपास के लोगों पर उनके आध्यात्मकि प्रभाव ने इस तथ्य की गवाही दी कि उन्होंने ऑप्टनिा के सबक नहीं भूले थे; उन्होंने अपने कार्य 'द लाइफ ऑफ़ अबॉट मोसेस'[1218] में ऑप्टनिा हर्मटिेज के बुज़ुर्गों के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त की।

चर्च में तीसरे और सबसे उत्कृष्ट व्यक्ति, जनिका बाहरी करयिर भले ही शानदार न रहा हो, फरि भी जन्हिोंने वास्तवकि तपस्या का जीवन जयिा, वे थे इग्नाटयिस ब्रायान्चाननिोव। वे रूसी बशिपों के उस छोटे समूह से थे जो अपने वचिार प्राचीन पूर्वी चर्च की तपस्वी-रहस्यवादी परंपरा से लेते थे, जसिके लिए यह परंपरा उनके जीवन और कार्य की नींव बन चुकी थी। आर्चबशिप जुवेनल पोलोवत्सेव की तरह, और उनसे भी अधकि, इग्नाटयिस रूसी संतों के शष्यि थे; उन्होंने अपनी रचनाओं में इस परंपरा को जारी रखा, जसिने रूसी मठाधीशों की नई पीढ़ियों की आध्यात्मकि वृद्धि में एक प्रमुख भूमकिा नभिाई[1219] ।

हालाँकि यह दावा करना अनुचति होगा कि उन वद्विान संन्यासी समुदाय के बीच, जन्हिोंने संन्यास वद्यिालय में शक्षिा नहीं प्राप्त की थी, संन्यासी जीवन की तपस्या-आधारति नींव के अर्थ और महत्व की समझ पूरी तरह से खो चुकी थी। चर्च जीवन के भीतर आंतरकि वभिाजनों के बावजूद, जसिके परणिामस्वरूप मठवाद के भीतर दो समानांतर धाराएँ उभरीं: एक ओर 'सनिाडल मठवाद', जसिने प्राचीन तपस्या परंपरा में लौटने का कोई प्रयास नहीं कयिा, और दूसरी ओर वरष्ठि प्रणाली और वास्तवकि तपस्या के अन्य रूप, जो एक-दूसरे को परस्पर समृद्ध करते थे, दूसरी ओर - आध्यात्मकि पतिाओं की प्रणाली और वास्तवकि तपस्या ने फरि भी अपने चारों ओर एक धार्मकि वातावरण बनाया जसिका दुनयिा पर गहरा प्रभाव पड़ा। जो कोई भी उन्नीसवीं सदी के पहले छमाही में रूस की आध्यात्मकि संस्कृति का गहन ध्यान और बनिा कसिी पूर्वाग्रह के अध्ययन करेगा, वह अनविार्य रूप से यह पाएगा कि उस संस्कृति के भीतर भूमगित तपस्या की धारा कतिनी शक्तशिाली थी - न केवल मठों की दीवारों के भीतर, बल्कि उनके बाहर भी। यह रूसी ईसाई धर्म की आध्यात्मकि शक्तयिों का एक वलिंबति प्रकटीकरण था, जन्हिें मॉस्कोवति युग के दौरान काम करने के लिए एक उपयुक्त क्षेत्र नहीं मलिा था, और जन्हिें ईश्वरहीन 18वीं सदी में छपिने और शांत रहने के लिए मजबूर होना पड़ा था; अब, हालांकि, वे हर जगह खुद को प्रकट कर रही थीं, और यद्यपि सतह पर शायद वशिेष रूप से मजबूत नहीं थीं, फरि भी वे इतना तीव्र थीं कि उनका एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। वद्विान मठवासी समुदाय और उससे उत्पन्न होने वाले बशिप वर्ग ( ) भी इस प्रभाव से अछूते नहीं थे। सनिाडल युग के बशिपों की जीवनयिों की जांच करने पर, हमें पदानुक्रमों के तीन मुख्य समूह मलिते हैं।

पहले समूह में वे व्यक्ति शामलि हैं जो अपने युवा काल से ही मठवासी जीवन की ओर झुकाव रखते थे या उस तपस्वी वातावरण के प्रभाव में आ गए थे जसिका हमने अभी उल्लेख कयिा है। धर्मशास्त्र वद्यिालयों में शक्षिण या अपने बशिप कार्यालयों में प्रशासनकि कर्तव्यों ने उन्हें संतुष्ट नहीं कयिा। कई वर्षों तक बशिप रहने के बाद, इस दौरान वे अपने बाहरी करयिर की तुलना में अपने आंतरकि आध्यात्मकि जीवन के प्रति अधकि चतिति रहते थे, वे अपने धर्मप्रांत को छोड़कर एक मठ में संन्यास ले लेते थे। 18वीं सदी के लिए, इस प्रकार का सबसे वशिष्टि उदाहरण वोरोनज़ के बशिप, ज़ाडोंस्क के संत टकिॉन का जीवन था। 19वीं सदी के इतहिास से, हम कई व्यक्तयिों को याद कर सकते हैं और उनके नाम ले सकते हैं।

सबसे शुरुआती लोगों में, सबसे उल्लेखनीय हस्तयिों में से एक का उल्लेख करना चाहिए – ऑर्नेट्स्की के एम्ब्रोज़, पेन्ज़ा के बशिप (1778–1827)[1220] । सेंट पीटर्सबर्ग थयिोलॉजकिल अकादमी से स्नातक होने के बाद, एम्ब्रोज़ ने कुछ समय के लिए नोवगोरोड के थयिोलॉजकिल सेमनिरी में पढ़ाया; 27 वर्ष की आयु में, उन्होंने (1805) में मठवासी संन्यास ग्रहण कयिा, जसिके बाद (1808–1816) में उन्होंने लगातार तीन मठों के मठाध्यक्ष के रूप में कार्य

कृति, पृ. LXXIX; और यह भी: नवि। 1910, पृ. 177। अपने इस ववरिण में, मैंने उनके समकालीन, स्वर्गीय आर्चप्रीस्ट जी. प्रोज़ोरोव († 1942) की मौखकि गवाही का भी सहारा लयिा है, जो कीव में अपने समय से फ्लैवयिन को अच्छी तरह जानते थे।

[1218] जुवेनाल, आर्कमिैंड्राइट। कोज़ेल्स्क वेडेन्स्काया ऑप्टनिा हर्मटिेज के मठाध्यक्ष आर्कमिैंड्राइट मूसा की जीवनी (1882); तुलना करें: चेत्वेरकिोव। द ऑप्टनिा हर्मटिेज, पृ. 51।

[1219] इग्नाशयिस पर, नीचे अध्याय XV, और मेरी पुस्तक (उपरोक्त) देखें।

[1220] ऑर्नेट्स्क के बशिप एम्ब्रोस की सबसे अच्छी जीवनी वी. झमाकनि द्वारा, रस्स्कीये स्टटयिा 39 (1882) में, पृष्ठ 129–178 पर है; और साथ ही: पोसेल्याननि। 19वीं सदी के रूसी तपस्वी (1910)।

कयिा; संभावना है कि मास्को में नोवोस्पासकी मठ में बिताए उनके समय—जहाँ, उन वर्षों के दौरान, तपस्या के कारनामों में रुचि फिरि से जागृत हुई थी और सख्त तपस्या की भावना के लिए प्रसद्धि सारोव हर्मिटेज[1221] के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित हुए थे—ने युवा आर्चिमैंड्राइट एम्ब्रोज़ पर एक स्थायी छाप छोड़ी। अगले तीन वर्षों तक, एम्ब्रोज़ ने नोवगोरोड धर्मप्रांत के उप-बिशप के रूप में कार्य कयिा (1816–1819), और बाद में पेन्ज़ा धर्मप्रांत का स्वतंत्र रूप से प्रशासन कयिा। हालाँकि, प्रशासनिक कर्तव्य उनकी पसंद के नहीं थे, और 1825 में उन्होंने सेवानिवृत्ति की अनुमति देने के लिए सिनाद से याचिका की।

एम्ब्रोज़ ने किरिलो-बेलोज़र्स्की मठ में सेवानिवृत्ति में केवल दो साल बिताए; उनका तपस्वी जीवन, जैसा कि पहले उनके मठाध्यक्ष और धर्मप्रांतों के प्रमुख के रूप में वर्षों के दौरान था, एक तपस्वी जैसा ही था। वह पूरा दिन अपने सादे से सुसज्जित सेल में बंद ही रहते थे; उनका झुकना आगंतुकों को मिलने या भिक्षुओं से बातचीत करने का नहीं था; उनका भोजन बहुत कम होता था; अक्सर, पूरे एक दिन में, वे प्रोस्फोरा का एक टुकड़ा ही खाते थे और किसी भी पके हुए भोजन को हाथ नहीं लगाते थे। उन्होंने अपना पैसा (अपनी बिशप पेंशन) जरूरतमंदों में बाँट दिया। उसे जो पत्र मिलते थे, वे उसकी कोठरी के दहलीज पर बिना खोले पड़े रह जाते थे, लेकिन इन पत्रों के जवाब, जैसा कि बाद में उसके कोठरी के परिचारक ने गवाही दी, इस तरह लिखे जाते थे मानो उस तपस्वी ने उन्हें पढ़ लिया हो। वह केवल रात में ही अपनी कोठरी से बाहर निकलते और भोर तक प्रार्थना में अपने हाथ उठाए चर्च के दरवाज़े के सामने खड़े रहते थे - ठीक वैसे ही जैसे एल्डर सेराफिम (वे समकालीन थे) उनके से 1,000 किलोमीटर दूर सारोव जंगल में करते थे, – चाहे गर्मी हो या कड़ाके की सर्दी, मौन प्रार्थना करते हुए। 27 दिसंबर 1827 को, यह तपस्वी, जो अब एक बिशप बन चुके थे, स्वर्ग के राज्य के लिए प्रस्थान कर गए, जिसकी ओर उन्होंने बहुत पहले ही अपने सभी विचार और अपनी पूरी आत्मा को निर्देशित कर दिया था। दुनिया का त्याग करके, वह एक तरह से समय के परे जीते थे, सभी चिंताओं और फिक्रों को एक तरफ रखकर; वह एक एल्डर नहीं थे, बल्कि पूर्वी चर्च के उन तपस्वियों में से थे जो केवल आंतरिक पूर्णता और व्यक्तिगत मोक्ष की प्राप्ति चाहते थे।

बिशप जेरेमिया (सोलोव्योव; 1799-1884) अपनी युवावस्था से ही तपस्वी जीवन की ओर झुकाव रखते थे, लेकिन विनम्रता से, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उन्होंने जीवन का वह मार्ग अपनाया जो उनके लिए नियत था। उन्होंने सेव्स्क के थियोलॉजिकल सेमिनरी से उत्कृष्टता के साथ स्नातक किया, जहाँ उन्होंने ग्रीक भाषा पढ़ाई थी, लेकिन अचानक अपनी नौकरी छोड़ दी और ब्रायन्स्क के पास पेचेर्स्की मठ में एक नवसिखिया के रूप में चले गए, जहाँ उन्हें पशुओं की देखभाल करनी पड़ती थी; 1823 में उन्होंने अपने मठवासी संन्यास के संकल्प लिए। हालाँकि, धर्मशास्त्र सेमिनरी के रेक्टर, जो बाद में प्रसद्धि उपदेशक आर्चबिशप इनोकेन्टी (बोरीसोव) बने, ने उन्हें धर्मशास्त्र अकादमी में दाखिला लेने के लिए मना लिया। अकादमी में तीन साल की पढ़ाई के बाद, जेरेमिया, जिसकी क्षमताएँ अपने पाठ्यक्रम के सभी छात्रों से बढ़ी हुई थीं, अचानक अपनी परीक्षा के लिए उपस्थित नहीं हुआ – उसने ऐसा मास्टर डिग्री प्राप्त न करने के लिए किया, क्योंकि उसके विचार में, इसकी प्राप्ति मठवासी विनम्रता के अनुकूल नहीं थी। इसके बावजूद, अकादमी ने बाद में उसे परीक्षा देने की आवश्यकता के बिना ही मास्टर की डिग्री प्रदान कर दी। इसके बाद के वर्षों (1827–1841) में, उन्हें शिक्षण कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़ा; अपने बिशप के पद की स्थापना के बाद, उन्होंने कई धर्मप्रांतों का प्रशासन संभाला, जिनमें से आखिरी धर्मप्रांत निज़नी नोवगोरोड (1850–1857) था। जेरेमिया के लिए बिशप का मंत्रालय कोई आसान काम साबित नहीं हुआ, क्योंकि स्वभाव से ही वह सिनोडल चर्च जीवन की संकीर्ण मानसिकता से अलग थे; उनके लिए यह मंत्रालय दुख और संघर्ष से भरा था। 1857 में, बिशप एम्ब्रोज़ की तरह, उन्होंने अपना पद छोड़ दिया और एक मठ में प्रवेश कर लिया, जहाँ उन्होंने महान स्कीमा (1861) ग्रहण की और अपने शेष जीवन († 1884) को एक मठ की कोठरी में बिताया[1222] ।

कुछ अन्य नाम भी उल्लेखनीय हैं: मेलेटियस (लियोन्टोविच; 1784–1840), खार्कीव के आर्चबिशप (1835–1840), जिन्हें अपने धर्मप्रांत में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त था; जैकब (वेचेरकोव; 1792–1852), निज़्नी नोवगोरोड के आर्चबिशप (1847–1850), जिनके बारे में निकानोर ब्रोवकोविच के अनुसार, 'मृत्यु... निश्चित रूप से उपवास से उत्पन्न थकान के कारण हुई'; एंथनी (अम्फितीट्रोव), काज़ान के आर्चबिशप (1866–1879)[1223] .

[1221] तुलना करें: पोपोव। मास्को में साइमनोव्स्की मठ के पांडुलिपियों का विवरण (विभिन्न स्थानों पर)।

[1222] रोडोस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. XLI और 181; टिटोव, ए. 'जेरेमिया, निज़्नी नोवगोरोड के बिशप', में: इस्तोरिचेस्की वेस्तनिक, 1889, संख्या 9; च्टेनिया, 1887। 3. बिशप जेरेमियाह ने दो तपस्या संबंधी कृतियाँ, *इंस्ट्रक्शन फ्रॉम ऊपर* (1865) और *स्पिरिचुअल हीलिंग* (1890), के साथ-साथ कई छोटी कृतियाँ भी पीछे छोड़ीं; तुलना करें: RBS, पृ. 164–165।

[1223] रोडोस। उद्धृत ग्रंथ, पृ. XX; निकानोर, आर्चबिशप। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 26। हमने यहाँ केवल कुछ नामों का उल्लेख किया है; ऐसे कई अन्य बिशप भी थे जिनका उल्लेख किया जाना चाहिए, लेकिन यह उन्नीसवीं सदी के रूसी बिशपों को समर्पित एक अलग अध्ययन का विषय

हम इन उदाहरणों का हवाला यह दर्शाने के लिए देते हैं कि शैक्षिक और प्रशासनिक गतिविधियाँ अपने आप में किसी के व्यक्तिगत जीवन में मठवासी व्रतों के सख्त पालन में एक अतिक्रमणीय बाधा नहीं थीं। स्वाभाविक रूप से, धर्मनिरपेक्ष क्षेत्र में इतना जिम्मेदार और उच्च पद धारण करते हुए अपने व्यक्तिगत जीवन में दुनिया का त्याग करने के लिए आध्यात्मिक संतुलन और एक मजबूत चरित्र की आवश्यकता थी। यदि कोई उन्नीसवीं सदी के बिशपों की जीवनी और गतिविधियों का अध्ययन करे, तो सदी के पहले और दूसरे भाग के धर्मगुरुओं के बीच एक स्पष्ट अंतर सामने आता है। सदी के पहले भाग में रहने वाले बिशप, दूसरे भाग के बिशपों की तुलना में अधिक विशिष्ट और मजबूत व्यक्तित्व वाले थे। वे 'सिनोडल भावना' से पीड़ित थे, जो चर्च जीवन के केंद्र में और भी गहराई से प्रवेश कर रही थी; फिर भी, बाहरी विरोध दिखाए बिना—और इस पर अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा खर्च करने की इच्छा न रखते हुए—उन्होंने उन ऊर्जाओं को व्यक्तिगत आत्म-सुधार में लगा दिया। यहाँ, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमें दो प्रतिष्ठित धर्मगुरुओं, दो समकालीन व्यक्तियों के नामों का उल्लेख करना चाहिए: फिलारेट (ड्रोज़दोव), मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन (1821–1867), और फिलारेट अम्फितीट्रोव, कीव के मेट्रोपॉलिटन (1837–1857)।

मेट्रोपॉलिटन फिलारेट (1782–1867)[1224] , जिन्होंने 46 वर्षों तक मॉस्को के डायोसीस का शासन किया, लगभग आधी सदी तक रूस में चर्च जीवन का केंद्र बिंदु थे; वह एक ऐसे पदानुक्रम थे जिनके विचार और भावना, जो उनके सभी कार्यों में व्याप्त थे, उनके निधन के बाद भी चर्च के जीवन को प्रभावित करते रहे; वह दृढ़ चरित्र और अपार आध्यात्मिक शक्ति और ऊर्जा के धनी व्यक्ति थे, एक ऐसे व्यक्ति जो, इन गुणों के कारण, अपनी आत्मा की आंतरिक त्रासदी को छिपाने में सक्षम थे। बाहरी तौर पर, फिलारेट (ड्रोज़दोव) आधिकारिक चर्च का एक स्तंभ प्रतीत होते थे, फिर भी एक उल्लेखनीय तरीके से वे सच्ची धार्मिक भावना के भी एक स्तंभ थे; इस व्यक्ति के विरोधाभासी मूल्यांकन उनकी आत्मा की आंतरिक त्रासदी को छिपाने की उनकी क्षमता की गवाही देते हैं। उनकी संयमशीलता और मौनता, अपनी व्यक्त की गई राय में अपने असली विचारों को प्रकट न करने की उनकी असाधारण क्षमता ने, अपनी सारी आंतरिक त्रासदी के बावजूद, उन्हें सम्राट निकोलस प्रथम के शासनकाल के दौरान चर्च जीवन के केंद्र में खड़े होने में सक्षम बनाया - और वह भी किस समय! फिलारेत के सबसे वफादार शिष्य और प्रशंसक, आर्चबिशप सावा तिखोमिरोव (1819-1896), जो उनसे विशेष रूप से करीब थे और किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में उन्हें अधिक नज़दीक से जानते थे, ने अपनी 'क्रॉनिकल ऑफ माई लाइफ' में, जो असाधारण परिश्रम से लिखी गई है, फिलारेत के बारे में बहुत सारी जानकारी प्रदान की है; लेकिन यह सब उनकी आत्मा को प्रकट करने की तुलना में इस पदानुक्रमित की बाहरी विशेषता प्रदान करने के लिए अधिक काम आता है, हालांकि सावा निश्चित रूप से जितना उन्होंने लिखा उससे कहीं अधिक जानते थे। इसके अलावा, सावा ने फिलारेट की प्रशासनिक गतिविधियों पर बहुत सारी सामग्री प्रकाशित की, जिसका शोधकर्ताओं द्वारा अभी तक पूरी तरह से विश्लेषण नहीं किया गया है। इन ' ' पुस्तकों के पन्नों से, हम चर्च के एक ऐसे राजकुमार को देखते हैं जो, मानो, दो स्वामियों का सेवक था: एक स्वर्गीय और दूसरा सांसारिक। हाँ, फिलारेट अक्सर खुद को राज्य और चर्च के बीच संबंध के बारे में आलोचनात्मक रूप से बोलने की अनुमति देते थे, लेकिन हमेशा केवल एक निश्चित हद तक। सिनाडल युग के किसी अन्य पदानुक्रम ने रूस के राज्य और राजनीतिक प्रणाली, इसकी नरिंकुशता के लिए एक धार्मिक आधार और औचित्य प्रदान करने के लिए फिलारेट जितना कुछ नहीं किया; चर्च की राज्य के प्रति सेवा उनके धार्मिक दृष्टिकोण का खंडन नहीं करती थी, जिन्हें सबसे अधिक संभावना वाले रूप में वोल्होक के जोसेफ के रूढ़िवादी विचारों[1225] से तुलना की जा सकती है। उन्होंने तत्काल सुधारों का प्रस्ताव करने के लिए अपने महान अधिकार का पूरा उपयोग नहीं किया। जब निकोलस की

हो सकता है। शायद किसी अन्य इतिहासकार ने अलग नामों का हवाला दिया होता - यह किसी के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। चर्च के उच्च पदाधिकारियों की जीवनियाँ अक्सर बहुत अपूर्ण होती हैं, और अक्सर आधिकारिक लहजे में लिखी जाती हैं, विशेष रूप से निधन पर लिखी जाने वाली लेखों में, ताकि बिशपों की गतिविधियों के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को 'सिनोडल भावना' में चित्रित किया जा सके।

[1224] 'फिलारेत साहित्य' अत्यंत व्यापक है (तुलना करें RBS से, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण कृतियों की सूची दी गई है)। मेट्रोपॉलिटन फिलारेट ड्रोज़दोव की धार्मिक और चर्च-राजनीतिक गतिविधियों और विचारों का आकलन करने का मुख्य स्रोत उनके असंख्य पत्र, उपदेश, भाषण और प्रशासनिक आदेश हैं, जिन्हें आर्चबिशप सावा तिखोमिरोव ने कई खंडों में प्रकाशित किया था; इनमें से लगभग सभी खंड पहले बर्लिन राज्य पुस्तकालय में रखे गए थे। इसके अतिरिक्त, महत्वपूर्ण स्रोतों में शामिल हैं: सावा (तिखोमिरोव)। क्रॉनिकल ऑफ़ माई लाइफ़। 9 खंड, मुख्य रूप से पहले तीन खंड, साथ ही मॉस्को थियोलॉजिकल अकादमी के प्रोफेसर पी. एस. काज़ान्स्की और उनके भाई, कोस्त्रोमा के आर्चबिशप प्लेटोन (1860 के दशक) के बीच का पत्राचार, में: बीवी। 1903। तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि फिलारेट पर उपलब्ध विस्तृत साहित्य उनकी गतिविधियों और उनके विचारों के सभी पहलुओं को संतोषजनक रूप से कवर करता है; वास्तव में, उनके धार्मिक और राजनीतिक विचारों का अभी भी विशेषीकृत अध्ययन किया जाना बाकी है।

[1225] फिलारेत। एकत्रित विचार। खंड 4, पृ. 578; खंड 5, पृ. 362; खंड 4, पृ. 469; खंड 5, पृ. 232; खंड 7, पृ. 49; पूरक खंड, पृ. 143, आदि।

मृत्यु के बाद, एक नई भावना—'1860 के दशक' की भावना—धीरे-धीरे रूसी चर्च के जीवन में व्याप्त होने लगी, तो फलिारेत ने, यद्यपि उन्होंने स्वयं सावधानी से कुछ प्रस्ताव (जो वास्तविक सुधार के बजाय चर्च शासन की पद्धति से अधिक संबंधित थे) रखे, फिर भी दृढ़ता से इस भावना का विरोध किया[1226] ।

हमारा यह आकलन संभवतः आलोचनात्मक आपत्तियों को जन्म देगा, लेकिन, जहाँ तक हम फलिारेट (द्रोज़्दोव) की आंतरिक दुनिया में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर पाए हैं, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह धर्मगुरु अपने युग की राज्य-चर्च प्रणाली का कट्टर विरोधी नहीं था; वह केवल इसके ढांचे के भीतर, उस पर राज्य की संरक्षकता में अतिक्रमण किए बिना, चर्च के लिए अधिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना चाहता था; चर्च जीवन से कुछ अस्वास्थ्यकर घटनाओं को खत्म करके, उसने चर्च को आध्यात्मिक रूप से मजबूत करने का प्रयास किया, जो अभी भी राज्य की संरक्षकता के अधीन रहने वाला था। यह स्पष्ट है कि फिलारेट के विचारों को केवल एक सांत्वनात्मक उपाय के रूप में ही देखा जा सकता है; 'फलिारेट द वाइज़', जैसा कि सम्राट निकोलस उन्हें कहते थे, चर्च की आध्यात्मिक शक्ति को अपनी स्वतंत्रता के लिए राज्य से लड़ने के लिए बहुत कमजोर मानते थे, फिर भी फलिारेट से बेहतर चर्च के आंतरिक जीवन को उनके समकालीन कोई नहीं जानता था। फलिारेत का युग एक ऐसा दौर था जब सरकार ने अपने संरक्षक के अधिकार का प्रयोग करते हुए, चर्च के आंतरिक जीवन में और भी गहराई तक प्रवेश करने का प्रयास किया; और, ऊपर कही गई सभी बातों के बावजूद, यह फ़लिारेत ही थे जिन्होंने इन सरकारी प्रयासों को आंशिक रूप से रोकने में सफलता हासिल की - लेकिन केवल उन क्षेत्रों में जहाँ, जैसा कि उनका मानना था, राज्य और चर्च के बीच 'संगति' में कोई असंगति उत्पन्न नहीं हो सकती थी।

एक अन्य फलिारेट, कीव के मेट्रोपॉलिटन (1779–1857, 1837–1857) – 'धर्मपरायण फलिारेत', जैसा कि सम्राट निकोलस ने उन्हें कहा था – अपने विचारों में फलिारेत ड्रोज़्दोव के निकट थे और रूढ़िवादी भी थे, लेकिन उनका रूढ़िवाद मास्को के फलिारेत के रूढ़िवाद से अलग स्रोतों पर आधारित था। वह रूस में राज्य चर्च के कट्टर विरोधी थे और उन्होंने होली सिनोड की बैठकों में भाग लेने से इनकार करके अपने विरोध को व्यक्त किया, जिसके वह सदस्य थे। फिर भी, चर्च के भीतर उनका अधिकार इतना बड़ा था कि सिरकार ने ऐसे अवरोध को मौन रूप से सहन किया। स्वयं एक कठोर तपस्वी, जो एक चर्च पदानुक्रम की गरिमा को व्यक्तिगत विनिम्रता के साथ जोड़ना जानते थे, वह, फलिारेट ड्रोज़्दोव की तरह, दूरगामी सुधारों के समर्थक नहीं थे। हालाँकि, एक मुद्दे पर उनके विचार विपरीत थे। फलिारेत (द्रोज़्दोव) पवित्र धर्मग्रंथों का चर्च स्लावोनिक से रूसी में अनुवाद करने के पक्ष में थे, जिसे निकोलस प्रथम की सरकार द्वारा नापसंद किया गया, जबकि कीव के फलिारेत ऐसे अनुवाद के कट्टर विरोधी थे[1227] । मठवाद पर भी उनके विचार भिन्न थे। मास्को के फलिारेट 'स्टारेचेशपि' (staretship) की प्रथा को प्रोत्साहित करने के पक्ष में नहीं थे; यहाँ तक कि यह कहा जा सकता है कि वह आंशिक रूप से इसका विरोध करते थे, क्योंकि उन्हें इसमें चर्च की पदानुक्रमित संरचना पर एक प्रकार का अतिक्रमण दिखाई देता था। हालाँकि, कीव के फलिारेत ने, जब वह कालूगा (1819–1825) के धर्मप्रांत के प्रभारी थे, तब भी यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत कुछ किया कि आध्यात्मिक मार्गदर्शन की प्रथा उनके अधिकार क्षेत्र में आने वाले ऑप्टिना हर्मिटेज में गहराई से जड़ें जमा ले; बाद में, उन्होंने हमेशा आध्यात्मिक पिताओं के साथ सद्भावना और संरक्षण के साथ व्यवहार किया। मात्रा के मामले में, उनकी साहित्यिक विरासत की तुलना फलिारेट ड्रोज़्दोव से नहीं की जा सकती; फिर भी लेखक के व्यक्तित्व लक्षण मास्को के फलिारेट की तुलना में उनके पत्रों में अधिक स्पष्ट और साफ तौर पर उभरते हैं। 'फलिारेत धर्मनिष्ठ' अपने तर्कों में मॉस्को के फलिारेत जितने वाक्पटु या तार्किक रूप से सुसंगत नहीं थे; उनके पत्र संक्षिप्त हैं, लेकिन वे विनिम्रता, गहराई, आध्यात्मिक शक्ति और उल्लेखनीय सादगी से परिपूर्ण हैं। उनके पत्र पढ़ते ही पाठक को तुरंत एहसास होता है कि कीव के फलिारेट चर्च के आधिकारिक स्वर से कितने अलग थे, वे राज्य-नियंत्रित चर्च प्रशासन के तहत कैसे कष्ट सहते थे, फिर भी उन्होंने इस पीड़ा को तपस्वी विनिम्रता से सहा[1228] ।

[1226] 1856 में, रूसी चर्च की एक स्थानीय परिषद बुलाने की संभावना का प्रश्न बड़ी सावधानी से उठाया गया था। तुलना करें: रस्की आर्खिव, 1883, खंड 3, पृ. 175–203, जहाँ ए. एन. मुराव्योव के ज्ञापन 'रूस में रूढ़िवादी चर्च की स्थिति पर' का एक संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित है, साथ ही: फलिारेट। विचारों का संग्रह, खंड 4, पृ. 141, 149। फलिारेत के सुधार प्रस्ताव निम्नलिखित मुद्दों पर चर्चा करने के सुझाव से आगे नहीं बढ़े: 1. दैवीय सेवा में बाहरी सुधार (भक्ति, गंभीरता); 2. नए धर्मप्रांतों की स्थापना; 3. संप्रदायवाद के खिलाफ उपाय। चिस्तोविच, I. प्रमुख हस्तियाँ। पृ. 361.

[1227] चिस्तोविच। प्रमुख हस्तियाँ। पृ. 361.

[1228] मेट्रोपॉलिटन फलिारेट अम्फितियाट्रोव पर, प्रमुख कृति देखें: सर्जियस (वासिलिव्स्की), आर्चिमांड्राइट। हिज़ एमिनेंस फलिारेट, इन मॉनास्टिसिज़्म थियोडोसियस (अम्फितियाट्रोव), कीव और हलिच के मेट्रोपॉलिटन। 3 खंड (1888) (जो मेरे लिए उपलब्ध नहीं था); स्मिरिनोव, डी. 'फलिारेत अम्फितियाट्रोव', में: संग्रह 'एट द ट्रिनिटी इन द एकेडमी' (1914)। पृ. 223–251; और साथ ही लेस्कोव, एन. 'ट्रिविल्स ऑफ़ ए बिशप्स लाइफ', में: संग्रहित कृतियाँ, खंड 35 (1903)। पृ. 22, 107, आदि। बिशप इग्नाटियस ब्रियनचानिनोव (बीवी. 1913. 3) और

मास्को के फलिारेट का रुख और राज्य-प्राधकिृत धार्मकि प्राधकिरण के प्रतिउनकी संयमशीलता ने धर्मगुरुओं पर एक नश्चिति प्रभाव डाला; 19वीं सदी के बशिपों का दूसरा, बल्कि काफी बड़ा समूह, आंशकि रूप से ठीक उन्हीं धर्माध्यक्षों से बना था जिन्होंने उनकी धार्मकि नीतिसे नष्किर्ष नकिाले थे। ये वे बशिप थे जो जानते थे कि राज्य-प्राधकिृत धार्मकि प्राधकिरण की सीमाओं के भीतर कैसे रहना है। उनमें से कुछ ने बस खुले तौर पर सनिोडल युग की भावना का वरिोध नहीं कयिा, जबकि अन्य - वशिेष रूप से मुख्य अभयिोजक के रूप में के. पी. पोबेदोनॉत्सेव (1881–1905) के कार्यकाल के दौरान[1229] और बाद में, 1917 तक - उस भावना के कट्टर समर्थक थे। वे पूरी तरह से प्रशासनकि कार्यों में लगे रहे, जसिने उनका सारा समय और ऊर्जा ले ली, जसिसे उन्हें अपनी आत्मा के उद्धार की परवाह करने का न तो समय मलिा और न ही अवसर। इस प्रकार के बशिपों और उनके धर्मप्रांतों में वशि्वासयिों के बीच का बंधन कमजोर और नाजुक था। आर्चबशिप नकिानोर ब्रोवकोवचि (1826–1890), जो स्वयं इस प्रवृत्ति से अपरचिति नहीं थे—और शायद, इसके प्रतनिधियिों में से एक भी थे—अपने *बायोग्राफकिल नोट्स* में 1850 से 1870 के दशक के कई बशिपों की कहानयिाँ सुनाते हैं, जो उस माहौल को दर्शाती हैं जसिमें उनका काम हुआ और कैसे बशिपों के संबंध कभी-कभी न केवल सनिड के साथ, बल्कि समाज और लोगों के साथ भी असामान्य थे[1230] .

इस बशिपों के समूह में हमें कई उल्लेखनीय उपदेशक और कई उत्कृष्ट प्रशासक मलिते हैं; उन सभी की सूची बनाना असंभव होगा – यह हमें हमारे वषिय से बहुत दूर ले जाएगा। बशिपों के कमोबेश सफल कार्य को एक धर्मप्रांत से दूसरे में बार-बार स्थानांतरति कए जाने से गंभीर रूप से बाधा पहुँची, यह एक ऐसी प्रथा थी जो 19वीं सदी के मध्य से चली आ रही थी और जो बाद में, सनिड के मुख्य अभयिोजक के. पी. पोबेदोनोत्सेव के अधीन, एक जानबूझकर अपनाई गई नीति बन गई। बशिप दो या तीन साल तक एक धर्मप्रांत का शासन करते थे, और फरि उन्हें कसिी दूसरे, अक्सर रूस के दूसरे छोर पर, स्थानांतरति कर दयिा जाता था, जहाँ की स्थानीय और राष्ट्रीय परस्थितियिाँ उनके पछिले पद की परस्थितियिों से पूरी तरह से अलग होती थीं; परणिामस्वरूप, उनके पास पुरोहतिों और श्रद्धालुओं के साथ घनष्ठि संबंध बनाने का समय नहीं था, और अपने पद पर संक्षप्ति कार्यकाल के दौरान वे कोई भी उपयोगी पहल शुरू करने और पूरी करने में असमर्थ रहे। नकिानोर के 'नोट्स' में कई उदाहरण दए गए हैं कि कैसे सनिड और ओबर-प्रोक्यूरर द्वारा स्थापति इस प्रशासनकि प्रणाली के परणिामस्वरूप, व्यक्तगित धर्मप्रांत के बशिपों की कई अच्छी और लाभकारी पहलों या तो अधूरी रह गईं या उन्हें पूरी तरह से वफिल कर दयिा गया। केवल पोबेडोनोस्टसेव के समय में ही नहीं, बल्कि उससे पहले भी, कोई भी बशिप जो स्वतंत्रता का कोई भी स्तर दखिाता था या सत्य बोलता था—जैसे, उदाहरण के लए, टॉम्स्क के बशिप अगापति (Voskresensky; 1834–1841; † 1854) या डॉन के आर्चबशिप जॉन (Dobrozrakov; 1847–1867; † 1872), को सेवानवृित्त होने के लए मजबूर कयिा गया[1231] । इरकुत्स्क के आर्चबशिप इरनिीअस की नयिति (नेस्टरोवचि; 1783–1864), जो नकिोलस प्रथम के अधीन, चर्च के जीवन में सरकारी हस्तक्षेप का शकिार हुए; पहले तो उन्हें पागल भी घोषति कर दयिा गया था, और उन्होंने अपना शेष जीवन एक मठ में सेवानवृित्ति में बतिाया[1232] .

बशिपों के तीसरे समूह में वे धर्मगुरु शामलि हैं जो मठ की वेशभूषा में वद्विान थे। उनका जीवन भी हमेशा आसान नहीं था। सम्राट नकिोलस प्रथम के शासनकाल के दौरान, और कुछ हद तक उसके बाद भी, रूसी

आर्चबशिप इनोकेन्टी बोरसिोव को लखि उनके पत्र (TKDA. 1884. 5); ऑप्टनिा हर्मटिेज के प्रतिफलिारेट के रवैये पर, देखें संक्षप्ति लेख: फर्सोव, ए. आई., 'द कोज़ेल्स्काया ऑप्टनिा हर्मटिेज', इस्त. खंड 1899. 3 में; और यह भी: चेत्वेरकिोव, 'द ऑप्टनिा हर्मटिेज'।

[1229] के. पी. पोबेदोनोसेव के लए देखें: स्टीनमैन, एफ., और हुरवज़ि, ई., *के. पी. पोबेदोनोसेव: अलेक्जेंडर तृतीय के अधीन प्रतक्रियिा के राजनेता* (रूसी इतहिास पर स्रोत और नबिंध, सं. के. श्टेलनि, खंड 11)। सम्राट अलेक्जेंडर तृतीय को लखि उनके पत्र वशिेष रूप से वशिष्टि हैं: पी. पोबेदोनोसेव के अलेक्जेंडर तृतीय को लखि पत्र। 2 खंड (1925)। उनके कुछ कार्य जर्मन अनुवाद में प्रकाशति हुए हैं: *Moskovitische Studien* (1904) और *Streitfragen der Gegenwart* (1897)।

[1230] नकिानोर। उपरोक्त संदर्भ, पृ. 143 और अन्य। एपस्किोपेट (धर्मप्रांतीय पद) के चरत्रि चत्रिण के लए, यह भी देखें: पेव्नत्स्की। टप्पिणयिाँ, में: रस्स्काया स्ट. 1905, संख्या 7 और बाद की; फलिारेट (द्रोज़दोव)। ट्वेर के आर्चबशिप अलेक्सयिस को पत्र (1883)। पृ. 211; गोलुबनिस्की, ई. 'रूसी चर्च के जीवन में सुधार पर'। पृ. 117; सोलोव्योव, एस. एम. 'टप्पिणयिाँ', में: वीई. 1907. 3. पृ. 74–76.

[1231] बशिप अगपटिस पर: नकिानोर। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 196–200; ऐडेंडा। 43. पृ. 526; फलिारेट। प्रवचन और भाषण। 2 (1887)। पृ. 279; बर्सुकोव। मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन इनोकेन्टी। पृ. 150. आर्चबशिप जॉन पर: नकिानोर। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 196, 226। नाथनेल (सोबोरोव), अस्त्रखान के बशिप, जिन्होंने पोबेदोनोस्टेव के 'स्वाम्यशाही' का वरिोध करने का प्रयास कयिा, को 1890 में अपना पद छोड़ने के लए मजबूर होना पड़ा: इतहिारचिस्कोए वेदोमोस्टी 1907। खंड 106। पृ. 1049। मेट्रोपॉलटिन व्लादमिीर (बोगोयावलेन्स्की), जिन्होंने रासपुतनि के प्रभाव के खलिाफ लड़ाई लड़ी, को सेंट पीटर्सबर्ग के डायोसीस (1912–1915) से कीव में 'सम्मानजनक नर्विासन' († 1918) में स्थानांतरति कर दयिा गया। ज़ारशाही शासन का पतन। खंड 1, पृष्ठ 361, 366; खंड 4, पृष्ठ 164, 190, 195, 266, 271.

[1232] सम्राट नकिोलस प्रथम के शासनकाल के दौरान ऑर्थोडॉक्स चर्च के इतहिास के लए सामग्री, में: संग्रह 113, भाग 1 और 2; क्रश्चियिन रीडगि्स 1881, संख्या 5–6।

धर्मशास्त्रीय वदि्वता—मुख्य रूप से धर्मशास्त्र, तुलनात्मक धर्मशास्त्र, धर्मरक्षणशास्त्र और संस्कारशास्त्र—ने राज्य नयिंत्रण और मेट्रोपॉलटिन फलिारेट के रूढ़िवादी वचिारों के कारण वस्तुनष्ठि वदि्वतापूर्ण अनुसंधान के अवसर प्रदान नहीं कयि।

आर्चबशिप नकिानोर ब्रोवकोवचि, जनिका उल्लेख यहाँ पहले भी कई बार हो चुका है और जनि्होंने धर्मशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दयि, हमें उन कठनिाइयों के बारे में बताते हैं जनिका सामना उन्होंने और उनके कई समकालीनों ने धर्मशास्त्र अकादमी में अध्ययन के दौरान और उसके बाद कयि। वे लखिते हैं कि 1950 के दशक में, अकादमयिों में संवेदनशील मुद्दों पर पर्दा डालना प्रथा थी; प्रतभिाशाली व्याख्याताओं को अक्सर 'खतरनाक वषियों' को पढ़ाने से हटा दयि जाता था और उन्हें 'सुरक्षति' वषियों, जैसे कि ग्रीक या ईसाई पुरातत्व, में काम करने के लिए अपनी वशिषज्ञता का त्याग करने के लिए मजबूर कयि जाता था[1233] . नकिानोर के 'नोट्स' न केवल 1850 और 1860 के दशक में धर्मशास्त्रीय स्कूलों की स्थतिि को, बल्कि वदि्वान मठवासी समुदाय की स्थतिि को भी दर्शाते हैं। सनिोडल युग के हमारे ववरिण को पूरक बनाने के लिए, हम दो और व्यक्तयिों के नामों का उल्लेख करेंगे जनिके जजि्ञासु मन और प्रतभिाओं पर त्रासदी की छाप थी।

उनमें से एक आर्चमिांड्राइट मकरईि ग्लुखारेव (1792–1847) थे। वे हब्रिू भाषा और पुराने नयिम के जन्मजात प्रतभिा और शानदार ज्ञान के लिए प्रसदि्ध थे, जसिने उन्हें व्यापक वदि्वतापूर्ण कार्यों में संलग्न होने में सक्षम बनाया। उनका हृदय वनिम्रता और प्रेम से भरा था, साथ ही उसमें ऊर्जा और एक स्पष्ट लक्ष्य - पवत्रि धर्मग्रंथों का रूसी में अनुवाद - के प्रतिएकनष्ठि समर्पण भी था। शुरू में, उनका संन्यास ग्रहण करने का कोई इरादा नहीं था। हालाँकि, धर्मशास्त्र अकादमी से स्नातक होने के बाद, जब उन्हें येकातेरनिोस्लाव थयिोलॉजकिल सेमनिरी में व्याख्याता नयिुक्त कयि गया, वे बशिप जॉब (पोतेमकनि) के करीबी दोस्त बन गए, जनि्हें हम पहले से जानते हैं, और मोल्दावयि के कई अन्य भकिषुओं से भी जो जॉब के चक्र से थे, और इस तरह वे एल्डर पैसयिस (वेलकिकोव्स्की) के स्कूल की तपस्वी भावना के संपर्क में आए। उन्होंने संन्यास की दीक्षा ली और कुछ समय एल्डर फलिारेट के साथ ग्लस्कि हरमटिजि में व्यतीत कयि, जहाँ उन्होंने तपस्या संबंधी ग्रंथों का अध्ययन कयि। फरि वह कोस्त्रोमा थयिोलॉजकिल सेमनिरी का रेक्टर बन गया। उसकी शैक्षणकि योजनाएँ - पवत्रि धर्मग्रंथों का रूसी में अनुवाद करना और अनुवाद प्रकाशति करना - को सनिड की मंजूरी नहीं मलिी; उसे धर्मग्रंथों के अनुवाद के अपने प्रयासों को बंद करने की सलाह भी दी गई। अन्याय की भावना और आक्रोश से, उन्होंने रेक्टर के पद से इस्तीफा दे दयि और ग्लस्कि हर्मटिज लौट आए (1825)। हालाँकि, मकरएि ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो बस कसिी मठ में जाकर ध्यानमग्न जीवन जीने में खुद को समर्पति कर दें। साइबेरयि के मूर्तपिूजक लोगों के बीच मशिनरी कार्य के लिए उनके मन में एक योजना आकार ले रही थी।

1829 में वह साइबेरयि के लिए रवाना हो गए, और एक साल बाद, 1830 में, उन्होंने अलताई मशिन की स्थापना की और अपनी सारी ऊर्जा इसे समर्पति कर दी - उनके मशिनरी कारनामे रूसी मशिन के इतहिास की सबसे उल्लेखनीय घटनाओं में से एक साबति हुए। अपनी भाषाई जानकारी और भाषाओं के प्रति अपनी प्रवृत्ति के कारण, मकरईि ने आसानी से स्वदेशी लोगों की भाषा सीख ली; उन्होंने एक शब्दकोश संकलति कयि और भजन संहति, प्रार्थनाएं, मत्ती के अनुसार सुसमाचार, बपतस्मिा का अनुष्ठान और अन्य ग्रंथों का स्थानीय भाषा में अनुवाद कयि। 14 वर्षों तक उन्होंने अलताई में अथक और नस्विार्थ रूप से परश्रिम कयि, लेकनि उन्हें कभी भी सनिड के नौकरशाहों से कोई ठोस समर्थन नहीं मलि, जनि्होंने उनके मशिन के लिए वार्षकि रूप से 570 रूबल की एक उपहासपूर्ण राशि आवंटति की। मकरयिस ने कसिी भी कीमत पर नए धर्मांतरतिों की एक प्रभावशाली संख्या हासलि करने या सनिाड को प्रभावशाली आँकड़े प्रस्तुत करने की कोशशि नहीं की; ईसाई धर्म का प्रचार करते समय, उन्होंने स्वदेशी लोगों पर न तो जबरदस्ती की और न ही चापलूसी की। उनके लिए धर्मांतरतिों की संख्या महत्वपूर्ण नहीं थी, बल्कि चर्च के नए बच्चों की वास्तवकि ईसाई शकि्षा महत्वपूर्ण थी। अलताई क्षेत्र में, उन्होंने पवत्रि धर्मग्रंथों के अनुवाद पर काम करना जारी रखा, इस उम्मीद में कि वे अपने नोट्स के माध्यम से सनिाड को अनुवाद

[1233] नकिानोर। पूर्वोक्त, पृ. 258, 257, 253, 254, 269; 'आत्मचरत्रिांश' (पृ. 253–281) नामक अध्याय वशिष रूप से महत्वपूर्ण है। आर्चबशिप नकिानोर ब्रोवकोवचि (1826–1890), यद्यपि सनिाडल प्रणाली के समर्थक नहीं थे, उन बशिपों में से थे जो इस प्रणाली के खलिाफ कसिी भी संघर्ष को व्यर्थ मानते थे। और फरि भी वह धर्मपति के सर्वोत्तम गुणों के प्रतीक थे और एक सक्षम प्रशासक, उपदेशक और लेखक के रूप में जाने जाते थे। ईसाई और आदर्शवादी दर्शन के क्षेत्र में उनके कार्य सकारात्मकवाद और भौतकिवाद के वरिुद्ध थे (उनका प्रमुख कार्य: *पॉजटिवि फलिॉसफी एंड सुपरसेंसबिल बीइंग*, 1875)। नकिानोर पर, देखें: डी. वी. एफ-वी, 'हजि एमनिेंस नकिानोर, खेरसन के आर्चबशिप के जीवन के पहलू', में: इस्तोरीचेस्की वेस्टी, खंड 50 (1892), पृष्ठ 753–763; खंड 51 (1892), पृष्ठ 651 और बाद के पृष्ठ।

की आवश्यकता और लाभों के बारे में मना लेंगे, लेकिन वे इसमें सफल नहीं हुए। आध्यात्मिक रूप से थके हुए और शारीरिक बीमारियों से पीड़ित, मकरियस को 1843 में रूस लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने अपने अंतिम वर्ष ओर्योल डायोसीस के एक मठ में बिताए, और उनका इरादा था कि अगर वे ठीक हो गए तो यरूशलेम के पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा करेंगे; 18 मई 1847 को उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन फिलारेट ने कहा, 'मैकैरियस ईश्वर मसीह के एक सच्चे सेवक थे,' लेकिन यह प्रशंसा बहुत देर से आई: वह प्रतिभाशाली विद्वान, उत्कृष्ट हिब्रू विद्वान और तपस्वी भिक्षु पहले ही परलोक सिधार चुके थे, जो अपनी अथक मेहनत की तुलना में सिनोडल प्रणाली के कहीं अधिक शिकार हुए थे। उनकी नियति इस बात का और भी प्रमाण है कि यह प्रणाली चर्च के भले के लिए अपने पास मौजूद संसाधनों का कितना बुरी तरह उपयोग करने में असमर्थ थी - एक ऐसी प्रणाली जिसकी जड़ें जमा चुकी, कठोर भावना अक्सर उन्हें बस नष्ट कर देती थी[1234] ।

'आर्चमिंड्राइट थियोडोर बुखारेव की कहानी' 1860 के दशक में सामने आई, जब रूस अपने आध्यात्मिक इतिहास के एक अत्यंत नाटकीय दौर से गुजर रहा था: चर्च का जीवन—या, बल्कि, पादरी वर्ग का एक हिस्सा और चर्च की पदानुक्रम व्यवस्था—उस समय राजनीतिक विचारों के उथल-पुथल के संपर्क में आया।

फीओडोर बुखारेव (1824–1871) ने छात्र रहते हुए ही अपने शिक्षकों का ध्यान आकर्षित किया। 1846 में, उन्होंने मॉस्को थियोलॉजिकल अकादमी से स्नातक किया और तुरंत ही भिक्षु दीक्षा ले ली; उन्होंने बाद में खुले तौर पर स्वीकार किया कि उन्होंने ऐसा अपनी नाजुक सेहत और अपने विचारों को एकत्रित करने के लिए किया था, साथ ही खुद को पूरी तरह से धर्मशास्त्र के अध्ययन के लिए समर्पित करने के लिए भी।

मॉस्को अकादमी में उन्होंने जो व्याख्यान दिए, उन्हें छात्रों ने वास्तविक उत्साह के साथ सराहा; इन व्याख्यानों की गहराई और जीवंतता, साथ ही सामग्री प्रस्तुत करने में उनकी शास्त्रीय विधियों के अस्वीकार (जो उस पद पर उनके पूर्ववर्तियों की विशेषता थी) ने उस युवा विद्वान को शैक्षणिक जीवन में नई जान फूंकने में सक्षम बनाया। यहाँ तक कि मेट्रोपॉलिटन फिलारेट, जो स्वयं शैक्षणिक भावना से पूरी तरह मुक्त नहीं थे, प्रारंभ में थियोडोर के प्रति अनुकूल थे। सुसमाचार और प्रेरित युग की एक जीवंत और सजीव व्याख्या बुखारेव के कार्य *सेवरल आर्टिकिल्स ऑन द होली अपोस्टल पॉल* (1861 में प्रकाशित) की भी विशेषता है, जिसमें पुराने और नए नियम की एक गहन तुलना शामिल है। गोगोल् की प्रसिद्ध कृति *Selected Passages from Correspondence with Friends*, जिसने अपने समय में विवादों का तूफान खड़ा कर दिया था, ने बुखारेव पर बहुत गहरा प्रभाव डाला। गोगोल् के बचाव में, उन्होंने *Three Letters* (1848) नामक निबंध लिखा, जिसे उन्होंने मेट्रोपॉलिटन फिलारेट को दिखाया; बाद वाले ने इसकी कड़ी निंदा की। ('तीन पत्र' 1861 तक प्रकाशित नहीं हुआ था।) इस बीच, युवा व्याख्याता को अकादमी में रेक्टर के साथ अपने संबंधों में कठिनाइयों और घर्षण का सामना करना पड़ा, मुख्य रूप से उसके व्याख्यानों में निहित कुछ व्याख्याओं के कारण, जिन्हें बहुत 'उदार' और 'प्रोटेस्टेंट' माना गया; थोड़ी ही देर बाद, बुखारेव को आर्चमैंड्राइट के पद पर पदोन्नत किया गया और डॉगमैटिक थियोलॉजी के एक कम अस्थिर पद पर काज़ान थियोलॉजिकल अकादमी में स्थानांतरित कर दिया गया।

काज़ान में उनके व्याख्यानों ने एक बार फिर छात्रों में सहानुभूति और उत्साह जगाया, क्योंकि यहाँ भी बुखारेव ने एक नई पद्धति का प्रदर्शन किया, नई व्याख्याएँ प्रस्तुत कीं और एक पूरी तरह से नए वैज्ञानिक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का सहारा लिया। उनके उपदेशों ने उन्हें जनता के बीच अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया। 'फादर थियोडोर के साथ संध्याएँ', जहाँ धार्मिक मुद्दों पर जीवंत चर्चा होती थी और जिनमें स्वयं वह मुख्य वक्ता होते थे—और अपनी बातों में उन्होंने रहस्यवाद की ओर स्पष्ट झुकाव दिखाया—काज़ान समाज के आध्यात्मिक जीवन का केंद्र बन गईं, जिसने एक बार फिर अधिकारियों की नाराज़गी को भड़काया। इस बार, बुखारेव को सेंट पीटर्सबर्ग में आध्यात्मिक सेंसरशिप समिति में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ यह उम्मीद की गई थी कि ऐसा काम जो किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से थका दे, उसे उसके अत्यधिक भावनात्मक उथल-पुथल से मुक्त कर देगा।

अपने नए पद पर, बुखारव ने *डोमाशनेया बेसेदा* (घरेलू बातचीत) पत्रिका के प्रकाशक वी. आई. अस्कोचेन्स्की को अपना दुश्मन बना लिया, जो कठोर धार्मिक रूढ़िवाद का मूर्त रूप थे, एक 'उदास कट्टरपंथी', जैसा कि बुखारव ने बाद में उनका वर्णन किया। अस्कोचेंस्की के कुछ लेखों पर प्रतिबंध लगाने से उसमें बुखारेव के प्रति

[1234] माकारी ग्लुखारेव पर: रिपोर्ट्स। 1836–1844; उनके पत्र (1905); रोडॉस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 255–257; यास्त्रेबोव, आई. आर्किमैंड्राइट माकारी ग्लुखारेव, अलताई मिशन के संस्थापक के जीवन और कार्य का एक संक्षिप्त विवरण (1893); पोतोखोव, पी. वी. आर्चमिंड्राइट मकारी जी., अल्ताई मिशन के संस्थापक (1899); चिस्तोविच, आई. बाइबिल का रूसी में अनुवाद का इतिहास (दूसरा संस्करण, 1899)। पृ. 207–240; फ्लोरोव्स्की। उपरोक्त, पृ. 187 आदि। मकरिय के अनुवाद बाद में पत्रिका *प्रवोस्लाव्नोए ओबोज़्रेनिए* (1860–1867) में प्रकाशित हुए।

एक अटूट घृणा उत्पन्न हो गई। मॉस्को अकादमी की अकादमिक परिषद को बुखारेव पर आरोप लगाते हुए अस्कोचेंस्की का पत्र इतने कठोर शब्दों में लिखा गया था कि अकादमिक परिषद ने इसे बुखारेव को इस सिफारिश के साथ भेज दिया कि वह मानहानि के लिए अस्कोचेंस्की के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करें, लेकिन बुखारेव ने ऐसा नहीं किया।

1860 में, उनकी पुस्तक *आधुनिक युग के संबंध में ऑर्थोडॉक्सी पर* प्रकाशित हुई – यह ईसाई धर्म को सामाजिक-राजनीतिक जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित करके सामाजिक संबंधों को विनियमित करने के लिए ईसाई सिद्धांत की नींव पर आधारित एक प्रयास था। लेखक के कुछ तर्क आज के पाठकों के लिए भी रुचिकर बने हुए हैं; यह पुस्तक रूसी जीवन में सामाजिक सुधारों की आवश्यकता पर उस समय के प्रचलित विचारों के अनुसार 'ईसाई समाजवाद' की समस्या को हल करने की दिशा में पहला कदम उठाती है[1235] । बुखारेव की पुस्तक ने अस्कोचेन्स्की से आलोचना और गाली-गलौज को जन्म दिया, जिसने लेखक को 'धर्मद्रोही' और 'नास्तिक' कहा और, सामान्य रूप से, शिष्टाचार की सभी सीमाओं को पार कर दिया। इसके बावजूद, बखारेव ने सेंसर के रूप में इस आलोचना को प्रकाशित होने दिया; उन्होंने पत्रिका *सिन ओटेचेस्टवा* (*सोन ऑफ द फादरलैंड*) में अपना जवाब प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने एक बार फिर से ईसाई धर्म के सामाजिक कार्यों के बारे में अपने तर्क रखे। लेकिन अस्कोचेन्स्की की साजिशें सफल रहीं – आर्चिमांड्राइट बुखारेव ने सेंसर का पद खो दिया और उन्हें पेरियास्लाव के निकित्स्की मठ में स्थानांतरित कर दिया गया। उनके नए कार्य, *द अपोकलिप्स*, जिसे उन्होंने कई वर्षों तक समर्पित किया था, को सेंसरों द्वारा प्रकाशन के लिए अधिकृत नहीं किया गया, और अस्कोचेन्स्की के हमले जारी रहे। गंभीर आंतरिक संघर्ष से जूझते हुए, जो उनकी शारीरिक बीमारियों और भावनात्मक निराशा की भावना से विशेष रूप से बढ़ गया था, आर्चिमैंड्राइट थियोडोर ने अपने संन्यासी व्रतों को त्यागने का निर्णय लिया। यह 1863 की गर्मियों में हुआ। उन्होंने इस कदम को यह कहकर सही ठहराया कि उनके लिए और अधिक समय तक एक भिक्षु बने रहना असंभव हो गया था, क्योंकि वह अंतर्मन से, अपने पूरे दिल से, उन लोगों के खिलाफ विरोध करते थे, जिनकी आज्ञा मानना उनके मठ के संकल्पों ने उन्हें बाध्य किया था।

इस कदम ने उनके जीवन की त्रासदी को और गहरा कर दिया। सहारे के किसी साधन के बिना, कई लोगों द्वारा तिरस्कृत और केवल कुछ दोस्तों से ही मदद पाते हुए, बुखारेव अगले सात साल तक जीवित रहे। 1863 के तुरंत बाद उन्होंने जो एक और काम किया - उनकी शादी - उसे समझना मुश्किल है। उसे कोई पद दिलाने के सभी प्रयास व्यर्थ रहे। वह पत्रिकाओं के छोटे लेखों के लिए मिलने वाली मामूली फीस और अपने कुछ परिचितों द्वारा दिए गए पैसों पर गुज़ारा करता था; मेट्रोपॉलिटन फिलारेट ने भी कई मौकों पर उसे गुप्त रूप से पैसे भेजे। 1871 में, बुखारेव की लंबी बीमारी के बाद मृत्यु हो गई।

1865 और 1866 में, उन्होंने दो और किताबें प्रकाशित कीं, जो उनके पिछले कार्यों की तरह ही समान विषयों से संबंधित थीं; इन पुस्तकों में से दूसरी पुस्तक, *माई अपोलॉजी* (1866), ईसाई धर्म के सामाजिक मिशन पर उनके विचारों की आलोचना का जवाब देने का एक अंतिम प्रयास थी, जो रूढ़िवादी और उदारवादी दोनों ही हलकों से आई थी, साथ ही यह उन पर लगाए गए विभिन्न प्रकार के, अक्सर निराधार, आरोपों के खिलाफ अपना बचाव करने का भी एक प्रयास था[1236] . बुखारेव केवल धार्मिक रूढ़िवाद का शिकार नहीं थे, क्योंकि उन्हें उदारवादी हलकों में भी कोई सच्ची समझ नहीं मिली। अपने संन्यासी व्रतों का त्याग करने के बाद, इन हलकों में समर्थक खोजने और इस तरह सेवा करने की उनकी आशा व्यर्थ साबित हुई।

बुखारेव के लिए, संन्यास की शपथ लेना आत्मा-परिवर्तनकारी घटना नहीं थी। विद्वान संन्यासी समुदाय के अन्य सदस्यों की तरह, शपथ लेने से विद्वतापूर्ण कार्य के लिए नए अवसर खोलने के बजाय दुखद आंतरिक संघर्षों को जन्म दिया। उनका निजी जीवन 1950 के दशक के अंत और 1960 के दशक की शुरुआत की अस्वस्थ पृष्ठभूमि में सामने आया, यानी ऐसे समय में जब रूसी रूढ़िवाद, 'सुधारों के युग' की भावना के खिलाफ अपने संघर्ष में, चर्च और

[1235] आर्चिमैंड्राइट थियोडोर बुखारेव ही एकमात्र व्यक्ति नहीं थे जिन्होंने ईसाई धर्म को सामाजिक मुद्दों के साथ 'समझौता' कराने का प्रयास किया। इस संबंध में, आर्चिमांड्राइट इओआन सोकोलोव († 1868) के प्रवचन भी महत्वपूर्ण हैं, जो बाद में स्मोलेंस्क के बिशप (1866–1868) बने और जिनके करियर को उनके 'उदारवाद' ने बाधित किया था। उन पर: विनोग्रादोव, वी. 'द लास्ट ऑफ द मोहीकन्स', में: बीवी. 1911. 10. पृ. 278 आदि; बार्सोव, टी. 'स्मोलेंस्क के बिशप जॉन, एक उपदेशक के रूप में', में: क्रिश्चियन रीडिंग्स. 1872.

[1236] एफ. एम. बुखारेव पर, देखें: ज़नामेंस्की, पी. *इतिहास ऑफ़ द काज़ान थियोलॉजिकल अकादमी*. खंड 1, पृ. 124 आदि, 142; खंड 2, पृ. 200 आदि; साव्वा. *क्रॉनिकल*. खंड 2, पृ. 724; स्मिरनोव. मॉस्को थियोलॉजिकल अकादमी का पुनर्गठन (1879) से पूर्व का इतिहास। पृ. 138, 260, 460, 628 आदि; तुलना करें: बुखारेव के समकालीनों के पत्र, *अट द ट्रिनिटी इन द अकादमी* (1914) में। पृ. 123, 237, 571; उनके लेखन पर: वेंगेरोव, एस. ए. रूसी लेखकों की शब्दावली के लिए स्रोत। खंड 1। ईसाई धर्म और जीवन के बीच 'समझौते' से संबंधित विवाद पर: ज़नामेंस्की, पी. ऑर्थोडॉक्सी और आधुनिक जीवन के बीच संबंध पर 1860 के दशक की धर्मशास्त्रीय बहस (1902)।

राज्य-राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में अपने सिद्धांतों को स्थापित करने का प्रयास कर रहा था। इस रूढ़िवाद के प्रतिपक्षी - 1960 के दशक का उदारवाद, जो चर्च के प्रति शत्रुतापूर्ण और यहां तक कि खुले तौर पर नास्तिकतावादी धाराओं से मुक्त नहीं था - भी बुखारेव के विचारों को स्वीकार करने में असमर्थ था; क्योंकि बुखारेव की रचनाओं में स्पष्ट रूप से झलकता आध्यात्मिकतावाद पूरी तरह से अस्वीकार्य और कुछ हद तक संदिग्ध था, क्योंकि यह लेखक के उस विश्वदृष्टिकोण के प्रति निष्ठा का प्रमाण था जो उदारवादियों के लिए अपरिचित था। मूल रूप से, वे सही थे, क्योंकि बुखारेव को केवल इसलिए सिनोडल प्रणाली की कठोर भावना द्वारा धार्मिक हलकों से बाहर कर दिया गया था क्योंकि उसने उन संदेहों को ज़ोर से व्यक्त करने की हिम्मत की थी जिन्हें अन्य लोगों ने—जैसे भविष्य के आर्चबिशप निकानोर ब्रोवकोविच ने—एक लंबे आंतरिक संघर्ष के बाद, अपने भीतर छिपाए रखने में कामयाबी हासिल की थी।

उच्च धार्मिक विद्यालयों ने भी उस समय की भावना का प्रभाव महसूस किया। 1860 के दशक की विशेषता मठवासी संन्यास ग्रहण करने वाले छात्रों और व्याख्याताओं की संख्या में गिरावट थी। पहले के समय में, जब सेंट पीटर्सबर्ग अकादमी के रेक्टर मेट्रोपॉलिटन फिलारेट ड्रोज़्दोव या आर्चिमांड्राइट ग्रिगोरी पोस्टनिकोव (1856 से 1860 तक सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलिटन) थे, तो वे छात्र समुदाय के बीच मठवासी दीक्षा के पीछे की मुख्य प्रेरक शक्तियाँ थे। हालांकि, अब विद्वान संन्यासवाद को प्रोत्साहित करने के लिए रेक्टर और प्रोफेसर बहुत कम कर रहे थे। इस समूह से संबंधित व्याख्याताओं और प्रोफेसरों की संख्या में काफी गिरावट आई थी। बिशप के पदों को भरने के लिए उपयुक्त उम्मीदवारों को खोजने में भी कठिनाइयाँ थीं।

1970 और 1980 के दशक में, इस कमी की भरपाई इस तथ्य से हो गई कि विधुर पुरोहित संन्यास की शपथ ले सकते थे; वे हायरोमोंक, फिर आर्चिमैंड्राइट बने और बहुत जल्दी बिशप के रूप में अभिषिक्त हो गए। उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की शुरुआत में विधुर पुरोहितों से बने बिशपों की संख्या बहुत अधिक थी। विधुर पुरोहित पहले भी बिशप पद की दीक्षा प्राप्त कर सकते थे, लेकिन यह दुर्लभ था। हालाँकि, अब लगभग आधे बिशपों ने अपनी सेवा एक पैरिश पुरोहित के रूप में शुरू की। इससे बिशप वर्ग में कुछ नई विशेषताएँ आईं – धार्मिक विचारों के मामले में नहीं, क्योंकि पैरिश पादरी वर्ग से उभरे बिशप संन्यासियों से भी अधिक सिनोडल प्रणाली के प्रति समर्पित थे – लेकिन मुख्य रूप से धर्मप्रांत प्रशासन के क्षेत्र में। पैरिश पादरी वर्ग के जीवन से अच्छी तरह परिचित होने के कारण, उन्होंने उस पर अधिक ध्यान दिया और उसकी जरूरतों का बेहतर ध्यान रखा। इस विकास के परिणाम पूरी तरह से सकारात्मक थे, और शायद किसी इतिहासकार के लिए इस विषय पर एक विशेष अध्ययन करना सार्थक होगा[1237] ।

[1237] अपने कार्ड इंडेक्स में, मैंने 19वीं सदी के 30 बिशपों (जो कुल का केवल एक अंश हैं) के बारे में जानकारी संकलित की है, जिन्होंने चर्च में अपनी सेवा पैरिश पादरी के रूप में शुरू की थी। मैं यहाँ केवल कुछ नाम ही उल्लेख करूँगा: एम्ब्रोज़ कलुचारेव, खार्कीव के आर्चबिशप (1882–1901), जो एक उत्कृष्ट उपदेशक के रूप में भी जाने जाते थे; अनास्तासियस डोब्राडिन, वोरोनेज़ के आर्चबिशप (1890–1906); एंथनी वादकोव्स्की, सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलिटन (1898–1912); एंथनी राफाल्स्की, सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलिटन (1843–1848); गेरिसिमि डोब्रोसर्डोव, अस्त्रखान के बिशप (1878–1888), जो अपने प्रवचनों और लेखों में तपस्वी भावना के लिए प्रसिद्ध थे; गुरी ओखोतनि, नोवगोरोड के आर्चबिशप (1900–1912); दमित्री साम्बिकिन, काज़ान के आर्चबिशप (1905–1908); डायोनिसियस खित्रोव, उफ़ा के आर्चबिशप (1888–1896), एक अत्यधिक सफल मिशनरी, एक 'उदार बिशप', जो दूरस्थ धर्मप्रांतों के पादरियों की ज़रूरतों के प्रति अपनी चिंता के लिए पैरिश पादरी वर्ग में लोकप्रिय थे; इन्नोकेन्टी वेनियामिनोव, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन (1868–1879), साइबेरिया में अपने काम के लिए प्रसिद्ध एक उत्कृष्ट मिशनरी; जॉन क्राटिरोव, सारातोव के बिशप (1899–1903), बिशपों के हलकों में अलोकप्रिय, उन्होंने 'सिनोडल भावना' का स्पष्ट विरोध किया और उन्हें सेवानिवृत्त होने के लिए मजबूर किया गया († 1909); लव्रेन्ती नेक्रासोव, तुला के बिशप (1904–1908); निकान्द्र मोल्चानोव, लिथुआनिया के आर्चबिशप (1904–1910); निकोले ज़ार्केविच, खेरसन के डायोसीस के सहायक बिशप (*1884–85), जो सकारात्मकवाद के खिलाफ निर्देशित अपने सार्वजनिक व्याख्यानों और प्रकाशित कृतियों के लिए जाने जाते थे; स्टीफन अर्खान्गेल्स्की, कुर्स्क के आर्चबिशप (1911–1914), 'सुधारों' के समर्थक, विशेष रूप से वे जो धर्मशास्त्र स्कूलों और पैरिश जीवन से संबंधित थे, और ईसाई नैतिक धर्मशास्त्र के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कृतियों के लेखक; वसिसारिऑन नेचाएव, कोस्त्रोमा के बिशप (1891–1903), जिन्होंने मॉस्को में 34 वर्षों तक एक पैरिश पादरी के रूप में सेवा की और पत्रिका *आध्यात्मिक रूप से लाभकारी पठन* (1860) की स्थापना की; विटाली ग्रेगुलिएविच, मोगिलेव के बिशप (1881–1885), एक महान प्रतिभा के धनी थे; 1860 के दशक की शुरुआत में सेंट पीटर्सबर्ग में एक पैरिश पादरी के रूप में सेवा करते हुए, उन्होंने अपने उपदेशों और सार्वजनिक व्याख्यानों के माध्यम से, विशेष रूप से श्रमिक वर्ग और बुद्धिजीवियों के बीच, व्यापक लोकप्रियता हासिल की; 1860 में, विटाली ने पत्रिका *स्ट्रानिक* की स्थापना की, जिसने उनके प्रकाशनकाल (1860–1869) में एक उच्च स्तर बनाए रखा; वोलिन के डायोसीस (1879–1881) के सहायक बिशप और मोगिलेव के बिशप के रूप में सेवा करते हुए, उन्होंने सार्वजनिक शिक्षा के एक प्रबल समर्थक के रूप में खुद को स्थापित किया: अपने डायोसीस में, उन्होंने 268 पैरिश स्कूल स्थापित किए; व्लादिमीर बोगोयावल्न्स्की, मॉस्को (1898–1912), सेंट पीटर्सबर्ग (1912–1915) और कीव (1915–1918) के मेट्रोपॉलिटन, जो रासपुतिन के विरोध के लिए जाने जाते थे।*

1880 के दशक के दूसरे भाग में, वदि्वान मठवासी समुदाय का एक नया हमियती उभरा। वे थे युवा, प्रतभिाशाली, बुद्धमिान और ऊर्जावान आर्चमिैंड्राइट एंथनी ख्रापोवट्स्की (1863–1936)[1238] । एक ऐसे व्यक्ति जन्हिोंने आधी सदी तक रूसी चर्च के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला, जो अक्सर सकारात्मक लेकनि कभी-कभी नकारात्मक भी था; एक ओर, उन्होंने सनिोडल प्रणाली का वरिोध कयिा, जबकि दूसरी ओर, उन्होंने इसका समर्थन कयिा; भक्षिुत्व के एक प्रशंसक होते हुए भी, उनका मानना था कि भक्षिुओं को ध्यानमग्न जीवन में संलग्न नहीं होना चाहएि, बल्कि उन्हें रूस के धार्मकि और राजनीतकि जीवन को सक्रयि और प्रभावी ढंग से प्रभावति करने के लएि बुलाया गया था। वे एक शक्तशिाली पैट्रआिर्क के नेतृत्व में बशिपशाही के नरिंकुश शासन के हमियती थे। यह कोई संयोग नहीं है कि रूसी चर्च के इतहिास में उनकी पसंदीदा हस्ती पैट्रआिर्क नकिोन[1239] थे। एंथनी की प्रयि महत्वाकांक्षा पैट्रआिर्कल सनिी की बहाली थी; उनका मानना था कि पैट्रआिर्केट को रूस में राजशाही का मुख्य स्तंभ बनना चाहएि[1240] । एंटन ख्रापोवट्स्की ने राज्य, धार्मकि और राजनीतकि मामलों के संदर्भ में रूस और रूसी चर्च के लएि ज़ार और पैट्रआिर्क की एकता को ही एकमात्र संभव मार्ग माना। इस प्रकार, जब हम उनके वचिारों से परचिति होते हैं, तो हम देखते हैं कि 'मॉस्को - तीसरी रोम' का वचिार, एक 'नए नकिोन' के सपनों के साथ कैसे पुनर्जीवति होता है।

एंथनी ख्रापोवट्स्की ने चर्च के जीवन में एक प्रभावशाली संस्था के रूप में मठवाद को प्रोत्साहति कयिा, लेकनि सबसे बढ़कर उन्होंने वदि्वान मठवाद को संरक्षण दयिा। उन्होंने स्वयं बहुत कम उम्र में ही संन्यास की शपथ ली। 1863 में एक कुलीन परविार में जन्मे, माध्यमकि वदि्यालय पूरा करने के बाद उन्होंने सेंट पीटर्सबर्ग थयिोलॉजकिल अकादमी में दाखलिा लयिा और महज 18 वर्ष की आयु में 1881 में अपना शैक्षणकि डप्लिोमा प्राप्त कयिा। चार साल बाद, उन्होंने मठवासी संन्यास ग्रहण कयिा (1885) और कुछ ही महीनों बाद (22 वर्ष की आयु में), उन्हें हाइरोमोंक के रूप में अभषिक्ति कयिा गया; उन्होंने खोल्म थयिोलॉजकिल सेमनिरी में अपने शक्षिण करयिर की शुरुआत की, और 1887 में, दर्शनशास्त्र में अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने के बाद, हायरोमोंक एंथनी को पुराने नयिम के वभिाग में सेंट पीटर्सबर्ग थयिोलॉजकिल अकादमी में व्याख्याता नयिुक्त कयिा गया[1241] । 27 वर्ष की आयु में, वह सेंट पीटर्सबर्ग थयिोलॉजकिल सेमनिरी के आर्चमिैंड्राइट और रेक्टर बने, लेकनि इस पद पर केवल चार महीने रहने के बाद उन्हें मॉस्को थयिोलॉजकिल अकादमी (1890) के रेक्टर के पद पर स्थानांतरति कर दयिा गया। 1897 में, 34 वर्ष की आयु में, उन्हें बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया और काज़ान के डायोसीज़ का वाइकर बशिप नयिुक्त कयिा गया, साथ ही उन्होंने रेक्टर का अपना पद भी बनाए रखा। तीन साल बाद (1900), उन्हें उफ़ा (1900–1902) में एक स्वतंत्र एपस्किोपल सी में नयिुक्त कयिा गया।

[1238] उनका जीवन-चरत्रि देखें: कलेक्शन ऑफ़ सलिेक्टेड राइटगि्स (1935), पृ. III–XLVI; और यह भी: नेस्टर, आर्चबशिप। मेट्रोपॉलटिन एंथनी (हारबनि, 1936), जसिमें लेखक एंथनी के व्यक्तत्वि और गतविधियिों का चरत्रि चत्रिति करने का प्रयास करता है; दुर्भाग्य से, यह पैम्फलेट काफी हद तक पक्षपाती है।

[1239] म. वी. ज़ीज़किनि का पैट्रआिर्क नकिोन पर तीन-खंडों में लखिा गया कार्य, जो कई साल पहले प्रकाशति हुआ था और जसिमें नकिोन को पुनर्स्थापति करने का प्रयास कयिा गया है, एंथनी ख्रापोवट्स्की के प्रभाव के बनिा नहीं लखिा गया था।

[1240] इस संबंध में, *गोलोस त्सर्कवी* में, 1912, संख्या 1 में, एंटोन का लेख 'द रेस्टोरेशन ऑफ़ द पैट्रआिर्केट' वशिेष रूप से महत्वपूर्ण है। आइए उनकी जीवनी के मुख्य बदिुओं पर प्रकाश डालें: 1890 – मॉस्को थयिोलॉजकिल अकादमी के रेक्टर; 1895 – काज़ान थयिोलॉजकिल अकादमी के रेक्टर; 1899 – रेक्टर के पद पर रहते हुए, काज़ान के डायोसीज़ के सहायक बशिप; 1902–1914 – वोल्हनियिा के बशिप; 1906 से – आर्चबशिप; 1906–1907 – पुरोहति वर्ग का प्रतनिधित्वि करते हुए राज्य परषिद के सदस्य; 1912–1913 – सनिड के सदस्य; 1914–1917 – खार्कीव के आर्चबशिप; 1917 के वसंत में, उन्हें अस्थायी सरकार द्वारा पदच्युत कर दयिा गया; रूस में पैट्रआिर्केट की बहाली पर (1918), एंथनी पैट्रआिर्क के पद के लएि तीन उम्मीदवारों में से एक थे; 1918 – कीव के मेट्रोपॉलटिन; 1918 के अंत में, उन्हें पेटल्यूरा की यूक्रेनी सरकार द्वारा गरिफ्तार कर लयिा गया और गैलसियिा के एक मठ में नर्विासति कर दयिा गया; वहाँ रहते हुए, एंथनी ने डोस्टोव्स्की पर एक कतिाब लखिी; 1919 में, उन्हें एंटेंटे शक्तयिों के अनुरोध पर रहिा कर दयिा गया और वह कीव लौट आए; उन्होंने डेनकिनि की सरकार (श्वेत सेना) के साथ मलिकर काम कयिा; 1920 में, वह कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे; 1920 में, वह वदिेश में सर्वोच्च चर्च प्रशासन (गरिजाघरों के तथाकथति 'कार्लोवाक समूह') के प्रमुख बने और तब से उन्होंने पूरे रूसी ऑर्थोडॉक्स प्रवास पर सर्वोच्च धार्मकि अधकिार का दावा कयिा, जसिसे प्रभावी रूप से मास्को पैट्रआिर्केट के साथ संप्रदायकि संबंध टूट गए। उनकी मृत्यु 1936 में बेलग्रेड (सर्बयिा) में हुई।

[1241] उनके शोध-प्रबंध का शीर्षक था 'स्वेच्छा और नैतकि जमि्मेदारी के पक्ष में मनोवैज्ञानकि साक्ष्य'; यह कृति स्लावोफाइलों के दर्शन के प्रभाव में लखिी गई थी, लेकनि उससे भी अधकि व्लादमिीर सोलोव्योव (उनके शुरुआती दार्शनकि कार्यों का, न कि बाद के, क्योंकि एंथनी कैथोलकि धर्म के एक कट्टर वरिोधी थे) और दोस्तोव्स्की की कृतयिों के प्रभाव में लखिी गई थी - ये दो वचिारक थे जन्हिोंने अपनी युवावस्था में ख्रैपोवट्स्की के वचिारों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला था। हालांकि, यह ध्यान दयिा जाना चाहएि कि एंटोन का 'नव-स्लावोफलिज़्म' और उनके धार्मकि और राजनीतकि वचिार स्लावोफाइल - दोनों 'वरषि्ठ' (जैसे आई. वी. करीव्स्की या ए. एस. खोम्याकोव) और 'युवा' (जैसे यूरी समारनि और आई. एस. अक्साकोव)।

एक व्याख्याता, प्रोफेसर और तीन अकादमियों के रेक्टर के रूप में, एंथनी ने अपनी प्रतिभा और शानदार वाक्पटुता के माध्यम से अपने छात्रों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला। वह जहाँ भी गए, उन्होंने युवा पुरुषों को संन्यास ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया। उस समय, 1880 के दशक में, अकादमिक युवाओं के संन्यासवाद के प्रति तीव्र आलोचनात्मक दृष्टिकोण के कारण, भिक्षु बनने की हिम्मत करने वाले छात्रों की संख्या अत्यंत कम थी[1242] । युवा आर्चिमैंड्राइट और बिशप की इस उत्साही वकालत ने तीनों अकादमियों में सफलता हासिल की, और जल्द ही संन्यास ग्रहण करने वाले छात्रों और व्याख्याताओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई। एंथनी ने 'शैक्षणिक मठवाद पर' (1889) नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की, जो छात्रों के बीच बड़े पैमाने पर वितरित की गई। उनकी सलाह पर, युवा आर्चिमैंड्राइट इनोकेन्टी (बेलेयाव), जो एक विधुर पुरोहित थे और जिन्हें एंथनी द्वारा कज़ान में भिक्षु के रूप में दीक्षा दी गई थी, ने 'मठवाद में दीक्षा पर' नामक एक प्रमुख कृति लिखी[1243] । मठवाद के अन्य संरक्षकों में सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलिटन एंथनी (वाडकोव्स्की; 1898–1912) शामिल थे, जिन्होंने सेंट पीटर्सबर्ग अकादमी के रेक्टर के रूप में अपने कार्यकाल *(1887–88)* के दौरान *कई छात्रों को मठवासी संस्कार ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया, और अंत में, सेंट पीटर्सबर्ग अकादमी के नए रेक्टर, बिशप सर्जियस (स्ट्रैगोरोडस्की; 1901–1903), जो बाद में मॉस्को के पैट्रिआर्क बने († 1944) ।*

एंटोनी खरापोवित्स्की का कार्य हमें 1917 से पहले के रूसी चर्च के विद्वान मठवाद और बिशपशाही के अस्तित्व की अंतिम अवधि में ले जाता है—यहाँ तक कि आज तक भी कहा जा सकता है—इसीलिए हमारे पास इस अंतिम अवधि पर बहुत कम वस्तुनिष्ठ सामग्री है; यदि निष्कर्षत; हम इन दो धार्मिक संस्थानों की प्रकृति के बारे में सामान्य निष्कर्ष निकालने का प्रयास करें, तो हमें कहना होगा कि दोनों ही, मूल रूप से, प्रामाणिक रूसी मठवाद से अलग थे, यद्यपि विद्वान भिक्षु और बिशप दोनों ही खुद को मठवाद के सच्चे प्रतिनिधि मानते थे और रूसी जनता द्वारा अक्सर उन्हें ऐसा ही माना जाता था। इस गलतफहमी का कारण यह था कि धार्मिक अधिकारियों को, बिशप के पदों को भरने के लिए उम्मीदवारों की आवश्यकता थी, और अब यह उम्मीद नहीं थी कि वे मठवासी जीवन के स्तर को इतनी ऊँचाई तक उठा पाएँगे कि ऐसे उम्मीदवार मठवासी भाईचारे के बीच से मिल सकें। निस्संदेह, उन्नीसवीं सदी का चर्च जीवन सोलहवीं सदी की तुलना में कहीं अधिक जटिल था, और बिशपों को देश और उसके लोगों के सांस्कृतिक जीवन के अनुरूप एक मानक तक शिक्षित होना था। विद्वान संन्यासियों की इस श्रेणी की स्थापना को अनुकूल रूप से देखा जा सकता था यदि इसका विकास एक अलग मार्ग पर होता, लेकिन उस समय चर्च को धर्मशास्त्रीय विद्यालयों में पढ़ाने के लिए शिक्षित लोगों की भी आवश्यकता थी। विद्वान मठवासी समुदाय को इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति करनी थी, जैसा कि मेट्रोपॉलिटन फिलारेट द्वारा कल्पना की गई थी, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में, शैक्षिक जरूरतों को पूरा करने और रूसी चर्च का प्रशासन करने के लिए विद्वान मठवासी समुदाय के गठन को प्रोत्साहित करना शुरू किया था। हालांकि, उनकी योजनाओं के व्यावहारिक कार्यान्वयन का मतलब यह था कि विद्वान मठवासी समुदाय—और उसके ही बीच से चुने गए बिशप—वास्तव में रूसी मठवाद के इतिहास से बाहर हो गए[1244] ।

[1242] निकानोर। उपरोक्त, पृ. 122 और अन्य।

[1243] इनोकेन्टी (बेलेयेव), आर्चिमांड्राइट। मठवासी संन्यास ग्रहण करने पर (1899); इनोकेन्टी बेलेयेव (1862–1913) ने शीघ्रता से पदोन्नति प्राप्त की: 1903 तक वह पहले ही तम्बोव के बिशप बन चुके थे; 1909 में उन्हें जॉर्जिया का आर्चबिशप और एक्ज़ार्क नियुक्त किया गया, और वह आर्चबिशप निकोन (सोफिया के) के उत्तराधिकारी थे, जिनकी 25 मई 1908 को हत्या कर दी गई थी, लेकिन उनकी मृत्यु 1913 में हुई। एंथनी के प्रभाव में, निम्नलिखित लोगों ने संन्यास की शपथ ली: प्रतिभाशाली छात्र मिखाइल ग्रिबानोव्स्की, ताव्रिया के बिशप (1856–1898); इओआन अलेक्सेव, परम के बिशप (1902–1905); और सेरगियस स्ट्रागोरोडस्की († 1946) (वास्तव में † 1944। – अनुवादक का नोट), जो अपने अंतिम सेमेस्टर में था जब एंथनी खरापोवित्स्की ने सेंट पीटर्सबर्ग थियोलॉजिकल अकादमी में पढ़ाना शुरू किया था; और डायोनिसियस वैलेडिंस्की, पोलिश ऑर्थोडॉक्स चर्च के मेट्रोपॉलिटन (और 1947 में भी)। सर्गेई *सेंट पीटर्सबर्ग की बुद्धिजीवी वर्ग के* तथाकथित 'धार्मिक-दार्शनिक सभाओं' *(1902-03)* में अपनी भागीदारी के लिए भी जाने जाते हैं*; बाद में, फिनलैंड के आर्चबिशप के रूप में, सर्गेई पूर्व-परिषद सभा (1906) के सबसे सक्रिय सदस्यों में से एक थे; 1918 के बाद, उन्होंने रूस के चर्च जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और वे पैट्रिआर्कल सी के लो□□□ टेनेन्स (1925-1943) बने (वास्तव में, 1936-1943; 1936 से पहले, वे उप लो□□□ टेनेन्स थे। – अनुवादक की टिप्पणी); उनकी मृत्यु 1946 में हुई (1944 में। – अनुवादक की टिप्पणी) मॉस्को और सर्व रूस के पैट्रिआर्क के रूप में।*

[1244] 1862 में, सिनिड के मुख्य अभियोजक, अखमातोव ने तो धर्मशास्त्रीय अकादमियों के समक्ष यह प्रश्न भी उठाया कि क्या एक बिशप के रूप में अभिषेक के लिए मठवाद वास्तव में आवश्यक था, जो उस समय बिशप पद और मठवाद के साथ उसके संबंध के बारे में रखे गए विचारों का एक विशिष्ट लक्षण था। आर्किमैंड्राइट जॉन सोकोलोव ने 'बिशपों के मठवाद पर' (प्रव. सोब. 1863 में) नामक एक ग्रंथ लिखा, जिसे मेट्रोपॉलिटन फिलारेट ड्रोज़्डोव की स्वीकृति मिली। सावा. क्रॉनिकल. 2. पृ. 731; 4. पृ. 487. जॉन सोकोलोव, जो बाद में स्मोलेंस्क के बिशप बने († 1868), का यहाँ कई बार उल्लेख किया गया है; तुलना करें टिप्पणी 1228।

अध्याय XV. 18वीं–19वीं शताब्दियों में एल्डर का पद और तपस्या

1. वरिष्ठ प्रणाली की उत्पत्ति और उसका सार

हमारे विवरण से यह स्पष्ट है कि अपनी उत्पत्ति से लेकर 19वीं सदी के अंत तक रूसी मठवाद का विकास घर्षण और जटिलताओं से रहित नहीं था। इस विकास की कठिनाइयाँ इस तथ्य में निहित थीं कि मठवासी जीवन को धर्मनिरपेक्षता के खतरे से लगातार सामना करना पड़ता था, यहाँ तक कि उन समयों में भी जब भिक्षु मठ की दीवारों के बाहर सामाजिक और परोपकारी गतिविधियों की ओर विशेष रूप से झुकाव नहीं रखते थे। जैसा कि हम जानते हैं, रूसी चर्च में मठ कभी भी लोगों के जीवन से पूरी तरह से अलग नहीं हो सके: शुरुआत में इसलिए क्योंकि वे देश के सांस्कृतिक केंद्र थे, और बाद में, 16वीं शताब्दी की शुरुआत से, क्योंकि उस समय तक वे राज्य के राजनीतिक और आर्थिक जीवन के ताने-बाने में गहराई से समा चुके थे, और इसने उन्हें धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया में खींच लिया। हालांकि यह प्रक्रिया बहुत आगे बढ़ गई थी और मठवासी जीवन के केंद्र तक गहराई से प्रवेश कर गई थी, मठवासी तपस्या के उद्देश्य और अर्थ की सही समझ पूरी तरह से खो नहीं गई थी। एक निश्चित समय पर, रूसी मठवाद को भीतर से पुनर्जीवित करने की एक प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई, और पूर्वी चर्च की तपस्वी और रहस्यमय परंपरा इस पुनरुद्धार का आध्यात्मिक स्रोत बनने वाली थी। जिन लोगों ने इसके लिए प्रयास किया, उन्होंने ऊपर से मठ सुधार की कोई योजना नहीं बनाई, बल्कि मठ समुदाय के भीतर ही तपस्वी-आध्यात्मिक भावना को पुनर्जीवित करके मठवाद के आध्यात्मिक नवीनीकरण की खोज की। 18वीं सदी के अंतिम चौथाई भाग से 1917 तक का रूसी आध्यात्मिक मार्गदर्शन का इतिहास दर्शाता है कि यह प्रयास व्यर्थ नहीं था। धर्मनिरपेक्षता की प्रक्रिया ने मठवाद की स्वस्थ शक्तियों को नष्ट नहीं किया; इसकी गवाही केवल वृद्धों का आंदोलन ही नहीं देता है: वृद्धों के आध्यात्मिक प्रभाव के क्षेत्र के बाहर भी, सच्ची तपस्या के कई उदाहरण थे, और यह इस बात का और भी प्रमाण हो सकता है कि ईसाई तपस्या के अर्थ और उद्देश्य की सही समझ पूरी तरह से विकृत नहीं हुई थी।

संन्यासी वृद्धों ने, जिन्होंने कई सच्चे ईसाई तपस्वियों को पोषित किया था, और वृद्धों के आध्यात्मिक प्रभाव के क्षेत्र के बाहर तपस्या ने, सिनोडल युग के निर्जीव और उदास वातावरण को रोशन और गर्म कर दिया। यह स्पष्ट है कि मठवाद के समर्थकों और उनके समकालीनों ने वृद्धत्व में रूस में मठवासी जीवन के आगे के पुनरुद्धार और समृद्धि की एक आशा देखी - एक आशा जो केवल आंशिक रूप से ही साकार हुई।

हमने पहले भी वृद्धत्व के बारे में लिखा है, पुस्तक *द लाइफ़ एंड टीचिंग्स ऑफ़ द एल्डर्स* [] में, **जहाँ हमने इसके स्वभाव और सार, इसकी मुख्य विशेषताओं और उन विशेष तरीकों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है जिनसे इसने दुनिया को प्रभावित किया – यह सब उन वृद्धों के उदाहरणों से दर्शाया गया है जिन्हें हम विशेष रूप से उत्कृष्ट मानते हैं। इस कृति में, रूसी मठवाद के सामान्य इतिहास के संबंध में, हम आध्यात्मिक पिता की संस्था के संक्षिप्त इतिहास[1245] को भी प्रस्तुत करेंगे।**

वरिष्ठों की परंपरा, जो आज भी माउंट अथोस और अन्य ऑर्थोडॉक्स मठों में जीवित है, पूर्वी चर्च के मठों में प्राचीन काल से मौजूद है। शुरुआत में ही यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इसे धार्मिक प्राधिकरण द्वारा ऊपर से थोपा नहीं गया था। यह सबसे पहले मठवासी समुदायों में उभरा और पूर्व के सबसे प्राचीन मठों की उपजाऊ मिट्टी में फल-फूल गया। प्रारंभिक ईसाई तपस्वी और रहस्यमय मानसिकता से उत्पन्न आध्यात्मिक पितृत्व, मठवासी अनुशासन और भविष्य के भिक्षुओं के आध्यात्मिक मार्गदर्शन की नींव बन गया।

प्राचीन मिस्र के संतों के तपस्या के कारनामों का वर्णन करने वाले स्रोत बताते हैं कि सेंट एंथोनी द ग्रेट († 356) के समय में भी वहाँ आध्यात्मिक पितृत्व प्रणाली पहले से ही फल-फूल रही थी और यह नवसिखिया भिक्षुओं के आध्यात्मिक निर्माण का प्रमुख साधन था। मूल रूप से, प्राचीन ग्रंथों में वर्णित आध्यात्मिक पितृत्व—जो पवित्र मरुभूमि के पिताओं के जीवन के रूप में संकलित है—केवल बाहरी मठवासी अनुशासन को मजबूत करने का एक साधन नहीं था; यह युवा तपस्वी को, जो ईसाई पूर्णता की खोज में था, मसीह की शिक्षा के अनुसार इस पूर्णता के आंतरिक अर्थ को प्रकट करने का भी काम करता था, ताकि उसे उस शिक्षा की भावना में स्थापित किया जा सके। ऐतिहासिक रूप से, ऑर्थोडॉक्स मठों में आध्यात्मिक पिता के बढ़ते महत्व के साथ-साथ 'वरिष्ठ' की भूमिका का महत्व भी बढ़ा। एक आध्यात्मिक रूप से अनुभवी वृद्ध भिक्षु, जो प्रारंभिक तपस्या संबंधी लेखों में—उदाहरण के लिए, मिस्र के पितृवृत्तांत *मिस्र के पितरों के वचन* (Sayings of the Egyptian Fathers), जो 5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध का एक

[1245] वरिष्ठ के पद के बारे में, नीचे दी गई ग्रंथसूची देखें, जिसमें, हमारी राय में, पूर्वी चर्च में मठवासी तपस्या के इतिहास में इस घटना को समर्पित लगभग सभी कृतियों की सूची दी गई है।

ग्रंथ है, या किसी अन्य पितृवृत्तांत, *वेर्बा सीनियरम* (Verba seniorum) ['पैटर्स ऑफ द फादर्स'], को *पैट्र न्यूमाटिकी* या *पैटर स्पिरिचुअलिस* (आध्यात्मिक पिता) कहा जाता था, शब्द के सख्त अर्थ में एक पुरोहित या आध्यात्मिक पिता नहीं था[1246] . अधिकतर, वह एक पुजारी नहीं बल्कि एक भिक्षु होता था, जो मठाधीश के आशीर्वाद या अनुमति से, युवा नवसिख भिक्षुओं को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता था और उन्हें मठ में तपस्वी जीवन का अर्थ समझाता था। छोटे मठों में, मठाधीश स्वयं आमतौर पर आध्यात्मिक पिता होता था[1247] । इस तरह का आध्यात्मिक पिता, जिसे हम 'स्टारेट्स' (वरिष्ठ) कहेंगे, क्योंकि यह स्लाव और रूसी शब्द पूरी तरह से उस बात से मेल खाता है जो 'पैटर स्पिरिचुअलिस' अपने आध्यात्मिक बच्चों के लिए था, उसे स्वयं नवोदितों द्वारा चुना जाता था; इसे शुरू से ही उनका अधिकार माना जाता था, जो धार्मिक और पादरीय दृष्टिकोण से समझ में आता है[1248] । आम तौर पर, वरिष्ठ ही 'आध्यात्मिक पिता' शब्द के आधुनिक अर्थ में अपने नवसिखुओं के आध्यात्मिक पिता भी होते थे, लेकिन अक्सर नवसिखुओं का, वरिष्ठ के अलावा, एक अलग आध्यात्मिक पिता भी होता था – पूरे मठ का आध्यात्मिक पिता, जो, हालांकि, इस मामले में नवोदित भिक्षुओं के आध्यात्मिक विकास पर विशेष रूप से अधिक प्रभाव नहीं डालता था, और न ही वह ऐसा करने का प्रयास करता था, ताकि वह वृद्ध के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में हस्तक्षेप न करे या नवोदित को उसके संन्यासी पथ पर बाधा न पहुँचाए।

वरिष्ठ का कार्य युवा भिक्षु की आत्मा और इच्छा का मार्गदर्शन करना था। प्राचीन तपस्वियों की धारणा के अनुसार, यह कार्य अत्यंत जिम्मेदारी वाला था; वरिष्ठ के मार्गदर्शन में एक नवसिखुआ होना नवसिखुआ के लिए कोई आसान बात नहीं थी, लेकिन वरिष्ठ ने भी, युवा भिक्षु को अपनी देखभाल में लेते हुए, अपने ऊपर एक भारी बोझ ले लिया। एक अर्थ में, वृद्ध की भूमिका दोनों के लिए ईसाई पूर्णता का एक साधन थी: स्वयं वृद्ध के लिए और उनके सुपुर्द किए गए नवसिखुए के लिए। चर्च के सबसे महान और सबसे कठोर तपस्वियों में से एक, सेंट एफ्रेम द सीरियन ने एक वृद्ध के कर्तव्यों के बारे में इस तरह लिखा है कि इससे हमें न केवल उन आत्माओं के प्रति वृद्ध की अपार जिम्मेदारी का एहसास होता है जिन्हें उन पर सौंपा गया था, बल्कि यह भी कि नवसिखिए की आध्यात्मिक मार्गदर्शन का उद्देश्य स्वयं वृद्ध की आध्यात्मिक वृद्धि के लिए था: संत एफ्रेम सीरियाई ऐसे एक वृद्ध से कहते हैं, 'भैया, तुम्हें एक आत्मा सौंपी गई है, एक पुरुष की तरह कमर कस लो, क्योंकि तुम कोई छोटा काम नहीं कर रहे हो; तुमने स्वयं पर सिद्ध आत्माओं का कार्यभार ले लिया है।' इसलिए, अत्यधिक सतर्क रहें; इस कार्य में बहुत ध्यान की आवश्यकता है; इसकी उपेक्षा न करें; इसके विपरीत, हमारे पारस्परिक व्यवहार सभी पवित्रता के साथ संपन्न हों, ताकि हमारी लापरवाही से, शत्रु अधीनस्थ की आज्ञाकारिता का लाभ उठाकर, अपना कुछ भी बो न सके। और जो बड़े हैं, उन्हें छोटे लोगों के लिए हर सद्गुण का आदर्श होना चाहिए, ताकि दोष खोजने वालों को दोष लगाने का कोई कारण न मिले… एक शहर टुकड़ा-टुकड़ा करके बनता है, और उसके शासन से कलह उत्पन्न होती है। अनुभवहीन व्यक्ति अनुभवी की तरह धनुष नहीं चला सकता, और एक युवक के लिए एक पुरुष जितनी तेजी से दौड़ना असंभव है। यदि आप उस पर उसकी शक्ति से अधिक भार डालेंगे, तो आप उसे नुकसान पहुँचाएंगे; और यदि आप उसकी शिक्षा का ध्यान नहीं रखते, तो वह किसी काम का नहीं रहेगा। इसी प्रकार, नौसिखियों का भी विवेक से मार्गदर्शन किया जाना चाहिए: अहंकार के कारण उन पर बोझ न डालें, और न ही उनकी आत्मा की उपेक्षा करें। लेकिन, एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में, इस पर विचार करें कि आप स्वयं कभी अपने वरिष्ठों की आज्ञा का पालन करते थे, और उसी तरह, धीरे-धीरे, उन्हें तपस्या के मार्ग सिखाएँ… यदि, निगिरानी और सामान्य नियम पूरा करने के बाद, आप स्वयं जागना चाहते हैं, लेकिन आपका अधीनस्थ थोड़ी देर सोना चाहता है, तो उसे आराम करने दें। क्योंकि, जैसा कि ऊपर कहा गया है, एक युवक के लिए एक वयस्क के बराबर चलना असंभव है… यदि वह शारीरिक रूप से कमजोर है, तो उसे अस्वीकार न करें, बल्कि उसके साथ परिश्रम करें और उसके प्रति धैर्यवान रहें, जैसे कोई बुद्धिमान किसान जो अपने खेत में एक अच्छी फसल लगाता है। इसलिए, उसका शरीर परमेश्वर को प्रसन्न होने योग्य एक जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करो, ताकि हम भी उन लोगों के साथ दोषी न ठहरे जिन पर प्रेरित यह कहते हुए दोष लगाते हैं: 'उनका दिखावा तो भक्ति का है, परन्तु उन्होंने इसकी शक्ति को नकार दिया है' (1 तीमु. 3:5)। इसलिए, अपने शिष्य को हर अच्छे काम में शिक्षित करो, क्योंकि लिखा है: 'यदि तुम धर्मी को दुष्ट से अलग करोगे, तो तुम मेरे मुख

[1246] एपोप्टेग्माटा, में: मिग्ने. पीजी. 65; अत्यधिक मूल्यवान अध्ययन देखें: बूसेट, डब्ल्यू. *एपोप्टेग्माटा* (1923); विलिर, एम. एस. जे., और राहनेर, के. एस. जे. की कृति, *एज़ीस और मिस्टिक इन डेर वर्टरज़ाइट* (1939), भी ध्यान देने योग्य है। पृ. 115–121; इस विषय पर मुख्य साहित्य यहाँ सूचीबद्ध है। 'Verba Seniorum', PG 73, पृ. 855–1066 में। अन्य 'Paterika' और 'Florae' पर: Viller, पृ. 110 ff.

[1247] स्मिरिनोव, इन: बीवी. 1904. 11. पृ. 447 आदि। तुलना करें: होल. *एंथुज़ियास्मस उंड बुर्गेरगेवाल्ट्*. पृ. 255 आदि।

[1248] स्मिरिनोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 496–499। स्मिरिनोव के कार्य में चौथी से आठवीं शताब्दी तक की मठीय पदानुक्रम के इतिहास का उत्कृष्ट विवरण और इसके सार का उत्कृष्ट चित्रण शामिल है।

के समान होओगे' (1249)। आध्यात्मकि मार्गदर्शन के कर्तव्य में, वरष्ठि को अपनी देखरेख में सौंपे गए नवसखिुआ या भकि्षु के साथ अपने व्यवहार में महान धैर्य और नम्रता की आवश्यकता होती थी।

बड़ों ने ईसाई तपस्या की आवश्यकताओं को आध्यात्मकि मार्गदर्शन की नींव माना; चर्च के पतिाओं ने, जन्हिोंने इस परंपरा को सावधानीपूर्वक संरक्षति कयिा, सैद्धांतकि अवधारणाओं और व्यावहारकि अनुभव दोनों का सहारा लेते हुए, उनके वशिष महत्व के बारे में बताया। आध्यात्मकि गठन की यह प्रणाली तपस्या के अनुभव को ऑर्थोडॉक्स रहस्यवाद के साथ जोड़ती है। इस प्रकार, वृद्ध का पद तपस्या के अभ्यास और रहस्यमय चतिन के साथ मलि गया – व्यक्तगित पूर्णता के ये दो मार्ग, जनिके बारे में वृद्ध का पद उभरने तक ही एक सदी से भी अधकि का इतहिास था; यह वशिष रूप से वृद्ध के पद के कारण ही था कि तपस्या और रहस्यवाद को आध्यात्मकि मार्गदर्शन की एकल प्रणाली में एकीकृत कयिा गया। इस प्रकार, 'आंतरकि कार्य' की एक वशिष्टि परंपरा धीरे-धीरे आकार लेने लगी, जैसा कि ऑर्थोडॉक्स तपस्या में आध्यात्मकि संस्कार की पूरी प्रणाली को आम तौर पर कहा जाता है। इसका अंतमि लक्ष्य तपस्वी का दव्यिीकरण है, जसिमें ईश्वर की ओर एक लंबा और कठनि आरोहण शामलि है: इस आरोहण में पहला कदम वासनाओं और प्रलोभनों से शुद्धकिरण है। केवल आध्यात्मकि अभ्यास, अनुभवात्मक अभ्यास और चतिन, तथा मानसकि प्रार्थना के माध्यम से इस आरोहण को पूरा करके ही तपस्वी उच्चतम चरण के करीब पहुँचता है; और फरि उसके लिए द्वार खुल जाते हैं, जो उसे रहस्यमय ध्यान और मौन की आध्यात्मकि अवस्था में ले जाते हैं। इस चरण पर, उसे ईश्वर के साथ मलिन और दव्यिता प्राप्त करने के योग्य माना जाता है1250 । पूर्वी चर्च के दो महान तपस्वी और रहस्यवादी , कैलकिस्टस और इग्नेशयिस जेंथोपोलोस (चौथी शताब्दी के अंत में), अपनी कृति *द सेंचुरयिा*1251 में ऑर्थोडॉक्स तपस्वयिों के आध्यात्मकि अभ्यास का वस्तिार से वर्णन करते हैं।

मठ में प्रवेश करते समय वरष्ठिों द्वारा एक नवसखिुआ भकि्षु को सखिाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण बात आज्ञाकारतिा थी; एक नवसखिुआ की अपने वरष्ठि के प्रति आज्ञाकारतिा ही आध्यात्मकि पूर्णता की सीढ़ी पर भकि्षु की उन्नति के लिए पहली अनविार्य शर्त है। पहले से ही उल्लेखति कृतयिों—'अपोफ्क्लजीमाटा', 'वेर्बा सीनयिरम', 'लाउसैइक' और अन्य शुरुआती ईसाई पादरयिों के ग्रंथों—में कई अद्भुत कथाएँ और कहानयिाँ हैं जो पाठक को तपस्या के गठन में आज्ञाकारतिा के स्थान का अंदाज़ा देती हैं।

पवत्रि पतिाओं की रचनाएँ एक भकि्षु के तपस्वी नरि्माण के लिए आज्ञाकारतिा के महत्व पर वस्तिार से चर्चा करती हैं1252 । संत बेसलि द ग्रेट ने अपनी *नयिमों* में इस सद्गुण को काफी स्थान दयिा है; वह आज्ञाकारतिा को मठवाद की नींव और वरष्ठि तथा उनके शष्यि के बीच संबंध का आधार मानते हैं। महान कापाडोकयिन, जो पूर्वी मठवाद के आध्यात्मकि पतिा बने, कहते हैं: एक शष्यि की अपने गुरु के प्रति सच्ची और पूर्ण आज्ञाकारतिा इस तथ्य में व्यक्त होती है कि, गुरु के आदेश पर, वह अवविेकी कार्यों से बचता है, और गुरु की सहमति के बनिा प्रशंसनीय कार्य भी नहीं करता है। नवसखियिा भकि्षु को, वह बड़ी सावधानी और लंबे चतिन के बाद, यह सलाह देते हैं कि वह ऐसे व्यक्ति को खोजने का प्रयास करे जो जीवन के मार्ग पर नरि्दोष रूप से चलता हो, जो ईश्वर की ओर प्रयासरत लोगों का ज्ञानपूर्वक मार्गदर्शन करना जानता हो, और जसिने पवत्रि धर्मग्रंथ के अर्थ में गहराई से प्रवेश कयिा हो। बेसलि द ग्रेट के शब्दों में, जैसे ईश्वर अपने सेवकों से अपने प्रति पूर्ण भक्ति की मांग करते हैं, वैसे ही एक

1249 सरियिा के संत एफ्रेम की चयनति रचनाएँ। अनुवाद पी. ज़गिरले (1871)। खंड 3, पृष्ठ 227 आदि (BdKV. 13); तुलना करें: मेरी पुस्तक, उद्धृत कृति, पृष्ठ 27–31 में दिए गए उद्धरण।

1250 अधकि वविरण के लिए, मेरी पुस्तक (पृ. 38) देखें, साथ ही: श्मटि, बी. *Das geistige Gebet* (1916); वुंडरले, जी., *ओन द साइकोलॉजी ऑफ हेसकिैस्टकि प्रेयर* (1947) – यीशु प्रार्थना की तपस्वी और रहस्यमय उत्पत्ति पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण अध्ययन, जो इस तपस्वी अभ्यास के बारे में पछिली गलतफहमयिों का खंडन करता है; इसके अलावा: बाउर, आई., *इन्वेस्टगिेशंस इंटू द डॉक्ट्रनि ऑफ डफिकिेशन* *(1917-18); पोपोव, आई. द आइडयिा ऑफ डीफ़किेशन (1909); इसी लेखक द्वारा: 'द रलिीज़यिस आइडयिल ऑफ़ सेंट अथेनासयिस द ग्रेट', में: बीवी, 1903–1904; मनिनि, पी. 'द मेन ट्रेंड्स इन अर्ली क्रश्चियिन मस्टिसिज़्म', में: बीवी,* 1911–1914। हमारी ग्रंथसूची में संत समियिन द न्यू थयिोलोजयिन पर साहत्यि भी देखें; मैं वशिष रूप से आई. हाउशर के अध्ययन की अनुशंसा करता हूँ। देर के बाइज़ेंटाइन युग के सबसे बड़े रहस्यवादी, ग्रेगरी द साइनाइट पर साहत्यि बहुत कम है; बशिप एलेक्सयिस द्वारा वशिष रूप से उनके लिए समर्पति कार्य (मोल्चानोव), '14वीं सदी के बाइज़ेंटाइन रहस्यवादी' (1906), अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता। यह संक्षप्ति कृति भी देखें: बोइस, जे., 'ग्रेगुअर ले सनिाइट और एथोस में चौदहवीं सदी का हेसकिैज्म', *इकोस डी'ओरएिंट* में। 5. *190102 / पृ. 65–73 / यह भी देखें: हीलर, खंड 1, पृ. 390 ff., वशिष रूप से 407 ff. लॉट-बोरोडनि, एम. (*1932–33) *का अध्ययन वशिष रूप से मूल्यवान और शकि्षाप्रद है*।

1251 'द सेंचुरयिन' का पाठ, इसमें: Die Gottesschau im palamitischen Hesychasmus. Ein Handbuch der spätbyzantinischen Mystik. ए. एम. अमान (1938) द्वारा प्रस्तावना (बहुत मूल्यवान) और अनुवाद।

1252 मेरी पुस्तक में व्यक्तगित उदाहरण देखें, उदाहरण के लिए, अबा डोरोथयिस का अद्भुत वृत्तांत। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 31–34।

आध्यात्मिक पिता, जो अपनी मांगों को ईश्वर के विधान के अनुसार मापता है, को अपने आध्यात्मिक बच्चों से बिना प्रश्न के आज्ञाकारिता की मांग करने का अधिकार है[1253] ।

बेसिल द ग्रेट के समकालीन, पूजनीय एफ्रेम द सीरियन († 373), आज्ञाकारिता और विनम्रता के बीच आंतरिक संबंध के बारे में लिखते हैं, और संन्यासी को विनम्रता का सबसे बड़ा उदाहरण बताते हैं: 'इसके विपरीत, अपने मन में यह कल्पना करो कि हमारे सामान्य प्रभु मसीह ने हमारे लिए स्वयं को नम्र किया, मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी रहे।' 'मैं जो कह रहा हूँ उसे समझो: प्रभु आपको सभी बातों की समझ प्रदान करें'[1254] । जिसने भी संत जॉन († लगभग 650) की 'द लैडर' पढ़ी है, वह जानता है कि इस पवित्र तपस्वी ने आज्ञाकारिता को कितनी महत्वता दी। उनके लिए, आज्ञाकारिता 'इच्छा का ताबूत' और 'स्वैच्छिक मृत्यु' है[1255] ।

भिक्षुओं के निर्माण और आत्म-अनुशासन के साधन के रूप में आज्ञाकारिता के अलावा, ऑर्थोडॉक्स तपस्या नवसिखुआ को प्रार्थना की कला सिखाने पर भी विशेष ध्यान देती है, जो आध्यात्मिक पूर्णता का सबसे महत्वपूर्ण साधन और मोक्ष का एक साधन है। क्योंकि प्रार्थना न केवल व्यक्ति को वासनाओं के खिलाफ एक सफल लड़ाई लड़ने में मदद करती है, बल्कि यह तपस्वी की आध्यात्मिक उन्नति की नींव भी है, वह सीढ़ी जो अनुभवात्मक अभ्यास से रहस्यमय मनन तक ले जाती है।

मिस्र के पिता, जैसे कि मैकारियस अपने *स्पिरिचुअल कॉन्वर्सेशंस* में, ईसाई के आध्यात्मिक जीवन के लिए प्रार्थना के महत्व के बारे में बात करते हैं। साइनाई के तपस्वी और रहस्यवादी नीलस († 453) पहले व्यक्ति थे जिन्होंने प्रार्थना के रहस्यवाद को 'आत्मा का परमेश्वर के साथ संवाद' के रूप में वर्णित करने का प्रयास किया। वे कहते हैं, 'सिद्धों की एक परम प्रार्थना होती है,' यह मन का एक प्रकार का समाधि-आनंद है, जो इंद्रियों से इसका पूर्ण वियोग है, जब, आत्मा की अस्पष्ट आहों के द्वारा, यह उस ईश्वर के समीप आता है, जो हृदय की प्रवृत्ति को देखता है, जो एक लिखित पुस्तक की तरह खुला हुआ है और अपनी इच्छा को शब्दहीन छवियों में व्यक्त करता है। 'इस प्रकार पौलुस तीसरे स्वर्ग में उठा लिए गए और उन्हें यह नहीं पता था कि वह शरीर में थे या शरीर से बाहर'[1256] .

जॉन क्लाइमैकस प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की स्थिति का वर्णन इन शब्दों में करते हैं: 'प्रार्थना, अपने स्वभाव से ही, एक व्यक्ति का ईश्वर के साथ स्थायी संबंध और एकता है; लेकिन व्यवहार में यह शांति की स्थापना, ईश्वर के साथ मेल-मिलाप, आँसुओं की जननी और साथ ही पुत्री, पापों का प्रायश्चित, प्रलोभनों को पार करने के लिए एक पुल, दुखों से बचाने वाली एक दीवार, संघर्ष का अंत है… प्रार्थना में लंबा-चौड़ा बोलना अक्सर मन को भटका देता है और इसे दिवास्वप्नों से भर देता है, जबकि संक्षिप्तता आमतौर पर इसे एकाग्र करती है।" जॉन क्लाइमैकस में हमें प्रार्थना में आत्मा के समाधि-आनंद का पहला वर्णन मिलता है। यह रहस्यमय परंपरा सेंट सिमियन द न्यू थियोलॉजिस्ट († 1022) के 'हिम्न्स' (गीत) में जारी रही।[1257]

शब्दों के बिना, या केवल कुछ शब्दों के साथ प्रार्थना, जिसे 'मानसिक प्रार्थना' (mental prayer) के रूप में जाना जाता है, में अपनी अभिव्यक्ति पाई। इस कला को माउंट अथोस के तपस्वियों और भिक्षुओं द्वारा विशेष सावधानी से संरक्षित किया गया था, जिन्होंने इसमें एक तपस्वी अभ्यास और आत्मा के रहस्यमय समागम का मार्ग दोनों देखा[1258] । बाद के बाइज़ेंटाइन तपस्या और रहस्यवाद के महानतम व्यक्तियों में से एक, सिने के ग्रेगरी († 1346), जिन्होंने तपस्या और रहस्यमय विषय-वस्तु पर कई कृतियाँ लिखीं, ने हमें यह विवरण भी दिया है कि मानसिक प्रार्थना का अभ्यास कैसे किया जाता है। उनकी कृतियाँ: 'मौन का अभ्यास करने वालों के लिए निर्देश', 'मौन और प्रार्थना पर', 'मौन पर'[1259] – को मठवासी समुदाय, विशेष रूप से बुजुर्गों द्वारा, बहुत मान दिया जाता था, जिन्होंने चर्च की

[1253] बेसिल द ग्रेट, में: PG. 31. पृ. 884 C, 632 B, 1388 B. सेंट एंथनी द ग्रेट ने एक बार आज्ञाकारिता के बारे में कहा था: 'जब तुम किसी युवा भिक्षु को अपनी इच्छा से स्वर्ग की ओर चढ़ते हुए देखो, तो उसके पैर पकड़ो, उसे नीचे खींचो, क्योंकि यह उसके लिए अच्छा नहीं है', इसमें: पल्लैडियस, आर्चिमांड्राइट। न्यूली डिस्कवर्ड सेयिंग्स फ्रॉम अ कॉप्टिक कलेक्शन। द सेयिंग्स ऑफ द वेनेरेबल एंथनी (1898)। पृ. 14.

[1254] एफ्रेम द सीरियन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 226। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि कई प्राचीन ऑर्थोडॉक्स लेखन इस विचार को व्यक्त करते हैं कि मिसीह एक भिक्षु थे; तुलना करें: होल. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 164।

[1255] पीजी. 88. पृ. 706 सी.

[1256] फिलोकालिया। खंड 2 (1879)। पृ. 229.

[1257] इन 'भजनों' का उत्कृष्ट अनुवाद देखें: क्रिचहॉफ, पी. कलियिन, ओ.एफ.एम., *सिमिओन द थियोलोजियन: लाइट फ्रॉम लाइट*। दूसरी संस्करण, 1951; उपसंहार सिमिओन पर एक अत्यंत मूल्यवान अध्ययन है।

[1258] मेयर, पीएच. *डिए हाउपटुरकुंडन* (1894) और *ZfKG* में लेख: 11. 1890; साथ ही जी. वुंडरले और पोरफ़िरी उस्पेंस्की के कार्य (पुस्तक-सूची देखें)।

[1259] ये कृतियाँ यहाँ पाई जाती हैं: PG. 150. पृ. 1329–1346, 1313–1314, 1303–1304। तुलना करें: मेरी पुस्तक, उद्धृत कृति, पृ. 47 ff., 264।

तपस्या की परंपरा को नहीं भुलाया था। जहाँ भी बुजुर्गों की परंपरा फलती-फूलती थी, वहाँ मानसकि प्रार्थना आध्यात्मकि मार्गदर्शन और भकि्षुओं की नई पीढ़ियों के आध्यात्मकि पालन-पोषण का सबसे महत्वपूर्ण और प्राथमकि साधन थी।

18वीं शताब्दी के दूसरे भाग में, पूर्व के ऑर्थोडॉक्स मठों के तपस्वी और रहस्यमय जीवन में गरिावट की एक अवधि के बाद—यहाँ तक कि माउंट अथोस पर भी—तपस्या और रहस्यवाद का पुनरुत्थान फरि से शुरू हुआ, एक ऐसी आंदोलन जो पछिली बार 14वीं शताब्दी के हेसकिैस्ट्स के बीच वशिेष उत्साह के साथ प्रकट हुई थी[1260] । पवत्रि पर्वत के यूनानी अथोनाइट भकि्षु नकिोडेमस (1748–1809), जनि्होंने अपने अधकिांश समय को पूर्वी चर्च के पतिरों की आंतरकि जीवन पर रचनाओं का अध्ययन करने में समर्पति कयिा, ने एक संग्रह संकलति कयिा जसिे 1782 में वेनसि में यूनानी भाषा में 'फलिोकालयिा' ['ईश्वर प्रेम'] शीर्षक से प्रकाशति कयिा गया[1261] । नकिोडेमस का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह पहली बार था कि आध्यात्मकि मार्गदर्शन को पोषति करने वाले स्रोतों को एक ही संग्रह में एक साथ लाया गया था। वरषि्ठों के लिए, *फलिोकालयिा* एक तरह की संदर्भ पुस्तक या मार्गदर्शकिा बन गई; भकि्षु अब महान तपस्वी पतिाओं से अधकि आसानी से सीख सकते थे, और अपने नवसखिुओं और शषि्यों पर वरषि्ठों का व्यक्तगित प्रभाव और भी गहरा हो गया।

२. प्राचीन रूस में वृद्धजन

जब 18वीं और 19वीं शताब्दी में वृद्ध-प्रथा के इतहिास की ओर रुख कयिा जाता है, तो तुरंत यह सवाल उठता है कि क्या यह प्राचीन और मस्कोवाइट रूस के मठों में मौजूद थी, और यदि हाँ, तो उस समय यह कसि रूप में और कतिनी व्यापक थी। पुराने रूसी मठवासी जीवन के इतहिास पर हमारे नबिंध में, हमने जानबूझकर इस मुद्दे को छोड़ दयिा था ताकि हम इसे यहाँ, पछिले दो शताब्दियों में वृद्ध प्रणाली के इतहिास के संदर्भ में संबोधति कर सकें।

कीव रस के सबसे महत्वपूर्ण मठ - सेंट थयिोडोसयिस के गुफा मठ - में भकि्षुओं के जीवन की जांच करने पर, हमें वहां नवसखि भकि्षुओं के गठन के लिए डज़िाइन की गई एक वशिषि्ट संस्था के रूप में 'स्टारेट्स' प्रणाली का कोई सबूत नहीं मलिता है। संत थयिोडोसयिस ने अपनी मठाधीश पदवी को उस बाइज़ेंटाइन मठवासी जीवन के ज्ञान पर आधारति कयिा था जो उन्हें संत एंथनी से और कॉन्स्टेंटनिोपल से लाए गए नयिम, * *, से प्राप्त हुआ था। संत अथेनासयिस की, उनके वरिोधयिों, पवत्रि पर्वत के भकि्षुओं पर मलिी वजिय के तुरंत बाद, संत अंथोनी ने माउंट अथोस का दौरा कयिा, उस समय जब पवत्रि पर्वत पर पहले से स्वीकृत व्यक्तगित जीवन के नयिम के स्थान पर सेनोबटिकि नयिम लागू कर दयिा गया था; इसी कारण से, संत थयिोडोसयिस ने सामुदायकि जीवन को मठवासी जीवन का सबसे उत्तम रूप माना। और सेंट थयिोडोसयिस द्वारा शुरू कएि गए नयिम ने नवोदतिों के तपस्वी मार्गदर्शन के लिए सामुदायकि जीवन को आधार बनाया[1262] ।

यह परस्थितिि उल्लेखनीय है क्योंकि, 5वीं से 9वीं शताब्दी के दौरान पूर्वी चर्च में, वरषि्ठों ने सामुदायकि और एकांत दोनों तरह के मठों में नवसखिुआ भकि्षुओं को आध्यात्मकि मार्गदर्शन प्रदान कयिा। महान पाचोमयिस के सेनोबयिम में 'वरषि्ठ' की संस्था पहले से ही मौजूद थी; बाद में, फलिस्तीन में, पवत्रि सेंट सावस की लावरा में—जसिके नयिम ने सेनोबटिकि और इडयिोरैथमकि परंपराओं को मलिाया था—केवल उन भकि्षुओं को, जनि्होंने वरषि्ठों के मार्गदर्शन में सामुदायकि जीवन में अपना प्रशकि्षण पूरा कर लयिा था, उन्हें एकांत जीवन के नयिम के अनुसार रहने की अनुमति दी जाती थी। आमतौर पर, कई नवसखिुआ भकि्षु एक आध्यात्मकि पतिा ([1263]) के मार्गदर्शन में होते थे। यह ज्ञात नहीं है कि सेंट अथानासयिस (10वीं सदी) के समय माउंट अथोस के मठों में सामूहकि नयिम लागू करने के संघर्ष के दौरान आध्यात्मकि पतिा का पद बना रहा या नहीं; हालाँकि, यह संभव है कि अथोस के मठों या

[1260] हेसकिैस्ट्स पर, ग्रंथसूची में एंगेलहार्ट, एफ. स्टीन, पी. सरिकु, और मठाधीश बेसलि के कार्य देखें; और साथ ही: ओस्ट्रोगोर्स्की, जी., 'द एथोनाइट हेसकिैस्ट्स एंड देयर अपोनेंट्स', में: प्रोसीडगि्स ऑफ द रशयिन साइंटफिकि इंस्टीट्यूट इन बेलग्रेड, खंड 5 (1931), और आर्चमिंड्राइट का नया कार्य साइप्रयिन, 'द स्परिचिुअल फॉरफादर्स ऑफ सेंट ग्रेगरी पैलामास', में: थयिोलॉजकिल थॉट। प्रोसीडगि्स ऑफ द ऑर्थोडॉक्स थयिोलॉजकिल इंस्टीट्यूट इन पेरसि। पेरसि, 1942। पृ. 102–131; यहाँ लेखक एरेओपाजेट से लेकर ग्रेगरी पैलामास तक ऑर्थोडॉक्स रहस्यवाद के इतहिास की रूपरेखा प्रदान करते हैं।

[1261] नकिोडेमस द हेजयिोराइट पर, देखें: वलिर, एम. 'नकिोडमि ल'हेजयिोराइट', *रेव्यू डी'असेटकि एट डी मस्टिकि* में। 5 (1926); 5। ग्रुमेल. 'नकिोडमि ल'हेजयिोराइट', *डीटीएस* में। 11. 1. पृ. 487–490; तुलना करें: अमान। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 7–11।

[1262] गोल्बुइंस्की। 1. 1. पृ. 571, 605–606, 625। प्रसिलकोव। *कीवन रस के चर्च और राजनीतकि इतहिास पर नबिंध* (1913)। पृ. 168।

[1263] स्मरिनोव। द स्परिचिुअल फादर। पृ. 487–492. यह ध्यान देने योग्य है कि निर्सयिा के संत बेनेडकि्ट, अपने नयिम (अध्याय 21) में, 'डीन' (decani) का भी उल्लेख करते हैं, अर्थात्, अनुभवी वृद्ध भकि्षु, जनिके आध्यात्मकि मार्गदर्शन को दस नवोदतिों को सौंपा गया था। PL. 66. पृ. 483.

कॉन्स्टेंटिनोपल में आध्यात्मिक पिता का पद विशेष रूप से व्यापक नहीं था। जब सेंट थियोडोर द स्टुडाइट († 826) 'पैटर स्पिरिचुअलिस' (pater spiritualis) का उल्लेख करते हैं, तो उनका तात्पर्य मठ के मठाध्यक्ष से होता है। महान स्टुडाइट सामुदायिक जीवन के एक दृढ़ समर्थक थे, उस प्रकार के जीवन का जिसमें मठ के भीतर सभी अधिकार मठाध्यक्ष के हाथों में केंद्रित होते हैं[1264] । कीव केव्स मठ में थियोडोसियस द्वारा शुरू किया गया मठवासी नियम, जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, स्टुडाइट नियम का एक विशेष संस्करण है। सेंट थियोडोर की तरह, थियोडोसियस भी अपने मठ के भिक्षुओं के मठाध्यक्ष और आध्यात्मिक पिता दोनों थे। वे मठ के आध्यात्मिक निदेशक भी थे, और आध्यात्मिक मार्गदर्शन भिक्षुओं की देखभाल का प्राथमिक साधन बन गया; यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि उन्हें भिक्षुओं के बीच बहुत अधिक अधिकार प्राप्त था, यही कारण है कि उनके व्यक्तित्व में मठाध्यक्ष और आध्यात्मिक पिता का ऐसा सफल संयोजन संभव था, जैसा कि अक्सर मिस्र के प्राचीन मठों में होता था[1265] । संत थियोडोसियस के कार्यकाल में, मठाध्यक्ष के अधिकार ने वरिष्ठों की भूमिका को पृष्ठभूमि में धकेल दिया, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि रूस में मठवाद की शुरुआती शताब्दियों में मठाध्यक्ष के अधिकार को उच्चतम स्तर तक बढ़ाना और इस प्रकार भिक्षुओं में आज्ञाकारिता की भावना को गहरा करना पूरी तरह से आवश्यक था। परिणामस्वरूप, कीव-पेचेरस्क पैट्रिकॉन में, जो अपने पवित्र संस्थापक की मृत्यु के बाद मठ के जीवन का वर्णन करता है, वृद्ध प्रणाली के अस्तित्व का कोई उल्लेख नहीं है।

इसी तरह, कीव-रूस के अन्य मठों में वरिष्ठता प्रणाली का कोई प्रमाण नहीं मिलता है, जो अलग रहने के नियम का पालन करते थे।

केवल टुरोव के सिरिल (12वीं शताब्दी के अंत) की रचनाओं में ही हमें वरिष्ठ के पद के पहले निशान मिलते हैं। अपनी रचना 'द टेल्स ऑफ द मॉनास्टिक ऑर्डर' में, वह लिखते हैं: 'और तुम भी, भाई, ऐसे व्यक्ति को खोजने का प्रयास करो जिसके पास मसीह की आत्मा हो, जो गुणों से सुसज्जित हो और जिसने अपने पूरे जीवन में आज्ञाकारिता दिखाई हो, सबसे बढ़कर प्रभु के प्रति प्रेम, मठाध्यक्ष के प्रति आज्ञाकारिता (!), और भाइयों के प्रति विनम्रता, दिव्य धर्मग्रंथों की समझ रखने वाला और इस प्रकार स्वर्ग में परमेश्वर की ओर दूसरों का मार्गदर्शन करने वाला। 'अपने आप को उसके हवाले कर दो, जैसे कालेब ने यीशु को किया था, अपनी पूरी इच्छाशक्ति को काटकर'[1266] । इन शब्दों में हम प्राचीन तपस्वियों के बीच मौजूद, वृद्ध और उसके शिष्य के बीच संबंध का वर्णन देखते हैं।

स्मोलेंस्क के अव्रामी († 1221) और स्थानीय आबादी के बीच संबंध (अध्याय II देखें) को परिभाषित करना अधिक कठिन है। शायद यह वृद्ध के अधिकार का प्रकटीकरण उतना नहीं था, जितना कि इस बात का प्रमाण था कि इस पवित्र तपस्वी का आम लोगों पर कितना गहरा प्रभाव था—कुछ ऐसा जो केवल 19वीं सदी में ऑप्टिना हर्मिटेज के वृद्धों के बीच देखा जा सकता था। जो लोग सलाह और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए अब्राहम के पास आते थे, उनकी संख्या, रहस्यवाद की ओर उनका झुकाव, उनका विद्वता (जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है) – यह सब उस युग में एक बहुत ही दुर्लभ घटना थी[1267] ।

पुराने रूसी मठ व्यवस्था के शोधकर्ताओं के लिए 'starets' शब्द के कई अर्थों में एक महत्वपूर्ण चुनौती निहित है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, 'starets' शब्द का तात्पर्य एक वृद्ध भिक्षु से था जो पुरोहित पद धारण नहीं करता था – अर्थात् जो हाइरोमोंक नहीं था। इसके अलावा, 'कैथेड्रल एल्डर्स' शब्द का प्रयोग उन भिक्षुओं के लिए किया जाता था जो मठाधीश के साथ मिलकर मठ का प्रबंधन करते थे; अक्सर, 'एल्डर' की उपाधि स्वयं मठाधीशों को भी प्रदान की जाती थी। अंत में, 'एल्डर्स' शब्द का प्रयोग उन भिक्षुओं पर भी किया जाता था जो नवसिखुओं को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते थे। इस संबंध में, नोवगोरोड के आर्चबिशप सिमियन (1417–1421) का स्नेतोगोर्स्क मठ को लिखा एक पत्र विशेष रूप से सार्थक है: इसमें, 'एल्डर' शब्द दो उदाहरणों में हमारे अर्थ के एक एल्डर - pater spiritualis (आध्यात्मिक पिता) - को संदर्भित करता है - जबकि दो अन्य में यह परिषद को संदर्भित करता है elders[1268] ।

[1264] स्मिरनोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 481। सेंट थियोडोर पर विस्तृत और मौलिक कार्य के लिए यह भी देखें: डोब्रोक्लोन्स्की, ए. सेंट थियोडोरस, कन्फेसर और स्टुडियोन के मठाधीश। खंड 1 (1913)। पृ. 441, 443; तुलना करें: पीजी. 99. पृ. 1784 ए, 1717 सी – 1820 बी, 1822 बी।

[1265] स्मिरनोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 477; वही। द ओल्ड रशियन स्पिरिचुअल फादर (1914)। पृ. 22, 25; बेसिल द ग्रेट, में: पीजी. 31. पृ. 1185.

[1266] 'काले वस्त्रधारी संप्रदाय की कथा', में: कालायदोविच। 12वीं सदी के रूसी साहित्य के स्मारक (1821)। पृ. 107; तुलना करें: गोलुबिंस्की. 1. 1. पृ. 797; निकोल्स्की, एन. पुरानी रूसी धार्मिक साहित्य के इतिहास के लिए सामग्री (1907). पृ. 65–94.

[1267] अब्राहम का जीवन: पुराने रूसी साहित्य के स्मारक। 1 (1911); तुलना करें: अध्याय I।

[1268] आरआईबी. 6. 45. पृ. 389; स्मिरनोव. द ओल्ड रशियन स्पिरिचुअल फादर. पृ. 26; मालिन. फिलोथियस, द एल्डर ऑफ द एलेज़र मॉनास्ट्री. पृ. 40–42.

यदि हम रूस में तपस्या और मठवाद के स्वर्ण युग के सबसे महान संत, राडोनेज़ के सेंट सेर्गीयस के कार्यों और कारनामों की ओर देखें, तो हम देखेंगे कि वह, एक तरह से, के संस्थापक थे रूसी मठवाद के इतिहास में एक पूरे स्कूल के संस्थापक, जिनके प्रतिनिधियों ने उनके तपस्वी कार्य को जारी रखा और स्वयं कई मठों की स्थापना की। हमारे लिए यह स्थापित करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है: संत सेरगियस और उनके शिष्यों के बीच संबंध की प्रकृति क्या थी? क्या हम कह सकते हैं कि ट्रिनिटी-सर्गेस लवरा में आध्यात्मिक पितृत्व की प्रणाली मौजूद थी? सेंट सर्गेस या उनके मठ से आए संन्यासियों के जीवन में इसका कोई संकेत नहीं मिलता है। सेंट सर्गेस ने अपने मठ का प्रबंधन सामुदायिक नियमों के आधार पर किया; सबसे बढ़कर, वह मठाधीश और आध्यात्मिक पिता थे। मठ के उनके प्रबंधन से हमें सेंट थियोडोसियस के केव्स मठ की याद आती है, लेकिन यह मानना कठिन है कि सेंट सर्गियस को केव्स मठ[1269] में जीवन-यापन के तरीके के बारे में कुछ विशेष पता था। किसी भी हाल में, हमारे पास इस बात का कोई भी प्रमाण नहीं है कि ट्रिनिटी-सर्गियस लावरा में वरिष्ठता की कोई प्रणाली मौजूद थी।

14वीं शताब्दी में, कई छोटे मठ स्थापित हुए, जिनमें से कुछ वोलगा के पार के क्षेत्र में सर्गियस के शिष्यों द्वारा स्थापित किए गए थे। वोलगा और बेलोये झील के बीच यह विशाल क्षेत्र तपस्या के प्रयासों के लिए एक नया केंद्र बन गया। भिक्षु यहाँ दो या तीन के समूह में बस गए; अक्सर वे एक ही मठ से आते थे, जबकि अन्य समय में वे रास्ते में मिलते थे और उनकी जान-पहचान एक घनिष्ठ भाईचारे में बदल जाती थी। समय के साथ, उनके स्केट्स—जो शुरू में दो या तीन कोठरियों से मिलकर बने होते थे—तपस्थलियों में विकसित हो गए, विशेष रूप से यदि उत्साही भाइयों ने एक चर्च बनाने में कामयाबी हासिल कर ली। यह अकल्पनीय नहीं है कि इस अवधि के दौरान, भिक्षुओं के बीच संबंधों में आध्यात्मिक पितृत्व जैसी एक प्रणाली उभरी—मुख्य रूप से वरिष्ठ भिक्षुओं और नवसिखुओं के बीच—लेकिन हमारे पास इस मामले पर कोई विश्वसनीय जानकारी नहीं है।

बेलोजेर्स्क के आदरणीय सिरिल († 1427) ने भी अपने मठ का संचालन कठोर सामुदायिक जीवन के आधार पर किया; मठ के भीतर सभी अधिकार मठाधीश के हाथों में थे। प्रिंस एंड्रेई मोझाइस्की को लिखे एक पत्र में, वह अपने 'आध्यात्मिक बच्चों' - प्रिंस एंड्रेई और हिरोमोंक इनोकेन्टी का भी उल्लेख करते हैं, जिन्हें वह मठाधीश नियुक्त करना चाहते थे। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि उनके बीच किस प्रकार का आध्यात्मिक संबंध विकसित हुआ था: क्या संत सिरिल केवल राजकुमार के आध्यात्मिक पिता थे, या वे एक तरह से उनके आध्यात्मिक वरिष्ठ थे, जबकि इनोकेन्टी के साथ उनका संबंध वास्तव में आध्यात्मिक वरिष्ठ की भूमिका के कुछ लक्षण प्रदर्शित करता था[1270] ।

[1271]प्राचीन रूस में आध्यात्मिक गुरु-शिष्य संबंध के अस्तित्व के और सबूत सेंट पॉल ऑफ ओब्नोर्स्क († 1429) के मठ में मिल सकते हैं। पॉल राडोनेज़ के सेंट सर्गियस के मठ में एक भिक्षु थे। सेंट सर्गियस का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, वह वोल्गा के पार सुनसान जंगलों की ओर चल पड़े और ओब्नोरा नदी के पास बस गए। कुछ समय बाद, वहाँ एक मठ बन गया, और पॉल इसके मठाधीश बने। 15वीं शताब्दी में, इस मठ में 'एक निश्चित वृद्ध संन्यासी द्वारा अपने शिष्यों को मठवासी जीवन पर उपदेश' नामक एक ग्रंथ लिखा गया था; यह 17वीं शताब्दी की पांडुलिपियों में संरक्षित है, और यह इस बात का संकेत दे सकता है कि उस समय 'उपदेश' को व्यवहार में लाया जा रहा था। यह कृति नवसिखुआ भिक्षुओं के लिए एक वृद्ध भिक्षु के मार्गदर्शन के सिद्धांतों को निर्धारित करती है, जिसमें मठ में उनके जीवन और वृद्ध भिक्षुओं के साथ उनके संबंधों पर विभिन्न प्रकार की सलाह दी गई है; इसमें मानसिक प्रार्थना और यीशु प्रार्थना[1272] पर भी चर्चा की गई है। इसके अलावा, सेंट पॉल के जीवन से हम जानते हैं कि नवसिखिया मठवासी, जिसे संत ने वरिष्ठ के प्रति आज्ञाकारिता की मांग की थी, उन्हें अनुभवी मठवासियों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए सौंपा गया था।

और एक अन्य कृति, जिसका वर्णन अध्याय IX, 4 में किया गया है – 'नवसिख भिक्षुओं के लिए वरिष्ठ का निर्देश कि वरिष्ठ के प्रति आज्ञाकारिता में कैसे रहना चाहिए' – इस तथ्य की पुष्टि करती है कि 15वीं शताब्दी के अंत और 16वीं शताब्दी की शुरुआत में कुछ मठों में, नवसिखों और नवसिख भिक्षुओं की आध्यात्मिक देखभाल वरिष्ठों को सौंपी गई थी[1273] । 'अपनी कोठरी में ध्यानपूर्वक बैठने के लिए अपने शिष्य को निर्देश' भी 16वीं शताब्दी

[1269] हालाँकि, मिखरिश्चे के स्टीफन († 1406) 1355 के बाद दक्षिणी रूथनिया से सेंट सर्जियस आए; हो सकता है कि वह अपने साथ कीव केव्स मठ की परंपरा लाए हों। गोलुबिन्स्की। सेंट सर्जियस और द ट्रिनिटी लावरा हू फाउंडेड (1909)। पृ. 82.

[1270] पत्र: AI. 1. संख्या 32 और 15।

[1271] कोनोपलेव। पूर्वोक्त, पृ. 71.

[1272] तुलना करें अध्याय IX, 4, अंत में।

[1273] अध्याय IX, 4 देखें।

की शुरुआत का है – यह एक तपस्वी ग्रंथ है, जो इसी तरह वरिष्ठ की भूमिका को समर्पित है; इस कृति की मूल पांडुलिपि संभवतः14वीं शताब्दी में लिखी गई थी[1274] । यह निर्धारित करना मुश्किल है कि इसे कभी व्यवहार में लाया गया था या नहीं। किसी भी स्थिति में, मिस्र और सीरिया के ऑर्थोडॉक्स मठों में व्यापक रूप से प्रचलित एल्डर की प्राचीन परंपरा, 16वीं शताब्दी के पहले छमाही के दौरान मॉस्को के मठवासी हलकों में जानी जाती थी।[1275] इस प्रकार, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन सेंट फिलिप († 1568) की जीवनी में वर्णित है कि फिलिप ने सोलोवेत्स्की मठ में प्रवेश करने के बाद 'ईश्वरभक्त भिक्षु' योना के मार्गदर्शन में कई वर्ष व्यतीत किए[1276] ।

'महान वृद्ध', आदरणीय नीलस ऑफ सोरा (1433–1508) के आध्यात्मिक शिष्यों के चक्र में और उनके बीच वृद्ध की भूमिका के सबसे विशिष्ट प्रकटीकरण मिलते हैं। उनके स्केट जीवन-शैली पर 'नियम' और 'परंपरा' से यह स्पष्ट है कि उन्हें वृद्ध की भूमिका का बहुत स्पष्ट बोध था, और उन्होंने स्वयं एक वृद्ध के रूप में कार्य किया[1277] । पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत के विभिन्न लघु लेखों के आधार पर, हम उनके साथ जुड़े एक स्कूल की भी बात कर सकते हैं, जिसमें ट्रांस-वोलगा क्षेत्र के छोटे-छोटे स्केट्स में परिश्रम करने वाले तीन 'पीढ़ियों' के बड़ों और उनके शिष्यों शामिल थे। परिशिष्ट में, हम उनके बीच आध्यात्मिक संबंधों का एक आरेख (तालिका VII) प्रदान करते हैं। संभवतः नीलस ने मठवासी जीवन का मूल सिद्धांत माउंट अथोस पर ही सीखा, जहाँ उन्होंने मठवासी पैसियस यारोस्लावोव की सलाह पर तीर्थयात्रा की थी, जिन्हें उस समय के लेखों में 'एल्डर' (वरिष्ठ) कहा गया है और ऐसा प्रतीत होता है कि वे वास्तव में एक एल्डर थे; नीलस ने उनके अधीन तपस्वी प्रशिक्षण प्राप्त किया। संभवतः पैसियस यारोस्लावोव († 1503 के तुरंत बाद) के प्रभाव में ही नील में पवित्र पर्वत की यात्रा करने की इच्छा जागी। पाइसियस ने स्वयं स्पासो-कामेन्नी मठ में अपना संन्यासी जीवन शुरू किया, जहाँ, मठाध्यक्ष डायोनिसियस (1389–1418) — जो बाद में माउंट अथोस के एक ग्रीक, रोस्तोव के बिशप बने — की बदौलत, माउंट अथोस के संन्यासियों के जीवन और कार्यों के बारे में अच्छी तरह से जाना जाता था। बाद में, पैइसियस ने किरिलोव मठ में शरण ली, जहाँ नील, जो उनसे काफी छोटा था, उनसे मिला और उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शन में आ गया। माउंट अथोस की तीर्थयात्रा ने एल्डर के कार्यालय की नील की समझ को पूरा किया[1278] ।

मंगुप के सेंट कैसियन की जीवनी से हमें पता चलता है कि लगभग 1488 और 1494 के बीच वह ट्रांस-वोलगा क्षेत्र में फेरपोंटोव मठ में वृद्ध फिलिरेट का शिष्य था। संत कैसियन, जो जन्म से ग्रीक थे और संन्यास का व्रत लेने से पहले करीमिया के मंगुप-काले शहर के राजकुमार कॉन्स्टेंटिन थे, राजकुमारी सोफिया पलाइओलोगिना के साथ मास्को पहुँचे, जो बाद में इवान तृतीय की पत्नी बनीं। 1488 में, या कुछ साल बाद, वह फेरापोंतोव मठ में प्रवेश कर गया, जहाँ उसने अपने संन्यासी संस्कार ग्रहण किए और वरिष्ठ फिलिरेत का शिष्य बन गया। 1494 में, कैसियन ने एक संन्यास-आश्रम की स्थापना की जहाँ एक सामुदायिक नियम लागू किया गया। वह स्वयं वहाँ एक साधारण भिक्षु के रूप में रहे और 120 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। यह दृष्टिकोण कि कैसियन, नीलस के शिष्य थे, का खंडन बाद के शोध[1279] द्वारा किया गया है।

यह फेरपोंटोव मठ में एक अलग-थलग घटना नहीं थी, जैसा कि इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि भिक्षु गैलाक्शियन, एक पवित्र मूर्ख († 1506), जिन्हें बाद में संत घोषित किया गया , ने अपने वहाँ रहने के दौरान मठ के मठाधीश, परम पूजनीय मार्टिनियन के साथ एक ऐसा संबंध बनाए रखा जो एक वरिष्ठ और शिष्य के बीच के संबंध जैसा था[1280] ।

वरिष्ठ आर्टेमियस, जिन्हें हम पिछले अध्यायों से पहले से ही जानते हैं, ने संभवतः अपनी तपस्या-प्रशिक्षण को ट्रांस-वोलगा क्षेत्र के एक वरिष्ठ की मदद के बिना पूरा नहीं किया होगा[1281] । हालाँकि, 16वीं सदी में नॉन-पॉज़ेसर्स द्वारा झेले गए उत्पीड़न ने ट्रांस-वोलगा के रेगिस्तानों की मठवासी समुदायों को अछूता नहीं छोड़ा;

[1274] गोल्बुंस्की। 2. 2. पृ. 295.

[1275] झमाकिन। मेट्रोपॉलिटन डेनियल। पृ. 375, 492, 602; पेट्रोव, एन. स्लावकि-रूसी प्रोलाग की उत्पत्ति और संरचना पर (1875)। पृ. 116.

[1276] फेदोतोव। प्राचीन रूस के संत। पृ. 60.

[1277] सोर्स्की के नीला, संन्यासी के जीवन पर परंपरा और नियम (1849) और अन्य संस्करण; तुलना करें अध्याय IX, 4 और मेरी पुस्तक *लेबेन उंड लेरे डेर स्टारज़ेन*।

[1278] क्लुचेव्स्की। लाइव्स। पृ. 190; फिलारेट। रिव्यू। 3रा संस्करण। खंड 1। पृ. 106; कोनोपलेव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 38 आदि; आर्खान्गेल्स्की। नील ऑफ़ सोर्स्क और वासियन पेट्रिकीव। पृ. 16, 30; प्राव. सोब. 1861। खंड 1। पृ. 197–214; पीएसआरएल। खंड 5। पृ. 236।

[1279] ब्रिलियंटोव। फेरापोन्टोव मठ (1899)। पृ. 56–59; ज़्वेरींस्की। खंड 1, संख्या 810; अर्खांगेल्स्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 55।

[1280] हीरे। संकलित कृतियाँ, पृ. 17। तपस्वी गैलाक्शियन पर: रीडिंग्स, 1887, खंड 4, पृ. 147; इस गैलाक्शियन को वोल्गोदा के पूजनीय गैलाक्शियन († 1612) के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

[1281] वरिष्ठ आर्टेमी के तपस्वी और रहस्यमय दृष्टिकोणों के लिए अध्याय X देखें।

जोसेफाइट्स और नॉन-पॉज़ेसर्स के बीच ववािद का रूस में एल्डर परंपरा के वकिास पर आम तौर पर हानकिारक प्रभाव पड़ा। नीलस और उनके नकिटतम शष्यिों - एल्डर आर्टेमी, जो शायद इस स्कूल के अंतमि शक्षिति अनुयायी और उत्साही समर्थक थे - की तपस्वी-रहस्यवादी परंपरा को 16वीं सदी के प्रमुख धार्मकि-राजनीतकि रुझान द्वारा हरा दयिा गया और यह धीरे-धीरे पतन की ओर चली गई[1282] ।

और फरि भी, 17वीं सदी के मुंडन संस्कार से हम जानते हैं कि उस समय एक नवोदति भक्षिु को एक अनुभवी भक्षिु के आध्यात्मकि मार्गदर्शन के लिए सौंपना प्रथागत था - न कि इसलिए कि 'स्टारेट्स' की भूमकिा को भक्षिुओं के आध्यात्मकि नर्िमाण के लिए एक आवश्यक साधन माना जाता था, बल्कि केवल मठवासी परंपरा के प्रतनिष्ठिा के कारण। साथ ही, मठाधीश दोनों भक्षिुओं - नवसखिु और अनुभवी भक्षिु - को लगभग वही शब्द बोलता था जो 15वीं सदी की 'परंपरा' में नहिति थे। हालाँकि, वरष्ठि और उनके शष्यिों के बीच दनि-प्रतदिनि के संबंधों के बारे में, जो वास्तव में वरष्ठि की भूमकिा की प्रकृतकिो परभिाषति करते हैं, हमारे पास दुर्भाग्य से कोई सटीक जानकारी नहीं है[1283] ।

18वीं सदी से पहले रूसी मठों में वरष्ठि की भूमकिा के बारे में हमें बस इतना ही पता है। इस भूमकिा का हमारा इतहिास अधूरा है; फरि भी, यह स्पष्ट है कि मस्कोवाइट रस में वरष्ठि की भूमकिा वास्तव में जानी जाती थी, भले ही वह उस युग में फल-फूल नहीं सकी। केवल 18वीं और 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही एल्डर का पद रूसी मठों में वास्तव में जड़ें जमा सका।

3. एल्डर पैसयिस वेलीचकोव्स्की और उनका 'वद्यिालय'

18वीं सदी के अंतमि चौथाई भाग में मठवासी जीवन और एल्डर के पद का पुनरुत्थान, पूर्वी चर्च के प्राचीन मठवाद की तपस्या और रहस्यमय परंपराओं के एक सख्त तपस्वी और उत्साही रक्षक की आकृतसि नकिट रूप से जुड़ा हुआ है - हम एल्डर पैसयिस वेलीचकोव्स्की का उल्लेख कर रहे हैं, जनिका नाम हमारी चर्च के इतहिास में हमेशा के लिए रहेगा।

धर्मनरिपेक्ष जीवन में, पैइसयिस को प्योटर वेलीचकोव्स्की के नाम से जाना जाता था। वह एक पादरी का पुत्र था। उसका जन्म 21 दसिंबर 1722 को पोल्टावा में हुआ था और उसने अपना बचपन एक ऐसे परविार में बतिाया जो धार्मकि आस्था को महत्व देता था, जहाँ चर्च के सभी नयिम और वधिान दैनकि जीवन में सख्ती से पालन कयि जाते थे। पीटर एक शांत, संकोची बच्चा था जसिे पढ़ना पसंद था; स्वाभावकि रूप से, घर में केवल वही कतिाबें रखी जाती थीं जो उसके माता-पति के धार्मकि वचिारों के अनुरूप थीं; उस समय सबसे आम कतिाब 'बुक ऑफ आवर्स' थी, जो आमतौर पर बच्चों के पढ़ने के लिए पहली कतिाब होती थी, जसिके बाद 'साल्टर' और अंत में संतों और तपस्वयिों के जीवन की कतिाबें आती थीं। युवा पीटर ने यह सब पूरी तरह से पढ़ा, न तो कसिी जबरदस्ती से, बल्कि अपनी स्वेच्छा से, अपनी प्रवृत्तऔिर अपनी आत्मा की स्वाभावकि प्रवृत्तके कारण। 13 वर्ष की आयु में, उन्हें 'भाईचारे के स्कूल' में प्रवेश मलिा। उनकी माँ चाहती थीं कि उनका सबसे छोटा बेटा, अपने सभी पूर्वजों, उनके पति और बड़े भाई की तरह, एक पैरशि पादरी बने और अपने भाई की पैरशि का उत्तराधकिारी बने, जैसा कि उस समय प्रथा थी। लेकनि अपनी शुरुआती युवावस्था में ही, पीटर ने एक मठ में प्रवेश करने और एक भक्षिु बनने की इच्छा महसूस की थी, और आने वाले वर्षों के साथ यह इच्छा और भी प्रबल होती गई। एक पैरशि पादरी का मंत्रालय, जसिे वह अपने स्वयं के अवलोकनों से अच्छी तरह जानता था, शायद उसे संतुष्ट नहीं करता था। संन्यास संबंधी लेखन को पढ़ने से उसके जीवन की योजनाओं पर प्रभाव पड़ा: यरूशलेम, माउंट अथोस, या कसिी ऐसे मठ की यात्रा जहाँ धर्मनष्ठि भक्षिु मठवास में तपस्या करते थे – यह सब उसे एक पैरशि पादरी के जीवन से कहीं अधकि आकर्षक लगा। अपनी जीवनी में, लेखक ने इस युवा वद्विान के इन धार्मकि सपनों की प्रशंसा की: 'क्योंकि प्रभु ने उसकी युवावस्था में ही उसे तर्क, ज्ञान और वनिम्रता की सफेद दाढ़ी प्रदान की थी।'

एक रात, पीटर चुपके से स्कूल से भाग गया, कीव छोड़ दयिा और एक लंबी यात्रा पर नकिल पड़ा (1739)। रास्ते में, वह द्नीपर नदी के कनिारे ल्यूबेच शहर के पास ल्यूबेच मठ में रुका। मठ के मठाधीश ने उसका गर्मजोशी से स्वागत कयिा, उसे मठ में रहने का आशीर्वाद दयिा और यहाँ तक कि उसके लिए एक कोठरी भी आवंटति कर दी। इस प्रकार उसकी योजनाओं को साकार करने की दशिा में पहला कदम उठाया गया, क्योंकि पीटर के आध्यात्मकि पति, हाइरोस्केमामोंक पाचोमयिस—जन्हिें उस युवक ने साधु जीवन की ओर अपनी प्रवृत्तके बारे में बताया था—ने उसे

[1282] मस्कोवी में यीशु की प्रार्थना के प्रसार पर (जो हमेशा वृद्ध के पद से जुड़ी नहीं थी), देखें: ऑर्लोव, ए. '16वीं शताब्दी में मस्कोवी में यीशु की प्रार्थना', में: पीडीपी. 185 (1914), परचिय और पाठ।

[1283] आर्कमैंड्राइट इनोकेन्टी। टोंसुर इनटू मोनास्टसिीज्म (1899)। पृ. 230; यह नर्दिेश छोटे स्कीमा में टोंसुर के दौरान मठाधीश द्वारा दयिा गया था।

पहले ल्यूबेच मठ जाने की सलाह दी थी, जहाँ उसे अगला कदम क्या होगा, यह बताया जाएगा। एक नवसखिया के रूप में स्वीकार कए जाने के बाद, पीटर ने मठ में वभिन्नि कार्य कए।

पैसयिस की जीवनी में दया गया वह ववरण, जो यह समझाता है कि उन्होंने ल्यूबेच मठ क्यों छोड़ा, उस युग के मठवासी जीवन को दर्शाता है। इस ववरण से हमें पता चलता है कि मठ के मठाधीश के लए ऐसी स्थति के लए उपयुक्त एक संन्यासी का होना कतिना महत्वपूर्ण था, क्योंकि एक बहुत ही मजबूत मठ समुदाय का भी टूटना अक्सर मठ के अधकिारयों की गलती के कारण होता था। पीटर कई महीनों से मठ में रह रहा था जब एक नया मठाधीश नयिुक्त हुआ: भक्षिु के वेश में एक जद्दिी और असभ्य व्यक्ति, जसिे भक्षिुओं के तपस्वी जीवन की कोई परवाह नहीं थी और जसिने अपने मंत्रालय को पूरी तरह से अलग दृष्टकिोण से समझा। वह भाइयों के साथ भोजनशाला में खाने नहीं जाता था, बल्कि अपने लए अलग से वशिेष व्यंजन तैयार करवाकर मठाधीश के कक्ष में मंगवाता था। एक अवसर पर, पीटर की एक चूक के कारण—क्योंकि उसे मठाधीश से सटीक नर्दिेश नहीं मलि थे—मठाधीश के पास गलत व्यंजन ले जाया गया। गुस्से में आकर, उन्होंने नर्दिोष पीटर के गाल पर थप्पड़ मारा। शायद, अगर कोई दूसरा मठाधीश होता और परस्थितियाँ अलग होतीं, तो वह युवा नवसखिया उस थप्पड़ को नम्रता से स्वीकार कर लेता। लेकनि अपनी भावनात्मक उथल-पुथल में, पीटर ने मठ छोड़कर संन्यासी जीवन के लए कसिी अन्य, बेहतर स्थान की तलाश करने का फैसला कया। वह मठ से नकिल गया और दक्षणि की ओर चल पड़ा।

कस्मित उसे मोल्दावया ले गई, जहाँ, जैसा उसने सुना था, कई तपस्वयिों ने शरण ली थी। और इस प्रकार वह सेंट नकिोलस के मठ में पहुँचा, जो मोल्दावया में ही तयिास्मनि नदी के बीच एक द्वीप पर स्थति था। वह मठाध्यक्ष के पास गया और एक नवसखिुआ के रूप में मठ में स्वीकार कर लया गया। यहाँ का माहौल ल्यूबेच मठ से काफी अलग था, और पीटर ने लगन से अपने कर्तव्यों का पालन कया। कुछ समय बाद, जब वह 19 साल का हुआ, तो उसने मठवासी संस्कार ग्रहण कए, शुरुआत में एक रसोफोरे के रूप में, और प्लेटो नाम अपनाया। वहाँ वह खुश था; साधु जीवन ने उसकी आध्यात्मकि वृद्धि को बढ़ावा दया। लेकनि उसे यह मठ भी छोड़ने के लए मजबूर होना पड़ा: यूनएिट्स द्वारा उत्पीड़न शुरू हो गया, मठ के चर्च बंद कर दए गए, और भक्षिुओं को नकिाल दया गया।

तब प्लेटो ने कीव लौटने और कीव-पेचेरस्क लाव्रा की भाईचारे में शामलि होने का फैसला कया, जहाँ उनके आध्यात्मकि पता, हएिरोस्केमामोंक पाचोमयिस, सेवा कर रहे थे। उनकी इच्छा पूरी हुई, और प्लेटो इस प्राचीन रूसी मठ में एक भक्षिु बन गए। चूँकि वह साक्षर थे, इसलए उन्हें लाव्रा के मुद्रणालय में काम करने के लए नयिुक्त कया गया; इसके अलावा, उन्हें तांबे पर आइकन उकेरने का काम सौंपा गया। हालाँकि लावरा में जीवन और ये कार्य प्लेटो के आध्यात्मकि स्वभाव के अनुकूल थे, उसने एक अनुभवी भक्षिु के मार्गदर्शन में पूर्ण एकांत में मोक्ष की तलाश करने की अपनी पछिली योजनाओं को नहीं छोड़ा। एक पूर्व सहपाठी के साथ एक अप्रत्याशति मुलाकात, जसिके साथ प्लेटो ने अक्सर नर्जिन स्थान में भक्षिु जीवन पर चर्चा की थी, भटकन की एक नई अवधि के लए प्रेरणा का काम कर गई।

दो अन्य संतों के साथ, प्लेटो एक बार फरि दक्षणि की ओर रवाना हुआ, इस उम्मीद में कि वह पवत्रि माउंट अथोस पहुँच जाएगा। इस बीच, उनकी तीर्थयात्रा उन्हें सेंट नकिोलस के स्केटे तक ले गई, जसिे ट्रेइस्टेनी के नाम से जाना जाता है। प्राचीन फलिस्तिीनी लाव्रास के नविासयिों की तरह, कुछ भक्षिु यहाँ सामूहकि नयिम के अनुसार रहते थे, जबकि अन्य—बुजुर्ग, अनुभवी भक्षिु—स्केटे के चारों ओर बनी झोपड़यिों में अकेले रहने के नयिम का पालन करते थे। यहीं प्लेटो ने पहली बार माउंट एथोस के नयिम के अनुसार आयोजति एक दैवीय सेवा के दौरान प्रार्थना की; यहीं उन्होंने पहली बार कठोर मरुभूमविासयिों को देखा, जो इडयिोराइथम के नयिमों का सख्ती से पालन करते थे। कुछ समय बाद, प्लेटो, जसिने स्केटा में वभिन्नि कर्तव्य नभिाए थे और छोटे, गरीब मठ के जीवन से अच्छी तरह परचिति हो गया था, उसे करिकुल स्केटा भेजा गया। वहाँ उसने बुजुर्ग संतों बेसलि और ओनुप्रयिस के मार्गदर्शन में आध्यात्मकि रूप से वकिास करना जारी रखा। उस समय, मोल्डोवया के मठों और स्केट्स में—चाहे वे सामुदायकि हों या व्यक्तगित—संन्यासी जीवन वशिेष रूप से कठोर था। वरष्ठिों द्वारा आध्यात्मकि मार्गदर्शन की प्रथा अत्यंत व्यापक थी, और बहुत से भक्षिु ऐसे वरष्ठिों के मार्गदर्शन में रहते थे। प्लेटो को वह आध्यात्मकि मार्गदर्शन प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने का अवसर मला जसिकी वह लंबे समय से तलाश कर रहे थे। प्लेटो 1746 तक, तीन साल तक इस मठ में रहे, लेकनि अंततःवह क्षण आ ही गया जसिका वह लंबे समय से इंतजार कर रहे थे: उन्हें माउंट अथोस की यात्रा करने का अवसर मलि। अपने आध्यात्मकि पता की अनुमति और मठाधीश के आशीर्वाद से, प्लेटो एक अन्य भक्षिु के साथ पवत्रि पहाड़ के लए रवाना हो गए।

करिकुल मठ में रहते हुए भी, उन्होंने माउंट एथोस के संतों के जीवन की कहानयिाँ बड़ी उत्सुकता से सुनी थीं। उनके जीवनीकार के अनुसार, एथोस जाने के साथ ही प्लेटो का शष्यित्व का समय समाप्त हो गया, और उनका स्वतंत्र

तपस्वी जीवन शुरू हो गया। जमीन और समुद्र के कठनि सफर के बाद, वह अंततः सेंट एथनासयिस की लावरा पहुँचे। उसे मठ के पास एक कोठरी दी गई। वहाँ, पूर्ण गरीबी, संसार का त्याग और मौन में, कई भक्षिुओं और संतों ने मोक्ष पाया। लेकनि एक संत के मार्गदर्शन में आने की प्लेटो की इच्छा पूरी नहीं हुई: कोई भी उसे एक नवसखिया के रूप में लेने को तैयार नहीं था। 'प्रभु की इच्छा से ऐसा कोई न मलिते, और अपनी आत्मा की इच्छति आज्ञाकारता प्राप्त न कर पाने पर, उसने स्वयं को ईश्वर की व्यवस्था के हवाले कर दयिा और अकेला बैठ गया।'

एक वृद्ध संन्यासी की मदद के बनिा आध्यात्मकि संघर्ष करने वाले युवा तपस्वी की मानसकि और आध्यात्मकि स्थतिकिा वर्णन हमें भक्षिु ग्रेगरी द्वारा कयिा गया है। (1836), ऐसा प्रतीत होता है कउिन्होंने तपस्या संबंधी लेखों या अपने स्वयं के अनुभव पर नहीं, बल्कस्वियं वृद्ध पैसयिोस के वृत्तांत पर भरोसा कयिा, जो न्यामेत्स मठ में एक पांडुलपिमिें संरक्षति था[1284] । एक जीवन जो एकांत, मौन और आत्मा के संकलन में बीता, , जो ककिोई आसान काम नहीं था, लेकनि पैसयिोस ने 'शारीरकि शक्तसि आध्यात्मकि शक्तकिी ओर प्रयासरत और सफल होते हुए, हर दनि तपस्या की प्रगतपिर अपना हृदय केंद्रति कयिा और महान कार्यों के लएि दव्यि उत्साह से प्रज्वलति हुए, साथ ही साथ अग्नमिय दव्यि प्रावधान में आनंदति हुए', भक्षिु-लेखक लखिते हैं। यह तीन साल तक चला, जसिके बाद प्लेटो को एक तपस्वी के लएि एक आनंदमय मुलाकात का अनुभव हुआ: उनके पूर्व आध्यात्मकि पति, मोल्डोवा के हएिरोमोंक बेसलि, माउंट अथोस पर आए और युवा तपस्वी से बात करने के बाद, उन्हें लघु स्कीमा में दीक्षा दी और उन्हें पैइसयिस नाम दयिा।

साथ ही, एल्डर बेसलि ने उन्हें एक सामुदायकि मठ में जाने की सलाह दी, क्योंकइिडयिोराइथमकि जीवन और एक तपस्वी का जीवन बुजुर्ग, अनुभवी भक्षिुओं के लएि उपयुक्त है। पैसयिस के लेखों से, हम जानते हैं कबिाद में वे सामुदायकि मठ के नयिम के हमिायती भी बने, साथ ही उन्होंने नवसखिुओं और नव-दीक्षति भक्षिुओं के लएि आध्यात्मकि मार्गदर्शन की प्रणाली को बनाए रखा। पाइसयिस के शष्यिों ने, जो वभिन्नि रूसी मठों में सेवा कर रहे थे, ने भी सामुदायकि नयिम को अपनाकर मठवासी जीवन में सुधार लाने का प्रयास कयिा, और साथ ही वे स्वयं आध्यात्मकि पता के रूप में कार्य करते हुए, अलग-अलग भक्षिुओं को अपनी आध्यात्मकि मार्गदर्शन में लयिा। इसके अलावा, पैइसयिस की रचनाओं में हमें 'सामुदायकि जीवन के आदेश और नयिमों पर एक नबिंध' मलिता है, जसिमें वे सामुदायकि जीवन शैली की पुरजोर सफिारशि करते हैं[1285] । हालाँकि, अगले तीन या चार वर्षों तक पैइसयिस एकांत में रहे, आत्म-सुधार के मार्ग पर चलते हुए। तब कई युवा भक्षिु उनके पास आए, और यद्यपपिैइसयिस स्वयं अभी भी युवा थे, उन्होंने उनसे उन्हें नवसखिुआ के रूप में स्वीकार करने का अनुरोध कयिा। वे मुख्य रूप से मोल्डोवा और वलाचयिा या स्लावकि बाल्कन देशों से आए हुए भक्षिु थे। उनकी तत्काल अनुरोध पर, पैइसयिस का पुरोहति के रूप में अभषिेक कयिा गया और वे एक पवत्रि-पुरोहति (hieromonk) बन गए। यह 1758 में हुआ, जब वह 36 वर्ष के हुए।

अब पैसयिस अपने जीवन के दूसरे चरण में प्रवेश कर गए: उन्होंने न केवल अपनी आध्यात्मकि पूर्णता के लएि एक आध्यात्मकि संघर्ष कयिा, बल्कि, एक मठाधीश और वरषि्ठ के रूप में, उन्होंने अन्य भक्षिुओं को आध्यात्मकि मार्गदर्शन भी प्रदान कयिा, और इन प्रयासों ने उन्हें रूस में प्रामाणकि मठवाद के पुनरुद्धार में एक केंद्रीय व्यक्तबिना दयिा।

पैसयिस के चारों ओर इकट्ठा हुई छोटी सामुदायकि बस्ती लगातार बढ़ती गई। सौभाग्य से, वह एथोस लाव्रा के प्रोटोस से पैंटोक्रैटर मठ के पास स्थति, पैगंबर सेंट इलयिाह का प्राचीन, आधा-खण्डहर मठ प्राप्त करने में सफल रहा; भाइयों के साथ मलिकर उसने एक चर्च, एक भोजनशाला और 60 कोठरयिाँ बनवाईं – भाइयों की संख्या इस हद तक बढ़ गई थी। हालाँकनिए मठ को बहुत ज़रूरतों का सामना करना पड़ रहा था, भक्षिुओं की संख्या दनि-ब-दनि बढ़ती गई, और मठ का परसिर जल्द ही तंग पड़ गया। फरि भी, भक्षिुओं के बीच भी तीव्र ईर्ष्या और अन्य बुरे भाव पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए। पाइसयिस के स्लाव मठ ने, शायद वहाँ बनाए गए उत्कृष्ट अनुशासन और इसके मठाधीश के लगातार बढ़ते अधकिार के कारण, एथोस के अन्य मठों के ग्रीकों के बीच शत्रुतापूर्ण भावनाएँ और साथ

[1284] यात्समिरिस्की, में: संग्रह ORYAS. 79. पृ. 521। वृद्ध पैसयिस की जीवनी 1836 में न्यमेत्स मठ में मोल्दावयिन और चर्च स्लावोनकि में प्रकाशति हुई थी, जसिमें लेखक का नाम नहीं दयिा गया था। चर्च स्लावोनकि पाठ को 1845 में मॉस्को में ऑप्टनिा के एल्डर मकरयिस द्वारा पुनःप्रकाशति कयिा गया था: 'मोल्दावयिाई एल्डर पैसयिस वेलीचकोव्स्की का जीवन'। ऑप्टनिा हर्मटिेज द्वारा प्रकाशति। 1847 में, जीवनी का एक नया संस्करण प्रकाशति हुआ, जसिमें परशिष्टि में पैसयिस के अपने कई लेख शामलि थे; तीसरा संस्करण 1892 में मास्को में प्रकाशति हुआ। इस नवीनतम संस्करण ने एस. चेत्वेरकिोव की पुस्तक *द मोल्डॉवयिन एल्डर, स्कीमा-आर्कमिैंड्राइट पैइसयिस (वेलकिॉव्स्की)। खंड 1* (पेट्लेरी-एस्टी (एस्टोनयिा), *1938–39)* के लएि आधार का काम कयिा; *मुझे नहीं पता कखिंड 2, जसिमें पैसयिस के पत्र शामलि हैं, कभी प्रकाशति हुआ था या नहीं; यह रूसी संस्करण शायद रोमानयिाई में पैसयिस पर उनके अपने काम का एक रूपांतर है; तुलना करें: *इरैनकिॉन*. 11 (1934). 66 में समीक्षा।*

[1285] जीवनी (1847)। पृ. 58 आदजिर्मन अनुवाद मेरी पुस्तक में है। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 108–117।

ही फादर पाइसयिस और उनके शष्यिों के बारे में अनुचति अफवाहें पैदा कर दीं; तुर्की के अधकिारयिों ने भी हर तरह की बाधाएँ खड़ी कर दीं। तब पैसयिोस ने पहाड़ों और जंगलों के बीच वहाँ एक नया मठ स्थापति करने के लिए मोल्दावयिा लौटने का फैसला कयिा।

1763 में, बड़े पैसयिोस, 60 भक्षिुओं और नवसखिुओं के साथ, अपनी यात्रा पर नकिले और मोल्दावयिा पहुँचे, लेकनि वहाँ उन्हें एक उपयुक्त स्थल नहीं मलि सका। केवल याशी में ही वह मोल्दावयिा के मेट्रोपॉलटिन से पवत्रि आत्मा के अवतरण को समर्पति ड्रैगोमरि मठ प्राप्त करने में सफल रहा। यहाँ, पैसयिस ने माउंट अथोस की सामुदायकि जीवन शैली और पूजा संबंधी नयिमों को पेश कयिा। लेकनि एक नयिम पूरी तरह से नया था: शाम को, प्रार्थना सभाओं के बीच, भाइयों को भोजनशाला में इकट्ठा होना था। पैसयिस आते और उनके लिए वभिन्नि तपस्या संबंधी लेखन पढ़ते, साथ ही अपनी व्याख्याएँ भी देते। चूँकि भ्रातृगण आंशकि रूप से मोल्दावयिा और वलाचयिा से, और आंशकि रूप से स्लाव भूमि से थे, इसलिए इन पठन सत्रों को रोमानयिाई और स्लाव लोगों के लिए बारी-बारी से अलग-अलग आयोजति कयिा जाता था; धार्मकि अनुष्ठान हमेशा चर्च स्लावोनकि में आयोजति कएि जाते थे। ड्रैगोमरिन्स्की मठ में भक्षिुओं का जीवन-यापन इसी प्रकार था, जहाँ एक मठाधीश के रूप में पैइसयिस की प्रतभिा का भरपूर वकिास हुआ।

1774 में, रूसो-तुर्की युद्ध के बाद, मोल्दावयिा का एक हस्सिा ऑस्ट्रयिा को सौंप दयिा गया, जसिमें वह क्षेत्र भी शामलि था जहाँ ड्रैगोमरिन्स्की मठ स्थति था। ऑस्ट्रयिाई अधकिारयिों के अधकिार क्षेत्र में अपने मठ के भवष्यि को लेकर चंति, एल्डर पैइसयिस ने मोल्डोवा के उस हस्सि में जाने का फैसला कयिा जो तुर्की के शासन के अधीन था। उन्होंने मेट्रोपॉलटिन से अपने और अपने भाइयों के लिए आधे-वरिाने सेकुल मठ में स्थानांतरति होने की अनुमति मांगी। पैसयिस को यह अनुमति मलि गई, लेकनि कुछ समय बाद भक्षिुओं की संख्या इतनी बढ़ गई कि नया मठ भी उनके लिए बहुत छोटा पड़ गया। तब एल्डर को सेकुल से दो घंटे की दूरी पर स्थति बड़ा न्यमेत्स मठ आवंटति कयिा गया; उन्हें अपनी समुदाय को दो मठों में वभिाजति करना पड़ा, लेकनि दोनों मठ उनके प्रशासन और आध्यात्मकि मार्गदर्शन के अधीन रहे। उनके नधिन से पहले, न्यामेत्स मठ में पहले से ही 400 भक्षिु और सेकुल मठ में 100 से अधकि भक्षिु थे।

लंबी पतझड़ और सर्दयिों की रातों के दौरान, पैसयिस ने स्वयं, ग्रीक भाषा जानने वाले दो भक्षिुओं की मदद से, पवत्रि पतिाओं के तपस्या संबंधी लेखों का मोल्दावयिन और चर्च स्लावोनकि में अनुवाद कयिा। इसके परणिामस्वरूप सेंट आइज़ेक द सीरयिन की *इंस्ट्रक्शंस*, सेंट मैक्सिमस द कन्फेशर के *क्वेश्चन एंड आंसर्स*, सेंट थयिोडोर द स्टुडाइट की *इंस्ट्रक्शंस*, अबा बार्सानुफयिस और अन्य की *इंस्ट्रक्शंस*, और अंत में, *द लव ऑफ गुडनेस* का चर्च स्लावोनकि संस्करण का अनुवाद हुआ। *डोब्रोतोल्यूबए* का अनुवाद 1793 में पूरा हुआ, जसिके परणिामस्वरूप दो मोटे हस्तलखिति खंड तैयार हुए। यह अनुवाद भक्षिु नकिोडेमस की उपरोक्त कृति *[1286] * (1782 के वेनसि संस्करण पर आधारति) पर आधारति था।

[1286] पाइसयिोस द्वारा ये अनुवाद बाद में रूस में प्रकाशति हुए: 1811 में इसाक द सीरयिन, 1855 में मैक्सिमस द कन्फैसर, 1855 में थयिोडोर द स्टुडाइट, और 1855 में अबा बार्सानुफयिस; अंतमि तीन का प्रकाशन ऑप्टनिा के वृद्ध मकारयिोस द्वारा रूसी वचिारक आई. वी. करिव्स्की की सहायता से हुआ था; इस प्रकाशन के संबंध में उनका पत्राचार देखें: चेत्वेरकिोव। द ऑप्टनिा हर्मटिेज। पृ. 107 आदि; यात्समिरिस्की। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 546 एवं अन्य। *फलिोकालयिा* का *डोब्रोतोल्यूबए* शीर्षक से अनुवाद 1793 में दो फोलयिो खंडों में प्रकाशति हुआ था। *डोब्रोतोल्यूबए* का प्रकाशन मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल पेट्रोव के आशीर्वाद से, एल्डर नज़ारयिस और हरिीमोंक फलिारेट की देखरेख में हुआ था। (बाद में नोवोस्पस्की मठ के एल्डर फलिारेट)। सनिड द्वारा नयिुक्त आधकिारकि सेंसर थे आर्चमिांड्राइट मेथोडयिस, मॉस्को थयिोलॉजकिल अकादमी के रेक्टर, और हेग्यूमेन एरॉन, रोस्तोव में याकोवलेव्स्की मठ के मठाध्यक्ष (पोपोव। 'साइमनोव मठ की पांडुलपियिों का ववरिण', *रीडगि्स* में। 1910. 2. पृ. 6)। 1857 तक, *डोब्रोतोल्यूबयि* के कम से कम छह संस्करण प्रकाशति हो चुके थे; यह ध्यान देने योग्य है कि अगला संस्करण 1880 तक प्रकाशति नहीं हुआ। इसके बाद, बशिप थयिोफन द रक्लिूस (गोवोरोव) ने एक नया पाँच-खंडों वाला संस्करण तैयार कयिा, जसिे माउंट अथोस पर रूसी पैंटेलमिोन मठ में मुद्रति कयिा गया था; 1878 और 1914 के बीच तीन संस्करण प्रकाशति हुए। थयिोफान की *डोब्रोतोल्यूबए* पैसयिस की *डोब्रोतोल्यूबए* से भन्नि है: कुछ भागों का वस्तिार कयिा गया है, जबकि अन्य को संक्षप्ति कयिा गया है; जहाँ तक भाषा का सवाल है, यह कहना मुश्कलि है कि यह चर्च स्लावोनकि है या रूसी, क्योंकि थयिोफान की भाषा और शैली अत्यंत वशिष्टि हैं, जो स्लावकि शब्दों और रूपांतरों से भरी हुई हैं, जनिका उपयोग ग्रीक तपस्या और रहस्यमय अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिए कयिा जाता है, जो पाठक के लिए पूरी तरह से समझ में नहीं आती हैं। और फरि भी उनके प्रकाशन भक्षिुओं और धर्मनष्ठि श्रद्धालुओं के बीच बहुत व्यापक रूप से प्रसारति हुए; उन्हें प्राप्त करना बहुत मुश्कलि था। पैइसयिस के *डोब्रोतोलुबयि* का दो-खंडों वाला संस्करण 1902 में एक बार फरि से मुद्रति कयिा गया था और यह भी एक ग्रंथसूची संबंधी दुर्लभता बन गया।

पाइसयिस का सांसारकि जीवन, जो फलदायी परशि्रमों से परपिूर्ण था, 15 नवंबर 1794 को समाप्त हो गया; 72 वर्ष की आयु में उन्होंने हमेशा के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं[1287] ।

उनकी सेवा का अंतमि काल 31 वर्ष तक चला, जसिसे मठ की दीवारों से परे भी उनका नाम प्रसदि्ध हो गया; आध्यात्मकि मार्गदर्शन की वशिेष प्रतभिा वाले एक वृद्ध के रूप में उनकी ख्यातरिूस तक भी पहुँच गई। वृद्ध थयिोफन सोकोलोव की आत्मकथा से हमें पता चलता है कि1770 के दशक की शुरुआत में ही, तपस्या के कार्यों की आकांक्षा रखने वाले कई भकि्षु और गृहस्थ, पैइसयिस के बारे में सुनकर, मार्गदर्शन प्राप्त करने या यहां तक कि उनके आध्यात्मकि मार्गदर्शन में स्थायी रूप से रहने के लिए ड्रैगोमरिन्स्की और न्यमात्स्की मठों में उनसे मलिने के लिए नकिल पड़े[1288] ।

पाइसयिस के पहले शषि्यों में से एक वरषि्ठ हएिरोमोंक क्लेओपास प्रथम († 1778 के बाद) थे, जन्हिोंने व्लादमिीर के धर्मप्रांत में स्थति ओस्त्रोवस्काया व्वेडेन्स्काया हर्मटिेज में वरषि्ठ के मार्ग के सद्धिांतों को लाया। इस तपस्वी के बारे में जीवनी संबंधी ववरिण बहुत कम हैं: क्लयिोपास वनिम्रता और नम्रता का एक आदर्श थे। उनके शषि्य, एल्डर थयिोफान सोकोलोव, भी उनके प्रारंभकि जीवन के बारे में बहुत कम बता सके। क्लयिोपास दक्षणिी रूस के मूल नविासी थे; उन्होंने माउंट अथोस पर कई साल बतिाए, जहाँ वे पैइसयिस से मलिे और, पूरी संभावना है कि, उन्होंने संत इलयिाह द प्रोफेट के स्केटा में उनके पास शरण ली। 1760 और 1778 के बीच, वह उपर्युक्त वेडेन्स्काया हर्मटिेज के नर्मिाता थे; उन्हें इसे आंतरकि और बाहरी रूप से सुव्यवस्थति करने का काम सौंपा गया था, और क्लेओपास की बदौलत, यह हर्मटिेज वास्तव में मठवासी भक्तकिा स्थान बन गया। वह रूस में वास्तव में मठवासी जीवन शैली स्थापति करने वालों में से पहले थे और उन्होंने जसि हर्मटिेज को पुनर्जीवति कयिा, उसमें आध्यात्मकि मार्गदर्शन की प्रणाली के संस्थापक थे[1289] . इस मठ में क्लेओपास द्वारा शुरू कएि गए मठवासी नयिम को बाद में उनके शषि्यों, भकि्षुओं इग्नेशयिस और मकारयिस द्वारा नकिोलो-पेसनोशस्की मठ में स्थानांतरति कर दयिा गया; हालाँकि, दुर्भाग्य से, यह नयिम वहाँ अधकि समय तक नहीं चला[1290] ।

और फरि एक कठोर जीवन जीने वाले संन्यासयिों का एक पूरा समूह प्रकट हुआ – वृद्ध पैइसयिस के शषि्य। वे पूरे रूस में बस गए और एक मठ से दूसरे मठ, एक आश्रम से दूसरे आश्रम तक घूमते हुए, 'धार्मकि और चमत्कारी पति पैसयिस' की खबर दूर-दूर तक फैलाई, जसिसे मठवासी परंपरा के नए अनुयायी मलिे, जो उनके शषि्य बन गए। पाइसयिस के शषि्यों की पहली पीढ़ी में कुछ नाम वशिेष उल्लेख के योग्य हैं, हालांकि शुरुआत में उनका प्रभाव क्षेत्र वशिेष रूप से व्यापक नहीं था; वे मुख्य रूप से दक्षणिी ग्रेट रूस के सबसे छोटे और सबसे गरीब संन्यास-आश्रमों में बसे - कलुगा, ओरीओल और कर्सक प्रांतों में।

उनमें से एक थे वरषि्ठ आर्चमिांड्राइट थयिोडोसयिस मास्लोव (1720–1802)। उनका जन्म ग्लुखोव शहर (चेर्नगिोव गवर्नरेट) में एक व्यापारी परविार में हुआ था; उन्होंने शुरू में स्वेन्स्की मठ में शरण ली, लेकनि बाद में, वहाँ के भकि्षुओं के जीवन से असंतुष्ट होकर, वे मोल्दावयिा के प्रसदि्ध मोल्दावयिाई एल्डर वासलिी († 1767) के पास

[1287] पैइसयिस की कृतयिों में सबसे महत्वपूर्ण उनकी *आत्मकथा* है (इस पांडुलपिि को पहले सेंट पीटर्सबर्ग में स्थति वज्ञिान अकादमी की पुस्तकालय में रखा गया था); दुर्भाग्य से, ए. यात्समिरिस्की ने केवल *कलेक्शन ऑफ द ओआरवाईएएस* 79 में इसका वस्तिृत पुनर्कथन प्रदान कयिा। पृ. 515–541; इसमें उनके 'संवधिान' (पृ. 533–538) के अंश भी शामलि हैं; एक वस्तिृत ग्रंथसूची (पृ. 550–544), पैसयिस की कृतयिों की एक सूची (पृ. 548–550), साथ ही उनकी पुस्तकालय की सूची और पैसयिस स्वयं तथा उनके शषि्यों द्वारा संकलति तपस्या संबंधी कृतयिों के अनुवादों की सूची (पृ. 555–583)। ये ग्रंथसूची संबंधी सामग्री इतहिासकार के लिए काफी रुचकिर है, क्योंकि इससे पता चलता है कि पैसयिोस कनि तपस्या संबंधी कृतयिों को पसंद करते थे: वहाँ नीलस ऑफ सोरा की 'द ट्रेडशिन' की 6 प्रतयिाँ, सेंट समियिन द न्यू थयिोलॉजस्टि की रचनाओं वाली 15 पांडुलपिि पुस्तकें, फथियिॉस ऑफ सनिाई की रचनाओं की 14 प्रतयिाँ, और कैलसिटस और इग्नाटयिस जैंथोपोलोस की 'द हंड्रेड' की 8 प्रतयिाँ सूचीबद्ध हैं। पाइसयिस और उनके शषि्यों के आध्यात्मकि जीवन-वृत्त में एक अंतर्दृष्टि इस कृति से मलिती है: पोपोव, एन. *मास्को में साइमनॉव मठ के पांडुलपियिों का ववरिण* (*रीडग्सि*, 1910, 2), जसिमें व्यापक सामग्री है। सोरा के नील के लेखों के पाइसयिस पर प्रभाव पर: बोरोवकोवा-माइकोवा। नीलस ऑफ सोरा और पैइसयिस वेलीचकोव्स्की। यह भी देखें: एन. आर्सेनेव द्वारा *डेर क्रस्टिलीश्ट ओस्टेन* में ग्रंथसूची, पृ. 193; पैइसयिस की कृतयिों से चयनति अंश: चेत्वेरकिोव, एस. *द पाथ ऑफ वाइज़ एक्शन एंड स्परिचिुअल सोब्रीटी*, *द पाथ* में, 1926. 3. पृ. 65–83; 'रूसी मठवासी वृद्धत्व के इतहिास से'। वही, 1927। 7.

[1288] सुबोटनि। आर्चमिंड्राइट थयिोफान, करिलिो-नोवेज़र्स्की मठ के मठाधीश (1862)। पृ. 57–75। 'फादर थयिोफान की कहानयिों से'।

[1289] यात्समिरिस्की। उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 546; डोब्रोनरावोव, वी. हायरोमोंक क्लयिोपास, वेडेन्स्काया हर्मटिेज के संस्थापक (1908); सुबोटनि। वही, पृ. 59–62; यह पुस्तक इस तपस्वी का एक बहुत ही जीवंत चरत्रि चत्रिण प्रस्तुत करती है। यह ध्यान देने योग्य है कि रेगस्तिान में रोटी के बारे में कहानी (तुलना करें मेरी पुस्तक, पृ. 132), जैसा कि हम बाद में स्थापति कर सके, संत सावस द सैंक्चुडाइटेड के जीवन की एक कहानी से बहुत मलिती-जुलती है। कोटेलेरि, *मोन्यूमेंट्स इकलेस. ग्रेके*, खंड 4, पृ. 322।

[1290] पोपोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 75, और यह भी: पमिेन। संस्मरण (वभिन्नि स्थानों पर)।

गए[1291] , जनिके शष्यि, जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा गया है, पैसयिस थे। 1767 और 1778 के बीच, थयिोडोसयिस ने टयिास्मनि और मेर्लोपोलयिन मठों में मठाध्यक्ष के रूप में कार्य कयिा; 1779 में, उन्हें मोल्चनी में सोफ्रोनउिस हर्मटिेज में मठवासी जीवन को पुनर्जीवति करने के लिए आमंत्रति कयिा गया था। वह अपनी मृत्यु († 9 दसिंबर 1802) तक वहाँ रहे। थयिोडोसयिस ने मठ में माउंट अथोस के सामुदायकि नयिम को पेश कयिा[1292] ।

हमें पैइसयिस के दो अन्य शष्यिों का भी उल्लेख करना चाहएि: एल्डर हरिीमोंक क्लयिोपास द्वतिीय († 1817), जनिका मुंडन पैइसयिस ने कयिा था, और हरिीस्केमामोंक थयिोडोर (1756–1822)।

1800 में, क्लेओपास द्वतिीय बेलोबरेज्स्काया हर्मटिेज पहुँचे, जहाँ उस समय एल्डर वासलिी कश्किनि मठाधीश थे; वहाँ, क्लेओपास की मुलाकात भकि्षु लयिोनदि नागोल्कनि से हुई, जो उस समय उस हर्मटिेज में एक संन्यासी के रूप में रह रहे थे, और बाद में वे दोनों साथ में वभिन्नि मठों का दौरा करने गए; क्लयिोपास की मृत्यु 1817 में वालाम मठ में हुई[1293] ।

हएिरोस्केमामोंक थयिोडोर, जो कराचेव (ओरेल गवर्नरेट) शहर के एक व्यापारी के बेटे थे, ने अपनी युवावस्था में अपने माता-पति का घर छोड़ दयिा और प्लोश्चांस्काया हर्मटिेज के लिए नकिल पड़े; उनके माता-पति उन्हें वापस घर ले आए, लेकनि वह फरि से भाग गए, इस बार दूरस्थ बेलोबेरेज्स्काया हर्मटिेज में। एक दनि, पेचेरस्क लावरा जाते समय, उस युवा नवसखिए ने 'अद्भुत वृद्ध पैइसयिस' के बारे में सुना – और वह उनसे मलिने दूरस्थ न्यमात्स्की मठ में चला गया, जहाँ पैइसयिस ने उसे दीक्षा दी और अपने शष्यिों में स्वीकार कर लयिा। थयिोडोर बहुत पढ़े-लखिे थे और उन्होंने पैइसयिस के अनुवादों की प्रतलिपि बिनाकर उनकी सहायता की। पैइसयिस के उत्तराधकिारी, मठाधीश सोफ्रोनीयस ने थयिोडोर को एक स्कीमा-भकि्षु के रूप में दीक्षा दी और उन्हें बेलोबेरेज्काया हर्मटिेज वापस भेज दयिा। हालाँकि, धर्मप्रांत के बशिप ने उनसे छोटे और गरीब चोल्न्स्क हर्मटिेज जाने और वहाँ मठाध्यक्ष की भूमकिा नभिाने के लिए कहा; फरि भी थयिोडोर ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दयिा और केवल मठाध्यक्ष के सहायक बनने पर सहमत हुए। उनकी सहायता के कारण, वहाँ वृद्ध पैसयिस के सामुदायकि नयिम और माउंट अथोस के संस्कारकि अनुष्ठान शुरू कएि गए। इस बीच, इतने सारे लोग सलाह और मार्गदर्शन के लिए थयिोडोर के पास आने लगे कि उन्हें आश्रम छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। वह बेलोबेरेज्काया हर्मटिेज चले गए, जहाँ वह आठ साल तक रहे। अंतत; एल्डर क्लयिोपास द्वतिीय और भकि्षु लयिोनदि (जो बाद में ऑप्टनिा के थे) के साथ, वह नोवोएज़ेर्स्की मठ गए, जसिका उस समय नेतृत्व एल्डर थयिोफान सोकोलोव कर रहे थे, वहाँ से पेलोस्ट्रोव्स्की मठ, फरि वालाम मठ (जहाँ उनके साथी, एल्डर क्लयिोपास द्वतिीय का नधिन हो गया) और अंत में अलेक्जेंडर-स्वर्स्की मठ गए, जहाँ वे अपनी मृत्यु (7 अप्रैल 1822) तक रहे।

थयिोडोर के जीवन का एक प्रसंग स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि मठवासी समुदाय हमेशा मठवासी जीवन में सुधार करने के लिए उत्सुक नहीं था। वरष्ठि थयिोफान ने उनसे नीलो-सॉर्स्क हर्मटिेज जाने के लिए कहा, जसिकी स्थापना 16वीं शताब्दी में वरष्ठि नील ने की थी और उस समय इसे एक नष्क्रयि मठ के रूप में वर्गीकृत कयिा गया था। वहाँ की मठवासी जीवन की स्थति बिहुत गरि चुकी थी। भाइयों ने एल्डर थयिोडोर का बड़े वरिोध के साथ स्वागत कयिा, और मठ में व्यवस्था बहाल करने के उनके प्रयास असफल रहे[1294] ।

वरष्ठि हयरोमोंक अथानासयिस ज़खारोव († 1823) भी पैइसयिस के तपस्वी स्कूल से थे। कुलीन वंशज और एक हस्सर रेजमिेंट के कप्तान, ज़खारोव ने अपनी आकर्षक वर्दी को त्यागकर एक मठवासी वेश धारण कर लयिा, और एल्डर पैइसयिस के पास गए, जनिसे उनकी मुलाकात रूसो-तुर्की युद्ध के दौरान मोल्डोवा में हुई थी। 1777 में, हम उन्हें पहले से ही फ्लोरशिचेवा हर्मटिेज (व्लादमिीर के डायोसीस में) में पाते हैं; बाद में उन्होंने प्लोश्चानस्काया

[1291] बोरोवकोवा-माइकोवा। उद्धृत कृति, पृ. 32.

[1292] मोलचान्स्काया सोफ्रोनएिव हर्मटिेज का ववरिण (1856)। पृ. 56; मुराव्योव। द होली माउंटेन एंड द ऑप्टनिा हर्मटिेज (1852)। पृ. 129; यात्समिरिस्की. पूर्वोक्त, पृ. 545; सुबोटनि. पूर्वोक्त, पृ. 15, 18; डेनसिोव. संख्या 585; ज्वेरीस्की. 2. संख्या 933.

[1293] यात्समिरिस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 546; द फर्स्ट ग्रेट ऑप्टनिा एल्डर, हायरोंमक लयिोनदि (1917)। पृ. 14–44। 1809 और 1817 के बीच, तीनों ने उत्तरी रूस के मठों की तीर्थयात्रा पर नकिल पड़े, और पालेओस्ट्रॉव्स्की, वालाम और अलेक्जेंड्रो-स्वर्स्की मठों का दौरा कयिा; हालाँकि, वहाँ के हालात शायद एल्डर प्रणाली को शुरू करने के लिए बहुत अनुकूल नहीं थे। यह वशिेष रूप से वालाम मठ के बारे में सच था, जहाँ, हालाँकि, एल्डर नाज़ारीय ने 1804 तक शरण ली हुई थी, और उन्होंने वहाँ सामुदायकि नयिम के अनुसार सख्त अनुशासन में मठवासी जीवन का आयोजन कयिा था।

[1294] यात्समिरिस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 545; पमिेन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 66–68। पोसेल्याननि। 19वीं सदी के रूसी तपस्वी (1910)। पृ. 194–201; पुस्तकें *द लाइफ़ एंड डीड्स ऑफ़ द शेमामोंक थयिोडोर* (1839; 3रा संस्करण 1907) और *द एस्कैटकि लाइफ़ ऑफ़ द शेमामोंक थयिोडोर* (1901) मेरे लिए उपलब्ध नहीं थीं।

हर्मटिेज (ओरीओल के डायोसीस में) में शरण ली, जहाँ उन्होंने एक एल्डर के रूप में सेवा की, और भवष्यि के ऑप्टनिा एल्डर मकरर्इि इवानोव 13 वर्षों तक उनके नवसखियिा थे[1295] ।

पैसयिस के पांचवें शष्यि एक अन्य अथानासयिस थे, जो एक पूर्व सरकारी कर्मचारी और स्कीमा-मोनक थे, जन्हिोंने मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल को *डोब्रोतोल्यूबयि* का चर्च स्लावोनकि अनुवाद प्रस्तुत कयिा। बाद में उन्होंने रोस्लावल के जंगलों में एक संन्यासी के रूप में पूरी तरह से दुनयिा से अलग-थलग रहकर जीवन व्यतीत कयिा, और बाद में स्वेन्स्की मठ (ओरीओल के धर्मप्रांत में) में रहे; इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि उन्होंने वहाँ († 1811) मठाध्यक्ष के रूप में सेवा की[1296] ।

पेइसयिस के छठे और सबसे कम उम्र के शष्यि बड़े फलिारेट († 1841) थे, जन्हिोंने ग्लस्कि हर्मटिेज (1817–1841) के मठाध्यक्ष के रूप में सेवा करते हुए, माउंट अथोस के वधिानों के अनुसार इसका सुधार कयिा। उन्होंने 'नव-मुंडति भक्षिु के लिए एक व्यापक नर्दिेश' (1824) संकलति कयिा और भक्षिुओं के आध्यात्मकि मार्गदर्शन में शामलि थे[1297] ।

मॉस्को के समिोनोव मठ के भक्षिु पावेल[1298] , सोफ्रोनएिव हर्मटिेज के भक्षिु गेरसमि और ऑप्टनिा के शेमा-भक्षिु थयिोफानेस († 1819) पैइसयिस के शष्यिों की इस पीढ़ी के अंतमि प्रतनिधि थे[1299] । (रूसी मठों में 'वरषि्ठ पैइसयिस के स्कूल' के आगे के इतहिास के लिए, तालकिा VIII देखें।) कुछ समय के लिए, कीव-पेचेरस्क लाव्रा के भक्षिु थयिोफानेस, जो पेचेरस्क के वरषि्ठ डोसथियिस के शष्यि और बाद में एक प्रसद्धि सोलोवेत्स्की हर्मटि थे, पैइसयिस के साथ न्यमेत्स मठ में रहे[1300] ।

पाइसयिस के इन सभी शष्यिों ने, या तो स्वयं या अपने शष्यिों के माध्यम से, वभिन्नि मठों में तपस्या की परंपराओं को पुनर्जीवति करने और सामुदायकि नयिमों को पेश करने में बहुत योगदान दयिा; फरि भी, मठवाद के अन्य उत्साही समर्थक भी थे जो पाइसयिस को कठोर मरुस्थलवासयिों के एक समूह के साथ जोड़ते हैं। ये तथाकथति 'रॉस्लावल जंगलों के बुजुर्ग' थे। रॉस्लावल वन स्मोलेंस्क गवर्नरेट के दक्षणि में स्थति हैं और, ब्रायन्स्क वनों के साथ मलिकर, एक वशिाल, अभेद्य, घना वन क्षेत्र बनाते हैं। 18वीं शताब्दी के दूसरे भाग में, ये वन अमीर जमींदार ब्रोनएिव्स्की के स्वामत्वि में थे। इस संन्यासयिों के समूह के उदय का इतहिास पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है।

ब्रायन्स्क के जंगलों में पहले संन्यासी शायद भक्षिु या हाइरोमोंक जोआसाफ (1692–1766) थे, जो कई वर्षों तक संन्यासी के रूप में रहने के बाद अब अकेले एकांतवासी नहीं रहे। उनके कठोर जीवन शैली की खबर प्लोश्चांस्काया हर्मटिेज तक पहुँच गई, और जोआसाफ को वहाँ के मठाधीश का पद प्रस्तावति कयिा गया, जसिका उद्देश्य इसे इसकी दयनीय स्थतिि से उबारना था। जोआसाफ ने अपनी जंगल की झोपड़ी में लौटने से पहले वहाँ पाँच साल बतिाए। ऐसा लगता है कि उन्होंने आसपास के गांवों के कसिानों का सम्मान अर्जति कर लयिा था, और कई लोग सांत्वना और सलाह लेने के लिए उनके पास आते थे। संन्यासी के लोगों के साथ संपर्क ने चर्च अधकिारयिों को संदेह में डाल दयिा – यहाँ यह ध्यान दयिा जाना चाहिए कि कई संप्रदायवादी ब्रायन्स्क के जंगलों के दक्षणिी भाग में छपि हुए थे – और सेव्स्क कांसस्टिरी ने पुलसि को जोआसाफ को गरिफ्तार करने का आदेश दयिा; उनसे अनगनित पूछताछ की गई। केवल धर्मप्रांत के बशिप के साथ हुई एक बातचीत ने ही एल्डर जोआसाफ को नर्वासन से बचाया, संभवतःसाइबेरयिा तक भी, जहाँ उन्हें बनिा पासपोर्ट के एक संदग्धि व्यक्ति के रूप में भेजा जा सकता था। बशिप के आदेश पर, जोआसाफ को रहिा कर दयिा गया और वे अपने जंगलों में लौट आए, जहाँ 1766 में उनकी मृत्यु हो गई।

इस समय यह ज्ञात हुआ कि, जमीनदार की अनुमति से, एकांत जीवन के पक्षधर कई भक्षिु और गृहस्थ रोस्लावल के जंगलों में अत्यंत कठोर तपस्या का जीवन यापन कर रहे थे। उनमें सबसे प्रसद्धि थे वृद्ध बर्नबास अपने दो शष्यिों हलिारयिन और जोसेफ के साथ; नकिति († 1793); थयिोफान; पूर्व हएिरोडीकन अनास्तासयिस; और वृद्ध

[1295] यात्समिरिस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 545–546; चेत्वेरकिोव। द ऑप्टनिा हर्मटिेज। पृ. 44; ज्वेरेन्स्की। 2. संख्या 1057, 1338.

[1296] यात्समिरिस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 546.

[1297] मुराव्योव। द होली माउंटेन एंड द ऑप्टनिा हर्मटिेज। पृ. 136; यात्समिरिस्की। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 546; आरबीएस। पृ. 106। वरषि्ठ फलिारेट के चार शष्यि थे (जहाँ तक हमें पता है): वरषि्ठ मकरयि († 1864), फलिारेट, आर्सेनी, स्वयिातोगोर्स्क मठ (खार्कीव डायोसीस) के मठाधीश, और इलिओडोर († 1879)। मुरावयिोव। उद्धृत ग्रंथ।

[1298] 19वीं सदी की शुरुआत में, इस मठ में तपस्या संबंधी लेखों की कई प्रतयिाँ बनाई गईं; नील ऑफ सोरा और पैसयिस की कृतयिों की कई बार प्रतयिाँ बनाई गईं, और ये प्रतयिाँ अक्सर अन्य मठों को भेजी जाती थीं। पोपोव. उद्धृत कृति.

[1299] यात्समिरिस्की। उद्धृत कृति, पृ. 546; पमिेन। उद्धृत कृति, पृ. 53। लेंट के पहले सप्ताह के दौरान, थयिोफान ने बलि्कुल भी भोजन नहीं कयिा, और दनि में केवल दो कप पानी पयिा। फलिारेत, मेट्रोपॉलटिन। आर्चमिैंड्राइट एंथनी को पत्र। खंड 2, पृ. 391।

[1300] पोपोव. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 65; नकिोडेमस. जीवनयिाँ. जुलाई; RBS. पृ. 454.

वासलिी कशि्कनि के एक शषि्य (1745–1831)[1301] , वृद्ध और ह्यरोमोंक अथानासयिस, पैसयिस के उपर्युक्त शषि्यों में से एक, जो मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल से मलिने के बाद इन जंगलों में लौट आए, जन्हिें उन्होंने *डोब्रोतोल्यूबयिा* का स्लावोनकि पाठ प्रस्तुत कयिा। यहीं पर वासलिस्कि और ज़ोसमिा ने अपना तपस्वी जीवन शुरू कयिा; जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, वे बाद में साइबेरयिा चले गए, जहाँ वासलिस्कि का नधिन हो गया; ज़ोसमिा एक साध्वयिों के समुदाय की सेवा करने के लिए प्रसद्धि हुए। अंत में, हायरोमोंक एड्रयिन, जो वासलिस्कि और ज़ोसमिा के आध्यात्मकि पति था, भी वहाँ रहते थे; बाद में (1790 में) उन्हें मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल द्वारा सामुदायकि नयिम *एकेडेमयिा* ([1302]) के आधार पर कोनेवेट्स मठ में मठवासी जीवन को बहाल करने का काम सौंपा गया। एक अन्य तपस्वी, आर्सेनयिस नामक, पहले पैसयिस का शषि्य था; वह मोल्डोवा से रोस्लावल के जंगलों में आया था। इन सभी वृद्ध संतों के शषि्य थे जन्हिोंने बाद में मठवासी जीवन के पुनरुद्धार में योगदान दयिा, और अनातोली († 1865), माल्योयारोस्लावल मठ के मठाध्यक्ष, और मोसेस († 1862), ओप्टनिा हर्मटिेज के मठाध्यक्ष जैसे मठाध्यक्षों पर आध्यात्मकि प्रभाव डाला। पुलसि द्वारा इन तपस्वयिों पर कएि गए अत्याचारों के बावजूद, जनिका इरादा उन्हें मठों में बसाने का था और जो कभी-कभी उन्हें उनकी झोपड़यिों से जबरदस्ती नकिाल देते थे, फरि भी उनमें से कुछ बच नकिलने में सफल रहे: उदाहरण के लिए, डोरोथेयस († 1865) लगभग 60 वर्षों तक जंगलों में एक तपस्वी के रूप में रहे[1303] ।

4. मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल पेट्रोव का कार्य मठवाद के पुनरुद्धार पर केंद्रति था

रॉस्लावल के जंगलों के संन्यासयिों का एक समूह उन मठवाद के दायरों से उभरा, जन्हिोंने उस युग के वनिाशकारी प्रभाव के बावजूद अपनी आध्यात्मकि शक्ति या वास्तवकि मठवासी जीवन शैली की आकांक्षा नहीं खोई थी। यह आकांक्षा स्वयं मठवाद के भीतर से उत्पन्न हुई थी। इसलिए, मठवाद का चरत्रि चत्रिण करते समय, यह वशिेष मान्यता का पात्र है। यदि धार्मकि अधकिारयिों ने इस आंदोलन पर ध्यान दयिा होता और मठवासी जीवन पर इसका अधकि प्रभाव डालने की अनुमति दी होती, तो यह दूरगामी सुधारों का स्रोत बन सकता था। लेकनि अब, इस घटना को ऐतहिासकि परप्रिेक्ष्य से देखते हुए, यह भी नष्किर्ष नकिाला जा सकता है कि शायद यही बेहतर था कि पवत्रि सनिड ने अपनी प्रशासनकि बुद्धमित्ता पर भरोसा करते हुए, ऊपर से इस तपस्वी आंदोलन का मार्गदर्शन करने का काम हाथ में नहीं लयिा, – एक ऐसी बुद्धमित्ता जसिे सनिोडल बशिपों ने सनिड के 200 वर्षों के अस्तत्वि में एक बार भी प्रदर्शति नहीं कयिा है! – और उस मार्गदर्शन को दैवीय व्यवस्था पर छोड़ दयिा गया। परणिामस्वरूप, ये आध्यात्मकि शक्तयिाँ स्वतंत्र रूप से उस दशिा में नर्दिेशति हुईं जहाँ वे उपजाऊ जमीन पा सकती थीं और मठवाद के एक नए पुनरुत्थान को पोषति कर सकती थीं।

फरि भी, न तो मठों और मठवासी समुदाय की ज़रूरतें, और न ही मठवासी हलकों के भीतर उभर रहे आध्यात्मकि प्रवाह, चर्च पदानुक्रम के सर्वश्रेष्ठ प्रतनिधियिों से छपि हुए थे। इस संबंध में, ट्वेर के आर्चबशिप गैब्रयिल पेट्रोव, जो बाद में नोवगोरोड और सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलटिन बने, के कार्यों को वशिेष मान्यता मलिनी चाहिए। अपनी बाहरी रूप से शानदार स्थति के बावजूद, आर्चबशिप गैब्रयिल एक ऐसे व्यक्ति और धर्मगुरु बने रहे जनिके नैतकि चरत्रि को न तो उनके करयिर के क्षरणकारी प्रभाव और न ही उस युग की भावना द्वारा भ्रष्ट कयिा जा सका[1304] । उनके सेल के परचिारक, प्रसद्धि और बाद में महमिामंडति एल्डर थयिोफान सोकोलोव ने गैब्रयिल का एक

[1301] वरषि्ठ वासलिी कशिकनि के बारे में बहुत सारी जानकारी है, जो पूरी तरह से वशि्वसनीय नहीं है, जो उन्हें एक आध्यात्मकि रूप से प्रतभिाशाली व्यक्ति के रूप में वर्णति करती है। कई वरषि्ठों ने वासलिी का बहुत सम्मान से उल्लेख कयिा। उनकी जीवनी के कुछ ववरिणों के लिए, देखें: हलिारयिन, भक्षिु। हाइरोडीकन मेल्चीज़ेडेक का जीवन, में: आध्यात्मकि पठन 1889. 2. पृ. 184–201। जहाँ तक हमें पता है, उनके जीवन को समर्पति एक संक्षप्ति कृति *1915–17* में प्रकाशति हुई थी, *लेकनि मेरी उस तक पहुँच नहीं है।*

[1302] पमिेन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 295–300, 310; एल्डर एड्रयिन ने तपस्या संबंधी कई कृतयिाँ लखिीं, जो 600-600 पृष्ठों के दो खंडों में संकलति हैं (देखें ग्रंथसूची)।

[1303] पमिेन। उद्धृत कृति, पृ. 53; चेट्वेरीकोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 31; गेरसमि। एक संक्षप्ति नबिंध (1865)। पृ. 1–10; मुरावयिोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 135–139; आर्सेनेव। उद्धृत ग्रंथ, में: डेर क्रसि्टलीशेर ओस्टेन। पृ. 197.

[1304] मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल पेट्रोव (18 मई 1730–26 जनवरी 1801) और उनकी गतविधियिों को एक महत्वपूर्ण कृति समर्पति है: टट्लिनिोव, बी. गैब्रयिल पेट्रोव (1916), जसिमें कैथरीन द्वतिीय के शासनकाल के दौरान रूसी चर्च का एक सामान्य इतहिास भी शामलि है; और साथ ही: आर्कमिंड्राइट मकारी, *द लाइफ एंड वर्क्स ऑफ़ हज़ि एमनिेंस गैब्रयिल, मेट्रोपॉलटिन ऑफ़ नोवगोरोड एंड सेंट पीटर्सबर्ग* (1857), जसिकी प्रासंगकिता आज भी बनी हुई है। एल्डर थयिोफान की संस्मरणों (देखें टप्पिणी 1298) के अलावा, गैब्रयिल की व्यक्तत्वि उनकी पत्रों में भी परलिक्षति होती है, जैसे: *रूसी आर्क. 1864, 1869; 1895. 1; 1898. 3; 1908. 2* और *रीडग्सि. 1902. 1*। यह भी देखें: गोलुबस्कि़ी। इतहिास ऑफ़ कैनोनाइज़ेशन। पृ. 320 (गैब्रयिल के अवशेषों पर)।

संक्षप्ति लेकनि प्रभावशाली चरत्रि चत्रिण प्रस्तुत कयिा[1305] । शाही महारानी के साथ बातचीत में उतने ही सहज और सरल, जतिने कि एक साधारण भक्षिु या पैरशि पादरी के साथ, गैब्रयिल का सर्वत्र सम्मान और प्रेम कयिा जाता था; केवल चर्च की उच्च-पदवी व्यवस्था ही उन्हें लेकर एक नश्चिति संदेह रखती थी, क्योंकि उनका मानना था कि उनका सादा व्यवहार बशिप के पद की गरमिा को कम करता था; उन्हें लगता था कि उनकी गरमिा को तब ठेस पहुँचती थी, जब स्वागत समारोहों के दौरान, बशिप गैब्रयिल उन्हें साधारण भोजन परोसते थे - मटर से भरी पाई या दलयिा, जसिे तपस्वी मेट्रोपॉलटिन एक वशिेष रूप से भव्य व्यंजन मानते थे, क्योंकि वह स्वयं पत्तागोभी के सूप से ही संतुष्ट थे, जसिे उसके लिए कई दनिों तक चलने के लिए थोक में पकाया जाता था। वह अपना लगभग पूरा भत्ता जरूरतमंदों को दे देते थे, और उनके सेल के परचिारक, थयिोफेंस को यह सुनश्चिति करना पड़ता था कि वह सब कुछ न दे दें। सनिड में अत्यधकि व्यस्त होने और धर्मप्रांत के प्रशासन से संबंधति कई कर्तव्यों के बावजूद, संत गैब्रयिल प्रतदिनि चर्च सेवाओं में शामलि होते थे और अपने मठवासी प्रार्थना नयिम का सख्ती से पालन करते थे।

बी. टट्लिनिोव द्वारा लखिति गैब्रयिल की जीवनी में कहा गया है कि चर्च जीवन के सभी क्षेत्रों में उनके प्रभाव को महसूस कयिा गया और यह बहुत सकारात्मक प्रकृति का था। लेकनि अब हमारे लिए मठवासी तपस्या के पुनरुद्धार में बशिप गैब्रयिल की भूमकिा का आकलन करना महत्वपूर्ण है। ट्वेर (1763–1770) में अपने धर्मप्राचीन कार्यकाल के दौरान ही, गैब्रयिल ने इस दशिा में पहले कदम उठाए। उनका प्राथमकि उद्देश्य आधकिारकि और अनौपचारकि दोनों मठों और में सामुदायकि जीवन के मठवासी नयिम को पेश करना था, ताकि यह सुनश्चिति हो सके कि इसका प्रभावी ढंग से पालन कयिा जाए। नीलो-स्टोलोबेन्स्काया हर्मटिेज में, जो लोगों के बीच सबसे अधकि सम्मानति में से एक था और, 1764 के रजस्टिरों के अनुसार, गैब्रयिल के प्रयासों के कारण एक वशिेषाधकिार प्राप्त मठ के रूप में वर्गीकृत, नवसखिुओं और नव-दीक्षति भक्षिुओं की देखभाल अनुभवी, वृद्ध और भरोसेमंद भक्षिुओं को सौंपी गई; दूसरे शब्दों में, वरष्ठि प्रणाली की नींव रखी गई, हालांकि, यह स्वीकार करना होगा कि बाद में उनका वहाँ अनुकूल रूप से वकिास नहीं हुआ[1306] । इसके बाद क्लोप्स्की, तक्विनि और मोडेना मठों में सुधार के उपाय कएि गए।

इसके बाद, सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलटिन के रूप में पहले से ही सेवा करते हुए, 1782 में गैब्रयिल ने सोफ्रोन्इ्स्की हर्मटिेज—जो अपने नयिमों और जीवन शैली की कठोरता के लिए जाना जाता था—से पांच भक्षिुओं को वहां की तपस्वी जीवन शैली को बहाल करने के लिए अलेक्जेंडर नेवस्की लावरा में स्थानांतरति कर दयिा[1307] । वालाम मठ, जो 18वीं शताब्दी के पहले छमाही में लगी आग से लगभग पूरी तरह नष्ट हो गया था—इतना कि वहाँ का मठवासी जीवन पूरी तरह से पतन की ओर चला गया था—को सरोव हर्मटिेज के कठोर तपस्वी नाज़ारयिस († 1809) नामक इसके नए मठाधीश (1782–1801) के प्रयासों से पुनर्स्थापति कयिा गया। नाज़ारी एक काफी सख्त, वनिम्र और साधारण साधु थे। तम्बोव के बशिप थयिोफलिस (1788–1811), जन्हिोंने अपने धर्मप्रांत में साधु जीवन में सुधार के लिए स्वयं बहुत कुछ कयिा था, ने फादर नाज़ारी की सफिारशि बशिप गेब्रयिल से की। लेकनि मठाध्यक्ष और अन्य भक्षिु उस वरष्ठि से वंचति नहीं होना चाहते थे, और मठाध्यक्ष ने बशिप गैब्रयिल को लखिे एक पत्र में नज़ारयिस को एक साधारण, अनपढ़, लगभग मूर्ख व्यक्ति बताया। मठाध्यक्ष को जवाब में बशिप गैब्रयिल ने लखिा, 'मेरे पास अपने काफी चतुर लोग हैं, मुझे अपना मूर्ख भेज दो।' वालाम मठ में, बशिप गेब्रयिल ने एक मठवासी नयिम भी पेश कयिा[1308] । पैसयिस के शष्यि एल्डर एड्रयिन को कोनेवेट्स मठ को पुनर्जीवति करने का कार्य सौंपा गया[1309] । करिलिो-नोवोएज़ेर्स्की मठ में, जसिका नेतृत्व वृद्ध थयिोफान सोकोलोव (1793–1832) — जो गैब्रयिल के सेल सहायक थे और जनिका उल्लेख पहले ही यहाँ कयिा जा चुका है — के हाथ में था, सामुदायकि नयिम की शुरुआत और थयिोफान के नेतृत्व ने पूरी तरह से नई परस्थितियिाँ पैदा कर दीं, और लगभग खंडहर हो चुका मठ तपस्या के कारनामों का स्थान बन गया[1310] । मठीय जीवन को बेहतर बनाने के लिए गैब्रयिल की सलाह और सफिारशिों का उनके धर्मप्रांत के बाहर स्थति कई मठों पर भी स्थायी प्रभाव पड़ा। उदाहरण के लिए, मास्को में साइमनोव मठ का पुनरुद्धार काफी

[1305] सुबोटनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 63–67। पोसेल्याननि। द रशयिन चर्च एंड रशयिन एसेटक्सि ऑफ द 18th सेंचुरी (1905)। पृ. 198–214।

[1306] उस्पेंस्की। ए डस्क्रिप्शिन ऑफ द नीलो डेजर्ट (1886)। पृ. 45। मठों के संबंध में गैब्रयिल की गतविधियिों पर, देखें: टट्लिनिोव। उद्धृत ग्रंथ। पृ. 754; उनकी सभी गतविधियिों पर सामान्यतः– अध्याय 6।

[1307] मैकैरयिस, आर्चमिैंड्राइट। उद्धृत कृति, पृ. 172.

[1308] वालाम मठ और इसके तपस्वी (1903)। पृ. 147–157; सुबोटनि। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 67. बशिप थयिोफलिस (रेव) उन बशिपों में से थे जो वृद्ध (elder) के पद को बहुत सम्मान देते थे; सारोव हर्मटिेज के भक्षिुओं को लखिे उनके पत्र देखें, इनमें: रशयिन आर्टकिल्स 1914, खंड 160, पृष्ठ 608–624।

[1309] पमिैन। उद्धृत कृति, पृ. 295 आदि; *रूसी लेख*, 1835, खंड 1, पृ. 119–126।

[1310] तुलना करें: मेरी पुस्तक, उद्धृत कृति, पृ. 128–143; सुबोटनि, उद्धृत कृति।

हद तक मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल के कारण हुआ, क्योंकि गैब्रयिल ने टकि्वनि मठ के आर्चमिैंड्राइट इग्नेशयिस—जो पैइसयिस के अंतमि शष्यिों में से एक थे—को वहां के मठाध्यक्ष के रूप में सेवा करने के लिए भेजा था[1311] ।

मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल का एक बड़ा योगदान संन्यासयिों के लिए तपस्या संबंधी लेखन को सुलभ बनाने के उनके प्रयास में भी था। उनके प्रयासों के कारण, *डोब्रोतोलीउबए* का पहला संस्करण सेंट पीटर्सबर्ग में प्रकाशति हुआ – यह एक ऐसा संग्रह था जो बाद में संन्यासयिों की, और फरि सामान्य श्रद्धालुओं की, तपस्या संबंधी पठन-सूची में दृढ़ता से स्थापति हो गया। गैब्रयिल की सभी गतविधियिाँ, जन्हिोंने बाद के काल—उन्नीसवीं सदी के पहले छमाही—में मठवासी जीवन को प्रभावति कयिा, ने एक वास्तवकि तपस्वी मठवासी जीवन शैली की नींव रखने में पहला कदम बनाया और आध्यात्मकि पतित्व परंपरा के वकिास में बहुत योगदान दयिा। इसके कारण, जहाँ आध्यात्मकि पतित्व प्रणाली जड़ नहीं जमा सकी, वहाँ भी संतों के जीवन में फरि भी बेहतर बदलाव आए।

५ *सारोव हर्मटिेज और परम पूज्य सेराफमि*

18वीं सदी के अंतमि चौथाई भाग में और वशिेष रूप से 19वीं सदी के पहले आधे भाग में, अपने नविासयिों के जीवन-यापन की वशिेष कठोरता के लिए एक मठ जो वशिष्टि था, वह अपेक्षाकृत नया सारोव हर्मटिेज था। इसकी समृद्धि का श्रेय भक्षिुओं और मठाधीशों की एक पूरी श्रृंखला को जाता है – यहाँ हम एक उदाहरण देखते हैं कि कैसे कुछ ही साधु एक मठ के पूरे जीवन को बदल सकते हैं और आने वाले लंबे समय के लिए उसमें एक वास्तवकि मठवासी वातावरण बना सकते हैं।

टैम्बोव डायोसीस में टेम्नकिोव शहर से 40 कमिी दूर, पड़ोसी नज्निी नोवगोरोड डायोसीस की लगभग सीमा पर स्थति सारोव हर्मटिेज, इन दोनों डायोसीस और उनके मठों के लिए एक आध्यात्मकि केंद्र बन गया। इसकी स्थापना अपेक्षाकृत देर से, लगभग 1692 में हुई थी; इसके संस्थापक हएिरोमोंक इसाक († 1737) थे, जन्हिोंने 1731 तक इस आश्रम के मठाधीश के रूप में कार्य कयिा, जसिके बाद उन्होंने इसका प्रशासन हेग्यूमेन डोरोथयिस (1731–1746) को सौंप दयिा, जबकि उन्होंने स्वयं जॉन[1312] नाम से महान स्कीमा (1731) ग्रहण की। उन्होंने माउंट अथोस के समान एक बहुत ही सख्त मठवासी नयिम पेश कयिा, जसिे उनके उत्तराधकिारयिों द्वारा बनाए रखा गया। सारोव हर्मटिेज के लिए यह एक बड़ी सौभाग्य की बात थी कि 150 वर्षों तक इसका प्रशासन सच्चे तपस्वी भक्षिुओं के हाथों में रहा। इस युग के लगभग सभी मठाधीश – डोरोथयिस (1731–1746), फलिारेट (1746–1749), एफ्रेम (1758–1777), पाचोमयिस (1777–1794), यशायाह प्रथम (1794–1807), नफिॉन (1807–1842), यशायाह द्वतीय (1846–1858)—योग्य संन्यासी थे: मठ के शासन में, उन्होंने न केवल मठवासी संवधिान के नयिमों का सख्ती से पालन करने का प्रयास कयिा, बल्कि इन नयिमों में जीवन फूँकने और उन्हें आंतरकि आध्यात्मकि अर्थ प्रदान करने का भी प्रयास कयिा; वे जानते थे कि सारोव हर्मटिेज में आने वाले नवसखियिा संतों का ठीक से मार्गदर्शन कैसे करना है। यह कहा जा सकता है कि उस समय, सारोव हर्मटिेज में, मठाध्यक्ष एक आध्यात्मकि पता (पैटर स्परिचिुअलसि) के रूप में भी कार्य करते थे, जैसा कि प्रारंभकि चर्च में अक्सर होता था। हर्मटिेज का आंतरकि, आध्यात्मकि जीवन प्रारंभकि ईसाई तपस्या में नहिति था।

जब हम सारोव हर्मटिेज के इतहिास का पता लगाते हैं, तो हम संन्यासयिों की एक ऐसी श्रृंखला देखते हैं जन्हिोंने कठोर तपस्या का जीवन जयिा और जन्हिोंने हर्मटिेज को ख्याति दलिाई, जसिसे यह नए संन्यासयिों के लिए एक आकर्षण का केंद्र बन गया। उनमें से कुछ का वशिेष उल्लेख करना उचति है। हरिोमोंक जोआचमि (1732–1802) ने लगभग 50 वर्ष बनिा कसिी रुकावट के मठ में बतिाए; वे भजन-पाठक और पुस्तकालयाध्यक्ष थे, और उन्होंने अपना अधकिांश समय तपस्या संबंधी ग्रंथों की प्रतलिपिि बनाने में समर्पति कयिा। (मैकेरयिस द ग्रेट, एफ्रेम द सीरयिन और अन्य)[1313] , फरि भी उन्होंने मठ की दीवारों के बाहर की दुनयिा को नहीं भुलाया और स्थानीय नविासयिों पर बहुत

[1311] आर्कमिंड्राइट मकारी। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 69, 73–74; पोपोव। उपरोक्त, पृ. VI। साइमनोव मठ में प्रामाणकि मठवासी जीवन की बहाली पर चर्चा करते समय, एल्डर अलेक्सयिस (ब्लस्कि; 1722–1812) का वशिेष उल्लेख कयिा जाना चाहिए, जो 40 वर्षों (1772–1812) तक मठ के आध्यात्मकि जीवन का केंद्र बदिु थे। एल. हएिरोमोंक अलेक्सयिस, मॉस्को के साइमनोव मठ के तपस्वी (दूसरा संस्करण 1891); हम यह पता नहीं लगा सके कि पहला संस्करण कब प्रकाशति हुआ था।

[1312] 1732 में, जॉन को गुप्त चान्सलरी के एजेंटों द्वारा गरिफ्तार कर लयिा गया; उन पर शक्तशिाली थयिोफान प्रोकपोवचि के खलिाफ नर्दिेशति कुछ लेखों के स्वामतिव का आरोप लगाया गया था (तुलना करें अध्याय XIII)। यह संन्यासयिों पर अत्याचार का दौर था, जो जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, अन्ना इओआनोव्ना के अधीन शुरू हुआ था। जॉन अपनी मृत्यु (4 अप्रैल 1737) तक सेंट पीटर्सबर्ग की जेल में रहे। RBS. पृ. 139.

[1313] सारोव हर्मटिेज में तपस्या संबंधी ग्रंथों की नकल करना एक नरिंतर चलने वाली प्रथा थी; उदाहरण के लिए, बोनफिेस नामक एक भक्षिु ने वहाँ नम्निलखिति ग्रंथों की नकल की: कैलस्टिस और इग्नाटयिस ज़ैथोपोलोस द्वारा *द हंड्रेड चैप्टर्स* (1814), बेसलि द ग्रेट और जॉन

बड़ा प्रभाव डाला। शायद उन्हीं की बदौलत लोगों ने इस मठ को एक पवत्रि स्थान के रूप में पूजना शुरू कर दयिा। वरषि्ठ नाज़ारयिस (1735–1809), जनिसे हम पहले से ही परचिति हैं, ने वलाम मठ में स्थानांतरति होने से पहले यहाँ शरण ली थी, और यहीं उन्होंने अपने जीवन के अंतमि वर्ष बतिाए। हमें उनके शषि्य मार्क द हर्मटि († 1817), जो सेंट सेराफमि के समकालीन थे; हाइरोमोंक पटिरिमि († 1789); और वलाम मठ के हाइरोमोंक हलिारयिन (1776–1841), जो एल्डर नज़ारयिस के शषि्य थे, का भी उल्लेख करना चाहए। हलिारयिन 1797 में सारोव पहुँचे और आश्रम में 44 वर्ष बतिाए; उन्होंने मठ के आध्यात्मकि पति के रूप में सेवा की और इसके आध्यात्मकि वातावरण के संरक्षण में बहुत योगदान दयिा; उन्होंने ईसाई जीवन पर उत्कृष्ट 'पत्रों' का एक संग्रह छोड़ा, जसिकी सामग्री संत सेराफमि के प्रभाव को दर्शाती है। उनकी मृत्यु के बाद, आश्रम का मुख्य स्तंभ हेग्यूमेन इसैया द्वतिीय (पुतलिोव; 1786–1858, 1846 से 1858 तक मठाध्यक्ष) बने, जो एक अमीर व्यापारी के बेटे थे; वह 1805 में सारोव आए और 1858 तक वहीं रहे, उन्होंने एक बार भी मठ की सीमा नहीं छोड़ी; अपने महाधर्माध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान और उनके प्रेरण पर, हायरोमोंक एबेल ने इस मरुस्थल का इतहिास लखिा, *[1314] *।

लेकनि कसिी ने भी उस साधु के जतिना उस आश्रम का गौरव नहीं बढ़ाया, जसिे रूसी चर्च ने 1903 में संत घोषति कयिा था – सरोव के पूजनीय सेराफमि। और कसिी अन्य रूसी संत ने सेराफमि की तरह अपने जीवन में संसार का त्याग और उसकी सेवा को इतनी अद्भुत रूप से एक साथ नहीं जोड़ा, जन्होंने सच्ची ईसाई पवत्रिता का उदाहरण प्रस्तुत कयिा। हमने पहले ही एक बार इस तपस्वी और ईश्वर के पुरुष का चरत्रि चत्रिति करने का प्रयास कयिा है; यहाँ हम संक्षेप में उस ववरिण को दोहराएंगे[1315] ।

संत सेराफमि ने दुनयिा में रहने वाले कई लोगों की मदद की, हालांकि उनका स्वयं दुनयिा की घटनाओं से कोई संपर्क नहीं था। प्राचीन ईसाई तपस्वयिों और सारोव रेगस्तिान में उनके कुछ साथी भक्षिुओं की तरह, सराफमि 50 से अधकि वर्षों तक जंगल के एकांत में एक तपस्वी के रूप में रहे; केवल अपने सांसारकि जीवन (1759–1833) के अंतमि वर्षों में, तपस्या के एक लंबे दौर और अपनी आध्यात्मकि परपिक्वता के पूर्ण एहसास के बाद, उन्होंने आठ वर्षों की अवधि के लिए साहस जुटाया (1825–1833) इस दुनयिा की परेशानयिों और ज़रूरतों का जवाब देने और आम लोगों को आध्यात्मकि सहायता प्रदान करने के लिए; एक बुज़ुर्ग के रूप में उनकी सेवा दुनयिा के लिए ईसाई प्रेम की अद्भुत रोशनी बखिेरती है, जसि पर उन्होंने अपने भीतर हमेशा के लिए वजिय प्राप्त कर ली थी।

अन्य कई रूसी तपस्वयिों की तरह, सेराफमि एक अमीर व्यापारी परविार से थे। यह रूसी धर्मनषि्ठ तपस्वयिों की जीवनयिों में एक बहुत ही वशिषि्ट वशिषता है, जो कई पीढ़ियों से अपने पूर्वजों के लिए वशिषि्ट, सांसारकि उद्यम के माहौल में पले-बढ़े थे; – उन्हें इस दुनयिा की खुशयिों का आनंद लेने और इसे त्यागने के बारे में न सोचने का भरपूर अवसर मलिा था; फरि भी हम बार-बार देखते हैं कि कैसे भक्ति की भावना एक रूसी ईसाई परविार के जीवन में अपनी शक्ति प्रकट करती है, और सांसारकि प्रलोभनों की तुलना में कई, कई लोगों पर अधकि प्रभाव डालती है। और प्रोकhor मोश्निि उन लोगों में से एक थे, जन्होंने अपने युवा काल से ही इस संसार के मूल्यों को कुछ भी नहीं समझा। युवा, मजबूत और गरमिामय प्रोकhor मठवासी जीवन की ओर आकर्षति हुए।

लगभग 20 वर्ष की आयु में, वह कीव-पेचेरस्क लाव्रा की तीर्थयात्रा के दौरान वहाँ एकांत में रह रहे एल्डर डोसटियिस († 1788) से मलिी सलाह पर सारोव हर्मटिेज आए। अपने नवोदति काल के सात वर्षों तक, प्रोकhor के आध्यात्मकि पति हएिरोमोंक जोसेफ थे। 1786 में, प्रोकहोर ने सेराफमि नाम से मठवासी संस्कार ग्रहण कयिा। इसके तुरंत बाद, सेराफमि को बशिप थयिोफलिस द्वारा एक हाइरोडीकन (1793) के रूप में अभषिेक कयिा गया, जो हर्मटिेज के साथ घनषि्ठ संबंध बनाए हुए थे। उन वर्षों के दौरान, जैसा कि उन्होंने अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले बताया था, उन्हें दविय दर्शन हुए: परम धन्य कुँवारी मरयिम और स्वयं यीशु मसीह उन्हें प्रकट हुए और उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दयिा। क्योंकि किसी अन्य रूसी संत के लिए ईश्वर की माता, आदरणीय सेराफमि के लिए जतिनी हद तक रहस्यमय

ऑफ़ डेमास्कस के वभिन्नि तपस्या संबंधी ग्रंथ (1815); थॉमस ए केम्पसि (!) (1816), व्यक्तगित लघु कृतयिों का एक संग्रह जसिे उन्होंने *द स्परिचिुअल बैपटज़िम* शीर्षक दयिा (1817), बेसलि द ग्रेट की और तपस्या संबंधी कृतयिाँ (1820), और मार्क द एस्कटकि से संबंधति तपस्या संबंधी सामग्री के अंश (1821), अन्य के बीच। पॉपोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 12, 17, 19, 23, 44, 69।

[1314] डेनसिोव। संख्या 889; ज़्वेरींस्की। 2. संख्या 1141; प्राव. ओब. 1863. 7. पृ. 154; एबेल, हाइरोमोंक। द कम्यूनल सारोव हर्मटिेज (1853)। पृ. 7–15; इसी में भक्षिु हलिारयिन के कुछ पत्र (पृ. 167–174) भी शामलि हैं, साथ ही: इल्यनि। द वेनेरेबल सेराफमि ऑफ़ सारोव (1925); RBS. पृ. 141 (यशायाह), 178 (योआकमि)।

[1315] संत सेराफमि पर, मेरी पुस्तक देखें: *Leben und Lehre der Starzen* (1936)। पृ. 209–258; इलनि। *Selected Works* (जसिमें सबसे महत्वपूर्ण साहत्यि की एक सूची शामलि है); सेराफमि (चचिागोव), आर्चमिांड्राइट। *Chronicle of the Seraphim-Diveyevo Monastery* (1903)।

अनुभव का केंद्र बदिु और इतनी भक्तपिूर्ण श्रद्धा की वस्तु थीं, उतनी कसिी और के लिए नहीं थीं[1316] । सराफमि के धार्मकि और रहस्यमय अनुभव का यह पहलू न केवल उन्हें उनके समकालीनों से अलग करता है, बल्कि उन्हें रूसी रहस्यवाद, या यूँ कहें कि रूसी रहस्यमय खोजों के इतहिास में एक वशिष स्थान पर भी स्थापति करता है। अपनी पुस्तक में, हमने इस तथ्य पर प्रकाश डाला है और इसका वस्तिार से वर्णन कयिा है।

1794 के अंत के आसपास, सेराफमि रेगस्तिान से दो घंटे की पैदल दूरी पर, एक घने, अछूते स्प्रूस के जंगल में बनी एक छोटी सी जंगल की झोपड़ी में चले गए, और यहीं से उनकी एक तपस्वी के रूप में जीवन की शुरुआत हुई, जो 30 वर्षों (1794–1825) तक चली। उन्होंने अपना काला मठवासी चोगा उतार दयिा और एक सफेद कासोक पहन लयिा। अपनी पीठ पर, सेराफमि हमेशा अपने अत्यधकि शक्तशिाली शरीर को दंडति करने के लिए पत्थरों से भरा एक झोला रखता था; पवत्रि सुसमाचार हमेशा उनके साथ रहता था, वे जहाँ भी जाते थे; अपनी कासक के नीचे, अपनी छाती पर, उन्होंने 20 पाउंड वज़न का एक भारी लोहे का क्रॉस पहना था; उन्होंने अपनी पीठ पर भी एक ऐसा ही क्रॉस पहना था, और अपनी कमर के चारों ओर एक लोहे का पट्टा बाँध रखा था। सर्दयिों में वह अपने चूल्हे के लिए जंगल में लकड़ियाँ काटता था, जो हालांकि कड़ाके की ठंड के दौरान उसकी कोठरी को केवल थोड़ी सी गर्मी ही दे पाती थीं; गर्मयिों में वह सब्जी के बगीचे में काम करता था और वही खाता था जो वह स्वयं उगाता था; बाद में उसने केवल घास और सूखे चारे पर ही जीवन यापन करना शुरू कर दयिा, जसिे वह जंगल से इकट्ठा करके उबाल लेता था। तीन साल—1,000 से अधकि दनि और रातें—सेराफमि ने अखंड प्रार्थना में बतिाईं, एक वशिाल चट्टान पर घुटने टेककर अपने हाथ ऊपर उठाए हुए—इस प्रकार उन्होंने खंभे की तरह खड़े रहने का कारनामा कयिा। और यह सब उनकी तपस्या के प्रयासों की केवल शुरुआत थी।

तभी उसे एक प्रलोभन का सामना करना पड़ा। एक दनि, जब संत जंगल में लकड़ी काट रहे थे, तो उन पर डाकुओं ने हमला कर दयिा, जन्होंने पैसे की मांग की, यह मानते हुए कि संत ने उन्हें भक्तों से लयिा था। जब पूजनीय फादर ने जवाब दयिा कि उनके पास कुछ नहीं है, तो उन्होंने उन्हें कुल्हाड़ी से मारा। हालाँकि सेराफमि के हाथों में भी एक कुल्हाड़ी थी और वह डाकुओं से अपना बचाव करने के लिए काफी मजबूत था, उसने उनका वरिोध न करने का फैसला कयिा। वह रात के देर तक, बेहोश और खून से लथपथ, जमीन पर पड़ा रहा। अगली सुबह, खून से लथपथ, वह मठ की ओर चल पड़ा। मठाधीश ने उसे डॉक्टर के पास जाने को कहा, लेकनि थकान और कमजोरी से घरि सेराफमि डॉक्टर के आने से पहले ही सो गए। जैसा कि रेवरेंड ने बाद में खुद बताया, उस क्षण परमेश्वर की माता एक बार फरि उनके सामने प्रकट हुईं, उनके सरि पर एक शाही मुकुट था, जबकि प्रेरति पतरस और यूहन्ना उनकी दाईं और बाईं ओर खड़े थे, ठीक वैसे ही जैसे वे उनकी पहली दृष्टि में थे। स्वर्ग की रानी, जैसा कि सेराफमि ईश्वर की माता को बुलाना पसंद करते थे, उस स्थान की ओर मुड़ी जहाँ, बाद में, संत के जागने पर, डॉक्टर खड़े थे, और, बीमार व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए, कहा: 'तुम इतनी मेहनत क्यों कर रहे हो?' – और फरि, प्रेरतिों की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा: 'यह हमारे जैसे ही है!' – और , उसी क्षण सेराफमि जाग उठा। रेवरेंड फादर ने डॉक्टरों की मदद लेने से इनकार कर दयिा; वह कई हफ्तों तक बनिा उठे अपनी कोठरी में लेटा रहा। उसका मजबूत शरीर टकिा रहा, और अंत में वह अपने बस्तिर से उठ खड़ा हुआ, लेकनि वह हमेशा के लिए झुक गया और अब लाठी के सहारे के बनिा चल नहीं सकता था। आइकन (चत्रिों) में उन्हें इस प्रकार दर्शाया गया है: एक सफेद चोगा पहने, मोटे जूते पहने, और कंधों पर पत्थरों से भरा एक भारी झोला लटकाए हुए – ठीक होने के बाद भी उन्होंने यह झोला उठाए रखना जारी रखा, लेकनि उनके चेहरे की बनावट अपरविर्तति रही।

कुछ महीने बाद, रेवरेंड मठ से अपनी जंगल की झोपड़ी में लौट आए। अभ्यस्त इज़ाया प्रथम (1807) की मृत्यु के बाद, भाइयों ने सेराफमि से अभ्यस्त का पद संभालने के लिए कहा, लेकनि उन्होंने वनिम्रता से इस सम्मान को अस्वीकार कर दयिा। अब सेराफमि ने एक नया तपस्या का कारनामा कयिा: तीन साल तक वह पूर्ण मौन में रहे और उन भक्षिुओं से भी नहीं बोले जो उनके लिए दैवीय पूजा के लिए प्रॉस्फोरा और खाने के लिए रोटी लाते थे। उन्होंने लोगों से अपना चेहरा छपिाने की कोशशि की, और जब भी कोई उनके पास आता था तो उसे ढक लेते थे। सराफमि के लिए, मौन का यह कृत्य केवल एक नए और बड़े कृत्य की तैयारी भर था।

8 मई 1810 को, वह जंगल से उस तपस्थालय में लौटे, जहाँ वे पूरे तीन साल से नहीं गए थे। वे संध्या की प्रार्थना के लिए मठ में आए - यह संत नकिोलस चमत्कारकर्ता के पर्व की पूर्व संध्या थी - और चुपचाप अपनी कोठरी की ओर चल दिए। उत्सव के ठीक उसी दनि, पूजनीय सेराफमि प्रातकालीन दैवीय अनुष्ठान में आए, उन्होंने पवत्रि भोज ग्रहण कयिा और मठाधीश, फादर नफिोंट द्वारा आशीर्वाद प्राप्त कयिा। फरि वे अपनी कोठरी में लौट आए और

[1316] तुलना करें मेरा नबिंध: 'Die Verehrung der Gottesmutter in der russischen Frömmigkeit und Volksreligiosität', में: *Kyrios*. 5 (*1940–41).*

अपने आप को बंद कर लिया। सेराफिम ने एक नए कृत्य - एकांतवास का कृत्य - की शुरुआत की। उन्होंने अकेलेपन में डेढ़ साल बिताए। सर्दियों में, वह अपना सारा समय एक बिना हीटिंग वाली कोठरी में बिताते थे, जो स्वर्ग की रानी की प्रतिमा के सामने रखे एक दीपक की मद्धिम रोशनी से जगमगाती थी। पहले वह एक लट्ठी पर बैठकर सोते थे, और बाद में एक ताबूत में लेटकर, जिसे उन्होंने खुद के लिए तराशा था। जंगल की झोपड़ी में की तरह ही, सेराफिम अपने शरीर पर लोहे की जंजीरों को पहनते थे; अपने जीवन को और भी कठिन बनाने के लिए, वह सेल के एक छोर से दूसरे छोर तक जलाऊ लकड़ी ले जाते थे। दिन में वह पवित्र शास्त्रों को ज़ोर से पढ़ते थे; रात में वे मानसिक प्रार्थना का अभ्यास करते थे – 'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मुझ पर दया करो' – और उपवास करने तथा अपने हृदय की रक्षा करने में स्वयं को समर्पित कर देते थे। इस दौरान, सेंट सेराफिम ने प्रार्थना करते समय विभिन्न दर्शन देखे, जिन्हें उन्होंने बाद में अपने कुछ शिष्यों को सुनाया। रविवार और त्योहारों के दिनों में, वे पवित्र Communion ग्रहण करते थे, जिसे मठाधीश की अनुमति से, शुरुआती पूजा के बाद उनकी कोठरी के दरवाजे में एक छोटी सी खिड़की से उनके पास भेजा जाता था। जब धर्मप्रांतीय बिशप अड्डे पर पहुँचे और उनकी कोठरी के पास गए, तो दरवाज़ा उनकी कृपा के लिए भी नहीं खुला। केवल दस साल के एकांतवास के बाद ही सेराफिम ने लोगों को अपनी कोठरी में प्रवेश करने की अनुमति दी - उन्होंने चुपचाप इसकी अनुमति दे दी।

25 नवंबर 1825 को, उस तपस्वी की कोठरी का दरवाज़ा खुला, और उस समय से ही सेराफिम के लिए उनकी आध्यात्मिक नेतृत्व की अवधि, दुनिया की सेवा का काल शुरू हुआ – एक महान, अनुग्रह से परिपूर्ण प्रयास, जो असीम प्रेम से भरा था। तीर्थयात्री बड़ी संख्या में उनकी कोठरी पर उमड़ पड़े। जब वे उनसे बात करते और उन्हें निर्देश देते थे, तो वरिष्ठ सेराफिम ने उन्हें निरंतर प्रभु को याद करने और लगातार प्रार्थना करने की सलाह दी, विशेष रूप से मानसिक प्रार्थना के माध्यम से। फादर सेराफिम कहा करते थे कि यह प्रार्थना सभी संयम और सतर्कता को समाहित करती है; मनुष्य को यह प्रार्थना हमेशा अपनी आत्मा और हृदय में रखनी चाहिए, इसे चलते-फिरते, बैठते समय, काम करते समय, और चर्च में सेवा शुरू होने से पहले अर्पित करते हुए। ईश्वर के नाम का स्मरण करने से, आपको आत्मा और शरीर की शांति और पवित्रता मिलेगी, और पवित्र आत्मा, जो सभी अच्छाइयों का स्रोत है, आप पर विराजमान होगा और आपको ईश्वर के भय और पवित्रता में संरक्षित रखेगा। बातचीत के अंत में, साधु विदाई की एक प्रार्थना का पाठ करते, अपना आशीर्वाद देते और आगंतुक को चूमते हुए कहते: 'मसीह जी उठे हैं, मेरी खुशी!' – और वह व्यक्ति अपनी आँखों में भावनात्मक आँसुओं के साथ अपनी कुटिया से निकल जाता।

एक तपस्वी के रूप में अपने जीवन के अंत से ठीक पहले, सेराफिम से एक असाधारण शक्ति उत्सर्जित हुई: उन्होंने मिखाइल मंटुरोव को ठीक कर दिया, जो एक ज़मींदार और धर्मनिष्ठ ईसाई थे और लंबे समय से पैरों के पक्षाघात से पीड़ित थे। और यह तो अनेक चमत्कारी उपचारों की केवल शुरुआत थी; संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से, बीमार—चाहे वे लंबे समय से गंभीर बीमारियों से पीड़ित हों या अचानक अस्वस्थ हो गए हों—स्वस्थ हो गए। कई लोगों ने दुनिया के प्रति उनकी सेवा की गवाही दी। उनकी कई भविष्यवाणियाँ भी सच हुईं। यहाँ इसका सिर्फ एक उदाहरण है: 1831 में, पोलिश विद्रोह के दौरान, एक निश्चित रेजिमेंट की एक कंपनी सारोव हर्मिटेज से होकर गुज़र रही थी। कंपनी कमांडर, जो संभवतःएक श्रद्धालु व्यक्ति था, ने सैनिकों को रुकने का आदेश दिया ताकि वे एल्डर का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। एल्डर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और प्रत्येक सैनिक को व्यक्तिगत रूप से आशीर्वाद दिया। और अचानक उन्होंने कहा कि उस कंपनी का एक भी व्यक्ति नहीं मरेगा। कंपनी ने पूरे पोलिश अभियान में लड़ाई लड़ी, वारसॉ पर चढ़ाई में भाग लिया, और इसमें से एक भी सैनिक मारा नहीं गया।

संत ने अपने एक आगंतुक - निकोले मोटोविलोव के प्रति विशेष स्नेह दिखाया, जो पैरों की बीमारी से पीड़ित था, और जिसे उन्होंने अपनी पीड़ा से ठीक कर दिया। नवंबर 1831 में, झोपड़ी के पास एक जंगल के खुले हिस्से में जहाँ पूज्य सेराफिम 1825 से एक तपस्वी के रूप में रहते थे और आगंतुकों से मिलते थे, मोटोविलोव को वृद्ध से पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के बारे में निर्देश मिला[1317] और पूज्य व्यक्ति के साथ, उन्हें पवित्र आत्मा की कृपा के प्रकट होने का एक दर्शन प्राप्त हुआ। इसके अलावा, संत सेराफिम के जीवन में महिला संन्यासियों का आध्यात्मिक मार्गदर्शन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था; यह दिवेयेवो बहन-संघ के इतिहास से स्पष्ट है, जिसे बाद में एक मठ में बदल दिया गया था।

अपने निधन से पहले के अंतिम आठ वर्षों के दौरान वरिष्ठ सेराफिम का जीवन वास्तव में एक संत का जीवन बन गया था। प्रेम से परिपूर्ण अपने कर्मों के माध्यम से, वह बहुत पहले ही इस सांसारिक दुनिया की सीमाओं से परे

[1317] एन. मोटोविलोव के नोट्स 'पवित्र आत्मा को प्राप्त करने पर सेंट सेराफिम की शिक्षा' पहली बार 1903 में *मोस्कोव्स्की वेदोमोस्ती* में प्रकाशित हुए थे (मेरी पुस्तक में, पृष्ठ 230-245 पर पाठ देखें) - इससे पहले, उन्हें चर्च की सेंसरशिप द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया था। यह भी देखें: फ्लोरेन्स्की, पी. *द पिलर एंड द अफ़र्मेशन ऑफ़ ट्रुथ* (1914)। अध्याय 5 (पत्र 5)।

हो चुके थे। और उनके जंगल के कोठरी में आने वाले भक्तपिूर्ण श्रद्धालुओं के लिए, वह अब केवल एक इंसान नहीं रहे, बल्कि एक संत थे जो मानवता के प्रति प्रेम के कारण ही देह में बने रहे। उनके बाहरी रूप में एक अन्य, स्वर्गीय दुनिया की दिव्य चमक झलकने लगी थी।

रविवार, 1 जनवरी 1833 को, वृद्ध ने अंतिम बार दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान किया। अपनी कोठरी में, उन्होंने पूरे दिन पास्का के भजन गाए, और तीन बार वे उस स्थान पर गए जिसे उन्होंने अपनी कब्र के लिए चुना था। अगले दिन, 2 जनवरी को, उन्हें उनकी कोठरी में प्रार्थना की मुद्रा में घुटने टेके हुए मृत पाया गया, स्वर्ग की रानी की उस प्रतिमा के सामने जिसे 'द टेंडर-हार्टेड' के नाम से जाना जाता है – पूजनीय सेराफिम शाश्वत जीवन में प्रवेश कर चुके थे। कई पीढ़ियों के श्रद्धालुओं द्वारा, जो उनकी कब्र पर प्रार्थना करने के लिए श्रद्धापूर्वक आते थे, उन्हें दिखाए गए महान सम्मान के बावजूद, सिनिड ने इस सम्मान को विशेष रूप से अनुकूल नहीं माना। आधिकारिक तौर पर, संत सेराफिम को केवल 1903 में ही संत घोषित किया गया था; 19 जुलाई 1903 को उनके अक्षुण्ण अवशेषों का स्थानांतरण हुआ। रूस में रहने वाला कोई भी व्यक्ति जानता है कि इस संत का सभी क्षेत्रों में कितनी गहराई से सम्मान किया जाता है[1318] ।

6. ऑप्टिना हर्मिटेज और इसके एल्डर्स

ऑप्टिना हर्मिटेज उन्नीसवीं सदी के रूस के आध्यात्मिक और धार्मिक जीवन में एक बहुत ही विशेष स्थान रखता है। स्वयं हर्मिटेज और वह स्केट जहाँ ऑप्टिना के साधु रहते थे और अपने तप को साधते थे, अंततः पूरे देश में प्रसिद्ध हो गए। यहीं पर ऑप्टिना स्कूल का निर्माण हुआ, जिसने लगभग एक पूरी सदी (1828–1922) तक रूस के आध्यात्मिक जीवन पर एक शक्तिशाली प्रभाव डाला। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, वरिष्ठ लियोनिद (1828–1841), मकारी (1841–1860), का उल्लेख किया जाना चाहिए, एम्ब्रोज़ (1860–1891), जोसेफ (1892–1911), वरसनोफियस († 1913), नेक्टारियस († 1928) और अनातोलियस († 1922)। अनुपेक्षित आश्रम एक सख्त सामुदायिक नियम के तहत रहता था: न तो मठाधीश और न ही संन्यासियों के पास कोई व्यक्तिगत संपत्ति थी; वे सभी भोजनशाला में मठाधीश के साथ मिलकर भोजन करते थे; यहाँ तक कि चाय या चीनी जैसी छोटी-छोटी चीजें भी संन्यासियों को आश्रम द्वारा प्रदान की जाती थीं, कपड़े और जूते का तो कहना ही क्या। केवल स्केटे के वरिष्ठों के लिए भोजन अलग से तैयार किया जाता था और उनकी कोठरियों में लाया जाता था। प्रत्येक भिक्षु की अपनी कोठरी थी; 19वीं सदी की शुरुआत में लगभग 300 की संख्या वाले नवसिखुओं और भिक्षुओं को मठाधीश या सेल-मास्टर द्वारा कर्तव्य सौंपे जाते थे। धार्मिक अनुष्ठानों की समय-सारणी का विशेष कठोरता से पालन किया जाता था: टाइपिकॉन द्वारा निर्धारित सभी अनुष्ठान उचित क्रम में संपन्न होते थे, और भाइयों के लिए उनमें उपस्थिति होना अनिवार्य था; मरुभूमि की आंतरिक भावना इतनी एकजुट थी, और यह निवासियों के मन और आत्मा में इतनी गहराई तक समाई हुई थी, कि मठाधीश या बुजुर्गों को भिक्षुओं को कुछ करने के लिए मजबूर करने या उन्हें डांटने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती थी। इस भावना का मठ में आने वाले भक्तों और आगंतुकों पर भी प्रभाव पड़ा, जो वहाँ ठहरने के दौरान नियमित रूप से सेवाओं में भी शामिल होते थे।

मठ के आंतरिक जीवन की यह संरचना केवल 19वीं शताब्दी में ही आकार में आई, हालांकि ऑप्टिना की स्थापना प्राचीन काल में हुई थी। आर्चप्रीस्ट सेर्गी चेत्वेरिकोव, जो ऑप्टिना से आंतरिक रूप से और बाहरी रूप से भी रूप से जुड़े थे—उनका तपस्वी स्वभाव उन्हें एक एल्डर जैसा बनाता था—उन्होंने कई मौकों पर मठ का दौरा किया और अपने स्वयं के अवलोकनों और छापों के आधार पर, ऑप्टिना हर्मिटेज के बारे में एक अद्भुत पुस्तक लिखी:[1319]
.

यह प्राचीन रूसी मठ ओका नदी की एक संकरी लेकिन गहरी सहायक नदी, झिज़्द्रा के किनारे, एक विशाल, घने चीड़ के जंगल के किनारे पर स्थित है। मठ सफेद पत्थर की दीवारों से घिरा हुआ है, जिसके प्रत्येक कोने पर छोटे-छोटे मीनार हैं; चारों ओर की दीवारों के बीच में द्वार हैं। दीवारें और मीनार मठ की सैन्य रक्षा के लिए तत्परता की

[1318] जहाँ तक हमें पता है, मुद्रित रूप में सेंट सेराफिम का पहला उल्लेख *ए ब्रीफ अकाउंट ऑफ द लाइफ ऑफ द एल्डर ऑफ द सारोव डेजर्ट, द शेमामोंक एंड एसेटिक मार्क* (1839) नामक कृति में हुआ, जिसमें सेराफिम की कुछ शिक्षाएँ शामिल थीं; बाद में, पत्रिका *मायाक* में (1845, अंक 16), 'सराफिम के कारनामों की कथा' शीर्षक से एक संक्षिप्त लेख प्रकाशित हुआ था। उनके लिए विशेष रूप से समर्पित पहली जीवनी 1863 में प्रकाशित हुई: 'द लाइफ ऑफ द एल्डर सेराफिम, हायरोमंक ऑफ द सारोव हर्मिटेज, हर्मिट एंड रिक्लूज़' (सेंट पीटर्सबर्ग, 1863); यह शायद सारोव हर्मिटेज के किसी भिक्षु द्वारा लिखी गई थी।

[1319] हम भाग्यशाली थे कि हम आर्चप्रीस्ट सेर्गेईस चेत्वेरिकोव († 1947) को व्यक्तिगत रूप से जानते थे; उनसे हमने फादर एम्ब्रोज़ से शुरू होकर, ऑप्टिना के उन वरिष्ठों के बारे में कई कहानियाँ सुनीं जिन्हें वह जानते थे। हमने इस वर्तमान कृति में उनकी पुस्तक *द ऑप्टिना हर्मिटेज* (1927) का उपयोग किया है।

याद दलिाते हैं; साथ ही, वे श्रद्धालुओं में आध्यात्मकि शत्रु के हमलों से अपनी आत्मा की रक्षा करने की आवश्यकता का वचिार भी जगाते हैं। मठ की दीवारों के भीतर कई चर्च हैं, जनिमें सबसे बड़ा मठ का मुख्य चर्च है, जो परमेश्वर की माता के प्रवेश को समर्पति है; दीवारों के साथ-साथ संतों की कोठरयिाँ और वभिन्नि अन्य भवन बने हुए हैं। यहाँ एक मठ का कब्रस्तिान भी है, जहाँ दविंगत संतों को दफनाया जाता है। स्पर्शपूर्ण शलिालेख दविंगत संतों और उनके मठवासी जीवन की एक झलक प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, एल्डर लयिोनदि की कब्र पर बने स्मारक पर यह शलिालेख अंकति है: 'उन्होंने उन कई लोगों के दलिों में अपनी याद छोड़ी, जन्हिें अपने दुख में सांत्वना मली'। ऑप्टनि पुस्तनि के चर्च न तो भव्य हैं और न ही वशिष रूप से सुंदर, लेकनि उनके बारे में सब कुछ सामंजस्यपूर्ण, सरल और सादा है; सब कुछ इतना आरामदायक और सुकून देने वाला है कि कोई भी वहाँ से जाना नहीं चाहता। प्रार्थना सभाएँ न तो लंबी खचिी हुई होती हैं और न ही संक्षप्ति, और इन्हें बड़ी लगन के साथ संपन्न कयिा जाता है।

ऑप्टनि के वृद्धगण आमतौर पर स्केट में रहते थे। स्केट मठ का एक ऐसा हस्सिा है जहाँ मौन और एकांत की तलाश में रहने वाले तपस्वी भक्षिु आश्रय लेते हैं। ऑप्टनि स्केट जंगल में, स्वयं मठ से आधा कलिोमीटर दूर स्थति है। वहाँ जाने का रास्ता न जानने वाला कोई भी व्यक्ति इसे तुरंत नहीं ढूंढ पाएगा। स्केटे एक लकड़ी की बाड़ से घरिा हुआ है। दरवाज़े पर पवत्रि आइकन चत्रिति हैं। पवत्रि द्वार के दाईं ओर एक छोटा सा कॉटेज है जहाँ एल्डर एम्ब्रोज़ रहते थे, और बाईं ओर एक और कॉटेज है जहाँ उनके गुरु, एल्डर मैकारयिस, ने आश्रय लयिा था। भक्तपिूर्वक, सरि खुला रखकर, भक्त द्वार खोलता है और प्रार्थना और गहरी भक्ति के स्थान, स्केटे की पवत्रि दहलीज़ पर कदम रखता है। उसे फूलों की मनमोहक सुगंध का सामना होता है, जो यहाँ चौड़े, रेत बछिाए रास्ते के दोनों ओर उगते हैं; ये फूल चर्च के चारों ओर फैले हुए हैं, जो सीधे बरामदे तक पहुँचते हैं, और भोजनशाला, कोठरयिों, मधुमक्खयिों के छत्तों वाले मधुमक्खी-घर, तालाब, सरू के पेड़ों से सजी पगडंडी और कब्रों तक जाने वाले संकरे रास्तों के कनिारे-कनिारे उगते हैं। और इस सारी भव्यता के बीच तपस्वयिों की चमकदार, साफ़-सुथरी कोठरयिाँ हैं, जनिकी छोटी, पारदर्शी खड़िकयिाँ हैं[1320] ।

ऑप्टनि का बाहरी इतहिास प्राचीन रूस के कई अन्य छोटे मठों के समान है। 15वीं शताब्दी में स्थापति, इसे 'समय की परेशानयिों' के दौरान पोलशि सैनकिों द्वारा पूरी तरह से नष्ट कर दयिा गया था। पुराने सनिोडकि रकिॉर्ड के आधार पर, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसके वनिाश से पहले, यह मठ 'सह-शैक्षकि' था, और 'समय की परेशानयिों' के तुरंत बाद, इसके पुनर्स्थापना के बाद ही यह पुरुषों का मठ बना। 1717 में, पीटर महान के अधीन, इस आश्रम को कई वर्षों के लिए बंद कर दयिा गया था; इसे 1726 में फरि से खोला गया, लेकनि 18वीं सदी के दौरान यह दस से कम भक्षिुओं वाला एक छोटा मठ बना रहा। मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन प्लेटोन लेवशनि (1775–1812), जन्हिोंने मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल पेट्रोव की तरह, अपने धर्मप्रांत के कई मठों को पुनर्जीवति और पुनर्स्थापति कयिा[1321] , ने भी इस नदी के कनिारे सुरम्य रूप से स्थति तपस्थली पर अपना ध्यान केंद्रति कयिा। उन्होंने पेस्नोश मठ (1788–1811) के अभभिावी आर्चमिंड्राइट मकारी (ब्रुश्कोव) को मठ को सुव्यवस्थति करने का कार्य सौंपा[1322] । यह मकारी वृद्ध पैसयिस वेलीचकोव्स्की के स्कूल से जुड़े थे, जनिसे उनका पत्राचार था। मकरयिस ने भक्षिु अब्राहम को आश्रम में भेजा; वह बाद में ओप्टनि का मठाधीश बना। अब्राहम आश्रम के बाहरी संगठन के लिए मुख्य रूप से जम्मिेदार था।

मठ के आंतरकि जीवन को व्यवस्थति करने का मुख्य श्रेय मठाध्यक्ष मूसा पुटलिोव († 1862) को जाता है। इससे पहले, उन्होंने रोस्लावल के जंगलों में शरण ली थी, जहाँ वे एक आश्रम के मठाध्यक्ष थे। जब , 1820 को, कलुगा के बशिप फलिारेट (अम्फटिअट्रोव, बाद में कीव के मेट्रोपॉलटिन) ने ओप्टनि के पास एक स्केट की स्थापना की, तो मोसेस वहीं बस गए, और 1825 में बशिप ने उन्हें स्केट का मठाधीश नयिुक्त कयिा। मोसेस ने कई और संन्यासयिों को आमंत्रति कयिा (एंथनी, हलिारयिन, सावती); सभी पैइसयिस की शक्षिाओं की भावना में एक सख्त सामुदायकि नयिम के अनुयायी थे और इसका सख्ती से पालन करते थे। मोज़ेस का मठाध्यक्ष के रूप में कार्यकाल (1825–1862)

[1320] चेतवेरकिॉफ़। दास रूससि्चे स्टारज़ेंटम। पृष्ठ 67–69।

[1321] 1799 तक, कलुगा गवर्नरेट मास्को के धर्मप्रांत के अंतर्गत था; कलुगा धर्मप्रांत की स्थापना 1799 में हुई।

[1322] आर्कमिंड्राइट मकरि ब्रुश्कोव ने मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन प्लाटन के नर्दिेशों पर अपने धर्मप्रांत के कई मठों का पुनर्गठन कयिा, और वहाँ एक सामुदायकि नयिम लागू कयिा: पेसेनोश्स्की मठ, दमित्रिोव में बोरसिोग्लेब्सकी मठ, और कोलोमना के पास पुराना गोलुट्वनि मठ। पमिेन। Op. cit., पृ. 242, 253; 'बर्ल्यूकोवा हर्मटिज का ऐतहिासकि रेखाचत्रि', *रीडगि्स* में। 1875. 2. पृ. 35; पोपोव। Op. cit., पृ. 75। हालाँकि, इन सामुदायकि नयिमों का लंबे समय तक पालन नहीं कयिा गया। पमिेन। वही।

ऑप्टनिा की वशिषि्ट भावना के नरि्माण और इसके आंतरकि जीवन की अनूठी संरचना की सबसे महत्वपूर्ण अवधि थी[1323] ।

यहाँ 'स्टारेत्स' की प्रणाली फादर लयिोनदि नागोल्कनि (1768–1841) द्वारा शुरू की गई थी[1324] । लेव नागोल्कनि एक मध्यम वर्गीय परविार में पले-बढ़े; उन्होंने लगभग दस वर्षों तक एक व्यापारी के लिए काम कयिा, लेकनि फरि उस पद को छोड़ दयिा और 1794 में ऑप्टनिा आए, जहाँ उन्होंने दो साल बतिाए। वहाँ से वह बेलोबरेज्स्कायाहर्मटिेज (ओरयिोल डायोसीस में) चले गए, जहाँ के मठाधीश एल्डर वासलिी कशि्कनि थे, जो एल्डर पैसयिस के मत्रि थे। फादर वासली ने उन्हें एक भकि्षु के रूप में दीक्षा दी और उनका नाम लयिोनदि रखा। एल्डर वासली कशिकनि के माध्यम से, लयिोनदि माउंट अथोस के नयिम और परंपराओं से परचिति हुए और पाइसयिस की शकि्षाओं के बारे में जाना। जब फादर वासली ने एकांत में रहने के लिए महाधर्माध्यक्ष का पद छोड़ दयिा, तो भाइयों ने लयिोनदि को अपना महाधर्माध्यक्ष चुना (1806)। लयिोनदि, एल्डर थयिोडोर († 1822) के भी शषि्य थे, जो उस समय बेलोबेरेज्स्कायाहर्मटिेज में रह रहे थे और वे भी पैसयिस के शषि्यों में से एक थे। चार साल बाद, लयिोनदि ने मठाध्यक्ष पद त्याग दयिा और, एल्डर थयिोडोरोस के साथ, आश्रम के आसपास के जंगलों में लौट आए। यहाँ, पूर्ण एकांत में, एल्डर क्लयिोपास—जनि्हें हम पहले से जानते हैं—अपना तपस्वी जीवन व्यतीत कर रहे थे। जंगल में, लयिोनदि ने महान स्कीमा ग्रहण की। लेकनि इन संन्यासयिों का तपस्वी जीवन अधकि समय तक नहीं चला; मठवासी जीवन की तलाश में धर्मपरायण लोग उनके पास आने लगे। फरि वे वालाम मठ गए, जहाँ वे एक छोटे से स्केट में रहे। उस समय, फादर लयिोनदि ने एक आध्यात्मकि पति के रूप में कार्य करना शुरू कर दयिा: उन्होंने उनके पास आने वालों को आध्यात्मकि सलाह दी। उस समय उनकी उम्र लगभग 40 वर्ष थी। उस समय सभी भकि्षुओं द्वारा आध्यात्मकि पति की भूमकिा को मान्यता नहीं दी गई थी; वरषि्ठों ने इसे वशिेष संदेह से देखा, क्योंकि उन्हें इसमें अपने सम्मान और पद का कुछ हद तक अपमान दखिाई दयिा। वालाम मठ के मठाधीश को भी शायद इसी तरह के संदेह थे, क्योंकि थयिोडोर और लयिोनदि (वरषि्ठ क्लयिोपास की मृत्यु 1817 में हो गई थी) को वालाम छोड़कर अलेक्जेंडर-स्वर मठ जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। 1822 में, एल्डर थयिोडोर का नधिन हो गया। 1829 तक, लयिोनदि को इस मठ में शरण मलिी; उनके कई शषि्य थे, जनिमें गृहस्थ भक्त भी शामलि थे, और एक आध्यात्मकि रूप से प्रतभिाशाली एल्डर के रूप में उनकी ख्याति मठ की दीवारों से बहुत आगे तक फैल गई थी।

महानुभाव पैसयिस (वेलकिॉव्स्की), वासलिी कशिकनि, क्लयिोपास और थयिोडोर ने लगभग वशिेष रूप से मठ के नविासयिों को आध्यात्मकि मार्गदर्शन प्रदान कयिा। उन्होंने नए साधकों को आज्ञाकारति में स्वीकार कयिा, और उनकी प्राथमकि चति मठवासी समुदाय के आध्यात्मकि नरि्माण की थी। लेओनदि ने संतों के इस युग को समाप्त कयिा और एक नए युग की शुरुआत की। उन्होंने संत के पद को मठ के एकांत से बाहर नकिाला और इसे व्यापक दुनयिा तक पहुँचाया, जसिसे यह आध्यात्मकि सहायता और सलाह चाहने वाले सभी लोगों के लिए एक आशीर्वाद बन गया। इस प्रकार, संत लेओनदि के कार्यों ने संत के पद के इतहिास में एक नए युग की शुरुआत को चहि्नति कयिा।

यह नया युग वशिेष रूप से 1829 में तब स्पष्ट हुआ, जब फादर लयिोनदि ऑप्टनिा हर्मटिेज लौट आए, जहाँ उन्होंने 11 अक्टूबर 1841 को अपनी मृत्यु तक कठोर परश्रिम कयिा और हर्मटिेज में आध्यात्मकि पतित्व की परंपरा की नींव रखी। लेओनदि के कार्यों ने ऑप्टनिा को रूस के एक आध्यात्मकि केंद्र में बदलने में योगदान दयिा, जहाँ ईसाई जीवन के कई मामलों पर मदद और आध्यात्मकि परामर्श पाने के लिए बहुत से लोग उमड़ पड़े। वृद्ध की जीवन कहानी में ऐसे कई उदाहरण हैं कि कैसे इस अनुग्रह-पूर्ण तपस्वी ने—कभी सख्ती से, कभी नम्रता से, और अक्सर एक गहरे मज़ाक के माध्यम से—वशिाल दुनयिा से उसके पास आने वाले लोगों की आध्यात्मकि रूप से मदद की। ऑप्टनिा के अन्य सभी वृद्धों से अधकि, लयिोनदि अपने चरत्रि और शकि्षा की अनूठी सादगी के लिए वशिषि्ट थे, और इस कारण से वे रूसी लोगों के सबसे व्यापक तबके के करीब थे। लोगों को संबोधन का यह तरीका पसंद था और वे इसकी कद्र करते थे, क्योंकि वे स्वयं भी अपने चुटकुलों और कहावतों में सतह पर दखिने वाले अर्थ से कहीं अधकि

[1323] लेओनदि, आर्चमिंड्राइट। 'कालुगा धर्मप्रांत के उन्मूलति मठ', *रीडगि्स* में। 1862. 2; चेत्वेरकिॉफ। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 30; पमिेन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 53.

[1324] ऑप्टनिा के प्रथम महान एल्डर, हायरओिमोंक लयिोनदि (स्कीमा में, लेव) (1917)। पृ. 1–15, 53–72, 123–189, 242–275, 306–321; उनके पत्र: वही। पृ. 329–401। मेरी पुस्तक देखें (पृ. 143–156)।

गहरा अर्थ भर देते थे। लियोनदि के व्यवहार में मसीह की पवत्रि मूर्खता के बहुत से उदाहरण थे, वह 'sancta simplicitas' [पवत्रि सादगी], जो लोगों से सबसे वदि्वान शकि्षण से भी अधकि प्रभावपूर्ण ढंग से बात करती है[1325] .

ऑप्टनिा में बुज़ुर्गों की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले बुज़ुर्ग मकरि इवानोव, एक बलि्कुल अलग व्यक्ति थे। उनकी बदौलत, कई रूसी लेखक, कवि और वचिारक ईसाई धर्म की तपस्वी भावना को आत्मसात कर सके। उन्नीसवीं सदी के रूस के आध्यात्मकि इतहिास में, साधुओं का प्रभाव नस्सिंदेह एक बहुत ही वशिष स्थान रखता है; इसके बनिा, उस युग के लोगों के वचिारों और दार्शनकि संरचनाओं की एक स्पष्ट तस्वीर बनाना असंभव है[1326] । साधु मकरि का जन्म कुलीन परविार में हुआ था। प्लॉश्चांस्काया हर्मटिेज की अपनी तीर्थयात्राओं के दौरान, वे इसके मठाधीश, एल्डर और हायरोंमक अथानासयिस से परचिति हुए, जो पैइसयिस के शष्यि थे। उस हर्मटिेज का संपूर्ण वातावरण और वृद्ध अथानासयिस के साथ उनकी बातचीत ने उस युवा कुलीन व्यक्ति के कोमल, संवेदनशील और कुछ हद तक कलात्मक स्वभाव पर गहरा प्रभाव डाला; उसने मठवासी संन्यास ग्रहण करने का संकल्प लयिा। उन्होंने आश्रम में 24 वर्ष (1810–1834) बतिाए, जनिमें से 13 वर्ष (1810–1823) उन्होंने एल्डर अथानासयिस († 1823) के मार्गदर्शन में बतिाए। उनसे, मकरयिस को पवत्रि पतिाओं के तपस्या संबंधी लेखों के गहन अध्ययन का शौक वरिासत में मलिा।

अन्य वरषि्ठों की तुलना में, मकरईि ने अपनी मठवासी प्रथा को केवल अपने आध्यात्मकि तपस्वी अनुभव पर ही नहीं, बल्कि चर्च फादर्स के लेखन पर भी आधारति कयिा। उनकी कोठरी, जो अनगनित कतिाबों से भरी थी, आगंतुकों को एक वदि्वान के अध्ययन कक्ष का आभास देती थी। उनके आध्यात्मकि मार्गदर्शन की अपनी वशिषि्ट वशिेषताएँ थीं। वे आगंतुकों से बनिा मज़ाक कएि, शांत भाव से बातचीत करते थे। लियोनदि में चीज़ों के सार को जल्दी से समझने का वरदान था, जसिके साथ एक बुद्धमिान रूसी कसिान की वशिेषता वाली हाज़रिजवाबी भी जुड़ी हुई थी, और यह वरदान उनके अनुभव से भरपूर जीवन भर वकिसति हुआ था। मकारी तपस्या संबंधी लेखनों के अध्ययन में पूरी तरह से डूबे हुए थे; अपने पूरे जीवन में उन्होंने उन्हें और गहराई से समझने का प्रयास कयिा। उनकी बातचीत उद्धरणों से भरी रहती थी। वह एक साधारण, धर्मपरायण उपासक, एक वदि्वान धर्मशास्त्री, या दार्शनकि शकि्षा प्राप्त आगंतुक के साथ समान सहजता से बातचीत कर सकते थे… एल्डर मकरि की लकड़ी की कोठरी में फादर लियोनदि की कोठरी की तुलना में भी अधकि ववििधि आगंतुकों की भीड़ का स्वागत होता था। कतिाबों और प्रतमिाओं से भरी इस कोठरी की दहलीज़ पर भी—जैसे यहाँ मानवीय ज्ञान ईसाई भक्ति के साथ एक हो गया हो—एक आगंतुक इसकी अनूठी आत्मा को महसूस कर सकता था; और बूढ़े के साथ एक-दो घंटे की बातचीत के बाद उसका दृष्टकिोण पूरी तरह से बदल सकता था… कई लोग उस सरलता और सहजता से चकति थे, जसिसे मकारयिस सबसे कठनि धर्मशास्त्रीय प्रश्नों को हल करते थे। उनके पत्र, जो रूस के सबसे दूर-दराज के कोनों तक पहुँचते थे, समुदाय के आध्यात्मकि पोषण के लएि वशिेष महत्व के थे। उन्होंने अपने कई आध्यात्मकि पुत्रों और पुत्रयिों का मार्गदर्शन अपने पत्रों के माध्यम से कयिा, बनिा उनसे कभी आमने-सामने मलिे। कुछ महलिा मठ भी उनके आध्यात्मकि मार्गदर्शन में रहे। उनके असाधारण रूप से व्यापक पत्राचार को बाद में कई खंडों में प्रकाशति कयिा गया; फरि भी इस प्रकाशन में उनके पत्रों के[1327] का केवल एक अंश ही शामलि था।

20 वर्षों (1841–1860) तक, एल्डर मकरओिप्टनिा के आध्यात्मकि जीवन के केंद्र में रहे। उन्हें एक और उपलब्धि का श्रेय भी दयिा जाता है: उनके मार्गदर्शन में, कई पैट्रस्टिकि और तपस्या संबंधी कृतयिों का रूसी में अनुवाद और प्रकाशन कयिा गया। एफ. ए. गोलुबनिस्की, एक दार्शनकि और धर्मशास्त्री, मॉस्को थयिोलॉजकिल अकादमी में प्रोफेसर; स्लावोफाइल वचिारक आई. वी. करिेव्स्की; और उस समय ऑप्टनिा में रहने वाले कई शकि्षति

[1325] कारसावनि। 'Das Starzentum in der russischen Kirche', में: *Zeitwende*. 3 (1927). मई, जून; यह भी देखें: हलि्प्रचि, सेंट, ओ.एस.बी., *Die Torheit um Christi Willen*, में: *Z. f. Askese und Mystik*. 6 (1931); और यह भी: एलेक्सी (कुज़नेत्सोव), हाइरोमोंक, *Foolishness for Christ's Sake and the Life of the Pillars* (1913).

[1326] नम्निलखिति व्यक्तियों का, जो अधकि या कम रूप से ऑप्टनिा हर्मटिेज से जुड़े थे, उल्लेख कयिा जा सकता है: एस. ओ. बुराचेक, वी. आई. अस्कोचेन्स्की, आई. एम. स्नेगरिव, एम. पी. पोगोडनि, एस. पी. शेवरिवि, एम. ए. मैक्समिोवचि, ए. के. टॉलस्टॉय, वी. ए. गोलुबनिस्की, ए. एन. टॉलस्टॉय, टी. आई. फलिपिोव, आई. वी. करिेव्स्की, ए. एस. खोम्याकोव, पी. ए. बुल्गाकोव, एल. ए. अर्नोल्डी, ए. एन. मुरावयिोव, डी. ए. ओबोलेन्स्की, ई. एन. नोरोव, एन. वी. गोगोल, एन. एन. स्ट्राखोव, एफ. एम. दोस्तोव्स्की, पी. ए. युरकेवचि, व्लादमिीर सोलोवयिोव, के. लयिोन्तवि, ग्रैंड ड्यूक कॉन्स्टेंटनि कॉन्स्टेंटनिोवचि (के. आर.) और, अंत में, लयिो टॉल्स्टॉय। 1912 में, वी. ट्रॉइट्स्की का प्रबंध 'द इन्फ्लुएंस ऑफ द ऑप्टनिा हर्मटिेज ऑन द रशयिन इंटेलजिेंसयिा एंड लटिरेचर' मॉस्को थयिोलॉजकिल अकादमी में प्रस्तुत कयिा गया था (तुलना करें: अकादमी के जर्नल, में: बीवी. 1913. 4. परशिषि्ट. पृ. 415), जो आश्रम और उसके वरषि्ठों के आध्यात्मकि प्रभाव की जांच करता है।

[1327] मेरी पुस्तक, पृ. 160–161।

भक्षिु इस प्रयास में उनके सहायक बन गए। एल्डर का सेल एक संपादकीय कार्यालय जैसा हो गया था; यहीं पर चर्च फादर्स की कृतियों का अनुवाद कयिा जाता था, और अनुवाद के हर शब्द को सावधानीपूर्वक तौला जाता था, यही कारण है कि ऑप्टनिा प्रकाशनों को उनकी उत्कृष्ट भाषा और तपस्या तथा रहस्यमय कृतियों में पाए जाने वाले सबसे कठनि अभव्यिक्तियों के अर्थ के सटीक अनुवाद के लिए जाना जाता है। सबसे महत्वपूर्ण प्रकाशनों का नाम लेने के लिए: एल्डर पैसयिस वेलीचकोव्स्की की जीवनी और लेखन, सोरा के एल्डर नीलस के कार्य, अबा बार्सानुफयिस के कार्य, समिोन द न्यू थयिोलॉजस्टि का जीवन और कार्य, संत थयिोडोर द स्टुडाइट के महान धर्मोपदेश, चार खंडों में संत आइज़ैक द सीरयिन की कृतयिाँ, फलासयिस को संत मैक्समिस द कन्फेसर के प्रश्न, और अन्य।[1328]

1860 के दशक की शुरुआत में, ऑप्टनिा हर्मटिेज को भारी नुकसान उठाना पड़ा। 7 सतिंबर 1860 को, वृद्ध मकरयिस का नधिन हो गया; दो साल बाद, मठ के लंबे समय तक सेवा करने वाले मठाध्यक्ष, आर्चमिंड्राइट मूसा का नधिन हो गया; और 1865 में, उनके भाई, कठोर तपस्वी एंथनी का भी नधिन हो गया, जो उनके साथ रोस्लाव के जंगलों से ऑप्टनिा आए थे और मठ के आध्यात्मकि जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमकिा नभिाई थी। लेकनि नए मठाध्यक्ष, आर्चमिंड्राइट इसाक (1862–1894), जो वरष्ठि लयिोनदि और मकरयिस के शष्यि थे, के रूप में मठ को एक बार फरि एक अच्छा चरवाहा मलिा। मठ की तपस्वी भावना को संरक्षति करने और उसे गहरा करने में उनके योगदान के लिए दो और तपस्वयिों का उल्लेख करना उचति होगा: स्केटे के मठाध्यक्ष, पवत्रि भक्षिु हलिारयिन (1860-1873) और अनातोली (ज़र्टसालोव; 1874-1894), दोनों ही वृद्ध मकायोस के शष्यि थे।

उन्नीसवीं सदी के दूसरे छमाही में, ऑप्टनिा में आध्यात्मकि जीवन का केंद्र एल्डर, ह्येरोस्केमामोंक एम्ब्रोज़ (ग्रेनकोव, 1812–1891) बन गए। आर्चप्रीस्ट एस. चेत्वेरकिोव, जो उन्हें व्यक्तगित रूप से अच्छी तरह जानते थे और उनसे बातचीत करते थे, ने हमें 'फादर एम्ब्रोज़' का एक जीवंत चत्रि दयिा है, जन्हिोंने अपने चरत्रि और एक वृद्ध (एल्डर) के रूप में अपनी पादरीय देखभाल में, अपने दोनों पूर्ववर्तयिों - लयिोनदि और मैकारयिस - की प्रतभिाओं को संयोजति करने में सफलता हासलि की। एस. चेत्वेरकिोव लखिते हैं, 'एम्ब्रोज़ का "एक बड़ा और प्रेमपूर्ण हृदय" था, "वह धर्मशास्त्र में उच्च शक्षिति थे, उनमें महान सांसारकि बुद्धमित्ता, एक जीवंत और प्रसन्न स्वभाव, और व्यावहारकि कार्यों की ओर एक मजबूत झुकाव था; उन्हें लोगों के साथ बातचीत करना पसंद था।"' वरष्ठि लयिोनदि और मकरि के वपिरीत, अलेक्जेंडर ग्रेनकोव (एम्ब्रोज़ का सांसारकि नाम) ने तम्बोव के थयिोलॉजकिल सेमनिरी से स्नातक कयिा, फरि कुछ समय के लिए एक थयिोलॉजकिल स्कूल में पढ़ाया जो पादरयिों के बच्चों को प्राथमकि शक्षिा प्रदान करता था। उनकी भक्तमिय आत्मा में मठवासी जीवन के लिए एक दृढ़ इच्छा धीरे-धीरे अंकुरति हुई; एक बीमारी के बाद (वह जन्म से ही दुर्बल थे), अलेक्जेंडर ने एक भक्षिु बनने का दृढ़ संकल्प लयिा। अपने पैतृक गाँव के पास एक तपस्वी के रूप में रहने वाले एक वृद्ध की सलाह पर, ग्रेन्कोव ऑप्टनिा (1839) गए और कुछ समय के लिए वृद्ध लयिोनदि के मार्गदर्शन में रहे। अपनी मृत्यु से ठीक पहले, पतिा लयिोनदि ने अंब्रोज़ की ओर इशारा करते हुए पतिा मकरयिस से कहा: 'मैं उसे कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक तुम्हारे हवाले कर रहा हूँ। वह हमारे, बड़ों के साथ रहना बहुत चाहता है।' इस प्रकार, अपने वरष्ठि के आदेश पर, एम्ब्रोज़ ने अपनी आज्ञाकारतिा फादर मकरयिस को सौंप दी। एम्ब्रोज़ उन लोगों में से एक बन गए जन्हिोंने अपना ज्ञान और ऊर्जा वरष्ठि मकरयिस की सेवा में लगा दी, जो तपस्या संबंधी लेखों के प्रकाशन की तैयारी में लगे हुए थे।

एम्ब्रोज़ की अपनी शारीरकि बीमारयिों के बारे में टप्पिणी उनकी बहुत बड़ी वशिषता है: 'मठ में, थोड़ा अस्वस्थ रहना फायदेमंद होता है। एक भक्षिु को गंभीर उपचार नहीं कराना चाहिए, बल्कि केवल हल्की चकित्सिा देखभाल ही लेनी चाहिए।'

वरष्ठि एम्ब्रोज़ का प्रभाव क्षेत्र अपने पूर्ववर्तयिों से भी कहीं अधकि वस्तिृत था। मैकारयिस की तरह, वह न केवल ऑप्टनिा के भक्षिुओं के, बल्कि मठ की दीवारों से बहुत दूर रहने वाले अनगनित लोगों के भी आध्यात्मकि पतिा बने। मठाध्यक्ष के रूप में उनका कार्यकाल 1874 से 1891 तक, दो दशकों तक चला; 10 अक्टूबर 1891 को उनका नधिन हो गया।

अनगनित तीर्थयात्री एल्डर एम्ब्रोज़ से मलिने आते थे; वे उनसे सलाह और आध्यात्मकि मार्गदर्शन के लिए आते थे और स्केटे में उनके छोटे से झोपड़ी से तसल्ली और आनंदति होकर जाते थे। अपनी कोठरी में, एम्ब्रोज़ ने व्लादमिीर सोलोव्योव के साथ लंबी बातचीत की, एफ. एम. दोस्तोव्स्की और लयिो टॉलस्टॉय—एक-दूसरे से बहुत अलग व्यक्ति, जनिका मूल्यांकन वभिन्नि तरीकों से कयिा जा सकता है, फरि भी ये सभी उत्कृष्ट रूसी वचिारक थे जनिकी कृतियों को उनके देश की सीमाओं से भी परे व्यापक प्रसार और मान्यता मलिी। और शायद हर पाठक जो

[1328] वरष्ठि मकारii और I. V. Kireevskii के बीच पत्राचार देखें: Tschetwerikoff. Op. cit. पृ. 49, 107 ff.

उनके विचारों, या उनके विचारों में बदलाव पर विचार करता है, यह महसूस नहीं करता कि इस संबंध में ऑप्टिना आश्रम की भावना और ऑप्टिना के बुजुर्गों मकरि और एम्ब्रोज़ का कितना महत्वपूर्ण योगदान था। ऑप्टिना के संतों का प्रभाव रूसी बुद्धिजीवियों के कई सदस्यों, प्रसिद्ध और अज्ञात दोनों, को चर्च के साथ सुलह कराने में निर्णायक था। बिशप थियोफान द रिक्लूज़ ने भी इस उद्देश्य के लिए काम किया, और अपनी लेखनी के माध्यम से उन्होंने कई भटके हुए लोगों को वापस चर्च में लाने में सफलता हासिल की।

एल्डर एम्ब्रोज़ के व्यापक पत्राचार ने दुनिया पर ऑप्टिना हर्मिटेज के प्रभाव को महत्वपूर्ण रूप से व्यापक और गहरा करने में मदद की। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, उन्होंने महिलाओं के धार्मिक जीवन पर बहुत ध्यान और समय दिया। जिस प्रकार दिवेयेवो कन्वेंट ने स्वयं को सेंट सेराफिम के आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए सौंप दिया था, उसी प्रकार एल्डर एम्ब्रोज़ द्वारा स्थापित भिक्षुणियों का शमोर्डिनो समुदाय उनकी आध्यात्मिक देखभाल में बना रहा[1329] ।

एस. चेतवेरिकोव, जो ऑप्टिना के जीवन और आत्मा से अच्छी तरह परिचित थे, ने अपने कार्य में निष्कर्ष निकाला कि एल्डर एम्ब्रोस की मृत्यु के बाद, 'ऑप्टिना हर्मिटेज में एल्डर्स की परंपरा समाप्त नहीं हुई, लेकिन यह फिर से अपनी पूर्व की ताकत और प्रभाव को प्राप्त नहीं कर सकी'[1330] ।

एल्डर जोसेफ († 1911), जो एम्ब्रोज़ के शिष्य थे, ने अपने गुरु का काम जारी रखा और उन विश्वासियों का सम्मान और स्नेह अर्जित किया जो अपनी आंतरिक संघर्षों और चिंताओं के साथ ऑप्टिना में उनके पास आए। उनकी मृत्यु के बाद, एल्डर अनातोली († 1922), जिन्हें 'जूनियर' के नाम से जाना जाता था (स्केट के मठाधीश, हिएरोमोंक अनातोली द एल्डर से अलग), जो एल्डर एम्ब्रोज़ के शिष्य भी थे, रेगिस्तान के आध्यात्मिक जीवन का केंद्र बन गए; मेहमानों के प्रति अपने व्यवहार में, जो दया और स्नेह से भरा था, वह, फादर अनातोली को व्यक्तिगत रूप से जानने वाले एस. चेतवेरिकोव के अनुसार, सम्माननीय सेराफिम ऑफ़ सारोव[1331] से मिलता-जुलता था। पिता अनातोली के साथ-साथ, हिरोमोंक अनातोली द एल्डर के शिष्य, एल्डर नेक्टारियोस († 1928), ऑप्टिना में तपस्या कर रहे थे। नेक्टारियोस एक युवा व्यक्ति के रूप में मठ में आए, उनमें एकांत की जन्मजात प्रवृत्ति थी, और वे स्केटा में रहे; वृद्ध जोसेफ की मृत्यु के बाद ही उन्होंने आध्यात्मिक पिता की भूमिका निभाई, हालांकि दुनिया पर उनका प्रभाव क्षेत्र अन्य वृद्धों की तुलना में संकीर्ण था[1332] ।

वरिष्ठों की पीढ़ियों का अखंड उत्तराधिकार, बेशक, ऑप्टिना हर्मिटेज के आंतरिक जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। लेकिन ऑप्टिना की आध्यात्मिक पितृत्व की परंपरा ने सामान्य रूप से आध्यात्मिक पितृत्व के इतिहास में एक संपूर्ण युग का गठन किया, क्योंकि ऑप्टिना के संतों ने अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा दुनिया में रहने वाले लोगों के लिए समर्पित की; यह रूसी मठवाद की ओर से प्रेम का एक प्रकार का कार्य था, और यहाँ मुख्य उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को उनके बोझ उठाने में मदद करना और उनकी ज़रूरतों में उनकी सेवा करना था। इसके अलावा, साधुओं ने न केवल ईसाई प्रेम की भावना से लोगों की सेवा करने का प्रयास किया, बल्कि उससे भी अधिक, चर्च के द्वार पर खड़े लोगों को चर्च में लाने का प्रयास किया, ताकि उनका भविष्य का जीवन ईसाई नैतिकता पर आधारित हो सके। शायद इस प्रयास में बुजुर्गों की सफलताएँ हमेशा पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं थीं; यह संभव है कि कोई भविष्य का इतिहासकार उन ऐतिहासिक परिस्थितियों में, जिनमें उनका काम हुआ, दुनिया पर बुजुर्गों के वास्तविक प्रभाव की इस तथ्य पर ही संदेह कर सकता है - और फिर भी बुजुर्गों का पद सिनोडल अवधि के दौरान मठवाद के इतिहास में एक शक्तिशाली तपस्वी आंदोलन था, जो रूस के चर्च जीवन में एक अत्यधिक फलदायी घटना थी।

किसी भी स्थिति में, इस अवधि की वृद्धत्व एक समग्र घटना थी, जो स्वतःस्फूर्त रूप से, नीचे से, बिना किसी ऊपर से, यानी पदानुक्रम के प्रभाव के विकसित हुई। यह उन बाधाओं को पार करने में एक अनूठी सफलता थी जो 'राज्य-नियंत्रित चर्च जीवन' ने श्रद्धालुओं और भिक्षुओं की आत्माओं के चारों ओर खड़ी की थीं; एल्डर प्रणाली

[1329] उपरोक्त, पृ. 55–96; मेरी पुस्तक, पृ. 194–206।

[1330] चेतवेरिकॉफ़। पूर्वोक्त, पृ. 97.

[1331] उपरोक्त, पृ. 100.

[1332] एल्डर नेक्टारियोस पर, देखें: वी. श. 'क्रोनस्टैड के फादर जॉन और ऑप्टिना के एल्डर्स के संबंध में एक रिकॉर्ड'। व्यक्तिगत स्मृतियों से (बेला चर्क्वा, सर्बिया, 1929)। पृ. 51–60। लेखक बताता है कि एल्डर नेक्टारियोस का 1928 में मठ की दीवारों के बाहर निधन हो गया था। पुस्तक का एक अध्याय (पृ. 20–50) एल्डर वरसोनोफियस को समर्पित है। वे पहले एक अधिकारी के रूप में कार्य कर चुके थे, फिर सेवानिवृत्त होकर ऑप्टिना हर्मिटेज के मठ समुदाय में शामिल हो गए। वर्सोनोफी का निधन प्रथम विश्व युद्ध के छिड़ने से ठीक पहले, 1914 में हुआ; दुर्भाग्य से, मेरे पास उनके बारे में कोई सटीक जानकारी नहीं है।

ने प्रारंभकि ईसाई तपस्वी भावना के पुनरुद्धार के लिए एक प्रयास को प्रकट कयिा, जो कुछ मठों में मजबूत और दूसरों में कमजोर थी।

7. एल्डर परंपरा के अन्य केंद्र

रूसी वृद्धत्ववाद, शब्द के पूर्ण अर्थ में, पछिले दो शताब्दयिों में मठवासी जीवन के भीतर एक तपस्वी आंदोलन, या प्रवाह था, क्योंकि सारोव और ऑप्टनिा इसके एकमात्र केंद्र नहीं थे। वृद्ध पाइसयिस के प्रत्यक्ष शष्यिों के प्रयासों के कारण, अन्य मठ भी इस प्रवाह में शामलि हो गए, जो प्रारंभकि चर्च की तपस्वी भावना को पुनर्जीवति कर रहा था। ये मठ और आश्रम थे जहाँ पैसयिस के शष्यिों ने लंबी अवधि या कम से कम कुछ समय तक परश्रिम कयिा, और जहाँ उनके प्रयासों को फल मलिा।

ऐसे मठों में से एक था सानाक्सर आश्रम (टाम्बोव डायोसीस में), जसिकी स्थापना 1659 में पोनज़िोवये क्षेत्र के मठों के उपनविेशीकरण के दौरान हुई थी – उस समय, यह सबसे दूरस्थ मठों में से एक था। इस आश्रम में समुदाय हमेशा बहुत छोटा था, और 1753 में मठ को सारोव आश्रम के अधकिार क्षेत्र में रख दयिा गया था। केवल दो अवधयिों के दौरान, जब वृद्ध, हायरोंमक थयिोडोर उशाकोव, मठाध्यक्ष के रूप में सेवारत थे (1762–1774, 1783–1791), तब ही आश्रम में मठवासी जीवन को सही मार्ग पर स्थापति कयिा गया और एक सामुदायकि नयिम लागू कयिा गया। 18वीं सदी के अंतमि चौथाई भाग और 19वीं सदी के पहले आधे भाग में इस तपोस्थल में तपस्या की भक्ति का स्वर्ण युग था, जो सारोव मठ और अन्य तपोस्थलों से नकिटता से जुड़ा था, जनिकी वशिषता एक सख्त तपस्वी जीवन शैली थी[1333] ।

तपस्या भक्ति का एक और केंद्र प्लोश्चांस्काया हर्मटिेज था, जसिका उल्लेख यहाँ कई अवसरों पर कयिा गया है, जसिे 1764 में एक गैर-आधकिारकि मठ के रूप में पुनर्वर्गीकृत कयिा गया था। एल्डर जोआसाफ का वशिेष उल्लेख करना चाहए, जो 1741 से 1746 तक मठ के मठाध्यक्ष थे, साथ ही एल्डर अलेक्सयिस (ब्लस्कि; 1722–1812) का भी, जो 1772 में साइमनोव मठ में स्थानांतरति हो गए थे। एल्डर अथानासयिस (ज़खारोव; † 1823) ने कई वर्षों तक रेगस्तिान में परश्रिम कयिा; उनके आध्यात्मकि मार्गदर्शन में, भवष्यि के ऑप्टनिा के एल्डर, फादर मकरयिस इवानोव, ने यहाँ शरण ली। एल्डर अथानासयिस के एक अन्य शष्यि, अलेक्जेंडर ने, स्पस्की मठ (1810–लगभग 1820) के मठाध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, एक सामुदायकि नयिम[1334] पेश करके वहाँ के मठीय जीवन को वास्तव में बदल दयिा।

एल्डर पैसयिोस के शष्यिों के प्रयासों के कारण, ओर्योल के धर्मप्रांत में स्थति बेलोबेरेज्स्काया हर्मटिेज में भक्षिुओं का जीवन बदल गया। यह हर्मटिेज अपेक्षाकृत देर से, लगभग 1661 में, हरिीमोंक सेरापयिन (जन्हिें महान स्कीमा प्राप्त करने पर अपनाए गए नाम – समियिन – से बेहतर जाना जाता है) द्वारा स्थापति कयिा गया था, लेकनि 18वीं सदी की शुरुआत तक यह हर्मटिेज पूरी तरह से जर्जर हो चुका था; इसे 1721 में ब्रायन्स्क के पोक्रोव्स्की मठ के अभभिागा पटिरिमि द्वारा पुनर्जीवति कयिा गया था, लेकनि 1764 में इसे समाप्त कर दयिा गया। इसके बावजूद, कुछ भक्षिु आश्रम में बने रहे - जन्हिें कहें तो सनिाड द्वारा भुला दयिा गया था, लेकनि ईश्वर द्वारा नहीं - और अपनी मेहनत से उन्होंने इस मठ के जीवन को तपस्या के एक उल्लेखनीय स्तर पर पहुँचा दयिा; 1817 में जाकर सनिाड द्वारा इस आश्रम को 'आधकिारकि तौर पर पुनर्स्थापति' कयिा गया। 1801 से 1809 तक, पैसयिस के शष्यि, हएिरोस्केमामोंक थयिोडोर ने यहाँ सेवा की; 18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी की शुरुआत में, एल्डर क्लेओपास II के शष्यि, एल्डर मकारios ज्लोबनि († 1839) ने भी इस तपोवन में शरण ली। जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा गया है, वृद्ध वासलिी कशि्कनि और ऑप्टनिा के वृद्ध लयिोनदि ने यहाँ कई वर्षों (1806–1811) तक मठाध्यक्ष के रूप में सेवा की। यह छोटा, गरीब हर्मटिेज, मुख्य रूप से एल्डर वासलिी कशिकनि (1800 से 1806 और 1811 से 1827 तक के मठाधीश) के कारण, अपने नविासयिों के जीवन की कठोरता के लिए संतों के बीच प्रसद्धि हो गया[1335] ।

[1333] ज्वेरस्कि। 2. संख्या 644; डेनसिोव। संख्या 888; सुबोटनि। Op. cit., पृ. 56–59; द लाइफ़ ऑफ़ फ़ादर थयिोडोर, सनाक्सार मठ के पूर्व मठाध्यक्ष (1847) (छोटी पुस्तकिा); पोसेल्याननि. रशयिन एसेटकि्स (1905), पृ. 285–291.

[1334] ज्वेरस्कि। 2. संख्या 1057; डेनसिोव। संख्या 630; स्ट्रोव। उद्धृत कृति, पृ. 913; ऑर्थोडॉक्स रूसी मठ। पृ. 373; मसिाइल, बशिप। द प्लोश्चांस्काया मॉनेस्ट्री ऑफ द मदर ऑफ गॉड (1897)। पृ. 8, 10; पोपोव। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 9। यहाँ अथानासयिस गोरॉव्स्की नामक एक भक्षिु ने पैइसयिस की कृतयिों की कई प्रतयिाँ बनाईं। संभव है कि यह प्रसद्धि एल्डर अथानासयिस ही थे। तुलना करें: PBE. 1. पृ. 592।

[1335] ज्वेरींस्की। खंड 1, संख्या 92; डेनसिोव। संख्या 626; ऑर्थोडॉक्स रूसी मठ। पृ. 919; स्ट्रोव। उपरोक्त, पृ. 376; पमिेन. उपरोक्त, पृ. 66–68; हलिारयिन, भक्षिु. द लाइफ़ ऑफ़ हायरोडीकन मेल्चीज़ेडेक, में: स्परिचिुअल रीडगि्स 1889. 2, पृ. 186–187; हलिारयिन, भक्षिु. बेलोबेरेज्स्क के एल्डर मकारओिस का जीवन। वही, पृ. 290–302; और यह कृति भी: ब्रायन्स्क बेलोबेरेज्स्क हर्मटिेज के एल्डर्स, हायरोमोंक इज़राइल के नोट्स पर आधारति, में: ओर्योल डायोसीज़न गज़ेट। 1909. 44–45 (मेरे लिए उपलब्ध नहीं)।

सोफ्रोनीस के मठ में भी मठवासी जीवन का स्तर बहुत ऊँचा था, जिसकी स्थापना 16वीं शताब्दी में ही हुई थी, जिसे बाद में तातारों ने नष्ट कर दिया था, और जिसे लगभग 1630 में फिर से स्थापित किया गया, और यह माँ ऑफ गॉड के मठ के नाम से जाना जाने लगा। 1656 तक, यह पुतिव्ल में मोल्चेन्स्की मठ से जुड़ा हुआ था। (कुर्स्क डायोसीस)। दो कठोर तपस्वियों, सोफ्रोनीस और निकोन, के प्रयासों के कारण, पैट्रिआर्क निकोन ने इस मठ को इसकी स्वतंत्रता प्रदान की, और मठ के प्रमुख के रूप में अपने लंबे कार्यकाल के दौरान, मठाध्यक्ष सोफ्रोनीस ने वहां मठवासी जीवन को उच्च स्तर पर बनाए रखा। उनकी मृत्यु के बाद, यह मठ आम तौर पर सोफ्रोनीस हर्मिटेज के नाम से जाना जाने लगा। यहाँ तक कि 1764 के नियमों में भी इसके लिए पर्याप्त संख्या में भिक्षुओं का प्रावधान था – कुल 30। 1779 में, वृद्ध थियोडोसियस मास्लोव टायस्मिस्की मठ के अधिकांश भिक्षुओं के साथ सोफ्रोनीस के हर्मिटेज में आ गए; उन्होंने 1803 तक वहाँ परिश्रम किया, और उनके नेतृत्व में मठ में माउंट अथोस के सामुदायिक नियमों को लागू किया गया। भिक्षु गेरासिम, जो पैसियस के शिष्य और एक कठोर तपस्वी थे, ने भी यहाँ शरण ली[1336] ।

एक अन्य मठ जिसमें वरिष्ठ पैसियोस के तपस्वी सिद्धांतों को विशेष सावधानी से संरक्षित किया गया था, वह किरिलो-नोवोएज़ेर्स्की मठ था[1337] , जहाँ इन सिद्धांतों के उत्साही संरक्षक, वरिष्ठ आर्चिमांड्राइट थियोफन सोकोलोव, ने 40 वर्षों (1793–1832) तक मठाध्यक्ष और अधीक्षक के रूप में कार्य किया। अपने लंबे जीवन (1752–1832) के दौरान, थियोफैन का भाग्य था कि वह अपने युग के लगभग सभी कठोर तपस्वियों और संतों से व्यक्तिगत रूप से मिले और उनके प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करें। वह कुलीन सोकोलोव परिवार से थे; 14 वर्ष की आयु में , फ्योडोर (उनका सांसारिक नाम) ने एक मठ में प्रवेश करने का निर्णय लिया, लेकिन उनके माता-पिता उन्हें जाने नहीं दिए। 1771 में, वह मास्को में रह रहे थे, जहाँ उन्होंने एक सरकारी कर्मचारी के रूप में काम करना शुरू किया। उस समय मास्को में फैली भयानक प्लेग—जिसका थियोफान ने बाद में अपने *नोट्स* में वर्णन किया—और उससे हुई तबाही ने मठवासी जीवन की ओर उसकी प्रवृत्ति को और भी मजबूत कर दिया। 1772 या 1773 में, वह अंततः अपनी इच्छा को पूरा करने में सफल हो गया।

वह सनाक्सार हर्मिटेज गए, जहाँ एल्डर थियोडोर उशाकोव मठाध्यक्ष के रूप में सेवा कर रहे थे। उनसे, थियोफान सोकोलोव ने मठवासी जीवन के तपस्वी मूल सिद्धांतों को सीखा और अपने बाकी जीवन के लिए मठवासी एल्डरशिप के भक्त बने रहे। लगभग इसी समय, उनकी मुलाकात ज़ाडोंस्क के तपस्वी बिशप टिकॉन से हुई, और यह मुलाकात उस युवा भिक्षु पर एक स्थायी छाप छोड़ने में विफल नहीं रही। जब 1774 में, धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के हस्तक्षेप और षड्यंत्रों के कारण एल्डर थियोडोर उशाकोव को आश्रम छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, तो भिक्षु थियोफान ने भी मठ छोड़ दिया और वेव्डेन्स्काया ओस्त्रोव्स्काया हर्मिटेज चले गए, जहाँ उस समय एल्डर क्लियोपास प्रथम सेवा कर रहे थे। यहाँ, थियोफान ने क्लेओपास के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में तीन साल बिताए, जिनसे उन्होंने माउंट अथोस के संतों के जीवन-यापन के तरीके और एल्डर पैसियोस के बारे में बहुत कुछ सीखा। फिर उन्होंने अपने एल्डर से माउंट अथोस जाने की अनुमति और आशीर्वाद प्राप्त किया। रास्ते में, थियोडोर सोकोलोव और उनके साथ कई अन्य भिक्षु तियास्मिस्की मठ में रुके, जहाँ उस समय एल्डर थियोडोसियस मास्लोव मठाध्यक्ष के रूप में सेवा कर रहे थे। थियोडोर के आग्रह के बावजूद, एल्डर थियोडोसियस ने उन्हें माउंट अथोस के लिए आगे बढ़ने का आशीर्वाद नहीं दिया - और इसलिए उन्हें तियास्मिन में ही रहना पड़ा। वहाँ, फ्योदोर् सोकोलोव को थियोफान नामक भिक्षु के रूप में दीक्षा दी गई, और एल्डर थियोडोसियस ने उन्हें अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शन में ले लिया।

थेओफेनेस हमेशा बड़े स्नेह से एल्डर थियोडोसियस के मार्गदर्शन में बिताए गए समय को याद करते थे। दुर्भाग्य से, यह अधिक समय तक नहीं चला। कुचुक-काइनार्जी (1774) की संधि के तहत रूस और तुर्की के बीच पोर्टे को सौंपे गए मोल्डोवा के उस हिस्से में स्थित ग्रीक ऑर्थोडॉक्स मठों की स्थिति, तुर्की अधिकारियों द्वारा विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न के कारण बहुत कठिन थी। इसलिए, एल्डर थियोडोसियस ने तियास्मिन मठ के मठवासी समुदाय को रूस में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि मठवासी समुदाय में अथानासियस नाम का एक भिक्षु था, जो महान विनम्रता वाला व्यक्ति था और मठ में सबसे कठिन और गंदे काम करना पसंद करता था।

[1336] यात्समिरिस्की। उद्धृत कृति, पृ. 545; पिमेन। उद्धृत कृति, पृ. 19; सुबोटिन। उद्धृत कृति, पृ. 15, 18; सोफ्रोनीयस द्वारा पुतिव्ल नेटीवटी मठ का वर्णन (1846)।

[1337] ज़्वेरीस्की। खंड 2, संख्या 868; डेनिसोव। संख्या 565; ऑर्थोडॉक्स रूसी मठ। पृ. 128। नोवोजेर्स्क के संत सिरिल मठ की स्थापना 1507 में नोवोजेर्स्क के परम पूजनीय सिरिल († 1537) द्वारा की गई थी, जो कोमेल के परम पूजनीय कॉर्नेलियस के शिष्य थे। यह मठ अपने मठवासी जीवन की कठोरता के लिए प्रसिद्ध था; यह हमेशा सामुदायिक नियमों का पालन करता था; इसकी ज़मींदारी मामूली थी; हमें कोई ऐसे दस्तावेज़ नहीं मिले जो यह सुझाते हों कि यह व्यापार या ज़मींदारी के आदान-प्रदान में लगा था।

यह अथानासियस कोई और नहीं बल्कि पहले से ही यहाँ उल्लेख किए जा चुके बिशप जॉब का भाई और शक्तिशाली प्रिंसि जी. ए. पोतेमकिन का रिश्तेदार था। केवल वरिष्ठ थियोडोसियस ही विनिम्र अथानासियस के बारे में यह रहस्य जानते थे और उन्हें उम्मीद थी कि यदि उन्हें पुनर्वास के अनुरोध के साथ सेंट पीटर्सबर्ग भेजा गया, तो उनके पारिवारिक संबंध इस प्रयास को सफल बनाएंगे। वरिष्ठ थियोडोरस के आशीर्वाद से, अथेनासियस ने भिक्षु थियोफेनेस को अपना साथी चुना। थेओडोसियस की याचिका सफल रही; महारानी के आदेश से, एल्डर थेओडोसियस और मठवासी समुदाय के अधिकांश सदस्यों को रूस में स्थानांतरित होने की अनुमति दी गई, जहाँ उनके लिए सोफ्रोनीस हर्मिटेज को आरक्षित किया गया था। शुरुआत में, थियोफ़ेनेस भी इसी मठ में रहा, लेकिन जल्द ही, मेट्रोपॉलिटन गैब्रियल के आदेश पर, ट्यास्मिन से आए कुछ भिक्षुओं को—जिसमें थियोफ़ेनेस भी शामिल था—सेंट पीटर्सबर्ग के अलेक्जेंडर नेवस्की लावरा में वापस बुलाया गया, ताकि वहाँ के मठवासी जीवन को व्यवस्थित किया जा सके।

इस प्रकार, वृद्ध थियोडोसियस के मार्गदर्शन में रहने के बजाय, थियोफेंस खुद को राजधानी में एक बिल्कुल अलग माहौल में पाया, जो निश्चित रूप से उसकी तपस्वी प्रवृत्तियों को संतुष्ट नहीं कर सकता था। लेकिन यहाँ उसे स्वयं मेट्रोपॉलिटन गैब्रियल ने पहचान लिया। थियोफ़ेनेस लंबे समय तक मठ के कोषाध्यक्ष नहीं रहे, क्योंकि मेट्रोपॉलिटन गैब्रियल ने उन्हें अपने निजी सेवक के रूप में अपनी सेवा में ले लिया। बहुत ही कम समय में, थियोफ़ेनेस मेट्रोपॉलिटन के विश्वसनीय विश्वासपात्र और सचिव बन गए; मेट्रोपॉलिटन को जल्द ही एहसास हो गया कि थियोफ़ेनेस मठों के भीतर वास्तविक मठवासी जीवन को बहाल करने में उनकी सहायता कर सकते थे। मेट्रोपॉलिटन गैब्रियल, जो सरल हृदय और विनिम्रता वाले व्यक्ति थे, उन्होंने थियोफेंस को न केवल एक सख्त संन्यासी के रूप में, बल्कि इसलिए भी महत्व दिया क्योंकि उन्हें उनकी सलाह की आवश्यकता थी, क्योंकि थियोफेंस, संतों के साथ अपने जुड़ाव और मठों में बिताए अपने समय के कारण, न केवल मठवासी जीवन में गिरावट के कारणों का सही आकलन करने में सक्षम थे, बल्कि इसे सुधारने के उपाय भी प्रस्तावित कर सके। इस प्रकार, मठवासी सुधारों के उपक्रम में थियोफेंस का नाम बिशप गैब्रियल के नाम के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ गया। थेओफानेस की सहायता के कारण, ये सुधार वृद्ध पैसियस वेलीचकोव्स्की के तपस्वी विचारों पर आधारित थे और इन्हें उन भिक्षुओं द्वारा लागू किया गया था, जिन्हें थेओफानेस ने गैब्रियल को अनुशंसित किया था। दस वर्षों तक, थेओफानेस ने मेट्रोपॉलिटन के सेल अटेंडेंट के रूप में सेवा की; हालाँकि, वास्तव में, वह केवल एक सेल अटेंडेंट नहीं, बल्कि उनके मुख्य सहायक और सलाहकार थे। और इस पूरे समय, वह एक साधारण भिक्षु बना रहा। उसकी इच्छा के विरुद्ध, मेट्रोपॉलिटन ने थियोफानेस को एक हायरोमोंक (1785) के रूप में दीक्षा दी और, 1791 में, उसे मॉडेन्स्की मठ (नोवगोरोड के डायोसीस में) का मठाधीश नियुक्त किया, ताकि लगभग पूरी तरह से नष्ट हो चुके मठ को बहाल किया जा सके। हायरोमोंक थियोफेंस ने वहाँ दो साल तक परिश्रम किया, और 1793 में उन्हें मठाधीश द्वारा करिलो-नोवोएज़ेर्स्की मठ भेजा गया।

बेलोजेर्स्क शहर के निवासियों ने मेट्रोपॉलिटन से बार-बार शिकायत की थी कि इस प्राचीन मठ में, जो कभी बहुत प्रसिद्ध था, वास्तविक मठवासी जीवन का कोई निशान नहीं बचा था, और उन्होंने उनसे मठ को पूर्ण विनाश से बचाने के लिए उपाय करने का आग्रह किया। फादर थियोफान ने मठ को अत्यंत दयनीय स्थिति में पाया: वहाँ एकमात्र पुरोहित एक कमजोर हिरोमोंक थे, जो वृद्धावस्था के कारण अब धार्मिक अनुष्ठान करने में असमर्थ थे। समय-समय पर, पड़ोस के एक ग्रामीण पैरिश का एक पादरी सेवा करने के लिए मठ में आता था। संघ में केवल दो भिक्षु और आठ नवसिखिए थे, जो अपनी मर्जी से रहते थे। मठ की इमारतें पूरी तरह से जर्जर हो चुकी थीं, क्योंकि कई दशकों से कुछ भी नहीं किया गया था, और धन की कमी के कारण, चर्च और अन्य इमारतों को बर्बादी से बचाने के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता था।

करीलो-नोवेज़ेर्स्की मठ का भाग्य कई दूरस्थ मठों के लिए सामान्य माना जा सकता है – यह 18वीं सदी में लागू किए गए सरकारी उपायों का परिणाम था, जब अर्थव्यवस्था बोर्ड ने सचमुच मठों को लूट लिया, और मठ की इमारतों को – जो अक्सर बहुत सुंदर पत्थर की संरचनाएं होती थीं – छोड़ दिया इन संरचनाओं का किसी व्यावहारिक उद्देश्य के लिए उपयोग करने के बजाय, उन्हें अपनी ही नियति और प्राकृतिक तत्वों की तबाही के हवाले कर दिया गया। साल दर साल, टपकती छतों से बारिश का पानी अंदर गिरता रहा और बर्फ भी अंदर जमा होती रही। भिक्षु अपनी पूरी तरह से जर्जर कोठरियों से निकलकर थोड़ी बेहतर हालत वाली दूसरी कोठरियों में चले गए, और किसी ने भी मठ की इमारतों को संरक्षित करने की कोई परवाह नहीं की। फिर धर्मनिरपेक्षता और 1764 के सरकारी आवंटन आए, लेकिन मठों को आवंटित किए गए धन से केवल कुछ ही संन्यासियों का पेट भर पाना मुश्किल था। जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत तक ही मठों की वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ, और नई इमारतें खड़ी करना संभव हो पाया। कई मठों के इतिहास से यह ज्ञात है कि 19वीं सदी के पहले छमाही में, सभी मठ निधियाँ निर्माण कार्यों पर खर्च की गईं। आर्चिमांड्राइट पिमेन, जिनका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं, अपने *मेमोइर*

में बताते हैं कि उन्होंने मठाध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान निर्माण कार्यों में कितना समय लगाया। यही अन्य मठों के बारे में भी सच था[1338] ।

थियोफेंस को मठ के बाहरी सुधार के लिए भी बहुत समय और प्रयास समर्पित करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप मठ की उपस्थिति उनके मठाध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान पूरी तरह से बदल गई। हालांकि, उसी समय, वह मठ के आंतरिक जीवन में भी सुधार कर रहे थे। उन्होंने एक सामुदायिक नियम पेश किया, और मठ में भिक्षुओं की संख्या साल-दर-साल बढ़ी। थियोफेंस ने एक आध्यात्मिक पिता के रूप में बड़ी सफलता के साथ काम किया, और कई नवसिखुओं और नए दीक्षित भिक्षुओं को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया। थियोफानेस की मृत्यु से ठीक पहले, जब अर्किमंड्राइट पिमेन — जो उस समय एक युवा नवसिखुआ थे — ने किरिलो-नोवेज़ेर्स्की मठ का दौरा किया, तो उन्होंने पाया कि वहाँ बड़े बदलाव हुए थे: मठ की बाहरी दिखावट और आंतरिक स्थिति दोनों में काफी सुधार हुआ था; वहाँ अनुशासन का राज था और तपस्वी भावना स्पष्ट रूप से झलकती थी; मठ ने एक बार फिर श्रद्धालुओं का स्नेह पुनःप्राप्त कर लिया था। 30 से अधिक वर्षों तक, एल्डर थियोफान ने इस मठ में परिश्रम किया, और यहाँ मठवासी जीवन पर पैसियन स्कूल के विचारों को स्थापित किया।

फादर थियोफान का आध्यात्मिक प्रभाव उनकी देखरेख में सौंपे गए पड़ोसी मठों तक फैला हुआ था। इनमें से एक गोरीत्स्की कन्वेंट था; एल्डर थियोफान ने गोरीत्स्की बहनों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया और उन्हें इस कन्वेंट से बहुत स्नेह था। अपने जीवन के अंतिम तीन वर्षों के दौरान, फादर थियोफान अब मठाधीश नहीं थे, लेकिन उन्होंने गोरीत्स्की कन्वेंट की बहनों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन देना जारी रखा।

3 दिसंबर 1832 को, एल्डर थियोफान का निधन हो गया, उन्होंने एक लंबा और सार्थक जीवन जिया था। बाद की पीढ़ियों के लिए उनकी विरासत ऑप्टिना के एल्डर्स के व्यक्तित्वों से ढक गई, और रूसी मठवाद के इतिहास में फादर थियोफान को बहुत कम लोग जानते हैं। फिर भी, शोधकर्ता का यह कर्तव्य है कि वह मठवाद के इतिहास में उनकी भूमिका को उजागर करे, क्योंकि वह उन व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने 18वीं शताब्दी के अंत में मठ जीवन के पुनरुद्धार में एक बड़ा योगदान दिया[1339] ।

थेओफान का व्यक्तित्व पैसियस वेलीचकोव्स्की के स्कूल से संबंधित उन संतों और तपस्वियों के चरित्र चित्रण को पूर्णता प्रदान करता है। फिर भी, उल्लेख किए गए आध्यात्मिक केंद्र और व्यक्तित्व उस युग की तपस्वी आंदोलन को पूरी तरह से समाहित नहीं करते हैं। पैसियस के स्कूल के ढांचे के बाहर भी, यह आंदोलन उतनी ही दृढ़ता के साथ प्रकट हुआ और मठवाद पर अपनी छाप छोड़े बिना नहीं गुज़रा।

८. ज़ाडोंस्क के संत तिकोन

जब हम इस तपस्वी आंदोलन को करीब से देखते हैं, तो सम्माननीय साराव के सेराफिम की अद्भुत छवि के साथ-साथ हमारी आँखों के सामने एक और उल्लेखनीय हस्ती प्रकट होती है - ज़ाडोंस्क के संत तिकोन।

ये संत, टिकॉन और सेराफिम को श्रद्धालु रूसी लोग विशेष श्रद्धा से पूजते हैं, न कि इसलिए कि उन्होंने आधुनिक युग में प्रामाणिक ईसाई धर्म की भावना में जीवन व्यतीत किया, बल्कि इसलिए कि उनका तपस्या और पवित्रता का उदाहरण उस भक्तिपूर्ण आदर्श के विशेष रूप से निकट है, जो नम्रता, सादगी, संसार के प्रति खुले हृदय की ऊष्मा और उस संसार के साथ आंतरिक संबंध को महत्व देता था। जब हम आदरणीय सेराफिम और संत टिकोन जैसे रूसी तपस्वियों के जीवन को पढ़ते हैं, और अनजाने में उनकी तुलना कैथोलिक चर्च के संतों से करते हैं, तो हमें असिसी के संत फ्रांसिस की याद आती है, जिनका उदाहरण रूसी भक्ति के ईसाई आदर्श के बहुत करीब है। यह कोई संयोग नहीं है कि कुछ विद्वानों ने सेंट फ्रांसिस की तुलना सेंट सेराफिम से की है[1340] ।

संत टिकॉन का जन्म 1724 में एक गरीब ग्रामीण भजन-गायक के परिवार में हुआ था और उन्होंने बहुत कम उम्र में ही अपने पिता को खो दिया; पूरा परिवार उनकी माँ की मामूली कमाई पर रहता था, जिन्हें किसान बहुत कम वेतन पर काम पर रखते थे। 1735 में, उस लड़के को एक धर्मशास्त्र विद्यालय में पढ़ने के लिए नोवगोरोड ले जाया

[1338] पिमेन। उपरोक्त, विभिन्न स्थानों पर।

[1339] थियोफान की जीवनी का मुख्य स्रोत उनके *नोट्स* हैं, जो यद्यपि संक्षिप्त हैं, फिर भी एक जीवंत विवरण प्रदान करते हैं जो पाठक को उस युग की मठ व्यवस्था और सामान्य रूप से मठवासी जीवन के माहौल में प्रभावी रूप से डुबो देता है। ये 'नोट्स' पुस्तक में शामिल हैं: सुबोटिन, एन. आर्चिमंड्राइट थियोफन, किरिलो-नोवेज़ेर्स्की मठ के मठाध्यक्ष (1862)। पृ. 55–75। इनके अंश मेरी पुस्तक में देखें (पृ. 128–139)। साथ ही सबोटिन की थियोफान की जीवनी (पृ. 1–54) और विभिन्न तपस्या संबंधी निर्देशों वाले उनके पत्र (पृ. 76–178) भी देखें। अबेस थियोफानिया गोतोवत्सेवा के थियोफान को लिखे पत्र भी प्रकाशित हुए हैं: अबेस थियोफानिया (1868)। आर्किमैंड्राइट पिमेन द्वारा थियोफान और उनके मठ का वर्णन विशेष रूप से दिलचस्प है। पिमेन. उद्धृत ग्रंथ, पृ. 33–37, 45–47।

[1340] उदाहरण के लिए, लोदिज़ेन्स्की के गहन अंतर्दृष्टिपूर्ण कार्यों में: *सुपरकॉन्शियसनेस* (1911) और *द इनविजिबिल लाइट* (1912)।

गया, और 1740 में, स्कूल के शीर्ष स्नातकों में से एक के रूप में, उसने स्थानीय धर्मशास्त्र सेमनिरी में दाखलिा ले लयिा। अपने अनुकरणीय व्यवहार और परश्रिम के कारण, उन्हें अपनी अंतमि परीक्षाओं से पहले ही नचिली कक्षाओं के लिए ग्रीक का शक्षिक नयिुक्त कयिा गया, और अपनी परीक्षाओं के बाद वे अलंकारशास्त्र के व्याख्याता बन गए। उसके रश्तिेदार, जो बहुत गरीबी में रहते थे, ने उसे परविार की परस्थितियिों को बेहतर बनाने के लिए एक गाँव के पादरी का पद लेने के लिए कहा। लेकनि तमिोफी सोकोलोव्स्की (जनिका धर्मनरिपेक्ष नाम तकिोन था) ने यह अनुरोध अस्वीकार कर दयिा। बाद में, उन्होंने अपने साथ घटी कुछ घटनाओं के बारे में बताया, जन्हिें उन्होंने एक अलग रास्ता चुनने के लिए ऊपर से मलिा संकेत समझा।

जीवन में अपेक्षाकृत देर से, 34 वर्ष की आयु में, तमिोफी ने टकिोन नाम से मठवासी संन्यास की शपथ ली; यह 10 अप्रैल 1758 को हुआ। कुछ महीने बाद, उन्हें एक हाइरोमोंक के रूप में अभषिक्ति कयिा गया और धर्मशास्त्र सेमनिरी का नरीक्षक (प्रफिेक्ट) नयिुक्त कयिा गया। एक साल बाद (1759), वह जेल्टकिोव मठ के आर्चमिैंड्राइट और ट्वर में धर्मशास्त्र सेमनिरी के रेक्टर बने। इस प्रकार, टकिोन ने एक वद्विान भक्षिु के पारंपरकि मार्ग पर कदम रखा; यह ठीक उसी समय था जब वद्विान भक्षिु वर्ग ने अंततःखुद को एक अलग वर्ग के रूप में स्थापति कर लयिा था और एक स्थरि रूप ले लयिा था। हालांकि, एक शक्षिक के रूप में उनका काम कसिी दूरस्थ मठ में जाकर एकांत जीवन जीने की उनकी आंतरकि आध्यात्मकि इच्छा को पूरा नहीं कर सका; उनके भीतर तपस्या के प्रयासों की लालसा और भी प्रबल होती गई।

13 मई 1761 को, तकिोन को एक बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया और नोवगोरोड के डायोसीस का वाइकर बशिप नयिुक्त कयिा गया। लेकनि 3 फरवरी 1763 को ही, बशिप तकिोन को वोरोनज़ के डायोसीस के स्वतंत्र प्रशासन का जम्मिा सौंपा गया। उस समय, यह सबसे गरीब डायोसीस में से एक था। वत्ति बोर्ड के प्रयासों से, मठ और बशिप का आवास पूरी तरह से बर्बाद हो गए थे; पैरशिों की संख्या कम और वे अत्यंत गरीब थीं। इसके अलावा, इस धर्मप्रांत में कई पुराने वश्विासयिों का घर था, जन्हिें कैथरीन के अधीन अधकि स्वतंत्रता मलिी थी; कई जो नाममात्र के ऑर्थोडॉक्स थे, वे भी इस फूट के लिए प्रतबिद्ध थे। देश के बाहरी इलाके में स्थति यह धर्मप्रांत उपद्रवी लोगों से भरा हुआ था, जबकि लोगों में अंधवश्विास और दुराचार बहुत व्यापक था। बशिप टकिॉन को ऐसे वशिाल और चुनौतीपूर्ण कार्यों का सामना करना पड़ा कि पहले तो उनका हौसला पस्त हो गया और उन्होंने सनिाड से सेवानवृित्त होने की अनुमति देने का अनुरोध कयिा, लेकनि यह अनुरोध अस्वीकार कर दयिा गया।

तकिोन साढ़े चार साल से अधकि समय तक धर्मप्रांत के बशिप के रूप में पद पर रहे। उनकी शुरुआती हैरानी जल्द ही दूर हो गई, और थोड़े ही समय में बशिप तकिोन ने बहुत कुछ हासलि कर लयिा। पैरशि के पुरोहतिों का शैक्षकि और नैतकि स्तर बहुत नम्निि था, और तकिोन ने आध्यात्मकि शक्षिा के क्षेत्र में बड़ी लगन से काम शुरू कयिा। उनकी प्रताप ने गलती करने वालों को उनके अपराधों के लिए बहुत कड़ा दंड दयिा। उन्होंने पादरयिों के लिए वभिन्नि प्रकार के उपदेश और स्पष्टीकरण रचे, जसिमें चर्च की शक्षिाओं को स्पष्ट कयिा गया; उन्होंने पुरोहतिों के कर्तव्यों, पुरोहति पद की नैतकि नींव और महत्व, पल्लयिों में पादरी की देखभाल, और अन्य वषियों पर लखिा। उन्होंने धर्मशास्त्र सेमनिरी और अपने द्वारा स्थापति दो धर्मशास्त्र महावद्यिालयों के लिए बहुत समय और ऊर्जा समर्पति की। पैरशिों का दौरा करते समय, उनकी कृपा ने अपने उपदेशों में लोगों को ईसाई जीवन के अर्थ को समझाने का प्रयास क , और उन्होंने पैरशिवासयिों के लिए लखिति उपदेश भी रचे। बशिप टकिॉन के धर्मप्राधान्य के समय वोरोनज़ धर्मप्रांत के इतहिास से यह ज्ञात है कि संत कभी भी नष्क्रयि नहीं थे, और उन्होंने खुद को पूरी तरह से अपने महाधर्मपालक कर्तव्यों के प्रति समर्पति कर दयिा था। धर्मप्रांत के 13 मठ भी लगातार उनकी सतर्क नजर के अधीन थे। बाद में, उन्होंने भक्षिुओं के लिए कई उपदेश लखिे और दो वशिष्टि कृतयिाँ रचीं: "भक्षिुओं के लिए नर्दिेश" और "इस व्यर्थ संसार से मसीह की ओर मुड़ने वालों के लिए एक प्रोत्साहन का शब्द"।

वशिेष उत्साह के साथ, बशिप टकिॉन ने लोगों में प्रचलति अंधवश्विासों के खलिाफ लड़ाई लड़ी, और अपने उपदेशों में उनकी नदिा की। उनके शब्दों की आंतरकि शक्ति ने लोगों को प्रभावति कयिा, और वह कई ऐसे मूर्तपिूजक रीति-रिवाजों को खत्म करने में सफल रहे जो अब तक रोजमर्रा की जदिगी में व्यापक रूप से प्रचलति थे।

इतने सक्रयि और मांग वाले प्रशासनकि कर्तव्यों के बावजूद, बशिप टकिॉन ने अपने आंतरकि, आध्यात्मकि जीवन की उपेक्षा नहीं की। वे अपनी रातें प्रार्थना में, वभिन्नि लेखन तैयार करने में, या चर्च के पुरखों, वशिेष रूप से सेंट जॉन क्राइसोस्टोम को पढ़ने में बतिाते थे, जन्हिें वे बहुत मान-सम्मान देते थे। फरि भी उनका शरीर इतनी कठनि जीवनशैली का सामना करने में मुश्कलि से ही सक्षम था, और वह अक्सर बीमार रहते थे। बशिप को दूसरी बार सनिाड से सेवानवृित्ति का अनुरोध करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस अवसर पर, सनिाड ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लयिा, और 1767 में बशिप टकिॉन को उनके पद से मुक्त कर दयिा गया।

शुरुआत में, बशिप ने अपना सेवानवृित्त जीवन टोलशेव्स्की मठ में बताया, लेकनि अस्वास्थ्यकर जलवायु के कारण उन्हें उसी वोरोनज़ेज़ धर्मप्रांत में डॉन नदी के तट पर स्थति ज़ाडोन्स्की मठ में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस प्रकार उनके जीवन का अंतमि दौर शुरू हुआ, जसिके दौरान उन्होंने खुद को पूरी तरह से आंतरकि आध्यात्मकि और तपस्वी प्रयासों को समर्पति कर दयिा। बाहरी रूप से, संत का जीवन सरल, लगभग गरीब जैसा था: वह एक छोटी सी कोठरी में रहता था, एक पुराने, घसिे-पटिे भेड़ की खाल के कोट के नीचे पुआल की पतली चटाई पर सोता था, मोटे कपड़े से बनी एक साधारण मठ की चोगा पहनता था, और अपनी कोठरी के अंदर हमेशा सूखे पौधों की जड़ों से बने जूते पहनता था। उनकी सारी संपत्तएिक पुराने चमड़े के झोले में आ जाती थी; केवल चमड़े की जल्दि वाली कतिाबें ही उनकी कोठरी की सादी सजावट में कुछ ववििधिता लाती थीं। बशिप का भोजन इतना साधारण और मामूली था कि उनके कोठरी के परचिर, चेबोतारव, अक्सर उस तपस्वी को कम से कम थोड़ा और खाने के लिए मनाने की कोशशि करते थे। प्रार्थना उनके जीवन का मुख्य केंद्र थी; वह प्रतदिनि सभी दैवीय सेवाओं में शामलि होते थे, सेवाओं के दौरान पढ़ना और गायक-मंडली में भक्षिुओं के साथ गाना उन्हें पसंद था। शुरुआती वर्षों में, बशिप टकिॉन अपने बशिप के परधिान में दैवीय पूजा का अनुष्ठान करते थे, लेकनि बाद में, वनिम्रता के कारण, उन्होंने साधारण चोगा पहनकर सेवाओं में भाग लेना शुरू कर दयिा; केवल भोजन कक्ष में दोपहर के भोजन के समय ही वे कभी-कभी एक मंटल या एपट्रिाचेलयिन पहनते थे। सेवाओं के बीच, वह स्वयं को पवत्रि धर्मग्रंथों के अध्ययन में डुबो देता था; रात के खाने पर, मठ के नयिम के अनुसार, उसका सेल अटेंडेंट उसे धर्मग्रंथों से ज़ोर से पढ़कर सुनाता था। संत टकिॉन अपनी रातें लगभग हमेशा बनिा सोए, प्रार्थना में बताते थे।

उन्होंने अपने सेल सहायक से कहा कि उन्हें वभिन्नि प्रलोभनों से जूझना पड़ता है। वह इस वचिार से वशिेष रूप से पीड़ति थे कि क्या उनमें अपने बशिप के पद द्वारा लगाए गए कर्तव्यों से बचने, और ईसाइयों की सेवा करना बंद करने, और इसके बजाय केवल अपनी आत्मा के उद्धार के लिए खुद को समर्पति करने का आंतरकि अधकिार था। उनका आंतरकि संघर्ष इतना तीव्र हो गया कि टकिोन ने सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल को पत्र लखिने का संकल्प लयिा, जनिके अधीन उन्होंने कभी वकिर के रूप में सेवा की थी, और उनसे कोई पद मांगने का नश्चिय कयिा। लेकनि पत्र भेजने से ठीक एक रात पहले, बशिप ने एक सपना देखा जसिने उन्हें पत्र फाड़ देने के लिए मना लयिा। इसी समय, एक और घटना घटी जसिने हमेशा के लिए मठ में रहने के उनके संकल्प को और मजबूत कर दयिा। एक दनि, संत टकिोन अपनी कोठरी के दहलीज पर बैठे वचिारों में खोए हुए थे, जसिे उन्होंने बाद में आत्म-बड़बोलेपन के प्रलोभन के रूप में वर्णति कयिा। अचानक, मठ में रहने वाला एक पवत्रि मूर्ख, उपनाम कामेनेव, दौड़कर उसके पास आया और बशिप के गाल पर थप्पड़ मारते हुए उससे कहा: 'घमंडी मत बनो।' इस थप्पड़ में, तकिोन ने अपनी आंतरकि कमजोरी की फटकार देखी। संत टकिॉन की तरह कसिी ने भी अपनी आंतरकि पीड़ाओं, शारीरकि और आध्यात्मकि प्रलोभनों, या आंतरकि सुस्ती और नराशिा के बारे में इतनी स्पष्टवादति से बात नहीं की। शारीरकि रूप से खुद को थकाने के लिए, वह बगीचे में काम करते थे और लकड़ी काटते थे।

उनके समकालीन लोगों ने उनकी वनिम्रता, लोगों के प्रति उनके ईसाई प्रेम और उनकी आध्यात्मकि अंतर्दृष्टकि बारे में वस्तिार से बात की। धीरे-धीरे, संत के आंतरकि जीवन को शांत मलि गई; वे सक्रयि सार्वजनकि जीवन से और अधकि दूर होते गए और लगभग एक तपस्वी की तरह रहते थे; उनके उपवास के समय और लंबे होते गए, और उन्होंने प्रार्थना के लिए और अधकि समय समर्पति कयिा। अंतमि तीन वर्षों तक, वह अपनी कोठरी से कभी बाहर नहीं नकिले।

उन्हें अपनी नींद में देखे गए एक दर्शन ने कोठरी तक पहुँचाया। एक सूक्ष्म सपने में, उन्होंने पारदर्शी क्रस्टिल महलों के सामने एक घास के मैदान में एक दावत देखी; वह उस घास के मैदान में जाने के लिए तरस रहे थे, लेकनि कसिी शक्ति ने उन्हें रोक रखा था, और फरि उन्होंने एक आवाज़ सुनी: 'तीन साल बाद तुम प्रवेश कर सकते हो, लेकनि अभी के लिए, परश्रिम करो।' अपनी कोठरी में, वह केवल अपने कोठरी के परचिारक से ही बात करता था, और वह भी बहुत ही कम। सेंट सेराफमि की तरह, उसने दो प्रेरतिों के साथ सर्व पवत्रि कुँवारी मरयिम को देखा। एक बार, उसे एक और थप्पड़ पड़ा – एक सपने में: एक पादरी एक शशिु को अपनी बाहों में लेकर, कफ़न में लपेटकर, वेदी से बाहर ले जा रहा था। तकिोन ने शशिु के दाहनिे गाल पर चूमा, जसि पर शशिु ने बदले में उसके बाएं गाल पर थप्पड़ मारा। जब संत जागे, तो उन्होंने पाया कि उनका बायां गाल और बायां पैर लकवाग्रस्त हो गए थे; यह घटना उनकी मृत्यु से एक साल पहले हुई थी। अपने अंतमि दनिों में, उनकी आवाज़ बहुत कमज़ोर हो गई थी; केवल उनका सेल अटेंडेंट ही समझ पाता था कि वह क्या कह रहे थे। एक दनि, तकिोन ने अपने सेल सहायक से कहा कि उसके पास जीने के लिए तीन दनि और बचे हैं, और उस समय के अंत में वह वास्तव में प्रभु के पास चले गए; यह 13 अगस्त 1783 की तड़के हुआ।

टिकॉन की लोगों के बीच पूजा उनके निधन के तुरंत बाद शुरू हो गई थी, खासकर इसलिए क्योंकि साल दर साल, मठ के चर्च में उनकी कब्र पर चमत्कारिक उपचार की बढ़ती रिपोर्टें आ रही थीं। उनकी संत-घोषणा, जो 1863 में हुई, से पहले, वहां 100 तक उपचारों को आधिकारिक तौर पर दर्ज किया गया था। 1845 में ही, संत के अवशेष अपरिवर्तित पाए गए थे, लेकिन सम्राट निकोलस प्रथम ने संत तिखोन के संत्करण के लिए अनुमति नहीं दी। केवल अलेक्जेंडर द्वितीय के अधीन, 13 अगस्त 1863 को ही उनके अवशेषों को विधिवत खोला गया और संत तिखोन को संत घोषित किया गया।

ज़ादोन्स्क मठ में अपने समय के दौरान, ज़ादोन्स्क के संत टिखोन ने कई कृतियाँ लिखीं, जो मुख्य रूप से नैतिक धर्मशास्त्र के प्रश्नों को समर्पित हैं। इनमें उनकी प्रमुख कृति *ऑन ट्रू क्रिश्चियनिटी* शामिल है। (1770–1771), साथ ही *मित्रों को पत्र* और *मठवासी पत्र* (दोनों संग्रह 1772–1775 के हैं); इनमें विभिन्न प्रकार के मार्गदर्शन और निर्देश शामिल हैं, जो उनसे पूछे गए प्रश्नों या उन्हें प्राप्त पत्रों के उत्तर के रूप में रचे गए हैं। अपने अंतिम वर्षों (1777–1779) में, संत ने *द स्पिरिचुअल ट्रेजर, गैदरड फ्रॉम द वर्ल्ड* (The Spiritual Treasure, Gathered from the World) नामक पुस्तक पर काम किया, जो संक्षिप्त चिंतन (कुल 157) का एक संग्रह है, जिसमें संत के कई रहस्यमय अनुभवों का वर्णन है। *द ट्रेजर* अपने लेखक के आध्यात्मिक चरित्र - एक तपस्वी और एक रहस्यवादी - को शानदार ढंग से दर्शाता है। प्राकृतिक घटनाओं और उनके अर्थ पर संत के विचार, जो इसमें शामिल हैं, भी उत्कृष्ट हैं। संत टिखोन की रचनाओं को कई बार पुनर्मुद्रित किया गया है और ये श्रद्धालुओं के बीच सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तकों में से हैं। संत टिखोन की रचना *ऑन ट्रू क्रिश्चियनिटी* संभवतः अर्न्ड्ट के इसी नाम के प्रबंध से प्रभावित थी, जिसे संत बहुत मान देते थे[1341] ।

९. *तपस्या के चुनिंदा उदाहरण*

18वीं और 19वीं शताब्दी में तपस्या की व्यापक रूपरेखा की एक अधिक पूर्ण तस्वीर प्रदान करने के लिए, हमें कुछ अन्य व्यक्तियों का भी उल्लेख करना चाहिए।

18वीं सदी के चर्च पदानुक्रम में, बिशप जोआसाफ गोरलेन्को (1705–1754) अपनी आंतरिक भक्ति के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। सेंट टिखोन की तरह, वह नम्रता, स्नेह और ईसाई प्रेम का मूर्त उदाहरण थे। बेलगोरोद के बिशप (1748–1754) के रूप में, जोआसाफ ने लोगों और पादरियों दोनों का गहरा स्नेह अर्जित किया - यह 18वीं सदी में एक दुर्लभ घटना थी, जब आम तौर पर बिशपों और पादरियों के बीच एक खाई हुआ करती थी। धर्मप्रांतीय प्रशासन के सभी मामलों में, बिशप जोआसाफ ने गरीब ग्रामीण पुरोहितों की दुर्दशा की गहरी समझ दिखाई और पुरोहित वर्ग की वित्तीय कठिनाइयों को कम करने के लिए अपनी पूरी कोशिश की। अपने निजी जीवन में, जोआसाफ एक अत्यंत कठोर तपस्वी थे। यह संभव है कि उनके उपवास की कठोरता ही उनके असामयिक निधन का कारण थी। जोसाफ के निधन के तुरंत बाद, स्थानीय श्रद्धालुओं ने उनकी पूजा करना शुरू कर दिया, और उनके मकबरे पर अक्सर बीमारों के ठीक होने की घटनाएँ हुईं। जब उनकी कब्र खोली गई, तो उनके अवशेष अक्षुण्ण पाए गए, और 4 सितंबर 1911 को उन्हें रूसी चर्च द्वारा एक संत के रूप में मान्यता दी गई [1342] । संत जोसाफ और ज़ादोंस्क के संत टिखोन, बिशप वर्ग और श्रद्धालुओं के बीच घनिष्ठ बंधन का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, और यह उस समय हुआ जब चर्च पदानुक्रम का अपने अनुयायियों से अलगाव तेजी से स्पष्ट होता जा रहा था - एक ऐसी घटना जो सिनोडल काल के दौरान बहुत व्यापक थी और लोगों के धार्मिक जीवन के लिए अत्यंत हानिकारक थी।

[1341] पोपोव, ए. सेंट टिखोन ऑफ ज़ादोंस्क एंड हिज़ मॉरल टीचिंग्स (1916); लेबेदेव, ए. सेंट टिखोन ऑफ ज़ादोंस्क एंड हिज़ लाइफ, राइटिंग्स एंड कैनोनाइज़ेशन (दूसरा संस्करण 1890, लोकप्रिय शैली में लिखा गया)। सेल अटेंडेंट वी. पी. चेबोतारेव के 'नोट्स' इस में प्रकाशित हुए: टिखोन. रचनाएँ (1899)। 5. पृ. 1–18। संत की पहली जीवनी, जो आंशिक रूप से उनके समकालीनों के विवरणों पर आधारित थी, का संकलन भविष्य के मेट्रोपॉलिटन एवगेनी बोलखोवितिनोव द्वारा 1796 में ही किया गया था: वोरonezh के टिखोन के जीवन का वर्णन (सेंट पीटर्सबर्ग, 1796); और भी: उनकी उत्कृष्टता टिखोन, वोरोनेज़ के बिशप के जीवन और कार्यों का विवरण (मास्को, 1837)। उनकी संत-घोषणा के बाद, टिखोन पर कई नई कृतियाँ सामने आईं, जिनमें से अधिकांश आम जनता के लिए थीं; ये, सेंट डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव के मेनायोन की तरह, अत्यधिक व्यापक हो गईं। संत की प्रतिमाओं की प्रचुरता की तुलना केवल राडोनेज़ के संत सर्गियस और सारोव के संत सेराफिम से ही की जा सकती है। उनके कार्यों का पहला संस्करण (1836) अधूरा था। एक संपूर्ण संस्करण 1889–1895 में पाँच खंडों में प्रकाशित हुआ था; *द वर्क्स ऑफ़ सेंट टिखोन ऑफ़ ज़ादोंस्क* (सेंट पीटर्सबर्ग, 1910) का दो-खंड वाला संस्करण पूरी तरह से पूरा नहीं है। संदर्भ-ग्रंथ सूची के लिए देखें: RBS (1912), पृ. 589। यह भी देखें: आर्सेनीव, एन. वी., *डाई ग्रुंडज्यूगे डेस रशिशन फ्रॉमगिट्सलेबेंस*, *रूशिशे ब्लैटर* में। 1929. 2; वही, *Der christliche Osten* में, पृ. 191–193; *Die Urgestalt der Brüder Karamasov*। प्रो. कोमारोविच की टिप्पणी, डस्टोयेव्स्की, एफ. एम. *Werke* में, 1929. पाइपर संस्करण। पृ. 60.

[1342] ग्रेचेव, बी. 'संत जोआसाफ', में: बीवी. 1911. 2–3. झेवाखोव, एच. 'संत जोआसाफ गोरलेन्को, बेलगोरोद और ओबोयान के बिशप (1705–1754). एक जीवनी के लिए सामग्री'. 3 खंड. (1909–1911).

श्रेणी-क्रम में एक और उल्लेखनीय व्यक्ति बिशप इग्नाटियस ब्रायान्चाननिोव (1807–1867) थे, जनि्हें उनकी तपस्वी जीवनशैली, एल्डर परंपरा से उनके संबंधों और उनके लेखन के कारण मठवासी समुदाय में वशिेष मान्यता मलिी। इग्नाटियस का आध्यात्मकि वकिास उन्नीसवीं सदी के बशिपों के लिए सामान्य नहीं कहा जा सकता। दमिति्री अलेक्जेंड्रोवचि ब्रायान्चाननिोव वोल्गोडा गवर्नरेट के एक जमींदार के बेटे थे। ब्रायान्चाननिोव ने बाद में स्वीकार कयिा, 'मेरा बचपन दुख से भरा था,' और यह आंशकि रूप से उनके पति के साथ उनके ववािदों के कारण था, जो चाहते थे कि उनका बेटा अपने कुलीन जन्म के अनुरूप करयिर चुने। लेकनि युवा दमिति्री एक मठवासी कोठरी का सपना देखता था। वह वनिम्रतापूर्वक अपने पति की इच्छा के आगे झुक गया और सैन्य इंजीनयिरगि स्कूल में एक अधकिारी के रूप में प्रशक्षिण लेने के लिए सेंट पीटर्सबर्ग के लिए रवाना हो गया।

उनके जीवन की व्यापक रूपरेखा के संदर्भ में, इंजीनयिरगि स्कूल में उनका दाखलि बहुत महत्व का साबति हुआ, क्योंकि वहीं, अपनी क्षमताओं के कारण, ब्रायान्चाननिोव ने ग्रैंड ड्यूक नकिोले पावलोवचि का ध्यान आकर्षति कयिा, जो मलिट्री इंजीनयिरगि स्कूल के एक वशिेष संरक्षक थे; और जब, 1825 में, नकिोलस ने रूसी शाही सहिासन संभाला, तो उन्होंने मेहनती सैन्य अभयिंता ब्रायान्चाननिोव को नहीं भुलाया। फरि भी, उनकी पढ़ाई से ब्रायान्चाननिोव को कोई आंतरकि संतुष्टि नहीं मलिी: 'मेरी आत्मा के भीतर एक भयानक खालीपन पैदा हो गया था और वह पहले ही बढ़ चुका था; एक भूख जागी, ईश्वर के लिए एक असहनीय लालसा। मैंने अपनी ही लापरवाही पर शोक मनाना शुरू कर दयिा, उस उपेक्षा पर शोक मनाया जसिने मैं अपने वश्विास के प्रति बरत रहा था, उस मधुर शांति पर शोक मनाया जसिे मैं खो चुका था, उस खालीपन पर शोक मनाया जो मुझमें आ गया था—जो मुझ पर भारी पड़ रहा था, मुझे डरा रहा था, और मुझे अनाथता और जीवन की कमी की भावना से भर रहा था। और वास्तव में – यह उस आत्मा का कष्ट था जो अपने सच्चे जीवन, ईश्वर से भटक गई थी। मुझे याद है: मैं अपनी कैडेट की वर्दी पहनकर सेंट पीटर्सबर्ग की सड़कों पर चल रहा था, मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे... गंभीर चतिन के बाद, मैंने अपनी कैडेट की वर्दी उतार दी और एक अधकिारी की वर्दी पहन ली। मुझे कैडेट की वर्दी छोड़ने का अफ़सोस हुआ: उसमें, ईश्वर के घर में प्रवेश करते समय, कोई सैनकिों की भीड़ में, आम लोगों की भीड़ में घुल-मलि सकता था, और मन भरकर प्रार्थना और रो सकता था'[1343] । इस तरह उन्होंने बाद में अपने मन की स्थति का वर्णन कयिा। लेकनि दमिति्री और उसके कुछ दोस्तों को पता था कि कक्षाओं और ड्रलि के बीच अपनी आंतरकि आध्यात्मकि जरूरतों को पूरा करने के लिए समय कैसे नकिालना है। दमिति्री और उसके मति्र मखिाइल चखिाचेव के चारों ओर धार्मकि वचिारों वाले कैडेटों का एक छोटा सा समूह बन गया; शाम को, व्याख्यानों और सेवाओं के बाद, वे न केवल धार्मकि मामलों पर चर्चा करने के लिए बल्कि प्रार्थना करने के लिए भी इकट्ठा होते थे[1344] । 1827 की शुरुआत में, ब्रायान्चाननिोव को एक अधकिारी के रूप में नयिुक्त कयिा गया; हालाँकि, उसी वर्ष के अंत में, वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और अंततः सेवा से मुक्त होने का अनुरोध कर सका, जसिे स्वीकार कर लयिा गया, और उसे सेवा से मुक्त कर दयिा गया। अब वह अपना इरादा पूरा कर सकता था - एक मठ में प्रवेश करना।

सबसे पहले, वह उनसे मलिने के लिए अलेक्जेंडर-स्वर मठ गए, जहाँ उस समय एल्डर लयिोनदि रह रहे थे। ब्रायांचाननिोव ने एल्डर थयिोफान सोकोलोव के मार्गदर्शन में करिलिो-नोवोएज़ेर्स्की मठ में अपना नवोदति काल पूरा कयिा – दमिति्री लगभग तीन साल तक उनकी सेवा में रहे। फरि उन्होंने कुछ समय प्लोशचन्स्काया हर्मटिेज में बतिाया, जहाँ से वे एक बार फरि एल्डर लयिोनदि से मलिने के लिए ऑप्टनिा चले गए, और अंत में वोल्गोडा के पास ग्लुशति्स्की मठ में प्रवेश कर गए। यहीं, 1831 में, उन्हें भक्षिु दीक्षा दी गई और इग्नाटियस नाम दयिा गया।

थोड़ी ही देर बाद, अब एक हायरोमोंक के रूप में, इग्नेशयिस को छोटे लेकनि प्राचीन पेलशेन्स्की मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया। यहाँ, घने वोल्गोडा जंगलों के बीच, इग्नेशयिस दुनयिा से दूर तपस्वी जीवन को अपनाने में सक्षम हुए, और ऐसा लगा कि उनके युवा सपने आखरिकार सच हो गए थे। लेकनि ठीक उसी क्षण, इंजीनयिरगि कॉलेज के अपने एक दौरे के दौरान, सम्राट नकिोलस को उनकी याद आई और उन्होंने प्राचार्य से जाना कि ब्रायान्चाननिोव ने इस्तीफा दे दयिा था और भक्षिु संन्यास के संस्कार भी ग्रहण कर लिए थे। ज़ार ने सेंट पीटर्सबर्ग के मेट्रोपॉलटिन से ब्रयांचाननिोव के ठकिाने के बारे में पूछा, और उन्हें बताया गया कि वह एक छोटे से मठ का प्रभारी था। के आदेश पर इग्नेशयिस को सेंट पीटर्सबर्ग भेजा गया। वहाँ, 26 वर्षीय हायरोमोंक को आर्चमैंड्राइट के पद पर 'प्रमोशन' दयिा गया, और ज़ार ने आदेश दयिा कि उसे राजधानी के पास स्थति एक मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा जाए।

[1343] देखें: मेरी पुस्तक (पृ. 169)। उनके पत्र: BV. 1913. 1–2; रीडगि्स. 1875. 2.

[1344] देखें: लेस्कोव, एन. इंजीनयिर्स वदिाउट ग्रीड. कम्प्लीट वर्क्स, खंड 2 (1903); जर्मन में: लेस्कोव, एन. डाई रेच्टशाफेनेन, इन: कोरोना, खंड 3, संख्या 3-4.

यह सर्गेवस्काया हर्मटिेज था, जो पतन की स्थतिि में था। इसे ज़ार के खर्च पर बहाल कयिा गया था, और फादर इग्नाटयिस ने 24 वर्षों तक इसका प्रबंधन कयिा; युवा मठाधीश के तपस्वी वचिारों और परशि्रम के कारण, मठ में वास्तवकि मठवासी जीवन पुनर्जीवति हो गया। सम्राट ने एक बार उनसे कहा: 'मैं तुम्हें उतना ही पसंद करता हूँ, जतिना पहले करता था! तुम मेरी दी हुई परवरशि और मेरे प्यार के लिए मेरे ऋणी हो... मैं तुम्हें सेरगीवस्काया हर्मटिेज दे रहा हूँ; मैं चाहता हूँ कि तुम वहाँ रहो और उसे एक ऐसे मठ में बदल दो जो राजधानी की नजर में अन्य मठों के लिए एक आदर्श हो।' लेकनि जार की इस इच्छा के बनिा भी, इग्नातउिस का मठाध्यक्ष पद मठ के लिए लाभकारी ही होता, क्योंकि सिंन्यासी जीवन के प्रति उिनके वचिार न केवल उनके व्यक्तगित अनुभव से, बल्कि उिससे भी अधकि, बुजुर्ग लयिोनदि और थयिोफेंस के प्रभाव से आकार लिए थे, जनिसे उन्हें संन्यासी जीवन की नींव की सही समझ और सामुदायकि नयिम के फायदों का दृढ़ वशि्वास मलिा।

इसके अलावा, स्वयं इग्नेशयिस के लिए, रेगस्तिान में बतिाए गए वर्ष अत्यधकि महत्व के थे: यह उनके आध्यात्मकि वकिास, एक भक्षिु, एक कठोर तपस्वी और एक भक्तमिय व्यक्ति के रूप में उनके वकिास का समय था; यह चर्च फादर्स के कार्यों के गहन अध्ययन का भी समय था, जसिने उनके बाद के कार्य *एस्कैटकि एक्सपीरयिंस* (Ascetic Experiences) के लिए आधार तैयार कयिा, जसि भक्षिु समुदाय में बहुत सम्मान मलिा।

1857 में, आर्चमिांड्राइट इग्नाटयिस को बशिप के रूप में अभषिेक कयिा गया और Stavropol के सी (तब काकेशयिन सी के नाम से जाना जाता था) पर नयिुक्त कयिा गया। 1861 में, उन्होंने सी से इस्तीफा दे दयिा और नकिोलो-बाबाएव्स्की मठ (कोस्त्रोमा के डायोसीस में) में चले गए। अपनी मृत्यु (30 अप्रैल 1867) तक, वह यहाँ दुनयिा से अलग-थलग रहकर अपने लेखन के नरि्माण में लगे रहे; यहाँ से उन्होंने कई वशि्वासयिों के साथ व्यापक पत्राचार बनाए रखा, जो अक्सर अपने मठवासी या गृहस्थ जीवन के बारे में उनकी सलाह लयिा करते थे। उनके सबसे महत्वपूर्ण कार्य हैं *तपस्वी अनुभव*, *एक तपस्वी उपदेश*, *समकालीन मठवाद को एक भेंट* (बाहरी आचरण के नयिम और भक्षिुओं के आंतरकि जीवन से संबंधति दशिानरि्देश), *यीशु की प्रार्थना पर। 'एक वृद्ध और एक शष्यि के बीच संवाद', 'दुखों को सहने पर' और अन्य।[1345]

उनकी रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि इग्नेशयिस एक तपस्वी और रहस्यवादी दोनों थे। वह पूर्वी ईसाई धर्म के उन प्रतनिधियिों में से थे जो तपस्या के अंतमि लक्ष्य को केवल आत्मा का मोक्ष नहीं, बल्कि दिव्यिता प्राप्तमि मानते थे। आर्कमिैंड्राइट पमिेन, जनिका हमने अक्सर उल्लेख कयिा है और जो बशिप इग्नाटयिस को व्यक्तगित रूप से जानते थे, लखिते हैं कि इग्नाटयिस अपने समय के संन्यासवाद से गहराई से असंतुष्ट थे और उन्होंने प्राचीन संतों को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कयिा; उन्होंने अपनी मूल पवत्रिता को केवल इसलिए बनाए रखने में कामयाबी हासलि की थी क्योंकि वे सांसारकि व्यर्थता से अलग हो गए थे[1346] । बशिप इग्नाटयिस मठवाद पर हुए कठोर हमलों से गहराई से व्यथति थे, जो 1960 के दशक की शुरुआत की वशिेषता थे; इन हमलों की व्याख्या न केवल संतों के जीवन में देखी गई नकारात्मक घटनाओं से, बल्कि समाज के उदारवादी हलकों की ईसाई-वरिोधी भावनाओं से भी की जा सकती है। इग्नेशयिस के दृष्टकिोण में, यह केवल संन्यासवाद की आलोचना नहीं थी, बल्कि किसी भी आवश्यक साधन द्वारा, मठवासी जीवन—जसिका एक हसि्सा मठ की दीवारों के बाहर होता था—को वभिन्नि प्रकार के प्रलोभनों के अधीन करने का एक प्रयास था। इसलिए, इग्नातउिस का मानना था कि संतों के लिए दुनयिा से यथासंभव दूर रहना सबसे अच्छा था: पहली बात, नैतकि पवत्रिता बनाए रखने के लिए और दूसरी बात, ऐसी आलोचना का कोई कारण न देने के लिए[1347] ।

बशिप इग्नाटयिस ब्रायान्चाननिोव का आध्यात्मकि चरत्रि सन्नि्डल युग के उन रूसी बशिपों का वशिष्टि उदाहरण है, जन्हिोंने पूर्वी चर्च की तपस्या की परंपरा से आध्यात्मकि शक्ति प्राप्त की और रूसी मठवाद के स्वस्थ वर्ग के साथ संबंध बनाए रखे। वे न केवल स्वयं ईसाई तपस्या के आदर्श थे, बल्कि उिन्होंने मठवाद के पुनरुत्थान में भी योगदान दयिा। अपने परशि्रम और लेखन के माध्यम से, उन्होंने यह सुनश्चिति करने में मदद की कि व्यक्तगित

[1345] पमिेन। उद्धृत कृति, पृ. 22–24, 68–70, 101–111, 404–407। इग्नाटयिस की जीवनी: कृतयिाँ। खंड 1 (1885)। पृ. 1–80; उनकी कृतयिों का पहला संस्करण, 4 खंडों में, 1867–1868 में प्रकाशति हुआ था; दूसरा संस्करण, 5 खंडों में, 1885–1886 में; पत्र, में: रीडगि्स. 1875. 1; बीवी. 1913. 1–2 (संख्या 3 – मेट्रोपॉलटिन फलिारेट अम्फतीट्रोव के इग्नाटयिस को लखिे पत्र); ए. आई. हर्ज़ेन के साथ उनकी वाद-ववािद रचना, में: बीवी. 1913. 2. इग्नाटयिस पर: इग्नाटयिस, हायरोमोंक. जीवति ईश्वर की खोज में, में: वॉयस ऑफ द चर्च. 1913. 1–2; एक प्रमुख कृति: सोकोलोव, एल. इग्नाटयिस ब्रायन्चाननिोव. उनका जीवन, व्यक्तित्व और नैतकि-तपस्वी वचिार. 2 खंड. (1915) – दुर्भाग्य से, यह हमें उपलब्ध नहीं है। 'तपस्या के अनुभव', खंड 1 में, दूसरी संस्करण; 'तपस्या पर उपदेश', खंड 4 में; 'संन्यासवाद को श्रद्धांजलि', खंड 5 में। तुलना करें मेरी पुस्तक (पृ. 168) से, जहाँ उनके कुछ पत्र पुनर्मुद्रति हैं।

[1346] पमिेन। उद्धृत ग्रंथ, पृ. 407।

[1347] *तपस्वी अनुभव*, में: संकलति कृतयिाँ, खंड 1 (1867), पृ. 532, और *पति की पुस्तक* (1903), पृ. 184।

संन्यासी और यहाँ तक कि पूरे मठ भी सही तपस्या के मार्ग पर चलें, और मठ जीवन की कई कमियाँ दूर हुईं। सन्न्यासी हलकों में ईसाई तपस्या की भावना से जीने की आकांक्षा कभी कम नहीं हुई, और सच्ची तपस्या के कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, जहाँ भिक्षुओं ने—या तो अपनी मर्जी से या सेंट टिखॉन ऑफ ज़ाडोंस्क, बिशप एम्ब्रोज़ ऑफ ऑर्नेट्स, बिशप थियोफेन्स द रिक्लूस जैसे तपस्वी बुज़ुर्गों के प्रभाव में, बिशप इग्नाटियस ब्रायान्चानिनोव और अन्य लोगों ने, दुनिया का त्याग करने के मार्ग पर चलकर, एक आध्यात्मिक संघर्ष किया।

आर्किमैंड्राइट निकोडेमस का कार्य *18वीं और 19वीं सदी के रूसी तपस्वियों की जीवनियाँ*[1348] रूसी बिशपों, भिक्षुओं और सामान्य लोगों में से कई तपस्वियों की कहानियों का वर्णन करता है। हमारे पास उनमें से प्रत्येक पर पर्याप्त विश्वसनीय सामग्री नहीं है, जिससे यहाँ प्रस्तुत जानकारी की सटीकता की पुष्टि की जा सके। कई योग्य तपस्वियों के बारे में, हमें केवल अस्पष्ट, अक्सर विरोधाभासी विवरण और संस्मरण ही प्राप्त हुए हैं, या वास्तव में केवल ऐसी रिपोर्टें ही मिली हैं जो हमें इन तपस्वियों का सही आकलन करने की अनुमति नहीं देती हैं। परिणामस्वरूप, हमारे इस संक्षिप्त विवरण में, हम एक ओर तो केवल सबसे प्रसिद्ध तपस्वियों तक ही सीमित रहने के लिए विवश हैं, जबकि दूसरी ओर, कुछ मामलों में—जहाँ विस्तृत जीवनी संबंधी जानकारी का अभाव है—हमें केवल उनके नामों का संक्षिप्त उल्लेख करके ही संतोष करना होगा।

जॉर्जी माशुरिन का नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है; वह एक तपस्वी और संन्यासी थे, जो ईसाई विनम्रता और एक भिक्षु की 'देवदूत समान पदवी' धारण करने के अपने अयोग्य होने की भावना के कारण, अपने पूरे जीवन में एक नवसिखुआ ही बने रहे। माशुरिन (1789–1836) एक कुलीन व्यक्ति और एक हुस्सर रेजिमेंट में अधिकारी थे। इस पुस्तक में, हमने एक से अधिक अवसरों पर उल्लेख किया है कि 18वीं और 19वीं शताब्दी में कई लोगों ने अपने आकर्षक अधिकारी वर्दियों को संन्यासी के वस्त्रों से बदल दिया, और जो लोग शानदार करियर बना सकते थे, उन्होंने मसीह के सिपाही बनने को प्राथमिकता दी; माशुरिन ऐसे ही एक योद्धा थे। 1818 में, उन्होंने सेना से सेवानिवृत्ति ली और ज़ाडोंस्की मठ में एक नवोदित के रूप में प्रवेश किया, वही मठ जहाँ सेंट टिख्खोन पहले एक भिक्षु के रूप में रहते थे। एक साल बाद, उन्होंने खुद को एक छोटी सी कोठरी में बंद कर लिया, जो केवल सर्दियों में, विशेष रूप से कड़ाके की ठंड के दौरान ही गर्म होती थी। अपनी कोठरी के नीचे, जॉर्ज ने गुफा जैसी एक खाई खोदी; दिन के दौरान वह इस गुफा में घुटनों के बल प्रार्थना करते थे, जबकि रात में वह अपना समय पवित्र धर्मग्रंथों या तपस्या संबंधी लेखन पढ़ने में बिताते थे, और हर दिन भोजन नहीं करते थे। यह तपस्वी प्रयास लगभग पाँच वर्षों तक चला, जिसके बाद उन्होंने अपनी गुफा छोड़ दी और अपनी कोठरी में चले गए। जॉर्ज को लोगों द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता था; कई लोग उनसे एक वृद्ध की तरह सलाह लेने आते थे। फिर भी, वह बहुत कम ही अपने कोठरी में आगंतुकों को बुलाते थे। वे कई श्रद्धालुओं के साथ पत्राचार करते थे, और उन्हें सांसारिक जीवन पर सलाह देते थे। 1870 तक ये पत्र पाँच संस्करणों में प्रकाशित हो चुके थे; इन्हें ऑप्टिना के एल्डर एम्ब्रोज़ या बिशप थियोफान गोवोरोव के पत्रों जितनी ही व्यापकता से पढ़ा जाता था, विशेष रूप से आम लोगों के बीच। जॉर्जी माशुरिन एक ऐसे तपस्वी का दुर्लभ उदाहरण थे, जो औपचारिक रूप से एक भिक्षु तो नहीं थे, लेकिन उन्होंने उन कई लोगों से भी अधिक मठवासी जीवन जिया जिन्होंने मठवासी संन्यास ग्रहण किया था। उनकी एकांतवास वाली ज़िंदगी 17 साल तक चली[1349] ।

सोलोवेत्स्की के थियोफान (1739[?]–1819) एक कठोर तपस्वी, संन्यासी और मरुभूमिवासी थे। वे संभवतः दक्षिणी रूस के मूल निवासी थे; वह पहली बार कीव-पेचेरस्क लाव्रा आए और वहाँ वरिष्ठ डोसिथियस († 1788) के मार्गदर्शन में तपस्या की, फिर तीर्थयात्रा पर निकले, पहले न्यमेत्स मठ में वरिष्ठ पैसियस वेलीचकोव्स्की के पास, और वहाँ से पैदल ही सोलोवेत्स्की मठ (1778) गए। यहाँ उन्होंने एक जंगल की झोपड़ी में कई साल बिताए, लोगों से बिल्कुल कोई संपर्क नहीं रखा, यहाँ तक कि सोलोवेत्स्की मठ के संतों से भी नहीं। उनके बारे में एक बहुत ही दिलचस्प हस्तलिखित वृत्तांत समर्पित है; यह थियोफेंस के एक राक्षस के साथ संघर्ष का वर्णन करता है जो अक्सर उस तपस्वी की झोपड़ी में आता था और उसे तपस्वी जीवन त्यागने के लिए मजबूर करने की कोशिश करता था। इस प्रकार की राक्षस-विज्ञान संबंधी कहानियाँ रूसी संतों की जीवनी और तपस्वियों के जीवन के विवरणों में अपेक्षाकृत दुर्लभ हैं। थियोफेंस का 26 जुलाई 1819 को 120 वर्ष की आयु में निधन हो गया; जैसा कि वृत्तांत बताता है, वे वृद्धावस्था से

[1348] निकोदेमस के कार्य को रूसी के पवित्र स्थलों की यात्रा पर भिक्षु पार्टेनियस के वृत्तांतों द्वारा पूरक बनाया गया है (पुस्तक-सूची देखें); ये मठों और सांसारिक दुनिया में सच्ची तपस्या के कई रूपों का वर्णन करते हैं। इसी कार्य में माउंट अथोस, मोल्डोवा और यरूशलेम में भिक्षुओं के जीवन का उनका वृत्तांत भी शामिल है।

[1349] पोसेलियानिन। रूसी तपस्या (1910); माशुरिन के पत्र (2 खंड), जिन्हें कई बार पुनर्मुद्रित किया गया है (5वां संस्करण 1870)।

पूरी तरह कमजोर हो गए थे और अपने जीवन के अंतमि दनि सोलोवेत्स्की मठ के अस्पताल में बताए थे[1350] । सोलोवेत्स्की मठ के एक अन्य कठोर तपस्वी थेयोफेंस के समकालीन, स्कीमा-मोनक गेरसमि (1740–1848) थे। शुरुआत में, उन्होंने वृद्ध आर्सेनयिस के मार्गदर्शन में रोस्लावल के जंगलों में शरण ली। 1823 में, कई वर्षों तक पवत्रि स्थलों की यात्रा करने के बाद, वह सोलोवेत्स्की मठ में आए, जहाँ उन्होंने 10 वर्षों (1823–1833) तक जंगल में एक छोटी गुफा में और बाद में एक जंगली झोपड़ी में एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत कयि।

18वीं सदी के दूसरे भाग और 19वीं सदी के पहले भाग के दौरान कई उल्लेखनीय संन्यासी भी कीव-पेचेरस्क लाव्रा में रहे। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमें उपर्युक्त एल्डर डोसतिउिस का उल्लेख करना चाहिए, जन्होंने एक गुफा में एकांत में कई वर्ष बताए। इन्होंने ही भवष्यि के एल्डर पैसयिस—जो उस समय एक युवा नवसखिुआ थे—को मोल्दावयिा में फादर बेसलि के पास जाने और वहाँ मठवासी जीवन के मूल सद्धिांत सीखने की सलाह दी। कई दशकों बाद, उन्होंने ठीक इसी उद्देश्य के लिए थयिोफेनेस ऑफ़ सोलोवेत्स्की को पैसयिस के पास भेजा। वरष्ठि डोसथियिस ने 30 साल एकांत में बताए और बहुत बुढ़ापे में († 1788) नधिन कर गए; उनके शष्यि शायद शेमामोंक माइकल († 1815) थे। ह्यरिोशेमामोंक वासयिन भी यहाँ रहते थे, जनिसे सम्राट अलेक्जेंडर प्रथम ने एक बार (1816 में) लंबी बातचीत की थी। इस मठ का एक और कठोर तपस्वी, ह्येरोस्केमामोंक और एल्डर पार्थेनयिस (1790–1855), वशिेष रूप से प्रसद्धि और पूजनीय थे। उन्होंने अपने आगंतुकों और आध्यात्मकि बच्चों से केवल एक ईसाई सद्गुण की मांग की: कि वे अपने सभी समय को, श्रम और सांसारकि कार्यों से मुक्त होकर, प्रार्थना के लिए समर्पति करें। उनकी जीवनी में एक दर्शन का वर्णन है जसिसे उन्हें सम्मानति कयि गया था। इस दर्शन में, ईश्वर की माता उन्हें प्रकट हुईं, और उन्होंने उनसे पूछा कि एक मठाधीश के कर्तव्य क्या हैं; जवाब में, उन्होंने सुना: 'एक ही कर्तव्य है - पूरी दुनयिा के लिए अखंड रूप से प्रार्थना करना'[1351] ।

तपस्वी और हएिरोडीकन मेल्चीज़ेडेक (1715–1840) की आकृति हमें रोस्लावल के जंगलों के तपस्वयिों की याद दलिाती है। उनका जन्म खार्कीव के पास सुमी शहर में एक अमीर व्यापारी के परविार में हुआ था। 25 वर्ष की आयु में, अपने पति के कहने पर, उनकी सगाई कर दी गई। संयोग से, मैक्समि (मेलचीज़ेडेक का सांसारकि नाम) की मुलाकात एक वृद्ध भक्षिु से हुई, जसिने उन्हें बताया कि उन्हें संसार में नहीं बल्कि किसी मठ में प्रवेश करना चाहिए। वह कीव-पेचेरस्क लाव्रा की तीर्थयात्रा पर नकिल पड़े और वहाँ एक नवसखियिा के रूप में रहे। बाद में, उन्होंने सोफ्रोनीस हर्मटिेज में शरण ली। यहाँ, मैक्समि को अन्य भक्षिुओं से कुछ प्रलोभनों का सामना करना पड़ा, और वह बेलोबेरेज्काया हर्मटिेज के लिए नकिल पड़ा, जहाँ उसने माइकल नाम से मुंडन संस्कार ग्रहण कयि। कुछ वर्षों बाद, उसने मेल्कज़िेदेक नाम से महा-स्कीमा ग्रहण की और एक हाइरोडीकन के रूप में अभषिक्ति हुआ। इस समय (1800), एक नए मठाधीश, वृद्ध वासलिी कशिकनि, आश्रम में आए, और मेल्कसिेदेक, जो उस समय पहले से ही वृद्ध थे, उनके साथ नरिंतर आध्यात्मकि संवाद में रहे। मेल्कसिेदेक ने बेलोबेरेज्काया आश्रम में 50 साल बताए; जब अचानक (1810 में), अस्पष्ट कारणों से, जैसा कि उनके जीवनीकार लखिते हैं, उन्होंने रोस्लावल के जंगलों में जाने और वहाँ एक जंगल की झोपड़ी में बसने का फैसला कयि, तब उनकी उम्र 95 वर्ष थी। उस समय, इन जंगलों में अन्य तपस्वी भी रहते थे, जैसे यशायाह और एंड्रयू। वरष्ठि मेल्कसिेदेक को आगंतुकों की भीड़ से कोई शांति नहीं मलि रही थी, इसलिए उन्होंने मोसाल्स्क शहर (कालुगा गवर्नरेट में) के पास के अन्य जंगलों में जाने का फैसला कयि, जहाँ वे फादर यशायाह के साथ 12 वर्षों तक एक संन्यासी के रूप में रहे। एक बार फरि, लोग उनसे बात करने, सांत्वना और सलाह लेने के लिए आने लगे। जब इसाइया का नधिन हो गया, तो मेल्चीज़ेदेक ने एक अन्य भक्षिु, माइकल को, अपना शष्यि बना लयि, और वे दोनों मलिकर रोस्लावल के जंगलों में लौटने का फैसला कयि, जहाँ मेल्चीज़ेदेक ने अपने शष्यि के साथ अपने जीवन के अंतमि तीन वर्ष बताए। 9 जुलाई 1840 को 125 वर्ष की आयु में उनका नधिन हो गया[1352] ।

ट्रनिटि-सर्गीय लव्रा से संबद्ध गेथ्सेमनी स्केट में कई अत्यधकि पूजनीय तपस्वी और वृद्ध भी रहते थे: तपस्वी फलिपि, जसिने एक छोटी गुफा में शरण ली थी, और वृद्ध इसडिोर, अलेक्जेंडर, ग्रेगरी, हर्मन († 1918) और हलिारयिन[1353] । एल्डर बर्नबास मर्कुलोव (1831–1906) वशिेष रूप से प्रसद्धि हैं। वह एक कसिान के पुत्र थे (उनका

[1350] नकिोदेमस। जीवनी। जुलाई; 'संन्यासी थयिोफेन्स की कथा' की सामग्री पर, देखें: पोपोव। उद्धृत कृति, पृ. 65–66; यात्समिरिस्की। उद्धृत कृति, पृ. 546; सोलोवेत्स्की 18वीं और 19वीं सदी के धर्मपरायण तपस्वयिों, पृ. 22–23।

[1351] कीव-पेचेरस्क लाव्रा के एल्डर, हायरॉमोंक पार्थेनयिस की जीवन और कृत्यों की कथा (1898)। पृ. 27; पोसेल्याननि। रूसी तपस्वी (1910)। पृ. 452 आदि; नकिोडेमस। उद्धृत ग्रंथ। सतिंबर।

[1352] हलिारयिन, भक्षिु। *हायरोडीकन मेल्चीज़ेडेक का जीवन*, में: *स्परिचिुअल रीडगि्स 1889*. 2. पृ. 184–201.

[1353] मुझे इन वृद्ध संतों के बारे में बहुत कम जानकारी है। एक छोटी पुस्तकिा वृद्ध अलेक्जेंडर को समर्पति है: ट्रनिटि-सर्गेयस लवरा के पास स्थति गेथसेमनी स्केट के तपस्वी वृद्ध संन्यासी के जीवन और कार्यों पर। (मास्को, 1900); एल्डर इसडिोर पर: फ्लोरेन्स्की, पी. *द

धर्मनरिपेक्ष नाम वासलिी था) और उन्होंने एक टनिस्मथि के रूप में प्रशक्षिण लयिा था। 20 वर्ष की आयु में, वह ट्रनिटिी-सर्गीय लावरा आए और एक नवसखिुआ के रूप में इसमें प्रवेश कयिा। उनके आध्यात्मकि गुरु एल्डर ग्रेगरी थे। नवसखिुआ रहते हुए, वासलिी ने एक नननरी की स्थापना में भाग लयिा, जहाँ उन्होंने बाद में मठाधीश के रूप में सेवा की। जब एल्डर ग्रेगरी का नधिन हो गया (1862), तो वासलिी एक अन्य एल्डर, डेनयिल के साथ रहने चले गए, जनिका नधिन 1865 में हुआ और, अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने वासलिी से कहा कि वह भी अंततःएक एल्डर बनेंगे। 1865 में, वासलिी ने मठवासी संन्यास की शपथ ली, और बर्नबास नाम अपनाया। 1872 में, वह एक हायरोमोंक बन गए। उस समय भी, अपनी युवावस्था के बावजूद, लोग उनसे मलिने आने लगे। वह गेथसेमनी स्केट में बस गए, और 1873 से 17 फरवरी 1906 को अपनी मृत्यु तक, एल्डर बर्नबास ने कई श्रद्धालुओं को आकर्षति कयिा। भक्तमिान लोगों के साथ उनके व्यवहार का तरीका ऑप्टनिा के बुजुर्ग लयिोनदि और एम्ब्रोज़ की याद दलिाता था: उन्हें अपनी शक्षिाओं और सलाह को मुहावरों या चुटकुलों के रूप में प्रस्तुत करना पसंद था। नज़्नी नोवगोरोड डायोसीस में अर्डेटोवो के पास स्थति व्यक्सिा गाँव में उन्होंने जो बहनों का समुदाय स्थापति कयिा था, वह 1878 में एक कन्वेंट में बदल गया, और एल्डर बर्नबस पूरे[1354] के दौरान कन्वेंट की बहनों के आध्यात्मकि पति बने रहे।

19वीं सदी के पहले छमाही में, नोवोस्पस्की मठ के एल्डर फलिारेट (1752–1842) को मास्को में बहुत सम्मान दयिा जाता था। वह रोस्लावल के जंगलों से आए थे, जहाँ उन्होंने 11 साल (1799–1810) पूर्ण एकांत में बतिाए थे। उनकी ही बदौलत प्रसद्धि रूसी वचिारक आई. वी. करीव्स्की ने अपने दैवीय वश्विासों का त्याग कर चर्च में वापसी की; करीव्स्की की पत्नी एल्डर फलिारेट की आध्यात्मकि बेटी थीं, और उन्होंने ही अपने पति को एल्डर के पास जाने की सलाह दी थी। बाद में, एल्डर फलिारेट की मृत्यु के बाद लेकनि उनकी सलाह पर, करीव्स्की ऑप्टनिा के एल्डर मकरर्इि से मलिे, जनिकी उन्होंने तपस्या संबंधी कृतयिों के प्रकाशन में सहायता करना शुरू कर दयिा[1355] । एल्डर फलिारेट मेट्रोपॉलटिन फलिारेट ड्रोज़्दोव के भी आध्यात्मकि पति थे।

19वीं सदी में, वालाम मठ ने वशिष प्रसद्धि प्राप्त की। जब 1782 में मेट्रोपॉलटिन गैब्रयिल ने एल्डर नज़ारयिस को इस मठ को बहाल करने का काम सौंपा, तो यह बाहरी उपेक्षा और आंतरकि आध्यात्मकि पतन की स्थति में था। 1723 में, आग से मठ की लगभग सभी इमारतें नष्ट हो गईं, और जब तक फादर नज़ारयिस नहीं आए, तब तक वहाँ केवल कुछ ही भक्षिु बचे थे। मठ की कई इमारतों को बहाल करने के बाद, नज़ारयिस ने अपना ध्यान मठवासी जीवन के आंतरकि संगठन पर केंद्रति करना शुरू कर दयिा, और उनके मार्गदर्शन में भक्षिुओं की संख्या लगातार बढ़ती गई। कई दशकों बाद, मठ अपने वशिष रूप से कठोर जीवन शैली के लिए प्रसद्धि था। हालाँकि, 1820 के दशक के अंत तक, मठ के नयिम से वभिन्नि वचिलन एक बार फरि से सामने आ गए थे, जसिके कारण एल्डर लयिोनदि ने 1829 में ऑप्टनिा हर्मटिेज के लिए प्रस्थान कर दयिा।

सॉल्ट ऑफ द अर्थ*, यानी गेथसेमनी स्केट के हाइरोमोंक अबा इसडिोर के जीवन का वृत्तांत, जसिे उनके अयोग्य आध्यात्मकि पुत्र, पावेल फ्लोरेन्स्की द्वारा क्रमबद्ध और संकलति कयिा गया है (सर्गेव पोसाद, 1909)। ये दोनों ही कृतयिाँ मेरे लिए उपलब्ध नहीं थीं। पी. ए. फ्लोरेन्स्की (1881–?) एक बहुत ही दलिचस्प शख्सयित और एक मौलकि वचिारक थे: एक भौतकि वज्ञिानी, प्राकृतकि वैज्ञानकि, भाषावदि, दार्शनकि और धर्मशास्त्री, उन्होंने भौतकिी और गणति संकाय और मास्को थयिोलॉजकिल अकादमी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की; 1911 में उन्हें पुरोहति के रूप में नयिुक्त कयिा गया था; वह कई कृतयिों के लेखक हैं, जनिमें से अधकिांश अप्रकाशति हैं। उनकी पुस्तक *द पलिर एंड ग्राउंड ऑफ द ट्रुथ* (1914) वशिष रूप से प्रसद्धि है – यह एक दार्शनकि, धर्मशास्त्रीय, तपस्वी-आध्यात्मकि और गणतिीय-दार्शनकि ग्रंथ है। इससे अंश नम्निलखिति में शामलि हैं: *ओस्टलचिस क्रस्टिेंटम. डोकोमेंटे*। संपादक: एन. एफ. बुब्नोव और एच. एहरनबर्ग। खंड 2: *फलिोसोफी* (म्यूनखि, 1925)। पृष्ठ 28–194; उनके आध्यात्मकि वकिास पर – पृष्ठ 410। फ्लोरेन्स्की वृद्ध परंपरा का एक वशिष्टि मूल्यांकन प्रस्तुत करते हैं: 'सारोव के संत सेराफमि और महान ऑप्टनिा के वृद्ध – वृद्ध लेव और लयिोनदि (फ्लोरेन्स्की के ववरिण में, लेव और लयिोनदि अलग-अलग व्यक्ति निकलते हैं, जबकि "लेव" वह नाम है जो वृद्ध लयिोनदि को महान स्कीमा लेने पर मलिा। – I. S.) और मैकारयिस, और वशिष रूप से एम्ब्रोज़ – अपने भीतर, एक अग्नमिय केंद्र बदिु की तरह, लोगों की पवत्रिता को संचति करते हैं। वे अर्ध-संत हैं, शब्द के संकीर्ण अर्थ में अब भक्षिु नहीं रहे। उनके माध्यम से, जैसे आवर्धक लेंस के माध्यम से, आने वाले की झलक दखिाई देती है। यहाँ उनका संपूर्ण चरत्रि नया, वशिष्टि और प्रलयकारी है। केवल अंधे ही इसे देखने में वफिल हो सकते हैं। उनके पीछे न चलकर, उनसे आगे बढ़ना या तो वचिारहीनता है या पागलपन, क्योंकि इसका अर्थ होगा मनमाने ढंग से उस वश्विव इतहिास के मार्ग को छोटा करने का प्रयास करना जसिे अनादि काल से नर्धिारति कयिा गया है। इसका मतलब होगा प्रभु यीशु के वचनों को अस्वीकार करना: 'तुम में से कौन है जो चन्ति करके अपनी लम्बाई में एक कोहनी भी जोड़ सकता है?' (मत्ती 6:27; लूका 12:25)। वही, पृ. 72 (संपादक द्वारा जोर दयिा गया)।

[1354] बर्कोव, ए. द एल्डर-कम्फर्टर, हायरोमोंक बर्नबास (1940); यह पैम्फलेट फादर बर्नबास के बारे में एक अन्य पुस्तक पर आधारति है: द लाइफ ऑफ द एल्डर-कम्फर्टर फादर बर्नबास, हू हैज फॉन स्लीप इन द लॉर्ड, फाउंडर एंड बल्डिर ऑफ द आइवर्सकी वाइक्सिकी कॉन्वेंट (1907)।

[1355] नकिोदेमस। उपरोक्त संदर्भति कृति, अगस्त; सव्वा। मेरे जीवन का वृत्तांत। खंड 2, पृ. 283; आध्यात्मकि पठन 1866. खंड 3, पृ. 201-206 (वृद्ध फलिारेट की संक्षप्ति जीवनी); करीव्स्की, आई. वी. कृतयिाँ। खंड 1, प्रस्तावना।

शताब्दी के मध्य में, वालाम के शेमामोंक थियोक्टिस्ट अपनी तपस्या की कठोरता के लिए प्रसिद्ध हुए; संन्यास का व्रत लेने से पहले, उन्होंने नौसेना में सेवा की थी; वह 1827 में वालाम पहुँचे, 1835 में संन्यास का व्रत लिया, और 1853 में महान स्कीमा ग्रहण की। अपने जीवन के अंतिम दस वर्षों में, वह एक जंगल की झोपड़ी में रहता था और अपनी तपस्या की कठोरता के लिए जाना जाता था; युवा भिक्षु उसके पास आते थे, और वह उन्हें मठवासी जीवन के तरीके के बारे में निर्देश देता था। 1863 में एक वृद्ध आयु में उनका निधन हो गया।

उस समय, वालाम मठ लोगों के बीच विशेष रूप से प्रसिद्ध था, और तीर्थयात्रियों और आगंतुकों की संख्या साल-दर-साल बढ़ती गई। मठ का स्वरूप नाटकीय रूप से बदल गया: मठाध्यक्ष दामास्किन (कोनोनोव, 1839-1871) और योना (दमित्रीव, 1879-1891) ने बड़े पैमाने पर निर्माण का एक कार्यक्रम शुरू किया, और मठ का वर्तमान स्वरूप—अपने पत्थर के चर्चों, मठीय कोठरियों, यात्रियों के लिए अतिथि गृह और अनेक उपयोगितात्मक भवनों (चक्कियाँ, एक पंपिंग स्टेशन, एक बिजली स्टेशन, आदि) की उपस्थिति, इन मेहनती और उद्यमी मठाधीशों की गतिविधियों का प्रमाण है। हालांकि, दमास्किन एक ऐसे मठाधीश थे जिन्होंने आर्थिक उद्यम को मठ के भीतर आंतरिक व्यवस्था बनाए रखने की कुशलता के साथ जोड़ा, और संन्यासियों ने अपने सख्त मठाधीश का भारी हाथ महसूस किया। उनके समय में, संन्यासियों की संख्या तीन सौ से अधिक हो गई[1356] ।

उपरोक्त आर्चिमैंड्राइट निकोडेमस के कार्य में रूस भर के विभिन्न मठों के कई अन्य तपस्वियों की जीवनियाँ शामिल हैं जो पिछली दो शताब्दियों के दौरान रहते थे; इन तपस्वियों के कारण, अनेक नकारात्मक घटनाओं से बोझिल सिनोडल युग का गंभीर वातावरण कुछ हद तक कम हो जाता है। इस अवधि के दौरान तपस्वी भावना समाप्त नहीं हुई; यह सभी रूसी मठों में किसी न किसी हद तक स्पष्ट थी। यह विशेष रूप से वरिष्ठों के कार्यों में स्पष्ट थी, जो आमतौर पर, कम संन्यासियों वाले मठों में शरण लेते थे।

भिक्षु जीवन के लिए वृद्ध परंपरा के महत्व और तपस्या संबंधी लेखों में रुचि ने शैक्षणिक अनुसंधान को जन्म दिया, जो एक ओर समग्र रूप से ऑर्थोडॉक्स तपस्या के इतिहास पर और दूसरी ओर वृद्ध परंपरा के इतिहास पर केंद्रित था। पूर्वी चर्च के तपस्वी-आध्यात्मिक जीवन के इतिहास और सार को समर्पित ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं। यहाँ तक कि मॉस्को थियोलॉजिकल अकादमी में भी, कुछ छात्र अपनी शोध-प्रबंधों के विषय के रूप में आध्यात्मिक पितृत्व और इसके इतिहास को चुन रहे हैं। 1911 में ट्रिनिटी-सर्गीस लावरा में आयोजित विभिन्न मठों के मठवासी समुदाय के प्रतिनिधियों की एक सभा ने यह निर्णय लिया कि मठों के सबसे महत्वपूर्ण कार्य आध्यात्मिक पितृत्व की परंपरा का संरक्षण, जिसमें उनके आध्यात्मिक पिताओं द्वारा नवसिखुआ भिक्षुओं का आध्यात्मिक मार्गदर्शन शामिल है, और प्राचीन तपस्या की परंपरा के प्रति निष्ठा थे[1357] । वरिष्ठों के अधिकार के महत्व की यह सैद्धांतिक मान्यता अपने आप में इस बात का सबसे अच्छा प्रमाण है कि विरिष्ठों का श्रम व्यर्थ नहीं गया। हालाँकि, 1911 के सम्मेलन में व्यक्त आकांक्षाओं को व्यवहार में नहीं लाया गया, क्योंकि कुछ वर्षों बाद रूसी चर्च में मठवासी जीवन अचानक समाप्त हो गया।

निष्कर्ष

हमारी पुस्तक रूसी मठवाद के विस्तृत इतिहास का वर्णन नहीं करती है, लेकिन यह सभी सबसे महत्वपूर्ण विकासों और सबसे महत्वपूर्ण हस्तियों का वर्णन करती है।

इस इतिहास की तीनों अवधियों के दौरान, संन्यासवाद की प्रकृति बदली। यह संन्यासी जीवन और संन्यासवाद की तपस्या के मूल सिद्धांतों पर संतों (यहाँ तक कि एक ही पीढ़ी से संबंधित) के विचारों, दोनों पर लागू होता है, जो 16वीं शताब्दी की शुरुआत में तपस्या के अर्थ को लेकर छिड़े विवाद में विशेष रूप से स्पष्ट था।

हमारे दृष्टिकोण से, रूसी मठवाद के पूरे बाद के इतिहास के लिए इन दो विचारधाराओं का अस्तित्व सर्वोपरि महत्व का था। इस विवाद ने, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, यह प्रदर्शित किया कि मठवाद के भीतर ही—रूस में इसकी पाँच शताब्दियों की मौजूदगी और 14वीं-15वीं शताब्दियों में मठवाद के स्वर्ण युग के बाद— सामान्य रूप से ईसाई तपस्या के सार और विशेष रूप से मठवासी जीवन की नींव को स्पष्ट करने की आवश्यकता उत्पन्न हो गई

[1356] वालाम मठ और इसके तपस्वियों (1889)। पृ. 16, 23, आदि। RBS. पृ. 51–52 (डमासेन); 319 (जोनाथन)। यह भी देखें: श्मेलेव, आई. ओल्ड वालाम (1936)। पृ. 80, 122

[1357] बीवी. 1913. 4. पृ. 399, 400। अकादमी की कार्यवाही। यह भी देखें: आर्सेनीव, एन. वी. *डैस हीलिगे मॉस्को* (1940), जिसमें वरिष्ठों के प्रभाव पर विस्तार से चर्चा की गई है। हमारे समय के माउंट अथोस के रूसी साधुओं पर, देखें: फ्यूल्ज़-मुलर, आर. 'बेई डेम स्टारज़े डेर "स्टुम्मेन व्युस्टे". इम डोर्फे डेर एस्केटेन', *बर्लिनेर टागेब्लैट* में। 1926. 419 (5 सितंबर)।

थी, और मठवासी जीवन को सही रास्ते पर स्थापित करने के लिए इन नींवों को यथासंभव सटीक रूप से परिभाषित करने की आवश्यकता थी।

यह पहल उन संतों के एक समूह से आई, जिन्होंने प्राचीन संन्यासवाद की तपस्या और रहस्यमय भावना के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करने का प्रयास किया; इस संबंध में, सोर्स्क के एल्डर नील और उनके साथियों को रूसी संन्यासवाद के इतिहास में विशेष मान्यता मिलनी चाहिए। यह उल्लेखनीय है कि उनकी पहल पंद्रहवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में हुई, जब धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया उतनी स्पष्ट नहीं हुई थी जितनी कि सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में थी। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नील और उनके साथियों ने अपने तपस्वी विचारों को इस लिए नहीं अपनाया क्योंकि वे धर्मनिरपेक्षता का मुकाबला करने का प्रयास कर रहे थे, बल्कि इसलिए क्योंकि वे यह समझ चुके थे कि मठवासी जीवन की सच्ची नींव क्या है।

उनके विरोधी, जोसेफाइट्स, को मुख्य रूप से नॉन-अक्विरिअिर्स की पहल की प्रतिक्रिया के रूप में, मठवाद के उद्देश्य पर अपना स्वयं का दृष्टिकोण तैयार करने के लिए मजबूर होना पड़ा; फिर भी, यह इतिहासकारों के लिए उनके दृष्टिकोण के महत्व को कम नहीं करता है; वास्तव में, यह इसकी राजनीतिक सामग्री के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि ई रूसी मठवाद के भविष्य के इतिहास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुआ। इसलिए हमने उस अवधि को, जब यह विवाद भड़का, मठवाद के विकास और उसकी आत्म-समझ के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ के रूप में नामित किया है।

16वीं और 17वीं शताब्दियों में, मठवाद का बाहरी और आंतरिक इतिहास लगभग पूरी तरह से विजेताओं – जोसेफाइट्स – की भावना में विकसित हुआ, एक ऐसी भावना जिसने मठवासी जीवन के लिए कई नकारात्मक परिणाम दिए। मठों की स्थिति सुधार की तात्कालिक मांग कर रही थी – यह चर्च पदानुक्रम के सामने मुख्य कार्य था। 1764 के धर्मनिरपेक्षीकरण ने, मठों से उनकी भूमि-स्वामित्व छीन लेने के बाद, एक तरह से ऐसे सुधार के क्रियान्वयन को सुगम बना दिया, क्योंकि भूमि-स्वामित्व से जुड़ी नकारात्मक घटनाएँ समाप्त हो चुकी थीं। हालांकि, चूंकि सिनोडल काल के धार्मिक अधिकारियों ने ऊपर से कोई विशेष महत्वपूर्ण उपाय लागू करने में विफल रहे, इसलिए मठवाद को संपूर्ण पतन का खतरा हो सकता था। फिर भी, जैसा कि हमने देखा है, मठवाद के भीतर की सभी स्वस्थ शक्तियाँ समाप्त नहीं हुई थीं।

इस संबंध में, मठवासी जीवन के पुनरुद्धार का सबसे बड़ा श्रेय 18वीं-19वीं शताब्दी के रूसी मठवासी बुजुर्गों को दिया जाना चाहिए, जो रूस में सीधे और सबसे निकटता से बुजुर्ग पैसियस वेलीचकोव्स्की के नाम से जुड़े हैं। वास्तविक तपस्यापूर्ण भक्ति के अन्य उदाहरण दर्शाते हैं कि धर्मनिरपेक्षता का खतरा सर्वत्र मठवाद के भविष्य के लिए समान रूप से खतरनाक नहीं था। महापुरुषों के कार्य और कर्म इस बात का प्रमाण हैं कि मठवाद के भीतर—विशेष रूप से 18वीं और 19वीं शताब्दी के अंत में भिक्षुओं की युवा पीढ़ी के बीच—अभी भी स्वस्थ शक्तियाँ सक्रिय थीं, और एक वास्तविक मठवासी जीवन शैली के लिए एक बड़ी इच्छा थी। यह तथ्य न केवल चर्च के इतिहासकारों बल्कि सांस्कृतिक इतिहासकारों का भी ध्यान आकर्षित करता है, क्योंकि यह आबादी के सभी वर्गों में धार्मिक आकांक्षाओं की मजबूती को दर्शाता है, साथ ही इस तथ्य को भी कि लोकप्रिय धार्मिकता ने, एक तरह से, बाहरी रूप से मठवासी जीवन पर प्रभाव डाला।

उन्नीसवीं सदी में, बड़ों ने न केवल भिक्षुओं बल्कि मठ की दीवारों के बाहर रहने वाले सामान्य लोगों के आध्यात्मिक जीवन को भी प्रभावित किया। बड़ों द्वारा संसार के लिए की गई इस सेवा के माध्यम से, रूसी मठवाद अपनी अलगाववाद और आत्म-मग्नता खो रहा था, जो ऑर्थोडॉक्स मठवाद के लिए विशिष्ट थी। यह एक काफी महत्वपूर्ण बिंदु है। फादर पैसियस वेलीचकोव्स्की के तपस्वी स्कूल ने, जिसके साथ लगभग सभी वृद्धों ने एक आध्यात्मिक संबंध बनाए रखा और जिसने स्वयं शुरुआत में इस अलगाववादी चरित्र को बनाए रखा था, अंततः न केवल भिक्षुओं बल्कि संसार में रहने वाले लोगों की सेवा करने का मिशन भी अपना लिया। इस प्रकार, पूर्वी चर्च की तपस्वी परंपरा ने रूसी वृद्ध परंपरा के भीतर एक नया रूप ले लिया। यह अपने आप, स्वतः चर्च के अधिकारियों के किसी दबाव के बिना हुआ, जिनका आम श्रद्धालुओं के साथ कोई वास्तविक आंतरिक संबंध नहीं था। वरिष्ठ परंपरा का सार ही मठवासी समुदाय और लोगों के बीच आध्यात्मिक संबंध की क्रमिक बहाली की ओर ले गया।

यह निश्चित रूप से कहना असंभव है कि मठवाद में अपनी आध्यात्मिक वृद्धि को जारी रखने और श्रद्धालुओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखने के लिए पर्याप्त ऊर्जा थी, या ईसाई जीवन के अच्छे फल कितनी जल्दी पके होते, क्योंकि 20वीं सदी के दूसरे दशक के अंत तक रूसी मठवाद का इतिहास बाहरी दबाव के तहत, रूस के राज्य और राजनीतिक इतिहास की घटनाओं के परिणामस्वरूप, अचानक रुक गया। मठवाद रूस में कैसे और कब पुनर्जीवित होगा, तब उसका स्वरूप कैसा होगा, और क्या यह कभी होगा भी – इन सवालों का जवाब भविष्य में, काफी समय बीत जाने

के बाद, इस वषिय पर काम करने वाले इतहिासकार देंगे। हालांकि, फलिहाल, रूसी मठवाद का इतहिास एक संपूर्ण घटना प्रतीत होता है, जसिे एक ऐतहिासकि परप्रिेक्ष्य में शुरू से अंत तक देखा जा सकता है।

अपने अध्ययन का समापन करते हुए, हम पाठक को रूसी मठवाद के इतहिास के एक वशिेषज्ञ, प्रंसि सर्गेई नकिोलेवचि ट्रुबेट्स्कोय († 1905), जो पश्चमि में एक अल्पज्ञात वचिारक थे, के शब्दों की याद दलिाने की स्वतंत्रता लेंगे: 'मठ हमारे जीवन का सबसे कीमती खजाना, हमारा गौरव हैं, भले ही आध्यात्मकि जीवन के बारे में कुछ भी न जानने वाले लोग, जो यह वचिार करने तक को तैयार नहीं हैं कि इतने सारे लोग आत्म-बलदिान का यह मार्ग क्यों चुनते हैं, उन्हें कतिनी भी अहंकारी और तरिस्कारपूर्ण दृष्टि से क्यों न देखा जाए। बेशक, कुछ मठों में नैतकि शथिलिता, और संतों की आलस्य, सुस्ती और दुर्गुणों के बारे में बात की जा सकती है - आदर्श और वास्तवकिता के बीच का वरिोधाभास मठों में जतिना बड़ा है, उतना कहीं और नहीं है, हालांकि कहीं और इसे उतनी गहराई और पीड़ा के साथ अनुभव नहीं कयिा गया है। हम मठों को उन संस्थानों के रूप में महत्व देते हैं जनिमें चर्च की शक्षिाएँ स्वयं जीवन में मूर्त रूप लेती हैं... हम मठों को, उनकी कमयिों और कमजोरयिों के बावजूद, उन पवत्रि मोतयिों के लिए महत्व देते हैं जो उनकी दीवारों के भीतर से चमकते हैं। वे लोगों के लिए आध्यात्मकि और नैतकि शक्षिा का स्थान थे[1358] ।

[1358] उद्धृत: आर्सेनीव, ए. वी., *डीए करि्खे देस मोर्गेनलैंड्स* (1925), *साम्लगि गोएशें*, संख्या 918, पृ. 8 में।